राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(द्वितीय जिल्द)

सपादक

(संपादन, परिवर्द्धन एवं संशोधन कर्ता)

मनीषी, साहित्य भूषण, डॉ० सीतारांम लाळस डी.लिट्.(मानद)

व्युत्पति आदि द्वारा परिष्कारक

स्व० पं० नित्यानन्द शास्त्री दाधीच

[आशुकवि, कविभूषण, व्याकरण, साहित्य, कोषादि तीर्थ
श्री रामचरिताब्धिरत्नम् महाकाव्य आदि के प्रणेता]

कर्ता

डॉ० सीताराम लाळस डी लिट्. (मानद)

स्व० उदयराज उजळ

प्रकाशक

चौपासनी शिक्षा समिति

जो ध पु र.

प्रकाशक :
चौपासनी-शिक्षासमिति
जोधपुर

भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय
द्वारा संचालित प्रादेशिक भाषाओं के
विकास सम्बन्धी योजना से सहायता प्राप्त

प्रथम संस्करण

मूल्य १२ रु०

मुद्रक :
हरिदत्त थानवी
श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस
जोधपुर

छप्पय

जुरजोधन जांणियौ, पाट हथणापुर बैठूं ।
एहड़ी कद जांणतौ, जाय जल भीतर पैठूं ॥
सह कौरव लै साथ, कियौ भारत मुदा सूं ।
मन रौ मन मांह, मुऔ भीम री गदा सूं ॥
त्रयलोकं नाथ होतब तणा, अलप करै कुण अख्खरां ।
कवि 'श्रोप' अग्यांनी नर कहै, नौवा री तेरह करां ॥

—श्रोपौ आढौ

संस्था की ओर से—

चौपासनी सिक्सा समिति; राजस्थांन में सिक्सा रै कांमां मैं ठेठ सूं लगाय नै आज तांई आगीवांण रैवती आई है। पछिमी राजस्थांन में जठै "अणभणिया घोड़ां चढ़ै भणिया मांगै भीख" ईज सईकां तांई नारो रियो उठै आ समिति आपरा लगोलग जतनां सूं ग्यांन रां दीपईज नीं चासियौ, घर घर मैं ग्यांन री गंगा नै भी पूगती कीवी। राजस्थांन रै पुरांणै इतिहास, संस्कृति नै समाज रा मांन – मूल्यां नै जीवतां राखण खातर नै नवी पीध नै राजस्थान री जूनी सम्यता नै समझणै, परखणै, अजमांणै तांई 'राजस्थांनी शोध संस्थान' री थरपना कीवी। घणा अणमोल ग्रथां नै भेला किया। पछै सिक्सा समिति रा जाग्रत लोगां साहित्य इतिहास नै राजस्थांनी भासा री रक्सा नै बढ़ोतरी रै खातर 'राजस्थांनी सबद कोस" री घणी जरूरत समझी। आज रै विग्यांन सूं खंवा – ठौरी करता समै मैं अैड़ा लूंठा कामां मैं समै, स्रम, धीरज नै धन री घणी जरूरत पड़ै। घणा फोड़ा देखणा पडै घणी अबकायां झेलणी – उठावणी पड़ै। राजस्थांनी सबद कोस रा कांम मैं भी अैड़ा घणा उतार – चढ़ाव आया, पण जठै चाह उठै राह। सो, कोस रै छपणै रौ कांम हकरां भरता रथ रो भांत चालतौ ईज रियौ।

राजस्थांनी सबद कोस रा चौथा खंड री प्रथम जिल्द रौ साहित्य ससार घणौ, आघमांन कियौ इण माथै म्हनै घणौ मोद है नै आज उणी लड़ी मैं औ "व" आखर री चौथा खड री दूजी जिल्द साहित्य रा पिंडतां रै आगै अरपण करतां म्हांरौ मन हरख सूं बांमां उछलै है।

आ, सवा सोलै आनां खरी बात है कै रुपियां रौ कांम रुपियां सूंईज सरै। कोस जेंडा ठाढ़ा कांमां मैं अणूतौ द्रब चायोजै। राज सरकार नै केंद्र सरकार भरपूर मदत करै जद भी कोस कारयालय में धनाभाव इज रेवै इण अभाव नै मेटण ताँई घणा जुगाड बैठावणा पड़ै। समिति रा सदस्य गाढी भागा – दौड करै, जद जाय नै कठैई कोस री जिल्द छपावण रौ जोग बणै। इण खातर समिति नै आपरी बीजो योजनावां मैं कटौतरी भी करणी पड़ै। पण, फेर भी, कोस री छपाई रै कांम में लांची नीं आवण देवां, इण कांम री मदत खातर राजस्थांन राज रा राज्यपाल महामहिम जोगेंद्रसिंहजी, राजस्थान रा मुख्य मंत्री स्रीमान् हरिदेव जोसी, सिक्सा आयुक्त स्रीमान् जगन्नाथसिंहजी मेहता, जोधपुर रा जिलाधीस स्रीमान् करुणकुमारजी भटनागर रा म्हैं घणा गुण मांना जिका जद भो कोस रै छपण रौ गाडौ अरथाभाव रा कीच मैं कलीजतौ दीठौ म्हारी मदत कराय नै चीला माथै दौडतौ करता गिया। अै महानुभाव इण कांम री कीमत आंकी, परख कीवी नै साधना रौ अभाव टालियौ।

राजस्थानी साहित्य नै सस्कृति रा खभ ठोक पुजारी नै साचा हेतालु राणी लक्समीकुमारीजी चूडावत, राजस्थान रा मोबी पूत, साहित्य रा कोडीला समृथ मांनवी लक्समीमलजी सिघवी, सरूगोत सू ईज कोस रा मेढी गोरधनसिंहजी मेड़तिया खांनपुर रै सहयोग रो स्मरण नी करणौ कतघणता ईज कहीजै। अै लोग देस, समाज नै आपरा घर घराऊ कांमां मैं समै काढ़ नै, कोस रै कांम खातर सदा उछाव रै साथै त्यार मिल्या। राजस्थांनो रा जांणीता अर मानीता साहित्यकार स्री कोमलजो कोठारी, स्री मरुधरजी अदुल, स्री कपूरचन्दजी कुलिस, स्री रेवतदानजी चारण नै स्री सोहनदांनजो चारण रै प्रति आभार परगट करणौ म्हारौ धरम है, आं लोगां री नेक सलाह सू कांम नै आगै वधावण मै घणी मदत मिली है। कोस रा सगला बीजा हेत – प्रीत पालणियां रौ भी म्है घणैमान आभार मानू।

सगलां सूं घणौ तौ म्हनै औ हरख है कै इण साल कोस रा सपादक स्री सीतारामजी लालस री तपस्या नै जोधपुर विस्वविद्यालय आंकी अर साहित्य रा इण ग्यांनी गौरख नै डी० लिट्. री मानद पदवी देय नै साहित्यसाधकां रौ उछाह बधायो। राजस्थांनी साहित्य रा प्रेमियां नै समिति रा सदस्यां सारां खातर स्री लालस रौ औ मांन गौरव री बात है।

इण जिल्द री छपाई रै कांम नै भली तरै समै माथै पूरौ करावण खातर स्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस रा प्रबंधक स्री हरिदत्तजी थांनवी रौ भी म्हैं आभार मांनूं। सिक्सा समिति रा सदस्यां नै तौ रंग है ईज जिका इण कांम रो महत्ता नै समझ बरोबर मदत करता रेवै।

कागद रै मूंघा पणै नै छपाई रीं दरां री बढ़ोतरी रै कारण इण खड री कीमत ६२) रिपिया राखणी पड़ी है।

चौपासनी शिक्षा समिति,
बसंत पचमी सवत् २०३२

— नारायण सिंह भाणकलाव
सचिव
उप समिति राजस्थांनो सबद कोस, जोधपुर.

अपनी बात

राजस्थानी शब्द कोश के चतुर्थ खण्ड की प्रथम जिल्द का देश - विदेश के विद्वानों ने स्वागत, सम्मान कर हमारा उत्साह बढ़ाया है। इससे हमारा उत्साह ही नहीं बढ़ा, अपितु कार्य की महत्ता और गुरुता का बोध भी हुआ है। सभी जानते हैं कि कोश जैसे दुष्कर और अभिनव कार्य में अनेक प्रकार के बाधा - व्यवधान उपस्थित हुआ ही करते हैं, पर साहसी और लग्नशील व्यक्ति बाधाओं के बारिधि को बिना विचलित हुए पार भी करते हैं। हमने भी कोश के प्रकाशन और मुद्रण के व्यवधानों के समक्ष बिना अवनत हुए आगे और आगे ही बढ़ना अपना लक्ष्य रखा। फलतः कोश के चतुर्थ खण्ड की द्वितीय जिल्द आज हम विद्वानों को समर्पित करने में समर्थ हुए हैं।

आशा करते हैं कि विद्वत् समाज कोश के पूर्व खण्डों की भाँति ही इस जिल्द का भी स्वागत कर हमारा उत्साह - वर्द्धन करेंगे।

इस अवसर पर मुझे यह जानकारी देते हुए भी अतीव गर्व, और आल्हाद की अनुभूति हो रही है कि जोधपुर विश्वविद्यालय ने हमारे विद्वान् संपादक श्री लालस को इस अवधि में मानद डो. लिट्. की उपाधि से विभूषित किया है। चौपासनी शिक्षा समिति, उप समिति राजस्थानी शब्द कोश तथा भारती के उपासक सभी लोगों के लिए यह सम्मान गौरव का प्रतीक है। इस प्रकार शिक्षा समिति तथा डॉ. लालस की ऋषि तुल्य साधना फलवती हुई है।

मुझे विश्वास है कि शिक्षा समिति के लग्नशील सदस्यों, डा. लालस और राजस्थान सरकार के सतत सहयोग से यह कार्य यथा - समय संपन्न हो सकेगा।

प्रह्लादसिंह
अध्यक्ष
उप समिति राजस्थानी शब्द कोश
व
कोषाध्यक्ष, चौपासनी शिक्षा समिति
जोधपुर.

दिनांक : ५-२-१९७६

॥ श्री ॥

* निवेदन *

—दूहा सोरठा:—

नारायण भूले नही, अपणो माया ईश । रोग पैस ओखद रचैं, अगवाळा जगदीश ॥१॥
साच न बूढो होय, साच अमर संसार में । कैतो घोवो कोय ओ सेवट प्रकटे 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, धरती मे साचो धरम । इण सूं पूरं आस सकल मनोरथ सावरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । आवे इण एवाह ईशर किरपा सू उदय ॥४॥
सत ऊजळा संदेश, उदयराज ऊजल प्रखै । दीपै थारा देश, ज्यारा साहित जगमगे ॥५॥

भारत समद में सन् १६५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्तां री भासावां मानी गई उणां रे सामल राजस्थानी भाषा ने नहीं मानी तो कुदरती तौर सू राजस्थान मे अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रों में शुरू हुवो।

राजस्थानी रै विरोध में अक्सर आ बात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नहीं हो। ओ घाटो मिटावण सारु म्हैं सीतारामजी लालस ने कयो क्योंकि हूँ जाणतो हो के डिंगल रा सग्रह रो उणा ने काफी अनुभव है। श्री सीताराम जी इणा काम सारू तैयार हो गया ने म्हैं दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग सूं मैंनत सू कोश रो काम शुरु कियो ने इण मे खर्च री मदत री जरूरत हुई तो उसा बाबत म्हैं स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहब बार एटला पोकरण ने अरज की। इणां कृपा करने मजूर करी ने तारीख १-५-५१ सूं रुपीया री मदत देणी चालू कर दीवा। सीतारामजी मथाणिया में लेखक राख ने काम शब्द सग्रह री स्लिप कोपियां लिखावण रो चालू कर दीयो और म्हैं दोनू तारीख १-५-५१ सू सन् १६५२ रा आखिर तक सामिल कोंम कियो जिण सूं कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपियां में लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सू श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता बद हो गई, इण सू सन् १६५३ लगायत सन् १६५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बद रेयो।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनूं री लगन ही। म्हैं करनल श्री स्यामसिंहजी रोडला ने जून सन् १६५६ मे कोश मैं सहायता देवण सारु कागद लिखियो उण रो जबाब उणां तारीख २६-६-५६ रा कागद में म्हने लिखियो के कोश सारु मावार रु ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूंला। परन्तु उणारा पिता करनल श्री अनोपसिंहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे में देरी हुई। उणा रे स्वर्गवास होणे रे बाद में नवम्बर रा अन्त में ने दिसम्बर रा शुरू मे जोधपुर मे ही जद कर्नल श्री सामसिंहजी कोश री मदत बाबत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी।

कोश रो काम उणां री सहायता सूं सन् १६५७ रो जनवरी सू सीतारामजी जोधपुर में चालू कर दियो क्योंकि जद उणां रो तबादलो जोधपुर में हो गयो हो। जो एक लाख तेरह हजार शब्दों की स्लिप कोपियां पेली बणी हुई ही। इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणां अक्षरवार रजिस्टर में लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १६५८ री माह मई तक पूरो हो गयो। म्हे पैली री तरे सीतारामजी रै साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोश करनल श्री सामसिंहजी री रुपीया री सहायता सूं पूरो हुवो।

इणरे बाद प्रेस कापी बणावण रो काम चालू हुवो। उणरे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेड़तिया खानपुर वाला श्री झालावाड़ दरबार सूं श्री नीबाज ठाकुर साहब सूं रुपियां री सहायता लेने करायो ने तरे छपण रो प्रबन्ध राजस्थानी सोध सस्थान चोपासनी जोधपुर सूं हुवो ने तारीख ११-३-५६ ने सीतारामजी ने इण सोध सस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सूं वे इण सस्थान में काम करण लागा।

इस कोश ने तैयार करावण में व्युत्पति विभाग पूरो करावण मे स्वर्गीय पं० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मदद ही इण वास्ते बैकूंठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवां हां। तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे मुजब हो —

चांद बावड़ी
ता० २२-५-५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यंत्र श्री उदयराजजी उज्जवल यत्रो (मेंकेनिकल) के बल सचालित हुवा है। मैंने इसे देखा, इन्होंने प्रत्येक शब्द और धातु को जाँचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगो को प्रदर्शित किया है क्योंकि इन्होंने सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश विविध भाषाओं के बल पर यह कार्यभार उठाया है। बीच बीच मे हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने मे श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने सहायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती मे सतुष्ट होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान कार्य की प्रशंसा करेंगे। फकत-नित्यानन्द शास्त्री।

इण तरे ननण विश्वविद्यालय सूँ डा० डब्लू० एम० एलन जो ससार री करीब चालीस भाषाओं रो जानकार है ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनि विज्ञान सबधी जांच वो शोध रो काम सारु सन् १९५२ में राजस्थान आया हा ने जोधपुर मे दोय मास ठहरिया हा ने भाषा रे सिलसिले में म्हारे कने घणा आता उणांने म्हे ने सीतारामजी दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उणां म्हारो उत्साह बधायो उणां री सम्मति नीचे मुजब है —

Thinity College Cambridge **26 Feb., 1960**

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is new to be published Rajasthani has long pressented a serious gap in the comparative study of the voca bulary of the Indo-Aryan Languages and now at Last it is filled by the evoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors. I know well the difficulties that have beset the undertaking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition. With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no Longer be denied

Sd. W S. Allen M A., P H. d.
Professor Comprative Philology
In the University of Cambridge.

कोश दोय दातार राजपूत सरदारों री रुपया री मदत सूँ शुरु होय ने पूरो बणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफत म्हे ता० २६-६-५७ ने इण बाबत काव्य गीत, कविता, रचियौ ने सीतारामजी कने भेजोया वो अठे दिया जावे है इण में दोनूं सरदारां रो धन्यवाद रे तौर पर वर्णन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रों में तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानी में

कोम मरू बाणरो सुणे बण्यो नह किण सू. लाख शब्दो तणो बडो लेखो गया भूपात, कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
खूटगा खजना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा । सेव साहित्य री बणी न किणी सू. लागता पथ धन छोड लाढा ॥२॥
मेव साहित्य ही रहे ससार मे, सुजसफल लगावे धणी सरसे । गिले सुखलाध हितकर चित समाजा, दिनो दिन किता सनमान दरसै ॥३॥
वाण मरू बांन है प्रात रो परंपर, वेण परताप राजस्थान ऊंचो । रखी नह पढण मे भाखला प्रांत री, निरखतां जाय है प्रात नीचो ॥४॥
बणाई चारणो व्याकरण विधोविध, बणेगो कोश ही लाखसबदो । 'सीत'रो परिश्रम अथग फलियो सिरे, रेटियो'उदय'मिल सकल सबदो ॥५॥
पोकरण भवानीसीह चापे प्रथम कोश रे हेत धन खर्च कियो । पडता लाच इण समेरा फेर सू. स्यामसी रोडले काम सीघो ॥६॥
रोडले स्यामसी सपूतो सिरोमण, कमधज आज अखियाज कीधो । बार विपरीति मे हजारो खरचनै, दाद उजल 'उदे' देम दीधो ॥७॥
चारणो दोय मिल व्याकरण कोश रचि, बण्या नह बडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मिल कियो सुभ काम ओ, महीयो कियो नह बीस मिलियो ॥८॥

कवित

सूयंमल मिशण ने बनाया बंस भास्कर, बूंदी नृपराम ने खजाना खोल करके।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योंही उदीयापुर रान के कोष बल घर के।
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके।
पोकरण भवानीसिह स्यामसिह रोडला के कोष हित कोष बने दानी धन धर के।
प्रात की प्रबल भाषा प्रतिष्ठित परपरा बिबुधन दीनमाल बीरपद वाला है।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूँ मे रखी नहीं होय कोटि जनता को दास गति डाला है।
डूबत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित बिदाजा है।
जीवित उट्ठे गी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोष याके बनेसे जिवाना है।

Compared by
Sd. Bhawar Singh
Sd लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd. ह० उदयराज उज्जवल
Sd. Nami Chand Jain
Civil Judge, Jodhpur.

संकेत और चिह्न

सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम	सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम
अं०	अंग्रेजी भाषा	भू० का०	भूतकाल
अ०	अरबी भाषा	भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
अक०	अकर्मक	भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
अक० रू०	अकर्मक रूप	भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
अनु०	अनुकरण	म०	मराठी भाषा
अप०	अपभ्रंश	मह० महत्व०	महत्ववाची शब्द
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	मा०	मागधी भाषा
अव्य०	अव्यय	यू०	यूनानी भाषा
इब्रा०	इब्रानी भाषा	यौ०	यौगिक शब्द
उप०	उपसर्ग	रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
उभ० लि०	उभयलिंग	रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
कर्म वा०, कर्म वा० रू०	कर्मवाच्य, रूप	लै०	लैटिन भाषा
क्रि०	क्रिया	व०	वर्तमानकाल
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	व० का० कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	वि०	विशेषण
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	विलो०	विलोम
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	व्या०	व्याकरण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	शाक०	शाकन्ध्वादि
गु०	गुजराती भाषा	सं०	संस्कृत
गो० रा०	गोरादि	सं० उ०	संज्ञा उभयलिंग
ची०	चीनी भाषा	सं० पु०	संज्ञा पुल्लिंग
जा०	जापानी भाषा	सं० स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग
डिं०	डिंगळ	स०	सकर्मक
तु०	तुर्की भाषा	स० रू०	सकर्मक रूप
पं०	पंजाबी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
पा०	पाली भाषा	स्त्री०	स्त्रीलिंग
पु०	पुल्लिंग	स्पे०	स्पेनिश भाषा
पुर्त्त०	पुर्तगाली भाषा	उ०	उदाहरण
पृष०	पृषोदरादि	कहा०	कहावत
प्र०	प्रत्यय	क्व० प्र०	क्वचित प्रयोग
प्रा०	प्राकृत	ज० खि०	जग्गो खिड़ियो
प्रे०	प्रेरणार्थक	ज्यो०	ज्योतिष सम्बंधी
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	दे०	देखो
फा०	फारसी भाषा	प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
फ्रां०	फ्रांसीसी भाषा	प्रा० रू०	प्राचीन रूप
ब० व०	बहुवचन	मि०	मिलाओ
भाव वा०	भाव वाच्य	मु० मुहा०	मुहावरा
भाव वा० रू०	भाव वाच्य रूप	वि० वि०	विशेष विवरण

चिन्ह

चिन्ह का स्वरूप	स्थान		प्रयोजन
☼	शब्द के आगे	---	यह शब्द कविता में ही प्रयोग होता है।
'	शब्द के अक्षरों के बीच में शिर पर	---	यह ध्वनी-लोपिक चिन्ह है, जहां 'ह्' की ध्वनी लोप होती है वहां आता है।
—	शब्द के नीचे	---	उच्चारण की ध्वनी भिन्नता बतलाता है।
'...'	शब्द के दोनों ओर सिरो पर	...	व्यक्ति वाचक संज्ञा का सूचक (इनवर्टेड कॉमाज)

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
अनेक॰ अनेका॰	अनेकार्थी कोष	उदयराम बारहठ
अमरत	अमरत सागर	महा॰ प्रतापसिंह जयपुर
अ॰ मा॰	अवधान माळा	उदयराम बारहठ
अ॰ वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
ऊ॰ का॰	ऊमरकाव्य	ऊमरदान लाळस
उ॰ र॰	उक्ति रत्नाकर	साधु सुन्दरगणि
एका॰	एकाखरी नाम माळा	वीरभाण रतनू उदयराम बारहठ
ऐ॰ जै॰ का॰ सं॰	ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह	सपा. अगरचन्द नाहटा
क॰ कु॰ बो॰	कविकुळ बोध	उदयराम बारहठ
कां॰ दे॰ प्र॰	कान्हडदे प्रबंध	पद्मनाभ
गी॰ रां॰	गीत रामायण	अमृतलाल माथुर
गु॰ रू॰ बं॰	गुण रूपक बंध	केसोदास गाडण
गो॰ रू॰	गोगादे रूपक	पहाड़खां आढो
डिं॰ को॰	डिंगळ कोश	कविराजा मुरारीदान, बूंदी
डिं॰ नां॰ मा॰	डिंगल नाम माला	हरराज कवि
ढो॰ मा॰	ढोला मारू	सम्पादकत्रय रामसिंह तँवर, सूर्यकरण पारीक व नरोत्तमदास स्वामी
द॰ दा॰	दयालदास री ख्यात	दयाळदास सिंढायच
द॰ वि॰	दळपत विलास	सम्पादक रावत सारस्वत
देवि॰	देवियाण	ईसरदास बारहठ
ध॰ व॰ ग्र॰	धर्म वर्द्धन ग्रन्थावलि	सपा॰ अगरचन्द नाहटा
नां॰ मा॰	नाम माळा	अज्ञात
ना॰ डिं॰ को॰	नागराज डिंगल कोश	नागराज पिंगल
ना॰ द॰	नागदमण	साइया झूला
नी॰ प्र॰	नीति प्रकाश	संग्रामसिंह मुहणोत
नैणसी	नैणसी री ख्यात	मुहणोत नैणसी
प॰ पं॰ च॰	पंच पडव चरित्र	सालिभद्र सूरि
प॰ च॰ चौ॰	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कवि लब्धोदय
पा॰ प्र॰	पाबू प्रकाश	मोडजी आसियो
पिं॰ प्र॰	पिंगळ प्रकाश	हमीरदान रतनूं
पी॰ ग्र॰	पीरदान ग्रन्थावळि	पीरदान लाळस
पे॰ रू॰	पेमसिंह रूपक	प्रतापदान गाडण
बां॰ दा॰	बांकीदास ग्रन्थावळि	बांकीदास
बां॰ दा॰ ख्यात	बांकीदास री ख्यात	बांकीदास
बी॰ दे॰	बीसलदे रासौ	कवि नाल्ह
भ॰ मा॰	भक्तमाल	ब्रह्मदास
भिक्खु॰,	भिक्खु दृष्टान्त	भीखणजी
भि॰ द्र॰	"	"
मा॰ कां॰ प्र॰	माधवानल कांम कंदला प्रबंध	कवि गणपति

मा० म०	मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुंशी देवीप्रसाद
मा० वचनिका	माताजी री वचनिका	जती जयचन्द
मीरा	मीरा बाई	मीरां
मेघ०	मेघदूत	नारायणसिंह भाटी
मे० म०	मेहाई महिमा	हिंगळाजदान कवियै
र० ज० प्र०	रघुवर जसप्रकाश	किसनो आढो
र० रू०	रघुनाथ रूपक	मंछाराम
र० वचनिका	रतनसिंह महेसदासोतरी वचनिका	जगो खिड़ियो
र० हमीर	रतनाहमीर री वारता	महाराजा मानसिंह
रा० जै० रासौ	राउ जैतसी रौ रासौ	अज्ञात
रा० जै० छंद	राउ जैतसी रौ छंद	बीठू सूजी नगराजोत
रा० रा०	रांम रासौ	माधोदास दधवाडियो
रा० रू०	राज रूपक	वीर भाण रतनू
रा० वं० वि०	राठौड़ वंसरी विगत	अज्ञात
रा० सा० सं०	राजस्थानी साहित्य सग्रह I	सम्पादक स्वामी नरोतमदास
ल० पिं०	लखपत पिंगल	हमीरदान रतनू
ला० रा०	लावा रासौ	गोपालजी कवियै
लो० गी०	राजस्थानी लोक गीत	अज्ञात
वं० भा०	वंश भास्कर	सूर्यमल मिसण
व० स०	वर्णक समुच्चय	संपादक भोगीलाल सांडेसरा
वि० कु०	विनय कुमार कृति कुसुमांजलि	कविवर विनयचन्द्र
वि० सं० सा०	विश्नोई संप्रदाय और साहित्य	डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
वि० सि०	विड़द सिणगार	कविराजा करणीदांन कवियै
वी० मा०	वीरमायण	बहादर ढाढी
वी० स०	वीर सतसई	सूर्यमल मिसण
वी० स० टी०	वीर सतसई री टीका	किसोरदान बारहठ
वेलि०	वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़
वेलि टी०	वेलि क्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात
बृस्त०	बृहत्स्तवनावली	सग्रह
शा० हो०	शालि होत्र	अज्ञात
शि० व०	शिखर वंशोत्पति	गोपालदांन कविया
शि० सु० रू०	शिवदान सुजस रूपक	लालदांन बारहठ
स० कु०	समयसुंदर कृति कुसुमांजलि	महाकवि समय सुंदर
सू० प्र०	सूरज प्रकाश I, II, III	कविराजा करणीदांन
ह० ना० मा०	हमीर नाम माला	हमीरदान रतनू
ह० पु० वां०	श्रीहरिपुरुषजी की वांणी	श्री हरिपुरुषजी
ह० र०	हरिरस	ईसरदास बारहठ
हा० झा०	हाला झाला रा कुंडळिया	ईसरदास बारहठ

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(द्वितीय जिल्द)

ब

ब—नागरी वर्णमाला का उन्नीसवां व्यंजन-वर्ण जो उकार, विकार और अंतस्थ अर्द्ध व्यंजन माना जाता है। इसका उच्चारण दंत्योष्ठ है। उच्चारण में जिह्वा-पश्च उकार के समान-संवृत्त या अर्ध-संवृत्त स्थान तक उठता है और तुरंत परवर्ती स्वर के स्थान पर पहुंच जाता है। इसमें व्यञ्जनात्मकता से अधिक स्वरात्मकता ही पाई जाती है।

बंक—सं. पु – १ गर्व, अभिमान, घमण्ड।

उ०—१ दिपै रघुनायक दीन दयाळ, पुणां खळ घायक सेवग पाळ। वडै दसमाथ विभंजण बंक, लछीवर देण भभीखण लंक। —र. ज. प्र.

उ०—२ बेहु सायबी पगा रांखीवैं, वाळी घरा वचूटी बंक। सबळा अनड़ां बेहु तणै सर, आबु अनड तुहाळो अंक। —दुरसो आढो

२ देखो 'बाक' (रू. भे)

उ० – दरपइ दीठइ दोरडइ, साप न आणइ सक, बीहइ बिलाडा-बच्चडइ, वाघिणी वालइ बक। —मा. का. प्र.

३ देखो 'बाको' (मह , रू. भे.)

४ देखो 'बक' (रू. भे.)

५ देखो 'वक्र' (रू. भे.)

उ०—दीहा पाधर बंक गय, भुज धरिये कुळ-भार। —गु. रू बं.

बंकड़—१ देखो 'बांको' (मह., रू. भे)

२ देखो 'बांक' (मह., रू. भे)

३ देखो 'बक' (मह , रू. भे)

बंकड़ी—देखो 'बाकी' (अल्पा , रू भे.)

उ०—कटि-तटि हूंती बंकड़ी, काढी करि करवाल्। तव अग्गीउ आवी करी, करि वलगु ततकाल्। —मा. का. प्र.

बंकड़ो—देखो 'बांको' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ 'वीरम' माई बकड़ो, ज्यूं बेटो जगमाल। दत क्यावर धावा दुनी, साहां उर रा साल। —वी. मा.

उ०—२ भड़ां दुबाहा बकड़ां, हुई सनाहां सत्थि। सेध निवाहां सूरमा, राहा वेध अरत्थि। —रा. रू.

(स्त्री. बकडी)

बंकट—देखो 'बकट' (रू. भे.) (नां. मा.)

बंकति—देखो 'वक्र' (रू भे)

उ०—छूट सुदर बीख सतेज घणा, तन ओप वधं मद रूप तणा। दुति बकति तुंड लगांम दियां, कुळवंतिय घूंघट जांणि कियां। —रा. रू.

बंकनाळ, बंकनाळि, बंकनाळी—देखो 'बकनाळ' (रू. भे.)

उ०—१ बंकनाळ घर अमरा भरि हैं, अरध उरध घर निरझर झरि है। —अनुभववाणी

उ०—२ अजरामर का मारग औळा, सौळा सत पिछाणै। बंकनाळि मेर सचरि कै, भंवरगुफा सुख माणै। —अनुभववाणी

उ०—३ पलटि पूरब अपूरब पाणा, करि बंकनाळी ले मेर बाणा। —अनुभववाणी

बंकनाड़ी—देखो 'बकनाळ' (रू. भे)

बंकि, बकी—१ देखो 'बंक' (रू. भे)

उ०—बंकि पटा फूलह्यां, सोरि खिलकार कुसत्री। तस कसीस लेजमा, जजर गती जाजत्री। —सू. प्र.

२ देखो 'बाकी' (रू भे.)

उ०—वारण सिर तोडै खग बकी। तांणै लंगणि अढारह टकी। —सू. प्र.

बंकीनाळि, बंकीनाळी—देखो 'बकनाळ' (रू. भे.)

उ०—बकिनाळि चढावै वाटा, घण अटकै हीरामण घाटा। —सू. प्र.

बंकेण—१ देखो 'बाको' (मह. रू. भे)

उ०—दिन वकै बंकेण, वाणी मंत्र तत सा बुद्धी। दुरजण सज्जण यानै सज्जन होइ दुज्जणाकारै। —रा. रू.

२ देखो 'वक्र' (मह , रू. भे.)

बंको—देखो 'बांको' (रू भे)

उ०—१ ढकै जम जेती बरण, वडपण अकै वार। इण वंकै 'पातल' अगै, सह सकै ससार। —जैतदांन बारहठ

उ०—२ वदै अंगदेसं हुवा जोध बका। लंगा झोकरै झोक प्राजाळ लका। —सू. प्र.

उ०—३ मिळिया बंका राठवड चितहित राख वचाव। सुख गाढो कीधो सगै, रीधो हाडो राव। —रा. रू.

उ०—४ पेसवा पतिसाह नूं 'अजन' थयौ असवार, गति बंकी दिन पाधरै, छत देखे संसार। —रा. रू.

बंक्रत—देखो 'वक्र' (मह , रू. भे.)

उ०—माहा जटीयळ भ्रगट भेक बंक्रत मयंक, अलकत सेस मेचक्र ऊधाळी। करण पत प्रभा परभात रा समोकर। तेज पुंज नाथ रा तणी ताळी। —भीमसिंह जी री गीत

बंग—सं पु. [सं.] १ जस्ता या रांगा नामक धातु।

२ उक्त धातु का भस्म ।
३ प्रेम, मुहब्बत ।
४ अधिकार, कब्जा ।
५ वश ।
६ सीधा व सरल होने का भाव ।
७ बिना कष्ट के, आसानी से होने वाला कार्य ।
८ अवसर, मौका ।
९ एक चद्रवशी राजा । १० कपास । ११ बेंगन ।
रू भे.—भंग
१२ देखो 'बग' (रू. भे.)
उ०—मगध मडळ अग बंग कलिग कासी (कोमल कुरु) कुसट्ट पचाल जागल······। —व. स.

बगर-वि —एकाकी, अकेला ।

बगस, बंगसी, बंगस्स - देखो 'बगस' (रू. भे)

बगा –देखो 'बगाल' (रू. भे.)

बंगार—देखो 'बघार' (रू. भे)
उ०—झोळ मे तो मुसाला, पाणी अर बगार घी रो है । मा'राज आ री तो धानै सोगन दिराई कोनी । —फुलवाडी

बगारणो, बंगारबो—देखो 'बघारणो, बघारबो' (रू. भे.)
बंगारणहार, हारो (हारी), बंगारणियो—वि० ।
बगारिश्रोड़ो, बंगारियोडो, बगारयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बगारीजणो, बगारीजबो—कर्म वा० ।

बंगाळ, बगाल—देखो 'बगाळ' (रू. भे)
उ०—बग्हार, मथुरा, अवध्या, वणारसी, चदेरी मल्लिवाल, महोब, हरियाणउ, भयाणउ, रत्नपुर, कामरू, ओडियाण, जलवर, आरब, बगाल, त्रिहूण, भोट, महाभोट, चीण, महाचीण···। —व स.

बंगाळी, बगाली—देखो 'बगाळी' (रू. भे.)

बंगास्टक-स. पु. [स. बगाष्टक] रागा आदि आठ धातुओ के योग से बना एक रसौषध ।

बगेसरी – देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे.)

बंगेस्वर-स. पु [स बगेश्वर] एक रसौषध । (वैद्यक)

बगेस्वरी— १ देखो 'वंगेस्वरी' (रू भे.)
२ देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे)

बंगोबंग-क्रि. वि —यथास्थान, उचित स्थान ।
२ व्यवस्थानुसार ।
३ उपयुक्त, यथोचित ।

बंच-सं. पु. [स.] १ सूर्य ।
२ तोता ।
रू भे.—बच ।

बंचक-वि – [स] १ छल, प्रपंच से जो दूसरो को ठग लेता है, ठग, धोखेबाज । २ धूर्त खल ।
उ०—१ विभचारी बैरी बद बंचक, छळ बळ कपटी छांनो । महामोह हिंसक मूरख सू, मरणो उत्तम मानो । —ऊ. का.
उ०—२ 'वाका' बंचक वाणियो, नहि जाण्या नहि राह । त्या हदा धन तारिणया, या आण्या घर राह । —बा. दा.
३ पढने वाला, पाठक ।
उ०—परधन हरण परायण पामर, बचक बाणी रे । ते झूठी बुगलां री बाता नाहक ताणी रे । —ऊ. का.
रू भे.—बचक, बछक
४ सेंधियार, चोर ।

बंचकता-स. स्त्री. [स. वचक+प्र. ता.] १ छल-प्रपच से दूसरो को ठगने का कार्य, ठगी, धोखाबाजी, धूर्तता ।
२ चोरी ।
रू. भे —बंचकता

बचरणा—देखो 'वचना' (रू भे)

बंचणो, बंचबो-क्रि. स [स वंचनम्] १ ठगना, धोखा देना ।
२ चालबाजी करना, बेईमानी करना ।
३ देखो 'बाचणो, बाचबो' (रू भे)
उ० -- इम कागद आवियो, पेखि बंचे 'गजपत्ती' । अंग पौरस ऊफणै, भाहि घ्रित जेम विभत्ती । —सू. प्र.
४ देखो 'अचणो, बचबो' (रू भे)
उ० —१ हरयिा नारी नामणी, सब जुग लीया खाय । जे कोई बंचै बापडो, गुर का मतर पाय । —अनुभववाणी
उ०—२ है मुह फाड्या बाघनी, दाढ्या सब ससार । जो बंचे भाज करि, लख चौरासी जेर । —अनुभववाणी
बचणहार, हारो (हारी), बंचणियो—वि० ।
बंचिओड़ो, बंचियोड़ो' बंच्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बचीजणो, बंचीजबो—कर्म वा० ।
बंचणो, बंचबो—रू० भे० ।

बंचत—१ देखो 'वाछित' (रू. भे)
२ देखो 'वचित' (रू. भे.)

बंचना-स. स्त्री. [स.] १ ठगी, धोखा, जाल, फरेब ।
उ०—लोग प्रिय उत्तम आचार थी, बंचना रहित अक्रूरी जी । पाप करम थी जे डरता रहइ, कपट थकी रहइ दूरी जी । —म. कु.
रू भे.—वचणा, बचणा ।

बंचाणो, बंचाबो-क्रि. स. ['वचणो' क्रि. का प्रे. रू.] १ ठगवाना, धोखा दिराना ।

२ चालबाजी कराना, बेईमानी करवाना ।

३ देखो 'बचाणौ, बचाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हिवै म्हांनु वंचावौ, ताहरा बाळक हंसियौ बामण छुडाया ।
—देवजी बगडावत री बात

उ०—२ लक्ष्मी नै कुण नोतरै, गगोदक कुण पवित्र करै हंसनै गति कुण सिखावै, ब्रहस्पति नै कुण वंचावै । क्रपण नै कुण संचावै । तिम सज्जन नै स्वभावै आणवौ । —रा. सा. स.

वंचाणहार, हारौ (हारी), वंचाणियौ—वि० ।

वंचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंचाईजणौ, वंचाईजबौ—कर्म वा० ।

वंचावणौ, वंचावबौ—रू० भे० ।

वंचायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ ठगवाया हुआ, धोखा दिराया हुआ.

२ चालबाजी या बेईमानी करवाया हुआ ।

३ देखो 'बचायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. वचायोडी)

वंचावणौ, वंचावबौ—१ देखो 'वचाणौ, वचाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बचाणौ, बचावौ' (रू. भे)

उ०—हस नै गति कुण सिखावै, व्रिहस्पति नै कुण वंचावै क्रिपण नै कुण सचावै । —रा. सा. स.

वचावणहार, हारौ (हारी), दचावणियौ—वि० ।

वंचाविम्रोड़ौ, वचावियोड़ौ, वचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंचावीजणौं, वंचावीजबौ—कर्म वा० ।

वंचावियोड़ौ—१ देखो 'वचायोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बचायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वचावियोडी)

वंचित—वि. [स] १ जो ठगा गया हो, धोखा खा गया हो ।

२ जो किसी की कृपा या सहायता प्राप्त करने से अलग रह गया हो, दूर रह गया हो ।

३ जो अभीष्ट फल या लाभ न पा सका हो ।

४ विमुख ।

५ हीन ।

रू. भे.—वंचत, वचित, वचत ।

वंचियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ ठगा हुआ, धोखा दिया हुआ. २ चालबाजी किया हुआ, बेईमानी किया हुआ ।

३ देखो 'वाचियोडौ' (रू. भे.)

४ देखो 'वचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वचियोड़ी)

वंछक—वि. (स्त्री. वंछकी) १ चाहने वाला, इच्छा करने वाला ।

२ कामना करने वाला ।

३ देखो 'वंचक' (रू. भे.)

रू. भे.—वंछक

वंछणौ, वछबौ—क्रि. अ. [स. वाछम्] १ चाह होना, इच्छा होना ।

उ०—हरि समरण रस समभण हरिणाखी, चात्रण खळ खगि खेत्र चढि । बैसै सभा पारकी बोलण, प्राणी वछइ त वेलि पढि ।
—वेलि

क्रि स.—१ चाहना. इच्छा करना, अभिलाषा करना ।

उ०—१ आकास राता, मेह करि माता । क्यां किण नीला, क्या किण पीला । नाना प्रकार ना रग, मला सुरग । वाधै अनग, जगी करै जंग, भोगी पीयै भग, स्त्री वछै सग आदि ।
—रा. सा. स.

उ०—२ माधव करि माहरू' कहिउ, जु मुझ वंछइ सेम । सास लगइ सेवा करिसि, सीत दमयंती जेम । —मा. कां. प्र.

उ०—३ ग्रो अवसाण सूरमां आयौ, पूरां नरा वछतौ पायौ । असमर हथा घणी मुख आगै, लड़ता गयण भुजा डड लागै ।
—रा. रू.

२ जिज्ञासा करना ।

३ प्रेम करना ।

वछणहार, हारौ (हारी), वंछणियौ—वि० ।

वछियोड़ौ, वंछियोड़ौ, वछयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंछीजणौ, वछीजबौ—भाव वा०/कर्म वा० ।

बचणौ, वंचबौ वछणौ, वंछबौ—रू० भे० ।

वंछत, वंछती, वछतौ—देखो 'वाछित' (रू भे.)

उ०—१ नर न्रप अमर चद्र त्रयनेता, क्रम क्रम चाहां करौ सकाज । सफळ करण वछत सगळा रा, तो हाता रघुकुळ सिरताज ।
—र. रू.

उ०—२ अग भुगति मुगति दाता जगा, दान मान वंछत दिये । पारथै किसू मेळग कुपह, प्रभू नाथ पारत्थियौ । —ज. खि.

वंछना—देखो 'वाछना' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

वंछाणौ, वंछाबौ—क्रि. स. ['वछणौ' क्रि. का. प्रे. रू.] १ चाह कराना, इच्छा कराना ।

२ कामना कराना, अभिलाषा करवाना ।

वंछाणहार, हारौ (हारी), वंछाणियौ—वि० ।

वछायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंछाईजणौ, वंछाईजबौ—कर्म वा० ।

वंछाणौ, वंछाबौ—रू० भे० ।

वंछायोड़ौ–भू का. कृ.—१ चाह कराया हुआ, इच्छा कराया हुआ. २ कामना कराया हुआ, अभिलाषा करवाया हुआ ।

(स्त्री. वंछाय ड़ी)

वंछासुर—देखो 'वत्सासुर' (रू. भे.)

वंछित—देखो 'वांछित' (रू. भे.)

उ०—महि सुद्द वट मास प्रात जळ मजै, आप अपरस अरु जित इंद्री । प्राणै वेलि पढता नित प्रति, त्री वंछित वर वंछित त्री ।—वेलि

वंछियोड़ौ–भू का. कृ.— १ चाहा हुआ, इच्छा किया हुआ, अभिलाषा किया हुआ. २ जिज्ञासा किया हुआ ३ प्रेम किया हुआ ।

(स्त्री वंछियोड़ी)

वंजण–स. पु [देशज] १ घास ।

उ०—१ ताहरा सात-वीस भैंसा दिया । भैंसा लै-नै घरै आयौ । चारणी सखरा भ्रामरा घताया भैंस्या व्याया नै वंजण पड़िया । फोफाणंद रै आणंद हुवा । —फोफाणंद री वात

उ०—२ तैंरी बेटी पण लियौ छै । जियै रै सात वीस भैंस्या नै वंजण पड़ै तियै चारण नू परणीजूं । —फोफाणंद री वात

२ शरीरांग, अंग-उपांग ।

३ शरीर के जन्मजात या स्वाभाविक वे चिह्न जिनके द्वारा मनुष्य की पहचान की जाती है । (जैन)

उ०—ए थारो सरीर छै रे, वंजण लखण उदार । रोग रहित दोख को नही रे, जोवन कला अपार । —ज. वाणी

४ देखो 'व्यजन' (रू. भे.)

रू भे.—वजन ।

वंजणौ, वंजबौ–क्रि. अ [सं वज्=गति] १ पराजित होना, भागना ।

उ०—रजपूतै भुइ भागियै, दळ मूका छळ देस । 'वीहारी' वंजै नही, सूना मेल्है नेस । —गु रू ब

२ चलना ।

वंजणहार, हारौ (हारी), वंजणियौ वि० ।

वंजिओड़ौ, वंजियोड़ौ, वंज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंजीजणौ, वंजीजबौ—भाव वा० ।

वंझणौ, वंझबौ—रू० भे० ।

वंजन—१ देखो 'वंजण' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यजन' (रू. भे.)

वंजियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ पराजित हुवा हुआ, भागा हुआ. २ चला हुआ ।

(स्त्री वंजियोड़ी)

वंझ—देखो 'वंध्या' (रू भे.)

वंझणौ, वंझबौ—देखो 'वंजणौ, वंजबौ' (रू. भे.)

उ०—वढियौ मुखेस 'पतौ' वाढाळौ, वंझियौ 'सुरजन' देख वढ । गढ चित्तोड़ गरब तण गरजै, गाडौ गो रणथंभ-गढ ।

—पत्ता चूंडावत रो गीत

वंझि—देखो 'वंध्या' (रू. भे.)

उ०—माई हूई माइ हूई काइं नवि वंझि, मह जाया नवि मूआ तुम्हे राजु काई देवि दिद्धउ । —पं. प. च.

वंझियोड़ौ—देखो 'वंजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वंझियोड़ी)

वंट–स पु. [सं.] १ बटवारा करने की क्रिया या भाव ।

२ विभाजन ।

उ०—थे सूना कूकनै लोक हसावता हा सो आवौ उरा अबै आज इण दिन बराबर वंट होवै है । —वी स टी.

३ विभाजन द्वारा होने वाला हिस्सा, भाग ।

उ०—अबै आज इण दिन बराबर वंट होवै है सो आछौ वट व्है वौ आप लेलीजो । —वी स. टी.

४ अंश ।

५ पीसने की क्रिया या भाव ।

६ विधुर ।

७ हंसिया नामक उपकरण का बेंट या दस्ता ।

रू. भे.—बट, बांट, वांट, वाठ ।

वंटणौ, वंटबौ—देखो 'बंटणौ, बंटबौ' (रू. भे.)

उ०—अब घर अघर कीया मन भाई, बागा अनहद वंटी वधाई । नाव अखडत खंडै नाही, सुरति सबद कै मंडी माही ।

—अनुभववाणी

वंटणहार, हारौ (हारी), वंटणियौ—वि०

वंटिओड़ौ, वंटियोड़ौ, वंट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंटीजणौ, वंटीजबौ—कर्म वा० ।

वंटवाड़ौ, वंटवारौ—देखो 'बटवारौ' (रू भे)

वंटाइत—देखो 'वटायत' (रू. भे)

वंटाई—देखो 'बटाई' (रू भे.)

वंटाड़णौ, वंटाड़बौ—देखो 'बंटाणी, बटाबौ' (रू भे.)

वंटाड़णहार, हारौ (हारी), वंटाड़णियौ—वि० ।

वंटाड़िओड़ौ, वंटाड़ियोड़ौ, वंटाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वंटाड़ीजणौ, वंटाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

वंटाड़ियोड़ौ—देखो 'बटायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. वंटाड़ियोड़ी)

वंटाणौ, वंटाबौ—देखो 'बंटाणौ, बटाबौ' (रू. भे.)

बंटाणहार, हारौ (हारी), बंटाणियौ—वि० ।
बटायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बंटाईजणौ, बटाईजबौ—कर्म वा० ।

बटायत – देखो 'बटायत' (रू. भे.)

बंटायोड़ो - देखो 'बटायोड़ो' (रू. भे)
(स्त्री. बंटायोड़ी)

बंटारौ – देखो 'बटारौ' (रू. भे)

बंटावणौ, बंटावबौ – देखो 'बटाणौ, बंटाबौ' (रू भे)
बटावणहार, हारौ (हारी), **बटावणियौ** —वि० ।
बटावियोड़ो, बटावियोड़ो, बटाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बटावीजणौ, बटावीजबौ—कर्म वा० ।

बटावत—देखो 'बटायत' (रू भे)

बंटियोड़ौ—देखो 'बटियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वटियोडी)

बटीलौ–वि. [स वट+आलुच् प्र.] (स्त्री. वटीली) १ जिसका किसी हिस्से, भाग या अंश पर अधिकार हो । हकधारी ।
२ हिस्सेदार, भागीदार ।
३ साझीदार

वठ, वठौ–वि [स वठ] (स्त्री. वठी) १ उद्दण्ड ।
२ अविवाहित, कुंआरा ।
३ बोना ।
४ पगु, अगहीन ।
स. पु. [सं वठ] १ अविवाहित व्यक्ति ।
२ नौकर, सेवक ।
३ भाला, बर्छा, शूल ।

बंड– देखो 'वडौ' (मह , रू. भे)

वडणौ, वडबौ–क्रि. स.—पीसना ।
उ०– भोरे-भोरे तन करै, **वडै** कर कुरबाण । मिठ्ठा कोडा ना लगै, दादू तोहू सांण । —दादूबाणी
वडणहार, हारौ (हारी), वडणियौ—वि० ।
वडियोड़ौ, वडियोड़ो, वड्योड़ो—भू० का० कृ० ।
वडीजणौ, वडीजबौ—कर्म वा० ।

वंडियोड़ौ–भू. का. कृ. –पीसा हुआ ।
(स्त्री वडियोडी)

वडौ–वि. [स. वण्ड] १ वह पुरुष जिसके लिंगेन्द्रिय के अग्रभाग पर चमडा न हो, जो सुन्नी किया हुआ हो ।
२ बधिया किया हुआ, आख्ता किया हुआ ।
३ अग-भग, पगु ।
४ अविवाहित ।
रू. भे —**वडो** ।
मह ,—बंड, वयंड, बंड, वयंड ।

वतळ–स. स्त्री [स वर्तनम्] १ चित्त का किसी कार्य में लग जाना, मनबहलाव ।
उ०—नी कोई बूढी-ठाडी डोकरी ई घरै **वतळ** करण सारू आई । —फुलवाडी
२ बातचीत, वार्तालाप ।
उ०—दीवाणजी रो एक खास सुभाव के वै लुगाया स घणी **वतळ** नी करता । —फुलवाडी
रू. भे.—बतळ, बतळ, वतोळ, वतोल, वतळ ।
अल्पा., वतकलौ ।

वतूळियौ—देखो 'बथूळौ' (अल्पा., रू. भे.)

वतूळौ - देखो 'बथूळौ' (रू. भे.)

वंतोळ, वंतोल—१ देखो 'बथूळौ' (मह., रू भे.)
उ० –चिहुदिसि चमकइ वीजळी, वादलवा **वतोळ** । दुख-दरिया-माहा हु गई, टळवळती द्रहि बोळ । —मा. का. प्र
२ देखो 'वतळ' (रू भे)

वतोळियौ, वतोलियौ, वंतोलीयौ, वबूळियौ—१ देखो 'बथूळौ' (अल्पा., रू भे)
उ०—१ मझ जावा तुझ तेडवा, विमासिउं निमि दिन्न । वैसाग्नि **वंतोलीया**, मरडी नाखइ मन्न । —मा का. प्र.
उ०—२ उडइ रेणु अबीर नी, सुरतरु नइं सीदूर । गयणि गुलाल वतोलिया, छलर विछाहिउ सूर । —मा का. प्र

वथूलौ—देखो 'बथूळौ' (रू. भे)

वद - देखो 'वंद्य' (रू. भे) (डि. ना. मा)

वद—देखो 'वदन' (रू. भे) (डि. को.)
उ०—ताण मंझ तोले तिजड, विमन सकति कर **वद** । कूच नगारा हुय कटक, चवै हुकम जयचद । —सू. प्र.

ववगण–स पु — १ पत्थर । (अ. मा)
२ बन्दीजन ।

ववगी——देखो 'बदगी' (रू. भे.)
उ०—तद ठाकुरजी फुरमायौ कै थारी जात मानी । थे घरे जावौ । थे तौ अठैई घणी **बंदगी** करौ छौ । सू जाओ सू इधकी माना छा । —द. दा.

ववण—१ देखो 'वदन' (रू. भे.)

उ०—कवि वेदव्यास वलमीक कवि, करि प्रस्तुनि **वंदण** कियौ।
—सू. प्र.

२ देखो 'वंदिण' (रू. भे.)

उ०—रच सदन चित्र सरूप, प्रति रग रग प्रनूप। जसवाणि **वंदण** जीह, उवरत विरद सईह।
—रा. रू.

वंदणा—देखो 'वंदना' (रू. भे.)

उ०—हींदू तुरक नही को इसउ, रिणि राउतवटि लखणउ जिसउ। जे समरंगणि साम्हा मरइ, ते सुर सिद्ध **वंदणा** करइ।
—का दे. प्र.

वंदणौ, वंदबौ—क्रि. स. [स वंदनम्] १ नमस्कार करना, प्रणाम करना, अभिवादन करना।

उ०—१ कमधज्ज मिळै सू कमधजा, हीया परफूल्लत हुवै। **वंदियौ** 'गजण' विय वदवरि, ताम तुरक्कं हिंदुवै।
—गु. रू. बं.

उ०—२ मेतुज **वंदिम** तीरथराउ, गुरु या गणहर करउ पसाउ। वाग वाणि हउ समरउ देवि, खिहुगति गमण कहउ सखेवि।
—वस्तिग

२ स्तुति करना, प्रार्थना करना।

३ पूजा करना, अर्चना करना।

४ प्रशसा करना, तारीफ करना।

वंदणहार, हारौ (हारी), वंदणियौ—वि०।
वंदिओड़ौ, वंदियोड़ौ, वंदयोड़ौ—भू० का० कृ०।
वंदीजणौ, वंदीजबौ—कर्म वा०।
वंदणौ, बंदबौ, बंधणौ, बंधबौ, बंदेणौ, बंदेबौ विंदणौ, विंदबौ, विंदणौ, विंदबौ—रू० भे०।

वंदन—स. पु. [स] १ नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन।

उ०—१ राजा **वंदन** कीध उभै कर। आसी-वाच विप्रा इम उच्चर।
—गु रू. बं

उ०—२ इम सिष वयण सुणै उदमदियौ, **वंदन** करै नरेसुर वंदियौ।
—सू प्र.

२ प्रार्थना, स्तुति।

३ पूजा, अर्चना।

रू भे.—वदण, बदन, बंदिण, वंदिन, वंद, वंदग।

वंदनमाळ, वंदनमाळा, वंदनवार—देखो 'बादरमाळ' (रू भे.)

उ०—प्रथीनाथ गढपोळि, प्रथम 'अभसाह' पधारे। तोरण **वंदन-माळ** प्रगट उछव अणपारे।
—रा. रू.

वंदना—स स्त्री [स वंदन] १ नमस्कार, अभिवादन, प्रणाम।

उ०—कर कंहू नइ करू **वंदना** हु वारी। पहिलउ प्रत्येक बुद्ध रे हु वारी लाल।
—स कु.

२ स्तुति, प्रार्थना।

३ पूजा, अर्चना।

रू. भे.—बदणा, बदना, वंदणा, वंदनी।

वंदनी—स. स्त्री. [स. वन्दनी] १ जीवातु नामक ओषधि, जो मृतक को जीवित कर सकती है।

२ गोरोचन।

३ तिलक।

४ बटी।

५ याचना कर्म।

६ देखो 'वंदना' (रू. भे.)

वंदनीक, वंदनीय—वि. [स वन्दनीय] १ प्रणाम या नमस्कार करने योग्य।

उ० **वंदनीक** पाय रा गाय रा दुजा विसावीस। आसुरा भजणा आडै धाय रा अमाव।
—र. ज. प्र.

२ स्तुति व प्रार्थना योग्य।

३ पूजा व अर्चना करने योग्य।

वंदर—१ देखो 'बंदर' (रू भे.)

२ देखो 'वानर' (रू. भे.)

वंदरगाह—देखो 'बंदरगाह' (रू. भे.)

वंदरमाळ, वंदरमाळा, वंदरवाळ, वंदरवाल, वंदरवाळा—देखो 'बादरमाळ' (रू भे.)

उ०—१ पाणिग्रहण-तणउ परियाग, मांड्यौ विहु भूपति मडाण। महोछव तोरण **वंदरमाळ**, अधि वाधइ बारणइ विसाळ।
—ढो मा.

उ०—२ वेलि जु एक रूख थे दूसरै रूख जाइ लागि छै। सु **वंदरवाळ** बधाणी छै।
—वेलि टी.

उ०—३ चारू घट जुग्रल दीप प्रदीप मणिमाळा प्रवाल **वंदरवाल** ए द्रव्य मंगलीक स्रीदेवपूजन गुरू वदन प्रमुख भाव-वदन मगलीक।
—व. स

उ०—४ तिणि वेला नऊइ कोरणा बाधीयइ तोरण, बाधीयइ **वंदरवाल**, उत्सव विसाल वाग्विलास।
—व. स.

वंदरियौ—१ देखो 'बंदर' (अल्पा., रू भे.)

२ देखो 'वानर' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'बंदरियौ' (रू. भे.)

वंदाड़णौ, वंदाड़बौ—देखो 'वंदाणौ, वंदाबौ' (रू. भे.)

बंदाड़णहार, हारौ (हारी), बंदाड़णियौ—वि० ।
बंदाड़िओड़ौ, बंदाड़ियोड़ौ, बंदाड़्योड़ौ—भू० का० कृ ।
बंदाड़ीजणौ, बंदाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बंदाड़ियोड़ौ—देखो 'बंदायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बंदाड़ियोड़ी)

बंदाणौ, बंदाबौ-क्रि. स [सं. बंदनम्] १ स्वागत करना, सम्मान पूर्वक, अगवानी करना ।
उ०—ताहरां राजा बरदाईसेनजी सांम्हों जाय कुंवर नूं बंदाय घरे ले आया छै । —नैणसी
२ अभिवादन कराना, नमस्कार कराना ।
उ०—१ आंगळ रा लोक ऊंचा चढ चढनै जोवै छै। राजलोक पिण गोखां चढि-चढिनै जोवै छै। इण जुगत करिनै तोरण बंदायौ छै। —लाखी मेवाड़ी री बात
उ०—२ विवध उतारै वीनती, धारै निजर तुरंग । लगन बंदायौ तूंवरां, पायौ सर्म सुरंग । —रा. रू.
उ०—३ तरै पुरोहितजी नै माथा ले'र कांन में पूछियौ—थें नाळे'र किणनै बंदायौ ? मैं थांनै काहूं कहि नै मेलिया था । —राव रिणमल री बात
४ स्तुति कराना, प्रार्थना कराना ।
५ पूजा कराना, अर्चना कराना ।
बंदाणहार, हारौ (हारी), बंदाणियौ—वि० ।
बंदायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बंदाईजणौ, बंदाईजबौ—कर्म वा० ।
बंदाड़णौ, बंदाड़बौ, बंदाणौ, बंदाबौ, बंदावणौ, बंदावबौ, बंधाड़णौ, बंधाड़बौ, बंधाणौ, बंधाबौ, बंधावणौ, बंधावबौ, बंदाड़णौ, बंदाड़बौ, बंदावणौ, बंदावबौ—रू० भे० ।

बंदायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ सम्मान पूर्वक अगवानी कराया हुआ, स्वागत कराया हुआ. २ अभिवादन कराया हुआ, नमस्कार कराया हुआ. ३ स्तुति व प्रार्थना कराया हुआ. ४ पूजा व अर्चना कराया हुआ।
(स्त्री. बंदायोड़ी)

बंदावणौ, बंदावबौ—देखो 'बंदाणौ, बंदाबौ' (रू. भे.)
बंदावणहार, हारौ (हारी), बंदावणियौ—वि० ।
बंदाविओड़ौ, बंदावियोड़ौ, बंदाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बंदावीजणौ, बंदावीजबौ—कर्म वा० ।

बंदिण—देखो 'बंदिन' (रू. भे)

बंदित-वि. [स] १ जिसको नमस्कार किया गया हो, अभिवादित, सम्मानित ।
२ जिसकी प्रार्थना की गई हो, स्तुत्य ।
३ जिसकी पूजा या अर्चना की गई हो, पूजित ।

बंदिन—देखो 'बंदिन' (रू भे)

बंदियोड़ौ-भू. का कृ.—१ नमस्कार किया हुआ, प्रणाम व अभिवादन किया हुआ. २ स्तुति व प्रार्थना किया हुआ. ३ पूजा व अर्चना किया हुआ.
(स्त्री. बंदियोड़ी)

बंदीखांनौ—देखो 'बंदीखानौ' (रू. भे.)

बंदीग्रह, बंदीघर—देखो 'बंदीघर' (रू. भे.)

बंदीजण, बंदीजन—देखो 'बंदीजन' (रू. भे.)
उ०—सुभ खमा खमा जय सद्द रौ, कोलाहळ बंदीजणां । —रा. रू.

बंदीवाद-स. स्त्री.—पारसी लोगो की एक धार्मिक पुस्तक ।

बंदेणौ, बंदेबौ—देखो 'बंदणौ, बंदबौ' (रू. भे.)

बंदोकड़ी, बंदोखड़ी, बंदोगड़ी—देखो 'बंदोकड़ी' (रू. भे.)

बंदोळी—देखो 'बंदोळी' (रू भे)

बंदोळौ—देखो 'बंदोळौ' (रू. भे.)

बंदोबस्त—देखो 'बंदोबस्त' (रू. भे)
उ०—पण उणरी चौड़ै लड़णरी प्रासंग हुई नहीं। तद बरसघ नूं लाळच देय अजमेर बुलायौ, अर खातरी करनै बीटली चाढियौ। पीछै बंदोबस्त कियौ । —द. दा.

बंदौ—देखो 'बंदौ' (रू भे.)
उ०—बंदा करियै बंदगी, आतम तें आधीन । जनहरिया । घम घम घटै, यौ तन होसी छीन । —अनुभववाणी

बंद्य-वि. [स.] १ नमस्कार, प्रणाम व अभिवादन करने योग्य ।
२ पूजा, अर्चना व स्तुति करने योग्य स्तुत्य, पूज्य ।
३ प्रार्थना व निवेदन करने योग्य ।

बंद्रवाळय—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

बंद्रावनवासी—देखो 'ब्रंदावनवासी' (रू. भे.)
उ०—बीयौ टमरियौ बंद्रावनवासी, बणराय भार अठार संख्या, बिस्णु वाणी ऐह । —रुकमणी मंगळ

बंध—देखो 'बध' (रू. भे.)

बंधणौ, बंधबौ—देखो 'बंधणौ, बधबौ' (रू भे.)

बंधतीबेस—देखो 'बधतीबेस' (रू. भे)

बंधन—देखो 'बधन' (रू. भे.)

उ०—काळ का मैं बंधन कापै, जाप अजपा आप आपै।

—ह. पु वा.

बंधव—देखो 'बंधु' (रू. भे.)

उ०—होय कै निकासी बनौ बंधवां समेत हल्यौ। ऊमल्यौ सांमुद्र सेनां हळीतौ उदार।

—बादरदांन दधवाडियौ

बधाणौ, बधावौ—देखो 'बधाणौ, बधावौ' (रू. भे.)

बधायोड़ौ—देखो 'बधायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बधायोड़ी)

बंधियोड़ौ—देखो 'बधियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बधियोडी)

बधेज—देखो 'बधेज' (रू. भे)

बध्या—देखो 'बध्या' (रू. भे.)

बध्याचळ, बध्याचळि—देखो 'विध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—करपूर काबेरी तीरि, कुंकुम कास्मीरि, चंदन मलयाचलस गि, कस्तूरी कुरगि, गजराज बंध्याचलि, मोती अयकुंजरि। —व. स

बध्यापणौ—देखो 'बांझपणौ' (रू. भे.)

बनर—देखो 'बानर' (रू. भे.)

बनरमाळ—देखो 'बादरमाळ' (रू. भे.)

उ०—बणी ग्रहि बनरमाळ सुबिंद।

—रामरासौ

बनोलौ—देखो 'बदोळी' (रू. भे.)

बन्न—देखो 'वरण' (रू. भे)

उ०—मारुवणी मुंह-बन्न, आदित्ता हू उज्जळी। सोइ आम्बउ सोवंन, जो गळि पहिरउ रूपकउ।

--ढो. मा.

बंबर—देखो 'वानर' (रू. भे.)

बबाळी—देखो 'बबाळी' (रू भे.)

बंबि, बबी—देखो 'वंबी' (रू. भे.)

उ०—गुर का मबदळ भौरा जगायबा। सरप बंबि तजि अगम लहो ज.यिबा।

— ह पु वा.

बम—१ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे) (जैन)

२ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

बंभर, बंभार—देखो 'बबार' (रू. भे.)

उ०—फर फाटस नाह सनाह फडै। भाभलोड बंभार करंत भडै।

—पा. प्र.

बंभि, बंभी—देखो 'बंबी' (रू. भे.)

बंवक—देखो 'बंबक' (रू. भे)

बंवाळी—देखो 'बबाळी' (रू. भे.)

बंस—स. पु [सं. वंश] १ किसी जीव, प्राणी या मनुष्य की संतान परम्परा, कुल, खान्दान, गोत्र।

उ०—१ सीह-छतीमी सांभळै, छाकै बंस छतीस। 'बांकै' पाटी बीर रस, वरणी विसबावीस।

—बां. दा.

उ०—२ देवी गाजता देतता बंस गमिया। देवी नवै खंड त्रिभुवन तूझ नमिया।

—देवि

२ सतान, संतति, परिवार।

उ०—हिव एकु अम्ह मानु, दियउ बिहुं पखउ तुं छडि। कउरव बस विणासिया, काई कूडु म मांडि।

—प. पं च.

३ बेडा।

४ समुदाय, समूह।

५ रीढ की हड्डी, मेरुदंड।

६ खड्ग के बीच का भाग जो अधिक चौडा होता है।

७ युद्ध की सामग्री।

८ गांठ।

९ गन्ना, ऊख।

१० साल का पेड।

११ शहतीर, बल्ला, लट्ठा।

१२ पुष्प, फूल।

१३ विष्णु का एक नाम।

१४ पुरुषो की बहत्तर कलाओं मे से एक। (व.स.)

१५ वस लोचन।

१६ बारह हाथ का एक नाप।

१७ देखो 'वास' (रू. भे.) (नां मां.)

उ०—यौं चिता उद्वेगो, लगी अगग बंस धामाणं। —रा. रू

१८ देखो, 'वंसी' (मह, रू. भे.)

उ०--तंनी ताल टबक्कडा, मद्दल बंस विसाल। निरति करइ नव रागमा, माडी मस्तक थाल।

—मां. का. प्र.

रू.भे.—वस, वास।

अल्पा.—बंसौ।

बंसक—वि. [स. वश+अ क] बंश का, वंश मम्बन्धी।

स पु [सं वशक] १ बास का पेड।

उ० - सू डाळा आलम ठल्ल सिरै। नग्राविध बंसक नदगिरै।

—गु रू. ब.

२ बांस की गाठ।

३ अगर की लकडी ।

४ मछली ।

रू. भे.—वसक ।

वंसकर—स. पु. [सं. वंशकर :] जिस से किसी वंश, कुल या गोत्र का प्रारंम्भ होता हो, मूल पुरुष ।

वंसकार-सं. पु.—राजवर्ग विशेष

उ०—कवि काठीया, मसूरिया, दीवटीया उपाध्याय बद्दकार करडिकार आलविणिकार वीणाकार **वंसकार** आउज्जी पखाउजी पास्वात्यपखो तारकिक ज्योतिसी वैद्य महावैद्य । —व.स.

वसछेतर-सं.पु. [स.वंशछेतृ] १ किसी वंश का अंतिम पुरुष ।

२ एक सर्प विशेष । (शेखावाटी)

रू. भे.—वसछेतर ।

वसज—स. पु. [स. वंशज .] जो किसी कुल, वंश या गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो, सतान, सतति, औलाद ।

वि.—बास का बना ।

रू. भे.—वसज ।

वसजा—स स्त्री. [स. वशजा] १ कन्या, पुत्री ।

२ वंसलोचन ।

वंसधर-सं. पु. [स. वशधर] १ वश-परंपरा व वश की मर्यादा को धारण करने वाला, वशज । वंश की मर्यादा को उज्ज्वल करने वाला ।

२ सन्तान, सतति ।

रू. भे—वंसोधर, वसोधर,

वंसनास-सं. पु. [सं. वशनाश] १ शनि और राहु का सूर्य के साथ एक लग्न में पड़ने, विशेषत पचम लग्न मे पड़ने पर होने वाला एक योग जो वंश—नाश का कारण माना जाता है। (फलित–ज्योतिष)

२ एक भयकर विषैला सर्प जिसके किसी एक व्यक्ति को काटने से शनै-शनै उस (व्यक्ति) के पूर्ण वश का नाश हो जाता है ।

वंसपरिपाटी-स. स्त्री. [स. वश+परिपाटी, वंशपरम्परा] १ वश की मर्यादा, गौरव ।

उ०—राज्य-द्रग-दुरग-देस वैभवज सुख हेय । राखी अठ वसपरिपाटी की प्रभत्ता को । —बालाबक्ष बारहठ

२ क्रमश: चलने वाली वश-परपरा, पीढी, शृ खला ।

वसवख—देखो 'वंसवृक्ष' (रू. भे.)

वसभाई-स. पु. [स. वंश+भ्रात.] कुटुंबी, सम्बन्धी, बधु, बाधव, सगोत्री ।

रू. भे.—वसभाई ।

वंसरी, वंसली—१ देखो 'वंसी' (रू. भे.)

उ०—गावणहार मांडइ (म) र गाई । रास कइ (सम) यइ वसली वाई । —वी. दे.

२ देखो 'वसावळी' (रू.भे.)

३ देखो 'बासरी' (रू. भे.)

वंसलोचण, वंसलोचन-स. पु [सं. वंशलोचन] लम्बी पोर वाले बड़े बांसों की गांठो को जलाने पर निकलने वाला बांस का सार भाग जो सफेद रंग के छोटे छोटे टुकड़ों के रूप होता है । वश-शर्करा, वशकपूर ।

रू भे.—वंसलोचन ।

वसवक्ष-सं. पु. [स. वशवृक्ष] १ किसी वश का, उसके मूल पुरुष मे से लेकर परवर्ती वशजो का, वृक्ष के रूप मे, बनाया हुआ रेखा चित्र या नक्शा ।

२ किसी वंश का क्रमश. दिया गया, विवरण ।

रू.भे.—वसव्रक्ष, वसव्रख ।

वसस्थ-स. पु [स. वशस्थ] बारह वर्णों का एक वर्ण-वृत ।

रू. भे —वसस्थ ।

वंसा-स पु.—१ शकरि प्रभा नामक नर्क । (जैन)

२ देखो 'बास' (रू. भे.) रू भे. वसा ।

वसावळियौ—देखो'वसावळियौ' (रू.भे.)

वसाळी—देखो 'वसावली (रू. भे.)

वसावळियौ— देखो 'वंसावळीयौ' (रू. भे.)

वंसावली—स. स्त्री. [सं. वशावली] १ किसी वश या कुल मे उत्पन्न व्यक्तियो की पूर्वोत्तर क्रम से सूची, विवरण ।

उ०—१ वसिष्ठ कहै वसावळी, राज ख्यात दसरथ । —रामरासौ

उ०—२ पाछलै पानै वसावळी छै । —नैणसी

२ वस, कुल, गोत्र ।

रू. भे.—वसावळी, वसळी, वसाळो वासावली ।

वसावळीयौ—स. पु. [स. वश+राज आवळियौ] वशगुरु, कुलगुरु ।

वि.—वंश का, वश सम्बंधी ।

रू भे.—वंसावळियौ, वसावळीयौ, वंसावळियौ, वंसावळीयौ, वसावळियौ ।

वंसि, वंसी—वि [सं. वंशी] किसी वश विशेष मे उत्पन्न । वश का ।

उ०—१ लागउ पाय माजीया आसू, जगणी दीइ असीस । **वंसि** अम्हारइ तुं अजरामर, प्रतिपे कोडि वरीस । —कां. दे. प्र.

उ०—२ वसि तू सूर वसि मू पीक । नेजे सू बह घातउ निभ्रीक —रा. ज. सी.

उ०—छतीस वस राजकुळी सिरोमणि सूरज **वंसी** राजान मारवाड़ि

रा नव कोटांरी ठकुराई अक्षबोळ राज पदी भोगवै ।
—रा. सा. स.

सं. स्त्री.—१ बांस की नलिका में छेद करके (स्वर बनाकर) बनाया हुआ एक बाजा जो मुंह से फूंक हाथ की अंगुलियों द्वारा बजाया जाता है। मुरली, बांसुरी ।

उ०—१ लिसा बैंण सीमंडळ जंत्र ताल । सहनाय बंसी अनै सीस ढाल । —रा. रू.

उ०—२ दोय बजावइ ताल दोय वीणा बंसी, दोय बजावइ बांसली ए । —स. कु.

२ रक्त वाहिनी सिरा, नस ।

३ चार कर्ष या आठ तोले का एक मान ।

४ वंशलोचन ।

५ घोड़े का नथुना ।

रू. भे.—बंसरी, बंसली, बंसी, बनसी, बांसरी, बांसळी, बांसुरी, बांसुळी, बंसरी, बंसीय, बंसु, बंसू, बनसी, वांसरी, वांसी, वांहली ।

मह.—बंस, वंस ।

बंसीधर, बंसीधरण, बंसीधारी— स. पु. [सं. वंशीधर वंशीधारिन्] १ श्रीकृष्ण । (अ.मा.)

उ०—बंसीधारी ब्रज वासी विहारी । —पि. प्र.

२ ईश्वर । (नां.मा.)

वि.—बंसी बजाने वाला ।

रू. भे.—बंसीधर, बंसीधरण,

बंसीय— देखो 'बंसी' (रू.भे.)

बंसीबट— स. पु. [सं. वंशीवट] वृन्दावन का वह वट-वृक्ष जिसके नीचे बैठ कर श्रीकृष्ण बांसुरी बजाया करते थे ।

रू. भे.—बंसीवट, बंसीवट

बंसीवाळौ—स.पु.— १ श्रीकृष्ण ।

उ०—गायां ग्वाळौ कानौ काळौ बंसीवाळौ वेहारी । —पि प्र.

२ वह जिसके पास बंसी हो ।

बंसु, बंसू—देखो 'बंसी' (रू भे.)

उ०—सुरताळा विवसणी, घणी लगी आयासां । नह सुणिजै नीसाण, बंसू बाजी वरहासां । —गु. रू. बं.

बंसै—देखो 'बासे' (रू. भे)

उ०—तद राणी कही बानै बं वास्तै बंसै राखिया हुता सु विद्या सीखो क नहीं —चौबोली

बंसोधर—देखो 'बसधर' (रू. भे.)

उ०—मिणधर मेळ कमळ मह-मेहणा, बाच बंसोधर दे चलणा । —नैणसी

बंसौ—१ देखो 'बांस' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बंसौ बधति बहुमं, अतर गति गठि बेध उतपन्नौ । सजोगि अगनि पतगौ, प्रजळयं अप मज्झेण । —गु. रू. बं.

२ देखो 'बंस' (अल्पा, रू. भे.)

ब—स. पु. [स] १ वर्ण । २ वायु, पवन, हवा । ३ बाण, तीर । ४ शिव । ५ उपमा । ६ सुखी । ७ अव्यय । ८ अर्थ ९ वरुण देव । १० समुद्र । ११ राहु का नाम । १२ कल्याण मंगल । १३ सांत्वना । १४वृष्टि साधन । १५ बस्ती । १६ वास, निवास । १७ सम्बोधन । १८ मंत्रणा । १९ बाहु २० वस्त्र । २१ शार्दूल । २२ चीता । २३ कलश से उत्पन्न ध्वनि । २४ वदन । २५ वृक्ष । २६ मूर्वा-लता । २७ अस्त्र । २८ खड्गधारी पुरुष । २९ सेरकी नामक कद । ३० जल-कंद, शालूक । ३१ मद्य । ३२ प्रचेता । (एका.)

अव्य [फा.] १ और, तथा ।

सर्व.—२ 'वह' का सक्षिप्त रूप ।

बअ—देखो 'वय' (रू. भे.) (जैन)

बइंगण, बइगणीउ, बइंगणु—सं. पु.—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—पटसाउल मेघाडबर सञ्जारावउ रावेटउ कणवीर सोवन-कल्लेउ मनेत्र नीलउ नेत्र रात कडाहउ बइगणीउ कल्ही...। —व. स.

२ देखो 'बेंगण' (रू. भे.)

बइ देखो 'वय' (स. भे.) (जैन)

बइड—देखो 'वितड' (रू. भे.)

उ०—तिम्रा चोपडे तेल सिंदूर तन्नं, बइंडां वणावं घणू स्याम वन्न । नोड़ी भीडिम्रां अंग लग्गा निहंगं, जटाजूट सञ्जाह जे कोड जगं । —वचनिका

बइअर—देखो 'वैर' (रू. भे)

देखो 'वैर' (रू. भे.)

बइठणौ, बइठबौ - देखो 'बैठणौ, बैठबौ' (रू. भे.)

उ०—माक वइठी सेज-सिर, प्री मुख देखइ तास । पूनिम-केरे चद ज्यू, मंदिर हुवउ उजास । —ढो. मा.)

बइठियोड़ौ—देखो 'बैठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बइठियोड़ी)

बइठुवौ, बइठुबौ—देखो 'बैठणौ, बैठबौ' (रू. भे)

उ०—रूखमइयौ नइ राजा भीमक, मन्त्र करेवा बइठा ।

—रुकमणी मगळ

वइठियोड़ौ — देखो 'वैंठियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वइठियोडी)

वइण—१ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—स्री संखेस्वर 'पास' जी रे लो, सुणि वाल्हा दोइ **वइण** रे सनेही। —वि. कु.

२ देखो 'वहन' (रू. भे.)

वइताळ—देखो 'वैताळ' (रू. भे.)

उ०—कानि कुंडल सिरि मुगट, मुत्ताहलि गलि माल। दिव्य वस्त्र दीसइ भलां, वीर जिके **वइताल**। —मा. का. प्र.

वइवउ—देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्मा वीणा वाइ, पवन बुहारइ, गणपति गादह चारइ, कृतांत कोट राखइ, सनीस्चर रसोइ चाखइ, मगल स्रीखंड घसइ, बुध सौनउ कसइ, अठार भार वनस्पति फूलपगर भरइ, धन्वंतरि **वइवउ**'''करइ। —व. स.

वइन—देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—त्यु सदुपदेस विसेस दे कइ विमल गकइ **वइन**। बूझव्यौ सो रहनेमि विसयी गई जहा यदुपति सदन। —वि. कु.

२ देखो 'वहन' (रू. भे.)

वइर—१ देखो 'वैर' (रू. भे.)

उ०—चउड रा **वइर** ले चतुरंग देवरा मारि ढाहिय दुरंग।

—रा. ज. सी.

२ देखो 'वैरी' (रू. भे.)

उ०—पाखरि पलाणि काळउ पहाड। वरिजाग चडिय **वइरां** विभाड —रा. ज. सी.

३ देखो 'वैर' (रू. भे.)

वइरहमांण—देखो विरहमाण (रू. भे.)

वइरसेन—देखो 'वीरसेन' (रू. भे.)

वइराग—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—१ जेती जउ मनमाहि, पजर जइ तेती पुळइ। मनि **वइराग** न थाइ, वालभ वीछुडिया तणी। —ढो. मा.

उ०—२ आगइ वार बिच्यारि हराव्या, तुरकि न लाधउ लाग। मोटे राजि लाज भ्रम्ह आवी, एहवु हुईइ **वइराग**। का. दे. प्र.

उ०—३ चित्त विचारि समाचरइ रे लाल, वलि मरकट **वइराग** रे। —वि. कु.

वइरागर—स. पु.—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—जादर हीरागर **वइरागर** फूलपगर चीर वलगार चुतार पीताबर चादर रत्ताबर, नेत्राबर...............। —व. स.

रू. भे.—वयरागर, वयरागरि।

२ देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

उ० उडीसा रौ नइ नाहूलौ, चीण भोट बभेरी। गवड देस **वइरागर** सागर, जाळधर भभेरी। —रुकमणी मंगळ

वइरागी—देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

उ०—१ माली तबोली हरमेखलीया जोगी भोगी **वइरागी** नट विट सुट खरड लाठा रगाचार्घ.........। —व. स.

उ०—२ **वइरागी** चित्त विस्तरइ, रामा सू पि राग। कारत कांटे काकरि, पुलतु अणूहाणि पाग। —मा. का. प्र.

वइराट—१ देखो 'विराट' (रू. भे.) (व. स.)

२ देखो 'वैराट' (रू. भे.)

वइरि, वइरी—१ देखो 'वैरी' (रू. भे.)

उ०—१ **वइरियां** तणइ सिरि मिरी वाटि। पह मलइ कूंभ वइसारि पाटि। —रा. ज. सी.

उ० २ साद करैं किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्के पाव। सयणे घाटा वउळिया, **वइरि** जु हूआ वाव। —ढो. मा.

२ देखो 'वैर' (रू. भे.)

३ देखो 'वैर' (अल्पा रू. भे.)

वइवस्तु—देखो 'वैवस्वत' (रू. भे.)

उ०—सुत कासिप सूरज तप असाधि। **वइवस्तु** सूर सुत तेज वाधि। —सू. प्र.

वइस—देखो वैस्य' (रू. भे.)

उ०—वाणिज्य **वइस** फबि जेण वेर। कोटेक जाण वप धर कुमेर। —सू. प्र.

वइसणौ, वइसबौ—देखो 'वैठणौ, वैठबौ' (रू. भे.)

उ०—कणक सिहासण स्वामी **वइसण**। —स. कु.

वइसनव—देखो 'वैस्णव' (रू. भे.)

उ०—**वइसनव** ध्यान केवल वियाप। छक प्रेम त्रलिसिका तिलक छाप। —सू. प्र.

वइसाख—देखो 'वैसाख' (रू. भे.) (उ. र.)

वइसाणौ, वइसाबौ—देखो 'वैठाणौ, वैठाबौ' (रू. भे.)

उ०—अपराजित चडि चाल्यौ राम। ली अस्त्री अरधग **वइसाय**। —वी. दे.

वइसायोड़ौ—देखो 'वैठायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री 'वैठायोडी' (रू. भे.)

वइसाह—देखो 'वैसाख' (रू. भे.)

उ०—सब्वे भला मासडा, पण **वइसाह** न तुल्ल। जे दवि दाधा रूखड़ा, तीहं माथइ फुल्ल। —रा. सा. सं.

बइसियोड़ो—देखो 'बैठियोडो, (रू. भे)

(स्त्री. बइसियोडी)

बइहनडो · देखो **'बहन'** (अल्पा., रू. भे)

उ०—भूरइ रा **बइहनडी** अकन कुवार। महाबन भूरई राई साथार।
—बी दे

बइहरमांण—देखो 'विरहमाण' (रू. भे.)

बई—देखो 'बई' (रू. भे.)

उ०पछै आ वात रावळ मालजी रै हुजूर हुई जु साथ रै **बई** एक जरपूत रजपूताणी छोडी। —नैणसी

बईग्रर—१ देखो 'वहीर' (रू. भे.)

उ०—दलं कबीला देसने, **बईग्रर** कीधा वेग। साथै बखव सातही, तिकै उरस री तेग। —वी. मा.

२ देखो 'बैर' (रू. भे.)

बईकुंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

बईजयती—देखो 'वैजयती' (रू.भे) (अ मा)

बईदराज - देखो 'वैदराज' (रू. भे)

उ०—**बईदराज** के विसाल, ग्रोखधी उपाइक। तई रसायणी स्वधातु, स्वच्छय रसायक। —मू. प्र.

बइद्रभा—देखो विदरभा (रू भे)

उ०—बळिभद्र बधव तेडीयोजी, बीजउ प्रमनकुमार। **बईद्रभा** नयरी वीवाह छइ जी, रहीय म लावो वार —रुकमणी मगळ

बईध्रत—देखो 'वैध्रत' (रू भे.)

बईयर—१ देखो 'बैर' (रू भे)

उ० **बईयर** बालै रूमणी सखि भार्ख देवी वाणि। —वि. कु.

२ देखो 'वहीर' (रू भे.)

बईर—देखो 'वहीर' (रू. भे)

उ०—दुख मेटण पोट कबीर घरा दिस। हाकळ कीध **बईर** हगे।
—भगतमाळ

बईस—देखो 'वेस्य' (रू. भे) (जैन)

बईसवण—देखो 'वैस्रवण' (रू. भे)

बउ—देखो 'बहू' (रू. भे.)

बउबंदोळी—देखो 'बहूबदोळी' (रू. भे)

बउरात—देखो 'बहुरात' (रू. भे.)

बउलण - १ देखो 'बोलण' (रू. भे)

२ देखो 'बोलणी' (रू भे)

बउळणौ, बउळबौ, बउलणौ, बउलबौ—देखो 'बोळणौ, बोळबौ' (रू.भे)

उ०—१ साद करै किम सुदुर है, पुळि पुळि धक्कै पाव। सयणे घाटा **बउळीया**, वइरि जु हूग्रा वाव। —ढो. मा.

उ०—२ ग्रभिलास द्राखन कउ समानत, मउज मानत लोग। वैसाख मइ वयसाख **बउलत**, कहा पीछइ भोग। —वि. कु.

बउलसरी—देखो 'बोलसरी' (रू भे.)

बउळाणौ, बउळाबौ, बउलाणौ बउलाबौ—देखो 'बोळाणौ, 'बोळाबौ' (रू. भे.)

उ०—सजणियां **बउळाइ** कइ, मदिर बइठी ग्राइ। मदिर काळउ नाग जिउ, हेलउ दे दे खाइ। —ढो. मा.

बउळायोड़ो, बउलायोड़ो—देखो 'बोळायोडो' (रू भे)

(स्त्री बउळायोडी)

बउळावणौ, बउळावबौ. **बउलावणौ, बउलावबौ**- देखो 'बोळाणौ, बोळाबौ' (रू. भे)

उ०—१ तन तणक्कइ पिउ पियइ, करहउ ऊगाळेह। भल **बउळावौ** दीहडा, दई वळावण देह। —ढो. मा.

उ०—२ कुती मुद्री जाइ **बउलावेवा** नदराह। —प प च.

बउळावियोड़ो—देखो 'वोळायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वउळावियोडी)

बउळावू बउळावौ—देखो 'बोळाऊ' (रू. भे.)

उ०—१ **बउळावू** सगळा विलविलइ, ढोलउ किउही पाछउ वळइ। साथी मारू दागण-भणी, घणु कहइ पति न रहइ धणी।

उ०—२ जिणि वेळा ढोलउ नीकळइ, केता **बउळावा** साथइ करइ। सोभ करेवउ इण वात रउ, पडिम्यइ रखै तुम्हा पातरउ। —ढो मा.

बउळियोडो, बउलियोड़ो—देखो 'बोळियोडो' (रू. भे)

(स्त्री० बउळियोडी, बउलियोडी)

बउलसिरी देखो 'बोलसरी' (रू. भे)

उ०—जइ सूकी तउ **बउलसिरी**, त्रूटी तउ मोतीसरी, अडभागउ तउ पारहउ, थाकउ तउ सेराह, जइ खाडउ तोइ **बग्र**... . ...।
- व स.

बऊ—देखो 'बहू' (रू भे)

बऊबदोळी—देखो 'बहूबदोळी' (रू भे.)

बऊरात—देखो 'बहुरात' (रू. भे.)

बएसा—देखो 'वेस्या' (रू. भे)

उ०—सभै खाडस स गार सुतनी। **बएसा** भूल चली रिखवनि।
—रामरासो

बक—देखो 'बक' (रू. भे.)

उ०—सुकवि तणैं सुवतार नूं, जिण मुख कुकवि प्रसंस। जळद अग्र वक देख जूं, व्है प्रख्यत्र कळहस। —बा. दा.

(स्त्री. वकी)

वकट—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—हले थाट दखणाद लग टळ तोप्रा हसत, खसत मद मीढ रा नरा खागा। मरट तिणवार राखी **वकट** मोसरा, सुपेती चोसरा तणी 'सागा'। —सग्रामसिंह सक्तावत री गीत

वकणौ, वकबौ—देखो 'बकणौ, बकबौ' (रू भे.)

उ०—१ बांणा बाण बाजै गोळा चोसरा सवीर **वकै**, वाहा हार मीठ माजै छाजै पखां बोळ। जठी-तठी भार पडै मीरजा ग्रोहटै जठी, तठी-तठी राजा ग्राडौ ग्रोडजै सतोळ। —ग्रमरदास बारहठ

उ०—२ ग्रवळी बयण ग्रहीर, उठतैं तेहिज ग्राखियौ। **वकियौ** मैं पिण वीर, वात न जाणी वीभरा। —वीभरै ग्रहीर री वात

वकणहार, हारौ (हारी), वकणियौ—वि०।

वकियोडौ, बकियोड़ौ, वयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वकीजणौ, वकीजबौ—कर्म वा०।

वकत—१ 'वक्त' (रू. भे.)

२ देखो 'बखत' (रू भे)

वकतर—१ 'देखो 'वकत्र' (रू भे.) (डि को)

२ देखो 'बखतर' (रू. भे)

वकतरियौ—१ देखो 'बखतरियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बखतर' (ग्रल्पा रू भे.)

वकता—स. स्त्री [सं वक्तृ] १ जिव्हा, जीभ, रसना। (ह ना मा)

रू भे.—वगता।

२ देखो 'वक्ता [रू भे]

उ०—सकल प्रताप सुरसरी, हरिपद रुद्र सहित। सुरता राम सुमित्रसुत, **वकता** विसवामित्र। —रामरासौ

वकतावर—देखो 'बखतावर' [रू. भे.]

वकत्र—सं पु. [सं. वक्त्र] १ मुख, मुंह, वदन। [ग्र. मा.]

उ०—देवी भाव स्वादे हसंतं **वकत्रे**। देवी पाणपाणा पिये मद्य पत्रे। —देवि

२ जानवरो का थूथन।

३ पक्षियो की चोच।

४ ग्रग्रभाग या नोक।

५ ग्रारम्भ।

६ ग्रनुष्टप छंद।

७ जिव्हा, जीभ।

रू. भे.—बकत्र, वकतर।

वकपचक—देखो 'बकपचक' (रू. भे)

वकफ—स. पु. [ग्र. वक्फ] १ देवी-देवताग्रों या ईश्वर को भेंट करने ग्रथवा धार्मिक कार्यों के लिये दान या उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति या वस्तु।

२ उक्त प्रकार का उत्सर्ग या भेंट करने की क्रिया।

३ दान।

४ वर्षात मे छत के टपकने या चूने की ग्रवस्था।

५ दो घटनाग्रो के बीच का समय, विराम, मध्यान्तर।

६ फुरसत, ग्रवकाश, छुट्टी।

७ देर, विलम्ब।

रू. भे —वक्फ।

वकफनामौ—स पु. [ग्र वक्फनाम·] दान या उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति या वस्तु का दान-पत्र।

रू. भे —वक्फनामौ।

वकबाद—देखो 'बकवाद' (रू भे)

वकबादी—देखो 'बकवादी' (रू. भे)

वकवादी—देखो 'बकवादी' (रू भे)

वकर—सं. पु.—१ बलिदान, वध।

उ०—उठै देवी ग्रागै भैसौ **वकर** करण नू तयार कियौ छै। —नैणसी

२ देखो 'वक्र' (रू भे.)

उ०—तरण तप जुळण ग्रगीट रा मरोतर, सत्रा रिण रीठ रा खगा सालै। कर मकर कर घीट रा वचन ना काढै, चकर ग्रणदीठ रा **वकर** चालै। —महाराजा मानसिंह जी री गीत

वकरगति, वकरगती—देखो 'वक्रगति' (रू. भे)

वकरगामी—देखो 'वक्रगामी' (रू. भे.)

वकरगुल्क—देखो 'वक्रगुल्फ' (रू. भ)

वकरणौ, वकरबौ—देखो 'बकरणौ, बकरबौ' [रू. भे.]

उ०—डायण चढी जिया परि डकरै। वाणी विकट भयकर **वकरै**। —सू. प्र.

वकरवस्टी—देखो 'वक्रद्रस्टि' (रू. भे.)

वकद्रस्ट—देखो 'वक्रद्रस्ट' (रू. भे.)

वकरद्रस्टी—देखो 'वक्रद्रस्टि' (रू. भे.)

वकरपूछ—देखो 'वक्रपुच्छ' (रू. भे)

वकरांग—देखो 'वकाग' (रू. भे.)

वकराणौ, वकराबौ—देखो 'बकराणौ, बकराबौ' (रू. भे.)

वकरायोड़ौ—देखो 'बकरायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. बकरायोडी)

बकरियोड़ो—देखो 'बकरियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बकरियोडी)

बकरी—१ देखो 'वक्री' (रू. भे.)

२ देखो 'बकरौ' (रू. भे)

बकरोगति—देखो 'वक्रोक्ति' (रू. भे.)

बकरौ—देखो 'बकरौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बकरी)

बकळ—१ देखो 'विकळ' (रू भे)

उ०—करि भग बकळा हुआ रीस जळाकरी, अर्ग अकळा करी भगत अमळा। करी चक्रवाह तन ग्राह तडळा करी, करी राखण गयौ घरी कमळा। —हुकमीचंद खिडियौ

२ देखो 'व्याकुळ' (रू. भे.)

३ देखो 'बकळ' (रू. भे.)

बकवाद—देखो 'बकवाद' (रू. भे.)

उ०—सुक-पिक लगै सवाद, भल थोडौ ही भाखणौ। अथा करै बकवाद, भेक लवै ज्यूं 'भैरिया'। —रतलाम नरेस बळवंतसिंह

बकवत, बकवस्ति—देखो 'बकवस्ति' (रू भे.)

बकसणौ, बकसबौ—देखो 'बकसणौ, बकसबौ (रू. भे.)

बकसियोड़ो—देखो 'बकसियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री बकसियोडी)

बकांण, बकांन—१ देखो 'बखाण' (रू. भे.)

२ देखो 'बकायन' (रू. भे.)

बकाई—देखो 'बकाई' (रू. भे.)

बकाईण, बकायण, बकायन—देखो 'बकायन' (रू. भे.)

उ०—अरक आउल तिणासिरा, सिम रोहिडौ रोहिण। इद्रोख अबरस आसिद्रौ, अरम्यंज बकाईण। —रुकमणी मगळ

बकार—देखो 'वाकार' (रू. भे.)

बकारणौ, बकारबौ—देखो 'वाकारणौ, वाकारबौ' (रू. भे)

उ०—१ बार हजार बगाळ, 'विलद' तिण वार बकारै। करि कबांण टकार, घाव सामा पग धारै। —सू प्र.

उ०—२ नाई री आ बात राजाजी रै ई सोळै आना हीयै ढूकी। बोल्या - हा, आ बात तौ थारी साव साची। पोहरौ देवणीया टाळ तौ वो किणी नै बकारिया ई नी। —फुलवाड़ी

उ०—३ उडै रीठ अणपार, पीठ लगा लाखा पिसण। वेढ़ीगार बकार पैठो उदियाचळ 'पतौ'। —अज्ञात

बकारणहार, हारौ (हारी), बकारणियौ—वि०।

बकारिओड़ो, बकारियोड़ो, बकारयोड़ो—भू० का० कृ०।

बकारीजणौ, बकारीजबौ—कर्म वा०।

बकारियोड़ो—देखो 'वाकारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बकारियोड़ी)

बकाळ—१ देखो 'बक्काल' (रू. भे.)

उ०—बिसायती बकाळ और सहर के लोग, इस वजह से गुजारा करै। केतेक भाड़मूंजे केतेक भीख माग पेट भरै। —दुरगादत्त बारहठ

२ देखो 'वकील' (रू. भे.)

वकालत—सं. स्त्री. [फा.] १ न्यायालय या कचहरी में किसी मुकद्दमे मे किसी की तरफ से की जाने वाली बहस, पैरवी या अभिभाषण।

२ वकीलों का कार्य व व्यवसाय।

३ किसी का स्थानापन्न होकर किया जाने वाला कार्य या उसके पक्ष का मडन।

वकालतन—क्रि. वि [फा.] वकील के द्वारा, वकील के जरिये।

वकालतनांमौ—सं पु [फा. वकालतनाम] किसी न्यायालय या कचहरी मे किसी के मुकद्दमे पर विधिवत बहस या अभिभाषण करने का अधिकार-पत्र या प्रमाण-पत्र।

बकासुर—देखो 'बकासुर' (रू. भे)

बकी—देखो 'बकी' (रू भे)

वकील—सं पु [फा.] १ वह व्यक्ति जो कानून की परीक्षा पास हो और जिसको न्यायालय या कोर्ट मे किसी मुकद्दमे की बहस या कार्यवाही करने का अधिकार पत्र प्राप्त हो।

२ किसी के कार्य में उसके प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति।

३ सदेश वाहक, दूत।

४ किसी के पक्ष को युक्तियुक्त अभिवाचन करने वाला व्यक्ति।

रू. भे.—बकाल, बक्काल, वकाल, वक्काल।

बकुल—देखो 'बकुल' (रू. भे.)

उ०—अन्न उदक पय परिहरी, आभरण अवेसि। बकुल-त्वचा वीटि करि, तरुणी तापस वेसि। —मा. कां. प्र.

वकूअौ—सं. पु. [अ. वकूआ] १ प्रकटीकरण।

२ देखो 'वाकौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बाकौ' (रू. भे)

४ देखो 'वाकियौ' (रू. भे)

वकूफ—१ देखो 'वाकिफ' (रू. भे.)

२ देखो 'वेवकूफ' (रू भे.)

बक्कलाण—१ देखो 'बकला' (रू. भे.)

उ०— हा हा दसम कालबलु, खल वक्कसण ओइ । नांमेगिह सुवि-हिय तणइ, मित्तु वि वयरीय होइ । —षष्टि शतक-प्रकरण

वक्कर—१ देखो 'वकरौ' (मह, रू भे.)

२ देखो 'बकर' (रू. भे)

३ देखो 'वक्र' (रू. भे)

उ०—तब राकस रूपै रवौ, ददुर पग धूजवै । हुँकार वक्कर हुल-सीयौ, कुवर खडग करि पूजवै । —रींमालू री बात

वक्करणौ, वक्करबौ—देखो 'बकरणौ, बकरबौ (रू भे.)

उ०— अचळेस कहै अहमद्द-सूं, वदै न कथयण वक्करै । पतसाह पुत्री परणी नही, कवर वीर करिणयागरै । —अ. वचनिका

वक्कराणौ, वक्करावौ—देखो 'बकराणौ, बकरावौ' (रू. भे.)

वक्करायोड़ौ—देखो 'बक्करायोडौ' (रू भे)

(स्त्री. वक्करायोडी)

वक्करियोड़ौ—देखो 'बकरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वक्करियोड़ी)

वक्काल—देखो 'बक्काल' (रू भे)

वक्त—स. स्त्री. [अ.] १ समय, काल, वेला ।

मुहा.—१ वक्त काटणौ=समय गुजारना, किसी तरह निर्वाह करना । २ वक्त गमाणौ=समय नष्ट करना । ३ वक्त री चीज=समयानुसार मिलने वाली चीज, ऋतु के अनुसार गाना या राग ।

२ किसी कार्य का उपयुक्त समय, अवसर मौका ।

मुहा —१ वक्त पर=समय पर, यथा समय । २ वक्त रा बाया मोती नीपजै=समय पर किया काम उचित लाभ देता है । ३ वक्त हाथ सूं गवाणौ=अवसर चूकना, मौके का फायदा न उठाना ।

३ विशिष्ट कार्य के लिये निश्चित किया हुआ समय ।

४ पल, घड़ी, दिन । (ज्योतिष)

५ किसी कार्य मे लगने वाली समय की मात्रा, विलब, देर ।

६ अवकाश, फुरसत, टाइम ।

७ मृत्यु का समय, मौत की घडी ।

रू. भे —बकत, बखत, बख्त, बगत, वकत, वखत, वखत्त, वख्त, वगत ।

वक्तव्य—वि. [स.] १ व्यक्त करने योग्य, निरूपण करने योग्य ।

२ वह जिसके लिये कुछ व्यक्त किया जावे, कहा जावे ।

सं. पु.—१ किसी घटना विशेष या विषय विशेष पर, लोगो की जानकारी के लिये दिया जाने वाला लिखित या कथित स्पष्टीकरण, मन्तव्य, टिप्पणी ।

२ वक्ता का कथन,

वक्ता—वि. [स. वक्तृ] १ कहने या बोलने वाला, भाषण देने वाला ।

२ जो किसी बात या घटना को ठीक ढग से व्यक्त कर सकता हो, कह सकता हो, भाषण पटु ।

स पु.—१ कहने, बोलने या भाषण देने वाला व्यक्ति ।

२ उपदेशक, शिक्षक ।

३ पठन पाठन करने, स्तवन करने व उच्चारण करने वाला व्यक्ति ।

उ०—उज्जीण नगरी रै माही देव सरमा नामे बिरांमण निवास करै । उवौ च्यार वेद रौ वक्ता, सठ सास्त्र रौ जाण हार, बडौ पडित थौ । —साई री पलक री बात

४ विद्वान, पण्डित ।

रू. भे —बकता, वकता, वखता, वगता ।

वक्फ—देखो 'वकफ' (रू. भे)

वक्फदार—वि. [फा.] वक्फ प्राप्त करने वाला ।

वि. वि.—जिस प्रकार भविष्य मे की जाने वाली सेवा के लिये जागीरदारो को जागीरें दी जाती थी उसी प्रकार पिछली जानदार सेवा या कार्य करने के बदले पेंशन के तौर पर अथवा पहलवानो, विद्वानों, कलाकारो आदि को जीवन-यापन के लिये जागीरें दी जाती थी उन्हे वक्फ कहते थे । अतः उक्त प्रकार की जागीर प्राप्त करने वाला ।

वक्फनांमौ—देखो 'वकफनामौ' (रू. भे.)

वक्र—वि. [स.] १ सीधा का विपर्याय, डेढा, तिरछा बांका ।

२ झुका हुआ, मुडा हुआ, नत ।

३ घुघराला, छल्लेदार, गोल-मटोल ।

४ कुटिल, धूर्त, बेईमान, छलिया ।

५ निष्ठुर, बेरहम ।

६ दीर्घ । (छन्दशास्त्र)

स. पु —१ मुख्र । (ह. ना. मा.)

२ रुद्र ।

३ मगल ग्रह

४ शनि,

५ त्रिपुर-नामक राक्षस, त्रिपुरासुर ।

६ नदी का मोड ।

७ प्रथम गुरु के रगण का नाम (र. ज. प्र.)

रू. भे —बक बक्र, बाकौ, वंक, वकनि, वकेण, वंक्रत, वक, वक्कर ।

वक्रकोटी–स. पु. - एक वस्त्र विशेष।

उ०—पीत पट्ट, राजपट्ट, गजवडि, हसवडि, बोरिम्रावडी, ऊमावडि, मूमावडि, पूमावडि, सिलहटी, कपूरीया, चउकपडीया, पोतिया, **वक्रकोटा** नागवटा'''। —व. स.

वक्रगति, वक्रगती–वि. [स. वक्रगति] १ जिसकी गति तिरछी हो, टेढी चाल चलने वाला।

२ जिसके म्राचार-विचार व व्यवहार सीधा-सादा न हो।

३ विपरीत दशा मे चलने वाला।

४ कुटिल।

स. पु.—१ सूर्य से पाचवे, छठे, सातवें व म्राठवें ग्रह। (ग्रह लाघव)

वि. वि.—मगल ३६ दिन, बुध २१ दिन वृहस्पति १०० दिन, शुक्र १२ दिन म्रौर शनि १८४ वक्री होते हैं।

२ मगल ग्रह।

३ सर्प, साप। (ह. नां. मा.)

रू. भे.—वकरगत, वकरगति।

वक्रगामी–वि. [सं. वक्रगामिन्] तिरछी चाल चलने वाला।

रू. भे.—वकरगामी।

वक्रग्रीव–सं. पु. [स. वक्रग्रीव] ऊंट।

वक्रता–सं. पु. [स.] १ वक्र होने की दशा या म्रवस्था।

२ टेढापन, तिरछापन।

३ साहित्य रचना की एक शैली जो रचना को सौन्दर्य व उत्कृष्टता प्रदान करती है।

रू भे – वक्कत्तरा।

वक्रति—देखो 'विकृति' (रू. भे.)

उ०—इम करतइ कूबड हवु भूप, कालु कुछिन म्रतिहि करूप। दैवगति म्राहवी सपनी, एवली वक्रति किहा थी ऊपनी। —नळ दवदती रास

वक्रतुंड–स. पु. [स. वक्रतुण्डः] १ गणेश।

२ तोता।

रू भे—बकतुड, बिकतड, विकतुड।

वक्रदस्ट्र–स पु [स. वक्रदंष्ट्र] सूम्रर, शूकर, वराह।

रू. भे.—वकरद्रंस्ट।

वक्रद्रस्टि–वि [स वक्रदृष्टि] १ जिसकी दृष्टि मे दुष्टता भरी हो, जिसकी दृष्टि पडने पर कुछ म्रमगल होता हो।

२ जिसकी दृष्टि मे क्रोध भरा हो।

३ मन्द, दृष्टि वाला।

४ ईर्षालु, डाही।

सं. स्त्री.—१ टेढी दृष्टि, तिरछी नजर।

२ क्रोध पूर्ण नजर।

३ मन्द दृष्टि।

४ ऐंचाताना।

रू. भे.—वकरदरस्टी, बक्रद्रस्टी।

वक्रपुच्छ–स. पु. [स.] कुत्ता, श्वान।

रू. भे—वकरपूछ।

वक्रांग–वि.—जिसका म्रग सीधा न हो, कूबड़ वाला।

स. पु.—१ हस।

२ चक्रवाक, चकवा।

३ सर्प, साप।

रू. भे.—वकराग।

वक्री–वि. [स. वक्रिन्] १ म्रपना मार्ग छोड कर विपरीत दिशा मे चलने वाला। (ग्रह)

२ टेढे मेढ़े म्रगो वाला।

३ क्रोधी।

४ विपरीत, उल्टा।

रू. भे.—बक्री, वकरी,

वक्रोक्ति–स. स्त्री. [स] १ एक काव्यालकार जिसमे काकुश्लेष से किसी वाक्य या बात का म्रोर का म्रोर म्रर्थ निकलता है।

२ चमत्कार पूर्ण कथन।

३ काकूक्ति।

रू. भे.—बक्रोक्ति, वकरोगति।

वक्रोदर—देखो 'व्रकोदर' (रू. भे)

वक्ष–स. पु. [स. वक्षस्] १ पेट म्रौर गले के बीच का भाग, छाती। सीना।

२ स्त्रियो के कुच, स्तन, चूंचियें व पुरुषो के स्तन चिन्ह।

रू. भे—बकम, बक्ख, बक्खल, बक्स, बच्छ, बछ, वख, वच्छ, वछ।

वक्षस्थल–स. पु [सं] १ छाती, सीना, उर-स्थल।

उ०—म्ररु म्रादमी तरवारा वाय मा'राज नूं छेड किया तो हेठै जादूराय मूवो लाधो वा कटारी सूधो हाथ मा'राज रौ जादूराय रै वक्षस्थल माया सू काढियो। —द. दा.

२ कुच, स्तन, चूचियां।

रू. भे—वच्छस्थ, वखिस्थळ।

वक्षोज–सं. पु [स. वक्षस्] १ छाती, सीना।

२ कुच, स्तन, चूचिया।

रू भे.—बक्षोज

वक्ष्मांण–वि. [स. वक्ष्यमारण] १ जो कहने योग्य हो, वक्तव्य, वर्णनीय

२ जो कहा जारहा हो।

बख—१ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—ग्रह दाटक थकां कमण भण ग्रेरै, जेरै कुण हासै बख जांण। काळ तणौ डेरै जावै कुण, फेरै कुंण थारा फुरमांण।
—ग्रासजी खिड़ियौ

२ देखो 'बल' (रू. भे.)

उ०-ग्रब बीकानेर सूं मूधडै रुघनाथ वा चोरडियै मांन जगरूपसिंघ बिहारीदास जी नूं इसी लिखावट करी थी कै मोहतौ थानूं मारण नूं ग्रादूणी सूं हुकम लेय नै ग्रायो है, सू थे घणा सैंठा रहज्यौ, तथा थारो बख लागै तो मुहतै नूं धरम-करम देय नै चूक कर मारज्यौ। —द. दा.

३ देखो 'वक्ष' (रू. भे)

बखड़ी—देखो 'बखडी' (रू. भे.)

बखत—१ देखो 'वक्त' (रू भे.)

उ०—१ पच बखत निम्माज ताज कुलराह सोहइ, खोजा खांन वजीर मलिक उबरै मन मोहइ। —व. स.

उ०—२ फौज तहव्वरखान री, ग्रावी ऊगै सूर। बखत वणी रिण सद्धरा, नरा खरा मुख नूर। —रा. रू.

२ देखो 'बखत' (रू भे.)

उ०—ताहरा पाखती ना लोक लीडी री मा नूं समभावण लागा हिवै तौ बीजौ परणीजसी कोई नहीं। इण रा बखत मे इसडी हीज लिखीयौ। —कावळौ जोइयौ नै तीडी खरळ री वात।

बखतवत—देखो 'बखतवत' (रू. रू)

उ०—विसम वाणि विसवाद, विमयरम ग्रगि न बाधइ, बखतवत वर विबुध वान दिन प्रति बाधइ। - ऐ. जै. का. स

बखतवडाळ—देखो 'बखतवडाल' (रू. भे)

उ०—तण केहर' मभमराव मागळराव तुगेम। भूपाळं भूपाळ भाटीवटी बखतवडाळ। —नैणसी

बखतबायरौ—देखो 'बखतबायरौ' (रू. भे.)

उ०—'बखता' बखतबायरा, ते मारचौ 'ग्रजमाळ'। हिंदवाणी रौ बादमा, तुरकाणी रौ काळ। —कविराजा करणीदान

बखतबिलंद—देखो 'बखतविलद' (रू. भे.)

बखतसर—क्रि वि —उपयुक्त समय पर, ठीक समय पर।

उ०—मोटा ताजा नै डील सारू खमाई रौ खोरसौ भौळावै। पोसणिया पीसै राधणिया रांधै बखतसर न्हावौ धोवौ ग्रर सिम्या सीम्ब री वाता साधै। —दसदोख

बखता—देखो 'वक्ता' (रू. भे.)

बखतावर—देखो 'बखतावर' (रू भे.)

उ०—धरम्यानै गिण तजि घरै, सहु बखतावर मीर। इद्र चेडा नै ग्रवगिणी, भयौ कौणिक री भीर। —ध. व. ग्र.

बखतावरी—देखो 'बखतावरी' (रू. भे.)

बखतावरू—देखो 'बखतावर' (रू. भे.)

उ०—विद्याधर वड बखतावरू महियान मै हो महिमा महिमाय।
—ध. व. ग्रं

बखती—देखो 'वगती' (रू. भे')

उ०—ताहरा राजा सो जैत ग्ररज करण लागौ, 'राज बंदे माहे कौण खांमी जु महाराज ग्रतरा (नाराज) हुवा ?' तद राजा जैत नूं कहीयौ" जू मै तौ थांनू सगळो ऊपर कीयौ थौ, तिको तूं बाहर चढ नै वाणीया रौ हणा बखतौ माल छोड ग्रायौ।
—जैतमाल प्रमार री वात

बखतैत - देखो 'बखतैत' (रू. भे.)

बखत्त—१ देखो 'वकत्र' (रू. भे)

उ०—सपदा विहीण खीर कन्यका सतोखियौ क, निसाभू मोखियौ क सुधा सै घणी नखत्त। राजियौ विसत्र' रौ सनह रोकियौ क, विजा 'किसन्न' रौ विलोकियौ बखत्त। —साहिबौ सुरताणियौ

२ देखो 'वक्त' (रू भे)

३ देखो 'बखत' (रू भे)

बखमी—देखो 'विसम' (रू भे)

उ०—जिय जावत धार विना जखमी। वनडा ग्राज वार घणा बखमी। —पा. प्र.

बखर—देखो 'भखारी' (मह, रू. भे.)

उ०—ग्रवाईडा मेरी गुदडा मे रोटी मागै, रे क लाडो मेरी ना चलै। सासूडी मैं कलेवै का बखर भरा द्यू, ए क तेरी लाडो ले चलूं। —लो. गी.

बखसीस—देखो 'बकसीस' (रू भे.)

उ०—बादसाह री मारी बखसीस ग्रौर वीरमजी दिया सौ सगळा ग्रागै मेल्हिया। —ठाकुर जैतसी री वारता

बखांण—देखो 'बखाण' (रू. भे.) (ग्र. मा, ह. ना मा.)(उ. र.)

उ० —१ घणउं बखांण किसु हिव कीजइ, ग्रभिनव सारद देवि। तेह तणउ जे ग्उतिग वीनवउ, ते निसुणउ सखेविइ।
—हीराणद सूरी

उ०—२ सिंगार खोड मै सजुत्त सुदरी बखांण ए। पयंच ग्रागुळी जु पाण, काम पच बाण ए। —गु रू. बं.

उ०—३ सोल सहस पणि सामटी, परण्या पुरुस पुराण। तु हि गोकुल-गोलिणी, विलस्या-तणउं बखांण। —मा. का. प्र.

उ०—४ माळव-देस त्रिखोडिया, मारू किया बखाण। मारू सोहागिण थई, सुंदरि सगुण सुजाण। —ढो. मा.

उ०—५ ऐ प्रोहित दीदारू सखरा पण । अर वीण ग्राछी वजावै । सद सहर मांहै वखांण हुवौ । —नैणसी

वखांणण—देखो 'वखाणण' (रू. भे.)

वखांणणौ, वखांणबौ—देखो 'वखाणणौ, वखाणबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ भडां मंत्रिया जूथ भारा, सजै निज दरबार सारा । भला पाता जूथ भेळा, वखांणै पह जेण वेळा । —सू. प्र.

उ०—२ पचविध पाचू पच उभै पण, पिंड ताहरै तणा प्रकार । 'जैता' हरा वदीता जग मे, हारै नही वखांणणहार । —द. दा.

वखांणणहार, हारौ (हारी), वखांणियौ—वि० ।

वखांणिग्रोड़ौ, वखांणियोड़ौ, वखांण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वखांणीजणौ, वखांणीजबौ—कर्म वा० ।

वखांणसद—देखो 'व्याख्यानसद' (रू. भे.)

वखांणियोड़ौ—देखो 'वखाणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वखाणियोड़ी)

वखांणिवू—वि. [सं. व्याख्यातव्य] १ जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता हो । (उ. र.)

[स. व्याखेय]—२ जिसकी व्याख्या होने को हो । (उ. र.)

३ व्याख्या करने योग्य (उ. र.)

वखांणु—देखो 'वखाण' (रू. भे.)

उ०—ऊपनु केवल नाणु सामीय ए नेमि जिणेसरह ए । साभली सामि वखांणु विरता ए सावयग्रतु धरइ ए । —प. प. च.

वखांणौ—देखो 'वखाण' (रू. भे.)

उ०—तौ चौथै धन धन छै जिकै राजा ईसरादिक जाणौ रे । स्त्री-वीर समीपै जाय नै, नित नित का सुणै वखांणौ रे —जय वाणी

वखात—देखो 'विख्यात' (रू. भे.)

उ०—एकरसूं मोटै न्रप आगै, पण तज वखो दियौ श्रण पार । जण दन तो 'गोपळ' जीवाया, लीधौ वखो वखातां लार । —ठाकुर सवाईसिंह रो गीत

वखारी—देखो 'भखारी' (रू. भे.)

उ०—चोर नै इण बात रो सुराग हो के वखारी मे रुई पड़ी है । —फुलवाड़ी

वखिस्थळ—देखो 'वक्षस्थल' (रू. भे.)

उ०—महावर कंध पचाइन मड, वखिस्थळ जड हरावळि वड । —रामरासौ

वखेड़ौ—देखो 'बखेड़ौ' (रू. भे.)

उ० वखेड़िया री टोळी घर रै मामी हाको करण लागी-काढौ तुरक नै बारै, काढौ तुरक-नै बारै' । —वरसगाठ

वखे—देखो 'पखे' (रू. भे.)

उ०—तठै ऐक महावेल खाडी । तकण री पाखती सेखा वनर ग्रसै नांम नगर रै वखे ग्राय नीसरियौ । —कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

वखेर—देखो 'बिखेर' (रू. भे.)

वखेरणौ, वखेरबौ—देखो 'बिखेरणौ, बिखेरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ 'ग्रजन' नमो तप तेज राजा 'गजन' ग्रभनमा, चीत ही दुधरम रीत चाही । पत जका राखतौ पातसाही पगां । सुत जका वखेरी पातसाही । —तेजसी खिड़ियौ

उ०—२ म्हूं तौ ग्रांगण मूग वखेरस्यां, म्हारा साजन रा कोडां । चोखौ रै मादळ घुळ रह्यौ, रग रातौ रै मादळियौ, थारौ रै सबद सुवावणौ । —लो. गी.

वखेरियोड़ौ—देखो 'बिखेरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वखेरियोड़ी)

वखौ—देखो 'विखौ' (रू. भे.)

उ०—१ मरणौ हुवै जकै पग माडौ, ऊबरणौ हुवै जिकै ग्रखौ । दिल घबरीज मौत सूं डरपौ, वळै कहौ किण भात वखौ । —जादूरांमजी ग्राढौ

उ० २ राज जनमिया ईज हुता, तरै धरती माहै वखौ हुवौ । —कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—३ महवेचा' वखौ करता 'मधकर', मल्लर तणा गढग्रवळी-माग । मोहडा गनै न ऊनरै सलहा, पमंगा न उत्तरै पलाण । —माधोसिंह महेचा रो गीत

वख्त—देखो 'वक्त' (रू. भे.)

वख्तर—देखो 'बख्तर' (रू. भे.)

उ०—तिका सस्त्र विद्या घोडा री सवारी व वखतर पहरणै री विद्या सिखावै । —नी प्र.

वग—१ देखो 'बाग' (रू. भे.)

उ०—कविता टुक सुण सुख ग्रधिक, स्रीमुख हुकम सहन । पै जस ग्रस वग झुक 'पता', रुक पग नीठ रहत । —जैतदान बारहठ

२ देखो 'वरग' (रू. भे.)

उ०—१ वगां बीचाळै काढिया, हुड जिम पग झल्लै । ऊभी मेली साहबी, गढ गढ महल्लै । —केसौदास गाडण

उ०—२ जिकै धरती रा धणी पताल वासी भुयग नै धण रा धणी दौलतवत ग्रौ बिन्है एकै वग हूता सु धरती रो पुड भेद नें विमरै पेठा । उठै रहण लागा । —रा. सा. सं.

वगड़—देखो 'बगड़' (रू. भे.)

उ०—सीआळइ जल माहि सरि, उन्हालइ पंचागि। बरसालइ बगडइ, वसइ कामकदला-काजि। —मा कां. प्र.

बगड़इ—देखो 'बगड' (रू भे.)

बगड़णौ, बगड़बौ—देखो 'बिगडणौ, बिगडबौ' (रू भे)

बगड़ावत—स. पु [देशज] १ गोठण निवासी बाघ नामक क्षत्रिय के वंशज जो २४ विभिन्न जाति की कन्याओ से उत्पन्न हुए थे। ये बड़े शूरवीर और दानी थे।

वि. वि —बाघ ने उक्त कन्याओ के साथ जगल में गधर्व-विवाह कर लिया, जब यह बात प्रगट हुई तो कन्याओ के माता-पिता ने इनका बाघ के साथ विवाह कर दिया। वास्तव मे इन कन्याओं की सख्या २५ थी परन्तु विवाह के लिये आये हुए प्रोहित ने एक कन्या को विवाह कराने के उपलक्ष मे माग लिया। इस प्रकार शेष चौबीस की सतान बगडावत कहलाई

रू. भे —बगडावत, बघडावत।

२ इनकी प्रशसा मे गाया जाने वाला लोक गीत।

वि —बहादुर, वीर।

बगट—स पु [स भृकुट] शिर, मस्तक।

बगड—देखो 'बगड' (रू. भे)

बगणौ, बगबौ—१ देखो 'बजणौ, बजबौ' (रू. भे)

२ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे)

बगणहार, हारौ (हारी), बगणियौ—वि०।

बगिओड़ौ, बगियोड़ौ, बग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बगीजणौ, बगीजबौ—भाव वा०।

बगत—१ देखो 'वक्त' (रू भे.)

उ०—१ राजाजी तौ सूरज रै ढळणा री बाट जोवता जोवता पूरा आती आयग्या हा। सेवट सूरज नै तौ बगत माथै ढळणौ हौ इज। —फुलवाडी

उ०—२ कवर नै ऐड़ी अणचीती जीत री आस नी ही। वो जाणतौ हौ के उणनै पावरी सणक करणा मे की बगत लागैला। —फुलवाडी

२ देखो 'बखत' (रू भे.)

बगतर—देखो 'बखतर' (रू. भे.)

उ०—वाही राण प्रतापसी, बगतर मे वरछीह। जाणक झींगर-जाळ मे, मूंह काढ्यौ मच्छीह। —अज्ञात

बगतरियौ, बगतरौ—१ देखो 'बखतरियौ (रू. भे.)

उ०—धीरज राख म्हारा धणी, औढ लयूं असमांन। बगतरियां पोवै वरम, पीपळ हदा पांन। —पा. प्र.

२ देखो 'बखतर' (अल्पा., रू. भे.)

बगता—देखो 'वकता' (रू. भे.) (अ. मा)

२ देखो 'वक्ता' (रू. भे.)

बगतावर—देखो 'बखतावर'

बगतौ—सं पु.—लूटा गया माल या धन दौलत।

उ०—१ ताहरां वाणीयै पुकार घाती। ताहरा नरौ राजा कनै बैठौ हुतौ। सु राजा कहीयौ 'खबर करौ कौण पुकारै? ताहरा नरौ कहण लागौ, 'राज जैत बाहर चढियौ हुतौ। खबर मगावं छू।' ताहरां वांणीये कहीयौ। राज जैत आप न चढियौ, रजपूत चढीया हुंता। तिका म्हारौ बगतौ माल छोड ने आया।

—जैत पुमार री वात

उ०—२ राजा देढे बारट नूं पूछजै छै। ताहरा राज देढे नूं बुलायौ। सु देढौ महाराज रै हजूर आय कहीयौ, "जु महाराज मैं तौ इहा नूं कहीयौ, बगतौ माल ढीलौ मता करौ।

—जैत पुमार री वात

रू भे - बखतौ।

बगर—१ देखो 'बगैर' (रू भे)

उ०—दूभर पेट भरण नु दन दन दस रडवडसा वडसा देस वदेम। पाखा बगर कीया पारेवा, जाता सुरग बीया 'जगतेस'।

—जवांनजी आढौ

२ देखो 'बगड' (रू. भे

उ०—सावरो लगन लगावत ओ मा, काहु कछु काम बहानै कोई, अपनै बगर मे आवत ओ मा। —रसीलै राज रा गीत

स. पु.—एक देश विशेष जहा के ऊट बढिया होते हैं।

बगरू—देखो 'बगरू' (रू. भे.)

उ०—सू ऊठ कुण-कुण दिसावर रा छै? काछी बोदला, छपरी, जालोरी, बगरू बलोची, सिववाड़िया, और ही अनेक जात-भात रा ऊठ छै। —रा सा. स.

बगळ, बगल—देखो 'बगल' (रू. भे)

उ०—छुरी बगल मे हाथि गेडियौ, छानै बेसर' गळौ छोडियौ

—अनुभववाणी

बगलबंदी, बगलबधी—देखो 'बगलबधी' (रू. भे.)

बगळांणा—देखो 'बाळाणा' (रू. भे.) (बां. दा. ख्यात)

बगलामुखी—देखो 'बगलामुखी' (रू. भे.)

बगसणौ, बगसबौ—१ देखो 'विकसणौ, विकसबौ' (रू. भे.)

उ०—पोहप बगसीया महक करै पख, पागरीया वन नीला पान। राव 'पीथल' वाळौ गर रूड़ौ, आबूड़ौ लागौ असमान।

—आबू परवत रौ गीत

२ देखो 'बकसणौ, बकसबौ' (रू. भे.)

बगसणहार, हारौ (हारी), **बगसणियौ** — वि० ।

बगसियोड़ौ, बगसियोड़ौ, बगस्योड़ौ — भू० का० कृ० ।

बगसीजणौ, बगसीजबौ — कर्म वा० ।

बगसर — देखो 'बगसर' (रू भे)

बगसरिया - देखो 'बगसरिया' (रू. भे)

बगसरियौ — १ देखो 'बगसरियौ' (रू. भे)

२ देखो 'बगसर' (अल्पा, रू. भे)

बगसाणौ, बगसाबौ — देखो 'बकसाणौ, बकसाबौ (रू. भे)

बगसियोड़ौ — १ देखो 'विकसियोड़ौ' (रू भे)

२ देखो 'बकसियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. बगसियोडी)

बगसी — देखो 'बकसी' (रू भे.)

उ० — तद पातसाह जी **बगसी** नू फुरमायौ के इसका रोजगार चढ्या है जितना लेखौ कर चुकाय देवौ । पीछै **बगसी** यासू लेखौ कियौ जिणमे तळब रा रिपिया पनरा लाख हुवा । —द. दा.

बगहरा — देखो 'वगैरह' (रू. भे.)

उ० — सो बड़ा ही गाढ सू केसरीसिंहजी नै नागोर मेलियौ । हजार तीस री पटौ, सावा ग्रोडीट वगहरा लिख दिया ग्रर रिपिया दस याळी रा कर दिया । —ग्रमरसिंह गजसिंहोत री बात

बगाणौ, बगाबौ — १ देखो 'बगाणौ, बगाबौ' (रू. भे.)

उ० — १ इतरा मे भीतर सू माई-मा पधारया । हाथ पकड ध्रूजी ने परा रे **बगाया** । —लो गी.

उ० — २ छोटा छोटा गुलाबी होठ फरूकण लागा । पण पटकनै एक काकरी उठाई । पछै उण कागा रै सांम्ही **बगाई** । — फुलवाडी

२ देखो 'बजाणौ, बजाबौ' (रू भे)

बगायोड़ौ — १ देखो 'बगायोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'बजायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वगायोडी)

बगार — देखो 'बघार' (रू. भे.)

बगारणौ, बगारबौ — देखो 'बघारणौ, बघारबौ' (रू. भे.)

बगारियोड़ौ — देखो 'बघारियोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री वगारियोडी)

बगावणौ, बगावबौ — १ देखो 'बगाणौ, बगाबौ' (रू. भे.)

उ० — बाप तौ घड़ी एक ई बात कैवतौ के वै उणनै छोडनै कठै ई नी जावै । थोडा दिना तांई कमाई लारै धूळ **बगावै** ।

—फुलवाडी

२ देखो 'बजावणौ, बजावबौ' (रू. भे.)

बगावत — देखो 'बगावत' (रू भे.)

बगावियोड़ौ १ देखो 'बगायोड़ौ' (रू. भे)

२ देखो 'वजायोडौ' (रू भे)

(स्त्री. वगावियोडी)

बगि — देखो 'वरग' (रू. भे)

उ० — पेखे कोइ कहूनि एक-एक प्रति, विमळ मंगळ ग्रह एक **बगि** । एणि कवण सुभ क्रम ग्राचरता, जाणियै वेलि जपति जग ।

—वेलि

बगियोडौ — १ देखो 'बजियोड़ौ' (रू भे.)

२ देखो 'बाजियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वगियोड़ी)

बगीची — देखो बगीचौ' (ग्रल्पा., रू. भे)

बगीचौ — देखो 'बगीचौ' (रू. भे.)

उ० — गढाळ सहर गढ कोट बाजार **पौळि** पगार वाग बावडी **बगीचा** कूग्रा सखरा री वड़ा पीपळा री छिबि सहर री पासती विराजिनै रही छै । —रा. सा स.

बगूतणौ, बगूतबौ — देखो 'विगूतणौ, विगूतबौ' (रू. भे.)

उ० — बुधे तमारी ए ग्रति बलिया बाधव बहु **बगूता** । नहि तरे द्यूत रमता तमो तिवारा ग्रमो पासै हूता —नलाख्यान

बगूतियोडौ — देखो 'विगूतियोडौ' (रू. भे)

बगेर — देखो 'बगैर' (रू भे)

बगेरे, बगेरै — देखो 'वगैरह' (रू. भे)

उ० — पछै माचोर ऊपर माडवा री तथा वीगरा पातसा **बगेरे** केई राज रैया । —मारवाड री ख्यात

बगेलू — १ देखो 'बघेल' (रू. भे.)

२ देखो 'बाघेल' (रू. भे.)

बगेसरी — देखो 'बागीस्वरी' (रू भे.)

उ० - -भणंत स्री विनोदय, कल्यांण केक मोदय । खंमायची पटगयं, **बगेसरी** विहगय ।

—रा. रू.

बगैर — देखो 'बगैर' (रू. भे)

बगैरह — ग्रव्य. [फा. वगैर:] १ ग्रादि इत्यादि ।

२ इसी प्रकार ।

३ सम्बन्धित ।

४ शेष ।

५ प्रभृति ।

६ प्रमुख ।

रू भे.—बगहरा, वगहरा, वगेरै ।

बगोरणौ, बगोरबौ–क्रि. स. [स. विकुर्वम्] १ प्रव्यजन करना, व्यक्त करना ।

उ०—गजेंद्र कुंभस्थल सीस डोलइं, कोइ हीडोला जिम सीस डोलइ, तुरंग मातंग ति नीद्र घोरई, न पक्षीया नीद्रलडी बगोरइ । —सालिसूरि

२ प्रगट करना, बताना ।

बगोरणहार, हारौ (हारी), बगोरणियौ—वि० ।

बगोरिग्रोड़ौ, बगोरियोड़ौ, बगोरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बगोरीजणौ, बगोरीजबौ—कर्म वा० ।

विगोरणौ, विगोरबौ—रू० भे० ।

वग्ग—१ देखो 'वरग' (रू भे)

उ०—१ आपै ही जाणावसी, भलौ ज होसी वग्ग । कै मागिण दरसावियां, कै ऊळजिया खग्गि । —हा भा.

उ०—२ साहिब, म्हा का बापकइ, छइ करहां कउ वग्ग । जइ करहउ खोडउ हुवइ, गादह दीजइ दग्ग । —ढो. मा

२ देखो 'वाग' (रू भे.)

उ०—१ आधारि वग्ग आयासि लग्ग । खुरिसांणि खेडि खिविया खडग्ग । —रा. ज. सी.

उ०—२ फेरे वग्ग तुरग री, तोले खग्ग करग्ग । रिण पग्गा उमगे लगै, 'रैणायर' गयणग्ग । —रा. रू

वग्गणौ, वग्गबौ—१ देखो 'बजणौ, बजबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू भे.)

उ०—१ वग्गा भड मेवाड रा, सीसोद्या ग्रह सार । आठू दिस कळ सल्लळी, चळाचळी संसार । —रा. रू

उ०—२ ते जोधा छळ झल्लियौ, धणी 'अजौ' सिर धार । कळ लागै जाणै कवण, विण वग्गो तरवार । —रा रू.

उ०—३ इण दिसिया अजमेर सूं, आयौ तहवरखान । इण दिसि वग्गा सिंधुवा, भुज लग्गा असमान । —रा. रू.

उ०—४ लग्गो सूर परक्खणो, वग्गो धारा रीठ । —रा. रू.

३ देखो 'भागणौ, भागबौ' (रू. भे.)

वग्गणहार, हारौ (हारी), वग्गणियौ—वि० ।

वग्गिग्रोड़ौ, वग्गियोड़ौ, वग्गयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वग्गीजणौ, वग्गीजबौ— भाव वा० ।

वग्गय—देखो 'बाग' (रू. भे.)

उ०—ऊपडै वग्गयं गाजवा लग्गयं । गोम गयणग्गयं, धूजिया नग्गय । —गु. रू. ब.

वग्गियोड़ौ—१ देखो 'बजियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'भागियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वग्गियोड़ी)

वग्घ—१ देखो 'बाघ' (रू. भे.)

उ०—वयणं गाढा वड चडै, मूठी गाढा खग्ग । हाजरती दरबार मैं विरता बीयै वग्घ । —गु. रू. ब.

२ देखो 'बाग' (रू. भे.)

वग्रहणौ, वग्रहबौ—देखो 'विग्रहणौ, विग्रहबौ' (रू. भे.)

उ०—कहीया मुख वचन घणा ग्रनकारै, वग्रहीयां खळ खतावण । नर समजति तरै नरवहीया, रहीया 'चांपा' तरै रण । —गोपाळदास चापावत री गीत

वग्रहियोड़ौ—देखो 'विग्रहियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. वग्रहियोड़ी)

वघंबर—देखो 'बाघंबर' (रू. भे)

उ०—वघंबर जेम सिलं विकराळ । मडै गळिमाळ जिका रुडमाळ । —सू. प्र.

वघवाव, वघवाय, वघवाव, वघवाह—देखो 'बघवाव' (रू भे.)

उ०—१ विध वाघ जिम वघवाव, पलटत गज पख पाव । —सू. प्र.

उ०—२ वाघ करै नह कोट वन, वाघ करै नह वाड । वाघा रा वघवाव सू, भिळै अगंजी झाड । —बा. दा.

उ०—३ दळ गयंद टाळा दियै, वाघ तणी वघवाह । हौल पडै प्रसण हियै, गहन 'पतौ' गजगाह । —किसोरदान बारहठ

वघार देखो 'बघार' (रू. भे)

उ०—मोठ मटर चूंला फली रे लाल, छमकारधा देइ वघार । मूंल फूल फल पानडा रे लाल, अथाणा सुखकार । —प. च. चौ.

वघारणौ, वघारबौ - देखो 'बघारणौ, बघारबौ' (रू. भे.)

उ०—तूग्ररि नी दालि ना साक, उढवा ना साक, चिणां ना साक, राईता मिरीता खाटा खारा मीठा गल्या तीखा तमतमा तल्या वघारयां छमकाग्या पुगारयां । —व. स.

वघारणहार, हारौ, (हारी), वघारणियौ—वि० ।

वघारिग्रोड़ौ, वघारियोड़ौ, वघारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वघारीजणौ, वघारीजबौ—कर्म वा० ।

वघारियोड़ौ—देखो 'बघारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वघारियोड़ी)

वघूल—देखो 'बघूलौ' (मह. रू. भे.)

वघूलौ—देखो 'बघूलौ' (रू. भे)

बघेरौ—देखो 'बघेरौ' (रू. भे.)

उ०—जगळ मांहे रमता-रमता गया । ताहरा एक बघेरौ दीठौ । —नैणसी

बघेल—१ देखो 'बघेल' (रू भे)

२ देखो 'बाघेल' (रू. भे)

बघेलखंड—देखो 'बाघेलखंड' (रू भे.)

बड़—१ देखो 'वट' (रू भे)

उ०—**बड़** पीपळ जाबू बिरख, नीबू नीब पळास । ग्रासूपाळा ग्रति सरम, ग्राधो फरै ग्रकास । —गज उद्धार

२ देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.)

उ०—होय हुसीयार हथीयार गहि ऊठिया, मीर **बड़** वीर रिणधीर रोसड़ । —प च चौ

बड़छणौ, बड़छबौ—क्रि स.—१ काटना, कतरना ।

उ०—ग्राग पाम्बर भ्रणण हजारी तडछिया, गेळ भुज **बडछिया** रचण गडा । कर मछर घाइवी लियण वित कर्डाछया, धर्डाचया 'बड रज' भुजा घाडा । —रावत हम्मीरसिंह चुडावत री गीत

बड़णौ, बड़बौ—देखो 'बड़णौ, बडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ डाढाळी ग्रर सूडण बाचरा उठाय ग्रठी उठी जोयौ के चाणचक डाढाळे रै लिलाड मे तच करती री एक तीर **बड़ग्यौ** । ग्रर भूंडण रै डावै पसवाड़ै सूसाड करती गोळी बड़गी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ गोगादेजी ग्राप सिनान करण नू पैठा । पण वानर तेजो तळाव माहे वडै नही । —नैणसी

बड़णहार, हारौ (हारी), बड़णियौ—वि० ।

बड़िग्रोड़ो, बड़ियोड़ो, बड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बड़ीजणौ, बड़ीजबौ—भाव वा० ।

बड़दी—देखो 'वरदी' (रू. भे.)

बड़लौ—देखो 'वट' (ग्रल्पा , रू. भे.)

उ०—खेत मे वडवोरडिया ग्रायोडी, गहर डम्मर ल्हियोडी, जांणै, **बड़ला** ऊभा । —रातवासौ

बड़वड—देखो 'बडबड' (रू. भे.)

उ० - तडफड सायक ग्रति सत्राड, **बडवड** काळज घाव बराड । वडचड जोगणिया रतचोस, जुडै भिड 'धूहड' बाधै जोस । —गौ रू.

बड़वडणौ, बड़वडबौ—देखो 'बडबडणौ, बडबडबौ' (रू. भे)

उ०—१ भडभडै के लडथडै भारथ, ग्रडै के ग्रग्वडैत । **बड़वडै** के हडहडै वीजळ, जडै के जरदैन । —र ज प्र.

उ०—२ बूर पडि जबूर विहू वड, भुरज बीछडि पडै रवड भड । विढग धरि ग्रड सुहड समवड **बडवडै** पिड चार। —रा रू.

बड़वड़ियोड़ो—देखो 'बडबडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वडवडियोडी)

बड़वा—१ देखो 'बडवा' (रू. भे.)

बड़वाग्रगन, बड़वाग्रनळ, बड़वाग, बड़वाग, बड़वागि, बड़वाग्नि, बड़वानळ, बड़वानल—देखो 'बडवानळ' (रू.भे.)

उ०—१ जडी ग्रसमर समर कवर 'सुबमान' ज्या, पडी **बड़वाग्रनळ** सीस पिसण । —महाराजा सुनमानसिंघ हाडा री गीत

उ०—२ सोर ग्राग सपरस्स, किना **बड़वाग** ग्रकारी । माग हूंत सामद्र, ध्याग बरतण उर धारी । —रा. रू.

उ०—३ वध प्रचड 'वखतेस' कियौ कोडड कुमकवै । ग्रोप वदन ऊभरै, रूप **बड़वाग** निरक्खै । ज्वाळाकार खतग, कीध गुण सग तमक्कै । प्रळैवत सिव चक्ख, जाणि ग्रमरक्ख भभक्कै । —रा. रू

उ०—४ मुखि 'माधव-माधव' जपइ, नयणे नीर प्रवाह । टक नमइ नही टलवळइ, घटि **बडवानळ** दाह । —मा का प्र.

बड़वामुख—देखो 'बडवामुख' (रू. भे) (ग्र. मा.)

बड़वाय—स. पु.—वट वृक्ष की उपशाखा ।

उ०—'मान' महावड साख कर, ग्रासौ किर **बड़वाय** । साह सभा वन मै खडी, छाया सू जग छाय । —बां. दा.

बड़सावित्रीव्रत—स.पु. [सं. वट सावित्री व्रत] स्त्रियो द्वारा किया जाने वाला एक व्रत जो ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा को किया जाता है, इस दिन बड की पूजा होती है ।

बड़सी—स. स्त्री. [स. वार्षिकी] १ मृत्त व्यक्ति का प्रति वर्ष ग्राने वाला मृत्यु का दिन ।

२ उक्त दिन को किया जाने वाला भोजन ग्रादि का विशेष ग्रायोजन

३ देखो 'बडी' (रू.भे)

बड़ाणौ, बड़ाबौ—देखो 'बडाणौ, बडाबौ' (रू. भे.)

बड़ारण—देखो 'वडारण' (रू. भे)

उ०—चौगडदा कनात खची छै । तैण समै ग्रचूकी रा सुखपाळ ग्राण लवाई । तैण समै दूजी **बड़ारणां** खवासी उठै हीज बरजी । —कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

बड़ि—१ देखो 'वट' (रू. भे)

२ देखो 'बडी' (रू. भे.)

बड़ियोड़ो - देखो 'बडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बडियोडी)

बड़ियौ—देखो 'बडियौ' (रू.भे)

बड़ी—देखो 'बड़ी' (रू.भे.)

बड़ौ—१ देखो 'बडौ' (रू.भे)

उ०—उपाड़ सेल अबदल्ल पर, रांम भुजांबळ रोपियौ। बीधियौ जांण तळियौ बड़ौ, ऊपलियौ तन ग्रोपियौ। —रा. रू.

२ देखो 'बडौ' (रू.भे.)

उ०—कहा कहा उपदेश दे दे बड़ा बड़ा भूप, कीधा, भ्रम्म, रूप, लड़ा लडा सेवं पाय। —ब. व. ग्र.

बच-स.पु. [स. वंच्] १ बचन, वाक्य।

सं.स्त्री.—२ सरस्वती, शारदा।

[सं. वचा] ३ ग्रौषधि विशेष।

रू. भे.—वच।

४ देखो 'वंच' (रू.भे.)

५ देखो 'बीच' (रू भे.)

उ०—बरै रम मनबंछत, बसै सुर थांन बच, एळा सर सुजस दघ कढ़ां ग्रड़ियो। —माहसिह भाटी री गीत

६ देखो 'बचन' (रू. भे.)

बचकळा-सं. स्त्री [सं. वच: कला] पढ़ने का ढग या कला, तरीका।

बचखण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे)

उ०—१ ग्रस्त्री पण राजा री राण्यां सू ग्रनेक प्रमोध ग्रांण लगाए जाए। हेत घणौ बाधौ। या पण महावीर बचखण एम करता सांमणी रौ दीहाड़ौ ग्राबियौ।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

उ०—२ ग्रेहडौ वीर बचखण, महा चतर ग्रासंर दौकिग्रौ

—कल्याणसिंघ नागराजोत वाढ़ेल री बात

बचणौ, बचबौ—देखो 'बचणौ, बचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मर सबळां ग्रागै निबळ, तीर थकै वांनीर। बाय थकै त्रण जाय बच, भलो नमण गुण भीर। —बां. दा.

उ०—२ चूर लियौ ग्रौ चौतरक, केवी बयण कहंत। बाघ केम छिपियौ बचै, कपियां परम रहंत। —बां. दा.

उ०—३ नारिन को पुरखा, चतर न मुरखा, वेद न ब्यारि बचंदा है। —ग्रनुभववाणी

बचणहार, हारौ, (हारी), बचणियौ—वि०।

बचियोड़ो, बचियोड़ौ, बच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बचीजणौ, बचीजबौ—कर्म वा०।

बचत—१ देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—पर ग्राफु क्यारी पंकत, मोताहळ बोह मत। बीरम ठग बाळा बकट, बाका वडा बचत।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

२ देखो 'बचत' (रू. भे.)

बचत्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—बारच कुण बांधै राघव वण, धरा सेस वण कवण धरै। बीकावत पाछै बचत्रां रा, कमण दूसरी तंडळ करै।

—तेजसी खिड़ियौ

बचन-सं. पु. [सं.] १ बोलने की क्रिया या भाव, उच्चारण।

२ मुंह से निकला हुग्रा सार्थक शब्द, वाणी, वाक्य।

उ०—१ कदाचित पाणी माहि पाखांण तरइ, कदाचित मेद पृत्तिका चलइ, कदाचित् ब्रहस्पति बचन तु स्कलइ कदाचित् सिलातलि ऊपरि कमल विकास लहइं। —व. स.

उ०—२ वैरी रा मीठा वचन, फळ मीठा किंपाक। वे खाधा वे मांनिया, हुवा कतांत खुराक। —बां. दा.

३. कही हुई बात, उक्ति, कथन।

उ०—सांभलि एहवा बचन कुमांर, रागातुर हूवौ तिणवार।

—वि. कु.

४ प्रतिज्ञा या प्रण के रूप में दृढता पूर्वक कही हुई बात, वादा, प्रण।

मुहा.—१ बचन तोड़णौ = प्रण को तोड़ देना, वादे के अनुसार न रहना। २ बचन देणौ=किसी के बचनो में बधजाना, बचन बद्ध होना, वादा करना, प्रतिज्ञा करना। ३ बचन भग करणौ=देखो 'बचन तोड़णौ' ४ बचन राखणौ= प्रतिज्ञा पूरी करना, दिये बचन निभाना, वादा पूरा करना। ५ बचन हारणौ=प्रतीज्ञा पूरी करने मे ग्रसमर्थ रहना। वादा न निभाना, बचन विमुख होना।

५ घोषणा।

६ उपदेश, निर्देश, मार्ग दर्शन।

उ०—सील सतोस दया सत भक्ती, स्वधरम ग्यान वैरागी। सत्वगुण का पायक सब सार्थं, गुरु बचनां का पागी।

—श्री सुखरांमजी महाराज

७ ग्रादेश, ग्राज्ञा।

८ सलाह, परामर्श।

९ वर्णन, बयान,उल्लेख।

१० ग्रभिव्यक्ति।

११ पुनरावृत्ति।

१२ शब्दशास्त्र में शब्द के रूप में वह विधान जिसके द्वारा एकत्व या ग्रनेकत्व का बोध होता है।

१३ नियम।

१४ सरस्वती।

१५ भाषा।

रू. भे.—बच, बचन, बचन्न, बयण, बयन, बॅण, बेण, बेण, बैन, बैण, बैन, वइण, वइन, वच, बचनि, वचन्न, वच्चन, वयण, वैण।

अल्पा.—बचनड़ो, बयणडो।

बचनका—देखो 'बचनिका' (रू. भे.) (द. दा.)

बचनकारी—वि [स वचनकारिन्] १ बचन को मानने वाला।

२ आज्ञाकारी।

बचनगुप्ति—स. स्त्री. [सं] वाणी का संयम—जिससे बचन का निग्रह कर प्रयोजन, उचित सत्य, तथ्य व निर्दोष बचन का ही उच्चारण हो। (जैन)

उ०—तपः काति सोसित लोभ मद, क्रोधाग्नि बध्यापन पयःपूर, मायातमस्विनी सहरणसूर, मानगिरवरदलनदम्भोलि, त्यक्त पुत्रमित्र कलत्रादिसबध, मनोगुप्ति बचनगुप्ति कायगुप्ति प्रधान। —व. स.

बचनपाटव—स.स्त्री. [सं. वचनपटुता] १ स्त्रियो की चौसठ कलाओ मे से एक। (व. स)

२ बोलने की चतुराई, वाक्पटुता।

वि [स. वचनपटु] बोलने मे चतुर, प्रवीण।

बचनप्रतिस्ठा—स स्त्री. [स. वचन+प्रतिष्ठा] वचनो की मर्यादा, कहे हुए बचनो की दृढ़ता, सच्चाई।

उ०—प्रतापि लंकेंद्र, गुरु नियम रामचंद्र, साहसि विक्रमादित्य, त्यागलीला करण्ण, बचनप्रतिस्ठा युधिष्ठिर, धनुरवेदि अरजुन, सग्रामचरचा सूगावीर, आग्या अजयपाल। —व. स

बचनयुद्ध—स.पु. [सं वचनयुद्ध] १ जबानी लड़ाई, वाद-विवाद। वाग्युद्ध

२ बहत्तर कलाओ में से एक। (व. स)

बचनयोग—वि [सं] सत्यासत्य भाषा का उच्चारण करने की क्रिया या ढग। (जैन)

बचनलक्षिता—स स्त्री [स] वह परकीया नायिका जिसकी बात चीत से उसके उप-पति से प्रेम लक्षित या प्रगट होता हो।

बचनविदगधता, बचनविदग्धता—स. स्त्री. [स. वचनविदग्धता] बोलने की चतुराई, पटुता।

बचनविदग्धा—स स्त्री. [स. वचनविदग्धा] १ परकीय नायिका जो अपनी बचन चतुराई से नायक की प्रीति का साधन करती है।

२ मधुर भाषणी या मन-मोहिनी स्त्री।

रू भे.—बचन विदग्धा।

बचनसिध—वि. [स. वचनसिद्ध] वह महात्मा या सिद्ध-पुरुष जिसके मुह के बोल सर्वथा सत्य होते हो, बचन-सिद्धि प्राप्त महात्मा।

स. स्त्री.—अपने बचनो या बोल की सिद्धि।

बचनात—स. स्त्री.—राजा महाराजाओं द्वारा अपने छोटे को पत्र में लिखा जाने वाला शब्द।

उ०—पछै महेसदासजी जाळोर पायी, गढ़पती हुवा जिणसूं लिखावट आगै न रही। प्रथीराज रै मनसब घणी हो जिण सूं बचनात नही नै लिखावतू लिखीजतो। —बा. दा. ख्यात

बचनि—देखो 'बचन' (रू. भे.)

उ०—चरण चारिहिं हंस हरावती। बचनि जिणइं जीती भारती। —सालि सूरि

बचनिका—स. स्त्री. – १ गद्य और पद्य रचना का एक ढग विशेष। (र. बचनिका)

२ गद्य रचना में छोटे-छोटे युग्म रूप।

३ कोई गद्य रचना।

४ वृत्त-गधी नामक काव्य रचना का एक विधान। (र. रू.)

५ चम्पू काव्य।

रू. भे.—बचनका, बचनिका, वचनका।

बचनीय—वि [स] १ कहने योग्य, वर्णन करने योग्य।

२ प्रशमनीय।

रू. भे—बचनीय।

बचन्न – देखो 'बचन' (रू. भे)

उ०—१ तबै 'भीम' बाका बचन्न तियारं। 'खुमांण' आदू जुद्ध सूं खूंदकार। —गु रू. ब.

उ०—२ बर विलद राय लिखिया बचन्न। वाचिया किया चख चोळ वन्न। —वि. स.

उ०—३ गादह डाघ्यउ दग्ग करि, सासू कहइ बचन्न। करहउ ए कूडइ मनइ, खोडउ करइ यतन्न। —ढो. मा.

उ०—४ मेड़तियो मुख ऊचरै, हैमतसिंघ बचन्न। मारो दुरजण साम रा, कुण भाई कुण तन्न। —रा. रू.

बचा—देखो 'बाचा' (रू. भे.)

उ०—बचा दिराड़ खिलाड़ ग्रछ, चचळ ग्रांहू चाढियो। 'पाल' कर कार समदा परै, कमध भूत नै काढियो। —पा.प्र.

बचाड़णो, बचाड़बो—देखो 'बचाणो, बचाबो' (रू. भे.)

उ०—जसवंत औरंगसाहि जब, वेद कतेब बचाड़ि, बे छत्रपती बहसिग्रा, रचि दिन राड़ि। —बचनिका

बचाड़णहार हारो (हारी), बचाड़णियो—वि०।

बचाड़ियोड़ो, बचाड़ियोड़ो—भू० का० कृ०।

बचाड़ीजणो, बचाड़ीजबो—कर्म वा०।

वचाड़ियोड़ो—देखो 'वचायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वचाड़ियोड़ी)

वचाणौ, वचाबौ—देखो 'वचाणौ, वचाबौ' (रू. भे)

उ०—तिणि नयरि जेसिंघदे राउ, नवउ खणावइ तिहां तलाव। ते खणावतां लिपि नीसरी, ते न वचाइ कुणहिं खरी। —हीरांणद सूरि

उ०—२ नेस वचाया कोलिया, पेस धरे न्रप पाय। पाटण 'अजन' पधारिया, अरि पागड़े लगाय। —रा रू.

वचाणहार, हारौ (हारी), वचाणियौ—वि०।

वचायोड़ो—भू० का० कृ०।

वचाईजणौ, वचाईजबौ—कर्म वा०।

वचायोड़ो—देखो 'वचायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री वचायोड़ी)

वचार—देखो 'विचार' (रू. भे)

उ०—बाहै सुदरि बहरखा, जासू चुड स वचार। मनुहरि कटि थळ मेखळा, पग झाझर झणकार। —ढो. मा.

वचाळै—देखो 'बिचै' (रू. भे)

उ०—अवसर खोय जेतला आया, गोरी दळा वचाळै गात। मेवाडै खाली मोकळीयो, पोह महमद 'जसो' अग पात। —राणा कुभा रो गीत

वचाव—देखो 'वचाव' (रू. भे)

उ०—पायका के हमल्लै बाक पट्टै फूल हत्थू का दाव। नजर वछंक का हुंभर अगूगा वचाव। हणमत रूप जगजेठू नैं भुजग दडूपर दस्तताळ दिया। —सू. प्र.

वचावणौ—वि —वचाने वाला, रक्षा करने वाला।

उ०-भुज दड लीजैं भांमणा, अघ्रियावणा अभीत। विध-विध दास वचावणा, जुध पावणा सजीत। —र. ज. प्र.

वचावणौ, वचावबौ—देखो 'वचाणौ, वचाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ खत्रवट धरम सदा थां खोळैं, मौ हिंदवांण वचायौ ओळैं। —रा. रू

उ०—२ आज न दीसै आपरी, प्राण वचावण हार। —पा. प्र.

उ०—३ तवता कुरांण काजी तठै, ब्रहम पुरांण वचाविया। आसुरा धरम मेटै 'अजै', सुरां धर्म दरसाविया। —सू. प्र.

वचावणहार, हारौ (हारी), वचावणियौ—वि०।

वचाविओड़ो, वचावियोड़ो, वचाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वचावीजणौ, वचावीजबौ—कर्म वा०।

वचावियोड़ो—देखो 'वचायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वचावियोड़ी)

वचिक्षण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०—अनि वचिक्षण अम्नाय व्यवपरिउ, करण्णवारनइ विसइ कुसलीउ, वैरिजन अनाकलनीय, गुहिर गंभीर। —व. स.

वचियोड़ो—देखो 'वचियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वचियोड़ी)

वचै—देखो 'बिचै' (रू. भे.)

उ०—अंब खास वचै बांणास आछटी, कहर 'पदम' धमजगर कर। 'मुहण' मरण कीया मार हतै, एकण घाव छट्टक वर। —संकर बारहठ

वचौ—देखो 'बच्चौ' (रू भे.)

वच्चंसी—वि [सं. वर्चस्विन्] किसी के छल कपट के बोल में न आने वाला (जैन), प्रभावशाली वचन वाला।

वच्चक—वि [सं वाचक] लिखी हुई लिखावट को ठीक ढग से पढ कर सुनाने वाला। बांचने वाला, पढने वाला।

रू. भे.—बच्चक।

वच्चणौ, वच्चबौ—क्रि. स [स. व्रज्, प्रा वच्च्] १ आना, गमन करना, यात्रा करना।

उ०—अट्ठावयपमुह सवि नमीह तित्थ जा घरि पहुच्चई। मणिचूडह भित्तह भयणि राउ एकु परिहरीउ वच्चई। —प. प. च.

२ निर्वासित करना। होना।

३ देखो 'वचणौ, वचबौ' (रू. भे.)

उ०—मा सुणता आलोचिया, 'सोनंगर' दुरगेस।' 'अजन' रहै, सच्चे जतन, वच्चे मुरधर देस। —रा. रू.

वच्चणहार, हारौ (हारी), वच्चणियौ—वि०।

वच्चिओड़ो, वच्चियोड़ो, वच्च्योड़ो—भू० का० कृ०।

वच्चीजणौ, वच्चीजबौ—कर्म वा०।

वच्चन—देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—जेता बोल बोलै तेता दे संभाळ ली, वच्चने वच्चने दिए द्रढु वाळी। —मा. ह.

वच्चाळइ—देखो 'बिचै' (रू. भे.)

उ०—ढोलइ करह विमासियउ, देखै वीस बसाळ। ऊंचै थळइ ज एकलौ, वच्चाळइ एवाळ। —ढो. मा

वच्चियोड़ो—भू. का. कृ. —१ गया हुआ, गमन किया हुआ, यात्रा किया हुआ, २ निर्वासित।

३ देखो 'वचियोडो' (रू. भे.) —(स्त्री. वच्चियोड़ी)

वच्छ—१ देखो 'वत्स' (रू. भे)

उ०—१ सदा मिळै विल स्याळ रै, **वच्छ** पुच्छ खुर थांम । मिळै गयां मृगराज वह, गज रद मोती-ग्रांम —बां. दा.

उ०—२ तूं तौ गैलो है, **वच्छी** तो इयां ही बचियो-खुचियो दूध चूंघ लेती अर घास-फूस खा लेती । —वरस गांठ

उ०—३ **वच्छा** वल्लह तुम तणौ, गिरूई रिद्धि समेउ । —स्त्रीपाल रास

२ देखो 'वक्ष' (रू भे)

उ०—रहौ प्रतच्छ रच्छसी, दुगच्छ गच्छ दच्छबनी । लगें विपच्छ लच्छ पें, भुजाग **वच्छ** भच्छनी । ऊ. का.

वच्छड़ौ—देखो 'वत्स' (अल्पा., रू. भे.)

(स्त्री. वच्छा, वच्छी, वच्छड़ी)

वच्छनाग वच्छनाभ—देखो 'वत्सनाभ' (रू. भे) (उ. र.)

उ०–१ मुगट कळी सुमाग, अ बाबिया **वच्छनाग** । बदकसमी बेलारी खंग बगसी खंघारी । —गु रू ब

उ०—२ अमरकद आदूं अलां, सूरज रोम रताल । **वच्छनाग** माकुमीयां, भेडागारी भालि । —मा. कां. प्र.

वच्छर, वच्छरी—देखो 'वत्सर' (रू. भे)

उ०—नीपनउ नथर नादउद्रि **वच्छरी** ए चऊददहोत्तर ए । तदुलवेयालीय सूत्र माभिला ए भव अम्हि ऊधरया ए । —पं. प. च.

वच्छळ, वच्छल—देखो 'वत्सल' (रू भे.)

उ०—१ वर रा दियण जगत रा वच्छळ । नर रा रूप नमौ रगुनाथ । —र रू

उ०—२ जयउ जयउ जगदीस्वरी, आनंदि आरत्रि । वकता स्रोता **वच्छली**, तू थाए त्रय-मात्रि । —मा. का प्र.

वच्छळता—देखो 'वत्सळता' (रू. भे)

उ०—वंसी नै आवतौ देख' र गाय हुर हुर करती अर बैं'री आखियां मे सरळता वच्छळता अर करुणा री मिळावट रा भाव साफ प्रकट हुता । - वरसगांठ

वच्छि—देखो 'वत्स' (रू. भे)

उ०—जीव-विना जिम देहुडी, वारि-विना जिम मच्छि,पुरुष विना तिम पदमिनी, साचूं सभलि **वच्छि** । —मा. का. प्र.

वछ—१ देखो 'वत्स' (रू. भे)

उ०—१ सुणि माधव मोरु **वछ** तुं, कांम कंदला धेय, आई इणि परि ऊचरइ, मइ करि धरिया बेय । —मा. का. प्र.

उ०—२ डोकरी दळ छाड़ि छूटी, गई दाणव पासि । माहरू प्राण म जांणि मूरख, **वछ** वहिलूं न्हासि । —रूकमणि मंगळ

उ०—३ खूंध पराक्रम देखिने, विजयसेन राजांन । तव बोल्यौ **वछ** आपणौ, प्रगटौ रूप वलवांन । —स्रीपाल रास

२ देखो 'वक्ष' (रू. भे)

उ०—उरध लिलाड़ नीर भव आंखैं, नाक कीर छिब न्यारी । दंत भुजा **वछ** दौर धीर धर, उर तसवीर उतारी । —ऊ. का.

३ देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

वछक - देखो 'वत्सक' (रू. भे)

उ०—पोहतो सुरग एम करि पौरिस, जगत विख्यात व्रहदवळ री जस । न्रप जे सुत वरकिय कुळ नाइक, **वछक** प्रध्य ते सुत वरदाइक । —सू. प्र.

वछड़ौ—देखो 'वत्स' (अल्पा, रू. भे.)

(स्त्री. वछडी)

वछचोर—स पु [स. वत्स=बछड़ा+चोर] ब्रह्मा । (डिं. ना. मा.)

रू. भे.—बछचोर,

वछबारस—स. स्त्री [सं वत्स-द्वादशी] भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की द्वादशी जिस दिन स्त्रियें बछड़े सहित गाय की पूजा करती हैं । वि. वि इस दिन प्राय मोठ व बाजरी का खाना ही खाया जाता है गेहूँ का नही ।

रू. भे.—बछबारस ।

वछर—देखो 'वत्सर' (रू. भे.)

उ०—बोल्या हिव वछर पूरा चोपन लाख सामी मुनि सुव्रत हूआ सूत्रे साख । —ध. व. ग्रं.

वछराज—देखो 'वत्सराज' (रू. भे.)

वछरि - देखो 'वत्सर' (रू भे.)

उ०—तेरह नउया एम जाणि जिण पउम गणीसरु, लद्ध नांम जिनलवद्ध सूरि चहुदय सय वछरि । —ऐ. जै. का सं

वछळ –देखो 'वत्सळ' (रू. भे)

उ०—भगत **वछळ** व्रद ताहरौ, सब के सिरजनहार, सकट मेटौ सांमजी स्रवणां सुणी पुकार । —गज उद्धार

वछाणौ, वछावौ —देखो 'बिछाणौ, बिछावौ' (रू. भे.)

उ०—आसाढ उमय्या मेह, गया पंथि आगणि गेह । हुं पणि जोउ प्रियु वाट, खांति **वछाउं** खाट । —स कु.

वछाणहार, हारौ (हारी), वछाणियौ—वि० ।

वछायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वछाईजणौ, वछाईजबौ – कर्म वा० ।

वछायत— देखो 'बिछायत' (रू. भे.)

वछायोड़ौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू.भे.)

(स्त्री. बछायोड़ी)

बछावणौ, बछावबौ—देखो 'बिछाणौ, बिछाबौ' (रू. भे.)

बछावणहार, हारौ (हारी), बछावणियौ—वि० ।

बछावियोड़ो, बछावियोड़ौ, बछाव्योड़ौ भू० का० कृ० ।

बछावीजणौ, बछावीजबौ—कर्म वा० ।

बछावत—देखो 'बिछायत (रू. भे.)

बछावियोड़ौ—देखो 'बिछायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. बछावियोडी)

बछूटणौ, बछूटबौ—देखो 'बिछूटणौ, विछूटबौ' (रू भे.)

उ०—दल लेई जगनीक नरेसर, समरथ साम्हउ आविउ । बाणावली बिहु दले वछूटो, इण परि अबर छायउ । —हीराणद सूरि

बछूटियोड़ौ—देखो बिछूटियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बछूटियोडी)

बछेक—देखो 'विमेस' (रू भे.)

उ०—वदं दहुवे घड देखि **बछेक**, एकी भड 'ऊदक' ऊद अनेक । —सू. प्र.

बछेदणौ, बछेदबौ—देखो 'विच्छेदणौ, विच्छेदबौ' (रू. भे)

उ०—१ सवा कमल नी इच्छा करइ, भीमसेनु तउ वनि-वनि फिरइ । असउण देखी बोलइ राउ, भीम पासि **बछेदिइं** जाउ । —प. प. च.

उ०—२ सतीय बेउ छइं कासगि रही, इदह आइमु तु तुम्ह कही । मेलहउ पंडव वडइ **बछेदि**, विणु हथियारह बाधा भेदि । –पं. पं च.

बछेदियोड़ौ—देखो 'विच्छेदियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वछेदियोडी)

बछेर—देखो 'बछेरौ' (मह., रू. भे.)

उ०—**बछेर** केतल सवागि, फेरक फरावत, नटस नाटक विधान, साभना सभावत । —सू. प्र

बछेरियौ—देखो 'बछेरौ' (अल्पा., रू. भे)

बछेरौ—देखो 'बछेरौ' (रू. भे)

उ०—१ बिसनदास लेजाय नै घोड़ी बोर नै घोडौ दिखायौ । बरस १ नू व्याई । **बछेरौ** जायौ । —नैणसी

उ०—२ लोहा लकड़ा चामडा, पहला किसा बखाण, बहू **बछेरा** डीकरा, नीमटिया परवाण । —अज्ञात

(स्त्री. बछेरी)

बछोड़णौ, बछोड़बौ—देखो 'बिछोडणौ, बिछोडबौ' (रू. भे.)

बछोड़ियोड़ौ देखो 'बिछोडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. बछोडियोडी)

बछोड़णौ, बछोडबौ—देखो 'विछोड़णौ, विछोडबौ' (रू. भे.)

उ०—सोसइ सइरु महातपि, आतपि रहइ गंभीर । मोह तणा जगबधव, बंध **बछोडइ** धीरु । —जयसेखर सूरि

बछोहणौ, बछोहबौ—देखो 'विछोहणौ, विछोहबौ' (रू. भे.)

उ० जइ करवत सिर ताहरइ, दीजत सिरजणहार । वर **बछोह्यां** साजणा रे, तउ तउ जाणत सार । —हीराणद सूरि

बछोहियोड़ौ—देखो 'विछोहियोडौ (रू. भे.)

(स्त्री. बछोहियोडी)

बछौ—१ देखो 'वत्स' (रू भे)

२ देखो 'बच्चौ' (रू भे.)

उ०—रोयती य नृप वधूग्र निवारी, **बछि** रोयसि म मइ तूं वारी । — सालि सूरि

(स्त्री बछि, वछी)

बजतरी, बजंत्री—देखो '**बजंत्री**' (रू. भे.)

बजग्र—स पु [स वज्र] कुलिश, वज्र ।

बज—स. स्त्री. [वज्रग्र] १ शरीर की बनावट, रचना ।

२ बनावट का ढग, प्रणाली, रीति ।

३ अवस्था, दशा, हालत ।

४ देखो 'बज' (रू. भे.)

बजड़—देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०—खोल्या खोल्या **बजड़** कमाड । —लो. गी.

बजजंत्र—देखो 'वाद्ययन्त्र' (रू भे.)

बजण—१ देखो 'बाजण' (रू भे)

उ०—सरण असरण अदण साझण, टकर वण किय **बजण** दिन, तिण वार तेर विसाळ । —सू. प्र.

२ देखो 'वजन' (रू. भे.)

बजणौ, बजबौ—१ देखो 'बजणौ, बजबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजणौ बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कठै **बजै** वडबोर, कठै झाडी मोटोडी । कठै बोरटी नाव, वणी देवा री छोडी । —दसदेव

उ०—२ काळबी कियो 'पाल' विनौ कजियौ, वसुधा पर नाम घणौ **बजियौ** । —पा. प्र

उ०—३ **बजि** म्रदग चंग रंग उपग वारंग, अनंग छवि चंग उमंग अग अग । —सू. प्र.

बजणहार, हारौ (हारी), **बजणियौ**—वि० ।

बजियोडौ बजियोड़ौ, **बज्योड़ौ**—भू० का० कृ० ।

वजीजणौ, **वजीजबौ**—भाव वा० ।

वजन—स .पु. [फा. वज्न:] १ बोझ, भार ।

२ भार का परिमाण, तौल ।

३ भारीपन, गुरुता ।

४ महत्व या मान का सूचक ।

उ०—यह सिफत कुतबुद्दीन साहजादे की पढ़ै । बहुत ही वजन मुख से बढ़ै । —कुतबदीन साहजादे री बात

५ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी ।

६ दबाव, दाब ।

रू. भे.—वजन, वजण ।

वजनी—वि [फा वज्नी] १ जिसमे वजन हो, भार हो, भारयुक्त, बोझिल ।

२ जिसमे अधिक बोझ या भार हो, गुरुतर ।

३ ठोस

४ महत्वपूर्ण ।

५ गभीर, महान ।

वजरंग—वि. [स. वज्रांग] १ जिसका शरीर वज्र के सामान कठोर व मजबूत हो, सुदृढ ।

उ०—१ अति सुघट पीड वजरग ओप, अय पाक उलट चव जव अनोप । —रा. रू

उ०—२ वरियाम जणं जण वाजतौ, जोधपुरा जोधहपुरौ । वजरग हुओ हणमत वरि, भलौ 'भीम' कल्याण रौ । —गु. रू ब

२ धूल से लथ पथ ।

स. पु. [स. वज्र-अग] पवनसुत हनुमान का नामान्तर ।

(अ मा)

रू. भे.—बजरग, वजरगी, बजरअग, बजरअगी, वज्रागी, वजरगी, वजरागी, वज्रंगी, वज्रअगी, वज्राग, वज्रागी ।

वजरंगबळी, **वजरगवली**—देखो 'बजरगबळी' (रू. भे)

वजरंगी—देखो 'वजरग' (रू. भे)

वजर—स पु [फा. फजर] १ प्रात. काल, प्रभात ।

२ देखो 'वज्र' (रू भे.)

उ०— १मचियै काकळ मदत री, वीर न देखै वाट । एक अनेका सूं हिवै, छाती वजर कपाट । —वा. दा

उ०—२ जरदैता ओरे असि जाऊ, वजर धजर घण गजर वजाऊ । —सू प्र

उ०—३ दातूसळ वजर बजर जमदाढा, वाढा ऊगाढा विहर । असपति नजर भलौ आफळियौ, कजर नै नाहर कवर । —लिखमीदास गाडण

उ०—४ सुरताण हुओ भय भीत सपेख,गुडिया खांन सू पडियौ गाढ । 'अमर' तणा भुज हूंता अवर, जाणै वजर पड़ी जमदाढ । —केसोदास गाडण

वजरतुड—देखो 'वज्रतुड' (रू भे.) (डिं. को.)

वजरदड—देखो 'वज्रदड' (रू. भे.)

वजरदंत—देखो 'वज्रदत' (रू. भे) (अ मा.)

वजरदंती—देखो 'वज्रदती' (रू भे)

वजरधर—देखो 'वज्रधर' (रू. भे.)

वजरनख—देखो 'वज्रनख' (रू. भे.)

वजरपांण, **वजरपांणि**, **वजरपांणी**—देखो 'वज्रपाणि' (रू भे.)

वजरबांह—देखो 'वज्रबाहु' (रू भे)

वजरमूठी—देखो 'वज्रमुष्टि' (रू भे.)

वजरवारक—वि. [स वज्रवारक] वज्रप्रहार को रोकने वाला ।

स. स्त्री. देवी, दुर्गा ।

वजरसार—देखो 'वज्रसार' (रू भे)

वजरांगी देखो 'वजरंग' (रू भे)

वजराक, **वजराग**—देखो 'बजराक' (रू भे)

वजरायुध देखो 'वज्रायुध' (रू. भे.)

वजरासण, **वजरासन**—देखो 'वज्रासन' (रू भे.)

वजरेसुरी, **वजरेस्वरी**—देखो 'वज्रेस्वरी' (रू भे)

वजरोळी—देखो 'वज्रोळी' (रू भे)

वजवजणौ, **वजवजबौ**—कि. स. [स भज्] १ प्रभाव या प्रतिष्ठा प्राप्त करना, प्रसिद्धि पाना ।

उ०—बारा वुध न ऊपजी, सोळा कळा न होय । बीसा न वजवजियौ भळपण वाट न जोय । —अज्ञात

२ वैभव प्राप्त करना ।

वजवजियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ प्रभाव, प्रतिष्ठा, व प्रसिद्धि प्राप्त किया हुआ । २ वैभव प्राप्त किया हुआ ।

(स्त्री वजवजियोडी)

वजह—स स्त्री [अ. वजह] १ कारण, हेतु, निमित्त ।

२ उद्देश्य, अभिप्राय, प्रयोजन ।

३ कोई असाधारण परिस्थिति ।

४ मुखाकृति, चेहरा ।

५ प्रकृति, तत्त्व ।

रू. भे.—वजह, वजै ।

वजाई—देखो 'विजाई' (रू. भे)

वजाड़णौ, **वजाड़बौ**—देखो 'बजाणौ, बजाबौ' (रू. भे)

उ०—पाट हुतौ तिरण प्रवाड़ा पाटपत, बजाड़ै वार ससार वाजा।
आप री राख रज तुरग वसियो "मना," राज रिख भोगवे महाराजा।
—द. दा.

बजाड़णहार, हारौ (हारी), **बजाड़णियौ**—वि०।
बजाड़िग्रोड़ौ बजाड़ियोड़ौ, बजाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
बजाड़ीजणौ, बजाड़ीजबौ—कर्म वा०।

बजाड़ियोड़ौ—देखो 'बजायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बजाड़ियोडी)

बजाणौ, बजाबौ—देखो 'बजाणौ, बजाबौ' (रू. भे.)
उ०—जिरण 'अवरंग' तणा दळ जीता, आतम सकति बजाई असमर। मारि बहादरसाह मनाया, जोरै मुलक लिया जोरावर।
—सू. प्र

बजाणहार, हारौ (हारी), **बजाणियौ**—वि०।
बजायोडौ—भू० का० कृ०।
बजाईजणौ, बजाईजबौ—कर्म वा०।

बजायोड़ौ—देखो 'बजायोडौ' (रू भे)
(स्त्री. बजायोडी)

बजावणौ, बजावबौ—देखो 'बजाणौ, बजाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ बेग वास वासळी बजावण। धिनी मोहन राधिका धवण।
—ह. ना मा

उ०—२ 'विजावत' उप्रमते असि वाग। खत्री गुर 'क्रन्न' बजावत खाग।
—सू प्र.

बजावणहार, हारौ (हारी), **बजावणियौ**—वि०।
बजाविग्रोड़ौ, बजावियोडौ, बजाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बजावीजणौ, बजावीजबौ—कर्म वा०।

बजावियोड़ौ—देखो 'बजायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. बजावियोड़ी)

बजित्र, बजित्रि—देखो 'वाद्ययत्र' (रू. भे.)
उ०—१ चतुरंग वणाय गजराज चढि, बजित्र अनेक बजाविया।
—सू. प्र.

उ०—२ डोहळ मीर घडा गज डंबर, बजित्रि नर हैमर कर वेस।
आऊगति हिंदुआ ऊपरि, दस सहसि नवसहसउ देस। —दूदौ

बजियोड़ौ—१ देखो 'बजियोडौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बाजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बजियोड़ी)

बजीफादार—वि [फा. वजीफःदार] जिसको वजीफा या सहायता मिलती हो, सहायता-वृत्ति पाने वाला।

बजीफो—स. पु. [फा. वजीफः] १ वह आर्थिक सहायता या वृत्ति जो विद्वानों, छात्रों, दीनों व बिगडे हुए रईसों आदि को भरण पोषण के निमित्त दी जाती है।
२ निवृत्ति, वेतन, पेंशन।
३ छात्र वृत्ति।
४ नियम या श्रद्धापूर्वक किया जाने वाला मंत्र-पाठ, जप।

बजीर—सं. पु. [फा.] १ बादशाह का प्रधान, शासक का मुख्य सलाहकार, अमात्य, मन्त्री, प्रधान, सचिव, दीवान।
उ०—१ हुकम बजीरां हुवा, करौ लसकर अधिकारां। तर कलमा दफतरा, हुवै अन्नेक हजारा। —सू. प्र.

उ०—२ पच वखत निम्माज ताज कुलहराह सोहइ। खोजा खांन बजीर मलिक उबरे मन मोहइ। —व. स.

२ राजदूत।
३ रावणा-राजपूतो का एक नाम। (मा. म.)
४ शतरज नामक खेल का एक मोहरा जो बादशाह से छोटा व अन्य मोहरो से बडा होता है।
रू. भे.—उजीर, वजीर।

बजीरात—स स्त्री. [फा.] १ वजीर का पद, वजीर का कार्य।
उ०—थाहरी दियानत सूं हू म्हारै राज री बजीरात तोनूं सौंपी।
—नी. प्र.

२ वजीर का कार्यालय, कचहरी।

बजीरी—सं. स्त्री. [फा.] १ वजीर का कार्य व पद।
२ उक्त पद की नौकरी।
३ बलूचिस्तान में पाई जाने वाली घोडो की एक जाति।

बजुआत—स. स्त्री. [फा.] १ वजह का बहुवचनात्मक रूप।
२ कारणो का समूह।
रू भे.—बजूआत।

बजू—स. पु [अ. वुजू] नमाज पढने से पहले हाथ-पांव धोने की क्रिया। (मुसलमान)

बजूआत—देखो 'बजुआत' (रू भे.)

बजूद—स. पु. [अ.] १ शरीर, देह।
उ०—अखाहे सिजदां कुनद, बजूद रा चे कार। दादू नूर दादनी, आसिकां दीदार। —दादूबाणी

२ सत्ता, अस्तित्व।
उ०—दादू इस्क अलह की जाति है, इस्क अलह का अग। इस्क अल्लाह बजूद है, इस्क अलह का रग। —दादूबाणी

बर्ज—सं. स्त्री.—१ तरह, भांति, प्रकार।
उ०—सरद की चंदणी चद्रवंसी विमलूं का उजास। रितराज के

दिवस तहा सूरज वसो कवल् का प्रकास, इस बजं वर्टान्तु की क्रीला जल्ले गुलाब् की छाक । —सू प्र

२ देखो 'वजह' (रू. भे)

बजोग—देखो 'बिजोग' (रू. भे)

उ० हर घर ध्यान कमध हेमाळं, परिहा चाढेवा प्रभत। किमन **बजोग** चारणा कारण, गळियो जुजठळ राव गत । —बा. दा

२ देखो 'वियोग' (रू भे.)

बजो—देखो 'बजो' (रू. भे.)

बजणो बजबो १ देखो 'बजणो बजबो (रू भे)

२ देखो 'बाजणो, बाजबो' (रू. भे)

उ०—१ जिणि देस सज्जण वसइ, तिणि दिसि **बजउ** वाउ । उम्रा लगे मो लगसी, ऊ ही लाख पसाउ । —ढो मा.

उ०—२ हाथी तुरिय तुसार सार ग्ररिग्रण उनारइ, **बजइ** ढोल नीसाग ग्राग जगि सघळे जाणइ । —व. म

उ०—३ रिणमलोत रिण **बजियौ**, सुदर 'हरी' सुजाव । सहमा ले पडियो समर, घट सो लग्गा घाव । —रा. रू

उ०—४ यां 'मधकर' हर **बजिया**, याद विखै ग्रण रेह । ज्याउलटै मेघा रवि, सिद्ध पलट्टै देह । —रा रू.

उ०—५ गुजारव भेरियां, घनक टका-रव **बजं** । —गु. रू. ब

उ०—६ वागी खगा बे घडा, ज्या **बजं** घडियाळ । पाव न मडै राव पिड, गौ छडै रिण ताळ । —रा रू

बजणहार, हारो (हारी), बजणियो—वि० ।

बजिग्रोडो बजियोडो, बजयोडो—भू. का कृ ।

बजीजणो बजीजबो—कर्म वा०/भाव वा० ।

बज्जपांणी वि. [स वज्रपाणि] १ वह जिसके हाथ मे वज्र हो।

स पु—इन्द्र ।

बज्जमयौ—देखो 'वज्रमय' [रू. भे]

उ०—रोपीउ पवणिहि कलपतरो, सुमिणइ कुति दूयारि । पवणह नदणु **बज्जमयो**, भीमु सु भूयण मझारि । —प प च

बज्जया—देखो 'विजया' [रू भे]

उ०—देवी दडणी देव वेरी उदडा, देवी **बज्जया** जया दैता दिलडा। —देवि.

बज्जर—देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०—१ करा खग तोल खडे कयकाण, पडै मनु **बज्जर** भीस, पठाण । —पे. रू.

उ०—२ वट्टा वट्टा गोळा **बज्जर** । धूम्रा-धार उठदा धोमर । —गु रू. ब.

बज्जरणो, बज्जरबो-क्रि स [स वज्जर] १ कहना, बोलना ।

२ कोध मे बडबडाना ।

उ०—काळ रूप जम रूप, ग्रहै गयणागक उडळ । वासग वळ **बज्जरं**, भुज्ज धूणो वीजूजळ । —गु रू. ब.

बज्जरणहार हारो (हारी), बज्जरणियो—वि० ।

बज्जरिग्रोडो, बज्जरियोडो, बज्जरयोडो—भू० का० कृ० ।

बज्जरीजणो, बज्जरीजबो—कर्म वा० ।

बजरणो, बजरबो बज्जरणो, बज्जरबो—रू० भे० ।

बज्जरियोडो—भू का कृ १ कहा हुग्रा, बोला हुग्रा । २ क्रोध मे बडबडाया हुग्रा।

(स्त्री वज्जरियोडी)

बज्जियोडो—१ देखो 'बजियोडो' (रू भे.)

२ देखो 'बाजियोडो' (रू भे)

(स्त्री. बज्जियोडी)

बज्रगो—देखो 'वजरगी' (रू भे)

उ० **बज्रगी** किवाड मू मेवाड भुग्रा डडा वका, बरुथा बिभाड वीरभद्र सो बेछाड । मातगा पछाड सेर ग्रोनाड ग्रहाड मेर, पिडगो पहाड मेर सावळो पहाड । —हुकमीचद खिडियो

बज्रद-वि [स. वज्र + इद्र] १ जबरदस्त, जोरदार, प्रचड भयकर।

उ०—ग्रराबा तणो ग्रसबाब ग्रणगावियो, भट किलकता नणो भागो । ग्राड रोपी **बज्रद** भीक वागो ग्रसम, 'लीक' टोप पटक पथ लागो । —कविराजा बाकीदास

२ महान ।

बज्र-वि. [स] १ बहुत ग्रधिक कठोर, कडा, सख्त ।

२ ग्रत्यन्त मजबूत, दृढ ।

३ तीव्र, उग्र ।

स पु—१ इन्द्र का प्रधान शस्त्र जो दधीचि ऋषि की हड्डियो से बना हुग्रा माना जाता है । (पौराणिक)

पर्या—ग्रतोट, ग्रतोल, ग्रसनी, इदरससतर, इद्रावध, कुलिस, खटकूणी खयपत्रगिर, खळसाळ, गेरुभेदी, जोतसुभ्र, दभोळ दधीचास्थी, पवि, पुरहूतजय, भिदुर।

२ विष्णु का सुदर्शन चक्र। (नां. मा)

३ कोई भी विनाशक शस्त्र, हथियार ।

उ०—मुग्दर, लगुड गदा दड भिडमाल गाजीव विस्फोटक **बज्र** तरुवारि। —व. स.

४ बरछा, भाला ।

५ शकर का शस्त्र, त्रिशूल ।

६ तलवार ।

७ विद्युत, बिजली।

८ फौलाद नामक लोहा, स्टील।

उ०—चढै खळ हीक तुरी उर चोट। कळाहळ भूस हुवै व्रज कोट।
—सू. प्र.

९ हीरा। (अ. मा.)

उ०—ग्राभूखरण वज्र तरण श्रथाहै। माथातरणा हार गळि माहै।
—सू. प्र.

१०—हीरा काटने का औजार।

११—एक खंभा जिसके मध्य भाग होते हैं। (वास्तु-विद्या)

१२ चन्द्रमा की एक बनावट।

१३ व्यूह रचना विशेष।

१४ विश्वामित्र का एक पुत्र, वज्रनाभ।

१५ श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध का पुत्र जिसकी माता का नाम रोचना था।

१६ वार व नक्षत्रो सम्बन्धी बनने वाले २८ योगो मे से नवा योग।
(फलित ज्योतिष)

१७ फलित ज्योतिष के २७ योगो मे से पन्द्रवे योग का नाम।
(फलित ज्योतिष)

१८ कोकिलाक्ष नामक वृक्ष।

१९ सफेद कुश

२०—अकलबीर नामक पौधा।

२१ थूहड, सेंहुड़।

२२ वज्रपुष्प।

२३ त्रिकोण। *

रू. भे.—वजड, वजर, वजरि, वजरी, वज्ज, वज्जर, वज्र, वजड, वजर, वज्जर, वज्रउ, वज्रह।

वज्रअंगी—देखो 'वजरंगी' (रू. भे.)

उ०—एम गंधवाह रै प्राक्रमीस वज्रअंगी। जेठो बीस वाहरै अनम्मी इद्रजीत —सनमानसिंघ हाडा री गीत

वज्रउ—देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०—स्फुलिंग सहस्र वरसतउ ज्वाला ना सहस्र, झरतउ, देदीप्यमान, दक्षरण हस्ति वज्रउ लइ चउरासी, सहस्र प्रति स्वच्छ निरमल वस्त्र।
—व. स.

वज्रककट—स. पु. [स. वज्रकक्कूट] १ हनुमान। (अ. मा., नां. मा)

२ हीरकरणी।

३ कोकिलाक्ष वृक्ष।

४ थूहड़-सेहुड़।

वज्रककटसाल्मली—सं. पु. [सं. वज्रकटशाल्मली] अठ्ठाईस नरको मे से एक नरक। (पौराणिक)

वज्रक—सं. पु. [स.] १ हीरा।

२ वज्रक्षार।

३ सूर्य के आठ उपग्रहों में से एक जो सूर्य से तेइसवां नक्षत्र है।
(फलित ज्योतिष)

४ चर्मरोग के लिये एक तेल विशेष। (वैद्यक)

वज्रकपाट—सं. पु. [सं.] दरवाजे पर लगे वे कपाट जो वज्र के समान दृढ और मजबूत हो।

रू. भे.—वजड़कपाट, वजड़किंवाड, वजरकपाट, वजरकिंवाड़।

वज्रकीट—सं. पु. [सं.] पत्थर मे छेद कर देने वाला कीड़ा। बनरोहू।

वज्रकूट—स. पु. [सं] हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम।

वज्रकेतु—स पु [स] नरक का राजा, एक राक्षस। (पौराणिक)

वज्रक्षार—स. पु. [स] वैद्यक का एक रसायन योग, जो उदर रोगों में काम आता है।

वज्रगोप—स पु [स.] वीरबहूटी नामक कीड़ा, इद्रगोप।

वज्रघट—सं पु. [स] लका का एक राक्षस।

उ०—कर सूळ विकटह सुभट कौचट, राम थट झट झपट रौझट। पछक वज्रघट कुघट ऊपट, रगट भट फुट भ्रकुट मरकट।
—सू. प्र.

वज्रतुंड—स. पु. [सं] १ गणेश।

२ गरुड।

३ गिद्ध।

४ मच्छर।

५ थूहड-सेंहुड।

रू. भे.—वजरतुड, वज्रतुड, वजरतुंड।

वज्रदंड—स. पु [स] इन्द्र द्वारा अर्जुन को प्रदान किया जाने वाला एक अस्त्र।

रू. भे.—वजरदड।

वज्रदंत—स. पु. [सं.] १ वन्य-सूकर, सूअर।

२ चूहा।

रू. भे.—वजरदंत, वजरदत,

वज्रदंती—स. स्त्री. [सं.] १ औषधि विशेष।

२ उक्त औषधि का पौधा।

रू. भे.—वजरदंती

वज्रधर—वि. [स.] वज्र या हथियार धारण करने वाला।

स. पु.—१ इन्द्र।

२ महायान शाखा के अनुसार आदि बुद्ध (बौद्ध)।

रू. भे.—वज्रधर, वजरधर।

वज्रधार–सं. पु. [सं. वज्रधारिन्] इन्द्र।

वज्रनख–स. पु. [सं.] नृसिंह।

रू. भे.—वजरनख।

वज्रनाभ, वज्रनाभ्र–स. पु. [स. वज्रनाभ] १ श्री कृष्ण का चक्र।

२ एक सूर्य वंशी राजा।

उ०—बाळ सुतन नृप सिथळ उर्वबर। वज्रनाभ्र जिण सुतण भुपबर। —सू. प्र.

३ वज्रपुर नगरी का एक राक्षस राजा जो निकुंभ का भाई था। यह कृष्ण पुत्र प्रद्युम्न के हाथों से मारा गया था।

४ एक दुष्ट राक्षस जो ब्रह्मदेव के हाथ मे स्थित कमल के प्रहार से मारा गया।

५ स्कंद का एक सैनिक।

६ प्रद्युम्न का एक पुत्र।

७ विश्वामित्र का पुत्र।

रू. भे —वज्रनाभ।

वज्रपाणि–स. पु. [सं. वज्रपाणिन्] १ इन्द्र।

२ ब्राह्मण।

३ एक देव-योनि। (बौद्ध)

रू. भे —वजरपाण, वजरपाणि, वजरपाणी।

वज्रपात–स. पु [सं] १ विद्युत या बिजली का आकाश मे गिरने का आघात।

उ०—तठै करि खीज वहै तरवार, अकाळिय बीज तणी उणिहार। गजा करि खडळ तडळ गात, पवि जिम कीध हुवा वज्रपात। —सू. प्र

२ उक्त प्रकार से बिजली के गिरने से होने वाला क्षय, क्षति।

३ कोई भयकर आपत्ति, दुःख, मुसीबत।

४ शस्त्र-प्रहार।

उ०—गुडै गज्ज प्राहाड, टूक ढहिया कूंभाथळ। वज्रपात करमाळ, गुडै तूटे कबूं-सळ। —गु रू ब

५ दुर्घटना।

रू. भे —वज्रपात,

वज्रपोस–स. पु.— कवचधारी योद्धा।

उ०—जागावत 'ऊदल' ऊभल जोम। पछट्टत खाग हगै वज्रपोस। बिहारियदास अभग वजागि। लडै सुत 'बीरम' अंबर लागि। —सू. प्र.

वज्रप्राणघातक–स. पु.—एक प्रकार का शस्त्र विशेष।

वज्रबाहु–स. पु [स.] १ इन्द्र।

२ रुद्र।

३ अग्नि।

४ राम की सेना का एक वानर जिसका कुम्भकरण ने भक्षण किया।

रू. भे.—वजरबाहु।

वज्रभाखी–वि. [स. वज्र+भाषिन्] अपने वचनो पर कायम रहने वाला, दृढ प्रतिज्ञ।

वज्रभास–वि.—वज्र के समान शरीर वाला, दृढ़ और मजबूत।

रू. भे.—वज्रभास।

वज्रमय–वि. [स.] १ मजबूत और दृढ, वज्र के समान।

उ०—तरै देवी जी हुकम कियौ—एक थारी पाकी ईंट, एक माहरै नावँ काची ईंट, इण भात रौ गढ कराय, वज्रमई दुरग अविचळ हुसी। —नैणसी

२ प्रबल, शक्तिशाली।

वि.—हीरे का, हीरे सम्बन्धी।

रू. भे.—वज्रमयी।

वज्रमार्ग–स. पु. [स वज्र-मार्ग] आकाश, अम्बर, व्योम। (डिं. को.)

वज्रमुष्ठि–स स्त्री. [स. वज्रमुष्ठि] १ इन्द्र।

२ तीर चलाते समय की एक विशेष हस्त मुद्रा।

वि —वज्र के समान मुष्ठिका वाला।

रू. भे —वजरमूंठी।

वज्रविसन–स. पु [स विष्णु+वज्र] सुदर्शन चक्र। (अ मा)

वज्रसरीर–वि [स. वज्र-शरीर] जिसका शरीर वज्र के समान दृढ व मजबूत हो, शक्तिशाली, ताकतवर।

उ०—गयणाह वाणी आपीयउ आगइ वज्रसरीर। वाधइ पचइ चद जिम पडव गुण गभीर। —पं प. च.

वज्रसार–वि. [स] अत्यन्त कठोर।

स. पु.—हीरा।

रू. भे.—वजरसार।

वज्रमोह–स पु.— वज्र की चोट या प्रहार।

वज्रांग—देखो 'वजरंगी' (रू. भे.)

वज्रांगी–स. स्त्री. [स.] १ चोट पर लगाई जाने वाली हडजोड नाम की लता।

२ देखो 'वजरंगी' (रू. भे.)

वज्राग, वज्राग्नि—देखो 'वजराक' (रू. भे)

उ० –१ 'अम्बा'हर वाहत खाग उनंग। जुडै जिम भारथ दारुण जग। वळोवळ नूवत रोद्र वज्राग। भिडै सुजि सूर हुवै दुय भाग। —सू प्र.

उ०—२ धड़ लाकड़ हुबे बळै हस घुम्रा, झाळ हुवो रणताळ झलू।
बळगी खाग अभाग वैरिया, बळती ग्राग बजाग 'बलू।
—केसोदास गाडण

बजागरा—स स्त्री.—पृथ्वी, धरती, धरा। (डि. ना. मा.)

बजायुध बजायुधी—सं पु [स. वज्रआयुध] इन्द्र। (ना. मा)

रू भे. –बजरायुध।

बजासन—सं. पु. [स.] योग के चौरासी आसनो मे से एक।

२ गया में बोधितरु के नीचे की वह शिला जिस पर बैठ कर बुद्ध ने सिद्धि प्राप्त की थी।

रू. भे —बजरासण, वजरासन।

बजी—सं. पु. [स. वज्रिन्] इन्द्र। (अ. मा)

रू. भे.—बज्री

बजेसरी, बजेसुरी, बजेस्वरी—सं स्त्री. [स. वज्र-ईश्वरी] १ देवी, दुर्गा। (बौद्ध)

२ शत्रुश्रो पर विजय प्राप्त करने का एक तान्त्रिक अनुष्ठान जिसे वज्रवाहिनिका भी कहते है।

रू. भे.—वजरेसुरी, वजरेस्वरी।

बजोळी—स. स्त्री. [स.] १ अगुलियो द्वारा बनाई जाने वाली एक मुद्रा विशेष। (हठयोग)

२ नाथ सम्प्रदाय की वज्रायनी शाखा की योग साधन की एक मुद्रा जिसमे स्त्री का सयोग होना आवश्यक है।

वि. वि.—इस सम्बन्ध मे ऐसी किवदंती है कि साधक साधना करते समय एक साथ कई स्त्रियो का सयोग कर सकता है, लिगेन्द्रिय द्वारा स्त्री के रज का शोषण कर सकता है, वीर्य का स्तभन कर सकता है, इत्यादि इस प्रकार की कई चेष्टाए कर सकता है।

रू. भे —बजरोळी, वजरोली।

बझणी, बझबो—कि.अ. [स भज्=आश्रय लेना] १ फैलना, विस्तार होना।

उ०—पाखती अरटा री झीगडि चीगरडि पडि नै रही छै। डुहारो खटाको लागिनै रहिओ। पाखती नीळ बझि नै रही छै।
—रा. सा. स

२ देखो 'बभणो, बभबो' (रू. भे.)

३ देखो 'बजणो, बजबो' (रू भे)

४ देखो 'बाजणो, बाजबो' (रू भे.)

बझियोड़ो—१ फैला हुआ, विस्तार प्राप्त।

२ देखो 'बभियोड़ो' (रू. भे)

३ देखो 'बजियोडो' (रू. भे)

४ देखो 'बाजियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. बझियोडी)

बझौ—देखो 'बजो' (रू. भे)

बट—स. पु. [सं. वटः] १ बरगद का पेड़, बड़।

उ०—१ ता मधि राजन एक बट, छांह रहतु ठहराय। सदा विराजत सारती, आन-दिसा नह जाय। —गजउद्धार

रू. भे —वट, बट्ट, बड़, बड, वड, वड़ि, वड, वडु।

अल्पा -बड़लो, बडल्यो, वडलो।

[स वर्त्मक, प्रा वट्ट] अभिमान, गर्व, घमड।

उ०—१ काय आडा पग आण, काय कर धात कटारियां। छोगाळा छळ छाड, राणा रावत वट तणो। —नैणसी

उ०—२ रोदा भाज उजळा रूंका, वैर वाळ उजवाळ वट। पग मलग निरलग अंग पाडै, भुज निग्लंग निरलग भ्रकुट। —द. दा

मुहा.—१ वट काढणो=अभिमान को समाप्त करना, मन की निकालना, २ वट निकलणो=घमड समाप्त होना, मन की मुराद पूरी होना। ३ वट भरीजणो=गर्व करना।

३ मर्यादा, गौरव, परम्परा, कायदा।

उ०—१ आकुली कुळ वट लोपिय, गोपिय रमइ रगि। फास केसि चाणूर ए, चूरण जे बहु भगि। —जयसेखर सूरि

उ०—२ ज्याग रा गीत सुण प्रीत न करी जिकै, प्रीत हद चारणा हूत पाळी। वीत रै वाहरू हुवो जिण वार मे, चीत रज रीत वट तणी चाली। —गिरवरदांन सादू

४ गुण, धर्म।

उ०—कुळवट छोडै काण, छतै पाण गढ छोडियो। रजवट रो वट राण, छाटोही न रहियो चिमन'। —लक्ष्मीदान बारहठ

५ मोड, ऐठन, बल।

उ० - आ बात कैय राजाजी गुमान सू मूछ्धा रै वट देवण लागा —फुलवाडी

मुहा.—हाथा रो वट काढणो=किसी को पीट कर अपने मन की निकालना।

६ शृखला, साकल, लगर।

७ एक वर्ग विशेष।

उ० —मामगर कउतिगीया कुहटीया नट बट गाछा छीपा परियटा सुइ नाई तेली मोची सतूआग बंधारा चीतारा······। —व स.

वि [स. वट=शून्य] १ भयानक, भयावह।

उ०—वट वाटै घाट औघटे रण वन। जळ थळ महियळ अजर जरै। चेलक चाड आप रण्या रण, करणी सदा सहाय करै। —दोनो

२ देखो 'वाट' (रू. भे)

रू भे —वट, वट्ट।

बटकणौ, बटकबौ,—देखो 'बटकणौ, बटकबौ' (रू. भे.)

बटकियोड़ौ—देखो 'बटकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बटकियोड़ी)

बटकी—देखो 'बाटकी' (रू. भे.)

बटकौ—१ देखो 'बटकौ' (रू. भे.)
उ०—ईतरे उमरा उपर कागला पाच श्राय बैठा। तद रजपूत लाकडी री बटकौ वायौ। जणी सू पाच कागला मुवा।
—पंच मार री बात

२ देखो 'बाटकौ' (रू. भे.)

बटक्कणौ, बटक्कबौ - देखो 'बटकणौ, बटकबौ' (रू. भे)

बटक्कियोड़ौ—देखो 'बटकियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री बटक्कियोडी)

बटक्कौ—देखो 'बटकौ' (रू. भे)
उ०—धीर भटक्कै वज्जिया, वे रणधीर दुवाह। श्रग बटक्कै उडता, सेन श्रटक्कै साह। —रा. रू.

बटबड़-स. पु. [श्रनु] १ बेचेनी मे धीरे धीरे बोलने या बडबडाने की क्रिया या भाव।
२ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि।

बटणियौ—देखो 'बटणौ' (श्रल्पा., रू भे.)

बटणौ, बटबौ—१ देखो 'बटणौ, बटबौ' (रू भे.)
उ०—१ ताहरा भीतर सू कहायौ—कुवर ने ले श्रावणौ छै तो श्राप पधारो नही तो कोई श्रावै नही। जै साहूकार नै श्रादमी श्राया री खबर हुई तो कही परदेस मेल देमी। पछै क्यो ही बटसी नही।
- पलकदरियाव री बात

उ०—२ डाकण भखै न बाघ श्रडोळै, दीधा वटै न कोडी दाम। श्रस जो उरो लियो श्रो "चूंडै", गज दीधो काय दीधो गाम।
—श्रोपो श्राढो

२ देखो 'बाटणौ बाटबौ' (रू. भे.)
उ०—गाय, भैस श्रौर ऊटा रा घाव भरै बट नीम दे धवसो पान उबाळ धोया, नव्य त्वचा सट सीम दे —दसदेव

बटणहार, हारौ (हारी), बटणियौ - वि०।
बटियोड़ौ, बटियोड़ौ, बटयोड़ौ - भू० का० कृ०।
बटीजणौ, बटीजबौ—कर्म वा०।

बटत - देखो 'बटत' (रू. भे)

बटतर-स पु [देशज] वेर, दुश्मनी।
उ०—तरै राजा बूझियो तो कठा सू श्राया, श्रमो कासू बत्तर छै।
—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

बटपत्री-स. स्त्री [स. वटपत्र] १ रामतुलसी।
[स. वटपत्रा] २ चमेली।

३ एक वनस्पती विशेष [जडी] जिसके रस से पत्थर फूट जाता है। पत्थर फोड।

बटपाड़ौ—देखो 'बटपाडौ' (रू भे.)
उ०—१ जम दळ बटपाड़ौ वह जासी, थासी नहीं विगाडो थारै। जगपत निस दिन नाम जपतां, सता सारा काज सुधारै।
—र. ज. प्र.

उ०—२ बटपाड़ां धरपाडां वाळी श्राभ जडा नांखें ऊपाड़। कोय न गाज सके किनियाणी, भीफळियाळ तुहाळा भाड —बा. दा.

बटभरणौ-स. पु.-धनुषाकार एक काष्ट का बना छोटा यंत्र जिसके मध्य के छेद मे लकडी का डडा लगा रहता है, जिसकी सहायता से मोटी रस्सियो या जेवडी के वट दिया जाता है।
रू. भे.—बटभरणौ।

बटर-स. पु [स वट+श्ररन् वटर] १ चोर, डाकू।
२ बटेर पक्षी।
३ बिस्तर, बिछोना, चटाई,
४ पगडी।
५ मथाणी।
६ मुर्गा।
७ एक सुगध युक्त घास।

बटळणौ, बटळबौ—देखो 'विटळणौ, विटळबौ' (रू. भे.)
बटळणहार, हारौ (हारी), बटळणियौ—वि०।
बटळिश्रोड़ौ, बटळियोड़ौ, बटळयोड़ौ - भू० का० कृ०।
बटळीजणौ बटळीजबौ—भाव वा०।

बटसावत्री-पूनम-स. स्त्री.—जेष्ठ मास की पूर्णिमा। इस दिन कबीर जयती भी मनाई जाती है।

बटसावत्री-व्रत बटसावित्री व्रत-स पु.—जेष्ठ शुक्ला त्रयोदशी के दिन किया जाने वाला व्रत जिसमे तीन दिन निराहार रहा जाता है श्रौर वट की पूजा होती है।
वि. वि.—मतान्तर से जेष्ठ वदी श्रमावस्या को भी यह व्रत किया जाता है।

बटाउ - देखो 'बटाऊ' (रू. भे)
उ०—जु सोरभजी रै घाट थी गगादिक श्राणनै देवरै पाटण सोमईयै ऊपर चाढै, सु सातमी वार गगोदक कावड भरी नै श्राणतो हुतो सु किणहेक सहर बटाउ थको किण हेक रे चौंतरै उतरियो हुतो।
—नैणसी

बटाउड़ौ—देखो 'बटाऊ' (श्रल्पा., रू भे.)
उ०—मारग चालतो एक बटाउड़ौ बोल ऊध्यो-तेरे मन कुछ श्रौर है करता के कछु श्रौर।
—रातवासो

बटाऊ - खरीददार ।

उ०—किसतूरी झंखी भई, केसर बटियौ भाव । सह वस्तू सुहंगी थई, गयौ बटाऊ बाव । —प्रासी बारठ

२ देखो 'बटाऊ' (रू. मे)

उ०—रोतां भ्रग रोवरावीया, वाट बटाऊ लोक। जातां जीव वहै नही, वीछड़वा नौ सोक । —श्रीपाल रास

बटाऊड़ौ—देखो 'बटाऊ' (अल्पा., रू मे.)

उ०—सेवै नर सदीना सुरधर, सदा नीरोगी ही रवै । बूठै जांरी बातड़ी नै, बगत बटाऊड़ा कवै । —दस देव

बटाड़णौ, बटाड़बौ—देखो 'बटाणौ, बटाबौ' (रू. भे.)

बटाड़ियोड़ौ—देखो 'बटायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बटाड़ियोड़ी)

बटाणौ, बटाबौ—देखो बटाणौ, बटाबौ' (रू. भे)

बटाणहार, हारौ (हारी), बटाणियौ — वि० ।

बटायोड़ौ,—भू० का० कृ० ।

बटाईजणौ बटाईजबौ—कर्म वा० ।

बटायोड़ौ—देखो 'बटायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री बटायोड़ी)

बटारक-स. स्त्री. [सं.] डोरी, रस्सी ।

रू. भे.—बटारक ।

बटाळ—देखो 'बटाळौ' (मह., रू. भे.)

(स्त्री. बटाळी)

बटाळणौ, बटाळबौ देखो 'विटाळणौ, विटाळबौ' (रू. भे.)

बटाळणहार, हारौ (हारी), बटाळणियौ—वि० ।

बटाळियोड़ौ, बटाळियोड़ौ, बटाळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बटाळीजणौ, बटाळीजबौ—कर्म वा० ।

बटाळौ-वि. [स्त्री. बटाळी] दुष्ट, नीच, धूर्त ।

बटाव—देखो 'वाट' (रू भे.)

उ०—तेजसी तासली लेने डेरै श्रायौ । रावजी बुरी मानियौ । बास छूटी, बटाव माहै लोग कहै छै-थाळी तेजसी ली-सु इण भात लीधी । —राव रिड़मल री बात

बटावणौ, बटावबौ - देखो 'बटाणौ, बटाबौ' (रू. भे)

उ०—सब कोइ प्रीत बटावतै, सब कोइ करतै भाव । सम्मन वै कुण रूंखड़ा, ज्यां न झकोळै बाव । —सम्मन

बटावणहार, हारौ (हारी), बटावणियौ—वि० ।

बटावियोड़ौ, बटावियोड़ौ, बटाव्योड़ौ - भू० का० कृ० ।

बटावीजणौ, बटावीजबौ —कर्म वा० ।

बटावियोड़ौ—देखो 'बटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बटावियोड़ी)

बटावू—देखो 'बटाऊ (रू. भे.)

उ०—१ जमला जोबन फूल है, फूलत ही कुम्हलाय । जांण बटावू पथ सिर, बैठे भी उठ जाय । —जमाल

उ०—२ मस्तक लीनौ लूण, धरण री धूड़ ठरावै । खेजड़ खेबा खाय, मरु मे छान छवावै । बगत बटावां हेत, खेत किरसांणां तांई, बन मे पसवा प्रेम, हमीरा ग्राम हथाई । —दसदेव

बटियोड़ौ—देखो 'बटियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री बटियोड़ी)

बटियौ—१ देखो 'बाटियौ' (रू भे.)

२ देखो 'बाटी' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो वटभरणौ।

बटी-स पु. [सं] १ रस्सी, डोरी।

२ गोली या टिकिया ।

३ उपवन, बगीचा, उद्यान ।

रू. भे.—बटी ।

बटु, बटुक-स पु. [स. वटुकः] १ बालक, लड़का।

२ ब्रह्मचारी, माणवक ।

३ धर्म शास्त्र पढने वाला विद्यार्थी, छात्र ।

४ एक भैरव ।

वि —मूर्ख मूढ।

रू. भे.—बटुक, बड़ुआ, वटुय ।

बटूकणौ बटूकबौ—देखो 'बटूकणौ, बटूकबौ' (रू. भे)

उ०—कंथा करक न छोडियै, हिरण किसा घी खाय । भ्राक बटूकै, पवन भखै, घोडां श्रागळ जाय । —श्रज्ञात

बटूकणहार, हारौ (हारी), बटूकणियौ—वि० ।

बटूकियोड़ौ, बटूकियोड़ौ, बटूक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बटूकीजणौ, बटूकीजबौ—कर्म वा० ।

बटूकरण-स. पु.— उपनय संस्कार, यज्ञोपवीत सस्कार । (डिं. को.)

रू भे —बटूकरण ।

बटूकियोड़ौ—देखो 'बटूकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बटूकियोड़ी)

बटेवाहु—देखो 'बटाऊ' (रू. भे.)

उ०—इकि डोकरि तिणि दीसि पाच पुत्र इकि वहूय सउं । कुंती नइ श्रावासि बटेवाहु वीसमिया । —पं. प. च.

बटैत—देखो 'बटाऊ' (मह., रू. भे.)

बटौ—देखो 'बट्टौ' (रू. भे.)

बट्ट—१ देखो 'बाट' (रू. भे.)

उ०—प्रति प्राणंद ऊमाहियउ, वहइज पूगळ बट्ट। त्रीजइ पुहरि उलांघियउ, आडवळा रउ घट्ट। —ढो. मा.

ऊ०—२ कूच नगारा बज्जिया, गिर गज्जिया महीर। समंद उलट्टे जिम सजळ, बट्टै लगै बहीर। —सू. प्र.

२ देखो 'बट' (रू. भे.)

उ०—कट थट्ट गयौ खग झट्ट कहै, रण थट्ट घणा भट पास रहै। घर बट्ट पट्ट गहट्ट घड, पिंड खड विहड पमग पडं। —पा. प्र.

बट्टि—देखो 'बाट' (रू भे)

उ०—हरि हथीआर हलावता, मुकत्यह रुंधी बट्टि। ते मुख-लीधइ श्राविजै, नाकि घणा जिणि घट्टि। —मा कां. प्र.

बट्टौ—सं.पु. [स. वट प्रा. वट्टुल] १ गोला, गोली, कोई गोल मोगरा।

उ०—श्राणे खबर फिरै श्रोहट्टा। बाटा दूत थया नट बट्टा, अति सोचै पतसाह अछानैं, खिण सज्या खिण तारतखानैं। —रा. रू.

२ आर्यावर्त का एक जनपद, एक देश।

उ०—विदेह सहिल्ल मलय वत्स मत्स वरण दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भग बट्टा कुणाल लाट केकयमडलारढ इत्यरद्ध पच विंशति जनपदा आरया। —व. स.

४ देखो 'बट्टौ' (रू. भे.)

बठ-पु.—१ अनुसार, अनुरूप।

उ०—रसा रूठी रूठौ अलल इक रूठो मत रहे। हमारी देखे ना विरुद निज लेखे बठ वहै। —ऊ का.

२ देखो 'वठै' (रू. भे.)

बठल—वृक्ष विशेष।

उ०—कल्प द्रुम नइ केतकी, कठल बठल ककुस्ट। कमरख अनइ कालुबरी, केसर मुर सतुस्ट। —मा. का. प्र.

बठाऊं-क्रि. वि.—वहा से, उधर से।

बठी—देखो 'वठै' (रू. भे.)

रू भे—बठी, बठीनै।

बठे, बठै-क्रि. वि.—वहाँ, उधर।

उ०—अबे ईणा बामण रा बेटा नैं कनात माहै लीधौ। कथा बचाणी माडी। बठे बामण रूपवत असतरी देखे नै मन डीग्यौ थको कथा बाचवा लागौ। —गाव रा धणी री बात

रू. भे—बठेई बठै, बठैई, वटै, वठ।

बड-सं. पु.—१ शिर ढापने या घूंघट निकालने के लिये स्त्रियों द्वारा खींचा जाने वाला ओढ़नी का पल्ला, छोर।

उ०—धरती मांहे नै थारै दरबार मांहि इण सरीखौ दातार कोई नहीं। तिणसू लोवड़ी रौ बड माथा ऊपर खेंच्यौ।

—जगदेव पंवार री वात

२ देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.) (ह. नां. मा.) (उ. र.)

उ०—१ हरि मन हरिखि हकारिय नारिय स्यउं निजजाति। बड़सिंह बड लहुडाईय, भाई जिम ते पांति। —जयसेखर सूरि

उ०—२ बड अगड विसतारै, निधि मेघा तुझौ नम। —रांमरासौ

उ०—३ दीसंत दुयंग पटदेवगत्ति। दीवाण बडौ बड देसपत्ति।

—गु. रू. ब.

३ देखो 'वट' (रू. भे.) (उ. र)

बडउ—देखो 'बडौ' (रू भे.) (उ० र०)

उ०—तु ही रावत गोरल्ल, तु हीज दल मांही वडउ, तुं ही रावत गोरल्ल, तु हीज मोरउ भाईडउ। —प च. चौ.

बडकंवार—१ देखो 'बडकुमारी' (रू. भे.)

उ०—तरै किणही कह्यो-काइक वडकवार बेटी बरस १५ तथा १६ रा बैर हुवै तिका जो च्यार पोहर छाती सु लगाय सोवै तौ आछूं है। बीजू तो जीवै नहीं। —नैणसी

२ देखो 'वडकुमार' (रू. भे.)

बडकारण-वि. [देशज] १ बड़ाई करने वाला, प्रससा करने वाला।

उ०—केहर वाघ श्राद बडकारण, चक्रवत पगे एक सौ चारण। पति री प्रीत धारिया पूरी, हेमराज अबदार हजूरी। —रा. रू.

२ स्तुति व यशोगान करने वाला।

बडकुंवार—१ देखो 'बडकुमारी' (रू. भे.)

उ०—जेसळमेर सोढा रे विच में कोटेचा रजपूत रहै। कोटेचां रै बडकुंवार दीकरी सु पडिहारे रो मोहिल परणीजण नू श्रायौ।

—नैणसी

२ देखो 'वडकुमार' (रू. भे)

बडकौ—देखो 'बडको' (रू भे.)

उ०—कामैती खावै धन कूडा, पडिया दुख भुगतै रजपूत। यौं बडको था बडका श्रागी, बटका हुय झडिया श्रंगबूत।

—ऊमरदांन लाळस

(स्त्री. वडकी)

बडगात-वि.—१ वीर, शक्तिशाली, बहादुर।

उ०—१ प्रथम 'श्रभैपति' पूछियौ, भूप करणैठी भ्रात। अब झगड़ो कीजै किसू, वखतसिंघ बडगात। —सू. प्र.

उ०–२ वांणी अवरळ सुध वखरा, गुरा सागर बडगात। ढोली पुंगळ आवतां, पंथ मळै कविपात। —डो. मा.

रू. भे —बडगात।

बडगूजर–सं. पु.—एक क्षत्रिय वंश या इस वंश का व्यक्ति।

उ०—भजि जात प्रजा मय वात भगेळां, पाटण तूग्रर कंपपुरे। बडगूजर जाट अहीर तजै वळ, दाट लगा पुर राट दुरै। —रा. रू.

रू. भे.–बडगूजर।

बडगोतण—देखो 'बडगोतण' (रू. भे.)

बडगोळौ–स. पु. [सं वट+राज. गोळौ] वट वृक्ष का फल।

बडचड–वि. १ दुराग्रही, जिद्दी, हठी।

२ विरुद्ध आचरण करने वाला।

बडचीत– वि.—१ दानवीर, उदार चित्त, महान।

उ०—१ त्याग तियाग, रखण खूमांणा, सगराहा हिंदू सुप्रवीत। सिवयसी न मिळै 'अडसी' सुत, चीतोड़ो खामद बडचीत।
—जादुरांम ग्राढौ

उ०—२ लखधीर बडो लख लूट वणी वपि लाज। बडचीत वरीसण बाज गरीब निवाज॥ —ल. पि.

२ वीर, साहसी।

उ०—त्हारो सुजस अमर 'करणावत' वासुर जग बहु हुवै वितीत। वाधारियो पाघडो विढतै, चैराड़ियो नहीं बडचीत। —द. दा.

रू. भे.—बडचीत, बढचीत।

बडजांनी–स. पु —बारात मे वर के दादा, पिता, चाचा आदि मुखिया पुरुष।

उ०—बेली सहि बिरदैत, जेठी 'गोवरधन' जिसा, "करनाजळ" प्रणबर कन्है, बडजांनी वानैत। —वचनिका

बडणौ, बडबौ—देखो 'बढणौ, बढबौ' (रू भे)

उ०—कमळ बीय ससिकळा, कळा बडती जग वदै। कळाहीण खळ हुवै, जेम निस पूनिम चदै। —गु. रू. बं.

बडणहार, हारौ (हारी), बडणियौ—वि०।

बडिग्रोड़ो, बडियोड़ो, बडयोड़ो—भू० का० कृ०।

बडीजणौ, बडीजबौ—भाव वा०

बडत्यागी–वि.—दान वीर, त्यागमूर्ति।

उ०—ग्राबेर उदैपुर मुरधर ग्राबु, पुगो जस गुजरात परै। ताहरो सुजस सदा बडत्यागी, "भगवत" बुंदी साख भरै। —ग्रोपो ग्राढौ

बडनाळ–स. स्त्री. तोप।

उ० —मुरजां-मुरजा भिरड़गढ़, बडनाळ गुड़क्की, सोर धुम्रा रव घोर सज, धर अवर ढक्की, ग्राई बीज ग्रचीत की, ग्रसमान कड़क्की, भूप तुराटां भेळिया, जुध कारण जक्की। —वी. मा.

रू. भे.—बडनाळ, बडीनाळ, वडीनाळ।

बडपण, बडपणौ, बडप्पण, बडप्पणौ—देखो 'बडप्पण' (रू. भे.)|
(उ० र०)

उ०—१ हाथी हीडत देख, कूकर लव-लव कर मरै। बडपण तणै विवेक, क्रोध न आणै किसनिया। —अज्ञात

उ०—२ राणै प्रताप राव-मालदै सत्रजीतां चाळां सटै। पण बाघ विखो भाजो यो पिसण, विखा बडप्पण नह घटै। —रा. रू.

बडफर, बडफरि, बडफ्फर–वि. [स वड्+फलक] रक्षा करने वाला, रक्षक।

उ०—कहर हर निज थरहर ऊपर कायरां, अतर सर सोक जरहर अखत। जो वर 'तेज' हर इसौ मौसर जठै, होऐ वडफर मौहर खूद हत। —कवि करणीदान

स. पु. [सं वड्+फलक] ढाल।

उ०—१ अति खीजै सुण सुण असुर, जण जण छीजै प्रांण। अवदलखा वढियो अकस, कस बडफर केवांण। —रा. रू.

उ०–२ गज बाघा वहे उपगार खत्री गुर, वदन वहे खग ग्राकविया। (तैं), ऊबारिया बडफरां ग्रोटां, कोटां पावण हार किया।
—महाराजा गजसिंह रौ गीत

उ०—३ सरिखा सू बलभद्र लोह साहियै, बडफरि उछजतै विरधि। भलाभली सति तोईज भजिया, जरासेन सिसुपाळ जुधि। —वेलि

उ०—४ बडफ्फर टूक ऊपे गजबाज, तडफ्फड़ मच्छ जिहो सिरताज। मरद्द जरद्द पडै अनमद्य, कहक्कह वीरह नाचि कमंध।
—वचनिका

रू भे —बडफर।

बडबडणौ, बडबडबौ—देखो 'बडबडणौ, बडबडबौ' (रू. भे)

उ०—वरियांम विठोबा बडबडंत। जमदूत जोध सिलहां जडत।
—गु. रू. ब.

बडबड़ियोड़ौ—देखो 'बडबड़ियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बडबडियोडी)

बडबेहड़ौ—देखो 'बडबेडो' (रू. भे)

उ०—कोई सिरदार रै सत्रुग्रो नै मार भगाया सो सिरदार री फतै हुई। पाछा ग्राया तरै बडबेहड़ां सूं वधाया, वधावा ठावा २ ग्रादमी तिकां रा नांम सूं गावीजण लागा। —वी. स. टी.

बडबोर—देखो 'बडबोर' (रू. भे.)

उ०—कठै वजै बडबोर, कठै झाड़ी मोटोड़ी। कठै बोरटी नांव, वणी देवा री छोड़ी। — वसदोख

बडबोरड़ी, बडबोरी—देखो 'बडबोर' (१) (अल्पा., रू. भे.)

उ०—खेत मे **बडबोरड़ियां** आयोडी, गहर डम्मर व्हियोड़ी, जांणे वड़ला ऊभा। —रातवासो

बडभाग—१ देखो 'बडभाग' (रू. भे)

२ देखो 'बडभागी' (रू. भे)

उ०—दोनू देरावर तणी, भटियाणी **बडभाग**। ओपै वर वरदळ अभो, सोभै अचळ सुहाग। —रा. रू.

बडभागी—देखो 'बडभागी' (रू भे.)

उ०—ए वडभागण राधका, कवण तपस्या कीन। तीन लोक तारण तरण, सो थारै आधीन। —अज्ञात

(स्त्री. वडभागण, बडभागणी, वडभागिण)

बडमन–वि —१ उदार चित्त, दयालु।

उ०—अति उतिम दीजै उकति, सरसति हू सुप्रसंन। गाञा 'लखपत्ती' गुणी, महि पत्ती **बडमंन**। —ल. पिं

२ विशाल हृदय, महान, श्रेष्ठ,।

बडम–स पु —१ यश, कीर्ति, बडाई, विरुद, महत्व, विशेषता।

उ०—१ कनक जडाव दयण 'करणावत,' तै कीधो कुण करै तम। आठ पोहर मोटा आथाणा, वाखाणा थारी **बडम**।

—किसनो आढो

उ०—२ फब खट व्रन चहु फेर, घेर रावता सुभटा। करण जेर केवियां, वाय समसेर विकटा। मारू जैसलमेर, बळै आबेर बखाण, नागद्र बीकानेर हेर दीठो हिंद वाण। रैणवा दियण कुमेर रिध **बडम** सुमेरज विसतरै। धज, बंध 'सेर' रिया धणी, अेक बेर फेर अवतरै। —पहाडखा आढो

२ पूर्वज, बुजुर्ग।

३ बडप्पन, महानता, सज्जनता।

उ०—१ हिव चालो प्रवहण पूरी नै, करि जल तणी सफाई। चद्रदीप माहे बैठा किम, आवै **बडम** बडाई। —वि. कु.

उ०—२ लछवर तास वारणा लीजै, **बडम** तणा कीजै वाखाण। —ह. ना मा

उ०—३ प्रसण बखाण करै जोधापन, **बडम** तुहाळी साख बळै। अे जो जिकै वहै ऊबेडा, खेडा तले राखिया खळै।

—महाराजा गजसिंह रो गीत

४ देखो 'बडो' (मह., रू भे)

उ०—१ **बडम** पराक्रम वीर वर, विहर निडर बळ बाह। सर "प्रताप" केई सुखी, छत्र धर तो कर छाह। —जैतदान बारहठ

उ०—२ **बडम** सुदातार हर भगत ताळा वीळंद, सरसरी ऊवार गुण अरत सरसै। बरसता सदन कर इंद जिम 'जगतसी,' दरस तां इता साभाव दरसै। —महाराजा जगतसिंह रो गीत

रू. भे.—बडम, बडिम, बडिमि वडमि, वडिब, वडिम, वडिमि, वडीम, वाडम, वाडव, वाडिम।

बडमन, बडमनो, बडमन्न—देखो 'बडमंन' (रू. भे.)

उ—१ दिन छोटा मोटी रयण, थाढा नीर पवन्न। तिण रित नेह न छाडियइ, हे वालम वडमन्न। —ढो. मा.

उ०—२ विधो-विध धूहड दाख वचन्न। मेले नह चाल राणी वडमन्न। —गो. रू.

बडमपण, बडमपणो–स. पु —१ वृद्धापन, बुजुर्गियत।

२ देखो 'बडप्पण' (रू भे.)

उ०—बिया जैचद छत वडमपण देखता, लेखता छत्रपति झोक लागै। तीसरो थयो ईसाण न्रप ताहरो, अभग 'वीक' "जैतसी" कोध आगै। —द. दा.

बडमि—देखो 'वडम' (रू भे)

उ०—गढपति गहगीर हद विहद हेल हमीर। धरपति लखधीर वडमि घणा बावन वीर। —ल. पिं.

बडराग–स स्त्री.—देखो 'बडो-राग' (रू. भे.)

उ०—धकै सिमोद मेवास चढिया घटा, गोळिया गाज बडराग गवता। —दल्लो मोतीसर

बडरूप—देखो 'विडरूप' (रू भे)

बडलाज–वि स्त्री —जिसको बहुत लाज आती हो, जो, लज्जाशील हो, लजालु।

उ० रूप तरुकी राणिया, बडभागणि **बडलाज**। पाधारै आया प्रथम महिल जिके महाराज। —रा. रू.

बडवडाळो–वि [अनु] बडे से बडा, सब से बडा।

उ०—अवै अछाया देतराय रोद्र काया रूप ए। अन्नड कराळा **बडवड**ळा भड भुजाळा भूपए। —गु रू ब

बडवांनळ—देखो 'बडवानळ' (रू. भे.)

उ०- आगलि रही करि अरदास, चाहूआण राउ लीलविलास। जउ सायर **बडवांनळ** समइ, तउ कान्हउ तुरकानइ नमइ।

—का दे प्र

बडवार—देखो 'बडवार' (रू भे)

उ०—लगर बध दुलावत 'लाला', सुपह दात फरमो झळ सार। सर झूंचण दुसहा नवसहसा, वड करसण झोका वडवार।

—लालसिंह राठोड बडली रो गीत

बडबामुख–सं पु [स बडवा+मुख:] पाताल। (डिं. को.)

रू. भे.—बडवामुख।

बडवालु, बडवालो—सं. पु.—वट वृक्ष का फल।

उ०—बडवालु नइ बुरिए वली, वांस वरणसरी वेलि। वाकुंभा वाघइ भला, वकुल वघतरु वेलि। —मा. कां. प्र.

बडव्बड—क्रि वि.—बड़ बड़ कर।

उ०—बडव्बड बीजळ घार बहंत। लडत्थड संकर सीस लहंत। —गु. रू बं

बडस—देखो 'बिडस' (रू. भे.)

बडहठ—युद्ध, लड़ाई, जंग।

उ०—वीरम पहली वीरवर इतरै बह आया। साहूं खग बळ सांखलै, वडहठ रचाया। —वी. मा.

रू. भे.—बडहठ।

बडहत, बडहत्थ, बडहथ—वि. [सं. वड्हस्त] १ आजानबाहु।

उ०—१ विदा किया भाटी खगवाहा, बेली साथै कमध दुवाहा। मारण दुयण करत महवेचै, बडहथ 'नाथो' अमर धवेचै। —रा. रू.

उ०—२ अदल आण वरती इळा, जसराज जमाया। बडहथ पूगळ जिणवखत, भाटी मन भाया। —द. दा.

रू. भे.—बडहत, बडहत्थ, बडहथ, बडहाथ।

बडहर—वि. [स. वड्+हर?] उच्च कुल का।

सं. पु.—पाखर से मिलता जुलता पत्तो वाला एक वृक्ष विशेष।

रू. भे—बडहर, वडहार, बढहर।

बडहार—देखो 'बडहर' (रू. भे.)

बडां—वि. वृद्ध (सामान)

बडांवडी—वि. स्त्री.—१ महान, बड़ी, समर्थ।

उ०—बडांवडी किलियाणी बाका।' पोख पुजगां पाळै। देस विदेस माय डाढाळी, राज दरबार रुखाळै। —कविराजा बांकीदास

२ देखो 'बडावडी' (रू. भे)

बडाई—देखो 'बडाई' (रू. भे.)

उ०—१ बडा बडाई ना करै, बडा न बोलै बोल। हीरा मुख से ना कहै, लाख हमारा मोल। —प्रज्ञात

उ०—२ कहै प्रोहित 'केहरी' अम्हां घरवट अधिकाई। सांच सुछळ सत्र वाढ़ि, बडा जुध तरै बडाई। —सू. प्र.

उ०—३ जिको पवारां रौ आदमी आवै तिण आगै पवारा री घणी बडाई करै। —नैणसी

बडाक—देखो 'बडको'।

बडाक—स. पु.—भेड़िया।

उ० ताहरा जान नू मारग में आवतां बडाका री सवण हुवो। ताहरां सवणियां कही—राज! सवण भला न हुवा छै, पाछा फिरो —नैणसी

रू. भे.—बड़ाक, बड़ाख।

बडापण, बडापणो—देखो 'बडप्पण' (रू. भे.)

बडार—देखो 'बडहार' (रू. भे.)

बडारण—सं. स्त्री. [सं. भ्रवंवरिका, भाटकारिणी=भडारण] दासी सेविका, बांदी, दरोगा जाति की स्त्री।

उ०—१ हाडा राव 'रतन' री हवेली कनै डेरौ हुतौ। रांणी राठौड़ बीकावतजी सत कियौ। बडारण पातर खवास ऐ ११ बळी —बां दा. ख्यात

उ०—२ ताहरां बडारण पूजा करण नूं आई। ताहरा मूळ बडारण नू पकड़ आपरी दोवड़ माहै पोट बांध अर उवैरा कपड़ा पैहरनै कोट ऊपर चढ़ियो। —नैणसी

उ०—३ दात रा चुडा विना बडारण रावण री आखड़ी। —रा. सा. स.

रू. भे.—बडारण, बडारण, भडारण।

बडाळ—सं. पु.—१ रव। (डिं. नां. मा.)

२ देखो 'बडौ' (मह, रू. भे.)

उ०—'वरसिंघ देव' राजा बडाळ। बूंदेल चडै चम्मर बंबाळ। —गु. रू. ब.

रू. भे—बडाळ।

बडाळो—देखो 'बडौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ उत्तम नाम वस उजवाळो, वेद-धरम चौ बंधव बडाळो। —सू प्र.

उ०—२ हाडा गोड जादव्व भाला हठाळा। वळै वंस छत्रीस सामै बडाळा। —वचनिका

उ०—३ सोळहसै समत हुओ जोगण पुर चाळै। सम्मै एकासियै मास काति बडाळै। —गु. रू. बं.

उ०—४ 'करण' तणौ परणतै क्यावर, कर मुकता कवि बियै कल्यांण। वडहर कहियौ पथ बडाळौ, जागळवा कहियौ जेसाण। —द. दा.

(स्त्री. बडाळी)

बडाळौराग—देखो 'बडौराग' (रू. भे.)

उ०—रुडै बडाळाराग, हूर अच्छर सिव हरखिया। —गो. रू.

बडावड, बडावडी—१ देखो 'बढावडी' (रू. भे)

उ०—राव मालदे रै कूपौ जी सिरै चौकी हुवा। बीकानेर डीडवाना सरीखा तखत पटै हुवा। तौही तद रिणमलां रै घरै इसडी बडावड हुती। —राव मालदे री बात

२ देखो 'बड़ाबड़' (रू. भे.)

बडिब, बडिम, बडिमि—स. पु.—देखो 'बडम' (रू. भे.)

उ०—धन **बडिम** गोवरधन धारण। चख मक सूर वियो चख चद।
—ह. ना. मा.

उ०—२ रथि हाथ रूक सम थर रेलगि, महिपति पग तिस एक एक मरण। अम कमधज जिण **बडिम** पूजतो, ग्राप वडिम सुजि ग्राचरण। —जैमल राठौड़ री गीत

उ०—३ धारण सलव चखां चद धारै। ग्राच उठाया **बडिम** उच्चारै। त्रिच पुर घसे विजय वजि बाजा, जगपत सुता वरै चंद राजा। —सू. प्र.

उ०—४ उदह बेळा **बडिम** महारस दानेत, जौति जळ प्रचळ सीतळ प्रबळ जाण। कोक जळचर निजर वमगचर पाळ कव, मीन सागर गिरद चद भूमाण। —महाराणा जगतसिंह सीसोदिया री गीत

उ०—५ भिडै पतसाह सै हाथि जिण भाजिया, **बडिम** विधि जास दरगह विराजै, इसै विरदै लियै ग्रो जगति ऊपरा 'सूर' सुत तपै खत्रवाट साजै। —केसोदास गाडण.

बडियाससुर—स पु. (स्त्री. वडियासासु) श्वसुर का बडा भाई।

बडिस—स. पु [स बडिश, बलिश.] मछली पकडने का कांटा, बशी। (हि को.)

रू. भे. बडिस।

बडी देखो 'बडी' (रू. भे)

बडीतीज—स. स्त्री —भाद्रव मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया।

वि. वि.—देखो 'तीज'।

रू. भे.—बडीतीज।

बडीदेव—सं. स्त्री.—१ श्री करणी देवी।

उ०—सग वीतज ग्राया उरा सार, कियै बूंब करनला कर पुकार। दरसण दियै ताछिन **बडीदेव**, साजो कियै करहो फळी सेव।
—रामदांन लाळस

२ भगवती, दुर्गा।

बडीनाळ—देखो 'वडनाळ' (रू.भे.)

उ०—**बडीनाळ** दस विखम, धोम सतपच मुहर धर। तीन राडि विच जीत, ग्रायो रेवा नदि ऊतर। —सू. प्र.

बडीम—देखो 'वडम' (रू. भे.)

बडीमां—स. स्त्री.—पिता की भोजाई, ताई।

बडीराग—स. स्त्री.—देखो 'बडीराग'।

बडु—१ देखो 'बडौ' (रू. भे.) (उ० र०)

उ०—लंक **बडु** चूटी लहु, पींडी चड़तई मांसि। चूंटण पणि घाठा जिस्या, काई न कीजइ पासि। —मा. कां. प्र.

२ देखो 'वट' (रू. भे) (उ० रा०)

बडुग्रार—देखो 'बडौ' (मह., रू भे.)

उ०—१ वड पह **बडुग्रार** भुजि कुळिभार धर सिणगार तपै लखधीर। विलसण गजवाज कुंग्रर सकाज वसधा राज करै वर बीर। —ल. पिं.

उ०—२ साल सिणगार **बडुग्रार** सांमी, नवै खंड जास जसवास नामी। —ल. पिं.

बडूजा—देखो 'विडूजा' (रू. भे.)

बडूजावाह—देखो 'विडूवावाह' (रू. भे)

बडेर—स. पु. [सं. वड्र+रा. प्र. ग्रेर] १ बडा घर।

२ 'कूटे' एव माटी से बनी हुई ग्रनाज डालने की कोठी (गोडवाड़)

रू. भे.—बडेर।

बडेरउ, बडेरौ—देखो 'बडेरौ' (रू. भे.)

उ०—१ वडउ **बडेरउं** भाइगु जांणि,स्रावक नइ धरि चडइ प्रमांणि। करम ना जोड एवडा फेर, धरम ग्राडा छइ काठिग्रा तेर।
—वस्तिग

उ०—२ ताहरा गोगैजी कही—थे **बडेरा** छो, छोटा तोई सुसरा छो, पग बडा छो, थे बैसो, हूं ले ग्राईस। —नैणसी

उ०—३ ताहरा **बडेरा** लोक एकठा हूवा। दावक्या तेडीयां। वात पूछो। —देवजी बगड़ावता री वात

उ०—४ हेमो कहै—कूंभा! थारै ग्रजेस पिड लोह नही लागो छै, बाळक छै। तूं घाव कर। हू **बडेरो** छू, घाव क्यू करूं? कूंभो कहै—हेमाजी! वरसै थे वडा पण पगं म्हे वडा। था माहरो घांन पलै मे लियो, थे माहरा चाकर, तै मे वडा, थे घाव करो।
—नैणसी

२ देखो 'बडौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—नांन्हइ किसनइ नाथियो, वासिग नाग **बडेरो** रे। नास करइ रवि नांन्हडो, ग्रंधकार बहुतेरो रे। —पं. च चौ.

बडै—समान, बराबर।

बडैरौ—देखो 'बडेरौ' (रू. भे.)

उ०—सु 'जैतो' 'कूंपो' तो बडी वेढ़ काम ग्राया था, नै तद **बडैरा** ठाकुरां मैं रावजी कन्है जेसो भैरवदास हुतो, तरै जेसैजी रावजी सु कह्यो। —राव मालदे री बात

बडोड़ो—देखो 'बडौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ ग्रा तो उण डावाळा रा मन में सुहावै नहीं वे बांरा भाला

तौ ऊगिड़-सूर बडोड़ौ माप री डाढ़ां प्रळा रूपी दिखाव मांज न्हांकसी । —वी स. टी.

उ०—२ चाकरडी, रे माक थांरै बडोड़ै वीरेजी ने मेल, राय भरिये रे भाद्रवे रे, म्हारा गाढा म्हारू घर बसौ । —लो. गी.

बडौ—देखो 'बडौ' (रू. भे)

उ०—१ कळिहण 'करनोत' बडा काळनळ, 'भेरूक' 'नाथू' निवड भड । लखथाट करै दहवाट 'लखमण', वण थाए वर त्रिपि घिघड । —गु. रू बं.

उ०—२ अज राखियौ विगोयौ वासव, बडौ अवर कुण विसन बड । —ह. नां. मा.

उ०—३ छाजू, सिवौ वडा रजपूत, नै कनै बडौ वित, तिण घर २० तथा २५ रजपूता रा वसाया । बडी वसती हुई । —नैणसी

उ०—४ पुर लूटियौ वडी सिघ पाई । समिया सुज मारिया सिपाई । —रा. रू.

उ०—५ ते वडी चिडी नही जे वडउ फडहडउ, ते बडी नइ नही जे वडउ खड हड । —व स.

(स्त्री वडी)

बडौ-दूहौ—स पु —दोहे नामक छद का एक भेद जिसके प्रथम व चौथे चरण मे ११-११ तथा दूसरे व तीसरे चरण मे १३-१३ मात्राए होती है । —बा दा.

उ०—खित्रियां वडाराग माहै बडादूहा गवाड़ौ । —वचनिका

बडौ-बाप—देखो 'बडौ-बाप' (रू. भे.)

बडौ-भाव—स. पु.—हाथी का एक रोग (मोतीजरा) जिसके कारण उसका शरीर सूक जाता है और वह खाना पीना बद कर देता है ।

वि. वि.—इस दशा में अगर हाथी की पूछ चीरी जाय तो उसमे खून के स्थान पर पानी निकलता है ।

बडौ-राग—देखो 'बडौ-राग' (रू. भे)

उ०—१ खित्रिया रा बडा राग माहै वडा दूहा गवाड़ौ । —वचनिका

उ०—२ नौबति भींगड़ी पड़ी नै रही छै । भेर नफेर, करनाळ भमक नै रही छै । सुरणाया री भ्रहक पडि नै रही छै । बडौ-राग सिधवौ वागि नै रहीग्रो छै । —रा. सा. सं.

बडौ-राज—सं. पु. [सं. वड़ राज्य] राजा का राज्य, बड़ा राज्य ।

उ०—भोटी भायप होय, पिंडा हुवै पूजता, वडाराज रो गाव लोग सोह बूझता । नह को लोपै लीह, क बरे घबोलणा, एता दे किरतार फेर नही बोलणा । —भोमिया बचन

बडौ रावळौ—स. पु.—गाव के ठाकुर का घर ।

रू. भे.—बडौ रावळौ ।

बडौ-लाट—देखो 'बडौ-लाट' (रू. भे.)

बडौ-सांणोर—सं. पु.—एक प्रकार का डिंगल-गीत जिसके प्रथम व तृतीय विषम चरणों में २०-२० मात्राऐं तथा द्वितीय व चतुर्थ सम चरणों १८-१८ मात्राऐं होती है, साथ ही प्रथम द्वाले के प्रथम पद में २३ मात्राऐं होती हैं । (र. रू.)

वि. वि.—इसका दूसरा नाम 'शुद्ध-सांणोर' भी है ।

बड्डुवड्डी—स. स्त्री.—सर्व शक्तिमान देवि, दुर्गा ।

उ०—देवी चद्रघटा महम्माय, चंडी । देवी बोहळा बन्नळा बड्डुवड्डी —देवि.

बड्डाक, बड्डाख—देखो 'वडाक' (रू. भे.)

उ०—वैताळ वीर मिळिया विहद, सीकौतरि साकणि महासद्द । मिळ समळ ग्रीध ग्रांमख भक्ख, जंबक्क रीछ बड्डाक जक्ख । —गु. रू. ब.

उ०—२ जरख रीछ बड्डाख, सिवा सत लख्स मलक्का । साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का । —गु. रू. बं.

बड्डौ—स. पु.—१ देखो 'बडौ' (रू. भे)

२ देखो 'बडौ' (रू. भे.)

रू. भे —बढौ ।

बड्ढणौ, बड्ढबौ—देखो 'बढणौ, बढबौ' (रू. भे.)

बड्ढियोड़ौ—देखो 'बढियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री बड्ढियोडी)

बढ—स. पु. [स. वर्ध] १ घाव ।

उ०—बढियो मुखेस 'पतौ' वाढाळौ, बंभियौ 'सुरजन' देख बढ । गढ चित्तौड गरब तण गरजे, गाढौ गौ रणथंभ गढ । —पत्ता चूडावत रौ गीत

२ कटाव ।

उ०—तासणी री बाडी रो नीपनो इकतीस ताड़ी रो, नाळेर सो मोटो, खोपरा बढ रो, गरी रै दळ रो, हाथ सू छूट पडै तो काच री सीसी ज्यू किरचा-किरचा हुय जावै । —रा. सा. स.

३ काट-छाट ।

४ देखो 'बढ (रू. भे)

५ देखो 'बढौ' (रू. भे)

रू. भे.—बढौ बड्ढ ।

बढणी—स स्त्री.—१ अामातिसार से होने वाला पेट का दर्द, ऐंठन ।

२ काटना क्रिया का भाव ।

बढणौ, बढबौ—१ देखो 'बढणौ, बढबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बढ पड़ विहर थाटा विळ द, भुजलग भट सेलां भचकि ।

स्रुग वसूं कहै 'हूटमल' सुतन, "अमूनि" जिम खाटै अचड़ि ।
—सू प्र.

उ०—२ रजपूतां रै स्त्रियां री तौ धरम पती रै लारै काठ चढ जाणौ नैं रजपूता री धरम स्यांम धरम सारू तथा निजकुळ सारू तरवारा री धारा सू वढ जावणौ । —वी स. टी.

२ देखो 'बधणौ, बधवौ' (रू. रू.)

वढणहार, हारौ (हारी), वढणियौ—वि० ।

वढिग्रोड़ौ, वढियोड़ौ, वढ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वढीजणौ, वढीजबौ भाव वा० ।

वढवार—देखो 'वढवार' (रू भे.)

वढाणौ, वढावौ—देखो 'बढाणौ, बढाबौ' (रू. भे.)

उ०—पण म्हारौ मन तौ भौ इज कैवै कै सुवा रा इण रामतिया री अब कांई जरूरत है, इण तौ अणगिण मिनखा रा गळा वढाय दिया वढावतौ इ जावैला । —फुलवाड़ी

वढाणहार, हारौ (हारी), वढाणियौ—वि० ।

वढायोडौ—भू० का० कृ० ।

ढाईजणौ, वढाईजबौ—कर्म वा० ।

वढायोड़ौ—देखो 'बढायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वढायोड़ी)

वढाळ, वढाळी, वढाली–स. स्त्री.—तलवार ।

उ०—१ वढाळ सेल के वणाय. कीध ग्रोपमं कळा । जिके कुमार वीज जाणि, चचळा अपच्चळा । —सू. प्र.

उ०–२ वीजली परि झलकती, तीन्हौ धाराळी वढाली अणी आळी —व. स.

वढावणौ, वढावबौ—देखो 'बढाणौ, बढाबौ' (रू. भे)

उ०—२ इण तौ अण गिण मिनखा रा गळा वढाय दिया, वढावतौ इज जावैला । —फुलवाड़ो

वढावणहार, हारौ (हारी), वढावणियौ—वि० ।

वढाविग्रोड़ौ, वढावियोड़ौ, वढाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वढावीजणौ, वढावीजबौ—कर्म वा० ।

वढावियोड़ौ—देखो 'बढायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वढावियोडी)

वढियोड़ौ—१ देखो 'बढियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बधियोड़ौ'

(स्त्री. वढियोडी)

वढूलियौ—देखो 'बथूळौ' (अल्पा , रू. भे.)

उ०—धूळि जु ऊडी छै । त्यै खेह माहै । सूरज किसौ देखिजै छै । जैसे वढूळिया (वथूलिया) माहै पात दीसै । —वेलि टी.

वड्ढ—१ देखो 'वढ' (रू. भे.)

उ०—संग्रांम खडग वाहंत सनड्ढ । वपै पळ तडळ ऊखळ वड्ढ ।
—गु. रू. बं.

२ देखो 'बढ' (रू. भे.)

३ देखो 'वढौ' (मह., रू. भे.)

वड्ढणौ, वड्ढबौ—१ देखो 'बढणौ, बढबौ' (रू. भे.)

उ०—आरण कियौ उछाह, वीरातन वढ्ढियौ । मारू लोहमराट, चमू सझ चढ्ढियौ । —किसोरदान बारहठ

२ देखो 'बधणौ, बधवौ' (रू. भे.)

वढ्ढियोड़ौ—१ देखो 'बढियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री· वढ्ढियोड़ी)

वढौ–सं. पु.—१ रुपये पैसे के अभाव मे ऋणमुक्त होने के लिए दिया जाने वाला सामान, पशु आदि ।

२ बधन के कारण शरीर में रस्सी का होने वाला निशान ।

३ देखो 'वढ' (मह., रू. भे.)

४ देखो 'बढ' (मह , रू. भे.)

वण–सर्व.—१ उस, उन ।

उ०—१ आप वण ठोड कर जोड़ि कीधी अरज । बीकपुर पधारौ इद्र बाई । —मे. म.

उ०—२ खेल भुजा बळ खेलणौ, आहुव मन ऊझेल । वरदायक दीठा वणै, वण फुळ री वाधैल । —पा. प्र.

२ देखो 'बिना' (रू. भे)

उ०—वण दीपक मंदिर कसौ, वण पूतां परिवार । कसी महेली कत वण. घ्रत वण अळप अहार । —ढो. मा.

३ देखो 'वणी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०–१ चदण नीरू वण चरै, वण नीरू सण खाय । ए हर ढोलौ करहलौ, जित बरखूं तित जाय । —जलाल बूबना री बात

उ०— २ खेत कवळा । बाजरी मोट मूग वण घणौ । —नैणसी

३ देखो 'अण' (रू. भे.)

४ देखो 'वन' (रू. भे.)

उ०—जिण दाहे वण हर धरइ, नदी खळक्कइ नीर । तिण दिन ठाकुर किम चलइ, अण किम बांधइ धीर । —ढो. मा.

रू. भे.—बण,बिण, वण, विण ।

अल्पा.,—बणि, वणी, वणी ।

वणक—देखो 'वणिक' (रू. भे.)

उ०—कै पूजै स्रीकंत नूं, कै पूजै अरिहंत । 'बांका' मत विस्वास कर, ए सह वणक असत । —बां, दा.

वणकर—देखो 'बुनकर' (रू. भे.)

उ०—सोइ नइ सराणी आ, कंसारा तिहां कोडि । **वणकर** नइ बालंब परिण, घसता हाथा जोडि । —मा. का. प्र

वणकल—देखो 'वणिक' (अल्पा., रू भे.)

वणगत सं. स्त्री—१ मेल जोल ।

२ कपड़े बुनने का ढंग या प्रकार, बुनाई ।

रू भे.—वाणक ।

वणचरि—देखो 'वनचर' (रू. भे.)

उ०—सूयर देखी मेल्हिउ बाणु, अरजुन सिउ कुण् कन्ह सघाणु । तिणि खिणि मेल्हिउ **वणचरि** बाणु, ऊडिउ गयणि हुउं अप्रमाणु । —प. प. च.

वणज—१ देखो 'विणज' (रू भे.)

२ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

वणजणौ, वणजबौ—देखो 'विणजणौ, विणजबौ' (रू. भे)

वणजणहार, हारौ (हारी), वणजणियौ—वि० ।

वणजिओड़ौ, वणजियोड़ौ, वणज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वणजीजणौ, वणजीजबौ—कर्म वा० ।

वणजार—१ देखो 'बिणजार' (रू. भे.)

२ देखो 'बिणजारौ' (मह, रू. भे)

वणजारा—देखो 'बिणजारा' (रू. भे)

वणजारौ—देखो 'बिणजारौ' (रू. भे)

वणजियोड़ौ—देखो 'बिणजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री वणजियोड़ी)

वणठण—देखो 'बणठण' (रू भे.)

वणठणौ, वणठबौ—देखो 'बिणठणौ, बिणठबौ' (रू भे)

वणठणहार, हारौ (हारी), वणठणियौ—वि० ।

वणठिओड़ौ, वणठियोड़ौ, वणठ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वणठीजणौ, वणठीजबौ—भाव वा० ।

वणठियोड़ौ—देखो 'बिणट्ठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वणठियोड़ी)

वणणौ, वणबौ—देखो 'बणणौ, बणबौ' (रू. भे) (उ र.)

उ०—१ करै तिकारा कांठला, कंठ त्रपत कुंवराह । वधनहिया ज्या सिर **वणै**, कीरत जेण कराह । —बा. दा.

उ०—२ सखी अमीणौ साहिबो, मदन मनोहर गात । महाकाळ मूरत **वणै**, करण गयदा घात । —बा. दा.

उ०—३ भाण उदय इव विधि वयण, कुण तिण रुकण करेह । त्युंही हुकम 'पातल' तणौ, **वणबौ** त्युंही वणेह । —जैतदान बारहट

उ०—४ आभा रूप जोम ऊफाणिक । **वणियौ** अनंक दूसरै वांणिक । —सू. प्र.

उ०—५ साजिहानजी रै बेटा ४ हुवा । दारासाह, साहसूजौ, औरंगजेब, मुरादबगस । सु इणा रै आपस मे **वणै** नहीं । —द. दा.

उ०—६ औरगसा अजमेर सु, कूच करंता वार । **वणी** अनायत खान सू, काने सुणी पुकार । —रा. रू.

उ० ७ अग नयणी अगपति-मुखि, अगमद तिळक निलाट । अगरिपु-कटि सुदर **वणी**, मारू अइहइ घाट । —ढो. मा.

उ०—८ कसूमल केसरिया हरी सबज सपताळू सोसनिया नारंगिया सपेता जाणै तिजारा की वाडी फूली छै । ऊपर उणहीज **वणता** हथियार बाधजै छै । —रा सा. स.

वणणहार, हारौ (हारी), वणणियौ—वि० ।

वणिओड़ौ, वणियोड़ौ, वण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वणीजणौ, वणीजबौ—भाव वा० ।

वणता—देखो 'वनिता' (रू. भे)

वणराइ, वणराई, वणराज, वणराय,—१ देखो 'वनराज' (रू. भे.)

उ०—१ तिसिह आविउ वसत, हूउ मीत तणउ अत । दक्षिण दिसि तणउ, सीतल वाउ वाइ त्रिहुंभइ **वणराइ** । —रा. सा. स.

उ०—२ थळ भूरा वन झखरा, नही सु चपउ जाइ । गुणे सुगधी मारवी, महकी सहु **वणराइ** । —ढो. मा.

उ०—३ **वणराय** भार अढार सल्या, विस्णु वांणी एह । जेलु जाण्यु तेतलु, वखाण्यउ, भणइं पदम विमेख । —रूकमणी मगळ

उ०—४ अत तपियं तन अवनि, दियं परजन सरदाई । सुधा पाय ससि करै, जेम वणराय सवाई । —रा. रू.

उ०—५ विद्या सवि सिद्धिहि गई, जा पेखइ पणराइ । आहेडी आरोडीउ ता एकु सूअरु धाइ । —प. प. च.

वणराव—देखो 'वनराज' (रू. भे)

वणरावमुनी—स. पु.—नारद मुनि ।

वणवास, वणवासु—देखो 'वनवास' (रू. भे.)

उ०—बारह ८ वरस **वणवासु** नाठै हीडिवु तेरमई ए । अम्हि किम ए जांणिस तुहितउ वनवासु जु तेतलु ए । —पं. पं. च.

वणवीरोत—स. पु.—राठौड़ वंश की एक उप शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

वणसटी—देखो 'वणस्टी' (रू. भे.)

वणसणौ, वणसबौ—देखो 'विणसणौ, विणसबौ' (रू भे.)

उ०—गाडा मे नाव नाव मे गाडौ, लेख तणा कुण भेद लदै । 'ओपा' राम तणी गत अवळी, **वणसै** दळी' र दळण वदै । —ओपो आढौ

बणसणहार, हारौ (हारी), बणसणियौ—वि० ।
बणसिम्रोड़ौ, बणसियोड़ौ, बणस्योड़ौ—भू. का. कृ. ।
बणसीजणौ, बणसीजबौ—भाव वा० ।

बणसियोड़ौ—देखो 'विणसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री बणसियोड़ी)

बणस्टी-सं. पु. [सं. वणयष्टि] कपास के पौधे का डंठल ।
रू. भे.—बणसटी, बणस्टी, बनसटी, वणसटी।

बणस्सइ—देखो 'वनस्पति'
उ०—सात लाख जीव प्रथवी माहि, साते उप साते तेउ माहि । वाउकाई जीव माते विचारि, दस लाख **बणस्सइ** मझारि ।
—वस्तिग

बणाक—१ देखो 'बणाक' (रू. भे.)
२ देखो 'विनायक' (रू भे.)

बणाकियौ—देखो 'बणाक' (अल्पा., रू भे.)

बणाड़णौ, बणाड़बौ—देखो 'बणाणौ, बणाबौ' (रू. भे.)

बणाड़ियोड़ौ—देखो 'बणाणियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री बणाड़ियोड़ी)

बणाणौ, बणाबौ—देखो 'बणाणौ, बणाबौ' (रू भे.)
बणाणणहार, हारौ (हारी), बणाणणियौ—वि० ।
बणायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बणाईजणौ, बणाईजबौ—कर्म वा० ।

बणायतौ-वि.—१ प्रभाव पूर्ण व्यक्तित्व वाला ।
उ०—तरै सहाणी लायक ठावौ **बणायतौ** डील देखि उठि मिळियौ ।
—जगदेव पवार री वात
२ सुन्दर, तेजस्वी ।

बणायोड़ौ—देखो 'बणायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. बणायोडी)

बणारसी—१ देखो 'बनारसी' (रू. भे.)
२ देखो 'बनारस' (रू. भे.)
उ०—दरहार मथुरा अवध्या **बणारसी** चंदेरी वल्लिवाल महबर महोव हरियाणउ भयाणउ ।
—व. स.

बणारिस-सं. पु [सं वाचनाचार्य] वाचनाचार्य (उ. र.)

बणाव—देखो 'बणाव' (रू. भे.)
उ०—१ ग्राद कठ चव अक्खिरा, अत दोय ठहराव । यौ सुबध घट अक्खिया, बिगड़े कठ **बणाव** ।
—र. ज. प्र.
उ०—२ मन हरलै तन उच्छव मोटै, कियौ **बणाव** 'अमै' नवकोटै। सुरंग बसन सुदर तन सोहै, देखि रूप रति भूप विमोहै । —रा. रू.
उ०—३ जुद्ध रा आगळ मरियोड़ा घरे आया सौ पति मरियां पछै विधवा रै कांई **बणाव** ।
—वी. स. टी.

बणावटी—देखो 'बनावटी' (रू. भे.)
उ०—कोई वीर पुरुष की स्त्री **बणावटी** सूरवीरां नै कहै·हे बणावटी रावतां सीह मत वाजौ थारै माहै सीह वाजौ जैडी सकती नहीं ।
—वी. स. टी.

बणावणौ-वि.—१ जो बनाने योग्य हो, बनाने वाला ।
२ जो बनाने का माध्यम हो, जिससे कुछ बनाया जाय ।
उ०—घाव काळजै घला निजरं, मिनखा घर **बणावणौ** । पर कारजां देव सघेड़ो, अह निस आडौ आवणौ ।
—दसदेव

बणावणौ, बणावबौ—देखो 'बणाणौ, बणाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ वेह समत्थ **बणावियौ**, बाघ डाच जम बत्थ । जिण माझल लग जाडिया, माय जाय गज मत्थ ।
—बां. दा.
उ०—२ ग्यान ब्रह्म 'जसराज' गुण, पुन उग्र तप करि पाविया । सार 'जसवत' आदि स्तुतिवर, विविध ग्रथ **बणाविया** ।
—सू. प्र.
बणावणहार, हारौ (हारी), बणावणियौ—वि० ।
बणाविम्रोड़ौ, बणावियोड़ौ, बणाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बणावीजणौ, बणावीजबौ—कर्म वा० ।

बणावि—देखो 'बणाव' (रू. भे)
उ०—गयण दास खवास भरणै, अवसर मन भाणौ । घर वाल्हौ आप री तिकै पट घूघट ताणौ । उण **बणावि** आमासि प्रभू दरसाव न पासै । सुख छूटो संभारि दीह कट्टौ ते सासे ।
—रा. रू.

बणावियोड़ौ—देखो 'बणायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. बणावियोड़ी)

बणास—१ देखो 'विनास' (रू. भे)
उ०—१ 'पाल' तणै ग्रेह पागडो आखी म्हे अरदास । अब सूरजमळ आवियौ, वधै न वंर **बणास**।
—पा. प्र.
उ०—२ वणाय लाग चाढि वाढ, ओपवै उजास रा । वणत बीच नीर वाधि, रूप मे **बणास** रा ।
—सू. प्र.
२ देखो 'बनास' (रू. भे.)

बणासणौ, बणासबौ—देखो 'विनासणौ, विनासबौ' (रू भे.)
उ०—सु आनै रे देस मांहे काळ पड़ै, तद थोरीए एक जिनावर **बणासियौ** ।
—नैणसी
बणासणहार, हारौ (हारी), बणासणियौ—वि० ।
बणासिम्रोड़ौ, बणासियोड़ौ, बणास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बणासीजणौ, बणासीजबौ—कर्म वा० ।

बणासियोड़ौ—देखो 'विनासियोड़ौ (रू. भे.)
(स्त्री. बणासियोड़ी)

बणिक-सं. पु. [स. वणिक] (स्त्री. बणिआंणी, बणियांणी) १ व्यापार द्वारा अपना जीवन निर्वाह करने वाला, बनिया, व्यापारी।

उ०—करै बणिक कुळ कसब कर, हित माहे वित हाण। बणिक दगौ दे बिरचियौ, उर इचरज मत आण। —बां. दा.

२ व्यापारी समुदाय।

उ०—महेसदत्त नामे धनवंत, सहु बणिक माहे सौभत। —वि कु.

३ वैश्य।

उ०—बणिआंणी रहसी नहीं, रहसी सुपारी। सोनारी जासी परी, (कह) मावज कुमारी। —अज्ञात

रू. भे.—बणक, बणिक, बाणक, बांणिक, वणक, वांणक, वाणजू।
अल्पा.—बणियौ, बनियौ, बांणयौ, बाणियौ, बाण्यौ, वणियौ, वांणियौ, वांण्यौ।

बणिकपण-सं. पु. [स वणिक+त्व] १ बनिया या व्यापारी होने का भाव।
२ बनिये का स्वभाव।

बणिय्यौ-सं. पु.—सूत खोलने के परीते के ऊपर का डंडा जिसमे सतुलन रहता है।
रू. भे.—वणीय्यौ।

बणिज—देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.) (उ र)

उ०—गज तुरंग नर पालखी, पाच सया प्रत्येक। कोठा जेहनै पाच सै, वली बणिज सुविवेक। —बि कु.

बणिजारौ—देखो 'बिणजारौ' (रू. भे.)

उ०—जरासिंध नउ आविउ दुउ, कालकुमरु जई लग्गइ मुउ। बणिजारा नी वात साभली, जरासिंधु आवइ तुम्ह भणी। —पं पं. च.

बणिज्ज—देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ०—करै बणिज्ज एक हट्ट, रूप सक्कलत्त ए। साखा चौतार मुक्खमल्ल, रेसमी वसत्त ए। —गु. रू. बं.

बणियाणी-स. स्त्री. १ एक बरसाती कीड़ा।
२ एक पौधा विशेष।
३ वणिक जाति की स्त्री, वणिक की स्त्री।
रू. भे.—बणयाणी, बणियाणी, बनियाणी, बाणणी बांणनी, बिणियांणी, बिराणी, वांणण, वाणणी, विराणी।

बणियौ—देखो 'वणिक' (रू भे.)

उ०—जग अपजस देखै नहीं, देखै स्वारथ दाय। जिम तिम कर बणियौ रहै, बणियौ तेण कहाय। —बां. दा.

बणी-स. स्त्री. [सं. वनज प्रा. वउणी] १ कपास का पौधा।
२ कपास का डोडा।
३ करघा।
४ देखो 'वन' (अल्पा, रू. भे.) (उ. र)
५ देखो 'वनी' (रू. भे.)
६ देखो 'वण' (अल्पा., रू. भे)
७ देखो 'वह्नि' (रू. भे)
रू भे.—बणि बणी।
अल्पा,—बण, वण।

बणीय्यौ—देखो 'वणिय्यौ' (रू. भे.)

बणीठणी-वि. स्त्री. [अनु] १ जो बन-ठन कर तैयार हो, सुसज्जित, तैयार।
२ किसी निर्णायिक स्थिति में आई हुई, व्यवस्थित।
ज्यू—बणीठणी बात बिगड़गी।

बणीमग-स. पु. [स. वनीपकः, वनीयक;] १ भिक्षुक, भिखारी (उ. र)
२ याचक।

बणीमगदो-स पु—एक प्रकार का दोष जो दानशाला का भोजन ग्रहण करने से लगता है। (जैन)

बणीमगदोस-स. पु.—भिखारी जैसी दीनता दिखलाने पर लगने वाला दोष। (जैन)

बणीयण-वि.—१ आतक फैलाने वाला, आतकित करने वाला।

उ० —'तेजो' नेजा ऊगरा, ओरै तेज तुरंग। कहर बणीयण 'चदको' मुहर भणी रण जग। —रा. रू.

२ बनाने वाला।

बणेच-स पु.—आभूषण। (अ. मा.)

बणोखड़ी—देखो 'बणोखड़ी' (रू. भे.)

बणोड़ौ—देखो 'बणोडौ' (रू. भे.)

बणोद—देखो 'विनोद' (रू. भे.)

बण्यौ-वि.—१ अचल, अटल, शाश्वत।
२ देखो 'बणियोडौ' (रू. भे.)

बत-वि. [स. वत्] १ किसी वस्तु की सम्पन्नता प्रगट करने के लिये संज्ञा शब्दो के आगे लगाया जाने वाला प्रत्यय।
२ समान, तुल्य।

उ०—यह पत्र विचित्रित चित्र योग्य। आरण्य-रुदन बत भी अयोग्य। —ऊ. का.

अव्य.—१ कष्ट।

२ दया ।
३ विस्मय ।
४ सुखी ।
५ आमंत्रण ।
६ देखो 'वित' (रू. भे.)

उ०—सत रा हरचद सुमत रा सागर, चित रा विलंद सुदत रा चाव । बत रा अवगण प्रभत रा वाधरण, नत रा तार सुकत रा नाव । —र. ज. प्र

७ देखो 'बात' (रू भे)

उ०—वदै रिख रुग लोमजर बत । —राम रासौ

अल्पा —बतौ ।

बतक – देखो 'बतक' (रू भे.)

उ० – आवि बिदेसी वल्लहा, छळ करि छेतरियाह मतवाळा री बतक ज्यू, पिय नइ परहरियाह । —ढो. मा

बतकलौ—देखो 'बतल' (अल्पा., रू भे)

बतका, बतड़ी—देखो 'बात' (अल्पा , रू भे)

उ०—बतका जग जाहर हुई, साप्रत आसुर आय । तनुजा साम दैन तजी, मिळी देवगत माय । —पा. प्र.

बतकाव, बतगाव—देखो 'बतळाव' (रू. भे)

उ०—आयौ साथ निवाब रै, कोटै हदो राव । मिळिया स्री महाराज सू, साह कियौ बतकाव । —रा रू.

बतन—स पु. [फा.] १ जन्म-भूमि, स्वदेश ।

उ० - सो एक समय उठै काळ पडियौ सौ पेट भरणं र। जरूरत सू बतन छोड नीसरयौ । —नी. प्र.

२ देश, राष्ट्र ।

उ०—ईराण बतन हिम्मत अथाह । सिरविलंद तुझ सिरखा सिपाह । —वि स.

बतरणौ—देखो 'बरतणौ' (रू भे.)

बतळ—देखो 'बंतल' (रू भे.)

बतळाणौ, बतळाबौ—१ ललकारना ।

उ०—तद रैबारिया कही, साहिबी कुवरसी सावलै री छै। तिण कही म्हारा रजपूत था पलू मे मारियौ। तेरै वैर मे ले जावा छां अर थाना मारा छा। तद अै मोटियार था सताब खड कोसा पाचा साता आय पोहता। आण बतळाया अै घिरिया सो रीठ वागौ । —कुंवरसी साखला री वारता

२ देखो 'बतळाणौ, बतळावौ' (रू. भे)

उ०—ताहरा पचाइण तीसा असवारा सू बीरमदेजी रै ऊपर आयौ। नै वीरमदेजी नू बतळायौ । —नैणसी

३ देखो 'बताणौ, बताबौ' (रू. भे.)

बतळाणहार, हारौ (हारी), बतळाणियौ—वि० ।

बतळायोड़ौ – भू० का० कृ० ।

बतळाईजणौ, बतळाईजबौ—कर्म वा० ।

बतळायोड़ौ—१ ललकारा हुआ ।

२ देखो 'बतळायोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बतायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बतळायोड़ी)

बतळाव, बतळावण, बतळावणी—देखो 'बतळावण' (रू. भे.)

उ०—१ निबाब थटैरौ, दूसरौ मौबतखा ठिकांणा सूं-इणांसूं चूक री बतळावण थी । —द. दा.

उ०—२ पछै रामदासजी बरछी फेरनै बुडी री दीधी इका रै छाती में। सो सास जातो रयौ। तरै बीजा इका रै ने रांमदासजी रै बतलावण हुई। —रा. सा. सं.

बतळावणौ, बतळावबौ – १ देखो 'बतळाणौ, बतळाबौ' (रू भे.)

उ०—सुणि एम वचन प्रजळे असुर, इसौ तेज दरसावियौ। बमरीर बाघ बतळावियौ, जाणै नाग खिजावियौ । — सू. प्र.

२ देखो 'बताणौ, बताबौ' (रू भे)

बतळावणहार, हारौ (हारी), बतळावणियौ—वि० ।

बतळावियोड़ौ, बतळावियोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बतळावीजणौ, बतळावीजबौ—कर्म वा० ।

बतळावियोड़ौ—१ देखो 'बतळायोडौ' (रू भे.)

२ देखो 'बतायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री बतळावियोडी)

बतसर—देखो 'वत्सर' (रू भे)

बतहा—स पु [फा] अरब के मदीना नामक शहर का नाम ।

उ०—मदीना रो नाम बतहा । बा दा. ख्यात

बतागर—स पु—मलाह मशविरा करने वाला, परामर्श करने वाला, सलाहकार ।

उ० जरा आपरा उमराव बतागरां नै तेडीया । पूछयौ-थानै तो म्हाका राज की काई चिंता फिकर नहीं अर नांनौ मामोजी करै सौ हुवै छै। —राव रिणमल री बात

बताणौ, बताबौ—देखो 'बताणौ, बतावौ' (रू भे.)

उ०—जिम ककण विष भूप जताई। वीर अग्र तिम जती बताई। —सू प्र.

बताणहार, हारौ (हारी), बताणियौ—वि० ।

बतायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बताईजणौ, बताईजबौ—कर्म वा० ।

बतायोड़ौ—देखो 'बतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बतायोडी)

बतावणौ, बतावबौ—देखो 'बताणौ, बताबौ' (रू. भे.)

उ०—तमासौ बतावण वीस हत तैलीया, लार रिजवार गोरां सहत लै लीया। झट भुजा ईस डैरू अजब भेलिया, या गजब रीस किए सीस अलबेलीया। —महादान महडू

बतावणहार, हारौ (हारी), बतावणियौ—वि०।

बताविप्रोडौ, बतावियोडौ, बताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बतावीजणौ, बतावीजबौ—कर्म वा०।

बतावियोड़ौ—देखो 'बतायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बतावियोडी)

वती—वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम, बढिया।

२ बहुत, अधिक, ज्यादा।

३ अक्षय, स्थायी।

सं. पु.—१ सरकारी मकानों मे रोशनी के निमित्त प्रजा मे लिया जाने वाला कर।

२ देखो 'बत्ती' (रू. भे.)

उ०—नही तार, नहि टैम है, नही बत्ती मे तेल। आ चालै मन रे मतै, मारवाड री रेल। —अज्ञात

३ देखो 'बात' (रू. भे.)

उ०—विसभर जिका आ केम माना वती, उडपति समोवड आप बाळै। —र. रू.

वतीकर—स. पु.—कपट। (अ. मा)

वतीत—देखो 'व्यतीत' (रू भे.)

उ०—आय: वसियां आपणी, ग्रीखम भई वतीत। १७३६ गुण चाळौ लागौ वरस, चाळौ सरस मजीत। —रा रू

वतीतणौ, वतीतबौ—देखो 'व्यतीतणौ, व्यतीतबौ' (रू. भे.)

उ०—सौ थानक खड ऊगिया, किता वतीता काळ। ग्रो जायल ऐसा करै, गोखा आफू गाळ। —पा. प्र.

वतीतणहार, हारौ (हारी), वतीतणियौ—वि०।

वतीतिग्रोड़ौ, वतीतियोड़ौ, वतीत्योडौ—भू० का० कृ०।

वतीतीजणौ, वतीतीजबौ—भाव वा०।

वतीतियोड़ौ—देखो 'व्यतीतियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री वतीतियोड़ी)

वतूळियौ—देखो 'बथूळौ' (अल्पा., रू भे.)

उ०—१ जिसै एक वतूळियौ आयौ सू रेत सू कपडा भरीज गया। —द. दा

उ०—२ रेढा नै माईता री बात मन परबारी मांनणी ई पडी। डुसक्या भरता बै येह सूं बारै निकळिया अर निकळता ई वतूळिया रै वेग जैसाणै री सीव कांनी दडबडा सोकड मनाई। —फुलवाडी

वतूळौ—देखो 'बथूळौ' (रू भे)

उ०—एक भरचौ ए वतूळौ आवौ विनायक, विणजारा के बैल ज्यूं। —लो. गी.

वतेरौ—देखो 'बतेरौ' (रू भे.)

उ०—खारौ मीठै सूं सरस है, भळै वतेरा पानडा। देस विदेस दुवाया वर्णं, खुसी डाकधर खानड़ा। —दसदेव

वतं—सं. पु.—प्रकार। (बाकीदास)

वतोकड़—वि [स्त्री. वतोकडी] १ अत्यधिक बोलने वाला, वाचाल।

२ अधिक बात बनाने या कहने वाला।

रू. भे.—बतोकड़।

वतौ—१ देखो 'वत' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वत्तौ' (रू भे)

वत्त—देखो 'बात' (रू. भे)

उ०—१ सुणी कमधा ऊधरा, उत मेवाड़ा वत्त। साथै साहस झल्लियौ, घातै हात परत्त। —रा. रू.

उ०—२ इणि परि ऊमा देवड़ी, जाणी मारू-वत्त। सु प्रभाति कहिबा भणी, पिंगळ पासि पहुत्त। —ढो. मा.

उ०—३ मग्दिया जेम जगमल्ल मल्ल, ढढोळि ढल्ल मारिय मुगल्ल। रळतळइ रत्त सात्वड सपत्त, सम्मळइ सत्त विसथरइ वत्त। —रा. ज. सी.

उ०—४ राइ नट तंडावियां, कही विवस्था, वत्त। वाडव को वेस्या जपर, टालि पहने रत्त। —मा का. प्र.

वत्तड़ी—देखो बात' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ सूरा पूरा वत्तडी, सूरा कान सुहाय। भागल अदवा राजवी, सुणता ही टळ जाय। —राव रिणमल री वात

उ०—२ हेक थको चौडै हुवा, असमर करा अदोस। डेरा डेरा वत्तडी, डेरा डेग जोम। —रा.रू.

२ देखो 'वाती' (रू. भे)

वत्ती—१ देखो 'बत्ती' (रू. भे.)

वत्तीस देखो 'बत्तीस' (रू. भे.)

उ०—वत्तीस आखडी रो निवाहणहार, वैरिया विभाडणहार। —रा. सा. सं.

वत्तौ—वि० [स्त्री वत्ती] अधिक, बढकर।

उ०—१ साच रै पखै वधण रौ दुख दुनिया रै सरब सुखा सूं घणौ वत्तौ है। —फुलवाडी

उ०—२ थारै-सूं वत्ती लिखमी और कुण हुसी। —बरसगाठ

रू. भे.—बतौ, वतौ।

वत्थपुन्न–सं. पु. [स. वस्त्र-पुण्य] वस्त्र-दान से होने वाला पुण्य। (जैन)

वत्थिरि–क्रि वि.—विस्तार से।

उ०—अजितनाथ वर भवण नदि मडिय गुरु वत्थिरि।

—अभयतिक

वत्थु—देखो 'वस्तु' (रू भे)

उ०—जिम गगाजल जलह मझि सुपवित्त भणिज्जइ। जिम सोह गह वत्थु मझि समहरू वन्निज्जइ। —ऐ. जैं. का. स.

वत्री देखो 'बात' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—दुरग पिनाक महल तो दीसै, विगत हमैं सुण वत्री। खडं मैं वसुधा विण खत्री, कीधी वार इकीसैं। —र. रू.

वत्रीस- देखो 'बत्तीस' (रू. भे)

वत्स–स. पु [स] १ बेटा, पुत्र।

२ गाय का बछड़ा।

३ किसी जानवर का बच्चा।

४ छोटा बच्चा, शिशु, बालक।

५ सतान, औलाद।

६ इन्द्र।

७ कंस का एक अनुचर।

८ एक प्रचीन देश जहाँ का राजा उदयन था। इसकी राजधानी कौशाबी थी।

रू. भे —बच्छ, बछ, बछक, बाच, बाछ, वच्छ, वच्छि, वछ, वाच, वाच्छि, वाछ।

अल्पा - वच्छटौ, वच्छ, बछडौ, बछरौ, बछवौ, बछियौ, बछौ बाछडियौ, बाछड़, बाछटौ, बाछरू, बाछियौ, बाछौ, वचौ, वच्छडो, वच्छ, वछडौ, वछौ वाछडउ, वाछडौ, वाछरू, वाछरौ, वाछौ।

वत्सक–स. पु [स वत्सक] १ छोटा बछडा, बच्चा।

२ कुटज का पौधा।

३ एक इक्ष्वाकुवशीय राजा।

४ एक यादव वशीय राजा जो वसुदेव का भाई था।

[स. वत्सक] ५ पुष्प कसीस।

६ कुटज।

७ निर्गुण्डी।

८ कस के अनुचर वत्स का नामातर।

रू भे —वछक, वछक।

वत्सनाभ–स. पु [स.] १ हिमालय की तराई मे कम ठड भागो मे पैदा होने वाला वछनाभ नामक एक प्रकार का पौधा।

२ उक्त पौधे की जड से निकलने वाला विष विशेष जो मीठा होता है, मीठा विष।

रू. भे.—बच्छनाग, बच्छनाभ, बछनाग, बछनाभ, वच्छनाग, वच्छनाभ।

३ एक महर्षि। (चरित्र कोश)

वत्सर–स. पु. [स. वत्सरः] १ द्वादश मास की एक अवधि, वर्ष।

२ विष्णु का एक नाम।

३ एक राजा जो ध्रुव राजा का छोटा पुत्र था।

[स वत्सतर.] ४ वह बछडा जो जवान व जोतने योग्य हो गया हो।

रू भे —वच्छ, बच्छर, बतसर, बरसर, वच्छर, वच्छरी, वछर वछरि, वतसर।

वत्सराज–स. पु. [सं. वत्स.+राज] १ गाय का बछडा।

२ गौतम बुद्ध का समकालीन कौशाबी का प्रसिद्ध राजा, उदयन।

३ कौशल देश का एक राजा जो द्रौपदी स्वयवर मे उपस्थित था, वत्स।

४ सवत् १५६० के लगभग हुए अजमेर के प्रसिद्ध दानवीर गौडवशीय राजा का नाम।

रू. भे —वछराज वछराज।

वत्सळ वत्सल–वि. [स. वत्सल] (स्त्री वत्सला) १ जो पुत्र या सतान के प्रति स्नेहालु हो प्रेम से परिपूर्ण हो।

२ जो अपने छोटो के प्रति कृपालु दयालु हो।

स पु [स वत्सल] १ अनुराग, प्रेम।

२ वात्सल्य रस।

रू. भे —बच्छल, वछळ, वच्छळ, वच्छल, वछळ, वाछळ।

वत्सलता–सं स्त्री —१ स्नेहालु या कृपालु होने की अवस्था, भाव।

२ अनुराग, प्रेम।

३ कृपा, दया, अनुग्रह।

रू भे —वच्छलता।

वत्सासुर–सं. पु [स] वत्स नामक असुर जो श्रीकृष्ण के हाथो मारा गया।

रू भे - बछासुर, वछासुर, वछासुर, वछासुर।

वथ—देखो 'बाथ' (रू भे)

उ०—रथ छाडि राजन उतरया, रुक्मणी साहिउ वथ। दड दोट वाजई कोट भाजई, वेग वाल्या हथ। —रुकमणी मगळ

वथवौ, वथूग्रउ—देखो 'बथवौ' (रू. भे.) (उ. र) (ग्रमरत)

वथूळियौ—देखो 'बथूळौ' (अल्पा.. रू. भे)

वथूळौ -देखो 'बथूळौ' (रू भे)

वद–सं. पु.—१ किसी विषय का विशेषतः धार्मिक या आध्यात्मिक विषय का वास्तविक ज्ञान।

२ वृत्त।

३ चारों वेद।

४ किसी मास का अर्धभाग, कृष्ण पक्ष, जिसमें चंद्रमा की कलाओं का क्रमशः ह्रास होता है और पूर्व निशा में अंधकार बढ़ता जाता है।

५ एक रोग विशेष। (भाव प्रकाश)

६ देखो 'बद' (रू. भे.)

रू भे.—वद।

वदक–वि. [स. वद्] कहने वाला, वक्ता।

वदको–वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम, बढिया।

२ सज्जन, भला।

३ अधिक, बहुत।

रू. भे.—बदको।

वदखोर, वदखोरो—देखो 'बदम्बोर' (रू. भे.)

उ०—कर जुध धरा रह्यो करनांणी। वदखोरो आयो चढ वाढ।
—द. दा.

वदगढ–स पु.—दिल्ली का एक नामान्तर।

वदणो, वदबो–क्रि. स. [स वद्] १ कहना।

उ०–१ महा सुगण रूप है सुचित सार आचार में, सखां कवण जोडजै, प्रघट आज ससार में। यळा सह वदै यसो, सुजन रांम साधार है। पुणां जस जिवै पढो, सुज कथा स असार है। —र ज प्र.

उ०—२ सुतण 'नाथ' 'खेतसी' वदै सांदू खग वाहण। 'वखतौ' खिडियो वदं, रचू 'अमरा' जेही रण। —सू प्र.

२ उच्चारण करना, बोलना।

३ वर्णन करना, उल्लेख करना, निरूपण करना।

उ०—सात सहस नव सौ सकळ, ऊपरि रूप अढार। जजसन लघु गुर जाणिजै, वदि गुण रतन विचार। —ल. पिं.

४ बात करना।

५ सूचना देना, बताना।

६ पुकारना, चिल्लाना।

७ महत्व देना, बड़ा मानना, मान देना, इज्जत करना।

उ०—१ सु रावळ घड़सी जगमालनू कहै छै-ऐ हईया पोहड द्रंग वसै छै, तिकै ऐ म्हानू लिगार मात्र वदै न छै। ए जठा ताई जैसलरी धरती मे छै तितरै म्हानू धरती री आस काई नही।
—नैणसी

८ किसी प्रकार की मान्यता देना, मानना, किसी श्रेणी मे गणना करना।

उ०—१ सो ए पाच दड हुवै तिण नै राजा वदां।
—पच दंडी री वारता

उ०—२ वदियो स्वांन वनचरां, नहि लाज निहारै। मुख मख ग्रासज मेल्हिजै, मस्तक पर मारै। —सू. प्र.

९ मानना, स्वीकार करना।

१०—आज्ञा देना, निर्देश देना।

उ०—१ सापन्ना मूझ हुवै सुख सात, वदौ जो हि देव करूं सो ही बात। साप्रत सांमी मो मज्झ सरीर, गोविंद गदाधर ग्यान गहीर।
—ह. र.

उ०—२ पावा रहण वदी पतसाहां सिर दावा धावां सहण। दारण रूप बाजिया दारण, वारण नै वारण वहण।
—लिखमीदास गाडण

११ बाजी लगाना, शर्त बदना, होड लगाना।

उ०—समंद फाळ कूदै हणू, जहर जारै संकर, सेस ही भुजां घर भार साहै। 'करण' रै 'पदम' जिम साह रै कटंकै, वदू जो कोई तरवार वाहै। —द. दा.

१२ प्रतिस्पर्धा करना।

उ०—वदि रुद्र खाग स्रोहथा वाहै। सूर थभि रथ हाथि सराहै।
—सू. प्र.

१३ बढ बढ कर बातें करना, डींग हांकना।

१४ बहस करना, जिद्द करना।

१५ परस्पर निश्चय करना, नियत, मुकर्रर या तय करना।

१६ परिश्रम करना, उद्योग करना।

१७ देखो 'बधणो, बधबो' (रू. भे.)

वदणहार, हारो (हारी), वदणियो—वि०।

वदिओड़ो, वदियोड़ो, वदोड़ो—भू० का० कृ०।

वदीजणो, वदीजबो—कर्म वा०।

वदणो, वदबो, वधणो, वधबो—रू० भे०।

वदन–स. पु. [स.] १ मुख, मुह। (अ. मा.)

२ चेहरा, शक्ल, सूरत।

उ०—१ अति रूप क्रांति उजास, प्रफुल्ल वदन प्रकास। आवियौ पह उण वार, मिंदरा राज मझार। —सू. प्र.

उ०—२ पूछयां विना पयंपै पापी, थट विच कहै लात सिर थापी। वदन मत दिखाळै वंस द्रोही वळे। —र. रू.

उ०—३ विळखीजै तरुणी वदन, कथ न आयौ तीज। मावड़ियां आया मुहम, वदन जाय विळखीज। —बां. दा.

३ रूप, आभा।

४ अग्र भाग, अगला हिस्सा।

५ प्रथम सख्या।

६ कहने या बोलने की क्रिया या भाव।
७ देखो 'बदन' (रू. भे.)
रू. भे.—बदन, बदन्न, बदनि, बदन्म, बदीन।

बदनारविंद—सं पु. [सं. वदन+अरविंद] कमल के समान मुख, मुखारविंद।
वि.—उक्त प्रकार के मुख वाला।

बदनि—देखो 'बदन' (रू. भे.)
उ०—बदन चंद महारम लेइ घडिउ, अमीय एह तणी रसना जडिउ। पवन बदनगंध हरावतउ, बदनि वासि वसइ दिसि वासतु।
—सालिसूरि

बदनीत—देखो 'बदनीयत' (रू. भे.)
उ०—बदनीत पाप बल धरम बाध, सब तजै धरम कत दुस्ट साध। मिट पूज देव मरजाद मूक, चळ विचळ अमर सब थान चूक।
—शि रू.

बदन्न—देखो 'बदन' (रू. भे.)
उ०—सुण निबाब समसत्त, जाब छत्रपत्ति जवन्ना। सूर मीर सोचिया, नूर खचिया बदन्ना।
—रा. रू.

बदपख—सं. पु. [सं. वदि-पक्ष] किसी मास का कृष्ण पक्ष।
उ०—मधि हिमरित वर अघण मास। सनि चतुरदस बदपख सकाज।
—सू. प्र.

बदरंग—देखो 'बदरंग' (रू. भे.)

बदरंगी—देखो 'बदरंगी' (रू. भे.)

बदरा—सं. स्त्री.—धन, दौलत, वित्त।
रू. भे.—बदरा।

बदरीनाथ—देखो 'बदरीनाथ' (रू. भे.)

बदळ—देखो 'बादळ' (रू. भे.)
उ०—भिदि वज्र सिखर चकर इम भळकै। झीण बदळ माझळ रवि झळकै।
—सू. प्र.

बदळणौ, बदळबौ—देखो 'बदळणौ, बदळबौ' (रू. भे.)

बदलाड़णौ, बदलाड़बौ—देखो 'बदळाणौ, बदळाबौ' (रू. भे.)

बदळाणौ, बदळाबौ—देखो 'बदळाणौ, बदळाबौ' (रू. भे.)

बदळावणौ, बदळावबौ—देखो 'बदळाणौ, बदळाबौ' (रू. भे.)

बदळायत—देखो 'बदळायत' (रू. भे.)
उ०—बदळायत नायक अग वजै, भय आरण पायक नोज मजै। घोह घाल भालाळ विचाळ लियौ, किरणाळर झाळ कुडाळ कियौ।
—पा. प्र

बदळी—१ देखो 'बादळ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—मेरे पिया के देस बरस बदळी, मेरे पिया के। —लो. गी.
२ देखो 'बदळी' (रू. भे.)

बदळे, बदळै—देखो 'बदळै' (रू. भे.)
उ०—रात गमाई सोयकर, दिवस गमायौ खाय। हीरा जलम अमोल था, कोडी बदळे जाय।
—अज्ञात

बदळौ—देखो 'बदळौ' (रू. भे.)

बदांन्य—वि. [सं. वदान्य] १ जो मृदु भाषी हो, जिसकी बोली मधुर हो।
२ जो बहुत उदार चित्त हो, दयालु।
३ बात चीत करने पर संतुष्टि देने वाला।
रू. भे.—बदांन्य।

बदांन्यता—सं. स्त्री. [सं. वदान्यता] १ वदान्य होने की अवस्था या भाव।
२ उदारता, कृपा।

बदांम—देखो 'बादाम' (रू. भे.)

बदांमण—१ देखो 'बदावण' (रू. भे.)
२ देखो 'बदावन' (रू. भे.)

बदांमी—देखो 'बादामी' (रू. भे.)

बदांवण—१ देखो 'बदावण' (रू. भे.)
२ देखो 'बदावन' (रू. भे.)

बदाईदार—देखो 'बधाईदार' (रू. भे.)

बदाई—देखो 'बधाई' (रू. भे.)

बदाउ, बदाऊ—देखो 'बधाऊ' (रू. भे.)

बदाउड़ौ—देखो 'बधाऊ' (अल्पा., रू. भे.)

बदाड़णौ, बदाड़बौ—देखो 'बदाणौ, बदाबौ' (रू. भे.)
बदाड़णहार, हारौ (हारी), बदाड़णियौ—वि०।
बदाड़ियोड़ौ, बदाड़ियोड़ौ, बदाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बदाड़ीजणौ, बदाड़ीजबौ—कर्म वा०।

बदाड़ियोड़ौ—देखो 'बदायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बदाड़ियोड़ी)

बदाणौ, बदाबौ—क्रि. स. ['वदणौ' क्रिया का प्रे. रू.] १ कहलाना।
२ उच्चारण कराना, बोलाना।
३ वर्णन कराना, उल्लेख कराना, निरूपण कराना।
४ बात कराना।
५ सूचना दिराना, बतलाना।
६ अवाज दिराना, चिल्लाहट कराना।
७ महत्व, मान व इज्जत दिराना, बडा मनवाना।

८ किसी को किसी प्रकार की मान्यत दिराना, मनवाना, किसी श्रेणी मे गणना करवाना

६ स्वीकार कराना।

१० आज्ञा या निर्देश दिलवाना।

११ बाजी लगवाना, शर्त लगवाना, होड लगवाना।

१२ प्रतिस्पर्धा कराना।

१३ बढ-बढ़ कर बातें करवाना

१४ निश्चय, नियत या तय कराना।

१५ बहस या जिद्द कराना।

१६ परिश्रम कराना, उद्योग कराना।

१७ देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

वदाणहार, हारौ (हारी), वदाणियौ—वि०।

वदायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वदाईजणौ, वदाईजबौ—कर्म वा०।

वदाणौ, वदाबौ, वदावणौ, वदावबौ, बिधाणौ, **बिधाबौ, वदाड़णौ, वदाड़बौ**, वदावणौ, वदावबौ - रू. भे.।

वदायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ कहलाया हुआ. २ उच्चारण कराया हुआ, बोलाया हुआ. ३ वर्णन कराया हुआ, उल्लेख कराया हुआ, निरूपण कराया हुआ. ४ बात कराया हुआ ५ सूचना दिराया हुआ, बतलाया हुआ. ६ आवाज दिराया हुआ, चिल्लाहट कराया हुआ. ७ महत्व, मान व इज्जत दिराया हुआ, बडा मनवाया हुआ. ८ किसी को किसी प्रकार की मान्यता दिराया हुआ, गणना कराया हुआ. ६ स्वीकार कराया हुआ. १० आज्ञा या निर्देश दिलवाया हुआ. ११ प्रतिस्पर्धा कराया हुआ. १२ वढ-बढ़ कर बातें करवाया हुवा. १३ बाजी, शर्त या होड लगवाया हुवा. १४ निश्चय, नियत या तय कराया हुवा. १५ बहस या जिद्द कराया हुआ. १६ परिश्रम कराया हुआ, उद्योग कराया हुआ।

१७ देखो 'बधायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. वदायोडी)

रू. भे.—'बिधायोडौ'।

वदारौ—देखो 'बधारौ' (रू. भे.)

वदावणौ, वदावबौ—१ देखो 'वदाणौ, वदाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे)

उ०—ल्याई मानण सेहरौ हे सहेली, पनाजी रै मीस गुलाब री। रसीलाराज उण राजकवर नै ओग वदावण वेहरौ।

—रसीलै राज रा गीत

वदावणहार, हारौ (हारी), वदावणियौ—वि०।

वदाविग्रोड़ौ, वदावियोड़ौ, वदाव्योडौ—भू० का० कृ०।

वदावीजणौ, वदावीजबौ—कर्म वा०।

वदावन-सं स्त्री—१ स्वागत, सत्कार।

२ अगवाणी।

रू भे.—बदामण, बदावण, बदावन, वदांमण, वदांवन, वद्धांमणी।

वदावियोड़ौ—१ देखो 'वदायोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बधायोडौ (रू. भे.)

(स्त्री वदावियोड़ी)

वदि-अव्य [सं. वदि] किसी मास के कृष्ण पक्ष की।

उ०—१ दीसे न न्याय भोगवि दसा, पडछी सुदि वदि पख री देखे ने साच दाखे दुनी, खाडौ चाडौ ए-खरौ। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ सतरइ, सतसठ्ठ, वरीसइ, मिगसर वदि दुतिया दीसइ हो। —ध. व. ग्र.

रू. भे.—बदि, बदी, वदी।

वदियोड़ौ-भू का. कृ.—१ कहा हुआ। २ बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ। ३ वर्णन किया हुआ, उल्लेख किया हुआ, निरूपण किया हुआ. ४ बात किया हुआ. ५ सूचना दिया हुआ, बताया हुआ. ६ पुकारा हुआ, चिल्लाया हुआ. ७ महत्व, मान व इज्जत दिया हुआ, बडा माना हुआ। ८ किसी प्रकार की मान्यता दिया दिया हुआ, किसी श्रेणी मे गणना किया हुआ. ६ स्वीकार किया हुआ, माना हुआ. १० आज्ञा या निर्देश दिया हुआ. ११ बाजी, शर्त या होड़ लगाया हुआ. १२ प्रतिस्पर्धा किया हुआ. १३ बढ बढ कर बातें किया हुआ, डींग हाका हुआ. १४ बहस या जिद्द किया हुआ. १५ निश्चय, नियत या तय किया हुआ १६ परिश्रम किया हुआ, उपयोग किया हुआ. १७ देखो 'बधियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वदियोडी)

वदी—१ देखो 'वदि' (रू. भे.)

२ देखो 'बदी' (रू. भे.)

उ०—सासण मे उयपिया साभळ, विरड कुमत्री करै वदी। जादव कानौ दियै नह जग, जादव थाभौ दियै जदी —कविराजा बाकीदास

वदीत, वदीतउ—१ देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

उ०—यहडौ जाग आहाड़ा हुणे, तुऊ घर बीया न होय। दत देतां ग्रीखम दरमाणी, सीत वदीत हुई सगळोय।

—जोगिदास कवारीयौ

२ देखो 'विदित' (रू. भे)

उ०—१ राउल स्री भीम कहइ जी, जादव वसि वदीत रे। पधारौ जेसलमेरु नइजी, प्रीति धरी निज चित्त रे। —ऐ. जै. का. स.

उ०—२ वसुधा वीर वदीतउ जीतउ जिणि जरासघु। तहि हरि अखिल टालए पालए राज सुबधु। —जयसेखर सूरि

६ कहने या बोलने की क्रिया या भाव।
७ देखो 'बदन' (रू. भे.)
रू. भे.—बदन, बदन्न, बदनि, बदन्न, बदीन।

बदनारविंद–सं पु. [सं. वदन+अरविंद] कमल के समान मुख, मुखारविंद।
वि.—उक्त प्रकार के मुख वाला।

बदनि—देखो 'बदन' (रू भे)
उ०—बदन चंद महारस लेइ घडिउ, अमीय एह तणी रसना जडिउं। पवन बदनगध हरावतउ, बदनि वासि वसइ दिसि वासतु। —सालिसूरि

बदनीत—देखो 'बदनीयत' (रू. भे)
उ०—बदनीत पाप बल धरम बाध, मब तजै धरम कत दुस्ट साध। मिट पूज देव मरजाद मूक, चळ विचळ अमर सब थान चूक। —शि. रू.

बदन्न—देखो 'बदन' (रू. भे.)
उ०—सुण निबाब समसत्त, जाब छत्रपत्ति जवन्ना। सूर मीर सोभिया, नूर खचिया बदन्ना। —रा. रू.

बदपख–सं. पु. [सं. वदि-पक्ष] किसी मास का कृष्ण पक्ष।
उ०—मघि हिमरित वर अघण मास। सनि चतुरदस बदपख सकाज। —सू. प्र.

बदरंग—देखो 'बदरंग' (रू. भे.)

बदरंगी—देखो 'बदरगी' (रू. भे.)

बदरा–सं. स्त्री.—धन, दौलत, वित्त।
रू. भे—बदरा।

बदरीनाथ—देखो 'बदरीनाथ' (रू. भे.)

बदळ—देखो 'बादळ' (रू भे)
उ०—भिदि वज्र सिखर चकर इम भळकै। भीण बदळ माभळ रवि भळकै। —सू. प्र.

बदळणो, बदळबो—देखो 'बदळणो, बदळबो' (रू. भे)

बदलाड़णो, बदलाड़बो—देखो 'बदळाणो, बदळाबो' (रू. भे.)

बदळाणो, बदळाबो—देखो 'बदळाणो, बदळाबो' (रू. भे.)

बदळावणो, बदळावबो—देखो 'बदळाणो, बदळाबो' (रू. भे.)

बदळायत—देखो 'बदळायत' (रू. भे.)
उ०—बदळायत नायक अग वजै, भय आणव पायक नोज भजै। जोह चाल भालाळ विचाळ लियो, किरणालर भाळ कुढाळ कियो। —पा. प्र.

बदळी—१ देखो 'बादळ' (अल्पा, रू. भे.)
उ०—मेरे पिया के देस वरस बदळी, मेरे पिया के। —लो. गी.
२ देखो 'बदळी' (रू. भे.)

बदळे, बदळै—देखो 'बदळै' (रू. भे.)
उ०—रात गमाई सोयकर, दिवस गमायो खाय। हीरा जलम अमोल था, कोडी बदळै जाय। —अज्ञात

बदळौ—देखो 'बदळो' (रू. भे.)

बदान्य–वि. [सं. वदान्य] १ जो मृदु भाषी हो, जिसकी बोली मधुर हो।
२ जो बहुत उदार चित्त हो, दयालु।
३ बात चीत करने पर संतुष्टि देने वाला।
रू. भे.—बदांन्य।

बदान्यता–सं. स्त्री. [सं. वदान्यता] १ वदान्य होने की अवस्था या भाव।
२ उदारता, कृपा।

बदाम—देखो 'बादाम' (रू. भे.)

बदामण—१ देखो 'बदावण' (रू. भे)
२ देखो 'बदावन' (रू. भे.)

बदामी—देखो 'बादामी' (रू. भे.)

बदावण—१ देखो 'बदावण' (रू. भे)
२ देखो 'बदावन' (रू. भे.)

बदाईदार—देखो 'बधाईदार' (रू. भे.)

बदाई—देखो 'बधाई' (रू. भे.)

बदाउ, बदाऊ—देखो 'बधाऊ (रू. भे.)

बदाउड़ो—देखो 'बधाऊ' (अल्पा., रू. भे)

बदाड़णो, बदाड़बो—देखो 'बदाणो, बदाबो' (रू. भे)
बदाड़णहार, हारो (हारी), बदाड़णियो—वि०।
बदाड़ियोड़ो, बदाड़ियोड़ो, बदाड़योड़ो—भू० का० कृ०।
बदाड़ीजणो, बदाड़ीजबो—कर्म वा०।

बदाड़ियोड़ो—देखो 'बदायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बदाड़ियोड़ी)

बदाणो, बदाबो–क्रि. स. ['बदणो' क्रिया का प्रे रू] १ कहलाना।
२ उच्चारण कराना, बोलाना।
३ वर्णन कराना, उल्लेख कराना, निरूपण कराना।
४ बात कराना।
५ सूचना दिराना, बतलाना।
६ अवाज दिराना, चिल्लाहट कराना।
७ महत्व, मान व इज्जत दिराना, बडा मनवाना।

८ किसी को किसी प्रकार की मान्यता दिराना, मनवाना, किसी श्रेणी मे गणना करवाना

९ स्वीकार कराना ।

१० आज्ञा या निर्देश दिलवाना ।

११ बाजी लगवाना, शर्त लगवाना, होड लगवाना ।

१२ प्रतिस्पर्धा कराना ।

१३ बढ-बढ कर बातें करवाना

१४ निश्चय, नियत या तय कराना ।

१५ बहस या जिद्द कराना ।

१६ परिश्रम कराना, उद्योग कराना ।

१७ देखो 'वधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

वदाणहार, हारौ (हारी), वदाणियौ—वि० ।

वदायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वदाईजणौ, वदाईजबौ—कर्म वा० ।

वदाणौ, वदाबौ, वदावणौ, वदावबौ, बिधाणौ, बिधाबौ, वदाड़णौ, वदाड़बौ, वदावणौ, वदावबौ—रू. भे. ।

वदायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कहलाया हुआ २ उच्चारण कराया हुआ, बोलाया हुआ. ३ वर्णन कराया हुआ, उल्लेख कराया हुआ, निरूपण कराया हुआ. ४ बात कराया हुआ. ५ सूचना दिराया हुआ, बतलाया हुआ ६ आवाज दिराया हुआ, चिल्लाहट कराया हुआ. ७ महत्व, मान व इज्जत दिराया हुआ, बडा मनवाया हुआ. ८ किसी को किसी प्रकार की मान्यता दिराया हुआ, गणना कराया हुआ ९ स्वीकार कराया हुआ. १० आज्ञा या निर्देश दिलवाया हुआ. ११ प्रतिस्पर्धा कराया हुआ. १२ बढ-बढ कर बातें करवाया हुवा. १३ बाजी, शर्त या होड लगवाया हुवा. १४ निश्चय, नियत या तय कराया हुवा. १५ बहस या जिद्द कराया हुआ. १६ परिश्रम कराया हुआ, उद्योग कराया हुआ ।

१७ देखो 'बधायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. वदायोड़ी)

रू. भे.—'बिधायोड़ौ' ।

वदारौ—देखो 'बधारौ' (रू. भे.)

वदावणौ, वदावबौ—१ देखो 'वदाणौ, वदाबौ' (रू भे.)

२ देखो 'वधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

उ०—ल्याई मालण सेहरौ हे सहेली, पनाजी रै सीस गुलाब रौ । रसीलाराज उण राजकंवर नै और वदावण वेहरौ ।

—रसीलै राज रा गीत

वदावणहार, हारौ (हारी), वदावणियौ—वि० ।

वदाविग्रोड़ौ, वदावियोड़ौ, वदाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वदावीजणौ, वदावीजबौ—कर्म वा० ।

वदावन-सं स्त्री—१ स्वागत, सत्कार ।

२ अगवाणी ।

रू भे.—वदामणा, वदावणा, वदावन, वधांमणा, वदांवन, वद्धांमणी ।

वदावियोड़ौ—१ देखो 'वदायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बधायोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री वदावियोड़ी)

वदि-अव्य [सं. वदि] किसी मास के कृष्ण पक्ष की।

उ०—१ दीसे न न्याय भोगवि दसा, पडछौ सुदि वदि पख री देखै नै साच दावै दुनी, खाडो चांदौ ए-खरौ । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ सतरइ, सतसठ्ठ, वरीसइ, मिगसर वदि दुतिया दीसइ हो ।

—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—बदि, बदी, वदी ।

वदियोड़ौ—भू का कृ—१ कहा हुआ । २ बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ । ३ वर्णन किया हुआ, उल्लेख किया हुआ, निरूपण किया हुआ. ४ बात किया हुआ. ५ सूचना दिया हुआ, बताया हुआ. ६ पुकारा हुआ, चिल्लाया हुआ. ७ महत्व, मान व इज्जत दिया हुआ, बडा माना हुआ । ८ किसी प्रकार की मान्यता दिया दिया हुआ, किसी श्रेणी मे गणना किया हुआ. ९ स्वीकार किया हुआ, माना हुआ. १० आज्ञा या निर्देश दिया हुआ. ११ बाजी, शर्त या होड़ लगाया हुआ. १२ प्रतिस्पर्धा किया हुआ. १३ बढ बढ कर बाते किया हुआ, डींग हांका हुआ. १४ बहस या जिद्द किया हुआ. १५ निश्चय, नियत या तय किया हुआ १६ परिश्रम किया हुआ, उपयोग किया हुआ. १७ देखो 'बधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वदियोड़ी)

वदी—१ देखो 'वदि' (रू. भे.)

२ देखो 'बदी' (रू. भे.)

उ०—सासण में उथपिया साभळ, विरद कुमत्री करै वदी । जादव कानौ दियै नह जग, जादव थाभो दियै जदी —कविराजा बांकीदास

वदीत, वदीतउ—१ देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

उ०—येहड़ौ जाग आहाड़ा हुऐ, तुऊ घर बीया न होय । दत देतां ग्रीखम दरसाणी, सीत वदीत हुई मगळोय ।

—जोगिदास कवारीयौ

२ देखो 'विदित' (रू. भे)

उ०—१ राउल श्री भीम कहइ जी, जादव वसि वदीत रे । पधारौ जेसलमेरु नइजी, प्रीति धरी निज चित्त रे । —ऐ. जै. का. स.

उ०—२ वसुधा वीर वदीतउ जीतउ जिणि जरासंधु। तहि हरि भरितल टालए पालए राज सुबधु । —जयसेखर सूरि

बवीतं—१ देखो 'व्यतीत' (रू भे)

२ देखो 'विदित' (रू. भे)

बवीतौ—वि. [सं. विदित] (स्त्री. वदीती) १ प्रसिद्ध, विख्यात ।

उ०—१ जपियौ मिघ जिण विध जुध जीता, बधं बम खैरोंद बवीता । असुर हणे ग्रद वर्ण प्रयागा, वर सिघकरि खैरोदा वागा ।
—सू. प्र.

उ०—२ बीजा पुरी सैंन वीतौ, वजाए जेत्राई वाजा । जीतौ जीतौ महाराजा **बवीतौ** जगति । —दूदौ सुरताणोत बीठू

उ०—३ पूज्या मह इच्छा पूरइ, दुख दालिद नासै दूरै हो । जिण चोसट योगिनी जीती, वरतइ ए बार **बवीती** हो । —ध व ग्र

२ देखो 'व्यतीत' (रू भे)

बवूळ—देखो 'बादळ' (रू. भे)

उ०—सो कंमे सामळै **बवूळ** पर बीजूजळा का मिळाव । ऐसे भयांणक एकलगिड़ बराह ढाए । —सू. प्र.

बवूसणौ, बवूसबौ—देखो 'विदूसणौ, विदूसबौ' (रू. भे)

बवूसियोड़ौ—देखो 'विदूसियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. वदूसियोडी)

बदेस—देखो 'विदेस' (रू भे.)

उ०—बहु धंधाळ आव घरि, कासू करइ **बवेस** । सपत सघळी सपजै, ग्रे दिन कदी लहेस । —ढो. मा.

बवोतर—वि. [स. वृद्धोत्तर] १ बढ़ा हुआ, अधिक ।

२ बढ़ने योग्य ।

३ समाप्त प्राय ।

• **बवोवव, बवोवदि**—स. पु. होड़, प्रतिस्पर्धा ।

रू. भे.—वादोवदी ।

बद्दळ—देखो 'बादळ' (रू. भे)

उ०—गिरि जाणि चरण लहि लखत गोम, **बद्दळ** इळ दरसै छाडि व्योम । जघाळस वदण चित्र जास, किरि जळद इद्र धानुख प्रकास ।
—रा. रू.

बद्दळी, बद्दल्ली—देखो 'बादळ' (अल्पा., रू भे.)

बद्धणौ, बद्धबौ—देखो 'बधणौ, बधबौ' (रू. भे.)

उ०—लोय लोयण दळं अमिउ वरसतउ वद्धए सुद्ध जिम बीय चदो । —ऐ. जै. का. स

बद्धमांण—देखो 'वरद्धमान' (रू भे)

बद्धांमणी—स. स्त्री.—१ देखो 'वधामणी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—जीतउ कान्ह वात इम सुणी, नगर लोक घइ **बद्धांमणी** । मदनभेरि भूंगळ भरहरइ, वरण अढारइ जय-जय करइ ।
—कां. दे. प्र.

२ देखो 'वदावण' (रू. भे.)

बद्धांमणौ—देखो 'वधामणौ' (रू. भे.)

बद्धाणौ, बद्धाबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

बद्धापन—देखो 'बूढापण' (रू. भे.)

बद्धायोड़ौ—देखो 'बधायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वद्धायोडी)

बद्धावणौ, बद्धावबौ—देखो 'बधाणौ, बधावौ' (रू. भे.)

उ०—वगु विणासी बगु विणासी भीमु आवेइ, **बद्धावइ** जगु सयलु जीव दानु तइ देव दिद्धऊ केवलियमणु जु सच्चु किउ त्रिहुं भुयणि जसवाउ लिद्धउ । —पं. प. च.

बद्धावियोड़ौ—देखो 'बधायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वद्धावियोडी)

बद्धियोड़ौ—देखो 'बधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वद्धियोड़ी)

बध—सं. पु [स] १ जान-बूझ कर किसी को मारने की क्रिया या भाव, हत्या ।

२ विनाश, विध्वंस ।

३ विरोध, वैर, वैमनस्य ।

उ०—राणौ कुंभौ पाट छै । मांहोमाहि भाइयां ग्रासि **बध** लागौ ।
—नैणसी

४ आघात, प्रहार ।

५ युद्ध ।

रू. भे.—बघ, व्रघ ।

बधक—स. पु.—१ मछली पकड़ने का कांटा । (ग्र. मा.)

२ देखो 'वधिक' (रू. भे.)

उ०—हाणि कहयां कोई न पतीजै, निहचै अग **बधक** कूं धीजै । जमनिति सदा बधक न हिरणा, चौरासी मे दौडघाई फिरणा ।
—ह पु. वा.

रू भे.—बधक ।

बधण—सं. स्त्री. [स वृद्धि] बढने की क्रिया या भाव, वृद्धि, बढोतरी ।

उ०—**बधण** सरस वरसा वरस, दरस कमध कुळदाप । अरस लगौ छक ऊफणै, पौरस तूझ 'प्रताप' । —जैतदान बारहठ

बधणौ, बधबौ—देखो 'बधणौ, बधबौ' (रू भे)

उ०—१ आभा रूप जोम ऊफाणिक, वणियौ अनग दूसरै वाणिक ।

वीर तदिन कीरति वाधारी, भरथ साख वधियौ कुळ भारी ।
—सू. प्र.

उ०—२ पांण जोड़ रिणछोड़ पूजजै, प्रथी चौगणौ वधै प्रमाण ।
—ह. नां. मा.

वधणहार, हारौ (हारी), वधणियौ—वि० ।

वधियोड़ौ, वधियोड़ौ, वध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधीजणौ, वधीजबौ—कर्म वा० ।

वधतीवेस—देखो 'वधतीवेस' (रू. भे)

वधतेरौ—देखो 'वधतौ'

वधतौ—देखो 'वधतौ' (रू भे.)

उ०—१ तद पूछै नूं कयौ 'चौधरी इसी दातारगी कर सू पांडू गोदारै सू नांम वधतौ हुवै ।
—द दा.

उ०—२ 'पातळ' दत वीरत पणौ, समदर तणौ सभाव । वधती सूं वधती वणौ, चढती लहर चढाव ।
—जैतदान बारहठ

(स्त्री. वधती)

वधरणौ, वधरबौ—क्रि. अ. [सं. वर्धनम्] १ आगे बढना, अग्रसर होना ।

उ०—जेसळ आप वडइ असवार, कोस वधरइ वारा वार । जोयण एक घडी मइ जाइ, हारइ नहीं न थाका थाइ ।
—ढो मा

२ वृद्धि को प्राप्त होना, वृद्धि होना ।

३ चूड़ी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु का त्रुटित होना, टूटना ।

४ काटा जाना ।

५ किसी देवता को चढाने के लिये नारियल आदि को फोड़ा जाना, तोडा जाना ।

६ विस्तार होना, विस्तृत होना, लम्बा होना ।

७ बोला जाना ।

वधरणहार, हारौ (हारी), वधरणियौ—वि० ।

वधरियोड़ौ, वधरियोड़ौ, वधरयोड़ौ—भू० का० कृ०

वधरीणौ, वधरीजबौ—भाव वा० ।

वधरणौ, वधरबौ—रू० भे०

वधराणौ, वधराबौ—क्रि. स. [वधरणौ क्रि. का प्रे. रू.] १ आगे बढाना, अग्रसर कराना

२ वृद्धि कराना/करना ।

३ चूडी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोड़ाना ।

४ कटवाना ।

५ देवताओं को नारियल आदि फोड़कर चढवाना ।

६ विस्तार कराना, लबा कराना ।

७ बोलाना, बुलवाना ।

वधराणहार, हारौ (हारी), वधराणियौ—वि० ।

वधरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधराईजणौ, वधराईजबौ—कर्म वा० ।

वधराणौ, वधराबौ, वधरावणौ, वधरावबौ, वधरावणौ, वधरावबौ—रू. भे.

वधरायोड़ौ—भू. का. कृ. [स्त्री वधरायोडी] १ आगे बढाया हुआ, अग्रसर किया हुआ. २ वृद्धि कराया हुआ/किया हुआ. ३ चूड़ी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोड़ाया हुआ. ४ कटवाया हुआ. ५ देवताओं को नारियल आदि फोड कर चढ़वाया हुआ. ६ विस्तार कराया हुआ, लबा कराया हुआ. ७ बोलाया हुआ, बुलवाया हुआ ।

वधरावणौ, वधरावबौ—देखो 'वधराणौ, वधराबौ' (रू. भे.)

वधरावणहार, हारौ (हारी), वधरावणियौ—वि० ।

वधराविओड़ौ, वधरावियोड़ौ, वधराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वधरावीजणौ, वधरावीजबौ—कर्म वा० ।

वधरावियोड़ौ—देखो 'वधरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वधरावियोडी)

वधरियोड़ौ—भू का कृ—१ आगे बढा हुआ, अग्रसर हुवा हुआ. २ वृद्धि को प्राप्त हुवा हुआ. ३ त्रुटित हुवा हुआ, टूटा हुआ. (चूडी आदि) ४ कटा हुआ. ५ फोडा हुआ, फूटा हुआ, तोडा हुआ. (नारियल आदि) ६ विस्तारित, विस्तृत ।

(स्त्री वधरियोडी)

वधरोम, वधरोमौ—सं पु—सुअर, वराह । (अ. मा, ह. नां. मा.)

रू. भे.—वधरोम ।

वधांमण, वधांमणउ—देखो 'वधामणौ' (रू. भे)

उ०—जाय हुइ बेटउ, तउ आवइ लोक भेटउ, कीजइ वधांमणउ, सकल लोक आणदणउ ।
—व स.

वधांमणी—स स्त्री—देखो 'वधामणौ' (अल्पा., रू. भे)

उ०—मागइ मात वधांमणी, धव धव धाया लोक । ताहरु माधव आवीउ, आज समाविन सोक ।
—मा. का. प्र.

उ०—२ आवी नै वन पालक दीध वधांमणी रै, गुरु आगमन प्रघोस । वादिवा चाल्यौ निज परवार सु रै, हौ नृप तेहनै सतोस ।
—वि. कु.

उ०—३ राजडीउ भाथाइत जेउ, नइ केल्हण रइबारी बेउ । राउल भणी गया परि सुणी, वेगइ मागइ वधांमणी ।
—कां. दे. प्र.

वधांमणौ—स पु. [स. वर्द्धमानकम्] १ स्वागत, अगवानी ।

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलांमति राजान राजावत अैराव रै रिणखेत हाथी आयौ छै । रिण जीत नगारा धुबै छै ।

फतै रा सैंदाना वागा छै। जम जैत रा डंका वाजिम्रा छै। कुसळखेम आणद रा वधाइदार दौडिया छै। घरां साम्हा फौजा रा घड्स चालीम्रा छै। आवै छै मु किण भात वखाणीजै छै। पातसाह रा डेरा हसम रसत तखतूम्रा हुता मु आणि थारणै दाखलि कीम्रा छै। अजमेर रा थाणा री जमीत कीजै छै। घरि घरि मगळाचार आणद वधांमणा कीजै छै। घणा माल निजराति उवारीजै छै।
—रा. सा सं

२ आदर, सत्कार, मान सम्मान।

३ आनन्द, उत्साह, खुशी। (उ. र)

उ०—१ अम्हारइ है, आज वधांमणा, सहेली है गावउ मगलच्यार। पहिलउ है मगल माहरइ, सहेली है गावउ अरिहत देव। तित्थकर त्रिभुवन तिलौ, कर जोडी है। वरि सुरनर सेव।
—स. कु.

उ०—२ निबौजी फतै करै नै गाव धिराणै पधारिया, वधांमणा हुवा।
—वीरमदे सोनगरा री बात

४ किसी के स्वागत मे या आनन्द या खुशी मे गाया जाने वाला गीत।

उ०—नरनाथ कोडि मथुरा नगर, वाजै सुसर वधामणा। वाजत्र सुतान छत्रीस वगि, सोभै स्यान सुहामणा।
—रा. रू.

५ शुभ समाचार या शुभ सन्देश सुनाने की क्रिया या भाव।

६ उक्त समाचार सुनाने वाले को दिया जाने वाला पुरस्कार।

रू भे.—वदावणौ, बधामणौ, बधावणौ, वद्धामणौ, वधामण, वधामणउ, वधावणौ।

अल्पा.,—वधामणी।

वधांमणौ, वधांमबौ—देखो 'वधाणौ, वधाबौ' (रू भे)

वधाम्रणौ, वधाम्रबौ—देखो 'वधाणौ, वधाबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

वधाइ—देखो 'वधाई'।

उ०—वधाइ वधाई जसोदा वधाई।
—नागदमण

वधाइदार—देखो 'वधाईदार' (रू. भे.)

उ०—फतैरा सैंदाना वागा छै। जम जैत रा डंका वाजिम्रा छै। कुसळखेम आणद रा वधाइदार दौडिम्रा छै।
—रा सा. स.

वधाई—देखो 'वधाई' (रू. भे.)

उ०—मित्री नदी तिरनै साहजादी नू ले नीसरियौ। सागै वधाई वाटी। साहजादी सिबै सू बहोत राजी हुई। बहोत वधाई दीबी। घोडौ सिरोपाव दियौ।
—नैणसी

वधाईदार—देखो 'वधाईदार' (रू भे)

उ०—त्रिळकुलै वधाईदार वधि, आणद उछव अथाह म। आगमण खबर 'अभमाह' री, जाय कहै 'जैसाह' सू।
—सू प्र

वधाउ—देखो 'वधाऊ' (रू. भे.)

उ०—महि वीता दस मास, जाम नृप कुंवर जनम्मै। वधाउवां जिणवार 'अजै' वहु दरव उधमै।
—सू. प्र.

वधाउडौ, वधाऊडौ—देखो 'वधाऊ' (अल्पा, रू भे.)

वधाऊ—देखो 'वधाऊ' (रू भे.)

उ०—ग उछाह करता आया, आगै जनक वधाऊ आया।
—रामरासौ

वधाऊहार—देखो 'वधाईदार' (रू. भे.)

उ०—इसौ आणद देखि के कटक माहै थैं वधाऊहार आगै वदोवदि दौड्या।
—वेलि टी

वधाणौ, वधाबौ—देखो 'वधाणौ, वधाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ इसा रग उच्छाह सू, राम आया। बधै मात कौसल्या आए वधाया।
—सू. प्र.

उ०—२ साथ मागै अमला सू लाल्हरतौ थकौ वहे छै। वधाईदार आगै वधाइया छै। मू वधाई प्राण दीवी छै।
—रा. सा. स

वधाणहार, हारौ (हारी), वधाणियौ—वि०।

वधायोडौ—भू० का० कृ०।

वधाईजणौ, वधाईजबौ—कर्म वा०।

वधापण—देखो 'बूढापण' (रू.भे.)

वधापौ—देखो 'वधापौ' (रू. भे.)

वधायक–वि. [स. बृध्-वर्धयते] १ बढाने वाला, वृद्धि करने वाला।

उ०—वधै राज सुख विहद, वधै हित सपत वधायक। अवर वधै दिन दनौ, वधै पल पल वरदायक।
—सू प्र.

२ देखो 'विधायक' (रू. भे)

३ देखो 'विधेयक' (रू भे.)

वधायोडौ—देखो 'वधायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वधायोडी)

वधारण–वि [स. वृद्धि-कार] १ बढाने वाला, वृद्धि करने वाला।

२ खीचने वाला, लम्बा करने वाला।

३ त्रुटित करने वाला, तोडने वाला।

वधारणौ, वधारबौ–क्रि. स. ["वधरणौ" क्रिया का प्रे. रू] १ आगे बढाना, अग्रसर करना, आगे जाने के लिये प्रेरित करना।

उ०—'रूपा' 'पाता' 'घाघळा' छळ जोधाण नरिद। वस छत्रीसा भल्लिया, धम वधारण दूद।
—रा. रू.

२ वृद्धि करना, बढाना। (उ. र)

उ०—१ वनि वनि विकसइ वेउल खेउ लगाडइ चींति । दीठा द्राखह मंडव मड बधारइं प्रीति । —जयसेखरसूरि

उ०—२ देवर माहरि घरि नहीं, ऊठी गिउ आक्रेटि । प्रीऊडा-पखरि पापीइ, जलण बधारिउ जेठि । —मा. का. प्र.

३ विस्तार करना, फैलाना, लम्बा करना ।

उ०—१ वधि रा' ण सुवप बधारियौ, असमाण छिबतौ आवियौ । —सू. प्र.

उ०—२ सिखा फरहरती, उत्तरासगी घोती, हाथि प्रवीत्रीसऊ, तूरीउ जनोइ सिर भद्रिउं तिलक बधारिउं, गायत्री साधनु । —व. स.

उ०—३ ऊणी राजा जोवा गयु, दीठू खडग रलिया प्रति थयु । वेगि लेई बधारूं चीर, पिहिरी खड नीसरयु वीर । —नळाख्यान

उ०—४ राज गरीब निवाज, जेण प्रहलाद उबारै । राज गरीब निवाज, द्रोपदा चीर बधारै । —गजउद्धार

४ मान देना, इज्जत देना, सम्मान ।

उ०—१ सु पछै रावळ घड़सी घरती वाळौ, तरै साग विखायता नू बधारिया तरै महिपा नू कह्यौ—'थे माहरी वडी चाकरी पोहता छौ, सु थे मांगौ जितरी घरती म्हे थानू दा । —नैणसी

उ०—२ पाछै जिण दिन तख्त बैठियौ छत्र धारियौ ताहरा बहराम कवी से ने तेड़ पूरौ बधारियौ । —नी. प्र.

५ काटना, कतरना, टुकडे करना ।

६ किसी देवता को चढाने के लिये नारियल आदि को फोडना, तोड़ना ।

७ चूड़ी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोडना, समाप्त करना ।

बधारणहार, हारौ (हारी), बधारणियौ—वि० ।

बधारिप्रोड़ौ, बधारियोड़ौ, बधारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बधारीजणौ, बधारीजबौ—कर्म वा०

बदारणौ, बदारबौ, बधारणौ, बंधारबौ,बदारणौ, बदारबौ,बघारणौ, बधारबौ, बनारणौ, बनारबौ, बाधारणौ, बाधारबौ, वाधारणौ, वाधारबौ । —रू. भे ।

बधारियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ आगे बढाया हुआ अग्रसर किया हुआ, बढने के लिए प्रेरित किया हुआ. २ वृद्धि किया हुआ, बढाया हुआ. ३ विस्तार किया हुआ, फैलाया हुआ, लम्बा किया हुआ. ४ मान, सम्मान व इज्जत दिया हुआ. ५ काटा हुआ, कतरा हुआ, टुकडे किया हुआ. ६ फोडा हुआ, तोडा हुआ. (नारियल) ७ तोडा हुआ, समाप्त किया हुआ. (मांगलिक पदार्थ)
(स्त्री. बधारियोडी)

बधारौ—देखो 'बधारौ' (रू भे)

उ०—१ दिग्रा बधारा देस दे, हैंवर द्रव्य हसत्ति । पतिसाही या ऊपरा, यू कहिग्रौ प्रसपत्ति । —वचनिका

उ०—२ थया हरख सौ गुणा, भड़ां औगुणा बधारा । साथ हूंत गजराज, किताइ धजराज सिरा रा । —रा. रू.

उ०—३ आविया सेव पावौ उतन्न । घर सहत बधारा बिगुण घन्न । —सू. प्र.

बधाव—देखो 'बधाव' (रू. भे)

उ०—नितु नितु जोसी पूछीइ, नितु नितु सुकन मुभाव । नित नित निरति विहूणडा, आविइ वली बधाव । —मा. का. प्र.

बधावणौ—देखो 'बधामणौ' (रू. भे.)

उ०—महाराय श्री कल्याणमलजी जन्म महोच्छव मांगलिक बधावण कराया । —द. वि.

बधावणौ, बधावबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ भलौ भलौ सारौ जग भाखै, कही न लाई वात कई । मागज घरा बधावण मोटा, मोटी पाघ संसार मई । —द. दा.

उ०—२ सहू महाजन हरखीया, कोण देस कहौ कुणि ठांमि ? रावळी पोळै आवीया, पौळया वेगी बधावउं जाइ । —वी. दे.

उ०—३ इणि परि राउ बधावीइ, मनि आंण्या हे परमाणंद । नयर लोक आसाचरीजि' जउ इम बोलइ ए 'हीराणंद' । —हीराणंद सूरि

बधावणहार, हारौ (हारी), बधावणियौ—वि० ।

बधाविप्रोड़ौ, बधावियोड़ौ, बधाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बधावीजणौ, बधावीजबौ—कर्म वा० ।

बधावधि, बधावधी—देखो 'बढावढी' (रू. भे.)

उ०—बधावधि राडि करै खगवाह । सत्रा 'परसावत' 'माहवसाह' । —सू. प्र.

बधावियोड़ौ—देखो 'बधायोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. बधावियोडी)

बधावौ—देखो 'बधावौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद वीर पुरस री स्त्री नै आ वात रुची नही, तिण सूं कहै है कि हे सखिया फगत ऊजळा कपडा राखण वाळां रा थे बधावा गाग्रौ पण वीर पुरस नै पिछाणौ नहीं । —वी स. टी.

उ०—२ घणौ रस रहियौ बडा बधावा हुआ । —गौड गोपाळदास री वारता

बधिक-म. पु. [सं. वधक] १ हत्या करने वाला, हत्यारा, बध करने वाला ।

२ प्रहार, घात व चोट करने वाला, घातक ।

३ जल्लाद ।

४ शिकारी, व्याध ।

५ मृत्यु ।

रू. भे.—बधक, बधिक, बधक ।

बधियोड़ौ—देखो 'बधियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बधियोडी)

बधिर—देखो 'बधिर' (रू. भे.)

बधिरपणौ—देखो 'बधिरपणौ' (रू. भे.)

बधु, बधू—म. स्त्री. [स. बधुः, बधूः] १ ऐसी युवती जिसका विवाह तुरन्त ही हुआ हो, दुलहिन, नव विवाहिता ।

२ पुत्र-बधू ।

३ सम्बन्ध की दृष्टि से छोटे की स्त्री ।

४ पत्नी ।

५ स्त्री, औरत ।

रू. भे.—बधु, बधू ।

बधूवर—स पु. [स. बधू-वर] १ दूल्हा । (उ. र.)

२ पति ।

बधेतौ—देखो 'बधतौ' (रू. भे.)

बधेपौ—देखो 'बधापौ' (रू. भे.)

बधेबधि—देखो 'बढाबढी (रू. भे.)

उ०—समोभ्रम 'दीप' हिदाळ' सधीर । बधेबधि लोह करै नर वीर ।
—सू प्र

बधोतरी—देखो 'बढोतरी' (रू भे.)

बधोबधू, बधोबधौ-स पु — मवेशी को चरने के निमित्त हाकते समय किया जाने वाला शब्द ।

बधौ—देखो 'बाधौ' (रू. भे)

उ०--भ्रम सनेह कुळ मारग धारा । प्राण हूत बधि आप पियारा ।
—सू प्र

(स्त्री. बधि, बधी)

बध्याणौ, बध्याबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

बध्याई—देखो 'बधाई' (रू. भे)

बध्याईदार—देखो 'बधाईदार' (रू. भे.)

उ०—सुणि अविया बहु सुघन, दुभळ बध्याईदारां । सझै प्रवासां डबर, चित्र अवछाडि बजारा ।
—सू. प्र.

बध्यावणौ, बध्याबबौ—देखो 'बधाणौ, बधाबौ' (रू. भे.)

उ०—सुमत्रा अनै केकई मात साई । भली भात बध्याविया च्यार भाई ।
—सू. प्र.

बध्यावियोड़ौ—देखो 'बधायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बध्यावियोडी)

बध्राउ—सं. पु.—शाक विशेष

उ०—वालु नई वेलातरु, वेऊ वेतस वाणि । बध्राउ वाहुलु लीड, वाउलीउ वखाणि ।
—मा. कां. प्र.

बनंचर—देखो 'वनचर' (रू. भे.)

उ०—बदियौ स्वान बनंचरां, नहि लाज निहारै । मुख मल ग्रासज मेलिहुजै, मस्तक पर मारै ।
—सू. प्र.

बन—स. पु. [सं] १ जगल, विपिन ।

उ०—कुजर ज्यू जो केहरी, तू लेतौ तालीम । काळ मे रखवाळत कवण, संपूरण बन सीम ।
—बां. दा.

पर्या०—अटवी, अरणाय, आरण, ऊख, कतारक, कखवा, कछ, कातार, कानन, खड, गहन, झक, रन, रिख, विपन, विखवात ।

मुहा०—वन मे जाणौ=दिशा (मैदान) जाना, (साधु के लिये)

२ जल, पानी । (ह. ना. मा.)

३ जल का स्रोत ।

४ वाटिका, बगीचा ।

५ कमल ।

६ कमल के फूलो का दस्ता ।

७ आवास स्थान, घर ।

८ काष्ठ, लकडी ।

उ०—आतुर चित्त आगळी, धाम विसराम सुधारे । बन चंदण बावना, अगर घणसार अपारे । महल-काठ चुणि विमळ, पहल, रुई घ्रत पुरित । ओप सदळ औछाड, अमळ परिमळ आकूरित । उण भवण वसण राजा 'अजन' आप सुखासण ऊतरी । लखि वरत सुरी अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी ।
—रा. रू.

९ किरण, रश्मि ।

१० शकराचार्य के अनुयायी दशनामी सन्यासियो की एक शाखा ।

रू. भे —बण, बन, बन्न, वण, वनु, वन्न ।

अल्पा.—बनी, बणी, वणी, वन्नि, वन्हि ।

मह.—वनाळ ।

बनअमावस्या—स. स्त्री.—श्रावण मास की अमावस्या, हरियाली अमावस्या ।

बनउक, बनओक—स. पु. [स. वन+ओकस्, वनौक] १ वानर, बंदर । (अ. मा., ह. ना. मा.)

२ वन्य-पशु ।

३ वानप्रस्थाश्रमी, तपस्वी, मुनि ।

वि.—वन में निवास करने वाला, बनवासी।

रू. भे.—बनउक, बनग्रोक।

बनकर–सं. पु. [सं. वन्यकर] सूर्य, भानु।

रू. भे.—बनकर।

बनखंड–स. पु. [स. वनखड] वन, जगल ।

उ०—१ जिए रित नाग न नीसरइ, दाझइ बनखंड दाह। जिए रित मालवणी कहइ, कुंए परदेसां जाह । —ढो. मा.

उ०—२ बनखड गिर भगर नह वसियौ, हूं भौ देख कतूहळ हसियौ। —सू. प्र.

रू. भे.—बणखड, बनखंड।

बनखंडी–स. पु. [स. बनखड+रा. प्र. ई.] १ साधु, सन्यासी, तपस्वी।

२ वनवासी।

रू. भे.—बणखडी, बनखंडी।

बनगव, बनगाय, बनगाव–स. स्त्री. [सं. वन+राज गव] १ नीलापन लिये हुए भूरे रग का गाय के आकार का एक वन्यपशु, नीलगाय।

२ एक प्रकार का तेंदू वृक्ष।

रू. भे.—वनगव, बनगाय, बनगाव ।

बनड़ी—देखो 'बनी' (अल्प., रू. भे.)

बनड़ौ—देखो 'बनौ' (अल्पा, रू. भे)

उ०—होय रग हबोळोय मांढहड़ौ। वळियौ जनवास हमैं बनड़ौ।

—पा. प्र.

बनचर, बनचरी, बनचरु, बनचारी–वि. [स. वनचर] (स्त्री. वनचारण, वनचारिण) १ वनमे विचरण करने वाला।

उ०—हाडा, कूरम राठवड, गोखा जोख करंत । कहज्यौ खाना खाननैं, बनचर हुवा फिरत । —महाराणा अमरसिंह

२ वनवासी, उदासी।

उ०—अरजुन बनचर लागउ वादु, करउं भूझु उतारउ नादु ।

—प. प. च.

स. पु.—१ जगली प्राणी, जगली पशु।

उ०—जळचर बनचर आतरौ, जळचर जळ मे जोर। बनचर प्रति वेढीमणौ, जो कछु लाभै कोर । —गज उद्धार

२ बदर, वानर। (अ. मा., ना. मा.)

३ हनुमान, बजरंगी ।

उ०—हणु मिलत धुर हर दीघ सिर हथ, रिधु बजरग हुवौ समरथ। चवै रघुवर वयण बनचर, सीत सुध साजै । —र. रू.

४ हरिण ।

५ शरभ नामक जगली जतु।

६ एक प्रकार का जंगली घास।

रू. भे.—बणचर, बनचर, बनचरी, बनचारी, वणचरि, बनचर, वनेचर।

बनज–वि. [सं. वन+जन्य, वनज: वनजं] वन मे उत्पन्न होने वाला ।

स. पु.—१ कमल २ वृक्ष ३ वनस्पति ४ हाथी। ५ सुगन्ध युक्त तृण। ६ नील कमल का पुष्प। ७ जंगली कपास का पौधा।

रू. भे.—बनज।

बनझंगर–सं. पु.—वन की झाडी समूह।

उ०—इण भात रा बनझगरां माहै हरिण, सूअर, सांबर, रोज, खरगोस, गेंडा, खग भाति भांति रा जानवर चरै छै।

—रा. सा. सं

बनडडकारण – देखो 'दडकारण्य' (रू भे.)

बनता – देखो 'वनिता' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

बनतुळसी–सं. स्त्री. [स वन+तुलसी] तुलसी के समान मंजरी व पत्तियों वाला बर्बर नाम एक पौधा विशेष, बर्बरी।

वि. वि.—यह चरपरी, रुचिकारक, गरम तथा कफ, वात रोग और नेत्र रोग नाशक है तथा सुख पूर्वक प्रसव कराने वाली है।

रू. भे.—बनतुळसी।

बनद–स पु. [स वनद:] मेघ, बादल।

रू. भे.—बनद ।

बनदरसाव–सं. पु.—इन्द्र। (अ. मा.)

बनदेव–सं पु [सं. वनदेवता] (स्त्री. वनदेवी) वन का अधिष्ठाता देवता।

बननाथ–स. पु. [स.] १ समुद्र।

२ मलय-वन।

बननिधि–स. पु. [स.] समुद्र ।

रू. भे.—बननिधि ।

बनपत, बनपति, बनपती–स. पु. [स. वनपति] वन का राजा सिंह,शेर। (अ. मा.)

उ०—१ कोरण सुभट घटा घट कटका, अजड़ां हथ दामणी तप। 'सूर' तणौ थरहरै नरेसुर, वनपत थर खेंगरै वप—देवराज रतनू

उ०—२ लंक वन पति हसगति को करमण, मनमंत —ढो. मा.

रू. भे.—बनपत, बनपति, बनपती।

बनपाळ, बनपाळक–सं पु [स. वनपालक.] वन या बगीचे का रक्षक, बागवान, माली ।

रू. भे —बनपाळ, बनपाळक ।

बनफळ–स पु. [स. वन+फल] वन के फल-फूल।

रू. भे.—बनफळ।

बनबिलाव-सं. पु [स. वनं+बिडाल:] १ बिल्ली की जाति का परन्तु कुछ बडे आकार का एक जगली हिंसक जतु।

वि. वि.—इसके शरीर का रंग मटमैला होता है और कानों का बाहरी भाग काला होता है। यह प्रायः झाडियो मे रहता है और चिडियों को पकड़-पकड खाता है।

२ उक्त प्रकार के जन्तुओ का वर्ग।

रू. भे.—बनबिलाव।

बनभ्र ग-स पु. [स. वनभृ ग] वन का भ्रमर।

उ०—जिम केतकी बनभ्र ग, तिम सुगुरु सु मुक रग। —समय सुदरगणि

बनमय-वि [स. वनं+मय=युक्त] वनो से युक्त या परिपूर्ण।

रू. भे.—बनमय।

बनमांनस, बनमांनुस-सं. पु. [स वन+मानुष] १ एक जगली जतु जो बन्दर से कुछ उन्नत और मनुष्य से कुछ मिलता-जुलता होता है।

२ उक्त प्रकार के जंतुओ का वर्ग जिसमे गोरिल्ला, चिंपंजी, ओरंग उटग आदि जतु हैं।

रू भे.—बनमानस, बनमानुस।

बनमाळ, बनमाळा-स. पु [सं वनमाला] वन के पुष्प एव पल्लवो की गुथी हुई कठ से पाव पर्यन्त लटकने वाली माला।

रू. भे.— बनमाळ, वनमाळा, वन्नमाळा।

बनमाळी-वि [स] वनमाला धारण करने वाला।

सं. पु—१ ईश्वर। (ना. मा.)

२ विष्णु।

उ०—पर प्रहळाद तणी प्रतपाळी। वळ घू भली कियौ वनमाळी। —र. ज. प्र.

३ श्री कृष्ण। (अ. मा.)

उ०—भीमकराय भणइ रुखमइया, वर वनमाळी जाणु। छपन कोडि जादव नो राजा, वस विसुध वखाणु। —रुकमणि मगळ

४ बागवान, माली।

उ०—बन माळी रै पुत्तर आयो। जिण तुळछा रो बन रोपायो। —लो गी.

रू भे.—वनमाळी, बनमाली, बनवारी, वनवारी, वन्नमाळी।

बनमुरगौ-सं पु यौ [स वन+फा. मुर्ग] जगली मुर्गा जो साधारण मुर्गे की अपेक्षा कुछ बडा होता है, वन-कुक्कुट।

रू भे.—वनमुरगौ।

बनमूत-स पु [स वनमूत:] बादल, मेघ।

बनर—देखो 'वानर' (रू. भे) (ना. मा.)

बनरमाळ—देखो 'बादरमाळ' (रू. भे.)

बनराइ, बनराज, बनराय, बनराव-स. पु [सं. वनराज] १ सिंह, शेर।

उ०—पद बनराव न पामियौ, दुरद दिखाळै दांत। सोह थयौ बन साहिबौ, ठीगारी सकरात। —बां. दा.

२ बड़ा जगल, विशाल वन।

[स वनराजि] ३ वृक्ष, पेड, वृक्ष समूह।

उ०—१ धमक खोद धरणी सहै, काट सहै बनराय। कुटक वचन असली सहै, ओरा सह्या न जाय। —श्री हरिरामजी महाराज

उ०—चैत्रइ विचित्र थइ रही, अंब तणी बनरायौ जी। पुड साखा अंकुरित थइ, सोह वसतइ पायौ जी। —वि. कु.

४ वृक्ष पक्ति।

५ पेड़ पौधे, वनस्पति आदि।

उ०—२ पोस में ओस पडै निम, रुदन करै बनराय। दोस विना पिउ रोस करै, तै सोस ज थाय। —ध. व. ग्रं.

६ वन, जगल।

उ०—कीधी पग्नग्या इसी, मन सेती महाराय। पदमणि परणु तो घरि रहु, नहिं तो गिरि बनराय। —प. च. चौ.

७ वनखण्ड।

रू. भे —बणराइ, बणराइ, बणराज, बणराव, बणराव, बनराइ, बनराज, वनराय, बनराव, बणराइ, वणराइ, वणराई, वणराज, वणराय, वणराव।

बनरवाल, बनरवालि—देखो 'बादरमाळ' (रू. भे.)

उ०—तलिआ-तोरण ऊभीआ घरि-घरि बाधीआ ए वनर वालि। गुहुगइ मादल रग कीआ तिहि नाचइ ए नवरंगि बाल। —हीराणद सूरि

बनरावन—देखो 'व्र दावन' (रू भे)

उ० —आसम चौथे आयकै इक बनरावन जावै। आस्रम चौथे आयकै इक तीरथ दिस धावै। —अरजुनजी बाहरठ

बनरुह-स पु [स वनरुह] कमल का फूल।

बनरोई,बनरोही-स. पु.—१ बन, जगल।

२ बीहडवन, दुरुह जंगल।

रू. भे.—बनरोई, बनरोही।

बनलक्ष्मी-सं. स्त्री [स] १ वन की शोभा, वनश्री।

२ केला।

बनलौ—देखो 'बनौ' (अल्पा, रू. भे)

उ०—बरसंता सहरा वीटाणो, नमग न हुए नराळो। डीगा आज लगो डुगरियो, बनलो काठळ वाळो। —अज्ञात

वनवारी—देखो 'वनमाळी' (रू भे.)

उ०—सोधन पीवजी साज सवारी, अब वेगि मिळौ तन जाइ वनवारी। —दादूबाणी

वनवास–स. पु [स.] १ घर, नगर व बस्ती छोड़ कर जगल का निवास।

उ०—वस राज (जी) री राखणी, कुण धणी आयत होयवै। वनवास प्रती दुख घणा, क्यां जाणा क्या जोय वै। —रीसालु री बात

२ उक्त प्रकार के निवास की क्रिया, दशा, व्यवस्था, विधान।

मुहा —वनवास देणौ=घर से दूर जंगळ मे उदासी बन कर रहने की आज्ञा देना।

रू. भे.—बनबास, बनवास, वनोवास।

अल्पा.—बनवासौ, वणवासु, वनवासु, वनवासौ, ।

वनवासी–वि [स वनवासिन्] १ वन मे निवास करने वाला, बसने वाला।

२ उदासी, तपस्वी।

स. पु.—१ ऋषि-मुनि, सन्यासी, २ वानप्रस्थी।

रू भे.—बनवासी।

वनवासु, वनवासौ—देखो 'वनवास' (अल्पा., रू भे.)

उ०—१ बारह ए वरस वणवासु नाठै हीडिव तेरमई ए। अम्हि किम ए जाणिस, तुहितउ वनवासु जु नेतलु ए। —प प च

उ०—२ वनवासौ चवदै वरसा रौ, वांमा मग बिळावै। वीते पलही कलप बरावर, जिकै दिवस किमि जावै। —र. रू.

वनविळासिणी–स. स्त्री.—वन मे विलास या विचरण करने वाली देवी।

वनवीरोत–स पु —राठौड वश की एक उपशाखा या उस शाखा का व्यक्ति।

वनसण–स. स्त्री. [स वनशण] शण-पुष्पी नामक औषधि विशेष। (निघटु)

रू. भे.—बनसण।

वनसपति, वनसपती—देखो 'वनस्पति' (रू. भे.)

उ०—१ वनसपति फूली फळी, नाना रग धरति। तिम तू यौवन जाणीजे, खिण एक-माहि खिरति। —मा. का प्र

उ०—२ वनसपती पुहपति विसतारै भवर गुजार करै सुर भारै। —सू. प्र

उ०—३ वनसपती सू वेला लपटनै रही छै। —रा सा. स

वनसी—१ देखो 'बसी' (रू भे.) (अ. मा)

२ देखो 'वंसी' (रू भे)

वनासपति, वनासपती - देखो 'वनासपति' (रू. भे.)

वनस्थळि, वनस्थली–स. पु. [सं. वनस्थली] १ वनो से घिरा हुआ प्रदेश। अरण्य देश।

२ वन का भाग।

रू. भे.—बनसथळी, बनस्थळी।

वनस्पति–स. स्त्री. [स. वनस्पति.] १ जमीन से अकुरित होकर उत्पन्न होने वाले पेड, पौधे, लताए, घास आदि।

२ बडा जगली वृक्ष जिसमें पुष्प लगे विना ही फल लगते हो।

३ वृक्ष, पेड।

रू. भे —बनसपति, बनसपती, बनस्पति, बनस्पती, बनासपति, वनासपती, वनसपति, वनसपती, वनासपति, वनासपती।

वनस्पतिसास्त्र–स पु [स. वनस्पति+शास्त्र] वह शास्त्र जिसमें पेड-पौधो की उत्पत्ति, गुणधर्म तथा जातियो का वैज्ञानिक ढग से विवेचन किया हो, वनस्पति-विज्ञान।

रू. भे —वनस्पति विद्या।

वनागनी, वनाग्नि–स. स्त्री यौ. [स वन+अग्नि] वन मे लगने वाली आग, दावानल।

रू भे —बनागनी, बनाग्नि, वनिअगनि।

वनात—देखो 'बनात' (रू. भे.)

उ०—भणी रग रग री वनात मुखमल कळाबूनी सोने रूपै रा वणिया जीण हाजर कीजे छै। —रा सा. स.

वनाती १ देखो 'बनाती' (रू. भे.)

उ०—वनाती भूला घातिया रहकला, इर्का, खडसला जूता छै। सू हाजिया थका घोडा री माम पाडै। —रा. सा. स.

२ देखो 'वनात' (रू. भे.)

उ०—घोडौ तो भीजै, पिया, नवलखौरै, कोई भीजै रे वनाती, भीजै रे वनाती, रे साज। —लो. गी.

वनाधिप, वनाधिपति–स पु. [स. वन+अधिपति] सिह, शेर।

रू भे —बणाधिप, बणाधिपति।

वनापार–वि.—अत्यधिक, अपार।

उ०—मौसरा ताण घमसाण रै मागडै, पागडै जैत खाटै वनापार। जोधपुर नाथ कर कोण पूठै जका, ऊनन छूटै तका हुए आधार। —जवान जी आढौ

वनायु–स. पु [स] १ एक प्रचीन देश जहा के घोडे प्रसिद्ध होते थे।

२ उक्त देश का निवासी।

३ पुरुरवस् राजा का उर्वशी मे उत्पन्न पुत्र।

४ एक दानव जो कश्यप एव दनु के दस प्रधान पुत्रो मे से एक था।

वनायुज–स पु. [स] १ उक्त देश (वनायु) का घोडा। (डिं. को.)

२ घोडा (डिं को)

बनाळ—स. स्त्री. [सं. वन+अलिका] १ सूरजमुखी।
२ देवदाली बघरबेल, बदाळ। (अमरत)
३ देखो 'वन' (मह., रू. भे.)

बनास—देखो 'बनास' (रू. भे)
उ०—चळंती सुहासर बनास फळंती छोळां, सुभ्र गीडुलती बीरा करीरां सुवास। समीरा हलती बेस गहीरां तरां री साखा, कमोद फूलती नीरा चौगणां प्रकास। —महाराजा मानसिंह

बनासपति बनासपती—१ देखो वनस्पति' (रू. भे.)
उ०—गिरां खळक्के नीर नदि, झरणा झरै अपार। बनासपति पावर वणी, विविध अठारै भार। —गज उद्धार
२ देखो 'बनासपति' (रू. भे.)

बनि—सं स्त्री [स. वह्नि] १ अग्नि, आग। (ना डिं. को)
[स वनिः] २ अभिलाषा, कामना।
३ याचना।
४ देखो 'वनी' (रू भे.)
उ०—१ पथी एक संदेसडइ, लग ढोलइ पैहच्चाइ। विरह-दाध बनि तनि वसइ, सेहर गाजइ आइ। —ढो मा.
उ०—२ (इसी) जु मालिग छै सु बांन बनि रै विखै केसरि चुगै छै। —वेलि टी
५ देखो 'बनी' (रू भे)
रू. भे.—बनि, बन्हि, बन्ही बह्नि बहनी बेह्नि, बेह्नी वनी, वन्नि, वन्हि, वन्ही।

बनिअगनी—देखो 'बनागनी' (रू. भे)
उ०—आवै सगण अचीत, जेम बनिअगनि सिळगां। सरप विकख मोखवा, मंत्र आवै सुभमगा। —रा रू

बनिता—स. स्त्री. [स] १ पत्नी, भार्या।
उ०—बनिता-पती विदेस गय, मंदिर-मझै अद्धरयणीए बाळा। लिहइ भुयगो, कहि सुदरि कवण चुज्जेरा। —ढो मा
२ स्त्री, औरत, नारी, रमणी।
उ०—बनिता रूपं रात्रि आमणी। —धरम-पत्र
३ प्रियतमा, प्रिया, प्रेयसी।
४ स्वामिनी, मालकिन।
५ वैश्या।
६ दो सगण युक्त छै वर्णों की एक वृत्ति।
रू. भे—वनता, बनिता, वणता, वनता, वनित्ता, वनीता।

बनितामुख—स. पु.—मनुष्यो की एक जाति। (मारकण्डेय पुराण)

बनिता सुत—स पु [स वैनतेय] गरुड। (डिं. ना. मा.)

बनित्ता—देखो 'वनिता' (रू. भे.)
उ०—वय सोळह सिरणगार बनित्ता, लखण बतीस सजुगत ललित्ता। सोभा सारिख किरण सविता, दीपै मंदर राज दुहित्ता। —गु. रू. ब.

बनिस्पत—देखो 'बनिस्पत' (रू. भे.)

बनी—स. स्त्री [स.] १ छोटा वन, वाटिका।
उ०—वैरि मदिरि स लाछि सांसही, आरम पोकस बनी समइं दही। भ्रू टि भूबि मुक नारि बिनोई, आथमिउं मिहर सूं मुह जोई। —सालि सूरि
२ बीहड व भयावह जगल।
३ वनस्थली, झाडी, कुज।
४ देखो 'बनी' (रू. भे)
५ देखो 'वनि' (रू. भे.)
रू. भे'—बणी, बनि, बनी, बन्नी, बन्हि, बन्ही, वणी।

बनीत—देखो 'बनीत' (रू भे)

बनीता—देखो 'वनिता' (रू. भे)
उ०—सोहन वाम दिसा निज सीता, बादळ बीज प्रभाव बनीता। —र. ज. प्र.

बनीपक, बनीयक—स. पु [स] भिखारी, भिक्षुक, याचक। (ह. ना. मा.)

बनीसिख—स स्त्री. [स वह्नि-शिख] केसर। (ह. ना. मा.)

बनु—देखो 'वन' (रू. भे.)
उ०—दह दिसि द्रुम जा वनु आरोडइं। जीव विणासइं तरुयर मोडइ। जा द्रुम दलवइ पारधि लागई तांम असभमु पेखइ आगइ। —प. प. च.

बनेचर—देखो 'वनचर' (रू भे.)

बनै—देखो 'बनै' (रू. भे)

बनोक—स पु [स. वनौकस्] वानर।
रू. भे—'वनोक'

बनोड़ा—देखो 'बणोडौ' (रू. भे.)
उ०—ताहरा हेमौ बोलियौ-कूंभा मालाणी! कटक वाळ बनोड़ा मता नाखै। साइया मिळौ! ताहरा कूंभौ घोडै हू उतरियौ। —नैणसी

बनोत्सरग—स पु [स वन+उत्सर्ग] १ देव मन्दिर, वापी, कूप उपवन आदि बनवा कर सार्वजनिक उपयोगार्थ, शास्त्र विधि से दिया जाने वाला दान, उत्सर्ग।
२ उक्त प्रकार के दान की शास्त्रोक्त विधि।

बनोद—स. पु [स वनोदय] १ कमल।
२ देखो 'विनोद' (रू भे)

बनोदनंणी—वि. स्त्री.— जिसके नैत्र कमल के सदृश हो, कमल-नयनी।

उ०—नाहरां नु करै जेर जाहरा विनोवनेणो, प्रचा दोय राहरा। नु देर लैणी पेस। दिळी ईम जिसा फेर नरां नू ऊथाप देणी, दीना नाथ 'संणी' वीस करा नूं आदेस। —नवलजी लालस

वनोळी—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

वनोळौ—देखो 'बदोळौ' (रू. भे.)

वनोवास—देखो 'वनवास' (रू. भे.)

उ०—किसा दीह आणंद-विन्नोद कीधा। लहै भूप आग्या वनोवास लीधा। —सू. प्र.

वनौ—देखो 'बनौ' (रू. भे.)

उ०—१ रहियौ एकज रात, कोलूमंड पाबू कमंद। पमंग चढै परभात, वरवा धण खडिया वनौ। —पा. प्र.

उ०—२ दुखा रौ डेरियौ बीकानेरियौ दिना रौ दादौ, दीठा सीस डेरियौ हेरियौ जरादूत। भूटे लोब लाग वनौ हेरियौ बखाकमंड, पीढी सात मातै पाणी फेरियौ कपूत। —उदैभाण बारहठ

वनौकस-सं. पु. [सं.] १ बंदर, वानर।

२ वनवासी।

वनौखद वनौसद-स. स्त्री. [सं वन+ग्रौषधि] १ जंगल मे पैदा होने वाली औषधि, जडी, बूटी।

वन्न—देखो 'वन' (रू. भे.)

उ०—सीहां देस विदेस, सम, सीहा किसा उतन्न। सीह जिकै वन संचरै, सो सीहा रौ वन्न। —बा. दा.

वन्नमाळ—देखो 'वनमाळा' (रू भे.)

वन्नमाळी—देखो 'वनमाळी' (रू भे.)

उ०—तिसी तंत ताती बजी ताल ताळी, मडयौ पाव आरंभियौ वन्नमाळी। —ना. द.

वन्नर—देखो 'वानर' (रू. भे)

उ०—मूगले कहिय मुहि मारि मारि, धूणियउ कोट काळइ कधारि। पतिसाह तणै झालिय पखाण, जुधि चडिय लक वन्नर जाण। —रा. ज. सी.

वन्नरमाळ, वन्नरमाळा, वन्नरवाळ—देखो 'बादरमाळ' (रू. भे.)

उ०—१ दिल्ली नगरी-रै साज-रौ आज काई कैणौ। घर घर फरिया अर वन्नरमाळावां बाधीजै है। चारू कानी वाजा वाजै है। —वरसागठ

उ०—२ प्रति प्रब मौर तोरण अजु अबुज, कळी सु मगळ कळस करि। वन्नरवाळ बधाणी वल्ली, तरुवर एका विर्यं तरि। —वेलि

वन्नि—१ देखो 'वन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ केमरि कथिन्न साभळि कन्नि, बाउळि कि वन्नि लागउ वहन्नि। 'बीकाहर' राजा ए बखाण। जाळोवळि सीतउ भ्रित्त जाण। —रा. ज. सी.

उ०—२ एकइ वन्नि वसतडा, एवड अतर काई। सीहू कवडडी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाई। —प्र. वचनिका

२ देखो 'वनि' (रू. भे.)

वन्निजणौ, वन्निजबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू. भे.)

उ० जिम चितामणि रयण मझि, उत्तम सलहिज्जइ। जिम कणयाचल गिरिह मझि, किरि धुरहि ठविज्जइ। जिम सोहू गह वत्थु मझि, समहरु वन्निज्जइ, जिम तरुह मझि वछित्त करु, सुरतरु महिमा महमहइ। —अभयतिक यति

२ देखो 'विणजणौ, विणजबौ' (रू. भे.)

वन्निजियोडौ—१ देखो 'वरणियोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विणजियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वन्निजियोडी)

वन्नीयणौ, वन्नीयबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू. भे.)

उ०—तीणइ थापिउ तिहू यण सारौ, बीजउ अमरापुरि अवतारौ। हथिणाउरपुरु वन्नीयम्। —प. प. च.

वन्नीयोडौ—देखो 'वरणियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वन्नीयोडी)

वन्य-वि. [स.] १ वन का, वन सम्बन्धी, जगळी।

२ जगल मे उत्पन्न, जगल की पैदाइश।

३ बर्बर, हिंसक।

४ असभ्य, अशिष्ट।

स. पु. १ जगली सूरन।

२ क्षीर विदारी।

३ वाराही कन्द।

४ राख।

वन्यकर—देखो 'वनकर' (रू. भे.)

वन्या-स. स्त्री. [स.] १ बडा वन, अनेक वन।

२ जल की बाढ।

३ अश्वगध।

६ गोपाल ककडी।

(४) मुद्गपर्णि।

(५) गुजा।

वन्रमाळ—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—पूजा-पाठ निराठ, वरै वन्रमाळां मोखी। जागण राती जगां, दसुटण दायजा चोखी। —दसदेव

वन्हि—१ देखो 'वनि' (रू. भे.)

२ देखो 'बनी' (रू. भे.)

३ देखो 'वन' (अल्पा., रू. भे.)

४ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)

उ०—सीत न तावड मनि गणइ, दिवस न रयणी सक। भूख पिपासा न वह्नि जल, केवल यथा करक। —मा. का प्र.

न्ही—१ देखो 'वणी' (रू. भे.)

उ०—सबको सीर सपूत मे, सब कोई मिन मपूत। कुळरी ढाकरण होत है, ज्यू बन्ही को सूत। —अज्ञात

२ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)

न्हो—देखो 'बनो' (रू. भे.)

प—देखो 'वपु' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

उ०—पेखियो सहर जोधाण-पत, सब जण घणी सपेखियो। बप आभ परख च्यारू वरण, लाभ नयण पण लेखियो। —रा. रू.

उ०—२ राम लखण सत्रघण भरथ, सूरज वस सिंगार। एक अस चत्र बप अवधि, ऐ चत्रधा अवतार। —सू. प्र.

पणी—स. स्त्री—१ नाईयो के हजामत करने का स्थान

२ देखो 'विपणी' (रू. भे)

पन—स. पु. [स.] १ बीज बोने की क्रिया या भाव।

२ शिर-मुडाई, हजामत।

३ वीर्य।

वपराणी, वपराबौ—क्रि. स. [सं. व्यापरणम्] १ अपने उपयोग के लिये किसी वस्तु की व्यवस्था करना, उस वस्तु को किसी तरीके से प्राप्त करना। उपलब्ध करना।

उ०—मन करती जणा ई मासी सिरै गाय वपराय लेती गाया री ई एक छोटी-मोटी छाग बणगी ही। —फुलवाडी

२ व्याप्त करना, सचार करना, फैलाना।

उ०—वपरातौ ठाडोळ, तूठजे वार खेगाळा। दुखिया मेठण दूख बिड्द घण सपत वाळा। - मेघ

३ उपयोग करना, उपभोग करना, इस्तेमाल करना।

वपराणहार, हारौ (हारी), वपराणियो - वि०।

वपरायोड़ो भू० का० कृ०।

वपराईजणो, वपराईजबौ —कर्म वा०।

वपराणो, वपराबौ, वपरावणो वपराबबौ —रू भे।

वपरायोड़ो—भू का कृ.—१उपयोग या आवश्यकता पूर्ति के लिये किसी वस्तु की व्यवस्था किया हुआ, प्राप्त किया हुआ, उपलब्ध किया हुआ. २ व्याप्त किया हुआ, सचार किया हुआ, फैलाया हुआ.

३ उपभोग किया हुआ, इस्तेमाल किया हुआ।

(स्त्री. वपरायोड़ी)

वपरावणौ, उपराबबौ—देखो 'वपराणी, वपराबौ' (रू. भे.)

वपरावणहार, हारौ (हारी), वपरावणियौ—वि०।

वपराविग्रोड़ो, वपरावियोड़ो, वपराव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वपरावीजणो, वपरावीजबौ—कर्म वा०।

वपरावियोड़ो—देखो 'वपरायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वपरावियोडी)

वपरीत - देखो 'विपरीत' (रू भे)

उ०—'केहर' 'कादळ' मारकै, ऐ अगलूणी रीत।' कादळ' 'केहर' मारियो, रीत कना वपरीत। —हरराम ग्रामियो

वपरुच—स. पु. [स वपु.+रुचि=क्रांति] खून, रक्त। (अ. मा)

वपा—स स्त्री. [स.] १ चर्बी।

२ मेद।

३ गुफा।

४ चीटियो या दीमक द्वारा बनाया हुआ मिट्टी का टीला। वल्मीक

५ बाबी।

रू. भे.—वपा।

वपि—देखो 'वपु' (रू भे)

उ०—वपि —केसरिया साज वणाया। उभै सहस सिंधुर धुज आया। —सू प्र

वपु—स पु [स वपुस्] १ शरीर, देह, अंग, काया।

उ०—१ खग नीर धीर अनत खरा, मद कुजर वपु जिम मयगा। गत बमै तेम तू माहरै मो मन वसियौ महमहगा। —ह र.

उ०—२ वपु दस गुणी, जोर व्रप वधियो। सौ गुण अनत पराक्रम सधियो। —सू प्र.

२ रूप, सौन्दर्य, वरण।

३ आकार आकृति।

रू भे.—वप, व्रपु, वपुख, वप्प, बप्पु, वप, वपि, वपुख, वाप।

वपुख—देखो 'वपु' (रू भे)

उ०—सिर नासा कान दसन आखे, नख गाळ वपुख ना मल राखै। भिलणो लेखो करै भजणो, विहचण अपणो करि धन धरणो। —वृ. स.।

२ देखो 'वपुस' (रू. भे.)

वपुस—स पु. [स. वपुष.] देवता।

रू भे.—वपुख, वपुख।

वपुस्टमा—स स्त्री. [स. वपुस्टमा] काशिराज सुवर्णवर्मन् की कन्या जो

जन्मेजय को ब्याही गई थी ।

वि. वि —इसके शतानीक व शंकुकर्ण नामक दो पुत्र थे ।

वपुस्मती-सं. स्त्री. [सं. वपुष्मती] १ सिन्धुराज की पुत्री जो राजा मरुत्त की पत्नी थी ।

२ स्कंद की एक अनुचरी ।

वप्प—देखो 'वपु' (रू. भे.)

उ०—देवी वाहन नाम के वप्प-वाळी । देवी खग्ग सूलधरा खप्पर वाळी । —देवि

वप्र-स पु. [स. वप्रः, वप्र] १ मिट्टी की दीवाल ।

२ शहर-पनाह ।
३ मिट्टी का टीला ।
४ चोटी या शिखर ।
५ नदी तट ।
६ किसी भवन की नींव ।
७ पहाड़ का उतार ।
८ शहर-पनाह का द्वार या फाटक ।
९ खाई की मिट्टी का उसके किनारे बना हुआ धुस्स ।
१० वृत्त का व्यास ।
११ खेत ।
१२ मिट्टी, धूल, रेणु ।
[स. वप्रिन्] १३ प्रजापति ।
१४ द्वापर युग के व्यास ।

वप्रवरण-सं. पु. [स. वप्रावरण] गढ, किला । (ग्र. मा., ह. ना मा.)

वप्रोढौ-सं. पु. [स. विवोढु] १ पति । (ह ना मा.)

२ दूल्हा, वर ।

वफा-स. स्त्री. [फा.] १ निर्वाह, पालन, अमल ।

२ सद्व्यवहार, बर्ताव ।
३ प्रेम, मोहब्बत ।
४ निष्ठा, आस्था, भक्ती ।
५ सुशीलता, सज्जनता ।

वफादार-वि. [फा] १ अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, वचन निभाने वाला ।

उ०—हर बात में कौल पालणौ वडी बात छै । वफादार साच रौ संग करजे, साचौ कोल पाळणौ —नी. प्र.

२ स्वामी भक्त, नमक हलाल ।
३ कर्त्तव्य-निष्ठ ।
४ सच्चा ।

रू. भे —बफादार ।

वफादारी, वफेदारी-स. स्त्री. [फा. वफादारी] १ वफादार होने की अवस्था या भाव ।

२ प्रतिज्ञा पालन करने की क्रिया या भाव ।

उ०—तो गोपाळदास नवाब नूं कहाई जे बात तौ म्हांसूं ही मालुम हुई छै । नवाब तुम हम सूं सलाह करो तो वफेदारी है । —गौड़ गोपाळदास री वारता

३ स्वामी भक्त ।

उ०—तद गोपाळदास कही वादशाह री चाकरी में वफेदारी काई नही । —गौड़ गोपाळदास री वारता

४ कर्त्तव्य निष्ठा ।

५ सच्चाई ।

रू भे.—बफादारी, बफेदारी ।

वफारौ—देखो 'बफारौ' (रू भे.)

वभीखण—देखो 'विभीषण' (रू भे)

वभीखणौ—देखो 'विभीषण' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—उवै वार वभीखणो चालि आयौ । लखै ते हणुमान पावां लगायौ । —सू. प्र.

वभक—देखो 'भभक' (रू. भे.)

वभकणौ, वभकबौ—देखो 'भभकणौ, भभकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वहक पावक वभक बहुं चक । तद अरक रथ थरक कौतिक, उदधि रण अण थाह । —सू. प्र.

उ० २ जळ बडवानळ जिको जळावै, ऊन्हौ तिको समदचै आवै । वात एम कहता ग्रर वाणी, पहाड फोड़ि वभकियौ पाणी ।

—सू. प्र.

उ०—३ धड फूटत तूटत सीस घार. पडनाळ स्रोण वभकै अपार ।

उ०—४ डील ऊकळै वभकि ऊठै, मरद अवाळा आ गिरै । जाळ झालौ देय बुलावै सुखद छाय सरजित करै । —दसदेव

वभकणहार, हारौ (हारी), वभकणियौ—वि० ।
वभकिओड़ौ, वभकियोड़ौ, वभक्योड़ौ—भू० का० कृ०
वभकीजणौ, वभकीजबौ—भाव वा ।

वभकाणौ, वभकाबौ—देखो 'भभकाणौ, भभकाबौ' ।

वभकाणहार, हारौ (हारी), वभकाणियौ—वि० ।

वभकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वभकाईजणौ, वभकाईजबौ—कर्म वा०

वभकायोड़ौ—देखो 'भभकायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. वभकायोडी)

वभकार—देखो 'भभकार' (रू. भे.)

उ०—तिर आयौ तीरूं, गज हमगीरू, चढै सरीरूं, कर चीरू।
बभकार गहीरूं, आयौ भीरूं, होय कंठीरूं, हवड़तू। —भगतमाळ

बभकियोड़ौ—देखो 'भभकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बभकियोड़ी)

बभकौ—देखो 'भभकौ' (रू. भे.)

उ०—ढील ऊकळै बभकौ उठै, मरद अैवांळा आ गिरै। जाळ झालौ देय बुलावै, सुखद छांय सरजित करै॥ —दसदेव

बभक्कणौ, बभक्कबौ—देखो 'भभकणौ, भभकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लोही धखधक्क बभक्कत लाल। पड़ै धर जाणि पतंग पखाल। —सू. प्र.

उ०—२ रोळ गजां गैंबडा बभक्कै घाव चोळ रता। सळाबोळ कीधा आयो बेताळीस कोघ। —हुकमीचद खिड़ियौ

बभक्कणहार, हारौ (हारी), बभक्कणियौ—वि०।
बभक्कियोड़ौ, बभक्कियोड़ौ, बभक्क्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बभक्कीजणौ, बभक्कीजबौ—भाव वा०।

बभक्काणौ, बभक्काबौ—देखो 'भभकाणौ, भभकाबौ (रू. भे.)

बभक्काणहार, हारौ (हारी), बभक्काणियौ—वि०।
बभक्कायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बभक्काईजणौ, बभक्काईजबौ—कर्म वा०।

बभक्कायोड़ौ—देखो 'भभकायोड़ौ (रू. भे.)
(स्त्री. बभकायोड़ी)

बभक्कियोड़ौ—देखो 'भभकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बभक्कियोड़ी)

बभयंद्री—सं. पु. [सं. इन्द्रिय-विभु] इन्द्र। (अ. मा.)

बभाड़—देखो 'विभाड़' (रू. भे.)

उ०—पतसाहां हु अमेल परठीयौ, भरीयौ सुरत अनत बभाड़।
असमर "अमर" तणौ ऊगाडौ, खत्र धारीयां तणौ मौखाड़।
—अमरसिंह रौ गीत

बभाड़णौ, बभाड़बौ—देखो 'विभाड़णौ, विभाड़बौ' (रू. भे.)

बभाड़णहार, हारौ (हारी), बभाड़णियौ—वि०।
बभाड़िओड़ौ, बभाड़ियोड़ौ, बभाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बभाड़ीजणौ, बभाड़ीजबौ—कर्म वा०।

बभाड़ियोड़ौ—देखो 'विभाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बभाड़ियोड़ी)

बभीखण, बभीसण—देखो 'विभीसण' (रू. भे)

उ०—द्रवि बभीखण लंक राज रघुवर आपिया अवधेस। —सू. प्र.

बभुत—१ देखो 'विभुता' (रू. भे.)
२ देखो 'विभूति' (रू. भे.)

बभूत—देखो 'विभूति' (रू. भे.)

उ०—धू परि आड बभूत तिलक धरि। कदळी पत्र दीध राजा करि। —सू. प्र.

बभूतसिद्ध—देखो 'विभूतिसिद्ध' (रू. भे.)

बभूति—देखो 'विभूति' (रू. भे)

बम्भीखण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)

उ०—उरध अबर उद्धरण, वेद ब्रहमा गावाळण। दळ दांणव निरदळण, ग्रब्ब रांमण चौ गाळण। बम्भीखण जण करण, मबळ देता सधारण। नवनाथ निमधियण, त्रिविध लोका ऊपावण।
—ज. खि.

बभ्रु—देखो 'बभ्रु' (रू. भे.)

बभ्रुपिंगळा—स. स्त्री.—शनि। (अ. मा.)

बभ्रुवाहन—देखो 'बभ्रुवाहन (रू. भे.)

बमणौ, बमबौ—क्रि. स. [स. वमनम्] १ कै करना, वमन करना। (उ. र.)
२ थूकना।
३ उडेलना।
४ उगलना, प्रकट करना। (उ. र.)
५ फेंकना।
६ खारिज करना, अस्वीकार करना, त्यागना।

उ०—हिव मिथ्यात्व बमीयउ, मन उपसमियौ अति घणुं। दुरदम दिल दमियउ, समकित रमीयउ गुण थुणुं। —वि. कु.

बमणहार, हारौ (हारी), बमणियौ—वि०।
बमिओड़ौ, बमियोड़ौ, बम्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बमीजणौ, बमीजबौ—कर्म वा०।

बमथु, बमथू—सं. पु. [स. वमथुः] १ हाथी की सूंड का पानी।
२ कै, उलटी।

बमन—स. पु. [स.] १ कै या उलटी करने की अवस्था, क्रिया या भाव।
२ कै, उलटी।
३ थूक।
४ उडेलना क्रिया।
५ उगलना क्रिया।
६ फेंकना क्रिया।
७ त्याग छुटकारा, अस्वीकृति।

बमर—देखो 'विवर' (रू. भे.)

उ०—एक महामोटौ प्रवत छै। तण ऊपरा देवळ छै। नठै बमर छै। सो गुपत गेलौ आंपां रा घर बीच नीसरै छै।
—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

बमियोड़ौ—भू. का. कृ—१ कै किया हुआ, वमन किया हुआ। २ थूका हुआ. ३ उडेला हुआ. ४ उगला हुआ, प्रगट किया हुआ ५ फेंका हुआ। ६ खारिज किया हुआ, अस्वीकार किया हुआ, त्यागा हुआ।

(स्त्री. वमियोड़ी)

बमुख, बमुह - देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—१ धर कारण बेहू आवडै छत्रधर, पाछट खग दाखवीयो पांण। कुंभळमेर न दीधो कूंभै, सेवा बमुख गयो सुरतांण।

—महाराणा कुंभा री गीत

उ०- २ मुजड भडतां वाड भ्रत वेह भडता समर, खत्री भ्रत देख भ्रत बमुह खडता। अगाडी नसुर भइ खडै भ्रम आवीया, पछाडी ऊपरै भार पडता।

—पहाडखा आढो

बमेक—देखो 'विवेक' (रू भे)

उ० —इसौ बमेक सद्रढ मत जेही। जोगेसुर दुलभ अति जेही।

सू. प्र.

बम्भरो देखो विवर' (अल्पा, रू भे.)

उ० - देवी बम्भरे डूगरे रत्न वन्नै। देवी थूंबडे लीवडे धन्न धन्नै।

— देवि

बयंड -देखो वितड' (रू. भे.) (अ मा, ह. ना. मा)

उ० —१ तूटा गज सिर करै अशाका, दातूमळा बजावै डाका। गत भ्रत करि सिन्धु सुर गावै, बयड मड ची भेर बजावै। —सू. प्र

उ० -२ पटहगति सृडि फेरइ प्रचड क्रिय दिसा बोम नावइ बयड पटहमती छाया पवनरेह, पाहाड़ जाणि हालइ पगेह।

— रा. ज सी

उ०—३ निपट खळा ची नार वयड कहै नित नाह नै, बयड खळ भाड तो देख हयवाह नै। रोम इळ छोड जावै अगम राह नै, समर मत छेडजै कावर "रणमाह" नै।

—रणसिंह सीसोदिया री गीत

२ देखो 'वडो' (मह, रू भे)

बयंडकनी—वि. स्त्री [स वड+कर्णिक] कटे कान वाली।

बयडचर—स. पु. [स विनड+चर] अनलपक्षी।

उ०—बयडा घडा आडा-खडा बाढतै, गाढमल जाजमा धकै गाहै। मझी समर वीर नारद अछर माल्हिया, माल्हिया बयडचर समर माहै।

—राव बुधसिंह हाडा री गीत

बयडमुख—देखो विनडमुख' (रू भे)

बयत—देखो 'व्यत' (रू भे) (ना. मा)

बय—स. स्त्री. [स.] १ बीता हुआ जीवन-काल, उम्र, अवस्था।

(अ. मा.)

उ०—१ अग सो लियौ वनिक उणहारै। सोळ वरस बय सोळ सिंगारै।

—सू. प्र.

उ०—२ बय किसोर ऊतरै, जोर जोबन परगट्टै। प्रणमायौ अब मैं ति किरि रतनाकर तट्टै।

—रा. रू.

२ जवानी, युवावस्था।

३ समय, काळ। (ह ना मा) (अनेका.)

उ०—पलटै बय पलटै प्रकत, रितु दिन पलटै रेंण। पलटै नही "प्रतापसी," विछुटै जे मुख वेंण।

—जैतदान बारहठ

४ क्रम। (अनेका)

५ विस्तार। (,,)

६ बल, शक्ति। (,,)

७ पक्षी, विहग (,,)

[स वच्] ८ वचन, वाणी, बोल।

उ०—१ झुक वहणौ नह जाणियौ, दोयण बय मुख दब्ब। "पातल" हूंदा उरध पग, सघा अनम सरब्ब।

—जैतदान बारहठ

उ०—२ जाणमनी बय ससौ राजिद, तात कहूं विध तोनूं। स्रीपत सेस उचारण सता, देह धरी नर दोनूं।

—र. रू.

९ स्वर, आवाज।

उ०—इह्म केळि टाळय, उपति बंद्रबालयं। बहत दुदभ बय जपत देव जै जय।

—सू. प्र.

१० छप्पय छंद का एक भेद जिसमे, ४८ गुरु व ५६ लघु कुल १५२ मात्राएँ होती हैं।

उ०—गुर अडचासा गाइजै, लघु कर छप्पन लेख। बय छपय वाखाणीयै, सेसो कहै विसेख।

—पिंगळ सिरोमणि

११—जुलाहा।

१२ वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

वि [स वयस्य] समान।

उ०—बाबर बीवरिया आडणिये आडै, डाबर नयणा री टाबर बय डाडै।

—ऊ. का.

रू भे—बय, वत्र, वद्र।

बयअभीत—स पु [स अभीत-वय] युधिष्ठिर। (अ. मा)

बयकुंठ— देखो 'वैकुंठ' (रू. भे)

बयगरण, बयगरणौ—देखो व्ययकरणिक' (रू. भे) (उ. र.)

उ० मत्रि महामत्रि राणा लीगरणा बयगरणा रायगरणा धरमाधिगरणा देव गरणा नायक दडनायक अग लेखक भाडागारिक।

—व. स.

बयगरणी—देखो व्ययकरणिक' (रू. भे.)

उ०—क्षण एक नाइ बयगरणी, क्षण एक नाइ राजगरणि, क्षण

एक जाइ हस्ति सालां, क्षण एक जाइ आयुध सालां, क्षण एक जाइ बाहरिण, क्षण एक जाइ राजकुलि । —व. स.

ठणौ, बयठबौ—देखो 'बैठणौ, बैठबौ' (रू. भे.)

उ०—सेज रमतां मारुवी, खिण मेल्हणी मजाइ । जांणिक विकसी केतकी, भमर बयठुउ आई । —ढो. मा.

बयठियोड़ौ—देखो 'बैठियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बयठियोड़ी)

बयण—देखो 'वचन' (रू. भे)

उ०—१ भूर लियो श्रौ चौतरफ, केवौ बयण कहंत । वाघ केम छिपिया बचै, रुपियां धरम रहंत । —बा. दा.

उ०—२ गाठि रौ कोइ न लगं गरथ, सिगला हुइ जिण थी सयण । धरम नै करम सहु मे धुरा, बडी वस्तु मीठौ बयण । —ध. व. ग्र.

उ०—३ बयणां गाढा वडचढ़ै, मूठी गाढ़ा खग्ग । हजरती दरबारमे, विरताबीये बग्ग । —गु रू. ब.,

बयणड़ौ—देखो 'वचन' (अल्पा., रू. भे)

उ०—बलिहारी गुरु बयणड़ै, बलिहारी गुरुमुख चंद रै । बलिहारी गुरु नयणडै, पेखहता परमाणंद रे । —स. कु.

बयणबूठ-वि —अपने वचनों पर दृढ रहने वाला ।

उ०—सांम धरम रत्ता पण साचै । बयणबूठ मुख झूठ न वाचै । —रा. रू.

बयणपुन्न-स. पु. [सं वचन+पुण्य] मुख से शुभ वचन बोलने पर होने वाला पुण्य । (जैन)

बयणसगाई-सं. स्त्री.—डिंगल काव्य का एक शब्दालंकार विशेष जिसमे, किसी छन्द के प्रथम चरण के प्रथम शब्द के आदि मे जो वर्ण आता है वही वर्ण उस चरण के अंतिम शब्द के आदि में आता है ।

उ०—बयणसगाई वेस, मिल्यां सांच दोखण मिटै । किणयक सर्में कवेस, थपियौ सगपण ऊथपै । —र. रू.

वि. वि.—वयण सगाई के प्रमुख तीन भेद माने गये है:—

(१) शब्द-वर्ण वयण सगाई, (२) वर्ण संख्यक वयण सगाई व (३) मित्र वर्ण बयण सगाई ।

(१) शब्द-वर्ण बयणसगाई—के र. ज. प्र. के अनुसार व र. रू. के अनुसार तीन भेद हैं ।

"वयण सगाई तीन विधि, आद मध्य तुक अंत । —र. ज. प्र

(१) आदिमेल—इसमे छन्द चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के आदि मे होती है ।

(२) मध्यमेल—इसमे छन्द चरण के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के मध्य मे होती है ।

(३) अन्तमेल—इसमे छद चरण के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के अंत में होती है। इनके अतिरिक्त इसकी तीन श्रेणियां भी मानी गई है:—

(१) अत्युत्तम आदि मेल ।

(२) अत्युत्तम मध्य मेल ।

(३) तथा अत्युत्तम अंत मेल ।

(२) वर्ण-संख्यक बयण सगाई—इसमे छद चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के नियम से न होकर चरणान्त वर्ण संख्या के हिसाब से होती है । इसके निम्नलिखित पांच भेद माने गये है:—१ अत्युत्तम २ उत्तम ३ मध्यम ४ अधम ५ अधमाधम ।

(३) मित्र-वर्ण बयण सगाई अथवा अक्षरोट:—इसके अन्तर्गत छन्द चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द में होने के स्थान पर उस वर्ण के मित्र वर्ण की आवृत्ति हो जाती है । मित्र वर्ण निम्न लिखित हैं:—

(१) अधिक मित्र—अ, इ, उ, ए, य, व, ।

(२) सम मित्र—ज-झ, ब-व, प-फ, न-ण, ग-घ च-छ ।

(३) न्यून मित्र—त-ट, थ-ठ (ठ), द-ड ।

डिंगल काव्य मे वयण सगाई का प्रयोग व्यापक रूप से हुआ है । परन्तु इसका निर्वाह अनिवार्य हो ऐसा नही है । इसका निर्वाह न होने से किसी छन्द में दोष आ जाता हो ऐसी बात नही है । गीतो मे इसका प्रयोग अनिवार्य माना गया है । १४ वीं शताब्दी की रचना मे इसका प्रयोग देखा जाता है । समवत इसकी शुरुआत इससे पूर्व में हो चुकी थी ।

रू. भे.—बयणसगाई, बैणसगाई, वैणसगाई

बयत—१ देखो 'वियत' (रू. भे)

२ देखो 'वैद' रू भे.)

उ०—विप्र सब करि जिम ग्रंथ बतावै । श्रोखद ज तू कहै सुजि आवै । सुणै राज दत हुकम सनेही । अरज बयत कीधी फिर एही । —सू. प्र.

बयबधणा-स. स्त्री.—चौहान वश की एक शाखा ।

बरकरार—देखो 'बरकरार' (रू. भे)

उ०—राठोड़ा सौह वधी, वधी सोह हिंदुसथाना । बरंकरार नवकोट, हसम राखिया खजाना । —गु. रू. ब.

बयर—देखो 'वैर' (रू भे.)

उ०—१ म्हाराजा अहा ससत्र भुज मुदारा, सो-गुणै जोस पडां कथन सुधारा । आज री वार लेसी बयर ऊधारा । देखजै आव कण सर धरै दुवारा । —पदमसिंह आढौ

उ०—अनि करै कुण इण भाति, खित वयर काढण खाति। इक वयर धरा अबीह, सुजि वस दूजी 'सीह'। —सू. प्र.

वयरणीयौ-[सं. पु.] शत्रु, वैरी।

उ०—वयरणीयौ रहु वेगली, मुझ-सिउ म करु बात। आठ दीवाली आज थी, भमु लगी भव सात। —म. कां. प्र.

वयराग—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—१ धर ध्यान सुजाय लिये विप मे। वयराग सुमाग हुवौ विप में। —पा. प्र.

उ०—२ वयराग इ मन वालियउ रे, सयम पालइ सुद्ध रे। —स. कु

वयरागर—१ देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

उ०—१ किहां करीतरु, किहा गुजाफल, किहा लोहागर, किहां वयरागर, किहा गुजाफल, किहा मुक्ताफल। —व. स.

उ०—२ उत्तम ओसधि, सप्त धातुनी खाणि। परवत गधक हीगली, वयरागर वखाणि। —मा. का. प्र

२ देखो देखो 'वइरागर' (रू. भे.)

उ०—१ वाममऊग्रा मुगवना मागलियां वयरागरां हीरागरा पुस्पागर जादर मेघाडवर नेत्रपट्ट धोतपट्ट राजपट्ट। —व. स.

वयरागरी—१ देखो 'वैरागर' (रू. भे)

उ०—गजराज वध्यावलि, मोती जयकुंजरि, पदम पदमाकरि, तेजस्विता दिवाकरि, हीरा वयरागरि, प्रधान, स्वरणमदिरि, विवेक गुरुअरि, विधि विवेकिया तणइ घरि। —व स.

२ देखो 'वइरागर' (रू. भे)

वयरागियौ—१ देखो 'वैरागियौ' (रू. भे)

उ०—देम्य धन जामात नै, कन्या परणावेह। व्रत लेम्यै वयरागियौ मन धरि परम सनेह। —वि. कु

२ देखो 'वैराग्य' (अल्पा, रू. भे.)

वयरागी—देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

उ०—साहेली हे वयरागी गुरु वालहा, साहेली हे वाचइ सूत्र सिद्धात। —स कु

वयराड़ी—स स्त्री —एक प्रकार की रागिनी विशेष।

उ०—गावत वयराड़ी रागइ, अलापत स्त्रीसव आगइ। —स. कु.

वेराजी—देखो 'वेराजी' (रू. भे.)

वयराजीउं—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—नागवटा सारनाला खासटा अगिहिल कबीच संजरांमा मदवी फूलपगरीया सारीपी तिलवास गरब्भसूत्र राजिउ वयराजीउं महिद उरउं। —व स.

वयराट—१ देखो 'वैराट' (रू. भे.)

२ देखो 'विराट' (रू. भे.)

उ०—वयराट रांणी मनि देवि आंणी, गई तेह नइं लेविणु मच पांणि। —सालिसूरि

वयरि, वयरी—देखो 'वैरी' (रू. भे.)

उ०—१ राउ दाभणा ना वयरि मारइ। —उ. र.

उ०—२ वयरि वारिउ ऊगतां, वली वधारि वयर। गोसि रच राखी रहिउ, आदित अे कुण पईरि। मा. कां प्र.

उ०—३ जिण दीहे पावस झरइ, समनेहां सुख होइ। तिणि दिन वयरी वल्लहा, सेव न मुक्कइ कोइ। —ढो. मा.

उ०—४ हूं क्षणि क्षणि खीणी थइ, नाघी वयरणि श्वास। वाधइ वली वक्षःस्थली, निसि नइ उर-निसास। —मा. कां. प्र.

उ० - ५ मोटउं कूडउं मागसिरि, वली विचारी जोइ। दिन थोडिउ रयणी घणी, वयरणी कांइ विगोइ। —मा. कां. प्र.

(स्त्री. वयरण, वयरणि, वयरणी)

वयल—देखो 'वयळ' (रू भे.) (अ. मा.)

उ०—१ घण खळ असि झोकै खग धाऊ। वयळ-मडळ नट कुडळ बणाऊ। —सू. प्र.

उ०—२ दूझड़ा रायपाळां दुझळ, वयल धरां सिर दूंद वण। ऐ कहै करौ खग झट इसी, रवि वाखाणै हाथ रिण। —सू. प्र.

वयसधि—सं. पु. [स] दो अवस्थाओ के बीच की स्थिति।

उ०—सु इह तौ न बाळक अवस्था माहे सूऐ छै। नै यौवण आयै जागै छै। इहि विधि की सधि सु वयसधि कहावै। —वेलि टी.

वयस—सं. पु. [स वयस्] (स्त्री वयसा) १ उम्र।

२ जवानी।

[स वयस्य] ३ साथी मित्र।

४ सहयोगी।

५ हम-उम्र।

रू भे —वयस, वेस वैस वयस्य, वेस, वै'।

वयसाख—देखो 'वैसाख' (रू. भे)

वयसाही—देखो 'वैसाखी' (रू. भे)

उ०—दीवइ दीवाली, काली कात्तिकी, वरस वयसाही नितू वधांमणउं, वेटि पेटि आग्रहणी। —व. स.

वयस्थविर—वि आठ वर्ष की अवस्था वाला। (जैन)

वयस्य—देखो 'वयस'

वयाणौ—स. पु. [देशज] विवाह मे गीत गाने के लिये आई स्त्रियों में बाटी जाने वाली मिठाई।

बयार—देखो 'बयार' (रू. भे.)

उ०—देखौ बनराईया फूलन लागी मा, भ्रागम बमत बहार कै। भ्रौर की भ्रौर भई छिब वन की, कोउक झोलै बयार कै।

—रसीलौ राज

बयाळ—देखो 'ब्याळ' (रू भे.)

बयोधर-वि [स. वयोधस्.] (स्त्री. वयोधरी) युवा, तरुण।

उ०-निसास-रोज भ्रांनती उरोज धारती नही। क्रसोदरीय कामिनी बिभा बयोधरी नही। —ऊ का.

बयोम—देखो 'ब्योम' (रू. भे.)

उ०—साहरा समद ऊछळिय सारि, साइयर कउरा सकइ सहारि। रहचडियउ भ्रावइ रीस रोम, वाजा सबहि फाटइ बयोम।

—रा ज. सी

बयोवरध, बयोवद्ध बयोवध, बयोब्रिध-वि. [स. वयोवृद्ध] जो भ्रवस्था, भ्रनुभव भ्रौर ज्ञान मे बडा हो, वृद्धपुरुष, बूढा।

बरंग-स. पु. [स. बर+भ्रगम्] १ शिर, मस्तक।

२ उत्तम शरीरांग।

३ सुडौल शरीर।

४ देखो 'वराग' (रू. भे.)

[सं. बर+भ्रग:] ५ हस्ती, हाथी।

६ देखो बरग' (रू भे.)

उ०—किता वय बरंगा उडै कट किरमरा, सघर धर लडै उनबग बोलै सरा। चापडै मचै रिरण निसाचर बनचरा, वीर कातिक रचै जाण बादीगरा। —र. रू.

उ०—घंघमै भ्रारीठ घटा भ्रावटै मथारा घाग, उडै फाड कूभाथळा बरगा उरग। राकसा बिभाडै पाडै भ्राखाडै बजाडै रूक, 'नाथ' री सूरा रमाडै ऊपाडै निहग। —राव सत्रसाल री गीत

बरंगन—देखो 'वारगना' (रू भे.)

उ०—बरगन कंठ धरै बरमाळ, रूका उडी सीस चढै रुडमाळ। भ्रपच्छर सूर जोडै हिज भ्राय, जई रथ बैठि वमै स्रगि जाय।

— सू प्र

बरगी-वि.—वरग का, वरग सम्बन्धी।

रू. भे.—बरगी।

बरंच-भ्रव्य. [सं.] १ भ्रपितु, बल्कि।

२ परतु, किन्तु, लेकिन।

३ देखो 'विरचि' (रू. भे.)

बरड-सं. पु. [स.] १ समूह, झुण्ड।

२ समुदाय।

३ घास का ढेर, गट्ठर।

४ चेहरे पर होने वाले मुहासे।

५ जेब, खीसा।

६ बसी की डोर।

[स. वितड] ७ फीलखाने मे दो लडाके हाथियो के बीच बनाई जाने वाली दीवार जो इनको लडने से रोके।

८ हाथी, गज।

९ देखो 'वरडौ' (मह., रू. भे.)

रू. भे.—वरडक।

बरंडक-स. पु. [स.] १ हाथी पर रखी जाने वाली भ्रबाडी, होदा।

२ मिट्टी का टीला।

३ दीवार।

४ देखो 'वरड' (रू. भे.)

बरंडा-स स्त्री [स] छुरी, खजर।

२ सारिका पक्षी।

३ लंप की बत्ती।

बरडी—देखो 'भिडी (रू. भे.)

उ०—१ पानि तणौ परिगरु देहरी तरण उमहरु, चउकी चउ खडे झलहलइ, उम्रारे पाणी खलहलइ, पगथिम्रारा सारुन्यारा, बरडी उदार लहरीमाला उच्छलइ, मत्तवारण उपरि पाणी वलइ।

—व. स.

उ०-२ भीवै मन माहै जाण्यौ, बावडी माहे किसूं करै छै। यो जाण बरडी रा लेकडा माहे जोवै। तठै देखे तो भ्रस्त्री छै।

—जखड़ा मुखड़ा भाटी री वात

३ देखो 'भ्राडी' (रू. भे)

बरडो-स पु [स वरट:] भ्रगमदा।

उ०—निवड लोह तणी म खला तोडी, पुतार पाडी, कपाट संपुटु फाडी, पडिहारु गाजी, चरण सबधीया त्रिगडा भाजी, बरडा पाडतउ, भ्राणस मारतउ राउत रसाडतउ। —व. स.

रू भे—बरडौ, बिरडौ।

मह.—वरड।

बर-वि. [स वर] १ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ।

२ उत्तम, बढकर, श्रेष्ठ।

उ०—१ लार्गे बिखमी चालता होजी, वाट भ्रनड बर वीर प्रबल पराक्रमी। —वि. कु.

उ०—२ वामा भ्रग वणी बर सुदरि, कनकलता जाणै कळप्पतरि।

—गु रू. ब.

३ चुनने योग्य, योग्य, लायक।

४ दानी। (५) सुदर। (६) भला।

सं. पु. [सं. वरः] १ पति, भरतार। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ मारू नू आखइ सखी, एह हमारी बुज्झ। माल्हू कुंवर सुहिणइ मिल्यउ, सुदरि सउ वर सुज्झ। —ढो. मा.

उ०—२ बेटी इतरी मोटी हुई नै इण रै वर री खबर ही नही। न जाणां मूवौ किना कठी ही जोगी सन्यासी हुय गयौ। —नैणसी

उ०—३ बच्छे! सासुरा तणी इसी स्थिति जाणवी, सुसरउ उवेखइ, जेठ नीचउ देखइ, वर पुण लडइ, देवर नडइ, जेठाणी कुसइ, देग्ररांणी हसइ, नणद नरनरावइ सासु काम करावइ। —व. स.

२ वधू-प्रार्थी।

३ स्वामी, मालिक।

उ०—वीर विच्छखण क्रीत तणौ वर, ढाहण खाग अरिंदा ढूको। 'नाथ' तणौ 'सुरतेस' नमै नर, चित ठीक नही कुळ रीत न चूकौ। —ठाकर सूरतसिंह चहुवाण रौ गीत

४ दामाद, जमाता।

५ देवी-देवताओ से अभीष्ट वस्तु पाने के लिये की जाने वाली प्रार्थना, याचना, विनय, उपासना।

६ उक्त प्रकार से प्राप्त होने वाली सतुष्टि।

७ देवी-देवताओ से प्राप्त होने वाला आशीर्वाद, वरदान, अनुग्रह, सिद्धि।

उ०—१ मारग माहै पाणी नही। कटक मरण लागो। तद जती नं कह्यौ-पाणी पैदा कर। सु जती नू खेतपाळ रौ वर हुंतौ, रोही माहै जाइ खेत्रपाळ जी री आराधना करी। —नैणसी

उ०—२ इक धारण तो जिम चित आवै। पूजै भेख जिको वर पावै। —सू प्र

८ अभिलाषा, इच्छा कामना।

९ भेंट, पुरस्कार।

१० चुनाव य पसद करने की क्रिया या भाव।

११ चयन, चुनाव।

१२ वरण करने, अपनाने, की क्रिया या भाव।

१३ दहेज।

१४ लपट व्यक्ति।

१५ गोरैया पक्षी।

[स. वरं.] १६ केसर। (डिं. को.)

१७ हल्दी।

१८ दाल चीनी।

१९ अदरक।

२० सुगध तृण।

२१ मौलसिरी।

२२ सेंधा नमक।

२३ मधु मक्खी का छाता।

२४ गुग्गुल।

२५ श्रीकृष्ण।

२६ दो लघु के गागण के भेद का नाम। (डिं. को.)

[देशज] २७ रहट के माल की एक लड़ी।

प्रत्य. [फा.] १ सज्ञा शब्दों के आगे लगने वाला एक प्रत्यय।

ज्यू —ताकतवर।

अव्य.—२ अगर, यदि, और।

रू भे.—बर, वरु।

वरउमिया—स पु [स उमा-वर] महादेव, शिव।

वरकंठ—स पु [स] सुग्रीव।

उ०—**वरकंठ** वामा धरी धांमा किता कांमा बद किया। भय मेट भारी धनुसधारी अरज सारी येह। —र. रू.

वरक—स. पु. [फा. वरकः] १ सोने या चांदी को कूटकर बनाया हुआ बहुत पतला झिल्ली नुमा पत्तर जो मिठाइयो पर लगा कर खाया जाता है तथा औषधियो मे काम आता है।

२ पत्र, पृष्ठ, पन्ना।

३ पत्ता, दल।

४ टिकट, प्रयोग-पत्र।

[स. वरक] ५ इच्छा, चाह, वर।

६ चुग्गा।

७ जगल मे उत्पन्न होने वाला मूग, बन-मूंग।

८ तोलिया, दस्तर (डस्टर), झाडन।

९ कपडा, वस्त्र।

१० नाव के ऊपर की छाजन।

११ देखो 'विरक' (रू. भे.)

रू. भे.—वरक, बरख, बरग, वरग।

वरकरार—देखो 'बरकरार' (रू. भे)

उ०—साकर प्रथीराजोत। समत १६७२ अरटियौ गाव २ सूं **वरकरार**। समत १६८४ पूनासर। —नैणसी

वरकिंगकमेटी—स. स्त्री. [अ] कार्य-कारिणी-समिति।

वरक्ख—देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ०—ओथै तेरस ऊजळी, माह उजाळै पक्ख। 'ईंदावत' ईंजत सटै, गो बासटै वरक्ख। —रा. रू.

वरक्रतु, वरक्रत, वरक्रतु, वरक्रित—स. पु. [स. वरक्रतु:] इन्द्र।

(नां. मा., ह. नां. मा.)

वरख—देखो 'वरस' (रू. भे.)

वरखणो, वरखबो—देखो 'वरसणो, वरसबो' (रू. भे.)

उ०—१ वरस बि च्यारि न मेह **वरखि** । पडे घर काळ लगी लगि पखि । —रामरासो

उ०—२ बेऊं चतुर सुजाण, पेम-रंग-रस पिया । वरखा-रुति घण वरख जाणि कु हरखिया । —ढो. मा

वरखणहार, हारो (हारी), वरखणियो—वि० ।

वरखिग्रोड़ो, वरखियोड़ो, वरख्योड़ो,—भू० का० कृ० ।

वरखीजणो, वरखीजबो—भाव वा० ।

वरखम—स पु. [स वर्ष्मन्] १ शरीर, देह । (ग्र. मा.)

२ ऊंचाई, माप ।

वरखा—देखो 'वरमा' (रू. भे.)

उ०—१ माळवणी ढोलउ कहइ, हिव म्हां मीख करेह । ऊन्हाळउ **वरखा** विन्हे, रहिया तुझ्झ सनेह । —ढो. मा

उ०—२ सुर तैंतीसूं साथ लै, सुरपत साम्हो ग्राय । पोहपन की **वरखा** करी, लीधो ग्राह वधाय । —गजउद्धार

उ० ३ इसो समइयो वण रह्यो छै, **वरखा** मंडनै रही छै । विजळी भिळमिळ करने रही छै, बादळा भड लायो छै । —रा सा स.

वरखामापक—स. पु. [सं. वर्षा+राज. मापक] वर्षा मापने का एक यन्त्र, रेनगेज ।

वरखारत, वरखारित, वरखारिति, वरखारितु वरखारुत वरखारुति—देखो 'वरमारितु' (रू. भे)

उ०—१ **वरखारितु** लागि विरहणी जागी ग्राभा भरहरै वीजा ग्रावास करै । —रा सा स.

उ०—२ बेऊं चतुर सुजाण पेम-रग-रस पिया । **वरखारुति** घण वरख जाणि कु हरखिया । —ढो. मा

वरखियोड़ो—देखो 'वरसियोडो' (रू भे)

(स्त्री वरखियोडी)

वरख्यात—स. पु. सरोवर, तालाब । (ह नां मा.)

रू भे.—**वरख्यात**

वरग—सं पु. [सं. वर्ग] १ श्रेणी, जमात, ।

२ जति, समुदाय, समाज ।

३ एक ही समान धर्म वाली वस्तुग्रो या प्राणियो का समूह, झुड, दल, टोली ।

उ०—१ इसे हीज तत मे कुंवरसी चढियो सो जाय साढा रा **वरग** सरब घेरिया । रैबारी बीस पच्चीस हाथ ग्राया सो मारिया । —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ म्हारा पाबूजी कह्यो-बाई! हूं तोनूं दोदं सूमरै री सांढां रा **वरग** ग्राण देईम । —नैणसी

उ०—३ सो इहा रै गाय भैस साढा रा **वरग** घणा । सो सांढा रै लारै रैबारी रहै । सो ग्रति ग्रटावरा रहै, ग्रपजोरा हालै । कही नू खातर मे न ग्राणै । सो जिके ही गात्र जाय **वरगा** रो पीहो करै, तिके गाव च्यार पुहर री तिसवारी पडै ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

४ किसी उद्देश्य विशेष के लिये बना हुग्रा कुछ व्यक्तियो का दल, पक्ष ।

५ निश्चित ग्रक्षर समूह मे किसी एक वर्ण मे उच्चरित प्राणी का नाम जिसकी मान्यता पशु, पक्षी के नाम मे की जाती है ।

(फलित ज्योतिष)

७ विभाग, भाग ।

८ न्याय शास्त्र के नो या सप्त पदार्थ विभाग ।

६ व्याकरण मे एक स्थान मे उच्चारित होने वाले स्पर्श व्यजन, वर्णों का समूह ।

१० ग्रथ विभाग, परिच्छेद, प्रकरण, ग्रध्याय ।

११ दो समान ग्रको या राशियों का गुणनफल ।

१२ वह क्षेत्र जिसकी लंबाई चौडाई समान हो, समकोण ।

१३ शक्ति, ताकत ।

१४ शत्रु दल ।

१५ पत्र, पत्ता ।

१६ पाच की सख्या । * (डि. को)

वि.—पाच ।

रू भे.—वग वग्ग, वरग, वाग, वग वग्ग, वरग्ग, वाग, ।

वरगडो, वरगडु—स. पु —१ सिह । (सभा)

२ देखो 'बरगडो' (रू. भे.)

वरगफळ—स· पु [स वर्गफल] किसी ग्रक को उसी से गुणा करने पर ग्राने वाला गुणनफल ।

वरगमूळ—स पु. [स वर्गमूल] किसी वर्गाक का वह ग्रक जिसे यदि उसी से गुणन करें तो गुणन का वही वर्गांक हो ।

ज्यू०—४×४=१६ । १६ का वर्ग मूल ४ है ।

वि वि —ये वास्तविक ग्रौर काल्पनिक दोनो प्रकार के होते हैं ।

वरगळणो, वरगळबो—क्रि ग्र.—१ गुमराह, होना, भ्रम मे पड़ना ।

२ उत्तेजित होना, भडकना ।

वरगळणहार, हारो (हारी), वरगळणियो—वि० ।

वरगळिग्रोडो, वरगळियोड़ो, वरगळयोड़ो—भू० का० कृ० ।

वरगळीजणो, वरगळीजबो—भाव वा० ।

वरगळणो, वरगळबो—रू० भे० ।

वरगळाणौ, वरगळाबौ—क्रि. स. [राज. 'वरगळणौ' क्रि. का प्रे. रू.]
१ गुमराह करना, भ्रम में डालना ।
२ उत्तेजित करना, भड़काना ।
वरगळाणहार, हारौ (हारी), वरगळाणियौ—वि० ।
वरगळायोड़ौ भू० का० कृ० ।
वरगळाईजणौ, वरगळाईजबौ—कर्म वा० ।
वरगळाणौ, वरगळाबौ—रू० भे० ।

वरगळायोड़ौ—भू. का. कृ. १ गुमराह किया हुआ, भ्रम मे डाला हुआ.
२ उत्तेजित किया हुआ, भड़काया हुआ ।
(स्त्री. वरगळायोडी)

वरगळियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ गुमराह हुवा हुआ, भ्रम मे पडा हुआ.
२ उत्तेजित हुवा हुआ, भड़का हुआ ।
(स्त्री वरगळियोडी)

वरगिरजा—स. पु. [स. गिरिजा-वरः] महादेव, शिव ।

वरगोत्तम—स. पु. [सं वर्गोत्तम] राशियो के वे श्रेष्ठ अश जिनमे स्थित ग्रह शुभ होते हैं। (फलित ज्योतिष)

वरग—देखो 'वरग' (रू भे.)
उ०—वदे असुर गढ न दू वरग्गं । कूंची दे आपरा करग्गा ।
—सू. प्र

वरघू—स. पु. देखो 'वरघू' (रू भे.)
उ०—सबद उग्र करनाळ सवाई । गुर वरघू तुरही सहनाई ।
—रा. रू.

वरड़णौ, वरड़बौ—देखो 'वरड़णौ, वरडबौ' (रू भे.)
उ०—अवपत "भीम" कुमंत्री आदै, वरड़ै तीजी वेळा । 'माधव' जिसा खोजाया माफी, मडीया ऊथळमेळा । —नवलजी लाळस
वरड़णहार, हारौ (हारी), वरड़णियौ—वि० ।
वरड़िओड़ौ, वरिड़ियोड़ौ, वरड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वरड़ीजणौ, वरड़ीजबौ—भाव वा० ।

वरड़ियोड़ौ—देखो 'वरडियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. वरडियोडी)

वरड़ी—स. स्त्री. [देशज] १ लाल रग की मिट्टी विशेष जिस पर पानी बड़ा स्वच्छ दिखाई देता है ।
उ०—तिको तळाव किण भांत रो छै। राती वरडी रो। पांडरो नीर। पवन रो मारियो फीण ऊछटतो थको भोला खाय रह्यो छै।
—रा. सा. स.
२ देखो 'वरडी' (रू. भे.)
उ०—दोय तो म्हानै छाळी दीज्यो दोय दीज्यो लरडी। काळी भूरी दोनू दीज्यो एक बणाला वरड़ी। —लो. गी.

वरच—देखो 'वरचस' (रू. भे.)

वरचणौ, वरचबौ—देखो विरचणौ, विरचबौ' (रू. भे.)
उ०—संवत चौद पंच्यासीइ ए, वरचीउ चरी रसालू ए, अचल वधामणु ए। —हीराणद सूरि
वरचणहार, हारौ (हारी), वरचणियौ—वि० ।
वरचिओड़ौ, वरचियोड़ौ, वरच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वरचीजणौ, वरचीजबौ—कर्म वा० ।

वरचस—सं. पु. [सं. वर्चस्] १ प्रकाश, उजाला, तेज ।
(ना. मा., ह. ना. मा.)
२ कान्ती, दीप्ति ।
३ रूप, शक्ल ।
४ शक्ति, पराक्रम ।
५ विष्ठा ।
६ वृक्ष, पेड ।
रू भे.—वरचस, वरच ।

वरचियोड़ौ—देखो 'विरचियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. वरचियोडी)

वरछणौ, वरछबौ—क्रि. स. [सं. व्रश्चम्] १ घाव करना, काटना ।
उ०—धौम पिंड वरछियो, वेध मातो धरा, खार खुद रांम रिण हाथ लागा खरा । पाण तज मेलिया मांण हुय पाधरा, मिळ दहवाट भ्या थाट मडोवरा । —द. दा.
२ चीरना, फाड़ना ।
३ काट कर अलग अलग करना ।
४ देखो 'विरचणौ, विरचबौ' (रू भे.)
वरछणहार, हारौ (हारी), वरछणियौ - वि० ।
वरछिओड़ौ, वरछियोड़ौ, वरछ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वरछीजणौ, वरछीजबौ—कर्म वा० ।

वरछियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ घाव किया हुआ, काटा हुआ । २ चीरा हुआ, फाडा हुआ । ३ अलग-अलग किया हुआ ।
४ देखो 'विरचियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वरछियोडी)

वरजण—देखो 'वरजन' (रू भे.)
उ० - महिपत बूठ मेलियौ, वरजण कज असवार । कूक लोक जादा करै, हमे मैं खादी हार । —पा. प्र.

वरजणीक—देखो 'वरजनीक' (रू. भे.)

वरजणौ, वरजबौ—देखो 'वरजणौ, वरजबौ' (रू. भे.)
उ०—१ खैर नांखै चुगल जोदपुर खजानै, दुजल हुव जको नै वरज

दीजै। क्रीत रा मंडप री नीव गाढी करण, किसन रा पोतरा मदत्त कीजै। —कविराजा बांकीदास

उ०—२ ओतिस सगुन बिहू विध जाणै। पोह ज्या बरजं लेख प्रमाणै। —सू. प्र.

उ०—३ दिन रयण सुख विधि बरजि, हिम दुख गरजि करण रुख गोहुए। —रा. रू.

उ०—४ एह विध्याता नीलज निसि दमयती नि सरजी। प्राकृत नारी नीपाईनि सृस्टि जेणि नवि बरजी। —नलाख्यान

बरजणहार, हारौ (हारी), बरजणियौ—वि०।

बरजिग्रोड़ौ, बरजियोड़ौ, बरज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बरजीजणौ, बरजीजबौ - कर्म वा०।

बरजत—वि. [स. वर्ज्य] जो निषिद्ध हो, निषेध करने योग्य।

स. पु.—पाप। (ग्र. मा.)

बरजन—स. स्त्री [स. वर्जनम्] १ निषेध करने की क्रिया या भाव।

२ मनाही मुमानियत, निषेध, रोक।

३ व्यवधान, बाधा, अवरोध।

४ परित्याग, त्याग।

५ वैराग्य, विरक्ति।

रू. भे.—वरजण।

बरजनीक—देखो 'बरजनीक' (रू. भे.)

बरजाग, बरजागी—देखो 'बजराफ' (रू. भे)

उ०—१ खाग आग बरजाग, प्रिसण बाळै परजाळै। खत्रवाट कुळवाट, पाट परिया उजवाळै। —गु. रू. ब.

उ०—२ जोऐ जुध रीस चढी बरजागि। उठी ग्रत सींचिया जागिक आगि। —सू. प्र

बरजाणौ, बरजाबौ—देखो 'बरजाणौ, बरजाबौ' (रू भे)

बरजाणहार, हारौ (हारी), बरजाणियौ - वि०।

बरजायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बरजाईजणौ, बरजाईजबौ - कर्म वा०।

बरजायोड़ौ—देखो 'बरजायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बरजायोडी)

बरजियोड़ौ—देखो 'बरजियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बरजियोडी)

बरजिस—स स्त्री. [फा. वर्जिश] १ ऐसा कार्य जिसको करने मे शारीरिक श्रम अधिक लगता हो।

२ कसरत, व्यायाम।

३ अभ्यास, प्रयास।

बरजोर—देखो 'बरजोर' (रू. भे.)

उ०—'अजमाल' सुगिर्जे एह, कर जोड एम कहेह। इह्य साह की हुइ और, जग किया हम बरजोर। —सू. प्र.

बरजोरा—स. स्त्री. [देश] राठौड वश की एक उपशाखा।

बरजोरी—देखो 'बरजोरी' (रू भे)

बरज्या—देखो 'व्रज्या' (रू. भे.)

बरट—स. पु [स. वरट] (स्त्री. वरटा) १ हस।

२ बरॅया।

३ विर्रा अनाज।

४ कुन्द का फल।

बरटापति—स पु. [स. वरटा+पति] हस।

उ०—बरटापति सुदर ना दीठू कनक यसू सरीर। एक चरण पाल्समाहि (ली) धौ, बीजु अवनी माडी। —नळाख्यान

बरडौ, बरढौ—देखो 'वढौ' (रू. भे)

बरण—स पु [स वरण, वरणा] १ इच्छा और रुचि के अनुसार किया जाने वाला चयन।

२ कन्या के योग्य वर के चुनाव की क्रिया।

उ०—मिगगारी सन्नाह स, विस कामणि वरियाम। वरि आई हाला वरण, करण, महा जुध काम। —हा. झा.

३ उक्त चुनाव के पश्चात कन्या द्वारा वर को वरमाला डालने की क्रिया, अगीकार, विवाह, शादी।

उ०—नरग रथ थिकत घण बहे खागा अतर, अडर कर कर मरै वरण अवरी। पई घड गजारण कहै इम पचागण, गजारण कटै रिण सोभ गवरी। —पीथौ सांदू

४ आदर, सत्कार।

५ यज्ञ आदि के लिये उपयुक्त ब्राह्मण का चुनाव व उसका आदर-सत्कार।

६ उक्त ब्राह्मण को दिया जाने वाला दान।

७ पूजन, अर्चना, धर्मानुष्ठान।

८ याचना।

९ ढकने या लपेटने की क्रिया भाव।

१० आवरण, आच्छादन।

११ पर्दा, चादर।

१२ शहरपनाह की दीवार, प्राकार।

१३ सेना।

१४ पूल, सेतु।

१५ आर्या गीति या स्कंधाण (स्कधक) का भेद विशेष।

१६ गाने मे स्वर विस्तार की क्रिया—इसके चार भेद स्थायी,

आरोही, अवरोही, व संचारी ।
१७ पंवार वंश की एक शाखा ।
[सं. अवरण-आगुरे अलोप] १८ ऊंट ।
[सं. वर्णिणी] १९ स्त्री, पत्नी ।
[सं वर्ण]—२० रगरूप ।

उ०—१ कथडा झालि किरमाळ कैडी करा । सार झड वरण सो सोक सैला सग । —हा. झा.

उ०—२ भुज विसाळ लकाळ, वरण झाळाहळ सुंदर । भरि मातै भाद्रवै, जाणि ऊगो भासकर। —गु रू. बं.

२१ अक्षर, स्वर ।

उ०—इक कहत गिरवर एह, दरसंत सब लघु देह । सब वरण वाण सरीर, इम कहत दुरत अधीर । —रा रू.

२२ अकारादि शब्दो के चिन्ह या सकेत।
२३ प्रार्थना, स्तुति।
२४ गुण।
२५ आर्य संस्कृति के अनुसार मनुष्य समाज के चार विभाग । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।
२६ भेद, किस्म ।
२७ यश, कीर्ति । (अ. मा.)
२८ देखो 'वरुण' (रू भे.) (अ. मा)

उ०—आवेरो "जैसाह" सूरसागर आलम्मै, बरण दिमा वाग सूं, घणी बूंदी वड धम्मै । 'अभा' आदि उमराव, राण वाळा मन रक्खै, वरण इद्र धनवंत, इसो "अगजीत" निरक्खै । —रा रू

२९ देखो 'व्रण' (रू. भे.)
३० देखो 'वरणन' (रू भे.)

उ०—कान सुणण भागवत तणी कथ । वरणव करि अवरण वरण । —ह. ना. मा.

रू. भे.—बरण, बरन, बरन्न, ब्रण, ब्रन, ब्रन्न, वन्न, वग्न, वरन्न,

वरणअढार—देखो 'अढारवर्न्न'

वरणखंडमेरु—सं. पु. [सं. वर्ण-खंडमेरु] छन्द शास्त्र या पिंगल की वह क्रिया जिससे बिना मेरू बनाये वर्ण-वृत्त व मात्राएँ ज्ञात की जा सकती है ।

वरणजथा—सं. स्त्री.—डिंगल गीत रचना का एक नियम विशेष जिसमे गीत के प्रत्येक द्वाले मे नवीन वर्णन किया जाता है ।

वरणज्येस्ठ—स पु. [सं. ज्येष्ठवर्ण] सब वर्णों से बडा, ब्राह्मण वर्ण।

वरणण—देखो 'वरणन' (रू. भे)

उ०—१ वर विचार मनहू कहू, वरणण सुद्ध वणाय । तगसीरी छिम जोतका, 'किसन' कहै कविराय । —र. ज. प्र.

उ०—२ व्हो मिळण सीता परसपर हर, घणा उतसव उमड घर घर। वखत जिण आमोद वरणण, को करै कवराज । —र. रू.

वरणणौ, वरणबौ—क्रि. स [सं वर्णनम्] १ वर्णन करना, (उ. र.)

उ०—१ सबळ करण अगे कुरपत उच्चरणं । कुळ राठोड़ वळे "मोडो" कव वरणं । —पा. प्र.

उ०—२ मांनव मनसा यूं कहै वरणं जरी जराय । रचना कहु (न) विरंच की, उपमा कही न जाय । —गजउद्धार

२ उल्लेख करना।

उ०—सोई ग्रथा थी सुण्यो, जोई वरणिय जाण। सोई जोई धर सुकवि, आदि अंत अहिनाण । —डिं. ना. मा.

३ रचना करना, लिखना।

उ०—गणपति मोहि सुमत्ति दै, सुभ अख्यर ततसार। मो मत सारू बरणवूं, हरि गुण ग्रथ अपार । —गजउद्धार

४ व्याख्या करना।

उ०—नारकीइ वरणवउं हउं, जेहां नारकीना दुख सभारता स्मरता हूना भव्याण भव्य जीव हुइं हरि विस्णु-हर ईस्वर तेह नी रिद्धि सम्रद्धि लक्ष्मीनउ विस्तार उद्धोसं उद्धरसण रोमांच अगाइ करइ । —षष्टीशतक प्रकरण

५ प्रशसा करना, सराहना।
६ निवेदन करना ।
७ चित्रण करना ।

वरणणहार, हारौ (हारी), वरणणियौ - वि० ।
वरणिओड़ौ, वरणियोड़ौ, वरण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वरणीजणौ, वरणीजबौ—कर्म वा० ।

वरणणौ, वरणबौ, वन्निजणौ, वन्निजबौ, वन्नीयणौ, वन्नीयबौ —रू. भे. ।

वरणत—देखो 'वरणन' (रू. भे.) (ह. ना मा.)

वरणदूत—स पु —पत्र ।

उ०—इण रीति रो आदेस सुणि टीले दूत रै साथ सत्कार रो वरणदूत तो अगाऊ भेजियो । —वं. भा.

२ लिपि ।

रू. भे.—बरणदूत ।

वरणन—स. पु. [सं. वर्णन] १ किसी विषय, व्यक्ति, घटना, दृश्य आदि का विस्तार पूर्बक कथन, वृतान्त, हाल, बयान ।

उ०—अलख पुरस आदेस, देस बचाय दयानिधे, वरणन करू विसेस, सुहृद नरेस 'प्रतापसी' । —दुरसौ आढौ

२ रगने की क्रिया या भाव, चित्राकन ।
३ व्याख्या, उल्लेख ।

४ निवेदन, स्तुति, प्रार्थना ।
५ प्रशंसा, श्लाघा, सराहना ।
६ बखान ।
७ लेखन ।
रू. भे.—वरणण, बरणन, वरणाव, वरण, वरणण, वरणत, वरणव, वरणांम, वरणाव ।

वरणनस्ट—स. पु. [स वर्ण-नष्ट] प्रस्तार के अनुसार वर्ण-वृत्तो के किसी रूप को लघु गुरु के विचार से जानने की, छन्दशास्त्र की एक क्रिया ।

वरणना—सं. स्त्री. [सं. वर्णनम्] गुण कथन ।

वरणनास—स. पु. [स. वर्णनाश] व्याकरण मे, उच्चारण की कठिनता या किसी अन्य कारण से किसी शब्द के अक्षर या वर्ण के लुप्त हो जाने की अवस्था या स्थिति । (निरुक्तकार)

वरणपताका—सं. स्त्री [स. वर्णपताका] वर्ण वृत्तो के भेदो मे मे लघु-गुरु जानने की क्रिया । (पिंगल)

वरणपात—स. पु. [स.] किसी वर्ण (अक्षर) का शब्द में से लुप्त होने की क्रिया, वर्णनाश ।

वरणपाताळ—स पु. [स. वर्ण—पातालः] छन्दशास्त्र की एक क्रिया जिससे किसी संख्या के वर्ण के वृत्त और उन वृत्तो मे मे लघ्वादि, लघ्वंत व गुर्वादि, गुर्वंत एव सर्व लघु ज्ञात किये जा सकते हैं ।

वरणपास—स. पु [स. वरुण-पाश वृड्मभक्तौ=पाशवरण] १ वरुण देव, वरुण । (अ मा.)
२ समुद्र मे रहने वाला एक भयकर जलजतु जिसे अंग्रेजी मे शार्क कहते हैं ।
३ वरुण का एक अस्त्र ।
४ ऐसा पाश या फंदा जिससे बचना बहुत कठिन हो ।

वरणपुर—स पु [स. वरुण-पुरः] १ वरुणलोक ।
२ शुद्ध राग का एक भेद । (सगीत)

वरण प्रत्यय—स पु [स वर्ण प्रत्ययः] छन्दशास्त्र या पिंगल की वह प्रक्रिया जिससे वर्ण-वृत्तो के भेद, स्वरूप तथा सख्याऐं जानी जाती है ।

वरणप्रस्तार—स. पु. [सं. वर्ण प्रस्तारः] छदशास्त्र की वह प्रक्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के वृत्तो के इतने भेद हो सकते हैं और उन भेदो के स्वरूप इस प्रकार होगे।

वरणमरकटी—स. स्त्री. [स. वर्णमर्कटी] पिंगल या छन्दशास्त्र मे एक क्रिया, जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कितने वर्णो के कितने वृत्त हो सकते है और उनमे कितने लघ्वादि, लघ्वत तथा गुर्वादि गुर्वंत तथा सब वृत्तो को मिलाकर कितने वर्ण, कितने गुरु-लघु, कितनी कलाऐं और कितने पिंड होंगे ।

वरणमाता—स. स्त्री. [स. वर्णमातृका] १ सरस्वती ।
२ लेखनी ।

वरणमाळा—सं. स्त्री. [सं. वर्णमाला] १ किसी भाषा या लिपि के वर्णों (अक्षरो) की श्रेणी या लिखित सूची ।
२ तेसठ की सख्या * (डिं को.)
[स. वरणमाला] ३ वह माला या पुष्पहार जो दुलहिन दुल्हे के गले मे पहनाती है ।

वरणव - देखो 'वरणन' (रू भे)

वरणविचार—स पु [स. वर्णविचार] आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमे वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि के नियमों का उल्लेख हो ।

वरणविपरजै, वरणविपरय्य—स. पु. [स वर्णविपर्यय] निरुक्त के अनुसार किसी शब्द के वर्णों मे उलट-फेर होने की स्थिति । (भाषा विज्ञान)
ज्यू—पकडणौ=कपडणणौ ।

वरणव्यवस्था—स. स्त्री. [स. वर्णव्यवस्था] हिन्दुओ की समाज-व्यवस्था जिसके अनुसार समाज को चार भागो मे विभाजित किया गया है। वे चारो भाग हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र ।

वरणव्रत—सं. पु [स वर्णवृत्त] वह पद्य जिसके चरणो मे वर्णों की सख्या व लघु गुरु के क्रम मे समानता हो ।
वि वि —मात्रावृत्त का उल्टा ।

वरणसकर—स. पु [स. वर्णसङ्कर] १ वह व्यक्ति, जाति या कुल जो विभिन्न जाति के स्त्री-पुरुष के सयोग मे उत्पन्न हुआ हो। (दोगला)
२ रगो का मिश्रण ।

वरणसमांम्नाय—स पु [स. वर्ण-समम्नाय] वर्ण माला ।

वरणसरिक—स पु [स वर्ण+सरिक] एक आभूषण विशेष। (व. स.)

वरणसूची—स. स्त्री [सं वर्ग-सूची] छन्दशास्त्र या पिंगल की एक क्रिया जिसमे वर्ण वृत्तो की सख्या की शुद्धता, उनके भेदो मे आद्यत लघु और आद्यत गुरु की संख्या जानी जाती है ।

वरणस्रेस्ठ—स. पु [स. वर्ण-श्रेष्ठ] सब वर्णों मे श्रेष्ठ, ब्राह्मण ।

वरणांम—देखो 'वरणन' (मह , रू. भे)
उ०—धर रूप भुजा असमान धरे। कव 'पात' तणौ वरणांम करे ।
—पा. प्र.

वरणा—स. स्त्री. [स. वरणा] १ काशी के उत्तर मे बहने वाली एक छोटी नदी ।

२ पंजाब की एक नदी, वरुणा नदी।

३ एक आर्य जन पद।

उ०—विदेह सहिल्ल मलय वत्स मत्स [वरणा] दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भग [वट्टा] कुणाल लाट केकयमंडल।

—व. स.

वरणागियौ—स. पु [सं. वर्ण] रूप-रंग, वर्ण।

उ०—तास वरणागिये दीठि मनह तणौ। मलफियौ सांमहौ, कळह बेढ़ीमणौ। —श्री. भा.

वरणाधिप—सं. पु. [सं. वर्णाधिप] ब्रह्मादि वर्णों के अधिपति ग्रह। (फलित ज्योतिष)

वरणायव—स. पु.—१ सूर्य. २ इन्द्र ३ वरुण. ४ जल।

वरणाव—देखो 'वरणन' (रू. भे)

उ०—भमरी अळवामणी डाण भरै। कवराव किमौ वरणाव करै।

- पा. प्र.

वरणास्रम—सं पु [सं. वर्णाश्रम] १ आर्य संस्कृति के अनुसार समाज की एक व्यवस्था जिसमे मनुष्य समाज को-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र इन चार वर्णों मे विभक्त किया गया है और मनुष्य जीवन के चार आश्रम-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यास निर्धारित किये गये हैं।

उ०—द्र म हरी मुख ग्रंम विचारण, सो वरणास्रम कारिज सारण।

—जयपुर रौ गीत

२ उक्त व्यवस्था के अन्तर्गत निर्धारित नियम या धर्म।

उ०—वरणास्रमध्रम मरजाद बेद। भाखा खट नवरस अरथ भेद।

—वि. स.

रू भे.—वरणास्रम,।

[व]रणि—देखो 'वरणी' (रू. भे.)

उ०—चंद वयणि, चपक-वरणि, अहर अलत्ता-रंगि। खजर-नयणी, खीण कटि, चदन-परिमळ अंग। —ढो मा

[व]रणियोड़ौ—भू का. कृ—१ वर्णन किया हुआ, निरूपण किया हुआ २ बयान किया हुआ, उल्लेख किया हुआ ३ रचना किया हुआ, लिखा हुआ. ४ व्याख्या किया हुआ. ५ प्रशंसा किया हुआ, सराहना किया हुआ ६ निवेदन किया हुआ. ७ चित्रण किया हुआ।

(स्त्री. वरणियोड़ी)

[व]रणियौ—सं. पु.—डाभ का बना मोटा रस्सा। (पानी भरने के काम आता है।

[व]रणी—वि. [सं. वर्णिन्] १ वर्ण का, वर्ण सम्बन्धित।

२ किसी वर्ण से सम्बन्धित।

३ किसी रंग से सम्बन्धित, रंग वाला।

४ रंग रूप से सम्पन्न।

स. स्त्री.—१ किसी साधनीय कार्य के अनुष्ठान के लिये नियोजित कर बैठाई जाने वाली ब्राह्मणों की मडली।

उ०—कुंवरसी असवार हुवौ, जिण दिन सू भरमल एक टंक मध्यान ढळियां रोटी जवा री खावी, जमी सूती, तीन वखत रौ सिनान, आपरै इस्ट रौ भजन करती रहती। काजळ, तेल, तबूळ, कूकू सारो त्यागियो। दूध, दही, घिरत मीठौ सारौ छोडियौ। ब्राह्मण पचास वरणी पर बैसाणिया।

—कुंवरसी सांखला री वारता

२ साधनीय कार्य के अनुष्ठान की विधि।

[सं. वर्णिनी] ३ स्त्री, अर्धांगिनी, पत्नी।

४ नियोजन की क्रिया।

५ हल्दी।

रू. भे—वरणी, वरणि, वरन्नी।

वरणोद्दिस्ट—स पु [सं वर्णोद्दिष्ट] छन्दशास्त्र की एक क्रिया जिससे वर्ण वृत्त के रूप एवं भेद की जानकारी की जाती है।

वरणौ—वि. [सं वर्णिन्] (स्त्री. वरणी) १ वर्ण का, वर्ण सम्बन्धी।

२ किसी वर्ण या जाति से सम्बन्धित।

उ०—किं जोग जाग जप तप तीरथ किं, व्रत किं दानास्रम वरणा। मुख कहि कसन रुखमिणि मगळ, काइ रे मन कलपसि क्रपणा।

—वेलि

३ किसी रग से सम्बन्धित रग का।

उ०—१ बावळिया रै मोनल वरणा पीळा फूला सू गवाडी री छिब सवाई बधगी ही। —फुलवाड़ी

उ०—२ कैता-कैता हरी रौ मूडो तांबै वरणौ हुयग्यौ अर होट फडकण लागग्या। —वरसगांठ

४ रूप-रंग से सम्पन्न।

स पु—वृक्ष विशेष जिसके पत्ते बिल्व पत्र से मिलते झुलते होते हैं।

रू. भे.—वरणौ, वरनौ, वरन्नौ।

वरणौ, वरबौ—क्रि स. [सं. वरणम्] विवाह के लिये चुन कर वरण करना, अंगीकार करना, शादी करना।

उ०—१ 'अभपाल' आप छळि करि अचड, वप विहडाय रंभा वरू। जंग करण महा भारथ ज्युंही, 'करण' नांम साचौ करूं।

—सू. प्र.

उ०—२ परण घी पतसाह री, रजवट लागै रोग। वर अपछर वीरम कहै, जाणौ सुर पुर जोग। —बा. दा.

उ०—३ कोई झगड़ा में सूर वीर मारीजिया तिका नै अपछरायां

बरिया सो स्वरग बधावा हुतां लारै री लारै सतियां पिण सत कर नै गई सौ अपछरायां रा बधावणा देख सतिया कहै।

—वी स. टी.

२ चुनाव करना, पसंद करना।

३ स्वीकार करना, मानना।

४ निगलना, खाना। (ड. र)

५ वरदान देना, आशीर्वाद देना।

६ मागना, याचना करना।

बरणहार, हारौ (हारी), बरणियौ—वि०।

बरिग्रोड़ौ, बरियोड़ौ, बरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बरीजणौ, बरीजबौ—कर्म वा०।

बरणौ, बरबौ—रू० भे०।

बर'णौ, बर'बौ—देखो 'बरसणौ, बरसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भली भाति सू अत्थ बत्था भरै। बिनै इद्र सांमद्र 'जेहौ' बरै'। —ल. पि.

उ०—२ अरि मुख पारथ बाण बरखिया एहि धगारा। ज्यू कमळा पर मेघ बरै' थू अणगिण धारा। —मेघ

बरत—स. स्त्री. [सं वरत्रा] १ चमड़े का मोटा रस्सा जो हाथी को बांधने, कूए से मोट खींचने तथा नट के नटक्रीडा मे काम आता है।

उ०—१ रै चित ब्रत द्रढ एम रख, मूरत स्याम मझार। मेल्ह सुरत नट बांस मे, प्रगट बरत व्है पार। —र ज प्र

उ०—२ एक बेर जावै छै। सु साठीको कोहर, तियै री बरत छै सु बरत सावटिनै काख मांहि घाली छै। —नैणसी

२ देखो 'व्रत' (रू. भे.)

उ०—१ कीजै बरत भजन पिण कीजै। भगत-बछळ रीझै व्रज-भूप। —ह ना मा.

उ०—२ आज मिरति मंगळी, आज पति बरत सभाळै। ऊपन्नौ जग ग्रस, आज सुज वस उजाळै। —रा रू.

उ०—३ केहरि तणा पगा लड़ण अकूणौ। लीधा बरत 'जोगपती' 'लूणौ'। —रा रू.

उ०—४ तठा उपरांति देव जागिग्रा छै। काती मास रा बरत महोछब कीजै छै। घरि घरि दीपमाळिका रा वणाव हुइ नै रहिया छै। —रा. सा स.

३ देखो 'विरत' (रू. भे.)

रू. भे.—बरत, भरत, बरतर, बरता, बरत।

मह.—बरत्रौ।

बरतण—२ देखो 'बरतण' (रू. भे.)

२ देखो 'बरतन' (रू. भे.)

उ०—सोर आग सपरस्स, किना बड़वाग अकारी। माग हूंत सांमद्र, ध्याग बरतण उर धारी। —रा. रू.

बरतणि, बरतणी—देखो 'बरतणी' (रू. भे.)

उ०—जोधपुर सुपह री चाड माडै जुड़ण, आपरा लियां परिग्रह उजासै। 'पाल' रौ खूद बरतणि जूदी पांमतौ, पूजियौ विघन री बार पासै। —केसोदास गाडण

बरतणी—देखो 'बरतणी' (रू भे.)

उ०—पाच दोरा रे लेखणी पाच मसीजणा, वास कूपी रे कांबी वारू बरतणा। —स. कु.

बरतणौ, बरतबौ—देखो 'बरतणौ, बरतणौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुर तजौ चित बरतौ अमोक। लकेस हुए सुख करा लोक। —सू. प्र.

उ०—२ तथा स्रीभाभोजी आपरी वडी मुलायजौ बरतै है सु हमार फळोधी रा गाव ८४ खालसै किया है। —द. दा.

उ०—३ देवावत 'लिछमण' जग दाता, हेळा करण खिताब हुवौ। भिडजा भडा चारणा भाटा, मुहगा बरतणहार मुवौ।

—बा दा'

उ०—४ मुथरा माहि बरतिया मगळ। घण कितूहळ घरोघरि। —ह. नां. मा.

उ०—५ रूक ह भरत रत्त, करतौ कोप धुहड, बेहडा घडा करतो, बरतौ दुवाह। —दूदौ वीठू सुरताणोत

उ०—६ सवत सोल छिहुत्तरइ, पोस सुदि तेरस बरतई। साग करइ सहि लोक, पूज पहुंता परलोक। —कविवर स्रीसार

उ०—७ ससार चक्र तणउ इण परि ढालु, चडतउ पडतउ बरतई कालु। वल्ग द्रम मनवछित होइ जुगलाधरम तिहा बरतइ सोइ। —वस्तिग

उ०—८ जासी हाट बात रह जासी जग, अकबर,ठग जासी एकार। रे राखियौ खत्री ध्रम राणै, सारौ ले बरतौ ससार।

—प्रथ्वीराज राठौड़

उ० ६ घर घर मगळचार, मोहन चढियौ महोवर। नाद बेद बरतिया, सुकवि बोलै सुभ अक्खर। —गु. रू. बं

बरतणहार, हारौ (हारी), बरतणियौ—वि०।

बरतिग्रोड़ौ, बरतियोड़ौ, बरत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बरतीजणौ, बरतीजबौ—कर्म वा०।

बरतन—१ देखो 'वेतन' (रू. भे)

उ०—जगदेवजी कह्यौ, सेर बाजरी नै हीज आयौ छू। तरै राजा कह्यौ, टटो लेस्यौ कै कोरी बरतन (वेतन) लेस्यौ। जगदेवजी कह्यौ, कोरी बरतन लेस्यू। —जगदेव पंवार री बात

२ देखो 'बरतन' (रू भे)

वरतनी—देखो 'वरतणी' (रू. भे.)

वरतमांण, वरतमांन-वि. [सं. वर्तमान] १ विद्यमान, मौजूद।

उ०—ज्यूं लारलड़ा वह गया **वरतमांण** वह ज्याय। काळ-काळत में काळ रहघा, ठीक न 'बिसना' ठाय। —बिसनौ

२ जीव धारी, जिन्दा।

३ जो अपने अस्तित्व व सत्ता मे हो।

४ घूमने-फिरने वाला।

५ सहयोगी।

६ जो प्रभाव मे हो, लागू हो (नियम, विधान)

स. पु—[स. वर्तमानः] १ व्याकरण मे क्रिया के तीन कालो मे से एक जो किसी क्रिया का चालू होना सूचित करता है।

२ वर्तमान काल, मौजूदा समय।

उ०—त्रकाळग्यानदरसी निज भ्रमकू पहिचाणें। भूत भवस्त **वरतमांन** जुगति सौ जणैं। —सू. प्र.

३ समय, वक्त, वेला,। (ह. ना. मा)

रू. भे.—वरत्तमान।

वरतमा—देखो 'वरत्म' (रू भे.) (ह ना. मा.)

वरतर, वरता—देखो 'वरत' (रू. भे) (उ. र)

वरताड़णौ, वरताड़बौ—देखो 'वरताणौ, वरताबौ (रू. भे.)

उ०—वसती सु दळि वरताड, अनि गाम घाम उजाड। पह रोस जोस अपार, लेखवै मेछ लिगार। —रा. रू.

वरताड़णहार, हारौ (हारी), वरताड़णियौ—वि०।

वताड़िम्रोड़ौ, वरताड़ियोड़ौ, वरताड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वरताड़ीजणौ, वरताड़ीजबौ—कर्म वा०।

वरताड़ियोड़ौ—देखो 'वरतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरताड़ियोड़ी)

वरताणौ, वरताबौ—देखो 'बरताणौ, बरताबौ' (रू. भे.)

उ०—नै निमनदासजी गढ मैं आया। राव कल्याणसिंघ जी री आण वरताया। —द. दा.

वरताणहार, हरौ (हारी), वरताणियौ—वि०।

वरतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वरताईजणौ, वरताईजबौ—कर्म वा०।

वरतायोड़ौ—देखो 'बरतायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. वरतायोड़ी)

वरतार—देखो 'वरतारौ' (मह, रू. भे.)

२ देखो 'भरतार' (रू. भे.)

वरतारी—देखो 'व्रतारि' (रू. भे.)

वरतारौ—स. पु [स. वृत्तचार] १ प्रयोग ईम्तेमाल करने की क्रिया।

उ०—पछै सवत १८४१ रै वरस नागोरी लूंका रा गछ रा स्रीपूज हरखचद जिन मत रा टीपणा री वरतारौ कियौ। —बां. दा. ख्यात

२ समय, वक्त।

उ०—अग जळ नीर सीग ससियेका, ज्यू बभया का बारा। दुख सुख जरा मरण सुपना मे, यू सतोगुण वरतारा। —सुखरामजी महाराज

३ किसी देवि-देवताओ या देव-योनि मे गई हुई मृतात्मा का किसी मनुष्य शरीर मे प्रवेश की अनुभूति एव तदनुसार होने वाली चेष्टाएं।

४ वह पद्य जिसमे कविता या छदो के रचना सबंधी नियमों का निरूपण हो।

५ आधार, सहारा, आश्रय।

रू. भे.—बरतारौ।

मह.—वरतार

वरताव—देखो 'बरताव' (रू. भे.)

उ०—ऐडौ वरताव करती जाणै किणी पाड़ोसण री टाबर व्है। —फुलवाड़ी

वरतावणौ, वरतावबौ—देखो 'बरताणौ, बरताबौ'

उ०—१ हिंदुस्थान का छत्र जगत छाया **वरतावण**। हिंदुस्थान मे सूरज कवि कमळ-विकसावण। —रा. रू.

उ०—२ स्रीपुर नगर सोहामणु, तिहा **वरतावौ** अमार। —स. कु.

वरतावणहार, हारौ (हारी), वरतावणियौ—वि०।

वरताविम्रोड़ौ, वरतावियोड़ौ, वरताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वरतावीजणौ, वरतावीजबौ—कर्म वा०।

वरतावियोड़ौ—देखो 'बरतायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. वरतावियोड़ी)

वरतियोडौ—देखो 'बरतियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री वरतियोडी)

वरतियौ, वरतीयौ—देखो 'भरतियौ' (रू भे.)

उ०—१ तरै **वरतिया** कना मेह बधावण रौ तलास कियौ। तरै वरतिये कह्यौ—एक हिरण मगावौ। तरै हिरण, आणजै कागळ? मे जत्र लिखनै वरतिये कोरनै हिरण रै सीग माहि थान नै कोस २ आवर थौ तठै हिरण रै महनाण कर छोड दियौ। —नैणसी

उ०—२ हिवै इया रै देस माहै घान घणा। बहवारीया रै लाखै ग्यान हुवौ। केलंकोट, वर्गे, काछ, पावर रा महाजन एकठा हुया। होई नै एक वरतीयै नु कह्यौ, जु "घान म्हांहरै घणौ। ज्यु करौ

ज्युं धांन रा पईसा हवै ।" ताहरां महाजन मेह बधायौ ।
—लालै फूलांणी री बात

वर , वरतुल–वि. [सं. वर्तुल] चक्करदार, गोल ।

सं. पु. १ चक्कर, गोला ।

२ चक्र ।

३ वातचक्र ।

रू. भे.—वरतुळ, वरत्तुल ।

अल्पा.,—वरतुळी, वरतुलौ ।

वरतेसरी—देखो 'व्रतेसरी'. (रू. भे.)

वरतौ—देखो 'वरतणी' (रू भे.)

वरत्त—१ देखो 'वरत' (रू. भे.)

२ देखो 'व्रत' (रू. भे.)

वरत्तणौ, वरत्तबौ—देखो 'वरतणौ, वरतबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भाए प्रताप पड़ै भूपत्ती । विच गढ कमधां आंए वरत्ती ।
—सू. प्र.

उ०—२ धोपट्टै लीध धरत्ती । जिहंगीरे आंण वरत्ती ।
—गु. रू. ब.

वरत्तणहार, हारौ (हारी), वरत्तणियौ—वि० ।

वरत्तिओड़ौ, वरत्तियोड़ौ, वरत्त्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वरत्तीजणौ, वरत्तीजबौ—भाव, कर्म वा० ।

वरत्तमांन—देखो 'वरतमांन' (रू. भे.)

वरत्तिकाबिंदु–स. पु. [स. वर्त्तिकाविंदु] हीरे का एक दोष ।

वरत्तियोड़ौ—देखो 'वरतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरत्तियोड़ी)

वरत्तुळ, वरत्तुल—देखो 'वरतुळ' (रू. भे.)

उ०—ल्हदै मूल वरत्तुल इक होइ । दुहु कूले लांबा द्यौ दोइ ।
—घ. व. ग्रं.

वरत्तुळौ, वरत्तुलौ—देखो 'वरतुळ' (अल्प., रू. भे.)

उ०—दूजौ लबौ ग्रीव परि, जहा धरिजै जोत । दो लवणै द्यौ वरत्तुला, च्यारे इहि विधि होत । —घ. व. ग्र.

वरत्म–सं. पु. [सं. वर्त्मन्] १ मार्ग, पथ, रास्ता, राह ।

२ सड़क ।

३ पगडंडी ।

४ पथ ।

५ स्थान ।

६ लीक ।

७ पद्धति, रस्म, चलन, परम्परा ।

८ किनारा, तट ।

रू. भे.—वरतमा ।

वरत्मारि—देखो 'अत्रारि' (रू. भे.)

वरत्री–स.स्त्री. [स. वर्तनि:] मार्ग, रास्ता, सडक, राह । (ह. नां. मा.)

वरद–वि. [स.] १ वरदान देने वाला, अभीष्ट की पूर्ति करने वाला, वर-दाता ।

२ शुभ ।

स. पु.[स. वरदः] १ देवता (अ. मा.)

२ देखो 'विरुद' (रू. भे.) (अ. मा.)

रू भे.—वरद ।

वरदउदात–स. स्त्री. [स. उदात वरद, वरद+उदात] सरस्वती, शारदा । (अ. मा.)

वरदपत, वरदपति,—देखो 'विरुदपति' (रू. भे)

उ०—हाथी बहु हेला दिये कर बाहर करतार । वेगा आवौ वरदपत मेरी भीर मुरार । —गजउद्धार

वरदळ, वरदल, वरदळि, वरदलि–[स. पु] १ दूल्हा, वर ।

उ०—१ बंधव अनुज 'गजै' री बेटी, लाज सील गुण प्रीत लपेटी । वरदळ लख घर मेळ सवायौ, प्रकट तिकण रौ लगन पठायौ ।
—रा रू.

उ०—२ सरीखा खेड धरा खुरसाण, सरीखौ राउ अनै सुरताण । वरदळ बेढी वडे वीवाह, मिळी घण तुरग महा-रिण माह ।
—रा. ज. सी.

उ०—३ दळपति कोइ न दूजौ वरदळि । निरदळिया मात लोक नर । करि ऊछजि विसकन्या कहियौ, राव तणै घरि लहीस वर ।
—दूदौ

२ वर-पक्ष ।

उ०—ढोलउ-मारु परणिया, वरदळ हुवउ उछाह । आ पूगळ ची पदमिणी, अउ नरवर चउ नाह । —ढो. मा.

३ बारात ।

वरदांणी—देखो 'वरदायिणी' (रू. भे.)

उ०—हंस गमण ब्रहमाणी हमा रूप हम आरूढ । देवगुरू वरदांणी निधि वाणी तुम्यौ नम । —देवि

वरदांन–स, पु [स वरदान] १ किसी देवी, देवता या बड़ो द्वारा अभीष्ट की पूर्ति के लिये दी जाने वाली सिद्धी । शुभ कार्य की कामना की पूर्ति के लिये दिया जाने वाला आशीर्वाद ।

उ०—देवी माई हिंगोळ पच्छम माता, देवी देव देवाधि वरदांन दाता ।
—देवि

२ वह वस्तु, अवस्था या स्थिति जो मगल दायिनी हो, अनुग्रह रूप हो

रू भे —वरदान ।

वरदांनी–वि [सं. वरदान+रा. प्र. ई.] १ वर देने वाला, मनोरथ सिद्ध करने वाला ।

२ जिसको बरदान प्राप्त हो, सिद्धिधारी।

बरवा–सं. स्त्री. [सं.] १ कुंवारी कन्या, लड़की।

२ असगंध।

३ अडहुल।

४ एक नदी का नाम।

५ सरस्वती, शारदा।

रू. भे.—बरदा।

बरवाइ—देखो 'बरदाई' (रू. भे.)

उ०—**बरवाइ** पढत गुण कवि बखाणि। मगळीक वयण मोसर प्रमाणि। —सू. प्र.

बरवाइक—देखो 'वरदायक' (रू. भे.)

उ०—**बरवाइक** 'लाखौ' वसि बधारण वान। मनमोट महिपती। मेर जिसौ अनमान। —ल. पिं.

बरवाई–वि. [स. वरदातृ] १ वर देने वाला, वरदाता।

उ०—नव दुरगा नवै खेट **बरवाई**, करगि मगळीक रच्चए। बदिण जैकार बिद कोळाहळ, विप्रा वेदउ वच्चए। —गु. रू. ब

२ श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—सुदि अगसर सप्तमी वार मगळ **बरवाई**। अस परम "अभसाह" विमळ ग्रहि वस वडाई। —रा रू.

३ यशस्वी।

उ०—१ 'सूजा' पाट सकाज, 'वाघ' कमधज **बरवाई**। कर दन खग बहु कवर, पिता पहिला अत पाई। —सू. प्र.

उ०—२ वीर पाबू समराथ, वीर साचौ **बरवाई**। वीर खाग सिर वहन, वीर चारणिया भाई। —पा. प्र

४ वीर।

उ०—'सूरा 'अड्डूबाळ' सुजड हथ 'सांडा,' 'जैता' 'जगमल' जैत्राई। 'काधिळ' कळिमूळ सदा कळि चालण, 'वीरा' वेढक **बरवाई**। —गु रू. ब.

उ०—२ **बरदाई** भुजे बडाई तमांण सवाई। सिधि पाई जुध जैत्राई सकति सहाई। —ल. पिं.

५ वरदान या सिद्धि प्राप्त।

उ०—१ 'सांवत' 'माहव' तणी सवाई। 'वीठल' री 'सकतौ' **बरवाई**। —रा. रू.

उ०—२ पाबू पाट रै रूप राठवड़ा, सेवै तूझ सधीरा। वेगडै पाल्हू लीया **बरवाई**, सिध तणा साढी रा।

—पाबू राठौड़ धाधळोत रो गीत

६ वरदान से उत्पन्न होने वाला।

उ०—पाण का कपिराज सूरज का बस। देवी का **बरवाई** दईव का अस। दिल का दलेळ लहरूं का दरियाव। —सू. प्र.

८ अनुकूल, लाभप्रद।

रू. भे—बरदाई, वरदाइ, वरदायी, बिरदाई।

बरवाचतुरथी, बरवाचोथ–सं. स्त्री. [स. वरदाचतुर्थी] माघ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी।

बरवात–वि. [स. वरदातृ] वर देने वाला, वरदाता।

स. स्त्री [सं वरदात्री] १ सरस्वती। (अ. मा.)

२ पार्वती गिरिजा (अ. मा.)

३ देखो 'वरदाता' (रू. भे.)

बरवाता–वि [सं. वरदातृ] १ वर देने वाला, वरदायक।

उ०—दीनानाथ अभै **बरवाता**, त्राता सेवग तारणा। —र. ज. प्र.

सं. पु.—ब्रह्मा।

रू भे.—बरदाता।

बरवाय, बरवायक–वि.—१ वर देने वाला, वरदाता।

उ०—जानुकी वर मरम जाणग, तेग अरेसा सायक। 'किसन' भज जन मान रक्खे, दान अभै **वरदायक**। —र. ज. प्र.

२ सिद्धि देने वाला।

३ यशस्वी, कीर्तिवान, विरुदधारी।

उ०—वधै राज सुख विहद, बधै हित संपत वधायक। अवर वधै दिन इतौ, वधै पल पल **बरवायक**। —सू. प्र.

४ श्रेष्ठ।

उ०—'सुरतौ' 'गागावतां' 'नरा 'पदमौ'। नर नायक। अणभंग 'चूडावता' 'विजौ' कमधां **बरवायक**। —सू. प्र.

५ वीर।

उ०—उदर सुमित्र लछण जीपण अरि, धरै सेस अवतार धुरंधर। बियौ सत्रघण सुजस सवायक, दीरघबाहु वडौ **बरवायक**। —र. रू.

६ सिद्धि प्राप्त।

७ वर प्राप्त, वरदान धारी।

उ०—आमो-सामहो झटका हुवे उतरिआ। आप रखी रा **बरवायक** हुता। सो मछ री दया वासतै घणा सेहर रा लोक मछ ऊपरा तरवारिआ वाढिया। —कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—२ **बरवायक** सकति रौ, कत कीत रौ कहावै। उरड़ जोम अंगरौ, अवर पह मीढ न आवै। —सू. प्र.

८ फलदायक, सफलता देने वाला।

उ०—१ **बरवाय** 'लखण' रण सूर वीर। धारण प्रवीण अण धार धीर। —रा. रू.

उ०—२ इन्द्रा भड चारगा क्रोध प्रसाधि। बिढे बरदायक वीर-विराध। —सू. प्र

रू. भे—बरदायक, बिरदाक, बरदाइक, बिरदायक

६ देखो 'विरुदायक' (रू, भे.)

बरदायण, बरदायणि, बरदायणी, बरदायिणी,—सं. स्त्री. [स्त्री. बर+दायिनी] सरस्वती। (डिं को.)

उ०—ऐरावत बिराजै ऊजळा, बिन्न ऊजळ हंस-वाहणी। ऊजळ अडोल गाऊ 'प्रभो', दीजै वर बरदायणी। —बख्तौ खिड़ियौ

वि—१ सिद्धि व सफलता देन वाली।

उ०—पाए बुध 'प्रनावत' तणी जस पायणी, प्रेम बण बायणी तेज प्रानक। मीर भक डायणी प्रबखासा मही, प्रसी बरदायणी कटारी एक। —करनीदानजी कवियौ

२ वर देने वाली।

रू. भे.—बरदायग, बरदायणि, बरदाणी।

बरदायी—देखो 'बरदाई' (रू. भे.)

उ०—नानग छावहड़ो बरदायी हुवो। पोकरण प्राय वसियो। —बा दा ख्यात

बरदाळ—देखो 'विरुदाळी' (मह, रू भे)

उ०—कप जेह छळ कूदियो, फर बडाळी काळ। एक कटारी अगरग, वकट, 'कालो' बरदाळ।

—कल्याणसिंह नगराजोत बाढेल री बात

बरदाळो—देखो 'विरुदाळो' (रू. भे.)

उ०—जै खळ जठी तठी जुध जीपण, हठी भीम कारज हडमत। बणीयो खळ राखण बरदाळा, डाढाळा केसव चो दत

—किसनो आढ़ो

बरदी—स. स्त्री [अ वर्दी] किसी विभाग, संस्था या वर्ग के कर्मचारियों के लिये निर्धारित पोशाक विशेष, यूनिफॉर्म।

रू भे—बरदी, वरदी।

बरदेत, बरदैत—देखो 'बरदायक'

उ०—१ कथ पाल' तै साची कही, बरदेत झूठ न बात। प्राधा समै रा मारिया, एकरसू कव उतपात। —पा. प्र.

उ०—१ वडा खळ खाग हुएै बरदैत। जुडै इम 'भाण' समोभ्रम 'जैत'। —सू प्र

बरद्धक—वि. [स. वर्द्धक] १ वृद्धि करने वाला, बढ़ाने वाला।

[स वर्धक] २ काटने वाला।

३ विभाजन करने वाला।

रू. भे.—बरधक, बरधकि।

बरद्धन—स पु [सं. वर्द्धन] १ वृद्धि, बढ़ोतरी।

२ उन्नति।

३ वृद्धि या बढ़ोतरी होने की अवस्था।

४ काटने या विभाजन करने की क्रिया या भाव।

रू भे—बरधन।

बरद्धमान—वि [स. वर्द्धमान] १ जो बढ रहा हो, वृद्धिशील हो, बढ़ने योग्य।

२ बढ़ने की प्रवृत्ति वाला।

३ उन्नति के लिये उन्मुख।

स. पु.—१ जैनियों के चौबीसवें तीर्थंकर, महावीर स्वामी।

२ एक वर्ण वृत्त जिसके पहले चरण मे १४ दूसरे मे १३, तीसरे मे १८ व चौथे चरण मे १५ वर्ण होते है।

३ वार व नक्षत्र सम्बन्धी २८ योगों मे से २८ वा योग। (फलित ज्योतिष)

४ देखो 'बरद्धमानतप'

रू. भे.—बधमान।

बरद्धमानतप—स. पु एक प्रकार का व्रत विशेष

उ०—स्थान पचमी, मुकुट सप्तमी, माणिक्य प्रस्तारिका, निक्रमण-तप, बरद्धमानतप, इंद्रियजय, कसायजय। —व. स.

बरधक—स. पु [स. वर्धक, वर्धकि] १ बढ़ई, तक्षक।

२ देखो 'बरद्धक' (रू. भे)

रू भे—बरधकि, बरधकी, बरधकि।

बरधका—सं स्त्री. [सं वृद्धा] १ गाथा-छंद का एक भेद जिसमे विप्र गण (चार मात्रा के समूह) का प्रयोग बहुत होता है।

उ० भगण बहुत सो प्रौढा भगजै। गण बोह विप बरधका गिणजै। —र ज प्र

२ देखो 'वृद्धा' (रू भे)

बरधकि—देखो 'बरधक' (रू भे)

बरधन—देखो 'बरद्धन' (रू. भे.)

बरधापन—देखो 'वरद्धापन' (रू भे.)

उ०—ऐ प्रणीयात कौद प्रामावन', सौदा म्हे तेवड़े रिण। वप वढीयो बरधापण वढता, पोरस मछर जवानपण।

—दुरगादास ग्रासकरणोत रो गीत

बरन—अव्य [म] १ बल्कि २ ऐसा नही।

बरन देखो 'वरण' (रू भे)

उ०—१ पसरि पत्र है पाई, दलला उडुं आधतरि। जरद लाल इक रयाह बरन नाना बिबहुधरि। —गु. रू. ब.

उ०—दुति सोभा दामणी, बरन आदीत वरन्नी। भाव-सिध सारधू, देव कन्या उतपन्नी। —गु. रू. ब

उ०—३ अप जाप होम कीजै जिगन, वरम खट्ट प्रामै वरी ।
जोधपुर भाज प्रजुधापुरी, राम राज कमधज्ज री । —गु. रू. ब.

वरनसन—स पु. [स. वर्णाऽऽसन.] कवि, पंडित । (अ. मा)

वरना—अव्य. [फा वर्ना] १ अन्यथा ।

२ नहीं तो ।

३ ऐसा नहीं हुआ तो ।

वरनोळी, वरनोली—देखो 'बंदोळी' (रू. भे)

वरनोळौ, वरनोलौ—देखो 'बंदोळौ' (रू. भे.)

उ०—ताजा नेजा गयणाइ मोहड, वरनोलइ इम मनमोहत ।
—कविवर स्रीसार

वरनौ—देखो 'वरणौ' (रू. भे.)

उ०—फौजा डेरा फाबिया, दीसै हद्द विहद्द । सबज वरना म्याह ग्रन, लाल सपेत जरद्द । —गु रू. ब.

वरन्न—देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—मारू मारइ पहियडा, जउ पहिरइ सोवन्न । दंती, चूडइ मोतिया, श्रीया हेक वरन्न । —ढो. मा.

उ०—२ वेधै खळ सावळ चोळ वरन्न । कहै रवि भोक लडै 'सुभक्रन्न' । —सू. प्र.

वरन्नी—देखो 'वरणी' (रू. भे)

उ०—एक खडी मुख रूप नियाळै, एक खडी सिर चम्मर ढाळै । काम लता पिण कणक वरन्नी, पास खडी मुख रास पतन्नी ।
—गु. रू. ब.

वरन्नौ—देखो 'वरणौ' (रू भे)

उ०—विवह वरन्ना कप्पडा, विवह वरन्नी पाग ।
फजर हुवदी फूलिया, जाणा मलूका बाग । —गु रू. बं.
(स्त्री वरन्नी)

वरपूर—देखो 'भरपूर' (रू भे)

उ०—तद तरवार म्यान सू लीवी सू प्यादा भगडौ वरपूर हुवौ ।
—द दा

वरम—स. पु. [रू वर्मन्] १ कवच, बख्तर ।

उ०—काटसी घणा अघ श्राधवाला करम । वेध नह सके जम पहर इसडौ वरम । —र. ज प्र.

२ घर, मकान ।

३ छाल, गूदा ।

४ पित्तपापडा ।

[फा. वरम] ५ किसी अंग पर आन वाली सूजन, शोथ ।

६ घाव ।

७ देखो 'ब्रह्म' (रू भे.)

रू. भे.—वरम, वरम्म, वरम्म ।

वरमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे)

वरमा—स. स्त्री. [स. वर्मन्] १ नाम के अंत में लगाई जाने वाली क्षत्रियों की एक उपाधि ।

२ उपनाम ।

३ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.) वरमा

वरमाळ—देखो 'वरमाळा' (रू. भे.)

उ०—१ करण अखियात चढियौ भला काळमी, निवाहण वयण भुज बाधिया नेत । पवाग सदन वरमाळ सू पूजियौ, खळां किरमाळ सू पूजियौ खेत । —बां. दा.

उ०—२ रामायण भारथ तणय रग, जाणियौ अभायण विकट जंग । गठ-जोड अक्कर भूलाल गंठ । कदगां अंत्रळ वरमाळ कठ ।
—वि. सं.

वरमाळणौ, वरमाळबौ—क्रि. स. १ दुलहिन द्वारा वर के गले में माला डालना, वरमाला डालना ।

उ०—विध जुत कूरमराज विचारे, स्रीफळ कंचन रतन सिंगारै । सुभ दिन लगन घडी ले सुंदर, वरमाळियौ 'अभौ' प्रथमी-वर ।
—रा. रू.

२ जयमाला डालना ।

३ वरण करना, विवाह करना, शादी करना ।

उ०—वीरम ना वरमाळतां, मिटियै रे 'किममीर' । 'वूकण' रौ घर बूडसी, नदी वहते नीर । —वी. मा

४ स्वीकार करना, अंगीकार करना ।

वरमाळणहार, हारौ (हारी), वरमाळणियौ—वि० ।
वरमाळिप्रोडौ, **वरमाळियोडौ, वरमाळयोडौ**—भू० का० कृ० ।
वरमाळीजणौ, वरमाळीजबौ—कर्म वा० ।

वरमाळा, वरमाला—स स्त्री. [स. वर+माला] १ दुल्हन द्वारा दूल्हे को पहनाया जाने वाला पुष्पहार, हार ।

उ०—१ विच गळ रभ वरू वरमाळां । श्रोयण मभि उभळता अत्राळा । —सू. प्र.

उ०—२ इसी बात सुण लाडी वरमाळा लेय घणा लोगा री भीड सू उछाह करती आई वरमाळा गळे पहराई ।
—पंच दंडि री वारता

उ०—दसग सयण रयण छळ दमगगळ, रात्र गळौ वळ भीन्न रहे । धड आरती उतरे धारा, वरमाळा किरमाळ वहे । —वूंदी

१ जयमाळा ।

रू भे.—वरमाळ, वरमाळा, वरमाळ, वरम्माळ, वरम्माळा ।

वरम्म—१ देखो 'वरम' (रू. भे.)

उ०—नमसकार सूरा नरा, विरद नरेस बरम्म । रिजक उजाळ सांम रो, पाळ सांमधरम्म । —बां. दा

बरम्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू भे.)

२ देखो 'ब्रह्म' (रू भे.)

बरमाळियोड़ो—भू. का. कृ.—१ वरमाला डाला हुआ. २ जयमाला पहनाया हुआ. ३ वरण किया हुआ, विवाह किया हुआ, शादी किया हुआ. ४ स्वीकार किया हुआ, अंगीकार किया हुआ ।

(स्त्री. बरमाळियोडी)

बरम्माळ, बरम्माळा—देखो 'वरमाळा' (रू. भे)

उ०—१ कवी छद बोलै प्रभू अग्रकारी । धणी कठि सीता बरम्माळ धीरी । —सू. प्र.

बरयता—सं. पु. [स. वरयिता] स्त्री का पति, भर्तार, स्वामी ।

(ग्र. मा., ह. ना मा.)

वि.—वरण करने वाला ।

रू भे —बरयिता ।

बरयात्रा—सं स्त्री [स. वर+यात्रा] १ वर का विवाह के लिये वधू के यहाँ बरात सहित किया जाने वाला गमन ।

२ बरात ।

बरयेचा—स स्त्री.—राठौड़ वंश की एक उप-शाखा ।

बररमा—स. पु. [स. रमा+वर] १ रामचन्द्र ।

उ०—तोड़ खळ जमा चौ ग्राच खग तोलिया, ईस गण नाच घमघमाचो ग्रोप । गजब रौ तमाचो अजब रौ थको गण, कना सर बररमा चौ कोप । —बद्रीदास खिड़ियो

बररुचि—स. पु. [स.] १ एक प्रसिद्ध प्राचीन पंडित जो व्याकरण और काव्य के मर्मज्ञ थे । सुविख्यात प्राकृत व्याकरणकार ।

२ एक प्रसिद्ध नाट्यशास्त्र प्रणेता ।

रू. भे.—बररुचि ।

बरल—सं. पु. [सं. वरलः] १ सूर्य, सूरज । (ना. मा., ह ना. मा.)

२ हस ।

३ बरैया ।

४ प्रकाश, उजाला, रोशनी ।

रू. भे.—बरळ ।

बरलक—स. पु. [स वरलः+रा. प्र क.] उजाला, चमक ।

उ०—तै ग्रावियो घणा भडा बळि ताकै, रिणवट 'कृपा' रूप रखा । बरलक करै फरै वीरारसि, ग्रहि जिम थारो कूंत 'ग्रखा' । —नादण बारहठ

बरलच्छि—स. पु. [स. लक्ष्मी-वरः] विष्णु ।

रू. भे.—बरलच्छि, बरलाछ ।

बरळणो, बरळबो—देखो 'विरळणो, विरळबो' (रू. भे)

उ०—दादू स्वाद लाग समार सब, देखत बरळय जाय । इद्री स्वारथ साच तज, सबै बधांणी ग्राई । —दादूबाणी

बरला—स स्त्री. [सं] मादा हस, हंसिनी ।

बरलाछ—देखो 'बरलच्छि' (रू. भे.)

बरळियोड़ो—देखो 'विरळियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. बरळियोडी)

बरळ, बरलु—देखो 'विरळो' (रू भे)

उ०—जनम लगइ विहडइ नही, भली नारी जे होइ । एतला ऊफरू सार नथी, राखइ ज बरलु कोइ । —नळदवदंती रास

बरवंछक, बरवंछत—वि.—बुरा चाहने वाला, दुश्मन ।

उ०—ग्रासीस दीयै 'सुरताण' ग्रछरा, नृप हा वडा वधारण नेह । बरवंछत लाधा तो वडता, छत्र पतीया सु बाधा छेह ।

—दुरसो ग्राढो

बरवड़ी—स. स्त्री. [देशज] चारण वंशोत्पन्न एक देवी जिसने महाराणा हमीर को राज्य प्राप्त कराया था ।

वि वि.—यह चवडा की पुत्री थी ।

रू. भे -- बरबडी, बिब्बड ।

बरवती—वि. (स्त्री) १ सौभाग्य शालिनी, सुहागन ।

२ जिसको वरदान प्राप्त हो ।

सं स्त्री.—१ वह स्त्री जिसका पति जिन्दा हो, सुहागन स्त्री ।

रू. भे —बरबती ।

बरवर—देखो 'बरबर' (रू भे)

बरवरण—स. पु. [म वरवर्ण] १ अच्छा वरण, सुन्दर वरण ।

२ स्वर्ण, सोना ।

बरवरणी—स. स्त्री [स. वरवर्णिनी] १ लक्ष्मी ।

२ दुर्गा ।

३ सरस्वती ।

४ सुन्दर स्त्री ।

५ उत्तम स्त्री. ।

६ लाख ।

७ हल्दी ।

८ प्रियंगुलता ।

बरवरणो, बरवरबो—देखो 'वडवडणो, बडवडबो' (रू. भे)

उ०—बरवरतो वेघ वरद बीमाळा, ठहतो खळा घाल तो ठाळ । ग्राबुदसा ग्रावतो ग्राबू, वेगी़श दळ दीठो 'विजपाळ' ।

—दुरसो ग्राढो

वरवरियोड़ौ—देखो 'बड़बड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वरवरियोड़ी)

वरवार—देखो 'बारबार' (रू. भे.)

वरवासण, वरवासणी—स. स्त्री. [स. वरवासिनी] कछवाहों की कुल देवी।

उ०—पछै मलीरणा रै गांव भूंपड़ा खेड़ं सोहड भगवतगढ सेस भारिज्ये मलीरणै रै बीछू दैनै हुय जीरोतरौ गाव हाडोती रो हुयनै आगै खहारगढ चाबळ मेळी हुई तठै देवी वरवासण रौ थान छै। —नैरासी

वरवीर—स. पु. [स. वर-वीर] १ श्रेष्ठ वीर, श्रेष्ठ योद्धा।

उ०—वडौ वडग्रार भुजे कुळ भार, घरा सिरणगार इसौ लखधीर। वहै खत्रवाट नमावरण नाट, विघासरण थाट सत्रा वरवीर। —ल. पिं.

२ श्रेष्ठ विद्वान, सुयोग्य पंडित।

उ०—ह भ्र घ र ष न ख भ होय, भ्रंक भ्रठ दगध भ्रधीरह। भ्राखर दगध भ्रठार वदं, कवसल वरवीरह। —र. रू

३ बुद्धिमान, विवेकी।

उ०—तुरातुर नीमरजा भव तीर, विसे-विस बीमरजा वरवीर। हमे गुरु वायक मा बुधहार, सभै निज नायक की सुध सार। —ऊ. का.

४ एक छन्द विशेष।

उ०—चव कळ उरोज थळ च्यार नोज। वरवीर छंद, कह यम कव्यद। —र. ज. प्र.

वरवेरण—स. पु [स वडवा-रमण] घोडा। (नां. हिं. को)

वरसत, वरसंति—स. पु [स. वर्ष+अंत] किसी वर्ष या साल का अन्त या समाप्ति।

उ०—इम करता हुउं प्रभात, राय भरणइ सुरिण मुहता वात। ईगि पुरि देवि जईवंत, तेह नी जात्र हुई वरसति। —हीराणद सूरि

वरस—स. पु. [सं वर्ष] १ काल-क्रम के अनुसार वह अवधि जिसमे सब ऋतुओं की आवृत्ति हो जाती है। बारह महीनो की एक अवधि, वर्ष, साल।

उ०—१ एता दीह न जाणिया रे, निरगुण जाणी कत। हिव खिण जातउ वरस सउ रे, जाइ मुझ विलवत। —हीराणद सूरि

उ०—२ कूंभसुति ते आचमन कीध, कोटि वरस रहु ठालु। अनेकि कुंभि ऊलेचता ए धरि नही सर चालु। —नळाख्यान

२ किसी सवत्सर की निर्धारित दिन से क्रमश चलने वाली अवधि।

उ०—माया वसियां आपणी, ग्रीसम थई वतीत। १७३१ गुण-चाळी लागो वरस, चाळो सरस सजीत। —रा. रू.

३ पुराणानुसार सप्त द्वीपों का एक विभाग।

४ भारत वर्ष।

५ बादल।

उ०—सजै फौज काठळ घरर घणां निसाण घुर, अनल धूंआ रवण रण ऊजाथै। वहण दळ दिलेसुर तणा फाटा वरस, मेरगिर 'गजण' रा तणै माथै। —अजबौ बारहठः

६ एक व्याकरणाचार्य जो पाणिनि का गुरु था।

७ वसुदेव व उपदेवी के पुत्रो में से एक पुत्र।

८ सहस्रार्जुन राजा का पुत्र, एक राजा।

रू. भे.—बरख, बरस, बरिस, बरीस, वरक्ख, वरख, वरसि, वरसी, वरस्स, वरिस, वरिसि, वरीस।

अल्पा,—बरसडौ वरसडौ।

वरसकटी—स. स्त्री. [स वर्ष+कट्य=समूह] १ ऋणी और ऋणदाता के मध्य तय होने वाली वह शर्त जिसके अनुसार निश्चित अवधि तक ऋणी की भूमि का उपभोग ऋण दाता कर सकता है।

२ ऋण के ऊपर लगने वाला ब्याज या सूद जिसमें ब्याज पर भी ब्याज जोडा जाता है।

वरसगांठ—स. स्त्री. [स. वर्ष+ग्रन्थि] १ प्रत्येक वर्ष या साल में आने वाला किसी के जन्म का दिन या तिथि, सालगिरह।

२ उक्त दिन को मनाया जाने वाला उत्सव।

रू भे बरसगांठ।

वरसट, वरसठ—स पु. [स. वरिष्ठं] ताम्र, तांबा। (ह. नां. मा.)

रू. भे—बरसट, वरस्ट।

वरसण—स. पु [स. वर्षण] बादल, मेघ। (अ. मा., ह. नां. मा.)

वि.—१ बरसने वाला।

२ दानी, दातार।

रू भे.—बरसण, वरसणौ, वरीसण।

वरसणी—स. स्त्री. [स. वर्षणि.] १ वृष्टि।

२ व्यवहार, वर्ताव।

३ यज्ञीय कर्म, यज्ञ।

४ क्रिया।

५ एक महाविद्या।

उ०—आकासगामिनी सौदामिनी कामगामिनी कामसामिनी भुवनक्षोभिनी कामरूपिणी मनःस्तंभिनी जलस्तंभिनी आग्नेयी वायवी वरसणी कौमारी खगरूपिणी तमोरूपिणी विघातकारिणी गिरिदारणी अवलोकिनी भुजंगिनी ....इत्यादि महाविद्या। —व. स.

बरसणौ, बरसबौ–क्रि. अ. [सं. वर्षण] १ बादलों से पानी का बूंदों के रूप में पृथ्वी पर पड़ना, वर्षा होना।

उ०—१ यहु तन जारी मसि करू, धूम्रा जाहि सरग्गि। मुझ प्रिय बद्दल होइ करि, बरसि बुझावइ अग्गि। —ढो. मा.

उ०—२ उन्नत गिरिवर प्रवर फरसत, मेघ बरसत जोर। दमकती दामिनी बहुर भामिनी, चमकती निहिं ठोर। —वि. कु.

मुहा.—१ आग बरसणी. बहुत तेज धूप होना, कर्कश वाणी निकालना (ऊ. का.) २ दूध रौ मेह बरसणौ= आनन्दोत्सव होना, आनंद ही आनद होना। ३ पुसपां री बरसा करणी महान कार्य करने पर उसके स्वागतार्थ उस पर फूल उछालना।

२ किसी पदार्थ का छोटे-छोटे कणों या टुकड़ों के रूप में बादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिरना।

३ आंखों से लगातार आंसू बहना, अश्रुओं की झड़ी लगना।

४ मुख से मधुर वाणी निकलना, मुख से मधुर भाषा का प्रयोग होना।

उ०—कमला कहउ कि सरसति, बरसति अमीरस वाणि। कचणु कुणि किर जाविय, पाविय सारगपाणि। —जयसेखर सूरि

५ धन या दौलत का चारों ओर से आना, थोड़े से परिश्रम से खूब लाभ होना, अच्छी आमदनी होना।

मुहा.—दूध री बरसा होणी=आनन्द मंगल होना।

६ चेहरे की कान्ति और ओज का अच्छी तरह से झलकना।

ज्यू—उणरी चेहरौ तौ अबार बरसै, सिणगार करयां पछै तौ बात ई छोडौ।

७ क्रोध और आवेश के कारण किसी के द्वारा डांटा जाना, फटकारा जाना।

८ लगातार अस्त्र-शस्त्र प्रहार होना।

उ०—१ अयी समर सर बरसतां अमर नर ऊचरै, आवधां ठेलफीळा अराणी। पाळि रूपै अवर तूटि पड़ै, पड़ग गमियौ नहीं ताम पाणी। —राव छत्रसाल हाडा रौ गीत

९ तुष्ट मान होना (देने के लिये)

१० दान देना।

बरसणहार, हारौ (हारी), बरसणियौ—वि०।

बरसिग्रोडौ, बरसियोडौ, बरस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बरसीजणौ, बरसीजबौ—भाव वा०, कर्म वा०।

बरसाणौ, बरसाबौ—सक० रू०।

बरखणौ, बरखबौ, बरीसणौ बरीसबौ, बरक्खणौ, बरक्खबौ।

बरखणौ, बरखबौ बर'णौ, बर'बौ, बरीसणौ, बरीसबौ।—रू० भे०।

बरसधर–स. पु. [स वर्ष-धर] बादल, मेघ।

बरसप, बरसपत, बरसपती–सं. पु. [सं. वर्षप, वर्षपति] वर्ष के अधिपति ग्रह। वह ग्रह जो संवत्सर के वर्ष का अधिपति हो। (फलित ज्योतिष)

बरसवियाणि, बरसवियावणी—देखो 'बरसव्यावणी' (रू. भे.)

बरसव्यावणी–स. स्त्री.—जिसके प्रति वर्ष प्रसव होता हो (प्रायः गाय, भैंस)

रू. भे.—बरसव्यावणी, बरसवियाणी, बरसवियावणी।

बरससत–स. पु. [सं. शत-वर्ष] सौ वर्ष। (उ. र.)

बरसा–स. स्त्री. [सं. वर्षा] १ बरसने की क्रिया या भाव।

२ आकाश के मेघों से पानी का बरसना, बारिस, बरसात।

उ०—करि पाण सुताण कमाण कसै। बरसांण सराण तणा बरसै। —सू. प्र.

३ बरसात का मौसम, वर्षा ऋतु।

पर्या.—बरसण, ब्रस्टी।

४ किसी चीज का अधिक मात्रा में ऊपर से गिरना, वृष्टि।

क्रि. प्र.—करणी, होणी।

५ लगातार चलने वाला कोई क्रम, बौछार।

क्रि. प्र —आणी, पड़णी, होणी।

६ किसी वस्तु की बहुतायत होने की अवस्था।

रू. भे.—बरखा, बरसा, बरिखा, बिरक्खा, बिरखा, वरखा, वरिक्खा, बरिखा।

बरसाऊ–वि. [स. वर्षा+रा. प्र. ऊ] १ बरसने वाला।

२ बरसने योग्य।

३ आभा और कान्ति वाला।

उ०—जोया धर कर जग, पौहव वीरम जग पड़ियौ। तद मिळ सळखा तणौ, जरु चढनौमो जुड़ियौ। कहर विखौ काढियौ, कमध चूंडै काळाऊ। 'आलै' जद ग्रोळखयौ, सही ताळै बरसाऊ। मेहवै जाय 'मालौ' मिळै, मलीनाथ राखौ मदत। आपणै गाम चूडौ उठै, सुत वीरम रौ सारत। —राव चूडा रौ छप्पय

रू. भे.—बरसाऊ।

बरसाकरण–स पु.—इन्द्र।

रू. भे.—बिरखाकरण।

बरसाकाळ–स. पु. [स. वर्षा-काल] बरसात का मौसम, वर्षा ऋतु। (उ र.)

बरसागम–सं पु [सं. वर्षा+आगम] वर्षा ऋतु का आगमन, वर्षारंभ।

बरसाणौ, बरसाबौ–क्रि. स —१ किसी पदार्थ का छोटे-छोटे कणों या टुकड़ों के रूप में बादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिराना।

२ आखों से लगातार आंसू बहाना, अश्रुओ की झडी लगाना।

३ मुख से मधुर वाणी निकालना, मुख से मधुर भाषा का प्रयोग करना/कराना।

४ धन या दौलत को चारो ओर से प्राप्त करना, थोडे से परिश्रम से खूब लाभ कमाना, अच्छी आमदनी करना/कराना।

५ क्रोधवश या आवेश-वश किसी को डाटना, फटकारना।

६ निरन्तर अस्त्र-शस्त्र का प्रहार करना/कराना।

७ खर्च करना/कराना।

८ दान देना, दिलवाना।

बरसाणहार, हारो (हारी), बरसाणियौ—वि०।

बरसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बरसाईजणौ, बरसाईजबौ—कर्म वा०।

रू. भे.—बरखाणी, बरखाबौ, बरसाणौ, बरसाबौ बरसावणौ, बरसावबौ, बरीसाणौ, बरीसाबौ।

बरसात—म. स्त्री [स. वर्षा+रा प्र त] १ आकाश के मेघो से पानी की वर्षा जल वृष्टि।

उ०—हरियाळी वारे वास्तै ई विकसै। वारै वास्तैई बादळा गरजै, बीजळिया खिवै अर बरसात व्है।
—फुलवाडी

२ वह रात या दिन जब वर्षा हो रही हो। (उ र.)

३ वर्षा ऋतु, वर्षा काल।

उ० तरै बरसात रा दिन था। काचे खड़ै पखाळद थको राव धीणोद री पाखती थौ। —नैणसी

रू. भे.—बरसात, बरसाद, बरसायत, बरसाति, बरसाती, वरसायत, वरात।

बरसाति, बरसाती—वि. [स. वर्षा+रा प्र. ति. ती] १ बरसात का, बरसात सम्बन्धी।

२ बरसात की मौसम मे होने वाला।

स. स्त्री.—१ प्लास्टिक या मोमजामे का बना हुआ एक बडा कोट जिसको पहनने से शरीर व वस्त्र वर्षा के पानी से भीगने से बच जाते है।

२ घोडो का एक रोग। (शा हो)

रू भे.—बरसाती।

३ देखो 'बरसात' (रू. भे.)

उ०—१ आगलि थी प्रनीहारडी, हाथमा मोवन कव। रिदय कमल विकास हुइ जिम बरसाति कदब। —नळ दवदती राम

उ०—चद्र सूरय पावलि कूडालू थाई छि बरसाति।
—नळाख्यान

बरसातीबुखार—सं. पु.—वर्षा काल में मच्छरो के काटने से फैलने वाला एक प्रकार का ज्वर विशेष जिसमें प्रारभ में जाड़ा लगता है, शीत-ज्वर।

बरसाधिप—देखो 'बरसपती'।

बरसाभू—सं पु. [स. वर्षाभू] १ मेढक।

२ इन्द्रगोप या बीरबहूटी नामक कीडा।

३ रक्त पुनर्नवा।

रू. भे.—बरसाभू।

बरसायत—देखो 'बरसात' (रू. भे.)

उ०—बरसायत आवण की धारी छै, आपकै जावण की त्यारी छै। जमी नीला सिणगार धारसी, 'जसा' सिणगार उतारसी। मोरिया महकसी, डेडरा डहकसी, झिलोगन झणकसी, भमरा भणकसी सीतळ पवन वाजसी, मुधरो मेह गाजसी —मयाराम दरजी री बात

रू भे.—बरसायत।

बरसायोड़ौ—भू का. कृ—१ किसी पदार्थ को छोटे-छोटे कणों या टुकडो के रूप मे बादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिराया हुआ। २ आखो से लगातार आसू बहाया हुआ, अश्रुओं की झड़ी लगाया हुआ। ३ मुख से मधुर वाणी निकाला हुआ, मुख से मधुर भाषा का प्रयोग किया हुआ। ४ धन या दौलत को चारो ओर से प्राप्त किया हुआ, थोडे परिश्रम से अधिक लाभ कमाया हुआ, अच्छी आमदनी किया हुआ। ५ क्रोध या आवेश के वशीभूत होकर किसी को डाटा हुआ, फटकारा हुआ। ६ निरन्तर लाठी या अस्त्र-शस्त्र प्रहार किया हुआ, कराया हुआ। ७ खर्च किया हुआ, कराया हुआ। (स्त्री. बरसायोडी)

बरसारितु—सं स्त्री. [सं. वर्षा-ऋतु] वर्षा काल, बरसात का मौसम, वर्षा ऋतु।

रू भे.—बिरखारत, बरखारत, बरखारित, बरखारिति, बरखारुत, बरखारुति, बरिखारित, बरिखारितु, बरिखारुत, बरिखारुति।

बरसाळ, बरसाल—स स्त्री [सं वर्षा+आलुच्] १ वर्षा, वृष्टि, बारिस।

उ०—१ खाळ रत्त खळहळै जाण बरसाळ नदी जळ। गज तुरंग गुड़िया, गुडै भड हुवा गुछळ। —गु. रू. ब.

उ०—२ तोप् का जजीरा चौतरफ फेरे। दोऊ तरफ दगी तोपूं अताळ। भालूंका झलहळ गोळूं का बरसाळ। धोमूं का अधार। —सू. प्र.

२ वर्षा ऋतु।

रू भे—बरसाळ, बरसाळा, बरसाळा, बरसाला।

बरसाळड, बरसालउ—देखो 'बरसाळौ' (रू भे.) (उ. र.)

उ०—सीम्रालइ जल-माँहि सरि, उन्हालइ पचागि । बरसालइ वगडइ वसइ, कांमकंदला-काजि । —मा. कां. प्र.

बरसाळा, बरसाला—देखो 'बरसाळ' (रू. भे.)

उ०—बरसाला ऋतु सोहामणी, जलधर वरसइ मेह। कदब रूडा वन वहिसीइ, विरहीम्रा जागइ नेह। —नळदवदती रास

बरसाळी—वि. [स. वर्षा+म्रालुच्] १ वर्षात का, वर्षा सम्बन्धी।

२ वर्षात की मौसम में होने वाला।

स. स्त्री.—१ वर्षात के मौसम की फसल, खरीफ की फसल।

उ०—उदैपुर री हवेली रा गाव नजीक तिगरो हँसो भोगरो बरसाली हँसो ३ लाग सूधो म्राधा उनाळी हँसो ३ म्राध पईं। —नैणसी

२ उक्त उपज का मुम्रावजा, हिस्सा, भाग, म्रश।

उ०—दौलतावाद रो हुकम म्रायो सु स्रीजी पौस बद३ म्रसवार हुवा तद गुजरात रा परगना री बरसाळी स्रीजी नु दिराई। —नैणसी

३ देखो 'बारसालौ' (रू. भे)

रू. भे.—बरसाळी, बरसी।

बरसाळू, बरसाळू—वि–१ जो बरसने की स्थिति मे हो, बरसने योग्य।

२ जो बरसता हो, बरसने वाला।

उ०—गोरी तो भीजें ढोला गोखडे जी, कोई म्रालीजौ भीजै, म्रालीजौ भीजै फौजा माय, हाजी ढोला माय, म्रब घर म्रायजा, बरसाळू बादळा हो जी। —लो. गी.

३ वर्षा ऋतु सम्बन्धी।

४ उक्त ऋतु की फसल के लिये चलने वाला (व्यक्ति, हळ)

उ०—कसबै सोजत हळ २०१ दरबार हासलीक बरसाळू जुपै छै। —सोजत रे मडळ री बात

स स्त्री—१ वर्षा, बारिस।

उ०—मोतियां री लडिया उची सोवै बुगला बिमाळ, रसराज पिया पपिया रै कारण म्राई बरसाळू। —लो गी

२ वर्षात की मौसम।

३ उक्त मौसम मे होने वाली फसल, खरीफ।

४ उक्त मौसम में होने वाला बुखार, विषमज्वर।

रू. भे—बरसाळू।

बरसाळै—कि. वि.—वर्षा ऋतु मे।

उ०—सुदर स्याम सरीर, बाघो कट राम पीत पीतबर। काळै बादळ सू कै, वीटाणी बीज बरसाळै। —र ज. प्र.

बरसाळौ—स. पु [स वर्षा+म्रालुच] १ वर्षा ऋतु, बरसा का मोसम।

उ०—१ ऊनाळौ उतरियो, बरसाळौ उतरियो, सीयाळौ म्रायो। —नैणसी

उ०—२ बरखा छूर गोळिया बाळै, वणियौ मेघ जाण बरसाळै। समडै मुडै मुडै समडावै, म्रसुर सजोस रोस उफणावै। —रा. रू.

२ वर्षा ऋतु के चार मास की म्रवधि, चातुर्मास।

३ वर्षा ऋतु मे गाया जाने वाला एक लोक गीत।

वि.—बरसने वाला, बरसने योग्य।

रू. भे.—बरसाळौ, बरसाळइ बरसाळउ।

बरसाबरस, बरसाबरसी—सं. पु. [स. वर्ष+वर्ष] प्रति वर्ष, हर साल।

उ०—१ सीदो उदियासिंघ सू कीधो राम करार। सोभत लो बरसा बरस, रुपिया सात हजार। —रा. रू.

उ०—२ पछै जाम बात कर मेळ कियो। घोडा ५ जाम दिया। घोडा १० री जमे म्रागै की, मु बरसाबरस दै। म्राय मिळियो। म्रमीखांन दिसिया कह्यो-मार ल्यो, थाहरो गुनैगार छै। हमैं घोडा ६० बरसाबरस दै छै। —नैणसी

रू. भे.—बरसाबरस, बरसाबरसी।

बरसि—देखो 'बरस' (रू. भे.)

उ०—कां कलपांत ज म्रादरइ? गूझ कहूं गुण-रेख। इणि घटि माधव मेलवसि, बरसि दीह विसेखि। —मा. का. प्र.

बरसिघ—स पु.—भाटी वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति। (बा. दा ख्यात)

रू. भे.—बरसिघ, बरसिह, वरसिह।

बरसि—१ देखो 'बरस' (रू. भे)

उ० कान्हडदेवि कही परि घणी, किसी वात सभीयारण तणी। केहउ गरव तुम्हे मनि धरउ, सात बरसि लीधउ डूगरउ। —का दे. प्र.

२ देखो 'बरसी' (रू भे)

बरसिण—देखो 'बरसण' (रू भे.)

बरसियोड़ो—भू. का कृ.—१ बूदो के रूप मे पृथ्वी पर पडा हुम्रा. (पानी) २ बादलो के पानी की तरह छोटे-छोटे कणो के रूप मे गिरा हुम्रा. (कोई पदार्थ) ३ म्राखो मे बहा हुम्रा. (म्रासू) ४ मधुर वाणी निकला हुम्रा, मधुर भाषित. ५ चारो म्रोर से म्राया हुम्रा, थोड़े परिश्रम से मिला हुम्रा (धन, लाभ) ६ म्रच्छी तरह से झलकित (कान्ती) ७ किसी को किसी के द्वारा डाटा जाना, फटकारा जाना. ८ म्रस्त्र-शस्त्र प्रहार हुवा हुम्रा, म्रस्त्र-शस्त्र प्रहारित। ९ दान दिया हुम्रा।

(स्त्री. बरसियोडी)

बरसींघोत—देखो 'बरसिघ' (रू भे)

बरसी—स. स्त्री [स. वार्षिकी] १ मृत व्यक्ति के पीछे किया जाने वाला प्रथम वार्षिक श्राद्ध, ब्राह्मण भोजन, दान-पुण्यादि।

उ०—तद फूलमती कही- राजा जो तूं मोनूं हाथ लगायौ तौ हूं पण मरीस ग्रर तनैंई मारीम। ग्रर एक बरस ताई हर हेके हूं ग्रवेह महल रहीम एतै बरस दिन ताई पुन्य कर कुंवर री बरसी कर पछै थारै ढोलीयै ग्राईस इतरै मनैं छेड़े मती। —चौबोली

२ मृत व्यक्ति के पीछे प्रति वर्ष मृत्यु के दिन किया जाने वाला श्राद्ध, ब्राह्मन भोजन, दान।

३ प्रति वर्ष ग्राने वाली मृतक की मृत्यु तिथि।

४ द्वादशी तिथि।

५ देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ०—रिसभदेव वरसी तप कीधउ, छमासी कीधउ वरधमांन। —स. कु.

रू. भे —बरसी, वरसि।

बरसूवलिया-स. स्त्री —राठौड वंश की एक उपशाखा।

बरसेस-स. पु [स. वर्ष+ईश] किमी सवत्मर के किमी वर्ष का ग्रधिपति ग्रह। (फलित ज्योतिष)

बरसोत, बरसोद-स स्त्री. [स वार्षिक वर्षोत्थ, वर्षोदय] १ किसी कार्य के बदले दिया जाने वाला वार्षिक वेतन, साल भर की मजदूरी जो एक साथ दी जाती है।

उ०—इयै नै म्हा चाकर राखियौ छै, ग्रो कहै छै-मनै साहूकारां कन्हा बरसोद कराय देवौ, पछै चोरी काई हुवण देऊं नही। —राजा भोज व खाफरा चोर री वात

२ राजा या शासक को प्रति वर्ष भेंट के रूप मे दिया जाने वाला लगान, कर।

उ०—पूनियै रै परगने मे हळगणात-ग्रावै। डीडवाणै रा साहूकारा री बरसोत ग्रावै। परबतसर चौरासी मारोठ री दाळ ग्रावै ग्रोर च्यारू पासा रो माल खायजै। —सूरे खींवे कांधलोत री बात

३ प्रति वर्ष दी जाने वाली सहायता, ग्रनुदान।

४ वार्षिक पुरस्कार।

उ०—बारोटो,देग रो, कवल पैला तै कीधो। वचन करे बरसोद,रुको हाथा लिख दीधो। रुपीया दोय हजार, धान मण तीन हजारा,ज्याज पाप री जेम, ग्रोय पीदं जळ धारा। —ग्ररजुनजी बारहठ

रू. भे.—बरसौंद, बरसोद, बरुद, बरुध, वरोद, वरोध।

बरसोदण-वि. स्त्री. [स. वर्षोदयन] १ जो प्रति वर्ष फल दायिनी हो। जो प्रति वर्ष फल देने के लिये ग्राती हो।

उ०—ल्यावणवाळा ने लिचपिच लापसी, जी क काटणवाळा ने गुडळी खीर। ग्रो क वरसं बरसोदण होळी पावणी जे। —लो. गी.

२ वर्ष भर निभने वाली, वर्ष भर चलने वाली।

३ प्रति वर्ष उत्थान या उन्नति करने वाली।

रू. भे.—बरसोदण।

बरसोदियौ, बरसोदीयौ-वि. [सं. वर्षोदयन] (स्त्री. बरसोदण) १ प्रति वर्ष प्राप्त होने वाला।

२ प्रति वर्ष उन्नति देने वाला।

३ वर्ष भर तक मौजूद रहने वाला, निभने वाला, चलने वाला।

४ प्रति वर्ष ग्राने वाला।

रू. भे.—बरसोदियौ, बरसोदियौ, बरसोदीयौ।

ग्रल्पा.—बरसोदौ।

बरसोदौ-वि.—प्रति वर्ष।

ग्रल्पा —बरसोडौ।

बरसोळौ-स पु. [स वर्षोपल:] १ वर्षा की बूंदों के साथ गिरने वाला छोटा हिम खण्ड, ग्रोला। (ड. र.)

२ एक खाद्य पदार्थ विशेष।

३ बढई का लकडी छीलने का एक उपकरण, ग्रौजार।

रू. भे.—बरसोळौ, बरसोलौ।

बरसोह-स पु —[सं. वर्ष्मन्] विवाह के समय दूल्हा व दुल्हन के चेहरे तथा शरीर पर ग्राने वाली ग्राभा या कान्ती।

उ०—करियरि ककण मुकरि, नैत्र बाधौ सिखराळह। वीररस्स बरसोह, कठ लज्जी बरमाळह। बिकट रूप बीदणी, खुरम घड कीध ग्राडंबर। लगन प्रब्ब रणताळ, धमळ-मगळ सिधू-सुर। ग्रधपति बहुतरि ऊमरा, सतरि खान सुरताण रा। दळ-थभ 'गजण' दुल्लह हुग्रौ, जान सेन जोगणपुरा। —गु. रू. बं.

वि वि —देखो 'सोळौ' (१)

रू. भे —वरस्सोह।

बरस्ट—देखो 'वरसट' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

बरस्वरग-स. पु.—१ मुक्ति। (ग्र. मा.)

२ जीना।

३ निश्रेणी।

बरस्स—देखो 'वरस' (रू. भे.)

उ०—ग्रायौ जाळंधर 'ग्रजौ' सुख ऊपनौ सरस्स। सुज तिण ऊपर सपनौ, पचावनौ वरस्स। —रा. रू.

बरस्सोह—देखो वरसोह' (रू. भे.)

उ०—तुरा तोर्ख मेलवा लोह तातौ। मरेवा तणौ होड रौ कोड मातौ। बरस्सोह बध्धावळै ग्राक ग्राडौ, लखै थाट ग्रानी हुग्रौ 'भीम' लाडौ। —गु. रू. बं.

बरह-स. पु. [सं. बर्ह] १ मोर की पंख।

२ मोर की पूछ का चदोवा।

३ पक्षी की पूंछ।
४ पत्र, पत्ता (प्र. मा.)
५ अनुचर वर्ग।
६ देखो 'विरह' (रू. भे.)
उ०—वरह दावानल आकुली, सखी प्रिय प्रिय भाखइ रे। भाखइ नइ दाखइ, कत किहा गयु ए। —ळन दवदती रास
रू. भे.—बरह, वरहण।

वरहण–१ देखो 'वरह' (रू. भे.) (ना. मा.)
२ देखो 'विरहण' (रू. भे.)

वरहमुख–स. पु. [स. बर्हिमुख] देवता, देव (ह. ना. मा.)
मि.—अग्नि-मुख।

वरहार–स. पु.—एक प्राचीन देश।
उ०—पचाल गोरजर नागद्रह ऊच वरहार मथुरा अवध्या वणारसी चदेरी। व. स.

वरहास–स. पु. [स. वर+भास] १ घोड़ा, अश्व। (ह. नां. मा.)
उ०—१ वरहास दौड़ै वेगला, फिरि खडै नभ उर मडळा। हुइ हूमस घम घम है-खुरां, वाजंत घम-घम पाखरां। —गु. रू. ब.
उ०—२ वरहास नास बाबर विखेरि, फारक्का जेम अति, फिरइ फेरि। आसिरा तणउ ऊजळ इ आसि, वेताळि केल्ह चढियउ वहासि। —रा. ज. सी.
२ ऊंट, उष्ट्र।
उ०—१ कमळा किया कतार, भर बूढो तंग भार। लेह देह छोडीजै लास, विलोहणै वरहास। —गु. रू. ब.
उ०—२ ढोलो कहै म साहणी, वाळी अतुळ ग्रास। साभं पुगळ पुजवै, कोई एहडो वरहास। —ढो. मा.
रू. भे.—बरहास, बरास, ब्रहास, भ्रहास, वरास, व्रहास।

वर्हि, वरही—देखो 'बरही' (रू. भे.)
उ०— कोकल परिया गान धणकिया, भीवां भमर भणकिया गाढ। वरही कपण डणकिया चहुंवळ, विविध सुबास लणकिया वाढ। —राव बापा रो गीत

वरहीवाह–स. पु. [सं. वर्ही-वाह] स्वामी कार्त्तिकेय। (नां. मा.)

वरहु—देखो 'विरह' (रू. भे.)
उ०—बार घडी जीणइ उघउ लीध, बार वरस तीणइ वरहु कीध। पुत्र राजि बइसारी करी, नल दवदती सयम वरी। —नळ दवदती रास

वरांग–स. पु. [स. वर+अगः,] १ हाथी।
[सं. वर+अगम्] २ सिर, मस्तक।
३ सुडौल शरीर।
४ विष्णु जिन के सब अंग श्रेष्ठ माने गये हैं।
५ ३२४ दिनों का एक नक्षत्र वत्सर।
६ दाल चीनी।
७ वृक्ष की शाखा, टहनी।
८ गुदा।
९ भग, योनी।
वि. [सं. वर+अगी] १ सुन्दर अगों वाला।
२ उत्तम, अवयव।
रू. भे.—बरंग, बर-अग, वरग, वरागी।

वरांगना—देखो 'वारगना' (रू. भे.)

वरांगी–स. स्त्री. [स. वर+अगी] १ हल्दी।
२ मजीठ।
३ देखो वराग' (रू. भे)

वरांसइ, वरांसउ, वरासिउ, वरांसीयइ–वि. [स. विपर्यस्त] १ परिवर्तित, बदला हुआ। (उ. र.)
२ भ्रामक।
स. पु.—१ अभाव, अनस्तित्व।
उ०—फरस रांम आपणी माइ तणउ सिर-कमल छेदइ। माघ जेवडौ विद्वास पग सूणि भूखि मूउ, नागारजुन स सिद्धि पूठिउ, गागेय जेवडौ सुभट पुत्र नइ वरांसइ पडइ। —व स.
२ प्रतिकूलता, उलटापन, विरुद्धता। (उ. र)
३ अदल-बदल, उलट-पलट। (उ. र)

वरा–सं स्त्री. [स.] १ पार्वती। २ लक्ष्मी। ३ हल्दी। ४ त्रिफला। ५ रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ६ ब्राह्मीबूंट। ७ मजीठ। ८ मदिरा, शराब। ९ गुडच। १० विडग। ११ चित्रकला १२ मेदा।

वराक–वि. [स. वराक] १ तुच्छ, नगण्य।
उ०—काट जिका कुळ ऊबटै, आठ-वाट इतफाक। वा सबळा ही पुरसडा, वैरी गिणै वराक। —बा. दा.
२ नीच, पामर, हीन।
३ अभागा, दीन, गरीब, बेचारा।
स पु [स. वराकः] १ शिव महादेव।
२ युद्ध, लड़ाई।
३ पापड, पर्पट।
४ दूध भरने से उभरे हुए स्तन।
५ योनि। (पशु)
६ बगला।
रू भे—बराक।

बराड़—सं. पु. [स. वराऽर] १ विचार ।
२ चदा ।
उ०—बिराज हुग्रो बिछड़ती वेळा, बळीयो कर ग्रापरो बराड़ ।
बिराज करै केईक बावड़िया, गया कतायक मूळ गमाड़ ।
—ग्रोपो ग्राढो
३ देखो 'बराड़' (रू. भे.)

बराड़णो बराड़बो—देखो 'बराणो, बराबो' (रू. भे.)
बराड़णहार, हारो, (हारी), बराड़णियो—वि० ।
बराड़िग्रोड़ो, बराड़ियोड़ो, बराड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बराड़ीजणो, बराड़ीजबो—कर्म वा० ।

बराछक, बराछल, बराछक—देखो 'बराछक' (रू. भे.)
उ०—हुवा रण छेह हुठै न हलीज, कटै हयणापुर ग्रौर कनोज ।
ग्रणी सिर नाखत खेंग ग्रमीर, बराछल जूझत पाबूग्र बीर ।
—पा. प्र.

बराट बराटक—स पु [सं] १ कौडी ।
२ रस्सी, डोरी ।
३ कमलगट्टा ।
रू. भे.—बराट, बराटक ।

बराटिका—स. स्त्री. [स.] १ कौडी ।
२ तुच्छ वस्तु ।

बराणो, बराबो—क्रि. स ["वरणो" क्रि. का प्रे· रू.] १ विवाह के लिये चुनकर वरण कराना, ग्रंगीकार कराना, शादी कराना ।
२ चुनवाना, पसद करवाना ।
३ स्वीकार कराना, मनवाना ।
४ निगलवाना, खिलाना ।
५ वरदान दिलाना, ग्राशीर्वाद दिलाना ।
६ याचना करवाना ।
बराणहार, हारो (हारी), बराणियो—वि० ।
बरायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बराईजणो, बराईजबो—कर्म वा० ।
बराडणो, बराड़बो—रू० भे० ।

बरात—देखो 'बरात' (रू भे.)
उ०—'पाल' रो बराती वरन पाल, सभरी हाथ ग्रहिया चडाल ।
बाचत खत ग्रायो वडे वेव, दाखू बरात मझ गोगदेव । —पा. प्र.

बरा'त—देखो 'बरसात' (रू. भे) (डूगरपुर)

बराती—देखो 'बराती' (रू. भे)
उ०—'पाल' रो बराती वरन पाल, सभरी हाथ ग्रहिया चडाळ ।
बाचत खत ग्रायो वडे वेव, दाखूं बरात मझ गोगदेव ।
—पा. प्र.
उ०—२ कोई तावड़ियै बळैगा जांन-बरातियां । —लो. गी.

बरापूर—देखो 'बरापूर' (रू. भे.)
उ०—मिळै जैत माळा मुदी वैल माळा । बरापूर सूरां धका संमि बाळा । ग्रणी सांमि ग्रागै इसै काम इंदा, वणै ऊहडै बंकड़ा क्रीत विंदा । —रा. रू.

बरारक—स. पु. [स वरारकं] हीरा ।
रू. भे —बरारक ।

बराळ, बराल—सं. पु [स. वाष्प+राज. राळ] १ ग्रग्नि की लपट
उ०—धुबि झाळ बराळ पुरा धूंबाड़े, ज्वाळ कराळ विसाळ जळै ।
इक सूर लडै रिण चूर हुवै, ग्ररि पूर धकै इक दूर पुळै ।
—रा. रू.
२ वाष्प ।
३ तीव्र उष्णता ।
रू. भे.—बरळ, बराळ ।
[स. वराळः, वरलका] ४ लौंग, लवग ।

बरावणो, बरावबो—देखो 'बराणो, बराबो' (रू. भे.)
उ०—समोभ्रम 'मांडण' दारुण सूर । हठी खळ मीर बरावत हूर ।
—सू. प्र.
बरावणहार, हारो (हारी), बरावणियो—वि० ।
बराविग्रोड़ो, बरावियोड़ो, बराव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बरावीजणो, बरावीजबो—कर्म वा० ।

बरास—देखो 'बरहास' (रू. भे.)
उ०—बैराड़ देस रा के बरास, हालता झांप भरता हुवास । पींडा-स चाक ग्ररु तन प्रचड, हरडा स बाज ताजी हुसंड । —पे. रू.

बरासन—स. पु. [स. वर+ग्रासन] १ उच्च व श्रेष्ठ ग्रासन ।
२ वर के बैठने का ग्रा ग्रासन । (विवाह)
३ दरबान ।
४ ग्रडहुल ।
५ नपुसक ।

बराह—सं. पु. [सं.] १ शूकर, सूग्रर ।
उ०—१ केहर रै हाथळ करी, कीधी दांत बराह । सूर काज कीधौ सुजड़, विध करतापण वाह । —बां. दा.
उ०—२ केताएक दिन पीछै वीसल महाराज कुमार सिकार गया । तहां एक बराह रो पीछो कियो । संग बीछुड़ियो । ग्रकेला दूर गया ।
—सिंघासण बत्तीसी

२ विष्णु के दश अवतारो मे से तीसरा अवतार।

उ०—सिर हल्लिय अघ सेस, हहर चित्त कच्छप हल्लिय। हल्लिय दाढ वराह, दुसह हल हल्ल दहल्लिय। —र. ज. प्र.

३ मेढ़ा।

४ सांड।

५ बादल।

६ युधिष्ठिर की सभा का एक ऋषि।

७ अष्टादश पुराणों में से एक।

८ शूकर के रूप का व्यूह।

९ घड़ियाल, नक्र, मगर।

१० एक प्राचीनपर्वत।

११ वाराही कन्द।

रू. भे.—बराह, बाराह, वराहउ वराहै, वरांहा, वारा, वाराह, वाराहउं, वाराहर।

वराहउ—देखो 'वराह' (रू. भे.)

उ०—जइ सूकी तउइ वडलसिरी, जइ वीधी तउ मोतिसिरी, जउ भागउ तउ वराहउ, जइ थाकउं, तउइ सोराहउ, जइ खाडउ तउ चद्र। —व. स.

वराहक—स. पु. [स.] १ कुबेर सभा मे उपस्थित एक यक्ष।

२ धृत राष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग जो जन्मेजय के सर्पसत्र में दग्ध हुआ था।

वराहजयंती—स स्त्री.—भादों सुदि तृतीया की तिथि।

वराहजी—सं. पु. [स. वराह+रा प्र. जी] १ विष्णु का वराह अवतार।

२ देखो 'वाराही' (रू. भे)

उ०—भीनमाल नगर रतन महेसदासोत रै समै स्वप्न दे नै स्त्री वराहजी अघी बाहर आया। —बा. दा. ख्यात

वराहदूहो—सं. पु.—दूहा नामक छद का एक भेद जिसमे २१ गुरु व ६ लघु होते हैं। इसको भ्रामर या सुभ्रामर भी कहते है।

उ०—विस्व दुगण मुनि कहि वरण, रस मुनि त्रिगुण रहोइ। नाम वराह सु छद वद, जिण फिरि लघु गुर जोइ। पि. प्र.

वराहमिहिर—स पु. [स] बृहत्संहिता, पच सिद्धातिका और बृहज्जातक नामक ग्रंथो के रचयिता ज्योतिष के प्रधान आचार्य।

रू. भे.—बराह मिहिर।

वराहमोती—स पु. [स वराह+मौक्तिक] एक प्रकार का मोती जो सूअर के मस्तक मे से निकलता है।

वराहसंहिता—स. पु.—वराहमिहिर द्वारा रचित बृहत्सहिता नामक ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रथ।

वराहावतार सं. पु. [स] विष्णु का तीसरा अवतार जो हिरण्याक्ष नामक असुर का वध करने के लिये हुआ था।

रू. भे.—बाराहावतार, वाराहावतार।

वराही—देखो 'वाराही' (रू. भे.)

उ०—देवी नारसिंघी वराही विख्याता, देवी इळा आधार आसुर हाता। —देवि

वरि—क्रि. वि [स. उपरि] १ ऊपर, पर।

उ०—१ कठि निगोदर अवसर नवसर उर वरि हार। कचण ककण चूडिय रुडिय बाहु स गार। —जयसेखर सूरि

उ०—२ अणियाळा नयण बाण अणियाळा, सजि कुडळ खुरसाण सिरि। वळै बाढ दे सिळी सिळी वरि, काजळ जळ वाळियौ किरि। —वेलि

२ फिर, पुन; बाद मे।

वि.—१ समान, अनुरूप।

उ०—वदन कळा सोळह सिमहर वरि, कोमळ वप्प वरन्नी केसरि। वामा अग वणी वर सुदरि, कनकलता जाणै कळप्पतरि। —गु रू. व

स. स्त्री —तरह, भाति।

उ०—१ सैसव तनि सुखपति जोवण न जाग्रति, वेस सधि सुहिणा सु वरि। हिव पल-पल चढतौ जि होइसै, प्रथम ग्यान एहवौ परि। —वेलि

उ०—२ मावीत्र मजाद मेटि बोलै मुखि, मुवर न की सिसुपाळ सरि। अति अबु कोपि कुंवर ऊफणियौ, वरसाळ वाहळा वरि। —वेलि

देखो 'वरी' (रू भे)

रू. भे —वरि।

वरिआंन—स. पु —१ एक वर्ण वृत्त जिसमे प्रथम एक दीर्घ, फिर चार ह्रस्व वर्ण के क्रम को तीन बार रखकर अत मे गुरु लघु कुल सत्रह वर्ण होते है। —ल. पिं.

२ देखो 'वरियाण' (रू. भे)

३ देखो वरियाम' (रू भे.)

वरिआम—देखो 'वरियाम' (रू. भे.)

उ०—'प्राग'हर माटा प्राक्रम जाचणा बगसणो जगम। अलविघण हीदू ओपम वीरवर वरिआंम। —ल. पिं.

वरिक्खा, वरिखा—देखो 'वरसा' (रू. भे.)

उ०—१ प्रजा राज आणद पूगी परखा। वधे देवतां कीध फूला वरिक्खा। —सू. प्र.

वरिखारित, वरिखारितु, वरिखाऋत, वरिखाऋति—देखो 'वरसारितु' (रू भे.)

उ०—१ दसराहा लग भी रहयउ, मालवणी री प्रीत । वरिश्रारति पाछी वळी, आवी सरद सुचीत । —ढो. मा.

उ०—२ ग्रीघ चाविग वीरघंटा दादुर बोलं, मुगळ लाल ममोला सा निजरि आवै । वरिश्रारित वरणी । सरदरित कहणी । —वचनिका

वरिट्ठ—देखो 'वरिस्ठ' (रू. भे.)

उ०—आणद वरत्या हुया उच्छव, वसुह मोहि वरिट्ठ ओ । सो गुरु स्रीजिणचद सूरि, धन्न नयणें दिट्ठ ओ । —स. कु.

वरियन-सं. स्त्री. पृथ्वी, भूमि । (डिं. नां. मा.)

वरियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ समभाय एक वरियां सकाज, रण हतां असुर बैनीत-राज —शि. रू.

उ०—२ नृन चाहजै सो पद सौ नहि, पद निकमौ है अधिक पद । पद इक द्वै वरियां सु कथित पद, हव सुण पतत प्रकरस हद । —वा. दा.

वरियाण-सं. पु. [सं. वरियाण] १ ज्योतिष के २७ योगों मे से अठारवें योग का नाम । (फलित ज्योतिष)

रू. भे.—वरिश्राण, बरीयाण ।

२ देखो 'वरियाम' (रू. भे.)

वरियाम-वि. [स वरेण्य या वरीयम्] १ श्रेष्ठ, उत्तम, शिरोमणि, सर्वोत्तम ।

उ०—१ सहकोय साजत करौ सुभडा, विरद भल वरियाम । कुळ जनक कुमरी व्याह करसी, रिघू वरसी राम । —र. रू.

उ०—२ अखरतौ मदा करैवा अचडां, बैर वाराह कमंघ वरियाम । आग्रै दळ सामहौ आयौ, रूक भुगत करवा बळराम । —बळराम राठौड रौ गीत

उ०—३ चडै बेल वरियाम, सुजळ ते आगळ चचळ । गरजि नाद गभीर, रोडि रिणतूर त्रबागळ । —गु. रू. ब

२ प्रवीण, चतुर ।

३ वरण करने योग्य ।

उ०—"आसकन्न" वडौ एकाधपत्ति, नीबउत्त नमौ आतम सकत्ति । ओपमा करन्न अणां-नीद, वरियाम कुंमारी वडा-वीद, । —गु रू. ब.

४ सुन्दर, रूपवान ।

उ०—१ वरियाम लगाण पलाण वणावौ, एस उपाडै ऊकडता । परचड हुसड किया तहि पक्खर, अंबर सामा ऊछळता । —गु. रू. ब.

उ०—२ निज कौसल्य केकइ सुमित्रा नांम । वरियाम तणै प्रति हेत वाम । दसरत्थ विसै इम नजर दीध । कामना पुत्र घरि जिमन कीध । —सू. प्र.

उ०—३ सिणगारी सन्नाह सू, बिसकामिणि वरियाम । वरिआई हाला वरण, करण महाजुध कांम । —हा. झा.

५ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—१ ऐ वरियाम निहस्सिया, दोय घड़ी इक जांम । "अजबौ" वीठळदास रौ, पड़ियौ खेत दुगाम । —रा. रू.

उ०—२ सनमुख साह निविद्धियौ, कीधौ नारद कांम । कळि लगी रट्ठौड हर, मरसी के वरियाम । —गु. रू. बं.

उ०—३ 'सूरउत' सुकर करिमाळ मज्झि । मुळकियौ मछरि घण रोस मज्झि, कमधज कहै कर घूणि तेग । वरियाम विडगां चडौ वेग । —गु. रू. ब.

६ जोरावर, जबरदस्त ।

उ०—१ आरब मारचौ 'अमरसी,' वड हुय्यै वरियांम । हठ कर खेंडे हारणी, कमंधज आयो काम । —द. दा.

उ०—२ राजकुळी वस छत्तीसेइ रावत, वीरति वका वरियांम । मारूधर साम तणै छळि मिळिया, करण कणेंगिरि संग्राम । —गु. रू. बं

७ प्रमुख, मुख्य ।

उ०—१ रहुच भळा दळ रोळणा, वीर उभै वरियांम । 'किशनर' 'पातल' रै करा, लदन तणी लगाम । —किसोरदांन बारहठ

उ०—२ सू किसा-एक सरदार जुवान छै ? पाका पाकां वरियांम नू, अजरायला नू खीवरा नू डाण हुला, डाकिया नू ।—रा. सा. सं.

स. पु.—मन्त्री, वजीर । (डिं. ना. मा)

रू. भे.—बरयाम, बरियाम, बरीयाम, बारियाम, बारीयाम, वरिश्राम वरीआम, वरीयान, वरीयाम ।

वरियोडौ-भू का. कृ.—१ विवाह के लिये चुना हुआ, वरण किया हुआ, अंगीकार किया हुआ, शादी किया हुआ. २ पसद किया हुआ, चुना हुआ ३ स्वीकार किया हुआ, माना हुआ. ४ निगला हुआ, खाया हुआ. ५ वरदान दिया हुआ, आशीर्वाद दिया हुआ. ६ मागा हुआ, याचना किया हुआ ।

(स्त्री. वरियोडी)

वरियोवेस—स. पु.—राठौडो की प्रसिद्ध तेरह शाखाओं में से एक । (बा. दा. ख्यात)

वरियौ—देखो 'बडियौ' (रू भे)

वरिस—देखो 'वरस' (रू. भे.)

वरिसणौ, वरिसबौ—१ देखो 'वरणौ, वरबौ' (रू. भे.)

उ०—इक भव अथवा बोइ भव अतरै रे, वरिस्यौ सिवगति नार।
—वि. कु.

२ देखो 'वरसणौ, वरसबौ' (रू भे.)

बरिसि—देखो 'वरस' (रू भे)

उ०—बार बरिसि गोदावरी, अेहवी अेक जिवार। हुम हवइ छाडइ नही, गुण केहा गमार। —मा का प्र.

बरिसियोड़ौ—१ देखो 'वरियोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वरसियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. वरिसियोडी)

बरिस्ठ—वि. [स. वरिष्ठ] १ श्रेष्ठ, उत्तम, उच्च।

उ०—मिथ्या मनण मती कर मन तू, सत् विचार उर धरना। वर वरीयान बरिस्ठ पदवी, पोथा सोई तिरना।
—स्रीसुखराम जी महाराज

२ पूजनीय, पूज्य।
३ पुराना, बुजुर्ग।
४ तुलना मे किसी से बढकर।
५ सबसे बडा।
६ सब से अधिक लबा।
७ सबसे अधिक भारी।
स पु [स. वरिष्ठ] १ तित्तिर या तीतर पक्षी।
२ नारगी का पेड।
[स. वरिष्ठं] ३ ताम्र, ताबा।
४ मिर्च।
५ चाक्षुप मनु के पुत्रो मे से एक।
६ धर्म सार्वाण मन्वतरो के सप्त ऋषियो मे से एक।
७ उरुक्रम ऋषि का एक नाम।
रू. भे —वरिट्ठ, बरिस्ठ, बरिट्ठ।

बरी—स स्त्री. [सं] १ सूर्य पत्नी छाया का नाम।
२ शतावरी का पौधा।
३ विवाह के समय वर पक्ष की ओर से बधू के लिये भेजी जाने वाली विशेष पोशाक।
४ दुल्हे व दुल्हिन की पोशाक।
५ कुए से पानी निकालने की छोटी रस्सी।
देखो 'वरि' (रू. भे)

उ०—उडै पग हात किरका हुवै अग रा, बहै रत जेम सावण बहाळा आप आपो बरी जोयनै गाडिया, लड़ै रिण भल-भला निराताळा
—र. रू.

रू. भे.—बरी, वरि, भरी।

बरीआंम—देखो 'वरियाम' (रू. भे.)

उ०—इण भाति री धवळी तजारी, वाधळीतजारी सो किणनूं जी पाका पाका बरीआंमां जोधारां करडदता।
—रा. सा. स.

बरीयां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ दुपहरा की बरीयां मैं मौ बीजण होय गयौ छै जु कोई मनुष्य फिरै डोलै न छै कैसी भाति जैसी माह की राति होय।
—वेलि टी.

उ०—२ तद राजा कहि साबास आहीज आहीज बरीयां ले आवौ।
—चौबोली

बरीयांम—१ देखो 'वरियांम' (रू भे)

२ देखो 'वरियाण' (रू भे.)

बरीयांन, बरीयांम—देखो 'वरियाम' (रू भे.)

उ०—मिथ्या मनण मती कर मन तू, सत् विचार उर धरना। वर बरीयांन वरिष्ट पदवी, पोथा सोई तिरना।
—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ बस विसुद्ध बरीयांम साम्हौ विढण। घणा दिसि दोइणौ म्हालियौ विरद घण।
—हा. झा.

उ०—३ 'पाल' हरा काळ रूपी बीज जिही खीज बडै, अडै भुजा भला गौ इसौ बरीयांम। —मारवाड रा अमरावा री वारता

बरीस—सं पु. [स. वारि+ईश] १ समुद्र, सागर।

उ०—'भीम' भाण सारीख, 'करन' भिवदान सरीसा। जोधा छळ जोधाण, बोल दळ वेळ बरीसा। —रा. रू.
२ देखो 'वरीसण' (रू. भे)

उ०—१ वीस च्यार धुर वरसवौ, सुव बरीस समार प्रथवी सीम पचीसमौं, ईस 'पतौ' अवतार। —जैनदान बारहठ

उ०—२ माहण समद सेन मीमोदा, राणा नीमू राम रिम। अरथ बरीस करै सिर ऊपर, कळह वरीस न करै किम।
—महाराणा कुभा मोकळोत री गीत

उ०—३ गढपत्ती मामरा गजा, आपण लाख पमाव। अभो प्रतपौ कोटि जुग, कोडि बरीस सुभाव। रा रू.

उ०—४ विरुदावली हसती बरीस अवनीस, लाख सासण कोडि वरीस। अडड डडण अगंजी गंजण, अनमी अमून ताहि नमी भूत करण।
—रा रू.

३ देखो 'वरस' (रू भे)

उ०—१ जोड विराजै वर तरुणि, मोड विराजै सीम। कव आसीसै लोड घन, जीवौ कोड बरीस।
—रा. रू.

उ०—२ राजा तुम्ह रहुं हजो, इम माहरी आसीस। परिकर मह परिवार मिउ, जीवै कोडि बरीस।
—मा का प्र.

रू भे.—बरीस।

बरीसण, बरीसणो–वि [स. वर्षणम्] १ दान देने वाला, दातार, उदार-चित्त।

उ०—१ लख घीर वडो लख लूट वणी वपि लाज, वड चीत बरीसण बाज गरीबनिवाज, जदुवस उजाळ महागुण जाण, तप तेज दिनंकर जेम तपै तुडितांण। —ल. पि

उ०—२ आहुई वडो राठौड विसरामिया, तज गया दूसरा न मायत टेक। हसत नित बरीसण न को इळ रायहर, हसत बध कवि नही जगत मैं हेक।

—द्वारकादास दधवाडियौ

उ०—३ कोडि बरीसणो लखघीर वडाकर, राजिद रूपक रजणो। वैर वराहळि आदळ बादळ, भूप खळा दळ भजणो। —ल. पि.

२ दान।

३ उत्सर्ग, त्याग।

रू. भे —वरीस, वरीसण, वरीस।

बरीसणो, बरीसबो–देखो 'वरसणो, वरसबो' (रू. भे.)

उ०—लाख वरीसै भोज तू, कवित नवा कहणाह। लडालूब वगियौ विड्द, गढपत जस गहणाह। —बा. दा.

बरीसणहार, हारो (हारी), बरीसणियो— वि०।

बरीसिम्रोडो, वरीसियोड़ो, बरीस्योड़ो—भू० का० कृ०।

बरीसीजणो, बरीसीजबो—कर्म वा०।

बरीसियोड़ो—देखो 'वरसियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वरीसियोडी)

बरु—देखो 'वर' (रू. भे)

उ०—१ जो अम्हारू वयणु मुणेमिड, निम्चि मो वरु मइ परिणेमिड। खेचरु भूचरु भूमिघरो। —प. प. च.

उ०—२ खूटा अरजुन सवि हथियार, माल झूझ बेउ करइ अपार। माहिउ अरजुनि वनचरु पागि प्रकटु हुई बोलइ वरु मागि।

—प. प. च.

बरुओ–स. पु. [स. वटुक, प्रा. बडुअ] १ ब्रह्मचर्यावस्था, बटुक, ब्रह्मचारी।

२ उपनयन सस्कार, यज्ञोपवीत।

३ उक्त सस्कार के अवसर पर गाया जाने वाला गीत।

४ ब्राह्मण बालक।

५ प्रोहित कर्म करन वाला विद्वान् ब्राह्मण।

रू. भे.—बरुओ।

वरुण–सं. पु. [स.] १ सर्व श्रेष्ठ वैदिक देवता जो जल का अधिष्ठाता, दस्युओ का नाशक व देवताओ का रक्षक माना गया है।

उ०—१ वरुण जाय दीन्हा तहा, रतन पदारथ जाय। आय अवंतिका सौ रतन, ब्राह्मण दीधा आय। —सिघासण बत्तीसी

उ०—२ ता पुर मे जेते बसे, सब ही वरुण समान

—गजउद्धार

२ आठ दिक्पालो मे से एक, पश्चिम दिशा का दिक्पाल।

३ पश्चिम दिशा।

४ मित्र देवताओ के साथ रहने वाले बारह आदित्यों में नौवें आदित्य का नाम।

५ समुद्र।

६ पानी, जल, नीर।

उ०—वरुण येतो कठा सूं आंग सूं विचारै, चवै इम तरण सूं मूंह चढियौ। करण दरियाव री रीत लख केलपुर, पुरंदर भरण रौ चीत पढियौ। —महारांणा राजसिंह रौ गीत

७ सूर्य।

८ आकाश।

९ सौर जगत का सब मे दूरस्थ ग्रह (नेपचून)

१० एक मरुत, जो मरुतो के तीसरे गण मे शामिल था।

११ एक देव गंधर्व, जो कश्यप एव मुनि के पुत्रों में से एक था।

रू भे —वरुण, वरण, वारुण।

वरुणग्रह–स पु —१ घोडो का एक रोग, जिसमे घोडे की जीभ, तालू, आख और लिंगेद्रिय आदि अंग काले पड जाते हैं। (शा. हो)

२ देखो 'वरुण' (रू भे.)

वरुणदेव—स. पु [सं.] जल के अधिष्ठाता, सर्व श्रेष्ठ वैदिक देवता।

उ०—सैं प्रसन्न होय आसीस देय विदा हुआ। जद समय देख वरुणदेव प्रसन्न होय राजा नूं कही-राजा, तू बडो उदार, धीर-वीर, हू तो'सू प्रसन्न हुवो। —सिंघासण बत्तीसी

वरुणपुरी, वरुणलोक–स. स्त्री. [सं] वरुण देवता का निवासस्थान, वरुणलोक।

उ०—बडे महल हैं वरुण के, बडे हाट बाजार। जोजन असी हजार मे, वरुणपुरी विसतार। —गजउद्धार

रू. भे —वरुणपुरी।

वरुणालय—स. पु. [स] समुद्र, सागर।

वरुथ—देखो 'वरूथ' (रू. भे.)

वरुथणी, वरुथनी—देखो 'वरूथणी' (रू. भे.)

वरुथी—देखो 'वरूथी' (रू भे.)

वरूथ–स. पु. [स वरूथ] १ लोहे की चद्दर या जाली का बना रथ का आवरण जो शत्रु के आघात से रथ की रक्षा करता है।

२ कवच, बख्तर।

३ ढाल।

४ सैन्यदल, सेना।

५ समूह, समुदाय।

[स. वरूथिन्] ६ रथ ।

वि.—१ कवचधारी ।

२ रक्षक ।

३ रथारूढ ।

रू. भे.—वरुथ, वरुथी, वरुथ्थ, वरूथ, वरुथी, वरूथ्थ, विरूथ वरुथ, वरुथी, विरूथ्थ, विरुथ ।

अल्पा.,—विरूतो ,वरूथौ ।

वरूथणी, वरूथनो वरूथिनी-स. स्त्री. [स. वरूथी] सेना, फौज ।
(ह. ना. मा)

रू. भे —वरूथणी, वरुथनी, वरुथिनी, वरुथी, वरूथ, वरूथणी, वरूथनी, वरूथिनी, बिरूथरा, विरूथणी, बिरूथनी, वरुथणी, वरुथनी वरुथी ।

वरूथिनी-एकादसी-स. स्त्री.—वैशाख कृष्ण एकादशी ।

वरूथौ—१ देखो 'वरूथ' (रू. भे)

२ देखो 'वरूथणी (रू. भे.)

वरूथौ-वि. [स. वरूथिन्] १ प्रचड, भयकर, जबरदस्त ।

२ वीर, योद्धा ।

३ कवचधारी ।

स पु.—१ सनापति ।

२ देखो 'वरूथ' (अल्पा , रू. भे.)

रू. भे.—वरुथौ, बिरुथौ, बिरूथ, बिरूथौ, विरूतौ ।

वरे, वरैं-क्रि. वि.—१ अधिकार मे, कब्जे मे ।

वि.—माफिक, अनुकूल ।

उ०—कुतब, गोस, अबदाळ सूफी अनै कळदर, पीरजादा मिळै साफ परभात । कान पातसाह रा भरे एक गह कज, वरैं न पडै 'जमवत' जिते वात । —नरहरदास बारहठ

रू. भे —भरैं ।

बरोळ-स पु. [स. बहं] १ बरं ।

२ देखो 'विरोळ'।

वरोलण-वि. [राज. वरोळ] १ नाश करने वाला, सहार करने वाला ।

उ०—जग करण धमजगर हुए 'तेजळ' जुही, राव रावळ रजा राण रोदा । आवसी नजर जण दन वळै आवमा, हजारा बरोळण वजर होदा । —ठाकुर कुसळसिहजी रौ गीत

वरोळणौ, वरोळबौ-क्रि. स.—देखो 'विरोळणौ, विरोळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ चातुरगी वरोळ थाटकै आवळा चमु, भू काज वावळा खळा दाटकै अनेब । आराण छेडिया चम्वा भाटकै अजाग आग, भाटकै बचाळै अवा हेडीया जनेब । —जवानजी आढौ

उ०—२खड़ा वरोळ मार चौधारा,काळ वहंता कमण कळै । रोळै दळ बोळै खडायण, वळीयौ जेम समद वळै । —महेसदास आढौ

उ०—३ देवी मेरगिर रूप सायर वरोळै । देवी सायरं रूप गिर मेर बोळै । —देवि.

उ०-४ 'माल' हरै वध सुछळ महारिण, आवै सह मानव सुर-ईस । पांणी असुर वरोळै पीधो; भारी दूध तणौ 'गज' 'भीम' । —कल्याणदास महडू

वरोळणहार, हारौ (हारी), वरोळणियौ—वि० ।

वरोळिओडो, वरोळियोड़ो, वरोळयोडो—भू० का० कृ० ।

वरोळीजणौ, वरोळीजबौ—कर्म वा० ।

बरोळणौ, बरोळबौ—रू भे.

वरोळियोडो-भू. का. कृ.—देखो 'विरोळियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वरोळियोडी)

वरौ-स. पु. [सं. वराट:] १ कूए, वापी आदि से पानी निकालने की रस्सी ।

२ हाथी को बाधने या गर्दन मे डालने का मोटा रस्सा ।

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति कपोळा रै मदगध करिनै भोरा रा भोर पडनै रहीआ छै। भौरा नू बैठा सासहै नही, सूडीर वरां बळाका खाइ नै रहीआ छै। —रा. सा. सं.

३ आश्रय ।

उ० —जप जाप होम कीजै जिगन, वरन खट्ट आमै वरौ । जोधपुर अजुधापुरी, राम राज कमधज रौ । —गु रू. बं.

वळ-सं. पु.—१ भोजन, खाना ।

उ०—१ हाथी १ घोडा ६ मोना रूपा मू मांढिया नाळेर देनै प्रोहित कामदार धार मेल्हिया । तिकै धार आया । तद सगळा नै खबर हुई, गोडा रा नाळेर आया । तदि डेरौ दिरायौ वळ रौ चारा रौ जाबतो करायौ । —जगदेव पवार री बात

उ०—२ किसतुरो बिना रहवा री आखडी । फाटा कपडा सीवण री आखडी । साथ नै वळ हुआ बिना जीमण री आखडी । वावडी रौ पाणी पीवण री आखडी । वेहती नदी रो पाणी पीवण री आखडी । —रा. सा स.

२ भोजन की सामग्री ।

उ०—उठी नूं दिन पाच कुवरसी टिकियो सो ज्यू ही तो भुजाई हुवै ज्यू ही अळ तुलै । लोग सारो आय भेळो हुवै ।
– कुंवरसी साखला री वारता

(मि. पेटियौ)

३ बलि ।

उ०-१ ताहिरा भेमौ राकस रूप कर बोल्यो । कहियो-वडा रजपूत । थो राजा तो केहि काम रो न छै । अर तूं वरदाईमेन री बेटी छै, सो तू म्हनै सौ बाकरा, सौ भैसा अर सौ मण दारू री म्हनै वळ दे तो तोनै हू वर देऊ । —नैणसी ।

उ०—२ सु उठै कोई कसवण हुवौ, तरै क्यु' पग ठाभिया, उठै उतरिया सवगी बुलायौ, तरै सवणी कह्यौ-एक आदमी अठै बळ दियौ जोईजै । तरै रावळ साथै आदमी १२ साख-साख रा था, नै एक रतनूं आसराव बेटी सूधौ थौ, तरै बारठ बिचारियौ, बिचारनै कह्यौ-सिगळी ही साख रौ एकूको छै, नै म्है दोय जणा छा, सु म्हा माहिलौ एक जणौ बळ चाडो। —नैणसी

४ गोठ्ठी, भोज ।

उ०—इतरै थोरिया विचारी । ताहरा पाबूजी तो कारणीक मरद। तद पाबूजी ईया रै जीव री लखी । तांहरा पाबूजा बोलिया। कही—रै थोरिया ! थे आ माढ लै जावौ, आज गै बळ करौ । —नैणसी

५ भोज या बलि पर लिया जाने वाला कर। (नैणसी)

६ दर्द के कारण ऊरु-मूल, कान्व या कर्ण मूल में से किसी स्थान पर होने वाली ग्रन्थी, शोथ। (अमरत)

वि वि. - ऐसा सधि-स्थलो का खुल कर कार्य न करने के कारण होता है।

७ घुमाव, मोड ।

८ टेढ़ापन, लचक

९ ऐंठन, मरोड, बाक ।

उ०—बळ काढि गामिया, परा चाढिजै पखाळा। वाढ अणी करि वलक, आब कीजै अणियाळा। —सू. प्र.

१० दिशा।

११ मेघ, बादल ।

१२ एक असुर ।

१३ पार्श्व, पहलू ।

१४ सिकुडन ।

१५ झुकाव ।

सर्व—उन ।

उ०—तूटै कमळ वहै बळ तेगा, तेगी अपत करण रिण तेगा । पहिलै घकै पाच सौ पडिया, मुगला प्राग चका सै मुडिया । —रा. रू.

क्रि वि [स वलन्] १ फिर, और।

उ० १ भूर तुक मन चौवीस धर, बळ दूजी अकवीम । ती चौवीसह चतुरथी, कळ अकवीम कवीम । —र. ज. प्र.

उ०—२ खट वहन प्रथम जनमी विसेक, दिल थयौ दुवित बळ सुता देख । मन विकता पडी नह कुटब माय, अवतरी जोग माया जु आय। —रामदान लाळस

२ ओर, तरफ।

३ देखो 'बळ' (रू भे.)

बळउ, बळक, बलक—स. स्त्री. [स. वलक] १ प्रकाश, चमक । (उ. र.)

उ०—बळ काढिजै गामिया, परा चाढिजै पखाळा । वाढ अणी करि बळक, आब कीजै अणियाळा । —सू. प्र.

२ आभा, कान्ति, तेज ।

३ किरण, रश्मि ।

४ शत्रु, दुश्मन ।

उ०—वैर वारह वाहरु वैरा, बळकां कर करवा दईवान । सत्र घर गयौ नसा जसवारो, मनव्वा रौ लागै मझमान । —रावत अरजणसिंह रौ गीत

५ आवेश, तेजी ।

६ काष्ठ का लट्ठा ।

७ तामस मन्वन्तर के सप्तर्षियों मे से एक।

८ कटि, कमर ।

उ०—हार त्रोडती, वलक मोडती, आभरण भांजती, वस्त्र गांजती, किंकिणीकलापुच्छोडती, माथउ फोडती, वक्ष:स्थल ताडती, कुंतलकलाप रोलती, प्रथ्वीतलि लोलती, सकज्जल बास्पजलि कचुक सिंचती । —व. स

रू भे.—बळक, बलक ।

बळकणौ, बळकबौ—क्रि अ.—१ बादलो के बीच बिजली का बल खाते हुए चमकना, दमकना ।

उ०—१ डोहत सूडाडड ए, स्रीखंड सरपक हिंड ए । गज-वाग मत्थै मंगळा, बळकत्त वीजक वद्दळा । —गु. रू. बं.

उ०—२ चिमै कूंत अदभूत, भडा वांका भूडडै । वादळ वादळ बळकि, वीजळता ग्रहमडै । —गु. रू. ब

२ किसी वस्तु का चमकना ।

उ०— १ बळकै वीजूजळ कुटकै कम्मळ, सूसर साबळ झळहळ ए। अडडै काछूसळ कुटकै कम्मळ. सोणी रळ-चळ खळहळ ए । —गु रू. बं.

उ०—२ बाजी हाक वाहदरा, होय वीर हकारा, बळवळ बाढ बळकिया खुरसाण दुधारा । —वी. मा.

३ आभा, कान्ती, या तेज का झलकना, शोभा देना ।

४ प्रकाशमान होना, प्रकाशित होना ।

बळकणहार, हारौ (हारी), बळकणियौ—वि० ।

बळकिओडौ, बळकियोडौ, बळक्योडौ—भू० का० कृ०।

बळकीजणौ, बळकीजबौ—भाव वा० ।

बळवकणौ, बळवकबौ—रू. भे. ।

बळकती-बेळ—स. पु.—भाला, बल्लम । (ना डिं. को.)

वलका-सं. स्त्री.—संजीवनी बूटी। (अ. मा.)

वळकियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चमका हुआ, दमका हुआ. २ झलका हुआ, शोभित. ३ प्रकाशमान हुवा हुआ।
(स्त्री. वळकियोडी)

वळकी—देखो 'वल्लकी' (रू. भे.)

वळक्कणौ, वळक्कबौ—देखो 'वळकणौ, वळकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भिदै जालिया रूप सोभा भळक्की। वगै बीजळी जाग आभै वळक्की। —सू. प्र.

उ०—२ वाराह घडक्कं दाढ खडक्कं मध कडक्कं कूरमं। सम्मूह सळक्कं कूत वळक्कं खग खळक्कं कंजम्मं। —गु रू. ब

वळक्कियोड़ौ—देखो 'वळकियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. वळक्कियोडी)

वळख-सं. पु. [स. अवलक्ष] १ उज्वल, शुभ्र। (अ. मा.)

२ श्वेत, सफेद।

वलगणौ, वलगबौ-क्रि. अ.[स. वल्गन] १ लूबना, लटकना, भूमना।

उ०—बल करी वलगइ बांहडी, तई आपी तस बाह। रग वधारइ वली वली, ते तूठउ तनि ताह।

—मा कां. प्र.

२ लिपटना।

उ०—नारी गलि वलगी रही, वेलि चढी जिम व्रक्षि। विनय करीनइ विलपती, विधि-बिधि थई विलक्षि। —मा. का. प्र

३ उछलना, कूदना।

४ पकडना।

उ०—कटितटि हूती वकडी. काढी करि करवाल। तव अगगीउ आवीकरी, करि वलगु ततकाल। —मा. का. प्र

५ छलांग मारना।

६ व्यर्थ की उछल कूद करना।

७ ऊछल उछल कर चलना।

८ अवलंबन करना।

९ उलझना, फसना।

उ०—वलता ब्रहदस्व [ऋषि] बोलि, साभलि राजा धरम। प्राणि सरव सदाय दूखिया, [येन्हि] वलगा करम। —नळाख्यान

वलगणहार, हारौ (हारी), वलगणियौ—वि०।
वलगिग्रोड़ौ, वलगियोडौ, वलग्योडौ—भू० का० कृ०।
वलगीजणौ, वलगीजबौ—भाव वा०।
वलग्गणौ, वलग्गबौ—रू० भे०।

वळगत, वळगताऊ-क्रि. वि [स वल्गित] राह चलते हुए।

वलगा—देखो 'वल्गा' (रू. भे.)

वलगार-स. पु—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—जादर हीरागर वइरागर फूलपगार, चीर वलगार चुनार, पीतांबर चादर रत्तांबर नेत्रांबर। —व स.

वलगियोडौ-भू. का कृ.—१ लूंबा हुआ, लटका हुआ, भूमा हुआ, भूला हुआ २ लिपटा हुआ. ३ उछला हुआ, कूदा हुआ. ४ पकडा हुआ. ५ छलाग मारा हुआ. ६ व्यर्थ की उछल-कूद किया हुआ. ७ उछल उछल कर चला हुआ. ८ अवलंबन किया हुआ. ९ उलझा हुआ, फसा हुआ।

(स्त्री. वलगियोडी)

वलग्गणौ, वलग्गबौ—देखो 'वलगणौ, वलगबौ' (रू. भे)

उ०—रवि किरणे हू वलग्गि चडिय अट्ठावय तित्थहि। निय २ वन्न पमाण बिंब वंदिय, जिण भत्तिहि। —अभयतिक यति

वलग्गियोड़ौ—देखो 'वलगियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. वलिग्गियोडी)

वळण वळणि, वळणौ-स पु. [स वल] १ प्रस्थान, गमन।

उ०—मेहा बूठा अन बहळ, थळ ताळा जळ रेस। करसण पाका कण खिरा, तद कउ वळण करेस। —ढो मा.

२ लौटना क्रिया।

उ०—मेवगा रगरळी मेट वसीयौ मुरग, रैण सर ऊजळी कीन राहै। वळण करवा तणी हूम पाछी वळी, मिळी जळ बूंद दरियाव माहै। —चिमनजी आढौ

३ आगमन।

४ घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव।

५ घूमने या मुडने की क्रिया या भाव।

६ वक्र गति, वक्र चाल, टेढ़ी-मेढ़ी चाल।

उ० नदी दो तड पाडती, कचवर उपाडती, रूख उन्मूलती, कुभिणि घालती, सीव ज हणाति, जटि मूलि खणती, मारग लोक खलती, वळणी चलती, तरु तोलती, नीचट जोअती, महापूरि कल-कलती, करेलि उच्छलती "। —व. स.

७ भुगतान।

८ ग्रह, नक्षत्रादि का सायनाश से हट कर चलना (ज्योतिष)

रू भे—वळण, वलन।

वळणौ, वळबौ-क्रि. अ [स. वल] १ वापस लौटना, लौट कर जाना, जाना।

उ०—१ कमधज वर मांगे जोड़ कर, हवै दान चाहौं मुज हाजर। तथास्तु कहि मुनिद वळे तुर, राका दिन मिळसी राजेस्वर। —सू प्र

उ०—२ लै 'ग्रोपा' कव कीरत लाडी, वड पीवार बजाई। इरण मांहळै कई ग्राला ग्राला, वळिया ढोल वजाई। —ग्रोपौ ग्राढौ

उ०—३ एक काठिया रै वास थौ, तठै रावळ बाड़ माहैं कूद पड़ियौ। लाखै दीठौ-जु जु जाइ (?) तरै पाळसेट तरवार वाही, सु गुदड़ी माहै ग्रागळ बै बैठी। लाखौ पाछौ वळियौ। रावळ काठिया मामा माहैं गयौ। —नैणसी

उ०—४ कहियौ ग्रौ ठाकुर सुणै, ग्रै लोक सुणै ग्रौ नीलौ रूख छै, जै छै मास ताई नायौ तौ तें कहियौ न मैं सुणियौ, मैं कहियौ न तैं सुणियौ, वाचा ग्रवाचा छै। ताहरा बीजाणद ग्राघौ हालियौ। सयणी पाछी वळी। —सयणी री बात

२ प्रस्थान करना, गमन करना।

३ लौट कर ग्राना, वापिस ग्राना।

उ०—१ पछै ग्राण सिघमुख डेरौ कियौ। पाछा फर्तै कर वळिया। पाछा ग्रावता नै दासू बैहणीवाळ ग्राय मिळियौ। दासू कह्यौ-राज म्हारौ बैर छै। जो लरावौ तो घरती थाहरी छै, सो लेवौ —नैणसी

उ०—२ भला पधारौ भींचडा, गरक मिलह मैं गात। केहर वाळा कळह री, वळता कीजो वात। —बा. दा

४ प्राप्त होना, ग्राना। (वृद्धा ग्रवस्था)।

उ०—सरघा घटगी मेग, वेग बिरधापण वळियौ।। निकळण री रथ नहीं, कळण ऊडी मैं कळियौ। मगरपचीसी माय, डोकरौ बणगौ डाकी, डागडिया निठ डिगै, थिगै टागडिया थाकी। —ऊ. का

५ घूमना, फिरना, चक्कर लगाना। (व्यायाम)

६ घूमना, मुडना।

उ०—जुडै जरद नह साथी जोवै, परदळ दीठा पचमुख। वाच न क्यु परगह वोळावै, रावत वळियौ तेण रुख। —द. दा.

७ बल खाना, वक्रगति चलना।

८ ग्रागै बढना।

उ०—हाथी लख मन हेत, वळियौ वेढ लगाय कै। चित उत धरियौ चेत, मिळवा कामण माणवा। —गजउद्धार

९ ढलना।

उ०—१ छाह ग्रग्राळ वळती छाया, जकौ पटतर देख जुए। सुबस वसीजै सहर सितारौ, हथणापुर मे वेढ हुए। —ग्रोपौ ग्राढौ

उ०—२ मन जाणै बडलौ हुग्रा, (ऊगा) वेगाप री थळियाह। बीभौ ढाळै ढालियौ, वळती छाहड़ियाह। —बीभा मोरठ री बात

१०—प्राप्त होना, मिलना।

उ०—१ तरै देवराज कह्यौ-भली वात। म्हारै माथै भाग, जो राज रा हाथ माथै ऊपर हुसी। कतौ हू मोटौ हुईस, नै मांहरी घरती गई छै सु वाळीस। माहरी दावौ वरिहाहां मांहै छै, सु वळसी। राज री मैहर था माहरै सोह बात भली हुसी। —नैणसी

उ०—२ तरै जोगी खुसी हुय, दवा दीनी कह्यौ-थाहरी ठाकुराई दिन दिन वधसी, थाहरै पग सूं ग्रा घरती कदे नही जाय, थांहरा दावा वळसी। —नैणसी

११ ग्राकर्षित होना।

१२ ग्रकन होना, लिखा जाना।

उ०—मन जाणै पीवूं पै-मिसरी, छाछ सुवरणी मिळै न छांट। वळिया सो पाछा कुण वाळै, उण घर री लेखण रा ग्राट। —ग्रोपौ ग्राढौ

१३ ग्राना।

१४ लगना, पडना।

उ०—सैणा ठरिया नयण, हिया प्रसणां परजळिया। जस प्रताप वाधियौ, घाउ नीसांणां वळिया। —गु. रू. ब.

१५ प्रवेश होना, घुसना।

उ०—दरवाजो तूटण सू किला में खळबळी माचगी। जेज व्हियां नाकाबदी होवण री भी ही सो भीमडी बिजळी रै पळाका रै ज्यूं किला रै मांयनै वळियौ। पण ड्योढी पूगतां-पूगता चांफेर सूं घेरीजग्यौ। —ग्रमरचूंनड़ी

क्रि स —१६ ढकना, लपेटना।

१७ लौटाना, देना।

उ०—इण गोरबंधियै रै कारणै मैं तौ नव दिन निरणी रह गई रै। म्हारो गोरबंध वळतौ कर। —लो गी:

१८ प्रत्युत्तर करना, उत्तर देना।

१९ भरपाई करना, चुकता करना।

२० देखो 'वळणौ, वळबौ' (रू. भे)

उ०—१ करहा लबौ वीख भरि, पवना ज्यूं वहि जाह। भ्रम वळतइ दोवळइ, धण जागती जाह। —ढो. मा.

उ०—२ सूरज ना किरण पच्छिम ढळधा, पथी सगा नइ मिळधा। विरही ना हीया वळधा, गोवाल घरै वळधा। —रा. सा. स.

वळणहार, हारौ (हारी), वळणियौ—वि०।

वळिग्रोड़ौ, वळियोडौ, वळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वळीजणौ, वळीजबौ - भाव/कर्म वा०।

वलणौ, वलबौ, वल्लणौ, वल्लबौ—रू. भे.।

वलणौ, वलबौ—देखो 'वळणौ, वळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दानि धरमि एक बीर विचारै, सइं नरेंद्र न वलइ

प्रगामारै। हेम नी गजवडिइ पताका, करण्ए जांणिन किसिउ सिराका। —सालि सूरि

उ०—२ करि लज्जा **बलतौ** कहै रै हां, घर मन अधिक उमंग। महाराज इण पापीयं रै हा, कीधउ मुझ घर भंग। —वि. कु.

उ०—३ तुरगम श्रासवतउ, पवन जिम चालतउ, सरप जिम **बलतउ** मद्यप जिम पदि पदि स्कलतउ, लीला चालतउ, रभसि माल्हतउ, क्रीडा खेलतु, मूत्कार मेल्हतउ। —व. स

उ०—४ ग्रहृदस्व रखि ग्रोचरै साभलि, कृतातन। पुण्य स्लोक एम वलतु वदि रै सुणीनि वचन।

बलणहार, हारौ (हारी), बलणियौ—वि०।

बलिग्रोड़ौ, बलियोड़ौ, बल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बलीजणौ, बलीजबौ—भाव/कर्म वा०।

बळतपूंछ—स. पु. [स. वलित-पुच्छ] श्वान, कुत्ता। (श्र. मा)

बळतासंख—स. पु —वह छप्पय छद जिसमे प्रथम कही हुई तुक की पुनरावृति लाटानुप्रास शब्दालकार के समान होती है। (र. ज. प्र.)

बलद—देखो 'बळद' (रू. भे.)

उ०—हालो नइ भवि हल खडया, फाड़या प्रथिवी पेट। सूड निदाण किया घणा, दीधो **बलद** थपेट। —स. कु.

बळदार—वि.—जो मुडा हुआ हो, घुमावदार, ऐंठा हुआ।

रू भे.—बलदार।

बळदियौ—देखो 'बळद' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—मूळ गळधौ रोहण गळी, आद्रा वाजी वाय। हाळी वेचौ **बळदियौ**, खेती लाभ नसाय। —वर्षा-विज्ञान

बळद्रिक—स. पु [स. वलिदृक] इन्द्र।

बलन—देखो 'बळण' (रू. भे.)

बलनास—स. पु [सं. वलनांश] अयनाश से किसी ग्रह के वलन अर्थात् हटकर चलने की दूरी का अश। (ज्योतिष)

बळपूरण—वि. [स बल=भोजन+पूर्ण] १ भोजन देने वाला।

स स्त्री—२ अन्न-पूर्णा।

३ वरवडी देवी का नाम।

उ०—हू इज बूंट बेछरा वीसहथी हू वाजूं। बळपूरण वरवडी हू इज सिह वण अग्राजू। —पा. प्र.

रू. भे.—बलापूरण।

बळबंड—देखो 'बळबड' (रू भे)

बलभ—देखो 'वल्लभ' (रू भे) (श्र मा.)

बळभउतंग—देखो वलभी-उत्तंग' (रू भे.) (श्र. मा.)

बलभजन, बलभज्यन—सं. पु [स. वल्लभ+जन] १ श्रीकृष्ण। (श्र. मा.)

२ मित्र-वर्ग, मित्रगण।

३ बधवजन।

रू. भे.—बळभजन।

बलभतन—सं. पु. [सं. वल्लभ-तनु] मित्र। (ह. नां. मा.)

बळभद्र—देखो 'बळभद्र' (रू. भे)

बळभद्रोत—सं. पु.—कछवाहा वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति (बां. दा ख्यात)

बळभन—सं पु [स वल्लभ] भोजन। (ह. ना मा.)

बलभा—देखो 'वल्लभा' (रू. भे) (श्र मा., ह. ना. मा.)

बलभाचारी—देखो 'वल्लभाचारय' (रू. भे.)

बळभि, बलभी—स. स्त्री. [स. वलभिः] १ घर के ऊपर बना हुआ मडप, गुंबज, गुमटी।

२ घर का सब से ऊपरी भाग, हिस्सा।

३ छत।

४ छप्पर।

५ शिखर।

६ झोपडी। (डिं को)

७ काठियावाड की एक प्राचीन नगरी।

रू. भे.—बळभि, बळभी।

बलभीउतग—स पु. यौ. [स वलभी-उत्तुग] इन्द्र का हाथी, ऐरावत।

रू. भे—वळभउतग।

बलम १ देखो 'बल्लम' (रू भे)

२ देखो वल्लभ' (रू भे)

उ०—सो एका-एक बेटौ, फेर कुवर सरब राजा रौ भार सभाळ लियौ। तेथी राजा नै घणौ **बलम**। —पलक दरियाव री बात

३ देखो वालम' (रू. भे)

बलय—स पु. [स. वलय, वलयं] १ ककण, कगण।

उ०—ललाट पट्ट मध्यविभागिकृत कस्तूरिकातिलक, बाहुवल्लरी पहिरित रत्नमय **बलय**, स्रवणि तारस्फार झलकता कुडल। —व स.

२ सधवा के धारण करने की कलाई की चूडी।

उ०—डाकी ठाकर सहण कर, डाकण दीठ **बलाय**। मायड खाय दिखाय घण, घण पण **बलय** बताय। —वी. स.

३ बाजूबध।

उ०—१ ललाट तिलक, कने झलक, बांहे वलय अंगुलि अंगुलियक कंठि कठिका, गलइ हार । —व. स.

उ०—२ जी हो एक वलय मंगल भणी, जी हो राख्या रमणी बांह । —स. कु.

४ कड़ा, छल्ला ।
५ घेरा, कुंज ।
६ वृत्त की परिधि ।
७ व्यूह रचना विशेष ।
८ वेष्ठन ।
९ कमरपेटी, इजारबंध ।
१० किनारा, छोर ।
११ गल-गंड नामक एक रोग ।
१२ ढगण के प्रथम भेद आदि ह्रस्व मात्रा का नाम (र. ज. प्र)
१३ एगण के प्रथम भेद दीर्घ मात्रा का नाम (र. ज. प्र.)
१४ देखो 'विलय' (रू. भे.) "
रू. भे.—वलय, वला ।

वलयावलि—स पु.[स वलय+अवलि] हाथो मे धारण करने के कगन ।

उ०—वलयावलि हत्थ मे यो दसतान दिपाया । —व. भा.

वळयोड़ो—देखो 'वळियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वळयोड़ी)

वळराव—देखो 'वळिराव' (रू. भे.)

उ०—वीडा झलं ऊठीयो, लग्गा असमांणा । जाणे त्रीकम वाधिया, वळराव छळाणा । —द. दा.

वलवंड—देखो 'वळवड' (रू. भे.)

वळवत, वळवती—देखो 'वळवत' (रू. भे.)

उ० --जाधपुरी जोगणिपुरी, जग जेठी वळवत । लेण क लका रामचद, हकारे हणमत । —गु. रू. ब.

वलवत्त—स. पु - १ एक दश का नाम ।

उ०—देस संख्याः आदिइ अयोध्या नगरी, उखा मडाल ग्राम च्यारि कोडि, वलवत्ता देस ३ कोडि —व. स.

२ देखो 'वळवत' (अल्पा., रू. भे.)

वळवळ—स पु. [स. वल] १ विलाप, रुदन ।
२ प्रकाश, चमक ।
३ झलक ।
४ जलन, दाह ।
५ कपन ।
क्रि. वि. (अनु.) १ चारो ओर, चहुंओर ।

उ०—वळवळ कंठ विलास, हार भुजग गग सिर खळहळ । —रामरासो

२ फिर-फिर कर, रह-रह कर, पुनः पुनः ।

उ०—ग्राह गयंद विढवा लागा, वळवळ दाखं पांण । उदध छोळ यबर लगा, फेर मथं महराण । —गजउद्धार

३ क्रमशः ।
४ निरन्तर ।

रू. भे.—वळबळ, बलवळ, बलवळां, वळवळां, वळविळ, वळावल, वली-वली, वल्वल ।

वळवळणो, वळवळबो—क्रि. अ.—१ चमकना, प्रकाशमान होना ।

उ०—खळहळ रत खाल झबकि खग झळहळ, कंठल वळवळ वीज कळा । कळ ऊकळ हुए गळोब (ळ) कंदळ, आफळ धाया उभै वळां । —गु. रू. बं.

२ धीरे-धीरे जलना, शनैं-शनैं जलना ।
३ जलन होना, दाह होना ।
४ झिलमिलाना, झलकना ।
५ कम्पायमान होना, कम्प-कम्पाना ।

वळवळणहार, हारो (हारी), वळवळणियो—वि० ।
वळवळिओड़ो, वळवळियोड़ो, वळवळयोड़ो—भू० का० कृ०
वळवळीजणो, वळवळीजबो —भाव वा० ।
वळबळणो, वळबळबो, वलवलणो, वलवलबो—रू० भे० ।

वलवलणो, वलवलबो—देखो 'वळवळणो, वळवळबो' (रू. भे.)

उ०—१ टलवलइ जिम निरजलि माछिली, वलवलइ अति अंगि वली वली । झखइ लाखइ लावर आकुलउ, विरहि विठ्ठल वांतर वाउलउ । —सालि सूरि

उ०—२ वलवलती विठ्ठल वदनि, वलती वदइ उदार । 'राजा रुठउ मनाविसु, सूपी सपति सार ।' —मा. कां. प्र.

वलवलणहार, हारो (हारी), वलवलणियो—वि. ।

वलवलिओड़ो, वलवलियोड़ो, वलवल्योड़ो—भू० का० कृ०

वलवलीजणो, वलवलीजबो—भाव वा० ।

वळवळां—देखो 'वळवळ' (रू. भे.)

उ०—१ वण उत्तग वळवळा, छटा घण अदभुत छाजे । जाळी विद्रुम जडत विवध मण नग त्रिराजै —भोपालदान सांदू

उ०—२ वळवळां अजस वधै, भडा खळा छक भारियो सुत । 'वाघ' तणो उछरग सझै, गगराव अग्राजियो । —सू. प्र

वळवळाट—स. पु —१ चमक, प्रकाश, रोशनी ।
२ झलक ।
३ जलन, दाह ।
४ झिलमिलाहट ।
५ कपन ।

६ व्यर्थ का प्रलाप, बकझक ।

बळवळियोड़ो—भू. का कृ.—१ चमका हुआ, प्रकाशमान हुवा हुआ. २ शनैः-शनैः जला हुआ ३ जलन हुवा हुआ, दाह हुवा हुआ. ४ भिल-मिलाया हुआ, झलका हुआ. ५ कंपायमान हुवा हुआ । (स्त्री. बळवळियोड़ी)

बलवलियोड़ो—देखो 'बळवळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बलवलियोड़ी)

बळवांन—देखो 'बळवान' (रू. भे.)

उ०—'नरहर' जोगीदास निभै नर, प्राणदमुत कुळ रीत उजागर । नमव नग्ग आगळ बळवांणी, 'ग्रलह' हरा वधै ग्रवसांणी ।—रा. रू.

बळबिळ—देखो 'वळ-वळ' (रू. भे.)

बलसणो, बलसबो—देखो 'विलसणो, विलसबो' (रू. भे.)

उ०—ठगीया देवता नर नाग ठगारी, हे लछमी सुण वात हमारी । बलसणहारो "कमो" वेहारी, धूर्त तो जाणू धूतारी ।

—कमा विहारी रो गीत

बलसणहार, हारो (हारी), बलसणियो—वि० ।

बलसिग्रोड़ो बलसियोड़ो, बलस्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बलसीजणो, बलसीजबो—कर्म वा० ।

बळसदन—देखो 'बळसदन' (रू. भे.)

बलसाड़णो, बलसाड़बो—देखो 'विलसाणो, विलसाबो' (रू. भे.)

बलसाड़णहार, हारो (हारी), बलसाड़णियो—वि० ।

बलसाडिग्रोड़ो, बलसाड़ियोड़ो, बलसाड़योड़ो—भू० का० कृ० ।

बलसाडीजणो, बलसाड़ीजबो—कर्म वा० ।

बलसाड़ियोड़ो—देखो 'विलसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बलसाडियोड़ी)

बलसाणो, बलसाबो—देखो 'विलसाणो, विलसाबो' (रू. भे.)

बलसाणहार, हारो (हारी), बलसाणियो—वि० ।

बलसायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बलसाईजणो, बलसाईजबो कर्म वा० ।

बलसायोड़ो—देखो 'विलसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बलसायोड़ी)

बलसावणो, बलसावबो—देखो 'विलसाणो, विलसाबो' (रू. भे.)

बलसावणहार हारो (हारी), बलसावणियो—वि० ।

बलसाविग्रोड़ो, बलसावियोड़ो, बलसाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बलसावीजणो, बलसावीजबो—कर्म वा० ।

बलसावियोड़ो—देखो विलसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बलसावियोड़ी)

बलसियोड़ो—देखो 'विलसियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बलसियोड़ी)

बलसूदन—स. पु. [स. बल+ल्यु-ग्रन] इन्द्र ।

बलहता—स. पु.—इन्द्र ।

बळहट—स. पु [राज. बळ=भोजन+स. हठ] १ हठ पूर्वक कराया जाने वाला भोजन ।

उ०—बळहट देवे 'कुंवरसी,' आवै वरण ग्रढार । पैंतीसू राजा कुळी साख-साख सरदार । —कुंवरसी सांखला री वारता

२ देवड़ा (चौहान) राजपूतों का विरुद ।

३ सोलंकी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

रू. भे.—बळहट ।

बळहटमल, बलहटमल्ल—स. पु. [राज बळ+हठ+स. मल्लः] १ हठ पूर्वक भोजन कराने वाला व्यक्ति ।

रू. भे.—बळहटमल, बळहटमल्ल ।

बळहळ—सं. स्त्री.—चमक, दमक, चमचमाट ।

उ०—कुंडळा कान बळहळ करत, सुब कळा लोवडी सिर सोहत ।

—रामदान लाळस

बळहणो, बळहबो—क्रि. ग्र.—बढना ।

उ०—रस वन फळ बोह पाय रसाळी, पुत्रा हेत करै रिखपाळी । वणि ससिवेस रमै भाभळ वन, तै बळहती वेल सोव्रन तन ।

—सू. प्र.

बळहियोड़ो—भू का. कृ—बढा हुआ ।

(स्त्री बळहियोड़ी)

बलहो—देखो 'वल्लभ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ वेगाह् वळजो बलहा, संपत लच्छी सहेत ।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

बळां-क्रि. वि.—१ ओर, तरफ ।

उ०—१ भिड़ फौजा गज दहूं बळां । निज घोर नगारा ।

—द. दा.

उ०—२ चढ़बळा जोगण खपर चढ़वै, सिभ कमळा सग । जग गीत चिहुवै—बळा जाहर, सुजस हुवै सुढग ।

—र. ज. प्र.

२ दफा, मर्तबा, बार ।

रू. भे.—बळां, वळाई ।

बळांणी—देखो 'बळाणी' (रू. भे.)

उ०—दसरावा रो डूगलो, गणगोरी रो सिरपाव, बळांणो घोड़ो सलूंबरमू भींडर महाराज पावै । —बा. दा. ख्यात

वळांपूरण—देखो 'वळपूरण' (रू. भे.)

उ०—नित वळां अनवळ दियण नर ही, **वळांपूरण** विरवडी मा वळांपूरण विरवडी । —वरवड़ी देवी रा छंद

वळांमण-स. पु —ढग, तरीका, रीति ।

वळा, वला-क्रि. वि.—१ ओर, तरफ।

उ०—उठै चत्रकोट **वळा** उजवाळ, करै जुध नाह इहा कळिचाळ । —सू. प्र.

उ०—२ किलवांइण चचळ पाय कळा, वध, सोच खड़ब्भड आठ **वळा** । —रा. रू.

२ बार, दफा, मरतबा ।

उ०— वा दो तीन **वळा** मासी रै मूडा साम्हो जोयो तो उणनै ऐडो लखायो जाणै उणरी आल्या होठा माथै चिप्योड़ी व्है ज्यूं । —फुलवाडी

१ खलिहान ।

२ अफगानिस्तान का निवासी, अफगान ।

[अ वला] ३ लोभ, लालच ।

४ आसक्ति, मोह ।

५ इश्क, प्रेम ।

६ देखो 'वलय' (रू. भे) (उ र.)

वळाको-स. पु. [स वल्ल+राज. प्र. को] १ एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान तक लगाया जाने वाला चक्कर, चक्कर, फेरा, ट्रिप ।

उ०—दीवाणजी नगर री गळिया मे टपाटप **वळाका** देवण लागा उण वेळा पूरो सोपो पड़्यो हो। —फुलवाड़ी

२ घुमाव मोड टेढापन ।

३ ऐठन, मरोड, वट ।

उ० --मछा रा **वळाका** दीधा सीसोद गनीमा माथै, घू हास तमासै मुनिंद्र रीधा धीर। म्यान हू उखेलताई कीधा खाग तेगीमणी, वेढीमणी मेलताई कीधा महावीर। —बद्रीदान खिड़ियो

४ मोच ।

५ कसक ।

रू. भे —वळाको, भळाको ।

वळानाथ–स पु. [राज. वळा=अरावली पर्वत+स नाथ] हाडा राजपूतो की विरुद, उपाधि ।

रू. भे —वळानाथ ।

वळाबंध-स. पु.—अरावली पर्वत का नाम ।

उ० —ले पाए घातिया, मेर साखा कर वाढै, **वळाबंध** ढढोल, 'कमो' अळगा हू काढै। भड तुरंग वीणार, चडै माभी गज केसर, फौज लगै फूलियै, दीध परराठा पस्सर। —गु. रू. बं.

रू. भे.—**वळाबंध** ।

वलायत—देखो 'विलायत' (रू. भे.)

उ०—तो वडका दिल्ली तखत, रक्खी पत केइ वार। ते जुध मदत **वलायतां**, सह जस कथ ससार। —जैतदान बारहठ

वलारा-सं. पु. [देशज] अनाज सहित कुचले हुए भूसे के ढेर के दोनों ओर के किनारे ।

वलालो—देखो 'विलालो' (रू. भे.)

उ०—चत लागो जा रो हर चरणा, करै न प्रेत भजन अघकार। सुकव **वलाला** थनै सेवीयो, सेवूं कम बीजा सरदार। —किसनजी आढो

(स्त्री. वलाली)

वळाव–स. पु.—१ दिशा।

उ० —वळकति खग्ग वहुवे **वळाव** । सिहरे क जाण बीजा सिळाव। —गु. रू. बं.

२ खलिहान ।

३ वह भूमि जहा खलिहान बनाया जाता है ।

वळावणो, वळावबो—देखो 'वोळाणो, बोळाबो' (रू. भे.)

उ०—तत तणक्कइ पिउ पियइ, करहउ ऊगाळेह। भल वउळावी दीहड़ा, दई **वळावण** देह । --ढो. मा.

वळावळ—देखो 'वळवळ' (रू. भे.)

उ०—'पदम' मुख आगळी दखणिया पधारण, वधारण खडग घड करणवा वार। **वळावळ** वाज नै महारिण वाजियो, साद रणै सिर साधणो मार । —गोरधन गाडण

वळावियोड़ो—देखो 'वोळायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वळावियोडी)

वळावो—देखो 'वोळाऊ' (रू. भे.)

वळाहक—देखो 'बळाहक' (रू. भे.) (सभा)

वळि, वलि-क्रि वि. [स. वलति] १ फिर, और।

उ०—१ वळि मालवणी वीनवइ, हुं थ्री दासी तुझ्झ। का चिंता चित अंतरे, सा थ्री दाखउ मुझ्झ । —ढो. मा.

उ०—२ पडिउ भीमु आसासिउ राइ गदा लेउ **वलि** सांम्हउ धाइ। अरजुनु जा भूझेवा जाइ राख सु भींम रहाविउ ठाइ । —पं. पं. च.

२ पुनः दुबारा ।

उ०—गह छंडइ गहिलउ हुअउ, पूछइ **वळि** पूछंत। मारु तणाइ संदेसड़इ, ढोलउ नहु धापत । —ढो. मा.

३ इस पर भी ।

उ०—सीह अनइ बलि पाखरयउ, कहु किम जीपणउ जाय । —सहज कीरति

४ तब ।

उ०—लहरी सायर-सदिया, बूठउ-सदउ वाव । वीछुड़िया साजण मिळइ, बळि किउ ताढउ ताव । —ढो. मा.

५ ओर, तरफ ।

उ०—जातो किण ही न दीठो तेह, फिर पाछो ना' यो वलि गेह । —वि. कु.

६ बार, दफा, मर्तबा ।

स स्त्री.—१ रेखा, लकीर ।

२ झुर्री, सिकुड़न ।

३ छप्पय नामक छंद का एक भेद जिसमे ४६ गुरु व ५४ लघु मात्राएं होती हैं ।

४ देखो 'वळि' (रू. भे.)

उ०—संपहुता सज्जण मिळधा, हूता मुझ हीयाह । आजूणइ दिन ऊपरइ, बीजा बळि कीयाह । —ढो. मा.

उ०—२ बळि राजा छळि जेण बाधियौ । नमो पराक्रम नारिमण । —ह. ना. मा.

रू भे —बळि, बलि, वलिय, वळी, बली, वलीय ।

बलित–वि [स.] १ गतिशील ।

२ घूमा हुआ, मुड़ा हुआ ।

३ गुथा हुआ ।

४ लिपटा हुआ, वेष्टित ।

५ झुर्री पड़ा हुआ ।

वळिभद्र—देखो 'बळभद्र' (रू. भे)

उ०—वळिभद्र बंधव बवब तेटीयो जी, बीजउ प्रसन कुमार । वईद्रभा नयरी वीवाह छइजी, रहीय म लावो वार । —रुकमणी मगळ

वलिमधु–सं पु.—मधुप ।

वळिमुख–स. पु [स] वानर, बदर । (डिं. को)

बलिय—१ देखो 'वलि' (रू भे)

उ०—वरतणा वारु अलिय कमली, पाच भलमनि अति भली । थापना चारित्र पाव ठवणी मुहपती पुड पाटली । —स. कु.

२ देखो 'वलित' (रू भे.)

वळियोड़ो–भू का. कृ —१ वापस लौटा हुआ, लौट कर गया हुआ, गया हुआ. २ प्रस्थान किया हुआ, गमन किया हुआ. ३ लौट कर आया हुआ ४ घूमा हुआ, फिरा हुआ, चक्कर लगाया हुआ । ५ घूमा हुआ, मुड़ा हुआ. ६ वक्र गति या बल खाकर चला हुआ. ७ आगे बढ़ा हुआ. ८ ढला हुआ. ९ प्राप्त हुवा हुआ, मिला हुआ. १० आकर्षित हुवा हुआ. ११ ढका हुआ, लपेटा हुआ. १२ लौटाया हुआ, दिया हुआ. १३ प्रत्युत्तर किया हुआ, उत्तर दिया हुआ ।

१४ देखो 'बळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वळियोड़ी)

वळियौभंवर–स. पु.—रेगिस्तान की वह भूमि जिसमें चलते समय मनुष्य धस जाता है ।

वळियौ–स. पु.—१ समय ।

२ अवसर ।

३ बैलो के सीगो पर लपेटने की रगीन डोरी ।

४ बल खाई हुई कोई वस्तु ।

५ देखो 'बळियौ' (रू भे.)

६ देखो 'वळि' (२) (अल्पा., रू. भे.)

वळिराज, वळिराजा, वळिराव—देखो 'बळिराजा' (रू. भे.)

वळिहारी, वलिहारी—देखो 'बळिहारी' (रू. भे)

उ०—साग काछि माया मडया, हरि विचि भौ भारी । जन हरिदास माया तजै, ताकी वळिहारी । —ह पु. वा.

वळिवड—देखो 'बळबड' (रू. भे.)

वळींड—देखो 'बळींड' (रू. भे.)

बली–स. स्त्री [स] चर्म या चमडी की सिकुड़न, झुर्री ।

२ पेट के दोनों ओर पेटी के सिकुड़ने से पड़ी हुई लकीर ।

३ पंक्ति ।

४ रेखा, लकीर ।

५ उत्तराधिकारी, वारिस ।

रू. भे —वळि ।

बळी, वली–स. स्त्री. [देशज] १ पहाड के नीचे की भूमि, लम्बी भूमि ।

उ०—पंवारा री पैंतीस साख, त्या माहे एक साख भायला री, भायला रो माथासरो गाव रोहीसी मगरा नीचे बळी छै तठै नै सिवाणाचीनू । —नैणसी

२ रेतीले टीबे पर प्राकृतिक रूप से बनी लहरनुमा उभरी रेखाएं ।

३ रीढ की हड्डी, मेरुदंड ।

४ सीधा रोपा जाने वाला वह काष्ठ का डंडा जिस पर धनुषाकार लकड़ी रख कर उस पर बैठ कर चक्कर काटा जाता है ।

वि. वि —देखो 'चकचूंदियौ'

५ रुपया-पैसा ।

सं. पु.[ग्र] ६ वह धर्मात्मा और महात्मा व्यक्ति जो ईश्वर की दृष्टि में प्रिय और मान्य हो।

७ शासक, बादशाह।

उ०—अकबर साह जलालदी, खितवा बली खुदाय। वाजदार कर बदगी, ताजदार हुय जाय। —बा. दा.

८ हाकिम।

९ देखो 'वलि' (रू. भे.)

उ०—१ एक सुयखंध इणि अंग नउजी, वरग छइ आठ अभिराम। आठ उद्देसा छइ बली जी, सख्याता सहस पद ठांम। —वि. कु.

उ०—२ अगनि मे बांण छूटा असख, बळी वीढ चिहुँवे बळा। पछि बांण हुवौ पूठीरखौ, 'गजण' ताम दिल्ली दळा।—गु. रू ब.

उ०—३ जासक कटक आपणइ ठामि, गूजराति आवसइ अनामि। करि वीवाह मनि आणी रली, छपन कोडि घन देसइ बली। —का. दे प्र.

रू. भे.—बळी, बली।

बलीग्रयद, बलीग्रहद–स पु [अ. वलीअ्रहद] १ बादशाह के बाद होने वाला उत्तराधिकारी, वारिस, युवराज।

२ राजकुमार, शाहजादा।

३ सतान।

उ०—पातसाह साजिहानजी रै बलीग्रयद सायजादा च्यार हुवा। —द. दा.

बलीगण–स. पु [स. अवलिगन] ताप पर चढाये जाने वाले रसोई के बर्तनो के पेंदे पर लगाया जाने वाला मिट्टी का लेपन।

बळीट, बळीठ—देखो 'बलिष्ठ' (रू. भे.)

उ०—वरु थोय जोयग अवर वाथ, हुवौ हव पाबुण एकण हाथ। वराचक ढाकिय कोट बळीट, परा थट दीठ उगाडिय पीठ। —पा प्र.

बलीय—देखो 'वलि' (रू. भे.)

उ०—वाहण जेह नै पाच सै, बलीय पाचसइ हाट। घर गोकुल पिण पाचसै तितला सकट सुघाट। —वि कु

बली-बली—देखो 'बळ-बळ' (रू. भे.) (उ र)

बळू–वि.—१ मददगार, सहायक।

२ रक्षक।

३ पक्षका, तरफ का।

रू. भे.—बळू।

बळे, बले—देखो 'बळै' (रू. भे.)

उ०—१ मगळ बुद्ध मयक, बळे सनि सुक्र ब्रहस्पति। राहु केत रवि भरुण, नबै ग्रह साति करै नित। —ह. र.

उ०—२ औ हव बळे तक्षक हुय आवै। पांण हूंत तो जाण न पावै। —सू. प्र.

उ०—३ ढोलइ करह चलावियउ, करि सिणगार अपार। आस्या तउ मिळस्या बळे, नरवर कोट जुहार। —ढो. मा.

उ०—४ मागी दू बधावणी तोने, पंथीड़ा लाखपसाव हो राज। बले सघ जोतां बाटडी, थे तो आवी आज सुणाय हो राज। —राज

उ०—५ आयत इळा अनळ पुड आयत, समद आयतां बळे ज सात। लाखा तेथ बहंचिया लाखै, बडा बडा जुग रहसै बात। —महाराणा लाखा रो गीत

बळेरण–स. पु. [देशज] छत पर बनी मुडेर।

बळेवड़ो–स. पु.[देशज] १ ऊट या बैल की गर्दन पर कपर्दिका गुथा हुआ, बाधने का आभूषण।

उ०—इसा ऊठ भेकजे छै, हाथ फेरजै छै। पीतळ रा गिरबाण रूपे रा कडा छै। ता मांहे मोहरा बेळचौ मोहरा घातजै छै लूबा कवडाळा बळेवडा घातजै छै। —रा. सा. स.

२ बैलो के दोनो सीगों को लपेटते हुए बाधी जाने वाली डोरी।

बळै–क्रि. वि.—१ फिर, और।

उ०—१ सिव नै सिसहर निलै सकति नै सीह चइन्नी। बांमण अनियै बळै वाच बळराजा दीनी। —गु. रू. ब.

उ०—२ कुटबा सहेता हुती नाव कीरं। बळै पाय रैणा नरी रग्घुवीर। —सू प्र.

उ०—३ खुशी भेळी एक बळै खुमी। उच्छव भेळो एक बळै उच्छव। —फुलवाडी

२ पुन:, दुबारा।

उ०—१ स. १६७७ पछै अमरसिधजी साथै गयो। पछै बळै आय वसियो तरै लवेरा रो पटो दियो। —नैणसी

उ० -२ तरै सोच धारै कपी देह त्याग। बळै आवियो आदि आसोक बाग। —सू. प्र.

३ पीछे, बाद मे।

वि —अतिरिक्त, अन्य।

स. स्त्री --तरह, भाति, प्रकार।

रू. भे —बळे, बले, बळै, बिळै बळ, बळे, बले, भळ, भळे, भळै।

बळोबळ, बळोबळी–सं. पु. [राज बळ] भोजन।

उ० —साभै भूखा सोई, करै परभात बळोबळ। हाथळ कूंत उपाडि, मार ढाहे मोसाहळ। —राव रिणमल री बात

क्रि. वि.—१ चारों तरफ, चहु ओर।

उ०—१ वाजि धमस ऊडड, वाजि अंबाळ चहूवळ। द्रोण वाजि है खुरा, वाजि दळ सोक बळोवळ —सू. प्र.

उ०—२ आगरं तखत सु 'डूगरो' आणता। बळोवळ लिखाणा जगत वाका। जुहारीसीघ का टाळिया जगत मे, डाकुवा रूप रा सुजस डाका। —बुधजी आसियौ

२ जिधर-किधर, यत्र-तत्र, इधर-उधर।

उ०—तद जाटा री सारोई साथ भागो सू बळोवळी मूडा लेय नै पाधे पुनै गया नै कबर स्री वीकंजी री वडी फतं हुई। —द. दा.

३ पृथक-पृथक।

४ अपने अपने मन मे।

५ पुनः पुनः, बार-बार।

उ०—करामति देखि छत्ति 'नीवदे' कळोधर, खळा भुज बळोवळ जितू खाडे। चाळबर्घं जिके लडता चापडे, मागवा बाजरी चाळ मांडै। —दुरगादास राठौड आसकरणोत रो गीत

६ निरन्तर, लगातार।

रू. भे.—बळोबळ, बलोबळी, बळोवळ, बळोवळी, वळोवळ, वळोबळी

बळौ—स. पु.—१ अरावली पर्वत।

उ०—घर हरे पाखरा वाजतं घूघरे, दीह सूझे नही खेहरे डबरे। रूधियौ बळौ रायसिघरे लस्करे, डूगरे घणा ओलाडिया डूगरे। —द. दा

२ पर्वत श्रेणी।

३ स्तभ, खम्भा।

४ बास।

५ कच्चे मकानो की छाजन के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी, कडी।

उ०—खूटा खड़ा बळा डूचिया, हाला सू हळ ठाटिया। सिरघर अर सैतीर साळा, खूड मूण थम, पाटिया। —दमदेव

६ हुक्के की नै के ऊपरी भाग पर लगाया जाने वाला सोने या चांदी का छल्ला।

रू. भे.—बळौ।

बळोवळ, बळोवळी—देखो 'बळोवळ' (रू भे.)

उ०—१ ग्रीध हळवळ समळ गळळ पळडळ गरा। त्रिसळ सळ बळोवळ कळळ हूकळ तुरा। —महादान मेहडू

उ०—२ बळोवळि ऊछळं सोर साहा विढण, बोल जागी बिचै असत बूडे। उडाडै लोह एका सिरै 'अखा' री, 'अखा' रा ऊपरा लोह ऊडै। —कमा अखावत पडियार रो गीत

बल्कल—स. पु. [स वल्कल:] १ वृक्ष की छाल।

२ उक्त छाल का वस्त्र जिसे ऋषि, मुनि महात्मा, अरण्यवासी पहनते थे।

३ ऋषि मुनि महात्माओ व तपस्वियो के पहनने का वस्त्र।

४ छिलका।

५ ऋग्वेद की वाष्फल नामक शाखा।

रू. भे.—बकल, बक्कल, बलकल बल्कल।

बल्गन—स. स्त्री. [स. वल्ग-गतो] १ घोडे की एक चाल जिसमें वह उछलता कूदता चलता है, दुलकी। (शा. हो.)

[सं. वल्गनं] २ उछाल, फलाग, छलाग।

बल्गा—सं. स्त्री. [स] लगाम, रास, बाग-डोर।

रू भे.—बल्गा, वलगा।

बल्गित—स. स्त्री. [स. वल्गित] १ घोड़े की सरपट चाल।

२ डीग, शेखी।

बल्द—स. पु. [अ.] पुत्र, तनय, सुत, बेटा।

बल्दियत—सं. स्त्री. [अ] १ पिता के नाम का परिचय।

२ पुत्र होने की अवस्था या भाव।

बल्ल—सं. पु. [स] १ गिलाफ, आवरण।

२ चादर।

३ तीन घघची के बराबर की तौल।

४ वर्जन, निषेध।

५ गमन, चाल।

बल्लकी—स. स्त्री. [स.] १ नारद की वीणा का नाम।

२ वीणा।

३ सलई का पेड।

रू. भे —बलकी, बल्लकी, वलकी।

बल्लणौ, बल्लबौ—देखो 'वळणौ, वळबौ' (रू. भे.)

उ०—सज्जण वल्लं गुण रहै, गुण भी वल्लणहार। सूकण लागी बेलडी, गया ज सीचणहार। —ढो. मा.

बल्लणहार, हारो (हारी), बल्लणियौ—वि०।

बल्लिओड़ौ, बल्लियोड़ौ, बल्ल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बल्लीजणौ, बल्लीजबौ—भाव वा०।

वल्लभ—वि [सं] (स्त्री. वल्लभा) १ प्रिय, प्यारा, स्नेही, प्रेमी।

उ०—अति वल्लभ तेहने पुत्री इक, जास मदालसा नाम रे। रूपे करि जीति जाणे रति, अपछर जिम अभिराम रे। —वि. कु.

२ सुख प्रद, सुखद।

उ०—वपि असह जळ सुख उसण वल्लभ सूर कर हुइ सीतळं।

उण किरण सिस निस जेम ग्रीखम विखम हिम द्रुम विज्जळं ।
—रा. रू.

३ वाञ्छनीय ।
४ सर्वोपरि, उत्तम ।
५ सुन्दर ।
सं. पु.—१ पति, स्वामी, प्रियतम ।
२ प्रिय व्यक्ति, प्रेमी ।
३ स्वामि, मालिक ।
४ मित्र, दोस्त ।
५ अध्यक्ष ।
६ पर्यवेक्षक ।
७ प्रधान या मुख्य ग्वाला, गोप ।
८ वैष्णव सम्प्रदाय का एक आचार्य ।
९ शुभ लक्षणो वाला घोडा, अश्व ।
१० पाण्डव पुत्र भीम का एक नाम ।
उ०—दूत लक्षण कला सवि जाणू , मू हरइ हुसि राज पराणउ ए युधिस्ठिर नरेंद्र सूयार, नामि वल्लभ भुजा बलि सार ।
—सालि सूरि

११ ज्योतिष मे कर्ण ।
रू. भे.—बलभ, बलम, बल्लभ, बल्लम, वलभ, वलम, वल्लव, वल्लह, वल्लहउ, वल्लहु, वल्ह, वल्हम, वालंभ, वालम, वालिभ ।
वालिभि, वालिम, वाल्हम ।
अल्पा ,—बल्लहौ, वल्हौ, वलहौ, वल्लहौ, वल्हौ, वालमियौ ।

वल्लभा—वि. स्त्री. [स वल्लभ] प्यारी, प्रिय ।
उ०—'जग रूप' मधू 'जगनाथ-कुळ,' पदमणि किरि सूरज प्रभा ।
बनोतो कुलीणा कुरम वडो, परम लछि पती वल्लभा ।
—गु. रू. ब.

स. स्त्री. पत्नी, स्त्री, प्रिया ।
रू. भे.—बल्भा, वल्लहा, वल्लही ।

वल्लभाचारय—स. पु [स वल्लभ-आचार्य] चार वैष्णव सम्प्रदायो मे से एक सम्प्रदाय के प्रवर्तक ।
रू. भे —वलभाचारी ।

वल्लव—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)
उ०—कथ सभर खेड नरेंद्र कही । सन मधिय वल्लव जीद सही ।
—पा. प्र.

वल्लवसिवा—सं. पु. [सं. शिवा+वल्लभ] चदन । (अ. मा.)

वल्लह, वल्लहउ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे)
उ०—१ वच्छा ! वल्लहु तुम तणी, गिरुई रिद्धि समेउ मासऽब्भिंतर निच्छइण, मिलस्यं वरौ म खेउ । —श्रीपाल रास
उ०—२ ठविउ नेमि जिणिइं जग वल्लहउ । परमतेजिहिं तेजलु ते कहउ । —जयसेखर सूरि

वल्लहो—देखो 'वल्लभा' (रू. भे.)
उ०—बहु गुणवती गोरडी, कठि विलाइ कत । मझ-पाहिं तुझ वल्लही, तं कहीइ कुण कंत । —मा. का. प्र.

वल्लहु—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)
उ०—मुझनइं ते प्रति वल्लहु, सदा न तजतु संग । ते देखता तुझ-सिउ, रमता न रइइ रंग । —मा. का. प्र.

वल्लहौ—देखो 'वल्लभ' (अल्पा., रू. भे)
उ०—१ जीव उहा पिंजर इहा, हिवडै हूला-हेल । रे परदेसी वल्लहा, वेल विहूणा फूल । —जलाल बूबना री बात
उ०—२ हा ! बाधव हा ! वल्लहा, हा ! मुझ जीवन प्राण । पाणी में पडतौ थकौ, इम स्यु थयौ अजाण । —बि. कु.

वल्लाह—अव्य. [अ] १ ईश्वर की शपथ ।
२ सचमुच ।

वल्लियोडौ—देखो 'वळियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वल्लियोड़ी)

वल्ली—स. स्त्री [स. वल्लि, वल्ली] १ लता, बल्लरी, बेल ।
उ०—१ सर सरिता सुभ भरी, रसा सुभ करी हरीतन । अग वल्ली विसतरी, वर्ण ग्रह वरी दिसा वन । —रा. रू.
उ०—२ वल्ली तसु बीज भागवत वायौ, महि थाणौ प्रिथु दास मुख । मूळ ताल जड़ अरथ मडहे, सुथिर करणि चढि छांह सुख ।
—वेलि

२ पृथ्वी ।
३ मिट्टी ।
४ शाल-वृक्ष ।
५ अग्नि-दमयती ।
६ केवटी मोथा ।
७ काली अपराजिता ।
रू भे.—वल्लि, बल्ली ।

वल्लुर, वल्लूर—स. पु. [सं. वल्लुर, वल्लूरं] १ लता कुंज, लता मण्डप ।
२ पवन ।
३ मजरी ।
४ अनजुता खेत ।
५ रेगिस्तान ।

६ वीरान जंगल, वन ।

७ उपवन ।

[स वल्लूरः] ८ जंगली शूकर का मास ।

९ सूखा मास ।

वल्वल—स. पु.—१ बलराम द्वारा मारा जाने वाला एक दैत्य ।

२ देखो 'वलवन' (रू भे.)

वल्ह, **वल्हम**—देखो 'वल्लभ' (रू. भे)

उ०—मान्वणी जाणै घणा, मारू माथै सल्ल । पिसा ढोलो जाणै नहीं, बीछडीया वे वल्ह । —ढो मा.

उ०—२ ये ग्रादर देंण कूं ग्रापही ऊभा हुग्रा छै। जैसें कोई ग्रौर भी वल्हम हितू ग्रावै छै। त्यो ते ऊभा हुव्यै छै। — वेलि टी

वल्हौ—देखो 'वल्लभ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

वव—सं. पु. [स.] ग्यारह करणों मे एक करण जिसमें जन्म लेने वाले मनुष्य को बलवान, धीर-गभीर ग्रौर विचक्षण होना माना जाता है। (फलित ज्योतिष)

रू भे.—बब, वव ।

ववकणौ, **ववकबौ**—देखो 'भभकणौ, भभकबौ' (रू भे.)

उ०—१ मेछ तडप्फड मारका, ग्रीधाण गहक्कां । पत्र भरै रत पूरिया वीराण ववक्की । — वी. मा.

उ०—२ सुण इम वचन सधीर, वीर रणधीर ववक्कै । मतवाळा मदमत्त, घोम झाळा धकधक्कै । —पे रू.

उ० —३ माहा क्रोधणी गनीमा हुता हुचकै नरीद 'माधौ'। भूचकै भुलोक बादौ चकै कोम भार । बोमणी ग्रराबा झाळ वैताळ ववकै बकै, बाजद्रा 'बाहदरैम' हुकै जैण बार । —हुकमीचद खिडियो

ववकणहार, हारौ (हारी), **ववकणियौ** —वि० ।

ववकिग्रोडौ, **ववकियोडौ**, **ववक्योडौ**—भू० का० कृ० ।

ववकीजणौ, **ववकीजबौ**—भाव वा० ।

ववड—देखो 'वधू' (मह., रू. भे.)

ववड़ी—देखो 'वधू' (ग्रल्पा , रू. भे.)

उ०—म्हारी ग्रे ववड़िया मरवणनी, ग्रा सासड रै हुकमा मे चालै ववडिया सरवणती । —लो. गी

ववज—स. पु —१ व्यवधान, बाधा ।

उ०—सदेसाहि ववज पड्यौ, लाघ्या पग्वत दुरघट-घाट। परिदेमा परि-भूमि गयउ, वीरी जण हन चालइ बाट । —वी दे.

२ कारण ।

ववणौ, **ववबौ**—क्रि. ग्र [स वपनम्] बोवाई होना, बोया जाना ।

उ०—केहर रा नख रध्र सूं, गज मोतियां निपात । सूरत कीरत वेल रा, बीज ववै ग्रवदात । —बां. दा.

ववयण—सं पु [स. वि+वचन] यश, कीर्ति, प्रशसा । (ग्र. मा.)

ववळाणौ, **ववळाबौ**—देखो 'वोळाणौ, वोळाबौ' (रू. भे.)

उ०—सज्जणिया ववळाई कइ, गउखे चढी लहक्क। भरिया नयण कटोर ज्यउ, मुंधा हुई डहक्क । —ढो. मा.

ववळाणहार, **हारौ (हारी)**, **ववळाणियौ**—वि० ।

ववळायोडौ – भू० का० कृ० ।

ववळाईजणौ, **ववळाईजबौ** —कर्म वा० ।

ववळायोडौ—देखो 'वोळायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री ववळायोडी)

ववहाणौ, **ववहाबौ**—देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू भे.)

उ०—ववहाय घणी घण खग वही, सेखराव पडियौ समर । दौलत्तिइ पाव तजि गौ जदिन, गगाराव धरियौ गुमर । —सू. प्र.

ववहायोडौ - देखो 'वहायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. ववहायोडी)

ववहार—देखो 'व्यवहार' (रू भे.)

ववहाररासि—स. पु.—जीवाणु समूह का एक ग्रश ।

उ०—किमइ निगोदह जीव नीसरइ, ववहाररासि ते जाई नय वरइ । ग्रसख सइर तणउ करइ सहार, जीवह जीव करइ ग्राहार । —वस्तिग

ववांण—देखो 'विमान' (रू भे.)

उ०—'मालै' वेस ववाणा माई, कीत जुगा नाई कहलोत । ग्रपछर परण गयौ इकदाई, गळबाई कीदा गहलोत । —महादान मेहडू

ववासीर - देखो 'बवासीर' (रू. भे)

वसग—देखो वासुकि' (रू भे)

उ०—इद्र वज्र है एक कडक सारी धर धूजै । गुरड एक वसग ग्रनेक पम ग्राणण न पूजै । —पा प्र.

वसत—स. पु. [स.] १ षट ऋतुग्रो मे प्रथम एव प्रमुख मौसम जिसका समय चैत्र व वैशाख मास होता है।

वि वि.—इस मौसम के ग्रागमन के पूर्व पेड पोधो के सब पत्ते झड जाते है । ग्रौर सारी वनस्पती पुनः फलने-फूलने लगती है। इसलिये यह ऋतुग्रो का राजा माना है । यह शिशिर ग्रौर ग्रीष्म के बीच का मौसम है, जो ग्रत्यन्त सुहावना होता है।

२ मूर्तिमान ऋतु जो कामदेव का सखा माना है ।

३ संगीत मे छः रागो मे से दूसरा राग ।

उ०—कीजइ ग्रवसरि ग्रवसरि नवरसि रागु वसंत । तरुणी दल दोलारस सारम भमइ हसंत । —जयसेखर सूरि

४ एक ताल। (संगीत)

५ माघ सुदी पंचमी को आने वाला पर्व।

वि. वि.—इस दिन से इस ऋतु का प्रारम्भ माना जाता है।

६ फूलों का गुच्छा।

७ एक वस्त्र विशेष।

उ०—अनेक एक पेखियंति, रूप मे विरत्त ए। **वसंत** पट्टण विसाळ, जोति में नखत्त ए। —गु. रू. ब.

८ अतिसार रोग।

९ शीतला या चेचक की बीमारी।

१० मसूरिका नामक रोग।

११ पीला रंग। (डिं. को.)

रू. भे.—बसंत, वासंत।

अल्पा.—वसतड़ौ, वसंतौ।

वसंतखा—स. स्त्री [स] १ वासन्ती या माधवी लता।

२ सफेद जूही।

३ वसन्तोत्सव।

वसंतड़ौ-वि.—१ बसने वाला, रहने वाला।

उ०—अेकह वंसि **वसतड़ा**, एवड़ अंतर काइ। सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाइ। —अ. वचनिका

२ देखो 'वसंत' (अल्पा., रू. भे.)

वसंततिलक—सं. पु. [स] १ वसंत का आभूषण।

२ देखो 'वसंततिलका' (रू. भे.)

वसंततिलका—स. पु. [स. वसंततिलकः, वसंततिलका, वसंततिलकं] चौदह वर्णों का एक छन्द जिसके, प्रत्येक चरण मे तगण, भगण, जगण भगण और दो गुरु होते हैं।

रू. भे.—वसंततिलक।

वसंतदूत—स पु. [सं.] १ कोयल।

२ चैत्र मास।

३ आम का वृक्ष।

४ पंचम राग।

वसंतदूती—स. स्त्री. [सं.] १ कोयल।

२ पाडर वृक्ष।

३ माधवी लता।

वसंतपंचमी, वसंतपांचम, वसंतपांचम—स. स्त्री. [स. वसंतपंचमी] माघ शुक्ला पंचमी, माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी, इस दिन वसंत तथा रति सहित कामदेव की पूजा करने का विधान है।

उ०—प्रथमादि आग **वसंतपांचिम**, राग फाग परीखिये। हित धाम-धाम धमाळ सुख हुय, उरध भीमळ ईखिये। —रा. रू.

वि. वि.—आज कल यह सरस्वती पूजन का दिन माना जाता है।

रू. भे.—बसंतपंचमी, बसंतपांचम, बसंतपांचिम, बसंतपांचिमी, वसंतपाचम, वस्तपाचम।

वसंतबंधु—स. पु. [स] कामदेव।

वसंतभैरवी—सं. स्त्री. [स.] एक रागिनी का नाम। (संगीत)

वसंतमाक—स. पु.—सब शुद्ध स्वरों का संपूर्ण जाति का एक राग। (संगीत)

वसंतमालतीरस—देखो 'सुवरण-मालिनी-वसंत' (वैद्यक)

वसंतरत—देखो 'वसंतरितु' (रू. भे.)

उ०—मचियौ रसवीर **वसंतरत** मातौ, अवध पवन पोह गोळा तीर। कुसुम पात तर जठै 'कुसळ' हर, गहरापण कीधौ गजगीर। —अमैराम महीयारियौ

वसंतरमण, वसंतरमणि, वसंतरमणी—सं. पु.—एक छंद (गीत) विशेष जिसके प्रथम चरण में १९ मात्राएँ होती हैं तथा शेष तीनों चरणों मे १६-१६ मात्राएँ होती हैं तथा अंत भगण आता है। इसकी तुकांत मिलती है।

उ०—१ आद पाय उगणीस मत, बीजी सोळ वखाण। अंत भगण जिण गीत न, **वसंतरमणि** बखाण। —र. ज. प्र.

उ०—२ कर कर आद में हिक नगण सुभकर, धुर उगणीस मत्त नहचै घर। वे लघु होय तुकंत बराबर, सुसबद राम कहै मक्ष संुदर। गीत **वसंतरमण** किव गावत, सोळह पद-प्रत मात सुभावत —र. ज. प्र.

रू. भे.—वसंतरमणी।

वसंतरित, वसंतरितु—देखो 'वसंत' (१)

उ०—ऊपर तिठा **वसंतरित** आई, सीत वितीत हुई असुहाई। सोभै अब आद तर सारा, वर्ण नीत जिम प्रज चा वारा। —रा. रू.

रू. भे.—बसंतरितु, वसंतरत।

वसंतवाक—स. पु. [स. वसंतवाक्] संगीत दामोदर के चौदह तालो मे से एक।

वसंतसख, वसंतसखा—स. पु. [स वसंत सखः] कामदेव का एक नाम।

वसंति, वसंती—वि. [स वसन्ती] १ वसंत ऋतु का, वसंत ऋतु सम्बंधी।

२ वसंत ऋतु मे होने वाला, चलने वाला।

उ०—अबा डार कोयलिया बोलै, बहत **बसंती** बयार मा। कुंज-कुंज रसराज दंपत जहा, भंवरन ज्य मिळ डोलै। —रसीलै राजरा गीत

३ वसंती (पीले) रंग का।

स. स्त्री.—१ वसंत ऋतु की देवी, सरस्वती।

उ०—दम मास समापित गरभ दीध रित, मन व्याकुळ मधुकर मुणणति। कठिण वेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपती प्रमवती **वसति**। —वेलि

२ सरसों के फूल के समान हल्का पीला रंग ।

३ जूही ।

रू. भे.—बसती, बासंती ।

बसंतोत्सव–सं. पु. [सं.] १ वसंतपंचमी के दिन मनाया जाने वाला एक उत्सव ।

२ प्राचीन काल मे वसंतपंचमी के दूसरे दिन मनाया जाने वाला एक महोत्सव ।

३ होली का उत्सव ।

बसतौ—देखो 'वसंत' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—खेलै प्रति ही उलसतौ, वालभ विनु कैसौ बसतौ हो लाल ।
—ध. व. ग्र.

बसधरा—देखो 'वसुधरा' (रू. भे.)

उ०—असुराण प्राण मिटसी इळा, सुर वध पांण वसंधरा। नवकोट नाथ निसचौ निजर, हर धारी हरि ऊपरा। —रा रू.

बसभर—देखो 'विस्वंभर' (रू. भे.)

उ०—भीर म्हैं जका भीरू बसभर, गाज कुण सकै 'जसवंत' रा गाव । राव एक थाप ऊथापीया रडमलां, रडमला पुडदडी राखीया राव । —दुरसौ आढौ

बस–वि. [सं. वश] १ नियन्त्रण या काबू मे आया हुआ, अधीनस्थ ।

२ आज्ञानुवर्ती, आज्ञाकारी ।

३ विनम्र ।

४ किसी किसी प्रकार के जादू-टोने के प्रभाव में आया हुआ, वशीभूत ।

मुहा.—बस मे होणौ=काबू में होना, अधिकार मे होना, मुग्ध होना, मोहित होना, मोहजाल मे फसना, भ्रमित होना ।

सं. पु. [सं. वश] १ अभिलाषा, कामना संकल्प, इच्छा, चाह ।

२ नियन्त्रण, काबू, अख्त्यार ।

उ०—बस राखौ जीभ कहै इम 'बांकौ', कडवा बोल्या अमत किसौ। लोह तणी तरवार न लागै, जीभ तणी तरवार जिसौ ।—बा. दा.

३ किसी विषय या बात को अपने अनुकूल घटित करने की सामर्थ्य, शक्ति ।

४ प्रभाव, प्रभुत्व, धाक ।

५ पहुच ।

६ गति, वेग । (अ मा)

मुहा.—१ बस चालणौ=स्थिति काबू मे होना ।

२ बस मे होणौ=कोई कार्य अपने अधिकार-क्षेत्र मे होना ।

३ बस री बात=वह स्थिति जहा पर अपनी पहुँच हो, प्रभाव हो ।

७ उत्पत्ति, जन्म ।

८ रडियो का बकला, रडी खाना ।

९ देखो 'विस' (रू. भे)

रू. भे —बस, बसि ।

बसक्कि, बसख—देखो 'विसिख' (रू भे.) (ह ना. मा.)

उ०—बसक्कि झबक्कि बळक्कै सार । घावां मिळ तिम्मर घोर अपार । —गु. रू. ब.

बसट–अव्य. [सं. वषट्] यज्ञों मे अग्नि में आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला एक शब्द ।

बसटकार–सं. पु [सं. वषट्कार] १ उक्त शब्द उच्चारण करने वाला व्यक्ति ।

१ एक देवता ।

३ देवताओ के उद्देश्य से किया जाने वाला यज्ञ ।

बसटकृत–वि. [सं वषट्कृत] हवन किया हुआ, होमा हुआ, हुत ।

बसटकृत्य–सं. पु [सं. वषट्कृत्य] हवन, यज्ञ, होम ।

बसण—१ देखो 'वसन' (रू भे)

उ०—१ खंध बसण रण हाथ खग, घोडा ऊपर गेह, घर रखवाळौ बिन धरण, गिणै न त्रण सम देह । —जैतदान बारहठ

उ०—२ आज झगडा ऊपरै जावता भेस करियौ छै—कुसुम फूला रौ मोड अनै बसण कपडा रगिया है । —वी. स. टी.

२ देखो 'वमण' (रू भे)

बसणौ—१ देखो 'वसणौ' (रू भे)

२ देखो 'वसन' (अल्पा., रू भे)

बसणौ, बसबौ—देखो 'वसणौ, वसबौ' (रू. भे) (उ. र.)

उ०—१ हसतौ नृप देखे सिंघ हसियौ । विभ्रम ताम नृपति उर बसियौ ।
—सू. प्र.

उ०—२ पेट दियै अममेद रा, मरै खडग री मीच । अखरां बाहडिया गळै, बसै विमाणा बीच । —बां दा.

उ०—३ संमत १६११ अमरसिंघजी साथै गयौ । पछै संमत १६—९६ वळै बसियौ । काठमो पटै । —नैणसी

उ०—४ जिणै देसे सज्जण बसइ, तिणि दिसि वजउ वाउ । उआं लगे मो लग्गसी, ऊ ही लाखपसाउ । —ढो. मा.

उ०—५ पवन चंदनगंध हरावतउ, वदनि वासि बसइ दिसी वासतु ।
—शालि सूरि

बसणहार, हारौ, (हारी), बसणियौ – वि०

बसिओड़ौ, बसियोड़ौ, बस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बसीजणौ, बसीजबौ—भाव वा० ।

बसत—देखो 'वस्तु' (रू. भे)

उ०—१ रत प्रति चदरा कपूर, सफै समसांरा सफाई । विविध भ्रमित सुचि वसत चेहन्नि निमति चलाई । —रा. रू.

उ०—२ वरणक कहै प्रावं वसत, कै कूडै कै गूरण । चेळ पडे सो होय सुध, सैभर पडै स लूरण । —बा दा.

उ०—३ इतरी वसत कनक घट प्रांरणी। सपुट दियं कियं सहनारणी । बाळजती पतिवरता बेवं । सपत निसा जाग्ररण करि सेवं । —सू. प्र.

२ देखो 'वस्त्र' (रू. भे.)

वसतपांचम—देखो 'वसतपचमी' (रू. भे)

वसतर—देखो 'वस्त्र' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना. मा.)

उ०—पौढे ताम उठावं ऊपरि । केसर चदरण भीरण वसतर करि । —सू प्र.

वसति, वसती—स. स्त्री [स. वशित्व] १ अष्ट सिद्धियो मे से एक जिससे सब को वश मे करने की शक्ति आजाती है । (डिं को.)

२ देखो 'वस्ती' (रू भे.)

उ०—१ ओपो आढो कहै ईसबर, नित राखूं चित थारो नाम । तूं छती माय देवरण सुख तूही, ररणा तरणी वसती तू राम । —ओपो आढो

उ०—२ वसती माय मिळै नही वासो, खरच पला रो खासो । साजरण सैरण सीरवी सुम्ब रा,जीव हेकलो जासी । —भीखजी रतनू

उ०—३ ऊंडा जळ सूकै अवस, नीलो वन जळ ज्याय ; चुगल-तरणा पग फेरसूं, वसती ऊजड ज्याय । —बा दा.

उ०—४ ऊग्यो ह्रूख अफीम, नीमरो रूंख निरोगी । वसती होड हकीम, नीमडो जगम जोगी । —दसदेव

वसतु—देखो 'वस्तु' (रू. भे)

उ०—ताखी, ताव तमाम, पीनरणी भर पुमळाई । नेंडी थेंडी तरणी जाळ वसतुवा वरणाई । --दसदेव

वसतो—देखो 'बसतो' (रू. भे.)

वसत्त—१ देखो वस्तु' (रू. भे)

उ०—हुता सज्जरण-हीयडै, सयरणा हूदा हुत्त । जउ सोहरणी साचइ होग्रइ, मोहरणी बडो वसत्त । —ढो मा.

२ देखो 'वस्त्र' (रू. भे.)

उ०—करै वरिगज्ज एक हट्टु, रूप सक्कलत्त ए । साखा चौतार मुक्खमल्ल, रेसमी वसत्त ए । —गु. रू. ब.

वसत्र—देखो 'वस्त्र' (रू. भे.)

उ०—भामी वसत्र सेत तन भासत, वसन लाल खित्ररणी सुवासत —र. ज. प्र.

वसदे—१ देखो 'वसुदेव' (रू. भे.)

२ देखो 'वासदे' (रू. भे.)

वसदेराव - देखो 'वसुदेव' (रू भे.)

वसदेव—देखो 'वसुदेव' (रू भे.)

उ०—१ सेत अस्व सुभद्रे स करण-सत्र । सखा तास वसदेव सुत । —ह. नां. मा.

उ०—२ धन वसदेव तरणं गरधारी, जमदग रै घर फरस जपै । सकर रै गरणपत सारीखो, दूजो 'फतमल' असो दपै । —मेगराज आढो

२ देखो 'वासदेव' (रू. भे.)

उ०—रुई घ्रत पूंछ लपेट कर, वसदेव जगाया । देतां का एवास सब, जद आग जळाया । —केसोदास गाडरण

वसधा—देखो 'वसुधा' (रू. भे.)

उ०—वड पह वहुभ्रार भुजि कुळिभार, धर सिरणगार तपै लखधीर । विलसरण गजवाज कुंमर सकाज, वसधा राज करै बरवीर । —ल. पि.

वसधापत, वसधापति—देखो 'वसुधापति' (रू. भे.)

उ०—'जगतेस' फवज्ज प्रबधु करै, भुव कपित भार दिगीस डरै । मन मान महीपन के प्रजरे, किन पै वसधापति कोप करै । —ला. रा.

वसन—स. पु. [स. वसन] १ वस्त्र, कपडा, परिधान । (अ. मा., ह. ना. मा.)

उ०—१ भ्रूटि भूंबिय महीतलि रोली । काढ़िवा वसन कीध । होयाली —सालि सूरि

उ०—२ तन स्याम अंबुद रूप तड़िता, वसन पीत विचार । वासन्न पीत विचार सरवर, धनुख सायक धार । —र. ज. प्र.

२ कफन ।

३ आवरण, गिलाफ, आच्छादन ।

४ स्त्रियो के कमर मे धारण करने का एक आभूषण, करधनी ।

रू. भे - वसना ।

५ देखो 'विस्णु' (रू भे)

६ देखो 'वसरण' (रू. भे.)

रू. भे.—वसरा, बसन, बसन्न, वसरण, वसन्न, वासन्न ।

अल्पा—वसरणो ,वसरणो ।

वसनस—स. पु. [स. वस्नसा] स्नायु, रग, नाडी ।

वसना—देखो 'वसन' (३) (रू. भे.)

वसन्न—देखो 'वसन' (रू. भे.)

उ०—वणी सांमळो गात भीणीं वसन्नं । तिमी मूलणे जोत मोती रतन्नै । —रा. रू.

वसमगत, वसमगति—देखो 'विसमगति' (रू. भे.)

उ०—हीयैं धागीया खान जुवान छबतो नहंग, अवर नर वीसरै तणा अछमा । वसमगत देख 'जसराज' खग वाहतै, रही रथ साह गजगाह रभा । —महाराजा जसवनसिंह री गीन

वसरामणो, वसरामबो—१ देखो 'विसरामणो, विसरामबो' (रू. भे.)

उ०—वडो सूर दातार रायसीग **वसरामियो**, वडण कुण वड वडी घडा वरसी । कुजग तणी मोताज करसी कमण, कमण कोडा तणी रीझ करसी । —दुरसो आढो

२ देखो 'विस्रामणो, विस्रामबो' (रू. भे.)

३ देखो 'विसराणो, विसराबो' (रू भे.)

वसरामियोड़ो—१ देखो 'विसरामियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'विस्रामियोडो' (रू. भे)

३ देखो 'विसरायोडो'

(स्त्री. वसरामियोडी)

वसराळ—देखो 'विसराळ' (रू भे)

उ०—नवक बाग **वसराळ** गैणाग जग आगमा, खाग दावायता आव खूटी । लाय बूदी तगत लयतां लगाई, आग जैपुर नगर जाग ऊटी । —दुरजणसिंह री गीत

वसव—देखो 'विस्व' (रू. भे.)

उ०—सरखी वमद वरी सायजादी, मार नारपड जना सगार । **वसव** ऊपरै येक वखाणा, मारी वीजै सुरग मझार ।

—मेमदास आढो

२ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—**वसव** छाडै भुजग, गग, ऊलट वहावै, कहावै वेद कुण साच करसी । लख दीया 'भीम' आखर जकै लुगावै, ऊदै रव न थावै वीया 'अरसी' । —जवानजी आढो

वसवान—देखो वसीवान' (रू भे.)

उ०—१ धर डुल्लिय परिभार, पहुमि **वसवान** उचल्लिय । हल मिल्लिय परि जार, सेस अहि फन पर सल्लिय । —ला रा.

उ०—२ सुतण दासरथ रूप लसवान कोटक समर, समर जसवान न्रप, सियामामी । तवा नाम नसवान अघ भव तणा, भव तणा हिया वसवान भामी । —र. ज. प्र.

वसामथ—स पु.—पाटल नामक वृक्ष । (अ मा)

वि वि – देखो पाडळ'

वसा—स. स्त्री. [स. वशा] १ औरत, नारी, स्त्री ।

२ पत्नी, भार्या, जोरू ।

३ लडकी, पुत्री ।

४ पति की बहन, ननद ।

५ बध्या स्त्री ।

६ गौ, गाय ।

७ बाझ गौ ।

८ हथिनी ।

[स वसा] ९ भेद । (डि. को.)

१०—चरबी, मास ।

११ मस्तिष्क ।

रू. भे.—वसा ।

वसाकेतु—स. पु. [स.] पश्चिम मे उदय होने वाला एक धूम केतु, तारक-पुंज ।

वसाड़णो, वसाड़बो—देखो 'बसाणो, वसाबो' (रू भे.)

उ०—जादम जाडा वजिया, 'रामो' नै ऊदल्ल । विच सुरपुरा **वसा-ड़िया**, अछरा तणा महल्ल । —रा. रू.

वसाड़णहार, हारो (हारी) वसाड़णियो—वि० ।

वसाड़ियोड़ो, वसाड़ियोड़ो, वसाड़योड़ो—भू० का० कृ० ।

वसाड़ीजणो, वसाड़ीजबो—कर्म वा० ।

वसाड़ियोड़ो—देखो 'बसायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बसाडियोडी)

वसाणो, वसाबो—देखो 'बसाणो, बसाबो' (रू भे.)

वसाणहार, हारो (हारी), वसाणियो—वि० ।

वसायोड़ो—भू० का० कृ० ।

वसाईजणो वसाईजबो—कर्म वा० ।

वसायोडो—देखो 'वसायोडो' (रू. भे)

(स्त्री वसायोडी)

वसारेळ—स पु [स वसु=पृथ्वी+राज.रेळ=तरबतर] इन्द्र ।

उ०—घटा बाध चमराळ पखराळ फौजा घसण, दुजड तडिताळ झिबझाल दखतो । आग अणगाळ रौ गिरा अग्राजियो, वैरिया काळ वसारेळ 'वखतो' । —करणीदान कवियो

वसाळ—स पु —भेड ।

उ०—ढोलइ करह विमासियउ, देखे वीस **वसाळ** । ऊचे थळइ ज एकलो, वच्चाळइ एवाळ । —ढो. मा.

वसाव, वसावट—देखो 'वसाव' (रू भे)

उ०—नम महल न पोडै प्रमगा नचीता, वसरे गिरै **वसाव** कीया । वन तणो ऊडाव वीडरे, सीमोदा वक राम कीया ।

—मेपजी बारहठ

वसावणो, वसावबो—देखो 'बसाणो, वसाबो' (रू भे)

उ०—१ मुलक बसावणहार, चिणावै चेजा भारी। ढूंढा पडवा साळ, भखारी भीत तिबारी। —दसदेव

उ०—२ घर आंगण माहै घणा, आसै पड़ियां ताव। जुघ आंगण सोहै जिके, बालम बास बसाव। —बां. दा.

बसावणहार, हारौ (हारी), बसावणियौ—वि०।

बसाविओड़ौ, बसावियोड़ौ, बसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बसावीजणौ, बसावीजबौ—कर्म वा०।

बसावियोड़ौ—देखो 'बसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बसावियोड़ी)

बसाह-स. पु—नगर या शहर के चौहटे का नाम। (सभा)

बसि—१ देखो 'वसी' (रू. भे.)

२ देखो 'वस' (रू. भे.)

उ०—अगथीआ चदन घूमौ, देह माहारानि कसि। प्रत्यक्ष जूऔ पारलू, विसघर जेणि बहु बसि। —नळाख्यान

बसितव, बसिता—देखो 'वसित्व' (रू. भे.) (ना. मा)

बसितागाथा-सं. स्त्री—गाथा छद का एक भेद जिसमे आठ गुरु व ४१ लघु होते हैं। (पिंगल सिरोमणि)

बसित्व-स पु. [स. वशित्व] १ वशता, अधीनता।

२ एक प्रकार की सिद्धि।

रू भे.—वसितव, वसिता, वसीता।

बसिमा- देखो 'वसि' (रू. भे.)

बसियकरण—देखो 'वसीकरण' (रू भे)

उ०—मूरति तोरी हो दिल चोरी नइ रही, वसियकरण कियौ कोइ। रग दिखालइ हो रालइ जे दुख आपणौ, ते गुण रसिया जोइ। —वि. कु

बसिया—देखो 'वस्ती' (रू. भे.)

बसियोडौ—देखो वसियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वसियोडी)

बसिस्ट, बसिस्ठ-सं पु. [स वसिष्ठ] १ एक प्रचीन एव प्रसिद्ध ऋषि, जो स्वायंभुव मन्वतर मे उत्पन्न हुए ब्रह्मा के दस मानसपुत्रो में मे एक माना जाता है।

उ०—१ होता प्रभु करता जग हरता, कहता गुर बसिस्ट जिम करता। धरि गुर वचन वचन पित धारै, प्रभु सिय जुत वनवास पधारै। —सू. प्र

उ०—२ बसिस्ट आदि बह्मय, करत जातक्रमय। हळद् कुंकम हरी, करत छोह केसरी। —सू प्र.

वि. वि.—वसिष्ठ नामक सुविख्यात ब्राह्मण वंश का मूल पुरुष भी इसे ही माना जाता है एव यही वंश अयोध्या के वैदिक-कालीन सूर्यवशी (इक्ष्वाकु वशी) राजाओ का सदियों तक पौराहित्य करता रहा था। इन्हें ही ऋग्वेद के सातवें मडल के रचयिता माना जाता है।

२ एक स्मृतिकार ऋषि।

३ एक ऋषि जो भरतवशीय सम्राट रतिदेव सांकृत्य का पुरोहित था।

४ रैवत मन्वतर का एक ऋषि।

५ सावर्णि मन्वन्तर का एक ऋषि।

६ श्राद्ध देव का प्रोहित एक ऋषि।

७ सप्तर्षि मडल का एक तारा।

८ आठवा वेद व्यास, जिसे इन्द्र ने ब्रह्मांड पुराण सिखाया था।

९ एक शिल्प शास्त्रज्ञ।

१० अगस्त्य ऋषि का छोटा भाई विदेह-राज निमि का प्रोहित था।

रू. भे.—बसिस्ठ, बसीठ, बासिस्ट, बासिस्ठ, बसीठ।

बसिस्ठपुरांण-सं. पु. [सं वसिष्ठपुराण] एक उपपुराण, जिसे लिंग पुराण भी मानते हैं।

बसी-सं पु. [सं. वसि:] १ गृह, घर, निवासस्थान। (अ. मा.)

उ०—आयां वसियां आपणी, ग्रीखम थई वतीत। १७३९ गुण चाळो लागो वरस, चाळो सरस सजीत। —रा. रू.

२ वस्त्र।

[स वश्य:] ३ नौकर, चाकर, दास, अनुचर (परिग्रह)

उ०—१ रावळ नू डूंगरपुर नेड़ीहीज ठोड़ पाधर मे वताई तठै ऐ आपरा गाडा आण वसी सूधा छोडिया। —नैणसी

उ०—२ ताहरा एक दिनै ऐ चढनै घूघरोट रा पाहडा मांहै राव मालदेजी री वसी हुती, तिकै नू बध कीवी। —नैणसी

५ जागीरदारो द्वारा लिया जाने वाला कर विशेष जो प्रजा की रक्षा करने के कारण लिया जाता था।

६ वह व्यक्ति जो जागीरदार का विशेष कृपा पात्र होता था और सभी प्रकार के कर व लागो से मुक्त होता था।

उ०—हूवै वसी रौ वांणियौ, पातर हुयै खवास। हुवै कीमियागार ठग, निध हर जावै नास। —बां. दा.

वि वि.—उक्त कृपा व स्वतन्त्रता के साथ ही इसे जागीरदार की इच्छा का हर वक्त ध्यान रखना पड़ता था।

७ बसने के लिये दी जाने वाली जागीरी, स्थान।

उ०—सहसौ तेजसी वरसिंघ जोधाउत्त रौ पोत्रौ मेड़तीयौ वास राखीयो थौ तिणनु रीया वसी नुं दीनी थी।

—राव मालदे री बात

८ निवास।

उ०—जैतो जोधपुर चाकरी करै। कूपो सोभत चाकरी करै। सु जैतै री बसी बगडी माहै। सु बगडी वीरमदे रै बांटे मे ग्राई।
—नैणसी

[सं. वशि:] ८ अधिकार, कब्जा।

९ अधीनता।

१० मनमोहकता।

वि.—१ बसाया हुआ, २ आकर बसा हुआ, ३ वश मे रहने वाला।

रू. भे.—बसि, बसी, बस्सी, वसि।

बसीकर-वि. [सं वशीकर] १ वश मे करने वाला।

उ०—मंत्र बसीकर महलो, वाणी बोयलियाह। कुरजडिया गरदन कहू, कठा कोयलियाह। —पा. प्र

२ मोहित करने वाला, मुग्ध करने वाला।

रू. भे.—बसीकर।

बसीकरण, बसीकरणि-स. पु. [सं. वशीकरण] १ वश मे करने की क्रिया या भाव।

२ एक मत्र, जिसके प्रयोग से किसी को वश मे किया जा सकता है। (तन्त्र)

३ अष्ट सिद्धियो मे से एक सिद्धि। (ह ना. मा)

४ कामदेव के पाच बाणो मे से एक।

उ०—आकरसण, बसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोखण सर पच। चितवण हसणि लसणि गति संकुचणि, सुंदरी द्वारि देहरा सच। —वेलि

५ वश मे करने का कोई साधन।

उ०—वाजित्र गरथ बसीकरण वीजा सहु प्रकयथ्थ। जिए चडघा दळ उत्तरइ, तरुणि पसारइ हथ्थ। —व. स.

उ०—२ रसायनप्रयोगरसिक, प्रदरसितवलियलित, वशीकरणि प्रमूढ लक्ष खडी। —व. स

रू. भे.—बसीकरण, वसियकरण।

बसीका-स. स्त्री. [अ वासिका] अगर की लकडी।

बसीको-वि. [अ. वसिक] १ शून्य, रहित।

२ रीता, खाली।

[अ. वसीक] ३ पेंशन पाने वाला।

[स. पु.] (१) ऋण पत्र। (२) दस्तावेज। (३) इकरार नामा।

४ सरकारी खजाने मे जमा कराया जाने वाला धन जिसका सूद जमा कराने वाले के सम्बन्धियो को मिलता है।

रू. भे.—बसीको।

बसीकत-वि. [स. वशीकृत] १ मोहित, मुग्ध।

२ वश में किया हुआ।

बसीटाळ—देखो 'विस्टाळ' (रू. भे)

बसीटाळो—१ देखो 'विस्टाळो' (रू. भे.)

२ देखो 'विस्टाळ' (रू भे)

बसीट्ठी-स. पु.—१ दूत।

उ०—पचे मिलि बात पतीठी, परगच्छी हुआ बसीट्ठी। —कविकनक सोम

२ देखो 'वसीठी' (रू. भे.)

बसीठ-स. पु—१ सदेशवाहक, दूत।

उ०—हे सखी म्हारै पती कोई जोधार नें मारण री इच्छा न होवै तद उणने उर छाती मे भाला री बूडी दे अटकावै-रोकै-पण काळ तौ उठा सू प्राण लेण ने बसीठ दूत भेज देवै। —वी स टी.

३ राज दूत।

४ देखो 'वसिस्ठ' (रू. भे.)

रू भे.—बसीठ।

बसीठी-स स्त्री—१ वसीठ का कार्य।

२ सदेश लाने-लेजाने का कार्य।

रू. भे.—बसीठी, वसीट्ठी।

बसीता—देखो 'वमित्व' (रू भे)

बसीतुनीर-स पु.—तीर, बाण। (अ. मा.)

बसीभूत-वि [स वशीभूत] १ वश मे या काबू मे किया हुआ, नियंत्रित, अधीन।

२ दूसरो की इच्छा के अधीन रहने वाला।

३ मोहित, मुग्ध।

रू भे.—बसीभूत।

बसीयत-स. स्त्री [अ.] १ विदेश गमन या मरणासन्न व्यक्ति द्वारा अपनी सम्पत्ति के विभाग उपयोग के लिये की जाने वाली व्यवस्था।

२ मरणासन्न व्यक्ति का अपनी सम्पत्ति के व्यय एव प्रबंध के लिए अतिम आदेश, निर्देश।

३ मरने वाले का अतिम कथन।

४ सम्पत्ति की व्यवस्था के लिये लिखा जाने वाला दस्तावेज।

रू. भे.—बसीयत।

बसीयतनांमो-स पु [अ. वसीयतनाम] १ अपनी सम्पति की व्यवस्था के लिये लिखा जाने वाला कानूनी दस्तावेज।

२ इच्छा-पत्र।

बसीरो-सं. पु. [सं. सिच क्षरणे+क्त=प्रवसिक्त या शीक सेचने+क्त =प्रवशीकित। भागुरी के मत से प्र का लोप सिक्त अथवा शिकित=बसीको=बसीरो] प्रजा ।

उ०—१ राव सुरतांण रै बसीरा रजपूता रा गांव छै, तिण ऊपर फौज १ पंलीजै ज्यू रजपूत जुदा जुदा विखर जाय, पछै सुरतांण नू कूट मारिस्यां । —नैणसी

उ०—२ चौपदो घरण । सो ईयां रौ घरण लोकां रा खेत खावै । बसीरा लोकारा खेत ऊभा खाईजै। सु लोक बसीरो भाखरसी आगै नित-प्रत पुकार घालै । —नैणसी

बसीलौ-सं. पु. [फा. वसील.] १ आश्रय, सहारा ।

उ०—सावळ सत तणी सुण सामी, ढळवळ सहज न धारै ढील । वचन उसीला तणी बसीलौ, वड दरबारां तणौ वकील । —ओपो आढो

२ सम्बन्ध, लगाव।

३ साधन, जरिया, माध्यम ।

उ०—अंग असीला हो लाल, तुझ नइ दीठा आणदा । मुगति बसीला हो लाल, समता सुरतरु कदा । —वि. कु.

४ उपकरण ।

५ बिचौलिया ।

रू. भे.—बसीलौ ।

बसीवांन-वि. [स. वसि+प्र. वत्] १ बसने वाला, निवास करने, वाला, निवासी ।

२ वंश परम्परा के अनुसार जो स्थायी रूप से निवास करता हो ।

रू. भे.—बसीवान, बसैवान, वसवान।

बसुंधरा-स. स्त्री. [सं.] पृथ्वी, भूमि ।

उ०—ए'क तीन वसत निभाड्यौ विनायक, पवन-पाणी-वसुधरा । —लो. गी.

रू. भे.—बसदरा, बसधरा, बसुधरा, वसधरा, वसुधर, वसुधरा।

बसु-स. पु. [स.] १ धन, दौलत, द्रव्य। (अने.)

२ प्रकाश, तेज।

३ देवता, सुर ।

४ रत्न ।

५ स्वर्ण, सोना ।

६ एक ही श्रेणी के आठ देवताओं का एक गण (समूह)

उ०—तहा वेदपाठी ब्राह्मण विधिपूरवक मंत्र-बळ करि ब्रह्मादि रिखीस्वर इद्र आदि देवता अडसठ तीरथ, चार वेद, आठ वसु, अस्ट परवत दसों दिग्पाल आदि सैं आवाहन करि आहुति कर प्रसन्न किया । —सिंघासण बत्तीसी

वि. वि — आठ देवताओ के नाम इस प्रकार है —आप (अह), ध्रुव, सोम, धर या धव, अनिल, अनल, प्रत्यूष और प्रभास ।

७ कुबेर (ह. ना. मा.)

(८) इन्द्र । (९) मेघ, बादल । (ना. डि. को.) (१०) सूर्य । (११) विष्णु । (१२)शिव,रुद्र । (१३)जल, पानी । (१४) वायु । (१५) प्रजापति । (१६) तालाब, सरोवर (१७) मरुद्गण । (१८) पदार्थ, वस्तु । (१९) लवण विशेष । (२०) अगस्त्य का वृक्ष । (२१) वक-वृक्ष । (२२) छप्पय छन्द का एक भेद जिसमे ३ गुरु व १४६ लघु होते हैं। (२३) साधु पुरुष, सज्जन । (२४) अधिकार, कब्जा, वश । (२५) आठ की संख्या ।*

(डि. को) (२६) दीप्ति, चमक । (अनेका.) (२७) अग्नि, आग । (अ) (२८) किरण, रश्मि। (२९) पृथ्वी, धरती।

उ०—कछव कछवाह वामो पलट करै किम, बसु-ह चौ मांड बिहूं भडा वागै । —मिरजा राजा जयसिंह रौ गीत

(३०) उषा । (३१) अश्वी । (३२) इन्द्र की अमरापुरी । (३३) कुबेर की अलका पुरी । (३४) अमरापुरी व अलका पुरी मे बहने वाली एक नदी । (३५) दक्ष प्रजापति की कन्या का नाम । (३६) मौलश्री । (३७) वृद्धि नामक औषधि, जडी । (३८) लगाम, रास बागडोर । वि.- १ जो सब मे निवास करता हो ।

२ जिसमे सबका निवास हो ।

३ अधीन, अवलम्बित ।

क्रि. वि.—अधिकार मे, कब्जे मे, अधीन ।

उ० माल-बित सारो सभाळनै हाथ बसु कियो । —नैणसी

रू. भे.—बसु, बसू, बिसू, वसुह, वसू ।

बसुचरण-स पु.—ठगण के चतुर्थ भेद का नाम, इसमें आदि गुरु, फिर दो लघु (ऽ।।) होते हैं ।

बसुद-स. पु. [स बसु+प्र. द] १ विष्णु । २ कुबेर ।

बसुदरम-स पु. [स. वसुधर्म] इन्द्र ।

रू. भे.—बसुदरम ।

बसुदा—देखो वसुधा' (रू. भे.)

उ०—'जुजा' सुतन जमायौ जबरो, सत्रहा ऊपर इसौ सधीर । बसुदा संग वळा नै वादै, वादै वळी तोनै नर वीर ।

—ठाकुर इंदरसिंह रौ गीत

बसुदेव-स पु. [स] श्रीकृष्ण के पिता एव यदुवशियो के राजा ।

(ह. नां. मा.)

उ०—अवळा बाळक एक, अरज करू ऊभी अठै । टाबर ध्रुव री टेक, तै राखी वसुदेव तण । —रांमनाथ कवियौ

रू. भे.—वछदेव, वसुदेव, वसदे ,वसदेव ।

वसुधर, वसुधरा—देखो 'वसुधरा' (रू भे.) (डिं. ना. मा , नां. मा.)

वसुधान, वसुधा—स स्त्री [सं. वसुधा] पृथ्वी, धरती, धरा । (अ मा., डिं. को., डिं. ना. मा , ना डिं को., ना. मा , ह. ना. मा.)

उ०—१ हिचं मरै खळ हात लगधारा कुळ खोवणा । सूंपै हेकण साथ, सिर वित धर वसुधा सुजस । —बा. दा.

उ०—२ दत देता धन मागता, जगि सुणता जसवास । वसुधा डग पर वौळिया, नव कोटी म्रट-मास । —गु रू. ब.

रू. भे.—वसुदा, वसुधा, विसुधा, वसधा, वसुध्धा, वसुह, वसुहा, वसूधा ।

वसुधाधर—स पु [स.] १ विष्णु ।

२ शेषनाग ।

३ पर्वत ।

वसुधाधिप, वसुधाधिपति—देखो 'वसुधापति' (रू. भे)

वसुधाभोज—स. पु. [स वसुधाभुक्] पानी, जल । (अ. मा.)

वसुधापति—स पु —राजा, नृप ।

रू भे.—वसुधाधिप, वसधापत, वसधापति, वसुधाधिप, वसुधाधिपति ।

वसुधारा—स. स्त्री. [स] १ कुबेर की राजधानी, अलकापुरी ।

२ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

३ जैनो की एक देवि, शक्ति ।

वसुधेस—स. पु. [स. वसुधा+ईश] १ ईश्वर ।

२ राजा, नृप ।

रू. भे —वसुधेस ।

वसुध्धा—देखो 'वसुधा' (रू भे)

उ०—वसुध्धा वट्ट । पैमाळ पहट्ट । गोधूळ गरद्द । पाखै गय-मद्द । --गु. रू ब.

वसुपय—स. पु.—डगण के चतुर्थ भेद का नाम । (र. ज. प्र)

वसुप्रसुन—स. पु. [स. विसप्रसून] १ कमल ।

रू. भे.—वसूप्रसुन ।

वसुमता, वसुमति, वसुमती, वसुमत्ती—स. स्त्री. [स. वसुमति] पृथ्वी, धरती । (डिं ना मा , ना मा., ह. ना मा.)

उ०—१ डारण समर अडोल, मारण वढयो मेवासिया । तिण कारण खग तोल, बोल उबारण वसुमती ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंह री बात

उ०—२ रजनीचरण करन निरमूळहि, सारदूळ चढि गहिय त्रिसूळहि । अगपति चलिय हलिय वसुमत्ती, खीकरनी जयजयति सकत्ती । —मे. म.

रू. भे.—वसुमति, वसुमती, वसूमती ।

वसुरेता—सं पु [स. वसुरेतस्] १ अग्नि ।

२ शिव ।

वसुरोची—स. पु.—शिव ।

वसुह—१ देखो 'वसु' (रू भे)

उ०—जिम धायो जोगेस, वसुह दिख ज्याग विधूसण । जिम धायो ग्रह बाण, पत्य गो ग्रह छाडावण । —गु रू. ब.

२ देखो 'वसु' (२९) (रू. भे.) (ना. मा.)

उ०—परवड पराक्रम दाखवै, पित्त वीवनै पच दिन । 'गजसाह' वसुह राखी पगै, डहै भुज्ज डिगियो गिगन । —गु. रू. बं.

वसुहा—देखो 'वसुधा' (रू. भे.)

उ०—१ बामा देवीउ अर मुत्ति मंजुल मुत्ताहल । सयल कलावलि कलिकाय कलिमलि वसुहा हल । —स. कु.

उ०—२ वसुहां वर वड वीर धीर दुज्जणगजण गजण, सुभट पगाइ सुरताण खीय महिमूद मनरजण । —व. स.

वसूलो—देखो 'वसूलो' (रू. भे.)

वसू—देखो 'वसु' (रू. भे) (अ. मा , ना मा., ह. ना. मा.)

उ०—१ वडी विपत सह वीर, वडी कीत खाटी वसू । धरम-धुरधर धीर, पोरस धिनो प्रतापसी । —दुरसो आढो

उ०—२ भुजा फरक्की धूहडा, बहरक्की गज बोह । वसू थरक्की काबली, सुरधर छक्की मोह । —किसोरदान बारहठ

उ०—३ पछै पताई रावळ रै माळी सइयो वाकलियो तिकै रो वडो मामलो, वडो इतबार गढी री कूंची तै वसू । —नैणसी

उ०—४ कटोरा माहै फूल लीजे छै । बाकरा होसनाका वसू कीजे छै । —रा सा. स.

उ०—५ तिण कारण मरबो भलो रे, तिरसारत इण ठाम । पिण न हुवा तेह ना वसू रे, लोक वदै सहु ग्राम । —वि. कु.

उ०—६ सुरधर सब्बोधार, लियो लोहा बळि ईडर । वसू लाख छत्तीस, पूठि कन्नोज वडो घर । —गु. रू. ब.

वसूधा—देखो 'वसुधा' (रू भे.)

उ०—वसूधा प्रगट दीसती वेस्या, भूके भूप भुजग सु भूठ । —ध. व. ग्र.

वसूप्रसुन—देखो 'वसुप्रसुन' (रू भे.) (अ. मा.)

वसूमती—देखो 'वसुमती' (रू भे.) (अ मा.)

वसूल—वि. [अ.] १ वसूली करने पर जो प्राप्त हुआ हो, जो लिया गया हो, लब्ध ।

२ जो व्यय या श्रम के प्रति फल में मिला हो ।

सं. पु.—१ आय, प्राप्ति ।

२ प्राप्ति की रकम ।

बसूली-स. स्त्री. [अ.] १ वसूल करने या उगाही करने की क्रिया या भाव ।

२ लोगो से प्राप्य धन लेकर एकत्र करने की क्रिया या भाव ।

वि.—जो वसूल के लिये हो ।

रू. भे.—बसूली, बसोली ।

बसुलौ—स पु [सं. वासि] १ लकड़ी छीलने का, बढ़ई का एक औजार ।

उ०—रदोही होवै मती, मती बसुलौ मित्त । होवै करवत मारिसो, वांटरण-खाटरण वित्त । —अज्ञात

२ ईंट काटने का एक औजार विशेष ।

रू. भे.—बसूलौ, बसेलौ, बसोलौ, बायलौ, बासोलौ, वाहोलौ, भसोलौ, भासोलौ, भोयलौ, भौहलौ वसूलौ, वसोलौ, वायलौ, वासोलौ, वांहोलौ, वासूलौ ।

अल्पा.—बसूली, बसोली, बांसोली, वाहोली, वायली, वासोली ।

बसेक, बसेख—देखो 'विसेस' (रू भे.)

उ०—१ पाबूजी अर हरियौ थोरी असवार हुयनै साढिया देने कोळ आया । ताहरा बसेक हुवौ । —नैरणसी

उ०—२ दुवार है मरव्व दास, जै बसेख दुज्जयं । अतीत ग्रेह तप्प आय, प्रीत हूंत पुज्जय । —सू. प्र.

बसेखो—देखो 'विसेस' (अल्पा., रू भे)

उ० मुजरौ छै पारख मरदा री, वीरत अग खत्रवाट बसेखो । आयां खग झटका ईसर मु दोय दोय बटका देखो ।

—पहाड़खा आढ़ो

बसेरौ—देखो 'बसेरौ' (रू. भे.)

बसेस—देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—अिव माळवणी परहरै, हाल्यउ पूगळ देस । ढोला म्हा बिच मोकळा, वासा घरणा बसेस । —ढो. मा

उ०—सकारा चुरसा धारा जाणीयो जेहान साग बाखाणीयौ छत्र धारा जोडरा बसेस । आडबरा भडाळा सावरा साज ओछाडीया, अगाछाळा वागंबरा पूजीया महेस ।

—करणजी मईयारीयौ

बसोख-सं. पु [स. विशिखा] राजमार्ग, राजपथ, ग्रामरास्ता ।

उ०—बाजार हाट वाटा बसोख, इरण भात दान द्रव ओपत अनोख । हिम मणि जटत सब ग्रह होय, पूर अवर वताओ जोड़ कोय ।

—शि. रू.

बसोलौ—देखो 'वसूलौ' (रू. भे.)

बसौ-क्रि. वि.—१ वैसा, तैसा ।

उ०—आप पोढिया था सो हूं तौ म्हारै मन री खुसी सूं असो दरसाव देखियो बसो कहियो । —कुंवरसी सांखला री वारता

२ लिये, निमित्त, हेतु ।

बस्त—स. पु. [स वस्तु, बस्त] १ वासा, डेरा ।

२ गमन ।

३ मागना क्रिया ।

४ घायल करना, मारना क्रिया ।

५ नाभि के नीचे का हिस्सा, मूत्राशय ।

६ परवस्ती, कृपा ।

उ०—अतरजामी, तु अछै हो लाल, वाल्हेसर सुखीदीत जि० । साहिब बस्त तिका करौ हो लाल, जिरण करि करि आवै चीत जि० ।

—वि. कु.

[स. वस्तः] ७ बकरा ।

[अ.] ८ बीच का भाग, मध्य ।

९ देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—१ जन हरिदास मन गहि पवन ब्रह्म अगनि विसवन दहौ । अगम बस्त अतरि अगह तहां उनमनि लागा रहौ । —ह. पु. वा

उ०—२ मिळता राण घरै महाराजा, ऊछव प्रगटै मिटै अकाजा । जिती बस्त नित अन्नत जोड़ां, राजै नव नवभांत रसोड़ां ।

—रा. रू.

उ०—३ घणी प्रीति सू, अबिकाजी आपणा हाथ सूं पूजि । जु बस्त आपणा मन नइ प्यारी थी । सु वस्त आपणै हाथि की । पूजा कौ फळ हाथि आयौ । —वेलि टी.

उ०—४ जे नगर मांहइ दांनसाला, पौसधसाला, धरमसाला, गढ मदिन प्रकार, चुरासी चुहुटाणी हटस्रेणी, मांहइ बस्त संपूरण वरतइ । —व. स.

उ०—५ सचा बस्त अनेको तरणा, का न रहइ मननी कामिरणा । ऊंचा तोरण महल अनेक, एक-एक थी अधिका एक ।

—प. च. चौ.

बस्तपांचम—देखो 'वसंतपंचमी' (रू भे.)

बस्तर—देखो 'वस्त्र' (रू भे.)

उ०—घर घर ग्वालन दही बिलोवै, कर कगन झनकारै । बस्तर भूसरण तन पर धारौ, पगिया पेच मवारै । —मीरा

बस्तवत—वि. [स वस्तु-वत्] जो वस्तुओ से भरपूर हो, वस्तुओं से परिपूर्ण, वस्तु युक्त, सामग्री युक्त ।

उ०—वन ते जे व्रक्षवंत, नदी ते जे नीरवत, कटक ते जे वीरवत, देस ते जे प्रजावत, प्रासाद ते जे ध्वजावतु, वाट ते जे सूधवत, हाट

ते जे बस्तवंत, वचन ते जे सत्यवत सत्य ते जे विनयवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, राजा ते जे न्यायवत, तिम धरम ते जे दयावत ।

—व स.

बस्ति—सं. स्त्री. [सं. वस्तिः] १ निवास, ठहराव ।

२ नाभि के नीचे का पेट का भाग ।

३ कोण ।

४ मूत्राशय ।

५ पिचकारी ।

६ योग की एक क्रिया जिससे उदर-शुद्धि होती है ।

उ०—नाभि प्रमाण सु वारि मे, उत्कट आसन लाय । नळि दे गुद सकोच कर, वारि उदर ले जाय । कर सुनौळि फिर त्याग दे, यह ही बस्ति कहाय । वात पित्त कफ जन्य जे, गुल्मादिक गद जाय ।

—स्वामी नारायणदास

रू. भे —बसति, बसती, बसत्ती, बस्ति, बस्ती, वस्ती ।

७ देखो 'बस्ती' (रू. भे.)

बस्तिकरम—स. पु. [सं वस्ति-कर्म] १ पिचकारी देने की क्रिया ।

२ पेट की आंतें साफ करने या रेचन करने के लिये गुदा मार्ग से पानी चढाने की क्रिया (एनिमा) ।

३ उदर शुद्धि के लिये की जाने वाली योग साधना ।

रू. भे.—बस्तिकरम ।

बस्तिमळ—सं. पु. [स. वस्ति-मल] पेशाब, मूत्र ।

रू. भे.—बस्तिमळ ।

बस्ती—१ देखो 'बस्ती' (रू. भे.)

उ०—वडो साहिबी हुती । तद सेहर बस्ती घणी हुती । हमैं ही जैतारण सारीखो सहर वसै छै । मुदो वस्ती रो वाणिया ऊपर छै ।

—नैणसी

२ देखो 'वस्ति' (रू. भे)

बस्तु—स. स्त्री [स] १ वह चीज या पदार्थ जिसका अस्तित्व हो, सत्ता हो, जिसको देखा व छूआ जा सकता हो, जो अपनी वास्तविकता रखता हो ।

२ सारवान चीज, धन, दौलत ।

३ साधन व सामग्री जिससे कोई चीज बनती हो ।

४ सार, तथ्य ।

५ खाका, ढाचा ।

६ श्रम द्वारा निर्मित कोई चीज ।

७ विषय-वस्तु जिस पर वाद-विवाद व विचार विमर्श किया जा सकता है ।

८ किसी नाटक की कथावस्तु, कथानक ।

रू. भे.—बसत, वस्त, बस्तु, बुसत, बुस्त, वत्थु, वसत वसतु, बसत्त वस्त, वुसत, वुस्त ।

अल्पा.—बसतडी ।

बस्तुनिरदेस—स. पु. [सं. वस्तु-निर्देश] नाटक के मगलाचरण का एक भेद जिसमे कथा का कुछ आभास दिया जाता है ।

बस्तौ—देखो 'बस्तौ' (रू. भे.)

बस्य—स पु. [स वश्य] १ अनुचर, नौकर, दास ।

२ देखो वस्या' (रू. भे)

उ०—कहिन बहिन बाई कुण नई एह जाई, करिन मभ पसाई ताहरउ हउ जिभाई । कहइ हिव सुदरणा बस्य देवग त्रस्णा, मभ तणी ए सिलिद्री सीसमाणी पुरिद्री ।

—सालिसूरि

बस्यकरम—स पु. [सं वश्यकर्म] ७२ कलाओ मे से एक ।

बस्या—सं. स्त्री. [स वश्या] आज्ञा कारिणी स्त्री ।

रू भे —वस्य ।

बस्त्र—स. पु. [स.] १ ऊन, रुई, रेशम आदि के धागो से बुन कर बनाया हुआ कपडा जो अनेक प्रकार से उपयोग मे आता है । (उ र.)

२ शरीर पर धारण करने का कपडा, पोशाक, परिधान । (उ. र.)

रू भे.—बसत्र, बस्तर, बस्त्र, वसत, वसतर, बसत्त, वसत्र, वस्तर ।

अल्पा.,—बासतो, बागत्थो, बास्तो ।

बस्त्रकार—स. पु. [सं] १ वस्त्रों के आगार का अधिकारी ।

उ०—उद्दीसकार धनिकार रूपकार, करणीकार रसकार क्षीरकार सम्यकार वस्त्रकार विभूसणकार, पुतार, अम्बमिक्षाकार, रथकार ।

—व. स.

२ वस्त्रो का व्यापारी, बजाज ।

बस्त्रगांठ, बस्त्रगांठि—स. स्त्री [स वस्त्र-ग्रंथि] १ कपडे की गाठ, बडल । (उ. र)

बस्त्रगोपना—सं. पु.—१ वस्त्रो की रक्षा ।

२ स्त्रियों की ६४ कलाओ मे से एक ।

बस्त्रपरिधायक—वि [स.] वस्त्र धारण कराने वाला, पहनाने वाला ।

उ०—गज वैद्य, वृत्तिवायक, वहीवायक, आचायक, त्रिहायक अंगरक्षक चलवक वस्त्रपरिधायक, काठिया लोहटिया

—व. स.

बस्त्रागार—स पु [स. वस्त्र+आगार] १ वह स्थान, मकान या कक्ष जहां कई प्रकार के बहुत से वस्त्र हों वस्त्र भण्डार ।

२ घर का वह कक्ष जहा पहनने के कपडे रहते हों (ड्रेसिंग रूम)

बहग—देखो 'विहग' (रू भे)

उ०—रग रळा दह नमैं अढग मे जगत रग, कमध अणभग उछरग कीधो । मोहीयौ पलग जग हर्चें बारत मुन, दुगम उनवंग बहंग त्याग दीधो ।

—ठाकुर जोगीदास रो गीत

वहंगपत वहगपति—देखो 'विहगपति' (रू. भे.)

उ०—थाळ सारंग न खेग संख कंज पलग यत, वहगपत न पूगो चाल बासं। हाल ऊगो लगा नहग छबतो हरी, पाल ग्ररधग गयो मतग पासं। —हुकमीचंद खिडियो

वहंगराज, वहगराजा—देखो विहंगराज' (रू.) भे.

उ०—१ पतग ऊगतं रहै थाकं वहगराज पंथ, जाय गग वमुह त्याय नहंग भालो। सेस घर तजै पथ भंजे वागा समर, देवगर डगं तो चगं 'दोलो' —नाथजी बारहठ

उ०—२ राहा सकाजा ग्रळ गां सग्र दौड मे वहगराजा, ताव तेज भीड मे नहग राजा तास। रूप रंग घाट थाट देव रीझै रावराजा, वाग माहाराजा ग्रसो मोजीयो ग्रहास। —हुकमीचंद खिडियो

वहंडणी, वहंडबो—देखो 'विहडणी, विहडबो' (रू भे.)

उ०—जद वारग कहै 'जोगावत', घड़ा वहंड सुरलोक गयो, मह जोधा सळखा रडमाळा, कमदा कुळ ऊजळो कियो। —हरीसिंग पातावत री गीत

वहंडणहार, हारो (हारी), **वहडणियो**— वि०।

वहंडिग्रोड़ो, वहांडयोड़ो, वहडयोड़ो—भू० का० कृ०।

वहडीजणो, वहंडीजबो—कर्म वा०।

वहडियोडो—देखो 'विहडियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वहडियोडी)

वहंत—स. पु [स वहन्त] १ हवा, पवन। (२) बच्चा।

वह—सर्व [स वह] कर्तृ कारक प्रथम पुरुष सर्वनाम जो किसी सदर्भ का ग्रनुमान देता है।

सं. पु [स. वह.] १ परोक्ष या दूर की वस्तुग्रो का सकेत करन का एक निर्देशकारक शब्द।

२ समर्थन, सहमति।

३ लेजाने की क्रिया।

४ वाहन, सवारी।

५ घोडा।

६ हवा, पवन।

७ मार्ग, सडक।

८ नद।

९ बैल का कधा।

१० कधा, स्कध।

११ चार द्रोण भर का एक नाप।

१२ देखो 'वाह' (रू. भे)

उ०—हरामखोरा तू नैडा ग्रावण देवो। जाहरा तीर-वह माहे ग्रासी, ताहरा म्हे हकारो करसा। —राजा नरसिंघ री वात

रू. भे.—वह, वहै।

वहकणी, वहकबो—देखो 'महकणी, महकबो' (रू. भे.)

उ०—मंच प्रति मच तणी रचना हुई। स्वरगपुरी तणी सोभा लई। ध्वज पताका लहकई, पुस्प परिमल वहकई नाचई पात्र। राजभवन ग्रावई ग्रक्षत पात्र। —वाग्विलास

वहचरा, वहचराय—देखो 'बहचराय' (रू भे)

उ०—वहीचरा देवी ग्ररय कुक्कुटवहणी लोक वहचरा कहै। —बा. दा. ख्यात

वहजावणी, वहजावबो—देखो 'बजाणी, बजाबो' (रू. भे.)

उ०—रांमण इद्रजीत खर दूखर, गजे कूंण गिणावै। खात लगै केता खळ खाधा, वळे दात वहजावै। —र. ज. प्र.

वहण—वि.—१ वार करने वाला, मारने वाला।

२ चलने वाला, गमन करने वाला।

उ०—उड्डि महाभर कध, भार भलपण सब्बाहै। वेगड बामी वहण प्रथी ग्राभो पति साहै। —गु. रू. बं.

३ धारण करने वाला।

स. पु. [स. वहनं] १ वाहन, सवारी।

२ रथ।

उ०—जाय जोगण बद जाजा, प्रजुण वन्ही करै ग्राजा। वहण ग्रावध होम बाजा, रुपि दराजा रोस। —र. रू.

३ नाव नौका।

उ०—वहण पोत (भव महण लघावण, तरण उदय हरि नाम तराज)। —ह. ना. मा.

४ नदी, सरिता।

उ०—जुग जवदा जोइया जिम वहण वहाई। —केसोदास गाडण

५ समय। (ग्र. मा.)

६ वार, प्रहार।

७ चाल, गति।

८ देखो 'वहन' (रू भे)

रू. भे—वहण, वहणी।

वहणी—स स्त्री.—१ चलने की क्रिया या भाव।

२ ग्राचार-व्यवहार, चाल-चलन।

३ बर्ताव।

४ तेज चलने वाली, शीघ्र गामी।

५ चाल, गति।

६ वहने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—वहणी, वहनि, वहनी, वहिणि, वैणी।

वहणी—वि. [स. वह] (स्त्री. वहणी) १ चलने वाला, गतिशील।

२ घूमने वाला, टहलने वाला, विचरण करने वाला।

उ०—भार अठारा पसरि न पोखै, नभ बहणि पवन धरती नहिं सोखै। निरमै भया भरम सब भागा, त्यौ की डोरी उनमनि लागा।

—ह. पु. वा.

३ तेज चाल वाला।

४ बहने वाला।

बहणौ, बहबौ-क्रि. अ. [सं. वहनं] १ चलकर कहीं जाना, गमन करना, चलना, किसी की ओर निरन्तर चलना।

उ०—१ धवळ न अटकै धुर वहै, कासूं पाणी कीच। इण री जननी तारही, वैतरणी रै बीच।

—बा. दा.

उ०—२ मारवणी मनि रंगि, वाटइ तिणि आवी वहइ। कुझी एकणि सग, तालि धरती दिट्ठिया।

—ढो. मा

उ०—३ वायक वामानां सुणी, आकासमारगि अणसरी। वेगि वहो नि तं गयु रै हस नलरानी पुरी।

—नळाख्यान

उ०—४ वहै क वाज पत्थए, अकास मैं क रत्थए। सीरम साह नस्सहै, विवाण उड्डिया वहै।

—गु. रू. बं.

२ पास से गुजरना, निकट से होकर चलना।

३ द्रव्य पदार्थ या पानी का धारा रूप मे बहना, प्रवाहित होना।

उ०—तठे समुद्र माहे पैठा। पैस अर एक वडो पाटलो तिण ऊपर भागेज नू बैसाण अर पाटला न धकाय अर बह तैपाणी माहे वहाय दियौ।

—नैणसी

मुहा—बहती गगा मे हाथ धोणा=अवसर का लाभ उठाना, सहज मे ही कार्य साधना, अवसरानुसार परोपकार करना।

४ ऊक्त प्रकार की धारा के साथ बहना, प्रवाहित होना।

उ०—ऊभळै नीर पताळा एहा, जळनिध प्रबळ घटा घण जेहा। राजा दास कुसळहु घट रहिया, वैरी सकळ सुजळ महि वहिया।

—सू प्र.

५ इधर-उधर घूमना, भटकना।

६ गतिमान होना।

७ घूमना, मडराना।

उ०—१ रहियौ रवि कौतिग ताण रत्थ, सिव सुरा कोडि तेतीस सत्थ। अपछर विवाण ऊपरि बहत, हुय औसर नारद हड-हडत।

—गु रू. बं.

उ०—२ वहै क वाज पत्थ ए अकास मैं क रत्थ ए। सीरम साह नस्स है, विवाण उड्डिया वहै।

—गु रू. ब.

८ आचरण करना।

उ०—रहणी एकण रग, बहणौ वीरत ढग विच। सदा स्याम भ्रम संग, ताहरै भग 'प्रतापसी'।

—जैतदान बारहठ

९ दूर तक मार करने वाले अस्त्र का चल पड़ना।

उ०—प्रचंड गोळै नाळ प्रचड, बहंतं हैकपियौ ब्रहमड। जुडंत खुरंम अनै जिहगीर, तिडा किरि अबर उड्डुं तीर।

—गु. रू. बं.

१० गोली, तीर आदि का छूटना, निकलना।

११ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन करना।

१२ कीर्ति या विरुद धारण करना।

१३ स्वाभिमान व अभिमान रखना।

उ०—नलै जाण्यू 'हू जीतीस सही, ए अवम हारवा आव्यु अही' कहि 'भालण' 'अभिमान ज वहि, परि काल तणी गति को नवि लहि।

—नळाख्यान

१४ घुसना, धसना।

उ०—कह्यौ-'वुहौ'। यू कही नै राव बीजो कानी जोयौ। तरै लाडक राव नू पाछा सू झटको वाह्यौ। राव रै मोरै लागो। घणौ वूहौ। सु राव लाडक नू गाबड सू झालनै नीचै दियौ।

—नैणसी

१५ कूप का पानी निकाला जाना।

उ०—जावता एकै जायगा अरहट बहतो दीठो तेथ आया। आय अर घोडा पाया। घोडा रा मह छाटिया। हाथ धोया। आख्या छाटी अर अमल कियौ। पाणी पियौ।

—नैणसी

[स वह्] १६ प्रचलित होना, फैलना।

१७ झरना, टपकना।

उ०—पटा वहंत मद् ऐं, (कि.) घरा मैं जळद गैं। नेजा बरक्क फब्ब ऐं (सु) ताड विरुव पब्ब ऐं।

—गु रू. ब.

१८ खेत मे अनाज बोया जाना।

उ०—मुहारा रै खडीण रौ उनाव जैसळमेर सू कोस ६ तथा ७ दिखण नू वडी ठोड कोस ५ माहै उनाव भरीजै। पाखती रा भाखरा रौ पाणी आवै। माहै गोहूं मण ५००० बीज वहै नितरौ भोग अवै। पाणी निठै जदी वेग माहै २० तथा २५ बधायोडा, पाणी घणो मोठो

—नैणसी

[स वध] १९ शस्त्र प्रहार होना, आघात होना, वार होना।

उ०—१ वाहे सग 'केहर' रोम वखत, वकी खग 'केहर' सीस बहत। फिरै खळ गेहरिया जिम फाग, खिबै घण 'केहरिया' पर खाग।

—सू. प्र.

उ०—२ सग्राम खडग वाहत सनड्ढ, वपै पळ तडळ ऊखळ वड्ढ। वहै जग्दंत जडाळ बहंत, तुटन गडा किरि साबिण तंति।

—गु. रू. बं.

२० वीर गति प्राप्त होना।

उ०—वारा दुहा अभिनमै वीरम, कायर नह जिम कोध किसा।

बहि दुरवेस दुरग कीयौ बसि, दीन्हो बहियै दुरवेसा ।

—दूदौ बारहठ

२१ उछलना ।

उ०—विपरीत विस्सम घात, किरि बांगा वबहै पात । वरजाग बूग बहति, किरि अगि द्रस्टि हुवंति । —गु रू. ब.

२२ वध करना, मारना, समाप्त करना ।

उ०—कुंअर पयंपै 'केहरि', करि मोसूं रिगताळ । 'गोहद हूतौ साथि मौ, मे वूहौ 'गोपाळ' । —गु. रू. बं.

उ०—२ ऊधम किर राळै धर ग्रदर, बाग ग्रसोक लागई वांनर । दहुवै जुवां भड़ां खळ बहिया, वीरोचन अमर दळ बहिया ।

—सू प्र.

उ०—३ केवी भरडै वाहि कटारी, केवी हिम उठियौ कहै । वळै किणी रा पिता बहै तूं, वळै किणी रा चचा बहै ।

—राठौड़ भरडा बूडावत रौ गीत

उ०—४ बळ थियौ दित हरणाख्य ग्रप्रबळ, तेज मीञर धर रसातळ तांम । ब्रहम पुकार रघुपत करण मुख कहै । गरुडधुज विप धाम ···गिड, प्रळय जळ मग गध सुध पड । प्राण घरघर देत ग्रणघट, विकट ग्रर बहै । —र. ज. प्र.

२३ प्रहार करना, वार करना, आघात करना ।

२४ किसी उत्तरदायित्व व जिम्मेदारी को वहन करना, धारण करना ।

२५ धारण करना ।

उ०—हुं निज वीती हो बात सी दाखवू जी, जाणउ छउ जिनराय । तारक विरुद हो बहियइ ग्रापणो जी, बाह ग्रह्यांनी लाज ।

—वि. कु.

२६ लाद कर ले जाना, ढोना ।

उ०—करणराइ ग्रापणी जीभइ घोडउं बाध्यउ, विक्रमादित्य काग खाधउ पुण ग्रजरामर न हुउ, नलिराइ रसोइ पची, हरिस्चंद चाडाल तणइ घरि पाणी बहघउ, पुरुसरामि जननीवधु कीधउ ।

—व. स.

बहणहार, हारौ (हारी), बहणियौ—वि० ।

बहिग्रोड़ो, बहियोड़ो, बहयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बहीजणौ, बहीजबौ—भाव वा०/कर्म वा० ।

बहणौ, बहबौ, बहवणौ, बहवबौ, बुवणौ, बुवबौ, बुहणौ, बुहबौ, बूहणौ, बूहबौ, बे'णो, बे'बो, बेवणौ, बेवबौ, बॅ'णौ, बॅ'बौ, बंवणौ बेवबौ, बंहणौ, बंहबौ, वहांणौ, वहीबौ, वहेणौ, वहेबौ, बे'जो, बे'बो, बॅ'णौ, बॅ'बौ, बंवणौ, बेवबौ—रू० भे० ।

बहत-सं. पु. [स. वहत:] १ यात्री ।

२ बैल ।

रू. भे.—बहत, बहत्त ।

बहतिक—१ देखो 'वहित्रिक' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

देखो 'बोहित्त' (रू. भे.)

बहतीबांण-स. पु.—१ सीमा मे होकर चलने का महसूल ।

उ०—बीकानेर रै देस था वहै तिणनूं रु० ।॥) देस में बहतीबांण नूं लागै । घोडै १ दीठ रु० ४ बहतीबांण कारवान नै लागै सरब रु० १५००० री ठोड बरस १ री तुलावट बिकरी । —नैणसी

२ देखो 'बंतियाण' ।

बहत्तर, बहत्तरि—देखो 'बग्रोत्तर' (रू. भे.)

उ०—पातिसाह ग्रजमेर, ग्राप ग्रायौ गुडि पक्खरि, सतरिखांन खीटिया, ग्रनै उबरा (व) बहत्तरि । —गु. रू. बं.

बहत्रक—देखो 'वहित्रिक' (रू. भे.)

बहद—देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—है यह हीयै सेल थारी हद, बहद खटकै पच बखत । जोह जसो दूखै नह लागो, ग्रण लागो दूखै ग्रखत । —सगरांम सांदू

बहन-सं पु. [सं.] १ ग्रहण करने या धारण करने की क्रिया या भाव

२ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी सम्भालने की क्रिया या भाव ।

३ भार या बोझा लादकर लेजाने या ढोने की क्रिया ।

४ सवारी ।

५ नाव या बेड़ा ।

६ ध्वजा ।

७ खभे के नौ भागो मे से सब से नीचे वाला भाग (वास्तुकला)

८ देखो 'वह्नि' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

९ देखो 'बहन' (रू. भे.)

रू. भे.—बहण, बहन, वहण ।

बहनट—देखो 'ब्रहनट' (रू. भे.)

बहनि, बहनी—१ देखो 'वहणी' (रू भे)

२ देखो 'वहन्य' (रू. भे.)

उ०—जिण न्रप बहनि सुजाव क्रतजय । जेण सुजाव नरेस रणजय

—सू. प्र.

३ देखो 'वह्नि' (रू भे) (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

उ०—ग्रडडाट नाद वैराट ग्राज, घट्ट जाणि दूजो घड़ै । बरसाळ झाळ गोळा बहनि, प्रळै काळ छोळा पड़ै । —सू. प्र.

बहनीसिखा—देखो' वह्निसिख' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

बहन्न, बहन्नि—१ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)

उ०—१ कपि जेम सुदिढ पइ तीख कन्न । बाजिन्न जेम ऊन्हउ

बहुन्न । साहुणांह दीवड वाण साहि । मडळेसर चडियउ थट्ट माहि
—रा. ज. सी.

उ०—२ केसरि कथिन्न साभळि कन्नि, वाउळि कि वन्नि लागउ बहुन्नि । बीकाहर राजा ए बखाण, जाळोवळि सीतउ चित्त जाण ।
—रा. ज सी.

२ देखो 'बहन' (रू. भे.)

बहुम्य–स. पु.—एक सूर्य वंशी राजा, जिसका पुराणो मे शुद्ध नाम नहि मिलता है । दूसरा नाम धर्मी भी मिलता है ।

ऊ०—जे सुत ब्रहद भोज जगजाहर । ब्रहदभोज सुत बहुम्य क्रीतवर ।
—सू. प्र.

रू. भे.—बहुनि, बहुनी ।

बहम–स. पु [अ] १ किसी प्रकार के अनिष्ट या हानि के प्रति मन मे उठने वाली निराधार कल्पना, संभावना या धारणा ।

२ भ्रम, भ्रांति ।

३ शक, संदेह, शका ।

उ०—दरबार तो आप रै माथै पूरा महरबान है । आप नै नाराजगी रो फकत बहम है । आप निसक होयनै किलै पधारो ।
—अमरचूनड़ी

रू. भे.—बहम, बेम, बे'म, वे'म ।

बहमी–वि. [अ] १ बहम करने वाला, शक करने वाला ।

२ उक्त प्रकार के स्वभाव वाला, शक्की मिजाज ।

रू. भे.—बहमी, भहमी, वेमी ।

बहरणौ, बहरबौ—देखो 'बैरणौ, बैरबौ' (रू. भे.)

उ०—मोरधुजी महाराज था जन सचा हर का । करवत हत्थां बहर कै दिय सीस कवर का ।
—दुरगादत बारहठ

बहरणहार, हारौ (हारी), **बहरणियौ**—वि० ।

बहरियोड़ौ, बहरियोड़ौ, बहरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बहरीजणौ, बहरीजबौ—कर्म वा० ।

बहरांमसंद–वि. [फा बहरामद] धनाढ्य, सम्पन्न, भाग्यशाली ।

उ०—लिखमी रा लाडिला लोक बडा वापारी वहवारिया सोदागर बहरांमसद साहूकार घणा सुख चैन सूं वसै छै । —रा सा. स

बहराड़णौ, बहराड़बौ—देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू. भे.)

उ०—पाघरै खेत भाराथ रौ पाडियौ, माथ भूलाड़ियौ रुधर सूरा । पागड़ो लगा बहराड़ियौ भीम पर, भोयणा चहराडीयौ नहीं भूरा ।
बादरसिंह रौ गीत

बहराड़णहार हारौ (हारी), **बहराड़णियौ**—वि० ।

बहराड़ीओड़ौ, बहराड़ीयोड़ौ, बहराड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बहराड़ीजणौ, बहराड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बहराड़ियोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बहराड़ियोडी)

बहराणौ, बहराबौ—देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू भे.)

बहराणहार, हारौ (हारी), **बहराणियौ**—वि० ।

बहरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बहराईजणौ बहराईजबौ—कर्म वा० ।

बहरायोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री, बहरायोडी)

बहरावणौ, बहरावबौ—देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू भे.)

बहरावणहार, हारौ (हारी), **बहरावणियौ**—वि० ।

बहराविओड़ौ, बहरावियोड़ौ, बहराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बहरावीजणौ, बहरावीजबौ—कर्म वा० ।

बहरावियोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बहरावियोडी)

बहरियोड़ौ—देखो 'बैरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बहरियोडी)

बहरूपियौ—देखो 'बहुरूपियौ' (रू. भे.)

बहळ, बहल—१ देखो 'बहल' (रू. भे)

उ०—१ मोरी सइया ए, कण भुगा बहळ जुड़ायो —लो. गी.

उ०—२ पछै कलौ नाहुल बहळ बैस नै गयौ ।
—राव चद्रसेण री बात

उ०—३ भरमल आप री तरफ रो कपड़ो वसत सारी मगाई, सो ऊठ बीस भरीया । दस बहलां तयार कीवी । दस घोडा तयार किया इत कर इण रो सखरो महुरत देख भार सभावण लागो ।
—कुंवरसी साखला री वारता

२ देखो 'वेहळ' (रू. भे.)

उ०—मडै सरट ललाटी जैमल, मथर गहर धु वेद समार ; बहळां सपत विपत वैरीया, सुज 'सुरत्ताण' कळोधर सार ।
—भीमो आसियो

३ देखो 'बळद' (रू भे)

बहलवांन—देखो 'बहलबान' (रू. भे)

बहलि–स स्त्री —१ हाथी व. घोडे को हाकने की छड़ी (उ. र.)

२ देखो 'बहल' (अल्पा , रू भे.)

३ देखो 'वहली' (रू. भे.)

बहलियौ—१ देखो 'बळद' (अल्पा , रू. भे)

उ०—भोटो, हासल छोटो दीवो छै और खाणी पेरणी दासदासी नै रोजगार रथ नै बहलिया रा समाचार छै । —जगदेव पवार री बात

२ देखो वहलियो' (रू. भे.)

वहली—स. स्त्री, [सं. बहुला] १ बड़ी इलायची।

[सं. बहुलः] २ ऊख विशेष।

रू. भे.—**वहलि**।

३ देखो '**वहल**' (अल्पा., रू. भे)

वहव - देखो '**वहू**' (रू भे)

उ०—रामापीर ऊबो रुणेचा रे माहि मागू पूत रत्नो री जोड कुळ में वहवां री जाजो भूलगी —रामदेवजी तुवर री गीत

वहवारियो—देखो '**व्यवहारीयो**' (अल्प., रू भे.)

उ०—लिखमी रा लाडिला लोक वडा वापारी **वहवारिया** सोदागर वहरामसद साहूकार घणा सुख चैन सू वसं छै।

—रा सा. स

वहाड़णो, वहाड़बो - देखो '**वहाणो, वहाबो**' (रू. भे.)

उ०—आहवि वाहि **वहाड़ि** असिस्मर, महाराज ले जाज्यो मधुकर।

—वचनिका

वहाडणहार, हारो (हारी), **वहाडणियो**—वि०।

वहाडिओड़ो, वहाडियोड़ो, वहाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

वहाड़ीजणो, वहाड़ीजबो—कर्म वा०।

वहाडियोड़ो—देखो '**वहायोडो**' (रू. भे.)

(स्त्री. वहाडियोडी)

वहाणो, वहाबो—क्रि. स. ['वहणो' क्रिया का प्रे. रू.] १ कही जाने के लिये प्रेरित करना, भेजना, गमन कराना, चलाना।

२ द्रव पदार्थ या पानी को धारा के रूप मे बहाना, प्रवाहित करना।

३ उक्त धारा मे बहाना, प्रवाहित करना, तिराना।

उ०— तठै समुद्र मांहै पैठा। पैस अर एक वडो पाटलो तिण ऊपर भांणेज नूं बैसाण अर पाटलानू धकाय अर वहतै पाणी माहै **वहाय** दियो। —नैणसी

४ भटकाना, घूमाना।

५ गतिमान करना, गति देना।

६ घूमाना, टहलाना।

७ आचरण कराना।

८ अलग हटाना, दूर कराना।

९ शस्त्र प्रहार कराना, आघात कराना वार कराना।

१० वध कराना, मरवाना, वीर गति प्राप्त कराना।

११ उछालना।

१२ प्रचलित कराना।

१३ टपकाना, झरवाना।

१४ खेत में अनाज बोआना, बोवाई कराना।

१५ किसी उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी को वहन कराना, धारण कराना, जिम्मेवारी डालना।

१६ लदवा कर ले आना, ढोवाना।

१७ शपथ दिलवाना।

वहाणहार, हारो (हारी), **वहाणियो**—वि०।

वहायोडो —भू० का० कृ०।

वहाईजणो, वहाईजबो—कर्म वा०।

वहाडणो, वहाडबो, वहाणो, वहाबो, वहावणो, वहावबो, वुवाणो, वुवाबो, वुहाणो, वुहाबो, वूहाणो, वूहाबो, वंबाणो, वंबाबो, वहाड़णो, वहाड़बो, वहावणो, वहावबो—रू० भे०।

वहानो—देखो '**वहानो**' (रू. भे.)

वहायोड़ो—भू. का कृ.—१ कही जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, चलने के लिये प्रेरित किया हुआ, भेजा हुआ. २ वहाया हुआ, प्रवाहित किया हुआ. ३ भटकाया हुआ. ४ गतिमान किया हुआ. ५ घुमाया या टहलाया हुआ. ६ अलग हटाया हुआ, दूर किया हुआ. ७ शस्त्र प्रहार कराया हुआ, आघात या वार कराया हुआ. ८ वध कराया हुआ, मरवाया हुआ. ९ उछाला हुआ. १० प्रचलित कराया हुआ. ११ टपकाया हुआ, झरवाया हुआ. १२ बोवाई कराया हुआ, बोवाया हुआ. १३ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन कराया हुआ, धारण कराया हुआ. १४ भरवाया हुआ. (स्त्री. वहायोडी)

वहार—देखो '**बहार**' (रू. भे.)

उ०—मिळी सहेली महल में, वणी किमीक **वहार**। चुतर सरद रो चद्रमा, नवल चानणी नार। —र हमीर

वहाळो—देखो '**वाळो**' (रू. भे.)

वहालो—देखो '**वालो**' (रू. भे.)

(स्त्री. वहाली)

वहाव—देखो '**बहाव**' (रू. भे.)

वहावणो, वहावबो—देखो '**वहाणो, वहाबो**' (रू भे)

वहावणहार, हारो (हारी), **वहावणियो**—वि०।

वहाविओड़ो, वहावियोडो, वहाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वहावीजणो, वहावीजबो—कर्म वा०।

वहावियोडो—देखो '**वहायोडो**' (रू. भे)

(स्त्री वहावियोडी)

वहिंचणो, वहिंचबो—देखो '**वंचणो, वंचबो**' (रू. भे)

उ०—जाइ उवै तळाव पर घोडा **वहिंचिया**।

—कूंपरै बळोच री वात

बहिंहियोड़ौ—देखो 'बंचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बहिंहियोड़ी)

बहि—देखो 'बही' (रू. भे.)

बहिउ—वि. [सं. व्यूढ] १ फैला हुआ, चौड़ा, प्रशस्त। (उ. र.)
२ वृद्धि को प्राप्त। („)
३ वृद्ध, बूढा। („)
४ दृढ, सशक्त। („)
५ विवाहित। („)

बहिचणौ, बहिचबौ—देखो 'बंचणौ, बंचबौ' (रू. भे.)
उ०—ताहरा विजो बोलीयौ जी हालो आधो भाग बहिच लेस्यां।
—चौबोली

बहिचियोड़ौ—देखो 'बंचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बहिचियोड़ी)

बहिण—देखो 'बहन' (रू. भे.)

बहिणि—देखो 'बाहनि' (रू. भे.)
२ देखो 'बहन' (रू. भे.)

बहितिक, बहित्र, बहित्रक, बहित्रिक—सं. स्त्री. [सं. बहित्रकं] १ नाव, जहाज। (ह. नां. मा.)
२ बेड़ा, पोत।
रू. भे.—वहित्र, वहतिक, वहत्रक।

बहित्थ—सं. पु. [सं. वाहित्थं] हाथी का मस्तक।
उ०—भिरै बहित्थ हत्थि के चिकार चूर चूर व्है। भिरै भटाळि भाळ में, भिखार भूर-भूर व्है।
—ऊ. का.

• **बहित्रौ**—सं. पु.—नगर का चौहटा। (सभा)

बहिन—१ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)
२ देखो 'बहन' (रू. भे.)

बहिनमुख—देखो 'वह्निमुख' (रू. भे.) (अ. मा.)

बहिनी—सं. स्त्री. [सं. वहिनी] १ नाव, नौका।
२ बेड़ा, पोत।
३ देखो 'बाहनी' (रू. भे.)
४ देखो 'बहन' (रू. भे.)
५ देखो 'वह्नि' (रू. भे.)

बहिया—सं. पु.—पवार वंश की एक शाखा।
(बां. दा. ख्यात)

बहियोड़ौ—भू. का. कृ. (स्त्री. वहियोड़ी) १ चलकर कहीं गया हुआ, गमन किया हुआ, चला हुआ, किसी की ओर निरन्तर चला हुआ। २ पास से होकर गुजरा हुआ, निकट से होकर चला हुआ। ३ द्रव पदार्थ या पानी का धारा के रूप में बहा हुआ, प्रवाहित हुवा हुआ। ४ उक्त प्रकार की धारा के साथ बहा हुआ, प्रवाहित हुवा हुआ। ५ इधर-उधर घूमा हुआ, भटका हुआ। ६ गतिमान हुवा हुआ। ७ घूमा हुआ, मंडराया हुआ। ८ धारण किया हुआ। ९ दूर तक मार करने वाले अस्त्र का चला हुआ। १० गोली, तीर आदि का छूटा हुआ, निकला हुआ। ११ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन किया हुआ। १२ कीर्ति या विरुद धारण किया हुआ। १३ स्वाभिमान व अभिमान रखा हुआ। १४ घुसा हुआ, धंसा हुआ। १५ प्रचलित हुवा हुआ, फैला हुआ। १६ झरा हुआ, टपका हुआ। १७ खेत में अनाज बोया हुआ। १८ शस्त्र प्रहार हुवा हुआ, आघात हुवा हुआ, वार हुवा हुआ। १९ वीरगति प्राप्त हुवा हुआ। २० उछला हुआ। २१ वध किया हुआ, मारा हुआ, समाप्त किया हुआ। २२ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ, आघात किया हुआ। २३ किसी उत्तरदायित्व व जिम्मेदारी को वहन किया हुआ, धारण किया हुआ। २४ धारण किया हुआ। २५ लाद कर ले जाया हुआ, ढोया हुआ।

बहिरंग—सं. पु. [सं.] १ अंतरंग का विपर्याय, उल्टा।
२ शरीर का बाहरी भाग।
वि.—१ ऊपर-ऊपर का, बाहर का।
२ अनावश्यक, फालतू।

बहिरणौ, बहिरबौ—देखो 'बैरणौ, बैरबौ' (रू. भे.)
उ०—थांनक, नित्य पिंड कलाल री पाणी बहिरणौ आदि छोड, नवौ साधपणौ पचल्यौ, पिण सरधा तो बाहीज पुन री।
—भि. द्र.

बहिरलापिका—सं. स्त्री. [सं. बहिर्लापिका] वह प्रश्न या टेढा वाक्य जिसका श्रोताओं से उत्तर पूछा जाय, पहेली समस्या।

बहिराणौ, बहिराबौ—देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू. भे.)
बहिराणहार, हारौ (हारी), बहिराणियौ—वि०।
बहिरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बहिराईजणौ, बहिराईजबौ—कर्म वा०।

बहिरायोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे.)
उ०—बहिराव्या तिण वस्त्र प्रधान जो, अनुकंपा कीधी रे ज्यारै अगना रे लो। धन धन तु प्रिय गुण निधान जो मुनि पडिलाभ्या वस्त्र सुचगना रे लो।
—वि. कु.

बहिरावियोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री बहिरावियोड़ी)

बहिरउ—देखो 'बहरौ' (रू. भे.)
उ०—वज्जिय ए तूर गभीर अबक बहिरिउ पडिरमन। नाचहि ए अबलिय बाल, रजिय सुर अबला लेहि। —श्रीधरम कलस मुनि।

बहिरमांज-सं. पु.—महादि देह क्षेत्र के तीर्थंकर ।

उ०—बहिरमांन सीमंधर स्यामि, सीषा वि ग्राम्यउ सिर नांमी । —ऐ. जै. का. स.

बहिरौ—देखो 'बहरौ' (रू. भे.)

बहिल—१ देखो 'बहल' (रू.भे.)

उ०—१ तठा उपरांत करि नै राजांन कुमार री जांन घणै ग्राडबर सूं हाथी घोड़ा बहिल सुखामण रथ पायक रा वणाव किया थका बघेल जानिया रै साथ लिया घणै मोती जड़ाव जरकसी सूं लड़ालंब हुआ छै। —रा. सा. सं

उ०—२ तहरा भींवौ भळका लेनै हालियौ । भरमल पासै आयौ ग्रर कह्यौ—थानै बाबोजी बोलावै छै। तद सहिनाण लेनै बहिल चढ़ि चाली । —ऊमादे भटियाणी री वात

उ०—३ ताहरा साहूकार हुआ बडौ लवेस करि थाहे रैस करि बहिल उठ त्यार करि ; कपडौ ले नै चालीया। —चौबोली

२ देखो 'बैल' (रू. भे)

बहिलउ, बहिलु – देखो बहिलौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ बहिलउ ग्राए वल्लहा, नागर चतुर सुजाण । तुझ विण धण विलखी फिरइ, गुण बिन लाल कमाण । —ढो. मा.

उ० —२ राइं कागल मोकलिउ, माधव बहिलु ग्रावि । जिम जाणइ तिम तुं करइ, तेणि सदनि सिधावि । —मा. का प्र

बहिळौ बहिलौ–क्रि. वि [प्रा बहिल्ल] (स्त्री बहिली) १ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त ।

उ०—१ रुती रनै चढेह, जाताहौ जोयौ नही । बहिला वळण करेह, जुग जीवूं जी जेठवा । —जेठवो

उ०—२ माधव बहिला ग्रावज्यौ, हु जोऊं घरि वाट । फल दल जल ग्रन्न धरू, भूमि सयन नही खाट । मा. का. प्र.

उ०—३ किसै जबानं करै प्रघट दागियौ पाहिलो । दंत भणै ग्रा.ल्र विसन ना ल्याव बहिलौ —पी. ग्र.

उ०—४ मम ढील करौ हूल वार म लावौ, वेग चढौ बहिळा बहिळा । —गु रू ब

२ पहले, पूर्व।

उ०—खट-दस-वीस बस खत्रिया गुरु, खट दरसण ग्राचार खरौ । वाखाणै ऊगा दिन बहिलौ, हरि पहिला किलियाणहरौ । महाराजा करणसिंह रौ गीत

वि.—१ उदार, दानी।

२ प्यारा, प्रिय।

३ विरला।

रू. भे.—वहिलउ, वहिलु, वहीलौ, वहेलौ ।

बहिल्ल—१ देखो 'बैल' (रू. भे.)

उ०—उदर दर खण मरै पंस भोगवै भुवंगह । हल वहि मरै बहिल्ल, हरी जव चरै तुरगह । —नैणसी

२ देखो 'बहल' (रू भे)

बहिस–ग्रव्य.—१ अच्छे समय पर ।

उ०—प्रथम दुतिय चवथे पदें, मोहरा बहिस मिळंत । रह ग्रमेल पद तीसरौ, जो झड लुपत झिलत । —र. रू.

२ देखो 'बहिस' (रू. भे.)

बहीं–ग्रव्य. [राज. वह] १ उसी स्थान या जगह पर ।

२ उसी विंदु स्थान, समय या स्थिति पर।

३ उसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ के प्रति ।

रू. भे.—वहि, वही ।

स. स्त्री [स वयस्] ग्रायु-उम्र ।

उ०—दूत हकीकत कहै छै, जु राजान कुंग्रर ऊठती बही रौ जुबांन ग्राजानबाहु राज हस लीलंग छे। —रा. सा. सं.

बही–सर्व. [राज, वह] १ किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति निश्चित रूप से संकेत करने वाला सर्वनाम।

उ०—करहा पीपल पान चर, ग्रागै मरसि भुख। जासां उणहीज देसडे, वे फळ बहीज रूख । —ढो. मा.

रू. भे.—वहि, बाहि, बाही।

२ देखो 'बही' (रू. भे.)

३ देखो 'वही' (रू भे.)

उ०—तव गोतम ग्राव्या तिहा बही, लोक सहु हरख्या गह गही । —स्रीपालरास

बहीण - देखो 'विहीन' (रू. भे.)

उ०—म्याराजी थे मुरधरा, वालम जाय वसांह । ग्राप बहीणी एक दन, जीवै नही 'जसाह' । —मयाराम दरजी री बात

(स्त्री बहीणी)

बहीणौ, बहीबौ—देखो 'बहणौ, बहबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

बहीर–स पु.—१ प्रस्थान, गमन, प्रयाण, कूच ।

उ०—१ ग्ररु गढ मैं ग्रादमी हजार दोय हा सूं खरच बणौ, सु जोड्या नूं तथा दूजै साथनू तो घरनूं बहीर कर दीना वा गढ मे भाटी ग्रादमी पाच सौ रया । —द. दा.

उ०—२ ताहरा विसनदास फोज ले ग्रर बहीर हुवौ। —नैणसी

२ सदा साथ रहने वाले नोकर, ग्रनुचर, परिजन।

उ०—बेटौ खान इनात रौ, गढ सू थयौ तगीर। चाली महमद बेग रौ, दिल्ली दिसा बहीर। —रा. रू.

३ कुटुम्बी, नातेदार, रिश्तेदार।

उ०—गोकुळ हूंत गयौ ज्यूं गिरधर, ऊभा छोड अहीरा। 'सगता' जेम गयौ अग सामू, वार्म छोड वहीरां। —बुधजी आसियौ

४ सेना।

उ०—१ वहती इमी पथि ओपै वहीरं, नदी हेम थी लै चली जाणि नीर। कतारा कठठ्ठे चलै जूग काळा, वहै वादळा जाणि भाद्रव्व-वाळा। —वचनिका

उ०—२ वह रहि हिलै वहीर, पाइक गोठक पडतळा। मिळवा किर चाली महण, नवसै नदि लै नीर। —वचनिका

उ०—३ एकणी नगारै थाट एम। हल्लै वहीर जिम मलिन हेम। —सू. प्र

रू. भे.—वहिर, वहीर, वईग्रर, वईयर, वईर।

वहीलौ—देखो 'वहिलौ' (रू. भे)

वहीवेस—स. स्त्री [सं. वय-वयस्] १ युवावस्था, जवानी।

उ०—तिण सू खीमाजी साहिब, हुकम करो तौ पातिसाहा री उळग करू। इण वहीवेस माहे मारो बिनहार छै। —जखडा मुखडा भाटी री बात

[स. वह्+वयस्] २ अस्थाई अवस्था, बीतने योग्य उम्र।

वहु—देखो 'वहू' (रू भे)

वहुग्रड़—देखो 'वहू' (मह., रू. भे.)

वहुग्रर—देखो 'वहू (मह, रू. भे)

वहुग्रड़ी—देखो 'वहू' (अल्पा., रू. भे)

वहुग्रारी—देखो 'वहू' (अल्पा., रू भे)

वहुबंदोळी—देखो 'बहुबदोळी' (रू भे.)

*__वहुरात__—देखो 'बहुरात' (रू भे)

वहुरावणौ, वहुराववौ—देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू भे)

उ०—गुरु देखी हरमित थया, वहुराव्यौ पुत्र रतन। धरम लाभ गुरु तव दीयें, करजौ पुत्र जतन। —कवियण

वहुरावियोड़ौ—देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री वहुरावियोडी)

वहुव—देखो 'वहू' (रू. भे.)

वहुग्रड, वहुग्रर, वहुवड, वहुवर—देखो 'वहू' (मह, रू भे)

उ०—१ आयौ आयौ ग्रे वहुग्रड फागण मास, वहुग्रड फागण मास घर-घर गेध रयौ नीपणौ ग्रे। —लो गी.

उ०—२ नीपौ नीपौ ग्रे बहुग्रड चाकडली री चूळ, वहुग्रड चाकडली री चूळ नीपौ चूलौ ववणौ —लो गी

उ०—३ माय कहै वहुग्रर सहित, जीवौ कोडि वरीस। ग्रविचल जोडी तुम्ह तणी, इम दीधी आसीस। —सीपालराम

उ०—४ हे चार चतर, मिळ म्हारी जच्चा राणी ने, हे किस वहुवड़ किस धीय। —लो. गी.

वहूवासौ—देखो 'बहूवासौ' (रू. भे.)

वहू—देखो 'बहू' (रू. भे.)

उ०—१ वहू च्यार पगा लगै जेण वारै। सुमत्रा अनै केकई कोसल्या रै। —सू प्र.

उ०—२ कद हू कवी कुमारडी, कहि नै कदि परणेसि। वद हू थांजिद कोटडै, बीजा वहू कहेसि। —रायगी री बात

वहूग्रर—देखो 'बहू' (मह., रू. भे.)

उ०—जीवडलू जावा करइ, जोई जोई जठ। वेदन बीनवीइ किसी, हूं वहूग्रर तू जेठ। —मा का प्र.

वहूदक—स. पु [स] चार प्रकार के सन्यासियो मे से एक।

वहूबदोळी—देखो 'बहुबदोळी' (रू भे.)

वहूरात—देखो 'बहुरात' (रू भे.)

वहूवत देखो 'वधूवत' (रू. भे.) (उ र)

वहेड़ौ—देखो 'बेंडौ' (रू. भे)

उ०—हरड वहेड़ा आवळा, घी-शक्कर मे खाय। हाथी दाबै खाव मे साठ कोस ले जाय। —अज्ञात

वहेणौ, वहेबौ—देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू भे)

उ०—सुंदरि मो मारउ नही, कग्रर वहेसी मग्ग। साहिब चित्त उपाडियउ, जिम केकाणा वग्ग। ढो. मा.

वहेलौ—देखो 'वहिलौ' (रू भे)

उ०—विहाणे नवे नाथ जागौ वहेला, हुवा दोडिवा धेन गोवाळ हेला। —नागदमण

वहौ—देखो 'बहुत' (रू भे.)

उ०—बुधवन वहौ कथ साच कहौ, सुग लीध सहौ ग्रह पंथ गहौ। र रू.

वहोत्तर—देखो 'बग्रोत्तर (रू भे)

उ०—देवळ एक खभ दोइ जाकै, पाच भाति रग दीगा। दस दरवार वहोत्तर छाजा, गळी नाव 'वहौ' कीया। —ह पु. वा.

वहोत—देखो 'बहुत' (रू भे.)

उ०—वहोत जतन करि वागिफ वाण्या ऊपरि कळस चढाया। ग, नोइ रतन उजागर दीसै, वहोत भांति मं लाया। —ह. पु वा

वहौड़ि, वहौडी—देखो 'बहोर' (रू भे)

उ०—माया तजि भजि नाव निरंजन, जीवन अजली नीर। यहु औसर भी वहौड़ि न लाभै, जम का काटि जजीर। —ह. पु. वा.

वह्नि–सं. स्त्री. [सं] १ अग्नि, आग ।

उ०—त्रिभुवन मांहे ए जिन तारण, वारण दुख वन वह्नि जी ।
—ध. व. ग्रं.

२ अन्न को पचाने की शक्ति, पाचन-शक्ति ।

३ भूख ।

४ चिता ।

५ सवारी ।

स. पु.—६ राम की सेना का एक बन्दर ।

रू. भे.—वहन, वह्नि, वह्नी, वहिन, वहिनी ।

वह्निकर–वि. [स] १ जलाने वाला ।

२ भूख बढ़ाने वाला ।

३ आग पैदा करने वाला ।

स. स्त्री.—१ विद्युत, बिजली ।

२ चकमक ।

३ पथरी ।

वह्निबीज–स पु. [स] १ सोना, स्वर्ण ।

२ नीबू ।

वह्निमुख–स पु. [स.] देवता ।

रू. भे.—वहिनिमुख ।

वह्निसिख–स. स्त्री. [स.] १ केसर । (ना. मा.)

२ कुसुंभ ।

[स वह्नि—सख] ३ पवन, हवा ।

रू भे —वनीसिख, वहनीसिख ।

वह्व—देखो 'वहू' (रू. भे)

उ०—जितरै साह री वह्व घर मे आयी ।
—राजाभोज अर खापरा चोर री वात

वां–सर्व —१ उन ।

उ०—१ काट जिका कुळ ऊबटै, आठ वाट इतफाक । वां सबळा ही पुरसडा, वैरी गिणै वराक ।
—बा दा.

उ०—२ ज्यारी जीभ न ऊपडै, सेणा माही सेत । वा रा कर किम ऊपडै, खळा धिरचा बिच खेत ।
—बा. दा.

उ०—३ लाखो वां असवारा माहै हुय नै भुज आयो । —नैणसी

२ उन्होंने ।

उ०—१ कैरव ज्यूं आया कमध, पाडव ज्यू पतिसाह । या हरि नाम उचारियो, वां रहिमाण अलाह ।
—वचनिका

उ०—२ नारायण रो नाम ज्या, नह जीधो निरणाह । वां जमवारो वोळियो, ज्यूं जगळ हिरणाह ।
—हरिरस

अव्य.—५ वहां, उस जगह ।

रू. भे.—वां ।

वांइटौ–सं. पु [स वात-घटी] १ शरीर मे वात-विकार के कारण होने वाली ऐंठन या शून्यता ।

२ पेचिस आदि के कारण पेट मे होने वाली ऐंठन या मरोड ।

रू. भे.—बाइटो, बाईटो, बायटो, बाइटो, बाईंटो, वांईटो, वाईंटो ।

वांई–सं. स्त्री. [स. वायी] १ सर्प का बिल ।

२ खाट के पैंताने की ओर आड़ा बाधा जाने वाला मोटा बंधन जो खाट की बुनाई व बदावन का आधार होता है ।

वि. वि.– यह रस्सी खाट बुनने वाली मूंज की बनती है । मूज को पाच-सात बार आडी लपेट कर उस पर चिथडे लपेट दियें जाते हैं जिससे यह एक मोटे रस्से के समान हो जाती है ।

रू भे —बाई, माई, म्याई ।

३ करधनी ।

वांईटौ—देखो 'वाइटौ' (रू. भे)

उ०—उण नैं बुगी आयगी । डील थर थर धूजण लागी । मासी है जठै ई हेटै गुडगी । हाथा पगा वांईटा आवण लागा । —फुलवाडी

वांक—देखो 'बाक' (रू भे)

उ०—१ रज्जब पारस परस कै, मिटगी लोह विकार । तीन बात तो ना मिटी, बांक धार अरु मार ।
—संतकवि रज्जब

उ०—२ आप वस्तुआ नू तयार कर ऊट पर घाल गगाजळी पाणी री एक हांनै घाली । वांक एक पताकै बाधी ।
—साह रामदत्त री वारता

उ०—३ आदित्य आखि ज विस्वनी, ऊघाडण ए आक । थासिइ अध उलूक तु, सूरि जनु स्यु वांक ।
—मा. का. प्र.

उ०—४ तूं रूठइ थइ आपदा पूज जी, राय थका करइ रांक । मेर थका सरसव करइ पूज जी, वांका काढइ वांक ।
—स. कु.

वांकउ—देखो 'बाकौ' (रू. भे.) (उ र.)

देखो 'बाक' (मह., रू भे)

वांकड़—देखो 'बाकौ' (मह., रू. भे.)

उ०—घरि बइठा ही पाविस्यइ, लाखे लिया लडंग । तिणि मइ लेस्या टाळिमा, वांकड़ मुहा विडंग ।
—ढो. मा.

(स्त्री. वाकी)

वांकडलौ—देखो 'वाकौ' (अल्पा., रू. भे.)

(स्त्री. वाकडली)

वांकड़ी—१ देखो 'बाकी' (अल्पा., रू भे)

उ०—१ भुम्र सजोडै दीपै वाकडी कबाण नै ओपै हो । माहौ-माही न छीपै ते भाल त्रिसाल समीपै हो ।
—वि. कु.

उ०—२ कमधजियां लैरां चालां ली । मोहीं मोही बांकड़ी नरै सुं। —रसीलै राज रौ गीत

२ देखो 'बांकड़ी' (रू. भे.)

३ देखो 'बाकली' (रू भे.)

बांकड़ीनाळ, बांकड़ीनाळी—देखो 'बांकली' (रू. भे.)

बांकड़ो—१ देखो 'बांकौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ बांकड़ा कमंघ वीर, साकडा आया सधीर । ताम सोढि देखि ताव, पालटै कुरग पाव । —सू. प्र.

उ०—२ परवाणो पतसाह रो, लिख मूकै मेलाण । इण गढ हिंदू बांकड़ो, कर ग्रहिया केवाण । —नैणसी

उ०—३ दगं तोफा बहै गोळा रोहला मोरछा दोळा, जो लार सकै सूता संर नै जगाय । भूरजाळ बाकड़ो बोटियो दूजा गढा भोळै, लोहा जाळ घसै कहो नसैणी लगाय । —बां दा.

उ०—४ बारु थई बिवहारीउ, वाहणि घोडा साथ । पूरण पुहुंचा-लगि भरिउ, वेढि बांकडा हाथि । —मा कां प्र.

उ०—५ कडियें कटारो घणमी रे बांकडो, गोरठडी तरवार म्रो । —लो गी.

(स्त्री. बांकडी)

२ देखो 'बांकडौ' (रू भे)

बांकम, बांकमि—देखो 'बाकम' (रू. भे)

उ०—१ तेज तरह बांकम तोखारा, घर वाकम पाघर कर धूत । अग वाकम रग छै 'ऊदाणी', रग वाकम वाका रजपूत । —जोरावर सिंह ऊदाव त री गीत

उ०—२ सखी ग्रमीणो साहिबौ, बाकम सूं भरियोह । रण विकसै रितुराज मै, ज्यू तरवर हरियोह —बां. दा

उ०—३ राजीबाई राव श्राय नैड़ो ऊतरियौ । करां झाल केवाण बींद बांकम बळ भरियौ । —द. दा

उ०—४ ऊचा जोर अकास हूं, पहला अप्रमांण । बांकम जोर मरोर अग, एहे अहिनाण । —गजउद्धार

बांकल—स. स्त्री.—देखो 'बाकल' (रू भे)

उ०—राय आगण चौपट रमी, महिला सरब सुदाह । रम्मी बांकल गज री, चूडी ग्रमर सदाह । —पा प्र.

३ देखो 'बाक' (मह , रू. भे)

बांकस—देखो 'बाक' (रू भे)

उ०—कुचा दर फाडै अलका री बांकस । —र. हमीर

बांकिम, बांकिम्म— देखो 'बाकम' (रू. भे)

उ०—१ नर नरिंद मरणनिंद, बिंद बांकिम्म वीरवर । मुन मुरिंद हरचंद, कद काढण केवी हर । —गु. रू. बं.

उ०—१ ऊदो' 'ग्रनो' विकट ऊदावत, जोड़ मोड दळ बिन्है जगावत । 'रतन' जगावत बांकिम रातो, 'राम' सुभावत मेळ मरातो। —रा. रू.

बांकियो—१ रथाग विशेष ।

उ०—जूं महरी भ्रूह नयण अग जूता, विसहर रासि कि अलक वक्र । वाळी किरि बांकिया विराजे, चद रथी ताटक चक्र । —वेलि

२ देखो 'बाकियो' (रू. भे.)

३ देखो 'बाक' (अल्पा , रू भे.)

बांकी—देखो 'बाकी' (रू. भे.)

उ०—खरगो, लुद्रवा कनै । घोडा, ग्राव, वडी वाको ठोड, मुहांरा दिसी जैसळमेर था कोस १६, मडाळ मे । --नैणसी

बांकु—देखो 'बाको' (रू भे) (उ र)

उ०—बल नी वामा बोलि मरम, बाकु छि अति मन नु धरम । मनि मानु ते मानुग देव, जे परिग नगिणु करम निसेव । —नळाख्यान (स्त्री वाकी)

बांकौ—देखो 'बाकौ' (रू भे)

उ०—१ सोहिली भोमि बाक सुभट्ट । भूभार दियइ करिमाळ भट्ट। —रा ज. सी.

उ०—२ 'वीकै' दुरग थापियो बाकौ । काटा मरण उवेळ करौ । --महाराजा करणसिंह

उ०—३ फूलांरा चौम पैहरिया थका टोय अणियाळा काजळ ठामिया थका बाका नेणारी झाक नाखती पायलं रै ठमकै सू घूघरै रै घमक सू बिछीया रै छमकै सू रमझोळ करती अगूठा मोडती नखरा करती बाजारि चाली जाय छै। —रा. सा. स.

उ०—४ दुरजन जे वाका हता, नार कीया ते जेरौ रे । जिम अगपति नै आगलो, न सकै गयवर फेरो रे । —वि. कु.

उ०—५ तूं रूकउ थइ आपदा पूजजी, राय थका करइ राक । मेर थका सरसव करइ पूजजी, बांकां काढइ वाक । —स. कु.

(स्त्री. वाकी)

बांग—देखो 'बाग' (रू. भे.)

बांगड़—वि—वीर, बहादुर ।

उ०—अबळा रै आगेह, कासूं सबळा पण करै । बांगड जद वागेह केवा लै नीची कनै । —पा. प्र.

रू भे.—बागड ।

वांगण-स. पु. [सं. ग्रवाञ्जन] १ वह स्निग्ध पदार्थ जो गाडी या रहट को आसानी से घूमने के लिये चक्रो की धुरी मे लगाया जाता है।

२ उक्त पदार्थ लगाकर वांगने की क्रिया या भाव।

वांगणौ, वांगबौ-क्रि. स. [स. ग्रवाञ्जनम्] १ गाडी या रहट के चक्रो की धुरी में स्निग्ध पदार्थ (ग्रीस ग्रादि) लगाकर ग्रच्छी तरह चलने योग्य बनाना।

२ पीटना, मारना।

३ सभोग करना, मैथुन करना। (बाजारू)

४ गमन करना।

वांगणहार, हारौ (हारी), **वांगणियौ**—वि०।

वांगिग्रोडो, वांगियोड़ो, वाग्योड़ो—भू० का० कृ०।

वांगीजणौ, वांगीजबौ—कर्म वा०।

वांगणौ, बांगबौ—रू० भे०।

वांगरी-स. स्त्री.—एक प्रकार की घास।

वांगळी-स. स्त्री.—१ रेगिस्तान के मैदान में धूल पर पडने वाली लहरें।

२ पानी जाने की छोटी नाली।

वांगळौ—देखो 'बाघळौ' (रू. भे)

उ०—चोळ चख कीयां घरण बोळ पजा चढत, भुज ग्रटत ग्राभ खळ घटत भाळो। बाहरु रसा रौ फतै कर बावडै, **वांगळौ** सीह 'वगतेस' वाळौ। —मेगराज ग्राढौ

वांगियोड़ी-भू. का कृ.—१ सभोग की हुई, मैथुन की हुई (स्त्री)

२ ग्रीसादि स्निग्ध पदार्थ लगाकर ग्रच्छी तरह चलने योग्य बनाई हुई (गाडी)

वांगियोड़ो-भू का. कृ.—१ ग्रीस ग्रादि स्निग्ध पदार्थ लगाकर ग्रच्छी तरह चलने योग्य बनाया हुग्रा। (रथ, रहट)

२ पीटा हुग्रा, मारा हुग्रा।

३ गमन किया हुग्रा।

(स्त्री. वागियोडी)

वांगौ-स. पु.—१ प्रवाह, गति, चाल।

२ पानी बहने की गति।

३ पानी के बहने से भूमि पर पडने वाले चिन्ह।

४ प्रथा, परपरा।

वांघळौ—देखो 'बांघळौ' (रू. भे)

वांचणौ, वांचबौ—१ देखो 'बाचणौ, बांचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिण **वांचै** उच्छव न्रप जाणैं। ग्रारभ समर करण ग्रख ग्राणै। —सू. प्र.

उ०—२ सदेसा मति मोकळउ, प्रीतम तू ग्रावेस। ग्रांगलड़ी ही गळि गया, नयण न **वांचण** देस। —ढो. मा.

उ०—३ गीता रौ पाठ होवतौ। ग्रातमा परमातमा एक है री चरचा चालती। रामायण **वांचीजती**। सगळं पूछण ग्रावता पण टुणटुणी वजाय' र टरकत। —वरसगाठ

२ देखो 'वाछणौ, वाछबौ' (रू. भे.)

वांचणहार, हारौ (हारी), **वांचणियौ**—वि०।

वांचिग्रोड़ो वांचियोड़ो, वांच्योड़ो—भू० का० कृ०।

वांचीजणौ, वांचीजबौ—कर्म वा०।

वांचियोड़ौ—१ देखो 'बाचियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वाछियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वाचियोडी)

वांच्छित—देखो 'वांछित' (रू. भे.)

वांछक-वि. [सं.] इच्छा, ग्रभिलाषा या चाह करने वाला।

उ०—विधि बतावै छै मूग्रा इहै पाठक वकता हुग्रो। सारस छै स रस **वांछक** छै। —वेलि टी.

वांछणौ, वांछबौ-क्रि. स. [स. वाछनम्] १ चाहना, इच्छा करना, ग्रभिलाषा करना। (ड. र)

उ०—१ चित सू ग्रागम चितवै, ग्रा मजबूत उपाव। 'बंक' जुडै नही **वांछियो**, इण कारण है ग्राघ। —बां. दा.

उ०—२ मनुस्य जु गरमी करि ब्याकुळ हुवै छै। ग्रर रूंखां की छाह **वांछै** छै। —वेलि टी.

उ०—३ जिह घडी नै घणु वाछता था घणा दिन लगं। सु घड़ी ग्राण मिळी। —वेलि टी.

उ०—४ संध्या को समय हुग्रो छै। क्रस्णजी रति **वांछै** छै। —वेलि टी.

२ जिज्ञासा करना।

३ प्रेम करना।

वांछणहार, हारौ (हारी), **वांछणियौ**—वि०।

वांछिग्रोडो, वांछियोडो, वांछ्योड़ो—भू० का० कृ०।

वांछीजणौ, वांछीजबौ—कर्म वा०।

बांचणौ, बांचबौ, बांछणौ, बांछबौ, वांचणौ, वांचबौ—रू० भे०।

वांछना-सं. स्त्री. [स. वाछा] १ चाहना, चाह।

२ इच्छा, ग्रभिलाषा।

३ कामना।

४ जिज्ञासा।

रू. भे.—बाछना, वछना।

वांछनीय-वि. [स.] १ जिसकी इच्छा, चाहना या कामना की गई हो।

२ चाहने या इच्छा करने योग्य।

बांछा—स. स्त्री [सं. वाञ्छा] १ इच्छा, चाह।

उ०—पछै बहु मोटी हुई सो या नो काम री वाछा करै।

—राजा रा गुर रा बेटा री बात

२ अभिलाषा।

३ कामना।

उ०—वर प्राप्ति हुआ वर की बांछा करै छै तिहि समय परमेसर रा गुण भक्ति जिकाई इच्छा उपनी छै। —वेलि टी.

४ जिज्ञासा।

उ०—उवा कहीया म्हानू ही मिळण री बांछा हुती आदनै मिळीया। —चौबाली

रू. भे.—बछया, बाछा, विछया।

बांछित—वि. [सं.] चाहा हुआ, अभिलषित, इच्छित।

उ०—१ बांछित वर पाया पाछै। आप माहै प्रीति राति दिन इसी उपजै। —वेलि टी.

उ०—२ माया साध न देवे उत्तर, बांछित वस्तु बतावै। वहै जेडी कर देवे हाजर, पद ऊचा जद पावै। —ऊ. का

रू भे.—बचत, बछित, बाछित, वंचत, वछत, वछती, वछतो, वछित, वाञ्छित।

बांछियोडो—भू. का. कृ—१ चाहा हुआ. २ इच्छा किया हुआ, अभिलाषा किया हुआ. ३ कामना किया हुआ. ४ जिज्ञासा किया हुआ. ५ प्रेम किया हुआ।

(स्त्री. बांछियोडी)

बांझ—देखो 'बध्या' (रू भे)

उ०—१ दूहो रूपटो दाम, जोडघा सो ही जागमी। ब्यावर-तणो बिराम, बांझ न जाणै वीझरा। —वीझरा अहीर री बात

उ०—२ बांझां सूं घर वाम कर, कोई पुत्र खेलावै।

—केसोदास गाडण

बांझगाई, बांझगाय—स स्त्री [सं. बन्ध्या-गो] वह गाय जो बध्या हो, जिसके प्रसव न होता हो। (उ र)

उ०—सेवै कृपण सरदार, करै दलाली कोयला। हे काई लेवणहार, बांझगाय सू 'बसतिया'। —समेळजी बारहट

बांझडी, बांझणी, बाझि, बांझिणी—देखो 'बंध्या' (अल्पा., रू. भे)

उ०—विवेकी जुउ जुउ वस्तु-स्वभाव, छनै जोग जोवन वतीजी बांझणी न जणै बाल। मूछ नही महिला मुखेजी, करतल ऊगै न वाल। —वृ. स्त.

बांझीयो—देखो 'बाझडो' (रू. भे.)

उ०—नारी बिन तू बांझीयौ। —धरम पत्र

बांट—देखो 'बट' (रू. भे.)

उ०—ताहरा हरदास कहै—एकै जोधपुर रा कासू दो बांट करां? —नैणसी

बांटणो, बांटबो—देखो 'बाटणो, बाटबो' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—नूर सूर सम वदन निहावै, आपै मात रतन धन आवै। सहर गळी प्रत गळी सुहावै, गुळ बांटै त्रिय मगळ गावै। —रा. रू.

उ०—२ चोर च्यार ही डूंगर मे बांटण लागा। ततरे देहलगढ री वणी सकार रमतो आय नीसरियो।

—कल्याणसिह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—३ रुपीया पचास वडारण कनिया मगाय आप रै हाथ निछराबळ कर वडारण नू सौंप फुरमायो 'परभात अतीत फकीर गरीब बांट दीजो। —कुंवरसी साखला री वारता

बांटणहार हारो (हारी), बांटणियो—वि०।

बांटिओड़ो, बांटियोड़ो, बांटयोड़ो—भू० का० कृ०।

बांटीजणो, बांटीजबो—कर्म वा०।

बांटियोड़ो—देखो 'बाटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बांटियोडी)

बांटो—देखो 'बाटो' (रू. भे.)

उ०—१ कटक्का मिळै मेवळा मेर कानै, खडा ऊमरा खान दीवाण खानै। विढेवा कियो माहिजादौ विचार, अणि फौज बांटी हुओ अस्वार,। —गु रू. ब.

उ०—२ करदंत ताकइ, त्रुटि कार अरिरिकार हाकइ, बांटै चडघा योध ताकइ उसरइ, पडसरइ, तीह वीर तणा नाभिप्रमाण बहुल कूंच। —व. स.

उ०—३ सुजैतै री वसी वगडी वीरमदेव रे बांटै में आन। —नैणसी

बांटयोड़ो—देखो 'बाटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बाटयोडी)

बांठ—१······ ·····

उ०—आस्ट जाणइ क्षीर, मत्स्य जाणइ नीर, बांट जाणइ घोडा, स्त्री जाणइ मुह मुचकोडा, गारुडी जाणइ साप, मा जाणइ बाप, वणिग जाणइ माप, मन जाणइ पाप, मुख जाणइ मीठा, दृस्टि जाणइ दीठा। —व. स.

२ देखो 'बट' (रू. भे.)

बांठि, बांठी—स. स्त्री.—अहंकार, गर्व।

उ०—गरधम खोया गाठिस् तन सूं रखै साठि। हरिया ऐसे पतित कौ, मिटै न मन की बांठ। —अनुभव बांणी

रू. भे.—बाठि।

बांड-स. पु.—खंड, टुकड़ा ।

उ०—नाराजीआंरी भांट पड़ि नै रही छै । बगतरां ऊपरां तरवारीआं रा बांड त्रूटि ने रहीआ छै । —रा. सा. स.

बांडणौ, बांडबौ-क्रि. स.—देखो 'बाडणौ, बाढबौ' (रू. भे.)

उ०—उगै पग लगां जांणै भुजग डाडियौ, सुरग रंग चाडियौ स्रोण गारी । वार बरछी कही खळा विप बांडियौ, बीनडी काढियौ हाथ बारी । —महारांणा भीमसिंह रे भाला रौ गीत

बांडणहार, हारौ (हारी), बांडणियौ—वि० ।

बांडिओड़ौ, बांडियोड़ौ, बांड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बांडीजणौ, बांडीजबौ—कर्म वा० ।

बांडियोड़ौ—देखो 'बाढियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बाडियोड़ी)

बांडौ, बांढौ-वि. [स वड] २ अविवाहित ।

उ०—कोई माई रौ लाल हुंकारौ भरतौ तौ था तौ पेला पाघडी मागतौ अथवा लुगाई टाबरा वाळा नै तौ राखण नै तैयार हौ पण म्हारै जिसा बांडा कुतका नै नही । —रातवासौ

२ मूर्ख, बेवकूफ ।

सं. पु —१ अविवाहित व्यक्ति ।

२ परिवारहीन व्यक्ति ।

३ अपने परिवार से अलग दूर कही अकेला रहने वाला व्यक्ति ।

रू भे.—बडौ, बाढौ ।

मह., —बड ।

बांण-स. स्त्री. [स. वाणि] १ बनावट, रचना ।

२ मूर्ति ।

स. पु [स. वाक्] ३ पडित, कवि ।

उ०—वाण सराहै बांण, खाग सराहै समर खळ । मौज उभळ महराण, सारा है रघुवर सुकव । —र. ज. प्र.

४ सिह, शेर । (ना डि को)

[सं. यान] ५ गाडी ।

६ वायुयान, विमान ।

७ गाय-भैंस आदि मादा पशुओं का ऋतुमति होकर गर्भधारण करने योग्य होने की क्रिया ।

क्रि. प्र.—आणौ

८ बुनावट मे काम आने वाली रस्सी, जेवरी ।

उ०—पचरग दीया ढोलिया, पुतळी पागो जाण । संभ सुहाणौ अति भली, रेसम वणीयौ बांण । —ढो मा.

९ एक प्रकार का वात रोग विशेष ।

क्रि. प्र —वहणौ ।

१० देखो 'बाणी' (रू. भे.)

उ०—१ नाम है रांम को, ओक आरांम को । साच राघौ कथा, बांण दूजी व्रथा । —र. ज. प्र.

उ०—२ अनु आतुर चढियौ 'अजन' रिम सुणि जता राह । बांण नगारा ऊधरां, सारा घरी सनाह । —रा. रू.

उ०—३ जग लोक बांण सीखै जवन, पढै अहम भुख पारसी । हित देव सेव आषा हुआ, काई लखमां आरसी । —रा. रू.

उ०—४ दिलीपति ढीलौ हुवौ, पहुंचै कोई न पाल । अचरिज आसगी न सकै, बोलै एहवौ बांण । —प. च. चौ.

११ देखो 'बाण' (रू भे.)

उ०—१ वडा पुरस री बांण, अदना रौ आदर करै । ओछां रा ऐलाण, चुभता बोलै चकरिया । —मोहन लाल साह

उ०—२ बाण्या थारी बांण, नर कोई जाणै नही । पाणी पीवै छाण, लोही अणछांण्यौ पिवै । —अग्यात

उ०—३ प्यारा पाखर पेम की, काइ ज पहिरि अंगि । वयण खटक्कइ बांण ज्यं, कोइ न लागइ अंगि । —ढो. मा.

बांणक, बाणक्क-स स्त्री.—१ कांती, शोभा, दीप्ति, आभा ।

उ०—१ बांणक दीठां ही बणा आवै । —अग्यात

उ०—२ ओ मंद हास किण नू न मोहे है, इण बत्तीसी रौ इसो बांणक है । इण आका गेई मोती मालक है, हसता फूल झड़ै है ।

२ सुन्दरता, रूप, सौंदर्य ।

उ०—जिहं बांणक्क कटाख, चपळ नयणी चंद्राणखि । के कुरग लोचना, काम चक्खी केकाणी । —गु. रू. बं.

३ सूरत, शक्ल, आकृति, स्वरूप, बनावट ।

उ०—१ ओपै हाट ओछाड़िया, पाटबर अणपार । बांणक जाणक बद्दळा, इद्र धनुस उणहार । —रा. रू.

उ०—२ तारागढ छायौ रहै, सोर तणै नीसार । आबू जाणक ओपियौ, बांणक बद्दळ धार । —रा. रू.

४ सजावट, ठाट-बाट ।

५ रग-ढग ।

६ ढग, प्रकार ।

उ०—तदि जोड राम लछमणतणौ, विध बांणक विसतारिया । बह कळस बादि घर रचत बह, पह मेडतै पधारिया । —सू. प्र.

७ एक वर्ण-वृत्त जिसमे सर्व प्रथम नगण फिर भगण और अत में भगण होता है ।

उ०—आठ आठ सौ वजि उभै, सहस रूप सभळावि । नगण भगण स जगण निरखि, बांणक छद वतावि । —ल. पिं.

८ देखो 'वणगत' (रू. भे.)

उ०—राव 'दुरगौ' जोरावर थको रहै। राणा सूं मिळं नहीं। राणा नै राव दुरगै श्रापस मे बांणक को नहीं। —नैणसी

रू. भे.—बांणक, बांणिक, बानक, वाणिक, वाणक।

बांणण, बांणणी—देखो 'वणियाणी' (रू. भे.)

उ०—थळ कतार लांघण थटै, ले जिहाज जळ श्रंत। भोळी ढाळी बांणणी, बेटा धूत जणंत। —बां. दा.

बांणप्रस्थ—देखो 'वानप्रस्थ' (रू. भे.)

बांणरस—देखो 'वाराणसी' (रू. भे.)

उ०—संजुत वसत बांणरस सोखा। नागलता मघई पत्र नोखा। —सू. प्र.

बांणवहण—स. पु —१ नाव, जहाज। (श्र. मा.)

२ देवी प्रकोप होने की श्रवस्था या भाव।

बांणा—देखो 'वाणी' (रू. भे.)

उ०—सारद थे सु-प्रसन हुवौ, दे श्रक्खर बांणा। —द. दा.

बांणारसी—देखो 'वाराणसी' (रू. भे.)

उ०—पछै गाम रै धणी राजा रा गुर रा बेटा नै पूछ्यौ थे बांणारसी गया था सो का ही भण्या।

—राजा रा गुर रा बेटा री वात

बांणाळ—१ देखो 'बांण' (मह., रू. भे) (डिं. ना. मा)

२ देखो 'बाणावळी' (मह., रू. भे.)

बांणावळी—देखो 'बाणावळी' (रू भे)

बांणावली—सं. पु.—रथ। (डिं. ना. मा.)

बांणास—देखो 'बाणास' (रू. भे.) (ना. डिं. को)

बांणि—देखो 'वाणी' (रू. भे)

उ०—१ डीभू लंक, मराळि गय, पिक-सर एही बांणि। ढोला एही मारुई, जेहा हंक निवांणि। —ढो. मा

उ०—२ बांणि श्रनादह फुड वयण, सुभ भाखा सरजिश्र। गाहा करई वर रसाउला, दूहा छद कवित्त। —गु. रू ब.

बांणिक—देखो 'वाणक' (रू. भे)

उ०—१ तपत बाण कीधौ हर ताणिक। वामी-बध एरसं बांणिक। —सू. प्र

उ०—२ श्राभा रूप जोम ऊफाणिक। वणियौ श्रनग दूसरं बांणिक —सू. प्र.

२ देखो 'वणिक' (रू. भे.)

बांणिज—१ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ०—बांणिज विण साह, सहर हाटा विण, जळ विण गाव वसै जेहडौ। विण गाया ग्रिगम, सभा पडित विण, विण महमा तीरथ तेहडौ। —श्रासौ बारहठ

२ देखो 'वणिक'

बांणिजू—१ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

२ देखो 'वणिक' (रू. भे.)

उ०—लाख बिच्यारि बांणिजू चालइ, बार लाख उलगांणा। करकटीया हबसी श्राथाइत, फरसीधर मपराणा। —कां. दे. प्र.

बांणिज्य—स. पु. [स. वाणिज्य] वस्तुश्रो का क्रय-विक्रय, व्यापार, व्यवसाय।

उ०—बांणिज्य वडम फबि जेण वेर। कोटेक जाण वप धर कुमेर —सू. प्र.

रू भे.—बणज, बणिज, बनज, बिनज, बाणिज, वाणिज्य, बनिज, बिणज, वणिज्ज, वाणिज, वाणिजू, वानिज, विणण, विणज।

बांणिनी—स. स्त्री [स. वाणिनी] १ चालाक स्त्री, धूर्त्त श्रौरत।

२ नर्तकी, श्रभिनेत्री।

३ दूती।

४ स्वेच्छाचारिणी या व्यभिचारिणी स्त्री।

५ शराब के नशे मे चूर स्त्री, मदोन्मत्त स्त्री।

६ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे १६ वर्ण होते हैं तथा इनका क्रम नगण, जगण, भगण, जगण तथा रगण श्रौर एक गुरु होता है।

बांणिया कूटाबणियो—स. पु.—लुब्धक नामक तारा।

बांणिया-रौ वेवठ—स. पु.—वर्षा ऋतु मे होने वाला एक उद्‌भिज पदार्थ जिसे 'लाकी-मूळी" भी कहते है।

बांणियावटी, बांणियावाटी—स स्त्री [स वणिक-वृत्ति वणिक-पाटी]

१ एक प्रकार की गणित विद्या जो बनियों के व्यापार व लेन-देन मे काम श्राती है।

२ एक प्रकार की भाषा एव लिपि जो बनियों की बहियो मे लिखी जाती है।

३ बनियें का कर्म।

वि —१ बनियें की, बनिये सम्बन्धी।

२ महाजनी।

रू भे —वाणियावटी, बाणियावाटी।

बांणियौ—देखो 'वणिक' (श्रल्पा, रू भे.)

उ०—गाहै सोदै ग्राहका, ढाहै जे गज ढल्ल। लाहौ लोटै बांणियौ, श्रा है साची गल्ल। —बां. दा.

बां'णी—देखो 'वाहणी' (रू. भे.)

उ०—धरती रौ जित्ती बार काळजो चीरीज बां'णियां लागै उत्ती वत्ती नेपै व्है, साख फळै। —फुलवाडी

बांणी—स. स्त्री. [स वाणी] १ सरस्वती, शारदा। (श्र. मा.)

उ०—भेत बुणा गाय भेव, धाभड़े न ग्रहंमेव, इंदसा सुरा ग्रजेव, साफ तास सेव। कीरती बांणी कहैव, दिला घरे संभदेव, वाह जेण चेत वेव, देव देव देव। —र ज. प्र.

२ मुह से निकलने वाला सार्थक शब्द, वचन।

उ०—१ सुणं नृपति हिन वात सुहाणी। विधिवत कहण लागो मिथ बांणी। सू. प्र

उ०—२ मन री बात नै बांणी मिळता ही राजाजी नै चेतो व्हियो —फुलवाडी

३ वाक शक्ति।

उ०—ग्रथाह सुख ग्रर दुख दोनूं ई निपट गूंगा व्हैगा। गळा री बांणी वारी भार भेल नी सकै। ज्याऊं जणा लासी ताळ ताई बोला-बोला एक दूसरा रो मूडो जोवता रहया। —फुलवाडी

४ स्वर, ध्वनि, ग्रावाज, नाद।

उ०—परम हस ग्राणद मे प्राणी। ब्रह्म प्रकासि हुई तदि बांणी। —सू प्र

५ योग के अनुसार च्यार प्रकार की वाणियों मे कोई एक

उ०—चार ग्रवस्था सप्त भूमिका, पच कोस विगताना। चार सरीर भाव पुनि च्याऊ, बांणी चार सयाना। —स्रीसुखराम जी महाराज

वि वि—योग के अनुसार वाणी के च्यार भेद माने गये हैः—वैखरी, मध्यमा, पश्यती, प्रत्यना।

६ भाषा, शब्द, वाक्य।

उ०—चाद सूरज गळै मिळया। धरती रा कण कण मे हरख समायग्यो। पान पान मे रस साचरग्यो। उण मिळण ग्रर ग्राणंद री कोई बांणी नी ही। —फुलवाडी

७ जिव्हा, जीभ।

८ बोलने की क्रिया या भाव।

उ०—१ ग्रतस रा मून मिळ्या पछै बांणी री सुध-बुध बावडी। होठ खुलता सा निगै ग्राया। —फुलवाडी

९ साधु-सतो द्वारा कथित या रचित, उपदेशात्मक पदो, दोहो या सोरठो का संग्रहित ग्रथ।

उ०—पाप चीकणा भव पैलै मे, खूब करेला त्यागिया। बांणी लिखि गया साध विचारी, मुकति हुवै मन मारिया। —ऊ. का.

१०—प्राय 'तदूरा' पर गाया जाने वाला निर्गुण भक्ति का पद।

११ साहित्यिक निबध।

१२ एक छद।

१३ केवट, नाविक। (ग्र. मा.)

१४ प्रससा।

१५ ध्रुपद की चार वाणियो में से कोई एक या सबः—गौरहारी, नौहारी, डागरी, ग्रौर खंडारी (सगीत)

रू भे.—बाण, बाणि, बाणी, बानी, वाण, वाणा, वाणि।

बांणीमंड-सं. पु. [स. वाणीमण्ड] दात। (ग्र. मा.)

बांणीरणजोधार-स. पु.—पंडित, विद्वान। (व. मा.)

बांणोतरो-स. पु.—वनिक समाज।

उ०—सो साहुकार री बहू मूंई। पछै कितरैक दिने साहुकार नै सहर रा बांणोतरां कही। साहजी विवाह करो। तद साह बांणोतरा नै कहा। ग्रबै हूं वरस पचास रो हुयो, हूं विवाह करूं नही। —साहूकार री वात

बांणो-स. पु. [सं. वाहन] १ पानी लाने के लिये गाड़ी पर रखे हुए जल पात्रो का समूह।

२ उक्त प्रकार से पानी लाने की क्रिया या ढग।

३ रू भे.—वाहणो।

बांण्यौ—देखो 'वणिक' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—बांण्यौ मित्र न वेस्या सती, कागो हंस न बुगलो जती। —ग्रज्ञात

बांति-सं. स्त्री. [स. वान्ति] १ वमन, कै।

२ उगाल।

बांतौ-सं पु.—ग्रतर, फर्क।

बांथ—देखो 'बाथ' (रू भे.)

उ०—तद कुंवरसी दीठो माजी छेहड़े ग्राय गया। तद ठाढी बांथ घात कहण लागो, जी माजी जीव मनै भी प्यारो छै। —कुंवरसी साखला री वारता

बांद—१ देखो 'बादो' (मह, रू. भे.)

उ०—ऊचा नीचा वाक्य बोलइ, प्रही प्राहुणो टलइ, छोरु चाकरु भिडइ, बांद गुलाम मुहि चडइ, थको सीकउ श्रोडइ, बोलावी माथु फोडाडइ, कुटब सदा दुखि पाडइ। —व. स.

२ देखो 'बाद' (रू. भे.)

बावणो, बांदबो—देखो 'बादणो, बादबो' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ ग्रायो चाहुता ग्रगद, मह सेन मझारे। प्रभु पद बांदै जोड पाण, ग्रग्र मुकट ग्रधारे। —सू. प्र.

उ०—२ ग्रब डाळ कुंभ ग्राणि, विमळ वर तरणि वंदावै। बांद कळस तिण बार, भूप द्रब रूप भरावै। —सू. प्र.

उ०—३ बांदण ग्राव्या स्रेणिक राय, नगर लोक पिण वादण जाय। ग्रापै प्रभु गणधर उपदेस, सजल जलद ग्रनुहार विसेस। —स्रीपाल रास

उ०—४ बळ दुधमार बयण बोणासुर, मार्य दिन न कीध अवार। वडा वडा गा तोरण बांधै, नवल बना अहकार निवार। —ग्रोपो ग्राढो

उ०—५ कस्ण चतुरद्दसी तणइ दिनि चतुर्पथि स्नान करइ, सिद्धा-यतनि ध्यान धरइ, ग्रस्वत्थ प्रभृति वनस्पति बांदइ, सकुनस्थानीया ग्रानंदइ। —व. स.

बांवणहार, हारौ (हारी), बांवणियौ—वि०।
बांवियोड़ौ, बांवियोड़ो, बावयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बांवीजणौ, बांवीजबौ—कर्म वा०।

बांवर—देखो 'बांनर' (रू. भे.)

बांवरपगौ—स. पु —वह बैल जिसके पिछले पैर के टखने भूमि को स्पर्श करते हो।
(मि —मोदीपगौ)

बांवरमाळ—देखो 'बादरमाळ' (रू. भे)

बांवरी—स. स्त्री. [देशज] १ मोट की रस्सी के साथ जुड़ा हुआ एक लकड़ी का उपकरण जिसमे कील डाल कर बैलो के साथ जोड़ा जाता है।
२ देखो 'बांनर' (स्त्री.)

बांवरौ—देखो 'वानर' (ग्रल्पा, रू भे)

बांवियोड़ौ—देखो 'वादियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. वादियोडी)

बांवी—देखो 'वादी' (रू भे.)

उ०—नै जीमण रो वखत हुवौ। तरा ठाकुरा बांवी मागै वीरमदे जो री माजी सीसोदणी नू कहायो जीमण सारू। —द. दा

बांदोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे.)

बांबोळी—देखो 'बदोळी' (रू भे.)

बांधणौ, बांधबौ—१ देखो 'बांधणौ, बाधबौ' (रू. भे)

उ०—ना हू सीची सज्जणा, ना वूठउ ग्रग्गाळि। मो ताळि ढोलउ बहि गयउ, करहउ बांध्यउ डाळि। —ढो. मा

बांधणहार, हारौ (हारी), बांधणियौ—वि०।
बांधियोड़ौ, बांधियोडो, बांध्योडौ—भू० का० कृ०।
बांधीजणौ, बांधीजबौ—कर्म वा०।

बांधियोड़ौ—१ देखो 'बांधियोडौ' (रू भे)
(स्त्री बाधियोडी)

बांन—सं. पु.—१ यश, कीर्ति, शोभा।

उ०—१ कटा वेक्ष झाड झाडा पहाड़ सैलोट कीधा। बस राण मेवाड़ा ग्रहाडा चाढै बांन। —राजा उम्मेदसिह सीसोदिया रो गीत

उ०—वाधारण हिंदुसथांन बांन। 'ग्रभमाल' जोड़ नह भूप ग्रान। —सू. प्र.

उ० —३ ऊभै करग जग ऊपरा, सखरा खरा महज्ज। बांन बधारण वीरवर, सूर मधीर सकज्ज। —ल. पि.

२ हौसला, साहस, जोश।

उ०—२ बांन बधारे कमधजा, ग्राधारे ग्रसमान। 'गजबंधी' नवसाहसै, मागा बारह खान। —गु. रू. बं.

३ उमग, उत्साह।

उ०—वाहै खग बींद जिही चढि बांन। धरा नवकोट सिरै परधान। —सू प्र.

४ प्रतिष्ठा, इज्जत,।

उ०—चित पुड़ि साहिब वांन हरामत ज्यू 'जैता' हरौ, उणि वेळा लागौ ग्ररसि, वस वधारण बांन। —वचनिका

५ तेज, कान्ति, दीप्ति।

उ०—ग्रळगी वे (व्है) जोहे ग्रली, जोवण दीजौ जान। माणीगर म्याराम को, वेखण दीजौ बांन। —मयाराम दरजी री बात

६ वचन।

उ०—वहिनी थई त्रिलोचना, वदै परस्पर बांन। —वि. कु

७ स्वाद, जायका।

उ०—वळी बीजा ग्रणा पकवान, जिमता बाधइ मुख नु बांन, नै कुण जाति, नव नवी भाति, दहीं वडा गदवडा —व स.

[प्रत्य.] ६ कुछ शब्दो के ग्रागे लगने वाला एक सम्पन्नता सूचक प्रत्यय।

७ देखो 'बाद' (रू भे)

रू भे —बान।

बांनइत—देखो 'बानैत' (रू भे)

उ०—पतिसाह सल्ल ऊघाडि ग्रोळि, ऊतेडि ग्रवि ग्राउध ढलोळि। बानइत जेम राणिग देव। बोलिया वाघ बिहू बाह बेव। —रा. ज. सी.

बानक—देखो 'बाणक' (रू भे)

बांनगी—देखो 'बानगी' (रू. भे.)

बांनणी—देखो 'बानणी' (रू भे)

बानप्रस्थ—स पु. [स. वानप्रस्थ] ग्रार्य सस्कृति के ग्रनुसार मनुष्य-जीवन के चार ग्राश्रमो मे से एक जो गृहस्थ ग्राश्रम के बाद तथा सन्यास ग्राश्रम से पहले ग्राता है। जीवन की तीसरी ग्रवस्था।
रू. भे —वाणप्रस्थ, बानप्रस्त, वानप्रस्थ, वाणप्रस्थ।

बांनर-स. पु. [सं. वानर] १ मनुष्य से मिलती-जुलती शक्ल का एक प्रसिद्ध प्राणी, बंदर, कपि।

उ०—ऊधम किर राळै धर अंदर। बाग असोक लागड़ै **बांनर**। —सू. प्र.

पर्या—कपी, कीस, प्लवग, प्लवगम, बनचर मरकट माकड़ लंगूर साखामृग, हरि।

२ दोहा नामक छंद का एक भेद विशेष।

वि. वि.—देखो 'मरकट' (७)

३ राठौड़ वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—'नारण' 'केसव' तणै निभै नर। बन्नर नील जिसौ बळ **बांनर**। —रा. रू.

४ भाटी वंश की एक शाखा।

५ बढ़ई का एक औजार विशेष।

रू. भे.—बदर, बनर, बन्नर, बांदर, बानर, वनर, वन्नर, वनर, वन्नर, वांदर।

अल्पा.—बंदरियौ, बांदरियौ, बांदरौ, बानरडौ, वादरौ, वानरौ।

६ देखो 'बदर' (रू. भे.)

बांनरमाळ—देखो 'बांदरमाळ' (रू. भे.)

उ०—हे पान अणावौ ए मारी जच्चा राणी रै ताम रा, हे जठै पूरवि छै **बांनरमाळ** ए। —लो. गी.

बांनरमुख-सं. पु.—नारियळ। (अ. मा.)

बानरी-वि. [स. वानर+ई प्रत्य.] १ बंदर की, बंदर सम्बन्धी।

२ बंदर के समान।

उ०—रूखारा जूट रामचंद री **बांनरी** सैन्या ज्यों रीछां री जमात सा निजर आवै छै। —रा. सा. स.

स. स्त्री.—१ केंवाच, कौंछ।

२ देखो 'बानर' (स्त्री.)

बांनरौ—देखो 'बानर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—दादू डोरी हरि के हाथ है, गळ माहि मेरे। बाजीगर का **बांनरा**, भावै तहा फेरै। —दादूवांणी

बांनवासिका-स. स्त्री. [स. वानवासिका] सोलह मात्राओं का एक छन्द विशेष जिसमें नवीं और बारहवीं मात्रा लघु होती है।

बांना-स. स्त्री. [स.] बटेर, लवा।

बांनायुज—देखो 'बनायुज' (रू. भे.) (डिं. ना. मा.)

बांनाबध, बांनाबंधण, बांनाबंधण—देखो 'बानाबध' (रू. भे.)

बांनी-स. स्त्री.—१ भस्म, विभूति, राख।

उ०—१ **बांनि** अग वळेट, मेखळी भुज पर मेली। ले मांछदर नाम, साह तन कथा सेली। —पा. प्र.

उ०—२ दूध पाय मुडा मे बांनी री चिमटी भुरकाती। —फुलवाड़ी

२ कांती, दीप्ति।

उ०—जोम अनग सौ गुणौ जवांनी। वप व्है कनक सोळिमां **बांनी**। —सू. प्र.

रू. भे.—बांणी।

बांनीर-स. पु. [स. वानीर] १ बेंत।

मर सबळा आगै निबल, नीर घकै **बांनीर**। वाय घकै नमण जाय वच, भलो नमण गुण भीर। —बां. दा.

२ पाकर का पेड़। (सभा.)

बांने-क्रि. वि.—१ ओर, तरफ।

उ०—हिंदवा छात दोय बात ले हालियौ, बाळग्यौ आक जुग चिहूं **बांने**। —दुरसौ आढौ

बांनेत, बांनैत—देखो 'बानैत' (रू. भे.)

उ०—१ मुख **बांनैत** महीपती, करन' अने चंद्रभांण। कियौ सक्रोधा साम कज, या जोधा आरांण। —रा. रू.

उ०—२ तरै अजब' भड तेडिया, वड रावत **बांनैत**। मार मार मुख मुख मुणै, बाह प्रळब बरदैत। —कल्याणसिंह नगराजोत बाढेल री वात

उ०—३ बेनो सहि बिरदैत, जेठी गोवरधन जिसा। 'करनाजळ' अणवर कन्है, वडजानी **बांनैत**। —वचनिका

उ०—४ रिण पार्खं झगड़ा बिना दुमनौ रहै लाज इतरी के चित मैं ही नहीं समावै झगडा री वेळा पाछा पग दे नहीं जांणै लाज रा लगर पड़िया है। उण वीर नैं **बांनैत** कहणौ। —वी. स. टी.

बांनोळी—देखो 'बदोळी' (रू. भे.)

बांनोळौ—देखो 'बदोळौ' (रू. भे.)

बांनौ—देखो 'बानौ' (रू. भे.)

उ०—१ **बांनौ** देखै वादियै, क्या करणी सू कांम। —अग्यात

उ०—**बांना** औपै हद्द विहद्द, लाल सपेत स्याह् जरद्द। —गु. रू. बं.

उ०—३ वीर सिंगार चढै **बांना**। पहरै अतर अरोगै पाना। —सू. प्र.

उ०—४ वणिया गजा तणै सिर **बांना**। मिळिया तुरळ रजी असमाना। —रा. रू.

उ०—५ सबजे जरदाई लाल सिहाई **बांनै** छायौ ब्रहमंड। फररा बैरक्कां फाबी कटक्कां जाणक फूलै वन-खंड। —गु. रू. ब.

उ०—६ दृढ समीवर जाणियै, रिद्धि करी राजा नो रे। गुनह खमै निज प्रजा तणौ, दिन दिन वधतै **बांनौ** रे। —वि. कु.

बामहस्तभयंकरासन–स. पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक जिसमे बांये हाथ को ऊंचा रखकर पलथी मार कर बैठना होता है।

बामांग–वि. [स. वाम-अंग] १ बांयें अंग का, बायें अंग सम्बन्धी।

२ बायें अंग की ओर का।

३ देखो 'बांमागी' (रू. भे.)

रू. भे.—बांमाग, बांमग।

बांमांगिनी, बांमागी–स. स्त्री. [स. वामा+अंगी] पत्नी, स्त्री।

रू. भे.—बांमांग।

बांमा–स. स्त्री. [स. वामा] १ धर्मपत्नी, स्त्री।

उ०—देवी कांम ही लोचना हाम कामा, देवी वासनी मेर माहेस बांमा।

—देवि

२ सरस्वती, शारदा।

३ लक्ष्मी।

४ रमणी, युवती।

उ०—फूटै चीर साबळा नीसाण वार पार फूटै, माथा सत्रां तूटै जाणै हारां मोती लाल। अर्क-पंजै मेछा छळै बांमा हुवै अग्रामा छूटै, सग्रामा प्रजकां लूटै बीजो रायासाल।

—रावदेवीसिंह मेखावत री गीत

५ सुन्दरी, स्त्री।

६ पृथ्वी। (ना मा.)

८ दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, यगण और भगण तथा अंत मे एक गुरु होता है।

रू. भे.—बामा।

बांमाचार–स. पु [स. वामाचार] तांत्रिक मत का एक भेद, जिसमे पच मकार—मद्य, मास, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन द्वारा उपास्य देव की आराधना की जाती है।

बांमादेवी–स. स्त्री. [स. वामदेवी] पारसनाथ जी की माता का नाम।

उ०—अस्वसेन नृप कुल तिलौ रे, बांमादेवी को नद। —वि. कु.

बामासर–स. पु.—पाडल नामक वृक्ष। (अ. मा.)

बांमी–क्रि. वि. [सं. वाम] बायी ओर, बाई तरफ।

उ०—महोदर वजर मुमटदु दाहे मसत, दुरीमुख घूमनर घूम बांमी दसत। —र. रू.

स. स्त्री [स. वामी] १ घोड़ी।

२ गधी।

३ हस्तिनी।

४ गीदड़ी।

वि.—५ वाम मार्गी।

रू. भे.—बामी।

बांमीबंद, बांमीबंध–स. पु.—१ राठोड़ों का विशेषण सूचक शब्द।

२ राठोड़ राजपूत।

उ०—तपत बाण कीधौ हर ताणिक। बांमीबंध एरसै वाणिक।

—सू. प्र.

वि. वि.—इनके साफे या पगड़ी का बध बाई ओर होता है।

३ गौड़ राजपूत।

उ०—बापम बांमीबंध, कंध अवकध कहाणौ, खान जिहां भजियौ, पछ घर बनम पछांणौ। —विनवरासौ

रू. भे.—बदवामी, बधवामी, बामीबंद, बामीबंध।

बांमै–क्रि वि [स वाम] बाई ओर।

उ०—'दुरग' खडे' दक्खिण दिसा, अकबर सू हित आख। कर घर गुज्जर जीमणौ, छप्पन बांमै राख। —रा. रू.

बांमौ–वि [स वाम] (स्त्री. बांमी) १ दाहिने का विपर्याय, बाया।

उ०—सु लोहार कौ जु बांमौ हाथ। रुक्मणजी री डील हुऔ। रुक्मइये की तरफ की देखै छै तब तपि आवै। रुक्मणीजी की तरफ देखै सीतळ होय आवै। —वेलि टी.

उ०—२ पूठी बांमै दाहिणै, आगळि अगै-वाण। राजा "गाजी साह" नैं, गाखदी रहमाण। —गु रू. ब.

२ प्रतिकूल, उल्टा विरुद्ध।

उ०—'वैणौ' वहै जगत म बांमौ, नाहर अमर करण जग नामौ। सेरो घरा जावतो सोयौ, करणी मौज करारी कामौ।

—वैणीदास साचोरा रौ गीत

३ दुष्ट, शठ, नीच।

रू. भे—बामौ।

बांयली–वि. स्त्री. १ पिछली, पीछे की।

२ देखो वमूनौ' (अल्पा., रू. भे)

बांयलौ–वि.—(स्त्री बायली) पिछला, पीछे का, शेष।

२ देखो 'वगूलौ' (रू. भे.)

बांये–देखो 'बासै' (रू भे)

बांल्हौ–स पु—वात रोग की एक प्राचीन चिकित्सा।

बांस–वि—१ वश का, वंश सम्बन्धी।

२ देखो 'बस' (रू. भे.) (उ. र.)

३ देखो 'बाग' (रू भे)

उ०—१ चिगता उखेल पखरे चरित, रखै मेळ अमेळ रुख। वध बेध बळै खळ बांस ज्यूं, दाह जळै उर साह दुख। रा. रू.

उ०—३ वेण बांस वांसळी वजावण। जिनी मोहन राधिका धव।
—ह. नां. मा.

बांसइ-अव्य.—१ पीछे।

उ०—१ के मेहल्या पूगळ विसइ, किही मळाया भार। साल्ह कुंवर करहइ चढयउ, बांसइ चाहि नार। —ढो. मा.

उ०—२ अस तरे सलीता अस्सराळ। कामाळां पूठी के कंठाळ। ऊभारि तडगी पूरि अभ बांसइ सहारि बूहा विलभ। —रा. ज सी

उ०—३ बादल कहै सहू भलो, हुइ मावीसीइ तुम नांम रे भाई। करज्यो बांसइ कुमरजी, सबळो ऊपर सामि रे भाई।
—प चं चो

२ निकट, समीप, पास।

उ० —सूबा एक सदेसडउ, बार सरेसी तुज्झ। प्रीतम बांसइ जाइ नइ, मुई सुणावै मुज्झ। —ढो. मा.

बांसरी—१ देखो 'वंसी' (रू भे.)

२ देखो 'बांसरी' (रू. भे)

बांसली-वि. स्त्री. १ पीछे की, पिछली।

उ०—१ रात पोहर १ बांसली थी, सु सासरिया हालण दे नही।
—नैणसी

उ०—तरै इण बांसली वात सोहू माडनै कहची। —नैणसी

रू. भे —बाहली।

२ देखो वंसी' (रू. भे.)

उ०—१ खण भुखि वाइ बांसली, खण करि वेणा ताळ। सीसि मुगट पय घूघरी, गळि मोत्ताहळ माळ। —मा. का. प्र.

उ०—२ वीणा ताल अदग बाज रहिया छै। बांसली बाजि रही छै। ढोलका वाजि रही छै। —रा. सा. स

३ देखो 'बासरी' (रू. भे)

बासळो, बांसलो-वि [सं. वश+रा प्र. लो] (स्त्री वासली) १ वशज सतान, वशके।

उ०—१ तारा पातसाजी इण नू नरवर पटै दीनी। सू नरवर आसकरण रा बांसला राज करै है। —द. दा.

उ०—२ सोम केहर रौ, देवडी लाछा रै पेट रौ। इण रै को दिन विकूंपुर हुतौ। तिण सोम रै बांसला सोम-भाटी छै। —नैणसी

वि.—२ पीछे का, पिछला।

उ०—१ गढ बांसलौ भोमियां लीयौ राणी। आंबावरी जात करनै गाव नागदहैं बाभण रै अाय डेरौ कियौ। —नैणसी

उ०—२ तिको जलड़ौ बासलै आसण भीला सांमो बैठो।
—जलड़ा मुखड़ा भाटी री बात

३ शेष, अवशिष्ट।

उ०—राव दूदै सूं लड़ाई कीवी। सु राव दूदौ कांम आयौ। अर आकूंतखा पण काम आयौ, घड़ी ५ तथा ६ दिन बांसलै थकै।
—नैणसी

रू. भे.—बांसलौ।

बांसा-स. स्त्री. [देशज] १ घोडे की जीन।

२ देखो 'वासं (रू. भे.)

उ०—१ कासम परलै जोस कमधां, एक थकै हुयगो ऊबंधां। भाजै आप गयो मभ भीता, बांसा लोक लखं सुख वीतां। —रा. रू.

उ०—२ बांसा सूं ऊदैजी तरवार काढ़ अर वाही सु बिचड हुआ।
—नैणसी

बांसावळी—१ देखो 'वासावळी' (रू. भे.)

२ देखो 'वंसावळी' (रू. भे)

३ देखो 'बांसवाळी' (रू. भे.)

बांसियौ-स पु—१ बास का बना अनाज बोने का एक उपकरण।
(शेखावाटी)

वि वि.—देखो 'नाई'१

२ एक अर्द्ध चन्द्राकार गोल घडा हुआ पत्थर।

रू. भे.—बासियौ।

बांसौ-कि वि.—पीछे।

उ०—सो प्रोहित चाल जांगळू आयौ। माळी रै घर डेरौ लियौ। रात रहौ। परभात खबर लीवी। सो कुवर तो सिकार चढ गयौ। तद प्रोहित पिण बांसौ चढ गयौ। —कुवरसी साखला री वारता

२ देखो 'वंसी' (रू भे)

बांसै-क्रि. वि—१ पीछे से, पीछे।

उ०—१ केहर मत बाळक कहौ, देखौ, जात सुभाव। बांसै देखै बाहरा, परत न छडै पाव। —बां. दा.

उ० २ करहो कथ कुबेरिया, सुगणी मारु सग। बांसै उमर सुमरो, ताता खडै तुरंग। —ढो. मा.

उ०—हुरम कबीला रिढ तर, साथै मीर प्रचड। इण बांसै करचलियौ, आसा खड विखड। —रा. रू.

२ पश्चात, बाद में।

उ०—१ 'सत्तौ' लूण करणोत, राव रणमल साथै चीतौड़ कांम आयौ। 'सत्ता' रौ राव रिणमल सू बोल हुतौ—"था बांसै हू नही जीवू"। —नैणसी

उ०—२ ताहरा सयणी तौ हीमाळै नूं हाली। बांसै सात मे दिन बीजाणद आयौ। —सयणी री बात

३ शेष, बाकी।

४ समीप, पास ।

उ०— राणौ अजमेर कितरा एक दिन रहसी । सवारे सोह साथ बांसै छै, तिकै भेळा करनै जाय अजमेर लेस्या ।

—राव मालदे री बात

५ साथ में ।

६ मदद में, इमदाद मे ।

उ०— बीकाणौ देसाणै बांसै । करनादे पलटै किम कोट ।

—द. दा.

बि —७ अधीन, अन्तर्गत ।

उ०—१ किसनावत भाटियां रा गाव आगै तो पूगळ बांसै हुता हमैं तो बीकानेर वासै छै । —नैणसी,

उ०—२ आ खरड विकूंपुर सू जुदी जेसळमेर बांसै, जुदी चाकरी करै । —नैणसी

रू. भे.—बासा, बांसे बासै, वसै, वाये, बामा ।

बांसोली—देखो 'बसूली' (अल्पा., रू भे) (उ र)

बांसोलौ—देखो 'वसूली' (रू भे)

बांसौ—सं. पु.—१ पीछा ।

उ०—१ सोनगरां अर राव तीडैजी रै वेढ हुई । मानगरा रा पग छूटा । तरै राठौडा बांसौ कियो । —नैणसी

उ०—२ कान्है नू मारियो । वित री बासौ कियौ । मेर ज्यूं-ज्यू, लाधा, त्यू मारिया । —नैणसी

२ पीछे का भाग, पीठ ।

उ०—१ तरै राजा री बांसै सु गाठो फाडने बाळक काढियो न पाटो बाध्यौ । —रा. व वि.

उ०—२ कछव कछवाह बांसौ पलट करै किम । वसुह ची माड बिहुं भडा बांसै । —महियारियो पुरी

३ साथ ।

४ मदद, इमदाद ।

५ बेंट, दस्ता, मूठ ।

६ देखो 'बास' (अल्पा , रू. भे)

रू भे.—बामो ।

बांह—देखो 'बांह' (रू. भे)

उ०—चाचर सूर पऊर गह, चाचर चाई देग । लक्ख लहै द्रुह बाह बळि, दुहु दुहुं बधै तेग । --गु रू ब.

बांहड़ी—देखो 'बाह' (अल्पा , रू. भे)

उ०—रतन मे राखडी वेणी वासग जडी, सुभरा बांहड़ी लहक लोडै । स्वाति नौ विदलौ नासिका निरमयौ, आज आल्यगन कम्न क्रोडै । —रूकमणी मगळ

बांहणौ—देखो 'वाणौ' (रू. भे.)

उ०—तिण गाव कूवो १ छै, तिण पाणी निपट मीठो पालर सारीखो छै, उठारा बाहणा पाणी सहर आवै छै । —नैणसी

बांहळी—देखो 'वाळौ' (अल्पा., रू. भे)

बांहली—१ देखो वसी' (अल्पा., रू. भे)

२ देखो 'बामली' (रू भे)

बांहोलौ—देखो 'वसूलौ' (रू भे.)

बा-सर्व. स्त्री.—१ वह ।

उ०—१ कुळवंती सू कीत रो, उलटौ है आचार । वा न तजै घर आपरो, जग इण रो संचार । —बा. दा.

उ०—२ पडसी जद काम दोडसी पाळी, दादचाळी अमुरा भुजडाण वा आवै ऊपर इकताळी, देसणोक वाळी दीवाण । —अग्यात

२ उस, उन ।

उ०—१ राज पद पावै या कहावै राजकुळ मे गायो कवि गुन कै बनायो बा को महावीर । —ऊ का.

उ०—२ म्हारी गळिया ना फिरै, बा के आगण डोलै हो । म्हारी अगुळी ना छुवै, बा की बांहया मोड हो । —मीरा

अव्य.—१ अथवा, या ।

उ०—मिघामणो वा इद्रासणो वा प्रिथीपती वा मरणपती वा । भ्रित मुरो वा भ्रित नरो वा, दिलीसरो वा जगदीस रो वा ।

—गु रू. ब

२ और, तथा, भी ।

३ जैसा, सदृश ।

४ विकल्प या सन्देह वाचक ।

५ समाप्ति सूचक अव्यय, इत्यलम, बस ।

उ०—पेट रा आतरा गळै चढै जद बात कहीजै । लारला भो रो थनै मागत चूकाव् । कममल रा मूडा में वा नो निकळै ई कोनी ।

— फुलवाडी

स स्त्री – १ अबा । (एका)

२ विकलप । (,,)

३ पेम, स्नेह । (,,)

४ अरि । (,,)

५ प्रहार, चोट । (,,)

६ देखो 'वायु' (रू भे)

उ०— पच्छि मैर देस ता आवी मि नवी जाणी मासी । बा वाइ तेह्वा ओलवा लीजि, थई रही तिहा दासी । —नळाख्यान

रू भे.—बा ।

वा'—१ देखो 'वाह' (रू. भे.)

२—देखो 'वास' (रू. भे.)

वाअणी—१ देखो 'वाहनी' (रू. भे.)

२ देखो 'वाहणी' (रू. भे.)

वाअणी, वाअबौ—१ देखो 'बाजणी, बाजबौ' (रू. भे) (उ. र.)

उ०—सीयाळउ तउ सी पडइ, उन्हाळइ लू **वाइ** । वरसाळइ भुइं चीकणी, चालण रती न काइ । —ढो. मा.

२ देखो 'बावणी, बावबौ' (रू भे)

वाअवी, वाअवे—देखो 'वासदे' (रू. भे.)

वाअळी—देखो 'वाळी' (अल्पा., रू भे)

वाअली - देखो 'वा 'ली' (रू. भे.)

वाइटौ—देखो 'वाइटौ' (रू भे)

वाइदौ—स. पु [देशज] फूस, कचरा.

वाइ—स स्त्री. [स वाद] १ आवाज, ध्वनि ।

उ०—कुझडिया कळिअळ कियउ, सुणी उ पखइ **वाइ** । ज्यांकी जोडी बीछडी, त्या निसी नींद न आइ । —ढो. मा

२ देखो 'वायु' (रू भे.)

उ०—१ बदीवाळू घणा सीदाता, दीठा पाडइ डाढि । दिसि अगासई तावडि दाझइ, रातइ वाइ ताढि । —का. दे. प्र.

उ०—२ माघे **वाइ** माहावठी, सीत करइ सचार । माहरइ माधव सरण थी, लागइ नही लगार । —मा का. प्र.

३ देखो 'वापी' (रू. भे)

उ०—सरोवरा तटाक हौद, तीरथ प्रमाण ए । वावी अनूप कूप **वाइ**, नीझरं निवाण ए । —गु रू ब

४ देखो 'वादी' (रू भे)

उ०—**वाइ** करडि केसरि किसोरु, जिणपत्ति जईसू । पुणवि जिणेसर सूरि सिद्ध, आरंभिय सीसु । —धरम कलस मुनि

५ देखो 'वाई' (रू. भे.)

वाइक—स पु.—१ मित्र, दोस्त । (ह. ना. मा.)

२ देखो 'वाक्य' (रू भे)

उ०—तौ 'केहर' कहिजै सताब, **वाइक** विगताळा । कूदि पडा गज कटहड़ा, चढि गोल विचाळा । —सू. प्र.

३ देखो 'वायक' (रू. भे)

वाइकचर—स. पु. [स. वाक्य+चर] श्रवण, कान । (ह. ना. मा.)

रू. भे.—**वायकचर** ।

वाइड, वाइडि—देखो 'बायड' (रू. भे)

वाइडियौ—देखो 'बायडियौ' (रू. भे.)

उ०—मेळौ कहै—सिखराजी ! हूं तौ **वाइडियौ** छूं । कहयौ—उठौ ठाकुर अमल करो । —ऊदे उगमणावत री वात

वाइड़ौ—देखो 'वायड़ौ' (रू. भे.)

वाइणौ, वाइबौ—१ देखो 'बावणौ, बावबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—अकस्मात् नक्षत्रमाला अद्रस्य थइ, विली वाउ **वाइवा** लागा, तलांनी माटी ऊपरि आणइ । —व. स.

वाइदौ - देखो 'वादौ' (रू भे)

वाइन—स. पु [अ] शराब ।

वाइफ—सं स्त्री. [अं.] पत्नी, जोरू, स्त्री ।

वाइमल्ल—स पु.—वादियो मे मल्ल ।

उ०—मिगसर वदी छट्ठ अभारइ, मिलिआ पतिसाह संघातइं । **वाइमल्ल** बोलायउ पिछांणी, साहि बांन सहु गुदराणी । —कवि कनकसोम

वाइयोड़ौ—१ देखो 'बाजियोड़ौ' (रू भे.)

२ देखो 'बावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाइयोडी)

वाइर - देखो 'बैर' (रू. भे.)

उ०—कहियौ जी म्हारा घर सु उठीया म्हारी **वाइर** थांनूं मूकिया तै म्हारी वडाई । —चौबोली

वाइरियौ, वाइरौ—देखो 'बायरौ' (अल्पा , रू. भे.)

वाइरौ, वाइलउ – देखो 'बायरौ' (रू. भे) (उ. र.)

वाइस—१ देखो 'वायस' (रू. भे.)

उ०—ढोला, मिळिसि म वीसरिसि, नवि आविसि ना लेसि । मारू-तणइ करकडइ, **वासइ** ऊडावेसि । —ढो. मा.

२ देखो 'बाईस' (रू. भे)

वाइसचांसलर—स पु [स] किसी विश्व विद्यालय का उपकुलपति ।

वाइसचेयरमेन—सं पु [अ] १ उपसभापति ।

२ उपाध्यक्ष ।

वाइसप्रेसिडेंट—स. पु. [अ] १ उपराष्ट्रपति ।

२ उपाध्यक्ष ।

वाइसराय—स. पु. [अ] अंग्रेजी शासन-काल का भारत का सबसे बड़ा शासक, जो सम्राट का प्रतिनिधि होता था ।

वाइसी—देखो 'बाईसी' (रू. भे.)

वाईटौ—देखो 'वाइटौ' (रू. भे)

वाई—स. पु.—युवा बैलो को कृषि कार्य व गाड़ी खींचने के लिये शिक्षित करने की क्रिया ।

२ उक्त क्रिया से शिक्षित बैल ।

उ०—बाई पय प्राये हुवे, चचल गति तिण नाहि । राय कहै वछ माहरे, तु वसीयो मन माहि । —वि. कु.

क्रि. प्र.—करणी, काढणी ।

३ देखो 'बादी (रू. भे)

रू. भे.—बाई, बाइ ।

३ देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—सकसे का जैत बार, भकसे का बाई । रहणी मैं जोगेस्वर, बहणी मैं जगदीस । —रा. रू.

बाईवड़ौ—देखो 'वायड़ौ' (रू. भे.)

बाईसी—देखो 'बाईसी' (रू. भे)

बाउ—देखो वायु' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ भिलै राग वागा मुठी बाउ भल्लै । चतुरबाह रा रत्थ ज्यू पत्थ चल्लै । —वचनिका

उ०—२ वनिता समई न वेदना, करता कोडि उपाय । बाउ विलोलइ वीजणइ, को चदन घसी लाय । —मा. का. प्र.

उ०—३ हेमत रित लागी पछिरो बाउ फिरियो । उतराधो बाउ, बाजियौ । —रा. सा. स.

बाउकाय—स पु.—वायु के जीव, वायु मे रहने वाले जीवाणु ।

उ०—जद स्वामीजी कह्यौ—श्रो पाणी कठै पडसी ? जद तिण कह्यौ—हेठै पडसी । स्वामीजी कह्यौ—इहा पाणी पडता बाउकाय आदि जीवा री अजयणा व्है । —भि द्र

बाउचर—स पु. [अ.] हिसाब के ब्यौरे का कागज, प्रमाणक ।

बाउदेवता—देखो 'वायुदेवता' (रू भे)

उ०—लका राजधानि त्रिकुट परवत गढ जोगइ अत्यु बाधी पातालि घालिउ, नवग्रह खाट तणइ पाईइ बान्या, बाउ-देवता आगणउ बुहारइ, चउरासी देव छ डउ देइ । —व. स.

बाउमंडळ—देखो 'वायुमडळ' (रू. भे)

उ०—मिटतै खुरम 'भीमेण' अत दिन मछर, विढै वीछोडिया खागवाहै । पडै गज सबळ धरमडळ ऊपरा, मिळै गज-कमळ बाउमडळ माहै । —चतरौ मोतीसर

बाउल –१ देखो 'बधूळौ' (मह., रू. भे.) (उ. र.)

२ देखो 'वावळ' (रू. भे.)

३ देखो 'बावळ' (रू. भे.)

बाउलउ—१ देखो 'बावळौ' (रू. भे.) (उ. र)

२ देखो 'वावळ' (अल्पा , रू. भे)

बाउलि, बाउळी –१ देखो बावळौ' (स्त्री.) (उ. र.)

२ देखो 'बावळी' (रू भे.)

३ देखो 'बावळ' (अल्पा , रू. भे.)

उ०—१ जीव जजाळै उलझ्यौ ज्यु जोगि जटा, पाबै पांम मंझार ज्यू भोमर मे भटा । नाणै मन मे धरम करै साटा नटा, घेरी ज्यासै काल जेम बाउळि घटा । —ध. व. ग्र.

उ०—२ केसरि कथन्न सांभळि कन्नि, बाउळि कि वन्नि लागइ वहन्नि । 'वीका' हूर राजा ए वखाण, जाळोवळि सीतउ घ्रित जाण । —रा. ज. सी.

बाउलीउ—देखो 'बावळ' (अल्पा , रू. भे)

उ०—बालु नइ वेलानरु, वेउ वेतस वाणि । वघ्राण वाहलु लीउ, बाउलीउ वखाणि । —मा. का. प्र

बाउळौ, बाउलौ -१ देखो 'बावळौ' (रू भे.)

उ०—सरसती न सूझै बाउवा हुग्रो कि बाउळौ । मन सरिसो धावतो मूढ मन, पहि किम पूजै पागुळौ । —वेलि

२ देखो 'बावळ' (अल्पा , रू. भे)

(स्त्री. बाउलि, बाउळी)

बाउवौ—वि. [स. वातिक] वात रोग ग्रस्त (लबार) वाचाल ।

उ०—सरसती न सूझै ताइ त मोझै, बाउवा हुग्रो कि बाउलो । —वेलि

बाउसू—देखो 'बावसू' (रू. भे)

उ०—भारी कटक्क घर धुमइ भारि, आविया बाउसू सरि उतारि । हलहलिय देस हइवड हुवासि, नडवाणै पडिया लोक त्रासि । —रा. ज. सी.

बाएक—१ देखो 'वाक्य' (रू. भे)

उ०—राइ-बाएक । —कल्याणसिंघ नगराजोत बाढेल री बात

२ देखो 'वायक' (रू भे)

बाएरौ—देखो 'बायरौ' (रू भे.) (अ मा.)

बाओकळौ—म. पु [म. वायुस्थलम्] हवादार व खुला स्थान ।

बाक—स. स्त्री [स वाक्] १ सरस्वती, शारदा । (ह. ना. मा.)

२ जिव्हा, जीभ ।

उ०—कमध-अगजी बिमनी कहियो, वड दाता कीरत चौ बीद । बाक तुहाळी करडी बाळो, काळो भू बाऊ कासीद । —ओपौ आढौ

३ वाणी, वचन, वाक्य ।

उ०—विदेह प्रनग्या कहै एम बाक । पुत्री जो वरै सो ज ताणै पिनाक । —सू. प्र.

४ आवाज, ध्वनि ।

५ देखो 'बाकौ' (मह , रू. भे)

रू. भे.—बाक ।

वाकई–क्रि. वि. [अ. वाकिई] यथार्थ में, वास्तव में, वस्तुतः।

रू. भे.—वाकेई।

वाकचपळ–वि. [सं. वाकक्चपल] बहुत बोलने वाला बातूनी, लबार।

वाकप–देखो 'वाकिफ' (रू. भे)

उ०—वासा थी साहजादाजी सुं किणहीक मालम कीयो, कांबी अबु मेड़तै बरस २ रह्यौ छै, उठा री वाकप छै। —नैणसी

वाकपटु–वि [स. वाक्पटु] बातो मे या बोलने में चतुर।

वाकपति–स पु. [स. वाक्पति] १ वृहस्पति।

२ विष्णु।

३ सत्य देवो मे से एक।

वाकपतिराज–स. पु [स वाक्पतिराज] १ भव भूति का समसामयिक एक कवि जो राजा यशोवर्मा का आश्रित था।

२ सीयक का पुत्र मालवा का एक परमार राजा।

वाकफ—देखो 'वाकिफ' (रू. भे)

वाकफियत–स. स्त्री. [अ वाकफीयत] १ जानकारी, परिज्ञान।

२ अनुभव।

रू. भे.—वाकबियत।

वाकब–देखो 'वाकिफ' (रू. भे)

उ०—रतना इमरती सुं भात भात पकी कीवी। भिन भिन वाकब कर दीवी। भात भात री बुगका चढाई, सूवा ने पढावै इण भात पढाई। —र हमीर

वाकबकार—देखो 'वाकिफकार' (रू. भे.)

वाकबियत—देखो 'वाकफियत' (रू. भे.)

वाकबी—देखो 'वाकिफ' (रू, भे)

उ०—अबै करी ज वाकबी हगीगत अबेलेनै। प्रचड जूंझ मल्लनै बुलाय वीर पानै। —पा. प्र.

वाकयौ—देखो 'वाकियौ' (रू भे.)

वाकळ–स पु. [सं. वाष्पकल] १ कूए का पानी।

२ पवार वशोत्पन्न एक देवी। (बा. दा ख्यात)

[स वल्कल] ३ एक वस्त्र विशेष।

उ०—रत्न कम्मल छाइल मकरल अराल साउला उरसाला बाला पटुला वाकला घनवेलि। —व स

रू. भे.—वाकळ।

वाकळा—देखो 'बाकळा' (रू. भे.)

उ०—वाकळां वळा सोह छोडसी वकायत, वायरां वकायत ठीक वहसी। पखां मत्र न माझी लियौ पाप रौ, राज मत्र खीलियो थको रहसी। —भेरू दान बारहठ

वाकवांणी–स. स्त्री. [सं. वाकवाणी] १ सरस्वती शारदा।

२ वाणी।

रू. भे.—वाकवाणी, वाकबांनी।

वाकसाळी–सं. स्त्री. [स. वाक्+शालिन्] एक देवी जिसकी वाणी प्रभावशाली हैं।

रू भे.—वाकसाली।

वाकानवीस–वि. [अ. वाकिअ नवीस] १ घटना, वृत्तान्त या हाल लिखने वाला।

उ०—हलकारा वाकानवीस कुफियानवीस डाक चोक्या अरज लिखे दिन रात।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२ इतिहासकार।

३ सवाद-दाता।

वाकार–स. स्त्री.—१ ललकारने की क्रिया या भाव।

२ ललकार, वीरहाक।

३ सम्बोधन करने की क्रिया या भाव।

४ बिरुदाने की क्रिया।

५ पुकार।

६ व अक्षर या वर्ण।

रू. भे.—बकार, बाकार, वकार।

वाकारणौ, वाकारबौ–क्रि. स [स. वक्र आकारण] १ युद्ध के लिये ललकारना।

उ०—१ वैड तो पेख पतसाह वाकारियौ, टाळ अन करै मन जही टाळियौ। —द. दा.

उ०—२ कर हथनाळ कलाइया दे धनुस टकार। सर गण ऊपर साधनै, वळिया दळ वाकार। —पा. प्र.

उ०—३ विळकुळियौ वदन जेम वाकार्‌यौ, सग्रहि धनुख पुणच सर सधि। क्रिसन रुकम अउध छेदण कजि, वेलखि अणी मूठि द्रिठि बधि। —वेलि

२ उत्तेजित करना, जोश दिलाना।

उ०—वयणां वाकारियौ ताम माझी गज केसरी। पवन पूर ऊफणां, जळण जाणां वन अतरि। —गु. रू. ब.

३ आह्वान करना

४ सम्बोधन करना, पुकारना, बुलाना।

५ प्रशंसा करना।

वाकारणहार, हारौ (हारी), वाकारणियौ—वि०।

वाकारिओड़ौ, वाकारियोड़ौ, वाकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वाकारीजणौ, वाकारीजबौ—कर्म वा०।

बकारणो, बकारबौ, बाकारणो, बाकारबो, भकारणो, भकारबो भक्षारणो, भखारबो, बकारणो, बकारबो —रू. भे.

वाकारियोड़ो–भू. का. कृ.—१ युद्ध के लिये ललकारा हुआ. २ उत्तेजित किया हुआ, जोश दिलाया हुआ. ३ आह्वान किया हुआ. ४ सम्बोधन किया हुआ, पुकारा हुआ, बुलाया हुआ ५ प्रशंसा किया हुआ।

वाकावत–स. पु.—कछवाह वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति —बा दा ख्यात

वाकिफ–स. स्त्री. [अ.] १ जानकारी, खबर, पता।

२ ज्ञान, अनुभव।

वि.—१ किसी बात की जानकारी रखने वाला, जानकार।

२ अनुभवी, ज्ञाता।

रू. भे.—वकूफ, वाकप, वाकफ, वाकब, वाकबी।

वाकिफकार–वि [अ वाकिफ़ेकार] १ किसी बात की जानकारी रखने वाला, जानकार।

२ अनुभवी, ज्ञाता।

रू. भे.—वाकबदार।

वाकिमि—१ देखो 'वाकम' (रू भे)

उ०—नर समंद साहण समद नग्गियद। जुधि मयद वाकिमि विद राजिद। —ल. पि.

वाकियौ–सं पु. [अ वाकिअ] १ कोई घटना, दुर्घटना।

२ वृत्तान्त, हाल, चर्चा।

३ समाचार, खबर।

रू.—वाकूओ, वाकयो, वाको।

वाकी—देखो 'बाकी' (रू. भे)

उ०—१ धरिया तन का क्या गुमान है, जन सूं कुण वाकी। —केसोदास गाडण

उ०—२ तद कूंवर कह्यौ, कई नौ मग्दार था, वैर तौ वडो पड़ियो। इव जाणा हा तसौ पूठो कर वाको रा काहिगू जावग देवा हा। —कुंवरसी सांखला री वारता

वाकुंडिम–स. स्त्री.—सर्प की कचुकी ?

उ०—अवसरि सूंआलइ गीत गाइ, मामउ जोइ फण मडावइ, सरीर नी वाकुंडिम छडावइ इसा गारुडी। —व. स

वाकुंभ–सं. पु.—वृक्ष विशेष।

उ०—वडवालु नइ कुंगि बनी, वांम वणसरी वेलि। वाकुंभा वाघइ भला, वकुल अढतरु वेलि। —मा. का प्र

वाकुंभीय–स. पु—कद विशेष।

उ०—अमर कद आदू अला, सूरण रोम रताल। वच्छनाग वाकुभीया, भेडागारी आलि। —मा का. प्र.

वाकुर–स पु—चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति। —बा. दा ख्यात

वाकेई– देखो 'वाकई' (रू भे)

वाकौ–वि. [अ वाकिअ] १ जो घटित हो चुका हो।

२ घटित होने वाला।

३ देखो 'वाकियौ' (रू. भे.)

उ०—१ सयदा (रा) इम साजिया, उडै वाका अणथाहै। सुरगुं बहादरसाह, मगळ अजळै उर माहे। —सू. प्र.

उ०—२ वाको झूठो अखियो, दक्खण गयो सदूर। आप बडाई आप री, आपो साह हजूर। —रा. रू.

उ०—३ जवन पखो राजा उर जळिया, किळबा अनम सुरगुं विळ कुळिया। इळ ईरान मकै लग वाकौ, जबना सुणा उर पडं जराको। —रा. रू.

उ०—४ आगरै तखत सू डूंगरो आगता, वळौ-वळ लिखाणा जगत वाका। जुहागीरिय का बाळिया जगत मे, डाकुवा रूप रा मुजम डाका। —बुधजी आसियौ

४ देखो 'बाकौ' (रू. भे)

वाक्य–म. पु. [स] १ ऐसा शब्द या शब्द-समूह जो किसी एक विचार या आशय को व्यक्त करता हो।

२ भाषण, कथन।

रू. भे.—वाक, वाएक, वाटक, वायक।

वाक्यकर–स पु [स] १ एक की बात दूसरे को कहने वाला, सदेश-वाहक, दूत।

वि —बाते बनाने वाला।

वाक्यानवीस–स पु.—मुगल कालीन एक ओहदा या पद विशेष।

वि वि. —कभी-कभी सूबे के बख्शी को वाकयानवीस का कार्य भी करना पड़ता था, वैसे आम तौर पर इस कार्य के लिए अलग ही अधिकारी रखा जाता था। वह अधिकारी अपनी देख रेख में सूबे भर मे प्रमुख-प्रमुख स्थानो पर यहाँ तक कि सिपहसालार, दीवान, काजी, फौजदार आदि अफसरो के कार्यालयो तक मे सवाद-लेखको और गुप्तचरो को नियुक्त करता था। ये लोग उसके पास प्रतिदिन रिपोर्टें भेजते थे। इन रिपोर्टों का वह सूक्ष्म रूप तैयार करता था और उसे शाही दरबार मे भेज देता था। क्योंकि सम्पूर्ण शासन-प्रबंध की सफलता गुप्तचर विभाग के ऊपर भी बहुत कुछ निर्भर होती है, इसलिये इस ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। कभी-कभी केन्द्रीय सरकार भी अपने सवाद-लेखको

ग्रौर गुप्तचरो को सूबां ग्रौर परगनो मे भेजती थी, जो उसी की आज्ञा-ग्रादेशो का पालन करते थे।

बाखर—देखो 'बाखर' (रू भे.)

उ०—१ जिसडै ही रांमसिंघजी कुंवरजी री कारी दीठी विपरीत तिसडै ही मूरछा ग्राइ पडिया। तिसडै गोवळजी सबाहुचा। पेट री **बाखर** सहु झळकती दीठी। —द वि

उ०—२ सुकर घर सर बजर ससतर, गहर हुर बह पथर तर गिर। वहुर सिर कर देह **बाखर**। पहुर चौमर मुवर ग्रपछर।

—र ज. प्र.

बाखळ—देखो 'बाखळ' (रू भे.)

उ०—निकळै मिरडां लार, गठेली सूकी साकळ। घरकोटा रै ध्येय, पड्यी लद लकड्या **बाखळ**। —दसदेव

बाखांण—देखो 'बखाण' (रू. भे.)

उ०—जस **बाखांण** राज पछ बाजै, ग्रखिळ भुवेण मुणै इम। राणा ग्रवर घणा दिन रहसी, जुग जुग पंगी चंग जिम।

—राणा जगतसिह रौ गीत

बाखांणण—देखो 'बखाणण' (रू भे)

बाखांणणौ, बाखांणबौ—देखो 'बखाणणौ, बखाणबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पनरै तेरैह मत्त पय, छद उल्लाल पिछांण। रघुनाथ सुजस सो छद रच, बीदग मुख **बाखांणजै**। —र. ज. प्र.

उ०—२ दीना लका जे हाथा न कजै दीधा जग सारौ जाणै। वेदा भेदा घाता वीठळ, वारवार रटै **बांखणे**। —र ज. प्र.

उ०—३ दूभडा रायपाळा दुभळ, वगळ घरा सिर दुद वण। गे कहै करौ खग भट इसौ, रवि **बाखांणै** हाथ रिण। —सू प्र.

बाखांणणहार, हारौ (हारी), बाखांणणियौ—वि०।

बाखांणिग्रोड़ौ, बाखांणियोड़ौ, बाखांण्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बाखांणीजणौ, बाखांणीजबौ—कर्म वा०।

बाखांणियोड़ौ—देखो 'बखाणियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. बाखाणियोडी)

बागबर—देखो 'बाघबर' (रू भे)

बाग-स. स्त्री —१ मोट की मूड के नीचे का वह भाग जिसके रस्सी बाधी जाती है।

२ देखो 'वरग' (रू. भे.)

उ०—वाछडिया रा **बाग** चरावै चढ चढ घोरा। गाया एवड ग्वाळ ग्रमीरै राणा छोरा। —दसदेव

३ देखो 'वाग' (रू भे)

उ०—१ ऊपडी **बाग** "ग्ररजण" हरौ, मूर धीर सत ग्रागळै। तिण दीह रहै 'डूगर' तणौ, राघव भाटी रिण खळै। —गु रू. ब.

उ०—२ **बाग** धरि करि ताजणउ, राग-तणइ रसि जाइ। ग्रागलि न रहइ ग्रागल्या, पाछै न तु मिलाइ। मा. कां. प्र.

उ०—३ रोज सिकार खेलणौ, देखै **बाग** तडाग। हूकळ दळ गज हैवरा, ग्रमरख नरा ग्रथाग। —रा. रू.

उ०—४ सर सरिता बहु **बाग** सडबर। मझि तिण सिंगी काम चित्र मदिर। —सू. प्र.

उ०—५ लेगौ मिघ वा त्रिय बुगलाणै, उलट गयौ ग्रासम ग्रापाणै। सुंदर न्रप चित्रमहल बसाई, **बाग** चद्रिका जेणि बणाई।

—ए. प्र.

५ देखो बाज' (५-८) (रू भे)

उ०—१ हय हुक्क किलक्क समुक्ख हला, भयंकार घडी वण वार भला मिर ढाल कउक्कड रूक सदै, जिम **बाग** डडहड़ फाग जदै।

—रा. रू.

उ०—२ रंग राग **बाग** ग्रगराग सू न रीजै, पातिसाह महमदसाह चिता मैं छीजै। —रा. रू.

बागड़-स पु.—१ डूगरपुर-बासवाडा प्रदेश का एक प्राचीन नाम।

उ०—१ गे रावळ करन रै बेटा राहप, माहप हुवा। तिण मांहै राहप राणा रा चीतोड धणी। रावळ माहप रा **बागड** धणी। ऐ सदा चीतोड रा राणा रो चाकरी करता। पछै से दिल्ली रा पातसाहा तूं पिण रजूग्रात राखै छै। **बागड** नू गांव ३५०० सै लागै। ग्राधा डूगरपुर वासै ग्राधा वासवाहळा वासै हुवा। पेहली तो ठकुराई डूगरपुर मुदै हुती। पछै सू रावळ उदैसिह गागै रै सूधी तो **बागड़** एक छत्र भोगवी। —नैणसी

उ० —२ **बागड** देस विदरा गर नाम, जिहां खट दरसन ना विस्राम। राजधानी नु रुडउ ठाम, देस मध्य गिरि पुर वली गाम।

—जय विजय मुनि

२ वर्तमान शेखावाटी तथा बीकानेर-वाटी से मिले हुए प्रदेश (हिसार) का पुराना नाम।

उ० १ मोडम ज्वर लक्षण सहित, ग्रौसध क्वाथ बखान। कह्यौ **बागड़** देसाधिपति, न्रप स्री दउलतीखान —दुउलति विनोद सार

उ०—२ वीरा **बागड़** लाट करणाट। —धरम पत्र

३ एक वैश्य जाति।

उ०—सोनी नइ सूतार पणि, ग्रागड **बागड** वस। तेली तवोली वली, दोसी उपरि डंस। —मा. का. प्र.

४ खादर का विपर्याय, एक प्रकार का भू-भाग जो ग्रपेक्षाकृत ऊंचा व कम ग्राबाद होता है, पठार।

उ०—नित वरसौ, मेहा **बागड** मे, मोठ बाजरौ **बागड** निपजै। गेहूडा निपजै खादर मे नित वरसौ मेहा, **बागड** मे। —लो. गी.

५ कच्छ राज के एक भू-भाग का नाम।

६ देखो 'बगड़' (रू. भे.)

उ०—जोवन कारमौं रे वीहांणै उठ जासी, भादर भजन तणौ अभियास। प्रांणियां न भावै कदं प्रांमणी, बळै न बीजं बागड़ वास। —श्रोपौ श्राढौ

रू. भे.—बागड, बागड, बागर, बाघड, वागर।

अल्पा.—बागड़ियौ।

बागड़णौ, बागड़बौ—क्रि. अ.—चलना, फिरना।

उ०—बागड़दि भूत जोगण गण भैरव, बागड़दि भ्रमर अपछर गण आंण। बागड़दि प्रबळ परचर पुर पेखत, बागड़दि व्योम सुर-छाया विमाण। —र. रू

बागड़णहार, हारौ (हारी), बागड़णियौ—वि०।

बागड़ियोड़ौ, बागड़ियोड़ौ, बागड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

बागड़ीजणौ, बागड़ीजबौ—भाव वा०।

बागड़णौ, बागड़बौ—रू० भे०।

बागड़िया-स. स्त्री.—चौहानों की एक शाखा।

रू. भे.—बागडिया।

बागड़ियौ-वि.—१ बागड का, बागड़ सम्बन्धी।

स. पु.—१ बागड प्रदेश का निवासी।

२ बागड जाति का वैश्य।

३ रहट की माल मे छोटी-छोटी काष्ठ की कीलियां लगाने के समय माल को स्थिर रखने के लिये लगाई जाने वाली मोटी कीली, कील।

४ बागडिया जाति का चौहान।

रू. भे.—बागडियौ।

बागड़ी-स. पु.—१ चौहान राजपूत वंश की एक शाखा।

उ०—डाहळिया री ऊपर वडी साहिबी थी। नै बागड़ी रजपूता री भोम नागोर थी। —नैणसी

२ बावरियो के समान एक जगली जाति विशेष जो खेतो की रखवाली का काम करती है।

३ इस जाति का व्यक्ति।

रू. भे.—बागडी।

बागडोर—देखो 'बागडोर' (रू. भे.)

उ०—१ करै पोस जरकसी, कडी सोव्रन कोतल कसि। बागडोर रेसमी, तरह पचरग धरै तसि। —सू प्र

उ०—२ जीण माडजै छै। केसवाळी रग-रग री गुथजै छै। अगाडी-पछाडी खोलजै छै रेसम री बागडोरां सूं आण हाजर कीजै छै। 'किसा हक घोडा छै? वैपरव भला, ऊचा अलला कटोरनखा, आरसी सारीखा। —रा. सा. स.

बागढाल-सं. पु.—घोड़े की लगाम को ढीली करना, विश्राम करना।

उ०—घोडां रा तंग ढीला करौ, बागढाल करीजै, मांहै थांहरी चोर छै तो अबै जाय कठै ही नही। —राव रिणमल री बात

बागणौ, बागबौ—१ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लाल वदन अबर सिर लागौ। विक्रमादित अवनां हूं बागौ। —सू प्र.

उ०—२ असुर हणं अद वणं अथाभा। वर सिधकरि खैरोदा बागा। —सू. प्र.

उ०—३ बारण ग्रहि चोत्रार, सत्र मारण अवसाण सिध। बागौ डाकल 'बैंगाइत' सिरदारा सिरदार। —वचनिका

उ०—४ हुवौ अति सीघवौ राव, बागी हका। थाठ आया पिसण घाट लागं थकां। —हा. झा.

उ०—५ जोम गाडावाळी प्रळय काळा री उनागी जठै। बागी हाडाबाळी नराताळ री बाणास। —दुरगादत्त बारहठ

उ०—६ आडौ अडि एकाएक आपडं, बाग्यौ एम रुखमणी वीर। अबळा लेइ घणी भुंइ आयौ, आयौ हूं पग माडि अहीर। —वेलि

उ०—७ धीरघत कुवर नै निरखी, धीवर पाइ लागा। स्वांमी पणं थाप्यौ सह मिलनं, जस ना वाजत्र बागा। —वि. कु.

उ०—८ गावय बयराडी रागइ, आलापइ स्त्री सग भागइ। वासुरी मधुरी बागइ, सुख पावइ सयण। —स. कु.

२ देखो 'भागणौ, भागबौ' (रू. भे.)

बागणहार, हारौ (हारी), बागणियौ—वि०।

बागिओड़ौ, बागियोडौ, बाग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बागीजणौ बागीजबौ—भाव वा०।

बागमी—देखो 'वाग्मी' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना. मा.)

बागर-सं पु [सं] १ विद्वान पंडित, गुणी।

२ ऋषि, मुनि, महात्मा।

३ शूरवीर, योद्धा।

४ देखो 'बागड़' (रू. भे)

उ०—जबू द्वीप देस तहा बागर, नगर फतेहपुर नगरा आगर। आसि पासि तहा मोरठ मारू, भासा भल्ली भाव पुनि सारू। —रूपवती

२ देखो बागर' (रू भे.)

बागरवाळ-वि [स. बाग्वर-पालक] कवि, विद्वान, पंडित।

उ०—१ ढाढी गुणी बोलाविया, राजा तिणही ताळ। नरवर गढ ढोलइ-कन्हेइ, जावउ बागरवाळ। —ढो. मा.

उ०—२ बागरवाळ विचारीयउ, ए मति उत्तिम कीध। साल्ह-महल हू टूकडा, ढाढी डेरउ लीध। —ढो. मा.

बागरी—देखो 'बागरी' (रू. भे.)

उ०—घर थंगी, नर चोरटा, बागरियां रे वेस। भालड़ियां विसता फिरै, अइ हो आबू देस। —अग्यात

बागळ—देखो 'बागळ (रू. भे.)

उ०—कोचर अरु चमचेरा बागळ, और उलूक अग्यांना हो। इनके रवी द्रस्टि नहिं आवै, तम का इन कूं ग्यांना हो। —स्री सुखरामजी महाराज

बागळी, बागली—१ देखो 'बागळी' (रू. भे.)

२ देखो 'बागळ' (रू. भे.)

उ०—वील्हा वायस विंभलां, आगलि ऊडी जाय। वाटइ दीसइ बागली, ते ऊधी टंगाय। —मा. कां. प्र.

बागवांणी-स. स्त्री. [स. वाग्वाणी] सरस्वती, शारदा।

उ०— 'नाल्ह' रसायण नर भणइ, राजा रह्यौ उडीसई जाय। बागवांणी मो वर दीयौ, अस्त्री-रसायण करूं वरखाण।—बी. दे.

बागसणौ, बागसबौ—देखो 'बकसणौ, बकसबौ' (रू. भे)

उ०—धनुस धरण अवगुण नह धारै, सरण सधार कहै जग सारै। बागसं तनै गुणी इण वारै, चित अयणौ जो विरद विचारै। —र. रू.

बागसणहार, हारौ (हारी), बागसणियौ – वि०।

बागसिओड़ौ, बागसियोड़ौ, बागस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बागसीजणौ, बागसीजबौ—कर्म वा०।

बागसियोड़ौ—देखो 'बकसियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. बागसियोड़ी)

बागांसपूर—देखो 'बागासपूर' (रू. भे)

उ०—बाटका पोड बंजर समान, घाटका नळी निघोटवान। सुभ लछा अछा बागांसपूर, लागा स रान वच्चा लगूर। —पे. रू

बागाइत, बागायत—देखो 'बागायत' (रू. भे)

बागी—देखो 'बागी' (रू. भे.)

उ०—साहजादौ खुरम पातसाह जहांगीर सूं बागी हुवौ। —बा. दा ख्यात

बागीचौ—देखो 'बगीचौ' (रू. भे)

उ०—फब हार धार घण फरहरत। बागीचां चादर जळ वहत। —सू. प्र.

बागीस—स पु. [सं. वागीश] १ ब्रह्मा।

२ बृहस्पति।

३ कवि।

४ वक्ता।

बागीसा—स. स्त्री. [स. वागीशा] सरस्वती।

बागीस्वर—स. पु. [स. वागीश्वर] १ ब्रह्मा।

२ बृहस्पति।

३ कवि।

बागीस्वरी—स. स्त्री. [स. वागीश्वरी] १ सरस्वती, शारदा।

२ एक रागिनी विशेष।

३ एक महाविद्या।

रू. भे.—बंगेसरी, बगेस्वरी, बागेसरी, बागेसुरी, बागेस्वरी, वगेसरी, वगेस्वरी, वागेसरी, वागेस्वरी, वाघेसुरी, वाघेस्वरी।

बागुर, बागुरि, बागुरी—स. स्त्री. [सं. वागुरा:] १ फंदा, जाल।

(उ. र.)

उ०—१ लागी बिहुँ करे ध्रुयणे लीधे, केस पास मुगता करण। मन-म्रग चै कारणै मदन ची, बागुरि जाणे विसतरण। —वेलि

उ०—२ हस गतइ चालती, गज गतइ माहालती, कांम कामनी पालती, आखिनइ मटकारइ मदन नी बागुरा घालती कस्तूरी अलक्रत भाल पट्ट, तरु (ण) तणा भाजइ मरट्ट। —व. स.

स. पु [स. वागुरिक] २ बहेलिया, शिकारी, चिड़ीमार। (उ. र.)

बागुळि—स. स्त्री. [सं. वल्गुलिका] १ मंजूषा, पेटी।

२ पिटारी।

३ कत्थई रग का पतग जाति का कीट, तैलपायी। (उ. र.)

बागेलौ—स. पु —गायों का समूह।

रू. भे.—वागेलौ।

बागेसरी, बागेस्वरी—देखो 'बागीस्वरी' (रू. भे.)

उ०—१ कमळापति तणी कहेवा कीरती, आदर करै जु आदरी। जाणै वाद माडियौ जीपण, बागहीण बागेसरी। —वेलि

उ०—२ वारुणी दारुणी भास्करी, सकरी जया विजया घोरा कोबेरी प्रवाही मदनसेना बलमथनी गौदिनी पेसानी बागेस्वरी सिद्धावी अजरामरा इत्यादि महा विद्या। —व. स.

बागोल—देखो 'बागोल' (रू. भे.)

बागोलणौ, बागोलबौ—देखो 'बागोलणौ, बगोलबौ' (रू. भे.)

उ०—वौ हेलै होळै हालतौ वखारी रै अडोअड पूगग्यौ। वखारी रै अेक बाजू अेक भेंस ऊभी बागोलती ही। वौ भेंस रै पाखती ई रुई बाधण सारू आपरौ खेसलौ बिछायौ। —फुलवाड़ी

बागौ—देखो 'बागौ' (रू. भे.)

उ०—१ वेहद हद बागं बणाव, चम्मीर हीर जांमै जड़ाव। —गु. रू. बं.

उ०—२ सो माथा पर किलगी अने सेवरी केसर में रंगिया दकूळ-कपड़ा-वागो केसर मे रग दी आप रा सिरदार ने कहै ।
—वी. स. टी

उ०—३ वागा वेस सोहामणा, मुख्या मोती माळ । कनक कचोळा जड़ावरा, सुदर सोवन थाळ ।
—डो. मा

उ०—४ पाग बिण प्रीतम कहे, तपइ सूथण पाय । वागो कीनो अरगजो, सुंदर नें बहोत सुहाय ।
—ब. स.

वाग्गेयकार—स पु.—संगीत एव पद रचयिता ।

वाग्देवी—स. स्त्री. [स. वाक्+देवी] १ सरस्वती, शारदा ।

२ वाणी ।

वाग्दोस—स. पु. [स. वाग्दोष] बोलने मे व्याकरण सम्बन्धी त्रुटी ।

वाग्भट—स. पु. [स] अष्टाग सहिता नामक वैद्यक ग्रथ का रचयिता ।

वाग्मिता—स. स्त्री.—वाक पटुता ।

उ०—दान दुरभिखे, पौरुस रणे, स्त्री सील सगमे, धीरेय पथे, वाग्मिता सदसि, साहस दुरदासाय, मित्र व्यसने, कलत्रमापदि, पुत्रो प्रव्रत्ये ग्यायते ।
—व. स.

वाग्मी—स. पु. [स. वाग्मिन्] १ वृहस्पति ।

२ वाकपटु-व्यक्ति ।

वि.—१ वाकपटु, अच्छा वक्ता ।

२ बातूनी, वाचाल ।

३ बहुवादी, बहुत बोलने वाला ।

४ पडित, कोविद ।

५ कवि ।

वाग्युद्ध—स. पु. [स] १ केवल बोली से ही की जाने वाली लडाई, जबानी-झगडा ।

२ पुरुषो की बहत्तर कलाओं मे से एक ।

वाघबर—देखो 'वाघंबर' (रू. भे.)

उ०—गज अंबराळ हगा अणगिणिया । वाघबरां चीर सिर रगिया ।
—सू. प्र

वाघ—१ देखो 'बाघ' (रू. भे.) (उ. र., अ. मा.)

उ०—१ विण जुध कारण, वाघ रै दूजो नावै दाय । एक अनेका ऊपरा, जुलम करेवा जाय ।
—बा. दा.

उ०—२ सरप वाघ गज रीछ सरीखा, तुंड कुदाळ मगर सम तीखा ।
—सू. प्र

उ०—३ हाका पीथळ हाक हक, हथपाह हडदै । वाघण ज्याई वेढ मे, कुण दूर करदै ।
—पा. प्र.

उ०—४ दरपइ दीठइ ठोरडइ, साप न आणइ संक । बीहइ बिलाडा-बच्चडइ, वाघिणी बालाइ बंक ।
—मां. का. प्र.

(स्त्री. वाघण, वाघणी, वाघिणी)

२ देखो 'बाग' (रू. भे.)

वाघचंब, वाघचरम—देखो 'बाघचरम' (रू. भे)

उ०—जठा मुगट माहि गंगा दीठी, अंगि भसमीअ धूल । वाघचंब पागुरणै दीठा, दीठउ वळी त्रिसूळ ।
—कां. दे. प्र.

वाघनख, वाघनखो—देखो 'बाघनख' (रू भे.)

वाघनखी—देखो 'बाघनखी' (रू. भे.)

वाघमुखो, वाघमुखो—देखो 'बाघमुखो' (रू. भे.)

उ०—वड़ चख ऊजळ वरन, स्रवण मोती वेंडूरज । मुगता फळ गळ मई, कडा कर वाघमुखा कज ।
—पा. प्र.

वाघमूत—देखो 'बाघमूत' (रू. भे.)

वाघूळ—सं पु [स. वाह्=पानी+घूल] १ बादल, वारिद ।

उ०—तूल जिम उडै खळ थूळ गुरजा तडछ, झूळ चवसठ लगी लेण झपा । सूळ चमकावता फिरै बावन सुभट, स्याम वाघूळ बिच जाण सपा ।
—बालाबक्स पाल्हावत

२ वात-चक्र ।

वाघेल—१ देखो 'बाघेल' (रू. भे)

उ०—इड लिया झाला दूर चूडासमा बल चूर । वाघेल गोहिलवाड़, रस कीध धाट वराड़ ।
—रा. रू.

वाघेला—देखो 'बाघेला' (रू भे.) (बा. दा ख्यात)

वाघेलो—देखो 'बाघेलो' (रू भे.)

वाघेसुरी, वाघेस्वरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे.)

उ०—मोर चढै खळ मारणी, महिप चढै भालाण , वाघ चढै वाघेस्वरी, नाग चढै नागाण ।
—पा. प्र.

वाड़—स. स्त्री.—१ आड़, ओट

उ०—१ बावें दयाणे भोजाया री वाड़ । —पाबूजी रो पवाड़ो

२ देखो 'बाड' (रू. भे.)

उ०—१ वाघ करै नह काट वन, वाघ करै नह वाड़ । वाघां रा वधवाव सू, झिलै अगजी झाड़ ।
—बां. दा.

उ०—२ दिवी भोलावण तुम नै घणी, प्रदेसे चाल्यो मुझ धणी । घर हुंती किम उठै धाड, चीभड़ला किम खायै वाड़ ।

घ. व. ग्रं.

उ०—३ वैर हमेस विसावणा, वाड़ विना वसणोह । वाघां रै क्यूंकर वणै, आरण आळसणोह ।
—बां. दा.

बाड़णौ, बाड़बौ—देखो 'बाड़णौ, बाड़बौ' (रू. भे.)

बाड़नेय—देखो 'वाड़वेय' (रू भे.) (अ. मा.)

बाड़लियौ—देखो 'बाड़लौ' (अल्पा , रू. भे.)

उ०—पहड़ा तौ बाड़लिया म्हांरै घर घणा रे, लजा ओठीडा ऐ लो। सूंठ्यां टवया नवसरहार बाला जी। —लो गी.

बाड़ली-सं. स्त्री —देखो 'बाड़लौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तिमरिणयं रै बाद आई बाडली, कातरिया नै कडोलिया री बारी। —रातवासो

बाड़लौ—देखो 'बाड़लौ' (रू भे)

बाड़व, बाड़वा—१ देखो 'बाडव' (रू भे.)

उ०—१ वदन तेज कळपत रौ वयळ बाड़व वर्णां, ऊफणै कोध पोरस अमामो। मडाणो हैक राजा वर्णं मछर सू, साहजादा दहू तणै सामो। —महाराजा जसवतसिंह रौ गीत

उ०—२ देवी कूरम रे रूप तू मेर पृठी। देवी बाडवा रूप तू आग ऊठी। —देवि

२ देखो 'बडवा' (रू भे)

बाड़वाग, बाड़वाग्नि—देखो 'बडवाग्नि' (रू भे.)

उ०—१ भूम वहतौ को जरा भाळै, बाड़वाग निभ समद विचाळै। —रा. रू.

बाड़वामुख-स. पु.—पाताल। (ह ना. मा.)

बाड़वेय, बाड़िमेय, बाड़िवेय-स. पु. [स वाडवेय] १ बैल,

२ साड। (ह. ना. मा.)

रू. भे.—बाडमेय, बाड़मेय।

बाड़ि—देखो 'बाडी' (रू भे.)

उ०—नोबत टकोरा पडि नै रहिआ छै बाहरि डेरा कीआ छै। असपका खड़ी हुई छै। तबू समोआणा सिराइचा, रावटी, बाड़ि समेत करणाटी, गूदर ताणीआ छै। —रा. सा. स.

बाड़ियौ—देखो 'बाड़ियौ' (रू भे.)

२ देखो 'बाड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

बाड़ी—देखो 'बाडी' (रू भे)

उ० १ सखि ए साहिब आविया, मन चाहृदी मोइ। बाड़ी हुवा वधामणा, सज्जण मिळिया सोइ। —ढो. मा.

उ०—२ सत्तम प्रहरै दिवस कै, घण जु बाड़िया जाइ। आणै द्राख-बिजोरियां, घण छोलइ, प्रिउ खाइ। —ढो मा.

उ०—३ वे अरथ छांह पंथी विरथ, हेत कपट हरियावळी। मौकमा कमध मोटा मिनख, बाड़ी फूली रावळी

- अरजुणजी बारहठ

उ०—४ नवाब खानखांनो सारा बेडा हुता इण री बीगड़ीयौ कुही नही। सारा री खबरदार बीच नायक बाड़ौ फिरता था। पोहोर २ पछै सारा उमराव आया तठै दळथभण नाम पायौ। —नैणसी

बाड़ोटियौ—देखो 'बाड़ौ' (अल्पा, रू. भे)

बाड़ौ—देखो 'बाड़ौ' (रू. भे.)

उ०—सूवरा रै, आयै माल बधाया सूं बाड़ौ एवड़ री गळाई भरीजग्यौ हौ। —फुलवाड़ी

बाच-स स्त्री [स वाक्] १ सरस्वती का एक नाम।

२ जिव्हा। (अ. मा)

३ वाणी, शब्द, ध्वनि, वचन।

उ०—१ इम बाच ज्वाब 'अभमाल' रा, धरि अजागि बळधाखियौ। अत जेम आग सींची घणूं, उरस लाग उपडाखियौ। —सू. प्र

उ० —२ खावौ—विलसौ भोगवौ, जो जग माहै किम जाणौ साच स्वाद अछै इण वात मा, इम जपइ हो ते अद्धा बाच। —वि. कु.

उ०—३ काचा कुभ ज्यू काया जाणै, परायी छठी जामै। रिडतौ तेज, भूखियौ लोह लिया रहै, काछ-बाच निकळंक।—रा सा. सं.

४ बयान, वर्णन, उल्लेख।

५ वादा, कौल, वचन।

उ०—बाण पत्थ बळि भीम, जिसौ अहंकार हि रांमण। जिसौ बाच जुजठिल्ल, जिसौ मांणाहि द्रोजोवण। —गु रू बं.

६ प्रतिज्ञा, प्रण।

उ०—१ जाय पूछ्यौ महल में, रांणी भाख्यौ साच। पदमणि परणोवा सही, चाल्यौ पालण बाच। —प. च. चौ.

उ० - निस प्रथम जाम आलोभ नर, दारण 'सोनागिर' 'दुरग'। कर बाच वाद अकबर कुसळ, 'बीद' हरै सभिया विडग।

—रा. रू.

७ यश, कीर्ति। (ह. ना. मा)

८ प्रशंसा, स्तुति।

उ०—जिका भला धन जोड़ियौ, ऊधमियौ निज आच। कीरत पोहरै करन रै, बीदग ऊठै बाच। —बां. दा.

९ मछली।

१० मदन नामक, पौधा।

[अ] ११ घटिका, घडी।

१२ देखो 'वत्स' (रू. भे) (ह. ना. मा.)

रू. भे —बाच।

बाचक-वि. [स.] १ कहने वाला, बोलने वाला।

२ बताने वाला, बोध कराने वाला ।

३ वाचन करने वाला, पढ़कर सुनाने वाला ।

४ साधक ।

उ०—माया कथा मिळै नहिं माया, यूं वाचक तन् कूं नहि पाया । दरद मिटै नहिं कोई । —स्री सुखरामजी महाराज

५ द्योतक, सूचक, प्रतीक ।

[सं. वाचिक] ६ वाणी सम्बन्धी ।

७ शाब्दिक ।

८ मौखिक ।

स पु. [सं. वाचक] १ वक्ता, व्याख्याता ।

उ०—वाचक ग्यानी बुगल बरावर । लक्ष हंस रहता मुख सागर, हीरा चुगण चुगोई । —स्री सुखरामजी महाराज

२ व्यंजक शब्द ।

३ पाठक ।

४ संदेशवाहक, दूत ।

५ समाचार, संदेश, खबर ।

६ भाषा विज्ञान के अनुसार तीन प्रकार के शब्दों में साक्षात्-अर्थ बोधक शब्द, नाम, संज्ञा ।

रू. भे.—बाचक, वाचिक, वाची ।

वाचकधरमलुप्ता-स. स्त्री. [सं वाचकधर्मलुप्ता] १ एक प्रकार की उपमा जिसमे वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो । लुप्तोपमा ।

वाचकलुप्ता-स स्त्री. [स.] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमा-वाचक शब्द लुप्त होता है ।

वाचकवर-स. पु —उपाध्याय वर्य ।

उ० -तस सतीरथ्य वाचकवर रे, हरस कुसल सुजगीस ।

—वि. कु

वाचकोपमानधरमलुप्ता, वाचकोपमानलुप्ता-स स्त्री [स वाचकोउप-मानधर्मलुप्ता] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमे वाचक शब्द, उपमान और धर्म तीनो लुप्त हो, केवल उपमेय हो ।

वाचकोपमेयलुप्ता-स स्त्री. [स वाचकोउपमेयलुप्ता] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमे वाचक शब्द व उपमेय का लोप हो ।

वाचडवायौ – देखो 'वाछडवायौ' (रू. भे.)

वाचणौ, वाचबौ - देखो 'बाचणौ, बाचबौ' (रू भे.) (उ. र.)

उ०—१ स्री सुंवहाण दीवाण सू हुकम फुरमायो, सेर विलंद गुजरात राज ठहरायो । दिली को नाम सुण कमान कूं खाचै, मोरे फुरमाण हासी तं वाचै । —रा रू.

उ०—२ कारज कहीयै एह विसेस, हीयडै धरीज्यो वाचो लेख

—वि कु.

उ०—३ अंगा नैणी वाचजो, सैणां पत्र सनेह । बैणां हीये बरतजै, नैणा हूदो नेह । —अग्यात

वाचणहार, हारो (हारी), वाचणियौ— वि० ।

वाचियोड़ो, वाचियोड़ौ, वाच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वाचीजणौ, वाचीजबौ—कर्म वा० ।

वाचन, वाचना-स. पु. [सं वाचन] १ पढने की क्रिया या भाव ।

२ पढने का ढंग ।

३ पठन, पाठ ।

उ०—परित्त जेहनी वाचना रे जिनजी, सख्याता अनुयोग ।

—वि. कु.

४ कथन ।

५ घोषणा ।

६ प्रतिपादन, व्याख्या ।

७ बताना क्रिया ।

८ वाक्य, शब्द ।

रू. भे.—बाचण, वाच्यन ।

वाचनालय-स. पु. [स. वाचन+आलय] वह स्थान या कक्ष जहा समा-चार-पत्र, पत्रिका आदि पढने की व्यवस्था हो ।

वाचनिकळंक-सं पु. [स. वाच+निष्कलंक] युधिष्ठर ।

रू. भे —बाचनिकळंक ।

वाचबांह—देखो 'बाहुबोल' (रू. भे.)

उ०—कवर कह्यौ-स्री इकलिंग जी री वाचबांह छै, ज्यौं थे कह वाळी कहस्यौ तौ परमाण छै । —राव रिणमल री बात

वाचलौ-वि. [स. वात्सल्य] प्यार करने वाला, प्रेम करने वाला ।

उ०—बीदा तो रण वाचला, बीदा वेर बराह । बीये दळ पयली हुवै, बीदा री हथवाह । —मारवाड रा अमरावा री वारता

वाचसपति, वाचस्पति-सं. पु. [स. वाचस्पति] १ वाणी के प्रभु देव गुरु बृहस्पति की उपाधि । —अ. मा.

उ०--ज्योतिस सकुनसास्त्र वात्सायनसास्त्र गणितसास्त्र धनुर वेदायुर वेदादि सास्त्र रत्नसागर कूंचालसरस्वती महायोगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष वाचस्पति, इसउ विद्वास । —व. स.

२ प्रजापति, ब्रह्मा ।

३ सोम ।

४ बहुत बडा विद्वान ।

वाचा-स. स्त्री., ब. व. [सं.] १ वाणी, बोली ।

उ०—दाणवा तणा फाटिगा डाचा, वाचा नह ऊपडै विचार । अणभंग 'सिवो' खाग ऊपाडै, हालियो लंक लगावण हार ।

—जोगीदान चारण

मुहा—१ वाचा खुलणा=जबान खुलनी, बोलने की शक्ति आनी ।
२ वाचाबंद होणा=बोलने की शक्ति समाप्त होना, शारीरिक शक्ति शिथिल पड़ना ।
३ वाचा बंद करणा, (देणा) निरुत्तर करना, आतंकित करना ।
२ जिव्हा, जीभ । (ह. ना. मा.)
३ वचन, वाक्य, शब्द ।
४ बोलने की शक्ति ।
५ वादा, कौल, इकरार ।

उ०—१ सत के 'सोनागिर' वाचा हरिचंद । साच के अजातसत्र गात रति बिंद । —रा. रू.

उ०—२ ओलग चाहइ हो तोरी लाहइ कारणइ, अन्य उपरि रहै लीण । वाचा न काचा हो जे तुझनइक हुइ, ते मूरख मतिहीण । —वि कु.

उ०—३ समुद्र कना वाचा लीन्ही, लेय नै छोड दीयो । —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—४ घरिया न्रप दत्त खाग बिरद धज, ग्रह तिण रै इक रंग सेतगज । सुणि न्रप सचिव मेल्हिया साचा, वित बहु दियण कहै तिण वाचा । —सू प्र.

उ०—५ इतरी सुण देवी कही–वर माग । राजा कही–वाचा पाऊ । देवी कही त्रि वाचा । —सिंघासण बत्तीसी

७ प्रतिज्ञा, प्रण ।

उ०—१ इण भात 'पतौ' रावत अभग, वाचा सिंघ आपे वयण । मेवास नास मेलूं मुकर, गुमर धार लागो गयण । —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

८ उपदेश ।
९ सिद्धान्त या श्रुतिवाक्य ।
रू. भे.—बाचा, बाया, वचा, वाया ।
अल्पा.,—वायौ ।

वाचाइ—स. स्त्री —चारण वंशोत्पन्न वाचा की पुत्री एक देवी ।

उ०—लटीयाळ तूं ही लख विरद लैण, वाचाइ धुंधी साच वैण । बैछरा काळका तूं अंबाय, मन रंग थळ चाळकनैचराय । — रामदान लाळस

वाचाछळ—वि. —किसी के साथ वचन-बद्ध होकर धोखा देने वाला ।
स. स्त्री,—चौहानों की एक देवी ।

उ०—चहुवाण घणखरा सारा राव लाखण नाडूळ घणी तिण री पीढ़ी आसराव हुवौ । तिणरै घरै वाचाछळ देवी जी आया छा । —नैणसी

वाचाबंध—वि [स वाचा+बद्ध] जो किसी प्रकार के वचन, कौल या प्रतिज्ञा में बंधा हो, प्रतिज्ञाबद्ध ।

उ०—चौईसा आखडी चालण, सु तौ राव ताल्हण । महाराज मांगियौ सौ पायौ, वाचाबधौ सुरताण पातसाह आयौ । —अ. वचनिका

रू. भे.—वाचबध, वाचावध, वाचाबधी, वाचाबद्ध ।

वाचाबंधन—स. पु. [स. वाचा+बधन] १ प्रतिज्ञा या वचन-बद्ध होने की अवस्था या भाव ।
२ वचन बद्धता ।

वाचाबद्ध—देखो 'वाचाबंध' (रू. भे.)

वाचाळ, वाचाल—वि. [स. वाचाल] १ जो बोलने में चतुर हो, वाक्पटु ।

उ०—अधिक वाचाल मछराल स्रीपाल इम, वाव धमसाण हैराण कीधा । घाव ठामे रुहिर बिंब धारा पडै, अरि तणा जीव कण काढि लीधा । —स्रीपाल रास

२ जो अपने वचनो पर दृढ हो, दृढ प्रतिज्ञ ।

उ०—साचाळा वाचाळा बोल जगाळा साचा । भीछाळा ए हाळा हालै हाडा रै सुभाव । —सनमान हाडा री गीत

३ बहुत बोलने वाला, व्यर्थ बकने वाला, बकवादी ।
४ उद्दण्डता पूर्ण बहुत बढ़ बढ कर बातें करने वाला ।
स. पु.—बहुत बोलने का एक रोग जिसमे अप शब्द भी बोल दिये जाते हैं । (अमरत)
रू. भे.—वाकचाळ ।

वाचाळता—स. स्त्री.—१ वाचाल होने की अवस्था या भाव ।
२ बकवास ।
३ वाक्पटुता ।

वाचि—देखो 'वाचक' (रू. भे.)

वाचिक—देखो 'वाचक' (रू. भे)

वाचियोड़ो—देखो 'बाचियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वाचियोडी)

वाची—देखो 'वाचक' (रू. भे.)

वाच्य—वि. [सं.] १ जो पढने व बाचने योग्य हो ।
२ कहने योग्य, जो कहा जा सके ।

उ०—मन बुध अमान पहुचे न प्रान, बाचक न वाच्य वह पद अवाच्य । —ऊ. का.

३ जिसका शाब्दिक संकेत द्वारा बोध हो ।
४ जो अभिधा मे जाना जाय, अभिधेय ।
५ निंदनीय, तिरस्करणीय ।
स. पु —१ कठोर शब्द ।
२ कलंक, दोष ।

३ भर्त्सना, निंदा।

४ क्रिया का वाचक।

वाच्छि—देखो 'वत्स' (रू भे)

वाच्छिल, वाच्छिल्य—देखो 'वात्सल्य' (रू भे)

उ०—१ कांमसेन किंकार थई, मेव करइ सुविचारी। विधि विधि **वाच्छिल** विस्तरइ, सयरि समप्पइ सार। —मा का प्र.

उ०—२ वाडव वमी विचारतु, लिखवा गाथा एक। सार सरस सोहामणी, **वाच्छिल्य** वचन विसेम। —मा का प्र

वाच्यन—देखो 'वाचन' (रू भे.)

उ०—दळ दूजा री पद दळ दूजै, जाग अबै अभवन मत जोग। कवि वांछन पद **वाच्यन** करही, पढ अनभीहित वाच्य प्रयोग। —बां दा

वाछ—देखो 'वत्स' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना मा.)

वाछउउ, वाछड़ौ, वाछरू, वाछरौ—देखो 'वत्स' (अल्पा, रू भे) (उ. र) (अ मा, ह. ना मा.)

उ०—१ मो खेंचा ताण करी पण उठै हीज इचका खावै पण चलै नही जद उण हीज वीर धवळा रो बाळक **वाछड़ौ** तिकौ हीज इण सकट रै कंध लगाय नै ताडुकै छै। —वी. स टी

उ०—२ धवळ धेनुवे धवळइ वरणि, सारीखा **वाछड़ा** सुवरण। घोडा-तणी कळि माहि आणि, पाइ गहइ बाध्या तिणि ठाणि। —हो. मा.

उ०—३ गाया नै घेरी, घरमी, **वाछरू** बाध्या जाय गभाळ श्रो। —लो. गी.

वाछळ—१ देखो 'वात्सल' (रू. भे)

उ०—देव राघव दीन पाळ दयाळ वछित दायक। नाम मानव देव नाम रटत सीय सुभायक। माथ-पच दुयेण भज अगज भूप महाबळ। वंद तू 'किसनेस' पात सुपाय जे जन **वाछळ**। —र ज प्र.

२ देखो 'वात्सल्य' (रू भे)

वाछल्य—देखो 'वात्सल्य' (रू भे)

उ०—गोपाळ गोव्यद खगेस-गामी, नागेस सज्या कत सैन नामी। है जंग वागा दम-माथ हता, माहेस **वाछल्य** सुकंठ मीता। —र ज. प्र

वाछांट—स. स्त्री. [स वात-छटा या वायुच्छटा] वायु के झोके से मकान या खिडकी से दरवाजे के अन्दर आने वाली वर्षा की बूंदे, बौछार।

उ०—पण ओरी मे ई **वाछाट** स् गिरिया-गिरिया तक पाणी भरीजग्यो अर सामनै स ठडौ टीप वायरौ आवतौ हौ। —रातवासौ

रू. भे.—वाछाट।

वाछिल—देखो 'वत्सल' (रू. भे)

उ०—१ पुत्र-पाहि प्रीछिउ भलु, **वाछिल** करि विवेक। परठिउ पाणी छाटवा, सही तिणि दीधउ सेक। —मा कां प्र.

उ०—२ कोई सखी कौतुक गणी, **वाछिल** जंपइ वाणि। क्षमा करउ तु हू खरू, जंपू जोडी पांणि। —मा का प्र.

वाछोड़—स पु [सं वात्सकम्] गायो के बछडो का समूह।

वाछोड़यो वाछोलियो, वाछोलो—स. पु —१ गाय या भैंस का मरा हुआ बच्चा जिसमे मसाला भर कर रक्खा गया हो।

२ गाय के बछडे का चमडा।

३ देखो 'वत्स' (अल्पा, रू. भे.)

वाछौ—देखो 'वत्स' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मेरा **वाछा** रमै छै गो-ठाण कूण चुघावै, बाबल तेरी धीय विना। —लो. गी.

वाजंत वाजत्र—देखो 'वाद्ययत्र' (रू भे.)

उ०—१ हुकम लेर भड हालिया, साहू करां समसेर। जेझ न कोधी जादवा, **वाजंत्र** दिया विखेर। —वी. स. टी.

उ०—२ मंगळ धमळ उदमाद, वजै **वाजंत्र** जिण वेळा। ग्रहि ग्रहि ऊडि गुड्डिया, मिळै सज्जण घण मेळा। —सू. प्र

उ०—३ आरभ काज गज आरुहै, अनमित सेन उलट्टियौ। सुणियौ प्रचड **वाजत्र** सुर, फिर ब्रहमड पलट्टियौ। —रा. रू

वाजद, वाजंद—देखो 'वाज' (मह., रू. भे)

उ०—अनि लोक सपति इद, जिण मांहि दळ **वाजंद**। ददवाण सोबादार, पाठाण सूर अपार। —सू. प्र.

वाज—स. पु. [स.] १ सग्राम, युद्ध।

२ ध्वनि, नाद।

३ घृत, घी।

४ यज्ञ।

५ अन्न।

६ जल।

७ बल।

८ पलक।

९ मुनि।

[फा वा'ज] १० धार्मिक उपदेश।

११ सीख, नसीहत।

वि. [फा वाज] १ स्पष्ट, खुला।

२ व्यक्त, प्रकट।

३ देखो 'बाज' (रू भे.) (अ. मा. ना. डि. को.)

उ०—१ बहै क बाज पल्थए, भकास मैं क रायऐ । सीरम साह मस्स है, विवांग उड्डिया वहै । —गु. रू. ब.

उ०—२ ढैच ढाळव्वळा, थसि उतांमळा । बहै वेगागळा, बाज वाहै नळा । —गु. रू. ब.

उ०—३ दिल्लीवै सुरतांरा, वाज वंका वैगागळ । सूंटी ले मेल्हीया जूह मद वहता मैंगळ । —गु. रू. ब.

उ०—४ तरै सरव ठाकुर आरोगै छै-भो ठाकुर हाथ नीचो करै तो बाज नहीं । तरै भो बोलियो-ठाकुरै भजू वाज ही नहीं आयी छै काहूं आरोगां ।

वाजण—देखो 'वाजरा' (रू. भे.)

वाजणी—देखो 'वाजरणी' (रू. भे.)

उ०—सुराही गळारै थाटि सभा सलांपोडी भींगे गिरीऐ ऊपरि वाजणी पागल रा घूघरा रमझोळ झरणकिया आरणं कळहस रा बच्चा चकोर करि रहिआ छै । —रा. सा. सं.

वाजणूं, वाजणौ—देखो 'वाजरणो' (रू. भे.)

उ०—१ रंगीलो चग वाजणूं म्हारै वीरैजी मंढायो चंग वाजगूं । —लो. गी.

उ०—२ म्हारी मा री ए जायो विछिया घडा दूं ए बाई तनै वाजणा । —लो. गी.

वाजणो, वाजबो—देखो 'वाजरणो, वाजबो' (रू. भे.) (उ. र)

उ०—१ सो पडिया दूजा सुहड़, भन ऊपडिया खेत । भंग नभीठा वाजिया, भाद 'दुरग्ग' सचेत । —रा. रू.

उ०—२ तठै झगडो हुवो ठाकर जगरूपसिघ विहारीदास दोनूं वाज मूवा । —दा. दा.

उ०—३ गहगहिय थाट बेऊं गरीठ. राठउडि रउद्रि वाजियउ रीठ । सूरा सधीर वाजइ सरोस, पडिफाळै ऊडइ जिरहपोस । —र. ज. सी.

उ०—४ इम जीपै भावियो, गग' वाजतां नगारा । सुजस वधै घर सिरै' उछक छक वधै भपारा । —सू. प्र.

उ०—५ भारती उतारीजै छै । केसरि-चदरण चरचीजै छै । भगर उखेवीजै छै । पचसबदा वाजि रहिभा छै । झालरिभा झरणकार हुइ नै रहिआ छै । —रा. सा. स.

उ०—६ के जम नाम तणो तन सज कर, भै जमहूं डर डर मन भाजै । किया सुनाथ हाथ ग्रह केता, वीठळनाथ भनाथा वाजै । —र. ज. प्र.

उ०—७ जिरा दीहै पावस झरइ, वाजइ ताढो वाय तिरा रिति मेल्है माळविरा, भ्री परदेस म जाय । —ढो. मा.

उ०—८ मोर सोर मंडै, इंद्र धार न खडै, भाभो वाजै, सारंग वाजै । —रा. सा. स.

उ०—९ जुध तरणो भरोसो भ्रगै ही जांरगत, कमध खग चाळ घमचाळ करता । 'मांनडो' 'वेग' फौजां तरणा मोहरी, वाजि वैकूठ गया डारग भरता । —जगो सांदू

वाजणहार, हारो, (हारी), वाजणियो—वि. ।

वाजिभोड़ो, वाजियोड़ो, वाज्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वाजीजणो, वाजीजबो—भाव वा० ।

वाजत्र—देखो 'वाद्ययत्र' (रू. भे.)

उ०—१ वाजत्र वजत विमेक, न्रित गान करत भनेक । सोभंत इद्र समाज, रविवस रवि महाराज । —सू. प्र.

उ०—२ धीरवत कुमर नै निरखी, धीवर पाइ लागा । स्वामी परणै थाप्यो सहु मिलनै, जस ना वाजत्र वागा । —वि. कु.

वाजपत, वाजपति-सं. पु. [स. वाजपति] भग्नि, भाग ।

वाजपेई, वाजपेय, वाजपेयी-स. पु. [स. वाजपेयी] १ कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि ।

उ०—जोसी जानी जेतला, पाठक पड्या पाढि । वाजपेय दीक्षित दवे, राउल-सरसा राढि । —मा. का. प्र.

२ अत्यन्त कुलीन पुरुष ।

[सं. वाजपेय] ३ एक प्रसिद्ध यज्ञ ।

वाजब—देखो 'वाजिब' (रू. भे.)

उ०—भबै ही तौ चूडौ ऊबरै भनै हूं ई इरा म्हारै सूरवीर धरणी नै समझाय नै कहूं की जगत मे बळै ही सूरवीर है सो भापने भबै मांनरणो वाजब है । —वी. स. टी

वाजबी—देखो 'वाजिबी' (रू. भे)

वाजा-स. पु.—राठौड वश की एक उपशाखा । (बां. दा. ख्यात)

वाजाळ—देखो 'वाज' (मह., रू. भे.) (डि. नां. मा.)

वाजित्र—देखो 'वाद्ययत्र' (रू. भे.)

उ०—बजि थाळ सकळ वाजित्र वजै, कुसम सघरण सुरियद किया । वेखिया हीज भावै वरणै, उरण दिन तरणी भजोधिया । —सू. प्र.

वांजिद, वांजिद्र, वांजिद्रक—देखो 'बाज' (मह., रू. भे.)

उ०—१ नल नदियां वीजळ निसा, गिरणै न जळ थळ घाट । भावै राजिद प्रीतवस, वांजिद खड़िया वाट । —पनां

उ०—२ थोर पीडा पग थभ, गात जारणै गजखंभ । सतेज रूप साहरण, वांजिद राज वाहरण । —गु. रू. ब.

उ०—३ घरण जारिणक घट्टा साहरण छुट्टा सालक फट्टा सामंद्रं । सरणणो सीचारणा जेम विवारणा वानर डारणा वांजिद्र । —गु. रू. ब.

उ०—४ हारणा किरि पाउ पलव डहै । **बाजिद्रक** वेग विवारण वहै । —गु. रू. ब.

बाजियौ—देखो 'बाजिदौ' (रू. भे.)

बाजि—देखो 'बाज' (रू. भे.) (डि. ना. मा.)

बाजित्र—देखो 'वाद्ययत्र' (रू. भे.)

उ०—१ कर उघट कहत संगीत केक । नृत करत वजत **बाजित्र** अनेक । —सू. प्र.

उ०—२ चित्तौड दलीपत चढिया रे । गहरे सुर **बाजित्र** गुडिया रे । —रावत अचळदास सक्तावत रौ गीत

उ०—३ हुई सोपारी मनि हरख्यौ छइ राव । **बाजित्र** वाजइ नीसाणी घाव । —बी दे

उ०—४ पंचसब्द **बाजित्र** बाजई छई । गल्या पीतल रताजणी तणां पखावज धौंकार करइ छइ । —का दे. प्र

उ०—५ इण परि उच्छव विस्तरइ, गीत नृत्य **बाजित्र** । पचाम्रत पकवानि पणि, जिकै जिमाड्या मित्र । —मा. का. प्र.

उ०—६ बलि तेहनै चौ पाखती, विकट दुरग विराजै रे । घरा **बाजित्र** सदा घुरै, घन गरजारव लाजै रे । —वि कु

बाजिनी-स. स्त्री [स.] घोडी।

बाजिन-स पु. [सं. वाजिन] १ घोडा, अश्व।

उ०—सग्रहिय सुकरि नगराज मार । **बाजिन्न** चढिय गिणाजग वार। —रा ज सी

[म. वाद्य] २ बाजा, वाद्य।

उ० —जेसाणइ ऊपरि करनि जाइ। **बाजिन्न** लेय नीसाण वाइ। —रा. ज. सी

[स बाज+इन] ३ शक्ति।

४ होड।

५ संघर्ष।

बाजिब, **बाजिबी**-वि [अ] १ ठीक, उचित, मुनासिब।

२ आवश्यक, जरूरी, अनिवार्य।

३ योग्य, लायक।

रू भे.—वाजब।

बाजिया-स. पु, ब व —देखो 'बाजिया' (रू. भे.)

बाजी—१ देखो 'बाज' (रू. भे)

२ देखो बाजी' (रू. भे)

उ०—**बाजीगर** वाजी रची, माया विसतारा। —ह. पु. वा

बाजीकरण—देखो 'बाजीकरण' (रू भे.)

बाजीगर--देखो 'बाजीगर' (रू भे)

उ०—**बाजीगर** वाजी रची, माया विसतारा। बाजी सूं बाजी रमै, बाजीगर न्यारा। —ह. पु वा.

बाजूबो—देखो 'बाजिदौ' (रू. भे)

बाजू—देखो 'बाजू' (रू. भे)

बाजूबद, **बाजूबंध**—देखो 'बाजूबध' (रू. भे) (अ. मा)

बाजेंद्र—देखो 'बाज' (मह., रू. भे.)

उ०—अग्व अढार भोजण भाणि, तबोळ मुख तरणि । **बाजेंद्र** राह वाहणि आरूढ वळै । रिति वरखा सरद हैमत संसर हद बसत गीखम सद सुख गगळै । —गु. रू. बं.

बाजोट--देखो 'बाजोट' (रू भे.)

उ०—**बाजोट** थी रुनरि रुखमणिजी गादी आय बैठा । सिगार कै रमि उनरै एक सखी आरसी ले मुंह आगइ आय उभी हुई। —वेलि टी

बाजो—देखो 'बाजो' (रू भे)

उ० दसवें द्वारि वमै मन राजा, सबद अनाहद बाजै **बाजा**। —ह. पु वा.

बाट–स स्त्री. [स वाट, वाट] १ मार्ग, रास्ता, राह, सडक। (ह. ना मा)

उ०—१ मामठो हल्लको, मेंगळा सब्बळो । **बाट** ऊभी वहै, जाग आडौ-वळी। —गु. रू. ब.

उ०—२ पातरिया **बाट** न पी'र पीहर, अबळा रै निरधारा आप। —ओपौ आढौ

उ०—३ तळ नदिया वीजळ तिमा, गिर्ण न जळ थळ घाट। आवै गजिंद प्रीत वस, वांजिद खडिया **बाट**। —पना

२ प्रतीक्षा, इनजार।

उ०—१ ताहरा जैतसी ऊदावत बोलियौ मीख करौ, लोग आपणी **बाट** जोवै छै। —नैणसी

उ०—२ सखी सहेली साभळै म्हे मन बाध्या **घाट**। नव दिन कोथा नीरता, सो प्रीतम हद **बाट**। —अज्ञात

उ०—३ माधव वहिला आवज्यौ, हू जोऊ घरि **बाट**। फळ दळ जळ अग्नि घरू, भूमि सयन नही खाट। —मा का. प्र.

उ०—४ तिण द्वारिकाजी माहे लोग चितातुर हुआ **बाट** जोवै छै। —वेलि टी.

३ दीपक की लौ।

४ दीपक की बत्ती।

५ दिशा, कोण।

६ चक्कर।

७ घेरा, घाहता।
८ बाग, उद्यान।
९ लतामण्डप।
१० समय, वक्त।
११ कमर, कटि, कूल्हा।
१२ पेट मे होने वाला मरोड़ा, ऐंठन।
१३ वस्तु।
१४ अस्त्र विशेष।
१५ इमारत।
१६ घोडे या घोडी का पेशाब।
१७ घोडी की योनि।
१८ तोलने के आधान, तोल।
१९ विवाह मण्डप मे अग्नि की परिक्रमा (भांवर) देने के पश्चात कन्या को उसके पिता द्वारा पहनाई जाने वाली पोशाक।
वि. वि.—देखो 'धरममढ'
रू. भे —बट, बट्ट, बाट, बाटी, वट, वट्ट, वट्टि, वाटि, वाटि वाटी।
अल्पा.—वाटडली, वाटडी, वाटली, वाटडली, वाटडी, वाटली।
मह.—वाटड, वाटड।

वाटकड़ी—देखो 'वाटकी' (अल्पा., रू. भे)
उ०—आटकडी नही जीमे **वाटकडी** नही जीमे। ऐ तो जीमें बारा कोडिला सालाजी री मोटोडा थाळ मे। —लो. गी.

वाटकडो—देखो 'वाटको' (अल्पा, रू. भे)

वाटकियो—देखो 'वाटको' (अल्पा., रू भे.)
उ०—हरसा बीर मेरा रे, एकै आगण मे रे दोन्यू खेलिया, एकै **वाटकियै** पीयो दूध। —लो. गी.

वाटकी—देखो 'वाटकी' (रू भे.)
उ०—उपरि सोना ना थाळ अत्यत घणु विसाल, विचिमाहि चउ-सठि **वाटकी** लगार नही जाति काटकी। —व. स.

वाटकीटाळ—देखो 'वाटकीटाळ' (रू भे)

वाटको—देखो 'वाटको' (रू भे)
उ०—सु ग्वारां रै चावळ मूगा री खीचडी नयार थी सु **वाटका** एकण माहे घात ल्याया, मागकराव चढियै हीज खाधी। —नैणसी

वाटड़—स. पु.—देखो 'वाट' (अल्पा, रू. भे)

वाटड़ली—देखो 'वाट' (अल्पा., रू भे.)
उ०—लागे रै भवरजी मेहूडा री छीटा, राबळी कटारी रा घाव। पधारो मारवरा रा रसिया, मेला जोऊ **वाटड़ली**। —लो. गी.

वा ड़ा—स. पु—राठोड वश की एक शाखा। (बा. दा. ख्यात)
रू भे — बाटडा, बाटाड़ा।

वाटड़ी—देखो 'वाट' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ **वाटड़ी** जोवता थई कन्यका जी, लावण्य गुण रूप तणी जोणे धाम हो। —वि. कु.
उ०—२ सज्जण चाल्या हे सखी, वाजइ वाजारंग। जिण **वाटइ** सज्जण गया, सा **वाटड़ी** सुरग। —ढो. मा.

वाटणो, वाटबो—देखो 'बाटणो, बांटबो' (रू. भे)

वाटबड़—देखो 'बाटबड' (रू भे)

वाटपाड़उ, वाटपाडो—देखो 'बटपाडो' (रू. भे.)
उ०—१ चोर चरड नइ बाडिया, गाठीछोडा गाहाट। **वाटपाड़ा** नइ फासिया, नाडी त्रोडा नाट। —मा. कां. प्र.
उ०—२ चोर चरड बहुल, **वाटपाड़ा** तणा कलकल, धरम गुरु चपल पापोपदेस कुमल —व. स.

वाटभोजन—स पु [सं. वाट+भोजन] यात्रा मे मार्ग मे, किया जाने वाला भोजन।

वाटर—स पु. [अ.] पानी, जल।

वाटरप्रूफ—वि [अ] जिस पर पानी का असर न हो, जिसमे से पानी नही निकलता या छनता न हो।
सं. पु.—उक्त प्रकार का कपडा।

वाटरवरक्स—स. पु. [अ. वाटरवर्क्स] नगर मे पानी की व्यवस्था करने वाला विभाग, जलदाय विभाग।

वाटलउ—देखो 'वाट' (रू. भे.)
उ०—जातु सही जासइ हरी, चोर तणी जिम चाल। वंछित पामिउ **वाटलउ**, ने पणि आटला काल। —मा. का. प्र.
२ देखो 'वाटलो' (रू भे)

वाटली—स. स्त्री. [स वर्त्तुलिका प्रा वट्टुली] १ अगूठी। मुद्रिका। (अ. र)
उ०—१ मोती-जडी ज हाथि, सुरह-सुगंधी **वाटली**। सुती माझिम रात, जागू ढोलू जागवी। —ढो. मा.
उ०—२ खूणाली खाति वली, वली **वाटली** कोट। बाली परवाळी अधर, अमी तणी तिहा ओट। —मा. का. प्र.
रू. भे.—वाटुली।
५ देखो 'वाट' (अल्पा., रू. भे.)
६ देखो 'वाटी' (अल्पा, रू. भे)
७ देखो 'बाटली' (रू. भे.)

वाटलोयो—स. पु.—१ वस्त्र विशेष।
उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ, गुडीआं सणीआ

कस्तूरीग्रां प्रतापीग्रां, कुसंभीग्रां मोलीग्रां मांडवीग्रां मीणीग्रां, बावलीग्रां जलोदरीग्रां मगीग्रां जोडदरीग्रा प्राणीग्रां। —व स.

२ देखो 'बाटली' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बाटलु, बाटलौ—स. पु. [प्रा. वट्ट] १ प्याला, पात्र।

उ०—थाल कचोला बाटला, वासण परवो चंग। मग गोधूमादि दियै, प्रथवी रतन सुरग। —वि. कु.

२ वृत्ताकार, गोल।

उ०—ईस तुम्हारइ एतलउ, मलउ भणइ ते भूर। खिणु वांकउ खिणु बाटलु खिणु कालु खिणु क्रूर। —मा. कां. प्र.

रू. भे.—बाटलउ।

ग्रल्पा.—बाटलियौ।

बाटवड़—देखो 'बाटवड' (रू. भे.)

उ०—तीतर लउवा बाटवड़, बैदाणी बुगलाह। लखै पखीवण उड रह्या, वा' वा' जी वा'-वाह। —गजउद्धार

बाटवाणौ—स. पु.—विवाह मडप में ग्रग्नि परीक्रमा के पश्चात कन्या के पिता द्वारा कन्या को पहनाई जाने वाली पोशाक।

बाटवालनुं—स. पु—१ राह चलने या यात्रा करने की क्रिया। (उ. र.)

२ प्रतीक्षा करने की क्रिया या भाव।

बाटा—देखो 'बाटा' (रू. भे.)

बाटाउ, बाटाऊ—देखो 'बटाऊ' (रू. भे.)

उ०—१ मातमी बार गगोदक री कावड भरिनं ग्राणती हुतौ सु किण हेक सहर बाटाउ थकौ किणहेक रै बारणं रै बातरै उतरियौ। —नैणसी

उ०—२ विढण वखांग करै बाटाऊ, ग्रेती जाग ग्रावडियौ। मग्रा सहेत 'महेवा' सामी, पाडि माभी रण पडियौ।

—राव वीरम राठौड रौ गीत

बाटि, बाटि—देखो 'बाट' (रू भे) (उ. र)

उ०—१ सिबिका वइसी सचरइ, धरि थी राउलि जाइ। बाटि वली विलोकती, विनता विव्हल थाइ। —मा. का. प्र.

उ०—२ ढोला, मारवणी मुई, तइ सारडी न लध्ध। दीवा-केरी बाटि जिम, खोडी-खोडी दद्ध। —ढो मा.

२ देखो 'बाटी' (रू. भे)

बाटिका—सं. स्त्री. [स.] १ फूल, बगिया, बगीचा, उपवन।

उ०—कणकार वेस्याकार, चरमकार, मल्लकार खलकार धान्य-खलक वाटक बाटिक वापी पुष्करिणी क्रीडातडाग सरोवर।

—व स

२ इमारत।

उ०—क्षण ऐक जाइ देवकुलि, क्षण एक जाइ राज-बाटिकां, क्षण एक जाइ वाटिकां, इसी क्रीड़ा करइ। —व. स.

३ वह भू-खड जिस पर कोई इमारत खड़ी हो।

रू. भे.—बाटिका, वाटी, वाडि वाडी।

बाटी—स. स्त्री. [स.] ग्रनाज पीसने की चक्की के चारो ग्रोर का वह घेरा जिसमे पीसा हुग्रा ग्राटा गिरता रहता है।

२ घेरा, ग्राहता।

३ कर, टेक्स।

उ०—दाण पूछी हल मोल भाग भेट तलारक्षक वद्धापन मलवरक बल चचा चारिका गढ बाटी छत्र ग्रालहण थोटक कुमारादि सुखडी इति क्रमेणाऽष्टादसा करा जाता। —व. स.

४ कमर, कटि।

रू. भे.—वाडि, वाडी।

५ देखो 'बाटी' (रू. भे.)

उ०—तदनतर लाडता लडसडता इसा पुण्यवत, लीला कांमदेव जिसा, ग्रारोगिवा बइठा। तदनंतर ग्राट वाटां बाटी कचोलां कचोलवटी सीप सूनवटी प्रगुणी हुई। —व. स.

६ देखो 'बाट' (रू. भे.)

७ देखो 'बाटिका' (रू. भे.)

बाटिइ—देखो 'बाटी' (रू. भे.)

उ०—क्षणि क्षणि साकर बाटीइ, क्षणि क्षणि कढीइ दूध। क्षणि क्षणि बीडी ग्रापीइ, मुख तबोलि सुध। —मा. का. प्र.

बाटीकोळौ—सं. पु—वर्षा ऋतु मे होने वाला कुष्माडु।

बाटीपच—देखो 'पचवटी' (रू भे.)

उ०—मारे व्याध कबंध ग्रमाई, बाटीपच वसानंदा। रांमण तद हरी जांनुकी राणी, भीली बेर भखानंदा। —र. ज. प्र.

बाटूली—देखो 'बाटली' (रू. भे)

उ०—चोसठि व्यजन रूप ग्राहार दइ, एक स्थाल विमाल बाटूली सीय कच्चोला भ्रगारादिक भाजन सरवे समोपइं'''। —व. स.

बाटूलौ—स. पु.—पात्र विशेष, कटोरा।

उ०—१ ग्रथ पुग सोपारा, ग्रति फारा, प्रधान रसनिधान, खीखंडि खरड्या, करपूर धवलां ग्रावावना बाटूलां सुरग सुभंग चीकणां कोनडीयाला, चाव्या रस मूकइ, इस्या ग्रपूरवोत्तम पुग। —व. स.

उ०—२ सूक्ष्म सकोमल रोमराइ, सघलाइ गुण वसइं जेह तणइ काइ, जाणीइ राखै द्रव्टितउ पाछउ थाइ, बाटूलां ग्रकाई चोपख्यां तोन्हा इस्या स ग, सुबद्ध मासल ग्रग, जेह तणी कुहुंदि चग, उज्ज्वल दत, जेहनी मोभा ग्रनत सुभ इसउ ग्रसभ। —व. स.

उ०—सौरयवत्ति जेह् नइ समग्र, मूस माहि फिरता सुवरण नी परिइ बाटुलां, बीज सरीखा नयन तेह् नइ भइ ऊमजइ गजनइं रोगक्षयन। —व. स.

बाटौ—देखो 'बाटौ' (रू. भे.)

बाड—१ देखो 'बाड' (रू. भे.)

उ०—यंत्र मत्र मसाण गीध करकां की बाड मडी। —ग्र. वचनिका

२ देखो 'बाट' (रू. भे) (७)

उ०—जठै ग्रमरसिंघजी घोडौ कुदायौ सौ हमजै रै हाथी रै दातूसळां ऊपर पग मेलिया। ग्ररु ग्रमरसिंघजी रौ डावौ हाथ होदै री बाड मैं पडियौ। —द. दा.

३ देखो 'बाढ' (रू. भे)

उ०—जमी खेद लागा प्रळै काळ रूपी वीर जुटा, नीरानाळा बाण छूटा ग्रातसा नीहाव। कैवाण बाड स सत्रा झोकीया भारात कूपै, 'हरा' वाळै जाडा थडा झोकिया हेराव। —विमनसिंघ री गीत

बाडगिरी—स. पु—पर्वतों मे श्रेष्ठ हिमालय पर्वत।

बाडचर—स. पु.—सूग्रर, वराह। (ग्र. मा, ह ना मा.)

बाडणी—देखो 'बाढणी' (रू भे)

उ०—वाहरू घरा ग्राटायता बाडणा, पखा जळ चाडणा ग्रखाडै पाथ। 'नाथ' री ऊथपै जको राजा नही 'नाथ' री थपै सुज जोधपुर नाथ। —हुटौजी खिडियौ

बाडणौ, बाडबौ—देखो 'बाढणौ, बाढबौ' (रू. भे.)

उ०—'विडदेस' पवगं बाडतै, खग नागपुर घर खाटतै। जीवता केहर तणी जाणे, खाच काढी खाल। —रा. रू.

बाडणहार, हारौ (हारी), बाडणियौ—वि०।

बाडियोड़ौ, बाडियोडौ, बाडयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बाडीजणौ, बाडीजबौ—कर्म वा०।

बाडभेय—देखो 'वाडवेय' (रू. भे.) (ग्र मा.)

बाडम—१ देखो 'वडम' (रू. भे.)

२ देखो 'बडौ' (मह, रू. भे.)

बाडली—देखो 'बाड़लौ' (ग्रल्पा., रू. भे)

बाडलौ—स. पु—१ ऊंठ या घोडे को खुला छोडते समय उनके पावो मे लगाया जाने वाला बधन, जिससे पशु चल सकता है पर भाग नही सकता।

उ०—तिणरै मारग माहै ढोलेजी नै चारण मिळीयौ। कह्यौ, जे ठाकुरा, उठ खोडावै ने बेऊ जणा ऊपर चढीया। सो इसौ करहा मे कासूं खून छै। तारै ढोलेजी छुरी कमर मांहा काढनै दीनी। तारै चारण ऊंठ रै पग माहा बाडलौ काटीयौ। ऊठ ब्याक पगा हुवौ। —ढो. मा.

२ देखो 'बाडलौ' (रू भे)

बाडव—सं. पु.—[स. वाडव्य] १ ब्राह्मण।

उ०—१ पणि बाडव बधवु नही, दीजइ देस-निकाल। वार विलब न कीजइ, ते माटइ ततकाल। —मा. का. प्र.

उ०—२ दैवइं लिखिउं ते नवि टलइ, बाडव रहिउ विचारि। घीर धरी घर उडितु, हईडा हवइ म हारि। —मा का. प्र.

उ०—३ बाडव सभलि वीनती, सूर देवराव साखि। योबन मइ इम जालविउ, रक रयण जिम राखि। मा. कां. प्र.

उ०—४ घरि घरि दो दो दीसीह, चरसिइ ग्राभि ग्रगालि। लेई ग्रावै लाख ते बाडव वाचा पालि। —मा. का. प्र.

बाडवक—स. पु.—श्रृंगार मे एक ग्रासन विशेष।

बाडवेय—स पु. [स.] १ साड।

२ बैल।

रू. भे.—बाडभेय, वाडभेय, वाडिभेय।

बाडहोळौ—स. पु.—भय का गोला।

उ०—वैरिया री फौज रै म्हारौ पती जावता ही दुसमणां री छाती मे होल खाडा पडण ढूक जावै बाडहोळा (भै रा गोटा उठै छाती मे) निजर पडता ही ग्रर सिपाही ग्रोडौ ग्रोळा ताक ताक नै कहै ग्रायौ ग्रायौ। —वी. स. टी.

बाडि—देखो 'वाटिका' (रू. भे.)

उ०—माझळि भूथ मतगा, घण मद मोख खोख घूमता। ताकि बाडि बिलगा काकीडा, नर्ने कूदति। —रामरासौ

२ देखो 'वाटी' (रू. भे.)

बाडिभेय—देखो 'वाडवेय' (रू भे.) (ह. ना. मा.)

बाडिम—१ देखो 'वडम' (रू. भे.)

उ०—देसा सिरोमणि दीपणीं, जुध जीपणीं ग्रमरांण। देसोत बाडिम दाखणी, घर राखणी ललधीर। —ल. पिं.

२ देखो 'बडौ' (मह., रू भे)

बाडियोडौ—देखो 'बाढियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बाडियोडी)

बाडियौ—देखो 'बाडियौ' (रू. भे)

बाडी—स स्त्री—१ रथ।

उ०—इक दिन इक ग्रटवी मे ऊभौ, छबि सखरी तरु छाया। बाडी चढि राय दसारण, उणहिज वडि तलि ग्राया। —ध व. ग्रं.

२ हाथी का हौदा, अबाडी ।

३ देखो 'वाटी' (रू. भे.) (उ. र.)

४ देखो 'वाटिका' (रू भे) (उ र)

उ०—वीर जद्द **वाडी** महिं वेगि कीछ विस्राम । चपक-तलि चिंता समी, निद्रा आवी तांम । —मा. का. प्र

वाडौ—देखो 'बाड़ौ' (रू. भे.)

वाढ—देखो 'बाढ' (रू भे.)

उ०—१ वणाय खाग चाढि **वाढ**, ओपवै उजास रा । वरणत बीच नीर वाघि, रूप मे वणास रा । —सू प्र

उ०—२ मरद धमसाण पूह लिये आलोमणा, वढण कज वाढ भेरीजीये बीजळा । डोह घड चोवडा फतह जग खळा डळा, ग्वत्री गुर रौ छण्ल करै नत धूकळा । —अज्ञात

उ०—३ दानूसळ वजर घजर जमदाढा, **वाढां** ऊगाढा विहर । असपति नजर भलौ आफळियौ, कुजर नै नाहर कवर ।

—लिखमीदास गाडण

उ०—४ थणी तरवारया रा **वाढ** उछळै छै ।

—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—५ लड पडै फूट छड छाक लोह, छड पकड जडै जमदढ छछोह । झडियाल **वाढ** खग धजर झाट, घडियाल फजर गढ लक थाट । —बि. स.

वाढण—देखो 'बाढण' (रू. भे.)

उ०—पायका पद खाग धगू पलकी, हुव लागत 'पाल' तणी हलकी । दोयणा सिर **वाढण** आन दुओ, हरणाखुर 'ठेव' सवार हुओ । —पा प्र.

वाढणौ—देखो 'बाढणौ' (रू भे.)

वाढणौ, वाढबौ—देखो 'बाढणौ, बाढबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वहता रगत देखि खळ **वाढै** । चंद्रप्रहास ग्रहै धक चाढै ।

—सू प्र.

उ०—२ सत्रु **वाढि** सीस पूजै सकत्ति । वाढेल कहाया इण विगत्ति । —सू. प्र.

उ०—३ 'वीरम' सलखावत खगा बाग । जोइया **वाढि** बिढियौ अजाग । —सू प्र.

उ०—४ तरै गरीबनाथ कुहाड़ियौ लेनै आवा वाढण नू ऊठियौ । तरै चेले १ कह्यौ—हाथा रा पाळिया काय **वाढौ** । —नैणसी

उ०—५ राजाजी नै रीस तौ ऐडी आई के डोकरा रौ माथौ वाढ न्हाकं । पण पटकता वोल्या—थू झूठौ नी है तौ काई म्हैं झूठौ हू । —फुलवाड़ी

उ०—६ मिळग्यौ तौ कुचमादी री एक-एक रग सगळा सस्तरा सू **वाढेला** । —फुलवाडी

उ०—७ वाक मुहा वांजिद विवांणा, दाढां पीसै रौस लगांणां । धरती धमम तुरा धम धमी, **वाढै** साढ सेट सीरम्मी ।—गु. रू. ब.

वाढणहार, हारौ (हारी), वाढणियौ—वि० ।

वाढिओडौ, वाढियोड़ौ, वाढयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वाढीजणौ, वाढीजबौ—कर्म वा० ।

वाढाळ—देखो 'बाढाळी' (मह., रू. भे.)

उ०—घोराडि जमदृढ फाटि फटै घट, नीसर सुस्सर सेल नरा । वाढाळ वहै रत खाळ विछूटं, रभ वरै वरमाळ वरा । —गु. रू. ब.

वाढाळी—देखो 'बाढाळी' (रू. भे.)

वाढाळौ—देखो 'बाढाळौ' (रू. भे)

उ०—१ चाढा दहु वळ चाढवै, झळहळ झूलाळा । खुरसाणा दहुं दळ खिवै, वीजळ **वाढाळा** । —सू. प्र.

उ०—२ वढियौ मुवेस 'पतौ' **वाढाळौ**, वभियौ सुरजन देख वढ । गढ चित्तौड गरव तण गरजै, गाडौ गौ रणथभ गढ ।

अज्ञात ।

उ०—३ बीकानेर भोज **वाढाळै**, सारा मुंह ओडवै सरीर । 'रूपा' हरै राखियौ रूडौ, नेहचैई ऊतरतौ नीर । —द. दा.

वाढियोड़ौ—देखो 'बाढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाढियोडी)

वाढेतौ—देखो 'बाढेतौ' (रू. भे.)

वाढेल—स. पु —१ राठौड वश की एक उपशाखा ।

२ पवार वश की एक शाखा ।

३ देखो 'वाढेलौ' (मह., रू भे.)

रू भे.—बाढेल ।

वाढेलौ—वि.—१ वीर, योद्धा, बहादुर ।

स. पु.—२ पवार वश की 'वाढेल' शाखा का व्यक्ति ।

३ राठौड वश की 'वाढेल' उपशाखा का व्यक्ति ।

रू. भे.—बाढेलौ ।

मह.—बाढेल, वाढेल ।

वाढोवाढ—स. पु —प्रहार पर होने वाला प्रहार, घाव पर घाव ।

वा'णी—देखो 'वाहणी' (रू. भे.)

वा'णौ, वा'बौ—देखो 'बावणौ, बावबौ' (रू. भे.)

उ०—पाछौ री पाछौ सुथरा पाणी री लोटौ लेय मासी रै गोडै आई । हाथ पग दबावण लागी । पछै नाक री फुरणियां भीच मासी री सास रोक्यौ । पाणी रा छाबका दिया । दो तीन तड़ाचा वा'यनै मासी थोडी सी आंख्या खोली । —फुलवाड़ी

वात—सं. पु. [स.] १ वायु के अधिष्ठाता, पवन देव, आठ दिग्पालो में से एक ।

सं. स्त्री.—२ वायु, पवन, हवा। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—फागुन फरहरै बात प्रभात नौ सीत अपार। नाह सुं फागन रमैं बहु राग, सुहागणि नारि। —ध. व. ग्रं.

२ शरीरस्थ तीन तत्व-कफ, वात पित में से दूसरा, जिसके कुपित होने से अनेक रोग पैदा होते हैं।

उ०—आधि भूतक अधिदेव अध्यातम, पिंड प्रभवति कफ वात पित। त्रिविध ताप तसु रोग त्रिविध में, न भवति वेलि जपत्तनित। —वेलि

३ शरीर की अपान वायु, अधो-वायु।

रू. भे.—वत, बात, बाय, वायइ।

४ देखो 'बात' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रहे ग्रन्नावळि, उडि चली ग्रीभरणी। त्रिहू भुवण रही बात सोहडा तणी। —हा. झा.

उ०—२ वरि हूं ग्राविसी थई रही, मझ लागी ह मात। मइ माधव-विण एक क्षण, जीव्यानी नही बात। —मा का. प्र.

उ०—३ पिता प्रणाम करू किस्यू, मोकलावउ किहा वात। करसिइ ते कलपात कलि, स्रवणि सुणता बात। —मा का प्र.

उ०—४ रावळा ग्रासापुरा जाणै, था थका क्यु न जाणा। रावळ टीकै बैठै, तरै म्हा नै रावळ बात। —नैणसी

उ०—मास तीन चार रो ग्रावाधान छै। समुद्र मोहल मे बैठी छै। बातां एकायत करै छै। —कुंवरसी साखला री वारता

वातकंटक-स. पु. [स.] एक वायु रोग जिससे पावो की गाठो (ग्रथियो) मे दर्द होने लगता है।

वातकार-वि [स] १ वायु उत्पन्न करने वाला।

२ वह खाद्य पदार्थ जिनका उपयोग करने से वायु उत्पन्न होती है।

३ देखो 'बातकार' (रू. भे)

उ०—बसकार यंत्रकार उलकार तलकार तालाकार भुगलकार ग्राउजकार पखाउजकार गीतकार बातकार, न्रत्यकार पाडकार। —व स

वातकोप-स. पु. [स.] शरीर के अन्दर होने वाला वायु का प्रकोप। (वैद्यक)

रू. भे.—वातप्रकोप।

वातगर—देखो 'बातकार' (रू. भे.)

उ०—राजद्वारिक लेखक कथक बातगर कवि काठीया मसूरिया दीवटीया उपाध्याय बइकार। —व. स.

वातगुल्म-स. पु. [सं.] १ वात विकार से होने वाला गुल्म रोग (वैद्यक)

२ वात चक्र, अंधड।

वातड़ली, वातड़ी—देखो 'बात' (अल्पा रू. भे.)

उ०—१ था वीना सारी बातड़ी, सूनी होयसी सार वै। कुंवर कहहै रै सूवटा, ग्राइ राकस हार वै। —रीसालू री बात

उ०—२ मात-पिता सै वीसरै, बधू वीसारैह, सूरां पूरां बातड़ी, चारण चीतारैह। —ग्रग्यात

उ०—३ सेवै नर सदीना सुरघर, सदा नीरोगी ही रवै। वूठै जारी बातड़ी नै, वगत बटाऊडा कवै। —दसदेव

उ०—४ पथी नइ पूछू बातड़ी रे, तुमे ग्राया उग्रसेन पुर थी ग्राज रे। तिहा दीठा ग्रम्ह गुरु राजीया, स्रीजिनकुसल सूरि राज रे। —स. कु.

वातचक्र-स. पु [स] १ ग्राषाढ मास की पूर्णिमा के सूर्यास्त को ग्राने वाला ज्योतिष का एक योग।

२ देखो 'बघूळौ' (रू. भे)

उ०—ऊरडो रजी मभि ग्ररक एहवौ, वातचक्र सिरि पत्र वसति। सद नीसह नीमाण न सुणिजै, वरहासा नासा वाजति। —वेलि

वातचीत—देखो 'बातचीत' (रू. भे) (उ. र)

वातज-वि [स.] वायु द्वारा उत्पन्न, वायुकृत।

स पु.—१ हनुमान।

२ भीम।

वातजात-स. पु. [सं. वात-जायते] १ हनुमान।

२ भीम।

वातज्वर-स पु [स.] वायु विकार के कारण होने वाला ज्वर।

रू भे—वायज्वर।

वातप-स. पु—हरिण, मृग। (ह ना. मा.)

रू. भे.—बातप।

वातपुत्र-सं पु [सं] १ हनुमान।

२ भीम।

वातपोत, वातपोथ-स. पु. [स. वात पोथ:] पलास का वृक्ष।

वातपोस—देखो 'बातपोस' (रू. भे.)

उ०—राव जोधौ पोढियौ हुतौ। बातपोस वात करता हुता। राजविया री वाता करता हुता। —नैणसी

वातप्रकोप—देखो 'वातकोप' (रू. भे.)

वातप्रक्रति, वातप्रगति-वि. [स वातप्रकृति] १ जिसकी प्रकृति में वायु की प्रधानता हो।

२ जिसके खाने से शरीर मे वात-वृद्धि होती हो, जो वायु

कारकहो।

बातरक्त, बातरगत–स. पु. [सं बात-रक्त] कुपथ्य या अयुक्ताहार-विहार मे बात विकार के कारण रक्त विकार होने का एक रोग।

बातरोहिणी–स. स्त्री [स.] मुंह में होने वाला एक रोग।

वि. वि.—इस रोग में जीभ पर चारो ओर काटे के समान मास उभर आता है।

बातल, बातली–स. पु. [सं. बातालः] १ चना।

वि.—१ वायु वर्द्धक।

२ वात युक्त, वायु प्रधान।

उ०—भक्ष्य भोजन निरास्वाद, स्त्री तणी जाति अमरयाद, रहस भेद, रसच्छेद, आऊखां स्तोक निवाणिज लोक, देह बातली, भक्ति पातली, अल्प आयु, पगि पगि अकरथ, नाप वेटा तणा गरथ सातइ, आपणा छोरु कुक्षेत्रि घातई। —व ब.

३ देखो 'वातोल' (रू. भे.)

बातलड़ी—देखो 'बात' (रू. भे.)

बातबिगत—देखो 'बातविगत' (रू. भे)

बातवैरी–स. पु—बादाम।

बातव्याधि–स. स्त्री.-गठिया रोग।

बातहड़ा–स. पु—कोई जाति या वर्ग विशेष। (सभा)

बाताट–सं. पु.—१ सूर्य का घोड़ा।

२ मृग या हरिण।

बातात्मज–स पु [स.] १ पवन-पुत्र हनुमान।

२ भीम।

बातापि, बातापी–सं पु. [स. वातापि] १ एक पौराणिक राक्षस जो आतापि का भाई था।

उ०—बातापी पीधू बली भंगइ भणि अगस्ति। इद्र तणा आयुध गली, दीध दधीचिइ अस्थि। —मा. का. प्र.

२ हरिण, मृग।

बातायण, बातायन–सं. पु [स. वात+अयन] १ खिड़की।

२ झरोखा।

३ रोशनदान।

४ घर के दरवाजे के आगे की पटी हुई जमीन।

५ फर्श, गच।

६ जाली।

[स वात+अयनः] ७ घोड़ा, अश्व।

रू भे—बातायण।

बातायनासन–स पु.—योग के चौरासी आसनो में से एक।

वि. वि --इसमे बाये पैर की ऐडी दाहिने पैर के जाघ के मूल मे लगा कर, घुटना दाहिने पाव के घुटने पर लगाकर खड़ा रहना होता है।

बातायु, बातायू–स. पु. [सं. वातायु] १ हरिण। (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ बारहसिंगा।

बातारि–सं. पु [स] १ एरड।

२ अजवायण।

३ वायवडिंग।

४ सनावर।

५ बील का पोधा

बाताल–वि—बातें करने वाला, बातुनी।

बाताळगो–स. पु.—बात चीत, वार्तालाप।

उ०—ताहरा भाटियै कहियौ-पाणी पावो, ज्यु बाताळगो करा वैर भाजा। —नैणसी

बाति–स स्त्री.—१ घोड़े का मूत्र।

उ०—घोडौ मोल लेतां डावो पग आघो करै सो न लीजै। जीमणो पग आघो करै सो लीजै। (शुभ) जको घोडौ मोल लेता हींसै और लता करै लाद करै सो लीजै। (शुभ) बाति करै सो न लीजै, लाद करै सो सुखदाई। —शा. हो.

रू. भे—बाती।

बातियौ–देखो 'बात्यौ' (रू. भे.)

बाती–स स्त्री—१ कच्चे मकानो की छाजन पर लगाया जाने वाला पतली लकडियो का बध।

उ०—बाड़ै फोग खेतड़ा कढै, सीवा वाड बणावता। टापी टाटा टेर बाती, फलसा छाट छवावता। —दसदेव

२ देखो 'वाति' (रू. भे.)

३ देखो 'बाती' (रू. भे.)

बातुनी, बातूंनी—देखो 'बातूनी' (रू. भे.)

बातुल, बातूल–वि. [स वातुल] १ उन्मत्त, मस्त। २ पागल।

३ सनकी। ४ वायु से पीड़ित, गाठिया का रोगी।

रू. भे—बातूल।

बातोकळौ—१ देखो 'बातूनी' (रू. भे.)

२ देखो 'वारतालाप' (रू. भे.)

बातोदर–स पु. [स] एक रोग विशेष जिसके कारण हाथ-पाव, नाभि, काख, पसली पेट, कमर और पीठ मे पीड़ा होती है, तथा सूखी खांसी आती है और शरीर भारी रहता है।

उ०—महोदर जलोदर कठोदर बातोदर भगदर अतिसार। —व. स.

बातोरमी–स. स्त्री. [स. वातोर्मी] एक वर्ण वर्त्त जिसमे ग्यारह अक्षर होते है, जिसका क्रम मगण, भगण तगण और अत मे दो गुरु होते हैं।

वातोळ-सं. स्त्री.—रबी की फसल में बोवाई से पहले की जाने वाली खेत की जुताई ।

वातौंण-सं. पु.—बातचीत ।

उ०—वरी सूं वातौंण, कासूं हुव झरड़ा करै । इण सात्रव हाथांण, केवा सै जमडा कनै । —पा. प्र.

वात्रक-सं. स्त्री.—ईडर राज्य की एक नदी ।

वि. वि.—यह दक्षिण-पूर्व में मेघराज के पास से निकल कर दक्षिण-पश्चिम में जाकर माझम नदी में मिलती है तथा बोथा स्थान पर सावरमती से मिलती है ।

वात्सल्य-स. पु. [सं. वात्सल्य] १ संतान के प्रति होने वाला स्नेह, ममत्व । २ प्रेम ।

रू. भे.—वाछळ, वाछल, वाच्छिल, वाच्छिल्य, वाछल, वाछल्य ।

वात्सायन-स. पु. [सं.] १ कामसूत्र के रचयिता एक ऋषि । २ न्याय सूत्रों पर भाष्य रचयिता ।

वात्सायनसास्त्र-स पु.—वात्सायन ऋषि द्वारा रचित कामशास्त्र ग्रंथ (व. स.)

वाद-स. पु. [स.] १ हठ, जिद्द ।

उ०—१ कुंवर मत कर वाद, राव कहै सो सांभळो । —कुंवरसी सांखला री वात

उ०—२ तरै सारै चाकरै नागद्दी रा देवातन री वात राव कनै कही, पण मडळीक मानै नही । वाद लागो । —नैणसी

उ०—३ दुधर्णी री जाई नै कितौ कह्यौ के दोना नै जगाय नै सिधावती वेळा मिळाय दां । चोज राख्या वातडी बिगड़ैला । पण वादीली मानी ई नी । थोई कोई वाद है । —फुलवाड़ी

२ वादा, कौल, वचन ।

उ०—वाकिम्म वीद दिन वाकडै, वाद न छडै वकपण । वांकडौ सेर उठै विढण, वदै जीह वंका वयण । —गु. रू. ब.

३ विवाद, प्रतिवाद ।

उ०—१ किसौ वाद रिख सूं करो, सांभळो जनक सुगात्र चाप दिखाळो रामचद, भणै लिखमण भ्रात्त । —राम रासौ

उ०—२ कियौ वाद हाथे जिका बात इतरी कही । दादि जिण बात री जगत दीधी । —कवर नरपाळ देवल रो गीत

४ तर्क, दलील, बहस ।

उ०—साधन काव्य कला सुर साधत, वाद विवाद करै मत वाधत । —भ्रग्यात

५ युद्ध, झगड़ा ।

उ०—१ राजा रांणां मेलिया, कीध ढकीलां वत्त । वाद वडां सूं छडियै, एहस आद मत्त । —गु. रू. बं.

उ०—२ मांणस २ रूड़ा मेलनै रायसिंघ नूं कहाडियो-थे नै असां बेई वाद कियो छै थे स्यांणा छो, जसो मोटियार छै । —नैणसी

६ प्रण, प्रतिज्ञा ।

उ०—१ वीरा रस हेक न मेल्है वाद । निहस्से हेक करै सिहं नाद । —गु. रू. बं.

उ०—२ आप लोगा नै समझावण री वाद भगवान ई करै तौ उण नै हार माननी पड़ैला । —फुलवाड़ी

७ बातचीत, कथन ।

८ वाणी ।

९ शब्द, वचन, वाक्य ।

१० बयान, वर्णन, निरूपण ।

११ टीका, व्याख्या, भाष्य ।

१२ उत्तर ।

१३ अफवाह, किंवदंती ।

१४ तर्क शास्त्र ।

उ०—वाद भणी विद्या भणी जी, पर रंजण उपदेस । —धरमपत्र

१५ शास्त्रार्थ ।

उ०—छ तरकि चेस्टानुवाद अरथानुवाद सरवानुवाद पंचावयवि दसावयवि वादीसिउ वाद लिइ छए भासा बोलइ । —व. स.

१६ किसी पक्ष के तत्वज्ञों द्वारा निश्चित किया हुआ कोई सिद्धान्त

१७ किसी अभियोग या मुकद्दमे पर विचारार्थ प्रस्तुत किया जाने वाला मन्तव्य ।

१८ दुराग्रह ।

१९ सज्ञा शब्दों के आगे लगने वाला एक प्रत्यय ।

२०—७२ कलाओं मे से एक ।

२१ भैंस के चर्म की पतली रस्सी ।

उ०—खालडी में लूण भराय घांणी में घाल पीलावैला के सूळी चाढ मारैला के माथा रै वाद बंधाय प्रांण काढैला इणरी कीं ठा' कोनी । —फुलवाड़ी

२२ भैंस का चमड़ा ।

२३ देखो 'वाद्य' (रू. भे.)

रू. भे.—वाद, वाध, वादि, वादी, वाघ ।

वादक-स. पु. [स.] १ गवैया, गायक ।

२ वाद्य बजाने वाला, संगीतज्ञ ।

३ तर्क या बहस करने वाला ।

४ वक्ता ।

रू. भे.—वादक ।

वादण-सं. पु. [स. वादन] १ वाद्य बजाने की क्रिया भाव ।

२ कहने या बोलने की क्रिया या भाव ।

३ बाजा, वाद्य ।

४ भैंस के चमड़े की रस्सी जो गाड़ी के हिस्सों को बांधने के काम आती है ।

उ०-दाता भाले डांढ्या खीजै गउ खाणाह। थे राणा अवगा थयो **वादण** दो वाणाह। —पा. प्र.

५ वादी जाति की स्त्री।

रू. भे.—बादण ।

वादणौ, वादबौ-क्रि. स. [स. वादन] १ वाद-विवाद या बहस करना ।

२ वादन करना, बजाना ।

३ गुंज करना ।

४ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—तिम सयल वादि निय निय धरि हिं, ताम गस्व पटावइ चडइ। जिन भद्र सूरि गुरु तणीय, हुयुन जा कन्नि हि पडई । —जिन भद्र सूरि

वादणहार, हारौ (हारी), वादणियौ—वि० ।

वादिग्रोड़ौ, वादियोड़ौ, वाद्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वादीजणौ, वादीजबौ—कर्म वा० ।

वादणौ, वादबौ—रू.भे. ।

वादप्रतिवाद-स पु—१ वाद या तर्क मे होने वाला परस्पर कथोपकथन, बहस ।

२ वाद-विवाद ।

वादरग-स पु. [स] १ वट वृक्ष ।

२ अश्वत्थ का वृक्ष, पीपल ।

वादरायण-स. पु.—वेदव्यास का एक नाम ।

रू. भे.—बादरायणि ।

वादरायणि-स पु—१ व्यास के पुत्र शुकदेव मुनि ।

२ देखो 'वादरायण' (रू. भे.)

वादरी-स. स्त्री.—चमड़े का तस्मा जो घोड़े के चारजामे के साथ रकाब मे कसा जाता है ।

वादळ, वादळउ—देखो 'बादळ' (रू भे.)

उ०—१ उडतौ जिका ओप कवि आंणै। अनळ दक्षिण **वादळ** अहिनाणै। —सू. प्र.

उ०—२ एक सोर सारत्ति घोर धूवा रवि ढब्बर । ज्यौं **वादळि वादळ** विसाळ ओपै मग अबर। —रा. रू.

उ०—३ कोट भुरजा रा कोसीस नै धमळहर धमळागिर पहाड़ ज्यौं **वादळां** रा कोरण सारीखा ऊजळा सौकोट सौं निजरि आवै छै। —रा सा. सं.

वादळावाळौ—देखो 'बादळावाळौ' (रू. भे.)

वादळियौ—देखो 'बादल' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—सावण आयौ सायबा, कहौ य तो पीवर जाय। पग-पग पाणी पालरो **वादळियां** री छाय। —लो. गी.

वादळी—देखो 'बादळ' (अल्पा., रू भे)

उ०—आयौ-आयौ सावण भादवौ, कोई काळी घटा घिर आय । आज म्हारी **वादळी** वरसेगी । —लो. गी.

वादळौ—१ देखो 'बादळौ' (रू भे.)

उ०—१ इसो देख भीवै कह्यौ, क्यू पाणी छै तो कहो ज्यू उजळाई करा। तरै कह्यौ, म्हारा घोडा रे हानै **वादळौ** जळसू भरियो छै, सो ल्यौ। —जखडा मुखडा भाटी री बात

उ०—२ अतलस थरमा ऊमदा, ताम **वादळा** त्यार । जसडा कमीया जानीया, कसीयौ राजकुमार। —मयराम दरजी री बात

२ देखो 'बादळ' (अल्पा, रू. भे.)

वादविवाद-स. पु.—१ तर्क वितर्क, बहस ।

उ०—दारू पीलै पदमणी, मत कर **वादविवाद**। दारू मे मारू दूसरो, पी कर देख मवाद। —लो. गी.

२ शास्त्रार्थ ।

वादवी-स स्त्री. [स. वाद+वी='वी गति व्याप्ति-प्रजने'] सैना, फौज। (अ मा.)

वादसाह—देखो 'बादसाह' (रू भे)

उ०—पछै **वादसाह** जी दिखण मे खानजहा लारै बुरहानपुर गया। —बा दा. ख्यात

वादसाही—देखो 'बादसाही' (रू. भे.)

वादाम—देखो 'बादाम' (रू. भे.)

वादामी—देखो 'बादामी' (रू. भे.)

वादानुवाद—देखो 'वादविवाद' (रू. भे.)

वादाळ, वादाळक-स. पु. [स. वादाल] १ सहस्रदंष्ट्र नामक मछली ।

रू. भे.—बादाळक।

वावासिर–स. पु.—वादा, कौल, प्रतिज्ञा के अनुसार।

उ०—रांणा वणवीर री वडौ रजपूत हुवौ, जिणनूं कवर वीरमदे ग्रोळ पातसाह कनै राखनै आप आयौ, पछै वीरमदे वावासिर आयौ नही। —नैणसी

वादि–वि. [स] १ विद्वान।

२ निपुण, दक्ष।

३ देखो 'वादी' (रू. भे.)

४ देखो 'वाद' (रू. भे.)

उ०—पहुवी पयउ पमाण लखण वर वखांणइ, वादि विवादि विनोदि संक निय चित्त न याणइ। —जिनभद्र सूरि

वादित्र–सं. स्त्री.—१ चौसठ कलाओं में से एक। (व. स.)

२ देखो 'वाद्ययंत्र' (रू. भे.)

उ०—१ अर घणा महोच्छव सेती गीत वादित्र, नाटिक, मंगळाचार करि दूलह-दुलहणि रा सोहला गाईजता बीकानेर पधारिया छै। —द वि.

उ०—२ जिम नरेंद्र माहे राम, जिम रूपवन्त माहे काम, जिम स्त्री माहे रंभा जिम वादित्र माहे भंभा। —वाग्विलास

वादियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ वाद-विवाद या बहस किया हुआ. २ वादन किया हुआ, बजाया हुआ. ३ युद्ध किया हुआ।

४ देखो 'बाजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वादियोडी)

वादियौ–स. पु.—सोने-चादी के आभूषणो पर चमक (पालिस) करने का एक औजार विशेष।

वादीसिउ–सं. पु.—छः प्रकार के तर्कों में से एक।

उ०—छ तरकि चेस्टानुवाद, अरथानुवाद, सरवानुवाद, पंचावयवि, दसावयवि, वादीसिउं वाद लिइ··· —व. स.

वादी—देखो 'बादी' (रू. भे.)

उ०—१ एरिस जि केवी भुवणिहिं भलइ वादी मयगळ गउयड़इ। जिनभद्र सूरि केसरि उरिहिं त धुज्जवि धरणिहिं पड़इ। —जिनभद्र सूरि

उ०—२ तिण भाग री काई देखा अमरसिहजी इसे वादी अहकारी हुवा। —ठा. राजसिह री वारता

उ०—३ सो सूरेजी रो बेटौ वेरसी बरस आठ रौ खीवे रौ बेटौ जागर बरस दस री सो सयाणौ अर वेरसी री सुभाव वादी, रीसट सौ सारा जाणै। —सूरे खीवे कांधलोत री बात

वादीकर—देखो 'बादीकर' (रू. भे.)

वादीगर—देखो 'बाजीगर' (रू. भे.)

उ०—जरमनी जोधार मिटावै मारका। ज्यूं वादीगर वाग अछत्तां आरखा। —किसोरदान बारहठ

वादीलौ—देखो 'बादीलौ' (रू. भे.)

उ०—१ पग-पग कांटा पाथरै, वादीलौ बनराव। होणौ ज्यूं त्यूं होवसी, दियै न हीणो दाव। —बां. दा.

उ०—२ दुधणी री आई नै किसौ कह्यो के दोना नै बगाय सिखावती वेळा मिळाय दा। चोज राख्या बातडी बिगड़ैला। पण वादीली मानी ई नी। ओई कोई बाव है। —फुलवाड़ी

(स्त्री. वादीली)

वादीवाय–स. पु. [स. वातविकार] ऊटो का एक रोग जिसमें उनका चलना फिरना बंद हो जाता है।

वादू—देखो 'बाधू' (रू. भे.)

वादूमाळा—देखो 'विद्युन्माला' (रू. भे.)

वादै–क्रि. वि [स. वाद] शास्त्रार्थ मे, विवाद में।

उ०—ब्राह्मण वादै हराविया··· । —धरमपत्र

वादोधुनि—देखो 'वेदध्वनी' (रू. भे.)

वादोवदि—देखो 'बदोवदि' (रू. भे.)

उ०—इसौ आणद देखि कै कटक माहे थै वधाऊहार आगै वादोवादि दौड़्या। —वेलि टी.

वादोवाद—देखो 'बादोबाद' (रू. भे.)

वादौ–स. पु. [फा. वादः] १ किसी कार्य के लिये निश्चित किया जाने वाला समय, नियत समय।

२ किसी कार्य को पूरा करने के लिए किया जाने वाला संकल्प, प्रण, प्रतिज्ञा।

उ०—जो इण भांति नहीं करै छै, सो वादौ खोटी छै। —नी. प्र.

३ कौल, वचन, इकरार।

रू. भे.—बादौ, वाइदौ, वायदौ।

वाद्य–सं. पु. [स] १ वाद्ययंत्र, बाजा। (संगीत)

२ उक्त यंत्र की ध्वनि।

३ बहोत्तर कलाओ मे से एक।

४ चौसठ कलाओ में से एक।

रू. भे.—वाद।

वाद्यक—देखो 'वादक' (रू. भे.)

वाद्यकळा–सं. स्त्री [सं. वाद्यकला] वाद्य बजाने की कला। (संगीत) (व. स.)

वाद्ययंत्र–सं. पु. [सं] वह यन्त्र जिसको विविध तरह से बजाकर विविध प्रकार की ध्वनियां निकाली जा सकती है, साज-बाज, बाजा।

रू. भे.—बांजत्र, बाजत्र, बाजत्र, बाजित्र, बादन, बादित्र, बाजत, बाजंत्र, बजंत्र, बजित्र, बजित्रि, बाजत, बाजत्र, बाजित्र, बाजत्र, बाजित्र, बादित्र।

बाध-वि.—१ विशेष, अधिक।

उ०—बीसा सात नगद बाटै बणा, बळै एक रिपिया दस बाध। दसरावै दसरावै दीजै, अणफट खत मांमलो अगाध। —द. दा.

२ बढ़कर, बढ़ती हुई।

उ०—महाराज कुमार आप जे फरमावै या तीसूं सो विस्वा बाध नीकळी। —कुंवरसी सांखला री वारता

३ देखो 'बाद' (रू. भे.)

उ०—तरै कह्यौ—राज! आदमियां नूं हुकम करौ, हूं आयसौ भिजोय चीराइनै बाध कढाईस, तिण हेठै आवसी तितरी लेईस। —नैणसी

बाधक-वि.—१ वृद्धि कर्त्ता।

२ बढिया।

३ देखो 'बाधक' (रू. भे.)

बाधण-स. स्त्री.—१ वृद्धि होने की क्रिया या भाव।

२ वृद्धि होने की अवस्था या दशा।

३ वृद्धि कारक।

बाधणौ, बाधबौ—१ देखो 'बधणौ, बधबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ बयणां नेह बधइ नही रे लो, नयणां बाधइ नेह रे सनेही। —नि. कु

उ०—२ क्रोध करइ कर कूटता, कायर करइइ मुंछ। विधिविधि जाइ बाधता, जांणे हनुमंत-पूंछ। —मा. का. प्र.

उ०—३ मारुवै रावता गाजता मेंगला, बाधियो वाद सूं इंद्र री बादळां। —गु. रू. ब.

उ०—४ विरहानल बाध्यो गोविंद। —धरम पत्र

२ देखो 'बांधणौ, बाधबौ' (रू. भे.)

बाधणहार, हारौ (हारी), बाधणियौ - वि०।

बाधिओड़ौ, बाधियोड़ौ, बाध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बाधीजणौ, बाधीजबौ—भाव वा०।

बाधरी-स. स्त्री.—भैंस के चमड़े की डोरी।

उ०—आगै जायनै देखै तो ऊदोजी पोढिया छै। ताहरां मेलै जायनै हथियारा रा बाधरयां बाढी। सेजबध वाढिया। अस्त्री री चोटी बाढी। —नैणसी

बाधांवणौ—देखो 'बधावौ' (रू भे.)

बाधांमणौ, बाधांमबौ—देखो 'बधाणौ, बधावौ' (रू. भे)

बाधांमणहार, हारौ (हारी), बाधांमणियौ—वि०।

बाधांमिओड़ौ, बाधांमियोड़ौ, बाधांम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बाधांमीजणौ, बाधांमीजबौ - कर्म वा०।

बाधांमियोड़ौ—देखो 'बधायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बाधामियोडी)

बाधा—देखो 'बाधा' (रू. भे.)

बाधाऊ—देखो 'बधाऊ' (रू. भे)

उ०—सहिए साहिब आविस्यइ, मो मन हुई सुजांण। आगम बाधाऊ हुया, अग तणा अहिनाण। —ढो. मा.

बाधारणौ, बाधारबौ—देखो 'बधारणौ, बधारबौ (रू भे.)

उ०—१ सोहियौ 'अभौ' इण विध सकाज, रघुवंस उजागर महाराज। बाधारण हिंदुसथान वांन, 'अभमाल' जोड नह भूप आन। —सू प्र.

उ०—२ आभा रूप जोम ऊफाणिक, वणियौ अनंग दूसरै वांणिक। वीर तदिन कीरति बाधारी, भरत सास वधियौ कुळ भारी। —सू. प्र.

उ०—३ म्हारी सुजस अमर 'करणावत', वासुर जग वहु हुवै वितीत। बाधारियौ पाघडो बिळतै, चैराडियौ नही वडचीत। —द. दा.

उ०—४ सदा सोह चाडै समाना मणै, अनमादै अणौ जगमा दांन। तपै देस पत्ती तणौ मू ला मारणौ वस बाधारणौ वान। —ल. पिं.

बाधारणहार, हारौ (हारी), बाधारणियौ—वि०।

बाधारिओड़ौ, बाधारियोड़ौ, बाधारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बाधारीजणौ, बाधारीजबौ—कर्म वा०।

बाधारियोड़ौ—देखो 'वधारियोडौ' (रू भे)

(स्त्री बाधारियोडी)

बाधारौ—देखो 'बधारौ' (रू. भे.)

उ०—राम राज जोधपुर, सहू हरवद बारौ। मास पंच खट मास, साह आपै बाधारौ। —गु. रू. बं.

बाधावणौ, बाधावबौ—देखो 'बधाणौ, बधावौ' (रू. भे)

उ०—१ गज बध बाधाविजै, मोती उच्छाळेय। लूण उतारै राइ श्री, चढियै अट्टाळेय। —गु. रू. ब.

उ०—२ मथाण्यो भाग धिन क्रपा फुरमावियौ, तोर बाधावियौ सुकव ताई। —खेतसी बारहठ

बाधावणहार, हारौ (हारी), बाधावणियौ—वि०।

बाधाविओड़ौ, बाधावियोड़ौ, बाधाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बाधावीजणौ, बाधावीजबौ—कर्म वा०।

वाधावियोड़ौ—देखो 'बधायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वाधावियोडी)

वाधि—१ देखो 'बद्धि' (रू. भे.)

२ देखो 'व्याधि' (रू. भे.)

३ देखो 'वाधौ' (पु.)

वाधियोड़ौ—१ देखो 'बधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वाधियोडी)

वाधी—१ देखो 'व्याधि' (रू. भे.)

२ देखो 'बद्धी' (रू. भे.)

३ देखो ''वाधौ' (पु०)।

वाधु, वाधू—देखो 'वाधौ' (रू. भे.)

उ०—१ वर्णौ रूप व्रंदावन श्रोप वाधू, सदा सोवत देवत व्रंद साधू। तरा भार श्रट्ठार नू भार तैसौ, श्रनेकां विराजै श्रखां रूप ऐसौ। —रा. रू.

उ०—२ रिघू लाज 'पाता' 'भदा' काजि 'रूपा'। इकां एक वाधू श्रनूपं श्रनूपा। —रा. रू.

वाधंपौ—देखो 'बधापौ' (रू. भे.)

वाधौ—देखो 'बाधौ' (रू. भे.)

उ०—नखत परमाण वाखाण वाधौ नरं। श्रावगौ भूभ री भार भुजि श्रापरं। —हा. झा.

(स्त्री. वाधि, वाधी)

वापक—देखो 'व्यापक' (रू. भे.)

वापणी—वि. स्त्री [स. व्यापन] १ भीतर-बाहर, सर्वत्र व्याप्त होने वाली शक्ति।

उ०—देवी मंत्र मूळं देवी बीजबाळा, देवी वापणी सब्ब लीला विसाळा। —देवि

२ व्यापने वाली।

वापणौ, वापबौ—देखो 'व्यापणौ, व्यापबौ' (रू. भे.)

वापणहार, हारौ (हारी), वापणियौ—वि०।

वापिश्रोड़ौ, वापियोड़ौ, वाप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वापीजणौ, वापीजबौ—भाव वा०।

वापरणौ, वापरबौ—क्रि. स. [स. व्याप्तरणम्] १ उपयोग मे लाना, इस्तेमाल करना, काम में लेना। (उ. र.)

उ०—१ दाता लूण ज वापरै, भोजन श्रनौ खाय। डावे पसवाड़ै सूवै, जिण घर वेद न जाय। —श्रज्ञात

उ०—२ गोड़ीजी इस्ट सोढा रै जिण सूं वीरवाव कोट में मद-मांस वापरै नहीं। —बां. दा. ख्यात

२ लेकर श्राना, लाना।

उ०—श्रमारि करावी, सरवत्र मंगलाचार दीजइ, तूर वाजइ, श्रक्षतपात्र साचरइ, तबोळ वापरइ, श्ररथ व्यय नो सभाल नहीं। —व स

क्रि. श्र.—३ व्याप्त होना, फैलाना।

उ०—१ के रोळौ वापरियौ, दा'वा' रोळौ वापरियौ। देस में श्रंग्रेज श्रायौ रे, के रोळौ वापरियौ। —लो. गी.

उ०—२ गोरसात भोजन, गजात दान, बाधवात वियोग, विपदात मैत्री गजात लक्ष्मी, वापरात दरिद्र नायकात युद्ध। —व स.

४ श्रागमन होना, श्राना।

उ०—१ जग में ऊतरियौ वापरियौ जै'रो। वाल्हा बीछोडण वापरियौ वैरी। —ऊ. का.

उ०—२ प्रति विचक्षण, श्रग्ननायक वापरिउ, करण वारनइ वखइ कुसलीउ वैरजन श्रनाकलनीउ'''। —व. स.

५ उदय होना, पैदा होना।

उ०—भटियाणी री निरोगी देह मे दिना परवांण केई केई मांघ-गिया वापरगी। —फुलवाड़ी

६ खुशी या दुख का संचार होना, श्रनुभूति होना।

उ०—जीव मे सोराई वापरी तो बा वापरी! म्हारी बेटी री नाव परमेस्वर सू कोई कमती माया थोड़ी ई है। —फुलवाड़ी

७ शुरू होना, प्रारम्भ होना।

उ०—निहसति जोध नत्रीठि। रिण रूक वापरि रीठ। बे निहस सेन निसक। किरि रांम रामण लंक। —गु. रू. बं.

वापरणहार, हारौ (हारी), वापरणियौ—वि०।

वापरिश्रोड़ौ, वापरियोड़ौ, वापरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वापरीजणौ, वापरीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

बापरणौ, बापरबौ, बावरणौ, बावरबौ, वावरणौ, वावरबौ—रू.भे.

वापरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ उपयोग मे लाया हुश्रा, इस्तेमाल किया हुश्रा, काम मे लाया हुश्रा. २ लेकर श्राया हुश्रा, लाया हुश्रा. ३ व्याप्त हुवा हुश्रा, फैला हुश्रा. ४ श्रागमन हुवा हुश्रा, श्राया हुश्रा. ५ उदय हुवा हुश्रा, पैदा हुवा हुश्रा. ६ खुशी या दुख का संचार हुवा हुश्रा. ७ शुरू या प्रारम्भ हुवा हुश्रा।

(स्त्री वापरियोडी)

वापस—वि. [फा.] १ लौटा हुश्रा, प्रत्यागत।

२ लौटाया हुश्रा, फेरा हुश्रा, प्रतिदत्त।

३ छिपा हुश्रा।

क्रि. वि.—४ पुनः, दुबारा।

वापसी—स. स्त्री. [फा.] १ लौटने या वापस श्राने की क्रिया या भाव।

२ लौटाने या फेरने की क्रिया या भाव ।

वि.—लौटने वाला ।

वापार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—पड गहरणा लीयँ वीयँ नह पाचा, सत्र खत्त नह दाखँ ग्रह सार । 'सोड' तणा **वापार** सारखौ, वळ मांडीयौ 'ग्रखै' वौपार ।
—दुरसौ ग्राढ़ौ

वापारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०—१ लिखमी रा लाडिला लोक वडा **वापारी** वहवारिया सौदागर वहरामसद साहूकार घणा सुख चैन सू वसै छै ।
—रा. सा. स.

उ०—२ जु ग्रादमी खबर दी–जु **वापारी** लोक छै । पंडै जाय छै ।
—नैणसी

वापि, वापिका—देखो 'वापी' (रू. भे.)

वापियोड़ौ—देखो 'व्यापियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वापियोडी)

वापी–स स्त्री. [स] एक चौडा कुग्रा, कुण्ड या जलाशय, जिसमें पानी तक पहुंचने के लिये सीढ़ियां बनी रहती है । बावली ।

उ०—१ वाटिका **वापी** पुसकरिणी क्रीडातडाग सरोवर ।
—व. स.

उ०—२ पीयार प्रिथी पुड उद्धरै, सर **वापी** उद्धरि वरण । 'गजसाह' 'गागे' हर ऊठियौ, पतिसाहा छळ उधरण ।—गु. रू. ब.

रू भे.—बापि, बापिका, बापी, बिग्रापी, वाइ, वापि, वापिका, वाय वाव, वावि, यावी, वावीय, वाव्य विग्रापी ।

ग्रल्पा.—बावडी, बावडी, वावडी, वावळि, वावळी ।

वाफणी—देखो 'भापणी' (ग्रल्पा. रू. भे)

वाफणौ, वाफबौ—देखो 'बाफणौ, बाफबौ' (रू भे)
वाफणहार, हारौ (हारी), वाफणियौ—वि० ।
वाफिग्रोड़ौ, वाफियोड़ौ, वाफ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वाफीजणौ, वाफीजबौ—कर्म वा० ।

वाफतौ—देखो 'बाफतौ' (रू. भे)

उ० -- तद नबाब हुकम दियौ—जावौ, तोसाखानै से **वाफता** लावौ ।
—पदमसिह जी री वात

वाफियोड़ौ—देखो 'बाफियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री. वाफियोडी)

वामराभूत—देखो 'भाभराभूत' (रू भे.)

उ०—कावडी नै खुणा मे वगाय वा सिंघणी ज्यू रीस मे **वामराभूत** हियोडी बारै निकळगी ।
—फुलवाडी

वाभी—देखो 'भाभी' (रू. भे.)

उ०—पड़ै न पथ मे विघन बिलखती **वाभी** मिळसी । गिणती दुख रा दिवस जीव रै जतनां घुळती ।
—मेघ

वाभीजी, वाभीसा—देखो 'भाभीजी' (रू भे.)

उ०—दोराणी कहै **वाभीजी** ग्राज पुरस ग्रापारा घरै नही नै वैरीया री नगारी सामै काकड वाजतौ सुणीजै छै । —वी. स. टी.

वाभौ, वाभौजी—देखो 'भाभौजी' (रू. भे.)

उ०—१ तद राव सूजै ग्रापरी माजी नूं कयौ, 'मांजी थे **वाभैजी** वीकैजी खनै जावौ, नै था गयां वात सलटसी ।
—द. दा.

उ०—२ तीन चार वळा ग्राडी भचेडियौ, पण ग्रागळ नी खुली नवी मां रै साथै **वाभौजी** वतळ करता व्हैला, ग्रा सोच थोडी ताळ ताई बोला बोला बारै ऊभा रिह्या ।
—फुलवाडी

वाभौसा—देखो 'भाभौसा' (रू. भे.)

उ० —कह्यौ—के **वाभौसा** नै गाय चीथ न्हांकिया, माथै बैठगी । हाडका कुळै ।
—फुलवाडी

वायंगणनैत्र–स पु.—एक वस्त्र विशेष । (व. स.)

वाय–स. स्त्री. [फा. वाय:] १ मनोकामना, मुराद ।
२ प्रतिदिन ली जाने वाली ग्रफीम की खुराक, मात्रा ।
[स वाय·] ३ बुनन, बुनावट ।
४ सिलाई ।
[सं. वायु·] ५ पश्चिमोत्तर कोण, वायव्य कोण ।
[म वचन] ६ वाणी, वचन ।

उ०—१ भगवत बोल्या इमडी **वाय** । देवाणुपिया जिम सुख थाय ।
—जयवाणी

उ०—२ ग्राय माता नै इम कहै, मैं सुण्या वीर ना **वाय** । धन ग्रतारथ तुम पुता ' इम बोली छै माय ।
—जयवाणी

७ देखो 'वापी' (रू भे)

उ०—पाणी रो गात्र रै खेंडै दुख हीज छै, मुहै खारौ कूवौ सहर मे तेजसी री **वाय** ऊपर छै, तिण तीण ६ व्है छै ।
—नैणसी

८ देखो 'वायु' (रू भे) (ग्र. मा)

उ०—१ ऽवा माहि मिळै 'जैमाह' ग्राय । वैसदर जांणिक झोळ **वाय** ।
—सू. प्र.

उ०—२ दिन ऊनाळै वोभर भठौ, घोरा मौज प्रभात री । कासमीर री ठड वखेरै, **वाय** ठगोरी रात री ।
—दसदेव

उ०—३ सुरै **वाय** वडी लघुनीत तगी । सग्या कुगुलिया दोस सुंणी । नख केस समारण रुधिर क्रिया, चादीनी नाखै चांवडिया ।
— ग्र. स्त.

उ०—४ वायव कूणै वण रही, पुरी **वाय** की जाण । ग्रति प्रचड सोभा ग्रधिक, को कर सकै बखाण ।
—गजउद्धार

उ०—५ पञरि पावक परजळइ, जिम जिम नाखइ वाय । मूंघि न जाणउ एतलुं, तिम तिम अधिकु थाय । —मा. कां. प्र.
रू. भे —बाय ।

वायइ–सं. पु. [सं. वातिः] १ सूर्य । २ चंद्रमा । (उ. र.)
३ देखो 'वात' (रू. भे')

वायक–सं. पु. [सं. वायकः] १ जुलाहा ।
२ ढेर, संग्रह ।
३ समुदाय ।
४ संदेश, खबर, समाचार ।
वि. [सं. वाचकः] १ संदेशा लाने वाला, सूचना देने वाला दूत ।
२ कहने वाला, वक्ता, व्याख्याता ।
३ पढने वाला, पाठक ।
४ देखो 'वाक्य' (रू. भे.)
उ०—१ वायक सतगुर वैद रौ, घणौ करै हित घोस । रे ! इण लालच रोग रौ, सद औसद संतोस । —बा दा.
उ०—२ अदु वायक बोध दियै महिला, प्रिति लागन काळ कियै पहिला । —ऊ का.
उ०—३ बह वायक सिंघ जिम बोलता । तायक भुजा ययण तोलता । —सू. प्र.
उ०—४ महाराजा रघुवसमण सुज रांवण समथ रा घनु सर पांणा धारै । वायक सत सीतावरण न्रप नायक रघुनाथ तू सता तारै ।
—र. ज प्र
रू भे.—बाइक, बाएक, बायक, वाइक, वाएक ।

वायकचर—देखो 'वाइकचर' (रू. भे) (ग्र. मा.)

वायकुंडौ, वायकूंडौ–सं पु. [सं वात कुण्ड] १ चन्द्रमा के चारो ओर फीका वर्ण युक्त विशाल वृत्त जो प्रचण्ड वायु का सूचक माना जाता है ।
वि. वि.—इस वृत्त में तारा नही होता है ।
२ सूर्य के चारो ओर कभी कभी होने वाला वृत्ताकार घेरा जो, शकुन शास्त्र के अनुसार, वर्षा का अभाव सूचित करता है ।
उ०—कोपै कौल तुंडा कासबाणी छाय वायकूंडा, गं अठाणी भुमंडा भमाय भूलै गाज । रथा गैण देव रभा अयोक अचूडा रोकै, राजा राडीगारौ ऊडा भोकै बाजराज ।
—हुकमीचंद खिड़ियौ
रू. भे.—वावकूंडियौ, वावकूंडौ ।

वायड़—देखो 'बायड़' (रू भे.)

वायड़ियौ—देखो 'बायड़ियौ' (रू. भे.)

वायड़ौ–सं. पु. [सं वात-कारक, वातल] १ पागल कुत्ता ।
२ उक्त कुत्ते के काटने से उत्पन्न रोग ।
३ दीवाना, पागल ।
४ वात-विकार से पीड़ित ।
५ ज्वर-प्रलाप ।
६ वात-कारक ।
कहा.—किणी रे बेंगण वायड़ा, किणी रे बेंगन पच्च । किणी रे चढै आंफरै, किणी रे चढे मच्च । —अग्यात
रू. भे —बायडौ, बायड़ै, बायडौ, वाइडौ, वाईदड़ौ ।

वायज्वर—देखो 'वातज्वर' (रू. भे.)

वायण, वायणि, वायणी–सं. स्त्री.—१ दुर्गा या देवी का एक नाम ।
उ०—साकणि डाकणि सकति, सकति चवसठी समोसरि । समळ महा सिघ सकति, सकति वायणी सिकोतरि । —सू. प्र.
२ गहलोतो की कुल देवी ।
उ०—गहलोता रै वायण चुंडाय दीप देवी, तिलगापुर पाटण सू उठिया । —बा. दा. ख्यात
३ वाद्य बजाने वाली ।
उ०—पोलि परठिया पोलीया, माहि मांवव बंभ । आगळि नाचइ उरवसी, गायणि वायणि रंभ । —मा. कां. प्र.

वायणी—देखो 'बाजणी' (रू. भे)
उ०—समुद्र खारउ, बाउल कटालउ, सरप कालउ, वाउ वायणउ जन बोलणउ, सुणह भषणउ, ससउ, नासणउ रांणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव लाडणउ'''। —व. स.
(स्त्री. वायणी)

वायणौ, वायबौ—१ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू भे.)
उ०—१ गुण कथीइ गाईइ मुसर, वाईइ चंग अदंग । पात्र पचारा नाचता, अहनिसि इणी परि रंग । —मा. कां. प्र.
उ०—२ सेसनाग राज छत्र धरइ, गंगा यमुना चमर ढोलइ, ब्रह-स्पति घडिआलउ वायइ, सुक्र मंत्रि बइसइ'''। —व. स.
उ०—३ तीन गढ जीत मन मीत चौथै मिल्या, पांच पचीस मिळ एक पाया । दास हरिराम कहै राज अणभै भया, नाद अनहद नीसाण वाया । —अनुभववाणी
२ देखो 'वावणौ, वावबौ' (रू; भे.)
वायणहार, हारौ (हारी), वायणियौ—वि० ।
वायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वाईजणौ, वाईजबौ—कर्म वा० ।

वायदौ—देखो 'वादौ' (रू भे.)
उ०—१ यमन रौ बादसाह मोनूं माल मतौ गाव देणै रौ घणौ वायदौ कियौ छै । —नी प्र.

उ०—२ बायरौ पाळणौ श्रौ छै न्याय गरीब रौ ग्रन्याई कना सूं लेवै। —नी. प्र

बायनंद–स. पु [स. वायु+नंदन] १ पवन पुत्र हनुमान।

उ०—नागैम पनगा सिरै, जनहीयौ बायनद, चवा गोरखैस, जोगारवा सिरै चौत, ऊददा खीरोद सिरै जुधां गुडाकेस ग्रोपै। ग्रोपै त्याग त्याग सिरै ऊदारौ ग्रदीत। —ठाकुर सावतसीग नीबाज रौ गीत

२ पाडुपुत्र भीम।

रू. भे.—बायनद।

बायपुरी–स. स्त्री [स वायु+पुरी] पवन देव की पुरी।

उ०—जोजन ग्रठी हजार मे, बायपुरी विसतार। सो सब ही कंचन मई, सोभत ग्रधिक ग्रपार। —गजउद्धार

बायब—देखो 'वायव्य' (रू. भे) (ग्र. मा.)

उ०—कोस ६ बायब कूरा माहै बडीवास भेळो छै। जाट बिसनोई बागीया बसै। —नैणसी

बायबिडंग, बायबिडग—देखो 'बायबिडग' (रू. भे.)

बायर—१ देखो 'बैर' (रू. भे)

उ०—तरै भीवौ बोल्यौ, म्हारा देस एक कुरीत छै। कोई ठावौ गामेती वासडियौ तथा घररौ धणी रजपूत मरै, मोटियार कै काम ग्रावै, तो उण री बायर गाघराणी करै। —जखडा मुखडा भाटी री बात

२ देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—सूरा नूर दरस्सिया, तोलै सेल करग्ग। बायर ज्यौं लग्गा विमुह, कायर ग्राहू मग्ग। —रा. रू.

बां'यर—देखो 'बाहर' (रू. भे.)

उ०—ग्रठ मोहतौ रायमल जाय वीरमदे रै ढोलियै प्रदक्षणा देय नै बा'यर ग्रायौ। —द. दा.

बायरियौ–स. पु.—१ वायु सम्बन्धी एक लोक गीत।

२ लडकी को विदा करते समय गाया जाने वाला एक लोक गीत।

३ देखो 'बायरौ' (ग्रल्पा, रू. भे.)

बायरी–सं. स्त्री.—देखो 'बायरौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बायरौ—देखो 'बायरौ' (रू. भे.)

उ०—१ रात रा ई बायरौ बाजतौ तो करसा चूकता कोयनी, कारण के सियाळा रौ दिन तौ पीलू जितोक व्है। —रातवासौ

उ०—२ ताहरां राजा ताळौ उखेलियौ। देखै तौ माहै मोर छै। मोर कह्यौ धन्य राजा तूं मोनु ससार रौ बायरौ लगायौ। —चौबोली

बाय'रौ—देखो 'बा'यरौ' (रू. भे.)

बायल–सं. स्त्री.—१ स्त्रियों के पावों मे पहनने की चूड़ी जिसके नीचे गुरिया या मनका लगे हुए होते हैं।

२ बढ़िया किस्म का एक बारीक वस्त्र।

ग्रल्पा.—बायली।

३ हल द्वारा बोया हुग्रा ज्वार ग्रादि का खेत।

रू भे —वायल, बोयल।

बायव—देखो 'वायव्य' (रू. भे)

उ०—बायव कूंणं वरण रही, पुरी वाय की जांण। ग्रति प्रचड सोभा ग्रधिक, को कर सकै बखाण। —गजउद्धार

बायविडंग, बायविडंग—देखो 'बायबिडंग' (रू. भे.)

बायवी–स. स्त्री.—१ एक महाविद्या।

उ०—ग्राकास गामिनी सौदामिनी कामगामिनी कामसामिनी भुवनक्षोभिनी कामरूपिणी मन: स्तभिनी जलस्तभिनी ग्राग्नेयी बायवी बरसणी कौमारी···। —व. स.

२ वायव्य कोण सम्बन्धी।

३ देखो 'वायव्य' (रू. भे.)

बायव्य–स. पु. [स] १ उत्तर-पश्चिम के मध्य की दिशा या कोण।

वि.—वायु सम्बन्धी।

रू. भे —वायब, वायव, वायवी।

वायस–स. पु. [स. वायस:] १ कौग्रा, काक।

उ०—१ वील्हा वायस विभ्रला, ग्रागलि ऊडी जाय। वाटइ दीसइ वागली, ते ऊधी टगाय। —मा. का. प्र.

उ०—२ बायस बीजउ नाम ते, ग्रागळि लल्लउ ठवइ। जइ तूं हुई सुजाण, तउ तू वहिलउ मोकळै। —ढो. मा.

२ ग्रगरू का वृक्ष।

३ तारपीन।

४ कौर, निवाला।

५ सूर्य या चन्द्र ग्रहण।

६ पकड या गिरफ्त।

रू. भे.—बइस, बाइस, बायस, वाइस।

ग्रल्पा.—वायसडौ।

बायसड़ौ—देखो 'वायस' (ग्रल्पा, रू. भे.)

उ०—उड बायसड़ा म्हारा पी'यर जा नूंत पि'यर रा भातवी जे। —लो. गी.

वायससाश्रव-सं. पु. [सं. वायसः+शाश्रवः] जल कौआ, जल काक।

वायसूळ-सं. पु. [सं. वायु+शूल] १ घोड़ों का एक रोग जिसमे उनका मलमूत्र रुक जाता है। (शा. हो.)

२ वायु के विकार से शरीर में उत्पन्न पीड़ा

वाया—१ देखो 'वाचा' (श्र. मा., ह. नां. मा.)

उ०-१ साचा सबद एक है सोई, दूजा काम सरै नही कोई। सो मैं सबद गरू तें पाया, फुरै मंत्र इसरौ वाया। —अनुभववांणी

उ०—२ मुनिवर मिलि जिणंद मैं आया, हाथ जोडी नै बोलै वाया। प्रभु ! तमारी आग्या थाय, तौ म्हां द्वारिका मे गोचरी जाय। —जयवाणी

२ देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—सेलि बलइ जल ऊछलइ, सायर छुडइ सीम। वाया विण वाजइ सबद, महाभयंकर भीम। —मा. का. प्र.

वायार—स. पु [स. वातार] वरुण। (श्र. मा.)

वायु—सं. पु [स.] १ वायु के अधिष्ठाता, पवन देव।

२ पवन, हवा, वात। (डिं. ना. मा.)

उ०—धरणी वीर तेज वायु नभ, सबै सना प्रकासी। निराकार आकार मे पूरण, नहिं आवै नही जासी। --स्रीसुखराम जी महाराज

३ त्रिदोषो मे से एक।

उ०—१२ ज्वर, १३ संनिपात, १८ प्रमेह, ५००० आमवात, ८४ वायु, ३६ महावायु दोस, ४५ खाधाविकार, १०८ कोढि।

रू भे.—बाव, बाथ, वायु, बायू, वा, वाड, वाई, वाउ, वाय, वाया, वायू, वावु। —व. स.

वायुकाय—देखो 'वाउकाय' (रू भे)

वायुकुमार-सं. पु. [स.]—१ भुवनपति जाति के देव (जैन)

२ हनुमान।

३ भीम।

वायुघ्न—स पु [स] गुग्गल, गुगुल।

वायुदेवता—सं. पु. [सं. वायु देव] पवन देव।

उ०—नवग्रह खाट तणाई पाइ बाधा, वायुदेवता आगणइ बुहारइ। —व स

रू भे.—वाउदेवता।

वायुमडळ-सं. पु [सं. वायुमडल] पृथ्वी के चारो ओर का वाष्पीय वायुमडल आवरण या घेरा, वातावरण, आब हवा, क्लाईमेट।

रू भे —वाउमडळ।

वायुवाह—सं पु [स.] धूआ।

रू. भे.—बायुबाह, बायुवाह।

वायुविरोधी-सं. पु.—गरुड़। (ना.-डि. को.)

वायुसखा—सं. पु. [स वायु-सखः] अग्नि, आग।

रू. भे.—बायुसखा, बायूसखा।

वायुसुत-सं. पु. [सं.] १ हनुमान।

२ भीम।

रू. भे.—बायसुत, बायुसुत।

वायुहन-स पु [स. वायुघ्न] मकण ऋषि के पुत्र, एक ऋषि।

वायू—देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—१ इसडो छै आछो आयू, ज्यू ओस खिरै वागै वायू —जयवांणी

उ०—२ तठा उपराति करिनै राजान सिलांमति ग्रीखम रित माहै पवन पावक समान वाजियो छै। प्रथी अप नै वायू अकास ब्यारि तत पाचमै अगनी। —रा. सा. स.

वायेरो—१ देखो 'बायरो' (रू भे.) (ना. डि. को)

उ०—१ बीभणा सूं वायेरो लीजै छै सू किण भांतरा बीभणा छै ? लाहोर रा कियोड़ा छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ कहयो-भलो हो राजा मानधाता थारै बिना ससार रो वायेरो कुण दिखावै। —चौबोली

(स्त्री. वायेली)

वायेलो—देखो 'भायेलो' (रू. भे)

उ०—नैणा रो सिणगार कागळ कूपळी मे रंगो रे, बाळापण रो वायेलो, पीवर मे रेगो रे परो बुलावो। —लो. गी.

वायोड़ो—१ देखो 'बाजियोडो' (रू भे.)

२ देखो 'बावियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वायोडी)

वायो-वि. [स वातल] १ उन्मत्त, मस्त।

उ०—इण पर तहवरखान अछायो। विचित्र हुवो लड़तां रस वायो। —रा. रू.

२ बावरा, पागल।

वारग-स स्त्री [स वारग.] १ तलवार की मूठ,

२ छुरी का दस्ता।

सं. पु. —३ एक वृक्ष विशेष, जो तणछ से मिलता-जुलता होता है जिसके पत्ते न तो अधिक गोल होते हैं न लम्बे। मध्यम दर्जे का वृक्ष।

४ देखो 'वारगना' (रू भे.)

उ०—१ झझक्कत वारग फेर भुकत, हुवै इम चूक मुनेस हसत। —सू. प्र.

उ०—२ वर अनेक बारंग पांव बंदै सुरपत्ती। पावरा करि पारग त्रिपुर नारग सकत्ती। —सू. प्र.

उ०—३ बजि अदग चग रग उपग बारग। अनंग छबि चग उमग अग अग। —सू. प्र.

उ०—४ जद बारग कहे 'जोगावत' चढा विहंड सुरलोक गयौ। मह 'जोधां' 'सलखां' सुमाला, कमधा कुळ ऊजळौ कियौ।

—हरिनाथ जोधा री गीत

बारंगना, बारंगा—सं. स्त्री. [सं. वारगना] १ स्त्री, नारी, औरत। (अ मा)

२ अप्सरा, परी।

उ०—१ वारगना रही धारै व्रत, व्रत स्यांमावत्त तणै उमाह। पिंडि सुरसाणै बीद परखियौ, बळि कुंडांणै हुवौ बिमाह।

—अर्दमाण राठौड री गीत

उ०—२ उधम होय इन्द्रज घर असुरां। घम घम तखत जडाली धार। घम घम विलम अरि तणा घाटा वारंगना झमझम जुध बार। —लूणकरण

उ०—हिंदवा राव हुथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरदा, गई लग विवाण वेस इद्र आगळी, मुही वारंगना विना वीदा।

—महाराज जसवंतसिंह री गीत

३ देव कन्या।

४ गणिका, नर्त्तकी।

५ वेश्या, रण्डी।

रू. भे.—बरगा, बरांगना, बारग बारंगना, बारगा, बारांगना, बरगन, बारग, वारागना।

बारट—स. पु [अ.] १ आज्ञा-पत्र, अधिकार-पत्र।

२ अदालत द्वारा पुलिस या किसी राज्य कर्मचारी को दिया जाने वाला वह अधिकार-पत्र जिससे किसी को गिरफ्तार किया जा सके या किसी की तलासी ली जासके।

३ साधारण माने में किसी को गिरफ्तार करने के लिये निकाली जाने वाली अदालती सूचना।

बारटरिहाई—स पु. [अ. बारट+फा. रिहाई] गिरफ्तार व्यक्ति या बंदी को मुक्त करने के लिये दिया जाने वाला अदालती-आज्ञा-पत्र।

बारंबार—देखो 'बारबार' (रू. भे.)

उ०—लज्जा छोडी बारंबार, ऊंचइ स्वर ते करइ पुकार। मन मे धारै अधिको सोग, हीयडो फाटई नाह वियोग। —वि. कु

बार—सं. पु [स.] १ दिन, दिवस।

उ०—१ जकै वार री ओपि सोभा जगाणी, ग्रहम सारदा होत जायै वखाणी। —सू. प्र.

२ सप्ताह के सात दिनो में से कोई एक और सब।

उ०—१ धन दीहडो, धन घड़ी, धन बार, धन मोहरत धन वेळा जको राज पधारिया।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—२ सतरै समत पोस पैंत्रीसै, दसमी बार ब्रहस्पत दीसै। सुरधर छत्र 'जसो' महाराजा, सुरपुर गयौ लियां ब्रद साजा।

—रा. रू.

३ समय, वक्त।

उ०—१ वदै मुनेस जेण वार, देखि भूप वीनती। मख सहाय काज मेलि, पुत्र लै रघुपती।

—सू प्र.

उ०—२ प्राय छोरू न लहै सार, मावीत्रा नी किण ही बार। पिण मावीत्र तपै दिन राति, पाणी वल विरहो न खमात।

—वि. कु.

उ०—३ पिंगळ राजा नूं मिल्यन, सउदागर तिणि बार। राज दुवारइ तेडियउ, आदर करै अपार। —ढो. मा.

४ देर, विलम्ब।

उ०—१ जगवासी न साभलौ, ए संसार असार। तिहां तन धन यौवन निफल, जाता न लहै बार। —वि. कु.

उ०—२ तरै कलियाणसिंघ जाणियौ अम्तरी तौ बाहुड़ै नही, अर बार घणी लागी। तरा नैणा मे गद-गद कठ बेहा रौ हुऔ। आप असवार होअ हालिआ। अस्त्री घरै आवी।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

उ०—३ इतरा माहै वात करता वार लागै। वैकुंठ री रौस गैब री इच्छा सरूप गढ कोट बाजार सतखणा सोवन मैं आवास गोख जोख चित्रांम चित्रसाळा रचाई। —र० वचनिका

५ काल, युग।

उ०—१ द्रोणपुर, भारद्वाज रौ बेटौ द्रोणाचारज नूं थौ, पाडवा कैरवा री बार माहे। पछै पमार डाहळिया नूं हुंतो द्रोणपुर।

—नैणसी

उ०—२ सीयळ पवार लुद्रवा री रैत ज्यौ भोग दे। मुहार रावळ भीम री बार माहै खेतसी मालदेओत नू थो। पछै रावळ मनोहरदास मान खीमावतनूं पटै दियौ थौ। —नैणसी

रू. भे.—बाहार।

६ किसी शासन करने वाली जाति के नाम के अगाडी लग कर उसके अधीनस्थ भू-भाग का बोध कराने वाला शब्द। ज्यूं-जोध्या री वार, भाटिया री वार।

७ ऋतु, मौसम।

८ आघात, प्रहार, चोट।

उ०—१ पांच कलै परवार सूं, रावळ आलोचेह। आपें मर मड आपस्यां, बिजड़ां बार करेह। —नैणसी

उ०—२ लोहरी लहरि नभ गहर परसै लंगस, बार चकधार तिण बार दीधा। बिळंबै बार समराथ जळ दळ बिगरि, कूंभसुत जेमि सुत 'नाथ' कीधा। —राव सत्रसाल रौ गीत

उ०—३ बीतां अधूरां बारां पूरा वेघ सूरां वच्चए। सेले प्रहार धार सार मार मार मच्चए। —रा. रू.

९ युद्ध।

१० तीर, बांण।

११ समुद्र, सागर।

१२ नदी।

१३ दशा, हालत, परिस्थिति।

उ०—जळ सह ऊतर जाय, नग सिर पर पावै नहीं। बिगड़ी जारी बार, वळै न पाछी 'वसतिया'। —समळोजी बारहठ

१४ किनारा, तट, कूल।

उ०—१ जोय प्रबळ अणपार जळ, बार रह्या भड आन। निडर उलघण वारनिध, हुवौ त्यार हनुमांन। —र. रू.

उ०—२ अठी रमजानबेग पंजाब रौ विजय करि महमद नूं निरबळ निहारि पाछौ जाइ आग्घावरत नूं आंगमण रै काज तैंमूर नूं अटक नदी रै बार आणियौ। —व. भा.

१५ इस किनारे।

१६ उस किनारे।

उ०—आगै आवता एक खाळ बारह हाथ को चौडो, घणौं ऊडो, आडै आयौ जठै कुमार दूदौ तौ सहज मैं सावळिया नै भपाइ खाळ रै बार आइ भालो ऊभाइ साम्हौ खड़ो रहियौ। —व. भा.

१७ अवरोध, रुकावट।

१८ शिव, महादेव।

१९ क्षण, पल।

२० कुज नामक वृक्ष।

२१ एक गज की लम्बाई का नाप।

२२ सात की संख्या। * (डि को)

[स. वार्] २३ जल, पानी। (ह. ना मा)

उ०—नैणा पल पल निरखती, बार पीवती बार। विसरै उबा क्यू विरहणी, अटक रही उणिहार। —अज्ञात

२४ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमे पन्द्रह मात्रा पर यति से कुल तीस मात्राएं हो एव अन्त में मगण या रगण हो। (र. ज. प्र.) मतान्तर से अन्त मे रगण हो (र. रू)

२५ काम, कार्य।

उ०—सूवा एक संदेसडउ,बार सरेसी तुज्झ। प्रीतम बांसइ जाइ नइ, मुई सुणावे मुज्झ। —ढो. मा.

२६ दफा, मरतबा।

उ०—१ सुंदरी तइ सच्चउ कहिउ, तैं मुझ प्रांण प्रीयार। तेणी-करी जीवूं अम्हे, जनमिउ बीजी बार। —मा. कां. प्र.

उ०—२ बार सत्त पचास, गुर्ड गैमर गळ गर्जै। लख्ख एक तोखार, ठिल्ल अरीयण घड भजै। —नैणसी

क्रि. वि.—२ इस ओर, इस तरफ।

उ०—आयौ बूंदी आपरौ, अमल दरारै बार। बधियौ रहसी जतन बिण, प्रतपण म्हारौ पार। —वं. भा.

प्रत्य. [फा.] ३ क्रमश, क्रमानुसार।

४ देखो 'बार' (रू. भे.) (१)

उ०—इसै हीज तत में कुंवरसी चढियौ, सो जाय साढा रा बरग सरब घेरिया। रैबारी बीस हाथ आया, सो मारिया। बाकी केई था, सो बांठा मे गया। सो नाठा, जाय बार घाती। —कुंवरसी सांखला री वारता

५ देखो 'बारी' (रू. भे.)

उ०—१ और निधडक अभिमांन देख रात मे सोवै जद नींद वस असावधांन होवै तद सत्रुआ रौ बार लागै। —बी. स. टी.

उ०—२ तजियै मान गुमांन, रहाय गुरु गम चली। सिंवरौ सिरजनहार, बार आई भली। —स्री सुखरांमजी महाराज।

उ०—३ बाळ मुकुंद बिरदाधिपति, क्यूं नइ सुणौ पुकार। काहे ऐती ढील की, मोहन मेरी बार। —गज उद्धार

बा'र—देखो 'बाहर' (रू भे)

उ०—१ चौधरी चुपचाप आय'र बैठग्यौ अर थाळी में सोगरौ ने लूण-मिरच देखनै झट-पट खावण लाग्यौ-जाणै लारै बा'र आवती व्है। —रातवासौ

उ०—२ चोर लारै बा'र वणाई, आव लारै उपाय वताई। —दसदोख

उ०—३ आया बा'र निवान री, बीस हजार मुगल्ल। —रा. रू.

बारक-सं. पु [सं.] १ निषेध करने वाला घोडा।

२ घोडे की चाल।

३ वह स्थान जहा पीडा होती हो।

४ बाल छड ह्रीबेर।

[स. वारकिन्] ५ विरोधी, शत्रु।

६ समुद्र।

७ शुभ लक्षणो वाला घोडा।

८ पत्ते खाकर रहने वाला तपस्वी।

वि.—अड़चन डालने वाला, रोकने वाला, अवरोध करने वाला।

बारकन्या-सं. स्त्री. [स] वेश्या, रण्डी।

बारख—देखो 'वारिख' (रू. भे)

बारगह, बारगाह-स पु.—देखो 'बारिगह' (रू. भे.)

उ०—इभ कुंभ अधारी कुच सूं कंचुकी, कवच ममु काम क कळह। मनु हरि आगमि मंडै मडप, बधरण दीध कि बारगाह। —वेलि

बारगिरी, बारगीर-वि.-- देखो 'बारगीर' (रू भे)

उ०—अडा भीड आवधां, बाळ आवै पिडिहारा, किया त्यार साकुरां, घात पाखरां अपारा। अत ताता ऊधरा, जात जात रा मिझजां, बारगीर बाटजे, साख साख रा सकाजां। —बसती खिडियो

बारड़-स पु —देखो 'बारड' (रू. भे.)

बारडी—१ देखो 'वार' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—घानतर मयंक हणू सुक घावो, नरपाळग रुद्र रिख निवड। एक बारडी 'करन' उठावो, अन खट तणो प्रीयागवड।
—ईसरदास बारहठ

२ देखो बारी (रू. भे.)

उ०—निकमाळ निकमा फिरै ना, लगै कूवटा कारडी। मीणेदार मजूरी करै, विध विध अपणी बारडी। —दसदेव

बारचर-सं. पु [स. वारिचर] १ जल में रहने वाला जतु, जल जतु।

२ मत्स्य, मछली (अ मा., ह. ना. मा.)

बारज—देखो 'वारिज' (रू. भे) (अ मा., ह. ना. मा)

उ०—वप घणस्याम नैत्र दुति बारज। क्रत अवतार सुरांचै कारज। —सू. प्र

उ०—२ बारज द्रग वारद वरण, गहर धरण गुणगाथ। करुणानिध अकरण करण, नमो नमो रघुनाथ। —र. रू.

उ०—३ सस्त्र विद्या के आचारज। जळ रूप क्षत्रिया के बारज।
—रा रू.

बारड-स. पु. [अं. वार्ड] १ रक्षा, हिफाजत।

२ अस्पताल या जेल का कोई कक्ष या विभाग।

३ किसी नगर या मोहल्ले का किसी विशिष्ट कार्य के लिये नियत किया हुआ समूह।

बारण-स. स्त्री. [सं.] १ निषेद, मनाही।

२ रोक, रुकावट, अवरोध।

३ बाधा।

४ सुरक्षा, सहायता।

५ न्योछावर होने या बलैया लेने की क्रिया या भाव।

६ हरताल।

७ सफेद गोरैया।

स पु [स] ८ हाथी, गज। (ह. नां. मा.)

उ०—१ मुख मद हास आणदमय, आराधित अहि नर अमर। दढ व्रत तुझ मारण दयत, बारण तारण लच्छिवर। —सू. प्र.

उ०—२ कहै तिया सुण कंत, किसी बात तोसूं कहूं। मौलाए गज दंत, बारण पाछो वळ गयो। —गज उद्धार

९ हाथी का अकुश।

१० सयम।

११ कवच, बख्तर।

१२ आर्यागीति या स्कंधाणा का एक भेद विशेष।

१३ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे २४ मात्राए होती हैं।

१४ छप्पय का ३० वा भेद जिसमें ४१ गुरू तथा ७० लघु कुल १११ वर्ण व १५२ मात्राए होती हैं।

वि. वि—मतान्तर से इसमे ४१ गुरू, ६६ लघु के अनुसार १०७ वर्ण व १४८ मात्राऐ भी मानी जाती है।

वि.—१ मिटाने वाला, निवारण करने वाला।

उ०—धिन हो दुख बारण, काज सुधारण। भगत उधारण भगवन तूं। —भगतमाळ

२ सामना करने वाला, मुकाबला करने वाला।

३ मना करने वाला, रोकने वाला।

४ जबरदस्त।

क्रि. वि.—५ रोकने हेतु।

६ रक्षा करने हेतु।

रू. भे.—बारण, वारणु, वारिणि।

बारणपति-स. पु [स. वारणः+पतिः] १ महावत।

२ हाथी।

रू. भे.—बारणपति, बारणपती।

बारणबासोत-स पु–भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

बारणा-स. पु, ब. व.—१ बलिहारी जाने की क्रिया या भाव।

२ बलैया, न्योछावर।

उ० १ आखिया लाज लोधा अडर, सारा काज सुधारणा। मादक अलीण मेलै न मुख, वारा लेऊ बारणा। —ऊ का.

उ०—२ राजा अजीत दसरत्थ ज्यौं, सुत सजीत परखै सही। बारणा लिए 'अभसाह' रा, जणणी कोसल्या जिही। —रा. रू.

उ०—३ अब वे हीज सिरदार भांमणा बारणा लेवै है पण जेथ जठै वाही भडा घोडा मे जै—फतै तो म्हारा कत धणी ने मिळी है।
—वी. स. टी.

रू. भे.—बारणा।

बारणावत-सं. पु. [सं.] गंगा किनारे का एक प्राचीन नगर या जनपद। —(महाभारत)

बारणी-सं. पु. [सं वारण] १ विवाह के समय दुल्हा-दुल्हिन तथा इनके सम्मुख नाचने वाली के ऊपर रुपये, पैसे आदि न्यौछावर करने की क्रिया। (एक प्रथा)

वि. वि.-इस प्रकार की न्यौछावर के पैसे ढोल-बाजा वाले या नाई को दिया जाता है।

२ देखो 'बारणी' (रू. भे.)

उ०—चौरंग पांत फौज चोवड़ती, फूल धार बारणी करै। कुते हुलै मिळै करणावत, काळै भांत मनवार करै। — बळराम राठौड़ री गीत

बारणीय-वि.—१ न्यौछावर योग्य, उत्सर्ग योग्य।

२ निषेध योग्य।

बारणू, बारणो-सं. पु.—१ वारणा या वारीजाने की क्रिया या भाव।

२ वारा जाने वाला या न्यौछावर किया जाने वाला पदार्थ।

रू. भे.—प्रवारणौ

३ देखो 'बारणौ' (रू. भे.)

४ देखो 'वारण' (रू. भे)

उ०-१ वोम लागा वहै लोडता बारणू। हल्लवै द्रोण ऊपाड जाणं हणू। —गु. रू. ब.

उ०—२ ताहरा वेणीदास, चदण चोपदार, हरदान, रामदान भोळखवा नै साथै ले बजार गयौ। जाय हाट रे वारणं आया थका खड़ा रहि देखा किया। —पलक दरियाव री बात

बारणौ, बारबौ-क्रि.स. [सं. वारण] १ बलिहारी जाना, बलैया लेना, वारी जाना (उ र)

उ०—१ नर नारि द्वार नरपत्त रै, ईख करै तन बारणं। उमराव परस्सण उल्लसै, कोडा दरसण कारणं। —रा. रू

उ०—२ हाथी रै होदै मारियो पती ने देख बीर स्त्री कहै-वारी वालम बारणं जाऊ। —वी. स. टी.

उ०—३ देखै मुख वसुदेव देवकी वार-वार वारं पं वारि। —वेलि

२ न्यौछावर करना, उत्सर्ग करना।

उ०—१ त्याग पर बाऊ आपरी दातारगी रो एक दूहै पर नव लाख रिपिया वगसिया। —द. दा.

उ०—२ वारो नागुं व्है खारी भर वारै, अपणी प्यारी पर प्राणा तक वारै। —ऊ. का.

उ०—इसडी प्रासडियाह किया ग्रग बारणं। सर मनमथ गा हारि क ग्रंजण सारणं। —बा. दा.

३ देवी-प्रकोप, जादू-टोना या कष्ट निवारणार्थ कोई वस्तु या प्राणी को शरीर पर फेर कर वारना। (उ. र)

उ०—सामुवा रूप और तरह देख धणी राजी हुई राई लूण ब बारिया। पुयकारा नाखिया। —कु वरसी सांखला री वारता

उ०—२ कवरजी रो ढोल रूडो नहीं, तरै भाटी गोयददास मोहणदास नूं कंवरजी ऊपर वारियो। कंवरजी रै ढोल समाध हुई, मोहणदास राम कह्यो। —नैणसी

४ दूल्हे-दुल्हिन या उनके सामने नाचने वाली के ऊपर से रुपये पैसे आदि वार कर ढोली, नाई आदि को देना।

५ सामना करना, बाधा डालना, रोकना। (उ. र.)

उ०—ऊनटियो सिर आगरै, अबदुल्ला 'अजमाल'। आगे पोहतै आगलो, वारण खान दुकाल। —रा. रू.

६ रक्षा करना, सहायता करना, उबारना।

उ०—साहिब रै सहि थारो सारो, वडा धिणी जंम त्रासै वारो। खोटी बात ससारोह खारो, आतिमा मुंना पारि उतारो। —पी. ग्र.

७ इनकार करना, मना करना। (उ. र.)

८ निवारण करना, छोड़ना। (उ. र.)

उ०—घणा नींदाळवां नींद वारो धणी। तुंग नहं छै भली हींस घोडा तणी। —हा. झा.

९ दूर करना, हटाना, मिटाना।

उ०-तारै दासा त्रिकमाह, भय वारै जम भूप। हूं बलिहारी स्रीहरी, रे! थांनै निज रूप। —र. ज. प्र.

बारणहार, हारौ (हारी), बारणियौ—वि०।

बारिग्रोडो, बारियोड़ो, बारयोड़ो—भू० का० कृ०।

बारीजणौ, बरीजबौ—कर्म वा०

अंबारणौ, अंबारबौ, बारणौ, बारबौ—रू० भे०

बारता-स. स्त्री. [सं. वार्त्ता] १ जनश्रुति, अफवाह, किंवदंति।

२ वार्तालाप, कथोपकथन, सवाद।

३ कुशल-समाचार, हाल, खबर।

उ०—१ रवी सुन्मान दीधो। तरै आप रूजक पगे मेलियो। टहेल कीधी। रवी बारता पूछी-तरै आप सारा ही क्रम कथा कही। —कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—२ जामण की ये जाई! मा बाबल बूजे ये थारी बारता —लो. गी.

४ बात।

उ०—हा ये गोरी! अब करस्या मनुवार। घर आय पूछा मनड़े री बारता जी। —लो. गी.

५ किसी विषय पर होने वाली चर्चा, बातचीत ।

उ०—ब्रह्म बारता निसिदिन करतै, गुरू भाव की ह्यान। वा जन की सग कबू न करियै, पोते जो होय भगवान ।
—श्री सुखरामजी महाराज

६ मामला, विषय ।

७ घटना, वृत्तात ।

उ०—सती कहै ते बारता, पाडोसण नै तेड । घ्यार नगर ना यभ ते, मु के नही मुझ केड । —घ. व. ग्रं.

८ कहानी, ग्राख्यान ।

६ राजस्थानी का गद्य ।

१० क्रिया-कलाप ।

उ०—तरै चोदस रै दिन इतरी बारता उमादे करसी, थानु संपडावसी, बागा पहरावसी । —पचदडी री बारता

११ ऐतिहासिक ग्राख्यान ।

रू. भे.—बारता, वारथा ।

बारतालाप-सं.पु. [स वार्तालाप] परस्पर की जाने वाली बातचीत, कथोपकथन, सवाद ।

बारतिक, बारतिक्क-स. पु. [स. वार्तिकम्] १ किसी ग्रन्थ के उक्त, ग्रनुक्त ग्रौर दुरुक्त ग्रर्थो को स्पष्ट करने वाला वाक्य या शब्द, व्याख्या ।

वि. वि —भाष्य मे केवल मूल ग्रथ का ग्राशय ही स्पष्ट किया जाता है परन्तु वार्तिक मे वार्तिककार नई बात कहने के लिये भी स्वतन्त्र होता है ।

२ छद शास्त्र के नियमो से रहित एक प्रकार का तुकात गद्य पद्य मय छद ।

३ कात्यायन का एक प्रसिद्ध ग्रथ जिसमे पाणिनि के सूत्रो की विश्लेषणात्मक व्याख्याए लिखी हुई हैं ।

[स. वार्तिक:]—४ वृत्तात, हाल ।

५ जासूस ।

६ दूत, चर ।

७ किसान ।

वि. [सं. वार्तिक] १ वार्त्ता या सवाद सम्बन्धी ।

२ व्याख्याकारी ।

३ खबर लाने वाला ।

बारतिय-स स्त्री. [स. वारस्त्री] वेश्या रण्डी ।

बारथा—देखो 'वारता' (रू भे.)

उ०—म्हारो पती हाथळ रै जोर हाथी मारै है सो ग्रो नाहर इणा ने कहणा चाहीजै इती भा बारथा । —बी. स टी.

बारद—देखो 'वारिद' (रू. भे.)

उ०—१ सुदर तन स्याम स्याम बारद सम । कौटक भा रद काम सकाम । —र. ज. प्र

उ०—२ बारद विद्युत वरण, पीत ग्ररु धरण नीलपट । तरह मदन रत तणी, देख दिल दरप जाय दट । —र. रू.

बारदद्रु-स. पु. [स. वारिद-द्रु] इन्द्र । (ग्र. मा)

बारदा—देखो 'वरदा' (रू भे)

बारदात-स. स्त्री. [फा वारिदात] १ कोई सोचनीय काण्ड, दुर्घटना

उ०—ठौड ठौड खून ग्रर कतल री बारदातां होवती ग्रर रातदिन करफ्यू लाग्योडो रैवतो । —रातवासो

२ दगा फसाद, मारकाट ।

३ चोरी, डकैती ।

४ वृत्तात, हाल, हकीकत ।

उ०—साम्है देख पूछी—क्यो, केसरिया कुवर किस तरह ? तद केसरसिंहजी सारी बारदात जाहिर की । —पदमसिंह री बात

बारद्ध-स. पु.—१ देखो 'वारिद' (रू. भे.)

२ देखो 'वारिधि' (रू. भे)

बारद्धक-स. पु. [सं. वार्द्धक्य] १ वृद्धावस्था, बुढापा ।

उ०—किताक काळ पछै ग्रठी बबावदा रै नरेस हालू १८२१ ग्रनेक उपाय करि थाको तो भी रग मरण न पायो जाणि प्रतिदिन बारद्धक नृ वरद्धमान देखि··· —व भा.

२ वृद्धि, बढोतरी ।

३ बुढापे की शिथिलता ।

रू. भे.—बारद्धक ।

बारध, बारधी, बारधीस, बारधेस—देखो 'वारिधि' (रू. भे.)

उ०—बारधेस जोम गाज माळीया त्रकूट बासी, राजचीळ जाळीया तारखी तेज रूस । —हुकमीचंद खिड़ियौ

बारनारी-स. स्त्री [स.] रडी, वेश्या ।

बारनिध, बारनिधि—देखो 'वारिनिधि' (रू. भे) (ग्र मा., ह. ना. मा.)

उ०—जोय प्रवळ ग्रणपार जळ, वार रहया भड ग्रान । निडर उलघण बारनिध, हुवो त्यार हनुमान । —र रू.

बारनिस-स पु [ग्रं. वार्निस] लकडियों या लकडी के बने फर्नीचर पर चमक लाने के लिए लगाया जाने वाला एक तरल पदार्थ ।

रू. भे.—बार्रनस,

बारनिसांणी—देखो 'वार' (२४)

बारपार-व. पु. [स ग्रवर-पार] १ एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक की पूरी चौड़ाई, मोटाई ।

२ पूरा या समूचा विस्तार।

३ सीमा, मर्यादा।

उ०—रूप न रेख अलेख है, कुछ वार न पारा।
—केसोदास गाडण

वि.—१ पारंगत,दक्ष।

उ०—हाथ री उछांग नैं पगां री फुरती अर गाढ़ पर अमट। तिकी सरदार री वातानों वार। सो म्होकमसिंघ तो व्याराही में वारपार। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

अव्य—२ इस किनारे से उस किनारे तक।

रू. भे.—वारापार,

बारबधू—देखो 'बारवधू' (रू. भे.)

उ०—आगैं वरवा अच्छरा, उर धरता अनुराग। हवरणी का अलियळ हुआ, बारबधू वप लाग। —बां. दा.

बारबुद-वि. [स. बारिबुद] तुच्छ, सूक्ष्म। (अ. मा.)

बारमुखी-स. स्त्री. [स] रण्डी, वेश्या।

रू. भे—बारमुखी।

बारमौं—देखो 'बारवो' (रू. भे.)

उ०—वरस बारमइ वइठउ राजि। अरि भाजइ सभळि आवाजि।
—ढो. मा.

बारवधु, बारवधू-स. स्त्री [स. बारवधू] १ वेश्या, रण्डी। (अ. मा)

२ नर्तकी, गणिका।

उ०—वरवाजू के ततकार खटराग के घीर, बारवधु के नृतकार त्रिछायतू के वणाय अत अतरू के इवर......। —र. रू.

रू. भे—बारबधू, बारबधूटी, बारबधू।

बारवार—देखो 'बारबार' (रू. भे)

उ०—हुअ रद रदन दसन मुख दीपन, ढळियौ कंस पकडि गज-दत। बारवार करतार बखाणै, सुर मिणगार सुधारण सत।
—ह ना मा.

बारवाह—देखो 'बारिवाह' (रू. भे)

बारविलासणी, बारविलासनी, बारविलासिनी-स. स्त्री [स. बारविलासिनी] १ वेश्या, रण्डी।

२ नर्तकी, गणिका।

उ०—चामरधारिणी बारविलासनी महल्लक महल्लिका उपाध्यांन गायन ...। —व. स.

रू भे.—बारविलासिणी,

बारविलावण-वि. [स बारि-विलोवन] समुद्र मंथन करने वाला।

स. पु—विष्णु, हरि।

रू. भे. वारिविरोळण।

बारस—१ देखो 'बारस' (रू.भे.)

उ०—आसू वद बारस दिन आसुर। मौत अचित गया कर संमर।
—रा. रू.

२ देखो 'बारिस' (रू भे.) (मा. म.)

उ०—दिस दिस 'जीदै' रोह उवै लोक सह ईखतो। लड़ जिय लीधै रोह, बारस कोइय न आवियो। —पा. प्र.

बारसार—देखो 'बारिसार' (रू. भे) (अ. मा.)

बारसिक-वि. [स. वार्षिक] १ एक वर्ष भर या एक वर्ष तक। रहने वाला।

२ सालाना।

३ वर्षा ऋतु या वर्षा सम्बन्धी।

स. पु.—१ वर्ष के वर्ष दिया जाने वाला कर।

२ वर्ष के वर्ष मिलने वाला लाभ।

बारसिप-सं. पु [अं वारशिप] युद्धपोत, जंगी बेड़ा।

बारसी-स. स्त्री—१ बाला, युवती।

उ०—पहिलू परजापति-चिकी परठाइ ए पइरि। भोगवि सोडस वारसी, सुक सिघावीइ घिरि। —मा. का. प्र.

२ रक्षा, सहायता, मदद, पक्षपात।

वि स्त्री—१ वर्ष की, वर्ष सम्बन्धी।

२ देखो 'बारस्त्री' (रू भे.)

बारसुंदरी-स स्त्री. [स] १ वेश्या, रंडी।

२ गणिका, नर्त्तकी।

रू. भे.—बारसुदरी।

बारसूळ-स पु. यौ [सं बार-शूल] फलित ज्योतिष के अनुसार शूल का विशिष्ट वारो को विशिष्ट दिशाओ में होने वाला निवास।

वि वि—इसका सोम, शनि को पूर्व दिशा मे, गुरु को दक्षिण में, रवि, शुक्र को पश्चिम मे तथा मंगल बुधको उत्तर दिशा में निवास रहता है। मतान्तर से रवि का उत्तर मे भी।

बारस्त्री-सं. स्त्री. [स.] १ वेश्या, रण्डी।

२ नर्त्तकी, गणिका।

बारहौ-स. पु.—यवन, मुसलमान।

उ०—असख दळ दिली रा भुजां उछवाळतौ, समर भर 'भीम' दीठौ सबा ही। घेर त्रिच बारहौ मंडोवर घातियौ, मडोवर घेर आबेर माही। —द. दा.

बारांगना—देखो 'बारंगना' (रू.भे.)

उ०—एक एक नै दोय दोय बारागना विनु हजार गिणती करी आंमना। —जयवांणी

बारांणसी–स. स्त्री.. [स. वाराणसी] बनारस का प्राचीन एवं आधुनिक नाम ।

उ०–बारांणसी नगरी भली, राजा तिहां मकरध्वज नांम ए । तेह नो पुत्र पराक्रमी, उत्तमाभिध जाणे रूपे काम ए । —वि. कु.

रू. भे.—बांणारसि, बांणारसी, वांणरस, वाणारसी ।

बारांह—देखो 'वराह' (रू. भे.)

उ०—साहिजादौ सुरताण वै, रिण मूंझै रिम राह । डार परिग्गह करि मुहरि, नीसरियौ बारांह । – गु. रू. ब.

बारा–स. स्त्री. [स. वार] १ मदिरा, शराब । (अ. मा.)

२ देखो 'वराह' (रू. भे.)

३ देखो 'बार' (रू. भे)

उ०—१ बीछुडतां ई सज्जणा, राता किया रतन्न । बारा बिहु चिहुं नाखिया, आसू मोती अन्न । —ढो मा

उ०—२ न कौ मास पख न को तिथ बारा । —अनुभववाणी

बाराणसी–देखो 'बारांणसी' (रू. भे)

बाराधिप–सं. पु. [सं. वारि-अधिप] समुद्र ।

उ०—बाराधिप सेतां बधण रौ, कुळ राखस जूथ निकंदण रौ । दिल तू 'किसना' जग बंदण रौ, नहचौ रख कौसळ नंदण रौ । —र. ज. प्र.

बारापार—देखो 'वारपार' (रू. भे)

उ०—उण मुख तैं गयौ कयौ, इण कर धरी दुधार । वार कहण पायौ नहो, निकसी बारापार । —द. दा.

बाराह, बाराहउ, बाराहर—देखो 'वराह' (रू. भे.)

उ०—१ धड़हड़ै सात पयाळ धूजै, सेसनाग धडक्क ए । खित भार दाढ बाराह खडक्कै, कोम कध कड़क्क ए । —गु. रू. ब.

उ०—२ जइ भागउ तो बाराहउं, जइ थाकउ तो पारकरउ घोडउ जइ ठालउ तोइ कपूर तणउ दाबडउ । —व. स.

उ०—३ हुणे आप हयवाह, राव बाराहर झालो । ले छकडा सिर-लार, पुळै बाजू दळ पाळो । —पा प्र.

बाराहिकंद—देखो 'बाराहीकद' (रू. भे.)

बाराही–स. स्त्री. [स.] १ ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आठ देवियो मे से एक ।

२ पृथ्वी ।

३ सूअर के रूप मे विष्णु की एक शक्ति ।

४ सूअरी ।

५ सप्त मातृकाओं में से एक जिसका वाहन बैल है ।

६ माप विशेष ।

रू. भे.—बाराही, वराहजी, वराही ।

बाराहीकद–स. पु. [सं.] एक महाकद जो औषधियों मे काम आता है और जिसे गेंठी भी कहते है ।

रू. भे.—बाराहीकंद, वाराहिकद ।

बारि–स. पु. [सं.] १ पानी, जल ।

उ०—१ बापरै तखत बैठो, धारि छत्र जोम धारि । बीजळां दिलेस देस, मारि कोध थाळ बारि । —सू. प्र.

उ०—२ अहिलइ गयु अवतार, इम, कामकंदला नारि । परवत-सि गि तलावडी, अया रहिउ जिम बारि । —मा. का प्र.

उ०—३ बारि वसंती पद्मिनी, समीहर सूर आकासि । महीपति ! तिम महिला-तणा, मन ते माधव-पासि । —मा. का. प्र.

२ कोई तरल पदार्थ ।

३ सरस्वती, वाणी ।

४ निसानी छद का एक भेद, जिसके प्रत्येक चरण मे ४ गुरू व १५ लघु वर्ण होते हैं ।

५ देखो 'बार' (रू. भे)

उ०—१ छाना नितु पुहचइ परधान, रळियात थ्या चिति परधान । मास दोह आगळि असवार, आया पूगळि नयरि ते बारि । —ढो. मा.

उ०—२ कहिस्यां तौ तूझ भलौ करणाकर, वपि एकणि सहु घरै विचारि । रावळ जाम सरीखौ राजा, वळै घडिस जो बीजी बारि । —ईसरदास बारहठ

६ देखो 'बारी' (रू. भे)

रू. भे.—बारि, बारीय ।

बारिईस—देखो 'बारीस' (रू. भे.)

उ०—जक्षेस बारिईस को, सुरेस नेस ग्री जिसा । 'अभो' त्रिलोक मे अचभ, भोग भोगवै इसा । —रा. रू.

बारिख–स पु [स. वार्क्षम्] वन, जंगल । (ह. ना. मा.)

रू भे.—बारख ।

बारिगह, बारिग्रह—देखो 'बारिगह' (रू भे.)

उ०—जु मन वाध्यौ चाहिजे । त्यं कै कारणै या बारिगह दोधी छै । —वेलि टी.

बारिचर–स.पु. [सं.] १ जल मे विचरण करने वाले प्राणी, जल-जन्तु ।

२ मछली, मत्स्य ।

३ शख ।

बारिज–सं. पु. [स.] १ कमल ।

उ०—रवि ऊगता जिसौ मुख राजै वारिज प्रफुल्लित नेत्र विराजै।
—सू प्र.

२ शंख। (ह. ना. मा)

३ घोंघा।

४ मत्स्य, मछली।

रू. भे.—वारिज, वारज।

वारिजपुंड़-सं. पु. [सं.] श्वेत-कमल।

वारिजलोचण-सं. पु. [स. वारिजलोचनं] परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

वारिजात—देखो 'वारिज'

वारिद, वारिद्द-सं. पु [स. वारिद] मेघ, बादल।

उ०—१ रित सारिद वारिद रहित, आगम अघहण मास।'अजन' विदा कीधौ 'अभौ' निरखण ग्रेह निवास। —रा. रू

उ०—२ किना कंध धारा झरै मद काळा। वणे जाणि वारिद्द भाद्रव्व वाळा। —रा. रू.

रू भे.—वारद, बारिद, वारद।

वारिद्र-स. पु [स] चातक-पक्षी।

वारिध—देखो 'वारिधि' (रू. भे)

उ०—अगीकृत ईस्वरइ जहर पीधउ दुख हंतइ। वारिध वाडव अगिन वहै पाणी सासंतइ। —प च. चौ

वारिधर-स पु. [सं] १ बादल, मेघ।

२ समुद्र।

३ नागरमोथा।

४ एक समवृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, नगण और दो भगण होते हैं।

रू. भे.—वारिधर।

वारिधि-स. पु [स.] समुद्र, सागर।

उ०—१ पदमणि स्यु पांणी ग्रहण, विधि वारिधि अतिकूर। ऊलांणो साचौ हुऔ, बाघ नदी जल पूर। —प. च. चौ.

उ०—२ हूं वारिधि माहे पड्यौ, मीनोदर रह्यौ केम। गणिका घरि सुक किम थयौ, भाखौ जिम छै तेम। —वि कु

रू. भे—बारध, बारधि, बारिधि, बारद्ध, बारध, बारधी, बारधीस, बारधेस, वारिध वारुध।

वारिनाथ-सं. पु [स] १ समुद्र।

२ वरुण देव।

३ बादल।

वारिनिधि-सं. पु. [स.] समुद्र।

रू. भे.—वारनिध, वारनिधि।

वारियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—वात वड साळ फरीयां जकण वारियां, भाटी कह 'दांन' 'सादूळ' छक भारीयां। धणी सूंपा सरण मरण सक धारीयां, लाज मन धरै जेसाण गढ लारीया। —असो आढौ

वारियौ-स. पु—देखो 'वारियौ' (रू. भे.)

उ०—साफै स्यारी ऊप, ताकडै रात्यूं रेवै, करै कीलिया राग, वारियौ दूहा देवै। —दसदेव

वारिरुह-स. पु. [स] कमल।

वारिवारि—१ देखो 'वारवार' (रू. भे.)

उ०—तु वारिवारि पंथ साहानि कहुछौ राजन। चरण त्यजवा तह्यारा किम चालि माहारूं मन। —नळाख्यांन

२ देखो 'बारीबारी' (रू. भे.)

वारिवाह-स पु [सं] बादल, मेघ।

रू. भे.—बारिवाह, वारवाह।

वारिविरोळण—देखो 'वारविलोवण' (रू भे.) (नां. मा.)

वारिस-स पु [फा.] १ किसी की जायदाद का हकदार, जायदाद के लिये मनोनीत किया हुआ या कानूनन अधिकारी।

२ उत्तराधिकारी।

३ वह जिसने अपने आपको किसी अन्य के कार्यों के लिये योग्य बना लिया है।

रू. भे.—वारस।

वारिसार-स. पु—चन्द्रगुप्त का एक पुत्र, अशोक का पिता, बिंदुसार।

वारिसास्त्र-स. पु [स. वारिशास्त्र] गर्ग मुनि द्वारा रचित फलित ज्योतिष का एक ग्रंथ।

वारी-सं. स्त्री.—१ अवसर, मौका, पारी।

उ०—१ थावी केतली रे नर ऊमर थारी। भाखे मुख असह्या वच भारी। वचस्यो नही आविया वारी, गावौ रे गावौ गिरधारी। —बखसीराम लाळस

उ०—२ सेज सवारी छै तन री तयारी छै। और उवां री वारी छै आज। —रसीलै राज रा गीत

२ न्यौछार, उत्सग।

उ०—१ हूं वारी रे माधवा, बिरह जलंती आंणि। तूं तु तापइ दूरि थी, प्रेमि पसारी पांणि। —मा. कां. प्र.

उ०—२ नीबूडे री गहरी गहरी छाय ओ थां पर वारी रे सैंयां। ढोला नै भरवण सुख भर पोढिया ओ राज। —लो. गी.

३ निवारण, निवृत्ति।

उ०—सदा सेवका लोक सानिध्यकारी। प्रभु 'पास' स्तभनौ विघ्न वारी। —स. कु.

४ साधुवाद या धन्यवाद देने की क्रिया या भाव ।

उ०—हाथी रै हौदै मरियो पती नै देख वीर स्त्री कहै बारी वालम बारणै जाऊं धणी री वाह हथ बाहनै बारणी । —वी. स. टी.

[सं. वारी] ५ हाथी को बाधने की रस्सी या जंजीर ।

६ हाथी को पकड़ने के लिये बनाया हुआ गड्ढा ।

७ हाथी को बाधने का स्थान ।

८ कैदी, बदी ।

९ जल-पात्र ।

१० तरल पदार्थ रखने का एक टोंटीदार बर्तन ।

११ सरस्वती का नाम ।

१२ देखो 'बारी' (रू भे)

उ०—तद भरमल रै रहवासरै उरा घड़ी खिड़की कराई । सो रात घडी च्यार गया भरमल हजूर आवै, उठै जीमै, सेझ बिछावै । बारी होवै सो मोहल आवै । रात घड़ी च्यार पाछली रहां बहोड जावै । —कुंवरसी साखला री वारता

रू. भे.—बारि, वारि ।

बारीय—देखो 'वारि' (रू भे.)

बारीबारी—देखो 'बारी बारी' (रू. भे)

उ०—दारूडा री मनवार आपस री, वरा रही बारी बारी । —रसीलै राजरो गीत

बारीस—स. पु. [सं. वारि+ईश] १ समुद्र ।

२ जल के अधिपति वरुण देव ।

रू- भे.—बारिस, बारीस, वरीस, वारिईस ।

बारंबार—देखो 'बारबार' (रू. भे.)

बारु—१ देखो 'बारू' (रू. भे)

उ०—१ वैशाख बारु मास, नही ताढि तडकउ तास । उची थकि आवास, वइसयइ केहनइ पास । —स कु.

उ०—२ पहुआवर धनपुर तणा रे लाल, गुप चुप गढ ग्वालेर । करणसाही लाडु भला रे लाल, बारु बीकानेर । —प. च. चौ

उ०—३ हउओ [हुइतो] सभालु [मन] मारू ठारु । सोकागनीजवा [ला लागी] छि, सीतल [बचनि] बारु । —नळाख्यान

बारु—देखो 'बाहरू' (रू भे)

बारुण—वि. [स.] १ वरुण का, वरुण सम्बन्धी ।

२ वरुण को समर्पित किया हुआ, दिया हुआ ।

[स. पु] १ नव खण्डो मे से एक ।

२ शतभिषा नक्षत्र ।

३ देखो 'वरुण' (रू. भे.)

बारुणास्त्र—स. पु. [स.] एक अस्त्र विशेष ।

उ०—नागास्त्र गुरुडास्त्र सवर्त्तकास्त्र मेघास्त्र प्रलयकालास्त्र रिक्षास्त्र आग्नेयास्त्र बारुणास्त्र दानवास्त्र माहेद्रास्त्र तिमिरास्त्र डिंमककारास्त्र नारायास्त्र अस्वग्रीवास्त्र ब्रह्मास्त्र मेघास्त्र इति अस्त्राणी । —व. स.

बारुणि—स. पु [स. वारुणि] १ एक पैतृक नाम जो अगस्त्य, भृगु एव वाशिष्ठ आदि ऋषियो के लिये प्रयुक्त होता है ।

वि. वि.—ये सब ऋषि ब्रह्मा के यज्ञ से उत्पन्न हुए और वरुण ने इनको पुत्र रूप मे माना इसलिये इनका नाम वारुणि पड़ा ।

२ धर्म सावर्णि मनवन्तर का एक ऋषि ।

३ एक पक्षिराज, जो कश्यप एव वनिता के पुत्रो मे से एक था ।

४ वानरो का एक राजा ।

बारुणी—स. स्त्री.[स] १ स्वायभुव मनवन्तर के वरुण की पत्नी ।

२ अरण्य प्रजापति की कन्या जो चक्षुष् राजा की पत्नी एव चक्षुष् मनु की माता थी ।

७ एक महाविद्या ।

उ०—वारुणी दारुणी भास्करी सकरी जया विजया घोरा कौबेरी प्रवाही मदनसेना । —व. स.

८ उपनिषद विद्या ।

९ पश्चिम दिशा ।

१० मदिरा, शराब ।

११ शतभिषा नक्षत्र, जो चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को पडता है ।

१२ उक्त दिन का माना जाने वाला पर्व ।

१३ दूर्वा, दूब ।

१४ घोडे की एक चाल ।

१५ मादा हाथी, हस्तिनी ।

रू. भे.—बरुणी, बरूणी, बारणी, बारुणी, बारूणी, वारणी ।

बारुध—देखो 'वारिधि' (रू. भे) (अ. मा)

बारुसी—स. पु —भाटी वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति । (बा दा. ख्यात)

बारूंबार—देखो 'बारबार' (रू. भे.)

उ०—सकति गणेस नवै ग्रह मोई सुर तेतीस सहाय सकोई । बड पाहि जतन सु वारूंवारा, हुवो धरम लख कोड हजारा । —रा. रू.

बारू—वि. (स वर.] १ वर, श्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—१ तो बारू राजा रे अहि उसीयां पछी मांहरा साहिबा, अनगसेना इण नाम रे वेस्या विगताली । —वि. कु.

उ०—२ भोग परित्याग प्रव्रज्या परयवा जी, सूत्र परिग्रह बारू तप उपधान हो । —वि. कु.

२ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ तुं गुण अनत करि गाजइ, तुझ रूप अनोपम राजइ रे।
सुंदर तुझ मुख नउ मटको, बारू लोयण नउ लटकउ रे।
—वि. कु.

उ०—२ ऊपेलइ मालि, प्रसस्इ कालि, बारू मडप नीपाईउ,
पोइणि ने पांनि छाइउ, कनूना छाबड़ा मोतीना चडक। —व. स.

३ स्वादिष्ठ।

उ०—मोतीआ लाडू, दालडिआ लाडू, दहीथरां तिलसाकली, फीणा वरसोला, साकरीआ चणा, कोहलापाक, दूध पाक सेलड़ी पाक खरगा पाजा जलेबी हेसमी, बारू पडसूधी तणा आछा माडा, लगार नही खाडा। —व. स.

सं. पु—१ वह हाथी जिस पर विजय पताका रहती है।

रू. भे.—'वारु'।

बांरू—देखो 'बाहरू' (रू. भे.)

बारुगु, बारुगो—स. पु.—एक कारीगर।

उ०—गलीआरा चीतारा घणा, ताई वणकर तेहनी नही मणा।
कडीआ जडीआ गणीआ भला, लाभइ बारुगा रूडी कला।
—नळदवदती रास

बारूबार—देखो 'बारबार' (रू. भे)

बारेवौ—स पु—त्यागने, निवारण करने की क्रिया या भाव।

उ०—राख्यौ पारेवौ हो लाल, तिण परि सारेवौ हो। सेवक तारेवौ हो लाल, नाकार बारेवौ हो। —वि. कु

बारोत—देखो 'बारोत' (रू. भे)

बारोबार, बारोबारी—१ देखो 'बारंबार' (रू भे.)

उ०—१ तिहां जिनवर मुनि सुव्रत स्वामिनैं, देव ग्रह निज आय।
बारोबार करैं गुण वरणना, मन सुद्ध प्रणमैं रे पाय। —वि कु.

उ०—२ किम रिहिसि ए निराधार, बाध सघ करसि ता आहार।
एणी पिरि करता बारोबारि, कलियुगि मन प्रेरघू अपार।
—नळाख्यान

२ देखो 'बारीबारी' (रू. भे')

उ०—तूटै सनाह फूटै तुरस, वाह सरस तरवारिया। सोहै निराट हिंदू असुर, वाहे बारोबारियां। —रा. रू.

बारौ—स पु.—१ कूए से पानी निकालने का चरस, मोट।

उ०—१ ताहरा पाबूजी कोहर तेवण आप लागा। ताहरा एक बारौ काढियौ। तैसू कोठा कूडचा खेळिया भरी। —नैणसी

उ०—२ सो नापो' ऊपर खड़ो थो। कोहर तेवायौ सो बारा आठ नो नीसरिया। दसमो बारौ खाचता नाको खुस गयो। वरत ढीली पड़ गई। —नापै साखलै री वारता

२ कूए के पानी का मोट उड़ेलते समय गाया जाने वाला एक लोक गीत।

३ रात्रि के समय मादा ऊंटों के झुण्ड के बैठने का स्थान।

४ उजाड, जंगल।

५ लघुशका करने की क्रिया।

६ समय, काल।

उ०—१ राम राज जोधपुर, सहू हरचद बारौ। मास पाच खट मास, साह आपै वाधारो। —गु. रू. ब.

उ०—२ दिन आयां चक्रवै गया सक्रवै समाए · दिन आयां हरिचंद गयौ बारौ बरताए। —रा रू.

७ किसी काम या बात के लिए वह अवसर जो कुछ अन्तर देकर क्रम से आता है, पारी।

उ०—१ ताहरां जियै वदू रौ बारौ हुंतौ, सु मारग रोकि ऊभी।
ज्यूं हरदास पाछली रात री बाहुडियौ ताहरां कह्यौ-सासूजी।
हरदास बाहुडै छै। —नैणसी

उ०—२ घडी च्यार बैस पूछी बारौ कैरो। तद अरज कीवी भरमल री वारौ ले असवार हुया सो इहां रो छै। तद आप उठि भरमल रै मोहल पधारियौ। —कुंवरसी सांखला री वारता

८ चेचक।

उ०—वणवीर आणि अर मूंहर्त अचळै नूं अर नाई लखमन लाहोरी नूं सूपियौ। आगै भोपतजी समाधिया हुया हुता। काचौ पाको बारौ ढळियौ हुतौ। —द. वि.

९ स्कन्दापस्मारादि बालग्रहों से पीडित बच्चे के सिर के ऊपर वारा जाने वाला जल जो किसी वृक्ष विशेष की जड़ों में डाला जाता है।

१० बडी तीज के रोज लडकी के पिता के द्वारा उसके ससुराल भेजी जाने वाली मिठाई।

वि. वि—इसमे बड़े-बडे लडू भेजे जाते हैं।

११ बडी तीज के रोज लड़के के पिता के द्वारा (शादी होने के पहले) पुत्र वधु के लिए भेजी जाने वाली मिठाई व वस्त्र आदि।

१२ देखो 'वार' (अल्पा., रू. भे)

उ०—मरण तणो डर कोई नही, मरना है इक बारौ रै। बहुत निवाज बडा करू, द्यु बहु देस भंडारो रै। —प. च. चौ.

रू. भे.—बारौ।

बालंटियर—सं. पु [अं.] निस्वार्थ भाव से किसी कार्य मे योग देने वाला स्वय-सेवक।

बालव—स. पु.—एक जाती या वर्ग विशेष।

उ०—माली तंबोली छीपा परीयट बधारा तूनारा सोनारा ठाठार लोहार चमार सुई बालंभ कडीया निलवट उड गाछा कोली टाटिया बाबर देढ डूब । —व. स.

बालंभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—१ बालंभ एक हिलोर दे, धाई सकै तउ ग्राइ । बाहडिया वे थकिया, काग उडाइ उडाइ । —ढो. मा.

उ०—२ प्रीतडी बालम पालियइ, नवि दीजियइ छेह रे । कठिन हियु नवि किजियइ, कीजइ सगुण सनेह रे । —स कु

बाळ, बाल—सं. पु. [म. वल्ल] १ चादर, गिलाफ । (उ. र)

२ पर्वत की तलहटी ।

३ पर्वत की तलहटी मे स्थित खेत ।

४ घुडसाल, ग्रस्तबल ।

५ घोडो का समूह ।

उ०—धन हाथा हिंदु धणी, कीरत वणी सकाज । बाल तणो छोगो ग्रवी, 'रूपमणी' धजराज । —चिमनजी ग्राढो.

६ तीन घुंघची के बराबर एक तोल ।

७ निपेध, वर्जन ।

८ बारीक खुदाई या जाली काटने का एक ग्रौजार ।

९ एक प्रत्यय ।

१० देखो 'बाल' (रू. भे.) (ह. ना मा.]

११ देखो 'बाला' (मह., रू. भे.)

उ०—लौकिक न रहइ लोकमां रे लाल, विसय थकी मन बाल सुकुलणी रे । काम भोग मुड्या कह्या रे लाल, नरक ना दुख निहाल सुकु. रे । —ा. कु

रू. भे.—बालइ, बालई, बाळि, बालि, बाळी, बाली ।

बालइ, बालई—१ देखो 'बाल' (रू. भे.)

उ०—कान्हडदे पाटनउ धणी, बीजी भूमि भोगवई धणी । राजरिद्धि नू किसू वखाण, बालइ पच-वरण केकाण । —का. दे. प्र.

२ देखो 'बाला' (रू भे)

बालउ—१ देखो 'बाल' (रू भे)

२ देखो 'बालौ' (रू. भे.)

उ०—हु कित बालउ माय गहिरि गयदंतह खेलउं, हुं कित बालउ माय, सेसफण विमुहा पिलहउ । —प. च चौ

बाळक—स. पु [देशज] १ जगल मे स्वतन्त्र चरने वाले पशु, जिनके साथ चरवाहा नही होता ।

२ नव प्रसूता मादा ऊट जो ग्रपने बच्चे को छोड कर जगल मे चरने जाती है ।

३ हाथ मे पहनने का कगन, बाल छड ।

वि.—१ बंधन रहित, स्वच्छन्द, मुक्त (पशु)

बाळको—१ देखो 'बाळी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बालिका' (रू भे)

बाळको—देखो 'बाळक' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बाळछो—देखो 'बाळछो' (रू भे.)

बालट्ठावोस—स पु —बालक के खाने के लिये बनाई हुई वस्तु को लेने से लगने वाला दोष । (जैन)

बाळण—वि. [स वलन] १ रोकने वाला, सामना करने वाला ।

२ लौटाने वाला ।

३ वापिस लाने वाला ।

४ मोडने वाला, घुमाने वाला ।

५ प्रतिशोध लेने वाला ।

६ ग्राने वाला ।

बाळणोत—देखो 'बाळणोत' (रू. भे.)

बाळणो बाळबो—क्रि. स. [स. वलनं] १ वापस लौटाना, लौटा कर लाना ।

उ०—१ जुड़े तै वार किता इद्रजीत, संहार दइत्ता बाळी सीत । —ह र.

उ०—२ बाळियो वरग गाया तणौं बीसहथ, सीर सभाळियो बीर सागी । ग्ररण बिच बरण बिच घटा जिम ग्रोवडी, लोवडी जाय ग्रसमान लागी । —गोपीनाथ गाडण

उ०—३ रतन मजरी रीस करि कहियो, राजा नर ब्रह्म री ग्राण दीवी छै । जु साढ पाछी बाळ । —पच दडी री वारता

२ वापस लेना, प्राप्त करना, ग्रधिकार मे करना ।

उ०—१ म्हारै म'थै भाग, जो राज रा हाथ माथै ऊपर हुसी । कतौ हू मोटो हुईस, नै माहरो धरती गई छै सु बाळीस ।

—नैणसी

उ०—२ ग्रापै वेढ सू ग्रलाहिदा रहिस्या, नै ग्रापा नू धरती बाळणी छै ।

—नैणसी

उ०—३ बाळण दवखण वसुह, कटक बध चढिया कोग्रण । भेरी पचसद्द ताम, सुगियै लग जोजण । —गु. रू. ब

३ प्रति शोध लेना ।

उ०—स्रीसेरसाह राव स्रीजैतसिघ जी रै वैर बाळण रै कियै राव मालदे ऊपरि ग्राप पधारि ग्रर राव मालदे रा रजपूत उमराव घणा मारिया । —द. वि

४ रोकना, सामना करना ।

५ वापस बुलाना ।

६ घुमाना, फिराना, चक्कर लगवाना ।

७ विदा करना, लौटाना ।

८ मोड़ना ।

उ०—१ विचं प्रावतां बधवा बाह वाळै । रटै रांम बांगा जती छेदि राळै । —सू प्र.

उ०—२ किण रौ ई रह्यौ न हटकियौ, निज हट कियौ निभाव । बाळै ज्यूंइ वळियौ नहीं, बाळापणंइ सुभाव । —जैतदान बारहट

९ खारिज करना, निरस्त करना ।

उ०—जनम जनम मे करज कियौ है माथै करडौ । मिनख कियौ महाराज काट दे क्यू नहिं खरडौ । यौ खरडौ करड़ौ बणौ, कीकर बणौं बणाव, निस वासर सगरांम कह, रामधणी नैं ध्याव । रामधणी नैं ध्याव, वाळवं खावद खरडौ । जनम-जनम मे करज कियौ है माथै करड़ौ । —सगराम दास

१० मिटाना ।

उ०—मन जांणौ पीवूं पै मिसरी, छाछ सूवरणी मिळै न छाट । बळिया सौ पाछां कुण वाळै, उण घर री लेखन रा प्रांट । —घोघौ प्राढौ.

११ झुकाना ।
१२ वसूल करना, लेना ।
१३ जेवरी गूथना ।
१४ हवाकरना, पवन डुलाना ।
१५ पशुमों को एक स्थान पर एकत्र करना ।
१६ देखो 'वाळणौ, वाळबौ' (रू. भे.)

वाळणहार, हारौ (हारी), वाळणियौ—वि० ।
वाळिम्रोड़ौ, वालियोड़ौ, वाळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वाळीजणौ, वाळीजबौ—कर्म वा० ।
वालणौ, वालबौ—रू० भे० ।

बालणौ, बालबौ—देखो 'वाळणौ, वाळबौ' (रू. भे.)

उ०—माऊखा नै प्रतपक्ष, प्रणसण पाली नैं । संवत पनरपचीस, मन वैराग वाली नै । —ऐ. जै का. स

उ०—२ सद सु सब थई पाडइ, लेख न लिखिउ जाय । पिऊ माहरु परदेसि थि, किणी-परि बालसि वाय । —मा. कां. प्र

उ०—३ माहरौ मन पापी हो, कहूं प्रवगुण किसा । मन पाछौ बाल्यौ हो, एम कहै मदालसा । —वि. कु

बालणहार, हारौ हारी), बालणियौ—वि० ।
बालिम्रोड़ौ, बालियोड़ौ, बाल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बालीजणौ, बालीजबौ—कर्म वा० ।

बाळध—सं. पु.—श्वान, कुत्ता । (प्र. मा)

बालम—१ देखो 'बालम' (रू. भे.)

उ०—१ हेटै दुसमण हाथी रै हौदै मरियौ पती नैं देख वीर स्त्री कहै वारी बालम बारणै जाऊ धणी री बाह हथ बाहने बारणै । —वी. स. टी.

उ०—२ कहै कुमरी नैं हो ताहरौ भाग्य फल्यौ । मन मानीतौ हो बालम प्रायौ मिल्यौ । —वि. कु.

बालमकाकड़ी—स. स्त्री.—लम्बे प्राकार की एक ककडी विशेष ।

रू. भे —बालमकाकडी ।

बालमियौ—देखो 'बालमियौ' (रू भे.)

२ देखो 'बालम' (प्रल्पा , रू. भे.)

बालमिक, बालमीक—देखो 'बालमीक' (रू. भे.)

उ०—देवी बालमिक व्यास रुपे तुं फ़र्त्तं । देवी रांमायण पुराणी भागवत्तं । —देवि

बालर—सं. पु —हरिण, मृग ।

बालरकाकड़ी—स. स्त्री. [सं. वल्लूर-कर्कटी] रेगिस्थान में होने वाली एक ककड़ी विशेष । (उ. र.)

बाळलियौ—देखो 'वाळलौ' (प्रल्पा., रू भे.)

बाळलौ—सं. पु.— स्त्रियो के गले में पहनने का हंसुली के प्राकार एक प्राभूषण ।

रू. भे'—बाळलौ ।

प्रल्पा.—बाळलियौ, वाळलियौ ।

बाळव—सं. पु [सं. वालव] फलित ज्योतिष मे दूसरा करण जिसमें शुभ कर्म वर्जित नही है ।

रू. भे.—बालव ।

बाळस—देखो 'बाळस' (रू. भे.)

बालहउ—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—सखे प्रातीस साभळी रे, भरम पड़यउ भरतार । एहनउ प्रनेरउ बालहउ रे, मूंकी दडाकार । —स. कु.

बालहली—स. स्त्री. [स. वल्ल फल्लिका] लता की फली ? (उ. र.)

बाळहो—देखो 'वाळो' (रू. भे.)

उ०—बळबळती रेत रै माथै ढाळोढाळ पांणी रळकण लागो । सूग्वा बाळहा खाळा जीवण साचरतां ई भरणाटै दौड़ण लागा । —फुलवाड़ी

बाल्हो—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—१ जिम सालूरा सरवरा, जिम धरणी घर मेह । चपावरणी बालहा, इम पाळीजइ नेह । —ढो. मा.

उ०—२ माहरा बालहा, ताहरी न तजुंलार तूं हीयड़ा नु हार । तू यौवन सिणगार, तू भोगी भरतार । —वि. कु.

उ०—३ मदन मजरी बेटी मुझने वालही रे, ए मरिखो वर जोइ।
—श्रीपाल रास

(स्त्री. बालही)

बाला—स. स्त्री—१ पवार वंश की एक शाखा। (बा. दा. ख्यात)
२ वस्त्र विशेष।

उ०—रत्न कंबल खाइल मकबल ग्रगल माउला उरगाला बाला पटुला वाकला घनवेलि कमलवेलि। —व. स.

३ वृद्ध व्यक्तियों द्वारा ससुराल मे स्त्रियो के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द विशेष।
२ देखो 'बाला' (रू. भे) (व. स., म्र. मा.)

उ०—नह बाला नह तरुणा, व्रध परण्या न कवारा।
—केसोदास गाडण

रू. भे—बाल्हा, वाल्हा।

बालाबत—स. पु.—राठोड वंश की एक उपशाखा या उस शाखा का व्यक्ति।

बालिभ—देखो 'वल्लभ' (रू भे)

उ०—हो वालिभ मइ तुनइ वारियउ, वा' रे, हो जूयटइ रमिबा तू म जाइ। —स. कु

वालिंभि—देखो 'वल्लभ' (रू भे.)

उ०—कविन्याति कायस्थ वड, वालिंभि विख्यात। पूरण पद बधता दीह थया दह सात। —मा का. प्र.

वालि—१ देखो 'वाल' (रू भे.)

उ०—१ कूकड़ा कध कालम्म कन्न, रैवत जोति दीवा रतन्न। पाणेग पियइ जळ पौव पथ, मोहइ मरूप धुरि वालि सथ।
—रा ज. सी

उ०—२ पाडव दीह वासणी खांण। वालि लेई बाध्या केकाण।
—का. दे प्र.

उ०—३ हइ वालि खभि सोहइ हमत्ति। गढपत्ति जइतसी ग्रडब गत्ति। —रा ज सी

२ देखो 'वाली' (रू भे)

वालिव—स. पु [ग्र] पिता, जनक।

वालिवा—सं स्त्री. [ग्र] माता।

वालिबध—स पु. एक प्रकार का घोड़ा जो उत्तम गिना जाता है।

वालिभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे)

उ०—वालिभ गरथ वसीकरण, बीजा सहु ग्रकयथ्थ। जिए चडया दळ उतरइ. तरुणि पसारइ हथ्थ। —डो. मा

वालियोड़ो, वालयोड़ो—भू. का. कृ. १ वापस लौटाया हुग्रा, लौटाकर लाया हुग्रा. २ वापस लिया हुवा, प्राप्त किया हुग्रा, ग्रधिकार में किया हुग्रा. ३ प्रतिशोध लिया हुग्रा. ४ सामना किया हुग्रा, रोका हुग्रा. ५ वापस बुलाया हुग्रा. ६ घुमाया, फिराया व चक्कर लगवाया हुग्रा. ७ विदा किया हुग्रा, लौटाया हुग्रा, ८ निर्देश दिया हुग्रा. ९ मोडा हुग्रा, बल डाला हुग्रा. १० खारिज किया हुग्रा. ११ मिटाया हुग्रा. १२ झुकाया हुग्रा. १३ वसूल किया हुग्रा, लिया हुग्रा. १४ जेवरा गूथा हुग्रा. १५ हवा किया हुग्रा, पवन डुलाया हुग्रा. १६ एक स्थान पर एकत्र किया हुग्रा (पशु)
१७ देखो 'वाळिगोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बालियोडी, वालियोडी)

वाळी—स स्त्री. [स. बाळी] १ कान व नाक का ग्राभूषण विशेष।

प्रत्य.—२ सज्ञा या क्रिया शब्दो के ग्रागे लगने वाला सम्बन्ध बोधक प्रत्यय।

३ देखो 'वाळौ' (पु.) (रू भे.)

वाली—वि स्त्री.—प्यारी, प्रिया।

उ०—बौह सिर दार मीला मुं सवायौ। वाली सासड़ली रौ जायौ।
—रसीले राज रा गीत

देखो 'वाल' (रू. भे.)

उ०—वाळियां—वधइ घरि-घरि ग्रहास। ग्रासिया मपूरित ग्रास वास। —रा. ज. सी.

१ देखो 'वाळी' (ग्रल्पा, रू भे.)

२ देखो 'बाली' (रू भे)

वाळिवेस—देखो 'वाळीनेस' (रू. भे)

वालीसा—स. पु.—चौहान वंश की एक शाखा।

उ०—सु लालै रै वैर रा भाखरसी सादूळोत सू थो, तिण ऊपर वालीसां री धरती मे रहतौ। —नैणसी

वालीसौ—स. पु.—वालिसा शाखा का व्यक्ति।

वालु—स. पु—एक शाक विशेष।

उ०—वालु नइ वेलातरु, वेऊ वेतस वाणि। वध्रारु वाहलु लीउ, बाउलीउ वखाणि। —मा. कां. प्र.

वालुका—स स्त्री. [स.] १ ककडी विशेष।

२ देखो 'वालु' (रू. भे)

वाळुकाजंत्र—देखो 'वाळुकाजत्र' (रू. भे.)

वालुकाप्रभा—स. पु [स.] एक नरक का नाम।

वाळुकायत्र—देखो 'वाळुकाजत्र' (रू. भे)

वाळुचौ, वाळुछौ, वाळूचौ—देखो 'वाळछौ' (रू. भे.)

बालेय – देखो 'बालेय' (रू भे.) (ह. ना. मा)

बालेसर—देखो 'वालो' (मह., रू. भे.)

उ०—१ गाव मिघाया म्रो म्रजमो कुण सोवसी म्रो राज। थेई म्रो मानेतण राणी थेई म्रो बालेसर राणी। —लो. गी

उ०—२ बालेसर हो वली परभातें बात, कहस्यु म्राइ होसी जीसी जी। दिलीसर हो बाची चीठी बात, सीख करा जावा घरे जी। —प. च चौ

बालोच-स. पु.—प्रेम, प्यार।

बालोत-स पु [स्त्री. बालोतणी] चौहान-वंश की एक उपशाखा व इस शाखा का व्यक्ति। (बा. दा. ख्यात)

बालोळ-स. स्त्री.—सेम की फली जिसकी तरकारी बनती है।

बाळौ-स. पु.—१ बरसात में चलने वाला पानी का नाला, जल स्रोत।

२ नेहरुवा नामक रोग व इसका कीडा।

वि वि.—देखो 'नारू

प्रत्य. [स म्रालुच] (स्त्री. वाली) ३ क्रिया शब्द के म्रागे लग कर कर्तृवाचकसंज्ञा का म्रर्थ बोध करने वाला शब्द।

ज्यू—करण वाळो, मरण वाळो, बोलण वाळो।

उ०—मारण वाळा सूं मरण वाळी बत्तो सूरवीर व्है। मारण बाळौ तौ कायर ई व्हिया करै पण कोड सू मरणियो कायर नी व्है। —फुलवाडी

४ संज्ञा, पदार्थ या स्थान-वाचक शब्द के म्रागे लग कर सम्बन्ध वाचक म्रर्थ-बोधक शब्द। (ह ना. मा.)

ज्यू—दूधवाळो, घर वाळो।

उ०—१ साहिजादा म्रनै रायजादा संगठा, बाघियो वळै दिखणाद बाळौ। —सुमराम गौड री गीत

उ०—१ नाडी बाळौ तोतक तो गजब इज रह्यो। म्रा तो मूळो चढणा बिचै ई सवाई व्ही। —फुलवाडी

रू. भे.—म्राळौ।

५ षष्ठी विभक्ति चिन्ह, का।

उ०—१ उदधि कछवाह बाळौ उदक ऊकळै, रूक तण भीम ज्वाळा तणौ रोस। — राव दुरजणसाळ हाडा री गीत

६ देखो 'बाळौ' (रू. भे)

उ०—चमकै बूंदा झमकै बाळा, म्रौर बुलाक मोती लटकन बाळा। —रसीले राज री गीत

रू. भे.-बहाळो, बाळो, बाहळो, बाहाळो, ब्हाळो, वहाळो, बाळहो, वाहळो, वाहलो, वाहल्यो, वाहाळो, व्हाळो।

बालौ-स पु.—१ पति, खाविंद।

उ०—तूनै धूप खेवत के हरसधो, कर हेत। बाला बीछड़िया मलै, मनवछत फळ देत। —कल्याणसिंघ नगराजोत बाढेल री बात

२ स्वामी, मालिक।

३ चुंबन, बोसा।

उ०—बेटा म्रागं बाप नै फेर हार मांनणी पड़ी। लुळनै उण रा लिलाड़ माथै बालो दियो। —फुलवाड़ी

वि (स्त्री. वाली) १ प्यारा, प्रिय, स्नेही।

उ०—१ बालो लागै छै म्हारो देसड़ो ए लो। केम कर जावूं परदेस, बाला जो। —लो. गी.

उ०—२ ज्या घणूं बालो जीवणो, घट तिका डर व्यापै घणो। महाराजा सूं भ्रम द्वार मागै, सहर तजि इद्र साह। —रा. रू.

२ मनोहर, मोहक।

३ मीठा, मधुर।

रू. भे —बहालो, वालहो, वालो, बाल्हो, व्हालो, वहालो, वा'लउ, वालहउ, वालहो, वाल्हू, बाल्हो बाहलउ, बाहलु, वाहलू, बाहलो, वाहल्यो, वाहुलु, वाहुलो।

म्रल्पा.,—बालुडो, बालूडो, वालड़ो, वाहलकड़ु, वाहलकड़ो, वाहिलियो।

मह.,—बाल्हेमर, वालेसर, वाल्हेसर।

बाल्मीक, बाल्मीकि—देखो 'बालमीक' (रू. भे.)

बाल्हम—१ देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—म्रो म्हारो झूपडो लूटनै पुळीजे न्हास जाम्रो विवेक राख नै, बाल्हम जो म्हारो पती म्राय गयो तो म्रड़ब-म्रड़ब रुपीया रो कर एक एक तिणखलो ही वेचसी। —बी. स. टी.

२ देखो 'बालम' (रू. भे.)

बाल्हा—देखो 'वाला' (रू. भे.)

बाल्हीक-स. पु [स] १ भारत की उत्तर-पश्चिम की सीमा पर स्थित एक प्राचीन जनपद। (सभा.)

२ म्राधुनिक बलख का नाम।

३ बलख देश का घोडा।

४ केसर।

५ हींग।

६ एक गंधर्व।

रू. भे.—बालिक, बाल्हीक, बाहलीक, बाहलीकण।

बाल्हू—देखो 'वालो' (रू. भे.)

उ०—तुम्ह थी कुण मुझ नइ वाल्हूं, हु तउ तुम हिज ऊपरि माल्हु हो। —वि. कु

बाल्हेसर—देखो 'बालो' (मह., रू. भे.)

उ०—१ बाल्हेसर सामी मानि नें तु अंतरयामी, मानि नें सिवगति गामी, वीनतडी मुझ मांनो बा। —प. च. चौ

उ०—२ प्रीतडिया न कीजइ हो नारि परदेसियां रे। खिण-खिण दाझइ देह। वीछडिया बाल्हेसर मलवो दोहिलउ रे। सालइ सालइ अधिक सनेह। —स. कु.

बाल्हो—देखो 'वालो' (रू. भे.)

उ०—१ हे नीला मो पहली जुद्ध मे कट पड़ण री उतावळ थनें नहीं करणी हो म्हैं थनें घणा बाल्हा कवा लवाय पाळियो हो सो म्हनें मरण देनें पडियो होवतौ। —बी. स. टी

उ०—२ गायण दास खवास भणै अवसर मन भाणौ। घट बाल्हो आपरो तिकै पट घूंघट ताणौ। —रा. रू.

उ०—३ ईसाणद, बारट आराधै, भल गुण थारा व्यास भणै। बालमीक् तू ना अति बाल्हो पीरदास अरदास पणै। —पी ग्र

उ०—उणरा लिलाड माथै लुळनै बाल्हो दियो। —फुलवाड़ी

उ०—५ भुज भरिनें भेळाह, मिळस्यूं जदि मन मेळवा। बाल्ही साइ वेलाह, जनम सफल गिणस्यू 'जसा'। —जसराज

उ०—६ बाल्ही नें वलि विनय वहै, गुण संग्रह म्हारा लाल। वहै धरम पमाडै जेह जगत मे जस लहै म्हारा लाल। —श्रीपाल रास

(स्त्री. बाल्ही)

बाव—स. स्त्री [स. वात] १ पवन, हवा।

उ०—१ चलत धाव वेग बाव धाव पाव चंचळे। अही कपाळ नीठ धीर, पीठ कोम आकुळै। —रा. रू

उ०—२ वेगा लीयै मुंठी बाव, राज रथ पंखा राव। मेंगळा ऊरध मड, लेसै आठ भोत लड। —गु. रू. ब

२ अपान वायु।

उ०—पिणियारिया छैला, तनक सी तान, किरकाट्या सा रंग। कागदी जवान, वचन का कहाव ऊट का बाव। —दुरगादत्त बारहठ

३ पताका, ध्वजा।

उ०—बाव फरूकै वेढ वळै न वापरै। पांणा चढिया किलम जिकै 'परताप' रै। —किसोर दान बारहठ

४ देखो 'वापी' (रू भे)

उ०—१ आदमी हजार ४००० जुहर हुवो। सरोवर, कुवा, बाव एतला माहै सूं बाळक ३००० जाळ नखावै काढिया। —नैणसी

उ०—२ देवी देव जाळंधरी सप्त दीपै, देवी कंदरै खल्लरै बाव कूपै। —देवि.

रू. भे—बाव।

बावकूंडियौ, बावकूंडौ—देखो 'बायकूंडियौ' (रू. भे.)

बावड़—देखो 'बावड' (रू. भे)

बावड़णौ, बावड़बौ—देखो 'बावडणौ, बावडबौ' (रू. भे)

उ०—१ वाह वाह 'कुसळा' लघु वेसां, 'हरा' सुतन भेळै वरहास। 'अभा' सुअळ दुरदा आवडीयौ, बावड़ियौ रंगीयां बाणास। —ठाकुर कुसळसिंह रौ गीत

उ०—२ ताहरा कह्यौ—थे मोन् कोई द्रव्यवत बावड़ो। —सयणी री वात

उ०—३ ताहरा ऊदैरी मा न् बोलाई। कह्यौ—वीरम बावड़ो नही तर उदै री खाल कढाऊ छूं, अर भुस भराऊ छूं।—नैणसी

बावड़णहार, हारौ (हारी), बावडणियौ—वि०।

बावड़िओड़ो, बावड़ियोड़ौ, बावड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बावडीजणौ, बावड़ीजबौ—भाव वा०।

बावडियोड़ौ—देखो 'बावडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री बावडियोडी)

बावड़ी—देखो 'बावडी' (रू. भे.)

उ०—गढाळ सहर गढ कोट बाजार पौळि पगार बाग बावड़ी बगीचा कूआ सरवरा री बड़ा पीपळा री छिबि सहर री पाखती विराजि नै रही छै। —रा. सा. स.

बावची—देखो 'बापची' (रू. भे)

बावणौ, बावबौ—१ देखो 'बावणौ, बावबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मूळ मोळता मिनख, मिरडिया घणा घुमावै। हळ बावतड़ी वेर फोगडा बीज तुपावै। —दसदेव

उ०—२ रावळजी तो पूछता छै नै नीबौ तो मोटीयार छै। कदेस भालो पकडने पूठै। रावळजी नै बावै तो म्है किसूंण करा। —बीरमदे सोनगरा री वात

उ०—४ सुध क्षेत्र समकित बीज बावइ, संघ आनंद अति घणौ। जिन सिंघ सूरि करउ चउमासउ, स्रावण मास सोहांमणौ। —समय सुंदर

उ०—५ सचित पूरव करम ना, फल भोगवीइ पुण्य। जिहां बाविउं तिहां ऊगमइ, अण-वाविउ तिहा सून्य। मा. कां. प्र.

२ देखो 'बाजणौ, बाजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ धर लुकट मुकट बन वीथिया बावजै। बासरी बावजै अहीरा बास। —बां. दा.

उ०—२ मतसागर उनमत्ती, वीणा सुर मधुरे वावत्ती। वाहण हंस विगत्ती, साय सुप्रसन हुई सरसत्ती। —गजउद्धार

उ०—३ डफ ताल चग म्रदंग वावत, उडावतहि गुलाल। इह मास फागुन सगुन खेलउ, निरखि मोहि बेहाल। —वि कु.

उ०—४ वरसिंघ बंदि हूता छडावि, अजमेरि कोटि नीसाण वावि। —रा. ज. सी.

वावणहार, हारौ (हारी), वावणियौ—वि०।

वाविओड़ो, वावियोड़ौ, वाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वावीजणौ, वावीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

वावडूक-वि [स] १ बातूनी, बकवादी।

२ वक्ता।

३ वाक्पटु।

वावपोटी-स. स्त्री -घोड़े का एक रोग जिससे उसके पिछले पैरों में नरम ग्रंथियां हो जाती हैं। (शा हो.)

वावरणौ, वावरबौ—देखो 'वापरणौ, वापरबौ' (रू भे)

उ०१ सुरवीर दोई साथ, बोळ चोळ लुयबाथ। वावरंत रूप वीज, खंजरा कटार खीज। —सू. प्र.

उ०—२ कृपावत पहिलै म्रणी, वावर खग्ग करग्ग। 'भीमाजळ' सारा मुहर, पडियौ धारा लग्ग। —रा रू.

उ०—३ विसन ममरजै मीठी वाणी, वावरजो घन देह वडाणी 'ओपा' आ ऊमर ओचाणी, परबत हूँत विछूटा पाणी। —ओपो आढौ

उ०—४ जउ दातार तउ वलि करण अवतार, जउ लक्ष्मी न वावरइ तउ प्रच्छन्न पुण्य करइ, जो उणु बोलि तो भोलउ···। —व. स

उ०—५ स्त्री मंघ मन पुगि रलीए, गुण गाइ गोरडी सवि मिलिए। दक्षीण देव सिरि महलावइए, साहु सुपत्र खेत्रे घन वावरइए। —सिवचूला गणि

वावरणहार, हारौ (हारी), वावरणियौ वि०।

वावरिओड़ो, वावरियोड़ौ, वावरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वावरीजणौ, वावरीजबौ—कर्म वा०

वावरबी-वि.—वन्दी सहित।

उ०—माहाराजा जसवन्तसिंघ सात हजारी असवार तिण मे पाच हजार दोसपा सेसपा, दोय हजार वावरबी २५८० आसामी ५ कासमखान वगेरै। —नैणसी

वावरियोडौ १ देखो 'वापरियोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'वावडियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. वावरियोड़ी)

वावरी—देखो 'बावरी' (रू भे)

(स्त्री. वावरण, वावरणी)

वावळ, वावल-स. स्त्री. [स. वायुगुल्म, वातगुल्म] १ प्रचण्ड-हवा झंझावात 'आंधी'।

उ०—वावळ आगै वीझणौ, की पावै सनमान। तूझ रीझ आगै तिसो, 'देवा' जग चो दान। —बा. दा.

२ आंधी।

उ०—सिर सिंधुर सेरखा, ओप अंबर सिर लग्गा। उरड वडा ऊमरा वधै तुरही सुर वग्गा। कायमखान तरीम जोड चड तीन हजारी। अलीयार असवार हुवौ, गज मिच प्रहारी। आरुहै गयंद अबदळ अली, सैंद महाबळ सद्दळां। हाहुळि असख मिळि हल्लिया, जाणक वावळ वद्दळा। —रा. रू.

३ वायु, हवा, समीर।

वि —१ मस्त, मदोन्मत्त, उन्मत्त।

क्रि. वि —२ ओर, तरफ।

उ०—केहर' साहा भजण, सक राखण कथ्था। विहुं वावळ लागा अडै, भुज डंड समथ्थां। —द दा.

रू भे – बउल, बाउल, बावल, वाउळ, वावल्ल।

अल्पा..—वाउलउ, वाउळउ, वाउळि, वाउळी, वाउळौ, वावळि, वावळी वावळो, वावलो।

वावळि, वावळी—१ देखो 'वावळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०-१ एक सोर सारंति घोर धूवा रवि डंबर। ज्यौं वावळि वादळ विमाळ ओपै मग अंबर —रा. रू.

२ देखो 'बावडी' (रू भे)

३ देखो 'वावळी' (रू भे.)

४ देखो 'वावळौ' (स्त्री.)

उ०—२ जोव जडाग अभनमो 'जैतो,' सदा चलै आपरै सुभाय। लख दत दीयै भाजणो लाखां, केहचो वावळी खुदाय। —तेजसी खिड़ियौ

वावळौ, वावलौ - १ देखो 'वावळी' (रू. भे)

उ०—१ मुख मुख मीठी बोलणत, बैठ न बैरी पास। दही भरोसे वावळा, खायै कई कपास। —अज्ञात

उ० -२ धारण मलाह चित नह धरै, मारण करण उतावळौ। वावळा गयद ममता विधी, वीफरियौ रिण वावळौ। —सू. प्र.

उ०—३ वप गिणत वावळी कुंभ वार, जुध गिणै सती स्रीफळ जुझार। —पे. रू.

(स्त्री. वावळि, वावळी)

२ देखो 'वावळ' (अल्पा., रू भे)

बावल्ल–स. पु.—१ एक आयुध या शस्त्र विशेष ।

उ०—चाप चक्र नाराच अरद्ध चद्र असिपत्र करपत्र क्षुरप्र क्षुरिका करवाल कुत सल्ल बावल्ल भल्ल । —व स

२ देखो 'बावळ' (रू. भे.)

बावसू–सं. पु [स वाह वसु] १ दूत, चर, संदेश-वाहक ।

उ०—साम्हा दौड़ै बावसू, घोड़ो डाक प्रमाण । साह अकब्बर वयण सू खबर लियण सुरताण । —रा. रू

२ जासूस ।

उ०—१ इतरे मस खड आविया, साथ बावसु सताव । अकबर कहियौ आवते, वहियौ साह निबाब । —रा. रू.

उ०—२ तठा पछै रावळ देवराज धार ऊपर कटक कियौ, सु पवारा रा बावसू था त्यां रावळ चढिया री खबर दी। —नैणसी

रू भे.—वाउस ।

बावार–देखो 'व्यवहार' (रू भे.)

उ०—'पदम' मुख्य आगळी दरसणिया पधारण, वधारण खडग घड करण बावार । —गोरधन गाडण

बावि, बाविय—देखो 'वापी' (रू. भे)

उ०—१ जिम वन माहि मालती, वास-विहूणी बावि । तिम घट माहरू पापीउ , एकू कामि न आवि । —मा. का. प्र.

उ०—२ कूआ बावि, सरोवर घणा, विवहारीयानी नही कोई मणा तिण नयरी श्रेणिक नरनाह जिणवर आण धरै उच्छाह । —सीपालरास

उ०—३ गढ मढ मंदिर पोलि प्राकार बावि सरोवर कूआ खाइ आराम वन खड बिभुइआ त्रिभुइआ आवास । व स

उ०—४ मुहि मुहि किय अड दत दतहि दतहि अड वाविय। वावि-वावि अड कमल कमलि दल लखु लख न (ना) विय । —अमर्यातक यति

बावियोड़ौ—१ देखो 'बावियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'बाजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बावियोड़ी)

बावी—देखो 'वापी' (रू भे)

उ०–सरोवरा तटाक हौद, तीरथ प्रमाण ए। बावी अनूप कूप वाई, नीझरँ निवाण ए । —गु रू. ब.

बावीसेक—देखो 'बाईसेक' (रू. भे.)

बावु, बावू—देखो 'वायु (रू भे)

उ०–ढोलइ चढि परतालिया, डूगर दीन्हा पूठि । खोजे बावू हव्वड़ा, धूडि भरेसी मूठि । —ढो. मा.

बावेळौ, बावेलौ–सं पु. [फा. वावैला] १ कोलाहल, शोर गुल ।

२ रोना-पीटना, त्राहि-त्राहि ।

३ चिल्लाहट ।

बावोकळी–सं. पु. [स. वाताकुल्य] वह स्थान जहाँ खुली हवा आती हो।

बावोड़—देखो 'बावड' (रू. भे.)

बावौ–स पु [स. वपनम्] १ रबी की फसल मे बोया जाने वाला बीज ।

२ रबी की फसल की बोवाई या जुताई ।

बाव्य—देखो 'वापी' (रू भे)

उ०—बाव्य कुवा सरोवर जिहा । —धरम पत्र

बासत–स पु. [स. वासंत] १ ऊट ।

२ हाथी ।

रू भे —बासत ।

३ देखो 'वसत' (रू. भे.)

उ०—देवी रूप बासंत रे वस्त्र राजै। देवी आग रे रूप तू वस्त्र दाझै । —देवि

बासती–स स्त्री.–१ एक वर्ण वृत जिसके प्रत्येक चरण मे चौदह वर्ण होते हैं और ६, ७, ८, व ६ वा वर्ण लघु होता है । शेष सभी वर्ण गुरु होते हैं ।

२ देखो 'वसती' (रू भे)

बासंदर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे)

उ०–उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पडइ रवंद । का बासंदर सेवियइ' कइ तरुणी कइ मद । —ढो मा.

बास–म. पु. [स वास.] १ रहने की क्रिया, निवास, आवास ।

उ०—१ काळ है, प्रदेस ना सदेस औ करयौं । देसतें विदेस बास त्रासते डरयौं । — ऊ. का

उ०—२ हर कोई जीव धालिया हाळी, बास सदा जिण माय वसै । परठण कज रोटी कपडा री, जिको कमावै भोग जिसै । —ओपौ आढौ

उ०—३ लोग मारो कामरो बडो दिलावर पण धूहड गवार लोग सो उघाडो ही जे रहे । पंछी ज्यू बास रहै । —दूलची जोइयेरी वारता

२ विश्राम, आराम ।

उ०—१ पण पावू स्त्री रो मुख ही न दीठौ नै तरवारां रै धारातीरथ मे स्नान कर सती सहेता सुरग बास कीधौ । —वी. स. टी.

उ०—२ हे प्रभू इण आराम री ठौर रे बणावणे वाला नू वकुंठ रो बास देय आराम दीजे । नी. प्र.

३ रहने का स्थान, डेरा ।

उ०—१ ढोलइ सूवउ मीख दइ, जा पछी ग्रह बास। उडियर पाछउ आवियउ, माळवणी कइ पास। —ढो. मा.

४ घर, गृह। (अ मा., ह. ना. मा.)

उ०—१ म्हारै तो माता श्री हीज डायजी है म्हनै तो सुख रै बास परणाजे—अरथात ऐड़ो सुखस होवै किण सू इ लडं न भिडं गरीब होवै तो सुख है। —वी. स टी.

उ०—२ अबै राघवदे सासरै गयौ। दिन पाच रह्यो। आणो करि छिपियै आयो। तिको जैतसीजी रै बास बसियो।

—जैतसी ऊदावत री बात

५ मोहल्ला।

उ०—१ अणंद पढीयां री बास १ रायसळ री बास १ अचळा जसड री बास। —नैणसी

अल्पा.—बासडियौ, बासेडौ बासडियौ, वासडौ।

६ जगह, स्थान।

उ०—नही तू अन्न नही त ग्रास। नही तु बन्न नही तु बास।

—ह. र

७ शरण, पनाह, आसरा।

उ०—१ ताहरा हरदास उण वगत बीरमदेजी री बास छाडियौ। नागोर नूं हालिया, सरखेलखा रै वास रहण नूं। —नैणसी।

उ०—२ पछै कितराहेक दिने राठौड़ तेजसी राणा उदयसिंघ रै बास वसीया। —राव मालदेव री बात

उ०—३ सहर अजमेर वडौ गढ। तेथ राजा वीसलदे चहवाण राज्य करे। वीसलदे रे बास हरराम चहवाण रहे।

—देवजी बगडावता री बात

८ पास मे रखने या बसाने की क्रिया।

उ०—ताहरा राजा हरराम नु कहे। हरराम तु म्हा घरै बास। घरै ले जाह ज्यु थारी दुहुवा री पण रहे।

—देवजी वगडावता री बात

९ गध, बू।

उ०—१ अबूझ बाळक नै तो जाणै प्रीत री बास आवै।

—फुलवाडी

उ०—२ जिण मारग केहर वुवौ, लागी बास तिणाह। ते खड ऊभा सूकसी, नह चरसी हिरणाह। —अग्यात

१० सुगध, महक।

उ०—१ रवि भैरव जीवणी, घणां आणद चहक्की। संग वेळ सूरमा, बास अगरेळ महक्की। —रा रू.

उ०—२ सुहड़ा स्रब अग चग दिग्गबर' राइ अगण सोभ ए। मधुकर गुंजार डबरी सामळ, परिमळ बास लोभ ए। —गु. रू. ब.

उ०—३ जावमी देह सोभा न जावसी। बास रह जावसी फूल वाळी। —भीखजी रतनू

अल्पा.,—बासडी, वासड़ी।

११ वस्त्र, परिधान, पोशाक।

[स. वाश] १२ गर्जना, दहाडना क्रिया।

१३ चिल्लाहट।

१४ भूकने की क्रिया।

१५ गुंजन, गुजार।

१६ बुलावा, पुकार।

१७ वस्तु, पदार्थ।

१८ जागीर।

रू. भे —बास, बास, वासइ, बासई, वासउ, वासि।

अल्पा,—बासड़ी, बासड़ो, वासडली, वासड़ो।

बासइ, बासई, बासउ—देखो 'बास' (रू. भे)

उ०—१ चिंतामणि निव्रत्ति करिवा आविउ, कल्पतरु जीणइं कारणि वेस्या तैं काई भक्ति प्रकामइ, जीणइ पिराय मन बासइ।

—व. स.

उ०—२ करहा तो बंसासडउ, मो विण-सारधा काज। अंतरि जउ बासउ हुवउ, मारू न मिळइ आज। —ढो. मा.

उ०—३ बाबा म देइस मारुवा, सूधा एवाळाह। कधि कुहाडउ सिरि घडउ, बासउ मभि थळाह। —ढो. मा.

बासक—स पु [स. वासक] वस्त्र, कपडा।

रू भे – वासक।

वि [स. बासक] १ बसने वाला, निवास करने वाला।

२ बसाने वाला, आबाद करने वाला।

[स. वाशक] ३ दहाडने वाला, गर्जने वाला।

४ ध्वनि करने वाला।

५ देखो 'वासुकि' (रू. भे.)

उ०—बद्री बासक व्यास वेदा-बाण। परम निरत मुकति मद पावण। —ह. र.

बासडी—देखो 'बास' (९ १० अल्पा., रू भे.)

बासकसज्जा—स. स्त्री [स] वह नायिका जो अपने नायक से मिलने के लिये सज धज कर तैयार बैठी हो।

रू भे —बासकसजा।

बासकेट—स स्त्री [अ. वेस्टकोट] बिना आस्तीन व बिना गले की पट्टी की एक प्रकार की फतुही, जाकिट या वडी जिसके आग-पीछे के कपडे मे प्रायः भेद होता है।

बासग—देखो 'वासुकि' (रू. भे.)

उ०—१ रतन मे राखड़ी वेणी वासग जड़ी, सूभरा वाहड़ी लहक लोड़ै । स्वाति नो बिंदलो नासिका निरमयो, आज आल्यवन करन कोड़ै । —रुकमणी मंगळ

उ०—२ हामी-नमामी कर रहया छै, माथै रा जूड़ा केसा रा छूटा छै । सू किसा नजर आवै जाणै काळा वासग तिरै छै ।

उ०—३ मरग इद्र मलहियै राव पायाळै वासग । मान लोक नू राव कहा हव ओपम कासग । —नैणसी

उ०—४ अंता तणी रीत अजवाळी, खागा मुहै पाडिया खळ । 'जग राजोत' ईढ रा जाता, जडिया वासग सर जुयळ ।
—नेजसी खिड़ियौ

वासग-नाग—देखो 'वासुकि'

उ०--मीस वण्यो ए नारेळ, मिरगानैणी जी राज । चोटी तो कहियै वासग नाग, की सी म्हारा राज । —लो गी

वासगेस—देखो 'वासुकि' (मह , रू. भे.)

उ०—लादा पाता बैरडा रूपगा राग नाही लुबै, सनातना दीधा त्याग इरादा कुमीक । वासगेस नाग 'मघा' कंड रा 'कुसाळ' बापौ, लोपै नोज सोभाग अजादा मग्रा लीक । —कविराजा करनीदान

वासड़ली—देखो 'वास' (९. १०) (अल्पा., रू भे.)

उ०—कहा बसियो कान्हा रातडली । अरै तेरै मुख बिच आवै मोहै वासड़ली । —मीरा

वासड़ियौ—स पु [स. वास+रा प्र. डियौ] १ गाव के एक मुहल्ले (वास) का जागीरदार ।

उ०—कोई ठावो गामेती वासडियौ तथा घररो धणी रजपूत मरै, मोटियार के काम आवै तो उणरी वायर गाघराणी करै ।
जखडा मुखडा भाटी री बात

२ देखो 'वास (अल्पा., रू. भे)

३ देखो 'वासी' (अल्पा , रू. भे)

रू भे —वासडियौ ।

वासड़ै—क्रि वि.—निकट, समीप, नजदीक, पास ।

वासड़ौ—देखो वास' (अल्पा., रू. भे)

उ०—वैरी वाडै वासड़ौ, सदा खणक्कै खाग । हेलो कै दिन पावणो, चूडो भाग सुहाग । —वी स

वासण—स.पु. [स वासन] १ दुर्गन्धित करने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

२ सुगन्धित या सुवासित करने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

३ निवास करने या बसने की क्रिया ।

४ घर, मकान ।

५ कोई पात्र, टोकरा, पेटी आदि ।

उ०—१ ताहरा वेलदारा ऊडा खिणनै काढिया । देखै तो भूंआई रा वासण छै । चरवा, द्रेगा, कुंडिया थाळिया । —नैणसी

उ०—२ तठा उपरायंत भोइया नै हुकम हुवो छै । भुजाई रा वासण तयार कर राती नाडी चालज्यो । सू वासण तयार कीजे छै —रा. सा स.

उ०—३ थाल कचोला वाटला, वासण चरवी चग । मग गोधू-मादि दियै, प्रथवी रतन सुरग । —वि कु.

६ वस्त्र, परिधान ।

७ चादर, गिलाफ ।

८ आच्छादन ।

९ ज्ञान ।

रू. भे —वासण ।

वासणौ, वासबौ—१ सुगध लेना, सूंघना ।

उ०—कडिया मुंवै पाणी मे पैस पगा रा नख भाखै छै, दूध रै भोळावै बिलाव वासीजै छै । ऊपर कूजा, सारसा गहकनै रही छै ।
—रा. सा. स.

२ देखो 'भासणौ, भासबौ' (रू. भे)

उ०—गोवर कीडउ किमिउ भ्रमर जिम रण भणइ, धवलउ बक किसिउ राजहस जिम चालइ, काग किमिउ कोकिला जिम वासइ, मयूर जिम ! रसिउ टेलि किगाइ । —व स.

३ देखो 'बासणौ, बासबौ' (रू. भे)

उ०—देखौ किण एक भवि मुनि आन जो, निंदा कीधी रै तेहनी घणं घणी रै लो । एतो मीनक नी परि म्लान जो, मछ जिम वासै गध देही तणी रै लो । —वि कु.

४ देखो 'बसाणौ, बसावौ' (रू भे)

उ०—ताहरा ईयै बाभण एक जाडनै फूटरी देखिनै टाळि लीधी । बामण खोडो हतो निकै आगिनै घर वासी ।
—देवजी वगडावता री वात

वासणहार हारौ (हारी) वासणियौ—वि० ।

वासिओडौ, वासियोड़ौ, वास्योडौ- भू० का० कृ० ।

वासीजणौ वासीजबौ—कर्म वा. ।

वासल- स. पु [स] गधा ।

वासतपत, वासतपति—स. पु [सं वास्तोपति] १ इन्द्र ।

२ वास्तुपति ।

वासते, वासतै—देखो 'वास्तै' (रू भे)

उ०—१ देस सिंध ऊनड दियौ, दीधौ सिर जगदेव । 'बांका' जस रै वासतै, दाता न कू अदेव । —बां. दा.

उ०—२ ताहरा सुमरो-साळा कहण लागा—ये बाहिर निकळो नही, घर माहै बैठा रहो सो किसै वासतै । —नैणसी

उ०—३ ताहरां हरराम कहै। माहाराजा मो मैं दोस कोई छै नहीं। स्रीपरमेस्वरजी जाणं छै हूं किसै बासते ईयै नु ले जाऊं।
—देवजीबगड़ावता री बात

बासवी, बासदे—सं. पु. [स. विश्वे-देव, वैश्वानर] १ यज्ञ का अधिष्ठाता, अग्नि देव।

२ अग्नि, आग।

उ०—१ रामजी री माळा रैं बासवी लगाय धणी सूं छांनै बचायोड़ी गूंजी हाथ मे राखती तो म्हनै ऐ दिन नी देखणा पडता।
—फुलवाड़ी

उ०—२ खाफरा जइत वाहइ खडग्ग, बासवे जांणि वन्ने विलग्ग। ऊतरा सेनि 'जइतउ' अबीह, सीधरै पईठउ जाणि सीह।
—रा. ज. सी.

रू. भे.—बासते, बासतै, बासदी, बासदे, बासदेव, बास्ती, बास्ते, बाहदी, वसदे, वसदेव, वाग्रदी, वाग्रदे, वामदेव।

बासदेव—१ देखो 'वासदे' (रू. भे)

उ०—ताहरां खापरैं नीचै बासदेव जगायौ, खांड रा काबा माहै घात पाणी घातियौ। —राजा भोज भर खापरा चोर री बात

२ देखो 'वासुदेव' (रू. भे) (अ. मा., नां. मा.)

उ०—वसदेव पिता हुआ तैंके घर बेटौ हुऔ तौ बासदेव स्रीक्रस्ण हुऔ।
—वेलि टी.

बासदेवा—देखो 'वासुदेवा' (रू. भे.)

बासना—स. स्त्री [स] १ अभिलाषा, इच्छा, मनोकामना, चाह। (ह. नां मा)

२ जन्मान्तर के जमे हुए संस्कारो से उत्पन्न मानसिक दुःख-सुख के भाव, विचार।

उ०—दादू देह यतन कर राखिये, मन राख्या नही जाइ। उत्तम मध्यम बासना, भला बुरा सब खाइ।
—दादूवांणी

३ भावना, ख्याल, धारणा।

उ०—प्रभणति पुत्र इम मात पिता प्रति, अम्हा बासना वसी इसी। ख्याति किसी राजविया ग्वाळा, किसी जाति कुळ पाति किसी।
—वेलि.

४ न्याय के अनुसार देहात्मक बुद्धि जन्य मिथ्या संस्कार, विचार।

उ०—विमळ हुवै मन मिटै बासना, रहि एकत समरिये राम।
—ह. ना. मा

५ कल्पना।

६ स्मृति।

७ ज्ञान।

८ दुर्गा का एक नाम।

९ अर्क नामक वसु की पत्नी का नाम।

१० भोग-विलास, विषय।

११ गध, बू।

उ०—१ तद राजा सारा सरदारां ने कही—या किसी बासना है। जद सारा ही कही, महाराज या तौ सागं हो मछी री बासना आवं है।
—साहूकार री बात

उ०—२ तिहा वली सबळौ सिंह विकूरवी रे, ते कहै मैं दीठौ इक सींह रे। माणस नी लेतौ बासना रे, आवं छै इण वार अबीह रे।
—वि. कु.

१२ सुगध महक।

उ०—१ फूला मर्भ बासना, तिल तेल विलोये।
—केसोदास गाडण

उ०—२ पछै ढोलोजी ने मारवण ढोलीयै पोढीया छै। तिण समै मारवणीजी रै बासना कस्तूरी सरीखी वास रही छै। विहुं जणा सुख मे पोढीया छै।
—ढो. मा.

रू. भे —बासना।

बासनी—स. स्त्री.—शराब, मदिरा।

वि. स्त्री —निवास करने वाली, बसने वाली।

उ०—देवी कामही लोचना हाम कामा। देवी बासनी मेर माहेस वामा।
—देवि.

बासन्न—बि.—१ सुगंधित, सुवासित।

२ देखो 'वसन' (रू. भे.)

उ०—बासन्न पीत विचार सरवर। धनुख सायक धार।
—र. ज. प्र.

बासपुज, बासपूज, बासपूज्य—देखो 'वासुपूज्य' (रू. भे.)

बासमती—स. पु.—सफेद चावलो की एक जाति व इस जाति के चावल जो ऊंचे दर्जे के व स्वादिष्ट होते हैं।

उ०—छूटा चावळ राधण रैं पगां बासमती मंगायजै छै।
—रा. सा. सं.

बासर—स. पु. [सं वासरः, वासर] १ दिन, दिवस। (अ. मा.)

उ०—१ हुवै जेम हरहस सू बासर कमळ विकास। एम धरम जस व्है उभै, दत सू बांकीदास।
—बा. दा.

उ०—२ बासर विन्न न वीसरइ, निसि भरि अवर न कोइ। जइ निद्रा-भरि भोगवूं, तउ सुपनंतरी सोइ
—ढो. मा.

उ०—३ इम बासर ऊगता डाक बागी दसदेसा। जुध जीता 'अभजीत' सुणै जवनेस नरेसा
—सू. प्र.

२ प्रातः काल, सवेरा।

रू. भे.—बासर, बासुर, बासुरी, वासुर, वासूर।

बासरकर, **बासरकिरण**–सं. पु [सं. बासर+कर, बासर:+किरण:] सूर्य, भानु।

रू. भे.—बासरकर, बासरकिरण।

बासरमणि–सं. पु. [सं.] सूर्य, सूरज।

बासव–सं. पु [सं बासव] १ इन्द्र का एक नाम, इन्द्र।

(ना डि को., नां मा., ह. ना. मा.,)

उ०—१ व्रज राखियौ विगोयौ **बासव**। वडौ प्रवर कुण किसन वड। —ह. ना. मा.

उ०—२ दीजै जोड किसी न्रप दौलत, राज विभौ अवरेख। मात सुखा भुगतै दिन साजा, **बासव** हूत विशेष। —र. रू

उ०—३ इण बें विधि **बासव** विध विध भजै, इणरी महिमा कहै महेस। —गी. रा.

२ महादेव, शिव। (ना डि. को)

वि. [सं. वसव]—इन्द्र, का, इन्द्र सम्बन्धी।

रू भे.—बासब, बासव, वासिव।

बासबांणो–सं. पु [सं. वस्] निवास स्थान, निवास।

उ०—मेडतो गाम सोह पडायो, रावळा घरा रा खेत किया सहैर नाडी दोराणी कन्हे **बासबांणो** कीयो थो। कहै छै कइक हुडा हुवा था। —नैणसी

बासवि, **बासवी**–सं स्त्री [सं बासवी] उपरिचर वसु की कन्या सत्यवती (मत्स्यगधा), व्यास की माता। (डि. को.)

सं. पु.—१ अर्जुन। (डि को)

२ इन्द्र पुत्र जयन्त।

रू भे.—बासवी।

बासवीदिसा–सं. पु. [सं] इन्द्र की दिशा, पूर्व की दिशा।

• रू. भे.—बासवीदिसा।

बाससुकुम–सं. पु.—वदन। (ना मा)

बाससुमेर, **बाससुमेरु**–वि. [सं. वास+सुमेरु] सुमेरु पर्वत पर निवास करने वाला।

सं. पु.—देवता।

रू. भे.—बाससुमेर, बाससुमेरु।

बासावळी–सं स्त्री [सं. वास+प्रवळी] १ सुगध, महक।

उ०—१ अबर मोरीजै छै। कूंपळा फूटीजै छै। वणराइ मंजरी छै। **बासावळी** फूटि रही छै। केसू फूलि रहिया छै। रितिराज प्रगटीभो छै —रा. सा स

उ०—२ माहरी आवळी घडा सर सावळां, झीक पड कावळी रोप झंडा। अर गजा खून काटै बिना आवळी, खुलै **बासावळी** तेण खडा।

—राव ऊदाजी रो गीत

२ सुगंधित पदार्थों का समूह।

रू. भे.—बंसावळी, बासवाळी, बासांवळी, बासावळी, बासावळी

बासिग—देखो 'बासुकि' (रू. भे.)

उ०—रठियौ राउ भाटि लागै अंबरि, दोमजि **बासिग** खांड ग्रहै। जुध सूतो कुभ करन्न जगायौ, गोइददास बाणास ग्रहै।

—गु. रू. ब.

बासिदौ—देखो 'बासिंदौ' (रू भे.)

उ०—धूळ अर रूडिया री रजी सूं भरभूरव्हियोड़ा भां टपरिया रा **बासिदा** इण धरती माथै कोढ ज्यूं रगवगै। —फुलवाड़ी

बासि–सं. पु. [सं बाशि] १ अग्नि देव।

[सं. वासि] २ वसूला।

३ कुठार।

४ छैनी।

५ देखो 'बास' (रू. भे)

उ०—१ माई एहा भीचडा, मोलि महूगै **बासि**। ज्यां आछतां दूरि भौ, दूरि थका भौ पासि। —हा. भा.

उ०—२ स्रीक्रस्णजी जैसे कोई आणि बधाई दे छै। तइसें सोंधा के **बासि**, अर नूपुर कै सबद, आणि बधाई दीन्ही। —वेलि टी.

बासिग देखो 'बासुकि' (रू भे.)

उ०—१ सिरि वेणी मिरली भ्रमी, जाणइ **बासिग** नाग। बीहता माटइ बभणइ, कीधु ताहरु त्याग। —मा. का. प्र.

उ०—२ नान्हइ किसनइ नाथियौ, **बासिग** नाग बडेरौ रे। नास करइ रवि नान्हडौ, अधकार बहुतेरौ रे। —प. च. चौ.

उ०—३ तठा उपराति करि नै राजान सिलांमनि नख सिख सूधौ सिणगार वखांणीजै छै। **बासिगां** सारीखी पहपवेण ऊपरि सीमफूल मोतिआरो वणाव वणिनै रहिभो छै। —रा. सा. स.

बासिट्ठ—देखो 'बासिस्ठ' (रू. भे)

बासिद्द–सं. पु.—शिव, महादेव। (डि ना. मा.)

बासियोडौ–भू. का. कृ.—१ सुगन्ध लिया हुआ, सूघा हुआ।

२ देखो 'भासियोडौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बासियोडौ' (रू. भे.)

४ देखो 'बसायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बासियोडी)

बासियो–वि.—निवास करने वाला, निवासी।

उ०—भुज लगा ऊडै त्रण पोहोर भाराथिया, **बासिया** सुरग अर कीया गळ बाथिया। सू 'सुरताण' रण घणा समराथियां, सुज घणा रण 'सुरताण' रा साथीया। —ठाकुर सुरताण सिंह रो गीत

बासिव—देखो 'बासव' (रू. भे.)

उ०—**बासिव** घर मजलेस, नेस लखि ईस परक्खौ। 'अभै' जिसौ नर अवर, राज घर कुंवर निरक्खौ। —रा रू.

बासिस्टी, बासिस्ठ—स. स्त्री. [स. वाशिष्ठी] राजस्थान की बनास नदी का नाम।

उ०—पच प्रयुत लय सग दळ, होय किलम हमगीर। कियौ मुकाम उलधि जळ, खळ बासिस्टी तीर। —ला. रा.

वि.—१ वसिष्ठ का, वसिष्ठ सम्बन्धी।

२ वसिष्ठ का वशज।

रू. भे.—बासिस्टी, बासिस्ठी, वासिट्ट।

बासींदौ—देखो 'बासिदौ' (रू. भे.)

बासी—वि. [सं. वासिन्] १ निवास करने वाला, रहने वाला, निवासी।

उ०—१ नाम तुमारू स्यु अछै, किम छोड्या मा बाप। किण नगरी किण देस ना, बासी छौ महाराज। —वि. कु.

उ०—२ अळगी-अळगी भांय रा बासी आप-आप री बोली मे दाछट बोलै अर सुणणिया दाछट समझै। —फुलवाडी

३ मुहल्ले का, मुहल्ले सम्बन्धी।

सं पु.—१ वह व्यक्ति जिसका किसी गाव या कस्बे के केवल एक मुहल्ले पर ही जागीरी सम्बन्धी अधिकार हो।

२ देखो 'बासी' (रू. भे.)

अल्पा.—वासडियौ।

बासीजवारी—स. स्त्री.—विवाह के समय दूल्है को सुसराल की तरफ से दी जाने वाली प्रथम भेंट। (चारण, राजपूत)

रू. भे.—बासीजवारी।

बासीवड़—स. पु. [देशज] किसी सम्बन्धी या कुटुम्बी के मृत्यु के बाहरवे दिन प्रात काल स्त्रियो द्वारा किया जाने वाला रुदन।

बासु—सं पु. [स] १ जीव, आत्मा।

२ विश्वात्मा, परमात्मा।

३ विष्णु भगवान का नामान्तर।

बासुकि बासुकी, बासुगि—स. पु [स. वासुकि:] १ कश्यप एवं कद्रू के नाग पुत्रो मे से एक जो आठ नाग राजाओ मे से एक गिना जाता है।

उ०—काम देव कटारउ बाधइ, बासुगि खाट पहरउ दिइ। —व. स.

वि. वि.—इसकी पत्नी का नाम शतशीर्षा था। देवो व असुरो के समुद्र मन्थन के समय यह मंथनदण्ड की रस्सी बना था। यह शिव के गले पर निवास करता है। त्रिपुरदाह के समय यह शिव के धनुष की प्रत्यचा व रथ का कूबर बना था। इसके भतीजे का नाम आस्तीक था जो एक ऋषि था।

२ शेष नाग, जो कश्यप एव कद्रू के पुत्रो मे से एक था। यह आठ नागराजाओ मे से एक माना जाता है।

वि वि.—इसे भगवान् का अशावतार माना जाता है एव उसके लिए शय्यारूप होकर उसे धारण करता है। इसका निवास स्थान पाताल लोक है। यह समस्त पृथ्वी को अपने शिर पर धारण करता है। गंगा के उपासना करने पर इसने उसे ज्योतिष शास्त्र एव खगोल शास्त्र का ज्ञान दिया था। श्रीकृष्ण जब वसुदेव द्वारा गोकुल ले जाये जा रहे थे उस समय इसने उसकी रक्षा की थी।

३ एक प्राचीन देवता।

४ सर्प, साप।

उ०—१ आवाहन कर बासुकि हि, विक्रम कही सुणाय। ब्राह्मण नू अब हाल ही, निस्चय देहूं जिवाय। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ कुब्जा नूं करि रूप युत्त, मनसा मम इमि थाय। इतरी सुण कर बासुकी, विधा दई बताय। —सिंघासण बत्तीसी

रू. भे —बासक, बासग, बासिग, बासुकि, बासुकी, बासुग, बासंग, वासग, वासिग, वासिग।

बासुदे, बासुदेव—स. पु. [सं. वासुदेव] १ श्रीकृष्ण।

उ०—१ बासुदेव पिता सुत थिया बासुदं, प्रदुमन सुत पित जगतपति। —वेलि.

उ०—२ महासग्राम राम रावण तणउ, लवण सागर तणु, लावण्य तउ वासुदेव तणउ, आचारय तप सनत्कुमार तणउ...। —व. स.

उ०—३ भरतेस्वर बाहु बलि आपमाहिं सग्राम करइ, बासुदेव बलदेव द्वारिकानउ दाघ ऊवेखइ। —व. स.

२ परमेस्वर, ईश्वर। (ह ना. मा.)

उ०—रामकिसन हर नारियण, सचितानद गोविंद। बासुदेव बीठळ बिसन, नरहर गोकुळचद। —ह. र.

३ वसुदेव के वशज।

रू भे —बासदेव, वासुदे, बासुदेव, वासदेव।

बासुदेवक—स. पु.—श्री कृष्ण का उपासक।

बासुदेवा—स. पु —भाटो की एक शाखा।

रू. भे —बासदेवा, बासुदेवा, वासदेवा।

बासुदेवौ—स. पु —भाटो की वासुदेवा शाखा का व्यक्ति।

वि. वि.—ये जाड़ो की पिछली रात में गीला कपड़ा सिर पर ओढ कर बस्ती मे फेरी लगाते हैं और याचक वृत्ति करते हैं।

वासुपुज्य, वासुपूज्य--सं. पु. [सं वासुपूज्य] जैनियो के बारहवें तीर्थंकर का नाम। (जैन)

रू. भे.--बासपुज्य, वासपुज, वासपूज्य।

वासुभद्र--स. पु. [सं] श्रीकृष्णचंद्र।

वासुर--देखो 'वासर' (रू. भे.) (ह. नां मा.)

उ०--१ कनक दांन कुरखेत बिरधि, गुणि वासुर वासुर। सुबुध वधै सत सग, ध्यांन गुर वांणि उजागर। --रा. रू.

उ०--२ म्हारो सुजस भ्रमर, 'करणावत' वासुर अग बहु हुवै वितीत। --द. दा.

उ०--३ सुभ वासुर सुभ्भ जोग वेळा, तिल्लक्क निलाट ताण ए। सोलह मुखि कळा चद सपूरण, द्वादस ऊगति भांण ए। --गु रू ब

वासुरा--स स्त्रीं [स.] १ पृथवी, धरती।

२ रात्रि, रात।

३ स्त्री, नारी।

४ हथीनी।

रू. भे.--बासुरा।

वासू--स. स्त्री. [सं] १ जवान लड़की।

२ कुंवारी लड़की।

वासूर--देखो 'वासर' (रू. भे.)

वासूळो--देखो 'वसूलो' (रू. भे.)

उ०--ऊछळै खळै तज तुरंग एक। वासूळै पूळा सू विसेख। --रा रू.

वासं--देखो 'वांसं' (रू. भे)

उ०--१ तारा कूंपो जोधपुर गयो। नै इण जावता साराई रिण-मलोत गया। अर वासं घोडा सात सो रायमल खनै रया। --द. दा.

उ०--२ तद इहां कही म्हे वीरभाण कुंवर रा चाकर छा। सु म्हानै वासं राख हुतो सु हमैं म्हे कवर री खबर करण जावां छां। --चौबोली

वासो--स. पु. [स. वासः] १ रहने क्रिया या भाव, निवास।

उ०--१ सरस्वती रो वासो सब्दा में। --फुलवाडी

उ०--२ गया भ्रम्म अकरम्म, गया जमहंदा पासा। गया मुगति दोइ पक्ख, गया प्रभ हंदा वासा। --जगो खिड़ियो

२ निवासस्थान।

उ०--भगा पौरस माण भग्गो, अड सगर उमराव अग्गो। ताप सुणि अप जेम तासा, वसं खळ गिर-भिखर वासा। --सू. प्र

३ विश्राम।

उ०--१ एक पड़तळ नूं बळद। तिकै रजपूत गांव मोतीसर आय वासो लियो। रात रह्यो। --नैणसी

ऊ०--२ विदेसीड़ा रे आयो छै रे चौमासो, मारग रो प्यारो खेद उतारो, म्हारै डेरै लै वासो। --रसीलैराजरो गीत

४ विश्रामस्थल, डेरा।

५ गाव।

उ०--प्रिब माळवणी परहरै, हाल्यउ पूंगळ देस। ढोला म्हां बिच मोकळ', वासा घणा बसेस। --ढो. मा.

६ पडाव।

७ एक शिकारी पक्षी।

उ०--हमें तीतरा ऊपर बाज छूटै छै। करवांनकां ऊपरै जुररा छूटै छै। तिलोरा ऊपरा वासा छूटै छै। --रा. सा. स.

रू. भे.--बासो।

वास्तव--वि [स.] १ असली, मूल, सही, सच्चा।

२ प्राकृतिक।

३ सारयुक्त, तथ्य युक्त।

४ निश्चित, निर्ष्टि।

स. पु.--निश्चित की हुई कोई वस्तु।

वास्तवा--स. स्त्री. [स.] उषा काल, प्रातः काल।

वास्तविक--वि. [स.] १ सत्य, यथार्थ, प्राकृतिक, असली।

२ ठीक, उचित।

रू. भे.--बास्तविक।

वास्तविकता--स.स्त्री. [स. वास्तविक+ता. प्र.] १ सच्चाई, असलियत।

२ औचित्य।

वास्तुपूजा--स. स्त्री. [स.] नवीन घर मे गृह प्रवेश के आरभ में की जाने वाली वास्तु-पुरुष की पूजा।

वास्तुविद्या--स स्त्री. [स] भवन-निर्माणकला, अभियान्त्रिक, इन्जी-नियरिंग।

२ चौसठ कलाओ में से एक। (व. स.)

३ बहत्तर कलाओं मे से एक। (व. स)

वास्तुसांति--स. स्त्री. [स. वास्तु-शान्ति] नवीन-गृह-प्रवेश के समय किये जाने वाले शान्ति कर्म आदि।

वास्तुशास्त्र--सं पु. [स. वास्तु शास्त्र] वह शास्त्र या ग्रन्थ जिसमे भवन-निर्माण सम्बन्धी सारी बातों की उल्लेख होता है।

वास्तुसिद्धि--स. स्त्री. [स.] स्त्रियों का चौसठ कलाओ में से एक। (व. स.)

वास्ते, वास्तै--अव्य. [अ] १ निमित्त, लिये।

उ०—१ ताहरां नरे कह्यौ–माजी । हूं ईयें नू गुदरूं छूं थाहरे बास्तै छै ईयें रै घरें । —नैणसी

उ०—२ ताहरा फरवास बढायौ ढोल रै बास्तै । ताहरा पुकार गई । राज ! फरवास बीरमजी रै लोके वाढियौ । तोई जोईयां गई कीवी । —नैणसी

उ०—३ दीवांणजी कह्यौ–घोडौ तो फगत म्हारै बास्तै ई चाहीजै । दूजोडा तौ सगळा लुक्योडा रैवैला । कठै ई कुबमादी न्हाटग्यौ तो म्हारै मन री मन में रै जावैला । यूं आ बात घणीं चोडै किण बास्तै करै । —फुलवाड़ी

२ कारण से, प्रयोजन से ।

उ०—ताहरां गोगादेजी मगरां में पराणी घाव दीठा, तद कह्यौ औ कासूं छै । ताहरा उठै रजपूत बहुत दिलगीर हुवौ । ताहरा गोगादेजी कह्यौ–रे किसै बास्तै ? ताहरां राजपूत सारी हकीकत कही । —नैणसी

उ०—२ कह्यौ रे तू अठै क्यो ऐकलौ रहै छै । सहर तो कोई नही । जद सूथार कही जी अठै एक वस्तु हू वणाऊ छु तेरै बास्तै रहूं छुं । —चौबोली

रू. भे.—बासते, बासतै, बास्ते, बास्तै, वासते, वासतै ।

बास्तौ–सं. पु. [अ. वास्तः] १ सम्बन्ध, लगाव ।

२ प्रयोजन, मतलब ।

उ०—राजाजी उणरा हाथ सू पानो लिय इण भांत जोर जोर सूं बाचण लागा, जाणै नाई नै बाच सुणावै, वारा सू उणरो की बास्तो नी । —फुलवाडी

३ माध्यम, जरीया ।

४ कारण ।

उ०—मोटा रूप मूं जठा ताई सुणनै समझण री सवाल है, भाखा प्रात मे बातचीत साहू अटकण री कोई बास्तो कोनी । —फुलवाड़ी

५ शक्ति, बल ।

६ पुरुषार्थ ।

रू. भे.—बासतौ, बासत्थौ, बासत्तौ, बासस्थौ बास्तौ ।

बास्प–स. स्त्री [स वाष्प] १ आंसू ।

२ भाप ।

३ कोहरा ।

४ लोहा ।

रू. भे.—बासप ।

बाह–सं. स्त्री. [स] १ शस्त्र प्रहार, चोट ।

उ०—१ वैणावत पातल' बीजळ बाह, गोडै गज बाज खळा गजगाह । —सू. प्र.

उ०—२ तठै मांराज फुरमायौ सत्रसालजी नूं कै कह्यो तो सावंतराय पाळां में निजीक है सू इणरी छाती मे सांग री बाह करूं । —द दा.

२ आक्रमण, हमला ।

उ०—अ्नू मत्त घडं । सुभांण लडं । खड़ि-बाह किय । मेल्हांण लियं । —गु. रू. ब.

३ युद्ध ।

उ०—तो मोनै धरती री आस छै जो बाह करसी, धरती घेरसी । —ठा. जैतसी री वारता

४ प्रहार की सीमा, परिधि, क्षेत्र ।

५ शस्त्र, आयुध ।

६ धनुष ।

उ०—ऊससे घणं ऊछाह, चाप बांण धरै बाह । बांम हाथ लीध बाह, जीमणं कसीस जाह । —र. रू.

७ गति, चाल ।

उ०—मद लख बाह सुपरण तजे माग मे, चरण ऊबांहणं धरण चलै । —र. ज. प्र.

८ वाहन, सवारी । (अ. मा.)

उ०—घोडा हस्ती तणी नही बाह, लोक नइ घरि न बीकाहता गाह । —नळदवदती रास

९ घोडा, अश्व । (अ. मा., डिं. ना. मा.)

१० बैल ।

११ बोझा लादने वाला पशु ।

१२ नदी । (अ. मा.)

१३ मदद ।

१४ वायु, हवा ।

१५ सुगध, महक ।

उ०—घणी वासावली री बाह लागी नै रहिजौ छै। और बांट वाट नै पाणी उछाळीजै छै । —रा. सा. स.

१६ बदबू, दुर्गन्ध ।

१७ खेत मे हल चलाने की अवस्था, दशा, हल चलाने का मौसम ।

उ०—कहीयौ जु देखा अजं लग सत्रा री साथ सावतौ ऊभौ छै । वूठै ऊपरि बाह देणरी इहै वेळा छै । —वेलि टी.

अव्य.—१ धन्य, साबास ।

उ०—१ जुधं जुध 'नाहर' री 'जगसाह' । उडावत लोह कहै रवि बाह । —सू. प्र.

उ०—२ 'बीको' 'गाजीसाह' तण, बाह अडोळ कमध । फट्टा साह समद नू, दियण अघट्टा बंध । —रा. रू.

२ आश्चर्य या घृणा सूचक शब्द ।

३ आनन्द या हर्ष सूचक शब्द ।

वि —खूब, अत्यन्त ।

उ०—सद माल सूर 'दूदै' सगाह । विजपाल दळा जूंभोह वाह ।
—रा. रू.

५ बस ।

रू भे.—बाह, वह वा', वाहा ।

बाहक—वि. [स.] १ लेजाने वाला, ढोने वाला ।

२ वहन करने वाला ।

स. पु.—१ कुली, हमाल ।

२ गाडीवान ।

३ घुड़सवार ।

४ एक विषैला कीड़ा ।

बाहण—देखो 'वाहन' (रू. भे.) (डि. ना मा.)

उ०—१ रस बाग कुसम भ्रम छांह रूप । अवतार अरक बाहण अनूप ।
—रा रू.

उ०—२ कहै-घाड़ा बाहण कनारै घोडा छै। पछै इण भात करनै कटक आयौ ।
—नैणसी

उ०—३ तारा-बळ चद्र-बळ, घडी-अभ्रत साधारण । चतुर पच सह बळी, नाम बाहण सुभ वाहण ।
—गु रू ब.

उ०—४ तद गांगजी वा जैतसी जी जोसी न बुलायौ, ने कह्यौ "सवारै जोगणी काई बाहण छै।
—द दा.

उ०—५ बाहण जेहनै पांचसै, बलीय पाचसइ हाट । घर गोकुल पिण पांचसै, तितला सकट सुघाट ।
—वि. कु

बाहणगरड़—स पु [स. गरुड-वाहन] विष्णु ।

बाहणप्रलभ—देखो वाहनप्रलभ' (रू भे) (अ. मा)

बाहणसंभु—सं. पु.—१ नन्दी-बैल ।

२ वृषभ, बैल । (डि. ना. मा.)

बाहणसिखी—सं. पु.—स्वामीकार्तिकेय का एक नाम । (अ मा)

बाहणि, बाहणी—स स्त्री.—१ खेत की भूमि को बार-बार जोत कर बीज बोनेयोग्य बनाने की क्रिया या ढग ।

उ०—काकड प्रबळ बाहणी काढै, महपत सबळ घणा दळ मारा । सत्र हर ढगळ करे सह सूधा, दळ चावर फेरै दीवाण" ।
—लालसिंह राठोड री गीत

२ देखो 'वाहन'

उ०—१ ताऊ तरिवा सावधान हूआ, हीआहीण अण बूडइ बाहणि मूआ ।
—व. स.

उ०—२ मकरध्वज बाहणि चढयौ अहिमकर, उत्तर वाड वाए अइर । कमळ बालि विरहिणी वदन किय, अंब पाळि सजोगि उर ।
—वेलि

३ देखो 'बाहनी' (रू. भे.) (ह. नां. मा.) (अ. मा.)

रू. भे --बाहणी ।

बाहणो—देखो 'वाहन' (अल्पा., (रू. भे.)

उ०—अरधगी हेम-पुत्री: सरपी कठेणि, बाहणो साडो । सिखा-नेत भाळ चदो, तस्मै रुद्राय नमो ।
—गु रू. ब.

बाहणो, बाहबो – देखो 'बावणो, बावबो' (रू भे.) (उ र)

उ०—१ सु ओळ रुखा ऊभा हुता, तिकै केई भाला बाही सकिया कै न वाही सकिया, नै आय ऐ भेळा हुवा ।
—नैणसी

उ०—२ बाहि बुहाय घणी वीजूजळ । तडळ लगा करै व्हा तडळ ।
—सू. प्र.

उ०—३ रिण आगै राजान रै, खग बाहतौ विकट्ट । कवि 'किसनो' लड केविया, भड पडियो खग झट्ट ।
—रा. रू.

उ०—४ मो गळि घालउ घूघरा, मो मुखि बाहउ लज्ज । हूं ज भलेरउ कग्हलउ, मूघ मिळाऊ अज्ज ।
—ढो. मा.

उ०—५ वलि ऊखर घर ऊपइ, जउ वीज कउ बाहै रे । अकुर मात्र न नीपजइ, नहु एम सराहै रे ।
—वि. कु.

उ०—६ गडत्ता गात बगाळ रगत्त, करंमर बाहि किया करवत्त । अणी झबरक्क हुला ऊझेल, सनाह सु सुतणां तोड सेल ।
—गु. रू. ब.

बाहणहार. हारो (हारी), बाहणियो—वि० ।

बाहिओडो, बाहियोडो, बाह्योडो– भू० का० कृ० ।

बाहीजणो, बाहीजबो —कर्म वा० ।

बाहन—स पु [स] १ वहन करने या ढोने की क्रिया या भाव ।

२ वह पशु, प्राणी या साधन जिस पर बैठ कर कहीं आया जाया जासकता हो । सवारी ।

३ घोड़ा ।

४ हाथी ।

५ रथ ।

६ नाव, जहाज ।

७ सवार ।

८ लक्कड बग्घा ।

९ उद्योग, प्रयत्न।

१० सेना।

११ नदी।

रू. भे.—बहांण, बांहण, बांहिण, बाहण, बाहन, बाहेण, वाहण, वाहणि, वाहणी, वाहिण।

अल्पा.—बाहणी।

बाहनव्रखभ-सं. पु. [स. वाहन+वृषभ] शिव, महादेव। (नां. मा.)

रू. भे.—बाहणव्रखभ।

बाहनी-स. स्त्री. [स. वाहिनी] १ सेना, फौज। (प्र. मा.)

२ प्राचीन भारतीय सेना का एक दल जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घुड़सवार, तथा ४०५ पैदल होते थे।

३ आधुनिक सेना का एक विशिष्ठ विभाग, डिवीजन।

वि.—चलाने वाली।

उ०—देवी जम्मणी मरण आहूति ज्वाळा, देवी बाहनी मंत्र लीला विसाळा। —देवि

रू. भे.—बाग्रणी, बाहणी, बाहनी बाहिणी, बाहिनी, वहिणी, वहिनी, वाग्रणी, वाहणि, वाहणी, वाहिणि, वाहिणी।

बाहपत्री-स. स्त्री. [स. पत्रवाह] सर, बाण, तीर।

बाहर—देखो 'बाहर' (रू. भे.)

उ०—१ सिया बाहर समर दसाणण साभ्का, अवी उछाहर दीन निवाजा। —र. ज. प्र.

उ०—२ तद कही राज! थोड़ी थानूं दीवी छै, जो म्हारै कांम पड़ै तद म्हांरी बाहर करज्यो। —नैणसी

उ०—३ बाहर काज खळा बळवाणा, रैहै जीण पमग जवनाणा। —रा. रू.

बाहरली—देखो 'बारली' (रू. भे.)

(स्त्री. बाहरली)

बाहरमों—देखो 'बारवों' (रू. भे.)

बाहरि—देखो 'बाहर' (रू. भे)

उ०—तब ये भ्रूहा ही में थोड़ो थोड़ो हसि। अर एक एक होय ग्रह थें स जु बाहरि गई। —वेलि टी.

बाहरु—देखो 'बाहरू' (रू. भे.)

उ०—आय पातियं बैठा। आरोगता हुता। आधाइक जीमिया हुता नै बाहरु आया। —नैणसी

बाहरवौ—देखो 'बाहरू' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—नह सादूळी नीमडै, जुध जिण तिण सूं जाय। अौ बाहरवौ आफळै, कुंजर हलकां काय। —बां. दा.

बाहरू—देखो 'बाहरू' (रू. भे)

उ०—१ धीत रा कीत रा रिखी मुकट मीत रा धनी। बाहरू सीत रा रांम अदीत रा वस। —र. ज. प्र.

उ०—२ बाळियी बैर-वैरा तणै बाहरू, 'अमर' मुहरै हुये सर रण आयो। —अमरसिंह राठौड़ गजसिंहोत री वात

उ०—३ तद इण कह्यौ 'कुंवरसी सांखला रो रजपूत छूं, चेतो कर मारजो। म्हारै बाहरू सबळा छै। ऐ तो आधा हुवा वहै छै नै गिणै? सो मार हेठो नाखियौ। —कुंवरसी सांखला री वारता

बाहळ-स. पु.—१ घृत परोसने का एक टोंटीदार बर्त्तन।

२ बैल के पिछले पैरों में होने वाली बालों की पंक्ति या कतार।

३ देखो 'बहल' (रू. भे.) (डि. ना. मा.)

बाहलउ—१ देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—जान्हवी यमुना बेहू मिलीग्रा, माइ बेटी तेह। आपणउं बाहलउं देखी करीनइ, अधिक ऊपजइ नेह। —नळ दवदंती रास

२ देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

बाहलकडू, बाहलकड़ौ—देखो' वाळौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बाहलकडू वाल्ह गणी, हेलि! न धरीइ हेजि। सेज-विकी नर नीसरिउ, वली न लीजइ सेजि। —मा. का. प्र.

बाहळि, बाहळी—देखो 'वाळौ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरउ, पड़सी बाहळियांह। उर ओलै ग्री राखियइ, मूवा काहळियाह। —ढो. मा.

उ०—२ वारिया नाळा माय वहै दुत बाहळी। सेह ओसर मे बहै, नाळा अर नाहळी। —लो. गी.

बाहलीकजा—देखो 'वाल्हीक' (रू. भे) (डि. नां. मा.)

बाहळू, बाहळू—देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

बाहलु, बाहलू—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—भमरी भुग्रा अक्षनी, मनि मदार न जांणि। एक ज बाहलु ऊलखइ, जिम काणी केकांणि। —मा. का. प्र.

बाहळौ—देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

उ०—१ आगै पोकरण रा बाहळा ऊपर रैहता। उरजनोत जोधपुर चाकर। —नैणसी

उ०—२ जउ साहिब तूं नावियउ, मेहा पहलइ पूर। विचइ बहेसी बाहळा, दूर स दूरे दूर। —ढो. मा.

उ०—३ अति रोस करि जैसउ उलटयो ज्यो वरसाला कउ बाहल्यो ऊफणइ। —वेलि टी.

बाहली, बाहल्यौ—१ देखो 'बाळौ' (रू. भे.)

उ०—कलकलती कल्लोलि उच्छलती लहरि करां मूमूती, बाहळं फूफूनी, जिसी कृतात तणी मूरत्ति तिसी रौद्र बेउ तट इ आव्ही नदी। —व. स.

२ देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—१ बाहला गइ विसहर भलु, डसी करि वली प्रत। प्रेम पन्नगइं जे डस्या, तें किम सुख पामंति? —मा का प्र

उ०—२ सूल पासि नकर तिहां, जात्र मिली जोग्रेसि। फालि देई हूं फणगटइ, बाहला! वाडि पाडेसि। - मा. का. प्र

बाहलौ—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

'बा' बा'—देखो 'बाहवाह' (रू. भे.)

बाह-बाह—वि. अनु. [फा.] धन्य-धन्य, साधु-साधु।

उ०—१ अर सोलखी भाणुराज प्रतिहार तेजसिंह री मस्तक उडाय महारुद्र रा मुख सूं बाह-बाह पढायौ। —व भा.

उ०—२ एसी अनेक बात कही। और ही कवेसर बोल बाह-वाह कही। —रा. रू.

उ०—३ एक बात ऊबरा, सुणे रीझियौ नरेसुर। बाह-वाह अक्खियौ, तोल खग लगै अघतर। —सू. प्र.

बाह-बाही—स. स्त्री. [फा.] १ प्रशंसा, धन्यवाद, साधुवाद।

२ किसी कार्य के प्रति प्रगट किया जाने वाला आश्चर्य।

रू. भे.—बाहबाही।

बाहा—देखो 'बाह' (रू. भे.)

बाहाऊ—देखो 'बघाऊ' (रू. भे.)

उ०—द्वारकादास, एका हमीर बळू नू मनावण सारा भाटी नै राव सूर्रसिघ आया था। उठै बाहाऊ आयो तठै राव सूरसिघ बळू भा। —नैणसी

बाहादर—देखो 'बहादुर' (रू. भे.)

उ०—तोई झगड़ै री आसग हुई नही। दलपत वडौ जमैमरद बाहादर देख्यौ। —द दा.

बाहार—१ देखो 'बाग' (रू. भे.)

उ०—घर १ राजा स्त्री गजसिंहजी री बाहर माहै नवौ हुवो छै, दुड़ो छै। --नैणसी

२ देखो बाहर' (रू. भे.)

बाहाळौ—देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

बाहालौ—देखो 'वालौ' (रू. भे.)

उ०—१ हा माहा नाथजी, कांहां गया जी, मूंहि एकली मेहेली वंन रे वजमि कठिण ते किम थयू रे, बाहाला तम्हारू मंन रे। —नळाख्यान

उ०—२ वेस्या किसि बाहाली करी, भूमडलि? भूदेव। कोडि कोटि-ध्वज क्षय गया, करता वेस्या-सेव। —मा. कां. प्र.

(स्त्री. बाहाली)

बाहिण—देखो 'बाहन' (रू. भे.)

बाहिणि, बाहिणी—देखो 'बाहनी' (रू. भे.)

बाहिरथदेस—देखो 'बाहिरथदेस' (रू. भे.)

बाहियात—वि. [फा.] व्यर्थ, निरर्थक।

बाहियोड़ौ—देखो 'बाविग्रोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बाहियोड़ी)

बाहिर—देखो 'बाहर' (रू. भे.)

उ०—पाचा दिना पछै महला मह्रा दाढी समराइ अर बाहिर पधारिया। —द. वि

बाहिलियौ—देखो 'वालौ' (अल्पा, रू. भे.)

बाही—१ देखो 'वही' (रू भे.)

उ०—केतीबार जेठी जोर आगे पेच कीना, पूरे चापि जेठि नै भ्रमाया नाखि दीना। बाही स्याति नीसरिगा जेठा का प्राण। पूरा मल्ल बादिस्याह कीना फुरमाण। —शि. व.

२ देखो 'व्याधि' (रू. भे.) (जैन)

बाहु—देखो 'बाहु' (रू. भे.)

बाहुड़णौ, बाहुड़बौ—देखो 'बावड़णौ, बावडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वाहुडि गोरी! तु घरि जाह, हु नेद आवऊ थारउ हौ नाह। सोना तो बाध्यौ गाठडी, दीघो सोपारी दोय कर च्यार। —बी. दे.

उ०—बोलिन सक्कू वीहतउ, हेक ज बात हुई। राजि अपूठा बाहुडउ, माळवणी मूई। —ढो. मा.

बाहुड़णहार, हारौ (हारी), बाहुड़णियौ—वि०।

बाहुडिग्रोड़ौ, बाहुडियोड़ौ, बाहुड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बाहुडीजणौ, बाहुडीजबौ—भाव वा०।

बाहुडियोड़ौ—देखो 'बावडियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री. बाहुडियोडी)

बाहुलु, बाहुलौ—१ देखो 'वाळौ' (रू. भे.)

उ० १ वाट-वबद छइ बाहुलु, तिहां जाइ नर नारि। नाव नरेसर मेल्हि करि, परि परि पार ऊतारि। —मा. कां. प्र.

उ०—१ मारगि मोटा डूगरा, नद बाहुला विसेखि। जलचर खेचर भूमिचर वसुधा रूखी रूखि। —मा. का. प्र.

२ देखो 'वालो' (रू. भे.)

बिंचियो—देखो 'बीछियो' (रू. भे.)

बिंछियो—देखो 'बिछियो' (रू भे)

बिछुड़ी—देखो बिच्छुडी' (रू. भे.)

बिंछ्या—देखो 'वांछा' (रू. भे.)

उ०—कूकर के मन कांम की, रुत सिर बिछ्या होय। कामी नर के कांम की, हुगोया निसदिन होय। —अनुभववाणी

बिंजणो, बिंजबो—देखो 'बीजणो, बीजबो' (रू भे)

उ०—हरि ने हलधर दोनू गज चढ्या, साथे लियो गज कुमार। छत्र ने चामर दोनू बिंजे रह्या, बाजे बाजा रा झणकार। —जयवाणी

बिंजणहार, हारो (हारी), **बिंजणियो**—वि०।

बिंजिओड़ो, बिंजियोड़ो, बिंज्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिंजीजणो, बिंजीजबो—कर्म वा०।

बिंजन—देखो व्यजन' (रू भे)

उ०—१ भूप बधायो मोतिया, कीधा निजर तुरग। भोजन भुजाई विवध, बिंजन पाक सुरंग। —रा. रू.

उ०—२ निज मजलस रस मजणां, बिंजन पाक ऊग विहाण। हित करणो जैसाह रै, वरणो को कवि वाण। —रा. रू.

उ०—३ जनकपुरी मे जीमिया है, विध विध बिंजन कोर। भला सरस भोजन हुवा है, पण ओ आनद ओर। —गी. रा

बिंजाहरि—देखो 'विजयहरी' (रू. भे)

उ०—गढ गिरुउ अनइ विसमउ, जेह नउ पायउ पातालि पयठउ, महागज तणा जिमा पाग तिमा कोसीसा, गरई पोलि निविड कमाड लोहभोगल, बिंजाहरी तणी पद्धति, यत्र तणी स्रेणि, ढीकुली तणी परपरा...। —व. स

बिंजियोड़ो—देखो 'वीजियोडो' (रू भे)

(स्त्री बिंजियोडी)

बिंजुल-सीत—सं. स्त्री. [स वञ्जुल-शीतः] १ कुज, कुंजगलि। (अ. मा)

२ अशोक वृक्ष।

बिंझगिरी—देखो 'विध्यगिरि' (रू. भे.)

बिंझगिरिपादमूळ—देखो विध्यगिरिपादमूळ' (रू. भे.)

बिंझलो—स. पु [सं. वीजन.] चक्रवाक नामक पक्षी।

उ०—बोल्हा वायस बिंझलां, आगलि ऊडी जाय। वाटइ दीसइ वागली, ते ऊधी टगाय। —मा. का. प्र.

बिंझाचळ—देखो 'विध्याचळ' (रू भे)

उ०—पियो चोळ सिंदूर कुंभाथळयं, वन गेरुम जाण बिंझाचळयं। —गु. रू. बं.

बिंट—देखो वीट' (रू भे.)

उ०—अवतार वहे आपे अनत, सह विदु हुय जावै सगा। तक बिंट नाम श्री राम रो, जग समंद तिर तूं 'जगा'। —ज. खि.

बिंटणो, बिंटबो—देखो 'वीटणो, वीटबो' (रू. भे)

उ०—एहवो घातकी खडए, परदक्षण परकार। अठ लख जोयण बिंटीयो, समुद्र कालो दधि सार। —वृ. स्त.

बिंटणहार, हारो (हारी), **बिंटणियो**—वि०।

बिंटिओड़ो, बिंटियोड़ो, बिंट्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिंटीजणो, बिंटीजबो—कर्म वा०।

बिंटाणो, बिंटाबो—देखो 'वीटाणो, वीटाबो' (रू. भे.)

बिंटाणहार, हारो (हारी), **बिंटाणियो**—वि०।

बिंटायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिंटाईजणो, बिंटाईजबो—कर्म वा०।

बिंटायोड़ो—देखो 'वीटायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिंटायोडी)

बिंटियोड़ो—देखो 'वीटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीटियोडी)

बिंटूणो, बिंटूबो—देखो 'वीटणो, वीटबो' (रू. भे.)

उ०—कमनेत नेतबधी सिपाह, सब सिलह पूर बिंटूं सनाह। चवगान जान रनवीर खेत, ताजी तमाम पक्खर समेत। —ला. रा.

बिंटूणहार, हारो (हारी), **बिंटूणियो**—वि०।

बिंटूिओड़ो, बिंटूियोड़ो, बिंटूयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिंटूीजणो, बिंटूीजबो—कर्म वा०।

बिंटूियोड़ो—देखो 'वीटियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिंटूियोड़ी)

बिठणो, बिठबो—क्रि. अ. [स. विनष्टनम्] १ नष्ट होना, बरबाद होना।

उ०—वस्त्र हरीनि हंस गयु, ते बिठीया हारि वाहार। तेह रांक नुं वाक किसु, जु दसा पडी अपार। —नळाख्यांन

२ भ्रष्ट होना, बिगडना।

३ अदृश्य होना, गायब होना।

बिठणहार, हारो (हारी), **बिठणियो**—वि०।

बिठिओड़ो, बिठियोड़ो, बिठ्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिठीजणो, बिठीजबो—भाव वा०।

विठियोड़ो—भू. का. कृ.—१ नष्ट हुवा हुम्रा, बरबाद हुवा हुम्रा. २ भ्रष्ट हुवा हुम्रा, बिगड़ा हुम्रा. ३ प्रदृश्य हुवा हुम्रा, खोया हुम्रा.

(स्त्री. विठियोड़ी)

विण—देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—झावकि पइठी झाळि, सुंदरि दीठी सास विण । जिमि व्हालां बिच बाळ, प्रिव जोई मारू नही । —ढो. मा.

विणणो, विणबो—१ देखो 'विणणो, विणबो' (रू. भे)

२ देखो 'बुणणो, बुणबो' (रू. भे.)

विणणहार, हारो (हारी), विणणियो—वि० ।

विणिम्रोड़ो, विणियोड़ो, विण्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विणीजणो, विणीजबो—कर्म वा० ।

विणियोड़ो—१ देखो 'विणियोड़ो' (रू. भे)

२ देखो 'बुणियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. विणियोडी)

वितर—देखो 'व्यतर' (रू. भे.)

उ०— पचेंद्रि तिरजच नै मानव, एह थया इकवीसजी । वितर जोतिसी नै वैमानिक, इम दडक चोवीस जी । —ध. व ग्र.

उ०—२ वाघ सिंघ वितर घणा, भइ बीहती चालइ रे । चालइ नइ सालइ वरसा रत घणु ए । —नळ दवदती रास

उ०—३ ज्योतिसी भुवणि नी वितरी त्री पणें, नेंरित कूण जिण वाणि ऊभी सुणे । —ध. न. ग्र.

(स्त्री. वितरी)

वित्तणो, वित्तबो—देखो 'बीतणो, बीतबो' (रू. भे)

उ०—सिसु वै मित्ती वित्ती, उदभो पोगड मड मिगारो । ज्यो ग्र दारक तरय, प्रामं डाळ सगि पत्तेणम् । —रा. रू

वित्तणहार, हारो (हारी), वित्तणियो—वि० ।

वित्तिम्रोड़ो, वित्तियोड़ो, वित्त्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वित्तीजणो, वित्तीजबो—भाव वा० ।

वित्तियोड़ो—देखो 'बीतियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वित्तियोडी)

विंद—स पु. [स] १ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक, जिसका वध भीम ने किया था ।

२ भारतीय युद्ध मे कौरव पक्ष का एक कैकय-राजकुमार जिसका वध सात्यकि द्वारा किया गया था ।

३ प्रवती देश के राजा जयसेन एवम् वसुदेव की बहिन राजाधि-देवी के दो पुत्रो मे से एक पुत्र ।

वि. वि.—इसके कनिष्ठ भ्राता का नाम अनुविंद एव एक बहिन का नाम मित्रविंदा था । यह दुर्योधन एव जरासंध का पक्षपाती था । इसकी बहिन का विवाह दुर्योधन से होना तय हुम्रा था मगर इसकी बहिन की इच्छानुसार श्रीकृष्ण ने मित्रविंदा से विवाह किया । भारतीय युद्ध मे यह एक अक्षौहिणी सेना के साथ कौरव पक्ष मे सम्मिलित हुम्रा था तथा यह दश रथियो मे से एक था । अपने दक्षिण दिग्विजय के समय सहदेव ने इसे जीता था । अन्त मे यह अर्जुन द्वारा मारा गया ।

४ देखो 'बींद' (रू. भे)

उ०—१ सत के 'सोनागिर' बाचा हरिचद । साच के अजातसत्र गात रति विंद । —रा. रू.

उ०—२ वरै रभ वैसि रथा रण विंद । अघोग्रघ राज लिग्रै सुरइद । —सू. प्र.

उ०—३ विंदया भद्रा गोपिया विंद । आरती करै ऊरा इद ।

—पी. ग्र

उ० -४ नर नरिंद अर्णानद, विंद वाकिम्म वीर वर । सुत मुरिंद हरचद, कद काढण केवी हर । —गु. रू. ब.

२ देखो 'बूद' (रू भे)

उ०—निज रोम रु च्छेम से काम नही, उर हाम आराम हराम नही । गरबै स्तुति निंद समान गिने, हरखै न बने नहिं विंद हने ।

—ऊ का.

३ देखो 'बिंदु' (रू. भे)

उ०—जाय हिमाळै गळत जिंद, उलटि राम्बत नाद विंद । कोटि गउ दिज दान देत, मरत कासी मुगति लेत । —अनुभववाणी

४ देखो 'बिंदी' (मह, रू भे)

विदक—वि.—१ जानने वाला, ज्ञाता ।

२ जन्म देने वाला ।

३ देखो 'बिदक' (रू भे.)

विदगी—देखो 'बदगी' (रू भे)

उ०—सो इद्रायण' थै नै ग्राठ ही अपचरा मारी विंदगी घणी कीधी, सो थे वर मागो सो थानै मे वर देनै गुर-चेलो अलोप होमा ।

—मयाराम दरजी री बात

विदण—देखो 'विदग' (रू. भे)

विदणो, विदबो—देखो 'वदणो, वदबो' (रू भे)

उ०—कोउ येक निंदौ कोउ येक विंदौ, नाम सुधारस पागा । जन मीरा गिरधर बर पायौ, भाग हमारा जागा । —मीरां

बिंदणहार, हारौ (हारी), बिंदणियौ—वि० ।

बिंदियोड़ौ, बिंदियोड़ौ, बिंद्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिंदीजणौ, बिंदीजबौ—कर्म वा० ।

बिंदली—देखो 'बिंदी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सोहै भाळ विसाळ, लाल बिंदली सिंदूर । नैणै काजळ, मुख तबौळ, वणि वदन सनूर । —गज उद्धार

बिंदवी—देखो 'विंदवी' (रू. भे.)

बिंदसरोवर–स पु —गुजरात में पाटण (सिद्ध पुर) से आधा कोस दूर, एक तीर्थ स्थान ।

बिंदावन—देखो 'व्रंदावन' (रू. भे.)

उ०—धन गोकळ नर ग्वाळ धन, धन जसोदा धन । बिंदावन धन सरब वन, वाह वाह मघवन । —पी. ग्र.

बिंदी—देखो 'व्रिंदी' (रू. भे)

उ०—सीसफूल तारा भला रे, अरधचंद सम भाग रे रग । विंदी जाणैं मणि धरी रे, पीवत अम्रत नाग रे रग । —प. च. चौ.

बिंदु—२ देखो 'विंदु' (रू भे)

२ देखो वृंद' (रू भे)

३ देखो 'बिंदी' (रू. भे)

उ०—स्यामा तणैं लिलाट सोहिया, कुंकुम बिंदु प्रसेद कण । —वेलि

बिंदु आंगिरस–स. पु.– वेदो के एक सूक्तद्रष्टा का नाम ।

बिंदुचित्रक–स. पु. [सं] मारे शरीर पर गोल चित्तियो वाला मृग ।

बिंदुजाळ, बिंदुजाळक–स. पु. [स. विंदुजाल] १ सफेद बिंदियो का वह समूह जो किसी हाथी के मस्तक और सूंड पर बनाया जाता है ।

२ पद्मक नामक हाथियो का एक रोग ।

बिंदुतीरथ–स. पु [स विंदुतीर्थ] काशी के पचनद तीर्थ का एक नाम जहा विंदुमाधव का मंदिर है

बिंदूत्रिवेणी–स स्त्री. [सं.] स्वर साधन की एक प्रणाली । (सगीत)

बिंदुमति, बिंदुमती–स स्त्री.—राजा शशि विंदु की पुत्री एव अयोध्या पति मांधाता की पत्नी ।

बिंदुमाधव–स पु. [स] काशी के पचनद नामक तीर्थ मे स्थित एक विष्णु मूर्ति का नाम ।

बिंदुळरथी–स. स्त्री [म. विंदुल रथ्या] कुंज गलि । (ग्र मा)

बिंदुली—देखो 'बिंदी' (अल्पा., रू. भे.)

बिंदुसर–स. पु [स] १ कैलाश पर्वत के दक्षिण स्थित एक सरोवर, जो तीर्थ माना जाता है । (पौराणिक)

वि. वि.—यह सरोवर गगा के जलकणो से बना था । यही पर बैठ कर भागीरथ ने गंगा को भूलोक में लाने हेतु तप किया था ।

२ एक नदी जिसके किनारे कर्दम प्रजापति का आश्रम था ।

बिंदुसार—देखो 'विंदुसार' (रू. भे.)

बिंदोळी—देखो 'बदोळी' (रू. भे.)

बिंदोळी—देखो 'बदोळी' (रू. भे.)

बिंदौ—१ देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—भणी सामि आगै इसै काम हूंदा । वणै ऊहड़ै बंकड़ा कीत बिंदा । —रा. रू.

२ देखो 'बदो' (रू. भे.)

बिंध—देखो 'विंध्य' (रू. भे.)

उ०—जैसे राजहंसनिसौं राजै मानसर राज, जैसें बिंध भूधर विराजे गजराज सौं । —ध. व. ग्र.

बिंधणौ, बिंधबौ—देखो 'विंधणौ, विंधबौ' (रू. भे)

उ०—१ मोसा री मार री काळजै तीर नी बिंधतो तौ कदास मासी रा बोल उण रै काळजै इण भात असर नी करता । तीर विंधणा रै समचै ई हिवडा रै विस री पोटळी फूटगी ही । —फुलवाडी

उ०—२ पण आ बात सुणता इ उण री मुळक रै गैं'ण लागग्यौ उण रौ उणियारौ काळौ घाक पड़ग्यौ । माथा मे कीडी-नगरौ कळबळण लागौ । मोसा री तीर पाधरौ काळजै जाय बिंध्यौ । —फुलवाडी

उ०—३ क्रीडा खेलतु, सूरकर मेल्हतउ, परबत जिम दलतउ, पवन जिम चालतउ दतांग्रि बिंधतउ, पाडतउ फोडतउ । —व. स.

उ० –४ मैं नही कहत कहत परिग्यानु, सुणि हो सबै सयाणा । मैं तं राग दोस जुग विंध्या, ए कळि के इहनाणा । –अनुभववाणी

बिंधणहार, हारौ (हारी), बिंधणियौ–वि. ।

बिंधिओड़ो, बिंधियोड़ौ, बिंध्योड़ौ—भू. का. कृ. ।

बिंधीजणौ, बिंधीजबौ – भाव वा. ।

बिंधर–वि.—अशब्दश्रावी ।

उ०—देवमांहि कुण हू न स्वामी, न दास, न मूक, न ऊतसूक, न बधिर, न बिंधर, न कूबड न वामण, न हूड, न छोटा, न पांगुला, न आंधला, तिहा डास मुमा······ ······। —व. स.

बिंधाचळ—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—घर चौडे सरवर विपन, बिंधाचळ दिस एक । च्यार महूरत उत्तरे, धारस मत्र विवेक । —रा. रू.

बिंधियोड़ौ—देखो 'बिंधियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिंचियोड़ी)

बिंध्य–स. पु [स] १ उत्तर भारत के दक्षिण मे स्थित एक प्रसिद्ध पर्वत जो भारतवर्ष के मध्य मे पूर्व मे पश्चिम को फैला हुआ है, विंध्याचल नामक पर्वत।

उ०—जिणो पण बळा विंध्य २ रा अधीस 'राम' भूपाळ ? — व. भा.

२ रैवत मनु के पुत्रो मे स एक।

रू. भे बिंभ, विंध, बिंध्य, बींभ, विंध।

बिंध्यकूट–स. पु. [स विंध्यकूटन] १ अगस्त्य मुनि की एक उपाधि।

२ विंध्य पर्वत।

बिंध्यगिरि–स. पु.—विंध्यपर्वत, विन्ध्याचल।

रू. भे.—बिंभगिरि।

बिंध्यगिरिपादमूळ विंध्यगिरी पर्वत की तलहटी।

रू. भे.—बिंभगिरिपादमूळ।

बिंध्यवासिणी, बिंध्यवासिनी–सं स्त्री [स विंध्यवासिनी] १ मिर्जापुर जिले मे विंध्य के एक टीले पर अवस्थित देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति, जो इन्द्र द्वारा स्थापित की गई थी।

२ दुर्गा की एक उपाधि।

बिंध्यवासी, बिंध्यस्थ–स. पु [स] संस्कृत व्याकरणी व्याडि मुनि की उपाधि।

बिंध्याचळ, बिंध्याचल–स. पु. [सं विंध्य+अचल] मध्य भारत की दक्षिण सीमा स्थित-पर्वत का नाम।

उ०—१ द्विजवर ! जा द्वारावती, बिंध्याचळ जल तिग। कोटेस्वर कैलास परि, ऊंकारि अभ्यग। — मा का प्र.

उ०—२ तद लडनी कही-मो सू रात का माय यक्ष मिळै सो मो न कहे-हूं तो नं बिंध्याचळ लेय हालस्यू। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—३ बिंध्याचळ वाधै तुं पग, अंबर अरक आज। आदित्य तह ऊगी सकइ, सरइ अगहारा काज। —मा का प्र.

रू. भे —बद्रचला, बिंध्याचळ बींझाजळ, बींझाचळ, बींझाजळि, बुंधाचळ, वध्याचळ वध्याचळि, बिंझाचळ, बिंधाचल।

बिंध्यावळि बिंध्यावळी–स स्त्री [स विंध्यावलि] दैत्य राज बलि की स्त्री का नाम, जो बाण की माता थी। शकुनी, पूतना आदि इसकी पुत्रिया थी।

बिंबार बिंभार–देखो 'बंभार' (रू. भे)

उ०—गुण सिंधु टणाक ठणाक गर्जे, बिन छेद खणाक छणाक वर्जे। भुरजाळ रोसाळ उदार भरै, कर तीर बिंबार बभार करै। —पा. प्र.

बिंभौ—देखो 'वैभव'।

बियासियौ—देखो 'बयासियौ' (रू. भे)

उ०—महपति आयौ मेड़ते, गढ खाटै नागौर। सिर तिण वरस बियासियौ, आयौ वड सुख और। —रा. रू.

बिस–वि. [स विंश] १ बीसवा।

२ एक राजा जो क्षुप राजा का पुत्र था।

३ इक्ष्वाकु राजा का पुत्र जो विविंश का पिता था।

४ देखो बीस' (रू. भे)

बिसतिबाहु–स. पु [स. विंशतिबाहु] रावण का एक नाम।

बिसोत्तरी–सं. स्त्री. [स. विंशोत्तरी] मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति।

वि. वि.—इसमे मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर उसके भाग करके नक्षत्रो और ग्रहो के अनुसार शुभाशुभ फल की कल्पना की जाती है। (फलित ज्योतिष)

बिंहचणो, बिंहचबो—देखो 'बंचणो, बंचबो' (रू. भे.) (उ. र.)

बिंहचणहार, हारो (हारी), बिंहचणियो—वि०।

बिंहचिग्रोड़ो, बिंहचियोड़ो, बिंहच्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिंहचीजणो, बिंहचीजबो—कर्म वा०।

बिंहचियोड़ो—देखो 'बंचियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. बिंहचियोड़ी)

बि–अव्य. [सं] १ किसी शब्द के पूर्व लगकर विशेष अर्थ उत्पन्न करने वाला एक उपसर्ग।

वि. वि.—इसमे इसके निम्न लिखित अर्थ होते हैं:—पार्थक्य, बिलगाव, किसी क्रिया का विपरीत, विभाग, विशिष्टता, मार्ग, जाच, भेद, क्रम, विशेष, तरी, विचार, आधिक्य।

२ भी।

उ०—१ करणु भणइ सन्चु कहउ, पुणु छइ एकु वि नाणु। दुर्योधन रहि आपणा, मइ कल्पना छइ प्राण। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ क्षात्रधरम मन हूतउ छडिउ, कौरवाधिपति गोग्रह माडिउ। सैन्यराय बिहु भागि वि लायउ, तउ सुसरम त्रगि दक्षिण धायउ। —सालि सूरि

३ हो।

उ०—१ अनहलिय सायर रत सुरगिरि, खिणु खिणि खडहडी। खण एकु असरणु हूउ तिहुयणु राय सयल वि धरहडी। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ सो धनुखु नामइ कोमु काटकि, घरणि धामकि धडहडी। बभड खड विखड थाइ कि, मगिण सयल वि रडवडी। —सालिभद्र सूरि

स. पु [स. विः] १ रवि।

२ शशि।

३ दधि।

४ पक्षी।

५ गरुड़।

६ लता। (एका.)

७ घोड़ा।

८ आख।

९ आकाश।

१० अन्न।

११ देखो 'बी' (रू. भे.)

उ०—१ फबि बिस सहंस गयद घज फरहर। थरै महोरि बि-महंम बाजित्र घर। —सू प्र.

उ०—२ कहिए माळवणी-नणइ, रहियउ साल्ह बि मास। ऊन्हाळउ ऊतारियउ, प्रगटयउ पावस-मास। —ढो. मा

विग्रक्खण, विग्रक्खणि, विग्रक्खणु—देखो 'विचक्षण' (रू. भे)

उ०—मंत्रीसर घरि आविउ, सयल लोक रंजन सुलक्खण। पूरब पुण्य पसाउलइ त्रिणि, नारि विलसइ **विग्रक्खणि**। —हीराणंद सूरि

विग्रखरी, विग्रखरी—देखो 'बेग्रखरी' (रू. भे)

उ०—सोलह मात्रा पय सकळ, नहीं गुरु लघु नेम। आखा छद विग्रखरी, इणरी पद्धति एम। —ल पिं.

विग्रत–स. पु. [स वियत्] आकाश, नभ। (ह. ना. मा)

विग्रापणो, विग्रापबो—देखो 'व्यापणो, व्यापबो' (रू. भे.)

उ०—१ हू प्रयाण अणबूझ, प्रघळ कपटी वड पापी। कामी क्रोधी कहर, विळै पर निंदा **विग्रापी**। —पी प्र.

उ०—२ **विग्रापै** सब सदा दख ब्रिंद, भाग्रो जिम जाय कहा सुर इंद। —रामरासौ

विग्रापणहार, हारौ (हारी), विग्रापणियौ—वि०।

विग्रापिग्रोड़ौ, विग्रापियोड़ौ, विग्राप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विग्रापीजणो, विग्रापीजबौ—भाव वा०।

विग्रापियोड़ौ–देखो 'व्यापियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री विग्रापियोड़ी)

विग्रापी—१ देखो 'व्यापी' (रू भे)

२ देखो 'वापी' (रू भे.)

विग्रारणम–[स विप्रतारणम्] पीटना, मारना। (उ. र.)

विग्रास—देखो 'व्यास' (रू. भे)

उ० —'वीरो' बाळकिसन्न पण, ऊपरै **विग्रास**। साथ लिया रिखि साम री, नव ही रिद्ध निवास। —रा. रू.

विइगिच्छा-स. स्त्री—विचिकित्सा। (उ. र.)

विइत्तु-वि. [सं विदित्वा] जानकार। (उ. र.)

विइय-वि. [सं. द्वितीय] १ दूसरा। (उ र.)

२ विदित।

विउड—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—**विउड** मिउड ताडिउ, तु चपेटा ऊपाडिउ। कूंयरि मनि विराडिउ, बोल बोलइ मु ताडिउ। —सालि सूरि

विउरण– देखो 'विवरण' (रू. भे.)

उ०—रांनल वर **विउरण** भणु, तिहुअणि पडिउ त्रास। वेस्या विलपति तिहा, सकल मिलिउ सहिवास। —मा. का. प्र.

विउल—देखो 'विपुल' (रू. भे.)

विउलग्रसणपाण–स. पु [स विपुलाशसनपान] विपुल अशन-पान, पुष्कल खान पान।

विउलतव–स. पु. [सं. विपुलतप] विपुलतप।

विउलधण–स. पु [स. विपुलधन] विपुल धन, पुष्कल धन।

विउलसग्ग–सं. पु. [सं. विपुलसर्ग] व्युत्सर्ग, कायोत्सर्ग, एक तप विशेष।

उ०—अणसण तप पहिलौ कह्यौ, छेनौ **विउलसग्ग** जांण। बारे भेदे तपस्या करो, ज्यो पहुचो निरवाण। —जयवाणी

विउलसिरी—देखो 'मौलसिरी' (रू. भे.)

उ०—जिहा किण कमल अपार रे, चापौ मरवौ रे दमणौ मालती रे। **विउलसिरी** सुखकार रे र, जाई जूई रे दुबड़ा पालती रे। —वि कु.

विऊ–वि [स. विद्] जानकर वेत्ता। (जैन)

विग्रोग—देखो 'वियोग' (रू. भे.)

विकंपन–स पु [स]१ रावण पक्ष के एक राक्षस का नाम, जो राम-रावण युद्ध मे मारा गया था।

२ रुद्रगणो मे से एक।

विकंपुर—देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे.)

उ०—पूगळ पाळटी, धरकियो **विकंपुर**, कहै छूटां कांहि। उदधि राजा सूर उलटो, जादवा गढ जाहि। —हरखौ बारहठ

विकच–सं. पु [स.] १ एक प्रकार के धूम केतु, जिनकी संख्या ६५ कही जाती है।

२ बौद्ध भिक्षुक।

३ केतु का नामान्तर।

वि. [सं] १ खिला हुआ, फैला हुआ।

२ बिखरा हुआ।

३ जिसके बाल न हों, केश विहीन।

विकचा—स. स्त्री. [स] विरूपक नामक नैर्ऋत राक्षस की पत्नी, जिस में भूमिराक्षस नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

विकट—वि [सं.] १ भयंकर, भीषण, विकराल, डरावना।

उ०—बजरंग घाट काळा **विकट**, दुग्त थाट जमदून मा। कर जोम गयण ओघस करै, घोम नयण अवधून मा। —सू प्र

२ चौड़ा, प्रशस्त।

३ विशाल, बड़ा।

उ०—१ अममर झट झपट **विकट** थट आवट, गो गाहट थट गरट गहै। ऊकट थिय काट सुभट लख आरट, खळ खट रिगावट खड़ग वहै। —गु रू. बं.

उ०—२ एहनी-आबीयौ ताम करि जोर बल फौरतौ, बब्बराधीस मन रीस आगी। सुभट थट **विकट** साथै करी आपणा, रोस चढीयौ वदै असुभ वाणी। —स्रीपाल रास

उ०—३ इम गढ निकट **विकट** थट आया, छपन कोडि जाणै घण छाया। सुजळ जाणि ऊझळै समराथं, समद सात नवसै नदि साथै। - सू प्र.

४ जबरदस्त।

उ०—१ दट अणघट अघ **विकट** दळा रौ, राजा साचौ राम। बळ मोहै दिन जन निबळा रौ, नित जापौ तै नाम। —र ज प्र

उ०—२ **विकट** विहारी वकड़ौ, जाळधर गढ राज। सो राठौड़ा पेखियौ, जोड़ै मेन सकाज। -- रा. रू

उ०—३ कोपमान नरसिंघ रूप करि, **विकट** विराट वदन विकराळ। सोसै रगत असुर हरिणाकस, प्रभु प्रहळाद भगत प्रतिपाळ। — ह. ना. मा

५ बलवान, शक्ति शाली।

उ०—१ काळ हुकम जिम काळ रा, किंकर कहरारे। होय लटा चट्टा हिचै, **विकटा** बाकारै। —सू प्र

उ०—२ असी महस **विकटा** असवारा। बाग उपाडि लई जिण बारा —सू प्र.

६ दुर्गम, दुरूह, दुस्साध्य।

उ०—मन जाणै सहल दीयणा वित मोजा, अै दोय पण धरीया अमठ। वेडा री वाता इज वेडी, वेडा रा पेडा ह विकट। —अज्ञात

७ कठिन, मुश्किल।

८ बदशक्ल, कुरूप, भोंडा, भद्दा।

९ उग्र, तीव्र।

उ०—मारै घणा चाढिया माथा, त्रिजड **विकट** तट नग तणी। राजा जिम भारथ महारुद्र, कासी न पूजियौ किणी। —किसनो आढौ

१० टेढ़ा, वक्र।

११ अहंकारी, अभिमानी।

उ०—दुरवेस **विकट** करिवा दुरस, पुरस रूप जोधापुरौ। मम हुकम लाज राखण मुदै, महाराज मंडोवरौ। —रा. रू.

१२ जंगली, अभद्र।

सं. पु.—१ विस्फोटक।

२ सोमलता।

३ बाल तोड़-फोड़ा।

४ सेना, फौज। (ह. ना. मा)

५ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष।

६ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

७ रावण पक्षी, एक राक्षस जो अंगद द्वारा मारा गया।

८ रुद्रगणों में से एक।

९ एक राक्षस जिसकी गंगाजल पीने के कारण मुक्ती हुई।

१० सिंह, शेर। (ह. ना मा.)

रू. भे—बकट, बगट्ट, बिकट, बिकट्ट, बेकट, बेकठ, विकट्ट विकट्टी विगट।

अल्पा—विकटौ।

विकटांणण, विकटांनन—देखो 'विकटानन (रू. भे)

विकटा—स स्त्री. [स] १ बुद्धदेव की माता का नामान्तर।

२ अशोक वन में सीता पर पहरा देने वाली राक्षसियों में से एक राक्षसी।

रू. भे.—विक्रुटा।

विकटानन—स. पु.—धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक।

रू. भे.—विकटाणण, विकटानन।

विकटौ—देखो 'विकट' (रू. भे)

उ०—ऊंडै जळ में ले चल्यौ, गज कूं **विकटौ** ग्राह। तब ततकार समारियौ, राघानागर नाह। —गजउद्धार

विकट्ट, विकट्टी देखो 'विकट' (रू. भे)

उ०—१ 'विजपाळ' 'राम' 'केहर' **विकट्ट**, 'भीमेण' 'राम' 'फतमल' सुभट्ट। हरिभाण 'नाथ' भाराथ हाम, दळवत साम पेखै दुगाम। —रा. रू.

उ०—२ कट कट अघ दुघट **विकट्ट** थट अणघट, झट झट रट रट 'किसन' जिको। —र. ज. प्र.

उ०—३ भाला झलि हूलै भिड़ण, करि फौज **विकट्टी**। खार खधा असि खेड़िया, धावै बह धट्टी। —सू. प्र

बिकणौ, बिकबौ—देखो 'बिकणौ, बिकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पेम न निपजै खेत मैं, हाट न बिकतौ जोय। हरीया गाहक पेम कौ, सिर दे लेसी सोय। —अनुभववाणी

उ०—२ हीरौ हाटां माहि, हरिया बिकतौ देखीयौ। पारिख बिन कुछि नाहि, कौडी बदलै जात है। —अनुभववाणी

उ०—३ घणौ सीळ सत घणौ, भणौ लाला भटियाणी। किसूं दाव बळ कोप, भाव जम हरथ बिकांणी। —रा. रू.

बिकणहार, हारौ (हारी), बिकणियौ—वि०।

बिकिग्रोड़ो, बिकियोड़ो, बिक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिकीजणौ, बिकीजबौ—भाव वा०।

बिकत्ता—वि० [स विकर्ता] नहीं करने वाला, अकर्ता।

बिकत्थन—सं. पु [स.] १ शेखी, डींग।

२ व्यंग्य।

३ झूठी प्रशसा।

बिकत्था—सं स्त्री. [स.] १ अफवाह, जनश्रुति।

उ०—अस्टा दस आतुरं, वात बिसतरं बिकत्थां। राह थाह नरनाह, ताहि चिंता समरत्था। —रा. रू.

२ झूठी प्रशसा।

३ व्यंग्य।

४ शेखी, डींग।

५ निरर्थक या बेहूदी बात।

६ चुगली।

रू भे—बिकथा, बिकहा, बिगहा।

बिकथा—देखो 'बिकत्था' (रू. भे.)

उ०—१ राज कथादिक बिकथा राग सू, वारु कहुग्र बणाय। समता धरि न करी मन सुद्ध सु, सूत्र सिद्धांत मभाय। —ध. व. ग्रं.

बिकप्पणा—स. स्त्री. [स. विकल्पना] संदेह, भ्रम। (जैन)

बिकम—देखो 'विक्रम' (रू. भे)

बिकमाईत—देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे)

उ०—तइ नरसिंघदास-का कटक-बंध चालिता सातरि आगळइ दळि पाणी पाछिलइ दळि कादम। तइ कादम-कइ ठाहि खेह उडती जाइ। दूसरउ बिकमाईत। —अ वचनिका

बिकमायत—सं. पु. [स. विक्रम+आदित्य] १ राठौड़ो की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

बिकरंध—स. स्त्री. [स. विकर+गंध] बदबू, दुर्गंध।

रू. भे.—बिकरंद।

बिकर—स. पु. [स.] १ रोग, बिमारी।

२ तलवार चलाने का एक ढग।

३ राक्षस।

४ देखो 'विकार (रू. भे)

बिकरण—स. पु. [सं. विकर्ण] १ धातु व प्रत्यय के बीच में होने वाला वर्णागम। (व्याकरण)

२ एक शिवभक्त महर्षि।

३ धृत राष्ट्र का एक पुत्र, जो बडा न्यायी था।

४ कर्ण का एक पुत्र।

५ एक प्रकार का साप।

६ एक प्रकार का तीर या बाण।

वि. [स वि+करणम्] १ इन्द्रिय रहित।

[स वि.+कर्ण] २ जिसके कान न हो, कर्ण रहित।

३ जो सुन न सके, बहरा।

बिकरणक—स. पु.—शिव का एक व्याडि नामक गण।

बिकरतन, बिकरत्तन—स पु [स. विकर्तन] १ सूर्य। (डि. को.)

२ आक, मदार।

३ वह राजकुमार जिसने अपने पिता का राज्य छीन लिया हो।

४ एक सूर्यवंशी राजा जो कोढ से पीडित था और साबरमती नदी में स्नान करने से मुक्त हुआ था।

बिकरम—स. पु [स. विकर्म] वेद विहित कर्म के विपरीत कर्म, दुष्कर्म, पाप।

२ विरुद्धाचार।

३ देखो 'विक्रम' (रू. भे.)

बिकरमादित्य, बिकरमादीत—देखो 'विक्रमादित्य' (रू भे)

बिकरमी—वि [सं विकर्मन] १ निषिद्ध कर्म व कुकर्म करने वाला।

२ देखो 'विक्रमी' (रू भे)

बिकरस—स पु [सं. विकर्ष] १ बाण, तीर।

२ धनुष की प्रत्यचा खीचने का कार्य।

३ अन्तर, दूरी, फासला।

बिकरसण—स पु [स. विकर्षण] १ कामदेव के पाच बाणो मे से एक।

[स. विकर्षणम्] २ आकर्षण, खिचाव।

बिकरांत—देखो 'विक्रांत' (रू भे.)

बिकरांति—देखो 'विक्रांति' (रू. भे.)

बिकरार—देखो बिकराळ' (रू. भे.)

उ०—वार बिकरार सिरदार विध वाहियौ, समर भर भार धर भार मूंगे। सार सेलार ऊमार भभार सर, पार चोधार कर पार पूगो। —नाथौ सांदू

विकराळ, विकराल-वि [स. विकराल] (स्त्री. विकराळी) १ भीषण आकृति वाला, भयंकर, भयावह, डरावना।

उ०—१ भरै हिक स्रोणी पिंड भुजाळ। विढै हिक वीर हुआ विकराळ। —गु रू. ब

उ०—२ वो हळफळियो भिभकनै बैठो व्हियो। काई देखै के खुद भावण माथा रै पसवाड़ै बडी रो विकराळ रूप धारयां ऊभी है। —फुलवाड़ी

उ०—३ खंडैचे खड़िया थाट खूर, समवां काळ विकराळ सूर। —वि. स.

उ०—४ ते रात्रैचर अति विटल, विकल वदन विकराल। विसम वचन मुख बोलतौ, रूठो जाणि कराल। —वि. कु.

२ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—१ नगा असि नाळ वजै विकराळ। धरा रजि धोम वणी उडि वोम। —सू. प्र.

उ०—२ असुर घणा विकराळ कहौ किम मारिया। सता-सुख उपजाय देवा-दुख टारिया। —गी रां.

उ०—३ भ्रबक धुन अदग विकराळ रज धोम तम, ज्वाळ धख मसालां तोप ज्वाळा। - महाराजा बहादरसिंघ रौ गीत

उ०—४ ए तीकल्यौ किम जीवतौ, वैरी विकराल। बली मूफ थी अधिको थयो हीयडे ऊठी भाल। — श्रीपालरास

३ प्रचण्ड, तीव्र, तेज।

उ०—१ भाव बताय सामुही भाळै। अगनि भाल विकराळ उझाळै। —सू प्र.

उ०—२ तन पौरस अहिया तुरस, करग धरै किरमाळ। पावक घ्रत सजोग पुण, कोप वधै विकराळ। —मा बचनिका

उ०—३ जाण जीह नागणी, मणी ओपै अतमाळी। तिलौ सेल फल तरल, तीर पावक विकराळी। —बखतौ खिड़ियो

४ व्याकुल।

५ क्रोधित, क्रोध युक्त।

उ०—१ भाडी माथै गोळिया री बरखा होवण लागी, तौ सेवट विकराळ व्हियोड़ौ मूर बारै' निकळियौ आख्या सू आग बरसै ही अर वो चरड़ चरड़ करतौ दातरडिया घिसै हो। —अमरचूनडी

६ जगी, विशाल, दीर्घ, बड़ा।

उ०—१ ओ धनुम बडो विकराळ रघुवर छोटो मो। —गी रा

उ०—२ दौड़िया लका लियण दारुण, वधै कोप विकराळ। —सू. प्र.

स. पु.—१ सिंह, शेर। (अ. मा.)

२ युद्ध। (अ. मा.)

रू. भे.—बकराळ, बिकराळ, बिक्कराळ, बिकरार, वकराळ, विकरोळ, विक्रूराळ, विक्रूराल, विक्कर।

अल्पा.,—बकराळो, वकराळो, विकराळो, विकराळी, विकहल्यो।

विकराळो—देखो 'विकराळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ तेजावत तिगधार, 'रूप' बोलै मछराळो। विकराळा दळ बिचै, करू घमचक कळिचाळो। —सू प्र.

उ०—२ राजा देखि तरह विकराळै। अहि चित चंचकि दोध उछाळै। —सू प्र.

उ०—३ छत्रपतिहूंत सहस गुण छाजै, वीरभद्र गण तठै विराजै। रोम जटा ऊभा विकराळा, काळा रोम रोम अहि काळा। —सू. प्र.

उ०—४ रीछ लाल अगियां विकराळी। कसि जिम कसै भुजगम् काळी। —सू. प्र.

उ०—५ तासु वयणु अवहेलइ राओ, अति घणु चल्लइ जीवह घाउ। कोपि चडिउ तसु वणरखवालो, घनुखु चडावइ अम विकरालो। —सालिभद्र सूरि

उ०—६ पइठउ गढ नइ गिरूई खालि, सरप डस्यउ तेहं अति विकरालि। घरि आवतउ पडिउ असार, सुर सेना गणिका नइ बारि। —हीराणद सूरि

(स्त्री विकराळी)

विकरी - देखो 'विकरौ' (अल्पा., रू. भे)

विकहल्यो—देखो 'विकराळ' (अल्पा, रू भे)

उ०—ताम तेज तन सह्यौ, विख आवध अव घूल्यो। डग डग डूंहू बाय, नाद कै विम विकहल्यौ। —सुरजनदास पूनियो

विकरेता—देखो 'विक्रेता' (रू. भे.)

विकरोळ—देखो 'विकराळ' (रू भे)

उ०—विडरी असत 'विजो' थियो वासै, वाजै हाक थई विकरोळ। —नैणसी

विकरौ-स पु [स विक्रय] १ दाम लेकर कोई चीज देना, दाम लेकर किसी चीज के अधिकार का हस्तान्तरण करना, बेचना।

उ०—हाटा पडी हटनाल, हुमै मद सूगो हुवौ। बूकै घणा कलाळ, विकरो भागो बाघजी। —आसो बारहठ

२ वस्तु के बेचने से प्राप्त होने वाला धन।

रू. भे.—बिकरो, विकरो, विक्रो।

अल्पा.,—बिकरी, बिक्री, विकरी, विक्री।

विकळ, विकल-वि [स विकल] (स्त्री. विकला) १ व्याकुल, बेचैन, दुखी।

उ०—१ माळवणी दृणि विधि घणउ, विरह विकळ विलपंति। ढोलउ पूगळ पथ सिरि, प्राणंद प्रधिक खड़ति। —ढो. मा.

उ०—२ ज्योतिसिया कही ग्रहा रै योग सू इसी मालूम होय छै जे पांणी री प्रधिकत कर सहर विकळ होय से। —नी. प्र.

उ०—३ कस्या पासि कराकं कांमु, वयरी नुं हुं फेडउ ठामु। कत्या प्रावी धाई सकल कइ मारूं कइ करूं विकल।

—सालिभद्र सूरि

उ०—४ का तन प्राळस कर ऊंघ, का फिर सूंघा करत सूघ। का मन मूरख विकळ जास, का हुय बैठं वेदव्यास। —प्रनुभववाणी

उ०—५ विकल हुवा सुक सारिका हे! चुगं न पीवं नीर मियाजी।

—गी रा.

२ उदास' खिन्न-चित्त।

उ०—व्याकुल सीता सोधन फिरता, जो यो नैण जटाऊ जी, नारायणजी परमेसरजी। सुणनें कथा मुगत हरि दीनी, चाल्या विकळ प्रगाऊजी, नारायणजी परमेसरजी। —गी रा

३ भयभीत, डरा हुप्रा, घमड़ाया हुप्रा, विह्वल।

उ०—प्रर गुजरात री प्रधीस विकळ थको परीवार सूं चन्द्रहास लेतो ही प्रागं प्राय पड़ियो। —व भा.

४ क्षोभ युक्त।

५ खडित, भग।

६ हीन, रहित।

उ०—१ प्रथवी मद पळ, मत्र मवं नि फळ, जड़ी मूळी रस विकळ। कुळ स्त्री निरग्गळ, न्यायी राय तुच्छ दळ। चरड बहुल, बाट पाडा तणा कल कल। —रा मा स.

उ०—२ जै समजणो हुवै तै उणनें मूरख जाणं। जै भगी री मीटी तो न खाधी नै भंगी री कोधी खाधी तिण सू उणनै विवेक रो विकल जाणै। —भि. द्र

७ कुम्हलाया हुप्रा, मुर्भाया हुप्रा।

८ सडा हुप्रा।

९ प्रभाव या शक्ति से रहित, प्रसमर्थं।

१० क्रोधित, क्रुद्ध।

उ०—ते रात्रैचर प्रति विटल, विकल वदन विकराल। विसम वचन मुख बोलतो, हठो जाणि कराल। —वि कु

११ प्रस्वाभाविक।

१२ मिथ्या, झूठ, प्रसत्य। (प्र. मा.)

१३ चचल, प्रस्थिर।

१४ प्रपूर्ण, प्रधूरा।

१५ जिसमे कल नही हो, कल से रहित।

स. पु—१ कपट, छल। (प्र. मा., ह. ना. मा)

२ देखो 'वेप्रकल' (रू. भे) (प्र. मा.)

उ०—जद सुहागण बोली-बांमण नें माहै बसाणं ने कथा बचाई थी सो कथा तो बाछं थोडी नै माहरे सामो देखं। जो हुं जाणा मूरख है, विकळ है। —गाम रा धणी री वात

रू. भे—बिकळ, वेकळ, वैकळ, वकळ।

प्रल्पा,—विकळो।

विकळकांमी—स पु—नारद।

उ०—कीयो रामायण लक कुरखेत भारथ कीयो प्रोथ कोई पेखियो भीच प्रेहो। त्रिनयण नरण नारद पूछं त्रिण्है, कहो भगवत भगवत केहो। महारुद्र महाग्रह महागुणी, महाजुध कीया थं महादळ मारि। कहो करणाकरण पूछजै तो कन्हा, ऊथ को ऊदउत तणी उणिहारि। दइत कपि झूझता पड कुर देखीया, कहि रुद्र कहि रवि विकळकांमी। गागहर प्राभरण जिसो गजदळ गिळण, माख दे पूछियो प्राख सामी। —दुरसो प्राढो

विकळचित्त—वि.—१ प्रस्थिर चित्त।

२ चंचल।

रू. भे—बिकळचत, विकळचित्त।

विकळता, विकळताई—स. स्त्री.—१ विकल होने की प्रवस्था या भाव।

२ बेचैनी।

रू. भे—बिकळता, बिकळाई।

विकळप, विकलप—स. पु. [स. विकल्प:] १ भ्रम, भ्रान्ति।

उ०—जा घट पेम प्रगासीया, विखीया विकळप नाहि। हरीया छाना ना रहै, प्राया प्रतर माहि। —प्रनुभववांणी.

२ धोखा।

३ बिरुद्ध कल्पना।

उ०—प्रति उतिम नाभी प्रसथान, मन सकळप विकळप नही ठानु। प्रति उतिम सिवरन सरबगा, प्रछर एक भया प्रणभगा।

—प्रनुभववाणी

४ योग शास्त्रानुसार पच विधि चित्त वृत्तियो मे एक, जो ऐसे शब्द ज्ञान की शक्ति है कि जिसकी वाच्य वस्तु नही होती।

५ मन की दुविधा!

उ०—प्रतर एक लीया रहै सदत्रन, प्रमतन प्राखं बोल बचनती। करत न को सकलप नही विकळप, सुख दुख देह न वछं मनती।

—प्रनुभववाणी

६ मन मे उत्पन्न होन वाली भाति-भाति की कल्पनाए।

उ०—१ सूत्र नति सरदहै रहै विकलप घणं। संसयी नाम मिथ्यात चोथो भणं। —ध. व. ग्र.

उ०—२ मन संकळप विकळप है मनही, मन जाग्रत मन सूता। मन ही त्याग चलै बौह माया, मन ही लाग विगूता।
—अनुभववाणी

७ निर्धारण।

८ संदेह, हिचकिचाहट, सकोच।

९ इच्छा, अभिरुचि।

१० भूल चूक। ११ अज्ञानता।

रू. भे.—बिकळप, बिकलप।

बिकळांग, बिकलांग–वि. [स. विकल+अंग] जिसका कोई अंग टूटा या खराब हो, अंगहीन।

रू. भे.—बिकळाग, बिकलाग।

बिकळा, बिकला–स. स्त्री. [स. विकला] १ वह स्त्री जिसको मासिक धर्म होना बंद हो गया हो।

२ कला का सातवा अंश।

३ उपद्रव।

४ कलह।

५ बुधग्रह की गति।

उ०—चंद्रकला तै बिकला जाणौ, घटत बधन नइ लेखइ। साहिब नइ तउ सदा सुरंगी, वाधइ कला विसेखइ। —वि. कु.

६ दुर्गा देवी का नामान्तर।

उ०—दीरघा लघु वपु द्रढा, सबेही रूप विरूपा। बिकळा सकळा अजा, उपावरण आप आपुपा। —देवि.

वि.—चचल, अस्थिर।

रू. भे.—बिकळा।

बिकलिंदी—देखो 'बिकलेंद्रिय' (रू. भे.)

उ०—मनुस विन नव माहै तेऊ वाऊ वै जावै। बिकलिंदी तै दस मांहि जावै पूठा ही आवै। —घ. व. ग्रं.

बिकळो–वि. —१ चिरस्थाई अमिट।

उ०—राजा काम भळावियो, रासै बिकळो कस्थ। कहयो वजीरा 'गजपती', तेडो साऊ मस्थ। —गु रू. ब.

२ देखो बिकळो' (पु.)

बिकलेंद्रि, बिकलेंद्रिय–वि. [स. विकलेन्द्रिय] १ जिसकी इन्द्रिय वश मे न हो।

२ जिसकी इंद्रिय मे कोई दोष हो।

स. पु.—जैन मतानुसार द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरेन्द्रिय जीवो का समूह।

उ०—१ प्राण बिकलेंद्रिय भूत वनस्पति, जीव पचेंद्रिय जात। चार स्थावर सत्वज कह्या, भगवतं साक्षात। —जयवाणी

उ०—२ साते नरक तणो इक दंडक, असुरादिक दस जांणजी। पाच थावर नै त्रिणि बिकलेंद्रि, उगणीस गिणती आंण जी।
—घ. व. ग्र.

रू. भे.—बिकलिंदी, बिगलिंदी, बिगलिंद्रिय।

बिकळो–वि. (स्त्री. बिकळी) १ अविश्वास-पात्र।

२ बदचलन, दुश्चरित्र।

३ देखो 'विकळ' (अल्पा., रू भे.)

बिकल्प—देखो 'विकलप' (रू. भे)

बिकस–स पु. [सं. विकस:] चन्द्रमा, चान्द क. कु. बो.।

बिकसणौ, बिकसबौ–क्रि. अ. [स. विकाशनं] १ विकसित होना।

उ०—फूलत वेल विरछ मालती माधवी, लहलहै कुंज कुंज बिकसै। —रसीलै राज रा गीत

२ खिलना, फूलना।

उ०—१ मुख दीसो बिकसै कमळ, चदन वचन रसाळ। हियडै जाग कि करतरी, धूरत चिन्ह ए माल। —पचदडी री वारता

उ०—२ नाह बिकसै घणा कमळ जिम भड़ निवेड। भड घणा पाडतो सोमियो महा भड। —हा. झा.

३ वृद्धिमान होना, बढना।

उ०—नवली भलो कुमदिनी बिकसै, रवि ऊगमते जेण रे। भर योवन रवि ऊगै दिन दिन, कुमरी बिकसै एम रे। —वि. कु.

४ आगे बढ़ना, प्रगतिशील होना।

५ प्रफुल्लित होना, हर्षित होना, आल्हादित होना खुशी मे फूलना।

उ० १ उत्तम नर मिलियो जई, बाप भणी धरि नेह। मन बिकस्यो तन उल्लस्यो, रमाचित थयो देह। —वि. कु

उ०—२ सखी अगीणो साहिबो, वाकम सू भरियोह। रग बिकसै रितुराज मे, ज्यू तरवर हरियोह। —वा दा.

उ०—३ प्रमुख अनेक सिद्ध वसइ। जेणि दीठइ उत्तम ना मन बिकसइ।
—सभा.

६ प्रकाशित होना।

बिकसणहार, हारौ (हारी), बिकसणियौ—वि०।

बिकसिओडो, बिकसियोड़ो, बिकस्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिकसीजणो, बिकसीजबो—भाव वा०।

बिकसणो, बिकसबो, बिगसणो, बिगसबो, बगसणो, बगसबो, बिकस्सणो, बिकस्सबो, बिक्कसणो, बिक्कसणो, बिगसणो, बिगसबो,
—रू० भे०

बिकसाडणो, बिकसाडबो—देखो 'बिकसाणो, बिकसाबो' (रू. भे.)

बिकसाडणहार, हारौ (हारी), बिकसाड़णियो—वि०।

विकसाडिग्रोड़ौ, विकसाड़ियोड़ौ, विकसाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विकसाड़ीजणौ, विकसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

विकसाड़ियोड़ौ—देखो 'विकसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विकसाड़ियोडी)

विकसाणौ, विकसाबौ—[राज. विकसणौ क्रि. का. प्रे. रू] १ विकसित करना/करवाना ।

उ०—मूवा नै हरिया किया, मुरझ्या विकसाया हे । —गी. रा.

२ वृद्धिमान करना, बढ़ाना ।

३ आगे बढाना/बढवाना, प्रगतिशील करना/करवाना ।

४ प्रफुल्लित करना/करवाना, हर्षित करना/करवाना, आल्हादित करना/करवाना, खुशी मे फुलाना/फुलवाना ।

विकसाणहार, हारौ (हारी), विकसाणियौ—वि० ।

विकसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विकसाईजणौ, विकसाईजबौ—कर्म वा० ।

विकसाडणौ विकसाडबौ, विकसाणौ, विकसाबौ विकसावणौ, विकसावबौ, विगसाडणौ' विगसाडबौ, विगसाणौ, विगसाबौ, विगसावणौ, विगसावबौ, विकसाडणौ, विकसाडबौ, विकसावणौ, विकसावबौ, विकस्साणौ, विकस्साबौ, विकस्सावणौ, विकस्सावबौ, विगसाडणौ, विगसाड़बौ, विगसाणौ, विगसाबौ, विगसावणौ, विगसावबौ—रू भे ।

विकसायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ विकसित करवाया हुआ. २ आगे बढवाया हुआ, प्रगतिशील करवाया हुआ. ३ प्रफुल्लित करवाया हुआ, हर्षित करवाया हुआ. ४ आल्हादित करवाया हुआ, खुशी मे फुलवाया हुआ. ५ वृद्धिमान किया हुआ, बढाया हुआ.

(स्त्री. विकसायोडी)

विकसावण, विसावणौ—वि.—१ विकसित करने वाला ।

२ खिलाने वाला, प्रस्फुटित कराने वाला ।

उ०—हिंदुस्थान का छत्र, जगत छाया वरतावण । हिंदुस्थान मे सूरज, कवि कमळ विकसावण । —रा. रू

३ वृद्धिमान करने वाला, बढाने वाला ।

४ आगे बढाने वाला, प्रगतिशील करने वाला ।

५ प्रफुल्लित करने वाला, आल्हादित करने वाला, खुशी मे फुलाने वाला ।

विकसावणौ, विकसावबौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे)

विकसावणहार, हारौ (हारी), विकसावणियौ—वि० ।

विकसाविग्रोड़ौ, विकसावियोड़ौ, विकसाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विकसावीजणौ, विकसावीजबौ—कर्म वा० ।

विकसावियोड़ौ—देखो 'विकसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विकसावियोडी)

विकसियोड़ौ—भू. का कृ.—१ विकसित हुवा हुआ. २ खिला हुआ, फूला हुआ (फूल) ३ आगे बढा हुआ, प्रगतिशील हुवा हुआ. ४ प्रफुल्लित हुआ हुआ, हर्षित हुवा हुआ, आल्हादित हुवा हुआ, खुशीमें फूला हुआ.

(स्त्री विकसियोडी)

विकस्सणौ विकस्सबौ—देखो 'विकसणौ, बिकसबौ' (रू. भे.)

उ०—मेडतिया 'हरियद,' सूर दळ राम विकस्से । मानसिंघ जूझार, वेळ बोलिया विहस्से । —रा. रू.

विकस्सणहार, हारौ (हारी), विकस्सणियौ—वि० ।

विकस्सिग्रोड़ौ, विकस्सियोड़ौ, विकस्स्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विकस्सीजणौ, विकस्सीजबौ—भाव वा० ।

विकस्साणौ, विकस्साबौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ (रू. भे.)

विकस्साणहार, हारौ (हारी), विकस्साणियौ—वि० ।

विकस्सायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विकस्साईजणौ विकस्साईजबौ—कर्म वा० ।

विकस्सायोड़ौ—देखो 'विकसायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विकस्सायोडी)

विकस्सावणौ, विकस्सावबौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे.)

विकस्सावणहार हारौ (हारी), विकस्सावणियौ—वि० ।

विकस्साविग्रोडौ, विकस्सावियोड़ौ, विकस्साव्योड़ौ —भू० का० कृ०

विकस्सावीजणौ, विकस्सावीजबौ—कर्म वा० ।

विकस्सावियोडौ—देखो 'विकसायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. विकस्सावियोडी)

विकस्सियोड़ौ—देखो 'विकसियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. विकस्सियोडी)

विकहा—देखो विकथा' (रू भे)

विकाणौ विकाबौ—देखो 'बिकाणौ, बिकाबौ' (रू भे.)

उ०—१ एकइ वन्नि वसनडा, एवड अंतर काइ । सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लक्खि विकाइ । —अ. वचनिका

उ०—२ तू सरवर की माछळी, कौण पिता कुण माय । अलप सनेही कारणै, हाटो हाट विकाय । —अनुभववाणी

विकाणहार, हारौ (हारी), विकाणियौ—वि० ।

विकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विकाईजणौ, विकाईजबौ—कर्म वा० ।

बिकाविनी–सं. स्त्री. [सं] स्कन्द की एक अनुचरी, एक मातृका ।

बिकायोडौ–भू० का० कृ०—देखो 'बिकायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिकायोडी)

बिकार–सं. पु [सं. विकार:] १ प्रकृति, रूप, स्थिति आदि में होने वाला परिवर्तन ।

उ०—१ बोधक बोध एकही कहियै, निम्चय योही हमारा । है सुखराम सदा सुद्ध केवळ, नहिं कोई माया बिकारा ।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ ब्रह्मड इकीस ऊपरै आसन, ज्यां पर अविगत योगी । नाद बिंदका नहीं बिकारा, ब्रह्म आनद का भोगी ।
—स्री सुखरांमजी महाराज

२ किसी वस्तु के आकार, गुण, रग-रूप, स्वभावादि मे होने वाला परिवर्तन जिसमे वह काम देने योग्य न रहे ।
३ उक्त प्रकार का परिवर्तन करने वाला तत्व ।
४ क्रोधादि के कारण मुख पर हुई विकृति ।

उ०—हुई दौड हैमरा, नरा ऊधरां करारां । सेख ज्वाळ सल्लळी, कना सिव चवख बिकारां ।   —रा. रू

५ बीमारी, रोग ।

उ०—जै जळ मीकर, तै उद्वेग कर । जउ सीतळोपचार ते करइ बिकार । इणि परि प्रज्वळित, स्नेह पटळ, विरहानळ नीपजइ ।
—रा. सा. स.

६ वेदान्त व साख्यदर्शनानुसार किसी पदार्थ के रूपादि का बदल जाना ।
७ मनपरिवर्तन ।
८ मनोवेग ।
९ उद्वेग, विकलता ।
१० दोष ।

उ०—१ मीचै अम्रत अंग अति सजम, जोवन लगै बिकार जरा जम । परमहस आणद मे प्राणी, ब्रह्म प्रकासि हुई तदि वाणी ।
—सू. प्र.

उ०—२ दरसी जोत दिदार, तिरवेणारी ताक मैं । छूटा सकळ बिकार, आथा मन मांग मैं ।   —स्री सुखरामजी महाराज

उ०—३ सील सतोख सदा रहै सीतळ, आनद रूप रहै जाह तांही । पेम प्रवाह भयै तन भीतरि, और बिकार लिपै नही काही ।
—अनुभववाणी

११ वासना ।

उ०—१ करम कचोडी बैस करि, निजर लगी चहु दिस । हरीया बिखै बिकार मैं, तन मन रहीयौ फिस ।   —अनुभववाणी

उ०—२ परिया तणं न चालै पैडै, हाले कुपथ बिकार हियै । दाना मिनख न राखै डरै, दांना विन कुण सीख दियै ।
—कविराज बाकीदासजी

१२ अवगुण, बुराई ।

उ०—१ विखयानद मलीन बिकारा, यह मान्या सो जुग जुग हारा । विखयानद जगत का भाखा, अब भजनानद की केहूं साखा ।
—स्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ आसि पासि त्रन करम का, फळ लागा सुख दुख । माया मोह बिकार की, हरीया मिटं न भूख ।   —अनुभववाणी

१३ वैमनस्य, शत्रुता ।

उ०—अठै रह कामू बफादारी लेयम्यां । हालौ घरा हालां । सो सूरौ इसडौ रग खींवं रौ दीसौ, जं सगा सूं बिकार पैदा हो बिगाड़ हुवै ।   —सूरै खींवै कांधळोत री वारता

१४ परिवर्तन ।

उ०—स्वाति बूद आकास की, पासं पडी समद । हरीया पैम बिकार का निज कण खोया कद ।   —अनुभववांणी

१५ बदहजमी ।

उ०—हांम कांम लोचणी उलाळी आकास जावै । चावळ रौ चौथौ हैंसौ खावै । तम्रोल बिना खाधा अहारा बिकार थावै । माडी मोडी कटारी री पडचली समावै ।   —रा. सा. स.

१६ स्वाद, जायका ।

उ०—आब स थोहरि ईख वड, एकै घरि अवतार । माई जिभ्या लख कहै, जिभ्या लख बिकार ।   —सुग्जनदास पूनियौ

१७ जैन मतानुसार पाच ज्ञानेंद्रियो से होने वाले २४० विकारो में से कोई एक ।
रू. भे—बिकार, विकारु ।

बिकारी–वि. [स. विकारिन्] १ जिसमे कुछ विकार हुआ हो, बिकार युक्त ।
२ जिममे कुछ परिवर्तन हुआ हो या होता रहता हो, परिवर्तनशील
३ बिकार उत्पन्न करने वाला ।

उ०—मेली सीगी घालै नेमा, राम भगति का नाही पेमा । भरम करम बौह करै बिकारी, साध नही औ वड ससारी
—अनुभववांणी

स पु–१ साठ सवत्सरो में से तैंतीसवें सवत्सर का नाम जो विष्णु बीसी का तेरहवा संवत्सर होता है ।

२ व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिसकी रचना मे विकार (परिवर्तन) हुआ हो ।
रू. भे.—बिकारी ।

विकाव—देखो 'विकार' (रू. भे.)

उ०—बाहिर हेम रांम का वांना, भीतरि भया भंगार। या तन कुं कारी नहीं लागै, मनवा भरघा विकाव। —अनुभववांणी

विकाल-सं पु. [सं. विकालः] १ वह समय जब देवकार्य व पितृकार्य करने का समय बीत चुका हो।

२ देर, विलम्ब।

३ सन्ध्या का समय, शाम।

विकावणो, विकावबो—देखो 'बिकाणो, बिकाबो' (रू. भे.)

उ०—किसी सीख सायर सुनन, कोड विकावण एक कण (रा)। ताई सीख येही खरी, यो दुरगा ग्रासकरण रा।

—सुरजनदास पूनियो

विकावणहार, हारौ (हारी), विकावणियौ—वि०।

विकावियोड़ो, विकावियोड़ौ, विकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विकावीजणो, विकावीजबो—कर्म वा०।

विकावियोड़ो—देखो 'बिकायोडो' (रू भे)

(स्त्री. विकावियोडी)

विकास-स पु [स विकाशः] १ प्रदर्शन, प्राकट्य, प्रकटन।

२ आकाश।

३ विस्तार, फैलाव।

४ प्रकाश, रोशनी।

५ प्रस्फुटन, खिलन।

६ उन्नति, बढ़ोतरी, तरक्की।

उ०—घरटी फेरता हरजस तौ बंद व्हैग्या ग्रर फिल्मी गीत गूंजण लाग्या-अंखिया मिलाकै-जिया भरमाकै-चलै नही जाना हो हो चले नही जाना। गाम मे दो च्यार मुकद्‌मा इ चालू व्हैग्या जिणसं लोग बाग कई दफा रा जाणकार व्हैगा। कंवरण रौ मतलब भ्रौ कै गाम रौ मोकळौ साम्क्रतिक विकास व्हैगौ। —अमर चूनडी

रू. भे.—बिकास, बिगास, विगास।

विकासणो, विकासबो-क्रि अ —१ विकसित होना।

२ प्रकटित होना, प्रदर्शित होना।

३ प्रस्फुटित होना, खिलना।

उ०—काळी भमरावळि कळी, भूहा बांकडियाह। कमळ प्रभात विकासिया, इसडी ग्रांखडियाह। —अज्ञात

४ उन्नत होना।

विकासणहार, हारौ (हारी), विकासणियौ—वि०।

विकासिग्रोड़ौ, विकासियोड़ौ, विकास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विकासीजणो, विकासीजबो—भाव वा०।

विकासणो, बिकासबो, बिगासणो, बिगासबो, विकासणो, विकासबो, विगासणो, विगासबो—रू० भे०।

विकासियोड़ो-भू. का कृ.—१ प्रकटित हुवा हुआ, प्रदर्शित हुवा हुआ.

२ विकसित हुवा हुआ. ३ प्रस्फुटित हुवा हुआ, खिला हुआ.

४ उन्नत हुवा हुआ।

(स्त्री. विकासियोडी)

विकिर-स. पु. [सं विकिरः] १ पूजा के समय विघ्न दूर करने के लिए चारो ओर फेंके जाने वाले चावल आदि।

२ पक्षी।

३ कूप, कुआ।

४ पेड, वृक्ष।

विकीरण-वि. [सं विकीर्ण] १ जो चारो ओर फैला या छितराया हुआ हो।

२ प्रसिद्ध, मशहूर।

विकुंठ-वि. [सं.] १ अत्यधिक तीक्ष्ण या नुकीला।

२ अत्यधिक, भुथरा।

३ रैवत मन्वन्तर का एक देवता-समूह जिसमे चौदह देव होते थे।

वि. वि.—इस देवता समूह मे निम्न लिखित देवता होते थे—१ अजेय २ कृश ३ गौर ४ जय ५ भीम ६ दम ७ ध्रुव ८ नाथ ९ यश १० विद्वस ११ वृण १२ शुचि १३ मेतृ १४ दात।

४ देखो वैकुठ' (रू. भे.)

विकुंठा-स. स्त्री—एक देवी, जो रैवत मन्वन्तर मे उत्पन्न विकुंठ नामक देवताओ की माता व शुभ्र की पत्नी मानी जाती है।

विकुडभांड-स पु [स.] एक दानव का नाम। (पौराणिक)

विकुंडळ-सं. पु--निषध नगर के एक धनी वैश्य के पुत्र का नाम।

वि वि.—यह बडा पापी पुरुष था। इसने यमुना तीर वासी एक ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण के सग दो बार यमुना मे माघ स्नान किया था जिससे इसकी मुक्ति हुई थी।

विकुभ-स. पु—एक दानव, जो कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक था।

विकुक्ख, विकुक्खी, विकुक्षि, विकुख, विकुखी-सं पु. [सं. विकुक्षी] १ अयोध्यापति सूर्यवशोत्पन्न इक्ष्वाकु के १०० पुत्रो में से सर्वज्येष्ठ पुत्र जिसे शशाद नामान्तर भी प्राप्त था। यह ककुत्स्थ, जिसके नाम पुरञ्जय व इन्द्रवाह भी थे, का पिता था।

उ०—१ सुत कासिप सूरज तप असाधि, वइवस्तु सूर सुत तेज वाधि। वइवस्तु तणौ इख्वाकु वीर, सभ्रम इख्वाकु विकुख सधीर।

—सू. प्र.

उ०—२ सुत विकुख सकुनिज सुत स्वसाद, पुत्र ज ककुत्स्थ प्रति हित प्रमाद। जे सुत अनन प्रथु पुत्र जास, राजै प्रथु नदन विस्टराम। —सू. प्र.

वि.—जिसकी तोंद बड़ी हुई हो।

विकुट-सं. पु.—राजस्थानी (डिंगल) में एक गीत छन्द विशेष।

वि. वि.—इसमे प्रथम चरण मे १४-१४ मात्राओं पर यति से २८ मात्रा फिर दूसरे चरण में २७ मात्रा, फिर ७-७ मात्राओ के २० चरण होते हैं।

उ०—चवदह मत्ता चरण दुव, तिय सत वीसां सोह। तिण पी मिळ दुव चवद वद, विकुट गीत इम होह। —पिंगळ सिरोमणि

विकूरवी, विकूरवो-वि.—वैक्रिय लब्धि से उत्पन्न, कृत्रिम, बनावटी। (जैन)

उ०—तिहा बळी सबळो सिंह विकूरवी रे, ते कहे मैं दीठो इक सीह रे। माणस नी लेतो वासना रे, आवे छै इण वार अबीह रे। —वि कु

विकेस-वि. [स. विकेश] १ जिसके सिरके के बाल खुले हो।

२ जिसका सिर बालरहित हो, गंजा।

स. पु—१ एक प्रकार का प्रेत।

२ पुच्छल तारा।

विकेसी-सं. स्त्री. [स विकेशी] सिर के खुले बालो वाली स्त्री।

२ वह स्त्री जिसके सिर मे बाल न हो, गंजे सिर वाली स्त्री।

३ शिव की पत्नी का नाम।

४ अग्नि की एक पत्नी का नाम।

५ पूतना राक्षसी का एक नाम।

६ बालो की छोटी-छोटी लटों को मिलाकर बनाई हुई चोटी या वेणी।

विकोक-स. पु. [स] वृकासुर का पुत्र तथा कोक का छोटा भाई।

विकोदर-स. पु [सं. वृकोदर] देखो 'व्रिकोदर' (रू. भे)

उ०—१ अमरावत अजबसिंघ अमर बोल काजे, जुद्ध आण जुधिस्ठिर अंधस सा राजे। योयद का सुदर विकोदर सा बाहां, समर की मरजाद धरम के राहां। —रा. रू.

उ०—२ पटहथ ऊचंडतो भुज पाणां, बाहां प्रलभ भेदियो वाणां। ईलं साह नयण आपाणे, जोधाहरो विकोदर जाणं। —ईसरदास वीरमदेवोत राठौड रो गीत

उ०—३ गाहेवा अजमेर गिरध्धर, सू सादूळ माडवा सम्मर। करग उपाडे 'भीम' किरम्मर, वधियो बामण जेम विकोदर। —गु. रू. ब

विकोस-वि. [सं. विकोश, विकोष] १ म्यान से निकला हुआ, बिना म्यान का। (शस्त्र)

२ बिना छिलके या भूसी का, भूसी रहित।

३ खुला हुआ, अनाच्छादित।

विक्क-स. पु. [सं. विक्कः] १ हाथी का बच्चा।

२ देखो 'बिक्क' (रू भे.)

विक्कटा—देखो 'विकटा' (रू. भे.)

उ०—देवी भूनडा अम्मरी वीस भूजा, देवी त्रीपुरा भैरवी रूप तूजा। देवी राखसं घोमरं रक्त रूती, देवी दुरजटा विक्कटा जम्म दूती। —देवि.

विक्कमपुर, विक्कमपुरि, विक्कमपुरी—देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे)

उ०—१ अभयदाणु जिणि दिनु सयल सयह विक्कमपुरि। किय पयटु जिण उसम भुवणि बहुविह उच्छवु भरि। —ऐ. जै. का. स.

उ०—२ विक्कमपुरि जिण वीर भुवणि वादिय मणु मोहइ। गणहरु जेम सुहम सामि भवियण दिण बोहइ। —ऐ. जै. का. स.

विक्कय—देखो 'विक्रय' (रू. भे.)

विक्कराळ, विक्कराल—देखो 'विकराल' (रू. भे)

उ०—१ जुट जम्म जाळ, वपं विक्कराळं। बाहुडड पिंड, बाणासे विखडं। —गु. रू. ब.

उ०—२ ऊछळंत हाथ पाव, घाट सीस दाव घाव। मड ईस रु डमाळ, वीर नित्त विक्कराळ। —सू. प्र.

उ०—३ कलू काल रूपी महा विक्कराळं, फणा टोप रोपं महकोप जाल। वलक्कं वलतो चलंतो करालं, जिणं फूंकि सूकं तरु माल डाल। —ध व. प्र.

विक्करू—देखो 'विकराळ' (रू भे)

विक्कसणो, विक्कसबो -देखो 'विकसणो, किरसबो' (रू. भे)

उ०—रिणमल्ल राव विसरामियो, कंभा को मन विक्कसै। छळियो छदम तें कूड कर, जेम सीह आगे ससै। —नैणसी

विक्कसणहार, हारो (हारी), विक्कसणियो—वि०।

विक्कसिओड़ो, विक्कसियोड़ो, विक्कस्योड़ो—भू० का० कृ०।

विक्कसीजणो, विक्कसीजबो—भाव वा०।

विक्कसियोड़ो—देखो 'विकसियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विक्कसियोड़ी)

विक्कासणो, विक्कासबो—देखो 'विकासणो, विकासणो' (रू. भे.)

उ०—विक्कासै हासं सोसै वध, मेलै मुक्ता भ्रूहारै। धारा लकाळे पाणी धूणी, अब्बै नम्म आधारै। —गु. रू. ब.

विक्कासणहार, हारो (हारी), विक्कासणियो—वि०।

बिक्कासियोड़ौ, बिक्कासियोड़ौ, बिक्कास्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिक्कासीजणौ बिक्कासीजबौ—कर्म वा०।

बिक्कासियोड़ौ—देखो 'विकासियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री बिक्कासियोड़ी)

बिक्ख, बिक्ख—१ देखो 'विस' (रू. भे.)
उ०—आवै सघण अचीत, जेम वनि अगनि सिळग्गा। सरप बिक्ख सोखवा, मत्र आवै सुखमंगा। —रा. रू.
२ देखो 'विसम' (रू. भे.)
उ०—चर्चा झाळ तूटै मुखां झाळ चर्चा, परस्सौ फरस्सौ अमावै अचर्चा। वदै रांमहूं रांम वायक बिक्ख, तिकै रांम रा बांण जांणै सतिक्ख। —सू प्र.
३ देखो 'वीख' (रू. भे.)
उ०—अति सूरिति आवस जेती ऊफणि, वामण रूप जिहीं वधियौ। विढवा दळ साम्ही दोन्ही बिक्खां, जाणै अंतक जागवियौ।
—गु. रू. बं

बिक्खणी—स. स्त्री—सडक चलते समय घोडे के पैर की रगड़ लगने से उत्पन्न आग की चिनगारी।
उ०—खुरताळा बिक्खणी, घणीलग्गी आयामां। मह सुणीजै नीसाण, वमू बाजी वरहासा।
—गु. रू बं

बिक्खधर—देखो 'विसधर' (रू. भे)
उ०—सहर अजैपुर जोधपुर, सोबै राज अवन्न। पूठ अकब्बर याहरां, थयौ बिक्खधर मन्न। —रा. रू

बिक्खम, बिक्खमी, बिक्खम्म, बिक्खम्मी—देखो 'विसम' (रू. भे.)
उ०—भारा आकात हुवदी भुम्मी, वरतंदी सुरवार बिक्खम्मी। अमरू कथ अहमाण अखम्मी, यदै उथ्थल थांनूदा। —र. ज. प्र

बिक्खहर—१ देखो 'विसधर' (रू भे)
२ देखो 'विसहर' (रू भे)

बिक्खेव—देखो 'विक्षेप' (रू. भे.) (जैन)

बिक्टोरिया—स. स्त्री [अ.] १ प्राय: फिटन से मिलती-जुलती किन्तु उससे कुछ छोटी और हल्की एक प्रकार की घोड़ा-गाडी।
२ एक छोटा ग्रह जिसकी खोज हैंड नामक पाश्चात्य ज्योतिषी ने सन् १८५० मे की थी।

बिक्रतड—देखो 'वक्रतुड' (रू. भे)
उ०—ग्यान रौ गौरख बिक्रतड बुधांन रौ गणा, सिवा कामदेव मानसीरां मे समद। छोळा माघवान बळाकार गदाधार छाजै, नृप भूपाळ असौ उदीपियौ नद।
—महाराज सनमानसिंघ हाडा रौ गीत

बिक्रत—वि. [स. विकृत] १ जिसमें किसी प्रकार का विकार उत्पन्न हो गया हो, विकारयुक्त।
२ जिसका आकार, रूप आदि में परिवर्तन हो गया हो, कुरूप, भद्दा
उ०—वा दो तीन वेळा मासी रै मूंढा साम्ही जोयौ तौ उणनै मूंढो ललायौ जाणै उणरी आख्या होठा माथै चिप्योडी व्है ज्यूं, कान आपरी ठायौ छोड लिलाड माथै जुड़ग्या अर नाक ठोडी रै हेटै लटूमै। इण भात मासी रौ उणियारौ बिक्रत अर बिडरूप क्यूं व्हैगौ? —फुलवाड़ी
३ अस्वभाविक।
४ अधूरा, अपूर्ण।
५ बीमार, रोगी।
६ अगहीन, विकलांग।
७ उद्विग्न।
८ घृणाजनक।
९ अरुचिकारक।
१० असाधारण।
स. पु.—१ दस लोककर्त्ताओं में से दूसरे प्रजापति का नाम।
२ विष्णुवीसी मे चौथा व साठ सवत्सरों में से चौबीसवें संवत्सर का नाम।
३ परिवर्त्त राक्षस का नाम। (पुराण)
४ ब्राह्मण वेशधारी कामदेव, जिसने इसी वेश में अयोध्यापति इक्ष्वाकु के साथ सवाद किया था।
रू भे—बिक्रत, वक्रत, विक्रित।

बिक्रतस्वर—सं. पु [सं विकृत+स्वर] अपने नियत स्थान से हटकर दूसरी श्रुतियो पर जाकर ठहरने वाला स्वर। (संगीत)

बिक्रता—स. स्त्री. [सं विकृता] एक योगिनी का नाम।

बिक्रति—स स्त्री [स विकृति·] १ विकृत होने की अवस्था या भाव।
२ विकार या खराबी।
३ विकार के उपरान्त प्राप्त होने वाला रूप, बिगडा हुआ रूप।
४ बीमारी, रोग।
५ परिवर्तन।
६ परिणाम।
७ मानसिक क्षोभ।
८ २३ वर्णों के छन्दो की सज्ञा। (पिंगल)
९ विकार आने पर होने वाला मूल प्रकृति का रूप। (सांख्य)
१० मूल धातु से विकृत होने पर प्राप्त होने वाला शब्द का रूप।
११ भागवत, विष्णु, एव वायु के अनुसार एक यादव राजा जो भीमरथ का पिता व जीमूत राजा का पुत्र था।
रू. भे.—बक्रति।

विक्रतुंड—देखो 'वक्रतुंड' (रू. भे.)

विक्रम–वि.—बिना क्रम का, क्रमरहित ।

स. पु. [सं. विक्रमः] १ विपरीत गति ।

२ कदम, डग ।

३ पराक्रम, बल, शौर्य ।

४ बहादुरी, वीरता ।

५ चाल गति ।

६ गरुड पर सवारी करने वाले भगवान, विष्णु भगवान् ।

७ ब्रह्मवीसी या साठ सवत्सरो मे से चौदवा सवत्सर ।

८ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से बलवर्धन नामक पुत्र ।

९ योद्धा वीर । (अ. मा)

[सं. विकर्म] १० दुष्कर्म, पाप-कर्म ।

उ०—सुभ करमन का सुख फल स्वरगा, असुभ करै दुख भोगै नरका । करम विक्रम तणा यह साजा, कबहू रक कब हो राजा ।
—स्री सुखरामजी महाराज

११ तीन की सख्या ।*

१२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू भे)

उ०—स्रीरांम कुळ राम अवतार, जेतवारू कै जैवार । भोज विक्रम करन तैं सवाय, आचार की सोभा वरणी न जाय ।
—रा. रू

१३ देखो 'विक्रमसवत्' (रू. भे.)

रू भे.—बिकरम, बिक्रम, बीकम, विकम, विकरम, वीक्रम, बीकम्म ।

विक्रमक–स पु – स्वामीकार्तिकेय का एक सैनिक अनुचर ।

विक्रमगढ, विक्रमनगर, विक्रमनगरि, विक्रमनगरी, विक्रमपुर, विक्रमपुरी
स. पु.—१ राजस्थान राज्यान्तर्गत बीकानेर नामक एक शहर ।

उ०—अत्र प्रस्तावि महाराजाधिराज महाराजा स्री कल्याणमल विक्रमनगरि राज करै छै । —द वि

२ जयसलमेर राज्यान्तर्गत एक प्राचीन नगर विक्रमपुर ।

रू. भे.—बीकपुर, बीकमपुर, बीकमपुरि, बीकमपुरी, विक्रूमपुर, विक्कमपुरि, विक्कमपुरी, वीकनैर, वीकपुर, वीकमपुर ।

विक्रमसील–स. पु.—एक राजा, जो कालिन्दी का पति और दुर्गम का पिता था ।

विक्रमांत–स पु [सं. विक्रम+अंत] योद्धा, वीर । (अ मा)

रू. भे.—विक्रमात ।

विक्रमाजीत विक्रमादित विक्रमादित्य, विक्रमादीत–स. पु. [सं. विक्रमादित्य] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनकी राजसभा मे कालिदास थे और विक्रमी-संवत् इन्ही का चलाया हुआ माना जाता है ।

उ०—१ गया चोतीस वादेसाहु, और केता भुंवाळू । विक्रमाजीत अर भोजराज, गयो सो मुज बलाळू । —ऊदो नैणा

उ०—२ भूप विक्रमादित था ऊजेण सहर का,सभ वातां समरत्थ था दुख काटण पर का । दाता भोज पंवार था न्रप धार नगर का, लाख लाख दब देत था इक इक अख्वर का । —दुरगादत्त बारहठ

उ०—३ विक्रमादित्य जिमउ उपगारी, अहनिसि सेवक नइ सुखकारी । पाच पडव जिम बलवन, सीह तणी परि साहसवत ।
- ऐ. जै. का सं.

रू भे —बिकरम, विकरमाजीत, बिक्रमाजीत बिक्रमारक, बीक, वीक्रम, बीको, विकमाईत, विकमायत, विकरमादित्य, विकरमादीत विक्रमारक, वीक, वीकम, वीकम्म ।

विक्रमाब्द–स. पु —विक्रमादित्य के नाम से चलाया हुआ सवत्, विक्रमी सवत् ।

उ० —धारि कठिनाई वीर गुरु की चराई धेनु, इष्ट वर पाय पुनि पूर्णनिधि पाई तैं । विक्रमाब्द इन्दु नद द्वीप मानमारी मारि चित्रकूट राजधानी जबर जमाई तैं । कृष्णसिंह बारहठ

विक्रमारक–स पु [सं. विक्रमार्क] देखो 'विक्रमादित्य' ।

विक्रमि—देखो 'विक्रमी' (रू भे.)

विक्रमित्र–स. पु.—वज्रमित्र शग राजा का नाम ।

विक्रमी–वि [सं. विक्रमिन्] १ वीर, बहादुर, शूरवीर ।

२ पराक्रम वाला, पराक्रमी ।

३ विक्रम सम्बन्धी, विक्रम का ।

स पु —१ सिंह, शेर ।

२ भगवान विष्णु का एक नामान्तर ।

३ विक्रमादित्य के नाम से चलाया हुआ सवत्, विक्रमीसवत्

रू भे —बिकरमी, विक्रमी, विकरमी ।

विक्रय–स पु [सं विक्रय] बिक्री ।

रू भे. बिक्रय, विक्रेय, विक्कय, विक्रेय ।

विक्रांत, विक्रा-अत–वि. [सं विक्रान्त, विक्रान्तः] १ शूरवीर, बहादुर, वीर । (ह ना मा)

उ०—कृपा कटाच्छ गोल की, विलोल जाहि या कर्म । रजै विक्रांत मात मे, वृतान भ्रात मे रमैं । —ऊ. का.

२ विजयी, प्रतापी, तेजस्वी ।

सं पु —१ सिंह, शेर ।

२ एक प्रजापति जो वाल्नेय गधर्वों का जनक माना जाता है ।

३ भगवान विष्णु का एक नामान्तर ।

४ एक प्रजाहित दक्ष राजा, जो दम राजा का पुत्र था। इसके पुत्र का नाम सुधृति था।

५ हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

६ राजा ऋतुध्वज (कुवलयाश्व) के उनकी पत्नी मदालसा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम। (पुराण)

[सं. वैक्रान्त] ७ वैक्रान्तमणि।

रू. भे.—बिकरांत।

बिक्रांति-सं स्त्री [स. विक्रान्ति] १ गति, चाल।

२ घोड़े की सरपट चाल।

३ विक्रम, बल, शौर्य।

४ वीरता, बहादुरी।

रू. भे.—बिकराति।

बिक्रित—देखो 'विक्रत' (रू. भे)

बिकी—देखो 'विकरी' (रू. भे.)

बिक्रुस्ट-स. पु.—व्यक्त पदाक्षर को स्पष्ट ध्वनि के साथ उच्च से उच्चतर ध्वनि मे बोलने की क्रिया या भाव। (संगीत)

बिक्रेता-वि. [स.] विक्रय करने वाला, बेचने वाला।

रू भे —बिकरेता।

बिक्रेय-वि —१ जो बेचने के लिए या बेचने के योग्य हो, बिकाऊ।

२ देखो 'विक्रय' (रू. भे.)

रू. भे.—बिक्रेय।

बिक्रोस-स. स्त्री. [स. विक्रोशन] १ गाली।

२ चीत्कार, चिल्लाहट।

बिक्रौ—देखो 'विकरौ' (रू. भे.)

बिक्लव, बिक्लव-वि. [स. विक्लव] १ भीरु, डरपोक।

२ डराहुआ, भयभीत।

३ पीडित, दुखित।

४ विह्वल, बेचैन।

५ उद्विग्न, घबड़ाया हुआ।

बिक्षत-वि. [स] घायल।

बिक्षम-स. पु.—कश्यप कुलोत्पन्न गोत्रकार।

बिक्षय-सं. पु.—अधिक मद्यपान के कारण होने वाला रोग।

रू. भे.—बिखय।

बिक्षर-सं. पु.—१ भगवान् विष्णु।

२ कश्यप एवम् दनु का एक पुत्र जो वीर और प्रतापी दैत्य था और आगे चल कर वसुमित्र राजा के रूप मे अवतीर्ण हुआ था।

बिक्षात, बिक्षातमान, बिक्षाति, बिक्षातिमांन-वि.—प्रसिद्ध, मशहूर।

उ०—१ समुदघात सग नर नै पण गम्भय तिरि देव। नारक वायु नै च्यार सेम मै तीनूं भेव। दिही दोय विगल में थावर नै मिथ्यात। मेम नै तीन दिहि जिम प्रवचन मे बिक्षात। —वृत्त.

उ०—२ कीरतिथंभि करि, सारदा सरस्वती नदीए करी, देसदेसाउर वदीत बिक्षातमांन छइ, एहवु एक प्रणाहलपुर पाटण वरणवीतूं सोभइ, अहो सीम्रालक बोलि। —व. स.

उ०—३ अथ धरम्मप्रभाव, क्षीरसागर विस्तीरण निस्कलक कुल, लोकमहि बिक्षाति विसुद्ध जाति, भवनाढारधार, सकललक्षण-प्रधान। —व. स.

बिक्षिप्त-वि [स.] १ घबराया हुआ, बेचैन, व्याकुल। २ खारीज किया हुआ, त्यागा हुआ ३ भेजा हुआ. ४ खण्डन किया हुआ ५ बिखरा या फेंका हुआ।

६ पागल।

बिक्षिप्तता-स. स्त्री. [स विक्षिप्त+ता] बिक्षिप्त होने की अवस्था या भाव।

बिक्षेप-स. पु. [स. विक्षेपः] १ इधर उधर हिलाने डुलाने की क्रिया या भाव।

२ इधर उधर बिखेरने या छितराने की क्रिया या भाव।

३ झटका देने की क्रिया या भाव।

४ मन को इधर-उधर दौड़ाने या भटकाने की क्रिया या भाव।

उ०—माया मे मिसरत मिल्या, चित्त नाम धराणी। स्वरूप भूल स्वप्ना भयौ दोस बिक्षेप दरसाणी। —स्री सुखरामजी महाराज

५ बाधा, विघ्न।

उ०—मल बिक्षेप आवरण कर दूरा, वै सदा सुख से लेटै। सत चित आनद मिलै हजूरा, गुरु गोदी मे बैठे। —साधु जगदीसरांम

६ एक प्रकार का अस्त्र विशेष। (प्राचीन)

रू. भे.—बिखेप, बिक्खेव, विखेप।

बिक्षोभ-सं. पु. [स.] विशेष रूप से मन में होने वाला दुःख, उद्विग्नता।

बिक्षोभण-सं. पु.—कश्यप एव दनु के पुत्रों में से एक दानव पुत्र।

बिखंड-वि --१ खंड-खड, टुकडे-टुकडे।

उ०—१ खड-खंड बिखंड बीजळा खिमता, हय गय दळा बिहंडतां हाथ। हय वारां कूदेगा हळका, 'भारै' रौ रहियौ भाराथ। —केसरीसिंघ सेखावत रौ गीत

उ०—२ सौ धनुखु नामइ किमु काटकि, धारणि घ्रासकि धडहडी। बभंड खड बिखंड थाइ कि खगि सयल वि रडवडी। —सालिभद्र सूरि

२ नाश, सहार।

उ—१ जुटै अम्म जाळं ग्रपे विक्कराळ । वाहूडड पिंड, बाणासै विखंड। —गु. रू. ब.

उ०—२ जिण मत्थै इगा भड न हुवै प्रचंड, 'बाघ'उत रिम घडा करै खागा विखंड। झफ झूझार भड 'राजसी' झल्लणी, एक अवताड सीगाळ अवखल्लणी। —हा झा.

३ मिटाने वाला, खत्म करने वाला।

उ०—भाऊ आणदराम तणा, उर आणद प्रचड। दळ आणंद प्रकामणा, खळ आगाद विखंड। —रा रू.

रू. भे —विखड।

विखडण–वि.—१ सहार करने वाला, सहारक, नाशक।

२ तोडने वाला।

विखडणो, विखडबो–क्रि अ.- १ मिट जाना, नष्ट हो जाना।

१ खण्ड-खण्ड होना, टुकड टुकड़े होना।

क्रि. स —३ नाश करना, सहार करना, मारना।

४ खण्ड-खण्ड करना, टुकडे टुकडे करना।

उ०—धरि खबर जाणि वै बधवा, माल बिवटा मंडियो। आसुर तरीन राजा 'अभै', खग इण भात **विखंडियो**। —रा. रू

५ तोड़ना, मिटाना।

उ०—१ इणइ वचनि धरणी ढलिउ, धर धर धूजइ देह। 'अै अै अस मस हास तू, मुझ **विखडइ** नेह। —मा. का. प्र.

उ०—२ मित्र कलत्र स्यु नेह **विखंडिउ**, नेह तणइ परभ.वइ। राजकुमरि परणीइ जि द्रेति, जोई न मकइ भावि।

— हीराणद मूरि

विखंडणहार, हारो (हारी), विखडणियो—वि०।

विखडिओड़ो, विखंडियोड़ो, विखड्योड़ो—भू० का० कृ०।

विखंडीजणो, विखंडीजबो—भाव/कर्म वा०।

विखडणो, विखडबो—रू. भे.।

विखंडा–वि स्त्री.—नाश करने वाली, सहार करने वाली।

उ०—देवी कटका हाकणी वीर कवरी, देवी मात वागेसरी महागवरी। देवी दडणी देव वेरी उदडा, देवी वजया जया दैता **विखडा**। —देवि

विखंडियोड़ो–भू. का. कृ.—१ मिटा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. २ खण्ड खण्ड हवा हुआ टुकडे-टुकडे हवा हुआ. ३ नाश किया हुआ, संहार किया हुआ, मारा हुआ. ४ खण्ड-खण्ड किया हुआ, टुकडे-टुकडे किया हुआ ५ तोडा हुआ, मिटाया हुआ।

(स्त्री विखंडियोडी)

विख–वि. [स. विख, विख्य] १ जिसकी नाक कटी हुई हो, नाक रहित।

२ देखो 'विस' (रू. भे) (अ. मा., डि. नां. मा, ह. नां. मा.)

उ०—झाग विख अराबां आगि माथै झडं, लडथडै थडै गैणागि लागी। झपेटा भाग किलमा करै झोबरै, नाग जिम रांम री लाग नागी। —राव भीमसिंघ हाडा री गीत

उ०—२ हाथा री जहडी हिलोहळ, तहडी कहियो जिकै तिकै। "जेमा" हरी जायनै जोयी, विख अमरत हिक भाव विकै।

—नवळजी लाळस

उ०—३ विख पीजै कुण कारणै, ता सेती मरि जाय। हरीया इम्रत पीव करि, कळि अजरामर थाय। —अनुभववांणी

उ०—४ माहिजिहान बराइ अध्रप मरप, महि अजमेर दराड मडाण। विख बळ गुमण आसनी बमियो, रहियो तेण अरमीयो रांण। —राव सत्रसाळ हाडा री गीत

उ०—५ अमियां गरुड दवार थी, ज्यौं विख निर विख होय। विमन अपना पाप ज्यो, बोहडि न करियो कोय। —वील्होजी

उ०—६ नेम कछू नही पेम, बझ्यो पखवाद मैं। हरिहा दास कहै हरिराम, रच्यो विख स्वाद मैं। —अनुभववांणी

उ०—७ इम पतसाह सुणै अकुळायो, अहि जांणै जूवल तळ आयो। भिळिया जाण सुरा विख भेळा, मोर अगन किर थया समेळा। —रा रू.

उ०—८ मिस्री लै अप्रमाण, सीचौ घोळै घी सहित। विख सो नीम वखाण, मीठो होवै न मोतिया। — रायसिंह सादू

३ देखो 'विसय' (रू. भे)

उ०—रातो रहै सदा विख रस मैं, पेम भगति नही भाय। लोक लाज काज कुळ मोही, हरि पूज्यौ न सुहाय। —अनुभव वाणी

विखअख–स. पु.—सर्प, साप।

उ०—मेळ थया अगराज, हत गजराज दहल्लै। गुरडपख गजिया, झाट विखअख न झल्लै। —रा रू

विखई–स. स्त्री.—१ इन्द्रिय। (अ. मा.)

२ देखो 'विसयी' (रू. भे)

उ०—निज कुंभ सिभ जुग वण अनोप, उत्तग सिखर वण सिखर ओप। कर लोल भुलत अति चपळ कान विखई मन जाणिक उकतिवान। —रा. रू.

विखउ—देखो 'विखो' (रू भे)

उ०—थाह निहाळइ दिन गिणइ, मारु आमा लुब्ध। परदेसै घाघळ घणा, विखउ न जांणइ मुध्ध। —ढो मा.

विखकन्या—देखो 'विसकन्या' (रू भे)

उ०—किलच किलमा चाहि घडा कणकण किया, हुवै हूकल कळळ मैंगळ हुवै। विखकन्धा बीदणी बीद भोजौ बिकट, ओजरौ वरै मोटियार जोवै। —भोजराज खगारोत रौ गीत

विखकर-स. पु [स. विषकिरि] मयूर, मोर। (ना. मा.)

विखकसेन-स पु. [स. विष्वक्सेन] १ ईश्वर। (नां. मा)

२ विष्णु।

३ श्री कृष्ण। (अ. मा.)

रू. भे.—बिखुकसेन।

विखगामी-वि. [स विषमगामी] (स्त्री. विखगामणी) विषम गति से चलने वाला।

विखणौ, विखबौ—देखो 'वीखणौ, वीखबौ' (रू. भे)

विखणहार, हारौ (हारी), विखणियौ—वि०।

विखिणोडौ, विखियोडौ, विख्योडौ भू० का० कृ०।

विखीजणौ, विखीजबौ—कर्म वा०।

विखदातौ-स. पु. [स विषदान्त] नाखून। (अ मा.)

बिखधर, विखधार, विलधारी –देखो 'विसधर' (रू भे.)

(अ. मा., ह ना. मा)

उ०—च्यार मजळ अजमेर सू, दाखै 'अवरंग' दुक्ख। ज्यौं विखधर छच्छूदर, गिळै न त्यागै मुक्ख। —रा. रू

उ०—२ चूर त्रिग तर पसर वनचर, कना मेटण तिमग रवि कर। घूप चख हर ज्वाळ, विखधर धारि सुजहर। —रा रू.

उ०—३ धर चलियौ भाळ 'बखतेहर' विखधर, भर बाजी अजमेर भर। नाग दवण सत्रसल नेडाणौ, डसै न राणौ नेग डर।

—राव सत्रसाळ हाडा रौ गीत

उ०—४ प्रथी अगणपार, धुजै विखधार। धुबै घर धोम कसकृत कोम। —सू. प्र

विखनग-स पु १ सीग या तेलिया नामक स्थावर विष।

२ बछनाग नामक विष।

विखनजर-स स्त्री.—१ कुटिल निगाह, बुरी दृष्टी।*

२ शिव, महादेव।

उ०—प्रहारै तिमर विखनजर छाका पियै, घूमरा मत्रा खग धजर धावै। दिवाकर अजर सगराम सम सुर दुहू, अवर छत्रधर नको नजर आवै। —कविराजा करणीदान

विखभ—देखो 'व्रखभ' (रू. भे.)

विखभधुज—देखो 'व्रखभधुज' (रू भे.) (अ. मा)

विखभ्र—देखो 'व्रखभ' (रू भे)

उ०—भोळौ नाथ भूतेस, सकर सिघ दत रत सुरराणी। गज तुच विखभ्र चढेस, वांमदेव तस्मै नमः। —मा. वचनिका

विखभ्रधुज—देखो 'व्रखभधुज' (रू. भे)

विखम—देखो 'विसम' (रू भे.) (अ. मा.)

उ०—१ जहर विखम जारण, भुजा धारण भुजगम। भाल तेज भारण जरा हारण लसै जम। —सू. प्र.

उ०—२ झुकै नाग रा सीस आबाळ तासा झडै, पाटवी राग रा विखम हाका पडै। अोहि लागै गजब भुजा आर्भा अडै, 'जैत' मारु कटी कडा सिलहा जडै। —महादान महडू

उ०—३ लाल वदन अवर सिर लागौ, विक्रमादित जवनाहूं वागौ। विखम धमक साबळ खग वाहै, मुनि छुडाय लीधा पल माहै।

—सू. प्र.

उ०—४ ऊचा डूगर, विखम थळ, लागा किर तारेहि। कूटघइ करहइ लधिया, घोडा म मारेहि। —ढो. मा.

उ०—५ काळ रौ विधेय करम करण पाळा ही चलाया अर विखम दुरग ओघट घाट रै कारण आपरा घोडा सिपाह पाछा ही भलाया। —व. भा.

उ०—६ वपि असह जळ मुख उसण वल्लभ सूर कर हुइ सीतळं. उण किरण सिस निस जेम ग्रीखम, विखम हिम द्रुम विज्जळं।

—रा. रू.

उ०—७ भवंग मिळै मलीयागरी, लहरि विखम की मेट। साध सदा मिळ करत है, राम नाम सुख भेट। —अनुभववाणी

उ०—८ बाको कहै टळै दिन विखमा, धणियाणी नै धायां। लोवडियाळ ताप नह लागै, ओळै थारै आया। —बा. दा.

विखमगत, विखमगति—देखो 'विममगति' (रू. भे)

उ०—हियै धारिया खान जुवान छिबतौ निहग, अवर नर विसरै तणा अचभा। विखमगत देख 'जमराज' खग वाहतौ, रही रथ साह गज-गाह रभा। —गु रू. बं.

विखमजुर, विखमज्वर—देखो 'विसमज्वर' (रू. भे.)

उ०– हरि जिणहू दाणव हण्या, जिकण विखमजुर जाइ। बिरह मिटावण वल्लहा, अब दो उहीज आइ। —र. हमीर

विखमता देखो 'विममता' (रू भे)

विखमनयण, विखमनेत्र, विखमनैण—देखो 'विसमनयण' (रू. भे.)

विखमबांण—देखो 'विसमबाण' (रू भे)

विखमबाण—देखो 'विसमबाण' (रू. भे.)

विखमरौ—देखो 'विसमरौ' (रू. भे)

विखमवांण—देखो 'विसमबाण' (रू. भे)

विखमाजुध' विखमाजुध्ध, विखमायुद्ध, विखमायुध—देखो 'विसमायुद्ध' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना. मा)

बिखमारिख-सं. पु [स. विषम+ऋक्ष] छोटे नक्षत्र ।

उ० – तिण वार वीरारस संगम, ग्रीध चील्ह नभ छाए विहगम । कळह् का आगम सो बिखमारिख, सार का काटा सबा पारिख । —रा. रू.

बिखमावरण-स. पु. [स. विषम+वर्ण] विषमवर्ण, दग्धाक्षर ।

उ०—किता हुआ दिग्गज कवी, समुझणहार अमेस । धुर रूपक ज्याही धरै, बिखमावरण विसेस । —र. रू.

बिखमी—देखो 'विसम' (रू भे.)

उ०—१ छायौ गयण रभ रथ छाजै, बिखमी पाख पांखणी बाजै । बावन वीर नचण बहुबहिया, डंरू जटी चड डहडहिया । —सू. प्र.

उ०—२ बिखमी मैं सादूळ लिखमीचद व्यास, मुरार का बाळकिसन साहस निवास । जहा जहा आप वणी बूझवै सरीखी, कमधा के साथ बात व्यास पास सीखी । —रा. रू.

उ०—३ वयन सुणी राजा डरपियौ, करमा री हो घणी बिखमी बात । राय राणी दोनू कहै घर मांहै हो घडी अफली जांन । —जयवाणी

उ०—४ विजउ बिखमी चोरी पइठउ, मूकयउ कुंडल नाग जो । बज्रजंघन नइ भेद जणाव्यउ, साचउ साहमी राग जी । —स कु

उ०—५ साचौ धणीं विपत मे सामी, तेंड्या आवै तीजी ताळ । बिखमी वाट तणो वोळऊ, साईं तूं काळा तणो सुगाळ । —ओपो आढो

बिखमीवार, बिखमीवार-स. पु —१ दुर्दिन, बुरे दिन, दुख के दिन, कष्टमय समय ।

२ अन्तकाल, मृत्यु समय ।

उ०—अजामेळ जमदळ अगा, बिछटपो बिखमीवार । कीधी नारायण कही, पुत्तर हेत पुकार । —ह. र

रू. भे.—बिखम्मीवार, लिखम्मीवार ।

बिखमेखु-सं पु [सं. विषम+ईषु] कामदेव ।

बिखम्मी—देखो 'विसम' (रू भे.)

उ०—१ वगा लग्गा साह दळ, माडेचा पण मंड । वार बिखम्मी झेलगा, आदू नेम प्रचड । —रा. रू

बिखम्मीवार, बिखम्मीवार—देखो 'बिखमीवार' (रू भे.)

उ०—भड पडिया 'सादूळ' रा, बीस बिखम्मीवार । चंत इग्यारस चांनणी, असुरां सुणी पुकार । —रा. रू.

बिखयतक्रत-स पु. [स. विषयान्त कृत] शिव, महादेव । (अ. मा)

बिखय—१ देखो 'विक्षय' (रू. भे)

२ देखो 'विसय' (रू. भे.) (अ मा , ह. ना. मा.)

उ०—बिखय विसहर डसियां, गारूडी ग्रोगोव्यंद । अति अंग भाजई लहर वाजई, जीवीई जगदानद । —रुकमणी मगळ

बिखयारस-सं. पु. [स. विषयरम] विषयभोग, विलासिता ।

बिखरणौ, बिखरबौ—देखो 'बिखरणौ, बिखरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हरसा म्हारा भाई रे, कुण बूझै मा बिन मन री बात । ओदर रा रे साथी, कुण रे संवारै बिखरया केसड़ा । —जीणमाता रो गीत

उ०—२ आगै नीली झाफ लीआ वधाईदार दोड़िया छै । नगर माहै ओछव वधावीजै छै । मगळ गावीजै छै । गळिआं गळिआं फूल बिखरीजै छै । —रा. सा. सं.

उ०—६ ना ना, औ किसनूं हरगिज न्ही व्हे सकै । बाळ बिखरयोड़ा हाथा-पगा पर मैल रा थारडा जम्योड़ा अर सरीर पर फगत एक मैलोसोक कुड़तियो । —अमरचूनडी

बिखरणहार, हारौ (हारी), बिखरणियौ—वि० ।

बिखरिओड़ो, बिखरियोड़ो, बिखरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिखरीजणौ, बिखरीजबौ—भाव वा० ।

बिखरतन-स. पु. [सं. विकर्त्तन] सूरज, सूर्य । (ना. मा.)

बिखराड़णौ, बिखराड़बौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)

बिखर ड़णहार, हारौ (हारी), बिखराड़णियौ —वि० ।

बिखराड़िओड़ो, बिखराड़ियोड़ो, बिखराड़योड़ो —भू० का० कृ० ।

बिखराड़ीजणौ, बिखराड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बिखराड़ियोड़ो—देखो 'बिखरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बिखराड़ियोड़ी)

बिखराणौ, बिखराबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)

बिखराणहार, हारौ (हारी), बिखराणियौ—वि० ।

बिखरायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिखराईजणौ, बिखराईजबौ—कर्म वा० ।

बिखरायोड़ो—देखो 'बिखरायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री बिखरायोड़ी)

बिखरावणौ, बिखरावबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखरावौ' (रू. भे.)

बिखरावणहार, हारौ (हारी), बिखरावणियौ—वि० ।

बिखराविओड़ो, बिखरावियोड़ो, बिखराव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिखरावीजणौ, बिखरावीजबौ—कर्म वा० ।

बिखरावियोड़ो—देखो 'बिखरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बिखरावियोड़ी)

बिखरियोड़ो—देखो 'बिखरियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिखरियोड़ी)

बिखवांन-वि. [स. विषवान्] विषयुक्त, जहरीला।

उ०—सुख सिंगार, मांनि प्रगार। तिरगइ प्रबळा (प्रतरगत) फूला कीधा वेगळा। चंद तपइ पांन, थयां बिखवांन। विरहानळ प्रज्वळइ प्रंगु, सलिजन सू विरंगू। —रा. सा स.

बिखवाद-वि. [स. विषवाद] १ विष के समान, विषतुल्य।

उ०—एक नवि रहइ पुहर नइ घडी, एक प्रालोटइ भ्राडी पडी। ध्यु बिखवाद पांन नइ फूलि, एक रोमावि मुहुगि मूलि।
—का दे. प्र.

स. पु.—१ दुःख, पश्चाताप।

उ०—१ प्रजी लगै छोडं नहीं मा मोरी रै, सायर प्रपणी मरजाद सुता हूं तोरी रै। हरख विनोद हीयैं घरा मा मोरी रै, परिहरि मन बिखवाद सुता हूं तोरी रै। —श्रीपाल रास

उ०–२ किस्या कहू गुण महाराजी, किस्या कहू, प्रपवाद। जेम जेम संभारू हीयैं जी, तेम तेम वधैं बिखवाद। —वृस्त

उ०—३ लज्जाणो राजा घणू, मन धरतो बिखवाद। नामता माहरो थयो, लोका विचें प्रपवाद। —श्रीपाल रास

२ कलह, झगडा।

उ०—विग्रम वागि बिखवाद, विखयरस प्रगि न बाधइ। बलत-बत वर विबुध, वान दिन प्रति वाधइ। —ऐ. जं. का सं.

३ विरोध।

बिखसुधार-स. पु. [स. विषसुधार] घृत, घी। (ग्र. मा.)

बिखहर-वि.—विष का हरण करने वाला, विष का प्रभाव नष्ट करने वाला।

स पु—१ गरुड। (नां. मा.)

२ विष का हरण करने वाली या विष का प्रभाव नष्ट करने वाली प्रौषधी या मत्र।

३ देखो 'विसधर' (रू. भे.)

उ०—············फूल बणराय न लग्गै। बिखहर चढ़ै न विल्ल, जळण घ्रत होम न जग्गै। —चौथ बीठू

बिखहा-स. पु [स. विषहा] गरुड़। (डिं. को)

रू भे.—बिखहा।

बिखांण—देखो 'विसाण' (रू. भे)

बिखांणण-सं. पु [सं. विष+प्रानन] जिसके मुह मे विष हो, सर्प, साप।

बिखांणू देखो 'बखाण' (रू भे)

उ०—श्रीहरि जै सागरि सूइ छि, महीए सर नवि जागू। नारायण प्रागलि नारदजी सू ए सरै नथि बिखाणूं ?
—नळाख्यान

बिखांतक-स. पु [स विष+प्रन्तकः] शिव, महादेव।

बिखांन—देखो 'विसाण' (रू. भे.)

बिखांनस—देखो 'वैखानस' (रू. भे.)

बिखाइत - देखो 'विखायत' (रू. भे)

उ०—पछै रिणधीर रिडमल नूं कह्यो, समझायो—थे बिखाइत हुवा काय फिरो, नै बाप री धरती री चीत करो नहीं, सु कुण वासतै ? तरै रिडमल कह्यो—मोनू राव चूंडै सुस लीरायो थो।
—नैणसी

बिखाती—देखो 'विखायत' (रू. भे)

बिखाद—देखो 'विसाद' (रू. भे)

उ०—प्रवतार ग्रंस 'प्रगजीत' ग्रह वस बिखाद पलट्टियो। रितु एण उदय चहुवाण रै, सुत 'प्रभमाल' प्रगट्टियो। —रा. रू.

उ०—२ सासा धरम बिखाद वाद, विपरत बिलूधा।
—केसोदास गाडण

बिखादी—देखो 'विसादी' (रू. भे.)

बिखायत बिखायती, बिखायतो–स पु–१ किसी कारण विशेष से राज-सत्ता के विरुद्ध होकर बगावत करने वाला व्यक्ति, राजद्रोही, बागी।

उ०—१ 'सूरो' 'केहर'सिंघ रो, 'लखधीर' महेस। भाटी प्राइ बिखायतां, चाड मुरद्धर देस। —रा. रू.

उ०—२ वात वळै प्रमुरां विसतारी, घर दिस प्रसट दिलासा धारी। कितराई गुण भ्रमिया काचा, प्रबळ बिखायत रहिया साचा।
—रा. रू.

२ संकटावस्था, विषम प्रवस्था।

३ वह राजा, सामन्त या जागीरदार जिसका राज्य या जागीर किसी राजा या बादशाह द्वारा जब्त कर लिया गया हो।

उ०—१ तरै या ठाकुरा राणाजी न कह्यो, "हाजीखान भलो मांणस छै, नै बिखायत थको छै दीवाण बडो उपकार कीनो छै। सु हाजीखान नू प्रा बात कगाडिया रो जुगत न छै। —नैणसी

उ०—२ इणां खरच घणो पूजवियो हुतो। सु पछै रावळ घडसी धरती वाळी, तरै सारा बिखायता नू वधारिया। —नैणसी

उ०—३ एक कोई बिखायत सूरवीर किण रै ही गढ मैं रहनै वांनै काढ प्राप गढ प्रपणाय लियो गढ रा धणिया कयो जावो पर' तरै कहै। बी. स. टी.

उ०—४ दूमना थयर बिखायती, मरता सामतसीह। थळ प्रायां वळ प्रोढणा, मोई घमळ प्रबीह। —रा. रू.

वि—१ सकटग्रस्त, सकट से पीडित, दुःखी।

उ०—१ महि दाबण मेवाड, राड चाढ अकबर रचै। विखै बिखायत बाड, प्रथुळ पहाड़ प्रतापसी। —दुरसो आढो

उ०—२ गाडा ३०१ सीधा रा भर चलाया सु जाय गढ पोहता, सु बारहठ रतनू चंद्रव माला री बिखायत थकी महेवै रहयो थो, तिण आणियो गढ माहरा ठाकुरा सु जाय। —नैणसी

२ लुटेरा, डाकू।

रू. भे.—बखायत, बिखाइत, बिखाई, विखाऊ, बिखायत, बखाइत, बखात, बखायत, विखाइत विखातो।

बिखारी—देखो 'भिखारी' (रू. भे.)

बिखावण-वि [स. विष्वाण विश्वसनो भोजने इति धत्वम्] १ कष्ट पीड़ित।

२ भूखा।

स. पु —भोजन। (ह. ना. मा.)

बिखासइ-स. पु.—दृढ विश्वास।

उ०-तउ राउ दुरयोधन ए विमासइ, हासउ हसीत पडिउ बिखासइ। 'ए नारिरूपि नर राउ कोई, कइ ईण रूपिइं इह पारथ होई। —सालिसूरि

बिखिक—देखो 'विसिख' (रू भे.)

बिखिया—देखो 'विसय' (रू. भे)

उ०—१ दर स्तोक ईखद अलप, तुच्छ मदाक। मोख तुच्छ रचक अगू, भो सुख बिखिया आख। —अ. मा.

उ०—२ रांम भजो बिखिया तजो, घर मांही घर एक। ता पर सूं लागा रहो, छाडो द्वार अनेक। —ह पु वा.

उ०—३ सहजै जिणि बिखिया तजी, पाचूं पसर मिटाय। सहज सोई सत्य जाणिये, सतगुर हुवै सहाय। —परमानदजी वणियाळ

बिखियात—देखो 'विख्यात' (रू. भे.)

उ०—१ इतै सुण मरव ममराथ भड ऊठिया, वसु बिखियात कीरत वदीती। धात भड सोरसा बात सह वेरिया, बात करता इतै रात बीती। —तिलोकदान बारहठ

उ०—२ ओपियो इखाग वस आससेण अग जात, वामा बिखियात मात जात आवै वृंद। एकीह अबीह सीह लोपे कुण लीह, एहो जाप धरै धरमसीह गोडीचो जिणद। —ध व ग्र.

बिखीया—देखो 'विसय' रू भे.)

उ०—१ जा घट पेम प्रगासीया, बिखीया विकळप नाहि। हरीया छाना ना रहै, माया अतर माहि। —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया भाठी पेम की, दूदर दई अगाय। पेम पीयाला पीव करि, बिखीया प्यास मिटाय। —अनुभववाणी

बिखुकसेन—देखो 'विखकसेन' (रू भे)

बिखुटणो, बिखुटबो-क्रि. अ —बिछुड़ना।

बिखुटणहार, हारो (हारी), बिखुटणियो—वि०।

बिखुटिओड़ो, बिखुटियोड़ो, बिखुटयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिखुटीजणो बिखुटीजबो—भाव वा०।

बिखुटियोड़ो-भू का. कृ.—बिछुड़ा हुआ।

(स्त्री. बिखुटियोडी)

बिखेप—देखो 'विक्षेप' (रू. भे)

बिखेर—स स्त्री.—बिखेरने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'बिखेर' (रू. भे)

बिखेरणो, बिखेरबो—देखो 'बिखेरणो, बिखेरबो' (रू. भे.)

उ०—१ दूजै दिन सासरा माथै दुसमण आया तठै साळो न बहनोई सत्रुआ नै पूगा तठै वीद वणीयेड़ै हीज झगड़ा रै भूखै तरवारा आगै सरीर पुरजा कर बिखेरियो —वी. स. टी.

उ०—२ राजी भीटा बिखेरयां तांचै माथै पकड़योडी बैठी है। दाता रै कोडी अर अलेवण चढ रैयी है। ठोडी लाळघा अर थूक सूं भीज गयी है। —दसदोख

उ०—३ हुकम लेर भड हालिया, साह करा समसेर। जेभ न कीधी जादवा, दाजब दिया बिखेर। —वी. स. टी.

उ०—४ घण चम्मर सीस गयद घटा, जड-धारक मेर बिखेर जटा। गडडति गुडंता मत्त-गयं, गरजतिक जाणय घोरमय। —गु. रू. ब.

बिखेरणहार, हारो (हारी), बिखेरणियो—वि०।

बिखेरिओड़ो, बिखेरियोड़ो, बिखेरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिखेरीजणो, बिखेरीजबो—कर्म वा०।

बिखेराणो, बिखेराबो—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू. भे.)

बिखेराणहार, हारो (हारी), बिखेराणियो—वि०।

बिखेरायोड़ो—कर्म वा०।

बिखेराईजणो, बिखेराईजबो—कर्म वा०।

बिखेरायोड़ो—देखो 'बिखरायोडो' (रू. भे)

(स्त्री बिखेरायोडी)

बिखेरावणो, बिखेरावबो—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू. भे.)

बिखेरावणहार, हारो (हारी), बिखेरावणियो—वि०।

बिखेराविओड़ो, बिखेरावियोड़ो, बिखेराव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिखेरावीजणो, बिखेरावीजबो—कर्म वा०।

बिखेरावियोड़ो—देखो 'बिखरायोडो' (रू भे)

(स्त्री. बिखेरावियोडी)

बिखेरियोडो—देखो 'बिखेरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिखेरियोडी)

बिखेरौ-स. पु. [सं. बिकीर्ण] १ बिखरे होने की अवस्था या स्थिति। २ बिखरी हुई सामग्री, अव्यवस्थित दशा मे पड़ा हुआ सामान या कचरा।

वि.—फैला हुआ, व्याप्त।

रू. भे.—बिखेरौ, बिखोरौ।

बिखं-क्रि. वि.—१ समय मे।

उ० एक दिन रौ समाजोग छै। रात रै बिखै पोढिया छै। तरै राणी चावड़ी सुहणौ लाधौ—'जु नाहर ३ आया छै। —नैणसी

२ देखो 'विसय' (रू. भे.)

उ०—१ स्रीपुर नाम नगर, तिणरै बिखै राजा सालवाहन राज करै छै। यूं ईम घणा दिन बिता। तरै सालिवाहन देवगत हूवौ। —रीसालू री वारता

उ०—२ आय नृपति पूछी बिध एही, सावधान हुय धरम सनेही। बिखै अग्यान धरम वीसारौ, सूरजकुळ चौ धरम सभारौ। —सू प्र.

उ०—३ पिलंग पथरणा पोढणौ, सदा सहेली सग। हरीया होसी भगति विन, बिखै विलासा भग। —अनुभववाणी

उ०—४ गुर सम्रथ गुर सुख की सीरा, गुर हैं दवन बिखै तन पीरा गुर अघहरण करन आनंदा, गुर तै मिटै भरम भय फंदा। —अनुभववाणी

उ०—५ करत केल वन वन बिखै, मद उनमत्त गयद। ऊभा करै अकासिया, देख देख दिस चद। —गजउद्धार

बिखंआगळ-वि. [स. विष्+अर्गला] विपत्ति मे साथ देने वाला, दुख का साथी।

बिखोड़-स. स्त्री.—अप्रशसा, निन्दा, हसी।

उ०—१ चारण पाछौ वीसळदेजी पासै गयौ। जाय नै कह्यौ—'आप! मूळू आवै नही। तद मूळू रा राजा बिखोड़ किया। —नैणसी

उ०—२ ताहरा बिमोढौ पाछो आयौ। आयनै राजा नू कह्यौ-बाप! मूळू कोट मे किसी तरह आवै? म्हैं तौ घणौ ही कह्यौ, पण आवै नही। ताहरा अठै गोरै वादळ मूळू रा बिखोड किया-'जु जाहरै, भला रजपूत! आवणौ हुतौ। —नैणसी

बिखोड़णौ, बिखोड़बौ-क्रि. स.—अप्रशसा करना, निन्दा करना, हसी करना।

उ०—१ माळव देस बिखोडिया, मारू किया वखाण। मारू सोहागिण थई, सुबरि सगुण सुजांण। —ढो. मा.

उ०—२ धध धरै करि द्वेस, वात मे हेत वितोडै। आप कियौ तै अबळ, वळै पर किया बिखोड़ै। —ध व. ग्र.

बिखोड़णहार, हारौ (हारी), बिखोड़णियौ—वि०।

बिखोड़िओड़ो, बिखोड़ियोड़ौ, बिखोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिखोड़ीजणौ, बिखोड़ीजबौ—कर्म वा०।

बिखोड़ियोड़ौ-भू. का. कृ.—अप्रशंसा किया हुआ, निन्दा किया हुआ, हसी किया हुआ।

(स्त्री बिखोडियोडी)

बिखोरणौ, बिखोरबौ—देखो 'बिखेरणौ. बिखेरबौ' (रू. भे)

बिखोरणहार, हारौ (हारी), बिखोरणियौ—वि०।

बिखोरिओड़ौ, बिखोरियोड़ौ, बिखोरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिखोरीजणौ, बिखोरीजबौ—कर्म वा०।

बिखोरियोड़ौ—देखो 'बिखेरियोडौ (रू. भे)

(बिखोरियोडी)

बिखोरौ—देखो 'बिखेरौ' (रू भे.)

बिखौ-सं.पु [स विष्=घेरना, मुठभेड होना] १ किसी राजा, सामन्त या जागीरदार जिसमे उसका राज्य या जागीर किसी अन्य राजा या बादशाह के द्वारा जब्त कर लिये जाने पर पड़ने वाला कष्ट, संकट या दुःख।

उ०—१ राव चद्रसेन बिखै माहे सीवांणा रै भाखरै रहतौ तद भीवला देवत कायलाणै रहता जोधपुर तुरक रहता, इतरौ घणौ विगाड करता। —राव चद्रसेण री बात

उ०—२ रावळ घडसी राणा रतनसी रौ बेटो मूळराज, रतनसी साकौ कर मुंवा तद कमालदी नू आपरौ बीज उबारणनूं घडसी, ऊनड़, कानड आपरा छोरू नै एक देवडौ भागेज कमालदी नू सूंपिया था। कमालदी नै मूळराज इण बिखा माहै भाएला हुवा था; पाघडी पलटी हुती। सु कमालदी री बैर इणा नूं छाना राखै। —नैणसी

उ०—३ छत्रपती छानौ बिखै, अनपत्ती हित जोड। दियै धरत्ती आप री, तै ग्नत्री कुल खोड। —रा. रू.

२ उक्त कष्टावस्था मे, राज्य मे सकटग्रस्त राजाओ, सामन्तो या जागीरदारो द्वारा की जाने वाली लूटखसोट या राजद्रोह।

उ०—१ तद बादस्याह ओरगजेब जोधपुर तुरकाणो कियो जद राठोड दुरगदास आस करणोत बिखौ कियौ

—सुंदरदास विकूपुरी भाटी री वारता

उ०—२ सो तुरक सूबायत रौ अमल नही होवणै दियौ। बादसाही सहर मारिया लूटिया सो बडो बिखौ हुवौ फौजा लारै लागी फिरै पण हाथ न आयौ। —सुंदरदास विकूपुरी भाटी री वारता

उ०—३ म्है तौ पाच मागम छै सो सगळा ही महाराज रा चाकर छै आ हुवै तौ बिखौ करा।

—राठौड राजसिंह कूंपावत री बात

३ कष्ट, दुःख, विपत्ति, सकट।

उ०—१ विखम बिखौ जिण वार, धोम खिल हुवौ मुरद्धर। दोडण लागा दुभळ, वडा तरवार बहादर। —सू प्र.

उ०—२ जुग धरम सूं डिगणा रै कारण म्हैं खुद प्रणतौ बिखौ भुगतियोड़ो हू, पण अबै रोया काई साधो लागै। —फुलवाडी

उ०—३ जको बिखौ नानी, भटियाणीजी अर थूं भुगतियो वो म्हानै नी भुगतणो पडैला, विस्वास राख। अन्याय री बदळी हाथो-हाथ लिरीजैला। —फुलवाडी

उ०—४ दळै तैं वार किता दहकध, बांध्यो दधि देवां छोडण बंध। बिखौ तै ब्रज पडेती बार, धरै नख बार किता गिर-वार। —ह. र.

४ अशान्ति, क्षोभ।

उ०—धरती माहे बिखौ थो। सगळा ठाकुरा रा गुडा भाद्राजण था। उठै राठौड़ तेजसी डूगरसियोत री ही गुढो थो। —राव मालदे री वात

५ सकट का समय, कष्ट का समय।

उ०—१ या मघकर हर वजिया, ग्राद बिखै घणरेह। ज्या उलटै मेघा रवी, मिद्ध पलट्टै देह। —रा. रू

उ०—२ इण नितनैम रौ प्रो नतीजो व्हियौ के थोडा ई दिनां मे बादळ खुदोखुद नै किसन-भगवांन री अवतार ई मानण लागग्यौ अर काली मासी लारलौ बिखौ भूलनै साप्रत जमोदा मैया बणगी। —फुलवाडी

उ०—३ तासूं भगवांन कहै भार तुम कघं, पै ग्रालम सूं जग काज तेग हम बघै। बिखै के तुम नायक ग्रौर सब कैं मुदायत, सो जग की ढील मैं बरस जैमी मायत। —रा रू.

६ उपद्रव।

उ०—भाटी पिण ग्राया दळ भेळा, माग घणै चहुवाण समेळा। सरसो जोर हुवौ पतसाहे, मद बिखौ पडियो घर माहे। —रा. रू.

७ निर्धनता।

८ विछोह, वियोग।

उ०—१ दुनिया मे उण रै नाव री कीरत ग्राप रै काना सुणू। वौ दिन देखण वास्तै ई म्है ओ बिखौ कबूल करियो हू। सेठा रा बोल फळै। म्हारा बेटा नैं लाठो मिनख बणियोडो देखू तौ ग्राज रै बिखा री दाभ ठरैला। —फुलवाडी।

उ०—२ हथाळिया मसळी तौ ई निवास नी ग्रायौ। ग्रैड़ो बेजा रात तौ वैं कदेई नी बिताई। रगमैल मे सिरक पथरणा रै माय नवी लुगाई रा कवळा कंवळा बूकिया माथै माथो देय कैंडा ग्राराम सू सूवता जै ग्रा पोहरा वाळी तूमत नी व्हैती तो। दीवाणजी नै ग्राज ठा'पडी कै लुगाई रा निवास जैडो वासदी रौ ई मी व्है। लुगाई रा प्रभाव मे वानै लुगाई री ग्रसली पिछाण व्ही। लाख मोहरा साटै ई ग्रैड़ो बिखौ कुण ग्रगेजै। —फुलवाड़ी

रू. भे.—बखौ, बिखहो, बिखौ, वखौ, विखड।

बिखल—देखो 'विख' (रू. भे)

उ०—''''''''''''फून बणराय न लगै। विसहर चढै न बिखल, जळण घ्रत होम न जगै। —चौथ बीठू

बिख्यात—स. पु. [स.] १ एक राक्षस जो तेरह सैंहिकेयों में से एक माना जाता है।

२ कवि। (ग्र मा.)

वि. [सं] (स्त्री. विख्याता) प्रसिद्ध, मशहूर।

उ०—१ कमधजा छात जिग वात क्रत, लख बिख्यात सकळप लियौ। रिखि वयण ग्राद वासिस्ट ग्रग, कहिया तिम उद्यम कियौ। —रा. रू.

उ०—२ थळ भाति गात निरतंत थाळि, भ्रम जात घतन तन रूप भाळि। जिण सक्ति परखि लजि तडिति जात, ग्रत गवन पवन मन ज्यौं बिख्यात। —रा रू.

उ०—३ वानरपति बिख्यात वर, वेध्यु जीणी वालि। सहिजइ सुग्रीव जु वरिउ, ताराइ निशि तालि। —मा का. प्र.

उ०—४ गलसेन महीपति वस विभूमण दिनमणी। जुसु सुयसा माता, जगत बिख्याता बहु गुणी। —वि. कु.

रू. भे.—बिख्यात, वख्यात, विखियात।

बिख्याति-स स्त्री. [स] १ प्रसिद्धि, शोहरत।

२ कीर्ति, सुयश।

बिगछावात—स पु. -एक प्रकार का वात रोग विशेष।

उ०—ग्रथ रोगा, कास स्वास ज्वर भगदर गुलमवात गल्लवात रक्तवात भस्मवात उस्णवात ग्रग्निवात लोहवात लूतिवात हरसावात ग्रामवात सोफवात बिगछावात कफवात साकिनीवात..। —व. स.

बिगध—वि [स वि+गन्ध] १ जिसमे किसी प्रकार की कोई गंध न हो

२ जिसमे विशेष प्रकार की सुगन्ध हो, सुगन्धदार।

बिगड़णौ, बिगड़बौ—देखो 'बिगडणौ, बिगडबौ' (रू. भे)

उ०—१ रूपक कुकवी रसणस, बिगडै यू रसवंत। ज्यू बिसफोटक रोग बस, वप सोभा बिगडत। —बा दा.

उ०—२ राव नू सराप दियौ। कह्यौ—'थांहरौ गढ जाजौ। थारी मत भ्रष्ट हुई, गढ तुरका नूं देईस। तू तुरका री (बहू) नू सेवीस, ग्रवत पढीस, धूड़ खातौ फिरीस।" ग्रो स्राप हुवौ। राव री मुंहडो बिगडियो। —नैणसी

उ०—३ सांनौ भोग करम छै रोग ना रे, विलसंतां बिगड़ंत। सुख थोड़ौ नै दुख घणौ ग्रछै रे, रीझै कुण मतिवंत। —जयवांणी

उ०—४ घणी खड़ा जब खेत मैं, बिगड़न कूं कुछि नांहि। जन हरीया हरि सा धणी, क्यू डरपं जुग माहि। —ग्रनुभववाणी

बिगड़णहार, हारौ (हारी), बिगड़णियौ—वि०।

बिगड़िग्रोड़ौ, बिगड़ियोड़ौ, बिगड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगड़ीजणौ, बिगड़ीजबौ—भाव वा०।

बिगड़ाणौ, बिगड़ाबौ-क्रि. स.—बिगड़ने के लिए प्रेरित करना।

बिगड़ाणहार, हारौ (हारी), बिगड़ाणियौ—वि०।

बिगड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगड़ाईजणौ, बिगड़ाईजबौ—कर्म वा०।

बिगड़ायोड़ौ-भू. का. कृ.—बिगड़ने के लिए प्रेरित किया हुआ।

(स्त्री. बिगड़ायोड़ी)

बिगड़ायल—देखो 'बिगड़ायल' (रू. भे.)

बिगड़ियोड़ौ—देखो 'बिगड़ियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिगड़ियोड़ी)

बिगड़ौ-स. स्त्री.—दुरावस्था, बुरी अवस्था।

उ०—सुधरी मे सौ वार, मदत करै मन मोडिया। बिगड़ौ में इक वार, कोइ न रं'वै, किसनिया। —ग्रग्यात

बिगड़ैल—देखो 'बिगडायल' (रू. भे.)

बिगट—देखो 'विकट' (रू. भे)

उ०—१ वाटि बिगट वैराट की, पहुचैगा कोई सूर। हरीया कायर थकि रहया, दरगह रहीया दूर। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ हरीया घट मे ग्रघट है वाकी ठोड बिगट। बिन गुर गम खूल्हैं नही, भरम करम का पट। —ग्रनुभववाणी

बिगडु-वि.—दृढ।

उ०—गिराव गड्ढ गड्ड कौ बिगड्ड छड्डती बहै, बकारि बैरि ब्रद को डकार डड्डती बहै। बडै निसंक बंक की बिबक कढ्ढती बहै, रहेसु सक रक की विसक बढ्ढती बहै। —ऊ. का.

बिगत-वि.—१ ग्रन्तिम या बीते हुवे से पहले का।

२ जो कही इधर उधर चला गया हो।

३ निष्प्रभ, कान्तिहीन।

४ रहित, विहीन।

स. स्त्री.—१ बिवरण, ब्योरा, वृत्तान्त, हाल।

उ०—१ ग्राया दूत खुम्याळी ग्राई, साह मरण री बिगत सुणाई। ताता घोड़ा हुई तयारी, ग्रघपति सुणत कीध ग्रसवारी। —रा. रू.

उ०—२ कहियौ नृप प्रज भय किणसूं, ज्वालामुखी न पूजै जिणसूं। भाणउदीप बिगत सुण भारी, विधवत सकति पूजि बिसतारी। —सू. प्र.

उ०—३ चितातुरा दुचित, बिगत सुध दाखौ बातां। पुण इद करग जोड़ पभण, कहर कळह किसणा किया। —मा. वचनिका

उ०—४ तै देखी, तिणि पूछियउ, कुण ए राजकुमारि। किह पीहर, किह सासरउ, बिगतइ कहइ विचारि। —डो. मा.

२ हिसाब।

३ इतिहास।

४ परिचय, जानकारी।

उ०—सब सरीखी देखी रूपि, बिगत न लही तेहनी भूपि। तै देखी चतुरपणउ ए इस्य, राजा हियडा भीतरि हस्य। —हीराणंद सूरि

५ सूची, नामावली।

उ०—सवत १६१३ हाजीखान सू राजाजी रै ग्रदावदी हुई जद राव मालदेजी ग्रापरा उमराव हाजीखां री मदद मेलिया ज्यारी बिगत-राठौड देवीदास जैतावत, रावळ मेहराज हाफावत...। —बां. दा. ख्यात

६ वर्णनसूची, तफसील।

७ घटना।

८ संख्या, गिनती।

[स वि.=विशेष+गति=मोक्ष] ९ विशेष मुक्ति या मोक्ष।

[स वि=रहित+गति=मोक्ष] १० वह प्राणी जिसकी मरणोपरान्त गति या मुक्ति नही हुई हो।

रू. भे —बिगत, विगति, विगती, विगत्त, बिगत्ति, विगत्ती, विगय विगिति।

बिगतरणौ, बिगतरबौ-क्रि स —निंदा करना, ग्रपकीर्ति करना।

बिगतरणहार, हारौ (हारी), बिगतरणियौ—वि०।

बिगतरिग्रोड़ौ, बिगतरियोड़ौ, बिगतरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगतरीजणौ, बिगतरीजबौ—कर्म वा०।

बिगतरियोड़ौ-भू का. कृ.—निंदा किया हुआ, ग्रपकीर्ति किया हुआ।

(स्त्री. बिगतरियोडी)

बिगतवार-क्रि वि.—ब्योरेवार।

उ०—या समै ग्राजानबाहु जेतै सरदार, कवि जेतै जानै सौ बखानै बिगतवार। पहलै सेनग साह बिलं के सहायक, जोडै दुग्गसाह हम वंस का जो नायक। —रा. रू.

त्रि.—विस्तार के साथ, विस्तारपूर्वक, विस्तारयुक्त।

उ०—१ म्हैं पूछ्यौ-बाबा, वौ जाट कीकर कुत्ता री कड़िया भागी। म्हनै सावळ बिगतवार बात माडनै बतावौ। थारै मूंडै बात ग्रोपै घणी। —फुलवाड़ी

उ०—२ दीवाणजी तुरत जवाब नी दे सक्या तौ राजाजी वांनै पूरी बात बिगतवार बताई । तद दीवाणजी कह्यौ अंदाता, मैं सगळी जूनी बातां अगं ई मिटावणा स् तौ राज में रूळियौ मच जावैला । —फुलवाडी

३ क्रमशः ।

उ०—१ इण वास्तै म्हारा मूंडा सूं थनै सगळी बातां बिगतवार बताई । दूजा तौ सगळा म्हारौ ई कसूर बतावै । अबै थू ई बता म्हैं काई बेजा काम करियौ । —फुलवाडी

उ०—२ इटरव्यू रा बिगतवार समाचार तौ पछै सूरज रै मूंडा स इज सुण्या । बलनै इटरव्यू वास्तै जिकण कमरा मे बुलायौ वौ एक छोटौ-सोक कमरौ हौ । —अमर चूनडी

रू. भे.—बगतवार, बिगतवार, बगतवार ।

बिगताणौ, बिगताबौ—क्रि. स —१ सूचित करना, सूचना देना ।

२ समझाना, सतर्क करना ।

३ जानकारी देना, समझाना ।

उ०—रगण जगण गण रगण रचाइ, वरं जगण गुर लुध बिगताइ आखर चउदह एण उपाइ, सुणिजो रूप कहा विधिसाइ । —ल. पि.

बिगताणहार, हारौ (हारी), बिगताणियौ—वि० ।

बिगतायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिगताईजणौ, बिगताईजबौ—कर्म वा० ।

बिगताणौ, बिगताबौ, बिगतावणौ, बिगतावबौ, बिगतावणौ, बिगतावबौ । —रू० भे०

बिगतायोड़ौ—भू. का कृ.—१ सूचित किया हुआ, सूचना दिया हुआ. २ समझाया हुआ, सतर्क किया हुआ ३ जानकारी दिया हुआ ।

(स्त्री. बिगतायोडी)

बिगताळ, बिगताळ, बिगताळौ, बिगतालौ—वि (स्त्री. बिगताळी) १ चरित्र वाला, लीलाधारी ।

उ०—१ किसन थवं कूकडा, बाट बाधं बिगताळौ । दही तणौ लै दाण, छाछि ढोळै छोगाळौ । —पी ग्र

उ०—२ तादि नको नको जदि तावड, धाभ न उडगण अरस न धनड । क्रम्म न ध्रम्म नको जदि काळी, ब्रहमंड रूप नमौ बिगताळी । —मा वचनिका

२ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—तौ वाक राजा रै अहि डसीया, पछी माहरा साहिबा, धनवसेना इण नाम रै, वेस्या बिगताळी । —वि कु.

३ अपवित्र, अशौच ।

उ०—अनि नर नारि पसू पखि वाळी, वप छाया न पडै बिगताळी । करि सिनांन अस्टम दिन काढै, चवळ सोळ मास मझि थाढै । —सू. प्र.

४ सुरुचिपूर्ण ।

उ०—साहिबा काइ मउज करौ नई, साहिबा कांइ मउज करउ । मउज करउ काइ अंग सुहाता, सुणि सुणि नै बिगताळी बातां । —वि. कु

५ शौर्यपूर्ण, वीरतायुक्त ।

उ० - तौ 'कहर' कहिजै सताव, वाइक बिगताळा । कूदि पडा गज कटहडा चढि गोख विचाळा । —सू प्र.

६ प्रिय, प्यारा ।

उ०—'बाकीदास' कळह बिगताळौ, वाधं करा रिणम्मल वाळौ । सामावत खग चद सवायौ, दूजा अगी दिसौ दरसायौ । —रा रू.

७ वीर, बहादुर ।

उ०—ह पिरणासू हिंदवा, तुरका हर टाळै । सै कुण हिंदू हम सुणा, जिमकू पिरणाळै । पिरणा सू सगपण करै, वीरम बिगताळै । जद पाचौ कहियौ 'जसू' आगम अकलाळै । —वी. भा.

रू भे —बिगताळु, बिगताळ ।

बिगतावणौ, बिगतावबौ—देखो 'बिगताणौ, बिगताबौ' (रू भे.)

बिगतावणहार, हारौ (हारी), बिगतावणियौ—वि० ।

बिगताविओड़ौ, बिगतावियोड़ौ, बिगताव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिगताबीजणौ, बिगताबीजबौ —कर्म वा० ।

बिगतावळी—स. स्त्री —सूचि ।

बिगतावियोड़ौ देखो 'बिगतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिगतावियोडी)

बिगति, बिगती—स स्त्री —१ अवस्था व हालत ।

उ०—कहा वसै मन उनमनी कहा, कहा क्रम वासौ करै । ब्रह्मड पिंडि एका बिगति, उपख्यान वेद किम उचरै ? —सुरजनदास पूनियौ

२ फर्क अन्तर, भेद ।

उ०—२ जो सोळह कळा स् पूरण पूरणिमा को चद्रमा थौ । सु पणि आपणी उजळता करि आकास सौ मिळि गयौ है । एती बिगति नही लाभै छै । जु इह आकास छै कि चद्रमा छै । —वेलि टी.

३ देखो 'बिगत' (रू. भे)

उ०—१ पच बिगति सुन पंच प्राण तुझ, पंच तत्व अम्है दाखु । पंचमी ले नइ जे क्रम करता, सिवि सब दईं ईम भाखु । —रुकमणी मगळ

उ० —४ आवी खबर अचित प्रगट बिता भूपाळा । दळ असेस दुरवेस, सुणै बिगतौ अडसाळा । —रा. रू.

उ०—३ वेगि लिखीजै बिगति, रवद जिम मर्भ्रे दुरगां। एक उतन ऊपनां, जुडां द्वापुर जिम जगां। —सू. प्र.

उ०—४ प्रति प्रकास गति भेद प्रति, बिगति एह बिसतार। म्रादि म्रादि कहिया इता, सति प्रबंध ततसार। —सू. प्र.

उ०—५ प्रगट गांम पुर घणे म्रप्रवळ, मार-लियौ वहता पुर मंडळ। म्रोपत माया मिळै म्रलेखं, लूट तणी बिगति कुण लेखं। —रा. रू.

उ०—६ पखा पखी सबको मिलै, जहर भरया मुख नाग। जन हरिदास बोल्या बिगति, कहा कोयल कहां काग।

—ह पु. वा

उ०—७ मुहर बिगति कीजै दस मात्र, पछै वळे दस दस कविपात्र। सुण चौपै फेरै कल सात्त, वंदिव चरण पुलणा विख्यात।

—पिं प्र.

उ०—८ भणि तेरह सौ म्रासठि भेद, बिगति मात्र सोळह ध्रू वेद। म्राखर लुघू गुरु इगिम्रार, वर्ता सुभकर छंद विचार।

—ल पिं

उ०—९ बिगति लहै विरहा तणी, विरही मांणस तेह। 'लालचद' कहइ मोवतइ, कहियइ न जावइ तेह रै। —प. च चौ.

उ०—१० म्रध्यातम मरम बिसतार बावन म्रखर, ससाकित सकत्ति बिगति सूझै। पाडगति गीत सगीत समझण पौंहचि, बहतरी कला खट भाख बूझै। —ल. पिं

बिगत्त, बिगत्ति, बिगत्ती–वि. [स. वि=विशेष+गति, चाल] १ तेज गति वाली, तीव्रगामी।

उ०—मतसागर उनमती, वीणा सुर मधुरै बावत्ती। वाहण हस बिगत्ती, साय सुप्रसंन हुम्रो सरसत्ती। —गज उद्धार

२ देखो 'बिगत' (रू भे.)

उ०—१ उल्लसै वेळ परसै म्ररस, ग्यान न लोक बिगत्त रौ। जग करण लोप म्रंतक जिमौ, इसौ कोप म्रसपत्त रौ। —रा. रू.

उ०—२ सत्रु वाढि सीस पूजे सकत्ति, वाखेल कहाया इण बिगत्ति। इम लीध मडळम्रोखौ उदार, घर समद वीटि गढ संखोधार। —सू प्र.

उ०—३ तद हीदू किया तुरक, विप्र तौ मूल विटाल्या। वणिकै गई बिगत्ति, राक करि लगरि राल्या। —स. कु.

उ०—४ एक हस्ति म्रारुही, वल्लभ म्रस उस्ट्र बिगत्ती। सरभ चीत सादूळ, रीछ बदर तर रत्ती। —रा. रू.

बिगन—'विघ्न' (रू भे.)

बिगनांन, बिगन्यांन—देखो 'विग्यान' (रू. भे.)

उ०—बिगन्यांन ग्यान तु हिज विपति तु म्रछेद म्रभेद तन। म्रविगत नाथ केवळ म्रलख, पाप निहौ तूं कोइ पन। —पी. ग्रं.

बिगपति—देखो 'विग्पति' (रू. भे.)

उ०—कारण कवण वयण लघु काया, महमा प्रबळ ईस्वरी माया। पुणे भडा बिगपति घरि पौरस, जुध होसी तौ बिजै हुसी जस।

—सू. प्र.

बिगय—देखो 'बिगत' (रू भे.)

उ०—खेचर चरम रोमपखी चमचेड कपोत, मनुज लोक थी बाहिर समुग बिगय पख होत। सरवै जळ थळ खचर समुच्छिम गम्भज दोय, कम्म म्रकम्म भूमि म्रतर दीव मणुजोय। —बृ. स्त.

बिगर—देखो 'बगैर' (रू. भे)

उ०—१ बाहा बाधै गाठवड, बिगर सनाहा म्रग। बागा केसर भारिया, हुवणा म्रोण सुरग। —रा. रू.

उ०—२ कवण म्रखंवड बिगर, प्रळै सागर सिर सोभै। कवण बिना सुखदेव, देव माया नह लोभै। —रा. रू.

उ०—३ हिव कै गाढ घणौ करै। जीमै मत ही। म्रर तूं मोर घातै, म्हारौ बहु हु ले नै जाइस्यूं। म्रर जै न मेल्है तौ लाकडी वहाडै। पिण बहु बिगर लीयां घरै मता म्राए।

—कावळी जोइयौ नै तीडी खरळ री बात

बिगल—देखो 'बिगुल' (रू भे.)

बिगलिंदीय बिगलिंद्रिय—देखो 'विकलेंद्रिय' (रू. भे.)

बिगलित–वि [सं.] १ जो चूकर या टपक कर निकल या गिर गया हो।

२ जो पिघल या घुल गया हो।

३ शिथिल।

४ बिगड़ा हुम्रा।

५ म्लान।

उ०—पनि पवन प्रारथित श्री तत्र निपतित, सुरत म्रत केहवी स्त्री। गजद्र क्रीडता सु बिगलित गति, नीरासइ परि कमलिनी। —वेलि.

६ विसर्जित।

७ म्रस्तव्यस्त, बिखरा हुम्रा।

बिगवत–वि.—लम्बी यात्रा करने में समर्थ।

उ०—"'घरणि ते जे सीलवंति, छइल ते जे कलावत, वेस्या ते जे रूपवति, वस्त्र ते जे पचालसार, द्रव्य ते जे भोगसार, धान्य ते जे म्राहारवत, साधु ते जे क्षातिवत, करह [ते] जे बिगवंत, तुरग ते जे वेगवत, हस्ति ते जे भद्रजातीय, मत्रि ते जे बुद्धिमंत, कर ते जे वीरयवंत, राय ते जे प्रसस्य जातिवत। —व. स.

बिगसणौ, बिगसबौ—देखो 'विकसणौ, विकसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सुहाळ भिडिया म्रावि म्रडिया, सुहड म्रंगो म्रंगि। नर सीस विहसई वदन, बिगसई, सेल वाहई सगि। —रुकमणी मगळ

उ०—२ हस बोलै खेलै ससि हसि, बिगसै कमळ घणा चद्रबंसी।

जोत बाग झळकै मिळ नदि जळ, चमकै मंगर उछळै चवळ ।
—सू प्र.

उ०—३ आवत मुख बिगसै नही, जावत नहि कमळाइ । 'सम्मन' पैसे नीचकै, नीच हुवै सो जाइ । —सम्मन

उ०—४ भाणजा नै देख्यां, म्हा रौ कवळ बिगसै, भतीजां ने देख्या म्हां रौ मन हंसै, वीरै रै आंगण आबौ मोरियौ । —लो. गी.

उ०—५ पोह बिगसी पगडी हुवौ, कूकडै दीन्ही बाग । उठ बदा कर बंदगी, क्यों साहिब पास्यौ भाग । —ऊदौ नैण

उ०—६ थोक पूज मे दिन गया, श्रान देव कै नाय । जौं' रौ देख' र बिगसियौ, जाय हमारै गाय । —अनुभववाणी

उ०—७ चगा रूप देख मत बिगसौ, मल मतर की देहा । जन-हरिराम भसम हुय जासी, नाव विना सब नेह। । —अनुभववाणी

बिगसणहार, हारौ (हारी), बिगसणियौ—वि० ।
बिगसिग्रोड़ौ, बिगसियोड़ौ, बिगस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिगसीजणौ, बिगसीजबौ—भाव वा० ।

बिगसाड़णौ, बिगसाडबौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे.)

बिगसाड़णहार, हारौ (हारी), बिगसाड़णियौ—वि० ।
बिगसाड़िग्रोड़ौ, बिगसाड़ियोड़ौ, बिगसाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिगसाड़ीजणौ, बिगसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बिगसाड़ियोड़ौ—देखो 'विकसायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिगसाड़ियोडी)

बिगसाणौ, बिगसाबौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे.)

उ०—घूंघट ओट सलाम गह, कवलि कवलि बिगसाय । हसती लजति उमगति, ऊभी सनमुख आय । —पना

बिगसाणहार, हारौ (हारी), बिगसाणियौ—वि० ।
बिगसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिगसाईजणौ, बिगसाईजबौ—कर्म वा० ।

बिगसायोड़ौ—देखो 'विकसायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिगसायोडी)

बिगसावणौ, बिगसावबौ—देखो 'विकसाणौ, विकसाबौ' (रू. भे.)

बिगसावणहार, हारौ (हारी), बिगसावणियौ—वि० ।
बिगसाविग्रोड़ौ, बिगसावियोड़ौ, बिगसाव्योडौ—भू० का० कृ० ।
बिगसावीजणौ, बिगसावीजबौ—कर्म वा० ।

बिगसावियोड़ौ—देखो 'विकसायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिगसावियाडी)

बिगसियोड़ौ—देखो 'विकसियोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. बिगसियोड़ी)

बिगहा—देखो 'विकथा' (रू. भे.) (जैन)

बिगानौ—देखो 'बेगानौ' (रू. भे.)

उ०—लैरां लैरा रै लै चल रांकणा, लोक बिगांना वारी मुल्क बिगांना, अपना नही कोई साजणा । —रसीलै राज रा गीत

बिगाड़—देखो 'बिगाड' (रू भे.)

उ०—१ रावळ भोजदे नू कहाड़ियौ, आगै आदमी मेल-म्है पकारा ऊपर आवू जावा छा, तू आगे खबर मत देई । म्है थारो बिगाड़ क्यू नही करा, तू थारा जुद्रवा माहे बैठो रहै । —नैणसी

उ०—२ ऊदो ऊगमणावत इंदो महेवै रावळ मलीनाथजी री चाकरी करै । तद वाघ एक गोयाणा रै आखरां रहै सो देस मांहै बिगाड़ करै । ताहरा रावळ जी राजपूतानूं हुकम दियो-'चौकी द्यो' ।
—नैणसी

उ०—३ तद कुंवरसी कही, "जो थांहरै दाय आवै, सो खरी । वात छानी न रहिसी, जद बिगाड हुसी । म्हारो तो जीव हमै थांहरै हाथ छै । चित मे आवै त्यूं करो" । —कुंवरसी साखला री वारता

बिगाड़णौ, बिगाड़बौ—देखो 'बिगाडणौ, बिगाडबौ' (रू भे.)

उ०—१ भड अजमाल कमधरा, वळिया देस बिगाड़ । खाग एता खडिया, जेता मंडी राड । —रा. रू.

उ०—२ पाप नरै तिण हीण प्रवाडै. वळियौ मुहकम वदन बिगाड़ै । आलम खडिया दक्खण ऊपर, कामबगस ऊपर चढ कुंजर ।
—रा. रू.

उ०—३ बिगाडी ठौड जब भिस्टी, अज हू मरै नही दुस्टी । टूको स्वान ज्यू देवै, दुख मुख खबर नही लेवै । —ऊदौ नैण

उ०—४ सु उठै जागळू रा कोट नजीक गूढौ छै तठै रहै छै, नै रूण रा बिगाड़ नूं दौड छै । नै अठै साखला री बेरा पाणी नै जाय सु दहिया रा कवर ४० तथा ५० भेळा हुआ फिरै छै ।
—नैणसी

उ०—५ राम विना कुण राखसी, कुण खेती किरसांण । नही तो चिड़ै बिगाड़िसै, हरीया चेत अनाण । —अनुभववाणी

उ०—६ सो वा सुरग री वेस्या तिकण सोक रौ चार मईना कुसग रहसी ४ महीना क्यू कि पेट मे आधान है सो च्यारा महना जनमिया पछै सत कर सुरगा मे जाय पती नै पाछौ लेसूं जितरै कुलटा आदत बिगाड़ देसी । —वी. स. टी.

बिगाड़णहार, हारौ (हारी), बिगाड़णियौ—वि० ।
बिगाड़िग्रोड़ौ, बिगाड़ियोड़ौ, बिगाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिगाड़ीजणौ, बिगाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बिगाड़ियोड़ौ—देखो 'बिगाडियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिगाडियोडी)

बिगाड़ू–वि.—१ हानि करने वाला, नुकसान करने वाला, बिगाडने वाला।

उ०—कुळ म्यात हीगा फीटा कुटळ, जिकै बिगाड़ू जात रा। मम लेस बात सुणज्यौ मनी, रहण न दीज्यौ रात रा।—ऊ का.

२ विध्वंस करने वाला, विध्वंसक।

रू. भे.—बिगाड़ू, बिगारु, बिगारू।

बिगाडौ देखो 'बिगाड' (अल्पा., रू. भे.)

बिगाथा देखो 'बिगाहा' (रू. भे.)

बिगार—देखो 'बिगाड' (रू. भे.)

उ०—जनहरीया मन मिरघ ज्यु, बरज्यौ केनी वार। काया वाडी बीच मै, करि करि जाहि बिगार।—अनुभववाणी

बिगारणौ, बिगारबौ—देखो 'बिगाडणौ, बिगाडबौ' (रू. भे.)

बिगारणहार, हारौ (हारी), बिगारणियौ—वि०।

बिगारिओडौ, बिगारियोडौ, बिगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगारीजणौ, बिगारीजबौ—कर्म वा०।

बिगारियोडौ—देखो 'बिगाडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगारियोडी)

बिगारु, बिगारू—देखो 'बिगाड़ू' (रू. भे.)

उ०—रथू के घमसाण जिनकं देख लजावै सुधाभुजु के विमाण, अवरही कारखानै तिस तिस कै ओनायन अपनी अपनी जिनसू ले आय, जिम गायन परदळ के बिगारू निज दळ के किवाड।—र. रू

बिगास—देखो 'विकास' (रू. भे.)

बिगासणौ, बिगासबौ—देखो 'विकासणौ, विकासबौ' (रू. भे.)

उ०—ओउ मर सोउ देख्या दोउ, पारब्रह्म परछदा है। ममाहूय पासै कवळ बिगासै, अरघ नाव आखदा है।—अनुभववाणी

बिगासणहार, हारौ (हारी), बिगासणियौ—वि०।

बिगासिओडौ, बिगासियोडौ, बिगास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगासीजणौ, बिगासीजबौ—भाव वा०।

बिगासियोडौ—देखो 'विकासियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगासियोडी)

बिगाह—देखो 'बिगाहा' (रू. भे.)

उ०—गाहा मात्र सतावन गावै, गाहो उलट बिगाह गिणावै। चौपन मत गाहू उचरीजै उगाहो मत्त साठ भखीजै।—र. ज. प्र.

बिगाहन–स. पु.—मुकुंदवंश मे उत्पन्न एक कुलांगार राजा, जिसने अपने दुर्व्यवहार के कारण अपने जाति बान्धवों का एवं स्वजनों का नाश किया था।

बिगाहा–सं. पु. [सं. विगाथा] आर्या छन्द का उद्गीति नामक एक भेद विशेष जिसके प्रथम चरण में १२ मात्राएँ, द्वितीय चरण में १५ मात्राएँ, तृतीय चरण में १२ मात्राएँ और चतुर्थ चरण में १८ मात्राएँ होती है।

उ०—प्रथम बिगाहा अरघ प्रति, वहिकल सत्रावीस। परदळ मांहि त्रीस पणि, तविजै मात्रा तीस।—पिं. प्र.

रू. भे.—बिगाथा, बिगाह, बिगाहा।

बिगिति—देखो 'बिगत' (रू. भे.)

उ० पत्ता है मैं मात्रा प्रसतार, बिगिति विधोगति वेत विचार। धुर लै गुर हेठे लुघ धारि आगळि हुवै तिसी भणुहारि।—ल. पिं.

बिगुण–वि.—गुणरहित, निर्गुण।

बिगुल—देखो 'बिगुण' (रू. भे.)

बिगूंचणौ, बिगूंचबौ—देखो 'बिगूचणौ, बिगूचबौ' (रू. भे.)

उ०—तम्हो वनमाहा बिगूंचु, हूं करूं पोहरि राज। कथ, तै किम नीपजि, कुलवती थी ए काज।—नळाख्यांन

बिगूंचणहार, हारौ (हारी), बिगूंचणियौ—वि०।

बिगूंचिओडौ, बिगूंचियोडौ, बिगूंच्योडौ—भू० का० कृ०।

बिगूंचीजणौ, बिगूंचीजबौ—भाव वा०।

बिगूंचियोडौ—देखो 'बिगूचियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगूंचियोडी)

बिगूचणौ, बिगूचबौ—देखो 'बिगूचणौ, बिगूचबौ' (रू. भे.)

बिगूचणहार, हारौ (हारी), बिगूचणियौ—वि०।

बिगूचिओडौ, बिगूचियोडौ, बिगूच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिगूचीजणौ, बिगूचीजबौ—भाव वा०।

बिगूचियोडौ—देखो 'बिगूचियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगूचियोडी)

बिगूत–वि. [सं विगुप्त] १ छुपा हुआ, गुप्त।

बिगूतणौ, बिगूतबौ–क्रि अ.—१ कष्टमय होना, दुःखित होना।

उ०–१ वैदरभी विरहि बिगूती, वनमाहा बोलि बाली। 'आंम एकली मूकी न जाइ, नैखध रा, तम टाळी।—नळाख्यांन

उ०–२ मन ही सकळप विकळप है मन ही, मन जाग्रत मन सूता। मन ही त्याग चलै बोहू माया, मन ही लाग बिगूता।—अनुभववाणी

२ निन्दित होना।

उ०—१ किया उपाय पोमण कै ताईं, अपति कदै न सूता। लोकी लाज मरै जां वातै, बोहळि वार बिगूता।—बील्होजी

उ०—२ "गजबधी" सीह विरत्ता, दखणी दळ भाजि विगूता । बालापुर महिक्कर छोडै दखणी दळ भागा डोडै । —गु. रू. ब.

३ बर्बाद होना, नष्ट होना ।

उ०—मावै राधौ मोभणी पान गाडो, आवै वाणी यू 'किसन्नेम' माडो । तै भूला राघो, विगूतो भवि त्यारो, जांगोसी पीछै वडो भाग ज्यारो । —र. ज. प्र.

उ०—२ चन्द्र क्षयी, शुक्र काणउ, मनीश्वर कूबडउ, आदित्य तापकर, अरुण पाकुलउ, मंगल वक्र, समुद्र खारु, रावण परस्त्री कारणि विगूतउ, श्रीराम रहइ वनवास, सीता रहइ वियोग, पांडव कौरव विरोध''' ''। —व. स

४ छुपना, लुकना ।

५ कोसना ।

उ०—विरख मिलिउ विधि विधि तणउ, हुउ तै हाहाकार । विधि विगूती विलपती, नारि रही निरधार । —मा. कां. प्र.

६ ढका हुवा होना (मोढा हुवा होना) ।

उ०—जिम नीद्र भरि हुई सुखि सूता, तेम कौरव ति नीद्र विगूता । करण मुख्य नृप मौलि पटउला, वेगि उत्तार लीया तिणि हेला । —सालिसूरि

विगूतणहार, हारौ (हारी), विगूतणियौ—वि० ।

विगूतिप्रोड़ौ, विगूतियोड़ौ, विगूत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विगूतीजणौ, विगूतीजबौ— भाव वा० ।

वगूतणौ, वगूतबौ—रू० भे० ।

विगूतियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ कष्टमय हुवा हुआ, दुःखित हुवा हुआ. २ निन्दित हुवा हुआ. ३ बर्बाद हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. ४ छुपा हुआ, लुका हुआ. ५ कोसा हुआ. ६ ढका हुआ (मोढा हुआ) ।

(स्त्री. विगूतियोड़ी)

विगूवणौ, विगूवबौ—देखो विगोणौ, विगोबौ' (रू. भे.)

उ०—विहि !इ रहिइ वारी वली, मुझ सिउ मडि म माडि । माधवनइं तूं नही गमइ, घणूं विगूविसि चाडि । —मा का प्र.

विगूवणहार, हारौ (हारी), विगूवणियौ—वि० ।

विगूविप्रोड़ौ, विगूवियोड़ौ, विगूव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विगूवीजणौ, विगूवीजबौ—कर्म वा० ।

विगूवियोड़ौ—देखो 'विगोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विगूवियोड़ी)

विगौ—स. पु.—भोजन के साथ खाये जाने वाले छः पदार्थ ।

१ दूध २ दही ३ घृत ४ तेल ५ मिष्ठान ३ कडाई ।

वि. वि.—उपर्युक्त छः पदार्थों मे से एक-एक कर छुड़ाया जाने वाला पदार्थ ।

उ०—२ जद स्वामीजी आठ रोटी काढ दीधी। मयाराम जी साधा नें थांमी पिण कोइ लें नहीं । जब बोल्यौ—परठ देवा रा भाव है । स्वामी बोल्या—परठ नें दूजै दिन विगै टालज्यौ । —भि. द्र.

उ०—२ वलि गुरा निलेध्यौ, आगं थांनै वरज्यौ थो नी । जद वलै बोल्यौ—महाराज ! उपयोग चूक गयौ । जद गुरु बोल्या—अबै पग लागै है तौ सवेरै विगै रा त्याग है । थोड़ी वेला सूं फिरतां फिरता वलै पग दे दियौ । इम उपयोग चूक नें वार वार पग लागो नौ तैं कुणका उपर पग देवाथी नें विगै टालवा थी राखी नही । —भि द्र.

विगोवणौ, विगोवबौ—देखो 'विगोचणौ, विगोचबौ' (रू. भे.)

विगोवणहार, हारौ (हारी), विगोवणियौ—वि० ।

विगोविप्रोड़ौ, विगोवियोड़ौ, विगोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विगोवीजणौ, विगोवीजबौ—कर्म वा० ।

विगोवियोड़ौ—देखो 'विगोचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विगोचियोड़ी)

विगोणौ, विगोबौ—क्रि. स.—१ नष्ट करना, बरबाद करना ।

उ०—किया रवाना दोलती, वीसलनंद विगोय । कृपण हिय मंह कागसौ, नहिं फेरै नर-सोय । —बा. दा.

उ०—२ खोयो आसुरी धरम आपो विगोयो तै मीरखान, जोयौ नही तारकी न आग ली अबाब । "सवाईसीग" मारियौ धाणा सू धणाखोर सिंधु, नीत छाडै किता दीह जीवसी नीबाब । —नवळजी लाळस

२ नाश करना, विध्वंस करना ।

३ दुःख देना, कष्ट देना ।

उ०—१ मोटउ कुडउ मागामिरि, वली विचारी जोइ । दिन थोहिउ रयणी घणी ययरणी काइ विगोई । —मा का. प्र.

उ०—२ धान न भावै नीन्द निगोई, इण वेदन मोनूं खरी विगोई । नौ मो वात कहूं मैं कैसी, मेरै मन मे वीचत जैसी । —कंवरसी सांखला री वारता

४ बदनाम करना, निन्दा ।

उ०—१ संपति सहु लेई रही, वली विगोयु सेठी । सात खणइ मात जि दिवस राखी, नाखिउ हेठि । —मा का. प्र.

उ०—२ श्रीवयराट नृप साहसूं जोई, विप्ररूपि नृप बोलई सोई । ताहरइ नयरि नासि न कोई, ए अगाह नारि विगोई । —मालिसूरि

५ दुर्दशा करना ।

६ छिपाना ।

७ लज्जित करना, शर्मिन्दा करना ।

उ०—आखि पलव करसाख आगळी, उथरियौ तिरिण सिर अनड़ व्रज राखियो विगोयौ वासव, वडौ अवर कुरण विसन वड ।
—ह. नां. मा.

८ खराब करना, गन्दा करना ।

उ०—जीभ न जीभ विगोयनौ, दव का दाधा कुपळी मेल्ही । जीभ का दाधा नु पांगुरई, "नाल्ह" कहइ सुरगइ सब कोई ।
—बी. दे.

बिगोणहार, हारौ, (हारी), बिगोणियौ—वि० ।

बिगोयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिगोईजणौ, बिगोईजबौ—कर्म वा० ।

बिगोणौ, बिगोबौ, बिगोवणौ, बिगोवबौ, विगूणौ, बिगूबौ, बिगोवणौ, बिगोवबौ—रू० भे० ।

बिगोनौ—स. पु.—१ कलह, टंटा-फिसाद ।

२ देखो 'बेगानौ' (रू. भे.)

बिगोयोड़ौ—भू. का कृ—१ नष्ट किया हुआ, बरबाद किया हुवा. २ नाश किया हुआ, विध्वस किया हुआ ३ दुख दिया हुआ, कष्ट दिया हुआ. ४ बदनाम किया हुआ, निन्दा किया हुआ' ५ दुर्दशा किया हुआ. ६ छिपाया हुआ. ७ खराब किया हुआ, गन्दा किया हुआ. ८ लज्जित किया हुआ, शर्मिन्दा किया हुआ । (स्त्री. बिगोयोडी)

बिगोरणौ, बिगोरबौ—देखो 'वगोरणौ, वगोरबौ' (रू. भे.)

बिगोरणहार, हारौ (हारी), बिगोरणियौ—वि०

बिगोरिग्रोड़ो, बिगोरियोड़ो, बिगोरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिगोरीजणौ, बिगोरीजबौ—कर्म वा० ।

बिगोरियोड़ौ—देखो 'वगोरियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री. बिगोरियोडी)

बिगोवणौ, बिगोवबौ—देखो 'बिगोणौ, बिगोबौ' (रू. भे)

उ०—१ आपणी लोग सगळो एक मतै छै सु मान नु इण आपरी मतना करो । पून रजपूतो न बिगोवै ।
—गौड गोपाळदास री वारता

उ०—२ आ वडै घर री बहु हुवै तिसडी सौळवत छै सु मांन नु इण आपरी धाय मेल कहाडियो "तू रावळ री घर धगोहा बिगोवै छै । नै तू माणस छै तो म्हारो नाम मत लेई" आ चकोर थकी रहै छै मांन आंधो हुवो बहै छ सु एक दिन सज नै इण रै घर मांहे आयो । इण दीठो म्हारो धरम न रहै तद आ हाटी पेट मार मूई ।
—नैणसी

बिगोवणहार, हारौ (हारी), बिगोवणियौ—वि० ।

बिगोविग्रोड़ौ, बिगोवियोड़ौ, बिगोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिगोवीजणौ, बिगोवीजबौ—कर्म वा० ।

बिगोवावणौ, बिगोवावबौ—क्रि. स. [बिगोणौ क्रि. का प्रे. रू.] १ नष्ट कराना/करवाना, बरबाद कराना/करवाना ।

२ नाश करवाना, विध्वस करवाना ।

३ कष्ट दिलवाना, दुःख दिलवाना ।

४ बदनाम करवाना, निन्दा करवाना ।

उ०—सुरिण, राजा ! रांणी वदइ, 'राजकुमरि घरि आणि । वली बिगोवावि घरणु ब्राह्मरण-केरइ पारिण ।
—मा. का. प्र.

५ दुर्दशा करवाना ।

६ छिपवाना ।

७ लज्जित करवाना, शर्मिन्दा करवाना ।

८ खराब करवाना, गन्दा करवाना ।

बिगोवावणहार, हारौ (हारी), बिगोवावणियौ—वि० ।

बिगोवाविग्रोड़ौ, बिगोवावियोड़ौ, बिगोवाव्योड़ौ—भू० का० कृ ।

बिगोवावीजणौ, बिगोवावीजबौ—कर्म वा० ।

बिगोवावियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ नष्ट करवाया हुआ, बरबाद करवाया हुआ २ नाश करवाया हुआ, विध्वस करवाया हुआ. ३ दुख दिलवाया हुआ, कष्ट दिलवाया हुआ. ४ बदनाम करवाया हुआ, निन्दा करवाया हुआ. ५ दुर्दशा करवाया हुआ. ६ छिपवाया हुआ. ७ लज्जित करवाया हुआ, शर्मिन्दा करवाया हुआ. ८ खराब करवाया हुआ, गन्दा करवाया हुआ.

(स्त्री. बिगोवावियोडी)

बिगोवियोड़ौ—देखो 'बिगोयोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिगोवियोडी)

बिगौ—देखो 'बिगो' (रू. भे)

बिग्गाहा—देखो 'बिगाहा' (रू. भे)

बिग्घ—देखो 'विघ्न' (रू. भे.)

उ०—प्रसिद्ध बुद्धि सिद्धि निद्ध रिद्धि वृद्धि पूर ए, कलत्त पुत्त कित्ति वित्त वदनं सनूर ए । बिजोग सोग रोग बिग्घ अग्घ सिग्घ घायक । प्रगट्ट देव नित्त मेव सेव पास नायक ।
—घ. व. ग्र.

बिग्य—स. पु. [स. विज्ञ] ब्रह्मा ।

वि.—१ बुद्धिमान, समझदार ।

२ विद्वान, पडित ।

३ विशेष जानकार ।

उ०—चतुरमुख चतुरवग्ग चतुरातमक, बिग्य चतुर जुग विधायक । सरवजीव विस्वक्रन ब्रह्मसू, नरवर हंस देहनायक ।
—वेलि.

बिग्यता—स. स्त्री. [स विज्ञता] १ बुद्धिमता, समझदारी ।

२ पांडित्य, विद्वता ।

३ विशेष जानकार होने की अवस्था या भाव ।

विग्यप्त-वि. [सं. विज्ञप्त] जो बतलाया या सूचित किया गया हो ।

विग्यप्ति, विग्यप्ती-सं. स्त्री. [सं. विज्ञप्ति] १ बतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव ।

२ इश्तहार, विज्ञापन ।

रू. भे.—विगपति, विग्याप्ति ।

विग्यांन-सं पु [सं. विज्ञान] १ जानकारी, ज्ञान ।

२ आविष्कृत सत्यों व प्राकृत नियमों पर आधारित क्रमबद्ध व व्यवस्थित ज्ञान ।

३ विशेषतः भौतिक जगत् से सम्बन्धित उक्त प्रकार का ज्ञान ।

उ०—धरम, विग्यान, इतियास, पुराण, राजनीति, आचार, बिवहार, कळा, साहित, वेसभूसा, परब—त्यूहार' कारीगरी नै खेतीबाड़ी में सैंग परपरा रै कारण ई विकसै अर प्रगटै । —फुलवाड़ी

४ किसी विशिष्ट विषय के तत्वों या सिद्धान्तों आदि का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान जो ठीक क्रम से एकत्र या संग्रहीत हो ।

ज्यूं—सरीरविग्यान, समाजविग्यान, राजनीतिविग्यान ।

५ आत्मा के स्वरूप का ज्ञान । (बौद्ध)

६ आत्मा ।

७ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक । (व. स.)

८ कर्म ।

९ कला । (व. स.)

१० विशेषतया ब्रह्मसाक्षात्कार से प्राप्त हुवा हुआ ज्ञान ।

११ एक शास्त्र विशेष ।

१२ निश्चयात्मिक बुद्धि ।

उ०—परिपूरण प्रेम, निज ध्याय नेम, विग्यांन विग्य, पूरण प्रतिग्य गंभीर ग्यान, विस्मय विग्यान उद्योग आस्य, एकौ उपास्य ।

—ऊ. का

रू. भे.—विगनान, विगन्यान, विग्यान, विगनान, विगन्यान,विग्यानी ।

विग्यांनकोस—देखो 'विग्यानमयकोस'

विग्यांनपाद-सं. पु [सं. विज्ञानपाद] वेदव्यास का एक नाम ।

विग्यांनमयकोस-सं. पु. [सं. विज्ञानमयकोश] १ पांचज्ञानेन्द्रिय सहित बुद्धि । (वेद)

२ आत्मा को परिवृत्त करने वाला पहला आवरण या कोश ।

विग्यांनवाद-सं. पु. [सं विज्ञानवाद] १ ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित करने वाला वाद या सिद्धान्त ।

२ वह वाद या सिद्धान्त जिसमें केवल आधुनिक विज्ञान की बातें ही प्रतिपादित या मान्य की गई हो ।

विग्यांनवादी-सं. पु. [सं. विज्ञानवादिन्] १ योग के मार्ग का अनुसरण करने वाला योगी ।

२ आधुनिक विज्ञानशास्त्र का समर्थक ।

विग्यांनी-सं. पु.—वह देवी जो किसी विशेष ज्ञान से जानी जाती है ।

वि. [सं. विज्ञानिन्] १ जिसे विज्ञान का अच्छा ज्ञान हो, वैज्ञानिक ।

२ जिसे किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो, ज्ञानी ।

३ देखो 'विग्यान' (रू. भे.)

उ०—ग्यांन विग्यांनीय जानि सबैं,विषरूप लगौ मन मोह धूतारौ । दास कहै हरिराम बिनां हरि, होय नहीं नर को निसतारौ ।

—अनुभववाणी

विग्यापक-वि० [सं विज्ञापक] १ दूसरों को जानकारी करवाने या जानकारी देने वाला ।

२ समाचार पत्रों आदि में विज्ञापन निकलवाने वाला, विज्ञापनदाता ।

विग्यापन-सं. पु-[सं. विज्ञापन] १ किसी को जतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव ।

२ वह पत्र या सूचना जिसके द्वारा किसी बात की सूचना दी जाय अथवा जानकारी कराई जाय, इश्तिहार ।

विग्यापणौ, विग्यापबौ-क्रि. स. [सं विज्ञापनं] विज्ञप्त करना, बतलाना या सूचित करना ।

विग्यापियोड़ौ-भू. का. कृ.—विज्ञप्त किया हुआ, बतलाया हुआ या सूचित किया हुआ ।

विग्याप्ति—देखो 'विग्यप्ति' (रू. भे.)

विग्रह-सं पु [सं. विग्रहः] १ व्याकरण के अनुसार यौगिक शब्दों या समस्त पदों के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग या पृथक करने की क्रिया या भाव ।

२ वैर विरोध ।

उ०—बस्यौ लिलाट राह विग्रह तैं, सकर मयंक न राखि सकेह । सरणाई 'चेता' मीमोदा, लाल केणी नह कीयो लेह ।

—लाला हाडा रौ गीत

३ लड़ाई, झगड़ा

उ०—जाइ नै आगली रजपूताणी नु तेड़िनै कह्यौ, मैं आ— रजपूताणी म्हारै माथै सटै आणी छै । ईयै स् वाद विग्रह मत करिज्यो । —कावळै जोईयै नै तीडो खरळ री वात

३ युद्ध, समर । (ह. ना मा)

उ०—१ करण तुच्छ केविया अमै कर मुछ उभारै, आरहिया नरहद पाव धारै पाधारै । वील सगह अप्पतैं बोम विग्रह कवि सभरि. क्रिसन डाणि हल्लियौ जाणु बाणासुर ऊपरि ।

—रा. रू.

उ०—२ मुगट उतार सुघट दसमुख रा, लेकर उघट धुजाई लंका।
बाळ सुतण्ण रचायो विग्रह, आयो राघव कनै असका। —र. रू.

उ०—३ रावळ दूदो तिलोकसी जसहडोत जेसळमेर गढ ऊपर छै।
पातसाही फोज तळहटी छै। वरस १२ विग्रह नै हुवा छै। मांमला
घणा ही हुवा, पण गढ हाथ आवै नहीं। —नैणसी

उ०—४ अजमखा वांमै लागो आय गढ गिरनार घेरियो।
वरस ३ विग्रह हुवो। अमीरखान गढरोहा माहै मौत मुवो।
—नैणसी

४ नीति के छः गुणो मे से एक।

५ सेना, फौज।

६ किसी के प्रति किया जाने वाला हानिकारक उपाय का प्रत्यक्ष प्रयोग।

उ०—इम देखि अमल जळिया असह, धरा लियै इम धारियो।
जुध करण न व्है आसग जदि, विग्रह चूक विचारियो।
—सू. प्र.

७ शिव का एक नाम, शिव-लिंग।

८ प्रतिमा, मूर्ति।

९ कोई तत्त्व विशेष। (सांख्य)

१० शृंगार, सजावट।

११ समुद्र के द्वारा स्कंद को दिये जाने वाले दो पार्षदो मे से पहला पार्षद।

१२ कष्ट, पीडा, दुखी।

उ०—वीछडिया विग्रह घणा भव अंतरा पडाहि। नदी विछुटा वाहळा, अवसर कही मिळाहि। —परमानंदजी वणियाळ

रू. भे.—बिग्रह।

विग्रह-चारौ—स. पु.—टंटा-फिसाद, लड़ाई-झगडा।

उ०—पाचमा आरा मा राजवी, हासी विग्रहचारौ रे। वचन कही फिर जावसी, एहवो जाण विचारौ रे। —जयवाणी

विग्रहणौ, विग्रहबौ—क्रि. स.—१ युद्ध करना, लडाई करना।

उ०—कमधज्ज सकज्जा कारणा, गळा भुजा मापै कवण। त्रिचिआण घणी इम विग्रहै, गहियो किर पडतो गयण। —रा. रू.

२ संहार करना, मारना।

उ०—गह धरती रिणमल जिण गादी विग्रहिया, खाग समवादी।
रिड़मल पाट जोध रिववसी, इळ रखवाळ थयो प्रम असी।
—रा. रू.

३ नाश करना, नष्ट करना।

४ षड़यन्त्र करना।

५ शृंगार करना, सजावट करना।

६ घेरा डालना, घेरना।

उ०—कमालदी घोड़ा हजार असी ले आयो। गढ घेरियो। दिहाडै ढोवा हुवा छै, सु परधांन वीकमसी ईडर जाय चाकर हुवो थो, सु गढ विग्रहियो साभळ नै आयो। —नैणसी

उ०—२ पछै मूळराज रावळ हुवो। रतनसी नू राणाई रो विरद। मूळराज वरस १ नै मास ६ राज कियो। वरस १२ बा'रै गढ विग्रहियो रह्यो। —नैणसी

उ०—तरै तेजसी तौ गढ चढीया। पीरोजी लाख कोठार रावळा थी तेजसी रा हुजदारां नूं सुहला सा गिण दीया। सीवांणी विग्रहियो। —राव मालदे री बात

७ दूर करना, हटाना।

८ कलह करना, झगडा करना।

९ वीरगति प्राप्त होना।

विग्रहणहार, हारौ (हारी), विग्रहणियौ—वि०।

विग्रहिओड़ौ, विग्रहियोड़ौ, विग्रह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विग्रहीजणौ, विग्रहीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

वग्रहणौ, वग्रहबौ, वीग्रहणौ, वीग्रहबौ—रू० भे०।

विग्रहियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ युद्ध किया हुआ, लडाई किया हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ ४ षडयन्त्र किया हुआ ५ शृंगार किया हुआ, सजावट किया हुआ. ६ घेरा डाला हुआ, घेरा हुआ. ७ दूर किया हुआ, हटाया हुआ. ८ कलह किया हुआ, झगड़ा किया हुआ. वीर गति प्राप्त।

(स्त्री. विग्रहियोडी)

विग्रही—वि [स विग्रहिन्] १ लडाई-झगडा करने वाला, युद्ध करने वाला।

२ संहार करने वाला, मारने वाला।

३ नाश करने वाला, नष्ट करने वाला।

४ षडयन्त्र करने वाला।

५ शृंगार करने वाला, सजावट करने वाला।

६ घेरा डालने वाला।

७ दूर करने वाला हटाने वाला।

विघटण, विघटन—स. पु. [स विघटन] १ संयोजक अंगों को अलग अलग करने की क्रिया।

२ तोड़ने-फोडने की क्रिया या भाव।

विघटिका—स. स्त्री. [सं] घडी का ६० वां अंश, २४ सैकण्ड।

विघटित—वि [सं.] १ जिसके संयोजक अलग-अलग कर दिये गये हों।

२ तोड़ा-फोडा हुआ, नष्ट किया हुआ।

विघन—स. पु. [स. विघनः] १ घन, हथौड़ा।

२ देखो 'विघ्न' (रू. भे.)

उ०—१ जग बीच जाग्रत ज्यास, ग्रति बिघन सुपन उदास। सब बीज रीझ असार, व्रत चीत मीत विचार। —रा. रू

उ०—२ रीत आद जदुवस घराणै, जगा बिघन जिगन सम जाणै। 'जीवण' हरनाथोत सजोसौ, आसुर व्याधि हरण किर ओसौ। —रा रू.

उ०—३ जो मोनूं छपाइस्यौ तौ भली करिस्यौं, नहीं तौ हूं सहर रा लोका नु बिघन करीस। ताहरा कह्यौ, "कही विघन न करैं ही? —स्यामसुदर री वात

उ०—४ वेलि पढता कोई न होइ। कोई बिघन न रि सकै नही। थळि जळि आकासि कोई न कोई छळ छिद्र होण न पावै। —वेलि टी.

उ०—५ गाडौ वहीर व्हैती वेळा ई उणरौ सपनौ उणी भात चालतौ हौ। अर नी बादळ रा सपना मे ई किणी वात रौ बिघन पड्यौ। —फुलवाडी

उ०—६ दसमी ढाल थई ए पूरी, विनयचंद्र चतुराई। सुणिज्यौ आगलि कुमर कुतूहल, तजि मन बिघन बुराई। —वि. कु.

उ०—७ तपस्वी कही– वरमण रूप तौ तुम ही हो। पण राजा रूप छोड कर एकला फिरो सो उचित नहीं। बिघन आय पड़ै तौ राज-देह दुरलभ है। —सिंघासण बत्तीसी

बिघनक—देखो 'विघ्नक' (रू. भे)

बिघनकरण—देखो 'विघ्नकरण' (रू. भे.) (अ. मा, ह. ना. मा.)

बिघकारी—देखो 'विघ्नकारी (रू. भे.)

उ०—तठै पंडित बोलिया—स्रीमहाराज! ओ बाळक करडा नक्षत्र मैं जनम्यौ छै नै कुडळी माहै ग्रह खोटा आया छै, वेळा पिण खोटी छै, सो माता पिता नै बिघनकारी छै, मौत-घात ज्यू छै। —रिसाळू री वात

बिघनजीत—देखो 'विघ्नजीत' (रू. भे.)

बिघननायक—देखो 'विघ्ननायक' (रू. भे.)

बिघननासक—देखो 'विघ्ननासक' (रू. भे.)

बिघनपत, बिघनपति, बिघनपती—देखो 'विघ्नपति' (रू. भे.)

बिघनप्रांण—देखो 'विघ्नप्राण' (रू. भे.) (ना. मा)

बिघनराज—देखो 'विघ्नराज' (रू. भे.) (अ मा)

बिघनबिनायक—देखो 'विघ्नविनायक' (रू भे)

बिघनहरण—देखो 'विघ्नहरण' (रू भे.)

उ०—पूरण-पुनीत स्रीराम पद, बिघनहरण त्रैलोक्य वर। परणाम सुकवि ईसर पुणै, तैंत नाम भव-सिंधु तर। —ह. र.

बिघनेस—देखो 'विघ्नेस' (रू. भे.)

बिघन्न—देखो 'विघ्न' (रू. भे.)

उ०—१ बळता तौ दीपक भला, टळता भला बिघन्न। गळता तौ वैरी भला, वळता भला सुदिन्न। —अग्यात

उ०—२ फजरै विकराळ सरूप करै, किम व्यांव बिचाळ बिघन्न करै। सब घाविय 'पाल' कनै सिधियां, पुणावां तुमनै नथि पारधियां।—पा. प्र.

बिघन्नणौ, बिघन्नबौ—क्रि अ.—नष्ट होना, मिटना (मरना)

उ०—यां दाबै तरवार उठाई मोरां प्रगटी पीड़ अमाई। बधियौ दरद, सु देह बिघन्नी, प्रस्ठ दुस्ट चादी ऊपन्नी। —रा. रू.

बिघन्नणहार, हारौ (हारी), बिघन्नणियौ—वि०।

बिघन्निओड़ौ, बिघन्नियोड़ौ, बिघन्नयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिघन्नीजणौ, बिघन्नीजबौ—कर्म वा०।

बिघन्नियोड़ौ—भू. का. कृ.—नष्ट हुवा हुआ, मिटा हुआ।

(स्त्री. बिघन्नियोडी)

बिघन्नी—वि.—विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला।

बिघात—स. पु. [स. विघात] १ नाश।

२ आघात, प्रहार, चोट।

३ बाधा, विघ्न.

बिघातक—वि.—१ विघ्न डालने वाला, बाधक।

२ आघात करने वाला, प्रहार करने वाला।

३ नाश करने वाला।

बिघातकारिणी—स स्त्री. [सं] एक प्रकार की विद्या विशेष।

उ०—आकासगामिनी सौदामिनी कामगामिनी कामसामिनी भुवनक्षोभिनी कामरूपिणी मनरतभिनी जलस्तभिनी आग्नेयी वायवी वरसणी कौमारी खगरूपिणी तमोरूपिणी बिघातकारिणी गिरिदारणी अवलोकिनी······। —व. स.

बिघातन—स. स्त्री. [स.] १ नाश करने की क्रिया या भाव।

२ हत्या करने की क्रिया या भाव।

३ बाधा डालने की क्रिया या भाव।

४ प्रहार करने की क्रिया या भाव।

बिघाती—देखो 'बिघातक'

बिघ्न—स. पु. [स.] १ विघ्न, बाधा।

२ रोक रुकावट,।

३ समर।

४ अमगल, अशुभ।

५ नरमांसभक्षक एक राक्षस, जो कालि एवं अयोमुखी नामक राक्षस का पुत्र था।

६ वध नामक राक्षस का पुत्र।

रू. भे.—विघन, विघ्न, विगन, विग्घ, विघन, विघन्न ।

विघ्नक–वि. [स] १ विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।

२ शत्रु, रिपु ।

रू. भे.—विघनक ।

विघ्नकरण–वि. [सं.] १ विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।

२ शत्रु, रिपु ।

रू. भे.—विघनकरण ।

विघ्नकारी–वि. [सं] १ विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।

२ शत्रु, रिपु ।

रू. भे.—विघनकारी, विघ्नकारी, विघनकारी ।

विघ्नजित, विघ्नजीत–स. पु. [सं] श्रीगणेशजी ।

रू भे —विघनजित, विघनजीत ।

विघ्ननायक–स. पु. [सं. विघ्न+नायक] श्रीगणेशजी महाराज ।

रू. भे —विघननायक ।

विघ्ननासक–स. पु. [स. विघ्नः+नाशक] श्रीगणेशजी महाराज ।

रू भे.—विघननासक ।

विघ्नपत, विघ्नपति, विघ्नपती–स. पु. [स. विघ्नः+पति] श्रीगणेश जी ।

रू भे.—विघनपत, विघनपति, विघनपती ।

विघ्नप्राण–स पु. [स] कृष्ण के बडे भाई बलभद्र, हलधर ।

रू भे —विघनप्राण ।

विघ्नराज–स. पु [स. विघ्नः+राज] श्रीविनायकजी ।

रू. भे.—विघनराज ।

विघ्नविनायक–स पु. [स. विघ्नः+विनायकः] श्रीगणेशजी महाराज ।

रू भे.—विघनविनायक ।

विघ्नसंतुस्ट–स पु [स. विघ्नसतुष्ट] चौसट भैरवो मे से एक भैरव का नाम ।

विघ्नहरण–स. पु. [सं. विघ्नः+हरण] श्रीगणेशजी महाराज ।

रू. भे. – विघनहरण ।

विघ्नेस–स. पु. [स. विघ्नः+ईश] श्रीगणेशजी महाराज, ब्रह्माड में इसके इक्कावन नामान्तर दिये गये हैं ।

रू. भे —विघनेस ।

विड़ग—१ देखो 'विडग' (रू. भे.)

उ०—१ सूरजमाल दुफाल, नेज गज ढाल निहारै । फळ सावळ फोरियौ, विड़ंग ग्रोरियौ वधारै । —रा. रू.

उ०—२ उभै तरफ ऊपड़ी, वाग तिण वार विड़गां । ग्रम्हो सम्हा सुर ग्रसुर, जुड़ै सर संभर जंगां । —सू. प्र.

उ०—३ विड़ंगण केसर पाखर भीड भुजाळोय बांधव ग्रावध भीड । ग्रहै कर सावळ ग्रग गरीठ, 'पबौ' चढतौ जद केसर पीठ । —पा. प्र.

(स्त्री. विड़गण)

विड़ंगि, विड़गी—देखो 'विडग' (रू. भे.)

उ०—ग्रगरांण न हालइ उवरि ग्रभ, बाहू ग्रसोल जिम तेवि थंभ । जडलग्ग साहि खेतसी जगि, वइरा वराह चडियउ विड़ंगि । —रा. ज. सी.

विड़–स. पु —१ बीहड, वन ।

उ०—१ वाटि बटाऊ सब चले, विड़ मैं वासा होय । जनहरीया साई विना, यार न ग्रपणा कोय । —ग्रनुभववाणी

उ०—२ वाट विड़ाणी लोक विड़, विड़ ही विड़ मैं वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसौ वेसास । —ग्रनुभववांणी

२ विषय, काम, भोग ।

उ०—१ हरीया जुग विड़ नीदीयै, जा कूं भगति न भाय । से रता रहमाण सूं, ग्रौर न ग्रावै दाय । —ग्रनुभववांणी

उ०—२ वाट विडांणी लोक विड, विड़ ही विड़ मैं वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसौ वेसास । —ग्रनुभववाणी

३ शत्रु दुश्मन ।

वि. [सं विट] विषयी, कामी, भोगी ।

उ०—वाट विडाणी लोक विड, विड ही विड़ मैं वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसौ वेसास । —ग्रनुभववांणी

रू. भे —विड, विड ।

मह.,— विडाण ।

विड़ग्रोजा—देखो 'विड़ूजा' (रू. भे.)

विड़ग्रोजावाह—देखो 'विड़ूजावाह' (रू. भे.)

विड़णौ, विड़बौ—देखो 'विढणौ, विढबौ' (रू. भे)

विड़णहार, हारौ (हारी), विड़णियौ—वि० ।

विड़िग्रोड़ौ, विड़ियोड़ौ, विड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विड़ीजणौ, विड़ीजबौ— भाव वा० ।

विड़द—१ देखो 'विरुद' (रू. भे)

उ०—१ मूळी रो पापा रजवाडा मे रैवणियो स्यांणो हाजरियौ, राजनीत सू रंग्योडो—सुघरघोडो मिनख । स्यात ग्रर जात नै जाणै, विड़द ग्रर वडाई वखाणै । —दसदोख

उ०—२ सरणागत सुख करन कू, तुमरो बिड़द, बिराज । अपनो ही जन जान कै, क्रपा करो महाराज । —अग्यात

उ०—३ निरवाह करत ज नाग्यिण, प्रसरण मरण बिड़द मू । कोल कर जोड्या ग्रोचरै, सहम कळा गुर जंम मू ।

—कोल्हजी चारण

उ०—४ बिड़द तमारो रामजी, लै वहीयै म्हाराज । हरीयै गुण ग्रौगुण कीया, तोई तमा कू लाज । —ग्रनुभववाणी

२ देखो 'बिडद' (रू. भे.)

बिड़दड़ी—स स्त्री.—१ वृद्धि, बढोतरी ।

उ०—गढ रणतभवर सू आवो विनायक, करो नी ग्रणचीती बिड़दड़ी । विडद-विनायक दोनू जो ग्राया, ग्राय तो उतरिया हरियै बाग मे । —लो. गी.

२ वह स्त्री जिसके घर मे पुत्र या पुत्री के विवाह के मांगलिक कृत्य होते हो ।

रू. भे.—बिडदडी, बिडदडो, विरदडी ।

बिड़दवड़ी—स. स्त्री. [स. वृद्धि-वटी] विवाहारभ मे मातृका पूजन के समय दी गई बडी, जो वर-वधू को सीख देते समय पका कर भोजन के साथ खिलाई जाती है ।

रू. भे.—बिडदबडी, बिडदवडी, विडदवडी ।

बिड़दविनायक—स. पु. [स. वृद्धिविनायक] मांगलिक अवसरो पर प्रथम पूजे जाने वाले विनायक, वृद्धिविनायक ।

उ०—बिड़दविनायक दोनू जी ग्राया, ग्राय तो उतरिया हरिया बाग मे । ढूढत ढूंढत नगरी जी ढूढी, कोई घर तो बतावो लाडल रै बाप रो । —लो. गी.

रू. भे —बिडदविनायक, बिडदविनायक, विडदविनायक ।

बिड़दाणो, बिड़दाबो—देखो 'विरुदाणो, विरुदाबो' (रू. भे.)

बिड़दाणहार, हारो (हारी) बिड़दाणियो—वि० ।

बिड़दायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिड़दाईजणो, बिड़दाईजबो—कर्म वा० ।

बिड़दायोड़ो—देखो 'विरुदायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री बिडदायोडी)

बिड़दावणो, बिड़दावबो—देखो 'विरुदाणो, विरुदाबो' (रू. भे.)

उ०—बीरा बीरा भड दोळा बिड़दावै, घीरा घीरा पड घोळा मत धावे । बेळू बैतड री ताती बळवाळी, रेणा घोळी री राती कर राळी । —ऊ. का.

बिड़दाव—देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—बीच-बिचाव कर परा'र लिख्या मुजब पाच सौ जमा कर देवण रो हुकम दाखै, ब्याज न्यारो राखै है । सागै-सागै ग्रापरी बात मान ज्याणै वेगी मारजा री तारीफ ग्रर भरोसै रा ही बिड़दाव उडावै है । —दसदोख

बिड़लो—स. पु.—१ ढेर, समूह ।

उ०—१ माता कै भवन मे जी श्री नारेळा री बिड़लो, जी श्री नारेळा रो बिडलो सुपारया रे बिडलै म्हारी ग्राद भवानी बस रही । —लो. गी.

उ०—२ माता कै भवन मे जी श्री चावळिया री बिड़लो, जी श्री चावळिया रो बिडलो, मूगा रै बिडलै म्हारी ग्राद भवानी बस रही । —लो. गी.

उ०—३ माता कै भवन मे जी श्री काजळिया री बिड़लो, जी श्री काजळिया रो बिडलो, गोळा रै बिडलै म्हारी ग्राद भवानी बस रही । —लो गी.

उ०—४ माता कै भवन मे जी श्री मोळी रो बिड़लो, जी श्री मोळी रो बिडलो, महदी रै बिडलै म्हारी ग्राद भवानी बस रही । —लो गी.

२ देखो 'सुहागदार बिडलो' ।

बिड़ांणो—देखो 'विडाणो' (रू. भे.)

उ०—१ राम नाम नही चेतीयो, करी बिडांणी ग्राम । जन हरीया घर गोरिवै, मरिक्या सती बाम । —ग्रनुभववाणी

उ०—२ दुनिया रोवै रोवणा, देख बिडांणी खाल । नाव सनेही बाहिरो, हरीया होय बिहाल । —ग्रनुभववाणी

उ०—३ माया भई बिडांणीयां, भार विडाणै लोग । जनहरीया नही ग्रापना, विखै बिलासा भोग । —ग्रनुभववाणी

उ०—४ जागि दूभि गहली भई, प्यारी पिव कै जोग । हरीया गूझि करतार सू भमो बिडाणै लोग । —ग्रनुभववाणी

उ०—५ बाट बिडांणो लोक त्रिड, बिड ही विह मैं वास । हरीया हरि बिन दूसरा, ताहि किसो वेमास । —ग्रनुभववाणी

(स्त्री बिडाणी)

बिडाळ बिडाल—देखो 'बिडाळ' (रू. भे.)

बिडाळव्रग—देखो 'बिडाळव्रग' (रू. भे.)

बिडाळव्रतिक—देखो 'बिडाळव्रतिक' (रू. भे)

बिड़ियोड़ो—देखो 'बिढियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिडियोडी)

बिड़ूजा—देखो 'बिड़ूजा' (रू. भे)

बिड़ूजावाह—देखो 'बिड़ूजावाह' (रू. भे.)

बिड़ोजा—देखो 'बिड़ूजा' (रू. भे.)

उ०—तेज ताप मुनीपुर पाडिया पाथोध तास, नागेस भाडिया

ज्यूं खगेस बंधै नेत । पव्वै पख बिड़ोजै झाड़िया वज्र बीम बाट, खळां थाट दूजै दळै बिभाड़िया खेत । —हुकमीचंद खिड़ियौ

बिड़ोजावाह —देखो 'विड़ूजावाह' (रू. भे.)

बिड़ौ—स. पु.—थोहर के नीचे का भाग ।

उ०—घोड़ा दौड़ रह्या छै । होकारा हुगामौ हुय रह्यौ छै । जितरै बीच थोहर झाड़ा रा बिड़ा माहा खरगोस उठिया छै । —रा. सा. स.

रू. भे.—विड़ौ ।

बिचंमा—क्रि. वि.—बीच मे, मध्य मे ।

उ०—राय देह पधराय, वार तरण चेह **बिचमा** । झळ आगी झूलिवा, करण लगी परकम्मा । —रा. रू.

बिच, बिचइ —देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—१ धारण सलज चला 'चद' धारै, आच उठाय वडिम उच्चारै । **बिच** पुर घसै विजय वजि वाजा, जगपत सुता वरै चदराजा । —सू प्र.

उ०—२ पूछ्या बिना पयपै पापी, थट **बिच** कहै लात सिर थापी । वदन मत दिखालै वस द्रोही वळै । —र. रू.

उ०—३ भाखि सतोगुण भलौ, खरौ कोई कहिजै खोटौ । त्रिविध तणौ **बिच** तीन, त्रिविध तामस गुण त्रोटौ । —पी ग्र.

उ०—४ जउ साहिब तू नाविवउ, मेहा पहलइ पूर । **बिचइ** वहेसी वाहला, दूर स दूरै दूर । —ढो. मा.

उ०—५ दिलीवै कहर पतसाह रा भाज दळा, सोहिया दळा **बिच** वीर साजा । सदा जोरावरा तणा नव-साहसी, राह सिर ऊपरै हुम्रै राजा । —देवराज रतनू

बिचकणौ, बिचकबौ—देखो भिचकणौ, भिचकबौ' (रू भे.)

बिचकणहार हारौ (हारी), बिचकणियौ—वि० ।

बिचकिग्रोड़ौ, बिचकियोड़ो, बिचक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिचकीजणौ, बिचकीजबौ—भाव वा० ।

बिचकाडणौ, बिचकाडबौ—देखो 'विचकाणौ, विचकाबौ' (रू. भे.)

विचकाड़णहार, हारौ (हारी), बिचकाडणियौ—वि० ।

विचकाड़िग्रोड़ौ, बिचकाड़ियोडौ, बिचकाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिचकाड़ीजणौ, बिचकाडीजबौ—कर्म वा० ।

बिचकाड़ियोड़ौ—देखो 'विचकायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विचकाड़ियोडी)

बिचकाणौ, बिचकाबौ—क्रि. स.—१ चौंकाना ।

उ०—बापड़ो छोरौ रोवरण-खारौ होै'र लकड़ियां भेळी करण लागौ । इत्ती मे गळी रै छोरा तालियां वजा वजा'र साड नै **बिचकाय** दी । साड नाठौ । छोरा कणांई साड पासी दौडै कणांई लकड़िया सामे । —वरसगांठ

२ बिगाड़ना, विकृत करना । (मुख)

बिचकाणहार, हारौ (हारी), बिचकाणियौ—वि० ।

बिचकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिचकाईजणौ, बिचकाईजबौ—कर्म वा० ।

बिचकाड़णौ, बिचकाड़बौ, बिचकाणौ, बिचकाबौ, बिचकावणौ बिचकावबौ, बिचकाड़णौ, बिचकाडबौ, बिचकावणौ, बिचकावबौ —रू० भे०

बिचकायोड़ौ—भू. का. कृ.—१ चौंकाया हुआ. २ बिगाड़ा हुआ, विकृत किया हुआ (मुख) ।

(स्त्री. विचकायोडी)

बिचकावणौ, बिचकावबौ—देखो 'विचकाणौ, विचकाबौ' (रू. भे.)

बिचकावणहार, हारौ (हारी), बिचकावणियौ—वि० ।

बिचकाविग्रोड़ौ, बिचकावियोड़ौ, बिचकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिचकावीजणौ, बिचकावीजबौ—कर्म वा० ।

बिचकावियोड़ौ—देखो' विचकायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री विचकावियोडी)

बिचकाक्ष—स पु.—एक राजा, जिसने मास-भक्षण त्याग किया था ।

बिचकियोड़ौ—देखो 'भिचकियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विचकियोडी)

बिचकिल—स पु.—१ कुसुम विशेष २ सुगन्धी वृक्ष विशेष ।(सभा)

(मि.—'बिचकल' ।)

बिचक्खण—स. पु.—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

बिचक्र—स. पु.—एक दानव का नाम । (पुराण)

बिचक्षण—वि. [स. विचक्षण] [स्त्री. विचक्षणा] १ पारदर्शी ।

२ सतर्क, सावधान ।

३ बुद्धिमान, चतुर ।

उ०—पट्टकूल पट्टणी देस भोगीचर दक्षण । कुजर कदळी खड विप्र तेरोतरी विचक्षण । —ढो. मा.

४ पडित, कवि ।

५ निपुण, योग्य, काबिल ।

६ अद्भुत, अपूर्व, विचित्र ।

उ०—उत्तम कुलनी ऊपनी, मयरण तणउ अवतार । वली **बिचक्षण** परिण घणा, भरिया धन भंडार । —मा. कां. प्र.

७ पुरुष के बत्तीस लक्षणों मे से तेरहवा शुभ लक्षण ।

रू. भे.—बिचच्छण, वचखण, वचिक्षण, विग्रखण, विग्रक्खरिण, विग्रक्खण, विचक्खण, विचखिण, विचखण, विचखणी, बिचख्खण, विचख्यण, विचच्छण, विचछन, बिच्चखण ।

विचक्षणतांडव—सं. पु.—एक आचार्य जो गर्दभी मुख शांडिल्यायन का शिष्य व शाकदास भाडितायन का गुरु था।

विचक्षणता—स. स्त्री. [सं. विचक्षण+ता प्र.] १ निपुणता, दक्षता, चतुराई, विद्वत्ता।

२ विचित्रता, अद्‌भुतता।

विचक्षणा—सं स्त्री.—१ कुभा नामक ओषधि, नागदती।

२ चतुर स्त्री।

उ०—चोसठ कला विचक्षणा, रूप गुणे करी रभा रे। देवगुरु धरम दी पावती, व्रतधारी द्रढवभा रे। —वृस्त.

विचक्षिण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे)

उ०—पटकूळ पट्टणी, देस भोगी घुर दक्षिण। कुंजर कदळी खंड, विपरीत नीति विचक्षिण। —डो. मा.

विचक्नु—स. पु—एक राजा, जो 'यज्ञकर्म में अहिंसाव्रत का पालन करना चाहिए' इस तत्व का प्रतिपादन कर इसी मत पर 'विचरव्नु गीता' की रचना की जो भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को सुनाई गई थी।

रू. भे.—विचख्नु।

विदक्षुर—सं. पु—वसिष्ठकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

विचखण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे) (अ. मा, ह. नां मा.)

विचखणी—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

विचख्खण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

उ०—१ वसहंतरि घड पात विचख्खण, वीर कळोधर मरथ विचार। सिगळौ सुजस लियौ राइ सीघळ, खट द्रन कीया······खगार।

—खगार रायपाळोत रौ गीत

उ०—२ बुद्धिवत बळवत राज, सनमान विचख्खण। भोग जोग गुर भगत, माग परमाण मुजायण। —रा सा. स.

विचख्नु—देखो 'विचक्नु' (रू. भे.)

विचख्यण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)

विचड़ण—देखो 'बिछुड़ण' (रू. भे.)

उ०—मिळण भलौ विचड़ण बुरो, मिळ बिचडौ मत कोय।

—अग्यात

विचड़णौ, विचड़बौ—देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे.)

विचड़णहार, हारौ (हारी), विचड़णियौ—वि०।

विचड़ियोड़ौ, विचड़ियोड़ौ, विचड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

विचड़ीजणौ, विचड़ीजबौ—भाव वा०।

विचड़ियोड़ौ—देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विचड़ियोड़ी)

विचच्छण, विचच्छन, विचच्छणी, विचछन—देखो 'विचक्षण' (रू. भे)

उ०—१ वरणी उपमा मार, विचारि विचच्छणी। लिया सही अवतार, बतीसा लच्छणा। —बा. दा.

उ०—२ अब कवरी रैं पत्री मिळली लग्न री लड़ी जीव री जड़ी सजीली फबीली लजीली छबीली रमकीली लंकीली कमककीली छकीली लटकीली चकीली चटकीली बतीस लछणी चौसट कला विचछणी केल रस क्यारी प्राणप्यारी जिणसूं सांहरौ निज नेह उरस भात राखजे देह। —र. हमीर

विचत्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—१ खग झपट वे थपट छट खल खट, विकट अविघट विढै रिणिवट। पड़ै घट कटि उलट पालट गरट समरट पहट, गाहट विचत्र खड खट तणा दहवट। —ल. पिं.

उ०—२ अप मोराय 'पाल' घडी कनरै, पतसा हिय फौज सिवांण परै। रवदां वळ लूटत गाम रटै, विचत्रां दळ घेल लाख बटै।

—पा. प्र.

उ०—३ केसरी सिंघ राव 'मालदे' कळोधर, चाड्यां गुर सदा लग वडां चेळौ। विचत्र साह आलमी जालमी विजुळा,मरण मिळियै कियौ ताळ-मेळौ। —माधौदास गाडण

उ०—४ विचत्रां देखेय सोच विराम, तरां हिक रावत बोल्यौ तांम। उबारण राका चीत उदार, बसै अौ वीरम जूह विहार।

—गो. रू.

उ०—५ मच्छर और न संग्रहे, या मछरीका भाद। अड़े कमधां अगळी, विचत्रां हूता वाद। —रा. रू.

विचत्रांण—देखो 'विचित्र' (मह, रू भे)

उ०—१ नधिया कराग खग वाहतै, रूक जाग चतुरंगिणी। विचत्रांण जुवाणां वज्जियौ, इद्रमाण पहलै अणी। —रा. रू.

उ०—२ जुध जोप पति जोधांण, तड भाज भड विचत्रांण। पाधारियौ सिघ पाय, 'अभसाह' धाम अकाय। — रा. रू.

विचबिबभू—स. पु—चाद, चन्द्रमा। (नां. मा.)

विचमां—देखो 'बीच' (रू भे)

विचरण—स पु—१ पैर, चरण। (अ. मा)

स स्त्री.—२ चलने की क्रिया या भाव।

३ पर्यटन करने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—विचरन।

विचरणौ, विचरबौ—क्रि. अ.—१ व्यापक होना।

उ० —१ हम से सरव मो व्यापक, मो मै सरव विचरता। जो देखू सो दीसत मुझ मैं, हूं सरव ब्रह्म सरवगता।

—स्रीहररामजी महाराज

उ०—२ देवी जग्त करतार भरता संहरता, देवी चराचर जग्ग सब में विचरता। देवी चार धांम स्थल ग्रस्ट साठै। देवी पावियै एकसो पीठ ग्राठै। —देवि.

२ गमन करना, घूमना।

उ०—मरजीवा होय जग मैं विचरूं, स्वाल करूं नहिं कीना। जिनकी कळा सकळ में बरतै, सो साहूब हम लीना।

—स्रीहरिरामजी महाराज

३ गुजरना, गमन करना, जाना।

उ०—तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति ग्रतरा माहै पातसाह महमद मुसतफाखान रा चार दूत विचरिग्रा हूंता त्या हकीकत राजान रा पातसाह ग्रागै पोहचाई। —रा. सा. सः

४ ग्रवलोकन करना, देखना।

उ०—माईत तौ पाछा ग्रापरै मसोबां मे रुंधग्या ग्रर टाबर ग्रापरी ग्रबूभ बाळ-प्रीत में तारा रै सागै विचरतां विचरता वांनै ऊंघ ग्रायगी। —फुलवाडी

५ जैन साधुग्रों का भिक्षा मागने हेतु जाना।

उ०—'राजग्रही' नगरी हो ग्रति रलियामणी 'गुणसिल' नांमै बाग जिणेसर। 'विचरता' वीर जिणद समोसरया, भव जीवा रै भाग जिणेसर। —जयवाणी

विचरणहार, हारौ (हारी), विचरणियौ—वि०।

विचरिग्रोड़ौ, विचरियोडौ, विचरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विचरीजणौ, विचरीजबौ—भाव वा०।

विचरवणौ, विचरवबौ, विछरणौ, विछरबौ—रू० भे०।

विचरन—देखो 'विचरण' (रू. भे.)

विचरवणौ, विचरवबौ—देखो 'विचरणौ, विचरबौ' (रू. भे.)

उ०—मन तूं सुकमाल सगान, मत कहिजौ संजम बात। इणि गरुग्रइ संजम भारइ, विचरेवउ खइडां घारइ। —जिनराज सूरि

विचरवियोडौ—देखो 'विचरियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री विचरवियोडी)

विचरियोड़ौ—भू का. कृ.—१ व्यापक हुवा हुग्रा. २ गमन किया हुग्रा, घुमा हुग्रा. ३ गुजरा हुग्रा, गमन किया हुग्रा, गया हुग्रा ४ ग्रवलोकन किया हुग्रा, देखा हुग्रा. ५ जैन साघु का भिक्षा मांगने हेतु गया हुग्रा.

(स्त्री विचरियोडी)

विचळ, विचल—वि. [सं. विचल] १ जो स्थिर न हो, ग्रस्थिर, डिगा हुग्रा।

२ प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुग्रा।

विचळको—क्रि. वि.—बीच मे।

उ०—तेल विचळकै माय रह्यौ, लूम्यां री डोरी। मणदल फूल्हर खाय, वारी ऐ लूम्यां री डोरी। —लो. गी.

विचळणौ, विचळबौ—क्रि. ग्र.—१ विचलित होना।

२ पदच्युत होना।

३ हिम्मत हारना, निरुत्साह होना।

४ कहकर इन्कार होना, मुकरना।

५ प्रतिज्ञा या संकल्प से विमुख होना।

६ विकृत होना, खराब होना।

७ तितर-बितर होना, बिखरना, भाग जाना।

उ०—१ तेथि कछवाहो भोपत राजा भारमल रो दीकरो काम ग्रायो। मिरजै इब्राहम री फोज बिचळी। पीण मिरजै रै तरगसबंधै कहियो पातिसाह थोड़ै साथ सेती छै। ग्राग्रो जिम मारिल्यां।

—द वि.

उ०—२ लोक सारो गोळा सु फूट गयो। सो साकडै घेर में लागो। सो एकै-एकै सुं दोय-दोय तीन-तीन फूट गया। बांण लागा, सो घोडा ग्रादमी फूट गया फोज विचळ गई। पग छूट गया। सो भाजता रै पूठै लोक लागो। —कूंवरसी सांखला री वारता

८ ग्रस्थिर होना, डिगना।

९ घबराना, भयभीत होना।

उ०—१ इयै समइयैं हमाऊ पातिसाह काबिल हुंता ग्रायो। ग्रापस मैं ममरेजसाह री फोज हुता वेढि हुई। फोज भागी। पठाण विचळिया। पजाब ली। हमाऊं पातिसाह सीहनद ग्रायो।

—द. वि.

उ०—२ वासा पठांणैं चप की तीरा री। ताहरा मुगळैं विचळतैं ही ज मार की। तितरै बीजी फोज मुगळा री पठाणा ग्राडी ग्राई।

—द. वि.

उ०—३ इतरै माही मारवाड री धरती मे कहत पडियौ लोग सारो विचळियौ। —नापै सांखलै री वारता

उ०—४ ताहरा कोटवाळ पूछियौ—ग्रहोकर मोटियार, कासूं कहै छै? ताहरा कुवर कह्यौ—बेटो तो इया रो ही छू। तितरै साह कह्यौ—रै कपूत, कास कहै छै, कै रो बेटो छै? ताहरा फेर कह्यौ—थाहरो बेटो छूं। ताहरा कोटवाळ कह्यौ—रै मोटियार, यूं विचळियो क्यू बोलै छै। —पलक दरियाव री बात

विचळणहार हारौ (हारी), विचळणियौ—वि०।

विचळिग्रोडौ. विचळियोडौ, विचळयोडौ—भू० का० कृ०।

विचळीजणौ, विचळीजबौ—भाव वा०।

विचळणौ, विचळबौ, विचलणौ, विचलबौ, विचळाणौ, विचळाबौ, विचलाणौ विचलाबौ, विचळावणौ, विचळावबौ, विचलावणौ, विचलावबौ, विछळणौ, विछळबौ रू० भे०।

विचलणो, विचलबो—देखो 'विचळणो, विचळबो' (रू. भे.)

उ०—हुकम कीयो हल्ला करी रे, विचल्यो साह वजन्न । जुम्हार जाह झालियो रे, कपटइ राग रतन्न । —प. च. चौ.

विचलणहार, हारो (हारी), विचलणियो—वि० ।

विचलियोड़ो, विचलियोड़ो, विचल्योड़ो—भू० का० कृ०

विचलीजणो विचलीजबो—भाव वा० ।

विचळता, विचलता—स स्त्री.—१ चचलता ।

२ अस्थिरता ।

३ घबराहट ।

४ भयभीत होने की अवस्था या भाव ।

विचलाड़णो, विचलाड़बो—देखो 'विचलाणो, विचलाबो' (रू. भे)

विचलाड़णहार, हारो (हारी), विचलाडणियो - वि० ।

विचलाड़ियोड़ो, विचलाड़ियोड़ो, विचलाड़्योडो—भू० का० कृ० ।

विचलाड़ीजणो, विचलाड़ीजबो—कर्म वा०/भाव वा० ।

विचलाडियोड़ो—देखो 'विचलायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विचलाडियोडी)

विचळाणो, विचळाबो—१ देखो 'विचलाणो, विचलाबो' (रू. भे.)

उ०—घननाद करै घमसाण घणो, विचळाय दियो दळ राम तणो । हनुमत निसाचर नाम किया, खल-व्रद खपावण मे मुखिया । —गी. रा.

२ देखो 'विचळणो, विचळबो' (रू. भे)

विचळाणहार, हारो (हारी), विचळाणियो—वि० ।

विचळायोड़ो—भू० का० कृ० ।

विचळाईजणो, विचळाईजबो—कर्म/भाव वा० ।

•विचलाणो, विचलाबो–क्रि. स.—१ विचलित करना ।

२ भयभीत करना ।

३ तितर बितर करना बिखेरना ।

४ देखो 'विचळणो, विचळबो' (रू भे.)

उ०—१ धनु-भजन रो रव घोर घणो, विचलायो है मह ब्रह्माड तणो । हरि-नाभिय सू विधि जाय ढल्यो, रथ सूरज रो तज राह चल्यो । गी रा.

उ०—२ अबरीस सुध्यायो, तज अपणायो, भजन सवायो, मन भायो । दुरवासा आयो, भाय डरायो, चक्र चलायो, विचळायो । —भगतमाळ

उ०—३ भींव कल्याणदासोत लोहा पड़तै उपडियो फौज विचळाई । —गोपालदास गौड़ री वारता

विचलाणहार, हारो, (हारी), विचलाणियो—वि० ।

विचलायोड़ो—भू० का० कृ० ।

विचलाईजणो, विचलाईजबो—कर्म/भाव वा० ।

विचलाणो, विचलाबो, विचलावणो, विचलावबो, विचळाणो, विचळाबो, विचलावणो, विचलावबो—रू० भे० ।

विचळायोड़ो—१ देखो 'विचलायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'विचळियोडो' (रू भे)

(स्त्री विचळायोडी)

विचलायोडो–भू. का कृ.—१ विचलित किया हुआ. २ भयभीत किया हुआ ३ तितर-बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ ।

४ देखो 'विचळियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विचलायोडी)

विचळावणो, विचळावबो—१ टकराना, आपस मे भिडना (बर्तन) ।

उ०—कर करहू भाडा सासण किचळावै, बाजै भूभाडा बासण विचळावै । चमकंता डागळ गोडा चिक चिकता, जतू जळ रिकता सिकता मे सिकता । —ऊ. का. ।

२ ध्वनि करना ।

३ बीच मे आना ।

४ देखो 'विचलाणो, विचलाबो' (रू. भे.)

५ देखो विचळणो, विचळबो' (रू भे)

विचळावणहार, हारो (हारी), विचळावणियो—वि० ।

विचळाविओडो, विचळावियोडो, विचळाव्योडो भू० का० कृ० ।

विचळावीजणो, विचळावीजबो—कर्म/भाव वा० ।

विचलावणो विचळावबो—रू० भे० ।

विचलावणो, विचलावबो—१ देखो 'विचलाणो, विचलाबो (रू भे.)

२ देखो 'विचळावणो, विचळावबो (रू. भे)

३ देखो 'विचळणो, विचळबो (रू भे.)

विचलावणहार, हारो (हारी), विचलावणियो—वि० ।

विचलाविओड़ो, विचलावियोड़ो, विचलाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विचलावीजणो विचलावीजबो—कर्म भाव वा० ।

विचळावियोड़ो–भू. का कृ—१ आपस मे टकराया हुआ २ ध्वनि किया हुआ ३ बीच मे आया हुआ ।

४ देखो 'विचळायोडो' (रू भे.)

५ देखो 'विचळियोडो' (रू भे)

(स्त्री विचळावियोडी)

विचलावियोड़ो—१देखो 'विचलायोडो' (रू भे)

२ देखो 'विचळावियोडो' (रू. भे)

३ देखो 'विचळियोडो' (रू भे)

(स्त्री. विचलावियोडी)

विचळित, विचलित–वि. [स विचलित] १ घबराया हुआ, भयभीत।

२ पदच्युत।

३ हिम्मत हारा हुआ, निरुत्साह।

४ कहकर इन्कार हुवा हुआ।

५ खराब हुवा हुआ, विकृत।

६ तितर-बितर हुवा हुआ, बिखरा हुआ।

७ अस्थिर, डिगा हुआ, चंचल।

८ प्रतिज्ञा या सकल्प से विमुख।

विचळियोड़ौ–भू. का. कृ—१ विचलित हुवा हुआ २ पदच्युत हुवा हुआ. ३ हिम्मत हारा हुआ, निरुत्साह हुवा हुआ. ४ कह कर इन्कार हुवा हुआ, मुकरा हुआ. ५ प्रतिज्ञा या संकल्प मे विमुख हुवा हुआ. ६ विकृत हुवा हुआ, खराब हुवा हुआ. ७ तितर-बितर हुवा हुआ, बिखरा हुआ. ८ अस्थिर हुवा हुआ, डिगा हुआ. ९ घबराया हुआ, भयभीत हुवा हुआ.

(स्त्री विचळियोड़ी)

विचलियोड़ौ—देखो 'विचळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विचलियोड़ी)

विचलौ–वि. (स्त्री विचली) मध्य का, बीच का।

उ०—कितरेक भण इण खदकै, उतारी हो काचर तणी खोल। विचलौ गिर काढी लियो, सरायो हो घणी करी किलोल।

—जयवांणी

उ०—२ ओळंग थारै विचलै वीरै ने भेज, वारी धण वारी श्रो हजा, चतर चोमासै, श्रो राजन, घर वसो जी, म्हारा राज। विच नै वीरै के गोद भडला री जात, वारी धण वारी श्रो हजा, गठजोड़ै मे श्रो जात उतारसी जी, म्हारा राज। —लो. गी.

उ०—३ हाली हाली मोल्या विचली लाल, कोर्ड, काना केरा हाल्या वाळी-भूरणा, श्रै मोरी सइया। हाल्या हाल्या छानी पल्ला-हार, कोई, पायलडी तौ खुडकी विछिया वाजिया, श्रै मोरी सइया।

—लो. गी.

उ०—४ विचली वात छै—देवडै विजै सूजा नै मारनै सूजा री वमी ऊपर साथ मेलियो, उठै मालो सूजा रो मरायो, वसी सारी लूटी। —नैणसी

विचलौ-वासौ—देखो 'विचलौ-वासौ' (रू. भे)

उ० —भेला मिली सजन नै वाल्या, सोडी माय जोडी रै। विचलौ-वासौ विचमै लैरायो, गावड हुवै छै दोरी रै। —जयवाणी

विचवला, विचवल्ला–म. स्त्री —मध्यस्थता।

उ०—वीरम तौ जोईया विचै, भ्यामै रिणमल्ला, सावज जाणी साकडै घड कूंजर घला। पला विद्याता पालता-दिन कढता 'दला', वे दला श्रलगा रहा, करता विचवल्ला। —वी. मा.

विचवाळौ–वि.—बीच बचाव करने वाला।

उ०—इतै विचवाळौ सूर अपाल, मिणधर आयो रावळ माल। सतोखै वातां वागा साथ, जुदा दळ कीधा वेहूं जाय। —गो. रू.

२ बीच का, मध्य का, मध्यस्थ।

सं. पु —मध्यस्थता।

उ० —तरै भाटो कल्याणदासजी कयो थे महाराज रा कांमदार छौ नै भडारी रूपचदजी रा बेटा छौ सो मेडतियो बदळै थांनु कोइ मारा नही। इतरै धाधळ गोयदासजी आयनै कयो भडारी रतन चदजी विचवाळौ करै छै ने खोजी री निसाणा छै तरै भाटिया नै लोथ मगाय दीनी। —रा. ब. वि.

विचा—देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—'सेर' रा करारा वचन 'कुसलौ' सुणै, अबनीमो 'पाल' वीरदां उजाळौ। वादळां दळा नागोरा वीचा सु, अरक जोऊ भळकियो 'हरा' वाळौ।

—सेरसिंघ मेडतिया और कुसळसिंघ चांपावत री गीत

विचार–स. पु. [सं. विचार] १ किसी बात या विषय पर कुछ विचार विमर्श करने, सोचने या सोच कर निश्चित करने की क्रिया या भाव।

उ०—१ पिंडत वेद पुरान कं, वाचै करै विचार। 'हरीया' औरां अकलि द्यै, आप न सुधि बुधि सार। —अनुभववाणी

उ०—२ राजां विचार करण लागो—आज धनतेरस है अर कालै रूपचवदस। आ मूनम (असाढ सुद नम) गई तौ उणनै परणियां नै पूरा तीन बरस व्हिया अर चौथो बरस लागग्यो।—अमरचूंनड़ी

उ०—३ गाम वाळा मिळनै विचार कियो—मास्टर परदेसी पछी—आपणै गाम मे आयो है, कुण तौ इणरै पीसैला अर कुण इणरै पोवैला। —अमरचूंनड़ी

२ मन मे उठने वाली भावना, ख्याल, इरादा।

उ० सावण जळहर गाज सुण, खीजै उर घर खार। जग सूं उलटा जाणणा, वाधा तणा विचार। —बां. दा.

मुहा.—विचार मे पडणौ=चिन्ता मे पडना, चिन्तायुक्त होना।

३ किसी मुकदमे की सुनवाई करने की क्रिया या सुनाई करने के बाद किया जाने वाला फैसला या निर्णय।

४ विचरने, घूमने व फिरने की क्रिया या भाव।

५ ज्ञान।

उ०—१ वहि वहि मूवा मानवी, करि करि लोकाचार। भेद न पायो भगति को, हरीया विना विचार। —अनुभववाणी

उ०—२ मन ते ऊच न नीच गिन, तन तै लोकाचार। हरीया तन मन मिट गई, पाया ब्रम विचार। —अनुभववाणी

६ ध्यान देने की क्रिया या भाव, अमल करने की क्रिया या भाव।

उ०—मनीजौ उण नै समझाई—इण मे आप री कौ चूक कोनीं।

भोळप मं कीं भूल ई व्है जावै तौ भगवान इण माथै कीं **बिचार** नीं करै। —फुलवाडी

७ निर्माण बनावट, रचना।

उ०—............राज लोक सिणगार। घ्यारै प्रस्तावं चतुर, वणियौ भलौ **बिचार**। —रा. सा. सं.

८ निर्णय, फैसला।

९ निश्चय, सकल्प।

उ०—जनवासा मे सुख सुविधा रौ पूरौ इतजाम हो। म्हैं स्नान ध्यान सूं निपटनै कपडा पलटिया अर थोडी ताळ आराम करण रौ **बिचार** कियौ। कारण कै लगन गोधूळिक हो अर उण वखत उठै म्हनै हाजर रैवणौ हो। —अमरचूनडी

१० सन्देह, शका, हिचकिचाहट।

रू भे.—बिचार, बिचारि, बीचार, वचार, विचारु, विचारौ, विच्चार।

बिचारक–वि. [स. विचारक] १ विचार करने वाला।

२ विचरने वाला, घूमने वाला।

३ ध्यान देने वाला, अमल करने वाला।

उ०–कळा तिमगळ किता, वरण गुण दोस **बिचारक**। पवं सिखर इम गुपत, किता गुण औगुण कारक। —रा. रू.

४ निर्माण करने वाला, रचनाकर्त्ता।

५ निर्णय या फैसला करने वाला, न्यायकर्त्ता।

६ बुद्धिमान, विद्वान।

७ निश्चय या सकल्प करने वाला।

८ शका या हिचकिचाहट करने वाला, सन्देहकर्त्ता।

बिचारकरता–वि. [स. विचारकर्त्ता] १ वह जो विचार करता हो, सोचने-विचारने वाला।

२ न्यायालय मे न्याय करने वाला, न्यायाधीश।

बिचारग्य–वि. [स विचारज्ञ] १ जो विचार करने मे निपुण हो।

२ अभियोग आदि की सुनवाई कर निपटारा करने वाला।

बिचारचतुर–वि.—जो विचार करने मे निपुण हो, बुद्धिमान।

उ०—१ प्रजानइ सुखकारीउ, माइ पिता समान। **बिचारचतुर** डाहु भलु ए, दिइ यथोचित दान। —नळदवदती रास

उ०—२ **बिचारचतुर** डाहा भला, डाहा गुणवत रे। भवितव्यता तेहनइ नडइ, जं हुइ बलवत। —नळदवदती रास

बिचारणीय–वि. [स] जो विचार करने योग्य हो।

बिचारणौ, बिचारबौ–क्रि. स.—१ किसी बात या विषय पर कुछ विचार-विमर्श करना, सोचना या सोचकर निश्चित करना।

उ०—१ हियै होळी हुयै दीध दुख हजारां, **बिचारै** नित मुख सूं वाखाणै। सूरपण "जसा" महराज रौ जगत सिर, जिसौ है तिसौ अवरग जाणै। —नरहरदास बारहठ

उ०—२ वीर महाबळ धीर उर, सूरम मूरत धार। भावी आदर ऊठियौ, भावी सीस **बिचार**। —रा. रू.

उ०—३ खारी मे सोगरा अर राब घरनै वौ हाळियां सारू भातौ ले जावण नै त्यार व्हियौ उण वगत दूजोडौ कुत्तौ खारी मे मूडौ मारण सारू जुगत **बिचारण** लागौ। —फुलवाड़ी

उ०—४ ठकराणी तो आ इज चावती ही। ठाकर नै वत्ता खरा-वण सारू वळै पूछ्यौ—कौल दोरौ है, राज सूं निभैला नीं। पछै पलटणा बिचै अबारू पाछौ **बिचार** कर लिरावौ।

—फुलवाड़ी

२ किसी मुकदमे की सुनवाई करना या सुनवाई करने के बाद फैसला या निर्णय करना।

३ समझना, सोचना-समझना।

उ०—१ अकबर अगम अगाध गह, तै रहिया अजतन्न। वाचै त्यूं ही **बिचारियौ**, कमधै साचै मन्न। —रा. रू.

उ०—२ चिहु पखि दल माडी काइ हो राउ आडी, हरखि हसीय नारी बोल बोलइ **बिचारी**। —सालिसूरि

४ ध्यान देना, अमल करना।

उ०—१ आतम भाई जीव सब, एक पेट परिवार। दादू मूळ **बिचारियै**, तौ दूजा कौन गवार। —दादूवाणी

उ०—२ थें तो म्हारै दुख री परवा नी करो, पण म्हनै तो थारो भलो-भूडो विचारणो ई पडै। म्हारो कैणो मानो, गगाजी पाळा मत जावो, नामो बळदा री कोई गाडी भाडै करलो। —फुलवाडी

उ०—३ औरगगा पातसाह आलम कूं चितारै, अकबर कै आस की चिंता ना **बिचारै**। साह अवरग कै पास या समै आवै, सो तो मनसब रीझ इनाम मनवछ्या पावै। —रा रू.

५ निर्माण करना, रचना करना।

६ निश्चय करना, सकल्प करना।

उ०—१ फजल सेख खुनती फज्जर, असुर घसै लागो अति आतुर। अस न खडै रिणछोड उताळो, चूरण खळा **बिचारै** चाळो।

—रा. रू.

उ०—२ थापना मन माहि बिचारी, साघ रहै याकै पूजारी। अपणै पूजा कछुव न आवै, साध पथ कै गुरू कहावै।

—मेहोजी गोदारो थापन

७ सन्देह करना, शका करना।

उ०—राउ भणइ नइ किमउ पचारउ, हिव तुम्हि मइ सु परि

पाउधारी। राजु तुम्हारउं पूत्तू तुम्हारउ, अजीउ गंगै किसुं विचारउ
—सालिभद्र सूरि

८ चिन्तन करना, मनन करना।

उ०—जळ थळ महीयल पेखतां, संसार सुधारै, ब्रह्मग्यांनी सो वडा, जो ब्रह्म विचारै। कुदरती किरतार की करणी बळिहारै, रिजक पांणी हुयात मोत, उस ग्रला सारै। —केसोदास गाडण

९ अनुसन्धान करना, खोज करना।

उ०—सतगुर का सिख जांणि, विचारै ग्यांन कूं। तन मन सौंपै सीस, धरै उर ध्यांन कूं —अनुभववांणी

१० सोचना।

उ०—१ हमैं कवरसी मोहला मे गयौ। सो मन न लागै, रात दिन भरमल मैं जीव वसै। तद वीठू रावजी नु कही, जो सावण री तीज रौ कोल कर आयौ छुं, सो उठै गयौ रहसी। जिणसु जतन विचारणौ हुवै सु विचारौ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ हु पण जाणूं छूं जो बीजो तौ मैं सु पोहचा नाया। तद ग्रो घाट विचारीयो छै, जो ग्राधी छोहरी घर सु काढसा, उण नूं मारसा। सो हु सरब जाणू छू।—कुंवरसी सांखला री वारता।

विचारणहार, हारौ (हारी), विचारणियौ—वि०।

विचारिग्रोड़ौ, विचारियोड़ौ, विचारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विचारीजणौ, विचारीजबौ—कर्म वा०।

विचारणौ, बिचारबौ, बीचारणौ, बीचारबौ, वचारणौ, वचारबौ
—रू० भे०

विचारमांन, विचारवांन—वि० [सं विचारवान्] जिसमे सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति हो।

रू. भे.—बिचारमांन, बिचारवांन।

विचारसकति, विचारसकती, विचारसक्ति, विचारसगति, विचारसगती—सं. स्त्री. [सं. विचारशक्ति] भला-बुरा पहचानने व सोचने-विचारने की शक्ति, बुद्धि।

विचारसासतर, विचारसास्त्र—सं. पु [सं. विचारशास्त्र] मीमांसा शास्त्र या मीमांसा दर्शन।

विचारसील—वि [सं विचारशील] जिसमें सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति हो, विचारवान।

विचारसीलता—सं. स्त्री [सं. विचारशील+ता प्र.] विचारशील या विचारवान् होने का भाव, बुद्धिमता, अक्लमंदी।

विचारस्थळ—सं. पु. [सं. विचारस्थल] १ वह स्थान जहां किसी विषय पर विचार किया जा रहा हो।

२ न्यायालय।

विचाराध्यक्ष—सं. पु. [सं. विचारः+अध्यक्ष] १ वह प्रमुख व्यक्ति जो किसी विषय पर विचार करता हो।

२ न्यायालय में किसी विषय पर विचार करने वाला प्रमुख व्यक्ति, न्यायाधीश।

विचारालय—सं. पु. [सं. विचारः+आलय] १ विचार किया जाने वाला स्थान।

२ न्यायालय।

(मि.—'विचारस्थळ'।)

विचारि—देखो 'विचार' (रू. भे.)

उ०—१ निसुणि नारि विचारि ठा पयसियइ, प्रीय तणी तडि कडतिणि बयसियइ, सिरि पडिइं भड नइ घड धाउतइ, सुहड कोडि हणी नुझ राउतिइं। —सालिसूरि

उ०—२ पहिउलउ बेटउ करमदोसि बालपणि विवनउ, विचित्र-वीरयु बीजउ कुमारु बहुगुणसपन्नउ। राउ पहूतउ सरगलोकि गंगेयकुमारि, नउ लघु बधक ठविउ पाटि तिणि वयण विचारि।
—सालिभद्र सूरि

विचारिका—सं स्त्री —दासी, नौकरानी।

विचारित—वि —१ जिस पर विचार किया जा चुका हो।

२ जो अभी विचाराधीन हो।

विचारियोड़ौ—भू का कृ —१ किसी बात या विषय पर कुछ विचार विमर्श किया हुआ, सोचा हुआ या सोच कर निश्चित किया हुआ. २ किसी मुकदमे की सुनवाई किया हुआ या सुनवाई करने के बाद फसला या निर्णय किया हुआ. ३ समझा हुआ. ४ ध्यान दिया हुआ, अमल किया हुआ. ५ निर्माण किया हुआ, रचना किया हुआ. ६ निश्चय किया हुआ, सकल्प किया हुआ. ७ सन्देह किया हुआ, शंका किया हुआ. ८ अनुसन्धान किया हुआ, खोज किया हुआ ९ सोचा हुआ. १० चिन्तन किया हुआ, मनन किया हुआ.

(स्त्री विचारियोड़ी)

विचारी—सं पु [सं विचारिन्] १ कबंध राक्षस का एक पुत्र।

सं. स्त्री.—२ जिस पर चलने के लिए बडे बड़े मार्ग बने हो, पृथ्वी।

३ देखो 'बेचारौ' (पु०)

विचारु—सं. पु. [सं] १ श्री कृष्ण और रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न दस पुत्रो मे से एक वासुदेव का पौत्र।

२ देखो 'विचार' (रू. भे.)

उ०—पांचइ गाईय सुर सुरलोकि सुरवाट सिरु धूणाविया ए, महीयलं महिलीय करइ विचारु 'कवणु कीउ तपु द्रूपदिय'।
—सालिभद्र सूरि

बिचारी—१ देखो 'बेचारी' (रू. भे.)

उ०—१ नैनवा की चूक कन्हईया, मन बिचारो पाय रह्यौ दुख। रमीलाराज करै सो पावै, रे यौ तो अनोखौ न्याव कन्हईया। —रसीलै राज रा गीत

उ०—२ ऊबरै वचनां हीण टाळो देर हुवौ आघौ, साघो सारो मेलगो दग्गांम ह्वेकै साथ। सोढी काज लपेटो भालाळै सताबी सूप्यो, बिचारी सु'रद्रां लोक बणी आ विख्यात।—बादरदान दघवाड़ियौ

उ०—३ हरीया पीर परापती, तन तै दई लगाय। वेद बिचारा क्या करै, बिन भुगत्या नहीं जाय। —अनुभववाणी

(स्त्री. बिचारी)

बिचाळ, बिचाल, बिचाळा, बिचाळि, बिचाळी, बिचाळ॰, बिचाळै, बिचाळं—देखो 'बिचै' (रू. भे.)

उ०—१ चक्री बिचाळ, रघुवर बिसाळ, जपै जरूर, सुण भरथ सूर। हणमंत एह, इण गुण अछेह, सेवा सुमेव किनी कपेस। —र. रू

उ०—२ बीजो निग्रह जुध जितू कोप करि नाखै, 'बीदा' मांस अरि घड़ा बिचाळ। दळ पुड तेण आकर्पै आहस, पनग कघ रहै पायाळ। —गेहो मीसण

उ०—३ साथी छाडि गयौ'सुजा' सुत,तिसियौ लोह तरणि रिणताळ। दामणि चमकि भमकितै दुजडै, वणीयौ गूजर घडा बिचाळ। —खेतसी गाडण

उ०—४ चोथो प्रस्न रसाल रे, सुण 'केमी' स्वांमी, भरी परिसदा बिचाल रे। —जयवाणी

उ०—५ परम्है गया पाघग रे सांभल्यत जेथ सुकाल। माणस सबल विण मूग्रा रे, मारग माहि बिचाल। —म कु

उ०—६ दावानल बलतो झलहल नीकले झाल, बहु व्रख सघन वन बलै पसु पखी बाल। किण हीक कारण नर आयो अग्नि बिचाल, जिण नाम जलै अगि ओल्हायै तत्काल। —ध. व ग्र

उ०—७ पतिसाह फउज फूटंति पाळि, ब्रहमंड 'जउन' गाजइ बिचाळि। अंबहर जइत वरसइ अवार, घुड़ किया मोर मुहि खग धार। —रा. ज. सी.

उ०—८ भागा सूर न भजई, भागा गुर नै गाळि। इणीया एकल-मलड़ो, दोउ दळा बिचाळि। —अनुभववाणी

उ०—९ मछा मतै गुमान करि. तम ही जळ का जीव। तम ऊगण हम आथवण, इती बिचाळी पीव। —अनुभववाणी

उ०—१० रिळिया रिणताळां, कट किरमाळा, सीस भुजाळा सूंडाळां, चाले रत खाळा, तेण बिचाळां, पखरियाळा पोखतू। —भगतमाळ

उ०—१० पदमणी दिलीवर होण प्रीत, साजादा जूटै रण सरीत। सूरमा लड़ै चवड़ै सभाळ, वेगमा घसै पड़दा बिचाळ। —बि. सं.

उ०—१२ 'मद्' ऊपर 'माघड़ै' बळ, मूछा वाळो, 'बीरम' आगळ बीरवर समसेर सभाळी। ऐकण घाव ऊडाड़ियो, अजड़ त्रिहूँताळी, 'मद्' पोढै मारको, रिणखेत बिचाळी। —वी मा.

उ०—१३ अति घण कोघ दुहू दळ आणै, जूटा खगा डडेहड़ जाणै। घण खग गजरि जाण घड़ियाळा, वागी फजर कनोज बिचाळां। —सू. प्र.

उ०—१४ तो 'केहर' कहिजै सताब, वाइक विगताळा। कूदि पड़ा गज कटहड़ां, चढि गोख बिचाळा। —सू. प्र.

उ०—१५ वात बिचाळै आवियो, आसत खान दिवाण। फिर अजमेर अजीमदी, तिण विच दयौ कुराण। —रा रू.

उ०—१६ भूम 'वहतो' को जण भाळै, वाडवाग निभ्र समद बिचाळै। कमघ खड़ा आगै दस कोमा, दाखै कथ निरदोमा दोमा। —रा. रू.

उ०—१७ हरीया नीकी ना डक, बदी खरी डराय। दोय बिचाळै जोवडो, करणी काय न आय। —अनुभववाणी

उ०—१८ तद कुवर कही, म्है खरळा परणीया पछै तीज दोय बिचाळै गई। जितरै मारो साथ आग पूहतो। तद फुरमावण लागा, म्हा खरळा परणिया पछै आ तीसरी तीज छै। —कूवरसी साखला री वारता

उ०—१९ तै ऊपरि पातिसाह अकबर वासौ कियौ। बि फौजा किया। मिरजै रै वासै आप पातिसाह पधारिहा। मिरजो बिहू फोजा बिचाळा अर पातिसाह रा गोडा होइ नीसरियौ। —द वि.

बिचाळौ—वि—१ मध्यस्थ।

स स्त्री—२ मध्यस्थता।

क्रि. वि॰—बीच मे से।

बिचि—स. स्त्री [स.] १ तरग, लहर।

२ कटि, कमर।

उ०—चपा वरनी, नाक सळ, उर मुचग बिचि हीण। मदिर बोली मारुवी, जाणि भणक्की वीण —ढो. मा.

३ देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—१ करि घड बेहड गरा केविया, हाथू कै गळवाह हिचि। हंस वप हूत विछूटि हालियो, वाटियो सुरा विमांण बिचि।

—तीकमदास खिडियौ।

उ०—उपजै प्रेम मन उलसै, वाला लागै लछिवर। माहरै रिदै बिचि मिंडिया, चरण तुहारा चक्रधर। —पी. ग्रं.

उ०—३ माहुब एक मरद, देव कोई और न दीसै । लाख चौरासी जीव, परम दाढ़ां बिचि पीसै । पी. ग्रं.

उ०—४ तुम मूं बिचि अंतर घणउ, किम करूं तोरी सेव । देव न दीधि पाखडी, पणि दिल मइं तुं इक देव । —स. कु.

उ०—५ निम बस चाढै नूर, करै महाजुध कूमउत । बगडी वणी विराजिग्रौ, सूर सभा बिचि सूर । —र. वचनिका

उ०—६ ऊभी सहु सखिए प्रसखिता प्रति, फिरतारथी श्री मिळण कत । श्रटत सेज द्वार बिचि ग्राहुटि, स्तुति दे हरि घरि समाखित । —वेलि.

रू. भे.—बिचि, बीचि, बिची ।

बिचित, बिचिस–वि. [सं.] १ अचेत, बेहोश ।

२ आनन्द-मग्न ।

उ०—रांम नाम सुख सागर भरीया, चाख्या चित बिचित हुय रहीया । चाखि चाखि मैं भया निहाला, पायु जे कोई पीयैं पीयाला । —अनुभववाणी

३ देखो 'विचत्र' (रू. भे.)

उ०—वाका बिचिस पाधोर वक, तांणइ कमाण पइतौसटक । आयासि पखि पाडइ प्रभुल्ल, माकडामुक्ख मुडा मुगुल्ल । —रा. ज. सी.

बिचित्र–वि. [सं.] १ कई प्रकार के रगो या वर्णों वाला ।

२ अद्भुत, अनोखा, विलक्षण, विस्मयकारक ।

उ०—१ दूत तिहा एक आवियौ, जास वचन सुपवित्र । कर जोडी नृप आगलै, मेल्हौ लेख बिचित्र । —वि. कु.

उ०—२ जिनवर दीधी देसना, बिचित्र प्रकार ना भावो जी । आगार नैं अणगार नो, चतुरा सुण्यो धरि चावो जी ।—जयवाणी

३ सुन्दर, खूबसूरत ।

उ०—१ प्रजंक ग्रोप तें अनोप रूप चूंग पार मे, हुए विछात सूळि लब भूल फूल हार में । अनूप ताक गोख ळीबिचित्र चित्र सूं अटा, घणू उतग अग जाणि लग मेघ चो घटा । —रा. रू.

उ०—२ तठा उपरांति राजान सिलामति तिण राजान कुंमर राजाउत माह ठाकर रै च्यार पटराणी छै । नाम सिणगार सुदरी सोभाग सुदरी, सरूप सुदरी, मदन सुदरी। साख्यात देवागना पदमणी बिचित्र सुलखणी चोसठ कळा री जाणणहार विनैनी करणहार लिखमी पारबती गगा सरसती रो अवतार बारह आभूखन विराजमान हुआ छै । —रा. सा स

४ चतुर, बुद्धिमान, होशियार ।

उ०—मदिरतरि किया खिणतरि, मिळिबा, बिचित्र सखिए समाव्रत । कीधै तिणि बीबाह संतक्रित, करण सु तसु रति संमक्रत । —वेलि.

स. पु.—१ रौच्य मुनि के कई पुत्रों मे से एक पुत्र का नाम । (पुराण)

२ देवसावर्णि मनु के पुत्रो में से एक पुत्र ।

३ महाभारत युद्ध मे कौरव पक्ष का एक राजा, जो क्रोधवश नामक दैत्य के अंश से उत्पन्न हुआ था ।

४ धर्मराज (यम) का एक लेखक ।

५ एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसके द्वारा किसी फल की सिद्धि के लिए किसी प्रकार का उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख किया जाता है ।

६ मुसलमान, यवन ।

उ०—१ सेना सितर हजार सू, बिचित्र अमित्र बळवांन । कियौ विदा रवि पै उदै, मुदै तहव्वरखान । —रा. रू.

उ०—२ इण पर तहवर खांन अछायौ, बिचित्र हुवौ लड़तां रस वायौ । सिर हिंदवाण तणौ रीसायौ, 'ओरंग' पीठ लगे हिज आयौ । —रा. रू.

उ०—३ वात हुई ग्रीखम बौळाई, ऊपर धुर बरखा रुत आई । असतखान उर थयौ अचीतौ, बिचित्रां तणौ सोच सुण बीतौ । —रा. रू.

उ०—४ बिचित्रां आदर दाख बमेक, आपै दोय तेग अनै अस एक ईखै अस सुद्रब चीज अथाळ, 'मालावत' लोभ धरै जगमाल । —गो. रू.

उ०—५ वेमै बिचित्र सिंदूर अग, कूंडी कपाळ के छाज कन । कट्टी करगि वाचइ कुराण, मुसकीण मुलां के मुसळमांण । —रा. ज. सी.

रू भे.–बिचित्र, बचत, बचत्र, विचत्र, विचित, बिचित्त, विचित्रांण, विचित्रायळ, विच्यत्रि ।

बिचित्रता–स. स्त्री. [स. विचित्र+ता, प्र.] विचित्र होने की अवस्था या भाव ।

उ० —मित्रता मिळापी मेळ प्रीति की पवित्रता त्यौं, विविध बिचित्रता विधान वडरन कै । रहन अनोखी रीति सहन स्वभाव सीधौ, कहण सुणण कथा यथा तौर तन कै । —ऊ. का.

रू. भे —बिचित्रता ।

बिचित्रवीरज, बिचित्रवीरय, बिचित्रवीरयु, बिचित्रवीरय्य–स. पु. [स. विचित्रवीर्य] १ चद्रवंशी राजा शातनु का सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र जिसका विवाह काशीराज की राजकुमारियां अंबिका एव अबालिका के साथ हुआ था । (महाभारत)

उ०—१ पहिलउ बेटउ करमदोसि बालप्पणि विवनउ, बिचित्रविरयु बीजउ कुमारु बहुगुणसपन्नउ । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ अंबानदणु बिदुरु नांमु नामि जि सरीखउ, खइ खोणइ पुणु बिचित्रविरयु पहु राजि प्रतीठिउ। —सालिभद्र सूरि

वि. वि.—यह चित्रांगद का कनिष्ठ भ्राता था। चित्रांगद गधर्व युद्ध में मारा गया, इसलिए भीष्म ने इसे राजगद्दी पर बैठाया। भीष्म ने काशीराज की कन्याएँ अंबा, अबिका एवं अबालिका को स्वयंवर में जीत लिया एव उनका विवाह इससे करना चाहा। किन्तु उनमें से अबा ने इससे विवाह करने से इन्कार कर दिया। शेष दोनो राज- कुमारियो अबिका एव अबालिका के साथ इसका विवाह हो गया। असंयमपूर्ण जीवन के कारण, यह राजयक्ष्मा का शिकार हो गया, एव अल्पवय मे ही अनपत्य अवस्था मे इसकी मृत्यु हुई। इसकी मृत्यूपरान्त भीष्म ने अंबिका एव अबालिका को नियोग-पद्धति से सतान उत्पन करने की आज्ञा दी। तदनुसार सत्यवती के कौमार्यावस्थ के पुत्र कृष्णद्वैपायन (व्यास) से अंबिका एव अबालिका के क्रमश: धृतराष्ट्र एवं पाण्डु नामक पुत्र उत्पन्न हुए और अबिका की दासी से विदुर उत्पन्न हुआ। धृतराष्ट्र जन्माध एव पाण्डु का रग पीला था।

२ एक शिव भक्त, जो शिव की उपासना के कारण जीवनमुक्त हुआ था।

३ वीर भद्र नामक एक शिवगण, जिसने दक्षयज्ञ का विध्वसन किया था।

वि. वि.—यह चित्रांगद(गधर्व)का पुत्र था जो पूर्वजन्म मे एक विधवा ब्राह्मणी तथा चांडाल का पुत्र था, पर अनायास शिवरात्रि व्रत के करने से चित्रांगद का पुत्र हुआ। जन्मान्तर मे शिवसायुज्य को प्राप्त हो कर यही शिवगण बीरभद्र हुआ। (यह शातनु के पहले की बात है।)

• **बिचित्रसाळा**—स. स्त्री. [स. विचित्रशाला] जहा अनेक प्रकार के विचित्र पदार्थो का सग्रह हो, अजायबघर।

बिचित्रांण—देखो 'विचित्र' (६) (रू. भे)

उ०—कमधज्ज सकज्जा कारणा, कळा भुजा मारै कवण। बिचित्राण धणी इम विग्रहै, गहियो किर पडतो गयण।

—रा रू

उ०—२ बिचित्रांण नियड धड महण वेळ, मुरधरा हुय नजर मेळ। —रा रू.

बिचित्रा—स. स्त्री.—भैरव राग की एक रागिनी। (सगीत)

बिचित्रायळ—देखो 'विचित्र' (६) (रू. भे)

उ०—कलमी प्रस देवळ दैण कीयू, लोवडी प्रतपाळ यू गावै लियू। बिचित्रायळ लूटत पार वळा, रन माझळ म्है घन वाळ रळा।

—पा. प्र.

बिचित्रित—वि. [स] १ विभिन्न प्रकार के रंगो से अचित्रित, रंग-विरंगा।

२ अनोखा, अद्भुत।

उ०—यह पत्र बिचित्रित चित्र योग्य, आरण्य-रुदन वत भी अयोग्य। प्रिय जाट पुत्रि वत प्रस्नपेस, पितु कति पपीलिका बिल प्रवेस। —ऊ. का.

रू. भे—विचित्रित

बिची—१ देखो 'विचि' (रू भे.)

२ देखो 'बीच' (रू भे)

बिचेत—देखो 'वेचेत' (रू. भे.)

बिचेतन—वि. [स] १ जिसमे चेतना न हो, विवेकहीन, बेहोश।

२ जिसमे जीव न हो, जीवरहित, मृत।

बिचेटियौ—देखो 'बिचेटियौ' (रू. भे.)

बिचेतस—स. पु [स] भव्य देवो मे से एक

बिचेरण—क्रि. वि.—मध्य मे, बीच मे।

उ०—क्या फेरै कर काठ की, मन की माळा फेर। जनहरिया माळा फिरै, विना विचेरण मेर —अनुभववांणी

बिचेस्ट—वि [स. विचेष्ट] जो किसी प्रकार की चेष्टा न करता हो, निश्चेष्ट।

बिचै—देखो 'बिचै' (रू. भे.)

उ०—१ अबखास बिचै बाणास आछटै, कहर 'पदम' घमजगर करि। 'मोहण'-मरण किया मारहथ, अेकण घाय छ-टूक अरि।

—पदमसिघ करणसिघोत राठोड री गीत

उ०—२ दिन ३ गढ नू ढोवौ हुवौ। पछै गढ माहिला रा प्राण छूटा। पछै रा. गोपाळदास, रा. वीठळदास, रा. माहरखान बिचै रावळ सबळसिघ, भाटी रामसिघ पचाइणोत फेर नै वात कीवी।

—नैणसी

उ०—३ ग्वगार पण मोटौ हुवौ। वरस २० तथा २२ माहे हुवौ। साहबी सभाही। तरै साथ करनै रावळ नै या बिचै मीर नदी छै, तठै आयो। पैली कानी सूं रावळ माणस हजार सात-आठ सूं आयो।

—नैणसी

उ०—४ सवार हुवै वळै वेढ हुवै। यूं बारै वरस वेढ कीवी। आसापुरा देवी बिचै दी नै लोपी, तिण सू दिन दिन रावळ नू हार आवती जाइ।

—नैणसी

उ०—५ विचत्रा रज धू घर बिचै, ऊला कोध प्रमाण। बहुरगी चौथा लखी, 'अवरगी' नीसाण।

—रा. रू.

उ०—६ गावड़ जांणं खरादी खराद उतारी छै । कमळ नाळसी बांहा लाल चूड़ी वरिणमी छै । विचै सोवन चूडी विराज रही छै ।
—रा. सा. स.

मुहा.—विचै देणौ=(१) शपथ लेना, सोगन लेना ।
(२) मध्यस्थ करना ।

विच्चखण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे.)
उ०—वीर विच्चखण क्रीत तणौ वर, डाहण खाग ग्ररिंधा ढूकौ । 'नाथ' तणौ सुज्तेस ग्रभै नर, चित ठीक नही कुळ रीत न चूकौ ।
—सूरतसिंह चहुवाण रो गीत

विच्चार—देखो 'विचार' (रू. भे.)
उ०—पातसाह ग्राळोज, मन्न विच्चार विमासै । बळ छत्र दळ दक्खवै, पांण विनाण कळासै । —गु रू. ब.

विच्छवांन—देखो 'बिछियौ' (रू. भे.)
उ०—सुरंग रंगभोमि में तरग है न तान की, ढमक ढोलकी न त्यूं घमक घुग्घरान की । छमक विच्छवांन की दमंक ना दरीन की, भमंक जेहरान की चमंक ना चुरीन की । —ऊ. का.

विच्छाय, विच्छाया—स. पु. [स. वि.+छाया] १ पक्षियों की छाया ।
[स. वि.=विगत+छाया] २ वह जिसकी छाया नही पड़ती हो, भूत, प्रेत, देवता, दानव ग्रादि ।
वि [स. वि=रहित+छाया=कान्ति] कान्तिहीन, चमकरहित ।

विच्छिग्र—स. पु [स. वृश्चिक] बिच्छू ।

विच्छिण, विच्छिण्ण—वि. [सं. विस्तीर्ण] १ फैला हुग्रा, विस्तृत ।
२ देखो 'विच्छिन्न' (रू भे)

विच्छित्ति, विच्छित्ति—स. स्त्री. [सं. विच्छित्तिः] १ काट कर ग्रलग करने की क्रिया या भाव टुकड़े करने की क्रिया या भाव ।
२ कविता मे या वेशभूषा ग्रादि मे होने वाली लापरवाही या बेढंगापन ।
३ स्त्री द्वारा थोड़े शृंगार से पुरुष को मोहित करने की चेष्टा का साहित्य मे एक भाव ।
४ साहित्य का चमत्कार ।
५ एक स्वाभाविक ग्रलकार विशेष जिसके ग्रनुसार माला, वस्त्राभूषणादि के ग्रस्तव्यस्त धारण करने से सौन्दर्यवृद्धि ग्रौर मतान्तर से कान्ति के पोषक किंचित् रचना-कलाप ।
रू. भे.—बिच्छिति, बिच्छित्ति ।

विच्छिन, विच्छिन्न—वि. [स. विच्छिन्न] १ जुदा, पृथक, ग्रलग ।
२ जिसका विच्छेद हुग्रा हो ।
३ समाप्त किया हुग्रा ।

विच्छु—१ देखो 'बिच्छू' (रू. भे.)
२ देखो 'विछू' (रू. भे)

विच्छुड़णौ, विच्छुड़बौ—देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)
उ०—पड़ी विच्छुड़ी दाड़मी जाणि पक्की, दिपै ग्रारपारां हुग्रारां दरक्की । वधं ग्रग्र सूरां 'ग्रभौ' खग्ग वाहै, सुतौ वाह सी वाह चडी सराहै । —रा. रू.
विच्छुड़णहार, हारौ (हारी), विच्छुड़णियौ—वि० ।
विच्छुड़िग्रोड़ौ, विच्छुड़ियोड़ौ, विच्छुड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विच्छुड़ीजणौ, विच्छुड़ीजबौ—भाव वा० ।

विच्छुड़ियोड़ौ—देखो 'बिछूटियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. विच्छुडियोडी)

विच्छुड़ौ—देखो 'बिच्छुडी' (रू. भे.)

विच्छुड़ौ—देखो 'बिच्छू' (ग्रल्पा., रू. भे.)
(स्त्री. विच्छुड़ी)

विच्छू—देखो 'बिच्छू' (रू. भे.)

विच्छूड़ौ—देखो 'बिच्छू' (ग्रल्पा., रू. भे.)
(स्त्री विच्छूडी)

विच्छेद—स. पु [स. विच्छेद] १ छेद कर या काट कर ग्रलग करने की क्रिया ।
२ बीच में ही किसी क्रम के टूट जाने की क्रियां या भाव ।
३ नाते या रिश्तों को तोडने की क्रिया ।
४ किसी प्रकार ग्रलग या टुकडे टुकडे करने की क्रिया ।
५ ग्रध्याय, परिच्छेद या कविता मे यति ।
रू. भे.—विच्छेद, बिछेद, विछेद ।

विच्छेदक—वि. [स.] १ काट कर ग्रलग करने वाला ।
२ नाते-रिश्ते तोडने वाला ।
३ विभाग करने वाला ।

विच्छेदण—स. पु. [स.] काट कर या छेद कर ग्रलग करने की क्रिया ।
रू. भे.—विच्छेदन ।

विच्छेदणौ विच्छेदबौ—क्रि. स. —१ छेद कर या काट कर ग्रलग करना ।
२ नाते-रिश्ते तोडना ।
३ किसी प्रकार ग्रलग-ग्रलग या टुकडे टुकडे करना, विभक्त करना ।
४ छोड़ना, मुक्त करना ।
५ खोलना ।
६ बीच मे ही किसी क्रम को तोड देना ।
विच्छेदणहार, हारौ (हारी), विच्छेदणियौ—वि० ।
विच्छेदिग्रोड़ौ, विच्छेदियोड़ौ, विच्छेदयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
विच्छेदीजणौ, विच्छेदीजबौ—कर्म वा० ।
विच्छेदणौ, विच्छेदबौ, बिछेदणौ. बिछेदबौ, वच्छेदणौ, वच्छेदबौ, वछेदणौ, वछेदबौ, विछेदणौ, विछेदबौ—रू० भे० ।

विच्छेदन—देखो 'विच्छेदण' (रू. भे.)

विच्छेदियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ छेद कर या काट कर ग्रलग किया

हुआ. २ नाते-रिश्ते तोड़ा हुआ. ३ किसी प्रकार अलग-अलग या टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, विभक्त किया हुआ. ४ छोड़ा हुआ, मुक्त किया हुआ. ५ खोला हुआ. ६ बीच में ही किसी क्रम को तोड़ा हुआ।

(स्त्री. विच्छेदियोड़ी)

विच्छेदी-वि. [स. विच्छेदिन्] छेद कर या काट कर अलग करने वाला।

विच्छोड़णो, विच्छोड़बो—देखो 'विछोड़णो, विछोड़बो' (रू. भे.)

विच्छोड़णहार, हारो (हारी), विच्छोड़णियो—वि०।

विच्छोड़ियोड़ो, विच्छोड़ियोड़ो, विच्छोड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

विच्छोड़ीजणो, विच्छोड़ीजबो—कर्म वा०।

विच्छोड़ियोड़ो—देखो 'विछोड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विच्छोड़ियोड़ी)

विच्छोटणो, विच्छोटबो—देखो 'विछोड़णो, विछोड़बो' (रू भे.)

विच्छोटणहार, हारो (हारी), विच्छोटणियो—वि०।

विच्छोटियोड़ो, विच्छोटियोड़ो, विच्छोट्योड़ो—भू० का० कृ०।

विच्छोटीजणो, विच्छोटीजबो—कर्म वा०।

विच्छोटियोड़ो—देखो 'विछोड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विच्छोटियोड़ी)

विच्छोह—देखो 'विछोह' (रू. भे.)

उ०—मित्र भनइ मित्रह नी घरणी हूंतउ अधिकउ मोह। कुणहि कु बोलइ माहोमाहि कीधउ वाग विच्छोह। —हीराणंद सूरि

विच्छोहणो, विच्छोहबो—देखो 'विछोहणो, विछोहबो' (रू. भे.)

उ०—घरा मोर खेगां खुरां जोर धूजै, मरै वग्ग विच्छोहिया भ्रग्ग मूजै। हमल्लां भ्रसा सेस चा सीस हल्लै, दिसा भ्रम्म वाजू सकाजू दहल्लै। —रा. रू.

विच्छोहणहार, हारो (हारी), विच्छोहणियो—वि०।

विच्छोहियोड़ो, विच्छोहियोड़ो, विच्छोह्योड़ो—भू० का० कृ०।

विच्छोहीजणो, विच्छोहीजबो—कर्म वा०।

विच्छोहियोड़ो—देखो 'विछोहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री विच्छोहियोड़ी)

विच्यत्रि—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—भ्रम्हारी सासू तणु सणगार वरणवू, परिण कसिउ एक छि जे सासू तणु सणगार? करि कंकण सोवरणमि चूडी, रूपइ रंभा भ्रनि रूअडी, चित्र विच्यत्रि करी उपइ, ऊपरि एकाउलिहार, सरिसु मोती तणु हार, झूमणां तणु झमकार,……। —व. स.

विछणो, विछंडबो-क्रि. स.—१ मारना, सहार करना।

उ०—जद जावै रे जद जावै, झठ सेस गयौ समझावै। रे मीत नचित हुवौ कपराजिद, याद हरी नह भ्रावै। तोरी वीर विछंडै तोरा, या गत सो हिव थावै।—र० रू०

२—देखो 'विछोडणो, विछोडबो'—रू. भे.

विछडणहार, हारो (हारी), विछंडणियो—वि०।

विछंडियोड़ो, विछड़ियोड़ो, विछंडयोड़ो—भू० का० कृ०।

विछंडीजणो, विछडीजबो—कर्म वा०।

विछंडियोड़ो-भू का. कृ.—१ मारा हुआ, सहार किया हुआ।

२ देखो 'विछोड़ियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री विछड़ियोड़ी)

विछड़णो, विछड़बो—देखो 'विछुडणो, विछुडबो' (रू. भे.)

उ०—१ सतगुरु मिल्या सहज घर पाया, विछड्या हस मिळाया। उलटा सहज भ्रापमे मिळग्या, पद निरवाणी पाया।

—स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ तठा उपरात करिनै राजांन सिलांमति सिकारी ठौड़ पहाडा री पालती वना रा भ्रगार मिळिनै रहिभ्रा छै, जाणै घणा दिना रा विछड़ी मीत मिळै तिण भांति रा रूख मिळि नै रहिभ्रा छै —रा. सा. स.

उ०—३ सुंदर भ्राठै मुळकती, ऊभी महला रै माह। इण उणियारै लोयणा, निरख्यो नवला नाह। रही रही बलहा विछड़ो कय इण बार। —जयवाणी

विछड़णहार हारो (हारी), विछड़णियो—वि०।

विछड़ियोड़ो, विछड़ियोड़ो, विछड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

विछड़ीजणो, विछड़ीजबो—भाव वा०।

विछड़ाणो, विछड़ाबो—देखो 'विछुडाणो, विछुडाबो' (रू भे.)

विछड़ाणहार, हारो (हारी), विछड़ाणियो—वि०।

विछड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।

विछड़ाजईणो, विछड़ाईजबो—कर्म वा०।

विछड़ायोड़ो—देखो 'विछुडायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री विछड़ायोड़ी)

विछड़ावणो, विछड़ावबो—देखो 'विछुडाणो, विछुडाबो' (रू. भे.)

विछड़ावणहार, हारो (हारी), विछड़ावणियो—वि०।

विछड़ावियोड़ो, विछड़ावियोड़ो, विछड़ाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

विछड़ावीजणो, विछड़ावीजबो—कर्म वा०।

विछड़ावियोड़ो—देखो 'विछुडायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री विछड़ावियोड़ी)

विछड़ियोड़ो—देखो 'विछुड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछड़ियोड़ी)

बिछटणौ, बिछटबौ—१ देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)

उ०—अजामेळ अमदळ अगा, बिछट्यौ बिसमी वार। कीधी नारायण कहे, पुत्तर हेत पुकार। —ह. र.

२ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे.)

उ०—असे छाया बिरख सुं, हरीया रही लपटि। जैसे माया ब्रह्म सुं, कैसे जाय बिछटि। —अनुभववांणी

बिछटणहार, हारौ (हारी), बिछटणियौ—वि०।

बिछटिय़ोड़ौ, बिछटियोड़ौ, बिछट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछटीजणौ, बिछटीजबौ—भाव वा०।

बिछटियोड़ौ—१ देखो 'बिछूटियोड़ौ' (रू. भे)

२ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछटियोड़ी)

बिछट्टणौ, बिछट्टबौ—१ देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)

उ०—कोमड गरज्ज हुए हलकार, भडा भालोड करंत भंमार। एकूकी मूठ बिछट्ट असख्ख, परै सर फूटै कोरी पंख। —गु. रू. ब.

२ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे)

बिछट्टणहार, हारौ (हारी), बिछट्टणियौ—वि०।

बिछट्टिय़ोड़ौ, बिछट्टियोड़ौ, बिछट्टयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछट्टीजणौ, बिछट्टीजबौ—भाव वा०।

बिछट्टियोड़ौ—१ देखो 'बिछूटियोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'बिछुड़ियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछट्टियोड़ी)

बिछण—स. पु.—दूध दुहते समय, दूध देने वाले पशु के स्तनों को धोने के लिए, दूध दुहने के बर्तन मे, ले जाया जाने वाला पानी।

रू. भे.—बिछरा।

बिछणौ, बिछबौ—देखो 'बिछणौ, बिछबौ' (रू. भे.)

उ०—हाथ पग मिटी सू उजळा कीजै छै। कुरळा कीजै छै। सिंझ्यावांदण री वखत हुवौ छै, वनाती आसण बिछै छै। पीतळ रा भरत रा धूपिया आगै आंण मेलजै छै। —रा. सा स.

बिछणहार, हारौ (हारी), बिछणियौ—वि०।

बिछिय़ोड़ौ, बिछियोड़ौ, बिछ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछीजणौ, बिछीजबौ—भाव वा०।

बिछरणौ, बिछरबौ—१ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ सखि आरति चिंता अपहरइ, बिछरघा वाल्हेसर मेलइ रे। रोग सोग गमाडइ कीनर, दुसमणि नइ ठेलइ रे। —स. कु.

उ०—२ काहे कू अखियां लगाई नटनायक। समज मिजाज रूप मन मोह्यौ, मिळी बिछरे दुखदायक। —रसीलै राज रा गीत

२ देखो 'बिचरणौ, बिचरबौ' (रू. भे)

३ गमन करना, चलना-फिरना।

उ०—३ थंभ गुरु जन देव भेव कोई बिरळा पावै, रहै सरण जो जीव बहुर भव जळ नहीं आवै। बिस्णु रूप अवतार परगट पोहमी मे आए, सतजुग बिछरै जीव उनकूं आंन चिताए। —कोल्हजी बारण

बिछरणहार, हारौ (हारी), बिछरणियौ—वि०।

बिछरिय़ोड़ौ, बिछरियोड़ौ, बिछरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछरीजणौ, बिछरीजबौ—भाव वा०।

बिछरियोड़ौ—१ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिचरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछरियोड़ी)

बिछळणौ, बिछळबौ—क्रि. स.—१ साफ करना, धोना।

२ देखो 'बिचळणौ, बिचळबौ' (रू. भे.)

बिछळणहार, हारौ (हारी), बिछळणियौ—वि०।

बिछळिय़ोड़ौ, बिछळियोड़ौ, बिछळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछळीजणौ, बिछळीजबौ—कर्म वा०/भाव वा०।

बिछळाणौ, बिछळाबौ—१ देखो 'बिचलाणौ, बिचलाबौ' (रू. भे.)

उ०—नार घर की दे रही तानो, राज नै लिखती परवानो। जावता समझाया याने, फेर मन बिछळाया क्याने। —लो. गी.

२ देखो 'बिचळणौ, बिचळबौ' (रू. भे.)

बिछळाणहार, हारौ (हारी) बिछळाणियौ—वि०।

बिछळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछळाईजणौ, बिछळाईजबौ—कर्म/भाव वा०।

बिछळायोड़ौ—१ देखो 'बिचलायोडौ' (रू भे.)

२ देखो 'बिचळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछायळोड़ी)

बिछळियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ साफ किया हुआ, धोया हुआ।

२ देखो 'बिचळियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिछळियोडी)

बिछवाणौ, बिछवाबौ—क्रि स. [बिछाणौ, बिछाबौ क्रि. का प्रे. रू.] बिछाने की क्रिया किसी दूसरे से करवाना।

उ०—तब दूसरे रोज रघुनाथसिंघ नै दरीखांना बणाया, रजवाड़ का मुरतब और दस्तूर सब जणाया। पुरांणीसी बिछायत गादी बिछवाई, फाटीसी मस्नद रखी पिछवाई। —दुरगादत्त बारहठ

बिछवाणहार, हारौ (हारी), बिछवाणियौ—वि०।

बिछवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिछवाईजणो, बिछवाईजबो—कर्म वा० ।

बिछवायोड़ो—भू. का. कृ.—बिछाने की क्रिया किसी दूसरे से करवाया हुआ ।
(स्त्री. बिछवायोड़ी)

बिछवावणो, बिछवावबो—क्रि. स. (बिछाणो, बिछाबो क्रि का प्रे रू.) किसी दूसरे से बिछाने का कार्य कराना ।

उ०—उपवन करि अति ग्रेह उसीरा, नोख गुलाब छडक घण नीरा । जळ गुलाब बेळ का जमावै, विमळ पटी सीतळ बिछवावै ।
—सू. प्र.

बिछवावणहार, हारो (हारी), बिछवावणियो—वि० ।
बिछवाबियोड़ो, बिछवावियोड़ो, बिछवाड्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिछवावीजणो, बिछवावीजबो—कर्म वा० ।

बिछवावियोड़ो—भू. का. कृ.—किसी दूसरे से बिछाने का कार्य कराया हुआ ।
(स्त्री. बिछवावियोड़ी)

बिछवो—१ देखो 'बिछवो' (रू. भे)
२ देखो 'विछोह' (रू भे)

उ०—मरजो रे राईका, थारोड़ी जो नार सैणा री बिछवो दुसमी पाडियो, जो म्हारा राज ।
—लो गी

बिछहो—देखो 'विछोह' (रू. भे.)

बिछांणो, बिछांनो—देखो 'बिछाणो' (रू भे.)

उ०—इळा पिंगळा नाडी मिळकर, सुखमनि किया बिछांने । अरस परस पीया सु खेली, मगना भई दिवानी ।
—अनुभववाणी

बिछाइत—देखो 'बिछायत' (रू. भे.)

उ०—१ तठा उपराति करिने राजान सिलामति उवा हमामा महला बाहरि बाग-बगीचां रा रसता लागा छै । चोकीए बिछाइत वणी छै । पाखती जळ कूल छूटि नै रही छै ।
—रा. सा. स.

उ०—२ घणे मगाय पान तांबोल रा रस लीजै छै ऊजळी सपेत बिछाइत ऊपरै ऊजळै वणाव किया ऊजळी रुसनाई लाग रही छै । इण भांति सू हेमत रित माहै रात रा सुख विलास माणीजै छै ।
—रा. मा. स

बिछाणो, बिछाबो—देखो 'बिछाणो, बिछाबो' (रू. भे)

उ०—१ चौकी रूप पिलग चढाए, विमळ पुहप घण सेज बिछाए । सेझ पहुप प्रफुलित इम सोहै, मदन वसत इद्र मन मोहै ।—भू प्र

उ०—२ जनहरीया चढि ग्यान गज, जाजम अघर बिछाय । जगन सरूपी कूकरा, भुसळि मरो भसि जाय ।
—अनुभववांणी

उ०—३ हरीया अपनै पीव सु, सूती सेझ बिछाय । जो राखै मन और सुं, तो विभचार कहाय ।
—अनुभववाणी

उ०—४ एक बोलै करड़ा बोल ए, खेद उपजाय सटकै दे खोल ए । मांगै दूजा कनै जाय ए, तरै गिदरी देवै बिछाय ए ।
—जयवांणी

उ०—५ जिकै दिगपाळ रजपूत सामंत अजानबाहु ठाकुर अड़ाबीड दरबारै आइ खडा रहिआ छै । दरबार दुलीचा बिछाइजै छै ।
—रा. सा. सं.

बिछाणहार, हारो (हारी), बिछाणियो—वि० ।
बिछायोडो—भू० का० कृ० ।
बिछाइजणो, बिछाइजबो—कर्म वा० ।

बिछात, बिछाति, बिछायत—देखो 'बिछायत' (रू. भे.)

उ०—१ अजक ओप तै अनोप रूप चूंप पार में, हुए बिछात सूलि लूब-झूल फूल हार मे । अनूप ताक गोख स्री-विचित्र चित्र सूं भटा, घणू उतग अग जागि स्रग मेघ की घटा ।
—रा रू.

उ०—२ सह बैठत जान बिछात सरै, बकियो सुन सारग पूरव रै । विप सोध जडां वसु वासव मै, वरतै मुख वायक आसव मै ।
—पा. प्र.

उ०—३ जिकै दिगपाळ रजपूत सामंत अजानबाहु ठाकुर अडाबीड दरबारै आइ खडा रहिआ छै । दरबार दुलीचा बिछाइजै छै । बिछात वणि नै रही छै । दरबार वणियो छै ।
—रा. सा. सं.

उ०—४ तठै विलाइत री गथी चटाइ अमोलक बिछाइ रही छै । तिण ऊपरि बैठा छत्तीस रोग हरै ऊपरै ढोलिया गिलमां री बिछाति बणिनै रही छै ।
—रा. सा. स.

उ०—५ बिछायत पर बैठै, सरब ही कबीसर, अवरी का केड, जिसकू सरस्वती का वर । जिस बिछायत पर, थटाव चरचा कै थहै । और भी कवीसुरा नै, क्या क्या ग्रंथ कहै ।
—बा. दा.

उ०—६ अबदुल्ला उर मडळ आयत, वणी मिळण कज सौज बिछायत । मेदा मिळण लिया दळ साजा, रीझै गयो [अजो] महाराजा ।
—रा. रू.

बिछायतु—स. पु —बिछाने का वस्त्र ।

बिछायोडो—देखो 'बिछायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री बिछायोडी)

बिछाळ बिछाल—देखो 'विमाल' (रू. भे)

उ०—छाज्यो नयर बिछाल छो, छाडचा साभरि का रिणवास । येक बलावै बाहुल्या, नाहु उतरीगो नदीय बनास ।
—बी. दे.

बिछावण, बिछावणो—देखो 'बिछाणो' (रू. भे)

उ०—२ वसत रै विखै लोकरूण रै घर पुहुप ही का छै । ओढणा बिछावणा पणि पुहपा ही का छै । पुहपाहि कै हीडोळै लोकरूण हींडइ छै । सखी छै सो भी सब पुहपा माहै छै ।
—वेलि टी.

उ०—२ विधि सूं करी विछावणा, बिच मैं मेल्यो थाल । भोजन की वेला हुई, प्राय बैठो भूपाल । —जखवाणी

उ०— ३ तठा उपरांयंत जाजमा गिलमा रा विछावणा हुयनै रह्या छै। ऊपरा गदरा चादरां विछायजै छै। —रा. सा. सं.

उ० — ४ ज्या रैं खाल विछावणो, ओढण नूं आकास । ब्रह्म पोख सतोख वित, पूरण सुख ज्यां पास । —बा दा.

विछावणो, विछावबो—देखो 'विछाणो, विछावो' (रू भे.)

उ० — १ हियकै गाढ घणी करै जीमै मत ही । अर तू जोर घातै, म्हारी बहू हुं लेनै जाइस्यु । अर जे न मेल्है तो लाकडी वहाड़ै। पिण वहू विगर लीया घर मता आए । अच विछाई अर कहु छुं । —कावळो जोईयो नै तीडी खरळ री वात

उ०—२ एक दिन रजपूत राजा री कुंवर वरस ५ ६ रो हुतो, तिकै नु रामति लगाईनै डेरै लायो । आणि कुंवर नुं नै ढोलियो विछाई विछावणा करि कुंवर नु बैसांणियो ।

—बाप री सीख री वात

उ०—३ वेव तेरी वाटडियां बलि जाव, जांह म्हारो साई सतगुर आवियो । पगि पगि धरू तबोल, वाटडिया म्हारै गुर कै फूल विछावियै। —ऊदोजी नैण

विछावणहार, हारो (हारी), विछावणियो—वि० ।

विछावियोडो, विछावियोड़ो, विछाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विछावीजणो, विछावीजबो—कर्म वा० ।

विछावियोड़ो—देखो 'विछायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विछावियोड़ी)

विछियो—देखो 'विछियो' (रू. भे)

उ०—पग री राती पीडी खालमी कूतरा री जीभ सारिखी, लाल कमळ चरण जावक महिदि रग सूं विराज रहिया छै। पग अंगुळी राईवेल री कळी हीरा सा नख आरीसा ज्यों झाकि रहिया छै। ऊपरै अणोट पोल पावटा विछिया रो वणाव वणि नै रहिया छै। —रा. सा. स

विछियोड़ो—देखो 'विछियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. विछियोडी)

विछियो, विछीयो—देखो 'विछियो' (रू. भे.)

उ०—१ वाजन लागे आज मनमोहनी, मधुर धुन नूंपर विछिया किंकनी। चमकन लागे चीर जरी कै, सीसफूल नथ सोहनी । —रसोलै राज रा गीत

उ०—२ छुद्रघटा विछियों का छूटै छणछणाव, ज्यो हंसे बच्चो की बाणी का बणाव। जाभक का भणकार ब्है जोरै पर जोर, सांवण के मौसम ज्यों भिल्ल्यां का सोर —रा. सा. स.

उ०—३ सती माता, तेरा विछिया रांगी, घडिया छै मंगळ वारा जी । अेक ज बार ज पैरिया, राणी, लीना छै बांमण्यां उतार जी । —लो. गी.

उ०—४ चोहटै मांहै नगर-नायिका वेस्या लाख लाख री लहगा-हार मोळै सिणगार ठवियां थकां फूला रा चौस पैहरियां थकां टोय अणियाळा काजळ ठासियां थकां बांका नैणा री झोक नाखती पायलै रै ठमकै सूं घूघरै रै घमकै सूं विछीया रै छमकै सूं रमझोळ करती अगूठा मोडती नखरा करती वाजारि चाली जाए छै । —रा सा. स.

उ०- ५ भूखण जाणि भुजंग सा, चउकी चाक समान । बीछु सम ए विछिया, सिज्या अगनि समानो रै। —प. च. चौ.

विछुडणो, विछुडबो -देखो 'विछुडणो विछुडबो' (रू भे)

विछुड़णहार, हारो (हारी), विछुडणियो—वि० ।

विछुड़ियोड़ो, विछुडियोडो विछुड्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विछुडीजणो, विछुडीजबो—भाव वा० ।

विछुड़ाडणो विछुड़ाडबो—देखो 'विछुड़ाणो, विछुड़ावो' (रू. भे)

विछुड़ाडणहार, हारो (हारी), विछुड़ाडणियो -वि० ।

विछुड़ाडियोडो, विछुड़ाडियोडो, विछुड़ाड्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विछुडाडीजणो, विछुडाड़ीजबो—कर्म वा० ।

विछुड़ाडियोड़ो—देखो 'विछुड़ायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विछुडाडियोडी)

विछुड़ाणो, विछुड़ाबो—देखो 'विछुड़ाणो, विछुड़ावो' (रू. भे.)

विछुड़ाणहार हारो (हारी), विछुड़ाणियो—वि० ।

विछुड़ायोड़ो—भू० का० कृ० ।

विछुड़ाईजणो, विछुड़ाईजबो—कर्म वा० ।

विछुड़ायोड़ो – देखो 'विछुडायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विछुडायोडी)

विछुड़ावणो, विछुड़ावबो—देखो 'विछुड़ाणो, विछुड़ावो' (रू भे.)

विछुड़ावणहार, हारो (हारी), विछुड़ावणियो—वि० ।

विछुड़ावियोड़ो, विछुड़ावियोड़ो विछुड़ाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विछुड़ावीजणो, विछुड़ावीजबो—कर्म वा० ।

विछुड़ावियोड़ो—देखो 'विछुड़ायोड़ो' (रू.भे.)

(स्त्री विछुड़ावियोडी)

विछुडी – देखो 'विच्छुडी' (रू. भे.)

विछुडो—देखो 'विच्छू' (अल्पा, रू भे) (स्त्री विछुडी)

विछुटणो, विछुटबो—देखो 'विछूटणो, विछूटवो' (रू. भे)

विछुटणहार, हारो (हारी), विछुटणियो—वि० ।

बिछुटिग्रोड़ो, बिछुटियोड़ो, बिछुट्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिछुटीजणो, बिछुटीजबो—भाव वा० ।

बिछुटाणो, बिछूटाबो—१ देखो 'बिछूटाणो, बिछूटाबो' (रू. भे)
२ देखो 'बिछुडाणो, बिछुडाबो' (रू भे.)
बिछुटाणहार, हारो (हारी), बिछुटाणियो— वि० ।
बिछुटायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बिछुटाईजणो, बिछुटाईजबो—कर्म वा० ।

बिछुटायोड़ो —१ देखो 'बिछूटायोडो (रू भे.)
२ देखो 'बिछुडायोड़ो' (रू. भे)
(स्त्री. बिछुटायोड़ी)

बिछुटियोड़ो—देखो 'बिछूटियोडो' (रू. भे)
(स्त्री. बिछुटियोडी)

बिछुट्टणो, बिछुट्टबो—देखो 'बिछूटणो, बिछूटबो' (रू भे)
उ०—१ राव राय राणै सहित, सको थया स्वाधीन । यां छूटा जग जाळ ज्यौं, जाळ बिछुट्टा मीन । —रा. रू
उ०—२ आजम दक्खण हूंत उलट्टो, विकट धनुख सर जाण बिछुट्टो । उत्तर धरा सु आलम आयो, सौज नीज दळ तेज सवायो ।
—रा रू.
उ०—३ प्रोहित केसरसिंघ, मिघ किर संकळ छुट्टो । धरि मिर असमालोत, जाणि रिख गोत बिछुट्टो । —रा रू.
बिछुट्टणहार, हारो (हारी), बिछुट्टणियो—वि० ।
बिछुट्टिग्रोड़ो, बिछुट्टियोड़ो, बिछुट्ट्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिछुट्टीजणो, बिछुट्टीजबो—भाव वा० ।

बिछुट्टियोड़ो—देखो 'बिछूटियोडो' (रू भे.)
• (स्त्री बिछुट्टियोडी)

बिछ ळणो, बिछ ळबो-क्रि स.—धुलाई करना, धोना ।
उ०—तरै सरव ठाकुर आरोगै छै—ग्रो ठाकुर हाथ नीचो करै तो बाज नहीं । तरै ग्रो बोलियो—ठाकुरे ! अजु बाज ही नही आयी छै, काहू आरोगां ? तरै परिहार बोलिया-राज ! बाज उरै है, ठाकुर पण बिछुळता हुता सू अपूठा फिरिया नही ।
—प्रतापमल देवडा री बात
बिछुळणहार हारो (हारी), बिछुळणियो वि० ।
बिछुळिग्रोड़ो, बिछुळियोड़ो, बिछुळयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बिछुळीजणो, बिछुळीजबो—कर्म वा० ।

बिछुळाणो, बिछुळाबो-क्रि. स —धुलाई करवाना, धुलवाना ।
बिछुळाणहार, हारो (हारी), बिछुळाणियो वि० ।
बिछुळायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बिछुळाईजणो, बिछुळाईजबो—कर्म वा० ।
बिछुळावणो, बिछुळावबो—रू. भे.० ।

बिछुळायोड़ो-भू० का० कृ०—धुलाई कराया हुआ, धुलाया हुआ ।
(स्त्री बिछुळायोडी)

बिछुळावणो, बिछुळावो—देखो 'बिछुळाणो, बिछुळाबो' (रू. भे.)
बिछुळावणहार, हारो (हारी), बिछुळावणियो—वि० ।
बिछुळाविग्रोड़ो, बिछुळावियोड़ो, बिछुळाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिछुळावीजणो, बिछुळावीजबो—कर्म वा० ।

बिछुळावियोड़ो—देखो 'बिछुळायोडो' (रू. भे)
(स्त्री बिछुळावियोड़ी)

बिछुळियोड़ो-भू का. कृ —धुलाई किया हुआ, धोया हुआ ।
(स्त्री बिछुळियोडी)

बिछुवो, बिछुहो — देखो 'बिछोह' (रू. भे)

बिछू-स. पु.—१ विशाखा नक्षत्र का एक नाम ।
२ एक प्रकार का घोडा जिसकी पूछ का अग्र भाग वक्र होता है ।
(शा हो.)
अल्पा.—बिछूडो ।
३ देखो 'बिच्छू' (रू. भे.)

बिछूड़ो—१ देखो 'बिच्छू' (अल्पा, रू. भे.)
२ देखो 'बिछू' (अल्पा., रू. भे.)
(स्त्री. बिछूडी)

बिछूट-स स्त्री.—छूटने की क्रिया या भाव ।

बिछूटणो, बिछूटबो—१ देखो 'बिछुडणो, बिछुडबो' (रू में)
उ०—१ हरीया हमन को कहै, जोड बिछूटि जाणि । सायर का सासा पडय, छीलर वसीयो आणि । —अनुभववाणी
उ०—२ मछ बिछूटो टोळीया, ताहि न घातो घात । आप मतो मरि जावसी, तळफ तळफ जीव जात । —अनुभववाणी
२ देखो 'बिछूटणो, बिछूटबो' (रू. भे.)
उ०—१ को लाहै लोभिया, मौत चाहै मरणखूटी । कमण पाण पाकड़, बीज असमाण बिछूटी ।
—रा. रू.
उ०—२ जमदूना री जमात उठीया छै, जाणे साकळा हूती सीह बिछूटिया छै । घोडा राउ छुटा लीजै छै । अमल पीजै छै —पनां
उ०—३ कुटुंबी लोक माचइ, महात्मा बैठा पुस्तक वाचइ । परवत तउ नीझरण बिछुटइ, भरिया सरोवर फूटइ । इसिइं वरसा कालि ।
—रा. सा. स.
उ०—४ जरै जादव राम रै सबधी भ्राता जादव देव रा किवांण करि चालुक्य राज रा गज री सुंडाडंड वाहिरय देस सू बिछूटि झडियो ।
—वं. भा.

उ०—५ जांणूं तिलहि न बिछूडूं रे, जनि पछतावा होई । गुण तेरै रसना जपू, सुणसी सांई सोई रे । —दादूवाणी

उ०—६ समय घणउं स्रम स्रांत थ्या, सयरि बिछूटि स्वेद । अडप घणी अळगां थयां, सांसह पडिया दुभेद । —मा का प्र.

उ०—७ असमान बिछूटै सर असख । धकारव गाजै गुण धनख । सूरज्ज वोम छायी सरेय, किरि जाण काळ छाया करेय ।

—गु. रू. ब.

उ०—८ कुदरत्त बिछूटा कुहकबांण, आकंप इळा पुड आसमांण । गोळियां ताड विपरीत गत्त, ओभड़ै गड़ै किरि मेह अत्त ।

—गु. रू. बं.

उ०—९ पूठिली परि तै गलगलै, पिण नहीं कोई उपाय । सगले जी कहै जल नै बिना, जीव बिछूटो जाय । —वि. कु.

उ०—१० मुख साह मुहां मुहि हुकम बिछूटा, छूटा पडियाळां खजर । समकै गजा सांकळा तूटा, जूटा 'अरजण' अनै 'अमर' ।

—अरजण गौड वीठळदासोत री गीत

बिछूटणहार, हारौ (हारी), बिछूटणियौ—वि० ।

बिछूटिओड़ौ, बिछूटियोड़ौ, बिछूट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिछूटीजणौ, बिछूटीजबौ—भाव वा० ।

बिछूटाणौ, बिछूटाबौ—१ देखो बिछूटाणौ, बिछूटाबौ' (रू. भे)

२ देखो 'बिछुड़ाणौ बिछुडाबौ' (रू भे)

बिछूटाणहार, हारौ (हारी), बिछूटाणियौ—वि० ।

बिछूटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिछूटाईजणौ, बिछूटाईजबौ—कर्म वा० ।

बिछूटायोड़ौ—१ देखो 'बिछूटायोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिछुडायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछूटायोड़ी)

बिछूटियोड़ौ—देखो 'बिछूटियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछूटियोडी)

बिछूट्टणौ, बिछूट्टबौ—देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे)

उ०—हुए मीर सधार, सोक सर पूर बिछूट्टै । प्रळै-काळ आवत, फोज फोजा मुहि जुट्टै । —गु रू. ब.

बिछूट्टणहार, हारौ (हारी), बिछूट्टणियौ—वि० ।

बिछूट्टिओड़ौ, बिछूट्टियोडौ, बिछूट्टयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिछूट्टीजणौ, बिछूट्टीजबौ—भाव वा० ।

बिछूट्टियोडौ—देखो 'बिछूटियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछूट्टियोडी)

बिछेड़ौ—सं. पु.—बिछोह, वियोग, जुदाई ।

बिछेव—सं. पु.—१ बिछोह, वियोग, जुदाई ।

२ देखो 'विच्छेद' (रू. भे.)

उ०—सुरमो लूण जात ए, पुहवी काय बिछेव । भूमि आकास ओस हिय, करग आऊ ना भेद । —वृ. स्त.

बिछेवौ—सं पु.—भंग होने की क्रिया, नाश ।

उ०—'देव विमांण वल्यौ' छठै, तिणरौ सुणौ राय भेदो रे । जंघा विद्या चारणी, जासी लब्धि बिछेवौ रे । —जयवाणी

बिछेरियौ—देखो 'बछेरौ' (अल्पा., रू. भे.)

बिछेरौ—देखो 'बछेरौ' (रू. भे.)

उ०—सिखरै-री घोडी अर ऊदै री घोडी बेऊ अेक छान मैं बभै । सू उवा घोड़ी री उवा बिछेरौ मास इग्यारह री । सू घोड़ै ही आगै चरै । सिखरौ चढि अर नीसरियौ ताहरां बिछेरौ घोड़ै रै लार हुयौ । —ऊदै उगमणावत री बात

(स्त्री. बिछेरी)

बिछोई—वि.—वियोगी ।

रू. भे —बिछोई ।

बिछोड़णौ, बिछोड़बौ—क्रि स.—१ साथ रहने वाले व्यक्तियो या प्राणियों को एक दूसरे से पृथक कर देना ।

उ०—मां थी बिछोड़्या बाछड़ा, नीरौ नही चारि । ऊनालै तिरस्या मूआ, कीधी नही सारि । —स. कु.

२ वियोग मे डालना ।

३ साथी से अलग कर देना ।

४ काटना ।

उ०—पड़ै रीठ पाडोसां गरीठ धज्र भाला पूर, धीठ सूर अड़ै बज्र आवधा ओधार । ऊधड़ै बरम्मा कड़ा नत्रीठा बिछोड़ै अगा, जठै आकारीठ 'दूदो आहुड़ै जोधार ।

—ठाकर जवानीसिंघ पालडी री गीत

बिछोड़णहार, हारौ (हारी), बिछोडणियौ—वि० ।

बिछोडिओडौ, बिछोड़ियोड़ौ, बिछोड्योडौ—भू० का० कृ० ।

बिछोड़ीजणौ, बिछोडीजबौ – कर्म वा० ।

बिछोडणौ, बिछोडबौ—रू० भे० ।

बिछोड़ियोड़ौ—भू का. कृ —१ साथ रहने वाले व्यक्तियो या प्राणियो को एक दूसरे से पृथक किया हुआ. २ वियोग मे डाला हुआ. ३ साथी से अलग किया हुआ. ४ काटा हुआ.

(स्त्री. बिछोड़ियोडी)

बिछोटौ—स. पु.—छुटकारा, मुक्ति ।

उ०—दीयै कोरडा देह दोला दबोटा, वदै बोल बांका भभै मत्त झोटा । पड्या बदिखानै महा दुक्ख मोटा, प्रभू नांम थी वेग थायै बिछोटा । —ध. व. ग्रं.

बिछोडणो, बिछोडबो—देखो 'बिछोडणो, बिछोडबो' (रू भे)

उ०—उण वेळा 'अभसाह' दुगम बळ बाह दरस्सै, चक्र ग्राह चूरिवा ति फिर चत्रबाह तरस्सै । अथग पियण अजळी जाणि अम्मस्त धरै पण, कना 'पत्थ' कोपियौ मत्य 'जंदत्थ' बिछोडण । —रा. रू.

बिछोडणहार, हारौ (हारी), बिछोडणियौ—वि० ।

बिछोडियोडौ, बिछोडियोडौ, बिछोड्योडौ—भू० का० कृ० ।

बिछोडीजणौ, बिछोडीजबौ—कर्म वा० ।

बिछोडियोडौ—देखो बिछोडियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. बिछोडियोडी)

बिछोणो—देखो 'बिछोणो' (रू. भे.)

बिछोणो, बिछोबो—देखो 'बिछाणो, बिछाबो' (रू. भे)

बिछोणहार, हारौ (हारी), बिछोणियौ—वि० ।

बिछोयोडौ—भू० का० कृ० ।

बिछोईजणौ, बिछोईजबौ—कर्म वा० ।

बिछोयोडौ—देखो 'बिछायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिछोयोडी)

बिछोव--देखो बिछोह' (रू भे)

बिछोवणो, बिछोवबो-- देखो 'बिछाणो, बिछाणो' (रू. भे)

बिछोवणहार, हारौ (हारी), बिछोवणियौ—वि० ।

बिछोविबोडौ, बिछोवियोडौ बिछोव्योडौ—भू० का० कृ० ।

बिछोवीजणौ, बिछोवीजबौ—कर्म वा० ।

बिछोवियोडौ—देखो 'बिछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिछोवियोडी)

• **बिछोवौ**—देखो 'बिछोह' (रू. भे.)

उ०—१ नागजी, भली निभायी प्रीत, रे वैरी, रैण बिछोवौ कर चल्यौ ओ नागजी । —लो. गी.

उ०—२ प्रीतम दुखिया कर गया, सुख कूं लेग्या साथ । रैण बिछोवा कर गया, मळती रह गई हाथ । —अग्यात

बिछोह-स. पु.—१ जुदाई, वियोग, विरह ।

उ०—१ रजीनि भान रुक्कयौ, मनु अधकार मुक्कयौ । बिछोह चक्क चक्कय, अनेक वीर बक्कय । —ला. रा

उ०—२ खिण इक अउ तुझ नइ नजु रे जि० तउ उपजं अदोह । धरती पिण फाटइ हियौ रे जि० पाणी तणय बिछोह । —वि कु.

उ०—३ भूरई सहोवर राव का, कुली छतीसइ भूरइ सोही । धार भूरई राजा भोज सूं, सामरथा राव सो पडयौ बिछोह । —बी. दे

उ०—४ फटि रे हिया ! नीवालुवा, पाथरी घडियौ, कै नीघट लोह । झरथझनीयौ फूटइ नहीं, सगुणां प्रीतम तणौ बिछोह । —बी. दे.

२ वियोग का समय ।

रू. भे – बिछवौ, बिछाओ, बिछेवौ, बिछैवौ, बिछोडौ, बिछोव, बिछोवौ, बिछ्रोह, बिछोहौ, बिच्छोह, बिछवौ, बिछहौ, बिछुवौ, बिछुहौ, बिछ्रात्र, बिछोवौ, बिछोहौ ।

बिछोहणौ, बिछोहबौ-क्रि. अ — बिछुडना, दूर होना, जुदा होना ।

उ०—१ टोळी सूं टळियाह, वाला हर हुं बिछोडियां । धोरी हाथ थयाह, सा किम जीवै जेठवा । – जेठवा

उ०—२ पनरह वरस बिछोहउ हूओ घणइ कस्टि मेळावउ । थयउ । वळ बिछोहो जउ करतारि, तउ इण भणि मुझ एह ज नारि । —ढो मा.

उ०—३ वली मत पडिज्यो एहवो दुकाल, जिणै बिछोहया मा बाप बाल, जिणै भागा सवल भूपाल । —स. कु.

उ०—४ राम बिछोही बिरहनी, फिर मिलन न पावै । दादू तलफै मीन ज्यौं, तुझ दया न आवै । —दादूबाणी

बिछोहणहार, हारौ (हारी), बिछोहणियौ—वि० ।

बिछोहिओडौ, बिछोहियोडौ बिछोह्योडौ—भू० का० कृ० ।

बिछोहीजणौ, बिछोहीजबौ—भाव वा० ।

बिछोहणौ, बिछोहबौ, बछोहणौ, बछोहबौ—रू० भे० ।

बिछोहियोड़ौ-भू का. कृ.—बिछुडा हुआ, दूर हुवा हुआ, जुदा हुवा हुआ ।

(स्त्री बिछोहियोडी)

बिछोही-वि—वियोगी, बिरही ।

उ० –टोला बिछोही यम अगली तिम करि आक्रद, वन वन जोतां कथ न देखि दीन द्यामणी मद । —नळांख्यान

बिछोहौ—देखो बिछोह' (रू भे.)

उ०—१ इक चलै सूड अंदोळता अघ ऊरध सावळ अविळ । तम सुभट बिछोहौ जागि तिम दिवस वहै करि डग वळि । —रा. रू.

उ०—२ सुपनइ प्रीतम मुझ मिळया, हूं लागी गळि रोइ । डरपत पलक न खोलही, मतिहि बिछोहउ होइ । —ढो. मा.

उ०—३ पनरह वरस बिछोहउ हूओ, घणइ कस्टि मेळावउ थयउ । वळ बिछोही जउ करतारि, तउ इण भवि मुझ एह ज नारि । —ढो. मा.

उ०—४ केसर काटू कुकडा, बोल्यौ मुझ अभाग, सेजा धारा सजन रे, सूति छी गळ लाग । मोताहळ सीतळ हुवा रैण गळंती दीठ प्रात बिछोहौ सजना ऊठी विरह अंगीठ । —पना

उ०—५ वाली वाली रै मेरा इलाही तुं, रमराज एक रांझै दा बिछोहा, दूजी वेस मतवाळी रे । —रसीलै राज रा गीत

उ०—६ आरा देस्यां जी नहीं थांनै मालीजा जी मेलो बिछोही माह म्हांसू नहीं नीसरै। —लो. गी.

बिछोनो—देखो 'बिछाणो' (रू. भे.)

उ०—हरिसौं संकेत करी राधिकै विलोकै मग, ग्रैसे भाई बैठी सखी एक ही बिछौन है। राधै बोली सुनि लेल मोसूं नैन बाद जोवै, ग्रनिमेख दी मैं हारी साई दासी हौन है। —घ. व. ग्र.

बिज—१ देखो 'बीजळी' (रू भे)

उ०—गडि गडि गोळा नाळि, बिज खड्डं किरि ग्रबर। ग्रगन बाण ऊछळं, घोम घूहा रव डंम्बर। —गु. रू. ब.

२ देखो 'बीजळा' (मह, रू. भे.)

बिजई देखो 'विजयी' (रू भे.)

बिजउरो—देखो 'बिजोरो' (रू. भे.)

उ०—करहा, नीरू सोइ चर, वाट चलनउ पूर। द्राख बिजउरा नीरती, सो घण रही स दूर। —ढो मा.

बिजकणो, बिजकबो—देखो भिचकणो, भिचकबो' (रू. भे.)

उ०—साधू संगति क्या करै, जो मन बिजक्यो होय। ज्यूं हरीया हरीवघण, वाग न भालै कोय। —ग्रनुभववाणी

बिजकणहार, हारो (हारी), बिजकणियो—वि०।

बिजकिग्रोडो, बिजकियोडो, बिजक्योडो—भू० का० कृ०।

बिजकीजणो, बिजकीजबो—भाव वा०।

बिजकाणो, बिजकाबो—देखो 'भिचकाणो, भिचकाबो' (रू भे)

बिजकाणहार, हारो (हारी), बिजकाणियो—वि०।

बिजकायोडो- भू० का० कृ०।

जिकाईजणो, बिजकाईजबो—कर्म वा०।

बिजकायोडो—देखो 'भिचकायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. बिजकायोडी)

बिजकावणो, बिजकावबो—देखो 'भिचकाणो, भिचकाबो' (रू भे.)

बिजकावणहार, हारो (हारी), बिजकावणियो—वि०।

बिजकाविग्रोडो, बिजकावियोडो बिजकाव्योडो—भू० का० कृ०।

बिजकावीजणो, बिजकावीजबो—कर्म वा०।

बिजकावियोडो—देखो 'भिचकावोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिजकावियोड़ी)

बिजकियोड़ो—देखो 'भिचकियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. बिजकियोडी)

बिजड़—१ देखो 'बीजळा' (ना. डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—पाच कलै परवार सूं, रावळ मालोचेह। मांपै मर गढ आपस्यां, बिजड़ां वार करेह। —नैणसी

२ देखो 'बीजळी' (मह., रू. भे)

बिजड़ली—१ देखो 'बीजळा' (ग्रल्पा., रू. भे)

२ देखो 'बीजळी' (ग्रल्पा, रू. भे.)

बिजड़हत, बिजड़हती, बिजड़हतौ, बिजड़हत्थ, बिजड़हत्थी, बिजड़हत्थौ, बिजड़हथ, बिजड़हथी, बिजड़हथौ—देखो बीजळाहथ' (रू. भे.)

उ०—१ घूणं भुज खगा घोम पाण दयं मूछी परं। रण जूझो राठोड बिजड़हथौ फिर बोलियो। —पा. प्र

उ०—बीक विदेसज चालियो, बिजडहथौ बळ बाव। मूळं तोडी मुण सुगुर, साहि ग्रालम सू माव। —नैणसी

बिजड़ाहत, बिजड़ाहती, बिजड़ाहतौ, बिजड़ाहत्थ, बिजड़ाहत्थी, बिजड़ाहत्थौ, बिजड़ाहथ, बिजड़ाहथी, बिजड़ाहथौ, बिजड़ाहथ्थ, बिजड़ाहथ्थी, बिजड़ाहथ्थौ—देखो 'बीजळाहथ' (रू भे.)

उ०—बिजड़ाहत घाचळ पूत बकै, सत्र कोण घकै पग माड सकै। घट सूर ढहै विप खड घणा, तत चक्र वहै नव लाख तणा।

—पा प्र.

बिजड़ी—१ देखो 'बीजळा' (रू भे.)

उ०—हव वेरन कीजिय वेग हकै घुणियाळ मिळो भड 'पाल' घकै। बिजड़ी जड भायल बाध विनै, कड भीड कठठ्ठत 'पाल' कनै। —पा. प्र.

२ देखो 'बीजळी' (रू भे)

बिजड़ोहथ—देखो 'बीजळाहथ' (रू भे.)

उ०—लखियो हथळेव प्रमांण लघो, बिजडोहथ बांधल मोड़बघो, विधना ग्रक मेटण की वरणं, पह 'पाळ' जतिंद्र जको परणं।

—पा. प्र.

बिजड—१ देखो 'बीजळा' (रू भे) (ग्र. मा, ना डिं. को)

उ०—१ सूर धीर सामत, बिजड जूटण बगाळा। राणा हाथळ टोप, पैहरि जरदा छकडाळा। —गु. रू ब.

उ०—२ तास वैरि ततकाळ, लियो जिण चालुक लोहै। जिण 'मोहण' मारियो, बिजड बदी घड डोहै। —गु. रू. ब.

उ०—३ घाघा घाव ग्राहाडा घायं, बिजडां बाढं चाढ घज-बध। लेगो सुरग वरै रभ लारा, कमधज सारा करै कबध।

—ग्रमरो बारहठ

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

बिजडी—देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—१ पायकां भिलंमा पर तेग पडै, भलहो दरिया जड मूल गडै। दुलहो फरकी चव दूनि फिरै, बिजडी रत चाखिय 'पाल' बरै। —पा. प्र.

उ०—२ लेय बावत घेर नवं लखरी, सांवळां पर रूप बंधे सखरी।
बिजळी हुय खापांय चीहू वकी, भिड़जा चढ टोप कने भमकी।
—पा. प्र.

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे)

बिजति—वि —जीतने वाला, विजय प्राप्त करने वाला।

उ०—छली बिजति तत्तिकी, सुछत्ति छोलती वहै। विजेत नत रैत पे, सजेत बोलती वहै। —ऊ का.

बिजन—वि. [स] एकान्त, जनशून्य।

[स. व्यजन] १ हवा करने का पखा, वीजन।
२ देखो 'व्यजन' (रू. भे)
रू. भे.—बिजन।

बिजनस—सं. पु. [अ. बिजिनिस] १ व्यवसाय, व्यापार।

२ व्यापारिक सगठन, व्यावसायिक सगठन।
३ दृढ निश्चय।

उ०—कवराणी सभियो किलो, बिजनस मरण विचार। किलो रह्या रहसी कलम, लाज किला रै लार। —लिखमीदान बारहठ

वि.—वास्तविक, बिल्कुल।
(क्रि. वि)—निश्चय ही, अवश्य ही।

उ०—१ नैणा हूँ आई निरख, जिण री तो हू जोव। ऊतो बिजनस आव ही, प्रीतम प्यारौ पीव। —र० हमीर

उ०—२ कळजुग री मांनै कहर, बिजनस लागै वाव। रिखां कह्यौ अण देह रौ, परत करा पलटाव।
—मयाराम दरजी री बात

उ०—३ इतरै एक चारण बोलियो, तीज तो पूगळ री देखीजै। अह लोक प्राय नै सुरलोक रीझीजै। जद कवर बोलियो, इसीछै तो बिजनस देखवा चालसा। एक वार पूगळ रा बागा मे मालसा। फजर पूगळ मे चालसा इतरो कह नैं महिला पधारिया। —पना

रू. भे.—बिजनस, बिजनिस, बिजनेस, बिजिनस, बिजिनिस, बिजनेस, बिजनिस, विजनेस, विजिनस, विजिनिस, विजिनेस।

बिजनोळियौ—स. पु.—एक प्रकार का नकुल की जाति का जानवर।

बिजनिस, बिजनेस—देखो 'बिजनस' (रू.भे.)

उ०—धरखौं चढ किरगांठ बिराजै, स्याह सफेत लालरग साजै। बिजनिस वाव सूरियौ बाजै, घड़ी पलक माय मेहा गाजै।
—वरसा विग्गांन

बिजपंजर—देखो 'बिजयपंजर' (रू. भे.)

उ०—धरहरिय प्रजा जिम नीर थाळ, भाखरै भाजि चड़िया भुवाळ आगळी प्रजा आई अबीह, सरणइ बिजपंजर 'अइतसीह'।
—रा. ज. सी

बिजय—स. पु. [सं विजयः] १ पराजय का विपरीत, जय, जीत।

उ०—फतेसाह साह आए बाह गैण धारै, बिजावत बिजय रूप पराजय निवारै। 'मधकर' 'दयाल' का सौ साह भी न धारै, अधकार जात जैसै भाण के उजारै। —रा. रू.

२ विवाद, युद्धादि मे जीत।
३ विष्णु के जय-विजय नामक दो पार्षदो (द्वारपालों) में से दूसरा।
४ कुंति-पुत्र अर्जुन के दस नामो मे से एक, जो उसने अज्ञातवास के समय धारण किया था।
५ यमराज।
६ देवरथ, स्वर्गीय रथ।
७ वृहस्पति की दशा का प्रथम वर्ष।
८ भगवान विष्णु का एक नामान्तर।
९ मगध निवासी एक ब्राह्मण, जिसने महीसागर-संगम तीर्थ मे अनेको सिद्धिया प्राप्त की थी और बाद मे सिद्धसेन के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
१० राजा रोमपाद के वशज जयद्रथ और धम्भूति के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र जो धृति का पिता था।
११ महाराज दशरथ के एक मन्त्री का नाम।
१२ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
१३ एक राजा, जो पुरुरवस एवं उर्वशी का पुत्र एव भीम या कांचन का पिता था।
१४ शिवजी के त्रिशूल का एक नाम।
१५ एक दिव्य धनुष जो परसुरामजी द्वारा कर्ण को दिया गया था
१६ हरिश्चन्द्र के वशज सुदेव के पुत्र एवं भुरुक का पिता।
१७ एक राजा, जो वृहन्मनस एव सत्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
१८ भागवतानुसार जय राजा का पुत्र एव ऋतु का पिता।
१९ भागवतानुसार सृंजय का पुत्र और वायु के अनुसार सृंजय का पौत्र, और जय राजा का पुत्र था।
२० एक यादव राजा, जो वसुदेव एव उपदेवी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
२१ एक क्षत्रिय विजेता सम्राट, जो भागवतानुसार चप राजा का एव वायु तथा विष्णु के अनुसार चचु राजा का पुत्र था।
२२ कृष्ण एव जाबवती के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र।
२३ यज्ञश्री राजा का पुत्र एव चंद्रविज्ञ का पिता एक आन्ध्रवंशीय राजा।
२४ पृथुक देवो मे से एक।
२५ मणिवर एव देवजनी का पुत्र एक यक्ष।
२६ लोकाक्षि नामक शिवावतार का एक शिष्य।
२७ भैरवबक्ष मे उत्पन्न एक वाराणसी नगरी का राजा, जो

उपरिचर का पिता था और जिसने खाण्डवी को नष्ट कर खांडव वन का निर्माण किया था।

२८ छप्पय छंद का द्वितीय भेद जिसमें ६९ गुरु १४ लघु से ८३ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। मतान्तर से १४८ मात्राएँ होती हैं। (र. ज. प्र.)

वि. वि —जिस छप्पय में उल्लाला के दो पद २६, २६ मात्राओं के होते हैं, उसमें १४८ मात्राएँ होती हैं। अर्थात २४×४=९६+२६×२=५२ कुल १४८ और जिस छप्पय मे उल्लाला के दो पद २८, २८ मात्राओं के होते हैं, उसमे १५२ मात्राएँ होती हैं अर्थात २४×४=९६+२८×२=५६ कुल १५२ मात्राऐं।

रू. भे.—बिजय, बिजै, विजयु विजै, विज्जै।

विजयएकादसी—देखो 'विजयाएकादसी' (रू. भे.)

विजयक–वि. [स. विजय+क्वुन] सदा जीतने वाला, हमेशा विजय प्राप्त करने वाला।

विजयकुंजर–स. पु.—१ राजा की सवारी के काम आने वाला हाथी। २ युद्ध मे काम आने वाला हाथी।

विजयकेतु–स पु. [स.] विजयपताका।

विजयखार—देखो 'विजयसार' (रू. भे.)

विजयघंट–स पु.—१ मन्दिरों में लटकाया जाने वाला घण्टा। २ हाथी की झूल के साथ बधा रहने वाला घंटा।

विजयछंद–सं. पु. [स. विजयः+छन्द] पाच सौ लड़ियों का हार।

विजयजात्रा—देखो 'विजययात्रा' (रू. भे.)

विजयडिंडिम–सं पु. [स] युद्ध के समय युद्ध क्षेत्र में बजाया जाने वाला एक ढोल।

रू भे.—विजयदंदुभ विजयदुंदुभि।

विजयतीरथ–सं. पु [स. विजयतीर्थ] एक तीर्थ विशेष। (पुराण।

विजयदंड–स. पु [स. विजयदण्ड] सैनिकों का एक विभाग विशेष जो हमेशा विजयी रहता है।

विजयदसम, विजयदसमी—देखो 'विजयादसमी' (रू भे)

उ०—१ सन विजयदसम वधियौ संग्राम, घिखियौ अहमदपुर धांम धाम। सजियौ क्रोधानळ बियौ 'सीह,' दावानळ दमगळ तीन दीह।

—वि. स

उ०—२ सतरै चालीस विजयदसमी दिनै, गच्छ खरतर जगिजीत सरब विद्या जिनै। विजयहरस विद्यमान सिस्य तिनकै सही, परिहा कवि धरमसी उपगारै ग्रंथ क्रिया कही। —ध. व. ग्र.

विजयदुंदुभ, विजयदुंदुभि—देखो 'विजयडिंडिम' (रू. भे.)

विजयनंदन–सं. पु. [सं.] भागवतानुसार, अयोध्यापति इक्ष्वाकु के वंश में उत्पन्न राजा जय का नामान्तर।

विजयपंजर–स. पु. [स. विजयः+पञ्जर] विजय प्राप्ति हेतु पढ़ा जाने वाला स्तोत्र।

रू. भे.—बिजपंजर, बिजयपंजर, बिजैपंजर, विजपंजर, विजैपंजर।

विजयपताका–स. स्त्री. [स] विजय की सूचक फहराई जाने वाली ध्वजा या इसी का सूचक कोई चिन्ह।

विजयपरपटी–सं. स्त्री. [स विजयपर्पटी] वैद्यक मे, सग्रहणी रोग के लिए दी जाने वाली एक प्रकार की औषधि विशेष

विजयपूनम, विजयपूरणिमा–सं. स्त्री. [सं. विजयपूर्णिमा] विजयादशमी के बाद आने वाली पहली पूर्णिमा, जिस दिन बगाल मे लक्ष्मी का पूजन होता है। (पुराण)

विजयभैरव–स पु —वैद्यक मे, सब प्रकार के रोगो और दुर्बलता को दूर करने वाला एक प्रकार का रस।

विजयभैरवतेल–स पु.—वैद्यक मे, मालकगनी, अजवायन, काले जीरे, मेथी और तिल को पेर कर निकाला जाने वाला एक प्रकार का तेल विशेष, जो सब प्रकार के वायु रोगों का नाशक माना जाता है।

विजयमंड—देखो 'विजैमड' (रू. भे)

विजयमरदल–स. पु. [स विजयः+मर्द्दल] प्राचीन काल में होने वाला एक प्रकार का ढोल।

विजयमाळा, विजयमाला–स स्त्री. [स. विजयमाला] विजय प्राप्त करने वाले को पहनाई जाने वाली माला।

रू. भे.—बिजयमाळा, बिजैमाळा, विजैमाळा।

विजयमेरु–स. पु [स] सुमेरु पर्वत का एक नाम।

उ०—पूरब पच्छिम घात की, खड गिणीजै दोइ। विजयमेरु पूरब दिसै, पच्छि अचलमेरु जोइ। —ध. व. ग्रं.

विजययात्रा–स स्त्री. [स.] किसी पर किसी प्रकार की विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाने वाली यात्रा।

उ०······नीली रहरही इक्षुआडमडली, फूलिइ उज्ज्वल कास, दीसइ सतच्छद पुष्फविकास, करइं नरेंद्र विजययात्रा रभ।

—व. स.

रू. भे.—बिजययात्रा, बिजैयात्रा, विजयजात्रा बिजैजात्रा, विजैयात्रा।

विजयरत्नाकरि–स. स्त्री. [स.] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

विजयरस–स. पु. [स.] वैद्यक में एक प्रकार का रस विशेष जो पारे,

गंधक और सीसे के योग से बनता है और प्रायः अजीर्ण रोग मे दिया जाता है।

विजयरूपपदम–स पु [स विजयरूपपद] एक प्रकार का घोड़ा जिसके दो पैर सफेद व सिर मे तिलक होता है। (शा. हो.)

विजयलक्मी, विजयलखमी, विजयलछमी विजयलिखमी, विजयलिछमी–स स्त्री. [स विजयलक्ष्मी] एक देवी जो विजय की अधिष्ठात्री मानी जाती है।

रू भे –विजयलक्मी, विजयलखमी, विजयलछमी, विजयलिखमी, विजयलिछमी, बिजैलक्मी, बिजैलखमी, बिजैलछमी, बिजैलिखमी, बिजैलिछमी, विजैलक्मी, विजैलखमी, विजैलछमी, विजैलिखमी, विजैलिछमी।

विजयवसंत–स पु. [स] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनि विशेष (सगीत)

विजयसतमी—देखो 'विजयासप्तमी' (रू. भे.)

विजयसरसती, विजयसरस्वती–स. स्त्री [स. विजयसरस्वती] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (सगीत)

विजयसातम—देखो 'विजयासप्तमी' (रू. भे.)

विजयसामंत, विजयसारग–स. पु. [स.] कर्नाटकी पद्धति का एक राग विशेष। (सगीत)

विजयसार–सं. पु. [स] १ एक प्रकार का अत्युत्तम लोहा, जिससे तलवारें बनती है।

२ एक वृक्ष विशेष, जिसकी लकड़ी इमारत के काम आती है।

रू. भे.— विजयसार, बिजैसार, विजयस्वार, विजैस्वार, विजैसार।

विजयसाही–स पु —मारवाड राज्यान्तर्गत चलने वाला, जोधपुर के राजा विजयसिंह के द्वारा प्रचलित एक चादी का सिक्का विशेष। (मा म)

रू. भे –बिजयसाही, बिजैसाही, बीजैसाही, विजैसाहई, विजैसाही।

विजयसिद्धि–स स्त्री. [सं. विजयः+सिद्धी] विजय, जीत, सफलता।

विजयसील–सं. पु. [स. विजयशील] सदा जीतने वाला, हमेशा विजय प्राप्त करने वाला।

विजयसूर–स पु. [स.] एक सूर्यवशी राजा, जो चचु का प्रथम पुत्र था। (पुराण)

उ०—रोहिताम तणौ ह्वित चचुराय, तप सुत सुदेव तपभाग नाय। संभ्रम सुदेव नृप विजयसूर, पुत्र जास रुरुक तप तेज पूर।
—सू. प्र.

विजयश्री–सं. स्त्री. [सं. विजयश्री] १ कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (सगीत)

२ देखो 'विजयलक्ष्मी'

विजयहरि, विजयहरी, विजयहारी–स. पु.—सुदृढ़ एव सुरक्षित मोर्चा, शत्रुओ के लिए दुर्गम्य मोर्चा।

उ०—गढ कैलास जिम ऊचउ, मुरूई पौलि, सघर कपाट, लोहमय भोगल, विजयहरी तणी पद्धति, यत्र तणी सेणि, ढीकली तणी परपरा, खाई गढ,······। —व. स.

रू. भे —विजाहरी, विजहारी।

विजया–स. स्त्री [स.] १ गौतम की एक कन्या का नाम।

२ पार्वती की एक सखी, जिसे पार्वती का मानसपुत्र वीरक को लाने हेतु भेजा गया था। (पुराण)

३ दुर्गादेवी का एक नाम।

उ०—म कालिका सारदा ममया, त्रिपुरा तारणि तारा अनया, ओह सोह अखया अभया, आई अजया विजया उमया। —देवि.

४ यम की पत्नी का नाम।

५ हरडे, हर्रे।

६ सात प्रकार की हरड़े मे से एक प्रकार की हरड़े।

७ एक योगिनी।

८ दक्ष की एक कन्या का नाम।

९ वर्तमान अवसर्पिणी के दूसरे अर्हत् की माता का नाम।

१० श्रीकृष्ण के पहनने की एक माला।

११ भाग।

१२ दुर्गा देवी की एक सहचरी।

१३ एक विद्या विशेष, जो श्रीरामचन्द्र जी को महर्षि विश्वामित्र ने सिखाई थी।

१४ शल्य राजा की कन्या का नाम, जो पाण्डु पुत्र सहदेव की पत्नी और सुहोत्र की माता थी।

वि० वि०–इसके लिए मतैक्य नहीं है महाभारत के अनुसार यह मद्रदेश के द्युतिमत् राजा की कन्या थी और भागवत के अनुसार यह पर्वत राजा की कन्या थी।

१५ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम।

१६ सम्राट भुमन्यु की पत्नी और सुहोत्र की माता, जो दशार्ह राजा की कन्या थी।

१७ श्रीकृष्ण की एक माता का नाम।

१८ कश्मीर में स्थित एक पवित्र तीर्थ का नाम।

१९ एक शुभ मुहूर्त विशेष।

२० एक प्रकार का शमी वृक्ष।

२१ आठ वर्णो का एक वर्णिक वृत्त विशेष, जिसके अन्त में लघु और गुरु या नगण भी होते हैं।

२२ एक सम-मात्रिक छन्द विशेष, जिसके प्रत्येक चरण मे १०-१०

की यति पर ४० मात्राएं होती हैं और अंत में रगण भी होता है । मतान्तर से प्रत्येक चरण में १२, १२, १०, १० की यति से ४४ मात्राएं होती हैं ।

२३ देखो 'विजयादसमी'

२४ देखो 'विजयाएकादसी'

रू. भे.—बिजया, बिजिया, वज्जया

बिजयाएकादसी–स. स्त्री. [सं. विजयाएकादशी] १ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी ।

२ फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी ।

रू. भे.—विजयएकादसी ।

बिजयाणंद–स.पु [सं. विजयानन्द] संगीत के मुख्य साठ तालों में से एक ताल विशेष ।

रू. भे.—विजयानंद ।

बिजयादस, बिजयादसमी—स. स्त्री. [स. बिजयादशमी] १ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी ।

२ उक्त दशमी को मनाया जाने वाला पर्व जिसकी गणना हिन्दुओं के चार प्रसिद्ध त्यौहारों में की जाती है ।

वि० वि०—आश्विन शुक्ला दशमी को श्रवण का सहयोग होने से विजयादशमी होती है । यह पूर्वविद्धा निषिद्ध, परविद्धा शुद्ध तथा श्रवणयुक्त सूर्योदय व्यापिनी सर्वश्रेष्ठ होती है । यह हिन्दुओं, विशेषकर क्षत्रियों का बडा त्यौहार है । इसे नवरात्री या दशहरा के नाम से भी पुकारा जाता है और आश्विन शुक्ला प्रथमा से दशमी तक मनाया जाता है । इन दिनों देवी, दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की पूजा होती है । क्षत्रिय इस दिन देवी घोडे हाथी खड्ग, आदि की पूजा करते हैं और नीलकंठ पक्षी के दर्शन करते हैं और हिन्दू,दुर्गा आदि देवी के साथ अपने कुलदेवता की पूजा करते हैं और कहीं कहीं पर शमी वृक्ष की पूजा भी करते हैं । कहते है इस दिन श्री रामचंद्र ने लंकापति रावण को मार कर लंका- विजय की थी इसी लिए इसे विजयादशमी कहते हैं । और इसी दिन दुर्गा ने महिषासुर का वध कर विजय प्राप्त की थी इस लिए भी यह उत्सव मनाया जाता है । इस दिन को एक शुभमुहूर्त भी मानते हैं और इस दिन प्रारम्भ किया हुआ हर कार्य सिद्ध होता है । नवरात्रि के प्रथम दिन जौ या गेहूँ घरों में बो दिये जाते हैं । और इस तिथि को जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥' यह मंत्र पढ कर कान पर रखते हैं । इस दिन दश महाविद्याओं की पूजा होती है ।—घोड़ी, शमी, पुस्तक, लेखनी, अस्त्र, शस्त्र, आदि की भी पूजा करते हैं ।

रू. भे.—बिजयदस, बिजयदसमी, बिजयादस, बिजयादसमी, बिजैदस, बिजैदसमी, विजयदस, विजयदसमी, विजैदस, विजैदसमी, विजैदसम्मी विजैदस, विजैदसमी ।

बिजयानंद—देखो 'विजयाणंद' (रू. भे.)

बिजयाभखी—देखो 'विजियाभखी' (रू. भे.)

बिजयाभरणी–स. स्त्री. [सं.] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष । (संगीत)

बिजयारध–स. पु. [स विजयार्ध] एक पर्वत का नाम । (पुराण)

बिजयासप्तमी,बिजयासातम–सं.स्त्री. [स विजयासप्तमी] फलित ज्योतिष के अनुसार, किसी मास की, रविवार के दिन पडने वाली शुक्ल पक्ष की सप्तमी । इस दिन श्रीरामचन्द्र की पूजा की जाती है । (पुराण)

रू.भे —बिजयसप्तमी, बिजयसातम, बिजयासप्तमी, बिजयासातम, बिजैसप्तमी, बिजैसातम, विजयसप्तमी. विजयसातम, विजैसप्तमी, विजैसातम ।

बिजयी–वि०—जिसने विजय प्राप्त की हो, विजय प्राप्त करने वाला ।

बिजयु—देखो विजय' (रू भे.)

उ०—एतल ए पंडु नरिंदो ज्रुठिलो पाटि प्रतिठिउ ए । बंधवि ए बिजयु करेवि राय सवं बसि आणिया ए । —सालिभद्र सूरि

बिजयेस–स. पु [सं. विजय+ईश] १ शिव, महादेव ।

२ विजय के अधिष्ठाता देवता ।

बिजयोत्सव–स पु. [स विजय+उत्सव] आश्विन मास शुक्ल पक्ष की दशमी को मनाया जाने वाला उत्सव ।

बिजर–स. पु.—अनायुषा नामक राक्षसी का पुत्र और खर एव कालक नामक राक्षसों का पिता, एक राक्षस ।

रू भे –विज्वर ।

बिजरा–सं स्त्री. [स.] ब्रह्म पुराण के अनुसार ब्रह्मलोक की एक नदी ।

बिजराज–देखो 'व्रजराज' (रू. भे)

उ०—१ तूं हीज अकाज काज भगता री लाज तना, बिसरियो केम परो बिजराज बाज । आविम्यै अनत आज गजराज उबारिवा, निघ माथै गाज करै निपाइयो नाज । —पी. ग्र.

उ०—२ भूं रिज्यो मति कदेई भूधर, जोड़ लेलै राखै बिजराज । तूझ तणो निसदीह त्रीकमा, मुजरो पीर करै महाराज । —पी. ग्रं.

बिजळ—१ देखो 'बीजळा' (मह,. रू भे)

२ देखो 'बीजळी' (मह,. रू भे.)

बिजळड़ी—१ देखो 'बीजळा' (अल्पा,. रू. रू.)

२ देखो 'बीजळी' (अल्पा,. रू भे.)

बिजळी—देखो 'बीजळी' (रू. भे.) (अ. मा)

उ०—दरवाजो तूटण सूं किला में खळबळी माचगी। वेज ढ्रियां नाकाबंदी होवण री भी ही सो भीमडो बिजळी रै पळाका रै ज्यूं किलारै मायनैं वळियो। पण सिरै ड्योढी पूगतां पूगतां चांफेर सूं घेरीजग्यो। —अमर चूनड़ी

बिजहारी—देखो 'विजयहरी' (रू. भे)

उ०—गढ गरउ अनइ बिसमौ जीह तणी पाय पातालि पइठउ, पर-वतनइ स्रंग बइठउ, उच्चतर पोलि लोहमय कपाट, महाकाय भोगल, बिजहारी तणी पद्धति, यंत्र तणी स्रेणी, ढींकुली तणी परंपरा,...... । —व. स.

बिजांनु—स. पु. [सं. विजानु] तलवार चलाने के ३२ हाथों मे से एक।

बिजा—सं. स्त्री—विद्या।

बिजाई स. पु. [स. विजात] १ वंशज।

उ०—१ समरांमां संभावै बीजुजलो कलां माय सांमं, रैण अेक घोडा नांमं घावै असी रीत। न मावै फिरंगी हिंदूथान कीधो पाय-मांमं, आपनामं नाज राखो बिजाई 'अजीत' —नवलजी लालस

उ०—२ मिळं दताळां फवजा जोड़ै नेजाळां घटा ज्यूं मेघ, नेजाळां सपोडो हलै तेण धुरयाल। सचाळां छडाळां आभ छाजतो 'सवाईसींघ', गाजतो त्रबाला रूठो बिजाई 'गोपाळ' —नवलजी लालस

वि.—विजय प्राप्त करने वाला, जीतने वाला।

रू. भे.—बिजाई, वजाई।

बिजात—वि. [सं.] १ जिसके माता पिता की जाति अलग २ हो, वर्ण-संकर, दोगला।

२ जन्म लिया हुआ।

३ प्रत्येक चरण मे ५, ५, ४ के विश्राम से १४ मात्राओं का; सखी छन्द का एक भेद विशेष जिसके अन्त मे मगण या यगण होता है और पहली और आठवी मात्राएं लघु होती हैं।

बिजाता—सं. स्त्री. [सं] १ वह युवती जिसने हाल ही में बच्चे या बच्ची को जन्म दिया हो।

२ वर्णसंकर या दोगला की स्त्री।

बिजाति—सं. स्त्री [स.] १ भिन्न या दूसरी जाति।

उ०—१ नाही है के मध है सोई, ज्या को आदि अंत नहिं कोई। जाति बिजाति न भेदाभेद, कहा ग्यांन अग्यान की खेदा खेद। —स्रीसुखरामजी महाराज

२ देखो 'विजातीय'।

बिजातीय—वि. [स.] १ जो भिन्न या दूसरी जाति का हो।

२ पौष्टिक पदार्थों का अधिक सेवन करने पर शरीर मे अधिक बढ़ने वाला चर्बी आदि पदार्थ।

बिजावत—सं. पु.—राठौड़ों की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति।

बिजासण, बिजासणी—देखो 'मावलिया'।

उ०—अठै गुवाळ री माउ अणी नै धणो ई समजावै पण यो गुवाळ घर मांहि आवै नही। कहै सो आपणा तो घर मांहि बिजासण बैठी रहै है सो हू घर माहे आवु तो मोनै खाय जाय। —गांम रा धणी री वात

बिजिट—सं. स्त्री. [अ] १ भेंट, मुलाकात।

२ किसी चिकित्सक द्वारा किसी रोगी को देखने जाने का कार्य।

३ उक्त कार्य हेतु दी जाने वाली फीस।

बिजिटरसबुक—स. स्त्री [अं. विजिटर्स बुक] किसी संस्था की वह पुस्तक जिसमे वहां आने जाने वाले अपना नाम अथवा सम्मति लिख सकें।

बिजिटिंगकारड—स. पु. [अ. विजिटिंग कार्ड] किसी से मिलने जाने पर अपने आगमन की सूचना देने या परिचय देने का एक कार्ड जिस पर अपना नाम, पता, पद आदि छपे होते है।

बिजितास्व—सं. पु. [स विजिताश्व] राजा पृथु के पांच पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र।

वि. वि—राजा पृथु और अचि के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, जिसके शिखण्डिनी एव नभस्वती नामक दो पत्निया थी और शिखण्डिनी से पावक, पवमान और शुचि नामक तीन पुत्र और नभस्वती के गर्भ से हविर्धानि और मारीच नामक दो पुत्र हुवे थे। मतान्तर से हविर्धानि शिखण्डिनी के गर्भ मे उत्पन्न हुआ बताते हैं। इसने भी अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय किया और निन्यानवे अश्वमेध यज्ञ पूरे कर लिये। इससे इन्द्र को अपने पद की चिन्ता हुई और उसने अश्वमेधीय अश्व चुरा लिया। तब इसने इन्द्र से युद्ध कर उसे परास्त कर अश्व वापिस ले आया। ऐसा कई बार करने से इसे 'विजिताश्व' नाम प्राप्त हुआ। इन युद्धो से इन्द्र ने प्रसन्न हो कर इसे अन्तर्धान होने की विद्या सिखायी इससे इसे 'अन्तर्धान' नाम प्राप्त हुआ। इन्हे अग्नि देवता मानते हैं और वसिष्ठ के शाप से मनुष्य जन्म लिया ऐसा मानते हैं।

बिजिस्वरा—स. स्त्री. [स] भगवती का एक नाम विशेष।

बिजिनस, बिजिनिस, बिजिनेस—देखो 'बिजनस' (रू. भे.)

बिजियाभखी—स. पु.—शिव, महादेव।

रू. भे—विजयाभखी।

बिजुजळ, बिजुजळा, बिजुभळ, बिजुभळा—१ देखो 'बीजूभळ' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

बिजुळा—देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—केसरी सिंघ राव 'मालदे' कळोधर, थाटम्रां गुर सदा लग वडां वेळी। विचत्रसाह आलमी जालमी विजुळा, मरण मिळियै कियौ ताळ- मेळी। —माधोदास गाडण

बिजुळी-स. स्त्री.—१ एक देवी का नाम। (पौराणिक)

२ देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

३ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

बिजू—देखो 'बिज्जु' (रू. भे.)

उ०—कोडा भ्रतज काढिया, पिंड थाकौ आपांण। दुरसौ बिजू डम्फियौ, बैठ गयौ सुरतांण। —रंगरैळौ बीठू

बिजूजळ, बिजूजळा, बिजूभळ, बिजूभळा—देखो 'बीजूभळ' (रू. भे.)

(नां. डि. को)

उ०—१ रत खाळ रळ-तळ पालर प्रग्घळ, हो हु हुकळ थट्ट हुवै। वळकत बिजूजळ वीजक वहळ, ढोल त्रिमगळ वोम छुवै।

—गु. रू. बं.

उ०—२ सामठी धाक पड साबळांह, वळवळै धार बिजूजळांह। गजवाज गडो-थळ मड गुडत, निरलग अंग धड नीजुडत।

—गु. रू बं.

उ०—३ करै करिमाळ झटां पति काम, जळाहूळ 'राम'तणौ 'जगराम' बिजूजळ झाट करै जिण वार, सुरो 'अणदेस' तणौ' सिरदार।

—सू. प्र.

उ०—४ वाजै त्रबाळ सिंघू विखम दुमग हाक वाजै दळां। वाजियां 'अभौं' सिर विलंदखा, जळांबोळ विजूजळां। —बखतौ खिड़ियौ

बिजूदूहौ-सं. पु.—दूहै-छन्द का एक भेद विशेष, जिसमें ३ गुरु और ४२ लघु होते हैं।

उ०—बिजू नेत्रा सिव वदौ, मास दिवस अर मास। इण विधि छदौ आखियै, भणौ महा बुध भास। —पिंगळ सिरोमणि

वि. वि.—देखो 'विडाळ'।

बिजेत, बिजेता-वि —विजय प्राप्त करने वाला, जीतने वाला।

उ०—१ छळी विजति तत्तिकी, सुछति छोलती वहै। बिजेत नेत रेत पै, सजेत बोलती वहै।

—ऊ. का.

उ०—२ रिपुग्ग देत्य कंस सी, अजेत सुल्लती रहै। बिजेत वीर वंश की, बिजेत थल्लती वहै।

—ऊ. का.

उ०—३ श्रो तो सदा सियावर रो सगी, श्रो तो विस्व बिजेता बजरंगी। इण री किण ही पार न पायौ रे, हनुमत हरि मन भायौ रे।

—गी. रां.

बिजै—देखो 'विजय' (रू. भे.)

बिजैउच्छव, बिजैउच्छव, बिजैउछव, बिजैउछ्रव—देखो 'विजयोत्सव'।

बिजैकारी-वि.—विजय कराने वाला।

उ०—देवी कोमारी चामुंडा बिजैकारी, देवी कुबेरां भैरवी क्षेमकारी। देवी अगस मल्ल हुस्ती मयसं, देवी पख केकी गरुड घिरट पंखं। —देवि.

बिजैखार-स. पु [स. विजय+क्षार] १ विजयसार का क्षार निकाल कर बनाई गई औषधि।

२ देखो 'विजयसार' (रू. भे.) (अमरत)

बिजैजात्रा - देखो 'विजययात्रा' (रू. भे.)

बिजैदसम, बिजैदसमी, बिजैदसम्मी—देखो 'विजयादसमी' (रू. भे.)

उ०—श्राहनपुर दसरावौ थप्पै, जोसी तिलक मुहूरत अप्पै। बिजैदसम्मी होम करावै, विप्रा कन्ना वेद वचावै। —गु. रू. बं.

बिजैमंड-स. स्त्री. [स. विजय+मण्ड] विजय की शोभा।

रू. भे.—विजयमंड, बिजैमड, विजयमड।

बिजैमाळा - देखो 'विजयमाळा' (रू. भे.)

बिजैयात्रा —देखो 'विजययात्रा' (रू. भे.)

बिजैलक्ष्मी, बिजैलखमी, बिजैलछमी, बिजैलिखमी, बिजैलिछमी—देखो 'विजयलक्ष्मी' (रू. भे)

बिजैसक्षमी—देखो 'विजयासातम' (रू. भे.)

बिजैसाई—देखो 'विजयसाही' (रू. भे.)

उ०—जंडी खुराक व्हैडा ई करार। जांणौ ईज हो छिमटी सूं बिजैमाई रिपिया रा आकर मिटाय देता। —फुलवाड़ी

बिजैसातम - देखो 'विजयासातम' (रू. भे.)

बिजैसार—देखो 'विजयसार (रू. भे.)

बिजैसाही—देखो 'विजयसाही' (रू. भे.)

बिजोग-स. पु.—१ तप्त, गरम। * (डि. को.)

२ देखो 'बिजोग' (रू. भे.)

उ०—आठ दिस पुर ऊजड़ै, चडै तडै सब लोग। सझियौ गढ वकै भड़ै प्रज गांमडै बिजोग। —रा. रू.

३ देखो 'वियोग' (रू. भे.) (डि. को)

उ०—१ थारी वच्छ वाछु नहीं रे, जिण मात्र नो बिजोग तिण कारण माहरा डीकरा रे, विलस काम नै भोग रे। —जयवांणी

उ०—२ प्रसिद्ध बुद्धि सिद्धि निद्ध रिद्धि वृद्धि पूर ए, कलत्त पुत्त कित्ति वित्त वद्धतं सनूर ए। बिजोग सोग रोग विग्घ अग्घ सिग्घ घायक, प्रगट्ट देव नित्त मेव सेव पास नायक। —व. व. ग्रं

उ०—३ हूं सेवक थौ साहिबो हो, सदा रह्यो संजोग । कोइक म्हारा पाप सूं हो, उपज्यौ विसम बिजोग ।
—मी रां.

उ०—४ ढलता श्राधी रातड़ी, जागै श्रौर न लोग । कै तौ जागै सन जन, कै तिय पियै बिजोग । —श्रग्यात

उ०—५ कवर रै साम्ही मूंढो करनै रूखा सुर मे बोली—हकनाक बापड़ा जीव री देह रौ ठायौ छुडायौ, भोळा भाचरिया नै मां री बिजोग दियौ श्रर सूवर नै इण विध लोह सूं पूर करियौ ।
—फुलवाडी

उ० – ६ कामी तैं कूकर भलौ, रुति बिन रहै बिजोग । कामी नर के काम कौ, हरीया सदा संजोग । —श्रनुभववाणी

उ०—७ साचौ धणी व्हैतौ तौ बिणज रा लोभ मे लुगाई री श्रा माया छोडतौ भळा । काई श्रौ बिजोग देवण सारू ई वौ चवरी मे हाथ झाल श्रापरै लारै लायौ । —फुलवाडी

बिजोगई-क्रि वि —निमित्त, लिए ।

बिजोगण, बिजोगणी – देखो 'वियोगणी' (रू भे.)

उ०—१ जोबन पिणघट घट भर दोय, बिजोगण ऊभी श्रा पिणिहार डुबोवै घर सूरज घट श्रेक, सभाळै किम घण दूणौ भार ।
—साभ

उ०—२ जरै मनसा मथणी मथ जांण, करै कथणी कथ कै गुजराण । कुजीव कुमग कहां कुसळात, बिजोगण पीव सजोगण बात । —ऊ का

उ०—३ उत्तर श्राज स उत्तरइ, बाजइ लहर श्रसाधि । सजोगणी सोहामणइ, बिजोगणी श्रग दाधि । —ढो. मा.

बिजोगात—देखो 'वियोगात' (रू. भे)

बिजोगिण, बिजोगिणी, बिजोगिन, बिजोगिनी—देखो 'बियोगणी' (रू.भे.)

बिजोगी—देखो 'वियोगी' (रू. भे.)

बिजोरी-सं स्त्री —खजूर का फल या वृक्ष ।

उ०—सत्तम प्रहरै दिवस कै, धण जु वाडिया जाइ । श्राणी द्राख-बिजोरियां, घण छोलइ, प्रिउ खाइ । —ढो मा

बिजोरौ –देखो 'बिजौरौ' (रू भे.)

उ०—रसं माधुरै पी जभीरी बिजोरा, झुकै साल फूलां भारि झारा । सनी सी मधु दाख श्रनार सेवा, दियौ श्राणि लचै सुधा जाणि देवा । —रा. रू.

बिजोळियौ—देखो 'बीजोळियौ' (रू. भे.)

बिजोहा-सं. पु [स. विमोहा] प्रत्येक चरण मे दो रगण सहित छः वर्णों का एक छद विशेष । (र. ज. प्र)

रू. भे.—बिझोहा ।

बिज्ज—१ देखो 'बीजळी' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'बीजळा' (मह., रू. भे.)

बिज्जड़—देखो 'बीजळा' (मह., रू. भे.)

बिज्जमाल, बिज्जमाळा, बिज्जमालि, बिज्जमाली—देखो 'विद्युन्माली' (रू. भे.)

उ०—इद्र श्रछइ रहतू पुर राउ, बिज्जमालि तै लहुडउ भाउ । चपलु भणी नइ काढिउ राइ, रोसि चडिउ राखसपुरि जाइ ।
—सालिभद्र सूरि

बिज्जळ, बिज्जल—१ देखो 'बीजळा' (मह., (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ० —१ वपि श्रसह जळ सुख उसण बल्लभ, सूर कर हुइ सीतळ । उण किरण सिस निस जेम ग्रीखम, विखम हिम द्रुम बिज्जळ ।
—रा. रू.

उ०—२ प्रलय काल रिण मेघ प्रगट्टं, इत तल थल उदवट्टं । झलहल बिज्जल खडग झपट्टं, छुट्टा वाण श्राछट्टइ हो । —वि. कु.

बिज्जा—देखो 'विद्या' (रू. भे)

उ०—१ गुरु तक्क कव्व नाडय पमुह, बिज्जा वास पसिद्ध घर । परिहरवि श्रावि विहि पयड कह, पुहवि पससिजइ सुपरपरि ।
—ऐ. जै. का. स.

उ०—२ श्रहे कमि श्रागम वेद छद, नाटक गण लक्खण । पच वरिस बिज्जा विचार, भणि हूश्र वियक्खण ।
—ऐ. जै. का. स.

बिज्जादोस-सं. पु.—१ विद्या या सिद्धि द्वारा प्राप्त किये जाने वाले श्राहार पर लगने वाला दोष । (जैन)

२ विद्या या सिद्धि द्वारा रूप बदल लेने पर लगने वाला दोष ।
(जैन)

बिज्जाहर—देखो 'विद्याधर' (रू भे)

उ०—१ नमिर सुरासुर खयर राय किन्नर बिज्जाहर, मह्रुय राइ विराय माण पय पकय सुदर । महिमल महिमामेय मण वछिय दायक, जय जय थभण पासनाह भुवणत्तय नायग । —स. कु.

उ०—२ दुरयोधन चित्रंगदह; मेलहावी उहि पथि । बिज्जाहर रायह नमइ, दुर्योधनु लेउ सत्थि । —सालिभद्र सूरि

बिज्जु, बिज्जू – १ देखो 'बिज्जु' (रू भे)

२ देखो 'बीजळी' (रू भे.)

बिज्जूमाली-स पु. [स. विद्युन्माली] १ पश्चिम में स्थित एक पर्वत विशेष ।

उ०—श्राधं पुस्कर मे पूरब दिसं, मदर नामं मेरु तिहां वसं । पच्छिम बिज्जूमाली मेरु ए, इहा किण इतरौ नाम फेर ए ।
—घ. व. ग्र.

बिखूर–स. पु.—खजूर का पेड़ । (सभा)

बिजै—देखो 'विजय' (रू भे.)

उ०—राठोड कुंअर पक्खर रवद, कवण (क) ममवह करै । अमदाव छोड बिजै लई, कना राउ अरवद्द रै । —गु. रू ब.

बिजैदसम, बिजैदसमी—देखो 'विजयादसमी' (रू. भे)

उ०—देवी मनाई बिजैदसम, चतुरंग दळां चढियो भरणि । कह ताज मेर माझी, 'कमो, गयो माजि मेरां सरणि । —गु रू. ब

बिज्या–स स्त्री.—आर्या या गाहा छंद का एक भेद विशेष, जिसके प्रथम चरण में २३ दीर्घ वर्ण सहित ४६ मात्रायें और ११ ह्रस्व वर्ण सहित ११ मात्राऐं इस प्रकार कुल ५७ मात्राएँ होती हैं ।

—ल पि

बिझगिर, बिझगिरि–सं. पु —विंध्याचल पर्वत ।

उ०—घरि वीह मत्र जत्र चित धारगि, कर इलाज देवी वर कारणि । चव इम मुगी दियै वर चाहै, माला-देवी बिझगिर माहै ।

—सू. प्र.

बिझासणि, बिझासणी—१ देखो 'मावलियां'

२ देखो 'आवड'

बिझोहा—देखो 'विजोहा' (रू. भे)

उ०—दोड रगण गण देखिजै, पाय जेण मंप्रत्त । बिझोहा एही विगत्ति, नवा रामगुण तत । —पिं. प्र.

बिटंब—देखो 'बिटंब' (रू भे.)

उ०—१ जे कबहु स्रतक चलै, तो बीचि बिटब कोई ओर । जन हरिदास मूवा पछै, नही कुटुंब में ठोर । —ह. पु. वा.

उ०–२ मया करीनइ मूहनइ, दीधउ देस नीकाल । निगि क्षणिथी क्षीणु थयु, विरह बिटबइ व्याल । —मा. का प्र.

बिटंबण, बिटबणा, बिटबन, बिटंबना–स. स्त्री.—१ कष्ट, दुःख, पीडा ।

उ०—१ विरह बिटबन विधि घणी, मो मइं सहीय न जाय । मुझ मरवानुं सोहिलुं, वाडव म मारै, माय । —मा. का. प्र.

उ०—२ मयण सरीखइ माधवइ, चिंति लगाडी चाख । वली बिटबनतू करइ, वारु भई वैसाख । —मा का. प्र.

२ देखो 'बिडबना' (रू. भे.)

उ०—१ प्राणी सीत ज मम अनेमो, कीध बिटंबण कारण केसो । कहती कोय कुवेण केहेसो, रोह मदोवरि काय रहे सो ।

—सुरजनदास पूनियो

उ०—२ प्रियु मोरा अचरिज पाम्यउ राम, प्रियु मोरा अहो अहो काम बिटंबणा हो । प्रियु मोरा दृिव हु साक काम, प्रियु मोरा ध्यान सुकल हियडइ धरयउ हो । —स. कु.

उ०—३ चचल जीव रहइ नहीं जी, राचइ रमणी रूप । काम बिटबन सी कहूबी, तै तू जाणइ सरूप । —स. कु.

बिटंबी–वि.—१ दुःखी, पीडित ।

उ०—विरह बिटबी वीनवउं, सुणि किरणागर कूर । मेलिइं रासि बाधयु, तु किम चालइ सू ? —मा. का. प्र.

२ लपट ।

बिट–वि. [सं. विट] १ अधिक काम वासना रखने वाला, कामुक ।

२ वेश्याओ से सम्बन्ध रखने या उन्ही के साथ रहने वाला, लपट ।

उ०—वाणिजा वधू गो वाछ असइ बिट, चोर चकव विप्र तीरथ वेळ । सूर प्रगटि एतला समापिया, मिळियां विरह विरहिया मेळ ।

—वेलि

३ बहुत बड़ा धूर्त या चालाक ।

उ०—मोटा छोटा माछळा, आप भखै अणपार । बिट बाथी बांकम घणी, आप धरै अहंकार । —गजउद्धार

४ वह जो मैथुन करवाने का आदि हो ।

स.पु–१ साहित्य मे एक प्रकार के नाटक का नायक,जो विषयभोग मे अपनी सारी सम्पत्ति नष्ट कर किसी भोगविलासी राजा या धनवान व्यक्ति के साथ रह कर अपनी वासना भी मिटाता हो ।

२ नारगी का पेड ।

३ मल, विष्ठा ।

४ .एक प्रकार का वर्ग विशेष ।

उ०—१ नट बिट नाडी त्रोडणा, ति आवड त म वारि । धूती जाइ धूत को, उत्तिमनी उगारी । —मा. का. प्र.

उ०—२ नाचकर, भोजकर, कवीश्वर, करीस वेस्यादि वंत, योगि, भोगि, विरागी, नट, बिट, खुट, खरट, लाट, मीठा, जूगनू सिगार, वालहडा, रसिक'''। —सभा

रू भे.—विट, बिट, बिड ।

बिटक–स. पु. [स] १ आर्यावर्त्त के दक्षिण मे स्थित नर्मदा के किनारे का एक प्राचीन प्रदेश । (पुराण)

२ उक्त प्रदेश मे रहने वालो एक जाति विशेष ।

बिटचर–स. पु. [स. विट=विष्ठा+चर=खाने वाला] गडसूरि, ग्रामशूकर ।

रू भे —बिटचार ।

बिटणो, बिटबो–क्रि. अ.—आवेष्टित होना ।

उ०—तितरै चोर आया । सो तीन तो तरवार सु पाडीया नै इण भात लोह वायो, आगलै जाणीयो नहीं । पछै चोथो पेई वाळो नाठो, तिण नुं छूटो गेडो वाहो सु कडियां मांहै भागो । गेडो दोळो बिटाणो । —राव मालदे री वात

बिटणहार, हारौ (हारी), बिटणियौ—वि० ।
बिटिग्रोड़ौ, बिटियोड़ौ, बिट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिटीजणौ, बिटीजबौ—कर्म वा० ।

बिटप-सं. पु. [स. विटपः] १ वृक्ष, पेड़। (अ. मा; नां. मा.)

उ०—सिल बिकट फरस सुखेण रै, तिरसूल ग्यायक तेण रै। भिडपाल गजगव बिटप भड़, घिख गदा वमीखण ढवरधर। —र. रू.

२ पेड़ या लता की शाखा।

उ०—बिस्णु रूप अवतार परगट पोहमी में आए, सतजुग बिछरै जीव उनकूं ग्रांन चिताए। बिस्णु धरम परगट कियौ ग्रान धरम बिटप बिहंडम, संभरथळ परगट सही जोत रूप जग मडनं। —कोल्हजी चारण

३ अण्डकोष का मध्यस्थ परदा।

रू. भे.—बिटप।

बिटपतटी-स. स्त्री.—कुंज गली। (अ. मा.)

बिटपी-सं. पु. [स. विटपिन्] १ जिस वृक्ष में नई शाखायें या कोपलें निकली हों।

२ पेड़, वृक्ष। (ह. नां. मा.)

उ०—छिति रजपूतन छाइ रचे, घर घर बितरन रन। जिनमें बहु रान जिम, बढत बहु जिम बिटपी बन। —ब. भा.

३ बन, जंगल।

४ बट वृक्ष।

५ अंजीर का वृक्ष।

रू. भे.—बिटपी।

बिटब-सं. पु.—प्रपंच, अफंडा।

उ०—धरीया भेख भगति सुं भागा, और भरम अधकेरा लागा। पेम भगति का कठण पंडा, बिटब न कोई मावै फंडा। —अनुभववाणी

बिटभूत-स. पु. [सं] वरुण की सभा मे रहकर उनकी उपासना करने वाले एक असुर का नाम।

बिटळ, बिटल-वि.—१ बिगड़ा हुआ, विकार युक्त।

२ पतित, पथ भ्रष्ट, भ्रष्ट।

उ०-१ भक्त संन्यासी सेवड़ा ए, लम्या परिग्रह री लार के। बिटल हुवा घणा ए, गया जमारौ हार के। —जयवाणी

उ०—२ अकबर कुटिल अनीत, और बिटळ सिर आदरै। रघुकुल उत्तम रीत, पाळै रांण 'प्रतापसी'। —दुरसौ आढौ

३ व्यभिचारी।

उ०—ते रात्रेचर प्रति बिटल, बिकल वदन बिकराल। बिखम बचन मुख बोलतौ, रूठो आंखि कराल। —वि. कु.

४ दुष्ट।

उ०—वेलि बिहूणां पत्र परि, हूं हूइ छउं हीण। बिटल रहि रे वेगलु, आगलि थिका अमीण। —मा. कां. प्र.

५ बिगड़ा हुआ, बिगड़ैल।

उ०—१ अबै लोक हुससि कंहसी सो ठकुरांणी बिटळ है सो क्याल तमासो देखता थकां ठाकुर नै माहै बुलाय लीयो है आप पधारजै। —राजा रा गुर रा बेटा री वात

उ०-२ परभातां हरि पैल, बगडावत गावै बिटळ। चूंथै काती छैल, मैल जगत रौ मोतिया। —रायसिंह सादू

रू. भे.—बिटळ।

अल्पा.—बिटळौ, बिटळियौ, बिटळौ, बियटल।

बिटळणौ, बिटळबौ-क्रि. अ.—१ विचलित होना, अस्थिर होना।

उ०—अर उठीनै मगरै ढळता ई अमवार रौ मन बिटळियौ। सोच्यौ कंडो अबूझपणौ करियौ। हाथै आयोड़ी सपत नै ठुकराय दी। बापडी डोकरी तौ नावधाव की नी पूछ्या। —फुलवाड़ी

२ मर्यादा रहित होना, कुनीतिपूर्ण होना।

उ०—अर बात नै सावळ समझता ई राजाजी घाटी रो लटको करता कंवण लागा—तो यूं बता, सावळ समझाया बिना कीकर समझ मे आवै। देखो जमानो बिटळियौ। सगो बेटो ई मां रै साथै धोखो करग्यो। —फुलवाड़ी

३ पथ भ्रष्ट होना, धर्मच्युत होना।

बिटळणहार, हारौ (हारी), बिटळणियौ—वि०।
बिटळिग्रोड़ौ, बिटळियोड़ौ, बिटळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिटळीजणौ, बिटळीजबौ—भाव वा०।
बटळणौ, बटळबौ, बिटळणौ, बिटळबौ, बटळणौ, वटळबौ, बिटलणौ, बिटलबौ—रू० भे०।

बिटलणौ, बिटलबौ—देखो 'बिटळणौ, बिटळबौ' (रू. भे.)

बिटलणहार, हारौ (हारी), बिटलणियौ—वि०।
बिटलिग्रोड़ौ, बिटलियोड़ौ, बिटल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिटलीजणौ, बिटलीजबौ—भाव वा०।

बिटळाणौ, बिटळाबौ-क्रि. स. (बिटळणौ, बिटळबौ क्रिया का प्रे. रू.)

१ विचलित करना या कराना, अस्थिर करना या कराना।

२ मर्यादारहित होने को प्रेरित करना या कराना, कुनीतिपूर्ण होने को प्रेरित करना या कराना।

३ पथ भ्रष्ट होने को प्रेरित करना या कराना, धर्मच्युत होने को प्रेरित करना या करना।

बिटळाणहार, हारौ (हारी), बिटळाणियौ—वि०।
बिटळायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिटळाईजणौ, बिटळाईजबौ—कर्म वा०।
बिटळाणौ, बिटळाबौ, बिटळावणौ, बिटळावबौ, बिटळोवणौ, बिटळावबौ—रू० भे०।

बिटळायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विचलित किया या कराया हुआ, अस्थिर किया या कराया हुआ. २ मर्यादारहित होने को प्रेरित किया या कराया हुआ, कुनीतिपूर्ण होने को प्रेरित किया या कराया हुआ. ३ पथभ्रष्ट होने को प्रेरित किया या कराया हुआ, धर्मच्युत होने को प्रेरित किया या कराया हुआ।
(स्त्री. बिटळायोड़ी)

बिटळावणौ, बिटळावबौ—देखो 'बिटळाणौ, बिटळाबौ' (रू. भे.)
बिटळावणहार, हारौ (हारी), बिटळावणियौ—वि०।
बिटळाविप्रोड़ौ, बिटळावियोड़ौ, बिटळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिटळावीजणौ, बिटळावीजबौ—कर्म वा०।

बिटळावियोड़ौ—देखो 'बिटळायोडौ' (रू भे.)
(स्त्री. बिटळावियोड़ी)

बिटळियोड़ौ-भू का कृ.—१ विचलित हुवा हुआ, अस्थिर हुवा हुआ २ मर्यादारहित हुवा हुआ, कुनीतिपूर्ण हुवा हुआ ३ पथभ्रष्ट हुवा हुआ, धर्मच्युत हुवा हुआ।
(स्त्री बिटळियोडी)

बिटलियोडौ - देखो 'बिटळियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री बिटलियोडी)

बिटळियौ, बिटळौ—देखो 'बिटळ' (रू. भे)

बिटाणौ, बिटाबौ-क्रि अ.—सिकुडना।
उ०—तेह पुरुस जरजर हुवौ जी, सिथिल पडी छै जी काय। लोलरी पडै सरीर मे जी, चामडी हाड बिटाय। —जयवाणी
बिटाणहार, हारौ (हारी), बिटाणियौ—वि०।
बिटायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिटाईजणौ, बिटाईजबौ—भाव वा०।

बिटायोड़ौ-भू का. कृ.—सिकुडा हुआ।
(स्त्री बिटायोड़ी)

बिटाळण, बिटाळणौ-वि.—१ लज्जित करने वाला, कलकित करने वाला।
उ०—सीहणि हेकौ सीह जणि, छापरि मडै आळि दूध बिटाळण कापुरस, बोहळा जणै सियाळि। —हा. झा.
२ भ्रष्ट करने वाला।

बिटाळणौ, बिटाळबौ-क्रि. स.—१ विचलित करना, अस्थिर करना।
उ०—वीरम चित बिटाळियौ, उलटी मत आंणी। सात हजारह साढियां, दिन हेक दगांणी। आवै उण री औठियां, कळ कूक कराणी। ध्रीगा ध्रीगा ढोलकी, सहनाण वजांणी। —वी. मा.
२ पथ भ्रष्ट करना, धर्मच्युत करना।
उ०—लाजइ राजगोत्र अहिठांण, लाजइ चाचिगदे चहूंआंण। हूं ता नही बिटाळ आप, हिव लाजइ कान्हडदे बाप। —कां. दे. प्र.
३ कलकित करना।
४ बदनाम करना, निन्दित करना।
बिटाळणहार, हारौ (हारी), बिटाळणियौ—वि०।
बिटाळिप्रोड़ौ, बिटाळियोड़ौ, बिटाळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिटाळीजणौ, बीटाळीजबौ—कर्म वा०।
बटाळणौ, बटाळबौ, बिटाळणौ, बिटाळबौ, बटाळणौ, बटाळबौ, बिटालणौ, बिटालबौ, बिट्टालणौ, बिट्टालबौ—रू० भे०।

बिटालणौ बिटालबौ—देखो 'बिटाळणौ बिटाळबौ' (रू. भे.)
उ०—१ सइ हिंदू किया तुरक, विप्र तो मूल बिटाल्या। वणिकै गइ विगति, राक करि लंगरि राल्या। —स. कु.
उ०—२ पिण हु सीलवती सती रे हा, केम बिटालुं देह। जिम तिम करी ए भोलवौ रे हा, राख्यौ सील अभग। —वि. कु.
उ०— ३ दिवस कित लेकै गय, गोखै बेठौ भूप। मल भूखित क्रसकाय मुनि, दीठौ एहवौ रूप। सील वयण गयौ वीसरी, सेवक नै कहै राय। नगर बिटाल्यौ इवडै, काढौ परौ धकाय।—स्रीपालरास
बिटालणहार, हारौ (हारी) बिटालणियौ—वि०।
बिटालिप्रोड़ौ, बिटालियोड़ौ, बिटाल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिटालीजणौ, बिटालीजबौ—कर्म वा०।

बिटाळियोड़ौ-भू का कृ.—१ विचलित किया हुआ, अस्थिर किया हुआ. २ पथभ्रष्ट किया हुआ, धर्मच्युत किया हुआ. ३ कलकित किया हुआ ४ बदनाम किया हुआ, निन्दित किया हुआ।
(स्त्री. बिटाळियोडी)

बिटालियोडौ—देखो 'बिटाळियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री बिटालियोडी)

बिटाळौ-वि.—देखो 'बटाळौ' (रू भे)
(स्त्री बिटाळी)

बिटियोड़ौ-भू का. कृ.—आवेष्टित हुवा हुआ।
(स्त्री. बिटियोडी)

बिटोप-सं. पु.—रण क्षेत्र मे सिर पर धारण किया जाने वाला लोह का टोप।
उ०— जिणसाल जुआंण करत जरादी, जुसण बाधे जम्मजडा।

हद स्रोप विटोप रगावळि हाथळ, सूमात्रा करि सिद्ध खडा ।
—गु. रू. ब

विट्टाळणो, विट्टाळबो—देखो 'विटाळणो, विटाळबो' (रू. भे) (उ. र)

विट्टाळणहार, हारो (हारी), विट्टाळणियो—वि० ।

विट्टाळिओड़ो, विट्टाळियोड़ो, विट्टाळयोड़ो—भू० का० कृ० ।

विट्टाळीजणो, विट्टाळीजबो—कर्म वा० ।

विट्टाळियोड़ो—देखो 'विटाळियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री विट्टाळियोडी)

विट्ठल-सं पु —१ विष्णु की एक मूर्ति का नाम जो दक्षिणी भारत मे स्थित है ।

२ ईश्वर, परमेश्वर ।

३ श्री कृष्ण ।

रू. भे विट्ठळ, बीठळ, वीठ्ठळ, विठळ ।

अल्पा —विट्ठळो, विट्ठलो ।

मह —विठळेसवर, विठळेस्वर ।

विट्ठलनाथ, विट्ठलनाथ-स पु —१ भगवान श्री विष्णु का नाम ।

२ पुष्टि मार्ग के प्रथम उत्तराधिकारी एव 'दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता' तथा 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' के रचयिता, प्रसिद्ध वैष्णवाचार्य वल्लभाचार्य के पुत्र ।

रू. भे.—बीठळनाथ, वीठळनाथ ।

विट्ठळो, विट्ठलो—देखो 'विट्ठल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वदरी माहारा विट्ठला ! का सिर कापिउ राहु ? इद गलिउ रहितु उदरि, तु मुझ देत न दाहु । —मा का प्र.

विठळ—देखो 'विट्ठल' (रू भे)

उ०—ए जो पाडव थया भमेळा, विठळ धाव तो जिमी वेळा ।
—सिवदास बारहठ

विठळेसवर, विठळेस्वर—देखो 'विट्ठल' (मह , रू भे) (श्र. मा)

विठायत-स. पु —बैठन का स्थान, बैठक ।

उ०—हुवै चारमगळा, नाद सुर हुवै अखाडा, हरख विठायत हुवै हुवै दरबार भूजाळा । हय हक लजागडा, हुवै श्रोछाह अमला, हुवै वाग रूपगा, हुवै सिणगार महला । —वखतो खिड़ियो

विडग, विडगक-स पु. [स वितुण्ड] १ अश्व, घोडा ।
(अ. मा., ना डि को)

उ०—१ धोळै दिन वागा धकै, तोलै कुंत खडग्ग । आम्हा साम्हा आहुडै, विडग उपाडै वग्ग । —रा रू

उ०—२ पाच सोबायता गिळै ऊमो सुपह, विरोळै धोकळ करै वाहा । विडंग आदेमियो दळै बहळायता, सार आदेमियो पातसाहा ।
—ठाकर हरनाथसिंघ करमसोत रो गीत

उ०—३ गई धवि कोध मळाहळ जागि, उभै बच छूटि भळाहळ आगि । विडगक झाळि पवन्निय वाग, मळाहळ सेल ग्रहै मध्य भाग । —सू. प्र.

उ०—४ छछवा मद रा छाकिया, रहो आछा सिरदार । विडंगां चढीया वीर बळ, लडगा आया लार । —पना

२ ऊट । (ह ना मा)

उ०—तुरत अेक खरचै रतन, लगस तोड लडग । अभग भूप उबारा, वड गज बाज विडंग ।
—कल्याणसिंघ नगराबोत वाढेल री वात

३ वायविडग नामक एक जडी विशेष ।

वि —१ मस्त, उन्मत्त ।

२ बेपरवाह निशक ।

३ आजाद, स्वतत्र ।

४ उदासीन ।

५ वीर, बहादुर ।

रू. भे.—बडगी, विडग, विडंगि, विडगी, विडगि, विडगी, विराग ।

मह —बडग, विडगाळ ।

अल्पा —विडगो ।

विडगळी-स. स्त्री —गाडी के अग्र भाग (ऊध) से लगे और लटकते हुए वे दो लम्बे लकडी के डडो मे से एक जो जमीन पर लगकर गाडी को जमीन से ऊची रखते हैं ।

विडगाळ-स. स्त्री.—१ घोडी ।

उ०—धर्मै फेट औ मोरा सू सेल धोवै, जठी वाग वाळै तठी 'पाल' जोवै । विडगाळ झाकै करै आठ वाढा, चलै वायरै दोट स मेघ छाठा ।
— पा प्र.

२ देखो 'विडग' (मह , रू. भे)

विडगि, विडगी देखो 'विडग' (रू. भे.)

विडगो—देखो 'विडग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—भला विडगा निरां फोजा वणावो, भला आदमा दळ मुसा अणावो । भला चंचळा ऊपरा भीर धाडो, भला दाणवा दिसै वाग उपाडो । —पी ग्रं

विडब-स पु [स विडब, विडम्ब] १ नकल ।

२ कष्ट, पीडा, सन्ताप ।

३ हसी, उडाने की क्रिया ।

रू भे - बिडब ।

विडंबक-वि [स.] १ समान अनुकरण करने वाला, नकल करने वाला ।

२ अपमानित करने या निन्दा करने के उद्देश्य से किसी की नकल करने वाला।

३ हंसी उड़ाने वाला।

४ कष्ट देने वाला, सन्ताप देने वाला।

रू. भे.—बिडबक।

बिडबणो, बिडबबो–क्रि. स.—१ किसी के चाल-ढाल की नकल उतारना।

२ चिढाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल उतारना।

३ उपहास करना, हंसी-मजाक करना।

४ प्रपंच या जाल फैलाना।

५ उद्वेग या दुःख उत्पन्न करना।

६ वेष बदलना।

उ०—१ मत्स्यदेसि आई नइ रमउ, ए तेरमउ वरसु निगमउ। य्या वइराटह राय भ्रमर्थानि, वेस बिडंब्या नीय अभिमानी।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ राइ बोलावि बहू हिडब, अम्हि वसीसइ वेस विडबि। तुम्हि सिधावउ तायह राजि, समरी आवे अम्हउ काजि।
—सालिभद्र सूरि

बिडंबणहार, हारौ (हारी), बिडबणियौ—वि०।

बिडबियोड़ौ, बिडबियोडौ बिडब्योडौ—भू० का० कृ०।

बिडबीजणौ, बिडबीजबौ—कर्म वा०।

बिडंबन, बिडबना–सं. स्त्री. [स० बिडंबन, विडम्बनम्, विडम्बना]

१ किसी के चाल ढाल की नकल उतारने की क्रिया।

२ चिढाने या अपमानित करने के उद्देश्य से किसी की नकल करने की क्रिया।

३ उपहास, हंसी-मजाक।

४ प्रपच, जजाल।

५ उद्वेग, दुःख।

रू भे—बिडंबना, बिटबण, विटबणा, विटबन, विटबना।

बिडंबियोडौ–भू का. कृ.—१ किसी के चाल-ढाल की नकल उतारा हुआ. २ चिढाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल उतारा हुआ. ३ उपहास किया हुआ, हंसी-मजाक किया हुआ. ४ प्रपंच या जाल फैलाया हुआ. ५ उद्वेग या दुःख सपन्न किया हुआ. ६ वेष बदला हुआ।

(स्त्री बिडबियोडी)

बिडंबी–वि [स विडम्बिन्] १ किसी के चाल-ढाल की नकल उतारने वाला।

चिढाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल करने वाला।

३ हंसी उड़ाने वाला, उपहास करने वाला।

बिड—देखो 'बिड' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा)

उ०—१ असम विसारया बिड भज्या, विचार न जोया।
—केसोदास गाडण

उ०—२ अठै पना बोली अै तो पान को बीडो छै, रखावस्यो ही। मन का मनोरथ हुवा थका, बधाइ पावसो हीज। खवास आय कवर ने हकीकत कही। बावना चनण के बिडं, अैहै रूप मिलजै तो सही।
—पना

बिडओडा—देखो 'बिहूजा' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

बिडणो, बिडबौ—देखो 'बिडणौ, बिडबौ' (रू. भे.)

बिडणहार, हारौ (हारी), बिडणियौ—वि०।

बिडियोड़ौ, बिडियोडौ, बिड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिडीजणौ, बिडीजबौ—भाव वा०।

बिडद—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—होइ लोह गोला मुगल, दोला जोर जुड़िया जंग। हैंवरा गलि गज गाहु बांधे रह्या बिडद अभग।
—प. ब. चौ.

बिडदड़ी—देखो 'विडदड़ी' (रू भे)

बिडदवड़ी—देखो 'बिड़दवडी' (रू. भे.)

बिडदविनायक—देखो 'विडदविनायक' (रू भे.)

बिडदाव—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

बिडदावळ, बिडदावळी—देखो 'विरुदावळी' (रू भे.)

बिडरणो, बिडरबौ–क्रि अ.—१ क्रोध होना, गुस्सा होना।

२ नाश होना, नष्ट होना।

३ डरना, भयभीत होना।

उ०—बिडरी असज 'विजौ' थियौ वांसै, वाजै हाक थई विकरोळ। वाला वालणहार न चूकौ, खत्रवट लगवाड़ी खेसोल।
—मेंगसी

बिडरणहार, हारौ (हारी), बिडरणियौ—वि०।

बिडरियोड़ौ, बिडरियोड़ौ, बिडरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिडरीजणौ, बिडरीजबौ—भाव वा०।

बिडरणौ, बिडरबौ—रू० भे०।

बिडराणो, बिडराबौ–क्रि. स—डराना, भयभीत करना।

उ०—१ रोवत-कूकत धूजी माताजी रै गेया, माता लै धूजी नै कंठ लगाया। काई काई रे धूजी तनै कुण रुसायो, काई काई रे धूजी तनै कुण बिडरायौ।
—लो. गी.

उ०—२ मनै म्हारा पिताजी गोद खेलायौ, मनै म्हारी माई-मा बिडरायौ। तै नहिं भजियौ वाला मैं नहिं भजियौ, भजिया बिना सुख कांय सू होवै।
—लो. गी.

बिडराणहार, हारौ (हारी), बिडराणियौ—वि०।

बिडरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिडराईजणो, बिडराईजबो—कर्म वा० ।

बिडराणो, बिडराबो, बिडरावणो, बिडरावबो, बिडरावणो, बिडरावबो—रू० भे० ।

बिडरायोड़ो–भू. का. कृ —डराया हुआ, भयभीत किया हुआ ।

(स्त्री बिडरायोडी)

बिडरावणो, बिडरावबो—देखो' बिडराणो, बिडराबो' (रू. भे)

बिडरावणहार, हारो (हारी), बिडरावणियो—वि. ।

बिडराविप्रोड़ो, बिडरावियोड़ो, बिडराव्योड़ो—भू. का. कृ. ।

बिडरावीजणो, बिडरावीजबो—कर्म वा. ।

बिडरावियोड़ो—देखो 'बिडारायोडो' (रू.भे.)

(स्त्री. बिडरावियोडी)

बिडरियोड़ो- भू.का.कृ.—१. क्रुद्ध हुवा हुआ, गुस्सा हुवा हुआ. २. डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ. ३ नष्ट हुवा हुआ ।

(स्त्री. बिडरियोडी)

बिडरी–वि.—१. कायर, डरपोक ।

२. दुखी, व्याकुल ।

रू भे.—बिडरी

बिडरूप–वि.—१ कुरूप, बदसूरत, सुन्दरता-रहित ।

उ०–१ बादळ सबसू पैं'ला सूवटा रा पीजरा रै गोडै गियो । सूवटा उणनै कागलां सूं ई बत्ता **बिडरूप** निगै आया । आखी गवाडी रो भळाको दियो । की चीज दाय नी आई ।

—फुलवाड़ी

उ०–२ उण ठेलमठेल मेळा रै सागै बादळ राज-दरबार मे पूगो जणा राजाजी कोजी अर **बिडरूप** लुगाया री परख करण मे मगन हा । हेड री हेड ऊभी ही । —फुलवाडी

उ०—३ वानै खुद हाथां लगतगाय बारै काढी । पछै डावडिया नै कह्यो कै सगळी **बिडरूप** लुगाया नै राज-मैल सूं बारै लमड दै ।

—फुलवाडी

२ भयकर, भयावह, डरावना ।

उ०—१ वा दो तीन वेळा मासी रै मूडा साम्ही जोयो तो उणनै भ्रेडो लखायो जाणै उणरी आम्या होठा माथै चिप्योड़ी व्है ज्यूं, कान आपरी ठायो छोड लिलाड माथै जुडग्या अर नाक ठोडी रै हेटै लटूमै । इण भात मासी रो उणियारो विकत अर **बिडरूप** क्यू व्हैगो ? —फुलवाड़ी

उ०—२ **बिडरूप** वर्ने असि चढि क्रुबाणि, जाणिया प्रेत रणखेत जाणि । दरयाव रूप हूं कोस दोय, जगमुकट कीध डेरास जोय ।

—सू. प्र.

रू. भे.—बिडरूप, बिडरूपी, बीरूप, वडरूप, विडरूपी, ।

बिडरूपता–सं. स्त्री.—१ कुरूपता, बदसूरती ।

उ०—तद काली मासी हसनै कैवण लागी—बेटी, श्रो कुदरत रो नेम के आटो ई रूपाळी चीज मूं मोह करै अर **बिडरूपता** सू चिमकै ।

—फुलवाडी

२. भयानकता, भयकरता ।

उ०— निपट अबूझ अर अग्यानी व्हैता थका ई बेटा नै थारै रूप री परख है अर वो म्हारी **बिडरूपता** सू डरपै । —फुलवाडी

बिडरूपी—देखो 'बिडरूप' (रू. भे.)

बिडलूंण, बिडलूण–स. पु. [सं. विडलवण] एक प्रकार का सांचर नामक नमक । (अमरत) (उ. र.)

बिडलो—देखो 'बिडलो' (रू. भे.)

बिडस–सं. पु. [स. वडिश] मछली फसाने का यंत्र विशेष । (प्र. मा)

रू. भे.—वडस ।

बिडांण—देखो 'विड' (१) (रू. भे.)

उ०—चित बाल डरघो तक देख मही, मिळियो सिधराव **बिडांण** मही, अण लेसिय जोगिय माग भगां, पडियो झरडी डर दोड पगां । —पा. प्र.

बिडांणो–वि. (स्त्री. विडाणी) १ भयकर, भयावह ।

२ पराया, दूसरो का ।

उ०—१ आखडिया डबर हुई, नयण गमाया रोय । तै साजण परदेसमइ, रह्या **बिडांणा** होय । —ढो मा.

उ०—२ सारा **बिडांणा** हिव हूवा, जासी हमारा सीम वै । सीम घणारा हूंचीया, अब आया मूझ चोर बै । —रीसालू री बात

उ०—३ राम नाम निस दिन भजै, तजो **बिडांणी** तात । जनहरिया नर देह को, ओसर बीतो जात । —अनुभववाणी

२ नाशवान ।

उ०—गाफल मूढ न चेतिया, श्रा देह **बिडांणी** ।

— केसोदास गाडण

३ अन्य ।

उ०—कता फिरज्यो एकला, किसा **बिडांणा** साथि । थारी साथी तीन जण, हियो कटारि हाथि । —जखडा मुखडा भाटी री बात

४ दुश्मन की, शत्रु की ।

उ०—१ सादूलो आपा समो, बियो न कोय गिणत । हाक **बिडांणी** किम सहै, घण गाजियै मरत । —हा झा.

उ०—२ खहर गमै व्रत दुज्जड़ा, सहर करै दहवाट । आया थाणा 'अजन' रा, लूटै **बिडांणा** राट । —रा. रू.

रू. भे.—बिडाणो, विडाणो, विराणो ।

बिडांमण–वि.—भयकर, भयावह ।

उ०—रेवतां बाजिया पोड़ रहक, धराधर धुजीय कोम धड़क। बिडांमण ऊवर दीह विचाळ, मिळै निस भाद्रव नी मेघमाळ।

—गो. रू.

बिडार-सं. पु.—नाश, सहार।

वि—नाश करने वाला, सहार करने वाला।

उ०—प्रेकरण पसर तखत बै ऊपर, हींसल मला मनाथो हार। पगी तरणा वाजिया प्रथळा, वडै दुरंग सिर राय बिडार।—द. दा.

बिडारक-स. पु.—बिल्ली, बिडाल। (बं. भा.)

वि.—नाश करने वाला, सहार करने वाला।

बिडारणो, बिडारबो-क्रि. स—१. चीरना, फाडना।

उ०—करकै तरवार ग्रहै हिरणाकुस, मूढ निरोस निवारमुडै। सुत कै बळ एक मुरार तणो सज, थभ बिडार बिलार थई। —भगतमाळ

२ नाश करना, ध्वस करना, मिटाना।

उ०—१ तौ पिरण ग्रापणी उकति सार, असुरा बिडार, धूमर सघार, चड मुड चगाळ, रगतबीज, खंगाळ सम निसम सहारण, भारथ खग खेरण, तिण री वखाण देवी दीवाण, सुकवि कहै सुणावै, परम मन वछित पावै। —मा. वचनिक

उ०—२ जंमल कारण मड जुध, वड सेन बिडारै। गिनका कीर पठावगी, वैकुठ दवारै। —भगतमळ

उ०—३ निय निय तेज सुरा तन नीसर, मोहण रूप तेज ईस मुनेसर। अप्रम सुज तेज प्रगट धुर आणण, विसन तेज भुज दैयत बिडारण। —मा वचनिका

उ०—४ रिणमालोत कहै रिण हथा, प्रचड तियागी बोल इसो, जूह बिडार किसौ जीव-रखो, केहर हथा साथ किसो। —द दा.

उ०—५ प्रति दिन मंगळ गीत, देवता तणा गुवावै। विघन बिडारण काज, बिनायक नूत बुलावै। —दसदेव

ऊ०—६ एकलड गुरुड पन्नग स्वाइ, सीह एक गज ना सइ घाइ। पारथ एक दल कोडि बिडारइ, ईणह् सिउ को नवि मलह अखाडइ। —सालिसूरि

३ निवारण करना, मिटाना।

उ०—१ हरीया हसती दत सुं। तोडै कोट किवार। साध बिडारै सबद सु, भरम करम का डार। —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया आजं क्यार कू। हमती मातो मद्। साध बिडारै भरम कु सो रातौ अनहद। —अनुभववाणी

४ बर्बाद करना, बिगाड़ना।

उ०—मीरा नै रांणाजी बरजै, मतना जन्म बिडारै। थै सगत साध की सीख्या, मत आवो म्हैल हमारै। —मीरा

५ मारना।

उ०—१ काठ कांण करवत्त, वट किय दत बिहारै। पछट वीर भुज पाण, चीर जुरसंध बिडारै। —रा. रू.

उ०—२ देवी दसरथ रुप लवण बिडारी, देवी लव्वण रुप पितु मात तारी। देवी केकयी रूप तै कूड कीधा, देवी राम रै रुप बनवास लीधा। —देवि.

उ०—३ सिहमल सिलकिया करमट कूबिया, कटका हुई ज हालौहाल। सेखा दुरजनसाल समोभरम, रोपो पग बिडारण माल। —अमरसिह राठौड री बात

६ तोड़ना।

उ०—१ करीउ प्रतिग्या चडीउ भूफि जयद्रथु रणि पाडइ। भूरिस्रवा नउ तीरण समइ सरि बाहु बिडारइ —सालिभद्रसूरि

उ०—२ वीर कोडि विहु पाडवि मारी, म्लेच्छराय रथ भीमि बिडारी। तु विराटन्रप भीमि ऊहालिउ, दाउ देविणु बिलेच्छु सुवालिउ। —सालिसूरि

६ किसी समूह या दल को बीच में से पृथक करना, दूर हटाना, दूर करना, चीर देना, विभक्त करना।

उ०—वन थाहर नाहर वसै, बाहर थाट बिडार। तरवर गुलम समीर विण, न को नमावणहार। —बां. दा.

८ कुपित करना, क्रोधित करना।

९ तितर-बितर करना, बिखेरना।

१० त्याग करना, छोड़ना।

उ०—१ करिम्या भरम करम कु कानै, भरिस्यां भगति भडारी। खरचत खावत सहज खजीना, लालच लोभ बिडारी।

—अनुभववाणी

उ०—२ जामण रा रै जाया, किस विध बिडारी रै छोटी भाण नै। —जीण माता री गीत

उ०—३ हरसा वीर मेरा रै, जै मेरी होती जुग तें माय। जांमण का रै जाया, अलन कवारी नैं नाय बिडारती।

—जीण माता री गीत

११ उजड करना, निराबाद करना।

उ०—चुण्या सआरथा ढह पडै, ढहिया सवारै, भरिया मरवर रीतवै, रीता जळ भारै। सूना देस बसावही, वसिया बिडारै, सीत रखंदा जळ कवळ, थळ ग्राक समारै। —केसौदास गाडण

बिडारणहार, हारो (हारी), बिडारणियो—वि०।

बिडारिग्रोड़ो, बिडारियोड़ो, बिडारयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिडारीजणो, बिडारीजबो—कर्म वा०।

बिडारणो, बिडारबो, बिडारणो, बिडारबो, बिडुारणो, बिडुारबो

—रू० भे०।

बिडारियोड़ो-भू. का. कृ.—१ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ. २ नाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ, मिटाया हुआ. ३ निवारण किया हुआ, मिटाया हुआ. ४ बर्बाद किया हुआ, बिगाड़ा हुआ. ५ मारा हुआ. ६ किसी समूह या दल को बीच में से पृथक किया हुआ, दूर हटाया हुआ, दूर किया हुआ, चीरा हुआ. ७ कुपित किया हुआ, क्रोधित किया हुआ. ८ तितर बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ ९. त्याग किया हुआ, छोड़ा हुआ, १० निराबाद किया हुआ, उजड़ किया हुआ।

(स्त्री. बिडारियोड़ी)

बिडाळ, बिडाल—देखो 'बिडाळ' (रू. भे.)

उ०—१ चख चोळ भाल विकराल मूंच, कळ चाल प्रकट दाढाळ कूंच। रोसाळ मिळै ग्रीखम रसम्म, चिता बिडाळ नाहर चसम्म।

—वि. स.

उ०—२ बब बिडाळ वदि सुणाह वलि, सह इकवीस सुणाइ। हार घटै हुइ लुघ हुमै, तिम तिम नांम वत्ताइ। —पिं. प्र

बिडाळाग-वि.—बिल्ली के समान आंखों वाला।

सं. पु.—यवन, मुसलमान।

उ०—असलां चढि भाळ कराळ तकै, धडकै नह चित्त लकाळ धकै बिकसै रणताळ श्रमाळ बगा, दमकै खिजि ज्वाळ बिडाळ-द्रगा।

—मे. म.

रू. भे.—बिडाळद्रग, बिडाळद्रग

बिडालव्रतिक-वि.—बिल्ली के समान वृत्ति वाला।

रू. भे.—बिडाळव्रत्तिक, बिडाळव्रतिक

बिडालाक्ष-सं. पु. [स] युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक राजा।

बिडाळी—देखो 'बिडाळ' (अल्पा., रू. भे.)

बिडाव-स. पु.—विशेष प्रकार का दाव।

उ०—मैं इम जाणियो महाराज, कोइक डाव-बिडाव करू। मार महूंवै बदकी मीरजै, मीरजो मार'र पछै मरू।

—बगती खिडियो

बिडावणो-वि.—जो सुहावना न हो, अप्रिय, अरुचिकर।

उ०—भावै नहीं ज भात. लागै विणज बिडावणो। रीरावै दिन-रात, रोटचा कारण, राजिया। —किरपारांम

बिडियोड़ो—देखो 'विडियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विडियोड़ी)

बिडुद—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

बिड्डजा-स. पु. [स. विडौजस्] इन्द्र। (अ. मा., ना. मा.,)

रू. भे.—बड्डजा, बिड़ौजा, बिड्डजा, वड्डजा, विड़ओजा, विड्डजा, विडोजा, विडओजा, विडोजा, विडौजा।

बिड्डजावाह-सं. पु [सं. विडौजस्+वाहन] इन्द्र का वाहन, हाथी, एरावत।

रू भे —बड्डजावाह, बिडोजावाह, विड्डजावाह, वड्डजावाह, विडओजावाह, विड्डजावाह, विडोजावाह, विडओजावाह, विडोजावाह, विडौजावाह।

बिड्डरथ-सं. पु.—१ एक यादववंशी जो श्वफल्क के भाई तथा चित्ररथ के पुत्र थे।

२ दन्तवक्त्र का भाई जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था।

३ एक पुरुवंशीय सम्राट्, जिसें उसकी माता ने, जब परशुरामजी पृथ्वी निःक्षत्रिय कर रहे थे, उस समय ऋक्षवत् पर्वत पर एक ऋषि के आश्रम में छिपा कर रखा था।

४ अनश्वन का पिता, मधुकुल में उत्पन्न सप्रिया का पति और कुरु राजा एवं दाशार्ही शुभांगी के संसर्ग से उत्पन्न, एक राजा।

बिडोजा—देखो 'बिड्डजा' (रू. भे.) (ना. डि. को)

बिडोळ-वि.—आकार रहित, बिना आकार का।

बिडोळणो, बिडोळबो-क्रि. स.—कम्पायमान करना, कम्पित करना, भयभीत करना।

उ०—अमोल तोल मोल कै, अचोळ चोळ अख कै। अडोळ डोळ कध कै, बिडोळ नै असक कै। —ऊ का.

बिडोळणहार, हारो (हारी), बिडोळणियो—वि.।

बिडोळिओड़ो, बिडोळियोड़ो, बिडोळचोड़ो—भू का कृ.।

बिडोळीजणो, बिडोळीजबो—कर्म वा.।

बिडोळियोड़ो-भू का. कृ.—कम्पायमान किया हुआ, कम्पित किया हुआ भयभीत किया हुआ।

(स्त्री बिडोळियोडी)

बिडौ—देखो 'विडौ' (रू. भे.)

बिडौजा—देखो 'बिड्डजा' (रू भे.)

बिडौजावाह—देखो 'बिड्डजावाह' (रू भे.)

बिड्डारणो, बिड्डारबो—देखो 'बिडारणो बिडारबो' (रू. भे.)

उ०—१ राव राय रखपाळ, राव रहडण रिम राहा। राव कुरूप हराय, राव वैरी पतसाहा। राव रोर बिड्डार, राव समार उधारै। राव धम्म ऊधरै राव इक्कोतर तारै। —नैणसी

उ०—२ सळखहर राउ सिरि वधी सेस, दळपत्ति हुअउ सिरि दसा देस। मंडोवर लियउ मल्लेछ मारि, बिड्डारि सत्र मिरिया बहारि।

—रा. ज. सी.

बिड्डारणहार, हारो (हारी), बिड्डारणियो—वि०।

बिड्डारिओड़ो, बिड्डारियोड़ो, बिड्डारयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिड्डारीजणो, बिड्डारीजबो—कर्म वा०।

बिड़ारियोड़ौ—देखो 'बिडारियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिड़ारियोड़ी)

बिड़ुणौ, बिड़ुबौ—देखो 'बिढणौ, बिढबौ' (रू. भे.)

उ०—मुंडिया पिंड मेगळ अरिस उछंछळ, रावत विम्मळ लड़ि पड़िय। दुजडा दूनें दळ बिड़ुं सब्बळ, कदळ पेखें रिव खड़िय।
—गु. रू. ब.

बिड़ुणहार, हारौ (हारी), बिड़ुणियौ—वि०।
बिड़ुयोड़ौ, बिड़ुयोड़ौ, बिड़ुयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिड़ुजणौ, बिड़ुजबौ—भाव वा०।

बिड़ियोड़ौ—देखो 'बिढियोड़ौ (रू. भे.)
(स्त्री. बिड़ियोड़ी)

बिढ, बिढक, बिढण, बिढणि—स. पु.—देखो 'वेढ' (रू. भे.)

उ०—१ खिळ बहत धक धक अछक छक, अतराळ गरळक दुळ इधक। फीफरडक नद फरक, हुय बिढक हक हक, वीरहक।
—र रू

उ०—२ थर थक्का बलवार बिढण क्यूं वीमरे, लगा लोह लकीर नमता नीसरे। वाव फहके वेढ वळे नह वापरे, पाणा चढ़िया किलम जिके 'परताप' रे।
—किसोरदान बारहठ

उ०—३ असपति राव चगकि ओद्रकियौ, खेडंचे वाही करि खीज सुकरि आकास हून सेलारा, बीजुल बिढण क बुही बीज।
—केसोदास गाडण

उ०—४ इम कहि बिढण दोध त्रप आयस, दळ हालिया वाग पद-मणि दिम। रोस चढे बिढ़िया रखवाळा, अठ छ हजार तेजमिण वाळा।
—सू प्र.

उ०—५ वडो सूर सुदतार रायसिंघ विगरामिया, बिढण कुण कवारी घडा बरसी। कूंजरा तणो मोहताद करसी कवण, कवण कोडां तणी मोज करसी।
—दूरसौ आढौ

उ०—६ आलम तइ आयाह विग्रह हुवइ कीधइ बिढणि। अचळेसर गढ अवछडे जिव लै मोकळि जाह।
—अ. वचनिका

उ०—७ वूर पडि जवूर जिहु घड़, भुरज बीछडि पड़े खडभड। बिढण घरि अड सुहड समवड, वडवडे पिंड वार।
—रा. रू.

बिढणौ, बिढबौ—क्रि. अ.—१ युद्ध करना, संग्राम करना।

उ०—१आठुपा चाढता चकै साबळ अणी,खेलता घसळ खत्रवाट आलेट। बिढतां सेस मणागयण लाग, वधे, नग भिडज करग राजा तणा नेट।
—नाथौ सांदू

उ०—२ परठि पाच पोरिस तणी भणणियो पाघरं, समरबध करण नमि वंनि चेजो। विधूसे सेंद फुलवादि रूका बिढण, अविभ घड़ बाग विचि भमर 'तेजौ'।
—तेजसिंघ सेखावत रो गीत

उ०—३ आया साह अलावदी, बिढ कटका सू वीर। माझी रिणथभर मुओ, हठ निरवाह हमीर।
—बा. दा.

उ०—४ सहे खग सभ्रम 'सामतसाह', बिढे 'अनपाळ' करै हय-वाह। सझे करिमाळ झटा समरेस, बिढे 'करनेस' तणौ 'वखतेस'।
—सू. प्र.

२ लड़ना, झगड़ना।

उ०—एकदा प्रस्ताव। जोईयो दलो गुजरात चाकरी गयो हुतो भाईयां सूं बिढने। उठे गुजरात घणा दिन रह्यो। अोथ बीमाह कियौ, घणा दिन रह्यौ।
—नैणसी

३ भिडना, टक्कर लेना।

उ०—रे राखस मुझ आगलि बाल, मारिसि तउ तूं पूगउ कालु। रूख ऊपाडी बेई बिढई, दह दिसि गाजइ डूंगर रडइ।
—मालिभद्र सूरि

४ युद्ध क्षेत्र मे लड़ते हुवे मारा जाना, वीरगति प्राप्त होना।

उ०—१ धसे वग्गियाम वहे खग-धार, बिढति सुवप्प पडन विहार। लडे हिक सामा लोह लियत, दिये हिक पाव चडे गज-दंत।
—गु. रू. ब.

उ०—२ कोटा ओट घणा जुध कीया, फौजा घणा किया पग-फेर। राउ राठोड जिही सूं रौद्रा, अध-रत बिढियौ न को अनेर।
—केसोदास गाडण

उ०—३ केती वार हुई कछवाहा, धाय मचता धमसाणा। दाखें पगे हरी-चंद दूजा, बिढ पोहो आव बिवाणा।
—जैसिंघ नरूका कछवाहा रो गीत

उ०—४ भागा माथि न भागो भ्रमभंग, आप बिढे भाजिया अरि। केहरि सरगि पहूतो अणाकळ, 'करन' हरो अखियात करि।
—नाहरखान चौहाण रो गीत

५ कटना।
६ कटना।

उ०—भुड़ा भिडि मूंछ चखा विकराळ, काळे असि ओरवियो कळिचाळ। दियै खग झाट 'गिरद्धरदास', बिढे असवार सहेत अहास।
—सू प्र.

बिढणहार, हारौ (हारी), बिढणियौ—वि०।
बिढियोड़ौ, बिढियोड़ौ, बिढयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिढीजणौ, बिढीजबौ—भाव वा०।

बिढणौ, बिढबौ, बिढवणौ, बिढवबौ, बिड़णौ, बिड़बौ, बिड़णौ बिड़बौ, बिड्ढणौ, बिड्ढबौ रू० भे०।

बिढाळ—स. पु — योद्धा।

उ०—झड ग्रनड़ झाड ग्रांगी उपाड, दळ मिळै दूठ रिण भिड़ै रूठ, तेगां ग्रताळ वागी बिढाळ, तिण वखत तात भड लखण भ्रात, बल सगत चोट लग पड़ै लोट,······। —र. रू.

बिढियोड़ो—भू. का. कृ.—१ युद्ध किया हुग्रा, संग्राम किया हुग्रा. २ लड़ा हुग्रा, झगडा हुग्रा. ३ भिड़ा हुग्रा, टक्कर लिया हुग्रा. ४ युद्ध क्षेत्र मे लड़ते हुवे मरा हुग्रा, वीरगति प्राप्त हुवा हुग्रा. ५ फटा हुग्रा. ६ कटा हुग्रा।

(स्त्री. बिढियोडी)

बिणंग—देखो 'विडंग' (१) (रू. भे.)

उ०—लै ऊडळिया 'पाल' नै, भूप तणी तप भाळ। बिणंग चढै ग्रीखविया, कोळू दिस ततकाळ। —पा. प्र.

बिणगणो—देखो 'बिणगणो' (रू. भे.)

बिणंठणो, बिणंठबो—देखो 'बिणठुणो, बिणठुबो' (रू. भे.)

उ०—राम नांम बिण जांणिया, बात बिणंठी मूळ। हरीया जब होसी कहा, ग्रंत भयौ ग्रसथूळ। —ग्रनुभववाणी

बिणंठणहार, हारौ (हारी), बिणंठियौ—वि०।

बिणंठिग्रोड़ो, बिणंठयोड़ो, बिणंठयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिणंठीजणो, बिणंठीजबो—भाव वा०।

बिणंठियोड़ो—देखो 'बिणठ्ठियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिणठियोडी)

बिण—१ देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—१ कंध बसन रण हाथ खग, घोड़ा ऊपर गेह। घर रुखाळी बिण धरण, गिणै न ग्रण सम देह। —जैतदान बारहठ

उ०—घट तेज ग्रनोपम वेग घणूं, बिण कारज तुज्ज विहग बणूं। रखसूं कर मोद घणी रळिया, उण नू ग्रसमान री ऊडळिया।
—पा. प्र.

उ०—३ कोकिल सोर मोर तडवि झत, नटवर बान सगीत करै ग्रत। गांन पांन इम्रत सम गावै, ईस्वर बिण दुतिया नह ग्रावै।
—सू. प्र.

उ०—४ दीपक बिण मंदिर किसौ, यौवन बिण सिणगार। नेह बिना सी प्रीति जिम, तिम कता बिण नार। —वि. कु

उ०—५ ग्रसुर बोलियौ कुबोल पतसाह मुह ग्रागळी, राज बिण खत्री धरम कमण राखै। दूसरा 'माल' वरदान तोनूं दिवूं, 'ग्रमर' नौ काढ जम-दाढ ग्राखै। —केसोदास गाडण

२ देखो 'वण' (रू. भे.)

उ०—१ रज बटघर कट रज मिल्या, बिण रज भरियौ बट्ट। रज उछाळ गजराज घण, रण बांटै रजवट्ट। —रैवतसिंह भाटी

उ०—२ देवीदास स्री ठाकुरां तै परणांम कियौ। तद भीतर सूं ग्रावाज हुई-पलक दरियाव तमासौ दीठौ? कुंवर कहै-ग्रापरी किरपा सू। फेर ग्रवाज हुई-तै ग्रा भगवांन री बात किणी नै कही तौ बिण-सायत थाहरी देह छूटसी, तैसूं खबरदार रहै।
—पलक दरियाव री बात

उ०—३ कुळ हाडा कूरमा, किया बिण ग्राडा कारण। ज्यां ग्रागै ग्रगराज, धरै गजराज न धारण। —रा. रू..

बिणग—देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ०—कारिज कीधूं जोईइ, [विक्रम करइ विचार]। बिणग विचक्षण मोकलू, साथइ सपति सार। —मा. कां. प्र.

बिणज—स. पु.—१ पकाए हुए मीठे चावल।

२ मिष्ठान, मिठाई। (बीकानेर का उत्तरी पूर्वी भाग)

३ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ०—१ ठकुरौ साह सरसै माहै रहै। सु इय रै मताह रौ छेह कोड नहीं। ग्रर ईयै रै बीजो बिणज कोई जिकै समुद्र माहै जिहाज ठेलै तिकां री जोखम ग्रौ लेवै। इण भांत रहे। —ठकुरै साह री वात

उ०—२ दांन भोग बिन धन ज संच्यौ, खेती बिणज मे पाई रे ग्रतकाल मे कुटुंब कबीलो, लगा झगड़ नै जोई रे। —जयवाणी

उ०—३ गुर सिख मिळीयां क्या हुवै, मिळ ग्रर पाडी वाटि। हरीया खोटा बिणज कै, ठग मिळ ल्यावै खाटि। —ग्रनुभववाणी

उ०—४ लख चौरासी हाट मैं, वसत ग्रमोलिक एक। हरीया खोटा जाणी बिणज कै, लीया लाभ ग्रनेक। —ग्रनुभव वाणी

रू भे.—बणज, बनज, विणज, बिनज, बिरज, वणज, विणज,।

बिणजणो, बिणजबो—क्रि. स.—१ व्यापार करना, व्यवसाय करना।

उ०—१ बिणजै सासू ग्रर बहू, धधै ततपर धूत। ठग नह जो गणिका ठगै, वणियाणी रा पूत। —बा. दा.

उ०—२ ग्रणहूत भाठै सूं काठी हुवै। विरिया देख' र बिणजै नी सौ वाणियौ ही गिवार। छाती काठी करी है। जै जिसौ दिन नही ग्रावै। —दसदोख

उ० —३ एक ग्रमोलिक वसत का, विरळा बिणजणहार। जनहरीया सो बिणजसी, लाहै ग्रत न पार। —ग्रनुभव वाणी

उ०—४ तन तोला मन ताकड़ी, बिणजणहार वचन। राम रतन कु छाडि कै, साध न सचै ग्रन। —ग्रनुभववाणी

२ रुपये कर्ज देना, उधार देना।

३ रुपये का व्यापार मे या ग्रन्य कही विनियोग करना।

उ०— बिणजै व्यापार वलि विवहारं, लछमी ग्राप वहै लार। परिघल परिवार पुण्य प्रकार, बोलं बहू जस बाजारं।
—ध. ब. ग्रं.

बिणजणहार, हारो (हारी), बिणजणियो—वि. ।
बिणजियोड़ो, विणजियोड़ो, बिणज्योड़ो—भू का. कृ. ।
बिणजीजणो, बिणजीजबो,—कर्म वा. ।
बणजणो, बणजबो, बिणजणो, बिणजबो, बणजणो बणजबो, बणिजणो, बणिजबो —रू. भे. ।

बिणजार—१ देखो 'बिणजार' (रू. भे.)

२ देखो 'बिणजारो' (मह, रू.भे.)

बिणजारड़ो—देखो 'बिणजारो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—भला हम बिणजारा पूरं साह का, बिणज करण वोपारो । हम बिणजारड़िया । —दीन सुदरदी

(स्त्री बिणजारडी)

बिणजारण-स. स्त्री —१ एक प्रकार की भैंस विशेष ।

उ०—सूधी सींघरिणया च्यारू थण सोधं, बिमनी बिणजारण कारण परबोधं । बाल्ही बेगड नें थेगड दे बाळं, भोळी माळी नें भीडी नें भाळं । —ऊ. का.

२ देखो 'बिणजारी' (स्त्री)

रू. भे —बणजारण, बिणजारण, वणजारण ।

बिणजारा—देखो 'बिणजारा' (रू. भे.)

बिणजारियो-स. पु.—१ देखो 'बिणजारो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ च्यार पहरदा काम है बिणजारिया, तेरा जागण दा छक एहवै । सोवण दी विरिया नही बिणजारिया,तु नाव निरजन लेहवै। —रैदास घत्तरवाळ

उ०—२ तीजं पहर रंण के बिणजारिया, तेरा ढीला पडया पुराण वं । काया लीबोनी क्या करे बिणजारिया,गढ भीतरि वस्यो अजाण वं । —दीन सुदरदी

२ देखो 'बिणजार' (अल्पा , रू भे.)

बिणजारो-स. पु —१ कमजोर जीवात्मा ।

उ०—१ रे बिणजारा चूको तू, फिर फिर क्यू दे कूको ।
वस्तु भरी पर देस न रै, वेला बिन लद जाय । दुरमत डाणी आगै खडो, लेसी माल लुटाय । —स्रीहरिरामजी महाराज

२ देखो 'बिणजारो' (रू भे.)

उ०—१ पीछोलो राणा लाखा री वार माहे किण ही बिणजारं बंध-वायो, पाणी कोस च्यार रै फेर मे छै। —नैणसी

उ०—२ कालो मासी रै पंछी जिनावरा रा इण लाठा कड़ूबा मे फगत इण घोड़ा री इज खामी ही । मारग वेवता बिणजारां कना सूं मासी केई कुत्ता वपराय लिया हा । —फुलवाड़ी

उ०—३ घुर तो जावै बोहरा रे, मिलिया ठोडां ठोडां रे । हाकम सटारा रे, बिणजारा सोदारा रे । —जयवाणी

उ०—४ बिणजारण श्रं लोभण, औरा के पल्लं छै दाम । म्हा रं तो पल्लै कोय नही, बिणजारी श्रं । —लो. गी.

(स्त्री. बिणजारण, बिणजारी)

बिणज्ज—१ देखो 'बिणज' (रू. भे·)

२ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ०—फखी बिणज्ज आकराणि, पसू चोपदी घणी। अनेक संपदा उपाउ, लाछि चतुरगणि । —गु. रू. ब.

बिणट्ठणो. बिणट्ठबो—देखो 'बिणट्ठणो, बिणट्ठबो' (रू. भे.)

उ०—१ जीव बिणट्ठा बिणास हुवा पछं गढ बारै नीकळं जिकां रा नेक नाम वै है, अरथात जीव रं तन है ज्यूं रजपूतां रं गढ है सो मरिया गढ छोडै । —वी. स. टी.

उ०—२ जेहा सज्जण काल्ह था, तेहा नाही अज्ज । माथि त्रिसूळउ, नाक सळ, कोड बिणट्टा कज्ज । —ढो मा.

बिणट्ठणहार, हारो (हारी), बिणट्ठणियो—वि० ।
बिणट्ठिओड़ो, बिणट्ठियोडो, बिणट्ठयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बिणट्ठीजणो, बिणट्ठीजबो—भाव वा० ।

बिणट्ठियोड़ो—देखो 'बिणट्ठियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिणट्ठियोडी)

बिणट्ठो—देखो 'बिणठो' (रू. भे.)

उ०—है सवळी आखियां कवळो जांण मत्त खायै कारण कै म्हारै पती सूं प्रण (वचन) करीयोडो हो के-आपनं एकला छोडूं नहीं आप जुद्ध मे मारीज सो तो हू लारै सत करसूं सो आज औ मोको है तू आख खायजासी तो नैण आख बिणट्ठो बिनां म्हारो प्रण कीकर देखैला इण सारू आखियां नही खाण री कहै है । —वी. स. टी.

(स्त्री. बिणट्ठी)

बिणठणो, बिणठबो—देखो 'बिणट्ठणो, बिणट्ठबो' (रू. भे.)

उ०-रजा साधवी रोग ऊपनो, बिणठो कोढ सरीर जी । भव अनत भमी दुख सहती, दोख दिखाडघउ नीरि जी। —स. कु.

बिणठणहार, हारो (हारी), बिणठणियो—वि० ।
बिणठिओड़ो, बिणठियोडो बिणठ्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिणठीजणो, बिणठीजबो —भाव वा० ।

बिणठियोड़ो—देखो 'बिणट्ठियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिणठियोडी)

बिणठो-वि. (स्त्री. बिणठी)—१ खराब, बुरा ।

उ०—वलि बिणठी वार साझ सवार, दंडाकार कातार । साम्रव सिरकार, सिह सिकार, दावोदारं दरबारं । गिण बैठि वेगारं कारा-गारं, जय सह्व ठामै जयकार । —ध. व. ग्रं.

२ विनष्ट, नाश हुवा हुग्रा ।

रू. भे.—बिणट्ठौ ।

बिणणौ, बिणबौ—१ देखो 'बिणणौ, बिणबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बुणणौ, बुणबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बणणौ, बणबौ' (रू भे)

उ०—१ ग्रजपा जाप ग्रोंकार एक, ग्रोळखै कमण बिणयौ ग्रनेक । ग्रजपा जाप ग्रातम उद्यास, सुर-भुवण माहि सब भून माम । —पी ग्रं.

उ०—२ ग्रसख बाब रिखि झांप रिखि, ग्रोम रिखां घनघन । मेघ रिखा रैं माडहै, बिणियौ बींद विसन । —पी ग्र

उ०—३ सरसती हुंति विद्या मिरैं, विमळ ग्रकळ कहिजै विसन । सूर सा तेज बिणियौ सरस, कोडि कोडि वधतौ किसन । —पी ग्र.

बिणणहार, हारौ (हारी), बिणणियौ—वि. ।

बिणिग्रोड़ौ, बिणियोड़ौ, बिण्योड़ौ—भू का. कृ. ।

बिणीजणौ, बिणीजबौ—कर्म वा. ।

बिणति, बिणती— देखो 'वीणती (रू भे.)

बिणपख्य—स. पु. [स. वेणु-पक्ष]—बाण, तीर । (डि नां. मा.)

बिण-मणा—वि.—जिसमे किसी प्रकार की कमी न हो, पूर्ण ।

उ०—तवौ राघो राघो करम ग्रघ दाघो तन तणा, महाराजा सीता-वलभ कुळ-मीता बिण-मणा । यरा जेता जगा ग्रडर यक-रगा जग ग्रखं, सको गावो जीहा ग्रवस निस-दीहा ग्रज सखै । —र ज. प्र.

बिणय—देखो 'विनय' (रू भे.)

उ०—इकु ग्ररजुन ग्रागलऊ ग्रनइ करणु हीयइ हरालउ, गुर कूवइ बिणयहु लगइ धणुहवेदु दीधउ सरालउ । —सालिभद्र सूरि

बिणयांणी—देखो 'वणियांणी' (रू भे.)

उ०—ताहरा वळद उपर सखरा बीछावणा, तिण उपर बिणयांणी नूं सोहरी वैसाणी । चालीया जावै छै । चालता-चालता ग्रागै मजल जाय डेरौ कीयौ । —रळै गढवै री वात

बिणवाट, बिणवाठ—वि —मूर्ख । (ग्र मा)

बिणसणकाळ—देखो विणसिणकाळ' (रू. भे.)

उ०—ग्रकबर लेख प्रमाणं, तहवर सहत राज लोभाणं । ग्रावी चित ग्रचीती, बिणसण गा (का) ळ बुद्धि विपरीत । —रा. रू.

बिणसणौ, बिणसबौ—क्रि. ग्र —१ नाश होना, नष्ट होना, मिटना ।

उ०—जिमि बिलब बिणसइ काज, कुठाकुरी बिणसइ राज । कुसगति बिणसइ सतान, स्वर पाखइ बिणसइ गान । —रा. सा. सं.

उ०—२ दीयौ नी व्हे जित्तै तौ ग्रधारौ रैं'वै, पण दीया रै चांनणै ग्रधारा नैं बिणसतां कोई जेज थोडी ई लागै । चानणा रै समचै ई ग्रधारौ बिणस जावै । फगत इत्ती जेज ई बेटी रै समझणा मे लागी । —फुलवाडी

उ०—जीहो काया माया कारमी, जीहो मानो सतगुरु वेण । जीहो जेसो सुपणौ रेण । जीहो बिणसतां देर लागै नही । —जयवाणी

उ०—४ जग सोई रग पतग है, बिणसत लगै न वार । नांम रूप जड जाणीयै, ख्याली खबर कर धार —स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—५ जाग्रत मे स्वप्न नही पावै, स्वप्न में जाग्रत बिसरैरी । स्वप्न मे जावै न जाग्रत मे बिणसै, ग्रनुभव सता करैरी । —स्रीसुखरांमजी महाराज

२ बिगडना, खराब होना ।

उ०—१ जिमि बिलब बिणसइ काज, कुठाकुरी बिणसइ राज । कुसगति बिणसइ सतान, स्वर पाखइ बिणसइ गांन । —रा. सा. स.

उ०—२ जो मत पाछै संचरै, सो मत पहली होय । काज न बिणसै ग्रापणौ, दुरजण हसै न कोय । —ग्रग्यात

३ मरना, खत्म होना ।

उ०—सो दीसै सो बिणससी, ऊगै ग्राथमि जाय । जनहरीया सो जनममी, जम लै जासी ग्राय । —ग्रनुभववाणी

क्रि. स.—४ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना ।

उ०—१ तम बिणसण व्है बो त्वरित, तेज किरण वण ताप । त्यां दरसण पातल तणौ, सबै हरण सताप । —जैतदान बारहठ

उ०—२ च्यार जणा नैं सुणि चतुर, सोहै जरा सिगार । राजा मुहतौ वैद रिखि,गरढ पणैं गुणकार । गरढ पणैं गुणकार, मार बहु बुद्धि रसायण । बिणसै मल्ल वेसीया, गिणौ तिम चाकर गायन । करै घणी जो कला, मन्त्र तोइ किणैं न मानैं । कहै धरमसी यु करै जरा ग्राइ च्यार जणा नैं । —ध. ग्र ग्र

उ०—३ दैवज घणु बिणासियौ, कियौ ज पाप ग्रपार । मारू तन बिणसियौ, रूत रह्यौ निरधार । —ढो. मा.

५ मारना, सहार करना ।

उ०—बिणमतां जीव न गिनर न करै जिको, चौथौ वट्टीग्रा दोख ऊपजै तिको । ग्रनुक्रमै च्यार ए ग्रधिक इक एकथी, दोख धरि प्रायचित लेइ विवेक थी । —ध व. ग्र.

६ बिगाडना, खराब करना ।

बिणसणहार, हारौ (हारी), बिणसणियौ—वि. ।

बिणसिग्रोड़ौ, बिणसियोड़ौ, बिणस्योड़ौ—भू. का कृ. ।

बिणसीजणौ, बिणसीजबौ—भाव वा., कर्म वा. ।

बिणसणो, बिणसबो, बीणसणो, बीणसबो, बणसणो, बणसबो, — रू. भे.।

बिणसाड़णो, बिणसाड़बो देखो 'बिणसाणो, बिणसाबो' (रू. भे.)

बिणसाड़णहार, हारो (हारी), बिणसाड़णियो— वि.।

बिणसाड़िग्रोड़ो, बिणसाड़ियोड़ो, बिणसाड़्योड़ो— भू. का. कृ.।

बिणसाड़ीजणो, बिणसाड़ीजबो — कर्म वा.।

बिणसाड़ियोड़ो—देखो 'बिणसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिणसाड़ियोड़ी)

बिणसाडणो, बिणसाडबो— देखो 'बिणसाणो बिणसाबो' (रू. भे.)

उ०—१ हीरादेवि भणइ चडाळ, सु मुख देखाडइ तुं काळ। जेह पसाइ कीधा राज, तेह तणउं **बिणसाडिउं** काज। —का. दे. प्र.

उ०—२ छक देखि खेलीजे एम कहो छ छै, पछतावो जिण काज सही न हुवै पछै। भ्राखर जै धरमसीह हुवै उतावला, परिहा **बिणसाडै** निज काज मही तै बाउला। —ध. व. ग्रं.

बिणसाडणहार, हारो (हारी), बिणसाडणियो—वि०।

बिणसाडिग्रोडो, बिणसाडियोडो, बिणसाड्योडो —भू० का० कृ०।

बिणसाडीजणो, बिणसाडीजबो—कर्म वा०

बिणसाडियोड़ो— देखो 'बिणसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिणसाडियोडी)

बिणसाणो, बिणसाबो क्रि. स.— १ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना। २ बिगाड़ करना, खराब करना। ३ मारना, खतम करना

बिणसाणहार, हारो (हारी), बिणसाणियो—वि.।

बिणसायोडो—भू. का. कृ.।

बिणसाईजणो, बिणसाईजबो—कर्म वा.।

बिणसाणो, बिणसाबो, बिणसावणो, बिणसावबो, बीणसाणो, बीणसाबो, बिणसाड़णो, बिणसाड़बो बिणसाडणो, बिणसाडबो, बिणसावणो, बिणसावबो, बिसणाड़णो, बिसणाड़बो बिसणाडणो, बिसणाडबो —रू. भे.।

बिणसायोड़ो—भू. का. कृ.—१ नष्ट किया हुआ, नाश किया हुआ, मिटाया हुआ. २ बिगाड़ किया हुआ, खराब किया हुआ. ३ मारा हुआ, खतम किया हुआ।

(स्त्री. बिणसायोडी)

बिणसावणो, बिणसावबो—देखो 'बिणसाणो, बिणसाबो' (रू. भे.)

बिणसावणहार हारो (हारी), बिणसावणियो—वि.।

बिणसाविग्रोडो, बिणसावियोड़ो, बिणसाव्योड़ो—भू. का. कृ.।

बिणसावीजणो, बिणसावीजबो—कर्म वा.।

बिणसावियोड़ो—देखो 'बिणसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिणसावियोडी)

बिणसिणकाळ—सं. पु. [सं. बिनाशकाल] —बुरा समय, बिनाशकाल।

उ०—कुरु पिड वेध वसुधा, अपण मनेण भुज्झणो उभए। कुरुखेत जुद्ध समयो, **बिणसिणकाळ** बुद्ध विपरीती। —गु. रू. बं.

रू. भे.—बिणसमणकाळ।

बिणसियोडो—भू. का. कृ. १ नाश हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ, मिटा हुआ २ बिगड़ा हुआ, खराब हुवा हुआ. ३ मरा हुआ, खतम हुवा हुआ. ४ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ, ५ मारा हुआ, संहार किया हुआ. ६ बिगाड़ा हुआ, खराब किया हुआ।

(स्त्री बिणसियोडी)

बिणा—देखो 'बिना' (रू. भे.)

बिणाठणो, बिणाठबो—देखो 'बिणट्टणो, बिणट्टबो' (रू. भे.)

उ०—खडिय न खाटी देह **बिणाठि** थिरि न पवणां पाऊं। ग्रहनिस ग्रावा जाय घटती, तेरी सास ही कसवाऊं। —ग्रग्यात

बिणाठणहार, हारो (हारी), बिणाठणियो—वि०।

बिणाठिग्रोडो, बिणाठियोडो, बिणाठ्योडो—भू० का० कृ०।

बिणाठीजणो, बिणाठीजबो—भाव वा०।

बिणाठियोडो- देखो 'बिणट्टियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिणाठियोडी)

बिणायक—देखो 'बिनायक' (रू. भे.)

उ०—... चम्न दिइ, जीमूत रिखि छोरु खेलावइ, कांमदेव कटारु बधावइ, वैस्वानर वस्त्र पखालइ, कारत्तिकेय तलारु करइ, चामुंडा चाउरि सचारि, **बिणायक** गादह चारि, ग्रनइ सवा लाख पुत्र जेह तणइ, इसिउ त्रिभुव [न] मल्ल महामल्ल रावण। —व. स.

बिणावट, बिणावटी—देखो 'बनावटी' (रू. भे.)

उ०—पीछे गोपाळदास असवार बदी रा वा ग्रापरा हजार च्यार लेय नै मुगळा री फोज मैं गया। ग्ररु वा पूछियो तद कयो मामलत रा रुपिया लाया छा घोडा पर **बिणावट** थैली दिखायी। तरां मुगळा रै तंबू ताई गया। —द. दा.

बिणास—देखो 'बिनास' (रू. भे.)

उ०—१ गोत्र द्रोह थी जस नहीं, नृपद्रोह नीति **बिणास**। बाल द्रोह थी गति नहीं, तिण्हे करयो ग्रभ्यास। —श्रीपालरास

उ०—२ सामी सिर दावा किसा, दावै माहि **बिणास**। जुग निरदावै जाणीयै, सोई हरि का दास। —ग्रनुभववांणी

उ०— ३ पाछा नि घरो ठाकुरै, घिरीया हुवै **बिणास**। घिरीया वेवू कांढया, दूदो देवीदास। —जैतमाल पुमार री वात

उ०—४ कं तौ घर घर लोभ रे कारण पेटा री बात होठा चढै कोनीं भर कै मायलो प्रतस ई ग्रेक-मेक व्हैगो । मिनखीचारा री सिरै भावनावा रौ बिणास व्हैगो । —फुलवाडी

उ०—५ डोकरी वानै ग्राडै हाथा लेवती थकै केवरण लागी-लुगायां रौ बिणास करिया तौ या मिनखा रो पैला बिणास व्है जावैं इण वास्तै खुद री स्वारथ पूरण साक थे वानै जीवती राखो, खुदरै मन री ग्राणद पोखण साक वानै सिणगारियोडी राखो। —फुलवाडी

बिणासणो, बिणासबौ-क्रि. स.—१ नष्ट करना, नाश करना, मिटाना ।

उ०—१ लोक ग्राछो कहै नही, लड़ता लिछमी नासै रे । दुख दारिद्र घर मे घसै, गुण रा पूर बिणासै रे । —जयवाणी

उ०—२ चितइ चतुर स चिततउ, धरतउ ग्ररति ग्रपार । विखय विणोदि बिणासिइं, हासइ जीव गमार । —जयसेखर सूरि

२ मारना, सहार करना ।

उ०—१ बल धी बुध ग्रधिकी कही, जउ ऊपजइ ततकाल । बानर बाघ बिणासियौ, एकलड़इ सीयाल ।

—प. च. चौ.

उ०—२ खिण इक मा तै पकडि बिणास्यौ, तीखण कठिन कुहाड़े । याद्रस ग्राचरणादिक ताद्रस, फल तेहनै न गमाडे ।

—वि. कु.

उ०—३ इतरा मे पुळसत रिख रौ कुळीधर, उतराध रौ वजीर, लिछमी रौ निवास, मांभी दिगपाळ, कुमेर बौलियौ—ग्रागै ही लकापति रांवण सीता री चोरी करी ले गयौ । तरै ग्राप चत्रभुज मानवी देह धार नै बिणासियौ । —मा. वचनिका

उ०—४ ग्रसुर बिणासी किउ उपगारू, इद्रि लोकि हूउ जयजयकारु । इद्र तरणु ए कीधु काजु, ग्रसुर बिणासी लीधउ राजु ।

—मालिभद्र सूरि

३ बिगाड करना, नुकसान करना ।

उ०—ताहरां राजाजी भोपत ऊपरि चढण लागा । ताहरा राणीजी जसवतदेजी राजि नूं बीनमियौ । राजि दोहरा की हुवौ, हू जाट भर भोपति नूं ले ग्राविस । ताहरा राणीजी चढि ख्डिया । ख्डि नै नागौर पधारिया । ग्रागै देखै तौ भोपतिजी किण ही रो बिणासियौ कयुं नही उजाडियौ बैठा छै । —द. वि

४ बुरा करना ।

उ०—दैवज घणु बिणासियौ, कियौ ज पाप ग्रपार । मारु तन विणासियौ, कत रह्यौ निरधार । —ढो मा.

बिणासणहार, हारौ (हारी), बिणासणियौ—वि० ।

बिणासिग्रोड़ो, बिणासियोड़ो, बिणास्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिणासीजणो, बिणासीजबौ—कर्म वा० ।

बिणासणौ, बिणासबौ—रू० भे० ।

बिणासियोडो-भू. का कृ.—१ नष्ट किया हुग्रा. नाश किया हुग्रा. २ मारा हुग्रा. ३ बिगाड किया हुग्रा, नुकसान किया हुग्रा. ४ बुरा किया हुग्रा ।

(स्त्री बिणासियोडी)

बिणासी—देखो 'विनासी' (रू. भे.)

बिणासु—देखो 'विनास' (रू. भे)

उ०—पडव तणउं चरीतु जो पढए, जो गुणइ सभलए । पाप तणउ विणासु तसु ग्हइ, ए हेला होइसि ए । —सालिभद्र सूरि

बिणि—१ देखो बिना' (रू. भे)

उ०—१ बिणि रोटी बिणि लाकडी, विणि पाणी विणि पाळ । परचौ पमु पखेरवा, थल्य बैठो प्रतपाळ । —सुरजन जी

उ०—२ नल राजा विणि, सरवि विख्यात मा [हारि] पिता ग्रनि ना भ्रात : मद हास्य करी ग उच्चरि 'नारी, मूरखता ग्रादरि ।

—नळाख्यान

उ०—३ किणि ठौडि रहै ग्रायौ कठै, धणी पहचि दातार घण । बिणु रूप रेख किणि दिसि वसै, निमौ निमौ तु नारीयण ।

—पी. ग्र.

उ०—४ हेतम दान कवि मन्न कहि, ग्रमर घुम्रि बे वखत गनि । दीठो न कोइ रवि चक्र नमि, ग्रलावदी सुलतान विणि ।

—प. च. चौ

रू. भे —वणी, विणी ।

बिणियांणी—देखो 'वणियाणी' (रू. भे.)

उ०—मारू इण मनवार मैं, रग वीतै रात । परतांनै दारू पीवसा, मैं बिणियांणी जात । —पना

बिणियोडो—१ देखो 'बणियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बिणियोडो' (रू. भे.)

३ देखो 'बुणियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बिणियोडी)

बिणी—देखो 'वणी' (१) (रू. भे.)

उ०—ईवट री लार म्हैं तौ खुणिया सुधा हाथ जोडनै कह्यो धाधी थारै वेम सूं बिणियां रै खेत बारै काढ । —फुलवाडी

२ देखो 'बिणि' (रू भे)

बिणीयांणी—देखो 'वणियाणी' (रू. भे.)

उ०—वाणियौ तौ सुय रह्यौ । सूता भाख फाटी । तद उठिया । तर्ण सारा सु पैहली रळौ उठि नै पौठियौ एकलै हौज लादियौ ।

पछे वांणियां ही लादियो । हूंमैं बिणीयांणी कहै,बेटा, पोठियै चाढो ।
—रळै गढवै री बात

बिखु, बिखू—देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—१ निहसै वूठौ घण बिखु नीळांणी, वसुधा थळि थळि जळ वसइ । प्रथम समागम वसत्र पदमणी, लीधै फिरि ग्रहणा लसइ ।
—वेलि

उ०—२ जिण दीध जनम जगि मुखि दे जीहा, क्रिसन जु पोखण भरण करै । कहण तणौ तिणि तणौ कीरतन, स्रम कीधा बिखु केम सरै ।
—वेलि

उ०—३ विरह बियापी रयण भरि, प्रीतम बिखु तन खीण । खीण प्रलापी देखि ससि, किस गुण मेल्ही वीण ।
—ढो. मा.

उ०—४ कुंती अनु द्रौपदी प्र कवि करीअ मारगि चलावइ, कुंती जल बिखू तृछोइ तेहि हिडब जलु लेउ आवइ । —सालिभद्र सूरि

बिणोकड़ी, बिणोखड़ो—सं. स्त्री. [स. वाणियष्टि] कपास का पौधा ।

रू. भे —बिणोकडी, बिणोखडो ।

बिणोद, बिणोदि—सं. पु.—१ एक छंद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण मे आठ रगण होते हैं ।

उ०—आठ रगण आवै उचित, पायं एह प्रमाण । गुण बिणोद इणि भाति, गणि वदि लखपति बखाण ।
—ल पि

२ देखो 'विनोद' (रू भे)

उ०—१ फाग गाइजै छै । फाग खेलीजै छै । नाचीजै छै । हास बिणोद कीजै छै । हास रस हुइ नै रहीयो छै । फागोटा रा मुख सवाद लीजै छै । घरि घरि बसंत राग हुलरावीजै छै ।
—रा. सा. स.

उ० – २ रग राग बिणोद विसातरयं बहुय, चढि चाडति सुंदर मिदरयं सहुयं । मिण माणक कुदण ककणमं दिपत, मोताहळ हार विभूखणय वणित ।
—गु रू. ब.

उ०—३ राग छतीस तरग अनग, रूप अनूप अनोपम रग । बोलीजै सुख निस-वासर, आणद गीत बिणोद अवसर ।
—गु रू ब.

उ०—४ वितइ चतुर म [चितत]इ, धरतउ अरति अपार । विखय बिणोदि विणासिइ, हासइ जीव गमारु । —जयसेखर सूरि

बितंड—स पु. [सं] १ हस्ती, हाथी ।

२ घोड़ा, अश्व । (अ मा., डि. को, ह. ना. मा.)

उ०—तेजी बितड ऊडड तेव, विख्यात वाग अख्यात वेव । परवत पंख पक्खर प्रचड, एराकी पिठ खुरसाण खड । —गु. रू. बं.

३ सूरज, सूर्य ।

४ चटखनी ।

वि.—१ जबरदस्त, जोरावर ।

२ मनमोजी, मस्त ।

३ मूर्ख ।

४ पागल ।

५ उद्दण्ड, झगड़ालू ।

उ०—बसू प्रचड दडतैं प्रचड दडतें वहैं, बितंड चंड दंड दे प्रदड छडतें वहैं । बिमोह मोह मोह मैं विद्रोह द्रोहिपैं बढैं, क्रतांत भांत कोह मैं कुकोह कोहिको कढैं । —ऊ. का.

रू. भे.—बयड, बितड, बितुड, बेतंड, बेतुंड, बइड, बयड, बितुंड ।

बितंडमुख—सं. पु. [सं. वितण्ड:+मुख] गजानन, विनायक ।

रू. भे.—मुखबयंड, बयंडमुख ।

बितडा—स. स्त्री. [सं. वितण्डा:] १ अपने मत की स्थापना करने हेतु दूसरे पक्ष को दबाने की क्रिया ।

२ व्यर्थ का झगडा या कहा सुनी ।

यौ —बितंडावाद ।

बितंडावाद—स. पु. [स वितण्डा+वाद] १ स्त्रियो की चोसठ कलाओ मे से एक । (व. स)

२ दूसरों के पक्ष को दबा कर अपने मत की स्थापना करने की क्रिया ।

३ व्यर्थ का झगड़ा या कहा सुनी ।

रू. भे.—बितुंडावाद ।

बितंती—देखो 'वितत' (रू. भे)

उ०-मुराचार घटारव तार साजै, वणै नौबती सोमती रीत बाजै । विराजै मुखाचाय तती बितंती, वदै आरती राग वाणी वणती ।
—रा. रू.

बित—वि. [सं] चतुर, निपुण, ज्ञाता ।

स पु [सं. वित्त] १ मवेशी, पशुधन ।

उ०—१ ओजो हु आज चूक अवसाण, बकै नह बेद मुखां ब्रह-माण । जावै बित ऊभा मूझ जीवार, धरा नह छोळ दियै इद्रधार ।
—गो. रू.

उ०—२ सं. १५५३ गा बरसाद काळ पडीयो । घास चारो नही मेह थोडो वूठो । बित घणो मुवो । पड रा गावा मे तथा थळ मे मिनख गोळ कर नै ढोर चारवा नै नई पड रा घास चार मे आवै, उणा ऊनाळू रा गावा मे कोमीटा, नै साख बाजरी ।
—मारवाड री ख्यात

उ०—३ रावळ भीम जेसळमेर पाट छै । ऊहड़ गोपाळदास रै बेटै उरजन, भोपत, माडण, पोकरण रा गाव घणा मारनै बित लै नीसरिया ।
—नैणसी

उ०—४ अठै जैत सिकार रमतो आयो, वास छोडीया थकां । सु जैन रै नीजर असवार आया, साढीया थोडा लीया । ताहरा चाकर नूं बोलीयो, "सांढीयों कैरीया ?" ताहरा रैबारी १ साथ हुंतो । तिहारा तोड चढीयो पमवाडै ला‹ो आवै छै । ताहरू सू रैबारी कहीयो, "साढीयो राजवीया छै। सु तोड न छाडवी जोएं छै, जु रैबारी मार नै तोड लेवा । सु तोड मैह रै चौखल रै कैड री, हथ बिहथी कंबडी, नवहथी भोकणी । चौखल करही भेकती तहा भेकी । तोड त्रिहाेण तो कांम आयो । देढो जैत नूं सुखपाल मांहे घातीयो, पूरं लोह पडीयो , सु लोहा री छाक मांहि गम नहीं । अचेत थको नू हजूर ल्यायो । सु अचेत थको जाहरा बोलै, ताहरा कहै, "राजा रो बित आवण न पावै । —जैतमाल पुमार री बात

२ धन, दौलत, द्रव्य, सम्पत्ति ।

उ०—१ तद दोई बेटा तो मोटा हता, सु तिकै तो जाय कही देस रै राजा रै चाकर रह्या । अर छोटो बेटो रजपूत पासै । ऊ पण मोटो हुवो । अर बित कन्है हुतो सो सरब खाधो ।

—बूढी ठग राजा री बात

उ०—२ वारवधू ही हरण बित, नेह जणावै नेण । यू मिर लेवा ऊधरै, वैरी मीठा वैण । —बा. दा.

उ०—३ सुजन बित देणो लेणो, कीत गाथ सधीर है । हरण दुख ह्वै सतां, मात-पिता रघुबीर है । —र ज प्र.

उ०—हरीया सुत बित बोह भया, मिमता अब अघाय । कीडा होसी करम का, चुडिख चुडिख तन खाय । —अनभववाणी

रू भे.—बित बित्त, बीत, वत, वितु, वित्त ।

अल्पा.,—बितड़ी, बितडो ।

बितकर-स पु.—कपट, धोखा । (अ. मा.)

बितड़णौ, बितड़बौ-क्रि. अ.—विकारयुक्त होना, विकृत होना । (दूध.-दही आदि)

बितड़णहार, हारो (हारी), **बितड़णियो**—वि० ।

बितड़िओड़ो, बितड़ियोड़ो, बितड्योड़ो भू० का० कृ० ।

बितड़ीजणो, बितड़ीजबो—भाव वा० ।

बितड़ियोड़ो-भू. का. कृ.—विकारयुक्त हुवा हुआ, विकृत हुवा हुआ ।

(दूध-दही आदि)

(स्त्री बितडियोडी)

बितडी-स स्त्री.—देखो 'बित' (अल्पा., रू भे)

उ०—दादू कहै ज्यों आवै त्यों जाइ बिचारी । बिलसी **बितडी** न माथै मारी । —दादूबाणी

बितड़ो—देखो बित' (अल्पा , रू. भे.)

उ०—सतगुरु दीया रांम धन, रहै सु बुद्धि बताइ । मनसा वाचा करमणा, बिलसै **बितड़ै** खाय । —दादूबाणी

बितणौ, बितबौ—देखो 'बीतणौ, बीतबौ' (रू. भे.)

उ०—बितए आसोज मिळै नभि बादळ, प्रथी पंक जळि गुडळपण । जिम सतगरु कळि कलुख तणा जण, दीपति ग्यांन प्रगटै दहण । —बेलि

बितणहार, हारो (हारी), **बितणियो**—वि० ।

बितिओड़ो, बितियोड़ो, बित्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बितीजणो, बितीजबो—भाव वा० ।

बितियोड़ो—देखो 'बीतियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. बितियोडी)

बितत-स. पु [स वितत] १ तांत अथवा तार वाद्य ।

२ मृदग व ढोल आदि वाद्यो से उत्पन्न होने वाला शब्द ।

रू. भे —बितती ।

बिततपक्ष-स. पु —१ एक पक्षी विशेष । (सभा)

बितत्य-स. पु.[स.] गृत्समदवंशीय विहव्य ऋषि का पुत्र और सत्य का पिता, एक ऋषि ।

वि वि —इसे कही-कही राजा भी कहा गया है ।

बितथ-सं. पु. [सं.] १ मिथ्या, झूठ, असत्य । (ह ना. मा)

२ भरद्वाज ऋषि का एक नाम । ये दुष्यन्त के गोद गये हुए थे और इनके पुत्र का नाम मन्यु था ।

वि वि —कही-कही ऐसा लिखा भी मिलता है कि ये दुष्यन्त-पुत्र भरत राजा के गोद गये थे । ये बृहस्पति के वीर्य से उत्पन्न होने के कारण ब्राह्मण थे किन्तु बाद मे क्षत्रिय हो जाने के कारण इन्हें "ब्रह्मक्षत्रिय" भी कहते है । अनेक पुराणानुसार, भरत राजा ने भरद्वाज ऋषि को गोद नही लिया था बल्कि उनके वितथ नामक पुत्र को गोद लिया था और इसे भरत राजा के गोद देने के बाद भरद्वाज ऋषि स्वय वन चले गये थे ।

रू. भे —बितथ, बिथत ।

बितदाता-स. पु.—पिता । (अ. मा.)

वि —धन देने वाला, दातार ।

बितद्रु-स. पु. [स.] १ पजाब की झेलम नदी का एक नाम ।

२ एक यादव, जो यादवो के सात प्रधानमंत्रियो में से एक गिना जाता है ।

बितपन्न-वि [स. व्युत्पन्न] शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता । (मा. म)

बितरक-वि [स]वितरण करने वाला ।

स. पु. [सं. बितर्क] १ एक तर्क के बाद दिया जाने वाला दूसरा तर्क ।

उ०—तरक न अतरक्क कपि करत बितरक यामें, थरक गिरि अरक उर थरक अमरेस कैं। दलित पहार हलमलित सुमेरुधार, दिष्षसपतस्व अस्वचलित दिनेस कैं। —ला. द.

२ संदेह, शक।

३ एक राजा जो कुरुवंशीय धृतराष्ट्र का पुत्र था।

बितरण—सं. पु. [स]—१ दान। (ह ना. मा.)

२ अर्पण करने की क्रिया।

३ बांटने की क्रिया।

४ दान देने की क्रिया।

रू. भे.—बितरण, बितरन।

बितरणवान, बितरणवांनो—स. पु.—दातार, दानी। (अ. मा.)

बितरणौ, बितरबौ—क्रि. स.—१ अर्पण करना।

३ बांटना, वितरण करना।

४ दान देना।

५ पुण्य करना।

बितरणहार, हारौ (हारी), बितरणियौ—वि०।

बितरिग्रोड़ो, बितरियोड़ो, बितरघोड़ो—भू० का० कृ०।

बितरीजणौ, बितरीजबौ—कर्म वा०।

बितरणौ, बितरबौ, बिसरणौ, बिसरबौ—रू० भे०।

बितरदन—स. पु. [स. वितर्दन]—रावणपक्षीय एक राक्षस।

बितरन—देखो 'बितरण' (रू. भे.)

बितरां—क्रि. वि—इतने मे।

उ०—बितरां माहै मारवणीजी बिलब करता पान बीड़ो आरोगता सहेलीयां संघातै आवरण लागी। —ढो मा.

बितरित—वि. [स] १ बाटा हुआ।

२ दान दिया हुआ।

३ अर्पण किया हुआ, अर्पित।

बितरेक—स. पु—एक उपमालकार विशेष जिसमे उपमेय मे (उपमान की अपेक्षा) उत्कर्ष या अपकर्ष दिखलाने के द्वारा उपमेय की उत्कृष्टता (विशेषता) का वर्णन हो।

क्रि. वि [सं. व्यतिरिक्त]—छोड कर, सिवा, अतिरिक्त।

बितरेकजथा—स पु. स्त्री—डिंगल में गीत रचना का वह नियम जिसमे व्यतिरेक अलंकार हो। (र. कु बो)

बितळ, बितल—स पु [स. वितल]—१ सात पातालों मे से तीसरा पाताल। (पौराणिक)

उ०—१ सर धून धून दिगपाल डरि, कसकि कमठ्ठ नि पिट्ठि भर। घर धुजिज तळातळ तळ बितळ सेस सलस्सल छट्ठि घर। —ला. रा.

वि वि.—उक्त पाताल मे शिवजी को हाटकेश्वर कहते है। इन्ही की शक्ति से हाटकी नदी निकलती है जिसे वहा की वायु से उत्पन्न अग्नि देव पीते हैं और पुन: फुफकारने से हाटक (सोना) निकलता है।

२ पाताल।

उ०—बहुळ ससियळ चमक साबळ, वहै कळकळ प्रबळ बीजळ। वहै चकळ इळतळ बितळ चळचळ,, मगळ झळ धमळ मगळ। विढै सूर अजागि। —सू. प्र.

वि.—नीच, अधम, पतित। (अ. मा.)

बितसाक—अव्य.—यथाशक्ति।

उ०—अवनी मे जिकै भलाई आया, करै सदा सुकरत रा कांम दान सदा बितसाक देवै, नित रसणा लेवै हरिनाम। —र. रू.

बितस्ता—स. स्त्री. [स.] पजाब की झेलम नदी का एक नाम।

बितांन, बितांनक—सं. पु. [स वितानं या वितान:] १ बिस्तार, फैलाव।

उ०—१ उठे बै दळ जोघ अकारा, साझ सरीर तणा भ्रम सारा। कहि गया तन मजन कीधा, दान बितांन मान करि दीधा। —रा. रू.

उ०—२ चीखलि चालता सकट स्खलइ, लोक तणा मन धरम ऊपरि वलइ। नदी महा पूरि आवइ, प्रथ्वी पीठ प्लावइ नवा किसलय गहगहइ, वल्ली बितांन लहलहइ। —रा सा. स.

२ बडा चन्दोवा।

उ०—१ तास कनात अनेक तणाए, विमळ सिमान बितांन बणाए। चिग पडदासू पाल चमकै, दामण जाण सिळाउ दमकै। —सू. प्र.

उ०—२ मिळ थाट लुटै अमीर हिम जडित भूखण हीर। तारख सरस्वत बितांन, मूकेस जरियमि मान। —सू. प्र.

३ यज्ञ, हवन। (अ. मा, ह. ना मा)

४ सूर्य, सूरज। (ना मा) (क. कु बो.)

बितांना—सं स्त्री [स विताना] भौत्य मन्वन्तर के बृहद्भानु अवतार की माता।

बिताणौ, बिताबौ—देखो 'बिताणौ, बिताबौ' (रू भे.)

उ०—अरण आग्याकरी सूझ नायक अवध, अवध बितानै वेग आवा जानकी। रहोला अठै मो जनक रे, जनक रे कना पोहचाय जावां। —र. रू.

बिताणहार, हारौ (हारी), बिताणियौ—वि०।

बितायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिताईजणौ, बिताईजबौ—कर्म वा०।

बितायोड़ो—देखो 'बितायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. बितायोड़ी)

बिताव-वि. [सं. वि+ताव]—मंद, ठंडा, नम्र, जोश या क्रोध रहित।

उ०—अति सोचै पतसाह अछानै, खिण सज्या खिण तारतखानै उड रहियौ मन लाग अलगै, गुड्डी जांण अभ्रं गयणगै। ऊभा दास खिजमती आगी, ताव बिताव लगै टगटगी। —रा. रू.

बितावणौ, बितावबौ—देखो 'बिताणौ, बितावौ' (रू. भे.)

बितावणहार, हारौ (हारी), बितावणियौ—वि०।

बिताविओड़ौ, बितावियोड़ौ, बिताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बितावीजणौ, बितावीजबौ—कर्म वा०।

बितावियोड़ौ—देखो 'बितायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बितावियोड़ी)

बिति-स. पु [स] १ तुषित अथवा साध्य देवो में से एक।

उ०—समुद्र भुजादडि तरीइ, तीक्ष्ण खड्गधारा सचरीइ, निरास्वाद वालुकापिंड कवलीइ, पंचमेरु पचागुलि तोलीइ, लोहमय चिणा दात बिति चावीइ, वडवानलज्वाला मुखि पीजइ, आकाश निरालब चडेवउ,......। —व. स

बितिक्रम—देखो 'व्यतिक्रम' (रू. भे.)

उ०—अस्टचत्वारिस लच्छ अच्छ में कलित भई, रिन विच राजधानी मानी मन मापी कौ। करम्मचारी बितिक्रमी करम्मसब बितिक्रम बिराथब थबन बितिक्रम ऊथापी कौ। —ऊ. का.

बितिक्रमी—देखो 'व्यतिक्रमी' (रू. भे.)

उ०—अस्टचत्वारिस लच्छ अच्छ मे कलित भई, रिन विच राजधानी मानी मन मापी कौं। करम्मचारी बितिक्रमी करम्म सब बितिक्रम, बिराथब थंबन बितिक्रम ऊथापी कौं। —ऊ का.

बितिपात—देखो 'व्यतिपात' (रू. भे)

•**बितिहोतर, बितिहोत्र**—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे.)

बितीत, बितीति—देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

उ०—१ तद दिन तौ बितीत हुवौ, रात पडी। तठै ठकुरै रै बेटै नू सूतै नूं जानीया उठाय नाखीयौ समुद्र। तिको ईयै नु एकै मछी गिलीयौ। —ठकुरै साह री वात

उ०—२ सैसव सु जु सिमिर बितीत थायौ सहु, गुण गति मति अति एह गिणि। आप तणौ परिग्रह लै आयौ, तरुणापौ रितुराउ तिणि। —वेलि

उ०—३ प्रभा कहता जोति सो चद्रमा की गई। जब राति बितीत होण लागी। तब चद्रमा किसो दीसै छै। जिसो भरतार असमाध्या थका सती को मुख देखिज्यै। —वेलि टी

उ०—४ म्हारो सुजस अमर. 'करणावत', वासुर जग बहु हुवै बितीत बाधारियौ पाघडी बिढतै, चैराडियौ नही बडचीत। —द. दा.

उ०—५ यौं बहुता मग आवतां, ग्रीखम हुवौ बितीत। मिटिया मुख महराब रा, आयौ घरा 'अजीत'। —रा. रू.

बितीपात—देखो 'व्यतिपात' (रू भे.)

उ०—साचरै मेल सिसपालना सांमटा, अपसकुन अनै अबजोग थया एकटा। दसासूळ भद्रा बितीपात महूरत दीयौ, क्रमियौ काळ चद्रकाल सनमुख कीयौ। —रूखमणी हरण

बितीपाती—देखो 'व्यतीपाती' (रू. भे.)

बितुड—देखो 'वितड' (रू. भे.)

उ०—प्रचड लोट पिंड कै घकै प्रचड कै परै, बितुड तुड लौं झगै त्रभड व्है झरै। प्रजोघ कुप्पि कै प्रधात्र धप्पि देपरै, महा गरूरपूर सूर दूर दूर तै मरै। —ऊ. का.

बितुडावाद—देखो 'वितडावाद' (रू. भे.)

बितु—देखो 'वित' (रू. भे)

उ०—वाहण वखारि आपणी, ऊतरिना तै सेठि। आवि देवाइ आगणइ, बितु करता वेठि। —मा. का. प्र.

बितोड़णौ, बितोड़बौ–क्रि. स.—तोडना।

उ०—घघ घरै करि ढूंस, बात मे हेत बितोड़ै। आप कियो तै अवल, वलै पर किया विछोडै। —घ ब. ग्र.

बितोड़णहार, हारौ (हारी), बितोड़णियौ—वि०।

बितोडियोडौ, बितोडियोडौ, बितोड्योडौ—भू० का० कृ०।

बितोडीजणौ, बितोडीजबौ—कर्म वा०।

बितोडियोडौ–भू. का कृ—तोडा हुआ।

(स्त्री बितोडियोडी)

बितोल–वि [स वि+तुल]अतुल्य, बलशाली।

उ०—घुमाव लोल गोल की अघत्त ओलती घलै, हरोळ गोल धोलदै चदोळ चोलती हलै। विध्य जनेच्छनी अचोळ गोळ घोलही बहै, सतोल तोल तोल सें बितोल तोलती वहै। —ऊ का.

बित्त-स पु. [स] १ कुशुभि नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य।

२ प्रतर्दन देवो मे से एक।

३ सुख देवो मे से एक।

४ देखो 'वित' (रू. भे.)

उ०—१ क्याही कर बोहरो हुवै, क्याही कर व्है मित्त। क्याही कर चाकर हुवै, बणिक हरेवा बित्त। —बा. दा.

उ०—२ तिण समय माहै तेजसी उठै गयो। तरै उण तीनै ही उमरावै आपथा ही ज विचार नै उण बित्त रा च्यार हिस्सा कीया। एक हिस्सो लै तेजसी नु दीयो। —राव मालदे री बात

उ०—३ खित जासिय ऊमर पाय मही, नभ सूरज चद भुगोळ नही। जिंदराव नेजामिय बित्त जठै, कह 'पाल' वसासिय मूह कठै। —पा प्र.

उ०—४ परभात चढ़िया सो गांव दूजी वळै जाय मारियौ । पछै बीजा गांवां नू पासरणा छूटा सो वित्त सारौ घेर ले आया । गाव दोय री तौ जमा ऊठण दीवी । —अमरसिंह राठौड़ री बात

उ०—५ खेघै लाग राव खीची चारणां वित्त नूं खच्यौ, संच्यौ मनां आयौ इसौ आयौ यू ओसांण । पूकारौ देवळा अबै आपरा पखेत पाबू, पांणा जोस हूं तौ आथ लै जाऊ प्रमाण । —बादरदान दधवाड़ियौ

उ०— डोकरी कहयौ–गूजरां रै घरै आयोड़ा नै दूध पायां आपे ई वित्त भर दूध री बधापौ व्है । म्हारी बेटी नै घरै आयोडा री सरबरा री ध्यांन है इज घणौ । —फुलवाडो

वित्तगोप्ता–सं पु [सं.] कुबेर के भण्डारी का नाम ।

वित्तग्यान–स. पु. [सं. वित्त+ज्ञान] ७२ कलाओ मे से एक ।

वित्तणौ, वित्तबौ—देखो 'बीतणौ, बीतबौ' (रू भे)

उ०—लग्गी हाम विलासं, वित्तौ अग्गात प्रात मध्यांन । सायंकाळ निसीत, रत भूप चूप मदनाय । —रा रू.

वित्तणहार, हारौ (हारी), वित्तणियौ—वि० ।

वित्तिओड़ौ, वित्तियोड़ौ, वित्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वित्तीजणौ, वित्तीजबौ—भाव वा० ।

वित्तदा–सं. स्त्री. [स] स्वामी कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका ।

वित्तनाथ–सं. पु [स. वित्त+नाथ]—कुबेर ।

वित्तप, वित्तपत, वित्तपति, वित्तपती–स. पु [स वित्तप, वित्तपति] धन की रक्षा करने वाला, कुबेर, धनपति । (डि को.)

वित्तपाळ, वित्तपाल–सं पु [स. वित्त+रा पाळ] कुबेर का एक नाम ।

वित्तपुरी–स. स्त्री [स] कुबेर की अलकापुरी ।

वित्तरणौ, वित्तरबौ—१ देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—इदबधू अणपार, क बसुधा वित्तरी । मनु तूटी मणिमाळ, मदन महिपत्त री । — कविवर सिवबक्स पाल्हावत

२ देखो 'वितरणौ, वितरबौ' (रू भे.)

वित्तरणहार, हारौ (हारी), वित्तरणियौ - वि० ।

वित्तरिओड़ौ, वित्तरियोड़ौ, वित्तरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वित्तरीजणौ, वित्तरीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

वित्तरियोड़ौ—१ देखो 'विस्तरियोडौ' (रू भे.)

२ देखो 'वितरियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. वित्तरियोडी)

वित्तहीण, वित्तहीन–वि. [स. वित्तहीन] दरिद्र, निर्धन, गरीब ।

वित्ति—देखो 'वीति' (रू. भे)

वित्तिकर–वि. [स.] वृत्ति कर्ता ।

उ०—अभयदेव नव अंग वित्तिकर, पासु पसायणु, पउमएवि धरणिंद पमुह, सुर साहिय मासणु । —ऐ. जै. का. स.

वित्तेस–सं. पु. [स. वित्त+ईशः] धन का पति, कुबेर ।

वित्तेसर, वित्तेसुर, वित्तेस्वर–[स. वित्त+ईश्वर] कुबेर ।

वित्तौ–सर्व.—उतना ।

उ०—बस केवळ नांम सही है, वौ मोटौ राम सही है । जित्तौ तप मे म्हैं तपस्या, वित्तौ ही काम सही है । —करणीदान बारहठ

वित्थर, वित्थरि—देखो 'विस्तार' (रू भे.)

उ०—गंगतडा तडि अच्छइ ओयणु, वित्थरि दीरघि बारह जोयणु । पासहरा वागुरीय बहूय, पइठा वणि कोलाहलू हूय । —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'विस्तर' (रू. भे.)

वित्थरणौ, वित्थरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दत कुळी अगुळी, करी कोपरी कपाळां । बीच खेत वित्थरी फरी विहरी किरमाळा । —रा. रू.

उ०—२ पाना मुख वाजित्र हिलै वांना बैरक्का, मेघ रग मातग वीढ ऊढग कटक्का । पली जेथ सादळां हिली फौजा धमसांणा, व्योम रजी वित्थरी धमस वज्जी केकाणा । —रा. रू.

उ०—३ सेर खान भर समर कहर परसै धर कदळ, लोथ लोथ ऊपरा गरा भिडजा गज तडळ । दंत कुळी अगुळी मत्थ पग हत्थ निराळा, अत तत्र वित्थरी, हन दाढाळ हठाळा । —रा. रू.

वित्थरणहार, हारौ (हारी), वित्थरणियौ—वि० ।

वित्थरिओड़ौ, वित्थरियोड़ौ, वित्थरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वित्थरीजणौ, वित्थरीजबौ - भाव वा० ।

वित्थरियोड़ौ— देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री वित्थरियोडी)

वित्थार—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

वित्थारणौ, वित्थारबौ - देखो 'विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लाहोर नयर उच्छव हुया, चिहु खडि जस वित्थारिया । कर जोडि समयसुंदर भणइ, स्रीपूज्य भलइ पधारिया । —स. कु.

उ०—२ पण सग वेय मयक वरमि माहह छण वासरि, भांणु-सल्लि वर नयरि अजियनाहह जिण मंदिरि । नंदो ठविय वित्थारि सुगुरु सागरचद गणहरि, सूरि मतु जसु दिद्धि किद्ध मगलु विवह परि । —ऐ जै. का. सं.

वित्थारणहार, हारौ (हारी), वित्थारणियौ—वि० ।

वित्थारिओड़ौ, वित्थारियोड़ौ, वित्थारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वित्थारीजणौ, वित्थारीजबौ—कर्म वा० ।

वित्थारियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वित्थारियोडी)

बिथुरणौ, बिथुरबौ—देखो 'बिस्तरणौ, बिस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—धसी अकास धूसरी, कि वान सेन बिथुरी। निर्माण पांण नद्दयं, सुघोर जोर सद्दयं। —रा. रू.

उ०—वसुधा खोण सुरंगी, तुरियां घसळ बिथुरी रैणा। आदू चपळ सहावौ, हुंइ रत्ती हूड अणरतह। —गु रू. ब.

उ०—३ बिसाळ भाल तोप की बिसाळ जाळ बिथुरं, धमंक भू धुजावणी धमक मेघ लौं धुरै। महान रज दब्बुनी अरीन दब्बुनी मही, कथै कवीर नै कही चिराव की चही चही। —ऊ. का.

बिथुरणहार, हारौ (हारी), बिथुरणियौ—वि०।

बिथुरिग्रोड़ौ, बिथुरियोड़ौ, बिथुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिथुरीजणौ, बिथुरीजबौ—भाव वा०।

बिथुरियोड़ौ—देखो 'बिस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिथुरियोड़ी)

बित्रस–वि. [सं वितृप्त] जो तृप्त न हुआ हो, असन्तुष्ट।

बित्रभव–स. स्त्री.—पूर्व ओर ईशान दिशा के मध्य की दिशा जिस ओर कृत्तिका नक्षत्र उदय होता है। इसका दूसरा नाम 'त्राणी' भी है।

बित्रस–वि. [स. वितृष] जिसमे किसी प्रकार की तृषा न रह गई हो, तृप्त।

बित्रस्ण–वि. [सं. वितृष्ण] १ जिसे किसी प्रकार की तृष्णा न हो, तृप्त २ निष्पृह, उदासीन।

बित्रहोत, बित्रहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू भे.) (अ. मा.)

बित्रा, बित्रासुर—देखो 'वृत्रासुर' (रू. भे.)

उ०—गूमर तजै बित्रा गळिण, हुलसै जोडै हथ्थ। घेठौ असुरा चौ धणी, कहै सुणाई कथ्थ। —मा. वचनिका

बिथ—देखो 'व्यथा' (रू. भे.)

बिथक–वि —थका हुआ।

बिथकणौ, बिथकबौ–क्रि. अ.—थकना, थकावट महसूस करना।

उ०—मैंळ पख चढ जही अनैकारा, हेळ कळा छाडै चित हेत। बिथकै नहीं उगतां अवसां, रुत कासिव नर रयण सुबेत। —वीरमदे राठोड़ री गीत

बिथकणहार, हारौ (हारी), बिथकणियौ—वि०।

बिथकिग्रोड़ौ, बिथकियोड़ौ, बिथक्योड़ौ—भू० का कृ०।

बिथकीजणौ, बिथकीजबौ—भाव वा०।

बिथकियोड़ौ–भू. का कृ —थकावट महसूस किया हुआ, थका हुआ। (स्त्री. बिथकियोड़ी)

बिथत—देखो 'वितथ' (रू. भे) (अ. मा.)

बिथरणौ, बिथरबौ—देखो 'बिस्तरणौ, बिस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कळि मचंड असात उठै मेजक कुहर, रेण भैचक संक मही राथ राणं। बिथरतौ तेण दिन जाप 'सूजा' बिया, जग दुड़िव तणै प्राताप जाणै। —ऊमेद सिंघ सिसोदिया री गीत

उ०—२ दंताळां दड़काय, मोताहळ बिथरै मही। स्याळां मती सताय, लकाळा गज भख 'लछा'। —भगवानजी रतनू

बिथरणहार, हारौ (हारी), बिथरणियौ—वि०।

बिथरिग्रोड़ौ, बिथारयोड़ौ बिथरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिथरीजणौ, बिथरीजबौ—भाव वा०।

बिथराणौ, बिथराबौ—देखो 'विस्तारणौ, बिस्तारबौ' (रू. भे.)

बिथराणहार, हारौ (हारी), बिथराणियौ—वि०।

बिथरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिथराईजणौ, बिथराईजबौ—कर्म वा०।

बिथरायोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिथरायोड़ी)

बिथरियोड़ौ—देखो 'बिस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिथरियोड़ी)

बिथा—देखो 'व्यथा' (रू. भे.)

उ०—१ जिण दिन थी तुम देखीया जिमवा मउसरि साह। तिण दिन थी पदमिणि मन बसिउ तुम्ह माहौ रे। सुण आलिम धणी, बिरह बिथा न समायौ रे, बात किसी धणी। —प च चौ

उ०–२ हरि सुमरण हिरदै धरौ, बिथा न पहुंचै वीर। कायर टळि कानै चल्या, लग्या न सुख की सीर। —ह पु वा

उ०—३ जैंमे अगनि कास्ट मे रहै काटि कटै न काठं दहै जन हरिदास अब ऐसी भई, भजना राम बिथा मब गई। —ह पु. वा

उ०—४ पग परसै पावन हुवौ, गई बिथा सब भाज। राज बडै ही रामजी, गहर गरीबनिवाज। —गजउद्धार

उ०—५ करना करण सदा सगि जाकै, चितवनि कहो कहां धूं ताकै। करम कुठार बिथा हरि कापै, जन हरिदास नरहरि जापै। —ह पु. वा.

बिथार—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

बिथारण–वि.—विस्तार करने वाला, फैलाने वाला।

बिथारणौ, बिथारबौ—देखो विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे)

बिथारणहार, हारौ (हारी), बिथारणियौ—वि०।

बिथारिग्रोड़ौ, बिथारियोड़ौ, बिथारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिथारीजणौ, बिथारीजबौ—कर्म वा०।

बिथारियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिथारियोड़ी)

बिथित—देखो 'व्यथित' (रू. भे.)

बिथुरणौ, बिथुरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तेल सिंदूर बिथुरियं, सुनही असवार मसत मंराक। चामुंड सुत नथरिय, बेत्राबीसर तुभ्यौ नमः। —मा. वचनिका

उ०—२ प्यारी के चिहुर बिथुरे मानों मानो धाराधर की स्याम घटा उनई, ता मध्य पहुप छुटि परे ते सें बडी बडी बूंदे। लाल सारी पहिरें हरी कोर मथायनिमी घूंघट करि चली, पीठ पाछे तें तरके कंचुकी तनीकी फूंदे। —मीरा

उ०—३ दूनी तटा जु नदी उपरि वही छै सु जाणे चोटी बिथुरी छै। बिथुरी कहै तें। अथो जु स्त्री त्यं नें धाराहर मेघ जब भरतार मिळीयो छै। तब चोटी बिथुरी। —वेलि टी.

उ०—४ पाका दाडिमा का बीज। यु छिटकि पडघा छै। एही वसंत पाट बैठे नें निवछावळि कीया छै। सु ए मांनूं नग जवाहर बिथुरे छै। और चु भांति भांति का फळ व्रखा के विखै लागा छै। —वेलि टी.

बिथुरणहार, हारौ (हारी), बिथुरणियौ—वि०।

बिथुरिओड़ौ, बिथुरियोड़ौ, बिथुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिथुरीजणौ, बिथुरीजबौ—भाव वा०।

बिथुरियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिथुरियोड़ी)

बिथ्य—सं पु. [सं वीथि] पथ, मार्ग, रास्ता।

उ०—घुमाव लोल गोळकी अघत्त बोलनी घलें, हरोळ गोल घोल दे चटोल चोलती हलें। बिथ्य जनेचछूती अचोळ गोळ घोलही बहैं, सतोल तोल तोल सें वितोल तोलती वहैं। —ऊ. का

बिदंड—स. पु.—द्रोपदी स्वयंवर मे अपने पुत्र दण्ड के साथ उपस्थित एक राजा।

बिद—स. स्त्री. [स विद:] १ जानकार, पंडित, कवि। (अ. मा.)

२ वैद ऋषि के पिता, एक प्राचीन ऋषि।

३ देखो 'विध' (रू भे.)

बिदकणौ, बिदकबौ—क्रि. अ.—चौंकना, चमकना।

उ०—मूळी कोभी, कटरूप, भोगणा री खाण। जावें जठीनें ही रात मिळे। हुंसे जद चीड सो चीरे। चाले तो खोलो सो भाजे, वडबडाट ऊपडे। बोलें तो गधा बिदक जावें। —दसदोख

बिदकणहार, हारौ (हारी), बिदकणियौ—वि०।

बिदकिओड़ौ, बिदकियोड़ौ, बिदक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिदकीजणौ, बिदकीजबौ—भाव वा०।

बिदकाउ—देखो 'बिदकौ' (रू. भे.)

बिदकियोड़ौ—भू. का. कृ.—चौंका हुआ, चमका हुआ।

(स्त्री. बिदकियोड़ी)

बिदकौ—वि. (स्त्री. बिदकी) बढिया, उत्तम, श्रेष्ठ।

रू. भे.—बिदकाउ।

बिदग, बिदग्ध—देखो 'वीदग' (रू. भे.)

बिदग्धछप्पय, बिदग्धछप्पय—स. पु.—पयोधर छप्पय का दूसरा नाम, जो ४४ गुरु और ६४ लघु अर्थात् १५२ मात्राओं का होता है। (पिं. सि.)

बिदग्धता—स. स्त्री. [स. विदग्ध:+ता. प्र.] पांडित्य, बिद्वता।

बिदग्धसाकल्य—स पु. [स. विदग्धशाकल्य] १ विदेह जनक की राजसभा मे, याज्ञवल्क्य के साथ वाद-विवाद करने वाला एक आचार्य, जो पूर्व नियोजित शर्तानुसार, वाद-विवाद में पराजित होने के कारण, मृत्यु को प्राप्त हुआ था।

२ एक आचार्य, जो वायु के अनुसार व्यास की यजुःशिष्य परंपरा मे से याज्ञवल्क्य का वाजसनेय शिष्य था।

बिदग्धा—स. स्त्री [स] १ होशियारी के साथ पर पुरुष को अपनी ओर आकृष्ट करने वाली परकीया नायिका।

२ चातुर्य से युक्त देवी।

बिदग्धाजीरण—स. पु. [सं विदग्धाजीर्ण] पित्त के प्रकोप से उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का अजीर्ण रोग।

बिदग—सं. पु [स विदग्ध:] १ कवि।

उ०—जै जया सबद बिदग भणे, वयणे राजा वांमहा। आखीक खडै अकबर लियां, 'दुरगे' दक्खण सामहा। —रा. रू.

२ पंडित।

रू भे.—बिदग

बिदत—१ देखो 'विद्युत' (रू भे.)

२ देखो 'विदित' (रू. भे.)

बिददस्व, बिददस्व—सं. पु.—तरंत एव पुरमीढ नामक राजाओ का पिता, एक राजा।

बिदमांन—१ देखो 'विद्यमान' (रू भे.)

२ देखो 'विद्वान' (रू. भे.)

उ०—मोटोड़ो मास्तौ ई नाक मे गुणगुणावतौ—क्यूं नी सा इंग-रेजी बोलणो काई बडी बात है, मास्तर बडा बिदमांन है। कितरा तो इणा नें फलमी गाणा आवें अर कितरा इणां नें नाच आवें। —अमरचूंनड़ी

बिदरंग—देखो 'बदरंग' (रू. भे.)

उ०—मत कर, मत कर बिदरंग थारो भेस, खुलें रै केसां मा फिरे।

प्राय मिळेगो थारो स्याम, दिन दसनैं, झूरझुर ना मरै।
—लो. गी.

बिदर—१ देखो 'बिदरी' (रू. भे)

२ देखो 'बिदुर' (रू. भे.)

उ०—१ बोला मे श्रोछा बिदर, मोला मे नह मोट। पोला मे 'परताप' रै, गोलां वाळी गोट। —ऊ. का.

उ०—२ ब्रह्मा जो न करत बिदर, जग मांहे जगजीत। असल नसल रो ऊथड़त, कडापी किरण रीत। —बा. दा.

उ०—३ बिदर बहादर बाजवा, कड बांधे केवाण। कर जोडरण लटका करण, बिदर न छोडै वाण। —बा. दा.

उ०—४ प्रथम बिदर पूजिया, मात केकइ मर्ना मैं, पीव मरण पामिया, पूत चालिया वना में। पछै बिदर पूजिया पडव करवा सदाइ, माह माह कट मुवा, दिली जीवता न पाइ। बिदर नूं पूज वगडावतां,जैचंद 'पीथल' जूंझीया, 'मौकमा' कमध मोटा मिनख, जिकै बिदर तैं पूजिया। —अरजुनजी बारहठ

उ०—५ पैं'ला पेट बधाय पछै बिदरी परणीजै, दुलहो नावै दाय फेर फस जावै बीजै। दुख चूडै दोवडे कदै नह लागो काय, नाकारो नह करै जेण कुळ पद जी जाय। —अरजुनजी बारहठ

(स्त्री. बिदराणी, बिदरी)

बिदरण—देखो 'बिदीरण' (रू. भे)

बिदरणौ, बिदरबौ—देखो 'बिदीरणौ, बिदीरबौ' (रू भे)

बिदरणहार, हारौ (हारी), बिदरणियौ—वि०।

बिदरिग्रोड़ो, बिदरियोड़ो, बिदरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिदरीजणौ, बिदरीजबौ—भाव,कर्म वा०।

बिदरभ-स. पु [स. विदर्भ] १ नौखडाधिपति ऋषभदेव के नौ पुत्रो मे से एक, जो राजा भरत के भाई और निमि के पिता थे। अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा को इसी की कन्या मानते हैं।

२ आधुनिक बरार प्रदेश का एक प्राचीन नाम। (सभा)

उ०—दक्खिण दिसि देस बिदरभति दीपति प्रति कंदणपुर। राजति एक भीखमक राजा, मिरहर आंहि नर असुर सुर। —वेलि

वि वि —यहा के राजा भीष्मक थे। रुक्मिणी उनकी पुत्री थी। जो श्रीकृष्ण की पटरानी थी। राजा नल की पत्नी दमयन्ती का पिता भी इसी प्रदेश का राजा था।

३ एक राजा, जो यदुवशीय ज्यामघ राजा का पुत्र था।

वि वि.—नारदपुराणानुसार इसका पैतृक नाम 'काश्यप' था और इसकी माता का नाम 'शैब्या' या 'चैत्रा' औशिनरी था। इसका विवाह भोजराज कन्या उपदानवी या भोज्या से हुवा था, इसी से इसे कुश, क्रथ, रोमपाद आदि पुत्र और कौशिनि एव सुमति नामक दो पुत्रिया प्राप्त हुई थी जो सगर राजा को ब्याही गई थी।

४ कार्तवीर्य अर्जुन का मित्र एक राजा, जो परशुराम द्वारा मारा गया था।

५ एक ऋषि का नाम। (पुराण)

रू. भे —बिदर, बिदरभ, बिदरभति, बिद्रभ, बिद्रब।

बिदरभजा-स. स्त्री. [स. विदर्भजा] १ अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा का एक नाम।

२ विदर्भ नरेश भीष्म की पुत्री और निषधदेश के राजा वीरसेन के पुत्र नल की पत्नी दमयती का एक नाम।

३ श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणि का एक नाम।

बिदरभति—देखो 'बिदरभ' (रू. भे.)

बिदरभराजतनया—स स्त्री [स. विदर्भराजतनया] दमयन्ती और रुक्मिणी का एक नाम।

बिदरभा-सं. स्त्री. [स. विदर्भा] विदर्भ देश की राजधानी।

उ०—निमख रो विलब रो नाथ अवसर नथी, श्रीकृस्ण मागीओ आण रथ सारथी। स्रीकिमन ब्राह्मण तीसरो सारही, बिदरभा नगर ततकाळ आया वही। —रुखमणी हरण

रू. भे.—वइद्रभा।

बिदरभि-सं. स्त्री. [स विदर्भि] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

बिदरभि कौडिन्य-स. पु [स विदर्भिन्+कौडिन्य] वत्सनपात बाभ्रव्य का शिष्य और गालव का गुरु, एक आचार्य।

बिदराणी-स. स्त्री —दासी, मेविका।

उ० - रजपूताणी रहै रिजक बिन, धरम पतिव्रत धारी रै। बिदराणी पडदा मे बैठी, किसड कमावै सारी रै। —ऊ का.

बिदरियोड़ो—देखो 'बिदीरियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री बिदरियोड़ी)

बिदरी-स. स्त्री.—१ हुक्का।

उ०—तठा उपरायत हुका री होस कीजै छै। चाकरा नै हुकम हुवो छै। हुका तयार कीजै छै। किण भात रा हुका छै? सोनै रा, रूपै रा, बिदरी, खाखोळ ठाढा पाणी सूं भरजै छै। नीचै सुथरा बिछायजै छै। ऊपर हुका मेलहजै छै। तमचा सरद कीजै छै।
—रा. सा स.

२ देखो बिदुर' (स्त्री.) (अ. मा)

बिदरोह—देखो 'बिद्रोह' (रू. भे)

बिदरोही—देखो 'बिद्रोही' (रू. भे)

बिदळ, बिदल-सं. पु. [स. वि.+दल] १ पेशेवर हीजड़ा।

२ शत्रु-सेना ।

उ०—घाडं पुकार पड़ लाखि घाड, रवि उदय अस्त लग पत्र राड सासुळं बिदळ कंदळ ससत्र, रग सेल खगं न मिटै रगत्र ।
—रा रू.

३ एक राक्षस, जो काशीनगर मे पार्वती द्वारा गेंद प्रहार से मारा गया था ।

[स.] लाल रग का सोना ।

बिदळणी, बिदळबौ—क्रि. स —दलित करना, नष्ट करना ।

बिदळणहार, हारौ (हारी), बिदळणियौ—वि० ।

बिदळिप्रोडौ, बिदळियोड़ौ, बिदळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिदळीजणौ, बिदळीजबौ—कर्म वा० ।

बिदळियोडौ—भू का कृ.—दलित किया हुआ, नष्ट किया हुआ ।
(स्त्री बिदळियोडी)

बिदरुस—स. पु —ध्रुवसन्धि नामक राजा का मन्त्री ।

बिदवता देखो 'विद्वता' (रू भे)

बिदवांन—देखो विद्वान' (रू भे.) (अ मा., ह ना. मा.)

बिदवीं—वि —सुन्दर, मनोहर ।

उ०—जगळ जाला माथ, छा रची बिदवीं वेला । फूला चिया फळीज, भिळोरा भिलवं केला । गुदी रग गिलोय, पिलूंदी पसरै चढ़णं । ऊट फोग जड ऊग, पगोठा देवं वढणं ।
—दसदेव

रू भे —बिदवी ।

बिदवेस—देखो 'विद्वेस' (रू भे.)

बिदवेसक—देखो 'विद्वेसक (रू. भे)

बिदवेसणी, बिदवेसिणी—देखो 'विद्वेसिणी' (रू भे)

बिदवेसी - देखो 'विद्वेसी' (रू भे)

बिदांत, बिदांतौ—देखो 'वेदांत' (रू भे)

उ०—दिगनां लौं दोरै मचत मन मोरै मुदमुदी, बिदांतौ भभोरै विसय विष वोरै बुदबुदी । पखारै पापा को त्रिनप भव तापा त्रुटि तलै, मिळावै मेघा को विधि विधि निमेवा फत मलै ।
—ऊ. का

बिदांम—स. पु.—१ मारवाडी (महाजनी) का एक छोटा सिक्का ।

२ देखो 'बिदाम' (रू. भे)

३ देखो 'बादांम' (रू भे.)

उ०—साग साल मलियागरी, बळि नाळेर बिदांम । सोपारी खिरणी मरस, हेम हुवा तिहि ठाम ।
—गजउद्धार

बिदांमी—देखो 'बादांमी' (रू. भे.)

बिदा, बिदाई, बिदायी—स. स्त्री. [अ. वदाश्र] १ प्रस्थान, रवानगी, रुखसत ।

उ०—१ अरि पालण राखण अवनि, विध सुण सरब विचार । भीम सुनण भर भार भळ, बिदा हुओ तिण वार ।
—रा. रू.

उ०—२ ताहरा पातसाहजी सू सिवै अरज कीवी—'आंमद देस मे आतरो रो परगनो छै सु माहरो उतन छै ।' तिण उपर सिवा नू उतन रो पटो कराय दियो । घोडो सिरपाव दियो । बलो दिलासा देनै देस न बिदा कियो ।
—नैणसी

उ०—३ तठा उपरांत करि नै राजान सिलांमति उणि भात सू राजान री बात सुण नै अजमेर रै थाणै री हकीकत मांभळ नै आदि वैर उगराह नूं अनुराग तुरकाण रा दळ राजान ऊपरै बिदा हुआ सो किण भात रा कहीजै छै ।
—रा. सा. सं.

क्रि प्र.—करणी, देणी होणी ।

२ कहीं से रवाना होने या प्रस्थान करने की अनुमति ।

उ०—१ ताहरा पाबूजी गोगोजी भेळा हुयनं घोडा नू गया । आगै देखै तो कासूं ? ऊभा छूटा चरै छै तद अै घोडा लेय लगामा देनै असवार हुयनै गोगोजी री कोटडी आया । पछै पाबूजी नं भगत जीमाय नें बिदा दीवी ।
—नैणसी

उ०—२ उठा जोधपुर हुता राव कल्याणमल जी कन्हा बिदा करि नै कुंवर पदवी थका महाराजाधिराज महाराजा श्रीराय-सिघजी मिरजै इब्राहम रो वांसौ कियो ।
—द. वि.

उ०—३ साथै सुघरो पवन बहता मन बिलमावै, डावा चातक बोल सुगण मोद जतावै । गरभीजण असमान बुगलिया मिळवा आई, इदका हुवा सुगन लेवता मेघ बिदाई ।
—मेघ

क्रि. प्र —करणी, लेणी, देणी ।

३ कहीं से प्रस्थान करने की क्रिया ।

उ०—१ ताहरा पातिसाह उमरावा सगळा नूं विदा करण लागा सु उमराव को बीडो झालै नही । ताहरा महाराजाधिराज महाराजा श्रीरायसिघजी बीडो झालयो । राज बिदा हुआ ।
—द. वि.

उ०—२ दुहाग वाळी उण रात तो कवराणी नै नीद आयगी ही, पण आज इण बिदाई री रात उणनै नीद नी आई । ढोलिया माथै सूनी सूनी पसवाड़ा पलटनी री पण उणरी नीद तो जाणै तारा रै मांय ई चापळगी ही ।
—फुलवाड़ी

४ बिदा करने या होने पर, दिया जाने या प्राप्त होने वाला, धन पुरस्कार, रुपया आदि ।

उ०—नारेळ नरसघ रो हतो नरसंघ रै हाथ दीयो । वडो हरख हुवो । प्रोहित साहो पूछियो । प्रोहित साहो लिख दीनो । प्रोहित न वडी बिदा दीवी, घोडो सिरपाव । तूटा तो पण अजमेर रा

घणी। घणी मनोहार कर प्रोहित नु बडी बिदा दे सीख दीवी।
—राजा नरसिंघ री वात

क्रि. प्र.—लैणी, देणी।

४ भेजने या रवाने करने की क्रिया।

उ०—१ बात अकब्बर आगली, अक्खी हाथ मिळाय। दूत बिदा करके लियो, मारू 'दुरग' बुलाय। —रा. रू.

उ०—२ आसतला सुरा कमध अर्मामा. सुत सिर बिदा कियौ घर सामा। हलिया जबन अजंगढ़ हूता, दारुण सहस वीस जमदूता। —रा. रू.

उ०—३ राजान राजावत। मारू धरे पधारिया छै। चौकि कळळ फूटि नै रही छै। माया रा ऊबराव बहोडावीजे छै। कवि राजानां बिदा कीजे छै। —रा.सा. स.

रू. भे.—बिदा, बिदाई, बीदा, विद्, विद्दा, विधा, विधा।

बिदारक-वि.—१ विदीर्ण करने वाला, फाडने वाला।

२ नाश करने वाला, सहार करने वाला।

रू. भे.—बिदारक।

बिदारण-सं. पु. [स विदारण:] १ अधर्मियो को नष्ट करने वाले भगवान विष्णु।

२ सिधुनरेश जयद्रथ राजा के भाइयों मे से एक।

३ युद्ध सग्राम।

बिदारणौ, बिदारबौ-क्रि. स. [स. विदारण] १ मारना, सहार करना।

उ०—केहर कुंभ बिदारियो, गजमोती खिरियाह। जांणै काळा जळद सूं, ग्रोळा ओसरियाह। —बा. दा.

२ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना।

उ०—रिखि परनो पर किरपा कीन्ही, विप्र सुदामा की विपति बिदारण। मीरां के प्रभु मौ बदी परि, एती बेरि भई किण कारण। —मीरा

३ चीरना, फाडना, विदीर्ण करना।

उ०—१ द्रुपदसुता को चीर बढायो, दूसासन को मान-मद-मारण। प्रहलाद की प्रतिग्या राखी, हिरणाकुस नख उदर बिदारण। —मीरा

उ०—मगर गलतो काठो आयो धीवर पायो, काढयो पेट बिदारी रै लो। तुम पुत्रि घर देखि नोपजतो आयो चलतो, परणायो तिण वारी रै लो। —वि. कु.

बिदारणहार, हारौ (हारी), बिदारणियौ—वि०।

बिदारिग्रोडौ बिदारियोड़ौ, बिदारयोडौ—भू० का० कृ०।

बिदारीजणौ, बिदारीजबौ—कर्म वा०।

बिवारणौ, बिवारबौ—रू० भे०।

बिदारिकद—देखो 'बिदारीकद' (रू. भे.)

बिदारिका-स. पु.—बगल, जघा आदि के सधि स्थान पर होने फोडा विशेष। (अमरत)

बिदारिगंधा—देखो 'बिदारीगधा' (रू. भे.)

बिदारियोडौ-भू. का कृ.—१ मारा हुआ, संहार किया हुआ. २ किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ. ३ चीरा फाडा हुआ, विदीर्ण किया हुआ।

(स्त्री. बिदारियोडी)

बिदारीकंद-स. स्त्री. [स.] एक प्रकार की लता और उक्त ल कद, जो औषधि के काम आता है, भुंईकुम्हडा।

रू. भे.—बिदारीकद, बिदारिकद।

बिदारीगधा-सं. स्त्री. [स] शालपर्णी नामक एक क्षुप विशेष, f फलिया लगती है।

रू. भे.—बिदारिगधा।

बिदारुण-स. पु.—चपकनगरी का एक दुष्ट राजा।

वि. वि.—इसने ब्राह्मणो व वेदो की निदा की थी. इस का इसके शरीर मे कोढ उत्पन्न हुआ था, जो वेत्रवती नदी मे करने के कारण नष्ट हुआ।

बिदावत-स पु—१ कुटिल युक्ति, पेच, कपट, छल, गुप्त रहस्य।

उ०—'अरजन' प्रसन मिळै उमरावा, दाव बिदावत घणा दरिय वाला 'मुहकम' तणी वणावै, साहू दियो अति कुरब सुणावै
—र

२ राठोड़ वश की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

बिदाह-स. पु. [स.] १ पित्त के प्रकोप से शरीर मे उत्पन्न जलन

२ किसी अन्य कारण से हाथ पैर मे होने वाली जलन।

३ उत्सर्ग, दान। (डि. को.)

बिदाहक-वि. [स] विदाह उत्पन्न करने वाला।

बिदाही-सं. पु [सं. विदाहिन्] वह पदार्थ जिसम जलन उत्प दाह उत्पन्न करने वाला पदार्थ।

बिदित-स. पु. [सं.] अवगत, ज्ञात।

उ०—१ विप्र वलतु बोलियु, 'वेदरभ देस विसाल। घर एक भीम नामि, बिदित ता भूपाल। —नळा

उ० —२ सूक्ष्म सरीर, व्याकृति बहीर, क्षीनातिक्षीन चित

चीन। पद परम पून्य संकल्प सून्य, निरबांण नित्य अतर अनित्य।
—ऊ. का

वि.—१ सूचित किया हुआ।

२ प्रसिद्ध, विख्यात।

उ०—पैंतीस जुध लै जय प्रकट, हत्थी सत्तरि रीझ हुत्ति। सासण पचास दीधा सहज, बगसरिया कीधा बिदित। —व. भा.

३ इकरार किया हुआ।

रू. भे.—बदीत, बिदित, वदीत, वदीतउ, वदीतं, विदत।

बिदिया—देखो 'विद्या' (रू. भे)

उ०—भूपति पूजतणं दुति अद्भुत, सजणविनोद नाम पचम सुत। उग्रबोधि पितरं अहिनांणं, जोध जोध बिदिया सब जाणं।
—सू. प्र

बिदियाधर—देखो विद्याधर' (रू. भे)

उ०—पूछे भोपा बांभणा, बिरमोटी वीरतत। बिदियाधर वीरोटिया, चेला होय चालत। —अग्यात

बिदिस—१ देखो 'विदिसा' (रू. भे.)

२ देखो 'बिदेस' (रू. भे)

बिदिसा, बिदिसि—स. स्त्री. [स. विदिशा] १ मालवा मे स्थित परियात्र पर्वत से निकली एक नदी। (पौराणिक)

२ दशार्णव देश की राजधानी।

उ०—बिदिसा जग विख्यात राज री नगरी जाता, सगळा भोग विलास पावसो प्रीत जताता। वेत्रवती जळ पीय लहरतौ घण गरजता, ज्यूं मुख भौंह विलास अधर घण पांन करता। — मेघ

३ दो दिशाओ के बीच की दिशा, उपदिशा।

उ०—१ पहिलो जबू द्वीप ममइ बिचि थाल आकार, लाबउ पिहुलउ इक लख जोइण नै विस्तार। मोटो तेहनै मध्य सुदरसण नामं मेर, तिण थी दस बिदिसांनी गिणती च्यारं फेर।
—ध. व. ग्र

उ०—२ कठळ्यो घमसाण प्रमाण किसा, दहल्यौ हिंदवाण दिसा बिदिसा। त्रिदसालय चाव चढ्या तरुण्या, समचार थळी छत्रधार सुण्या। —मे. म.

उ०—३ अण चपळ नैंण लघु जोम अस्ति, सगि ग्रहू बिदिसि चेतन सकत्ति। दीपत जुगळ कळ अमळ दत, सुत अरक पाणि लखि जाणि सत। —रा रू.

रू. भे.—विदिस, बिदिसा, विदिस।

बिदीया—देखो 'विद्या' (रू. भे) (व. भा.)

बिदीरण—वि. [स. विदीर्ण] १ बीच से चीरा हुआ, फाड़ा हुआ. २ तोड़ा हुआ, नाश किया हुआ. ३ मारा हुआ, संहार किया.

रू भे —बिदीरण, बिदरण।

बिदीरणौ, बिदीरबौ—क्रि स. [स. विदीर्णम्] १ फाड़ना, चीरना।

२ मारना, संहार करना।

३ नाश करना, नष्ट करना।

४ मिटाना।

उ०—पर पीर बिदीरन पीर अपा, तुलसी तसबीर कबीर कृपा। मुघि नानक बांनक सी सरसी, दुति दादुदयाळ समी दरसी।
—ऊ का.

बिदीरणहार, हारौ (हारी), बिदीरणियौ—वि०।

बिदीरिग्रोड़ौ बिदीरियोड़ौ, बिदीरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिदीरीजणौ, बिदीरीजबौ —कर्म वा०।

बिदरणौ, बिदरबौ, बीदरणौ, बीदरबौ, बिदरणौ, बिदरबौ
—रू. भे.।

बिदीरियोड़ौ—भू का. कृ.—१ फाड़ा हुआ, चीरा हुआ। २ मारा हुआ, संहार किया हुआ. ३ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ. ४ मिटाया हुआ।

(स्त्री. बिदीरियोड़ी)

बिदु—स. पु. [सं.] १ घोड़े के कान के नीचे का हिस्सा।

२ हाथी के मस्तक के बीच का भाग।

वि.—विद्वान, पंडित।

उ०—अतवार वहै आपै अनत, सह बिदु हुय जावै सगा। तक विट नाम स्रीराम रो, जग समद तिर तूं 'जगा'। —जगो खिड़ियो

बिदुख—देखो 'विदुस' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना मा)

उ०—१ उचारं वेद बिदुख अनेक। —रांमरासो

उ०—२ दूसरा द्रस्टात जिसउ कैलि को पेड होय। बिपरीत वस्त कहता उलटउ कीयउ। आगइ पींडी कइसी जैसो केलि को गरभ। बिदुख कहता पंडित सुवचना करि वखाणं। वेलि टी.

उ०—३ अो असपत दसमं ग्रह आयो, बिदुख तिका दुण लाभ वतायो। कुळ न्रप उग्र थयो न्है कोई, सुतन प्रताप चौगुणो सोई।
—रा. रू.

(स्त्री. विदुखी)

बिदुत, बिदुति—देखो 'विद्युत' (रू. भे.) (ह ना मा)

बिदुराम—स पु.—विष्णु भगवान का एक नाम।

वि.—सब बातो का जानकार, सर्वज्ञाता।

बिदुर, विदुर—स. पु. [स विदुर] १ कौरवो व पांडवो के प्रसिद्ध मत्री, जो राजनीति, अर्थनीति व धर्मनीति मे निपुण थे और महाराज धृतराष्ट्र के भाई थे।

वि. वि.—इन्हें धर्मराज का अवतार मानते हैं। इनका जन्म विचित्रवीर्य की पत्नी की दासी और व्यास ऋषी के संसर्ग द्वारा हुआ था। ये श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त और निष्पक्षी थे। इन्होंनें भीम से शस्त्रास्त्र, आयुधाभ्यास, धनुर्विद्या और वेदाभ्यास किया था। पाण्डवों के द्वारा सही नीति का मार्ग अपनाने के कारण इन्होंने उनकी रक्षा करने के अनेक बार प्रयत्न किये। चन्द्रवंश की रक्षार्थ दुर्योधन की कुटिलताओं का उल्लेख धृतराष्ट्र के सामने करते हुए उसे अपने पुत्रों (दुर्योधन आदि) का त्याग करने को कहा था इसी कारण धृतराष्ट्र ने इन्हें देश से निष्कासित किया था। भीष्म की मृत्यु और श्रीकृष्ण बलराम के स्वर्गारोहरण के पहले ही ये धृतराष्ट्र, संजय व गान्धारी के साथ तपस्या करने वन में चले गये और वहीं यदुवंश के नाश की बात सुनकर पार्थिव शरीर छोड़ कर धर्मदेव का रूप धारण किया।

उ०—१ आइसं बिदुरह दीधउं राइ, दह दिसि जणवइ जोवा जाइं। सोवनथंभे मंच चडावइ, रांणी रागि तै सहू य आवइ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—२ राखिउ ए राउ जुठिलु बिदुरह वयणु न मांनीउं ए। हारीयां ए हाथियं थाट भाईय हारीय राजि मउं ए।

—सालिभद्र सूरि

उ०—३ अंबालंदरणु बिदुर नामु नामि खजि सरीखउ। इ ग्वीगइ पुणु विचित्रवीरघु पंडु राजि प्रतीठिउं। —सालिभद्र सूरि

२ बहुला नामक स्त्री का पति एक वेश्यागामी ब्राह्मण, जिसने अपनी पत्नी के द्वारा किये गये पुण्यकर्मों के कारण मुक्ति प्राप्त की थी।

३ सोमवती अमावस्या के दिन प्रयाग के गंगासगम मे स्नान करने से ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त हुआ, पांचाल देश का एक क्षत्रिय।

४ पडित या ज्ञानी पुरुष।

५ दासी-पुत्र, सेवक।

६ स्वाग बनाने वाला विदूषक।

उ०—विधि पाठक सुक सारस रस वंछक, कोविद खजरीट गति-कार। प्रगलभ लाग दाट पारेवा, बिदुर वेस चकवाक विहार।

—वेलि

रू भे.—बिदर, बिदूर, विदर।

विदुला-स. स्त्री. [स.] सोवीर देश के राजा की पत्नी और संजय की माता।

वि. वि.—यह बडी ही वीर स्त्री थी। इसका पति, इसके पुत्र की बाल्यावस्था मे ही मृत्यु को प्राप्त हुआ था। इसी कारण से सिन्धु-नरेश ने सौवीर देश पर चढाई की थी और संजय को रणभूमि से भागना पडा था। मगर इसने अपने पुत्र संजय को घर में नही घुसने दिया और कडी फटकार सुना कर पुनः युद्धार्थ प्रोत्साहित किया था।

विदुस-वि [स. विदुष] (स्त्री विदुषी) १ विद्वान, पंडित। (डिं. को.)

२ कवि। (अ. मा.)

३ चतुर, होशियार।

४ अगराज वंशीय एक राजा।

५ मत्स्यानुसार, धृत राजा का पुत्र, एक राजा।

६ ज्योतिषी।

रू भे.—विदुख विद्‌स।

विदुसणौ, विदुसबौ --देखो 'विदूसणौ, विदूसबौ (रू. भे.)

विदुसणहार, हारौ (हारी), विदुसणियौ—वि०।

विदुसिओड़ौ, विदुसियोड़ौ, विदुस्योड़ौ - भू० का० कृ०।

विदुसीजणौ, विदुसीजबौ – कर्म वा०।

विदुसियोड़ौ–देखो 'विदूसियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. विदुसियोडी)

विदूण-सं. पु.—रावण के छोटे भाई विभीषण का एक मन्त्री।

विदूर-वि. [स.] बहुत दूर।

स. पु—१ पुरु राजा विदूरथ का एक नामान्तर।

२ महाराज कुरु द्वारा दशार्ह कुलोत्पन्न कन्या शुभांगी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र, जो मधुवशीय कन्या सप्रिया का पति था, जिसके गर्भ से अनश्वा नामक पुत्र हुआ था।

३ एक पर्वत, जहा वैदूर्य मणि मिलती है।

विदूरथ-स पु [स] १ यदुवशीय श्वफल्क के भाई चित्ररथ का पुत्र, जिसके पुत्र का नाम शूर था।

२ पुरुवश का एक राजा जिसके पुत्रो का पालन-पोषण ऋक्षवान नामक पर्वत पर रीछो द्वारा किया गया था।

३ भजमान राजा का पुत्र एक यदुवशीय राजा।

४ सावर्णि मनु के पुत्रो में से एक।

५ सुरथ राजा का पुत्र व सार्वभौम राजा का पिता एक राजा।

६ चपक नगरी के हमध्वज राजा का भाई।

७ दक्षिण भारत का एक राजा जिसने अपनी कन्या का विवाह दिष्टवशीय राज्यवर्धन राजा के साथ किया था।

८ उपदर्व त दाशार्ह नामक एक यादव राजा, जो लोमपादवशीय विधृति राजा का पुत्र था।

वि. वि —मत्स्यानुसार ये निवृत्ति राजा का पुत्र तथा दशार्ह राजा का पिता था।

९ रुक्मिणी व द्रौपदी स्वयंवर मे उपस्थित एक वृष्णिवशीय

क्षत्रिय, जो वृद्धशर्मन व वसुदेव भगिनि श्रुतदेवा का पुत्र एव दन्तवक्र का भाई था।

वि. वि.—इसके भाई दन्तवक्र, शाल्व, शिशुपाल आदि का वध श्रीकृष्ण द्वारा किये जाने पर इसने अपने भाईयो का बदला लेने हेतु श्रीकृष्ण पर आक्रमण किया था मगर श्रीकृष्ण ने इसका वध कर दिया था।

१०—भलदन ऋषि का मित्र एक राजा, जिसके सुनीति एव सुमति नामक दो पुत्र थे, एव मुद्रावती नामक एक कन्या थी।

वि. वि – कुजंभ राक्षस का वध करने हेतु, इसके दोनो पुत्र निकले थे मगर कुजंभ राक्षस ने उन्हे कैदी बना लिया और इसकी पुत्री का हरण भी कर लिया था। इसके दोनो पुत्रो व पुत्री मुदावती को, इसके मित्र भलदन ऋषि के पुत्र वत्सप्रि ने कुजंभ राक्षस का वध करके मुक्त कराया था। इसी कारण से इसने अपनी पुत्री मुदावती का विवाह वत्सप्रि के साथ कर दिया था।

११ राम-रावण युद्ध के समय राम की सेना का एक बन्दर।

विदूसक–स. पु [स. विदूषक] (स्त्री. विदूसिका) १ दूसरो के दोष बतला कर हंसी उड़ाने वाला व्यक्ति।

२ विभिन्न प्रकार की नकले, वेशभूषा बनाकर अथवा बातचीत द्वारा लोगो को हसाने वाला व्यक्ति, मसखरा।

३ साहित्य में चार प्रकार के नायको में से एक प्रकार का नायक, जो अपने कौतुक और परिहास आदि के द्वारा कामकेलि मे अधिक आनन्द उत्पन्न कर देता है।

४ कामुक या विषयी व्यक्ति।

विदूसण–स पु [स. विदूषण] विशेष रूप से किसी पर दोष लगाने की क्रिया या भाव।

विदूसणौ, विदूसबौ–क्रि स.—१ कलकित करना, दोष लगाना।

२ कष्ट देना, दुखः देना, सताना।

विदूसणहार, हारौ (हारी), विदूसणियौ—वि०।

विदूसिग्रोड़ौ, विदूसियोड़ौ विदूस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विदूसीजणौ, विदूसीजबौ—कर्म वा०।

विदूखणौ, विदूखबौ, बिदूसणौ, बिदूसबौ, बदूसणौ, बदूसबौ, बिदुसणौ, बिदुसबौ बिदोखणौ, बिदोखबौ, बिदोसणौ, बिदोसबौ —रू० भे०।

विदूसियोड़ौ–भू. का. कृ —१ कलकित किया हुआ, दोष लगाया हुआ. २ कष्ट दिया हुआ, दुख दिया हुआ, सताया हुआ।

विदेघ–सं पु. [स.] एक प्राचीन ऋषि का नाम।

विदेघमाथव–सं. पु.—विदेघ लोगो का प्रमुख मधुवंशीय एक राजा। विदेघ लोग भी आगे चलकर विदेह कहलाये।

वि. वि.—इसने अपने मुख में अग्नि को धंधकर रखा था और इस भय से कि बोलने मे अग्नि बाहर आयेगी, वह किसी से बात भी नही करता था। इसके पुरोहित रहूगण गौतम ने अनेक प्रकार से अग्नि स्तुति करके इस अग्नि को बाहर निकालने का प्रयत्न किया मगर कुछ असर नही हुआ।

एक बार गौतम के मुंह से 'घृत' शब्द का उच्चारण हो गया और इसके मुख मे वध अग्नि अपनी अनेक जिव्हायें फैलाकर बाहर निकला और सारे ससार के साथ २ विदेघ एव गौतम को जलाने लगा। साथ ही साथ सृष्टि की नदियो को भी जलाने लगा। अग्नि के इस दाह से मुक्ति कराने के लिए विदेघ राजा ने अपने राज्य की सीमा पर बहने वाली नदी मे कूद गया यहा आकर अग्नि का दाह शान्त हुवा।

विदेस–स. पु. [स. विदेश] अपने देश के अतिरिक्त अन्य देश, परदेश। (अ मा.)

उ०—१ वूठा मेह, उलस्या स्नेह। नदी महा पूरि वहिवा लागी, देस विदेस नी वाट भागी। जळ भरिया निवाण, प्रथ्वी प्रवरती मेह नी आण। आदि। —रा. सा. स.

उ०—२ देवी निरझरै तरवरै नगै नेसै, देवी दिसै अवदिसै देसै विदेसै। देवी सागर बेटडे आप सगै, देवी देहुरै घरै देवी दुरंगै। —देवि.

रू. भे.—विदेस, विदिस, विदेसि, विदेसी।

विदेसि, विदेसी–वि.—परदेश का, परदेश सम्बधी।

स. पु.—१ परदेश का निवासी व्यक्ति, परदेशी।

२ देखो 'विदेस' (रू. भे)

उ०—१ लांभी ठाकुर, आवि घरि, काई करइ विदेसि। दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किमाकउ लेसि। —ढो. मा.

उ०—२ राम लक्ष्मण मही दुखि पाम्या, पाच पांडव विदेसि भमाड्या। डूब नइ घरि जल वहिउं हरचदिइ, भालडी मरण साध मुकुंदइ। —सालिसूरि

अल्पा.—विदेसीड़ौ।

विदेसीड़ौ—देखो 'विदेसी' (अल्पा., रू. भे)

उ०—१ घरा नै पधारो विदेसीड़ा, छोटी सी नाजक धण रा पीव। यो सावणियो उमड रह्यौ छै, हरि नें सोहै छै दिस दिस सीव। —रसीलै राज रा गीत

उ०—२ विदेसीड़ा बेटा राव हो, ऊतरधा कोठै सूं आय। चुकल्या सात सीस पर म्हारै, छुटलो दे गजरो बाध।

—रसीलै राज रा गीत

विदेह–सं पु [स.] १ मिथिलानरेश सीरध्वज जनक का एक नाम।

उ०—१ मुनिद्रेस जोगेस कव्वेस मेळा, भुजगेस देवेस अव्वेस मेळा। विदेह प्रतंग्या कहे एम वाकं, पुत्री जो वरै सो ज ताणै पिनाकं। —सू. प्र.

उ०—२ ब्रह्मानंद नैं बिसरयौ बिदेह हो रघुवरजी, कोई प्रेमानद पूरण छायौ, छक रह्यौ हो राज। मुनिवरजी नै बूझै विदेह हो मुनिवरजी, कांई ए कुण प्रांणां रा प्यारा पावणा हो राज।

—गी. रा.

२ मिथिला नरेश निमि का नाम।

३ विदेह नगरी, जनकपुरी, मिथिलापुरी। (सभा)

उ०—१ मगध कोसल अंग बंग कलिंग कासी कुरु देस, सोरठ कच्छ विदेह जांगल कुसावरत्त कहेस। अंग सोवीर वैराट मलय सांडिल सूरसेन। वरण पंचाल दसारण कुंणाल देस में चैन। —वृन्त.

उ०—२ मगध मडल अग वग कलिंग कासी [कोसल कुरु] कुसट्ट पंचाल जांगल [सुराष्ट्र] विदेह संडिल्ल मलय······।

—व स

४ विदेहवंशीय राजाओं द्वारा प्रशासित एक लोक समूह जिसे पाण्डु राजा ने दिग्विजय के समय अपने अधीन कर लिया था। इसी विदेह वंश में हयग्रीव व कुलांगार नामक राजा उत्पन्न हुवे थे।

५ मिथिला-निवासी, विदेह देश के नागरिक।

६ देह-परिवर्तन, दूसरी देह।

उ०—इतरो कहतां तुरत दोनू भाई गदगद कठ होय सिलाम करण लागा, फिस पड़िया। देवीदास पण ऊभो-ऊभो वेखी भर ऊळखिया। देह रो बिदेह होय गयो पण नांक री टीसी सूं ओळख लियो। तांहरै देवीदास कह्यौ—आंख्यां आगळ देह री विदेह होय गयो। ओळखणी आयै नहीं, ताहरां आंख्यां सू ही सलांम कीवी।

• —पलक दरियाव री बात

वि.—१ देह-रहित, शरीर-रहित।

२ अचेत, बेहोश, चेतना-रहित।

३ शारिरिक चिंताओं से मुक्त।

४ मरा हुआ, मृत।

विदेहक—सं. पु [सं.] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

विदेहकुमारी—सं. स्त्री. [स. विदेह:+कुमारी] राजा जनक की पुत्री सीता।

विदेहजी—सं. स्त्री. [स. विदेह:+जीता] जनकसुता, जानकी, सीता। (हि. को)

विदेहपुर, विदेहपुरी—सं. स्त्री. [स. विदेह+पुर या पुरी] जनकपुर, मिथिलापुरी।

विदेहा, विदेही,—स. स्त्री. [स.] १ जनकपुरी, मिथिलापुरी।

उ०—विदेही तणै दिवाण, ईस चाप धरै आंण। तोड़वा अनेक तांण, ऊठिया करै अपांण। —र. रू.

२ जानकी, सीता।

उ०—आली रग भूमि पै विदेही को अनूप रूप, आज अविलोक्यौ देवदृगतें अलख मे। नयन निकाइ सौं जुन्हाइ कै कुरंगमेंन, खंज में 'हमीर' झखकेतु कै न झख मे। —हमीरदांन मोतीसर

[स. विदेहिन्] ३ ब्रह्म।

रू. भे.—बिदेही।

विदेहेस—स. पु. [स. विदेह+ईश] राजा जनक।

उ०—अवद्धेम राजेम जानेस आया, विदेहेस साम्हैम आंणी वधाया। कुंवारां बिन्है आय जूहार कीधा, लगै प्रीत छाती पिता भीड़ि लीधा। —सू. प्र.

विदैवत—सं. पु —हरिवीर नामक क्षत्रिय जो अगले जन्म में पिशाच बना क्योंकि वह नास्तिक था।

विदोखणौ, विदोखबौ—क्रि. स —अवलोकन करना, देखना।

उ०—प्रोम्वद्द बान देसी कवण, कवण नेणां विदोखियै। हय हय सरीर छूटो नही, रायसिंघ आपरोखियै। — नैणसी

२ देखो 'विदूसणौ, विदूसबौ' (रू. भे.)

उ०—सूरज रो मूढो दीठा 'विना जीमण री आखडी। महुडा सू किणनै गाळ काढण री आखडी। चारण भाट नै बिना काम विदोखण रो आखडी। लुगाइ नै विना खंन मारवा री आखडी।

—रा सा. स.

विदोखणहार हारो (हारी), विदोखणियो—वि०।

विदोखिओड़ो, विदोखियोड़ो, विदोख्योड़ो—भू० का० कृ०।

विदोखीजणौ, विदोखीजबौ—कर्म वा०।

विदोखियोड़ो—भू. का कृ.—१ देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ।

२ देखो 'विदूसियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. विदोखियोड़ी)

विदोगत, विदोगति—देखो 'वेदोक्त' (रू. भे.)

उ०—पछै वरस चवदै रो हुवो जदी राजा रा गुरा रा बेटा नैं परणायो। जठै सारी विदोगत करै ने बेटा बहु नैं घरे लै आयो।

—राजा रा गुर रा बेटा री बात

विदोसणौ, विदोसबौ—देखो 'विदूसणौ, विदूसबौ' (रू. भे.)

विदोसणहार हारो (हारी), विदोसणियो—वि०।

विदोसिओड़ो, विदोसियोड़ो, विदोस्योड़ो—भू० का० कृ०।

विदोसीजणौ, विदोसीजबौ—कर्म वा०।

विदोसियोड़ो—देखो 'विदूसियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. विदोसियोड़ी)

बिद्द—१ देखो 'विदा' (रू. भे.)

२ देखो 'विद्ध' (रू. भे.)

उ०—नरांक कोप भल्ल रा, कोटिक्क भीत कांकरां। रजी प्ररक्क बिद्द ऐं, पूरण (मा) कै चंद ऐं। —गु. रू. बं.

बिद्दत-सं. पु. [सं. बहुदत्त] अद्वैत-भाव।

उ०—महदी री औलाद सू आल बहोत है। महदी रै वश रा पीरजादां कनै महदविया रा दीन री किताब है। पठांग महदवी विसेस है। कुराण रा हदीस रा मरा री बिद्दत मेटण महदी जनमियौ मह दवी कहै। —बा. दा. ख्यात

बिद्दमांन—देखो 'विद्यमान' (रू. भे.)

बिद्दा—देखो 'विदा' (रू. भे.)

उ०—सत्तोल बोल मुक्खै दक्खै, सेलेवा खत्र-चौड। साहिजादै माथै बिद्दा हूऔ, हिंदू-पत्ती राठौड। —गु. रू. बं.

बिद्दस-वि.—१ जो कठिनता से सहा जा सकै।

२ देखो 'विदुस' (रू. भे.)

उ०—गुण सागर दुस्तर प्रगाघ, प्रति बाघ प्रपारण। वेळ निजर बिद्दसा, प्रसह कवि भ्रमर प्रकारण। —रा. रू.

बिद्धस—देखो 'विध्वस' (रू. भे.)

बिद्धसण—देखो 'विधूसण' (रू. भे.)

बिद्ध-सं पु—१ कलह, झगडा।

उ०—'सेख' तजो दळ समर, रैण वंट कहिक रखावौ। तजै बिद्ध कुळ तणौ, मिळौ चित खत मिटावौ। —सू. प्र.

२ युद्ध, समर।

उ०—गया राव राठौड, बिद्ध देखै परपूरण। प्रेत सिला भरि पिंड, पीर रिण हुहुइ ऊरण। —गु. रू. बं.

वि. [सं.]—१ बीच मे से छेद किया हुआ।

२ जिसमे बाधा पडी हो, बाधाग्रस्त।

३ जिसको चोट लगी हो।

४ देखो 'विध' (रू भे)

उ०—तनि ओप करण कवि वरण तास, प्रति नवल जळद बिद्धति प्रकास। प्रति चलति सुगति दुति प्रमित बिद्ध। पदमणिय हस किरि गुरु प्रसिद्ध। —रा. रू.

बिद्धि—१ देखो 'विध' (रू. भे.)

उ०—करि प्रठ जगण बत्रीस कल, वरण बीस चत्र बिद्धि। गति इणि मोतीमाळ गुण पणि लखपत्ति प्रसिद्ध। —ल पिं.

२ देखो 'विधि' (रू. भे.)

बिद्यमांन-वि. [सं. विद्यमान] उपस्थित, मौजूद।

उ०—१ सतरै चालीस विजयदसमी दिनै, गच्छ खरतर जगि जीत सरव विद्या जिनै। विजयहरख बिद्यमान सिस्य तिनकै सही, परिहां कवि धरमसी उपगारै दम क्रिया कही। —ध. व. ग्र.

उ०—२ कल्याणमल पुत्र महाराजधिराज स्रीरायसिंघजी बिद्यमान, तत्पट्टाभिसेक महाराकुमार चिरंजीवी कुवर स्रीदळपतजी विजयराज्यै तत्स्यात्मज सभास्र गारहार कुवर स्रीउदयसिंघ, कुवर स्रीसबळसिंघ, कुवर तुळसीदास सहित सरवे चिरंजीयात्। —द. वि.

रू. भे.—बिदमान, बिदमान, बिद्दमांन।

बिद्यमानता-सं स्त्री. [सं. विद्यमानता] विद्यमान होने का भाव, उपस्थिति, मौजूदगी।

बिद्या-सं पु—१ महर्षि विश्वामित्र के कुल मे उत्पन्न एक गोत्रकार,

२ देखो 'विद्या' (रू भे.)

उ०—द्रुपदी नु नचावणहार, ए बृहन्नट कलासिणगार। प्रस्वबंध एह वीर नकीजइ, प्रस्व विद्य मघली हरइ हईइ। —मालिसूरि

बिद्या-सं स्त्री. [सं.] १ शिक्षा प्रादि के द्वारा मिलने वाला ज्ञान।

२ मोक्ष की प्राप्ति या परमपुरुषार्थ की सिद्धि दिलाने वाला ज्ञान।

३ दुर्गा देवी का नामान्तर।

४ दुर्गा देवी का मत्र।

५ सीता की एक सखी का नाम।

६ वैदिक साहित्यानुसार तीन वेदो के ज्ञान का एक देवता।

७ चौदह की संख्या।

८ इल्म, हुनर, कला।

उ०—च्यारू सिरदार उण सू धोजग्या हा। पूछ्यौ, केस गुरडणा तो था री पोळ्या री प्रेलम, पछै उठै कांई नवी बिद्या सीखण सारू गियौ। ऊवा पाचणा मूं मूडण री सीखनै प्रायौ दीसै। —फुलवाड़ी

८ जादू, मंत्र।

उ०—१ हिवै थै राज भली भात राखीया। ठाम ठाम आपौ आप री खिजमत मैं सावधान रह्या। भरती रजपूता नुं भळाई छै। म्हां मैं बिद्या छै म्है गवरि करि आवा। लोका कह्यौ भला, म्है बासलो जाबता करिस्या उवै बिन्है सावळघा हुइ नै उडीया उडत्या उडत्या ऊवै गाम प्राया जेथ स्यामसुंदर परणीज नै रह्यौ तो, तेथ तीर्य घर ऊपरि प्राय बैठ्या। —स्यामसुंदर री बात

उ०—२ जतर-मतर टाणा टूणा, कामण टूमण जाणां। वीर मूठ बिद्या बौहतेरी, प्रानम देव प्रजाणां। —प्रनुभववाणी

९ किसी विशेष व गम्भीर विषय का विभाग या शाखा।

१० किसी विषय का व्यवस्थित ज्ञान।

११ व्यापार या विशेष कार्य को संचालन करने का ज्ञान।

१२ आर्य छन्द का भेद विशेष, जिसमे २३ गुरु और ११ लघु अर्थात ३४ वर्ण या ५७ मात्राएँ होती हैं।

१३ निसाणी छन्द का एक भेद विशेष, जिसमें प्रत्येक चरण मे ३ गुरु और १७ लघु अर्थात २० वर्ण या २३ मात्राएं होती हैं।

उ०—कीला, लीला, थिरा, कुंआरी, वीणा, रंगी, चगी, वारि। विद्या, माळा, बाळा, बांम, नीसाणी रा बारा नांम। —पि. प्र.

रू. भे.—विद्या, विजा, विदिया, विदीया, विद्या, विध्या।

१४ देखो 'विदा' (रू. भे.)

उ०—१ तद बीकैजी वा कांधळजी मुजरो कर जोधपुर सूं विद्या हुवण री त्यारी करी। तारां मंडळजी प्रर बीदैजी वा कामदारा आय रावजी नूं कयौ, "महरबान, म्हारै तो आपरी ठौड कंवर बीको है, सू म्हे तो बीकै सागै रहस्यां। —द दा.

उ०—२ गांव ४१ बरसळपुर लारै रया। गांव ८४ बीकूंपुर लारै राखिया। पीछै या च्याराई ठाकरां नूं सीख रा सिरपाव देयनै विद्या कीया। च्यार घोड़ा दिया। —द. दा.

उ०—३ वडारण उदास सी जाय भीतर भरमल नूं कह्यौ, जो प्रोहित अरज कराई छै—हलाणी कोई करै नही। मनै विद्या हुई छै, सो कागद लिखावज्यो। इत री सुण भरमल अति उदास हुई। —कुंवरसी सांखला री वारता

विद्यागाथा—देखो 'विद्या' (१२)

विद्याघर—सं. पु. [सं. विद्या+गृह] विद्या पढाने का स्थान, पाठशाला।

विद्याचंड—सं. पु. [स. विद्याचण्ड] सुदरिद्र नामक ब्राह्मण के एक पुत्र का नाम।

विद्याचारण—सं. स्त्री —२८ प्रकार की लब्धियो मे से दसवी लब्धी का नाम।

उ०—१ जिण लबधि प्रभावै उडी जाय आकाम, तै जघा विद्याचारण लबधि प्रकास। जसु वचन सरापै खिण मे खेरु थाय, ए लब्धि इग्यारमी आसी विस्वय कहाय। —वृस्त

उ०—२······सभिन्न स्रोतो लब्धि, जघाचारण विद्याचारण लब्धि प्रक्षीणमहाणसी लब्धि, क्षीरास्रव लब्धि, मध्वास्रव लब्धि, जीवबुद्धि, कोस्टबुद्धि, पादानुसारिणी लब्धि। —व स

विद्याता—देखो विधाता' (रू. भे)

विद्यातानाथ—देखो विधाता' (रू. भे)

उ०—वस सपतास छब गात वीठां वणै, बयानै जगत गज लाख वातां। अरोहक दुवौ आराथ नीली ऊअंड, हुव घड़ै विद्यातानाथ हाथां। —माधौसिंह सिसोदिया रौ गीत

विद्यातीरथ—स. पु. [स] वह प्राचीन तीर्थस्थान जहां स्नान करने से विद्या की प्राप्ति होती है।

विद्यादान—सं. पु. [सं. विद्यादान] विद्या पढ़ाने का कार्य।

विद्यादाता—स. पु. [स विद्यादातृ] विद्या पढाने वाला, शिक्षक।

विद्यादेवी—सं. स्त्री [स.] १ सरस्वती।

२ सोलह जिन देवियों मे से एक। (जैन)

विद्याधन—सं. पु [स.] १ विद्या रूपी धन।

२ अपनी विद्या द्वारा उपार्जित धन।

विद्याधर—स. पु. [स.] १ एक देवयोनि विशेष। (अ. मा., नां. मा.)

उ०—१ जिण सभा रै मांहै ब्रह्मादिक सिवादिक इद्रादिक आद तेतीस क्रोड देवता इठ्यासी हजार रिख विद्याधर गंध्रप जक्ष आद देस देस रा राजा बैठा है तिण वखत श्रीरघुनाथजी लिखमणजी रा बखांण स्रीमुख सूं किया। —र. रू.

उ०—२ धरत ध्यान चारन विद्याधर, करत गान गुन अप्सर किन्नर। गुह्यक यक्ष रक्ष गधरबह, सिद्ध पिसाच भजत तव सरबह। —मे म.

२ कवि, पंडित। (अ मा.)

उ०—१ विद्याधर वड वखतावरु, महियल मैं हो महिमा महिमाय। राउ राणा मोटा राजीया, पुहवीपति हो लागै जगु पाय। —ध. व ग्र.

उ०—२ गुण गजबध तणा कव गावै, दुरस परायण श्री दरसावै। आस धरै विद्याधर आया, कवि सुज हमतीवध कहाया। —रा. रू.

उ०—३ दान कै प्रमाण दुहूं राजा न कै पाण, मेघ कै मडाण कहा सातूं मैहराण देस देस के विद्याधर सूत मागध बदीजण, आसा धर आए सो भए पूरण। —रा. रू.

३ एक स्रोषधि विशेष। (वैद्यक)

४ काम शास्त्रानुसार एक आसन, रति-बन्ध।

५ एक वर्णिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में चार मगण होते है और कुल बारह अक्षर होते हैं।

उ०—मगण च्यारि पायं मही, बूझव आखर बार। सेस कहै रूपक सरस, विद्याधर विसतार। —पि. प्र.

रू. भे —विजाहर, विदियाधर, विद्याधर, विद्याधारी।

विद्याधररस—स. पु. यौ. [स.] वैद्यक मे एक प्रकार का रस विशेष, जो कि पारे, गधक, तावे, सोठ, पीपल, मिर्च, धतूरे आदि के सम्मिश्रण मे बनता है।

विद्याधरराज–वि.—विद्वान, पंडित, चतुर।

उ०—कांमेति करै सब राज काज, धुन कायथ वड़ विद्याधरराज। सला रै कांम प्रेहा सधीर, बुधवत बीरबळ सा वजीर। —पे रू.

विद्याधरेंद्र–सं. पु [सं. विद्याधरेन्द्र] जाम्बवान् नामक रीछ, जो सुग्रीव का मंत्री तथा रीछों का राजा था।

वि. वि.—इसे ब्रह्मा का पुत्र मानते हैं तथा भागवतानुसार इसकी पुत्री जाम्बवती का विवाह श्रीकृष्ण के साथ किया गया था। राम-रावण युद्ध मे इसने राम की सहायता की थी।

विद्याधरेसुर, विद्याधरेस्वर–स. पु. [स विद्याधर+ईश्वर] शिव की एक मूर्ति का नाम। (पुराण)

विद्याधव—देखो 'विद्याधर' (रू भे.)

उ०—विद्याधव वनि कुणिहि एकु मेल्हिउ छइ बांधी। छोडिउ पंडुकुमारि पासि तसु मुद्रा लाधी। —सालिभद्र सूरि

विद्याधारी—देखो विद्याधर' (रू. भे.)

विद्याधिदेवता–स. स्त्री. [स] विद्या की अधिष्ठात्री देवी, सरस्वती।

विद्याधीस–स. पु [स. विद्याधीश] सौराष्ट्र नरेश के प्रधान का नाम।

विद्यानुवाद–सं. स्त्री. [स.] ७२ कलाओं मे से एक।

विद्यापति–स. पु —१ गुरु, शिक्षक।

विद्यापात्र–वि.—विद्वान, पण्डित।

उ०—१ राणा री पुरोहित पालीवाळ १ नै सिवड पुरोहित श्रठी मू ओर ४ ब्राह्मण जूना विद्यापात्र वेद पढै छै। लागबाग दीजै छै। —राव रिणमल री बात

उ०—२ ······पचोली डवगर बाबर फोफलीया फडहटीया फडिया वेगडिया सिंगडिया भोई कंदोई देसाली वलाली गोली गवाल पसूयाल राजपात्र विद्यापात्र विनोदपात्र। —व. स

विद्यापुरी–स. पु —एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ, गुडीआ, सणीआ, कस्तूरीआ,······चंपकदुर्गीआ, विद्यापुरीआ, देकापाटकीआ, कास्मीरीआ, धूमराई, खीरोक······ —व. स.

विद्यापीठ–सं. पु [स.] १ शिक्षा का प्रमुख केन्द्र।

२ महाविद्यालय।

विद्यामंदिर–स पु. [स.] विद्यालय, पाठशाला।

विद्यामय–वि. – विद्वान, पंडित।

विद्यामहेसुर, विद्यामहेस्वर–स. पु. [स विद्यामहेश्वर] शिव, महादेव।

विद्यारम्भ–सं पु. [सं. विद्यारम्भ] विद्या पढाना प्रारम्भ करने के पूर्व किया जाने वाला एक प्रकार का संस्कार।

विद्याराज–स. पु. [स.] भगवान विष्णु की मूर्ति।

विद्यारथी–स. पु [स. विद्यार्थिन्] विद्या का अध्ययन करने वाला, शिष्य।

उ०—१ सुवारथी स्वारथी जै ग्यमुख दुख प्रारथी बच सदैं, बदै जो विद्यारथी विसद परमारथी वच वदै। प्रचड ब्रह्मांड प्रचुर भुविमड प्रद विभौ, वितड प्रोदड प्रनत दुख खड प्रद विभौ। —ऊ. का.

उ०—२ सूरजमल लिछमी रा लाडका सेठ फूलचद री एकाएक बेटी ही अर म्हारा छाकटा मू छाकटा विद्यारथियां मे सू एक टाळमी रकम। जरूरत सूं ज्यादा हुसियार। कारण कै वड़ती जवानी अर पैंसौ पल्लै रामजी चलावै तौ इज गेलै चलै। —अमर चूंनड़ी

विद्यारासि–स. पु. [स. विद्याराशि] शिवलिंग।

विद्यालय–सं पु [सं.] वह स्थान जहा पर विद्या पढाई जाती है, पाठशाला।

विद्यावांन–वि [स. विद्यावान] विद्वान, पंडित।

उ०—१ महाराज सामोरा री जात सूं ऊदावत हुवा। महेसदास री भतीजो हेमो गणेसदास री बेटी जोधनेर आळपादेवी री क्रिपा सू विद्यावांन हुवौ। भाखा- बत्र-रूपग महाराज री बणायौ। —बा. दा. ख्यात

उ०—२ तद उण री लुगाई कयौ पदमसिंघजी जिसा हमार री बखत मैं दातार अरु आपा भूखा मरा। तद गोगादान लुगाई नै कयौ के मा'राज तौ विद्यावांन नूं देवै है मू हू तौ भणियौ नही। —द. दा.

विद्याविलास–वि —विद्यारसिक।

उ०—विद्याविलास नरिंद पवाडउ, हीयडाभितारि जाणी। अतराय विणु पुण्य करउ, तुम्हि भाव घणेरउ आणी। —हीराणदसूरि

विद्यावेता–वि. [स विद्या+वेता] विद्वान, पण्डित।

उ०—निंदा नेता री नवभव मे भूडी, विद्यावेता बिण अवगत गत ऊडी। वसुधा बीजांकुर बिध बिध बिसतारै, न्याईसुर प्रासुर बिध बिध निसतारै। —ऊ का.

विद्याव्रत–स पु [स.] १ विद्या अध्ययन के उद्देश्य से, गुरु के घर रह कर, किया जाने वाला व्रत या तपस्या।

२ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को मनाया जाने वाला व्रत विशेष।

वि. वि.—यह १२ महीने तक प्रत्येक शुक्ल पक्ष की एकम को किया जाता है और इस दिन गो-दान भी किया जाता है। इसके

बाद १२ वर्ष तक अध्ययन किया जाता है। इस व्रत को करने से महाविद्वान बन जाता है।

विद्यासंजीवन—सं. पु. [सं. विद्या+सञ्जीवन] दैत्य-गुरु, शुक्र।
(ग्र. मा.)

विद्यासिद्धि, विद्यासिद्धी—स. स्त्री. [स.] विद्या का निष्पादन करने की क्रिया।

उ०—वड्या सामलि बाभणु मणह, ए विवहारु नयरि अम्ह तणी।
विद्यासिद्धी राव्हसु हूउ, बकनांमि छइ जम नउ दूउ।
—सालिभद्र सूरि

विद्युजिव्ह—देखो 'विद्युज्जिव्ह' (रू. भे)

विद्युजिव्हा—देखो विद्युज्जिव्हा' (रू. भे)

विद्युज्जिव्ह-सं. पु. [स.] १ नक्षा राक्षसी का पुत्र और रावण की बहन सुर्पणखा का पति जो पूर्वजन्म में कालकेंद्र नामक दानव था और राम के द्वारा मारा गया था।

२ रावण का एक प्रधान, जिसने अपनी माया-जाल से राम का टूटा हुआ मस्तक व धनुष सीता के सामने प्रस्तुत कर रावण को पति स्वीकार करने का अनुरोध किया।

३ एक यक्ष का नाम।

४ महातल नामक पाताललोक में स्थित अर्वकृतलम् नामक नगर का निवासी एक राक्षस जो विश्रवस् व वाका के पुत्रों मे से एक था।

५ भीमसेन के पुत्र घटोत्कच का साथी एक राक्षस जिसका वध दुर्योधन ने किया था। मतान्तर से यह घटोत्कच का पुत्र था।

६ विद्युत के समान जिव्हा वाले, अमृत की रक्षा करने वाले, दो सर्प।

रू. भे.—विद्युजिव्ह, विद्युतजिव्ह, विद्युन्जिव्ह, विद्युत्जिव्ह, विद्युत्जिव्ह।

विद्युज्जिव्हा-स. स्त्री. [स.] १ स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

रू. भे.—विद्युजिव्हा, विद्युतज्जिव्हा, विद्युत्जिव्हा, विद्युत्जिव्ह,

विद्युज्ज्वल-सं. पु.—मार्गशीर्ष माह मे सूर्य के साथ भ्रमण करने वाला एक राक्षस।

विद्युत-स. स्त्री. [स. विद्युत्] १ बिजली।

उ०—१ बारद विद्युत वरण, पीत अरु धरण नीलपट। तरह मदन रत तणी, देख दिल दरप जाय दट। —र. रू

उ०—२ आसन स्यंघ घटा तन स्यांम, पटबर पीत सु विद्युत है।
चाप सिलीमुख पान विमोह सु, बाम विभाग सिया जुत है।
—र. ज प्र.

२ एक प्रकार की वीणा।

३ वज्र।

४ सहिष्णु नामक शिवावतार का एक शिष्य।

५ यातुधान नामक राक्षस का पुत्र व रसन नामक राक्षस का पिता एक राक्षस।

६ एक छंद विशेष, जिसमें दो नगण, दो तगण व अन्त में एक गुरु होता है तथा सात व छः वर्णों पर यति होती है।

वि. वि.—इसको चंद्रिका, उत्पलिनी, व कुटिलगति भी कहते हैं।

वि.—जिसमें बहुत अधिक दीप्ति हो।

रू. भे.—बिदत, बिदुत, बिदुति, बिजुता, बिद्योत, विद्योता, विद्युति, विधुत।

विद्युतकुमार-सं. पु—दस भुवनपतियों में से एक भुवनपति। (जैन)

वि. वि.—इनके शरीर का वर्ण लाल और वस्त्र का वर्ण हरा तथा मुकट का चिन्ह वज्र का होता है।

विद्युतकेस—देखो 'विद्युत्केस' (रू. भे)

विद्युतजिव्ह, विद्युतजिव्ह—'देखो विद्युजिव्ह' (रू. भे.)

विद्युतजिव्हा, विद्युतजिव्हा—देखो 'विद्युजिव्हा' (रू. भे.)

विद्युतपताक—देखो 'विद्युत्पताक' (रू. भे.)

विद्युतपरणा—देखो 'विद्युत्पर्णा' (रू. भे)

विद्युतप्रभ—देखो 'विद्युत्प्रभ' (रू. भे.)

विद्युतप्रभा—देखो 'विद्युत्प्रभा' (रू भे.)

विद्युतलता—देखो 'विद्युत्लता' (रू. भे.)

विद्युता—स. स्त्री. [स] १ कुबेर की सभा मे नृत्य करने वाली एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्र मुनि के स्वागत समारोह अवसर पर नृत्य किया था।

२ देखो 'विद्युत' (रू. भे.) (नां. मा.)

रू. भे—विद्योता।

विद्युताक्ष—स पु [स] कुमार कार्त्तिकेय का एक अनुचर।

विद्युति—देखो 'विद्युत' (रू. भे.) (नां. मा)

विद्युत्केस-स. पु [सं विद्युत्केश] १ हेति नामक राक्षस जो मयासुर की पुत्री के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

वि. वि.—सन्ध्या की सालकटंकटा इसकी पत्नी थी। इससे उत्पन्न गर्भ मंदर-पर्वत पर छोड़ दिया गया था जिसका पालन-पोषण शिव ने किया था। कहीं २ इसकी पत्नी का नाम पौलोमी भी मिलता है।

२ सुकेशी नामक राक्षस का पिता, एक राक्षस राजा।

रू. भे.—विद्युतकेस।

विद्युत्जिव्ह—देखो 'विद्युज्जिव्ह' (रू. भे)

विद्युत्जिव्हा—देखो 'विद्युज्जिव्हा' (रू. भे.)

विद्युत्ज्जिव्ह—देखो 'विद्युज्जिव्ह' (रू. भे)

विद्युत्ज्जिव्हा—देखो 'विद्युज्जिव्हा' (रू. भे.)

विद्युत्पताक-सं. पु. [सं.] प्रलय-काल के सात मेघों मे से एक मेघ का नाम।

रू. भे.—विद्युतपताक।

विद्युत्परणा-सं. स्त्री. [सं. विद्युत्पर्णा] कश्यप ऋषि व प्राधा के गर्भ से उत्पन्न एक अप्सरा, जिसने अर्जुन के जन्ममहोत्सव पर नृत्य किया था।

रू. भे.—विद्युतपरणा।

विद्युत्पात-स. पु. [स.] बज्रपात होने की क्रिया, बिजली गिरने की क्रिया।

विद्युत्प्रभ-स.पु. [सं.] १ एक दानव, जिसे रुद्रदेव से वरदान स्वरूप,एक वर्ष तक तीनो लोको का आधिपत्य, शिव का नित्यपार्षदपद, एक करोड पुत्र एव कुशद्वीप का राज्य आदि मिले थे।

२ 'पापमोचन' एव "सूक्ष्म-धर्म" के सम्बन्ध में इन्द्र से चर्चा करने वाला एक ऋषि।

रू. भे.—विद्युतप्रभ।

विद्युत्प्रभा-स. स्त्री. [सं.] १ उत्तर दिशा में रहने वाली दस अप्सराओं का गण।

२ दैत्यराज बलि की एक पोती का नाम।

रू. भे.—विद्युतप्रभा।

विद्युत्प्रिय-स पु [सं.] १ कांसा नामक धातु।

२ उक्त धातु का बना कोई बर्तन।

वि. वि.—उक्त कासा या उक्त धातु से बना हुआ कोई बर्तन बीजली को अपनी ओर जल्दी खीचता है।

विद्युत्माळा—देखो 'विद्युन्माळा' (रू. भे.)

विद्युत्माळी—देखो 'विद्युन्माळी' (रू भे.)

विद्युल्लता-स स्त्री [स.] बिजली की कौंध या चमक।

रू. भे.—विद्युतलता।

विद्युदगौरी-सं. स्त्री. [स विद्युद्गौरी] शक्ति की एक मूर्ति।

विद्युदध्वज-स. पु. [स. विद्युद्ध्वज] एक असुर का नाम।

विद्युदक्ष-सं. पु. [सं] स्कन्द का एक सैनिक।

विद्युद्वाक्ष-स. पु. [स] एक राक्षस का नाम। (पुराण)

विद्युद्दंष्ट्र-स पु [स. विद्युद्दंष्ट्र] राम-रावण युद्ध मे राम की सेना का एक वानर।

विद्युद्रूप, विद्युद्रूप-सं. पु. [स. विद्युद्रूप] १ लका का एक राक्षस।

२ कुबेर का सेवक, एक यक्ष।

वि. वि.—मेनका की पुत्री मदनिका इसकी पत्नी थी। यह एक बार अपनी पत्नी के साथ कैलास पर्वत पर मद्यपान कर रहा था। वहा कक नामक गरुड वंशीय पक्षी से इसका झगड़ा हुआ और इसने उसे मार दिया। कक के भाई कदर ने आकर इससे युद्ध किया और इसका वध किया। इसके वध कर दिये जाने के कारण इसकी पत्नी ने कदर के साथ विवाह कर लिया।

विद्युद्वरचस-स. पु. [सं. विद्युद्वर्चस्] एक सनातन विश्वदेव।

विद्युन्माळ-स पु—राम-रावण युद्ध के समय राम के पक्ष का एक बन्दर।

विद्युन्माळा-स. स्त्री. [स.] १ एक छद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण मे आठ-आठ गुरु वर्ण अथवा दो मगण और दो गुरु होते हैं तथा चार-चार वर्णों पर यति होती है।

२ बिजली की कौन्ध या चमक।

रू. भे.—बिज्जूमाळा, बीजूमाळा, वादूमाळा, विद्युत्माळा।

विद्युन्माळि, विद्युन्माळी-स. पु. [सं. विद्युन्मालिन्] १ तारकासुर राक्षस के तीन पुत्रो मे से मझला पुत्र। (पुराण)

वि. वि.—इसके अन्य दोनो भाईयो का नाम ताराक्ष एवम् कमलाक्ष था। इसने भगवान् शकर की आराधना कर एक सोने का विमान प्राप्त किया था जिस पर चढ कर यह रोजाना सूर्य के पीछे-पीछे घूमता रहता था। इसलिए उस विमान मे कभी अन्धेरा नही होता था। सूर्य ने उस विमान को अपने तेज से गला दिया। इसने धर्म के पुत्र सुषेण से भी युद्ध किया था।

इसने अपने दोनो भाइयो के साथ ब्रह्मा को तपस्या कर सन्तुष्ट किया और यह वर प्राप्त किया कि सोने, चादी व लोहे के तीन नगर मे हम तीनो एक बार पास-पास और हजार साल अलग-अलग रहेंगे तथा हमारा वध उसी समय किया जा सकेगा जब कि हम तीनों पास-पास हो। मगर वध के लिए इन्होंने मागा कि हम तीनों का एक साथ वध एक ही बार मे हो। इस वर प्राप्ति के बाद इन्होने देवताओ व मनुष्को को बहुत सताया। इस लिए देवताओं ने शिव की स्तुति की और इनका वध करने हेतु कहा। शिव ने अपने त्रिशूल से इनके तीनों नगरों को छिद्रित कर दिया और विष्णु बाण, जिसकी नोक पर अग्नि और पीछे वायु थी और मन्दर पर्वत धनुष से, जब ये तीनो एक साथ थे, इनके नगरों सहित इन्हे भस्म कर दिया।

२ राम-रावण युद्ध मे रावण-पक्षीय राक्षस जिसे राम-पक्षीय सुषेण नामक वानर ने मारा था।

३ एक राजा (प्राचीन)

४ तारका-मय युद्ध मे मयासुर पक्षीय एक असुर जिसका वध शिव के पार्षद नन्दिन के द्वारा हुआ था।

५ रावण वध का बदला लेने हेतु, राम का अश्वमेधीय अश्व-हरण करने वाला रावण का मित्र एक राक्षस, जो पाताल मे रहता था और शत्रुघ्न द्वारा मारा गया था।

रू. भे.–विद्युत्माळी, बिजमाळ, बिजमाळा, बिजमाळि, बिजमाळी।

विद्योत–सं. पु [सं.] १ धर्मऋषि एवं दक्षकन्या लबा का पुत्र और स्तनयित्नु का पिता, एक ऋषि।

२ एक अप्सरा का नाम।

३ देखो 'विद्युत' (रू. भे)

विद्योतन–स. पु [स] सूर्य्य, सूरज। (ना मा.)

विद्योता—१ देखो 'विद्युत' (रू. भे)

२ देखो 'विद्युता' (रू. भे.)

विद्योपरिचर–सं. पु. [सं.] वायु के अनुसार, कृत नामक वसु का पुत्र।

विद्रधि, विद्रधी–सं पु [स. विद्रधिः] १ एक प्रकार का फोड़ा।

२ पेट के भीतर का एक प्रकार का घातक फोड़ा। (अमरत)

विद्रभ—देखो 'विदरभ' (रू भे.)

विद्रम—देखो 'विद्रुम' (रू. भे.)

उ०—१ नासिका सुक चच सरिखी, मुगतफळ संजोति। अहिर विद्रम ओपमा, जेहा डसण हीरा जोति। —रुकमणी मगळ

उ०—२ गति गयद, जघ केळिग्रभ केहरि जिम कटि लंक। हीर डसण, विद्रम अधर, मारू-भ्रकुटि मयक। —ढो. मा.

उ०—३ (जाणे) मोती लड पोई धरचारै, अधर विद्रम विचिदन रे। चमकै चूनी सारिखा रे, दाडिम कूलीय दीपत रे।–प. च. चौ.

विद्रमान—देखो 'विद्यमान' (रू. भे.)

विद्रमी—देखो 'विद्रुमी' (रू. भे)

विद्रव—देखो 'विदरभ' (रू. भे.)

उ०—मिळै कोडि तेत्रीस सुर भीम रै माडहो, अधिकि आण कना अधकि ओछाह। जानि उग्रसेन बळिभद्र जिसा जानिया, विद्रवां तणी घर हुओ वीमाह। —पी ग्रं

विद्रवण–वि.—देने वाला।

उ०—अपणी खाटी संपति जगत कूं खुलावै, लख लहण सवालख विद्रवण का विरद बुलावै। वडै जगं मे विरद बोल लोह बाहू को जोम चढि लड़ावै। आप सबसै आगूं बीजूजळ वाहै। —सू. प्र.

विद्रवणौ विद्रवबौ–क्रि. स – १ दान देना, धन लुटाना।

उ०—उदर दर खण भरै पंस भोगवै भुयंगह, हल वहि भरै वहिल हरी जव चरै तुरगह। सूंब धन्न सच भरै वीर विद्रवै विग्रह पर, पडित पढ गुण भरै मूढ भूच रायाहर। —नैणसं

२ बांटना, देना।

उ०—जोगी तेल माहे पडीयो। सोनै रो पोरसो हुवो। हिवै ईय पोरसो घर मैं आणि राखियो। सोनो वेचीजै। खाईजै बीद्रवीजै हिवै दारु काढीजै। भठ्या राति दिन तपस्यां रहै। —देवजी बगडावतां री बात

क्रि अ.—३ द्रविभूत होना।

४ दौड़ना, भगना।

विद्रवणहार, हारो (हारी), विद्रवणियौ—वि०।

विद्रविग्रोड़ो, विद्रवियोड़ो, विद्रव्योड़ो—भू० का० कृ०।

विद्रवीजणौ, विद्रवीजबौ—कर्म, भाव वा०।

विद्रवियोड़ो–भू का. कृ.—१ दान दिया हुआ, धन लुटाया हुआ. २ बाटा हुआ, दिया हुआ. ३ द्रविभूत हुवा हुआ. ४ दौड़ा हुआ, भागा हुआ।

(स्त्री. विद्रवियोडी)

विद्रावण–स. पु.—कश्यप एवं दनु के पुत्रो मे एक।

विद्रावी–स पु. [स. विद्राविन्] १ भागने वाला।

२ फाड़ने वाला।

विद्रुत–स पु.—ययाति वंशीय एक राजा।

विद्रुम–सं. पु. [स. विद्रुमः] १ नव रत्नो मे से एक रत्न, मूंगा, प्रवाल। (अ. मा.)

उ०–१ पाका बिंब मधु समा रे, ओपित विद्रुम जाण रे। मामोल्या जिम रातड़ा रे, अधर सुधारस खाण रे। —प. च. चौ.

उ०—२ फिटक-रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल ,मणसिल पारो सुवरण आदि धातु नीहाल। सेढी वन्नी अरणेटो पलेवो पाखाण, भोडल तुरी ओस भूमि पाहण जे खाण। —वृस्त.

२ मूंगे का वृक्ष, मुक्ताफल का वृक्ष।

३ कोपल।

४ एक प्रकार का गन्ध द्रव्य।

रू भे —विद्रम।

विद्रुमलता–स. स्त्री. [सं. विद्रुम+लता] १ नलिका नामक गन्ध द्रव्य।

२ मूगा।

विद्रुमाभा–सं. स्त्री. [स.] १ विद्रुम रत्न की शोभायुक्त देवी।

२ ज्ञान रूपी देवी।

विद्रुमी–वि.—१ मूगे का, प्रवाल का।

२ लाल रंग का।

रू. भे.—बिद्रमी, बिद्रुमो, बिद्रमो ।

बिद्रोह-स. पु. [सं] १ वह कार्य जो शत्रु को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से किया जाता है ।

उ०—बसू प्रचंड दंडते प्रचंड दडतें वहैं, वितड चंड दड दे अदंड खंडते वहै । बिमोह मोह मोह में बिद्रोह द्रोहि पे बढं, कृतांत भांत कोह मैं कुकोह कोहि को कढै । —ऊ. का.

२ वह आचरण या व्यवहार, जो राज्य या शासन के प्रति अविश्वास या दुर्भाव उत्पन्न होने पर उसकी आज्ञा, विधान आदि के विरुद्ध किया जाता है ।

३ क्रान्ति करने हेतु किया जाने वाला उपद्रव ।

रू भे —विदरोह ।

बिद्रोही-वि —१ विद्रोह से सम्बन्धित ।

२ विद्रोह करने वाला ।

रू भे —विदरोही ।

विद्वता-स स्त्री [स.] १ विद्वान या पंडित होने का भाव ।

२ जानकारी, ज्ञान ।

रू. भे.—विदवता, विद्वत्ता ।

विद्वति—देखो 'विद्युत' (रू. भे.)

उ०—तनि ओप करण कवि वरण तासु, प्रति नवल जळद विद्वति प्रकास । व्रति चलति सुगति दुति अमित विद्ध, पदमणिय हंस किरि गुरु प्रसिद्ध । —रा. रू

विद्वत्ता—देखो 'विद्वता' (रू. भे)

विद्वस-वि [स विद्वस] १ पंडित, विद्वान ।

२ कवि ।

३ चतुर, होशियार ।

विद्वांन, विद्वांस-स. पु [स. विद्वान, विद्वस] १ अपनी आत्मा का स्वरूप जानने वाला ।

२ बहुत अधिक विद्या पढा हुआ, सर्वज्ञ ।

उ०—''''''छपन लिपि तणी अलवि करइ, पात्रीस महाकाव्य तणा सुभासित भणइ, स्वदरसन परदरसन तणा भाव प्रकासइ, आगमारथ ज्योतिस सकुनसास्त्र वात्स्यायनसास्त्र गणितसास्त्र धनुरवेदायुरवेदादि सास्त्ररत्नसागर करवालसरस्वती, महायोगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष वाचस्पति, इसउ विद्वांस । —व. स.

३ पंडित ।

उ०—टाबर आगे नी तौ मोट्यार रै डील रौ करार काम आवै, नी किणी चकवा राजा रौ जोर हालै अर नी किणी विद्वांन री समझ के अकल ई कांम देवै । अबूझ बाळक सू दुनिया री कोई ताकत जीत नी सकै अर जे कोई अकलहीण उण सू जीतणरो थोथो गुमान ई करै तो हारणिया नै आपरी हार री अर्ग ई वेरौ नी व्है । —फुलवाड़ी

रू. भे.—बिदमान, विदमान, विदवान ।

विद्विस-स. पु [स. विद्विष', विद्विष] शत्रु, रिपु ।

विद्वेस-स. पु. [स. विद्वेष] शत्रुता, दुश्मनी, वैर ।

रू. भे —विदवेस ।

विद्वेसक-स पु. [स. विद्वेषक] शत्रुता करने वाला, शत्रु ।

रू. भे —विदवेसक ।

विद्वेसणी विद्वेसिणी-सं. स्त्री. [स विद्वेषिणी] दु.सह नामक यक्ष की निर्म्मार्ष्टि के गर्भ से उत्पन्न आठवी और अन्तिम कन्या । (पौराणिक)

वि —विद्वेस करने वाली या रखने वाली ।

रू. भे.—विदवेसणी, विदवेसिणी ।

विद्वेसी-वि. [स विद्वेषिन्] विद्वेष करने वाला, शत्रु ।

रू. भे.—विदवेसी ।

बिधंस—देखो 'विध्वस' (रू भे.)

उ०—जाणौं बादळा माहै बीजळियां रा सिला ऊपडिया पावरा ऊपरै मारधारा फूलधारां वाजी सू ठणणणाण जाणै परभात री भानर ठणकी, नर बगनर बिधंस हुआ । —रा. सा. स.

बिधंसक—देखो 'विध्वसक' (रू. भे.)

बिधसण-वि —नाश होने वाला, नाशवान् ।

उ०—सडण पडण बिधंसण देहणी, तिण री किसडी रे आस । खिण एक माही रे जासी बिगडी, जिम पाणी माहै पतास । —जयवाणी

२ देखो 'विध्वसण' (रू. भे.)

बिधसणो-वि — नाश करने वाला, विध्वंस करने वाला ।

बिधसणो, बिधसबो—देखो 'विध्वंसणो, विध्वंसबो' (रू भे.)

बिधंसणहार, हारौ (हारी), बिधसणियो—वि० ।

बिधंसिओडो, बिधसियोड़ो, बिधस्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिधसीजणो, बिधंसीजबो—कर्म वा० ।

बिधंसियोडो—देखो 'विध्वंसियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बिधंसियोड़ी)

बिध-स पु [स विध'] १ तरह, प्रकार, भांति ।

उ०—१ अटकाई नह आय वळ, आई जरा अगूढ । आसी जद तू अटकसी, मान किसी बिध मूढ । —बा. दा.

उ०—२ भडा वात सभळै, एण बिध हुँत अकारा । बहसि 'गजण' बोलियो, वर्ये पौरस जिण वारा । —सू. प्र.

उ०—३ प्रगसत जेम नेम बळ प्रोडां, छात दिली दळ जळ बिरण छोडां। 'लखौ' 'महेस' कहै बिध लाखा, रवद प्रवध बंध जिम राखा। —रा. रू.

उ०—४ प्रमपात रात्र प्रोलीझियो, बिध जिरण वांकम होइ। कुमति पग ऊपर कहै, कहो मुमतो कोइ। —गु. रू. ब

२ ढग, तरीका, प्रकार।

उ०—१ नारि न को पुरखा, बतर न मूरखा, वेद न च्यारि बचंदा है। प्ररणभै पद बोल्या, प्रमर खोल्या, बिध बिरळा बूझंदा है। —अनुभववांणी

उ०—२ वार बिकगार मिरदार बिध वाहियो, समर भर भार घर भार मूरै। मार मेलार ऊभार प्रभार सर, पार चौधार कर पार पूरै। —नाथो मादू

उ०—३ हिवै ईयै एक कोट करायो। साथ सरब लोक हुता, सु प्रठै ही ज रहया। ईयै री साहिबी हुई। सांख्या रा बरण कीया। सु माळघां रै प्रिथीराज री दाग दीयो। साढ्या रा बरग घगा हुवा इयै बिध एथ रहै। —जागळू री वात

३ वृतान्त, हकीकत।

उ०—१ प्राखी 'गोदै' 'इंद्र' सू, बिध सारी बखगोर। तुरत विचारी कूच री, सोच न धारी प्रोर। —रा. रू.

उ०—२ सो वाचिया सुरणी बिध सारी, भाई लिखी प्रवस्था भारी। साह मुगळ पूछै सरसावै, प्रवर 'सवाई' वेध उठावै। —रा. रू.

४ कारण।

उ०—सुरणी हास्य बिध कहै नरेसुर, गनिका ग्रेह प्रासरण जोगेसुर। बनखड गिर भंगर नह बसियो, हू प्रो देख कतूहळ हसियो। —सू प्र.

५ शाख। (प्र. मा.)

६ समूह, व्यूह। (प्र. मा.)

७ देखो 'बिधि' (रू. भे.) (नां. मा.)

उ०—१ कहै तांम कमधज्ज, सुरणौ साहिब छत्रपत्ती। बिध विचार धारियौ, सकौ तिरण प्रार सुमत्ती। —रा. रू.

उ०—२ प्रवनी रोग प्रनेक, ज्यारा बिध कीना जतन। इरण प्रकृति री प्रेक, रची न प्रोखद राजिया। — किरपाराम

उ०—३ कवि प्रोहित मत्री प्रधान, बिध मत्र विचारै। रहो मात चहुवाण, प्ररज हत वात उचारै। —रा. रू.

उ०—४ बिध रा जाण गाथ रा वीकम, पारिख बाण हाथ रा पाथ। जुध रा भीम खळा रा गजरण, 'नाथ' रा बुध गणनाथ। —प्राईदान पाल्हावत

८ देखो बिधु' (रू भे) (प्र. मा.)

रू. भे.—बिद्ध, बिध, बिधि, बिद, बिद्ध, बिद्धि।

बिधग्रंक-स पु—देखो 'विधिग्रक' (रू. भे.) (प्र. मा.)

बिधकर – देखो 'विधिकर' (रू. भे.) (प्र. मा., ह. नां. मा.)

बिधचूड, बिधचूड-स पु. [सं-विधाचुष्ट] कपट, धोखा। (प्र. मा.)

बिधत—देखो 'विधाता' (रू भे)

उ०—वप ब्रहम बिधत री सरव वुसुत री तूं गंगा गावतरी। पारबती निमी हेम री पुतरी सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी। —पी. ग्रं.

बिधनयण—देखो विधिनयरण' (रू भे) (क कु. बो.)

बिधना-स. पु [स विधि] ब्रह्मा, विधाता। (डिं को.)

उ०—१ नहचै होय निसक, चित नह कीजै चळ-विचळ। प्रै बिधना रा प्रक, राई घटै न राजिया। —किरपाराम

उ०—२ सुदर बदन नयन प्रग मानो, विधना प्राप सवारी। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम जीतें हम हारी। —मीरा

उ०—३ प्रब तो जिय ऐसी बनि प्राई, विधना रची सोइ होय री। प्ररी जे मेरो यह लोक जात हैं, वह परलोक जिन जाव री। —मीरां

उ०-४ कै प्रा पटकी ऊपर पड़गी कैप्रा भावी रच्ची राम। कै प्रा बिधना लेख लिखायो, कै प्रा तन्नै जच्ची राम। —करणीदान बारहठ

रू. भे —बिधना।

बिधरम—देखो 'बिधरम्म' (रू. भे)

बिधरमी—देखो 'बिधरम्मी (रू. भे)

बिधरम्म-स. पु. [स. विधर्म्म] पराया या दूसरा धर्म।

वि.—१ जो धर्मशास्त्र मे निन्दित हो।

२ जिसका कोई धर्म न हो।

रू. भे —बेधरम, बिधरम, बिध्रम, बिध्रम्म।

बिधरम्मी-वि. [स. विधर्म्मिन्] १ अपने धर्म के विपरीत प्राचरण करने वाला।

२ पराये धर्म का प्रनुयायी, धर्मभ्रष्ट।

रू. भे.—बिधरमी, बिध्रमी, बिध्रम्मी।

बिधरेख, बिधरेखा-सं. स्त्री. [स. विधि+रेखा] भाग्य में लिखा हुप्रा लेख, विधाता की रेखा, कर्मरेख।

उ०—पिरण भावी प्रति प्रबळ, मकळ बस प्राण प्रसेखा। हुप्ररणहार सिध करै, वार न घरै बिधरेखा। —रा. रू.

बिधवत—देखो 'विधिवत' (रू. भे)

उ०—१ कहियौ न्रप प्रज भय किण सूं, ज्वाळामुखी न पूजै जिण सूं। भांणउदीप विगत सुण भारी, विधवत सकति पूजि विसतारी।
—सू. प्र.

उ०—२ नाखित्र सूर ससि अर मुनिंद्र, आविया वरुण कुम्मेर इंद्र। विप्र वेद मंत्र विधवत विचार, आहूत वेद सुरमुख अपार।—सू. प्र.

विधवा—सं. स्त्री. [स] वह स्त्री, जिसके पति का स्वर्गवास हो गया हो, पतिहीना स्त्री।

उ०—१ थांरी अेक विधवा भूवा अणूती धनवती ही। वै उण माथै ठगाई रौ पासौ फेंकणौ चायौ। अेक भाई मोकौ देखनै छांनै भूवा रै पाखती गियौ। भूवा री हाजरी मे अेक पग रै पाण ऊभौ रै'तौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ उण विधवा बांमणी री गळाई कळजुग रौ धरम निभाया हं आपांरौ जमारौ सुधरैला अर सतजुग रै मरियोड़ा ढोर री पूछ झालियां धन अर बेटा दोना सूं हाथ धोणा पड़ैला। —फुलवाड़ी

उ०—३ सयळा मिनख अर बस्ती रौ तूमार जोयां पछै ई म्हैं फगत धन माथै आस गडाय राखी ही। बेटी! विधवा रौ सासरौ, पीवर, माईत अर भगवान फगत धन इज है। —फुलवाड़ी

उ०—४ बापड़ी भोळी-ढाळी किन्यावां नै कुडकै में नाख'र वेगीसी विधवा बणा देवै। सुवाग री नी रहावै री चवरी चाढै।
—दसदोख

रू. भे.—बधवा, बिदवा, बिधवा।

विधवापण, विधवापणू, विधवापणौ—स. पु—विधवा होने की अवस्था वैधव्य।

उ०—१ आप एकलौ मरनै फकत म्हनै होज विधवापणौ नही देसी धणी जणियां विधवा हुसी तद म्हारौ ही चूडौ ले जासी। चूडा रौ दूसरौ प्रयोजन लेजावणौ सो हूं सती होवसूं सो चूडा सहत साथै ले जासी। —वी. स. टी.

उ०—२ गाढै विधवापण ग्रहू, हू न करू' तन हांण। पौंह जिण लाजै अमरपुर. सूरजमल सुरताण। —पा. प्र.

रू. भे.—बिधवापण, बिधवापणू, बिधवापणौ।

विधवा-वियां, विधवाविवाह—स. पु.—पुनर्विवाह।

उ०—"तो कोई परणीजियोडी ई परणीजै है क्या! धरम डूब को जावैं नीं?" "थोनै धरम री टांग पूछ री तौ ठा भी कोयनी, पराया घर ऊनै पाणी-सू बाळता फिरौ हौ।" "तो थें कराय दिया विधवा-वियां? हू भी देखूला?" —वरसगाठ

विधवासरम, विधवाश्रम—सं. पु. [स. विधवा+आश्रम] वह स्थान, जहां विधवा स्त्रियों के पालन-पोषण एवं शिक्षा आदि की व्यवस्था हो।

विधविधान—वि.—विधिपूर्वक, विधिवत्।

उ०—थांणातरां साह नै परणायौ। अठै सारौ विध-विधान करनै सगां डायचौ दीवौ। —साहूकार री बात

विधवख—सं. पु. [स. विधि-वृक्ष या वृक्ष-विधि] पलास नामक वृक्ष।
(अ. मा.)

विधसरवा, विधस्रवा—सं. पु. [स. वृद्धश्रवस्, वृद्धश्रवा] इन्द्र।
(अ. मा., नां. मा, ह. नां. मा.)

विधांण, विधांन—सं. पु. [सं. विधान] किसी कार्य का आयोजन।

२ कार्य करने की रीति, व्यवस्था व सम्पादन।

३ ढग, तरीका।

उ०—मालती मेवती केतकी प्रफूलमांन। फूलूं की सोभा असमान के तारू' का विधान। केवड़ू की वाड़ी सिरू' का विकास। नाफरमां हजारा औरै गुलहूवास। — सू. प्र.

४ तरकीब, उपाय।

५ धर्मशास्त्र की आज्ञा।

उ०—छत्रप्पती उछाह में, धनेस माल ऊद्धमें। वेदोगतं विधानयं, दुजां अनेक दानय। —सू. प्र.

उ०—२ तपवन भूप निज धांम तत्र, ध्रज कनक सिंघासण चमर छत्र। दुतिवंत करै सनान दान, विध राज रीत सासत्र विधांन।
—सू. प्र.

६ हाथी को मस्ती मे लाने हेतु खिलाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

७ धन, सम्पत्ति।

८ पूजा, अर्चन।

उ०—विदा हुए पाधारियौ, पुहकर मुरधर-पत्त। दान सिनान विधांन दिन, पुनि मनि इद्र प्रकृत्त। —रा. रू.

९ आज्ञा, आदेश।

१० किसी देश के सर्वोच्च कानूनो का सग्रह।

११ वाद्य।

१२ रचना बनावट।

१३ सुख देवों मे से एक।

१४ निमय, कानून।

१५ कारण।

उ०—आहार माहै आवतां ही, जीव हता दिन ज्यांन। कीड़ी तौ निरबुद्धि करै, वलि माखी वमन विधांन। —ध. व. ग्र.

उ०—जिन्हे पख क्रस्ण सुकल विधांन, जिन्है वपु अंग सुदक्षिण वांम। ब्रह्मा दक्षण अंग वदीत, निपायौ दक्ष प्रजापति मीत।
—रा. वं.

१६ एक प्रकार का शस्त्र विशेष। (ना. द.)

वि.—१ समान, तुल्य।

२ रचनाकर्ता, रचयिता।

उ०— म्हे अबळ सकळ जगती प्राणी, तूं सबळ सत है मनितशाण। म्हे दास सदा तेरा स्वामी, भालै जग रो है तूं विधान।
—करणीदान बारहठ

रू. भे — विधान, विध्यान, विहाण।

विधानसपतमी, विधानसप्तमी, विधानसातम—स. पु [सं. विधानसप्तमी] माघ शुक्ला सप्तमी से प्रारंभ करके अगले वर्ष की पौष शुक्ल सप्तमी तक पूरे एक वर्ष तक किया जाने वाला सूर्यदेव का व्रत विशेष।

विधानीक—स. पु.— डिंगल गीतों की रचना का ढंग विशेष जिसमें क्रम-क्रम से प्रथम द्वाले के तीन चरण मे जो बात कही जाती है उसका स्पष्टीकरण चतुर्थ चरण में किया जाता है।

उ०—तुक तुक मे क्रम सो तवे, अवर अवर विध जांण। सभ चौथी तुक नाम सौं विधानीक वाखाण। —रा. रू.

विधांसणौ, विधांसबौ—देखो विधूंसणौ, विधूंसबौ' (रू. भे)

उ०—१ तठा उपरांत करि नै राजान सिलामति मांखिरा उकासिआ भूअर भाखरा रा मोढा फाड फाडनै निकळिआ छै। सूअरें रातै खून किओ छै। सूरें गुलवाड़ि विधांसिया छै। —रा. सा स

उ०—२ भूधर तु भाइयौ भगतां रो, तू दातार नहीं डिगता रो। ब्रिज रै देस बजाडी बासी, बडै भगत कजि वाधि विधांसी।
—पी. ग्र.

उ० —३ बडौ वड आरभु ज कुळ भार, धरा सिणगार इसौ लख-धीर। वहे सत्र-वाट नमावण नाट, विधांसण थाट सत्रा वर वीर।
—ल. पिं.

उ०—४ विधांसइ रेसइ राकस वंस, कीयौ तं कस। दहकध कियौ घड़ं मुरलोक तणौ सहि घट, वडौ कोइ डील नमौ वैराट।
—पी ग्र

विधांसणहार, हारौ (हारी), विधांसणियौ—वि०।

विधांसिओड़ौ, विधांसियोड़ौ, विधांस्योड़ौ भू० का कृ०।

विधांसीजणौ, विधांसीजबौ—कर्म वा०।

विधांसियोडौ—देखो 'विधूंसियोडौ' (रू भे)

(स्त्री' विधांसियोडी)

विधा—स. स्त्री. [स.] १ ढग, तरीका।

२ तरह, प्रकार, भांति। (सभा)

३ किस्म, जाति।

४ धन, सम्पत्ति।

५ हाथी या घोडे का चारा।

६ किराया, भाडा।

७ मजदूरी।

८ रचना।

उ०—नारी, सोवै हैं अपणै घर, सांई रै साथ सुहांणी है। नारी है विधि री अनुप विधा, नारी री अलग कहांणी है।
—करणीदान बारहठ

९ देखो 'विद्या' (रू भे)

१० देखो 'विदा' (रू. भे)

उ०—अरि सांभ हरि पत्ता आवै, जोध विधा अकबर छळ जांण। बिहू चौतीस कुळा क्रम बधण, भागा भांण-हरै कुळ भांण।
—गोपाळ मीसण

विधातनताका—स पु. [सं. विद्योतन+ताका या विद्या+तन+ताका] चन्द्रमा। (डिं को.)

विधाता—वि. [स विधातृ] १ रचना करने वाला, सृष्टिकर्त्ता।

उ०—पं'ली परमेसर याद करघो, 'हैं जगत पिता है जगदीसर। तू अग जग भाग विधाता है, तू ही बाहर तू ही भीतर।
—करणीदान बारहठ

२ देने वाला, दाता।

उ०—गुर दयाळ दीन गुर दाता, गुर सबहन के ग्यांन विधाता। गुर हैं दया पाल गुर देवा, या गुर की मिळ करीयै सेवा।
—अनुभववांणी

३ प्रबन्ध या व्यवस्था करने वाला।

स. पु.—१ ब्रह्मा। (ना मा., ह नां. मा.)

उ०—१ अजसै कनक भूखण पहर नृप अवर, कनक मे विधाता अकुट कीधी। लहर हिक सरण हित भभीखण रक लख, दान गढ लक अणसव दीधी। —र ज प्र.

उ०—२ इण भात नख-सिख सूधा सोळै सिणगार किया बारै आभूखण विराजिया छै। जाणै इद्र-लोक री अपछरा, रूप री रभा, आसमान री ऊतरी पडी। चित्राम री पूतळी, विधाता हाथ सू समारी। —रा. सा. सं.

उ०—३ देवी मग्रह्मा माइया जग माता, देवी ब्रह्म गोवीद सभु विधाता। देवी सिध्धि रै रूप नव-नाथ साथै, देवी रिध्धि रै रूप धनराज हाथै।
—देवि.

उ०—४ दसकधर आता बुध के दाता, वचन विधाता कंवाता। सो नाह सुहाता, परजळ गाता, उरलै, लाता, मुरझाता।
—भगतमाळ

२ विष्णु।

३ शिव, शकर।

४ कामदेव।

५ विश्वकर्मा।

६ भृगु एव ख्याति के ससर्ग से उत्पन्न पुत्र।

वि. वि.—इसके दूसरे भाई का नाम धाता था। इन दोनों ने

नियति और आयति नामक मेरु पुत्रियो से विवाह किया था। विधाता व नियति के गर्भ से भृकण्डु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। कमलों मे निवास करने वाली विष्णु पत्नी लक्ष्मी इनकी बहिन थी। मतान्तर से विधाता व नियति के गर्भ मे प्राण नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

७ प्रारब्ध, भाग्य।

८ पचचित नामक अग्नि का पिता व क्रिया का पति एक आदित्य, जो आषाढ या मार्गशीर्ष मास मे प्रकाशित होता है।

स स्त्री. [स. विधातृ] ९ मदिरा, शराब।

१० ब्रह्मा की पत्नी सरस्वतीरूपा।

रू. भे.—बिधाता, बेहा, बिद्याता, बिद्यातानाथ, बिधत, बिधाता-नाथ, बिधात्र, बिधात्रा, बिधात्री, बिध्याता वेह वेहा।

बिधातानाथ—देखो 'विधाता' (रू. भे)

उ०—बिधातानाथ वरण लेख अवरी वरी, बिया राघव करी अचळ बाता। हार ग्रीवा तणा देख झाला हियै, हार वारग लियां रही हाता। —कल्याणसिंह झाला री गीत

बिधात्र, बिधात्रा, बिधात्री—२ देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—१ अेगी न्याति नारद हवउ, उत्तम अपर बिधात्र। जिहां जिमतु तिहा ऊठतु, भाजी भोजन-पात्र। —मा. कां. प्र.

उ०—कुंअरी कारण हीयडइ घरइ, थई ऊपराठी आसू भरइ। कुंअरी तणाउ अग खळभळइ, लिख्यउ बिधात्रा तै किम टळइ। —का. दे प्र

बिधायक—वि. [स विधाक:] १ कानून बनाने वाला।

२ व्यवस्था करने वाला।

३ रचना करने वाला, सृष्टि कर्त्ता।

उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विग्य चतुर जुग बिधायक। सरवजीव विस्वकत ब्रह्मासू, नरवर हंस देहनायक। —वेलि.

स. पु.—विधान सभा का सदस्य।

रू भे.—वधायक।

बिधारा—सं. स्त्री.—दक्षिण भारत मे बहुतायत से मिलने वाली एक प्रकार की लता।

बिधि—स. पु [स. विधि:] १ काम करने की रीति, क्रिया या व्यवस्था।

उ०—१ आगळि पित मात रमती अगणि, काम विरांम छिपाड़ण काज। लाजवती अगि एह लाज बिधि, लाज करती आवै लाज। —वेलि.

उ०—२ प्रतिदिन होत वेद बिधि पूजन, घुरियत तत आनद्ध सिसर घन। धूप दीप नैवेद पुस्प फळ, कस्मीरज मलयज नागज कळ। —मे. म.

२ तरह, प्रकार, भांति।

उ०—१ दियौ सेत वरदान तू, परमेसरि प्रस्ताव। राजान री रस कथा, बिधि कहि वात वणाव। —रा. सा. स.

उ०—२ दुविधि अन पल त्रिषा, साग पव मांस धारण। गौ रस जुग बिधि गिणित, मिस्ट गति ए कवि चारण। —रा सा. स.

उ०—३ आप इसी हित चित इकतारी, नृपती कहो आंण सुजि नारी। देता द्रव करता जुध दावै, प्राणौ जेण तेणि बिधि आवै। —सू. प्र

३ आज्ञा, आदेश।

४ कार्यक्रम, प्रणाली, ढग, नियम, कायदा।

उ०—१ मिळि मत्री परधान मैं, बिधि दक्खै विच्चार। अळ रखण गढ जोधपुर, कै रक्खौ जोधार। —गु. रू. ब.

उ०—२ तब रुक्मणीजी डावैं पासैं बैसांण्यां। ज्यौं बिधि छै त्यौं बोल वाचा लै। ज्यौं कही छै त्यौं करि नै बिवाह पूरण कीयौ। तिहि वेळा वेद का पठणहारां। मुंहमांगी सु नवही निधि पाई। —वेलि टी.

उ०—बिधि सहित वधावै वाजित्र वाजै, भिन भिन अभिन वाणि मुख भाखि। करै भगति राजान क्रिसन की, राजरमणि रुखमिणि ग्रह राखि।

५ धर्मशास्त्र की आज्ञा।

६ ढग।

उ०—सहिजि उल्लघइ सूर सरी, नीकन नेडी थाइ। बज्र तणी बिधि अगमइ, कुसुम सरीखी काय। —मा. कां. प्र.

७ धार्मिक विधान।

८ भेद, रहस्य।

उ०—नाहरा आ बोली, "न हू सासरै वहू, ना पीहर बेटी, अब बिचाळै ऊभी छूं। नाहरा औ बोलियौ, 'ईयै री जाब कीसू? मूं क्यू ऊभा? मोनु बाहरै मन री बिधि कहौ।" —कावळी जोईयौ नै तीडौ खरळ री वात

९ सृष्टि, रचना।

१० सृष्टिकर्त्ता, विधाता, ब्रह्मा। (ह. ना. मा.)

उ०—१ बोल नबाब सरस द्रढ बधै, सुत पितु हूंत महा उळ सधै। यूं रिम सूरत सून प्रबधै, नेम लियौ बिधि जेम निमंधै। —रा. रू.

उ०—२ जोग नीद बस भयैं निरजन, गज्जैं असुर पितामह गजन। आकृति विकट निकट चलि आयैं, काढि दसन बिधि ग्रसन धिकायैं। —मे. म.

उ०—३ नारी सोवै है अपणै घर, साई रै साथ सुहांणी है।
नारी है बिधि री अनुप विधा, नारी री अलग कहाणी है।
—करणीदान बारहठ

११ भाग्य, प्रारब्ध।
१२ वैद्य, हकीम।
१३ विष्णु का नामान्तर।
१४ विधान, नियम।

उ०—१ उरवेव समरथ एक, उतपात पेख अनेक। असहाय थान अपार, बिधि भरम क्रम विसतार। —रा रू.

उ०—२ करता अरु अकरता तिरगुण, खग ब्रह्म मांई सगुणनिरगुण। बिधि निखेध खंगम होई, सब्द ब्रह्म द्रस्टा निज सोई।
—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—३ विधि निखेध करम नहिं क्रिया, बुद्धि उगत थकांणी। सत सुखराम परम प्रकासी, आपी कू आप पिछाणी।
—स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—४ मयणा कहै कर जोडि नै,भगवन् ! पूछू तुझ, ऊजमणा नी बिधि कहो, समझावीनै मुझ। मुनि कहै साभळ स्राविका, एह नी विधि छै भुरि,नांम मात्र तुझ नै कहू,पामिस सुख भरपूरि।
—स्रीपाल रास

१५ कानून, कायदा।
१६ साहित्य मे एक अर्थलंकार।
१७ व्याकरण मे किसी को कुछ करने के लिए दी गई आज्ञा का स्वरूप।
१८ पीला।* (डि. को)
१९ श्वेत।* (डि को)
२० देखो 'विध' (रू. भे)
२१ देखो 'बिधु' (रू भे.)

रू. भे.—बिद्ध, बिध, बिधि, बिढ़ि, ब्रधी, बिढि, बिध्य विह।

बिधिग्रंक-स पु. [स. विधि+अंक] प्रारब्ध, भाग्य।

रू. भे —बिधग्रंक।

बिधिकर-सं. पु.—चाकर, नौकर, सेवक। (अ. मा, ह ना मा.)

रू. भे —बिधकर।

बिधिग, बिधिग्य-स पु. [सं. विधिज्ञ] शास्त्रोक्त एव विधि के विधान को जानने वाला, पडित। (ह ना. मा)

बिधिनयण-सं पु [स. विधिनयन] सूरज, सूर्य। (ह. ना. मा)

रू. भे. -बिधनयण।

बिधिपाट-स. पु [स.] मृदंग के चार वर्णों मे से एक।

वि. वि.—इसके चारो वर्णों के नाम-पाट, बिधिपाट, कूटपाट, और खडपाट है।

बिधिपाठक-सं.पु [स.]शास्त्ररीति का पाठ करने वाला या बताने वाला।

उ०—बिधिपाठक सुक सारस रस वल्लक, कोविद खंजरीट गतिकार। प्रगलभ लाग दाट पारेवा, बिदुर वेस चक्रवाक बिहार। —वेलि.

२ आधुनिक कानून का अध्ययन करने वाला या कानून बताने वाला, वकील।

बिधिपुत्र-स पु [सं विधि+पुत्र] ब्रह्मा के पुत्र नारदमुनि।

बिधिपुर, बिधिपुरी-स पु. [स विधि+पुरी] ब्रह्मलोक।

बिधिपूजा-स. स्त्री [सं.] धन प्राप्ति हेतु पौष मास की शुक्ल पक्ष की द्वितिया को की जाने वाली ब्रह्मा की पूजा, नक्त व्रत।

बिधिभेद-स. पु. [स विधि+भेद] साहित्य मे उपमा-अलकार का एक दोष विशेष जो उपमेय और उपमान के धर्म, गुण आदि का मेल ठीक नही बैठने पर माना जाता है।

बिधरांणी, बिधिरानी-स. स्त्री. [सं. विधिरानी] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

बिधिलोक-स. पु. [सं. विधि+लोक] ब्रह्मलोक, सत्यलोक।

बिधिवत-क्रि. वि. [सं. विधिवत्] उचित पद्धति के अनुसार, विधिपूर्वक।

रू भे.—बिधवित।

बिधिवदन-स. पु [स] चार की सख्या।*

बिधिवधू-स. स्त्री [स विधि+वधू] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

बिधिवाहन-सं. पु. [स विधि+वाहनम्] ब्रह्मा की सवारी, हस।

बिधिसार-स पु.—बिम्बसार नामक राजा, जो क्षेत्रज राजा और मतान्तर से क्षत्रोजस् राजा का पुत्र था।

बिधी—१ देखो 'विधि' (रू भे.)

२ देखो 'बिधु' (रू. भे) (अ मा)

बिधुंसणौ, बिधुंसबौ—देखो 'विधुंसणौ, विधुंसबौ' (रू. भे.)

बिधुंसणहार, हारो (हारी), बिधुंसणियौ—वि०।

बिधुंसिग्रोड़ो, बिधुंसियोड़ो, बिधुंस्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिधुंसीजणौ, बिधुंसीजबौ—कर्म वा०।

बिधुंसियोड़ो—देखो 'विधुंसियोडो' (रू भे)

(स्त्री. बिधुंसियोडी)

बिधु-स. पु [स] १ चन्द्र, चन्द्रमा। (ना. मा, ना. डिं. को.)

उ०—१ अमरत दध नह तिम अधर, बिधु यिमरत न वखाण। कै जन अजरामर करण, जस हर यिमरत जाण। —र. ज. प्र.

उ०—२ विधु भळनळ मणि वासं, त्रिय त्रिपुरारि तुभ्यौनम ।
—रामरासौ

२ ब्रह्मा ।

३ विष्णु ।

४ ब्राह्मण ।

५ एक राक्षस का नाम ।

स. स्त्री. [स वधू] ६ नवविवाहित दुल्हन ।

रू. भे.—विधु विध, विधि, विधी, विधू ।

विधुकाल—सं. पु· [सं.] संगीत का एक ताल ।

विधुत—देखो 'विद्युत' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

विधुतुंद—सं. पु [स.] राहु का एक नामान्तर ।

विधुप्रिया—स स्त्री [स] चन्द्रमा की स्त्री, रोहिणी ।

विधुम—स. पु. [सं.] अष्टवसुओ मे से एक वसु जो अलबुसा का पति था ।

विधुर—सं. पु [स] कष्ट, दुख । (ग्र. मा.)

वि.—१ व्याकुल, दुखी ।

२ वह जिसकी पत्नी का देहान्त हो गया हो ।

रू. भे —बिधुर।

विधुरा—स. स्त्री. [सं.] कानो के पीछे की एक स्नायु ग्रन्थि ।

विधुवदनी—स. स्त्री. यौ. [स. विधु+वदनी] चद्रमुखी, सुन्दर-मुख वाली स्त्री ।

विधूस—देखो 'विध्वस' (रू. भे)

उ०—१ चावदलदोह अगा दीह समा जूझ लाग चाळै, नरा ताळै सामध्रमी तणी साचो नेम । कोध वाळै रूप गनीमाण री विधू स कीधौ, 'जोध' वाळै वीरभद्र दक्ष जाग जेम । —बद्रीदास खिडियौ

उ०-२ वारबीस-गात जोम गाळिया त्रिकूट वामो,राजचीळ जाळिया तारखी तेज रूस । कोपखो कुलेमा इद्र ढाळिया पहाड काळा, वीर 'सिवा' वाळै सत्रा राळिया विधू स । —हुकमीचद खिडियौ

विधूंसण—स पु [सं. विध्वसन] नाश, सहार ।

उ०—ज्या प्रतपाळण हात निज, वहा रुखवाळण श्राप । कवण विधूंसण कर सकै, तौ जै सरण 'प्रताप' ।
—जैतदान बारहठ

रू. भे.—बिधू सण, बिधूसण, विद्धसण, विधंसण, विध्वसण ।

विधूंसणौ, विधूंसबौ—क्रि. स. [स. विध्वसनम्] १ नाश करना, विध्वस करना ।

उ०—१ बासठि हजार फोजा रा भाजणहार । छ खड खुरसाण रा विधू सणहार । मैमत हाथिग्रा रा मारणहार । पातिसाहा रा बिभाडणहार । पातिसाहां रा पडिगाहण । —र. वचनिका

उ०—२ सू मच जेठ कळाघर सारी, आयौ रवि ज्यौ किरण प्रकारी । पड कोपियौ किना धार पण, वीरभद्र दिख ज्याग विधू सण । —रा. रू.

२ मारना, सहार करना ।

उ०—१ सारा मौहर दुजौ 'सबळावत', रिण गज धडा विधूंसण रावत । सुत 'जालम' दोनू ग्रडसाळा,'सूजौ' 'ग्रनौ' 'विनौ' 'सिव' ज्वाळा । —रा. रू.

उ०—२ पातल घड पतसाह री, ग्रेम विधूंसी ग्राण । जाण चढी कर बंदरां, पोथी वेद पुराण । —महाराज मानसिंह

उ०—३ ग्रोपम तिका ग्रमता ग्रच्छर, पमगां जाण फेर ग्राई पर । जग छत्रदळा विधूंसे 'चद' जुडि, महिपुडि भार गया ग्रहि फुण मुडि । —सू प्र.

३ तोडना, भग करना ।

उ०—सगै केहर राम रै, मिळियौ जगै भीम । 'सबळांणी' मोबी तणी, सार विधूंसे सीम । —रा. रू.

४ लूट-खसोट करना ।

उ०—विधू स्यौ देस किया सहि चकिक, कमध्व न दिट्ठा मेछ कटक्कि । महम्मद मारण मोटिमसल्ल, ढढोलण दिल्लिअ ग्रेकम-ढल्ल । —राउ जैतसी रौ रासौ

५ बर्बाद करना, तहस-नहस करना ।

उ०—पान विधूंस्या रसपियौ, सुख पायौ इण डाळ । तुम जळौ'र हंम उड चलें, जोणौ त्तिक काळ । —ग्रग्यात

६ रति क्रीडा करना, मैथुन करना ।

विधूसणहार, हारौ (हारी), विधूंसणियौ—वि० ।

विधूंसिग्रोडौ, विधूसियोडौ, विधूंस्योडौ—भू० का० कृ० ।

विधूंसीजणौ, विधूंसीजबौ—कर्म वा० ।

बिधसणौ, ब्रिधसबौ, बिधूसणौ, ब्रिधूंसबौ, बिधूसणौ, बिधूसबौ, बीधूसणौ, बीधूसबौ, बीधूसणौ बीधूसबौ, विधंसणौ, विधंसबौ, बिधांसणौ बिधांसबौ, बिधूसणौ, बिधूंसबौ, बिधूसणौ, बिधूसबौ, बिध्वंसणौ, बिध्वसबौ —रू० भे० ।

विधूंसियोडौ—भू का. कृ —१ नाश किया हुग्रा, विध्वस किया हुग्रा. २ मारा हुग्रा, सहार किया हुग्रा. २ तोडा हुग्रा, भंग किया हुग्रा. ४ लूट-खसोट किया हुग्रा, ५ बरबाद किया हुग्रा, तहस-नहस किया हुग्रा. ६ सभोग किया हुग्रा ।

(स्त्री. विधूंसियोडी)

विधू—१ देखो 'विधु' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

२ देखो 'वधु' (रू. भे.)

उ०—१ मन भाव स्रंगारुग्र वीर मडै, कमधां गुर ताम रिकाम

चढे। बरबाबर पावुस राज विधू, मिणगारित सूरजमाल सिधू।
—पा प्र.

विधूसरणौ, विधूसबौ—देखो 'विधूंसरणौ, विधूंसबौ' (रू. भे)

उ०—१ जिम धायौ जोगेस, वसुह दिस ज्याग विधूसण। जिम धायौ ग्रह वारण, पथ गौ ग्रह छाडावण। —गु. रू. बं.

उ०—२ वाजै बंकी रोड के प्रखाड़ै हयौ लासवाडा, जगौ होदां सूधा कं पनागा पाडै जूथ। जोम ग्राडं लागौ चौडै धाडै भाडै बिजूजळा, विधूसे बिभाडै ताडै गनीमां बिरूथ। —हुकमीचद खिडियौ

उ०—३ दिली साहा भजणौ गजणौ दिली लाग दावे, टाळै न कौ जीव लागा बादौबाद टेक। केका घड़ां विधूसे कबाणा चिलै ग्रहै केकां, ग्रासगै ग्रनेका ग्रेहो भूरौ बाघ हेक।
—किरपाराम कवियौ

उ०—४ लोयणा पळाका नग्गा सावळां भळाका लेती, सुढगा ग्रोयणा बाजा पाखरा सानैत। चीर ग्रगा पीन ग्रगां नीसाण मेछ घडा चगी, विधूसे पिलगा चा ग्रगा 'चद्र' रौ वानैत।
—राव देवीसिंघ सेखावत रौ गीत

उ० —५ रीभ रीभ हूरा बरा बारणां रम्माडै ग्गा, जोगणी ग्रखाडै जगां जम्माडै स जूथ। नेग ग्राडै लागौ चौडै-धाडै खळा भाडै तू ही, बीभाडै विधूसे पाडै पट्ठांणा बरूथ। —हुकमीचंद खिडियौ

विधूसणहार, हारौ (हारी), विधूसणियौ—वि०।
विधूसिग्रोडौ, विधूसियोडौ विधूस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विधूसीजणौ विधूसीजबौ - कर्म वा०।

विधूसियोड़ौ—देखो 'विधूंसियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री विधूसियोडी)

विधेय—वि [स] १ जिसका करना उचित हो, विधान के योग्य, कर्त्तव्य।
२ जिसे जानने का विधान हो।
३ ग्राज्ञा के वशीभूत, ग्राज्ञापालक।
४ व्याकरणानुसार वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के सम्बन्ध मे कुछ कहा जाय।
५ योग्य। (व. भा.)
६ प्रेयसी के द्वारा प्रिय के मान-मोचनार्थ किये जाने वाले दो उपचार विशेष, जिसमें उपेक्षा, धृष्टता, भय, हर्ष ग्रादि दिखला कर प्रकारान्तर से ग्रनुकूल करने का प्रयत्न किया जाता है। (साहित्य)
रू. भे.—बिधेय।

विधेयक—स. पु. [स विधेय+कन्] विधान बनाने वाली परिषद् या सभा के सामने विचारार्थ प्रस्तुत किया जाने वाला विधान या कानून का प्रस्तावित रूप।
रू. भे —बधायक।

विधेयकरम—स पु [स विधेय+कर्म] १ उचित कार्य, कर्त्तव्य।
२ नियमपूर्वक कार्य, वैधानिक कार्य।
३ शास्त्रोक्त नियमानुसार कर्म।

उ०—दोही सहोदरा एक नदी रै तीर उचित जळ देखि सायकाळ रौ विधेयकरम करण पाळा ग्रौ चलाया। —व. भा.

विधेयाविमरस—स पु [स विधेय+ग्रविमर्श] साहित्य मे, विधेय ग्रश को ग्रप्रधान ग्रंश प्राप्त होने पर उत्पन्न होने वाला वाक्य दोष।

विधोगत, विधोगति—स पु —१ ढग, तरह, प्रकार।

उ०—वाचिग्रा जिके इतरा विचार, समझै लखपत्ति समझवार। प्रसतार कहा गाहा प्रकार, हवि सुणौ विधोगति सुणणहार।
—ल. पि.

२ विधिपूर्वक, नियमपूर्वक।

उ०—१ पुत्र जिणिइ जे जे हूइ, ते परि सघली कीद्ध। कोडि भरिउ कुरंगदत्त, दान विधोगति दीद्ध। —मा. का. प्र.

उ० —२ प्रह्वपणउ गणि व्यासनु, माधव महीपति वासि। कथा विनोद विधोगति, रीभवितु गुण- रासि। —मा. कां. प्र.

उ० —३ ऊभिउ पिउ ग्रादर करी, भूप करइ ग्रभिवाद। वलतु दीइ विधोगतिइ, माघव ग्रासीरवाद। —मा. का. प्र.

उ० —४ वैध विधोगति जे लहइ, ते ते करइ उपाय। काचा सोना कापीइ, रजवीइ रस-राय। —मा. कां. प्र.

विधोरणौ, विधोरबौ—क्रि ग्र —मिट जाना, मिटना।

उ०—ग्राखर पिय रै नाम के, लिखे कळेजा माहि। डरती पाणी ना पिऊ, मतहि विधोरा जाहि। —जलाल-बूबना री बात

विधोरणहार, हारौ (हारी), विधोरणियौ—वि०।
विधोरिग्रोडौ, विधोरियोडौ, विधोरयोडौ—भू० का० कृ०।
विधोरीजणौ, विधोरीजबौ—भ.व वा०।

विधोरियोड़ौ—भू का कृ.—मिटा हुग्रा।
(स्त्री. विधोरियोडी)

विधोविध, विधौविध—क्रि. वि.—१ विविध प्रकार से, भिन्न-भिन्न प्रकार से।

उ०—१ राखू नह ग्राद लत्री ग्रमरीत, सतीसत छोड मैं कूंता, सीत। विधोविध धूहड़ दाख वचन, मेलै नह चाल राणी वडमन।
—गो. रू.

उ०—२ विधोविध दीठौ माय बिभूत, धुताई छोड परी सब धूत। माहिलौ ठाकुर लाधौ माय, पुजावै ग्रापौग्राप ही पाय। —ह. र.
२ यथाविधि, विधिवत्।

३ यथार्थ ।

रू. भे.—विधोविध ।

विध्य—देखो 'विधि' (रू. भे.)

उ०—तेहनूं रूप तं तुह ज लहं, जु थाइ तुम्र पटरांणी । ब्रह्मा विध्य नु सम थाइ साचु, चतुरपणि रहि पांणी । —नळख्यान

विध्यांन—देखो 'विधान' (रू. भे.)

उ०—खट भासा नव व्याकरन, विद्या वेद विध्यांन । हरीया अक्षर एक बिन, सब ही थोथा ग्यान । —अनुभववाणी

विध्या—देखो 'विद्या' (रू. भे.)

उ०—भांण तेजगीरां तीरां विध्या मेधा जं भाखा, जांण मच्छन्द्रांणी जोग मत्ती री बोधांरा जो भार । जम्मीरां जोखीरा वीरा वीरभद्र जेम, जोयजो हम्मीरां प्रेम 'खेम' री जोधार । —हुकमीचद खिड़ियो

विध्याता—देखो विधाता' (रू. भे.)

उ०—नैसध नर नि जु तूं नारी, सरखी सरखी जोड । नही तरि विध्यातानि लागि, रूप रच्यानी खोड । —नळाख्यांन

विध्रत, विध्रति—सं पु [सं. विधृति] एक सूर्यवंशीय राजा, जो लगन का पुत्र और हरिण्यनाभ का पिता था ।

उ०—वजनाभ सुत सुगण वरमवप, तै सुत विध्रत नरेस उग्र तप । सुत जय हरिणनाभ सुभियाणं, पुख न्रप जै सुत इद्र प्रमाणं । —सू. प्र.

२ अभूतरजस् देवों में से एक देवता ।

सं. स्त्री.—३ वैधृति नामक देवता समूह की माता ।

विध्रम—देखो 'विघरम्भ' (रू भे.)

विध्रमी—देखो 'विधरम्मी (रू. भे.)

विध्रम्भ—देखो 'विधरम्भ' (रू. भे.)

विध्रम्भी—देखो 'विधरम्भी (रू. भे.)

विध्वस—स पु. [स.] १ विनाश, नाश ।

उ०—बहै जू बाट बाट मे पिता पिता महा बदै, सुखी सुबाट तै सदा दुखी दुबाट मैं दहै । सरीर समकार सार वीर छीर सै सनै, बिध्वंस वेरि वस की प्रसंसनीय तै बनै । —ऊ. का.

२ तहस-नहस, बर्बाद ।

३ सहार, नाश ।

रू. भे.—बिध्वस, भस विद्वस, विधस, विधूंस ।

विध्वंसक—वि. [स.] १ विनाश करने वाला, नाश करने वाला ।

२ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

३ सहार करने वाला, नाश करने वाला, मारने वाला ।

रू. भे.—विधमक ।

विध्वसण—देखो 'विधूंसण' (रू. भे.)

विध्वसणो—वि.—(स्त्री. विध्वसणी) १ नाश होने वाला, नाशवान् ।

उ०—सड़न पड़न विध्वंसणीए, जतन करतां जाय । कुण जांणं पेहलो पछे ए, दो अनुमत सुख दाय । —जयवांणी

२ मरने वाला ।

३ तहस-नहस होने वाला, बर्बाद होने वाला ।

४ नाश करने वाला, सहार करने वाला, मारने वाला ।

५ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

विध्वंसणो विध्वसबो—देखो 'विधूसणो, विधूंसबो' (रू. भे)

उ०—१ माहो माही नगर विध्वंस्या, पांडव दवदंत राय जी । मुनि दवदत इटालं मारयो, कौरव न तज्यो व रवाय जो । —स. कु.

उ०—३ ताहुग वडी फोज कर मालदेजी आया हीज । गाम गगा-रडै आय डेरा किया । फोज च्याहूं ही तरफ दोडो छै । मेड़तं री रैत लोग खसीजै छै । देस मारीजै छै । देस विध्वंसीजै छै । —नैणसी

विध्वंसणहार, हारो (हारी), विध्वसणियो—वि० ।

विध्वसियोड़ो, विध्वंसियोड़ो, विध्वंस्योड़ो—भू० का० कृ० ।

विध्वसीजणो, विध्वंसीजबो—कर्म वा० ।

विध्वसियोड़ो—देखो 'विधूसियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. विध्वंसियोडी)

विध्वस्त—वि. [स.] १ नाश हुवा या किया हुआ ।

२ संहार हुवा या किया हुआ, मरा या मारा हुआ ।

३ तहस-नहस हुवा या किया हुआ, बर्बाद हुवा या किया हुआ ।

विनत—देखो 'वनिता' (रू भे.)

उ०—भणीजै र जसोमति माता, बलिभद्र भाई भुआळो । विनत स्रिया जांणिजै, नंद पिता धणी व्रभ वाळो । —पि. प्र.

विन—देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—जन हरीदास हरि सूं कहै, तुम बिन तन छीजै । 'प्रेम' पियाला पाय करि, अपणो करि लीजै । —ह. पु. वा.

उ०—२ जोबनिया रो जोरो छै जी म्हारा राज, नैण भळक्यो नेहरो तोरो । थारै मिळण बिन जी म्हारो दोरो, रसराज थै मत म्हा सु दिल मत चोरो । —रसीलैराज रा गीत

उ०—३ प्रथम सेव गुरुदेव की, पीछै हरि की सेव । जनहरीया गुरुदेव बिन, भगति न उपजै भेव । —अनुभववाणी

उ०—४ नांव लीया गुण नां मिट्या, तिवर न भागा तेज। हरीया ग्यांन विचार बिन, रही जेज की जेज। —अनुभववांणी

बिनउ—देखो 'विनय' (रू. भे.)

उ०—कुंझां, द्यउ नइ पखड़ी, थांकउ बिनउ वहेसि। सायर लंघी प्री मिळउ, प्री मिळि पाछी देसि। —ढो. मा.

बिनड़णौ, बिनड़बौ–क्रि. अ.—१ विनम्र होना।

उ०—विरचै नही पदम बिनड़ंतां, घणी वात जस भोम घणी। दे सांसण पूठेचा देवै, धर जगळ जांगळ-धणी। —द. दा.

२ देखो 'विन्नडणौ, विन्नडबौ' (रू. भे.)

बिनड़णहार, हारौ (हारी), बिनड़णियौ—वि०।

बिनड़िग्रोड़ौ, बिनड़ियोड़ौ, बिनड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिनड़ीजणौ, बिनड़ीजबौ—भाव वा०।

बिनडणौ, बिनडबौ, बिनडणौ, बिनडबौ—रू० भे०।

बिनड़ियोड़ौ-भू. का कृ.—१ विनम्र हुवा हुआ।

२ देखो 'विन्नडियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिनडियोडी)

बिनडणौ, बिनडबौ–क्रि. अ.—१ दुख देना, कष्ट देना।

उ०—१ बालउ ज माय सुझ क्यु कह्यउ, अबर राय रखउ जीउ। सुलताण सेन बिनडउ नही, तब रै माय फुट्टइ हीउ। —प. च चौ.

उ०–२ अनेकि परिछइ तै बिनडत, दीणवयण जीव विलवत। नरग तणा दुक्ख अनी निहालि, तै मेल्हइ करवत कपालि।

—वस्तिग

२ वेष बदलना।

उ०—कवण तउ कवण भूपति राउ, कवण नामु कवण भूपति जाउ। कवण काजि बिनडिउ तइ सयर, कवण भूपति मिउ तुझ वयर। —सालिसूरि

३ देखो बिनड़णौ, बिनड़बौ' (रू. भे)

४ देखो 'विन्नडणौ, विन्नडबौ' (रू भे.)

बिनडणहार, हारौ (हारी), बिनडणियौ—वि०।

बिनडिग्रोड़ौ, बिनडियोड़ौ, बिनड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिनडीजणौ, बिनडीजबौ—भाव वा०।

बिनडियोड़ौ–भू. का. कृ—१ दुख दिया हुआ, कष्ट दिया हुआ

२ वेष बदला हुआ।

३ देखो 'बिनड़ियोडौ' (रू भे.)

४ देखो 'विन्नड़ियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. बिनडियोडी)

बिनत–स. पु. [स.] १ एक बन्दर का नाम, जो सुग्रीव की सेना मे सेनापति था।

वि. वि.—यह सीता की खोज हेतु पूर्व दिशा की ओर गया था। इसके पिता का नाम श्वेत था। यह स्वय पर्वताकार था। इसकी गर्जना मेघ गर्जना के तुल्य थी और इसकी सेना में साठ लाख वानर थे।

२ वैवस्त मनुपुत्र इल का पुत्र।

३ पुलह एवं श्वेता के पुत्रों में से एक दिग्गज।

४ देखो 'विनीत' (रू. भे)

बितनक–स पु. [स] एक पर्वत का नाम।

बिनतडी—देखो 'विनती' (अल्पा., रू. भे.)

बिनतवत–वि. [स] विनय से युक्त, विनयवान्।

उ०—कहिज्यो अरथ हियाली केरउ, वहिलउ हियइ विमासी। बिनतवत गुणवत तुम्हारी, नहि तउ थास्यइ हामी रे। —स. कु.

विनता–स. स्त्री. [स] १ व्याधि लाने वाली एक राक्षसी।

२ अशोक वाटिका मे, रावण द्वारा, सीता को समझाने हेतु नियुक्त एक राक्षसी।

३ प्राचेतस दक्ष प्रजापति व उसकी पत्नी असिक्नी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्री जो अरिष्टनेमी कश्यप ऋषि की पत्नी थी और पक्षियो की माता थी।

वि वि.—कश्यऋषि ने इसे वरदान दिया था कि तुम्हारे दो पुत्र उत्पन्न होगे जो तुम्हारी शौत कद्रु के नाग पुत्रो से भी बलशाली होगे। इसी वरदान के फलस्वरूप इस के गरुड़ व अरुण नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। ये दोनो पुत्र अण्डो से उत्पन्न हुए थे। एक अण्डा समय से पूर्व फूट जाने के कारण आधे शरीर का पुत्र उत्पन्न हुआ था जो अरुण था। इसी कारण से अरुण ने इसे अपनी शौत की पाच सौ वर्षों तक दासी रहने का शाप दिया। इस शाप से गरुड स्वर्ग से अमृत लाकर मुक्त किया था। गरुड व अरुण के सिवा इसके अरिष्टनेमि तार्क्ष्य व आर्काण नाम दो पुत्र व छत्तीस पुत्रिया थी।

[स वनिता] ४ स्त्री, औरत। (डिं. को., ह ना. मा)

उ०—१ वचन विनता उच्चरि रै, विहग तूं विरो थयु। गुण कह्या ननराय निभावमनउ ताहा गयु। —नळाख्यांन

५ स्त्री, पत्नी।

६ प्रेमपात्री, स्त्री।

रू. भे.—विनिता, विनिया, विनीता।

बिनताक, बिनताग–स. पु [सं· वृन्ताकि] एक प्रकार का शाक, बैंगन।

रू. भे.—बिनताक, बिनताग।

विनतासुत, विनतासुनु–स. पु [स.] विनता के पुत्र गरुड़ व अरुण।

रू. भे.—बिनतासुत, विनितासुत।

बिनत.स्व—देखो विनत' (रू. भे.) (२)

बिनति, बिनती– सं. स्त्री [स विनतिः] १ अनुनय-विनय, प्रार्थना।

उ०—ससनाराण सिवरियै, मिवरा सदा सहाय। ब्रह्म सुता सुं बिनती, अक्षर द्यो समझाय। —अग्यात

२ नम्रता, विनम्रता।

रू. भे.—बिनती, बीणती, बीनती।

अल्पा.—विनतड़ी

विनम्र–वि. [स] नम्रता से युक्त, नम्र।

विनय–स स्त्री. [स. विनय] १ नम्रता, विनम्रता।

२ अनुनय-विनय, प्रार्थना।

३ ७२ कलाओं में से एक कला। ४ शील, सतीत्व। ५ शिष्टो चित व्यवहार। ६ जितेन्द्रिय पुरुष।

७ गुरु आदि पूज्य पुरुषों का भक्ति से अभ्युत्थानादि के द्वारा आदर-सत्कार देने की क्रिया। (जैन)

रू. भे.—बीन, विराय, विनउ, विना, विनै।

विनयवंत–वि. [स] विनम्रता से युक्त, विनयशील, विनीत।

उ०—१ जग माहै सुभद्रा सती रे, सती रे सिरोमणि जाण। विनयवंत स्रावक सुराउ जी, सील रयण गुण खाण। —स कु.

उ०—२ तास सीस अति दीपतां रे, विनयवंत जसवंत। आचारिज चडती कला रे, स्री जिनसिंघ सूरि महंतो रे। —स. कु.

उ०—३ तसु बंधव डूंगरसी तें पण दीपतउ रे, भागचंद कुल भाण। विनयवंत गुणवंत सुभागी सेहरउ रे, वड दाता गुण जाण। —प च. चौ

विनयवांन वि [स. विनयवान] विनम्रता से युक्त, विनयशील, विनीत।

विनयशील–वि. [स. विनयशील] विनयवांन, विनम्रता से युक्त, विनीत।

विनयी–वि [सं विनयिन्] विनम्रता से युक्त विनयशील, विनीत।

विनयोक्ति—देखो 'विनोक्ति' (रू. भे.)

विनरावन, विनराविन—देखो 'व्रंदावन' (रू. भे)

विनवणौ, विनवबौ–क्रि. स.—विनय करना, प्रार्थना करना।

विनवणहार, हारौ (हारी), विनवणियौ—वि०।

विनविग्रोड़ो, विनवियोड़ो, विनव्योड़ो—भू० का० कृ०।

विनवीजणौ, विनवीजबौ—कर्म वा०।

बिनवणौ, बिनवबौ, बीनवणौ, बीनवबौ—रू० भे०।

विनवियोड़ो–भू. का. कृ.—विनय किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ। (स्त्री. विनवियोड़ी)

विनस–स पु—सरस्वती के अन्तर्ध्यान रहने का स्थान, जो पुण्य तीर्थ माना जाता है।

विनसण–स. पु. [सं] १ विनाश, बर्बादी।

२ संहार।

विनसणौ–वि.—विनष्ट होने वाला, बर्बाद होने वाला, नाशवान्।

विनसणौ, विनसबौ–क्रि. अ.—१ विनाश होना, नष्ट होना, मिट जाना।

उ०—१ जे उपज्या सो बिनस है, जे दीसे सो जाइ। दादू निरगुण रांम जप, निस्चल चित्त लगाइ। —दादूबांणी

उ०—२ तन तो राख्यो ना रहै, जतन करंता जाय। यु हरीया पाणी ओस का, बिनसत बार न लाय। —अनुभववाणी

उ०—३ सबद मंत का आगिला, हसती का सा दंत। ताग न टूटैं भरम का, में देही बिनसत। —अनुभववांणी

२ संहार होना, मरना।

३ तहस-नहस होना, बर्बाद होना।

विनसणहार, हारौ (हारी) विनसणियौ—वि०।

विनसिग्रोड़ो, विनसियोड़ो, विनस्योड़ो—भू० का० कृ०।

विनसीजणौ, विनसीजबौ—भाव वा०।

बिनसणौ, बिनसबौ—रू० भे०।

विनसति, विनसती—देखो 'वनस्पति' (रू. भे.)

उ०—जनहरीया उन देसड़ै, बारै मास वसंत। सदा फळै गी बिनसती विलंब्या जीव निचंत। —अनुभववाणी

विनसाड़णौ, विनसाड़बौ—देखो 'विनसाणौ, विनसाबौ' (रू. भे.)

विनसाड़णहार, हारौ (हारी), विनसाड़णियौ—वि०।

विनसाड़िग्रोड़ो, विनसाड़ियोड़ो, विनसाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।

विनसाड़ीजणौ, विनसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

विनसाड़ियोड़ो—देखो 'विनसायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री विनसाड़ियोड़ी)

विनसाणौ, विनसाबौ–क्रि. स.—१ नाश करना, नष्ट करना।

२ संहार करना, मारना।

३ तहस-नहस करना, बर्बाद करना।

विनसाणहार, हारौ (हारी), विनसाणियौ—वि०।

विनसायोड़ो—भू० का० कृ०।

विनसाईजणौ, विनसाईजबौ—कर्म वा०।

विनसाड़णौ, विनसाड़बौ, बिनसाणौ, बिनसाबौ, बिनसावणौ, बिनसावबौ विनसाड़णौ, विनसाड़बौ, विनसावणौ, विनसावबौ—रू० भे०।

विनसायोड़ो–भू. का. कृ—१ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, बिगाड़ा हुआ। २ संहार किया हुआ, मारा हुआ। ३ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ।

(स्त्री विनसायोड़ी)

विनसावणौ, विनसावबौ—देखो 'विनसाणौ, विनसाबौ' (रू. भे)

विनसावणहार, हारौ (हारी) विनसावणियौ—वि०।

विनसाविग्रोड़ो, विनसावियोड़ो, विनसाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

विनसावीजणौ, विनसावीजबौ—कर्म वा०।

विनसावियोड़ो—देखो 'विनसायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विनसावियोड़ी)

विनसियोड़ो–भू. का. कृ —१ विनाश हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. २ संहार हुवा हुआ, मरा हुआ । ३ तहस-नहस हुवा हुआ, बर्बाद हुवा हुआ ।

(स्त्री. विनसियोडी)

विनस्ट–वि. [सं विनष्ट] १ जो नाश को प्राप्त हो गया हो, नष्ट हुवा हुआ ।

२ तहस-नहस हुवा हुआ, बर्बाद हुवा हुआ ।

३ मरा हुआ, मृत ।

४ विगडा हुआ, खराब हुवा हुआ ।

विनस्वर–वि. [स. विनश्वर] १ नष्ट होने वाला, नाशवान् ।

२ जो बहुत दिनों तक न रह सके, अनित्य ।

विनस्वरता–स. स्त्री. [स. विनश्वरता] १ नाशवान् होने की अवस्था ।

२ अनित्यता, अचिरस्थायित्व ।

विनां—देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—१ जनहरीया साईं **विनां**, खाली खलक न कोय । एक धरै ताह एक है, दूज करै ताह दोय । —अनुभववांणी

उ०—२ कवण अखंडड विगर, प्रऊ सागर सिर सोभै । कवण **विनां** सुखदेव, देव माया नह लोभै । —रा. रू.

उ०—३ अब तो मेरो बळ घट्यो, हट्यो सग को साथ । रावण-हारी को नही, राज **विनां** रुघनाथ । —गजउद्वार

उ०—४ सुर-तरवरा रूखा रा ओला ताकै छै । तरवरा रा पान झडिया छै । सु जाणै वस्त्र **विनां** नागा डिगंबरा सरीका नजर आवै छै । निवाण रा पाणी नीठिआ छै । —रा. सा सं.

विनांण, विनांणि, विनांणी—स पु.—१ विचार ।

३ तरकीब, उपाय ।

४ चिह्न लक्षण ।

५ रूपक ।

६ व्याख्या, विवेचन ।

उ०—त्रकाळ ग्यान दरसी निज ब्रम कूं पहिचानै । भूत, भवस्त, वरतमान जुगति सौं जाणै । च्यार वेद नो व्याकरण खट सासत्र के **विनांण** । पिंडत विद्या मैं पारावार जाणै नवदूण पुराण । —सू प्र.

७ विध्वस, नाश ।

उ०—धन तूट कीधो घाण, वधि नारनोळ **विनांण** । चडनयर रा परचड, दो नगर भ्रै भुजदड । —सू. प्र

८ रहस्य, भेद ।

उ०—परभोम धमै जिकै आप प्राण, वडा जुद्ध रा बध जाणै **विनांण** । हणै मारि पाडै पखी बोम हुता, साहै चाळि सूं जागवै काळ सूता । —र. वचनिका

[स. विज्ञान] ६ ज्ञान, जानकारी ।

उ०—मछतुव जळमा तरै जी, बूडै काग पाहांण । पख आजि गयणां फिरैजी, इण परै सहिज **विनांण** । —वृस्त

६ भेद, प्रकार ।

उ०—मुहरि अंति लुघवि गुर मझि, बार चिआर **विनांण** । पय सोलह आखर परठि, आखि रूप इहनाण । —ल. पि.

१० तरह, प्रकार ।

उ०—१ अत्रा खग झाट निराट अलग्ग, पडै बि बि जघ पडै झडि पग्ग । पडै गिणि उच्छळि अेम प्रवग, कुडा चढि जाणि **विनांणि** कुरग । —र. वचनिका

उ०—२ जिम जिम गुरु घटतो जाइ, तिम तिम दोइ वधै लुघनाइ । नाम जूजूयो एण विनांणि, वधतो अंसो जि वखाणि । —ल पि

वि.—१ समान तुल्य ।

उ०—भुजा दुय च्यारि भुजा बळ भूप, रचै गजग्राह त्रियावर रूप । वहै खग सावण तात **विनांण**, कटै जरदाण जवाण नेकाण । —सू. प्र.

२ अद्भुत, अनोखा ।

[स वैज्ञानिक] ३ ज्ञानी, जानकार ।

उ०—सो सुख मुगिया सत **विनांणी**, बिजळी चमकै बादळ गरजै, चढ्या अपूठा पाणी । —ह. पु. वा.

५ देखो 'वैनाणी' (रू. भे.)

उ०—१ रहमाण **विनांणी** हत्थ तै, भजण घडण ससार जग । सुरताण हुओ खुरसाण सिरि, खेडपती हुआ खडग । —गु. रू. व

उ०—२ कुण नेजमहाढ अणी काढावै, वाढाळा मुहि वाढ पडै । जिणमाल तियार करन जरादो, घ.य **विनांणिय** लाह घडै ।

—गु. रू बं.

रू भे.—बिनाण, बिनाणी, बीनाण, बीनाणी, विनान, विन्नाण, विन्नाणी ।

विनांन—देखो 'विनाण' (रू. भे.)

उ०—मै जाण्यो मन एक था, मन का बोहत **विनांन** । हरीया मन छिनछिन फिरै, डाळी डाळी पान । —अनुभववाणी

विनांनी—देखो 'विन्यानी' (रू. भे)

विनांम–वि.—जिसका कोई नाम न हो, बिना नाम का ।

विना—१ देखो 'बिना' (रू. भे)

उ०—पुछ्या **विना** पयपै पापी, थट विच कहै लात सिर थापी । वदन मत दिखाळै वस द्रोही वळै । —र. रू.

उ०—२ सरस तणौ पसाव सोधिया, बयण बिना बाखांणण बग । "चूड" हरा आकास चित्रणौ, खेडेचा तहरौ खग ।
—केसोदास गाडण

उ०—३ हिंदवाराव हयवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरदां । गई लग विवाणा वेस इद्र आगळी, तुही वारंगना बिना वीदां । —महाराजा जसवंतसिंह री गीत

उ०—४ हांम कांम लोचणी उलाळी आकास जावं । चावळ री चोथो हैंसी खावं । तबोळ बिना खाधां आहारा विकार थावं । माडी मोडी कटारी री पडदडी समावं । —रा सा. स

उ०—५ जसवत बिना जिहांन, पांन चळ जांणी पवनं, कमा केतु साकप, थया मन हिंदसथानें । घटं क्रिया बांमणा, मिटं भालर पर-सादा, ईत प्रभा ऊपजं, निरख दुर रीत निसादा । —रा. रू.

२ देखो 'विनय' (रू. भे.)

उ०—तरा जगमाल दीठी, "हू उजर करूं, राणी वासं साथ चाढ़े, बे कठं ही उतरिया होय तो काई काबाइत होय, "तरं जगमाल घणा बिना सूं बोलियौ "मांनसिंघ दीवांण री चाकर छूं म्हानु किसौ उजर छै, जाणां सु धरती दीवाण नै, जांणी सु मानसिंघ नु द्यं । —नैणसी

बिनाइक—देखो 'विनायक' (रू. भे.)

उ०—१ लील विलास सुरा मा लाइकि, नियौ पुलदर देव बिना-इकि । संकर ना पिणि करा सलामा, गोविंद रा आदेस गुलामा ।
—पी. ग्र.

उ०—२ हूं मागा देवी हयौ, अविरळ वाणि उकत्ति । वळं बिनाइक वीनवूं, सिद्ध बुद्ध द्यौ सुमत्ति । वह बिनाइक देवता, नमौ बिनाइक नाथ । तू सिद्धदायक रूप सुभ, तूं सत्गुर ससिमाथ । —पी ग्र

बिनाई—देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—राजी राव रक भूप, नारि ही पुरख राजी, झूठ सी बिनाई बाजी, खुसी आप खाल मैं । सिन्यासी दुहा दत, जोगी आदिनाथ जानं, जती ही बखानं जंन, रता मता ब्हाल मैं । —अनुभववाणी

बिनाथ—वि [सं] जिसका कोई रक्षक न हो, अनाथ ।

सं. पु.—वह बैल, जिसके नाथ न डाली गई हो ।

बिनादी—क्रि. वि.—आदि काल से ।

उ०—बादसाह हूंन कह्यौ छोड जं द्रणानें वेषा, ऐ न छडं हिंदू धरम बिनादी आफेक । कह्यौ साज भाण नद पातवा छुडावौ किसा । एक एक प्रती चहां माथौ एक-एक ।
—गोकळदास सक्तावत री गीत

बिनायक—स. पु [सं. विनायकः] १ गणो के ईस व विघ्नविनाशक गणेश जी । (ग्र. मा., ह ना. मा.)

उ०—एक दंतौ महाबुद्धि. सरव गुणी गणनायक । सरव सिद्धि करौ देव, गवरी पुत्र बिनायक । —अग्यात

वि. वि.—पुराणानुसार, विनायक चार प्रकार के होते हैं (१) दवढि विनायक, (२) कोण विनायक (३) हस्ती विनायक (४) सिन्दूर विनायक ।

२ गरुड ।

३ सिंह, शेर आदि के समान मुखाकृति वाले शिवगणों का समूह जिसमें कुष्मांड गजतुड, जयत और रुद्रगण समाविष्ट हैं ।

४ कपडा बुनने का एक औजार । (जुलाहा)

५ सुथार, बढ़ई ।

६ विवाह अवसर पर कुम्भकार द्वारा लाई गई मिट्टी की बनी गणेश की मूर्ति ।

७ विवाह आदि मांगलिक शुभ अवसरो पर गणेश जी को सम्बोधित कर गाये जाने वाले गीत ।

८ यज्ञोपवीत अथवा विवाह संस्कार के शुभ अवसर पर गृह शान्ति हेतु किया जाने वाला यज्ञ एव इस दिन किया जाने वाला भोज ।
(मा. म.)

उ०—बिरघ वधाई नाव समूरथ साख सगाई । व्याह बिनायक बेळ, महोछव मेळ बिदाई । पूजा-पाठ निराठ, वरं अनमाळा मोखी । जागण रातीजगा, दसुटण दायजा चोखी । —दसदेव

९ बौद्ध, आचार्य ।

रू. भे.—बणाक, बिनाइक, बिनायक, बिन्नायक, वणाक, विणायक, विनाइक, विन्यायक ।

बिनायकचतुरथी. बिनायकचौथ—स. स्त्री. [सं. विनायकचतुर्थी] १ माघ मास मे शुक्ल पक्ष की चतुर्थी, जिस दिन गणेशजी की पूजा की जाती है ।

२ भादो मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी ।

३ प्रत्येक मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी ।

बिनायकण—स स्त्री.—बढई जाति की स्त्री ।

बिनायकथाटियौ, बिनायकथाटौ—देखो 'थाटियौ' (जैतारण)

बिनायकहेतु—स पु यौ [स] गरुडध्वज, श्रीकृष्ण ।

बिनायकियौ—स. पु —१ विवाह के समय दूल्हा के साथ रहने वाला दूल्हे का छोटा भाई ।

२ देखो 'बिनायक' (अल्पा , रू. भे)

बिनायिका—स स्त्री. [स] १ विनायक की पत्नी ।

२ गरुड की पत्नी का नामान्तर ।

बिनास—स. पु. [सं. विनाश] १ नाश, ध्वस ।

२ बिगाड़ने का भाव, बिगाड़ ।

३ हानि, नुकसान।

४ कलह, झगड़ा।

५ एक असुर, जो कश्यप एवं उसकी पत्नी काला के गर्भ से उत्पन्न हुआ था एवं यह अपने अन्य भाईयों की तरह अस्त्र-शस्त्र विद्या में यम के समान था।

रू. भे —बनास, बिणास, बिनास, बणास, विणास, विणासु।

बिनासक–वि. [स. विनाशक] १ विनाश करने वाला, ध्वस करने वाला।

२ मिटाने वाला, हटाने वाला। (प्रथा)

३ हानि, नुकसान या बिगाड करने वाला।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला।

५ सहार करने वाला, मारने वाला।

बिनासकारी–वि. [स. विनाश+कारिन्] १ विनाश करने वाला, ध्वस करने वाला।

२ मिटाने वाला, हटाने वाला (प्रथा)

३ हानि, नुकसान, बिगाड़ करने वाला।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला।

५ सहार करने वाला, मारने वाला।

बिनासणौ–वि. [सं विनाशनम्] १ विनाश करने वाला, ध्वस करने वाला।

२ मिटाने वाला, हटाने वाला (प्रथा)

३ हानि, नुकसान, या बिगाड करने वाला।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला।

५ सहार करने वाला, मारने वाला।

बिनासणौ, बिनासबौ–क्रि. स. [विनाशनम्] १ नष्ट करना, ध्वस। करना, २ मारना, सहार करना।

उ०–१ देस बिगाड्यो राव रो, फेर बिनासी फौज। डर बैठा कामू हुवै, राजा लाग्या खोज। टाढाळा सूर री वात

उ०–२ आगं देखं तो छपरं हेठं पालणो राखीयो तोसु सीहणी आय चूंधावण लागी। ताहरा माता साहू दीठो। ताहरा कहे है सीहणी तै म्हारो बाळक बिनासीयो। ताहरा सीहणी अळगी हुई ऊभी रही। ईय जाय टाबर उरहो लीयो। पालणो भीला रै कांधै दीयो। आधा हालिया। पीहर गई उथ सुख सु रहै।

—देवजी बगड़वता री वात

३ बिगाड़ करना, नुकसान करना।

४ बुरा करना।

५ तहस-नहस करना, बर्बाद करना।

बिणासणहार, हारौ (हारी), बिणासणियौ—वि०।

बिणासिप्रोड़ौ बिणासियोड़ौ, बिणास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिणासीजणौ, बिणासीजबौ—कर्म वा०।

बिणासणौ, बिणासबौ, बिनासणौ, बिनासबौ, बणासणौ, बणासबौ —रू० भे०।

बिनासियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नष्ट किया हुआ, ध्वस किया हुआ. २ सहार किया हुआ, मारा हुआ ३ नुकसान किया हुआ, बिगाड़ किया हुआ. ४ बुरा किया हुआ, ५ तहस नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ.

(स्त्री. बिनासियोडी)

बिनासी–वि. [स विनाशिन्] १ नष्ट होने या करने वाला, विध्वंस होने या करने वाला।

२ मारने वाला, संहार करने वाला।

३ बुरा करने वाला।

४ बिगाड़ करने वाला, नुकसान करने वाला।

५ मरने वाला, मिटने वाला, नाशवान्।

६ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला।

७ मिटाने वाला, हटाने वाला।

रू. भे.—बिणासी।

बिनाह–स. पु. [स.] कुए के मुख का ढकना।

बिनिग्रह–स. पु. [स] १ सयम, दमन प्रतिबन्ध।

२ बाधा, अवरोध।

३ परस्पर-ईर्ष्या।

बिनिता—देखो 'विनता' (रू भे)

बिनितासुत—देखो 'विनतासुत' (रू. भे.)

बिनिद्र–स. पु. [स] १ वह व्यक्ति जिसे निद्रा नहीं आती हो।

२ निद्रित या मूर्छित व्यक्ति की निद्रा या मूर्छा को दूर करने का एक अस्त्र विशेष।

बिनिपात–सं. पु [स] १ विनाश, ध्वस।

२ अपमान, अनादर।

३ मृत्यु।

४ नाश, बर्बादी।

५ नरक।

६ कष्ट, पीड़ा।

७ बड़ा कष्ट, या सकट पैदा करने वाली स्थिति।

८ गर्भपात।

बिनिपातक–वि. [सं.] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला।

२ अपमान करने वाला, अनादर करने वाला।

३ कष्ट उत्पन्न करने वाला।

बिनिमय-स पु [स.] १ किसी एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेने का व्यवहार, दो वस्तुओं का एक दूसरी के बदले अदल-बदल ।

बिनिया--देखो 'बिनता (रू. भे.)

उ०—बिहृदसिंह उण देस विच, रीतबिया राजद । सात सलामा नित सजै, बिनियां अग्गा बिंद । —जतीरासौ

बिनियुक्त-वि. [सं.] १ लगा हुआ, नियुक्त ।

२ आदेशित ।

बिनियोग-स. पु [स.] १ किसी वैदिक कृत्य में मत्र का प्रयोग ।

२ व्यापार आदि में पूंजी लगाना ।

३ त्याग ।

४ भक्त द्वारा इष्टदेव का ध्यान कर दायें हाथ में लेकर मत्र बोल कर जमीन पर छोडा जाने वाला पानी जो पूजा करने हेतु बैठने के बाद सबसे पहले छोडा जाता है ।

बिनियोजन-स पु. [स] १ विनियोग करने की क्रिया ।

२ अर्पित करने की क्रिया, अर्पण ।

३ नियुक्ति ।

बिनिहत, बिनिहोत-स. पु [स. विनिहतः] १ देवप्रेरित या भाग्यदोष से आया हुआ कष्ट, या सकट ।

२ अपशकुन, बुरे शकुन ।

बिनीत-वि. [स.] १ जिसमे शिष्टता व नम्रता हो, शिष्ट, नम्र ।

२ जितेन्द्रिय, सयमी ।

३ प्रिय, मनोहर ।

४ ग्रहण किया हुआ ।

स पु - - १ उत्तम मनु का एक पुत्र ।

२ पुत्ररत्न का प्रीति के गर्भ से उत्पन्न तीन पुत्रों मे से एक पुत्र ।

रू. भे —बिनीत, विनत ।

बिनीतता-स स्त्री —बिनीत होने का भाव, नम्रता ।

बिनीता— देखो बिनता' (रू भे.)

बिनूर-वि.—कायर, भीरू ।

उ० - धारा रति धरहर, दळपळ डालहर, भटकै पै कर सीस भड़ै । बडडै घाइ बगतर, फाटै बडफर, रुकै बिनूर रीठ पड़ै । —गु. रू ब.

बिनेत-स पु. [स. विनेतृ] १ आज्ञा, आदेश, हुकम ।

२ सिखाने वाला, शिक्षक ।

३ दण्डविधान का निर्माण करने वाला ।

[स. विज्ञप्ति] ४ सूचना ।

बिनै-सं. स्त्री. [स. विनयः] १ कृपा महरबानी ।

उ०—तीन लक्ष द्रब रोकड़ा, चवल उच्च पचीस । निपट बिनै धारी निजर, नृपति निवारी रीस । —रा. रू.

२ देखो 'विनय' (रू. भे.)

उ०—या साहिजादै आखियो, सहित बिनै हित संध । मेरै काज निवाह की, लाज कमंधां कंध । —रा. रू.

३ देखो 'बिना' (रू भे)

उ०—विकट करौ तीरथ वरत, घरा भेख कै धार । बिनै नाम रघुवीर रै, परत न उतरै पार । —र. रू.

४ देखो 'बिनै' (रू. भे.)

उ०—१ अठी राम रा सुभड नै सुभड रावरा उठी; लक रै जोरवर खेत लड़वा । तीर सेला छूरा झीक तरवारिया, बाजिया बिनै ही रंभ बरवा । —र रू.

उ० —२ समधी औरंगसाह रौ, बिनै मुगळ विसतार । महाराजा उरा सू मिळै, आदर कियौ अपार । —रा. रू.

बिनैनी-स. स्त्री.—विनम्रता, नम्रता ।

उ०—साख्यात देवागना पदमरणी विचित्र सुलखरणी चोसठ कळा री जांणणहार बिनैनी करणहार लिखमी पारवती गंगा सरसती री अवतार बारह आभूखन विराजमान हुआ छै । आठै पोहर सोळ सिणगार किआ रहै छै । —रा. सा. स.

बिनोक्त, बिनोक्ति-सं पु [सं. विनोक्ति] एक अलकार विशेष, जिसमे, किसी वस्तु के बिना अशोभन या किसी के बिना शोभन कहा जाय यानि किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता का वर्णन किया जाय ।

रू. भे.—विनयोक्ति, वियोक्ति ।

बिनोद-स. पु. [स. विनोद] १ ऐसा कार्य जिसका प्रमुख उद्देश्य मनबहलाव करना होता है ।

२ उक्त कार्य से होने वाला, मनबहलाव, आनन्द ।

३ हसी-मजाक ।

उ०—प्रधान मनोहर परिखत, सुभट स्रेणि, विनोदीया ना बिनोद माहस सो बोलाना समूह, उचितबोलानी ओलि, कलावत नी क्रीडाभूमि, कूबडानी कोडि,……। —व. स.

४ आनन्द, आल्हाद हर्ष, प्रसन्नता । (अ. मा , ह. ना. मा.)

उ०—१ जळ जाळ माळ बिमाळ नभ जुत, उरड भड अरणपार ए । मिटि जळण धरणि बिनोद मानव, भूरि सर जळ भार ए । —रा. रू.

उ०—वहै बीजूजळ हद्द-बिहद्द, नचत बिनोद करंत नारद्द । तमासै भांण हुओ रथ तांण, कहक्कह वीर हसैं कतियांण । —गु. रू. बं

उ०—कवितु बिनोदिहि सिरिजय, सिरिजय मेहरसूरि जं । खेलइ तं अरह पद, सपद पामइ पूरि । —जयसेखर सूरि

५ उत्सुकता, उत्कण्ठा ।

६ खेल-क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद।

उ०—१ किही रै कांधै चढ़ै, किही रा हाथ खेंचै, चपळता आसगगिरी करबो करै। सो लोग राजूखा री खुसामद रा पगां सहबो करै। टाबर नै किहीं कहै-सुणै नहीं। सगळा हाथां ऊपर विनोद करावो करै। टाबर लाड सूं बडो अनीतो।

—सूरै-खींवै कांधळोत री वात

उ०—२ उचित बोलांनी ग्रोलि, कलावतनी क्रीडाभूमि, कूबडानी कोडि, वामणांना विनोद, पुण्यवत रहइ प्रमोद, वयरीह विवाद, कविना कल्लोल, वादीनउ विवाद, वैदेसिक विलास। —व. स.

७ सोलह प्रकार के शृंगारों में से एक प्रकार का शृंगार विशेष।
(रा. सा. स.)

८ एक प्रकार की राग विशेष। (संगीत)

उ०—भणत स्री विनोदयं, कल्याण केक मोदयं। खभायची पटगयं, वर्गसरी विहगयं। —रा. रू.

९ गायन, संगीत।

उ०—विनोद गीत नाद भेद, सद्द घट झालरी, प्रसाद देव पुंजिहत, अविका हरीहरी। निसा जळत दीपजोत, मिंदर उजाळ ए। सदा सरब्बदा हुवत्त, जाण दीपमाळ ए। —गु. रू. ब.

१० रतिक्रिया का एक आलिंगन विशेष। (कामशास्त्र)

रू. भे.—वणोद, वनोद, विणोद, विणोदि, विनोदन, विन्नोद।

विनोदक—वि. [स] विनोद करने वाला, खेल-क्रीड़ा करने वाला।

विनोदन—देखो 'विनोद' (रू. भे.)

विनोदित—वि. [स] १ हर्षित, खुश, आल्हादयुक्त।

२ हसी-मजाक किया हुआ।

३ ऐसा कार्य किया हुआ, जिससे आनन्द उत्पन्न हो।

४ विनोद शृंगार से युक्त।

विनोदी—वि. [स विनोदिन्] १ खुद का व दूसरों का मनबहलाव करने वाला।

२ हसी-मजाक करने वाला।

३ विनोद सम्बन्धी।

४ आनन्द व हर्ष उत्पन्न करने वाला।

५ खेल-क्रीडा करने वाला।

६ विनोद शृंगार करने वाला।

७ गाने वाला, गायक।

अल्पा —विनोदीयो।

विनोदीयो—देखो 'विनोदी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—प्रधान मनोहर परिखत्, सुभट स्रेणि, विनोदीया ना विनोद, साहस सो बोलाना समूह, उचित बोलांनी ग्रोलि, कलावतनी क्रीडाभूमि, कूबडानी कोडि, वामणांना विनोद, पुण्यवंत रहइ प्रमोद,...... —व. स.

विन्नक—सं. पु. [स. विन्नकः] अगस्त्य का एक नामान्तर।

विन्नड़ियोड़ो—भू. का. कृ.—कष्ट दिया हुआ।

विन्नवणा—स. स्त्री [स. विज्ञापना] काम वासना पूर्ण करने हेतु कामी पुरुष के सम्मुख अपना अभिप्राय प्रकट करने वाली स्त्री।

वि. वि.—कामी पुरुष जिसके प्रति वह अपना अभिप्राय प्रकट करती है "विन्नवणा" कहलाता है। (जैन)

विन्नांण, विन्नांणि विन्नांणी—देखो 'विनाण' (रू. भे.)

उ०—१ पातसाह आलोज, मन्न विच्चार विमासै। बळ छळ दळ दक्खवै, पाण विन्नांण कळासै। —गु. रू. बं.

उ०—२ महिकर घेरो सबळ, कियौ दलणाधि कटक्कां। गढ दुरंग घेरियौ, प्रजा भागी परिचक्कां। नको प्राण विन्नांण, नेस फीका खुरसाणी। गयणगण डोलियौ, सीम चपी सुरताणी। —गु रू. ब.

उ०—३ लसण्णाण विन्नांण सन्नाण मेह, कलाभि कलाभिरयुताः रमीय देह। मग्गुण्ण कला केलि रत्नागुगार, स्तुवै पारस्वनाथं गुण स्रेणि सार। —स. कु.

उ०—४ "हरीया मन लागो" एहनी कन्या दोइ भणावियै, भणि वा अवसर एह रै। दोइ कन्या (भणावीयै) भणै, बालपणै सहु आवडै, नाण विन्नांण अछेह रै। —स्रीपाळ रास

उ०—५ पन्नी जिम विण पखडी, फोरी न सकै प्राण। प्रीतम दरीया मे पड्यौ, कीजै किसो विन्नांण। —स्रीपाळ रास

उ०—६ हिवे नाण विन्नान न सूजै, छाती धड़हड़ इम धूजै। अम्ह थी दादुर गुण जाण, पाणी सरिमा जगु प्राण।

—स्रीपाळ रास

उ०—७ गरुउ गणइ न नाम्र कुपात्र ज पात्र न जाण, स धरइ ए भक्ति न लोजइ ए भीजइ ए भक्ति विन्नांणि। — जयशेखर सूरि

विन्नोद - देखो 'विनोद' (रू. भे.)

उ०—किसा दीह आणद विन्नोद कीधा, लहै भूप आग्या वनोवास लीधा। जती राम साथै सिया वाम जोडै, तिका नाम लेता अघा ओघ तोड़ै। —सू. प्र.

विन्यांनी—वि. [स. वैज्ञानिक] जानकार, ज्ञानी (उ. र)

रू भे —विनानी।

विन्यायक—देखो 'विनायक' (रू. भे)

उ०—लद्द घणा हरख कर नै ईंया नूं नाळेर भलाया। सात दिन

री बिम्नायक बैठो। परणीया, घणा हरख-कोड कीया। दिन १५ राखीया। बिदा किया। —पीठवं चारण री वात

बिम्नायकौ—देखो 'विनायक' (अल्पा., रू. भे.)

बिन्यास—सं. पु. [सं.] १ स्थापित करने की क्रिया।

२ समूह, संग्रह।

३ यथास्थान रखने की क्रिया, सजावट।

४ जड़ने की क्रिया।

बिन्योक्ति—देखो 'विनोक्ति' (रू. भे.)

बिन्है, बिन्हइ, बिन्हैं—१ देखो 'बिनै' (रू. भे.)

उ०—१ माळवणी, ढोलउ कहइ, हिव म्हां सीख करेह। ऊन्हाळउ, वरखा बिन्है, रहिया तुझ्झ सनेह। —ढो. मा.

उ०—२ प्रेमो 'प्रणंद' प्रमायं पाणी, प्रघवत सुछळि बिन्है 'प्रमरांणी'। 'माहव' तणौ 'बिजौ' रण मोटा, कळहै ढाल थको नवकोटां। —रा. रू.

उ०—सुतन 'सुजाण' 'प्रनौ' 'प्रिय' सभ्रम, 'प्रखौ' बिन्है प्राया जम प्रोपम। 'प्रनै' तणौ करि कोप प्रकारौ, 'गजन' प्रावियौ चाळा-गारौ। —रा रू

उ०—४ 'ऊदौ' 'प्रनौ' विकट ऊदावत, जोड़ मोड दळ बिन्है 'जगावत'। 'रतन' जगावत बाकिम रातौ, 'राम' 'सुभावत' मेळ प्ररातौ। —रा रू.

उ०—५ रिणमल 'कुंभा' बिन्है रायगणि घरणि चीतवं घ्रोह घणा। फूटा लोह पछा फिटकारा, ताइवा राधव देव तणा। —हरीसूर बारहठ

उ०—६ बिन्है पख क्रस्ण मुकळ विधान, बिन्है वपु भ्रग सुदक्षिण वाम। ब्रह्मा दक्षण भ्रग बदीत, निपायौ दक्ष प्रजापति मीत। —राठौड वंशावळी

२ देखो 'बिना' (रू. भे.)

बिपचिका, बिपची—स. स्त्री. [स.] १ एक प्रकार का वाद्य विशेष जो वीणा की तरह का होता है।

२ क्रीडा-खेल, ग्रामोद-प्रमोद।

बिप—देखो 'वपु' (रू. भे.)

उ०—१ सेवगा दुविया री कूक सुणी, काळवी प्रसवार गो दीपकणी। राखो जद खावद लाज रहै, बिप डूबा ऊपर वास बहै। —पा. प्र.

उ०—२ किलमापति भेंटे कारीगर, कारी घाव निहाव कर। बाळ बाळ जुड़ियौ थारौ बिप, पैवंद प्राइस तणी पर। —जगतसिंघ सिसोदिया री गीत

२ देखो 'विप्र' (रू. भे.)

बिपक्क—वि. [सं.] १ पूर्ण रूप से पका हुआ, परिपक्व।

२ पूर्ण उबला हुआ, रधा हुआ।

३ उन्नति की चरमसीमा तक पहुँचा हुआ।

४ देखो 'विपक्ष' (रू. भे.)

बिपक्ख—देखो 'विपक्ष' (रू. भे.)

बिपक्खी—देखो 'विपक्षी' (रू. भे.)

बिपक्व—वि. [सं.] १ अच्छी तरह या पूर्ण रूप से पका हुआ।

२ अधपका या कच्चा।

स. पु.—एक देवता, जो मरीचिगर्भ देवताओं में से गिने जाते है।

बिपक्ष—वि. [स.] १ विरुद्ध, खिलाफ प्रतिकूल।

२ उलटा, विपरीत।

स पु.—१ दूसरा पक्ष। २ विरोधी पक्ष।

रू. भे.—बिपक्ख, बिपख, बिपच्छ, बिपक्क, बिपक्ख, बिपख, बिपच्छ।

बिपक्षी—स. पु. [सं] १ दुश्मन, शत्रु।

२ दूसरे पक्ष का, विरोधी या प्रतिपक्षी व्यक्ति।

उ०—बलिम्ट धूम्र अक्ष की तुहीं बिपक्ष नी, भई तुही महिख्ख रक्त-बीज भक्षनी। निसुंभ शुंभ चड मुंड तू निकदनी, नमामि मात 'इंदरा' 'समद' नदनी। —मे. म.

वि.—दूसरे पक्ष का, विरोधी पक्ष का।

रू भे.—बिपक्खी, बिपच्छी, बिपक्खी, बिपख, बिपखी, बिपच्छ बिपच्छी।

बिपख—१ देखो 'विपक्ष' (रू. भे.)

२ देखो 'विपक्षी' (रू. भे.) (अ. मा, ह. नां. मा.)

बिपखी—सं. पु.—१ अश्व घोड़ा। (डिं. ना. मा.)

२ देखो 'बिपक्षी' (रू भे)

बिपखणी—स. स्त्री.—विरोधी की स्त्री।

वि—विरोधी पक्ष की, प्रतिद्वंदिनी।

बिपच्छ—१ देखो 'विपक्ष' (रू. भे.)

२ देखो 'विपक्षी' (रू. भे.)

उ० - गनीम गड्ढ गव्वतीय गब्भ को गमावनी, जहांन प्रान मांन जोर सोर तें जमावनी। रही प्रतच्छ रच्छसी दुगच्छ गच्छ दच्छ-बनी, लगें बिपच्छ लच्छ पें भुजाग वच्छ भच्छनी। —ऊ. का.

बिपच्छी—देखो 'विपक्षी' (रू. भे.)

बिपण—स. पु [सं. विपण:] १ छोटा व्यापार।

२ बिक्री।

बिपणक—वि. [सं] क्रय-विक्रय करने वाला, व्यापार करने वाला, व्यापारी।

रू. भे.—विपणक ।

विपणन—सं. स्त्री. [सं. विपणनम्] क्रय-विक्रय करने की क्रिया, व्यापार करने की क्रिया।

रू. भे.—विपणन ।

विपणी—सं. स्त्री. [स.[विपणीः, विपणी] १ बाजार २ हाट, दुकान ।

३ व्यापार हेतु रखा हुआ माल ।

स. पु [स. विपणिन्] ४ व्यापार करने वाला, व्यपारी ।

रू. भे.—बिपणी, वपणी ।

विपत, बिपता, विपति, विपती, विपत्त, विपत्ता, विपत्ति विपत्ती—स. स्त्री [स. विपत्तिः] १ आपत्ति, सकट । (डि. को.)

उ०—१ सगा सनेही और नर, सुख में मिळै अनेक । विपत पड्या दुख बाटलै, सो लाखन मे अेक । —अग्यात

उ०—२ आगळ सुरग कपाट अघ, दोजग अगुओ देख । सपत लता कुठार सम, विपत लता घण वेख । —बा. दा.

उ०—३ दूधा न्हासी, पुतरा फळसी, बिपता वढसी, सुखडं रळसी । थारी काळी जीभ नै थोड़ी चाको, मूंढै सू सगा थोडो थूक नाखो । भळै इसो नावो कदे ही मूंढे सू मतो काढघा । म्हानै की ही ना देया । बीन रै बाप कंयो । —दसदोख

उ०—४ नदी पार सपजै, पोत द्रढ खेवट पाया । विपति विलै हुय जाय, जेम घर मपत आया । —रा. रू.

उ०—५ दिसा दिसांन मान तोप माननीय की दगै, अडोळ चक्र नक्र मक्र माननीय व्है अगै । विपत्थ पत्थ पत्थ से विपत्ति को बहावनी, खिजै समत्थ मत्थ पें समत्थ अत्थ खावनी । —ऊ. का.

उ०—६ प्रहलाद की प्रतिग्या राखी,हिरणाकुस नख उदर विदारण । रिखि पत्नी पर किरपा कीन्ही, विप्र सुदामा की विपति विदारण । —मीरा

उ०—७ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती । प्रापत होत भोत सुख सपति, व्यापत नाहि विपत्ती । —मे म.

मुहा.—१ विपत्ति आणी=आपत्ति आना, सकट आना। २ विपत्ति उठाणी=सकट या दुःख सहना । ३ विपत्ति काटणी=सकट मिटाना, संकट मे समय व्यतीत करना। ४ विपत्ति झेलणी=देखो 'विपत्ति उठाणी'। ५ विपत्ति टळणी=सकट या आपत्ति टलना । ६ विपत्ति ढाणी=देखो विपत्ति आणी'। ७ विपत्ति पडणी=देखो 'विपत्ति आणी'। ८ विपत्ति मोल लेणी= 'आपत्ति मोल लेना । ९ विपत्ति सिर माथे लेणी=देखो 'विपत्ति मोल लेणी ।

२ कष्ट, पीडा ।

मुहा.—१ विपत्ति भुगतणी=कष्ट और पीडा सहन करना । २ विपत्ति सहणी=कष्ट और पीडा सहन करना। ३ विपत्ति होणी=कष्ट व पीडा होना ।

३ झमट, बखडा ।

उ०—जाव खड सख्याता किया ए, दिए अग्नि देखाला ना दिया ए । कहै फाटोफिटो होय ए, आ किसी विपत सूपी मोय ए । —जयवाणी

मुहा.—१ विपत्ति भेलणी=देखो 'विपत्ति मोल लेणी'। २ विपत्ति मोल लेणी=व्यर्थ मे झमट या आफत मोल लेना। ३ विपत्ति सिर माथे लेणी=देखो 'विपत्ति मोल लेणी'।

४ आपत्ति की अवस्था, बुरे दिन ।

उ०—१ लोक चुगळ कानै लगै, घू घू बोल्यो गेह । भायां सूं भेळप नही, विपत लिखी त्याव वेह । —बा. दा.

उ०—२ मिनख मोत आवै है, जकी घडी ऊमर भर री आछीमाडी लारली सारी वाता काच दाई साफ होय जाया करै है । दुख अर विपती मे भी । आपरै भला-बुरा कामा री ठा पडै बिना नी रैवै । —दसदोख

मुहा.—१ विपत्ति आणी=बुरे दिन आना । २ विपत्ति काटणी=बुरे दिन काटना या बिताना। ३ विपत्ति टळणी=बुरे दिन खत्म होना। ४ विपत्ति भुगतणी या भोगणी=देखो 'विपत्ती काटणी'।

५ मृत्यु, मोत ।

उ०—सबळा खळ सूं साधिया, निबळ जाय खळ नास । मूसो मेळ मजार कर, बचियो विपत विलास । —बा. दा.

मुहा.—१ विपत्ति आणी=मौत आना। २ विपत्ति टळणी=मौत से बचना, मौत टलना ।

६ थकान से उत्पन्न पीडा, थकान ।

उ०—जाळ खेजडा झाडखा झट, खनै बुला स्वागत करै। मरु दातार देव बना विच, छाय सूला बिपता हरै । —दसदेव

रू भे.—बपत, बपता, बिपत, बिपता, बिपति, बिपती, बिपत्त, बिपत्ता, बिपत्ति, बिपत्ती, बिपद, बिपदा, बीपत, बीपता, बीपति बीपती, बीपत्त, बीपत्ता, बीपत्ति, बीपत्ती, ।

विपत्थ, विपथ—स पु —१ भयकर मार्ग ।

उ०—दिसा दिसान मान तोप माननीय की दगै, अडोल चक्र नक्र मक्र माननीय व्है अगै । विपत्थ पत्थ पत्थ से विपत्ति को बहावनी, खिजै समत्थ मत्थ मे समत्थ अत्थ खावनी । —ऊ. का.

२ कुमार्ग, बुरा रास्ता ।

विपद, विपदा, विपदि, विपदी—स. स्त्री. [स विपद्, विपदा] १ आपत्ति, सकट, कष्ट ।

उ०—१ अर पछै ठकराणी ठाकर माथै आयोड़ी विपदा री सगळी

बरामूळ सूं मांडनैं सुणाय दी। बात री गंभीरता नै समझ नैं उणां ई ठकराणी नैं अरज करी—आप म्हांनैं इण जोग समझिया श्रो आपरो बडपणो है। —अमरचूनड़ी

उ०—२ सियावर नैं तू बन में निकार मती, म्हारा जिवड़ा नै बिपदा में डार मती। राज तिलक री म्है साज सजायो, बणती बात बिगार मती। —गी. रां.

२ मानसिक दुख या सन्ताप।

उ०—१ मानखा देही माथै इसी आफत आय जावै तौ इण आफत री काई माप ? इण बिपदा री कांई थाग ? कोई री एकाएक मोट्यार बेटो भूडापा में दगो देय जावै तौ उण जामण री काई हवाळ ? उण बाबल री कांई अवस ? मायड़ रा उण दुख नै कुण माप सकै। बाप री उण विपदा नैं कुण जाण सकै ? —अमरचूनड़ी

उ०—२ घरवाळा घणा ई रोया, घणा ई कळपिया। पण होणहार रैं कान कठै, नैण कठै ! जीग्यो जितरैं बेटो, मरिया पछै माटी। बाप थका बेटो जावै, इण बिपदा री पार कुण पावै। —फुलवाड़ी

३ कष्ट, पीड़ा।

४ झंझट, बखेड़ा।

५ आपत्ति की अवस्था, बुरे दिन।

६ मृत्यु, मौत।

७ थकान से उत्पन्न, पीडा, थकान।

रू भे.—बपत, बपता, बिपद, त्रिपदा।

बिपदेस—स. पु. [स. व्यपदेश] कपट, छल, धोखा। (ह. ना मा)

बिपन—देखो 'विपिन' (रू. भे.) (अ मा, ह. नां. मा.)

उ०—१ धर चोडै सरवर बिपन, विंधाचळ दिस एक। च्यार महूरत उत्तरैं, धारस मत्र त्रिवेक। —रा. रू

उ०—२ अंब आद अब जात अपारा, आप रूप फिर भार अठारां। सुपह समेत भडा मिळ सारा, राज बिपन जोयो राजा रां। —रा. रू.

उ०—३ मदार पारजाती कलप, हरिचंदन सतान तर परसियौ 'अभै' अंदा बिपन, कुज पुज तरवर निकर। —रा. रू.

उ०—४ की सरमावैं फिर लुक ज्यावैं, पग थाम पट साम अप ज्यावैं। जै दिख ज्याव तौ हस ज्यावैं, जद बिपन गुदगुदी बिखरावै। —करणीदान बारहठ

बिपनतिलका—देखो 'विपिनतिलका' (रू. भे.)

बिपनबिहारी—बि.—वन मे घूमने वाला, वन-विहार करने वाला।

उ० —हेमाणी मरु हाट, नरम तनडो उपकारी। ऊपर चढ देखैं, दूर तक बिपनबिहारी। ना ऊमळणं जोग, बाळका त्रत कर खेलैं। हिवडै सेवैं चोट, कदै ना पाछी मेलैं। —दसदेव

सं. पु.—श्रीकृष्ण का एक नाम।

रू. भे.—बिपिनबिहारी।

बिपर—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

उ०—१ पातुर नाचए धरम दुवार, मेरी माय भलो ए राजन पार उतार। बिपर पोथी बांचिया-तेरैं भवन बिच होय पूजा बार......। —लो. गी.

उ०—२ सूद्र वैस्य क्षत्री बिपर, कहु मछली कहु नीर। कहू निरभै निर बैरता, कहुं जाळी कहुं नीर। —ह. पु. वां.

उ०—३ जद हरियाळी वनडो फेरा पधारयो अै, फेरा मे बिपरां सरायो, अै बाई जी म्हारा राज। —लो गी.

बिपरजय—देखो विपरय्य' (रू. भे.)

उ०—सुध सुध विपरीत थळ, प्रकारात बिहु जाण। सत्य बिपरजय संस्य थळ, उलट पच्छ लघु श्रांण। —र. ज. प्र.

बिपरत—देखो 'विपरीत' (रू. भे.)

बिपरब—स. पु. [स. विपर्व] बुरा दिन।

उ०—काम क्रोध लोभ मोह पास मे परयो, आसको बिनास कै निरास ना भरयो। गरब मे अखरब खरब गरब नां गरयौ, परब मे बिपरब परब बासना भरयो। —ऊ. का.

बिपरयय, विपरय्य, विपरय्यय—सं. पु. [स. विपर्ययः] १ व्यतिक्रम।

२ उलट-पलट, हेर-फेर।

३ विरुद्धता, प्रतिकूलता।

४ भूल, गल्ती अशुद्धि।

५ अव्यवस्था, गड़बड़ी।

६ वैमनस्य, शत्रुता।

७ भ्रम, सन्देह।

८ सन्देह के कारण विचार बदलने की क्रिया।

रू. भे.—बिपरजय।

बिपराणो, बिपराबो—देखो 'वपराणो, वपराबो' (रू. भे.)

बिपराणहार हारो (हारी), बिपराणियो—वि०।

बिपरायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिपराईजणो, बिपराईजबो—कर्म वा०।

बिपरायोड़ो—देखो 'वपरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिपरायोड़ी)

बिपरावणो, बिपरावबो—देखो 'वपराणो, वपराबो' (रू. भे)

बिपरावणहार, हारो (हारी), बिपरावणियो—वि०।

बिपराविग्रोड़ो, बिपराबियोड़ो, बिपराव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिपरावीजणो, बिपरावीजबो—कर्म वा०।

बिपराबियोड़ी—देखो 'बपरायोड़ी' (रू. भे.)

(स्त्री. बिपराबियोडी)

बिपरित, बिपरिती, बिपरीत–वि [सं. विपरीत] १ खिलाफ, प्रतिकूल, विरुद्ध।

उ०—१ राग रग हुवै छै, छड़बडा खिलवत रा साथ सूं बैठा छै। तिण समै चाचोमेरी आपरी साथ लै साजबाज सु चढीया। रांणाजी दिसा ऊताळी, ऊभी माहै चालीया। तरै राणां मोकलजी देख कह्यौ—आज खातण वाळा विपरीत दीसै, मेळ मे तौ नही।
—राव रिणमल री बात

उ०—२ ओईड अथव्वण आद्रव स्रावण, कस्सस कोरण कठळिय। बिपरीत करस्सण कट्टक कोमण, सेन महाघण सम्मळिय।
—गु. रू. बं.

उ०—३ घड मोर नवी परि नाचियौ, दवखण फौजा आइयां। 'गजबंध' मेह बिपरीत गति, वूठौ सिरि वेराइया। —गु. रू. बं.

उ०—४ पातिसाह पासि कागळ गए, सुणी वात बिपरीत परि। सुरताण सेर वूहा खुरम, कासमीर आई खबरि। —गु. रू. बं.

२ उलटा, विलोम, विपरीत।

उ०—१ जेथि दीप दीपता तेथि प्रजळै हुतासण। जेथि हसति गूजता, तेथि गजै पचाइण। जेथि रग-आमाम, तेथि क्रीडति कुरगंह। जेथि नृपति बैसता, तेथि उड्डंत विहगह। त्रिय तेथि रेख काजळ नयण, मुख्रण तेथि भरिया भसम। मेडपति कीध खिडकी तखत, वसुह रीत बिपरीत इम। —गु. रू. बं.

उ०—२ कुदरत्त विछूटा आकप कुहकबाण, इळा पुड़ आसमाण। गोळिया ताइ बिपरीत गत्त, ओप्रठै गडे गिरि मेह अत्त।
—गु. रू. बं.

३ अनिष्ट साधन मे तत्पर, रुष्ट।

४ जो उपयुक्त न हो, अनुपयुक्त।

५ उलटा, कुटिल।

उ०—हियै तहव्वर खात रै, व्यापी यौ विपरीत। दाह अकव्वर भोगयौ, 'नौरग' साह नचीत। —रा रू.

६ असत्य, झूठा, मिथ्या।

उ०—जेह एकात नय पक्ष थापी रहे, प्रथम एकात मिथ्यामती तै कहै। अथ ऊथापि थापै कुमति आपणी, कहै बिपरीत मिथ्यामती तै भणी। —घ. व. ग्र.

७ अप्रिय, अशुभ।

८ भयकर, भयावह।

उ०—ताहरा झोटिंग भेसै री रूप कर आयौ। औ ठाकुर बोलियौ हीज नही। सिखरी पाछौ आयनै तरवार लै बाकरौ मारियौ। बाकरौ मारिया पछै झोटिंग एक बिपरीत रूप करनै आयौ। आकास सीस, पग धरती, इसौ भूत आवतौ दीठौ। —नैणसी

९ नियम-विरुद्ध, परम्परा के विरुद्ध।

उ०—१ निकराळ काळ वदन, दारण दुजीह गरळ मैमत्तौ। बिपरीत कुळह अती, इजगूर या डिभरु गिळ ए। —गु. रू. बं.

उ०—२ जद स्वामीजी कह्यौ—सासरै आणौ लेवा जमाई जावै जद स्त्री तौ रोवै। पिण उण रै देखा देख जमाई रोवा लाग जावै जद लोक मे भूडी लागै। ज्यूं साधपणौ लेवै जरै उण रा न्यातीला रोवै तै तौ आपरै स्वारथ पिण उण री देखा देख दीक्षा लेणा वाळौ रोवा लाग जावै तौ बात बिपरीत। —भि. द्र.

उ०—३ कोढी पति छोडी करी, अवर पुरुख सूं प्रीत। तजि आचार सतीतणौ, कीधौ इण बिपरीत। —जीपाल रास

१० चित सीधा।

उ०—साण झील कमकमै, किये करिमरा चहाए। रचै सेज रिणभोम, कुमम अरि कमळ बिछाए। नखत तिकख सर कूत, सहे अन-मंत्र अचग्गळ। पाण पयोहर कठण मथै मैंगळ कुंभा-थळ। बिपरीत रहसि वीरारसहि, रिण दूभळ हइ रट्टवड। मूती सग्राम करि स्रोण-हर, भूप माण सग्राम घड। —गु. रू. बं.

रू. भे.—बिपरीत, वपरीत, विपरत, विपरीति, विपरीती, विपरूत।

बिपरीत-रति–स स्त्री. [विपरीतः+रति] रति-क्रीडा का एक ढग विशेष, जिसमे सभोग करते समय पुरुष चित्त लेटकर स्त्री को अपने ऊपर उल्टी लेटाता है।

बिपरीत लक्षण–स. स्त्री —ऐसी व्यग्यात्मक अभिव्यक्ति, जिसमे परस्पर विरोधी गुणो, लक्षणो आदि का उल्लेख हो।

बिपरीता–स स्त्री [म.] दुश्चरित्रा स्त्री, बदचलन स्त्री।

बिपरीति बिपरीती—देखो 'विपरीत' (रू भे.)

उ०—१ अकबर लेख प्रमाणै तहवर महत राज लोभाणै। आवी चित अचीती, विणमण गा (का) ळ बुद्धि बिपरीती। —रा रू.

उ०—२ किण परि रावै मुख चीत रे, भय मरण तणो बिपरीति रे तिहा दूरि रही तै प्रीति रे पछै सहु को नी रीति रे। –वि. कु.

बिपरूत–देखो 'विपरीत' (रू भे.)

उ०—पल जंग कूत केता धरम पालटै, हटै बिपरूत गत सूं तग हीयौ। कळह विच मजबूत अटिग रोकै कदम, राह रजपूत साबूत रहियौ। —रावत संग्रामसिंह सक्तावत रौ गीत

बिपळ, बिपल–स पु. [स. विपल] १ एक पल के साठवें अश के बराबर समय का एक बहुत छोटा विभाग।

स. स्त्री.—२ समय की गणना की एक इकाई।

बिपळव, बिपलव—देखो 'विप्लव' (रू. भे.)

बिपळा, बिपला—देखो 'विपुला' (रू. भे.)

(अ. मा. ना. मा., ह. नां. मा.)

विपळी, विपलौ-वि.—जिसका विश्वास न किया जाय, अविश्वास पात्र।

स. पु [स. विप्लव] १ भूत-प्रेत आदि के उपद्रव।

२ भूत-प्रेत।

उ०—पळा भरतै गळा बांमणी प्रजाळी, रुदन करतौ छळा वयण रहटी। कंइ विकळा कळा वळवळा करतौ, छळा विपळा जोडही आण चेटी। —भैरुदान बारहठ

विपसचित, विपसंचि-स पु [स. विपश्चित] कवि, पंडित।

(अ मा., ह ना. मा.)

विपसचित, विपस्चित-स पु. [स पश्चित] १ स्वारोचिष मन्वन्तर का इन्द्र।

२ एक राजा, जो अपनी पत्नी के साथ पापकर्म किये जाने के कारण नरक मे गया था। इसकी पत्नी का नाम पीवरी था जो विदर्भराज की कन्या थी।

३ दक्षजयन्त लौहिल का वंशज एव शिष्य, जो स्वय आचार्य था।

४ आषाढ उत्तर पाराशर्य नामक आचार्य का वंशज एव शिष्य, जो एक आचार्य था।

विपांडु, विपांडुर-वि. [स] पीला, पीत।

विपाक-स. पु [स विपाक] १ किये हुए कर्मों का फल, परिणाम, नतीजा।

उ०—१ सूत्र सिद्धात वखाणंता जो, सुगता करम विपाक। खिण इक मन माहि ऊपजइ जो, मूझ मरकट वइराग। —स. कु.

उ०—२ काम, भोग सयोग सगला, जाण फल किंपाक रे। दीसता रमणीक दीसइ, अति कटुक विपाक रे। —स. कु

२ स्वाद, जायका।

३ कठिनाई, तकलीफ।

४ परिपक्व होना, पकना।

५ पूर्ण दशा को पहुचने की क्रिया, चरम उत्कर्ष।

विपाकसूत्र-सं. पु—एक सूत्र ग्रन्थ का नाम। (जैन)

वि. वि—ज्ञानावरणीयादि आठ कर्मों के शुभ-अशुभ परिणामों को विपाक कहते हैं और ऐसे कर्मविपाक का वर्णन जिस सूत्र मे किया जाता है वह विपाक सूत्र कहलाता है। यह ग्यारवा अगसूत्र है।

विपाट-स. पु. [स. विपाट] १ एक प्रकार का लबा तीर या बाण विशेष।

२ कर्ण के एक भाई का नाम जो महाभारत-युद्ध मे अर्जुन द्वारा मारा गया था।

रू. भे.—विपाठ।

विपाटल-वि.—गहरा लाल।

विपाठ—देखो 'विपाट' (रू भे)

विपाठा स. स्त्री.—दुर्गम राजा की अनेक पत्नियों में से एक पत्नी का नाम।

विपाद-स पु—१ कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक पुत्र, दानव।

२ एक पिशाचगण।

विपादिका-स स्त्री. [स] एक प्रकार का कुष्ठ रोग। (अमरत)

विपाप-सं पु—शिवावतार के एक शिष्य का नाम जिसको दमन के नाम से भी पुकारा जाता है।

विपापमन, विपाप्मन-स पु [सं. विपाप्मन.] १ अग्नि का एक पुत्र, जिसका एक नाम विश्वक्न भी था। यह वास्तुकार्य में अधिष्ठाता देवता माना जाता है।

२ मत्स्यानुसार, आयु राजा का एक पुत्र।

विपास, विपासा-स स्त्री [स. विपाश] पजाब मे बहने वाली व्यास (आधुनिक शतलज) नदी का एक नामान्तर।

वि वि.—इस नदी को विपास या विपासा नाम प्राप्त होने का कारण है कि एक बार वशिष्ठ ऋषि आत्महत्या के उद्देश्य से अपने हाथ-पैर बाध कर उक्त नदी में गिर गये। नदी ने उन्हे पाशमुक्त कर किनारे पर फेंक दिया।

विपिन, विपुन-स. पु [स. विपिन] १ वन, जगल। (ना. मा.)

उ०—१ अत असतुत घर परस अघारै, चलै विपिन तप चाहै। इम थट सहित सुवेस उमाहै, पुर अवधेस पधारै। —र. रू.

उ०—२ ग्रीखम गिर लास्या जरन, सग्वर निकट पुलीन। बूझंगी कैम विपिन, परस्या बिना प्रवीण। —प्रवीणसागर

२ उपवन, वाटिका।

उ०—विरचइ विपिनि विचक्षण तक्षण दस वि दसार, नव नव निरमल भूखण दूखण रहिय स्रंगार। —जयसेखर सूरि

रू. भे.—विपन।

विपिनचर-वि. [स] वन मे रहने वाला या विचरण करने वाला, जंगली।

विपिनतिलका-स स्त्री—१ प्रत्येक चरण मे नगण, सगण, नगण और दो रगण वाली वर्णवृत्ति।

२ एक प्रकार का मात्रिक छद विशेष जिसमे १०, १० मात्रा पर यति हो और अन्त मे रगण हो।

रू. भे.—विपनतिलका।

विपिनपत, विपिनपति, विपिनपती-स पु [स. विपिन+पति] वन का राजा, सिंह।

बिपिनबिहारी—देखो 'बिपनबिहारी' (रू. भे)

बिपुळ, बिपुल–वि. [सं.] १ बहुत बड़ा, विशाल।

२ अधिक, प्रचुर।

उ०—सीत काळ ऊतरै, अब मवरै रित आगम। रस आयौ तरवरै, भयौ भमरै सुर सगम। द्रुम्म चरम मधु भरै, पत्र अंकुरै बिपुल वन। फाग राग माधुरै, सुरै नर नारि हरै मन। —रा. रू.

३ अगाध, गहरा।

४ रोमांचित।

स पु —१ सुमेरु पर्वत का पश्चिमी भाग।

२ महाभारत युद्ध मे अर्जुन द्वारा मारा गया, सौवीर देश का एक राजा, जिसे देनमित्र व सुमित्र नाम भी प्राप्त थे।

३ रोहिणी एवं वसुदेव के संसर्ग मे उत्पन्न एक पुत्र, बलराम व कृष्ण का भाई।

४ एक पर्वत, जिसकी अधिष्ठात्री देवी विपुला है।

५ देवशर्मन ऋषि का शिष्य एक भृगुवंशीय ऋषि।

वि वि.—इसकी गुरुपत्नी 'रुचि' पर इन्द्र आसक्त हुआ, उस समय इसने रुचि की इन्द्र से रक्षा की थी। इसी कारण प्रसन्न होकर देवशर्मन ने इसे अनेक वर प्रदान किये।

६ एक पर्वत विशेष, जो मगध की राजधानी गिरिव्रज के पास है।

रू. भे.—विउल।

बिपुळता, बिपुलता–स. स्त्री.—२ प्रचुरता, बहुतायत।

२ महानता, विशालता।

बिपुलमति, बिपुलमती–स. स्त्री.—२८ प्रकार की लब्धियों मे से नवमी लब्धि का नाम।

• उ०—सूंपरण मानुषक्षेत्रै सख्यावंत, पचेंद्रिय जे छै तसु मनवाता तन। सूक्ष्मपरजाये जाणै सहु परिणाम,ए नवमी कहियै बिपुलमती सुभ नाम। —वृ स्त

बिपुळस्वांन–स. पु.—मुकुश एवं तुबुरु के पिता, एक ऋषि।

बिपुळा, बिपुला–स स्त्री [स विपुला] १ जमीन, पृथ्वी, भूमि। (डि ना मा)

२ विपुल नामक पर्वत की अधिष्ठात्री देवी।

३ एक प्रसिद्ध बहुला सती का नामान्तर।

४ विपुला देवी का सिद्ध पीठस्थान।

५ एक प्रकार का छंद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, रगण और दो लघु होते है।

६ आर्याछन्द का एक भेद विशेष, जिसके चारो चरणो मे १८, १२ १४ और १३ के क्रम से ५७ मात्राये होती हैं।

रू. भे.—बिपुला, बिपळा, बिपला।

बिपोहणौ, बिपोहबौ–क्रि. स. [सं. वि=विगत, रहित+पोषण]

१ मिटाना, नाश करना, समाप्त करना।

उ०—समोसरण सामी दयइ देसरण, भविक जीव पडिबोहइ। केवलग्यानी धरम प्रकासइ, वयर विरोध बिपोहइ। —स. कु.

२ दूर करना, हटाना।

बिपोहणहार, हारौ (हारी), बिपोहणियौ—वि०।

बिपोहिग्रोड़ौ, बिपोहियोड़ौ, बिपोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिपोहीजणौ, बिपोहीजबौ—कर्म वा०।

बिपोहियोड़ौ–भू. का. कृ —१ मिटाया हुआ, नाश किया हुआ, समाप्त किया हुआ। २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ।

(स्त्री. बिपोहियोडी)

बिप्प—१ देखो 'विप्र' (रू. भे)

२ देखो बिप्पळौ।

उ०—बिप्पळां पळा आवळा वाढ, ग्रीधळा खळा सावळां गाढ। माबळा हुळा मेंगळा मल्ल, ढेंबळा ढळा तूनाह ढल्ल। —गु. रू ब.

बिप्पोसहि, बिप्पोसही–स. स्त्री.—२८ प्रकार की लब्धियों मे से दूसरी लब्धी।

उ०—१ आमोसहि विप्पोसहि खेलोसहि जल्लोसहि सव्वोसहि लब्धि वैक्रिय लब्धि, पुलाक लब्धि, तेजोलेश्या लब्धि, आसीविष लब्धि, सभिन्नस्रोतो लब्धि ······। —व. सं.

उ०—२ जासु मळमूत्र उत्तम समा जाणीयै, बीय बिप्पोसही लबधि वखाणियै। स्लेश्म उखधि सारिखौ जेहनौ, तीजो खेलोसही नाम तेहनौ ठवै। —वृ स्त.

बिप्फरणौ, बिप्फरबौ—देखो 'बिफरणौ, बिफरबौ' (रू. भे)

बिप्फरणहार, हारौ (हारी) बिप्फरणियौ - वि०।

बिप्फरिग्रोड़ौ, बिप्फरियोड़ौ, बिप्फरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिप्फरीजणौ, बिप्फरीजबौ—भाव वा०।

बिप्फरियोड़ौ - देखो 'बिफरियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री बिप्फरियोड़ी)

बिप्फुरणौ, बिप्फुरबौ—देखो 'बिफरणौ, बिफरबौ' (रू. भे.)

उ० —जासु सुजसु जगि झिगमिगै ए, बहुउज्जल निक्कलंक। प्रभु प्रताप गुण बिप्फुरइ, हरइ डमर अरि सक। —पुण्यसागर

बिप्फुरणहार, हारौ (हारी), बिप्फुरणियौ—वि०।

बिप्फुरिग्रोड़ौ, बिप्फुरियोड़ौ, बिप्फुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिप्फुरीजणौ, बिप्फुरीजबौ—भाव वा०।

बिप्फुरियोड़ौ–भू का कृ.—देखो 'बिफरियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री बिप्फुरियोड़ी)

विप्र–सं. पु. [सं.] १ ब्राह्मण।

उ०—१ नहीं तूं विप्र नहीं तू बैस, नहीं तू खत्रिय सूद्र न खैस। नही तू मूल नही तू डाळ, नही तू पत्र नही जु पराळ। —ह. र.

उ०—२ चित माहि इम चितवैजी, निरदय विप्र चडाल। करै परोसो साधनै जी, दे मुख सू घणी गाल। —जयवाणी

उ०—३ ब्राहनपुर दसरावो थप्पे, जोसी तिलक मुहूरत ग्रप्पै। विजै दसम्मी होम करावै, बिप्रां कथा वेद वचावै। —गु. रू. ब.

उ०—४ तिलक दुग्रा-दस वसत्र कलवर, करै सदा खट करम निर। तर। राजा वदन कीध उभै कर, ग्रासी-वाच विप्रां इम उच्चार —गु. रू. ब

२ ब्राह्मण या पुरोहित जाति।

३ उक्त जाति का पुरुष।

४ कर्मनिष्ठ पुरुष।

५ पीपल, सिरस आदि पेडो का नामान्तर।

६ ध्रुव वंशीय एक राजा।

७ मगध नरेश सृञ्जय के पुत्र व शुचि के पिता एक राजा।

८ डगण के पाचवे भेद का नाम।

९ विद्वान या मेधावी व्यक्ति।

रू. भे.—विपर, बिप्र, विप, बिपर विप्र।

विप्रक–स पु [स.] नीच या धर्मभ्रष्ट ब्राह्मण।

विप्रकार–स. पु [स] १ हार, पराजय।

२ अनादर, तिरस्कार।

३ अपकार।

विप्रचरण–स पु [सं] भगवान् विष्णु के हृदय पर अंकित भृगु मुनि की लात का चिन्ह। (पुराण)

विप्रचित्त, विप्रचित्ति विप्रजित्त, विप्रजित्ति–स. पु. [स. विप्रचित्ति]

१ व्यष्टि नामक आचार्य का एक शिष्य।

२ हिरण्यकशिपु का सेवक एक राक्षस।

३ एक दानव राजा।

वि वि.–यह कश्यप एवं दक्षपुत्री दनु के सौ पुत्रो मे से एक पुत्र था। इसका विवाह हिरण्यकशिपु की पुत्री सिंहिका से हुआ था। सिंहिका के गर्भ से इसे सौ पुत्र प्राप्त हुऐ थे जिनमें राहु ज्येष्ठ-पुत्र था जो कि आजकल ग्रह माना जाता है। कही-कही इसके पुत्रों की संख्या चौंतीस या तेरह भी दी जाती है। इसने असुर-इन्द्र युद्ध व अमृतमन्थन आदि मे भाग लिया था। इसके पुत्रो का सैंहिकेय नामक समूह था जिसमे एक सौ राक्षस थे जो सभी इसके पुत्र थे। उक्त समूह मे एक राहु एवं सौ केतु थे।

४ राहुग्रह। (हिं. को.)

विप्रणी—देखो 'विप्री' (रू. भे.)

उ०—पीत दुकूळ वैसणी पहरण, गाह मुद्रणी स्यांम वसन गण। गोरै वरण विप्रणी गाहा, चपक वरण खित्रणी चाहा। —र. ज. प्र.

विप्रता–सं स्त्री.—ब्राह्मण होने की अवस्था, ब्राह्मणत्व।

उ०—जै छह गहन विचार रै सुकनै पूछीजै, निस्चय ए कीजै। सूं विप्रता रै मन्हनै सूवटा, जेहवो छै तेहवो दाखि रै। —वि. कु.

विप्रविसार, विप्रतीसार–सं पु. [स] १ रोष, क्रोध, गुस्सा।

२ दुष्टता।

विप्रपद—देखो 'विप्रचरण'।

विप्रबंधु–स. पु [सं.] १ धर्मभ्रष्ट ब्राह्मण, नीच ब्राह्मण।

२ मंत्रद्रष्टा मुनि।

विप्रबुद्ध, विप्रबुध—वि. [स] ज्ञानी, जानकार।

विप्रराम–स. पु. [स.] परशुराम का एक नामान्तर।

विप्रलंभ–सं. पु [स. विप्रलम्भ] १ धोखा, कपट।

२ बिछोह, वियोग।

३ प्रेमी, प्रेमिकाओं का बिछोह।

४ साहित्य मे एक प्रकार का अलंकार विशेष जिसमें प्रेमी प्रेमिकाओं के विरह का वर्णन होता है।

वि वि.—यह शृंगार रस का एक भेद है, जिसमें अनुराग तो अति-उत्कट होता है किन्तु नायक नायिका का समागम नही होता है। पूर्वराग, मान, प्रवास, करुण, आदि इसके चार भेद हैं। इसमें अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जडता और मृति (मरण) आदि दश काम दशायें होती हैं और इन सारी काम दशाओ के लक्षण भिन्न भिन्न होते हैं।

विप्रलब्ध–वि. [सं] १ धोखा दिया हुआ, छला हुआ।

२ हताश, निराश।

विप्रलब्धा–स. स्त्री. [स] वह नायिका जो अपने प्रेमी द्वारा बताये सकेत स्थान पर प्रेमी के न पहुंचने पर निराश या दुःखी हुई हो।

विप्रलाप, विप्रवाद–स पु [।] १ व्यर्थ की बकवास।

२ विवाद, झगडा।

विप्रस्ट–स. पु [स विप्रष्ट] वसुदेव एव धृतदेवी के पुत्रों में से एक पुत्र, बलराम का छोटा भाई।

विप्रस्न–स पु. [सं. विप्रश्न] वह प्रश्न जिसका उत्तर फलित ज्योतिष द्वारा दिया जाय।

विप्रि, विप्री–स. स्त्री.—आर्याछन्द मे एक गाथा जिसमें १३ लघु वर्ण होते हैं।

उ०—१ विप्री तेरह लघुव दीजै, लघु यकवीस खित्रणी लीजै सतावीस लघु वैसी सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई।—र. ज. प्र.

उ०—२ भीनै रग वैसणी सुभायक, लख सुद्रणी स्यांम रग लायक। मुगता भूखण विप्री मोहत, सुज खित्रिणि हिम भूखण सोहत।

—र ज प्र.

रू. भे —बिप्रणी।

विप्लव–स. पु. [स] १ उपद्रव, बलवा, हगामा, विद्रोह।

२ युद्धकाल मे उत्पन्न अशाति, उथल-पुथल।

३ आपत्ति, विपत्ति।

४ घोडे की अत्यधिक तेज चाल।

५ सीमोल्लघन, अतिक्रमण।

रू. भे —विपळव, विपलव।

विप्लुत–वि [स.] जिसके उच्चारण मे प्लुत से भी अधिक समय लगे।

उ०—गुरु लघु प्लुत विप्लुत करो, व्यजन वरण विसेख। धूया माठा पडमठा, ताल-तणा तिहा लेख। —मा. का प्र.

विप्सा—देखो 'वीपसा' (रू भे)

विफंद, विफदौ–स. पु — जाल, पाश, फन्दा, फास।

उ०- राज के विहीन सत्यसिधु तै रह्यो। भाज कै अधीन दीन-बधु के भयो। छुद व्है सुछद श्री अनद को कह्यो, मदमती "ऊमरो" विफद मे फयो। —ऊ. का.

विफनी—देखो 'वीपनी' (रू. भे.)

विफरणौ, विफरबौ–क्रि. अ. [स. विस्फुरणम्] १ क्रोधित होना, गुस्से से युक्त होना, बिगडना।

उ०—बिफरै जैमाल तड बनै बड़ बावळा, सुधारै जावळा बल सारा। ऊपटै अठी रूपाण थड आवळा, भडण उतावळा हुति भारा। —प्रतापसिंघ रो गीत

२ गरजना, दहाड़ना।

३ फैलना, बिखरना।

४ प्रगट होना, स्फुटित होना।

विफरणहार, हारौ (हारी), विफरणियौ—वि०।

विफरिओड़ो, विफरियोड़ौ, विफरयोडो—भू० का० कृ०।

विफरीजणौ, विफरीजबौ—भाव वा०।

विप्फरणौ, बिप्फरबौ, बिफरणौ, बिफरबौ, बीफरणौ, बीफरबौ, बीभरणौ, बीभरबौ, भीफरणौ, भीफरबौ, विप्फरणौ, विप्फरबौ, विप्फुरणौ, विप्फुरबौ, वीफरणौ, वीफरबौ—रू० भे०।

विफरियोड़ौ–भू का कृ.—१ क्रोधित हुवा हुआ, गुस्से से युक्त हुवा हुआ, बिगड़ा हुआ. २ गरजा हुआ, दहाडा हुआ. ३ फैला बिखरा हुआ हुआ, ४ प्रगट हुवा हुआ, स्फुटित हुवा हुआ

(स्त्री. विफरियोड़ी)

विफलरे, विफरैळ–वि.—क्रोधित, क्रुद्ध, गुस्से से युक्त।

रू. भे.—बिफरेल, बिफरैल, बीफरेल बीफरैल।

विफळ, विफल–वि. [स. विफल] (स्त्री. विफळा, विफला) १ जिसके फल न लगते हो।

२ व्यर्थ, निरर्थक।

३ असफल, नाकामयाब।

४ हताश, निराश।

५ परिणाम रहित।

स पु - पान, ताम्बूल। (अ. मा.)

रू भे —बिफळ।

विफळणौ, विफळबौ–क्रि अ —१ हताश होना, निराश होना।

उ०— तद कुवरसी कह्यो, जो मोनू फेर वरजियो तो हू पेट मे मार कटारी मरीस, का राव धात मामो हुय जाईस। तद बीटू रंग देख विफळियो, पाछो खीवसीजी नं कह्यो, मानै कोई नही।

—कुवरसी सांखला री वारता

२ घबराना, भयभीत होना।

विफळणहार हारौ (हारी) विफळणियौ—वि०।

विफळिओडो, विफळियोडो, विफळयोड़ो – भू० का० कृ०।

विफळीजणौ, विफळीजणौ—भाव वा०।

विफळता, विफलता–स. स्त्री. [स विफलता] १ व्यर्थता, निरर्थकता।

२ असफलता, नाकामयाबी।

३ हताश, या निराश होने की अवस्था या भाव।

विफळियोडो–भू का कृ.–१ हताश, निराश। २ घबराया हुआ, भयभीत हुवा हुआ।

(स्त्री विफळियोडी)

विबक–स पु —१ वीरता, बहादुरी, बाकापन।

उ० —गिराब गड्ढ गड्ड को विगड्ड छड्डती बहै, बकारि बैरि बद सो डकार डड्डती बहै। बडै निसक अक की विबक कढ्ढती बहै, रहेगु सक रक की विसक बढ्ढती बहै। —ऊ का.

२ कुटिलता।

३ टेढापन, तिरछाई, वक्रता।

४ वीर, बहादुर।

विबध–स पु [स] १ कब्ज होने की अवस्था, कब्जी, मलावरोध।

२ अवरोध, रुकावट।

३ बन्धन, हथकडी।

विबंधवर्त्ति–स स्त्री [स. विबधवर्त्ति] घोडो का रोग विशेष जिसके कारण उनका पेशाब बद हो जाता है।

विबरजित—देखो 'विवरजित' (रू भे)

बिबरण—देखो 'विवरण' (रू. भे.)

बिबळ, बिबल–वि [स. बिबल] १ अशक्त, शक्तिहीन, बलहीन।
 २ विशेष बलवान, शक्तिशाली।
 रू. भे.—बिबळ।

बिबहयरणौ, बिबहयरबौ–क्रि. अ.—लहराना, फहराना।
 उ०—पसरि पख हैं पाई, हला उडूं आधनरि। अरद लाल इक स्याह, वरन वाना बिबहयरि। —गु रू. ब
 बिबहयरणहार, हारौ (हारी), बिबहयरणियौ—वि०।
 बिबहयरियोड़ौ, बिबहयरियोड़ौ, बिबहयरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
 बिबहयरीजणौ, बिबहयरीजबौ—भाव वा०।
 बिबहयरणौ, बिबहयरबौ—रू० भे०।

बिबहयरियोड़ौ–भू. का. कृ.—लहराया हुआ, फहराया हुआ।
 (स्त्री बिबहयरियोड़ी)

बिबाई, बिबाही—देखो 'बिवाई' (रू. भे.)

बिभिसण, बिभिसण, बिबीसण, बिबीसण—देखो 'बिभीसण' (रू. भे)

बिबुद्ध, बिबुध–वि. [स. बिबुद्ध] १ जाग्रत, सचेत।
 २ ज्ञानप्राप्त, जानकार।
 ३ चतुर होशियार।
 स. पु [स विबुधः] १ चन्द्रमा, चांद।
 २ देवता।
 उ०—तिथ चतुरदसी सनवार तव, स्यग पहर बीता अरध। 'अग-जीत' ग्रेह जनम्यौ 'अभो', बाण वेद हरखे बिबुध। —रा. रू.
 ३ विद्वान पुरुष, बुद्धिमान जन, पंडित।
 उ०—पूरण ग्यांन दसा मन आणी, वेधक वाणी वखाणीजी। बिबुध भणी ग्रवबोध समांणी मूरख मति मुंझाणीजी।—वि. कु
 ४ कृति राजा का मतान्तर से देवमीढ राजा का, विसृत मतान्तर मे विश्रुत नामक पुत्र, एक राजा।
 ५ शिव, महादेव।
 रू. भे—बिबुध, बिबध, बिवधा, बिबह, बिबुध, बिबुह।

बिबुधतटणी, बिबुधनटनी, बिबुधतटिणी, बिबुधतटिनी–स स्त्री. [सं बिबुध+तटिनी] १ देवताओ की नदी, आकाश गंगा। २ गगा नदी।

बिबुधतर, बिबुधतरु–स. पु [स. विबुधतरु] कल्प-वृक्ष का एक नाम।

बिबुधधेन, बिबुधधेनु–स स्त्री. [स विबुधधेनु] काम-धेनु।

बिबुधनद बिबुधनदी–स. स्त्री [स. विबुधनदी] १ आकाश-गगा।
 २ गंगा।
 उ०—जिण री मे 'मा जोय, नर मूरख नावै नही। हाड पड्या गत होय, बिबुधनदी मे 'बसतिया'। —समेळजी बारहठ

बिबुधपत, बिबुधपति, बिबुधपती, बिबुधपत्त, बिबुधपत्ति बिबुधपत्ती–सं. पु. [सं. विबुधपति] सुरपति, देवराज इन्द्र।

बिबुधप्रिय बिबुधप्रिया–सं. स्त्री. [सं. विबुधप्रिया] चचरी या चर्चरी नामक छंद का नामान्तर।
 रू. भे.—विबुधप्रिय, विबुधप्रिया।

बिबुधबन—देखो 'बिबुधवन' (रू. भे.)

बिबुधलता–सं. स्त्री. [स.] कल्प-लता।

बिबुधवेल, बिबुधवेलि, बिबुधवेली—देखो 'बिबुधवेलि' (रू. भे.)

बिबुधवन–सं पु. [स.] देवराज इन्द्र का वन।
 रू भे.—विबुधबन, विबुधबन विबुधवन।

बिबुधविलासण, बिबुधविलासणि, बिबुधविलासणी बिबुधविलासिणि, बिबुधविलासिणी– स. स्त्री [स. विबुधविलासिनी] १ देवता की स्त्री, देवांगना।
 २ अप्सरा।

बिबुधवेल, बिबुधवेलि–स स्त्री. [सं विबुधवेलि] कल्प- लता।
 रू भे.—विबुधवेल, बिबुधवेलि, बिबुधवेली।

बिबुधवैद्य–स. पु [स.] देवताओ के वैद्य, अश्विनी कुमार।

बिबुधांन–स पु [स. विबुधान] १ देवता।
 उ०—थानंसी स्याम धार मेर बिबुधांन पाणा, किन्नरां अम्मरां नरां धरा ग्रोपवै सुधाक। अग रज्जै राजवै सुपाट धाम येण पांणां, जटीस वसु स्याम धाम 'छतारौ' जोधाक।
 —भगतरांम हाडा रौ गीत
 २ पंडित, विद्वान।

बिबुधाचारय, बिबुधाचारिय–स पु. [स. विबुध+आचार्य] देवताओं के आचार्य, बृहस्पति।

बिबुधाधिप, बिबुधापत, बिबुधापति, बिबुधापती–स. पु [स. विबुध+अधिप, पति] देवराज इन्द्र।

बिबुधापगा–स स्त्री. [सं] १ आकाश-गगा। २ गगा नदी।

बिबुधालय–स पु [सं विबुध+आलय] देवता का मन्दिर।
 २ स्वर्ग।
 रू. भे.—विबुधालय, विबुधालय, विबुधालय,।

बिबुधावास–सं. पु. [स विबुध+आवास] १ देवताओ का निवास स्थान स्वर्ग।
 २ मन्दिर।

बिबुधेंद्र–स. पु. [स विबुध+इन्द्र] देवराज इन्द्र का नामान्तर।

बिबुधेस–स. पु [सं. विबुध+ईशः] १ देवताओ के स्वामी भगवानन्

विष्णु।

उ०—विमळानन विबुधेस-विहारी, संख चक्र धारी सुमण। भव तारण भूधर भय-भंजण, हिरणगरभ त्रय-ताप हण।

—र. ज. प्र.

२ देवराज इन्द्र।

रू. भे.—बिबुधेस, विबुधेम।

विबोध-स. पु. [स. विबोधः] १ जागृति, जागरण।

२ चेतना, होश।

३ अलंकार साहित्य के अनुसार व्यभिचारी भाव।

४ चैतन्यलाभ जो निद्रा दूर करने वाले कारणों से उत्पन्न होता है।

५ निर्वहणसन्धि के चौदह अंगों में से एक।

६ कार्य का अन्वेषण करने की क्रिया।

विबोधन-सं. स्त्री. [सं: विबोधन्] १ जागृति या जागरण पैदा करने की क्रिया।

२ चेतना या होश में लाने की क्रिया या भाव।

३ व्यभिचार करने की क्रिया।

विब्भाड़णी, विब्भाड़बौ—देखो 'विभाड़णौ, विभाडबौ' (रू भे)

उ०—एक छत्र जिण पुहवी, निस्चळ कीधी घर उप्पर। प्राण किंत्ति नव खड, प्रदल कीधी दुनीयप्पर। मल चौनल विब्भाड़ि उदधि कर पाउ पखाळिय। प्रतेउर रति रंभ, रूप रभा सुर टाळीय। हेतम दान कवि मल्ल कहि, अमर ध्रुन्नि वे वखत गनि। दोठी न कोइ रवि चक्क लगि, अलावदी सुलतान विणि।

—प च. चौ.

विब्भाड़णहार, हारौ (हारी), विब्भाड़णियौ—वि०—।

विब्भाड़ियोड़ौ, विब्भाड़ियोड़ौ, विब्भाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विब्भाड़ीजणौ, विब्भाड़ीजबौ—कर्म वा.।

विब्भाड़ियोड़ौ—देखो 'विभाड़ियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विब्भाड़ियोडी)

विब्भाडणौ, विब्भाडबौ—देखो 'विभाडणौ, विभाडबौ (रू. भे.)

उ०—पच्छिम देस पारभ, लियौ लोहा उप्पाडै। पूरब दिस पतिसाह, लियौ खग दळ विब्भाडै

—गु. रू. बं.

विब्भाडणहार, हारौ (हारी), विब्भाडणियौ—वि०।

विब्भाडिओड़ौ, विब्भाडियोड़ौ, विब्भाड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विब्भाडीजणौ, विब्भाडीजबौ—कर्म वा०।

विब्भाडियोड़ौ—देखो 'विभाड़ियाडौ (रू. भे.)

(स्त्री. विब्भाडियोड़ी)

विब्भाणौ, विब्भाबौ—देखो 'विभाणौ, विभाबौ' (रू. भे.)

विब्भाणहार, हारौ (हारी), विब्भाणियौ—वि०।

विब्भायोड़ौ—भू० का० कृ०—।

विब्भाईजणौ, विब्भाईजबौ—कर्म वा०।

विब्भायोड़ौ—देखो 'विभायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विब्भायोड़ी)

विभंग-स पु [स.] १ भौंहों द्वारा की जाने वाली चेष्टा, भ्रू-भंग।

२ किसी चीज को यथास्थान रखने की क्रिया, विन्यास।

३ खडित होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

विभज, विभंजण-स. पु. [स. वि+भंज्] १ नाश, विनाश।

२ सहार, नाश।

रू भे—विभंजण।

विभंजणौ, विभंजबौ-क्रि स [स विभजनम्] १ नाश करना, विनाश करना।

२ सहार करना।

३ मारना, वध करना।

उ०—१ रघुराज सिहायक सत रहै, कथ भेद जिको प्रज वेद कहै। दसमाथ विभज भराथ दस, पहनाथ समाथ अनाथ पखं।

—र ज. प्र.

उ०—२ दिपै रघुनायक दीनदयाळ, पुणा खळ घायक सेवग-पाळ। वडै दसमाथ विभंजण वक, लछीवर देण भभीखण लक।

—र. ज प्र.

४ मिटाना।

उ०—घर मुकर सायक धानुख, लड समर ग्हचण लख। दुजराज गरब विभज दस्सत, सरब जग सरण। —र. ज. प्र.

विभजणहार, हारौ (हारी), विभंजणियौ—वि०।

विभंजियोड़ौ, विभजियोड़ौ विभज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विभजीजणौ विभजीजबौ—कर्म वा०।

विभजणौ, विभंजबौ—रू० भे०।

विभंजियोड़ौ-भू. का कृ.—१ नाश किया हुआ, विनाश किया हुआ।

२ सहार किया हुआ ३ मारा हुआ, वध किया हुआ। ४ मिटाया हुआ।

(स्त्री. विभंजियोडी)

विभ -देखो 'वैभव' (रू. भे.)

उ०—मड राम दससिर भजिया, दत लंक सरणागत दिया। विभ प्रवध सिय लै आविया, कळ चदनाम किया। —र ज प्र.

विभकर-स. पु. -एक प्रकार का रत्न विशेष। (व. स.)

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वैडूरय सूरयकात चद्रकात, नील, महानील, इद्रनील, सवकर विभकर ज्वरहर रोगहर

लेलहर, विखहर हरिन्मणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हंसगरभ पुलक ग्रक ग्रजन ग्ररिस्ट चिंतामणि। —व. स.

बिभक्त–वि. [सं.] ग्रलग-ग्रलग किया या हुवा हुग्रा, बंटा या बाटा हुग्रा।
स. पु. [सं. विभक्तः] स्वामी कात्तिकेय का नामान्तर।
रू. भे.—बिभगत।

बिभक्ति–सं. स्त्री [सं.] १ विभक्त करने या होने की क्रिया या भाव, पार्थक्य, ग्रलगाव।
२ व्याकरण के ग्रनुसार शब्द के ग्रागे लगा हुग्रा वह प्रत्यय या चिन्ह जिससे उस शब्द का क्रिया पद के सम्बन्ध का पता चलता है।
रू. भे.—बिभगति।

बिभगत—देखो 'बिभक्त' (रू. भे.)

बिभगति—देखो 'बिभक्ति' (रू. भे.)

बिभगन, बिभग्न–वि [स. विभग्न] १ टूटा फूटा हुग्रा।

बिभचार—देखो 'व्यभिचार' (रू भे.)
उ०—१ बिभचारी बिभचार कर, कुळ-ध्रम खोय कुमोज। लूट गया इण खळक मे, खुडको हुवो न खोज। —ऊ. का.
उ०—२ चपळ मती दरबारणी, चित्त भाव बिभचार। मोद्य त्याग कर सुर सभा, कर नर ग्रंगीकार। —पा. प्र
उ०—३ भाग जाणे कहै किसी भांत मू दामोदर माय चित राख दीधा। रुकमणी ग्रादि तो पतिवरत मूं ऊधरी, कूबडी ग्रादि बिभचार कीधा। —भगतमाळ
उ०—४ हरीया ग्रपनै पीव सु, सूती सेभ बिछाय। जो राखै मन ग्रौर सु, तो बिभचार कहाय। —ग्रनुभववाणी

बिभचारी—देखो 'व्यभिचारी' (रू. भे)
उ०—१ बिभचारी बिभचार कर, कुळ-ध्रम खोय कुमोज। लूट गया इण खळक मे खुडको हुवो न खोज। —ऊ का.
उ०—२ चाद किरण सकुडी थी सु पसरी। कुलटा कहता बिभचारिणी की द्रस्टि सकुडी थी सु पसरी। निसाचर कहतां राति कै विखं जु विचरै छै। त्याह की द्रस्टि पसरी। ग्रभिसारिका कहता जिह नै संहेट वदी थी। त्याह की द्रस्टि पसरी। --वेलि टी.
उ०—३ पतिवरता बिभचारिणी, सगति सुख नहि कोय। तेल नीर सूं ना मिळै, ल्हसण चदन भी दोय। —ह. पु. रा.
उ०–४ पतिवरता बिभचारिणी, दोऊ ग्रनत न बैसै एकै साथी। फटकिमणि तब लग भली, जब लग हीरा ग्रावै न हाथी। —ह. पु. वा.
उ०—५ होय दिसावर एक वर, कहो कोण दिस जाय। जनहरीया बिभचारणी, पति बिन गोता खाय। —ग्रनुभववाणी
(स्त्री.—बिभचारण, बिभचारणी, बिभचारिणी)

बिभच्छ, बिभछ, बिभत्स—देखो 'बीभत्स' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

बिभतसरस—देखो 'वीभत्स' (१) (रू भे.)

बिभत्सु—१ देखो 'बीभत्सु' (रू भे.)
२ देखो 'बीभत्स' (रू भे.)

बिभनो, बिभनौ, बिभन्नो, बिभन्नौ–[सं. वि+भज] मरा हुग्रा मृत।
उ०—१ बिभनौ तु गज गाम बरीमण, हुई तेण खट बरणा हाण। ग्रणमिळण मो हुवो एम तो, मिटसी किम मोजा महराण। —बां. दा.
उ०—२ धमळ बिमन्नौ धुर तजै, देख दुमणो साथ। उण वेळा तांडै 'ग्रजो' मूछा घालै हाथ। —रा. रू.
उ०—३ 'ग्रजबै' वोठळदाम रै, देख बिमन्नौ बंध। भुजडंडै बळ भल्लियो, तिण धुर ग्रोडै कंध। —रा. रू.
उ०—४ यूं कमध सुण ग्रक्खियो, माडेचो भर मोड़। रांम बिमन्नो को कहै, जा ऊभो रिणछोड। —रा. रू.
उ०—५ कमध ग्रगजी बिभन्नो कहियो, बड दाता कीरत चो वीद। वाक तुग्राळो करडी-वाळो, काळो भूवाऊं कासींद। —ग्रोपो ग्राढो

बिभरणो, बिभरबो–क्रि. ग्र.—१ चमकना, चौंकना।
२ क्रोधित होना, गुस्से से युक्त होना, बिगड़ना।
३ भ्रम मे पड़ना, भ्रमित होना।
बिभरणहार, हारो (हारी) बिभरणियो—वि०।
बिभरिग्रोड़ो, बिभरियोड़ो, बिभरयोड़ो—भू० का० कृ०।
बिभरीजणो, बिभरीजबो—भाव वा०।

बिभरियोड़ो–भू. का कृ.—१ चमका हुग्रा, चौंका हुग्रा. २ क्रोधित हुवा हुग्रा, बिगड़ा हुग्रा. ३ भ्रम मे पड़ा हुग्रा, भ्रमित हुवा हुग्रा.
(स्त्री. बिभरियोडी)

बिभळ, बिभळी–सं. स्त्री.—१ बिल, गुफा।
१ ग्राख, नयन, नैत्र। (ना. डि. को)
वि.—१ निर्मल, साफ, स्वच्छ।
२ सुन्दर, मनोहर।
रू. भे.—बिमळ, बिभळी, भिभळ, भीभळ, भीभळी, बीभळ, बीभळी, वीभळ, वीभळी।

बिभव–स. पु. [सं] १ छत्तीसवें सवत्सर का नामान्तर।
२ देखो 'वैभव' (रू भे) (ना मा., ह. नां. मा)
उ०—१ बरस दोय होतां छता सारी बिभव खिच गई।
—साह रांमदत्त री वारता

उ०—२ रूप हुइ तु चतुर तुहि, ग्रथवा नही उदार । तै हुइ तु बिभव तुहि, कै लपट हुइ ग्रपार । —नळाख्यान

बिभवता—देखो 'वैभवता' (रू. भे.)

बिभववान—देखो 'वैभववान' (रू. भे)

बिभवसाळी बिभसालो—देखो 'वैभवसाळी' (रू. भे.)

बिभांड-स. पु [स.] सरशय्या पर लेटे हुए भीष्म से मिलने हेतु उपस्थित जनो मे से एक ऋषि ।

बिभांडक-स. पु [सं.] एक ऋषि का नाम जो कश्यप का पुत्र तथा ऋष्यशृंग ऋषि का पिता था ।

वि. वि.—इसके पुत्र ऋष्यशृग ऋषि के जन्म एवं ग्रग देशाधिपति चित्ररथ की कन्या शान्ता से उसके विवाह के सम्बन्ध में ग्रनेक चमत्कारपूर्ण कथाऐ मिलती हैं । कश्यप के पुत्र के नेत्र-पीले रग के थे एव इसे ब्रह्मज्ञान की शिक्षा हिमालयवासी सनत्कुमार ने दी थी ।

बिभांडक काश्यप-सं. पु. [सं. विभांडक काश्यप] ऋष्यशृंग ऋषि का पुत्र एव शिष्य ।

बिभांत, बिभांति,-सं. स्त्री. [स. विभाति] १ प्रकार, भेद, किस्म ।

वि.—ग्रनेक प्रकार का ।

बिभा-स. स्त्री [सं.] १ दीप्ती, प्रभा, कान्ति ।

२ छवि, शोभा, सौंदर्य ।

३ किरण, रश्मि । (ग्र. मा., नां. मा., ह. नां मा.)

४ ग्रग्नि, ग्राग । (ग्र. मा)

५ कावेरी की पुत्री एवं दुर्गम राजा की ग्रनेक पत्नियो में से एक पत्नी का नाम ।

रू. भे -बिभा ।

बिभाकर-स. पु [सं. विभा+करः] १ सूरज, सूर्य (ह. ना. मा., ग्र. कु. बो)

२ चान्द, चन्द्रमा ।

३ राजा ।

४ ग्रर्क, मदार ।

५ ग्रग्नि, ग्राग ।

वि.—प्रकाश करने वाला, ग्रन्धेरा मिटाने वाला ।

रू. भे.—बिभाकर ।

बिभाग-स. पु. [स. विभागः] १ बटवार, ग्रश, हिस्सा ।

२ ग्रश, प्रकरण ।

३ कार्यक्षेत्र ।

४ कार्यालय, महकमा ।

५ परिच्छेद, खण्ड ।

रू. भे.—बिभाग, व्यभाग ।

बिभागात्मकनक्षत्र, बिभागात्मकनक्षत्र-सं. पु. [विभागात्मकनक्षत्र] प्रकाशमय ग्राठों नक्षत्रो का नाम।

वि. वि.—उक्त ग्राठो प्रकाशमय नक्षत्रो के नाम निम्नलिखित हैं —१ रोहिणी, २ ग्राद्री, ३ पुनर्वसु, ४ मघा, ५ चित्रा, ६ स्वाती, ७ ज्येष्ठा ग्रौर ८ श्रवण ।

बिभागी-स. पु. [स. विभागिन्] हिस्सेदार, भागीदार ।

वि.—विभाग करने वाला ।

रू. भे.—बिभागी ।

बिभाड़-स. पु.—१ नाश, ध्वस ।

२ बिगाड, हानि ।

३ कळह, झगडा ।

४ मारने की क्रिया, सहार ।

५ तहस-नहस करने को क्रिया, बर्बाद करने की क्रिया ।

वि.— १ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—हरणू जिसा किकरा पघोर के बकरा हल्लां, जूघां जीत ग्रनंक रा रोडणा जोधार, । रोळै लैण लंक रा निसंक रा बिभाड़ राम, हाथा झोक रक रा लंक रा देणहार । —र. ज. प्र.

२ बिनाश करने वाला ध्वस करने वाला ।

३ चीरने वाला, फाडने वाला, बिदीर्ण करने वाला ।

४ संहार करने वाला, मारने वाला ।

उ०—१ नाळेरउ ग्रापट त्रिणी नकव, सूरउ सतेज सूरिज सक्ख । पाखरि पलाणि काळउ पहाड, वरिजाण चडिय वइरां बिभाड़ ।
—रा. ज. सी.

उ०—२ जुडै खग गेद जहां तळजोड, 'ग्रनावत' सीघउमेद ग्ररोड़ । वहै घज साबळ रोद बिभाड़, 'ग्रजावत' साह वखा ग्रखनाड ।
—सू. प्र.

उ०— ३ तुजी-ग्रठार ग्रसली तुरम, दीप धूप ग्रागळ दिया । सात्रव बिभाड रछक सुवप, कर खवास हाजर किया ।
—वखतो खिड़ियो

५ हानि करने वाला, नुकसान करने वाला ।

६ कळह करने वाला, झगड़ा करने वाला ।

७ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

८ पराजित करने वाला, हराने वाला ।

९ मारने वाला, वध करन वाला ।

१० तितर-बितर करने वाला, बिखेरने वाला ।

११ त्यागने वाला, छोड़ने वाला ।

रू. भे.—बिभाड़, वभाड, बिमाड ।

ग्रल्पा.—बिभाडो, बिभाडो

बिभाड़ण, बिभाड़णि बिभाड़णी बिभाड़णौ-वि.—१ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला।

२ हानि करने वाला, बिगाड़ करने वाला।

३ कलह करने वाला, झगड़ा करने वाला।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला।

५ संहार करने वाला, मारने वाला।

उ०—'सुरतौ' 'अनै' तणौ पण साचै, जुध कजि सदा सकतिवर जाचै। 'किरतावत' बुधसिंघ करारौ, गजा बिभाड़णि राठौ (डौ) गारौ। —रा. रू.

६ चीरने वाला, फाड़ने वाला, विदीर्ण करने वाला।

७ पराजित करने वाला, लूटने वाला।

६ तितर-बितर करने वाला, बिखेरने वाला।

१० त्यागने वाला, छोड़ने वाला।

रू. भे.—विभाडण, विभाडणि, विभाडणी, विभाडणौ।

बिभाड़णौ, बिभाड़बौ-क्रि. स.—नाश करना, ध्वंश, करना नष्ट करना।

उ०—वडवीर सधीर रेणपुर राजिद, घोम उजागर घाड़ि। पहाड़ ग्रोनाड बिभाड़ पघोरै, राहा चक्कर राड़ि। —मा. वचनिका

२ संहार करना, (मारना)।

उ०—१ उठै रिणछोड़ मुजाव ग्ररोड, घड़ा खळ वेवत सेल घमोड। बिभाड़त रोद घड़ा 'हळवाह', सराहत राह दुहू दळ साह। —सू प्र.

उ०—२ मतिवाळा घूमै नहीं, नह घायल बरड़ाय, बाळू सखी ऊ द्रगड़ौ, भड बापड़ा कहाय। बाळूं ऊ द्रगडौ, बसै भड, बापड़ा घाव ग्रंग सहै नह बिभाड़ै ग्ररि घड़ा। घणा जनवत रा, जोध बिहसै घणा, माडिसौ मही, मतिवाळा वेढीमणा। —हा. झा.

उ०—३ ऊगमण धराहू एम ग्राय, जुध कीध ग्राथमण धरा जाय। वाहै खग गोहिल दळ बिभाड़ दम लीघ खेड़ धर मारवाड़।

—सू प्र

उ०—४······बत्तीस ग्राखड़ी री निवाहणहार, वैरिया बिभाड़णहार, परभोम पचायण, घण दियण, जस लियण, कळायरो मोर, सूर्य भीनै गात, केसरिया पौसाग्व किया, पाच हथियारा बाधा ग्राण घोडै ग्रसवार हुवै छै। —रा. सा. स

३ तहस-नहस करना, बर्बाद करना।

४ हानि करना, बिगाड करना।

५ चीरना, विदीर्ण करना।

उ०—१ चौधारा लाखीक चाहतो, किलम पचाहर कीयां कर। राड़ बिभाड़ सोहियौ राजा, ग्ररक ज्यूंई दळ फाड ग्रर। —चावडदान बारहठ

उ०—२ जेज न कीघ ऊतावळ जूटौ, बावळ फौजां ही थाट बिभाड़ै। ग्रायौ काम महि थट ऊपर, चावळ वंस चुहाणां चाड़ै। —ठाकुर सूरतसिंह चहुवाण रो गीत

६ टुकड़े टुकड़े करना, काटना।

उ०—लोहा झट वाढत रोद लगस्स, 'बहादर' 'पीथळऊत' वंगस्स। 'राघावत' ग्राणदसिंघ दुबाह, बिभाड़त मुगळ बीजळ बाह। —सू. प्र.

७ तितर-बितर करना, बिखेरना।

उ०—सूर बाहर चढै चारणा सुरहरी, इतै जस जितै गिरनार ग्राबू। विहड खळ खींचिया तणा दळ बिभाड़ै, पोढियौ सेज रण भोम "पाबू"। —बा. दा.

८ मारना, वध करना।

उ०—१ जळ माहै जगदीस विढै मधकीट बिभाड़ै। बतळावै बेसासि, पछै दाणवा पछाड़ै। —पी. ग्र.

उ०—२ भगत थारा जिकै तिका दरसण भयौ, जमदगन तणा जगदीस तंना जयौ। बिभाड़ौ रेणका वडो कीघो विघन, जमदगिनि तणौ परमेस माडै जिगिन। —पी. ग्र.

उ०—३ बिभाड़ पचद्दणमाय ग्राय देस वेस रे, मझार घ्यांन कज सो वसै रदा महेस रै। सदा नमत ग्रोधराय पाय घू सुरेस रै, वदा नरेस ग्रान कूण जोड राघवेस रै। —र. ज. प्र.

६ युद्ध के सम्बन्ध मे कोई मोर्चा, किला, गढ या गाव जीत कर ग्रधिकार में लेना।

उ०—बिभाडै जादवा-कोट घरकीघ बस, सबळ ग्रद खाटिया भवा साफ। तप-वळी ग्रभनमा "माल" "गंगेव" तौ, ममारक पोकरण राव माफ। —गु. रू. बं.

१० मिटाना।

११ विजय करना, जीतना।

उ०—ग्रावै दाव कळहण दुनियान सोह ऊचरै, बडी घर राव रूका बिभाडी। उघारी राडि रजपून ग्रावेरि घरि, पहाडी कांमा लै भोग पाडी। —राव राजा फतैसिंघ नरूका कछवाहा रो गीत

१२ त्याग करना, छोड़ना।

उ०—गिरी न जळ थळ विकट गिर, ग्राघी रयण उजाड। भय बिभाड़ 'पाताल' वहै, पमगा वगा उपाड़। —जैतदान बारहठ

१३ सजा देना, दण्डित करना।

१४ पराजित करना, हराना।

उ०—बासठि हजार फौजा रा भाजणहार। छखंड खुरसाण रा विघूंसणहार। मैमंत हाथिग्रा रा मारणहार। पतिसाहा रा बिभाड़णहार। पतिसाहा रा पड़िगाहण। —र. वचनिका

बिभाड़णहार, हारौ (हारी), बिभाड़णियौ—वि०।
बिभाड़ियोड़ो, बिभाड़ियोड़ो, बिभाड़्योड़ो—भू० का० कृ०।
बिभाड़ीजणौ, बिभाड़ीजबौ—कर्म वा०।
बिभाड़णौ, बिभाड़बौ, बीभाड़णौ, बीभाड़बौ, बभाड़णौ, बभाड़बौ, बिब्भाड़णौ, बिब्भाड़बौ, बिब्भाडणौ, बिब्भाडबौ, बिभाडणौ बिभाडबौ—रू० भे०।

बिभाड़ियोड़ो–भू. का कृ.—१ नाश किया हुआ, ध्वस किया हुआ, नष्ट किया हुआ २ महार किया हुआ, मारा हुआ ३ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ. ४ हानि किया हुआ, बिगाड किया हुआ. ५ विदीर्ण किया हुआ ६ टुकडे-टुकडे किया हुआ, काटा हुआ. ७ तितर-बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ. ८ मारा हुआ, वध किया हुआ. ९ युद्ध के सम्बन्ध मे कोई मोर्चा, किला, गढ या गाव जीत कर अधिकार मे लिया हुआ १० मिटाया हुआ. ११ त्याग किया हुआ, छोडा हुआ. १२ दण्डित किया हुआ, सजा दिया हुआ. १३ पराजित किया हुआ, हराया हुआ. १४ विजय किया हुआ, जीता हुआ
(स्त्री. बिभाड़ियोडी)

बिभाड़ो—देखो 'बिभाड़' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—घट्टा घूम जोयणा अमदा वेग जोत घट्टै, घट्टै थाट सोयणा समदा लैण थाह। भलै धाडो गाहणी जला रो ज्यूं लोयणा भीनो, दोयणा बिभाड़ो हल्लै दळा रो दाह। —र हमीर

बिभाजक–वि. [स.] विभाजन करने वाला, बाटने वाला।

स. पु.—वह सख्या जिससे किसी दूसरी सख्या को विभाजित किया जाता है, भाजक। (गणित)

• **बिभाजण**—देखो 'विभाजन' (रू. भे)

बिभाजणौ, बिभाजबौ–क्रि. स.—१ अलग-अलग करना।
२ बंटवारा करना, हिस्से करना।
बिभाजणहार, हारौ (हारी), बिभाजणियौ वि०।
बिभाजिग्रोड़ो, बिभाजियोड़ो, बिभाज्योड़ो—भू० का० कृ०।
बिभाजीजणौ, बिभाजीजबौ—कर्म वा०।

बिभाजन–सं. पु. [स] १ विभाग या हिस्से करने की क्रिया या भाव।
२ पात्र, बरतन।
रू. भे.—बिभाजण।

बिभाजित–वि. [स.] जिसके विभाग, हिस्से या खण्ड किये गये हो।

बिभाजियोड़ो–भू का. कृ.—१ अलग-अलग किया हुआ. २ बटवारा किया हुआ, हिस्से किया हुआ।
(स्त्री. बिभाजियोड़ी)

बिभाज्य–वि. [सं] जिसका विभाजन करना हो या कर दिया गया हो, विभाजन करने योग्य।

बिभाडण, बिभाडणि, बिभाडणी, बिभाडणौ—देखो 'बिभाड़ण' (रू. भे.

उ०—कन्हराव कुळ तिलक, जोध जग जेठी 'आल्हव', 'धाडो' 'तीडो' 'सलख', वीर वैरी बिभाडण। —गु. रू. बं.

बिभाडणौ, बिभाडबौ—देखो 'बिभाडबौ, बिभाडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बिभाड गयद मयंद विध, महि सांमद इधकै मच्छरि। 'सूरउत' प्रगट नवनंद मिर, गरुग्रनि मेर गिरद सिरि।
—गु. रू बं.

उ०—२ जिम धायौ हणमत, द्रोण पब्बै उप्पाडण। जिम धायो भीमेण, दैत लंक मीर बिभाडण। —गु. रू. बं.

उ०—३ रूठो सीस विहारियां, दिल्लीपति सुरताण। खान पहाड बिभाडियौ, बैठा फिरै पठाण। —गु. रू. बं.

उ०—४ इग्यारै खोहणी, खान बारैह बिभाडै। ग्ररि उलाळ रिणताळ, गज्ज गयणाग अमाडै। —गु. रू. बं.

बिभाडणहार, हारौ (हारी), बिभाडणियौ—वि०।
बिभाडिग्रोड़ो, बिभाडियोड़ो, बिभाड्योड़ो—भू० का० कृ०।
बिभाडीजणौ, बिभाडीजबौ—कर्म वा०।

बिभाडियोड़ो—देखो 'बिभाडियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री बिभाडियोडी)

बिभाणौ, बिभाबौ–क्रि. अ.—१ चमकना, झनकना।
२ शोभा युक्त होना, शोभा पाना।
बिभाणहार, हारौ (हारी), बिभाणियौ—वि०।
बिभायोड़ो—भू० का० कृ०।
बिभाईजणौ, बिभाईजबौ—भाव वा०।
बिब्भाणौ बिब्भाबौ—रू० भे०।

बिभाभानु, बिभाभानू–स पु [स विभा+भानु] अग्नि, आग।
(अ. मा.)

बिभायोड़ो–भू का. कृ.—१ चमका हुआ, झनका हुआ. २ शोभा-युक्त हुवा हुआ, शोभा पाया हुआ।
(स्त्री. बिभायोडी)

बिभाव–स. स्त्री [स. विभाव.] १ रति या रस-विधान (साहित्य) मे भावो का शरीर या मन को किसी विशेष परिस्थिति मे पहुचाने वाली अवस्था विशेष।

वि. वि.—आलबन और उद्दीपन इसके दो भेद है।
२ देखो 'वैभव' (रू भे.)

बिभावस–सं. पु. [स] १ विवेक, विचार।
२ वाद विवाद।
३ साहित्य मे वह अवस्था जिसके कारण पात्र मे प्रदर्शित भाव पाठक या दर्शक अनुभव करता है।

बिभावना-स. स्त्री. [स.] साहित्य में एक अर्थालंकार विशेष इसमे कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति या किसी अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति या प्रतिबंध होने से भी कार्य की सिद्धि प्रदर्शित की जाती है।

वि. वि.—इसके छः भेद कहे गये हैं—(१) जिसमें कारण के अभाव में भी कार्योत्पत्ति हो. २ जिसमें कारण की अपूर्णता में भी कार्योत्पत्ति हो, ३ जिसमे प्रतिबधक तत्व के उपस्थित होते हुए भी कार्योत्पत्ति हो (४) जिसमे कारणान्तर से जिस कार्य का जो कारण हो, उसके अभाव मे किसी अन्य कारण के द्वारा कार्योत्पत्ति हो। (५) जिसमें विपरीत कारण से कार्योत्पत्ति हो। (६) जिसमे कार्य से कारण की उत्पत्ति हो।

बिभावरि, बिभावरी-सं. स्त्री. [सं. विभावरी] १ रात, रात्रि।

(अ. मा., नां. मा, ह. ना. मा.)

उ०—रज उबर अबर मग्ग चढं, भ्रम कोक बिभावरि सोक बढं। नभ देव विमान न की अवली, उडि गिद्धनि के गन सग चली।

—ला. रा

२ वेश्या। ३ चतुर व मुखरा स्त्री। ४ कुटनी, दूती स्त्री

५ पतिता स्त्री, पथभ्रष्ट स्त्री। ६ व्यभिचारिणी स्त्री।

७ पहली पत्नी के जिन्दावस्था में लाई गई दूसरी स्त्री, रखैल।

रू भे —बिभावरी।

बिभावरिस, विभावरीस-स पु [स विभावरी+ईश] १ चन्द्रमा, चान्द।

२ उल्लु घुग्घु।

बिभावसु बिभावसू-स पु [स विभा+वसु] १ वह वस्तु जो अधिक प्रकाशमय हो।

२ सूरज, सूर्य। (ना, मा, ह. ना. मा, क. कु बो.)

३ चान्द, चन्द्रमा।

४ अग्नि, आग। (ह. ना. मा.)

५ गले का आभूषण, हार।

६ आठ वसुओ मे से एक वसु, जो दक्षपुत्री वसु तथा धर्म के आठ पुत्रो मे से अन्यतम थे। ये व्युष्ट रोचि, आतप आदि के पिता व उषा के पति थे।

७ विवस्व का एक पुत्र।

८ युधिष्ठर को विशेषादर देने वाला एक ऋषि।

९ मुर नामक दैत्य का पुत्र, जो कृष्ण द्वारा मारा गया था।

१० नरकासुर के सात पुत्रो मे से एक।

११ सुप्रतीक ऋषि का एक भाई जो स्वभाव मे क्रोधी था उक्त महर्षि के शाप के कारण कछुआ हुए थे, और इसी अवस्था मे गरुड़ ने इसका भक्षण किया था।

१२ एक गधर्व, जिसने गायत्री से देवताओ का सोम छीन लिया था।

१३ वृत्र-इन्द्रयुद्ध के समय वृत्र-पक्ष का एक दानव जो कश्यप एव दनु के पुत्रों मे से एक था।

१४ द्युति का पति एक वसु। सोम से प्रीति के कारण द्युति ने इसका त्याग किया था।

१५ एक वैश्य, जिसे पूजापाठ के समय अमद्र घंटा का निनाद करने के कारण मृत्युपरान्त घटा के आकार का मुख प्राप्त हुआ था।

रू. भे.—बिभावसु, बिभावसू, बिभोवस, बिभोवसु।

बिभास स. पु [स.]-१चमक तेज, प्रकाश, दीप्ति।

२ सवेरे के समय गाया जाने वाला एक राग विशेष। (सगीत)

उ०-१ छतीस राग छाजती, निहाव धाव नोबती। भजे बिभास भैरवी, रळी कळी कळी रवं। —रा. रू.

उ०—२ दोय घडी रात लारली रहै सो ब्रह्म मुहूर्त्त। इण वेळा बिभास वेळावळ मे लाखो-फूलांणी गवीजै—प्रहु लाखो सु बिहांण। —बां दा. ख्यात

उ०—३ रात तौ इण रग मैं विदित हुई। इतरै परभात हुवौ। भैरु बिभास। विलावलि को वखत आयौ। गुणीजना राग झिलायौ। —पना

३ एक देवयोनि विशेष।

बिभासक-वि. [स] १ चमकने वाला, प्रकाशयुक्त, प्रकाशवान्।

२ चमकाने वाला, प्रकाश युक्त करने वाला।

बिभासणौ, बिभासबौ-क्रि. अ.—१ चमकना, झलकना।

क्रि. स.—२ चमकाना, झलकाना।

बिभासणहार, हारौ (हारी); बिभासणियौ—वि०।

बिभासिओड़ो, बिभासियोड़ो, बिभास्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिभासीजणो, बिभासीजबो—कर्म, भाव वा०।

बिभासा-स स्त्री [सं.] चमक, आभा, कान्ति, दीप्ति।

बिभासियोड़ो-भू. का. कृ.—१ चमका हुआ, झलका हुआ. २ चमकाया हुआ, झलकाया हुआ।

(स्त्री. बिभासियोड़ी)

बिंभिदु, बिंभिदुक-सं पु [स] एक दानशूर राजा, जिसने मेधातिथि काण्व नामक आचार्य को ४८ हजार गायें दान में दी थी।

बिभिखन—देखो 'विभीसण' (रू. भे)

बिभिन्न-वि. [स] १ तोड़ा या टूटा हुवा, छिदा या छेदा हुआ।

२ पृथक जुदा।

३ घायल, बिंधा हुआ, विद्ध।

४ उद्विग्न, विकल, हताश।

५ अनेक प्रकार का, कई प्रकार का।

बिभिसण—देखो 'बिभीसण' (रू. भे.)

बिभीखण—देखो 'बिभीसण' (रू. भे.)

उ०—१ धरी दधि पाज पहाडां धार, पदम्म अढार उतारै पार। पड़ै तद आंण बिभीखण पाय, लियौ जद राघव कंठ लगाय।

—ह. र.

उ०—२ नमो रण रावण-मारण-रांम, नमो किय सिद्ध बिभीखण काम। नमो कन्ह रूप निकंदण कंस, नमो ब्रजराज नमो जदुवंस।

—ह. र.

बिभीत-वि. (स्त्री. बिभीता) डरा हुआ, भयभीत।

सं. पु.—बहेडा या बहेडे का वृक्ष।

बिभीतक-सं. पु.-[सं. बिभीतकी, बिभीता] बहेडा या बहेडे का वृक्ष।

बिभीसण-वि. [सं बिभीषण] डरावना, भयावह।

सं. पु.—१ एक यक्ष।

२ रावण का कनिष्ठ भाई, जो ब्रह्मा के महामति विद्वान पुलस्त्य ऋषि का पुत्र विश्रवस् ऋषि एवं सुमालि राक्षस की लक्ष्मी देवी के समान रूपवती पुत्री कैकसी के तीन पुत्रों में से एक पुत्र।

वि. वि.—यह धार्मिक, स्वाध्यायनिरत, नियताहार एवं जितेन्द्रिय था। इसने अपने बडे भाई रावण को राम की पत्नी सीता को वापिस लौटाने का अनुग्रह करने पर रावण ने क्रुद्ध हो कर इसे अपमानित किया था। इसीलिए यह अपने अनल, संपाति,पनस और प्रमाति नामक राक्षस मित्रो के साथ राम की शरण में आगया था। इसने राम को रावण का वध करने के लिए अनेक परामर्श दिये एवं रावण के कार्यों व गुप्त सूचनाओ का परिचय राम को देकर युद्ध मे सहायता प्रदान की थी। इसने ब्रह्मा की अनन्य भक्ति की थी। शैलूष गन्धर्व की पुत्री सरमा इसकी पत्नी थी जिसके गर्भ से कला नामक पुत्री उत्पन्न हुई थी। रावण वध के बाद राम ने इसे ही लंका का राजतिलक किया था।

३ बिभीषणवंशीय लंका का एक नरेश जिसे पाण्डवो ने अपने दक्षिण दिग्विजय के समय परास्त किया था।

रू भे.—बब्भीखण, बब्भीछण, बब्भीसण, बभीख, बभीखण बभीसण बब्भीखण, बब्भीछण, बब्भीसण, बिभीखण, बिभीसण, बीभीछन, भभीखण, भभीसण, भब्भीखण, भब्भीसण, वब्भीखण, वब्भीसण, वभीखण, वभीसण, विभिखण, विभिसण, विबीखण, विबीसण, विभिखण, विभिसण।

अल्पा.,—वब्भीखणो।

बिभीसणा-सं. स्त्री. [सं. बिभीषणा] कुमार कार्त्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम।

बिभीसिका-सं. स्त्री. [सं. बिभीषिका] १ भय प्रदर्शन।

२ भयंकर बात या भयानक कांड।

बिभु, बिभू-वि. [सं. बिभु] १ जो सर्वगत एवं सर्वव्यापक हो।

२ बहुत बडा, महान्।

३ अटल, दृढ।

४ बलवान्, शक्तिशाली।

५ आत्मसंयमी, जितेन्द्रिय।

सं. पु [सं. बिभु] १ उड़ायी तरल पदार्थ विशेष।

२ आकाश, व्योम।

३ ब्रह्मा।

४ भगवान् श्रीविष्णु।

५ शिव, महादेव।

६ प्रभु, ईश्वर, स्वामी।

उ०—नमो अग्राहधारु स्रवन पुट सारु सत नमो, नमो लोकाध्यक्षा-भ्रत विजयलक्ष्या पत नमो। नमो बिस्वाधारी अनल अघहारी बिभु नमो, नमो भूभूरव स्व प्रवन सुत विस्वभर नमो। —ऊ. का.

७ नौकर, सेवक।

८ काल, समय।

९ सौवीर देश के राजा शकुनि का भाई जो अपने चार भाइयों सहित भीम के साथ हुए रात्रि युद्ध मे मारा गया था।

१० रैवत मन्वन्तर का इन्द्र।

११ स्वायंभुव मन्वन्तर मे हुआ भगवान् श्रीविष्णु-अवतार।

१२ स्वायंभुव मन्वन्तर के तुषित देवो मे से एक।

१३ साध्य देवो मे से एक।

१४ ऋषभदेव के पुत्र भरत के वंशज प्रस्ताव और नियुत्सा के पुत्रो मे से एक जिसकी पत्नी का नाम रति और पृथुसेन का पिता था।

१५ यज्ञदेव एवं दक्षिणा के पुत्रो मे से एक देव।

१६ कश्यप एवं दनु के पुत्रो मे से एक दानव।

१७ एक राजा जो सुविभु का पिता एवं सत्यकेतु का पुत्र था।

१८ वरेण्य नामक ऋषि, जो भृगु वारुणि का पुत्र था।

१९ भग एवं सिद्धि के पुत्रो मे से एक भव देव।

२० जिताजित देवो मे से एक देव।

२१ अभिताप देवो मे से एक देव।

२२ मगधवंशीय महाबाहु राजा का नामान्तर।

२३ स्वायंभुव मनु के एक पुत्र का नाम जिसे कही-कही पर स्वयंभुव मनु का पौत्र भी मानते है।

२४ नृप, राजा। (ह. ना. मा)

रू. भे.—बिभु, बिभू।

बिभूखण— देखो 'बिभूसण' (रू. भे.)

उ०—१ कापड माल प्रसंख हेम मिरण रयण विभूखण। परिमळ चंदन अगर, पांन कप्पूरह प्रस्सण। —गु रू. ब.

उ०—२ रग राग विनोद विलासरय बहुय, चडि चाडति सुंदर मिंदरयं सहुयं। मिण माणक कुंदण ककणमं दिपतं, मोताहळ हार बिभूखणय वगित। —गु रू. ब.

बिभूखणी, बिभूखबो—देखो 'विभूसणी, विभूसबो' (रू. भे)

बिभूखणहार, हारो (हारी), बिभूखणियो—वि०।

बिभूखियोड़ो, बिभूखियोड़ो, बिभूख्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिभूखीजणी, बिभूखीजबो—कर्म वा०।

बिभूखा—देखो 'विभूसा' (रू भे.) (अ. मा., ना. मा., ह. ना. मा)

बिभूखित—देखो 'विभूसित' (रू. भे.)

बिभूखियोड़ो देखो 'विभूसियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री बिभूखियोडी)

बिभूत—देखो 'विभूति (रू भे.)

उ०- असटंग बिभूत मनाह उपावे, लोह छतीस सिधार लिय। सिध बारह पथक तेरह साखा, 'केहरि' गोरख रुप किय। —गु. रू. ब.

बिभूतसिद्ध, बिभूतसिध, बिभूतासिद्ध, बिभूतासिध—स. पु. [सं. विभूति+सिद्ध] १ शिव, महादेव।

२ सिद्धिप्राप्त महात्मा।

३ एक लोक देवता विशेष।

वि. वि --यह बिभूतासिद्ध पश्चिमी राजस्थान के चारणवासी नामक गाव का निवासी सोलकी राजपूत था। यह जगल मे रवड (भेड व बकरियो का झुण्ड। चराया करता था एक बार जगल मे इस 'पेणो' सर्पने डस लिया। जिसमे यह मर गया। मरने के बाद इसने अपनी बहन को ससुराल से पीहर पहुचाई थी और भी कई चमत्कार बताये थे। इस कारण इसे देवता मान कर पूजा जाने लगा। बीकानेर डिवीजन के नोहर सरदार शहर और महाजन के क्षेत्र मे इसकी बडी मान्यता है। साप के काटे जाने पर घायल को इसके स्थान पर ला कर ढोल वादन के साथ उसकी मनौती मनाते है व रात्रि जागरण देते है जिसमे इसका सिरलोका गाते है। रेवड के ग्वाले एक गीत भी गाते है जिसमे अकाल मृत्यु और चमत्कारो का वर्णन एव प्रशसा है।

रू. भे.—बभूतसिद्ध, बभूतसिध, बभूतासिद्ध, बभूतासिध, भभूतासिद्ध भभूतासिध, वभूतासिद्ध, वभूतासिध।

बिभूति—स. स्त्री. [सं विभूतिः] १ बडा होने की अवस्था, बडप्पन।

२ स्वस्थ होने की अवस्था,।

३ समवृद्धि, बढोतरी।

४ वैभव, ऐश्वर्य।

५ धन, दौलत, सम्पत्ति।

६ अधिकार, प्रभुत्व।

७ कान्ति, दीप्ति, चमक।

८ भगवान् श्रीविष्णु का नित्य और स्थायी माना जाने वा ऐश्वर्य।

९ दिव्य या अलौकिक शक्तिया, जिसके अन्तर्गत अणिमा, महिः गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व, अ आठ सिद्धिया मानी जाती है।

उ०—निमो निमो नाराइणा, भगवत निमो बिभूति। तुम्ह त वसदेव तणा, कुण जाणे करतूति। —पी.

१० शिव और शैव आदि लोगो के शिर व शरीर पर ल जाने वाली वह राख या भस्म जो यज्ञादि के बाद बचती है।

उ०—कानै मुद्रा कनक की, आसण चीता चरम। लगाय बिः तप जप करे, ते साधै सिव धरम। —प. च

११ भस्मी या राख।

उ०—१ जगत बिदीत करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल। बिभूति मळै अगछाळा, तू जन गुढिया खोल। —मं

उ०—२ बदन सरोज सदन की सोभा, ऊभी जोऊ कपोळ। से नाद बिभूति न बटवा, अजु मनी मुख खोल। —मं

१२ सिद्ध पुरुषो के अग्निकुण्ड (धूणी) की वह भस्मी जो र निवारणार्थ शरीर पर लगाई जाती है।

१३ राम का एक दिव्य अस्त्र जो विश्वमित्र ने दिया था।

१४ चमत्कार युक्त पुरुष।

१५ मूर्खो के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला एक व्यग्य एव सम्बो सूचक शब्द।

१६ एक प्रकार का शारीरिक क्षुद्र रोग जिसमे शरीर पर हलके भू भूरे दाग या चिन्ह बन जाते है। (शुभ-अशुभ)

१७ विश्वामित्र का एक ब्रह्मवादी पुत्र।

रू. भे.—बभूत, बभूति, बभूती, बिभूत, बिभूति, बिभूती, भः भवूति, भवूती, भभूत, भभूति, भभूती, वभुत, वभूत, वभूति, वभू विभूत, विभूती।

बिभूतिद्वादस, बिभूतिद्वादसी—स. स्त्री. [सं विभूति+द्वादशी] प्रत्ये शुक्ल पक्ष की द्वादशी को किया जाने वाला व्रत विशेष।

बिभूतिमांन, बिभूतिवांन—वि [स. विभूतिमान] १ शक्तिशाली, बलवा

२ वैभवशाली, ऐश्वर्ययुक्त।

३ धनी, सम्पत्तिशाली।

४ कान्तियुक्त, चमकीला।

विभुतिसिद्ध, विभुतिसिध—देखो 'विभूतासिद्ध' (रू भे.)

विभूती—देखो 'विभूति' (रू. भे.)

उ०—पीनाकी चक्रधारिया ज्यू प्रेम ओपै तेगा पाणा, गणा मध्य देवां बीचा राजवं उपेग। विभूति अग पीतपट सुधारै जेही बनौं, सभूनाथ माधव ज्यूं दुवो इद तेग।

—महाराज भगतराम हाडा रो गीत

विभूती—वि.—१ राख या भस्मी लगाया हुआ।

२ देखो 'विभूतासिद्ध'।

रू. भे.—भभूतो।

विभूवस, विभूवसु—सं. पु.—जिन ऋषि के पिता, एक ऋषि।

विभूसण—सं. पु. [स. विभूषणम्] १ अलकार आभूषण, जेवर।

२ अलंकृत, या आभूषित करने की क्रिया।

विभूषणकरता, विभूसणकार—सं. पु. [स. विभूषण+कर्ता] १ आभूषण जेवर आदि बनाने वाला, स्वर्णकार।

उ०······पाडकार तुडिकार आरामकार सास्त्रकार मैत्रकार सुद्धकार उद्दीसकार धूतिकार रूपकार करणीकार रसकार क्षीरकार शस्यकार वस्त्रकार विभूसणकार पुंतार अस्वसिक्षाकार रथकार साव्यकार······। —व. स

वि —अलकृत या आभूषित करने वाला।

विभूसणौ, विभूसबौ—क्रि: अ.—१ अलकृत होना, शोभित होना।

क्रि. स.—२ अलकृत करना, शोभित करना।

विभूसणहार, हारौ (हारी), विभूसणियौ—वि०।

विभूसिग्रोड़ो, विभूसियोड़ो, विभूस्योडो—भू० का० कृ०।

विभूसीजणौ, विभूसीजबौ—कर्म, भाव वा०।

• **विभूखणौ, विभूखबौ**—रू० भे०।

विभूसा—स. स्त्री [सं विभूषा] १ शोभा, सुन्दरता।

२ शोभित होने वाली स्त्री, सुन्दरी।

रू. भे.—विभूसा, विभूखा।

विभूसित—वि. [स. विभूषित] (स्त्री. विभूसिता) १ अलकृत, सुशोभित।

२ सजाया हुआ, सुसज्जित।

३ कान्ति युक्त, आभा युक्त।

उ०—महाराय स्रीकल्याणमल जो जन्म महोच्छव मांगळीक वधावणा कराया। महाराजकुमार स्री दळपतिजी दिन-दिन स्वेत पक्ष चद्रमा री ज्यूं परिवमवत होना पूर्णिमा रे चद्रमा री परिसकळ कळा भरित विभूषित गात्र नीपना छै। —द. वि

रू. भे.—विभूखित।

विभूसियोड़ो—भू. का कृ १—अलंकृत हुवा हुआ २ अलकृत किया हुआ, शोभित किया हुआ।

(स्त्री. विभूसियोडी)

विभेद—स पु [सं.] १ विभिन्नता आदि प्रकट करने वाला तत्व, अन्तर, फर्क।

२ अनेक भेद-प्रभेद।

३ अश, खण्ड, विभाग।

४ काटने की क्रिया, छेदने या तोडने की क्रिया।

विभेदक—वि. [स.] १ खण्डन, छेदन या भेदन करने वाला।

२ अन्तर, फर्क, विभिन्नता आदि प्रकट करने वाला।

विभेदण—स. पु. [स. विभेदन] १ अन्तर, फर्क या विभिन्नता प्रकट करने की क्रिया।

२ अनक भेद-प्रभेद करने की क्रिया।

३ अश, खण्ड या विभाग करने की क्रिया।

४ काटने छेदन या तोडने की क्रिया।

वि (स्त्री विभेदणी, विभेदिणी) १ अन्तर, फर्क या विभिन्नता प्रकट करन वाला।

२ अनेक भेद-प्रभेद करने वाला।

३ खण्डन या विभाजन करने वाला।

४ काटने वाला, छेदने वाला, तोडने वाला।

रू. भे.- विभेदण, बिभेदन।

विभेदणौ, विभेदबौ—क्रि स. [स विभेदनम्] १ अन्तर, फर्क या विभिन्नता प्रकट करना।

२ अनेक भेद-प्रभेद करना।

३ खण्डन या विभाजन करना।

४ काटना, छेदना, तोडना।

५ घुमाना, धमाना।

६ ईर्ष्या उत्पन्न करना।

विभेदणहार, हारौ (हारी), विभेदणियौ—वि०।

विभेदिग्रोड़ो, विभेदियोड़ो, विभेद्योड़ो—भू० का० कृ०।

विभेदीजणौ, विभेदीजबौ—कर्म वा०।

विभेदियोड़ो—भू. का. कृ—१ अन्तर फर्क या विभिन्नता प्रकट किया हुआ. २ अनेक भेद-प्रभेद किया हुआ. ३ खण्डन या विभाजन किया हुआ. ४ काटा हुआ, छेदा हुआ, तोडा हुआ. ५ घुमाया हुआ धमाया हुआ ६ ईर्ष्या उत्पन्न किया हुआ।

(स्त्री. विभेदियोडी)

विभेदी—देखो 'विभेदक'।

विभोग—स. पु.—१ राज्य कर।

२ जागीरदारों द्वारा कर स्वरूप लिया जाने वाला कृषि की उपज का कुछ निश्चित अंश, हिस्सा, हासिल।

३ प्रेमपूर्ण आमोदप्रमोद, विलास।

उ०—राति दिवस रगै रमै, नवरस भोग विभोग। सारीखी जोड़ी मिळी देव नर्णा सजोग। —ढो. मा.

रू भे.—बीभोग।
अल्पा.—बिभोगी।

बिभोगी—देखो 'बिभोग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—देलवाडौ बिभोगी लेतौ सु नहीं लै, दाण लेतौ सु लेसी।
—नैणसी

बिभोर-वि [स] १ आनन्द मग्न, लीन।
२ मदमस्त, मत्त।
३ विकल, विह्वल, व्याकुल।

बिभोवस, बिभोवसु—देखो 'विभावसु' (रू. भे.)

बिभौ—देखो 'वैभव' (रू. भे.)

उ०—१ जर जवहर घर जोरुवा, लूटांणी सम लाज। मेळौ नीमडियौ बिभौ, सुण चडियौ महाराज। —रा. रू.

उ०—२ हिंदुवै छात लायौ हियै, वडो जतन पायौ विभै। नवकोट मोच मिटियौ नरा, इसी भांत मिळनां 'अभै'। —रा. रू.

३ परसी कमधा मधुपुरी, जमण किया मिनान। वूठा भड़ मडै विभै करै उमडै दान। —रा. रू.

उ०—४ दसरत्थ विभै इम नजर दीध, कामना पुत्र घरि जिगन कीध। आविया नाग नर सुर अमाप, आविया ब्रह्म सिव विसन आप। —सू. प्र

उ०—५ विभचार माय पायौ विभौ, जाता जुगा न जावसी। नित स्वाद लियौ पर नार मे, याद घणा दिन आवसी। —ऊ. का

उ०—६ दोजै जोड किसौ नृप दौलत, राज विभौ अवरेख। सात सुखा भुगतै दिन साजा, वासव हूत विसेख। —र. रू.

उ०—७ इद्र प्रभत इद्रह विभौ, इंद्र छभा अंनाण। इद्र समोवड रट्ठवड, हिंदूवै सुरताण। —गु. रू ब

उ०—८ हीर चीर हेम तार घडी मैं विराण होसी, लाखा द्रव्य विभौ सबै हाथी घोडा लाठ। गाम धाम भूठा जागै धर्ष भूठा लागा नरा, गार रा मिरग रै पड़ी वायरा री गाठ।—ओपो आढौ

विभ्रंस-स. पु [स विभ्रंश] १ अवनति, पतन।
२ बिनाश, विध्वस।
३ हानि, नुकसान।
४ ऊंचा कगार।
५ पहाड के शिखर पर का चौरस मैदान।

विभ्रंसण-स. पु. [स. विभ्रंशन्] १ विनाश करने की क्रिया, विध्वस करने की क्रिया।
२ हानि करने की क्रिया, नुकसान करने की क्रिया।
३ तहस-नहस करने की क्रिया, बर्बाद करने की क्रिया।

विभ्रंसणौ, विभ्रंसबौ-क्रि. स. [स. विभ्रश] १ विनाश करना, विध्वस करना।
२ हानि करना, नुकसान करना।
३ तहस-नहस करना, बर्बाद करना।
४ संहार करना, मारना।
विभ्रंसणहार, हारौ (हारी), विभ्रंसणियौ—वि०।
विभ्रंसिओड़ौ, विभ्रंसियोड़ौ, विभ्रंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विभ्रंसीजणौ, विभ्रंसीजबौ—कर्म वा०।

विभ्रंसियोड़ौ-भू. का. कृ—१ विनाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ. २ हानि किया हुआ, नुकसान किया हुआ. ३ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ. ४ सहार किया हुआ, मारा हुआ।
(स्त्री. विभ्रंसियोड़ी)

विभ्रम-सं. पु [स. विभ्रमः] १ घूमने की क्रिया, भ्रमण, चक्कर।
२ भूल, गलती।
३ उतावलापन, उद्विग्नता।
४ भ्रम, भ्रान्ति, शक, सन्देह।

उ०—१ उमा कह्यौ इम ईस नै, उपज्यौ विभ्रम एह। किंकरि ऊपर म्हैर कर, संकर! मेट संदेह। —र. रू.

उ०—२ भूपति हसं देखि सिघभेसा, असि कसि बाग कीध आदेसा हसतौ न्रप देखै मिध हसियौ, विभ्रम ताम न्रपति उर वसियौ।
—सू. प्र.

उ०—३ करि सनान ध्रम करै, धरै अमध्यान स्यामध्रम। काया जोग अनेक, भोग माया तजि विभ्रम। —सू. प्र.

५ वह क्रिया जिसमे काम वासना उत्प्रेरित हो, प्रीतिद्योतक हाव-भाव।
६ आश्चर्ययुक्त, चकित।

उ०—१ गज कोटि राज द्वारौ, मिंदर उतग महल अटाळा। सपेख धाम वाम, विसकमा विभ्रम भवेत। —गु. रू. ब.

उ०—२ विभ्रम विमोह चित्त, सपत तुरग ताणिय सविता। वासर विसाळ लहिय, नक-वाणौ मगळ भवण। —गु. रू. ब

७ संयोग शृंगार के प्रसग मे स्त्रियो का एक हाव-भाव जिसमे वह कभी क्रोध, कभी हर्ष प्रकट करती है और उत्सुकतावश उलटे-पुलटे वस्त्राभूषण पहन लेती है (साहित्य)

उ०—चित्रमालि चउमास रहे लहै गुरु आदेसा, कोसि कामिनी न्रत्य करइ सुर सुदरी जैसा। हाव भाव विभ्रम करइ क् भयै निठुर निटोल, पूरब प्रेम सभाल प्रियु तू मान हमारौ बोल कै।
—स. कु.

रू. भे —विभ्रम्म।

विभ्रमणौ, विभ्रमबौ–क्रि. अ. [स. विभ्रमण] १ घूमना, चक्कर लगाना।

२ चितातुर होना, चिंतित होना।

उ०—भूपति आयो पुर विभ्रमियं, सारगविडै मिळै तिण समियं आसीवाद करै इम अक्खै, राजा किण कारण भ्रम रक्खै।

—सू. प्र.

३ भूल या गलती मे आना।

४ भ्रमित होना, शकायुक्त होना।

५ आश्चर्ययुक्त होना, चकित होना।

६ कामवासना की ओर उत्प्रेरित होना।

७ उतावला या उद्विग्न होना।

क्रि. स.—८ भ्रमित करना, शकित करना।

९ आश्चर्यान्वित करना, चकित करना।

१० चितातुर करना, चिंतित करना।

११ गल्ती करना, भूल करना।

विभ्रमणहार, हारौ (हारी), विभ्रमणियौ—वि०।

विभ्रमिओड़ौ, विभ्रमियोड़ौ, विभ्रम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विभ्रमीजणौ, विभ्रमीजबौ—कर्म, भाव वा०।

विभ्रम्मणौ, विभ्रम्मबौ—रू. भे.।

विभ्रमा–स. स्त्री.—१ आभा, कान्ति, शोभा, सुन्दरता। (अ. मा, ना.-मा., ह. ना. मा.)

२ बुढापा, वृद्धावस्था।

विभ्रमियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ घूमा हुआ, चक्कर लगाया हुआ. २ चितातुर हुवा हुआ, चिंतित हुवा हुआ. ३ भूल या गल्ती मे आया हुआ. ४ भ्रमित हुवा हुआ, शकायुक्त हुवा हुआ. ५ आश्चर्यान्वित हुवा हुआ, चकित हुवा हुआ. ६ कामवासना की ओर उत्प्रेरित हुवा हुआ. ७ उतावला या उद्विग्न हुवा हुआ ८ भ्रमित किया हुआ, शंकित किया हुआ. ९ आश्चर्यान्वित किया हुआ, चकित किया हुआ. १० कामवासना की ओर उत्प्रेरित किया हुआ. ११ चितातुर किया हुआ, चिंतित किया हुआ. १२ गल्ती किया हुआ, भूल किया हुआ।

(स्त्री. विभ्रमियोड़ी)

विभ्रम्म—देखो 'विभ्रम' (रू. भे)

उ०—पडै पूर लोह महा जुद्ध मोह। घोरं घार तम्म, सविता विभ्रम्म। —ग रू. ब

विभ्रम्मणौ, विभ्रम्मबौ—देखो 'विभ्रमणौ, विभ्रमबौ' (रू भे)

विभ्रम्मणहार हारौ (हारी), विभ्रम्मणियौ—वि०।

विभ्रम्मिओड़ौ, विभ्रम्मियोड़ौ, विभ्रम्म्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विभ्रम्मीजणौ, विभ्रम्मीजबौ—कर्म, भाव वा०।

विभ्रम्मियोड़ौ—देखो 'विभ्रमियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. विभ्रम्मियोड़ी)

विभ्रस्ट–वि. [स. विभ्रष्ट] १ पथभ्रष्ट हुवा हुआ, पतित।

२ नष्ट किया हुआ, ध्वस्त।

विभ्रांत–वि. [स] १ घूमाहुआ, चक्कर खाया हुआ।

२ भ्रमित हुवा हुआ, शंकित।

३ चितातुर, चिंतित।

४ आश्चर्यान्वित, चकित।

५ उद्विग्न।

विभ्रांतसील–वि. [स. विभ्रान्त+शील] १ चितातुर, खिन्नचित्त व्याकुल।

२ नशे मे चूर।

स. पु. [स. विभ्रान्त+शीलः] १ बन्दर, बानर।

२ सूर्य मण्डल।

३ चन्द्रमण्डल।

विभ्रांति–स. स्त्री. [स. विभ्रान्ति] १ भ्रमण, चक्कर।

२ भूल, गलती।

३ सौन्दर्य, शोभा।

४ शका, शक, सन्देह।

५ भ्रान्ति, धोखा।

६ घबराहट, उद्विग्नता।

विभ्राज–स. पु. [स.] १ ययाति वंशज एक राजा।

२ सुकृत या सुकृति राजा का पुत्र एक राजा।

३ अनघ नामक पाचाल देश का राजा, जो ब्रह्मदत्त राजा का पिता था।

विभ्राजसौरय–स. पु. [स. विभ्राजसौर्य] एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नामान्तर।

विमंत्री–स. पु–आर्या गीति या खधाण (स्कंधक) का एक भेद विशेष।

उ०—नद भइ भणि नाम मेघ सारग शिव बंभह, वारण वरण वखाणं नील मदनह ताटकह। सेखर सरपिणि सोइ गगन गिणि सरभ विमंत्री, खीर नयर नर निधि भाखि निहल इण भती।

—पि. प्र.

विमगौ–वि.—१ अद्भुत, अनोखा।

२ बिना मागा हुआ।

उ०—मुगा नाग नर देव सकोई, विमगौ दान अछूनी वात। कोवी किणी न कोई करसी, 'पदम' जिसी लँणायत पात।

—पदमसिंघजी रौ गीत

बिमची-स. स्त्री.—एक प्रकार का रक्त विकार का रोग विशेष।

रू. भे.—**बिवची**।

बिमणउ, बिमणौ-स. पु.—१ एक प्रकार का सुगन्धित वृक्ष विशेष।

२ देखो 'दूणौ' (रू. भे.)

३ देखो 'विमन' (रू भे.)

उ०—पहिली होय दयामणउ, रवि आथमणउ जाइ। रवि ऊगइ विहसइ कमळ, खिण इक बिमणउ थाइ। —ढो. मा.

बिमता-सं स्त्री.—१ आपत्ति, विपत्ति।

२ नम्रता, धैर्य।

[स. वि=रहित+रा. मता=धन, दौलत] ३ कंगाली, गरीबी, निर्धनता।

उ०—**बिमता** का बाग, भूतू का भंडार, सिकोतरियू का सहायक, डाकणिया का दास, रोग का रजवाड़ा, सोग की सिरकार, कायरा की कुटी, चोरू का आधार। —दुरगादत्त बारहठ

बिमति-वि. [सं.] बुद्धीरहित, मूर्ख।

बिमद-वि [स] जो मतवाला न हो, मद-रहित।

स पु —सत्यसन्ध राजा।

बिमधु-स. पु. [स. वि=विशेष+मधु=मीठा] अमृत, पियूष।

उ०—लछी रूप हरि भगति, धरम हिंदू धानंतर। वेद चंद्र मिण किया, भूम रंभा बळ कुजर। धेन पूज सुरधेन, **बिमधु** चरणांम्रत वदा। धनुख मास न्रप कळप, सख जस मद विरदा। —रा रू

वि.—१ विशेष मीठा।

[स वि रहित+मधु=मीठा] २ कड़वा।

[स. विमुग्ध] ३ अज्ञानी, मूर्ख।

४ विशेष मोहित, उन्मत्त।

५ विकल, व्याकुल।

[स विमुद] ६ उदासीन, खिन्न।

बिमन-वि.—१ उदासीन, खिन्नचित।

२ व्याकुल, उद्विग्न।

३ चिंतित, दुखी।

४ क्रूर क्रुद्ध, निर्दयी।

रू. भे—**बिमन, बिमनौ, बिमन्न, बिमन्नौ, विमणउ, बिमणौ, विमनौ, विमन्न, विमन्नौ**।

बिमनुस्या-स स्त्री. [स विमनुष्या] कश्यप एवं दनु की कन्याओं मे से एक कन्या, अप्सरा।

बिमनौ, बिमन्न, बिमन्नौ—देखो 'विमन' (रू. भे)

बिमर—१ देखो 'विवर' (रू भे)

उ०—१ पछै देवी सैंणी चारणी दिल्ली आई तरै मालदे ही देवी साथै दिल्ली आयौ, पछै देवी सैंणी **बिमर** मांहि पैंठी तठै मालदे ही बिमर माहै साथै पैंठो। —नैणसी

उ०—२ पखै गोरखनाथ, कमण जाइ पैसे **बिमर**। पखै राम दहकध, कमण वेधै एकै सर। —गु. रू. बं.

उ०—३ उतराधो वाउ वाजियौ। हेमत रा बरफ ऊपडिया टाढौ टमकियौ, आळौ पडण लागौ। जिकै धरती रा धणी पताळ वासी भुयंग नै घणा रा घणी दौलतवन्त अौ विन्है एकै वग हूता सु धरती रौ पुड भेद नै **बिमरै** पैठा। उठै रहण लागा। —रा सा. स.

उ०—४ तै 'भाण' तणौ अवमाण-सिद्ध, वडा जुद्ध डोहण **बिमर**। जोधार पखर लक्ख जिसौ, निरौ एक पक्खर निडर।

—गु रू ब.

उ०—५ 'अमरसी' **बिमर** पैठो अराण, 'रासाउत' साधक रूक पाण। साहिब-खान 'नाहर' सुजाव, घण झूंझो वाहे सत्रां घाव।

—गु. रू. ब.

उ०—६ बैरी हुओ **बिमर** मे बैठो, पल लागी सूतो सुख पोढ। थाको गुरड डोकरो थू थयो, ऊपर लीवी रजाई ओढ।

—टीकमदास

२ देखो 'विमळ' (रू. भे)

उ०—रुधवमी राठौड हर, तेरह मास कमध। **बिमर** सकत्ती वरणवा, बचै रूपक बध। —गु. रू. ब.

बिमरद-स. पु [स. विमर्दः] १ अच्छी तरह मलने, मसलने की क्रिया, उबटन करने की क्रिया।

२ छूने की क्रिया, स्पर्श।

३ रगड़ने या रौंदने की क्रिया।

४ युद्ध, सग्राम।

५ नाश या बरबादी।

६ मारने, सहार करने की क्रिया।

७ कष्ट देने की क्रिया, दुःख देने की क्रिया।

८ खग्रास नामक ग्रहण का नामान्तर।

९ वह व्यक्ति जिसकी मूत्रेन्द्रिय बेकार हो या नही भी हो, नपुंसक हिजड़ा।

१० सामर्थ्यहीन व्यक्ति।

११ किरात राजा।

१२ सूर्य-चन्द्र समागम।

रू. भे—विमरद।

बिमरदक-वि [स. विमर्दकः] १ मर्दन करने वाला, मसलने वाला, उबटन करने वाला।

२ रगडने या रौंदने वाला, कुचलने वाला।

३ नाश या बरबाद करने वाला।

४ मारने वाला, संहार करने वाला ।

५ युद्ध करने वाला, सग्राम करने वाला ।

सं. पु —चन्द्र-सूर्य ग्रहण या समागम ।

विमरदण-सं. पु. [स. विमर्दन:] १ मलने, मसलने या उबटन करने की क्रिया ।

२ छूने या स्पर्श करने की क्रिया ।

३ रगडने, रौंदने या कुचलने की क्रिया ।

४ युद्ध, सग्राम ।

५ नाश, बरबादी ।

६ मारने या संहारने की क्रिया ।

७ दुःख या कष्ट देने की क्रिया ।

विमरदित-वि. [स विमर्दित] १ मला हुआ, उबटन किया हुआ ।

२ छूआ हुआ, स्पर्श किया हुआ ।

३ कुचला या रौंदा हुआ ।

४ युद्ध किया हुआ, सग्राम किया ।

५ नाश किया हुआ, बरबाद किया हुआ ।

६ मारा हुआ, संहार किया हुआ, मृत्त ।

७ पीड़ित, दुःखी ।

देखो 'विमरद' (रू भे.)

विमरस-स. पु. [स. विमर्श] नाटक की पाच सन्धियो मे से एक सन्धि विशेष, मुख्यफल का उपाय गर्भसन्धि की अपेक्षा अधिक उद्भिन्न होता है किन्तु शापादि के कारण अन्तराय युक्त होती है ।

वि. वि.—इस सन्धि के तेरह अग अर्थात भेद होते हैं जो निम्न-लिखित है—अपवाद, सकेत, व्यवसाय, द्रव, द्युति, शक्ति, प्रसग, खेद प्रतिषेध, विरोध, प्ररोचना, आदान, और छादन ।

विमरीर-वि.—जबरदस्त, महान्, शक्तिशाली ।

उ०—१ गाजै घण वाजै त्रबागळ, दुगम रूप विमरीर सफै दळ । हरख सनेह करै भ्रम हित नूं, पटण राज दीव प्राहित नू —सू. प्र

उ०—२ अति फूल गहमह आवळा, विमरीर भड रिण बावळा । खग धार आछट है खुरा, घर भोगवता मुरधरा । —सू. प्र

उ०—३ इम कहै पौरस ऊफणं, विमरीर झळहळ दळ वर्णं । चढि तुरग थाट चलाविया, इम कहो गढ पुर आविया । —सू प्र

उ०—४ बह मडै गजा मेघाडबर, कठठै आराबा सकळ । तन ससत्र कसै चढिया तुरा, दुगम सूर विमरीर दळ । —सू. प्र.

विमळ, विमल-वि. [स. विमल] १ मल रहित, निर्मल ।

२ सफेद, साफ, स्वच्छ, चमकीला, उज्जवल ।

उ०—जिण हिज वार तेजमणि जादव, घर बुगलाण पुरी नव लाघव । इम निसि सुकळ वाग नृप आए, विमळ छत्रका साज बणाए । —सू प्र.

३ जिसमे आर-पार देखा जा सकता हो, पारदर्शक ।

४ जिसमे कोई दोष न हो दोष रहित, निर्दोष ।

५ सुन्दर, मनोहर, शोभायुक्त ।

उ० —१ अधरा हसणां सूं उदै, विमळ हास दुतिवत । जो सध्या सू चद्रिका, फैली जाण फबंत । —बा. दा.

उ०—२ मूंछा वाय फुरूकिया. रसण भळूकै दत । सूनो सैना थोकरै हूं बळिहारी कत । कत बळिहारी लै मनाविय कामणी । धरै मन धू-धड साधि सकळा धणी । पाड़ि सत्र लोहड़ा थोकरै पोढियो, विमळ मूछा मिळै फरूकै बाविया । —हा भा.

६ पावन, पवित्र ।

उ० —१ ओखामडळ विमळ थळ, जळ आग्रत जगवद । ध्रुज उज्जळ देवळ अमळ, निरख नमै नरयद । —रा रू.

उ०—२ पेखै कोइ कहति एक एक प्रति, विमळ मगळ ग्रह एक वणि । एणि करण सुभ क्रम आचरता, जाणियै वेलि जपति जगि —वेलि

उ० ३ नाथ अनाथ निराळब तु नारीयण सदा सिवि तू हीज तू भगत कीधो मघग । चक्रधर निमो चक्रभुज तू हीज, चिदानद, विमळ ब्रह्मग्यान सब ग्यान तू गोपि व्रिदि । —पी. ग्र

उ०—४ छत्रपति प्रेम भाव सुख छाजै, विमळ इसा मुनि नठै विराजै । थिर करि पाइ मिस्ट जळ थाटै, चदणादि लै उर बह चाटै । —सू प्र.

उ०—५ लोहित चदण देव वलभा धरकाळेय कहै कवि धीर । केसर तणो तिलक नित कीजै, विमळ भजन कीजै बळिवीर । —ह ना. मा.

७ स्वच्छ, साफ ।

उ०- १ जगति होइ मुख विमळ करै तदि, जुत मुखवास अग्र धारै जदि । मिरच मीन एळच मवि पावै, खितपति पान कपूर खुवावै —सू प्र.

उ०—२ आनन विमळ मुखोप अपारा, तांबूलादि दियै तिण वारां । एहिज सदन मिसर हिमवता, आसण पली पसम अनता । —सू. प्र.

८ शुद्ध । (वाणी)

उ०—ऐसी विध पडतराज चातुरग्य कळा प्रवीण त्रिलोकू का प्रबध अनेक विध विमळ वाणी सै उच्चरै जिनूं से रीझ श्रीमहाराज कनक जग्योपवीत चढाया । —सू. प्र.

स पु.—१ चादी ।

२ सेंधा नमक ।

३ मणिवर एव पुण्यजनी के पुत्रो मे से एक यक्ष ।

४ जीमूत राजा का पुत्र एवं भीमरथ राजा का पिता, एक राजा।

५ हल राजा का पुत्र, जो दक्षिणापथ का राजा था।

६ राम के अश्वमेधीय यज्ञ के समय शत्रुघ्न का सहायक रत्नातट नगरी का एक राजा।

७ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमे छत्तीस मात्राएँ होती हैं।

उ०—ताइ सातसौ छैंतालीस, अदिस्रा रूप बरणवा बीस । मात्रा छत्रीस एह अनमान, विमळ छंद सुणिजो गुणवाण। —र. पि.

८ देखो 'विमलनाथ'

उ०—१ विमल जिनेसर सुणि अलवेसर, माहरा वचन अनूप। मनडौ विलूधौ रे ताहरै रूप, जेम विलूधौ रे कमल मधूप।—वि. कु.

उ०—२ केवलग्यानी नई निरवाणी, सागर महायस विमल वर वाणी । सरवानुभूति स्रीधर दत्त नामी, दामोदर स्री सुतेज स्वामी। —स. कु.

उ०—३ रिसहु थप्पिउ जेण सु निरम्मलो, विमल नामु वहइ गुणि उज्जलो । ठविउ नेमि जिणिइ जगवल्लहउ, परमतेजिहिं तेजलु तै कहउ। —जयसेखर सूरि

रू भे.—विमळ, विमल, विमळा, विमर, विम्मळ, विम्मल।

विमलक—सं. पु एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर, नग।

विमलकथ—वि.—सुयशधारी, कीर्त्तिवान।

विमलगिरिद, विमलगिरि—शत्रुञ्जय पर्वत का एक नाम।

उ०—१ नामु दुरगति न व्है नरक तियच री, सुगति सुर नर लहै सुगति सारी । विमल आतम तिको विमलगिरि निरखमी, धनो धन स्रीधरमसील धारी। —ध. व. ग्र

उ०—२ संघ अनेक तिहा आविया, भेटण विमलगिरिंद । लोक-तणी सख्या नही, साथि गुरु जिणचद। —ऐ जैं का स.

विमलजिन—देखो 'विमलनाथ'।

उ०—दिव्य नाद सुर दुदुभि वाजइ, पुप्प व्रस्टि सुर विरचीजइ री। समयसुंदर कहइ तेरै विमलजिन, प्रातीहारज पेखीजइ री।

—स. कु.

विमळता, विमलता—स स्त्री. [सं. विमल+रा प्र. ता.] १ निर्मलता स्वच्छता, उज्ज्वलता।

२ पावनता, पवित्रता।

३ सुन्दरता, मनोहरता।

४ मधुरता, मीठापन।

विमलतीरथ—स पु [सं. विमलतीर्थ] एक पवित्र तीर्थ स्थान, जहा तालाबो मे स्वर्ण एव रजत वर्ण की मछलिया पाई जाती हैं। उक्त तालाबो मे स्नान आदि करने से इन्द्रलोक की प्राप्ति होती है।

विमळदान—स. पु. [विमल+दान] १ देवताओ का चढ़ावा, प्रसाद।

२ नित्य नैमैतिक के अतिरिक्त केवल ईश्वर के प्रीत्यर्थ दिया जाने वाला दान। (पुराण)

विमळध्वनि—स. पु. [स] १ सिंहावलोकित रीति से रखे हुए दोहे और समान सवैये से मिलकर बनने वाला एक छन्द, जिसमे छः चरण होते हैं।

सं. स्त्री.—२ मधुर आवाज, सुरीली आवाज।

विमलनाथ—स पु.—एक तीर्थंकर, जो उत्सर्पिणी के पाचवे व अव-सर्पिणी के तेहरवें अर्हन् माने जाते हैं।

वि. वि.—इनका जन्म कम्पिलपुर नगर में हुआ था । इनके पिता का नाम कृतवर्म राजा था तथा माता का नाम श्यामा देवी रानी था।

विमलपिंड, विमलपिंडक—स पु [सं] कश्यप एव कद्रू के नाग पुत्रों मे से एक नाग पुत्र।

विमळरूप—स. पु.—हस। (ना. मा.)

विमळा, विमला—स. स्त्री [स विमला] १ वासुदेव की नायिका एक देवी।

२ सुरभि की पुत्री रोहिणी की दो कन्याओ मे मे एक कन्या, गाय।

वि वि—दूसरी कन्या का नाम अनला था जिससे पिण्डाकार फल देने वाले सात वृक्ष हुए।

३ देवी का एक विशेषण।

उ०—धवा धवळागर धव धू धवळा, कसना कुबजा कचत्री कमळा चळाचळा चामुडा चपळा, विकट विकट भू बाळा विमळा।

—देवि.

४ पुरोत्तम नामक तीर्थ की अधिष्ठात्री देवी।

५ सरस्वती देवी का नामान्तर।

६ एक ग्रह का नाम।

वि. स्त्री.—निर्मल, साफ, स्वच्छ।

विमळाचळ, विमलाचळ, विमलाचल—स. पु. [स. विमलाचल] शत्रुञ्जय पर्वत का एक नाम। (डि. को.)

उ०—हा रे मोरा लाल गिरि तल सेत्रुंजी नदी, जोवौ आणि विवेक । इणि परि विमलाचल तणी, तीरथ भूमि अनेक मोरा लाल। —वि. कु.

विमलात्मा—वि. [स. विमल+आत्मा] जिसकी शुद्ध आत्मा हो।

स. पु.—चन्द्रमा, चाद।

विमलादरी, विमलाद्रि, विमलाद्री—देखो 'विमळाचळ'।

बिमळापत, बिमळापति, बिमळापती बिमलापत, बिमलापति,- बिमलापती—सं. पु. [सं. बिमलापति] १ ब्रह्मा।

२ स्वायंभूव मनु।

३ दधीचि ऋषि।

४ ग्रादित्य।

५ रन्ति राजा।

बिमली—सं. स्त्री.— कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। (संगीत)

बिमलेसर, बिमलेसुर, बिमलेस्वर—स. पु. [स. विमलेश्वर] एक पवित्र तीर्थ का नाम विशेष।

उ०—पुस्कर पेखि प्रभास पण, कालिंजर कास्मीर। **बिमलेस्वर** बरजा वली, गंगा-सागरतीर। —मा. का प्र.

बिमांण—स. पु. [सं. विमान्] १ देवताग्रो ग्रप्सराग्रो ग्रादि का वह यान, रथ या उड़नखटोला जो ग्राकाशमार्ग से चलता है।

उ०—१ चम्मरा ढुळता चोजा ग्रम्मरा **बिमांणां** चढ़ै, बढ़ै क्रीत ग्रथी सारी करता वाखाण। इंद्र रा ग्रावास सुरा लोक मे ग्राणद ग्रायो, पायो देव ग्रंसी सारा देवा मे प्रमाण। —बादरदान दधवाड़ियौ

उ०—२ च्यार घड़ी वाजो सुजड़, झड मत्तो सर वाण। पड़िया हिंदू पार मह, चड़िया ग्रछर **बिमांण**। —रा. रू.

उ०—३ देवी रथ्थ रेवत सारंग राजै, देवी **बिमांण** पालखी पीठ ग्राजै। देवी प्रेत ग्रारूढ ग्रारूढ पद्म, देवी सागर सुमेरू गूढ मद्म। —देवि

उ०—४ सुंडाला सुमेर सा सजिया ग्रमर **बिमांण** सी ग्रबारी रे। चचळ हय चित चाल चुकावण, नाचै मोर मनोहारी रे। —गी. रा.

उ०—५ जूमरां घवळ ग्रप्रमाण जव, की **बिमाण** पवमाण कथ। सुलताण मुगल माथै सज्या, राजथान बीकाण रथ। —मे. म.

२ ग्राधुनिक वायुयान जो ग्राकाश मे उड़ते हैं ग्रौर पेट्रोल मे चलते हैं।

३ मृत्त व्यक्ति के शव की वह ग्ररथी जो फूलमाला ग्रादि से सुसज्जित होती है।

४ सोने, चांदी या फ्रोस की लकड़ी से बना हुग्रा पालकीनुमा वाहन जिसमे प्राय: भगवान् की स्वारी निकाली जाती है।

५ ऐसा मकान जिसमे सात खण्ड हो।

६ वह देव मंदिर जिसका ऊपरी भाग बहुत ऊंचा व लम्बोतरा हो।

७ वाहन ग्रौर सवारी।

उ०—ग्रऊत रो धन लेवा री ग्राखड़ी खटवन रो माल लेवा री ग्राखड़ी। गाव फिलसो देवा री ग्राखड़ी। सीव माह सुं बळद गाव मे लावा री ग्राखड़ी। विखै **बिमांण** गाव छाडवा री ग्राखड़ी। —रा. सा. स.

रू. भे.—बमाण, विवाण, बिमाण, बिमाणग, बिमाणगी, बिमाखाण, बिमान, बिवाण, बीमाण, वेवाण, ववाण, विमाणग, बिमाणो, बिमान विवाण, बिवाणि, बिवाणी, बिव्वाण, बिव्वाणी।

बिमांणग— देखो 'बिमाण' (रू. भे)

उ०—बारगा उमगा रंगा **बिमांणगां** सोक बाज, रारगा ग्रभंगां भड़ा दमगा रो सार। पनगा विहगा ढगा नारंगां ग्रभीच पढ़ा, मारगा खतगा ग्रगा गातगा दू सार। —बद्रीदास खिड़ियौ

बिमांणवी—स. स्त्री —एक लोक देवी जिसके प्रकोप से बालरोग होना माना जाता है। (ग्रमरत)

बिमांणिक—देखो 'वैमानिक' (रू भे.)

उ० -'भवनपति' 'व्यतर' नै जोतिसी, 'भेद' **बिमांणिक** पावै। सुर वर तै मिलनै सगला, नाम 'निनाणू' ग्रावै। —जयवाणी

बिमांणी, बिमांणीक, बिमांणीय - देखो 'वैमानिक' (रू. भे)

उ०—१ भवनपती इंद्र वीसै भिल्या जी, सोल दू विनर सार। जोइस दु दस **बिमांणी** जुल्या जी, चउसट्ठि इंद्र सुविचार। —ध. व. ग्र.

उ० -२ त्रिहु तणा पति वायु कूण मे जाण ए, सुर **बिमांणीय** नर नारि ईसाण ए। वार परिखद मद मच्छर छोड ए, भूख त्रिस वीसरै सुणै कर जोड ए। —ध. व. ग्रं

उ०—३ प्रदिक्षणा रूप थी ग्रगनि कूणे करी, गणघर साधवी तिम **बिमांणी** सुरी। ज्योतिनी भुवणिनी विंतरी श्रो परी, नैरित कूण जिण वाणि ऊभी सुणे। —ध. व. ग्र.

बिमांणो देखो 'बिमाण' (रू. भे.)

उ०—१ सुर भणी सुरलोक थ्य, ऊतरै ग्रमर **बिमांणो** रे। ग्रपछर ग्रारतीया करइ, कामांग कचन वानो रे। —प. च. चौ.

उ०—२ जासी सवारथ सिद्ध **बिमांणो**, चवि महाविदेह वखाणो जी। मनुस हुसी बहु चतुर सुजाणो, दढपइण्णा नो परिमाणो जी। —जयवाणी

बिमांन—देखो 'बिमाण' (रू. भे)

उ०—१ निजर परक्खै राठवड, ग्रकबर तेज दिणद। जाणै व्योम **बिमांन** सम, भोम प्रगट्यो इद। —रा. रू.

उ०—२ साभलउ सोधरमेंद्र तणी ग्धिनि, सोधरमी रत्नमय भूमि सिंघ सिंहासन सूरय जम झलकतउ तिहा बसइ मक्र इमि नामिइ सोधरमेंद्र दक्षिण लोकारद्धस्वामी, एरावणवाहन, बत्रीस लाख **बिमांन**णउ ग्राधिपत्य पालइ लीला लगइ......। —व. स.

उ०—३ ''''''विलविलइ बहुकइ क्रस्णागर, हसिउ बिमान, माहि सुवरण्णमय स्तभ, ऊपरि रत्नमय पूतलीना सरभ, असंख्य गवाक्ष मत्तवारण मगरमुहां'''''', । —व स

बिमानिकदेव—देखो 'वैमानिकदेव' (रू. भे.)

बिमांस—स. पु. [स.] वह मास जो खाने योग्य न हो, अशुद्ध, अपवित्र या वर्जित मांस।

बिमांह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति राजान सिलांमति रितिराज वसंत वैसाख मास रा मगळाचार बिमांह रा सुख विलास करता सरद रित आई छै। आसोज मास आइ सप्रापति हुआे छै। —रा. सा. स

बिमात, बिमाता, बिमात्र, बिमात्री—स. स्त्री. [स. विमातृ] जन्म देने वाली माता के जीवित अवस्था में या मृत्युपरान्त अपने पिता द्वारा परिणीता दूसरी नारी, सौतेली मा।

बिमारग—स. पु [स. विमार्ग] १ बुरा रास्ता, कुमार्ग।

२ बुरे आचरण, कुआचरण।

बिमाळ, बिमाल—सं. स्त्री.—देरी, विलम्ब।

उ०—चढिया कटक्क आवक्क चाळ, वेढिसी 'अइत' न करइ बिमाळ। असराळां ताजी ऊमगेहि, पन्नगा नेस धूजइ पगेहि। —रा. ज. सी.

सं पु.—विचार।

वि.—चुप, शान्त।

उ०—मिरजे खबर निबाब नूं पहुचाई ततकाळ। आयो फिर महमदअली, सुरा नह रह्यौ बिमाळ। —रा. रू.

रू. भे.—विमाळौ।

बिमाळणौ, बिमाळबौ—क्रि स—विचार करना।

उ०—उण वात बिमाळे अखियया, चाळे कज हूल चलिया। भूपाळ भलै मोटा भुजा, नवकोटं छळ झलिया। —रा. रू.

बिमाळणहार, हारौ (हारी), बिमाळणियौ—वि०।

बिमाळिग्रोडो, बिमाळियोड़ौ, बिमाळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिमाळीजणौ, बीमाळीजबौ—कर्म वा०।

बिमाळियोड़ौ—भू. का. कृ.—विचार किया हुआ।

(स्त्री. बिमाळियोडी)

बिमाळौ—देखो 'बिमाळ' (रू. भे.)

उ०—१ दुस्सह आरा भला जुध देखे, पाली गौ धारा गिर पेखे। बिढवा नह को ताळ बिमाळे, चाळो लग मातौ गुणचाळे। —रा रू.

उ०—२ माहव मांन तणौ पट मोटै, कियौ सवाय अमैं' नवकोटै। भगवत 'मुहकम' तणो भुजाळो, बिढता न धरै ताळ बिमाळो। —रा. रू.

बिमास, बिमासण—स. पु.—विचार।

उ०—१ कोरइ पिण हिव ताहरइं सखी, गलि माहि घालिस बाह। जे मिलवा नै उल्हसै सखी, किसी बिमासण ताहिरै। —वि. कु.

उ०—२ कहता बै हाथे करि नांखियौ रे, वांनर ऊडि गयौ आकास रे। सीह अरूपी लागो मारगे रे, रहीयो मन मा बिमास रे। —वि. कु.

उ०—३ भारत खेतर मे सांमठा, किण मा बेटा आया रे। तीन सघाडे आविया, मैं हाथा सू बेहराया रे। करै बिमासण देवकी। —जयवाणी

उ०—४ कुण कहिस्यै मुज मायडी जी, घड़ी घड़ी नै छेह। कहसू केहने नानड़ोजी, सबल बिमासण एह-रे जाया। —जयवाणी

उ०—५ विरत्तौ वेग न काइ बिमास, बिढेवा राड सड़ै वरहास खुरा रवि फोण उमट्ट्यौ खाणि, लगोड़ै लागै लाल लगाणि। —राव जैतसी रौ रासौ

बिमासणौ, बिमासबौ—क्रि. स.—१ विचार करना।

उ०—१ तं ऊपरि ए पदमणी, आई आपा पासि। स्यु करिवौ सूधो मतो, बेघौ कहो बिमासि। —प. च. चौ.

उ०—२ सउदागर राजा कन्हइ, कहियउ एह विचार। राणी राय बिमासियउ, तेडइ साल्हकुमार। —ढो. मा

उ०—३ ढोलइ मनह बिमासियउ, एक करीजइ एम। करहइ चढि आपां खडा, नरवर पहुचा जेम। —ढो. मा.

उ०—४ विद्या होएग विप्र, तुं हीइ बिमासी जोइ। तुरका-केरइ बोलडै, चिणा न वूंटइ कोइ। —मा का. प्र.

उ०—५ पाताळ जाती सेम राखी, मनि बिमास्यु आहि। देवता नी दया आणी, मूकी ई माहि माहि। —रुकमणी मंगळ

२ समझाना।

उ०—ढोलइ करह बिमासियउ, देखै बीस वसाळ। ऊबै थळइ ज एकलो, वच्चाळइ एवाळ। —ढो. मा.

बिमासणहार, हारौ (हारी), बिमासणियौ—वि०।

बिमासिग्रोड़ौ, बिमासियोड़ौ, बिमास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिमासीजणौ, बिमासीजबौ—कर्म वा०।

बिमासियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ विचार किया हुआ. २ समझाया हुआ।

(स्त्री. बिमासियोडी)

बिमाह—देखो 'विवाह' (रू भे.)

उ०—१ ईख रस्स अहिफेणा, अरथ आगम डर ठाहे। पाना चग, मजीठ रंग, उच्छरग बिमाहे। —ह. र.

उ०—२ इळ धुकि लचक सीस ग्रहिवाळा, चंद कटक खड़िया कळ चाळा । जगत छत्रविस लिखै जवाबा, सको बिमाह कि समर सतावां । —सू. प्र.

उ०—३ जाइ राजा सूं मुजरौ कीयौ । कहियौ महाराज घरां री खबर ग्राई छै । बेटी रौ बिमाह छै । राजा सिरपाव दे बिदा दी उवै चोर कन्है गया कह्यौ ईंडौ बिहचौ । —चौबोली

उ०—४ महाराज बिमाह रै ग्रागम मगळ धमळ खमाडची कीजै । पिण ग्रौ महाभारथ रौ ग्रागम । ग्रेक बार सूरा पूरा ग्रधसागसिंध खित्रिग्रा रा बडा राग माहै वडा दूहा गवाडो । —र. वचनिका

बिमाहणौ, बिमाहबौ—देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

बिमाहणहार, हारौ (हारी), बिमाहणियौ—वि० ।

बिमाहिग्रोड़ो, बिमाहियोड़ो, बिमाहचोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिमाहीजणौ, बिमाहीजबौ—कर्म वा० ।

बिमाहियोड़ो—देखो 'विवाहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिमाहियोडी')

बिमाहो—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—वसतपचमी करी बिमाहो, सुध निरदोख वेद बिध साहो । इम ठहराय महल नृप ग्राए, पदमणि ताम महासुख पाए । —सू. प्र.

बिमुंहो—२ देखो 'विमुख' (रू. भे.)

बिमुक्त-वि. [सं.] १ छूटा हुग्रा, मुक्त । २ ग्राजाद, स्वतंत्र । ३ त्यागा हुग्रा, छोड़ा हुग्रा. ४ फेंका हुग्रा. छोड़ा हुग्रा. ५ दायित्व या कार्यभारादि से मुक्त ।

रू भे.—बिमुगत ।

बिमुक्ति-स. स्त्री. [स.] १ छूटने या मुक्त होने की ग्रवस्था, छुटकारा ।

२ ग्राजादी या स्वतंत्रता ।

३ ग्रलगाव, बिछोह ।

४ मुक्ति, मोक्ष ।

रू. भे.—बिमुगति ।

बिमुख-वि. [स] १ जो किसी कार्य, विषय या बात ग्रादि पर दत्त-चित्त न हो ।

उ०—मैं लख चौरासी धारि जोनि, का बोलत का गहत मोनि । जनम जनम दुख बौहत पाय, जब राम नाम ते बिमुख थाय । —ग्रनुभववाणी

२ खिलाफ, प्रतिकूल, विरुद्ध ।

उ०—१ हरीया गुर तें बिमुख नर, पाछा दरगै माहि । ग्रैसे भागा सूरवा, दफतर चढिसी नाहि । —ग्रनुभववाणी

उ०—२ ग्राप गुरदेव का दसत राखै नही, ग्रौर कूं ग्यान उपदेस देवै । ग्राठ ही पौहर हरिनाव कुं उचरै, साच नहीं जाणि गुर बिमुख सेवै । —ग्रनुभववाणी

उ०—३ रामजी री माळा रै वासदी लगाय घणी सूं छानै बचा-योडी गुजी हाथ मे राखती तौ म्हनै ग्रै दिन नी देखणा पडता । ग्राज म्हारा बेटा ई म्हारा सूं बिमुख व्हैगा । मा रै बिना कोई इण दरद नै समझ नी सकै । —फुलवाड़ी

उ०—४ जिसा स्वामीजी कह्या था जिसाइ निकळिया । पछै सिव-रामदासजी सतोकचदजी दोनूं मूलभ पणे रह्या । उवै दोनूइ बिमुख रह्या तौ पिण स्वामीजी उणारी गिणत राखी नही । —भि द्र.

३ उल्टा, विपरीत ।

४ पुनरावर्तन, प्रत्यावर्तन ।

५ उलटा, ग्रौंधा ।

६ रहित, बिना ।

७ जिसके मुह न हो, मुख-रहित ।

स. पु —दक्षिणी भारत का एक ऋषि । (प्राचीन)

रू. भे.—बमुख, बमुह, बेमुख, वमुख, वमुह, बिमहो बिमुह, बिमुहि ।

ग्रल्पा —बिमहो, बिमुहो, बेमुहो, बमुहो, बिमुखौ, बिमुहो, बिमुंहो, बिमूंहो ।

बिमुखता-स. स्त्री. [सं] १ विरोध, प्रतिकूलता ।

२ ग्रप्रसन्नता ।

३ विरति ।

बिमुखौ—देखो 'बिमुख' (ग्रल्पा. रू. भे.)

उ०—कागा जम भावै कठै, बिधि बिमुखां नूं बेद । 'बाका' भोजन नह रुचै, ज्यारै वप ज्वर खेद । —बा. दा.

बिमुगत—देखो 'बिमुक्त' (रू. भे)

बिमुगति—देखो 'बिमुक्ति (रू. भे)

बिमुग्ध-वि [प] १ मोहित हुवा हुग्रा, ग्रासक्त ।

२ भ्रम मे पड़ा हुग्रा, भ्रांमित, भ्रान्त ।

३ उन्मत, मस्त, मग्न, मनवाला ।

४ घबराया हुग्रा, विकल, परेशान ।

५ पागल हुवा हुग्रा, बावला ।

बिमुग्धकारी-वि. [स.] १ मोहित करने वाला ।

२ पागल बनाने वाला ।

३ उन्मत्त या मस्त करने वाला ।

४ तंग करने वाला, परेशान करने वाला ।

५ भ्रम मे डालने वाला ।

बिमुदर, बिमुद्र-वि [सं. विमुद्र] खिला हुग्रा, विकसित ।

रू. भे.—बिमुद्र ।

बिमुह—देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—१ बिमुह करण रण साह दळ, 'मुहकम' का 'हरियद'। सोच निमेहण निय दळा, सळा उखेलण कंद । —रा. रू.

उ०—२ सूरां नूर दरस्सिया, तौलै सेल करग्ग । कायर ज्यों लग्गा बिमुह, कायर आठूं मग्ग । —रा. रू.

बिमुहाळ—वि —औंधा, उल्टे मुख ।

उ०—बिमुहाळ काघाळ विचाळ विपे, उबचाळ बगाळ मिगाळ अप । धड घाव बडाळ ओलाळ धडे, पड नाळ प्रनाळ चनाळ पड़े । —पा. प्र.

बिमुहि—देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—कलि चालि लंकाळ कहै दम 'केहरि', बिढिवा कजि ऊझजि केवाण । वलियै दळै बिमुहि क्यूं चालू, चालियौ विमुहि नकी चहुवाण । —नाहरखान चोहान किमनदासोत रो गीत

बिमुहौ—देखो 'विमुख' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—१ ऊमसै आभ लगा आवता, राव तणौ रज देख रथ । रैवंत रोक न रहियौ राणौ, पुळिया बिमुहा पाटपत । —चानण खिड़ियौ

उ०—२ सामौ 'जोध' तणौ सै सूतै, साझी मलह सजनै सैण । थय कुजर बिमुहां कुभायळ कागमुहा दीठा "कुभेण" । —गेहौ खिड़ियौ

उ०—३ रहियौ पग साबत जेतरती, जुध घात विमा सत 'पाल' जती । किम जावत 'बूडाय' राव कहै, बिमुहौ रण मारग 'पाल' वहै । —पा. प्र.

उ०—४ औरंगसाहि पातिसाहि रा तपतेज अपरबळ दईवार अवतार जिण आगै अमरासो बिमुहा खड़ै । तिण सू तीन पोहर हाथू कै महाराज जमराज ही लडै । —र वचनिका

उ०—५ एक घडी वागी सुजड़, धड धड लग्गी धार । पिसण थया विमुहां पगा, गहि वग्गा तोखार । —रा रू.

उ० - ६ 'करन' 'प्रताप' तणौ जुध कारण, बिमुहौ करै जिसौ अरि वारण 'अजबावत' जोधौ' दळ आगळ, केवी गळै जेम जळ कागळ । —रा. रू

बिमूंहौ—देखो 'विमुख' (अल्पा रू. भे.

उ०—आभ बिमूंहां मागमा है घर भेलण हार । धरणीधर धर छडिया, अच्छै तु आधार । --है र.

बिमूढ—वि. [स. विमूढ] १ मूर्ख, नासमझ ।

२ विशेष रूप से मोहित, अत्यन्त मुग्ध ।

३ भ्रमित, भ्रान्त ।

४ चेतना-रहित, चेतना-शून्य ।

बिमूढगरभ—स. पु यौ. [स. विमूढगर्भ] वह गर्भ जिस में बच्चा मर गया हो और प्रसव बहुत कठिनाई से होता हो ।

बिमूळ—वि. [स. विमूल] १ मूल रहित, बिना जड़ का, निर्मूल ।

२ बरबाद, नष्ट ।

बिमूळण—सं. पु. [सं. विमूलन] १ समूल उखाड फेंकने की क्रिया, उन्मूलन ।

२ नाश करने की क्रिया, ध्वस करने की क्रिया ।

बिमूहौ—देखो 'विमुख' (अल्पा., रू. भे.)

बिमेक, बिमेख—देखो 'विवेक' (रू. भे.)

उ० · १ तिलोई न जाणै ताहरा, ब्रह्मा जिसा बिमेख । काइम तूं सबखो करै, अबखो मारग एक । —पी. ग्रं.

उ०—२ बिसव कियो तै बीस हथ, कियौ बिमेख विचार । इण्यां व्रिदि लीधौ इसौ, कीधौ लै करतार । —पी. ग्रं.

उ०—३ उचारै वेद विदुख अनेक, विचारै जिण सू विधि बिमेक । —रांमरासौ

उ०—४ पिंगळ भरह पुराण पराक्रत, विध विध जाणण सयळ बिमेक । 'जैसा' हरी न भगवट जाणै, ऊतर करै न जाणै अेक । —ईसरदास बारहट

बिमोख, बिमोक्ष बिमोख—सं. पु. [स. विमोक्ष] १ बन्धनमुक्त करने की क्रिया, मुक्तिदेने की क्रिया ।

२ जन्म-मरण के बन्धन से छूटने की क्रिया, मोक्ष ।

३ सूर्य एव चन्द्र का ग्रहण से मुक्त होना ।

४ सुमेरु पर्वत ।

बिमोखण—स. स्त्री.—१ बधन मुक्त करने की क्रिया, रिहा करने की क्रिया ।

२ तीर आदि छोडने की क्रिया ।

वि.—१ बधन मुक्त या रिहा करने वाला ।

२ तीर आदि छोडने वाला ।

३ जन्म-मरण से मुक्ति दिलाने वाला ।

बिमोखणौ, बिमोखबौ—क्रि. स. [स. विमोक्षणम्] १ बधन मुक्त करना, रिहा करना ।

२ तीर, गोली आदि छोडना ।

३ जन्म-मरण से मुक्ति दिलाना ।

बिमोखणहार, हारौ (हारी), **बिमोखणियौ**—वि० ।

बिमोखिओडौ, बिमोखियोड़ौ, बिमोख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिमोखीजणौ, बिमोखीजबौ—कर्म वा० ।

विमोखियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ बन्धन मुक्त किया हुग्रा, रिहा किया हुग्रा. २ तीर, गोली ग्रादि छोड़ा हुग्रा. ३ जन्म मरण से मुक्ति दिलाया हुग्रा।
(स्त्री. विमोखियोड़ी)

विमोचक-वि —१ बन्धन-मुक्त करने वाला, रिहा करने वाला।
२ जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति दिलाने वाला।

विमोचण-सं. पु [स विमोचन] १ बन्धन-मुक्त करने की क्रिया, मुक्ति देने की क्रिया।
२ जन्म-मरण के बन्धन से छूटने की क्रिया, मोक्ष।
३ एक तीर्थ का नाम जो कुरुक्षेत्र मे है, जिसमे स्नान करने से क्रोध एव इन्द्रियों के वशवर्ती न होने वाले पुरुष को प्रतिग्रहजन्य पाप से मुक्ति मिल जाती है।
४ नाश करने की क्रिया, नष्ट करने की क्रिया।
वि.—१ बन्धन-मुक्त करने वाला, रिहा करने वाला।
२ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति दिलाने वाला।
३ नाश करने वाला।
रू भे.—विमोचन।

विमोचणौ, विमोचबौ-क्रि. स.—१ बन्धन-मुक्त करना, रिहा करना।
२ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त करना।
विमोचणहार, हारौ (हारी), विमोचणियौ—वि०।
विमोचिग्रोड़ौ, विमोचियोड़ौ, विमोच्योड़ौ—भू० का० कृ०।
विमोचीजणौ, विमोचीजबौ—कर्म वा०।

विमोचियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ बन्धन-मुक्त किया हुग्रा, रिहा किया हुग्रा. २ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त किया हुग्रा।
(स्त्री. विमोचियोड़ी)

विमोद-स. पु. [स. वि=विशेष+मोद= प्रसन्नता] १ ग्रत्यन्त हर्ष, मोद, प्रसन्नता।
उ०—गिरतै सिर जंग धर्गा ग्रहियौ, रवि मोद **विमोद** छकौ रहियौ। ग्रसवार विना ग्रस जूझ ग्रही, नरनाम कियौ न मोद मही। —पा. प्र
वि [स. वि=रहित +मोद=प्रसन्नता] हर्ष रहित, मोद रहित, प्रसन्नता रहित।

विमोह-स. पु [स. वि=विशेष+मोह] १ ग्रत्यन्त मोह।
उ०- विभ्रम **विमोह** चित्त, मपत तुरग तारिगयं मविना। वामर विमाळ लहिय, चक बार्गा मगळ भवरगा। —गु. रू ब
२ मोह, ग्रज्ञान, भ्रान्ति।
उ०—१ ग्रईयौ ईस ग्रनत नांम कल्यारग निरंजरग, देव त्रिसन दीपान ध्यान दईना ग्रघ गंजरग। ग्रलख नील ग्रनील विसव विमोह विग्यान, जाणं सहि ग्रौतूग्रा माल मेरौ धन धानु। —पी. ग्रं.
उ०—२ सुभ दिवस समन समोह, मिट रंयरग सघ **विमोह**। रवि किरगा ग्रनुक्रम रेख, वाधेत तेज विसेख। —रा. रू.
उ०—३ ग्रद्रु रूप सिखर थळ द्रुम **विमोह**, सगार चमर किर पूछ सोह। निज तेज सरति चत्र जुबल नालि, भव कमळ जत्री सूची कि भाळि। —रा. रू.
३ एक नरक का नाम।
वि.—१ बेसुध, ग्रचेत।
[स. वि =रहित+मोह] २ मोह रहित।
उ०—ग्रैसे नर ग्रन्धौ भयौ, ग्रग सिध को मोह। हेत विसवास न होत है, बाता करत विमोह। —कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

विमोहक-वि [स] १ मोह उत्पन्न करने वाला, लुभाने वाला, ग्राकर्षित करने वाला।
२ लोभ उत्पन्न करने वाला, ललचाने वाला।
३ ग्रचेत या बेसुध करने वाला।
४ मोह-रहित या प्रेम रहित करने वाला।

विमोहण-स पु [स विमोहन] १ मोहित करने की क्रिया, ग्राकर्षित करने की क्रिया।
२ लोभ उत्पन्न करने की क्रिया, ललचाने की क्रिया।
३ ग्रचेत या बेसुध करने की क्रिया।
४ कामदेव के पाचों बाण मे से एक बाण।
५ एक नरक का नाम।
६ मोह रहित करने की क्रिया।
वि —१ मोहित करने वाला, ग्राकर्षित करने वाला।
२ लोभ उत्पन्न करने वाला, ललचाने वाला।
३ ग्रचेत या बेसुध करने वाला।
४ मोह रहित करने वाला।

विमोहणी-वि (स्त्री विमोहणी) १ मोहित करने वाला, ग्राकर्षित करने वाला।
उ०—देवी गौर रूपा ग्रखा नन्त निद्धि देवी सकळा ग्रकळा ग्रव्व सिद्धि। देवी दुज्ज विमोहणी काम वाणी, देवी नानला मगला कल्याणी। —देवि
२ लोभ उत्पन्न करने वाला, ललचाने वाला
३ भ्रमित या भ्रान्त करने वाला।
४ ग्रचेत या बेसुध करने वाला।
५ मोह रहित करने वाला।

बिमोहणी, बिमोहबो—क्रि. अ. [सं. विमोहनम्] १ मोहित होना, मुग्ध होना।

उ०—१ अंबा आदि तरण आमासं, परम कवर लखि हरख प्रकासं। सुंदर चख मुख कर पद सोहै, मंजु रूप लख कज बिमोहै। —रा. रू.

उ०—२ मन हरखं तन उच्छव मोटं, कियो बगाव 'अर्ब' नव-कोटं। सुरग बसन सुंदर तन सोहै, वेलि रूप रति भूप बिमोहै। —रा. रू.

उ०—३ सुंदर पाघ मौड़ सिर सोहै, मुगति पति लख जगत बिमोहै। वचन सहास हुलास विहारं, नयण हरखजुत भिरत निहारं। —रा. रू.

२ आकर्षित होना।

उ०—ऊपर सरद सुखद रित आई, सुखकर न पत उदत सवाई। सरवर अवल निरमळ जळ सोहै, मघ पूरत विधु रसमि बिमोहै। —रा. रू.

३ लालायित होना, ललचाना।

उ०—१ फल कदळी औय स्वाद अफारा, छर्ये अंय बादाम पिस्ता छुहारा। सुधा साव नारंगिया रग सोहै, महादेव देवेस मेर्ने बिमोहै। —रा. रू.

उ०—२ अनेकं फळं भारिया अक्ख ओपै, लियै चाहि सेवा न को जाय लोपै। सुगधकर सुंदर फूल सोहै, महाधम सौरभ सिंभू बिमोहै। —रा. रू.

४ भ्रमित या भ्रान्त होना।

५ अचेत होना, बेसुध होना।

६ मोह रहित होना।

क्रि स —७ मोहित करना, मुग्ध करना।

उ०—१ सूर धीर सालंत नीर तें सोहै, कायर नर कपै साथ कूं बिमोहै। श्रीमहाराज को रूप असो निजर आयो, जाणं रोहिणी को संग विरोचन पायो। —रा. रू.

उ०—२ छिलती सलित न्याव नह छूटै, जेठी गयद कुरग नह जूटै। मझि जळ क्रीड न सहल बिमोहै, अस सिबका गज रथ न अरोहै। —सू प्र.

उ०—३ लसै तें साहि बिनाकब लेघ, बधाडिय देवा आदू बेघ। जटाधर अब दद्दत जळाय, बिमोहै रूप अनूप बणाय। —ह. र.

उ०—४ हर पवन आवं छं। कवळ करां में। नवरतन की पोचां सोहै छं। मनरग लोम पराग बिमोहै छं। आय ऊभी जीसी देव रभा। उरबसी अजाय। सुर राज अचभा। —पना

८ लालायित करना, ललचाना।

९ भ्रमित या भ्रान्त करना।

१० अचेत करना, बेसुध करना।

११ मोहरहित करना।

बिमोहणहार, हारो (हारी), बिमोहणियो - वि०।

बिमोहिओड़ो, बिमोहियोड़ो, बिमोहयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिमोहीजणो, बिमोहीजबो—कर्म, भाव वा०।

बिमोहणो, बिमोहबो—रू. भे.।

बिमोहा—सं. पु—प्रत्येक चरण में दो रगण वाला एक छंद विशेष जिसमें ६ वर्ण होते हैं। (रूपदीप पिंगळ)

बिमोहित-वि. [सं.] १ मोहित, आकर्षित।

२ ललचाया हुआ, लालायित।

३ भ्रमित, भ्रान्त।

४ अचेत, बेसुध।

बिमोहियोड़ो—भू. का. कृ.—१ मोहित हुवा हुआ, मुग्ध हुवा हुआ २ आकर्षित हुवा हुआ. ३ लालायित हुवा हुआ, ललचाया हुआ ४ भ्रमित हुवा हुआ, भ्रान्त. ५ चेतना रहित हुवा हुआ, बेसुध हुवा हुआ. ६ मोह रहित हुवा हुआ. ७ मोहित व आकर्षित किया हुआ. ८ लालायित किया हुआ, ललचाया हुआ. ९ भ्रमित या भ्रान्त किया हुआ. १० अचेत किया हुआ बेसुध किया हुआ. ११ मोह रहित किया हुआ।

(स्त्री बिमोहियोड़ी)

बिमोही—वि [सं विमोहिन्] १ मोहित या आकर्षित होने या करने वाला।

२ लालायित होने या करने वाला, ललचाने वाला।

३ भ्रमित या भ्रान्त होने या करने वाला।

४ चेतनारहित या बेसुध होने या करने वाला।

५ मोह रहित होने या करने वाला।

बिमोद्गल—सं. पु. [सं. विमोद्गल] अंगिराकुल में उत्पन्न एक गोत्रकार

बिम्मर—देखो 'बिबर' (रू भे.)

उ०—झगरां गिरा सहरां थका झाटकै, बिम्मरां गिरा हूट बिचाळै। नव नवा प्रसण नवकुळ जही नीवडै, किया आहू घख-पख काळै। —राजा अनिरुद्धसिंघ गौड री गी

बिम्मळ, बिम्मल—देखो 'विमळ' (रू भे.)

उ०—१ मुडिया पिंडमैगळ असि उछळ्ळ रावत बिम्मल लां पडियं। दुजडा दूनै दळ विढूबं रुज्जळ, कदल पेख रिव खडियं। —गु. रू.

उ०—२ पूजै पग बिम्मळ वेद पुराण, अलीयळ नाथ लियै अघांग रमै पग-छाह मधूकर रिक्ख, तवै पग नाग सरीसा तक्ख —ह

बिय—देखो 'बिय' (रू भे)

वियन्मणि—सं. पु. [सं. वियद्मणि] सूरज, सूर्य ।

वियटल—देखो 'विटळ' (रू. भे.)

उ०—वाय वियटल वैसाखना, आहां थी भलगु थाय । पांगरणां परनारिनां, ऊडाडितु प्राय । —मा. कां. प्र.

वियत—सं. पु. [सं. वियत्] आकाश, व्योम, गगन । (अ. मा.)

उ०—जग सीत प्रगटत पंथ चख जुग, अगनि दिसि अनुक्रमं । अंचि जगत जण प्रति सुखद, अंबर वियत जळधर वेस मैं ।
—रा. रू.

रू. भे.—वियत, वयद, वयद, वियद ।

वियतमणि, वियतमणी—सं पु. [स. वियत्+मणि] १ सूरज, सूर्य ।

२ चान्द, चन्द्रमा ।

वियति—सं. पु. [स.] नहुष राजा का एक पुत्र ।

वियद—देखो 'वियत' (रू. भे.)

वियदगंगा—स. स्त्री. [सं.] आकाशगंगा ।

वियांण—देखो 'व्यांण' (रू. भे)

वियांणी—वि. स्त्री —जन्म देने वाली ।

वियांन—१ देखो व्यान' (रू. भे.)

२ देखो 'बियांन' (रू. भे.)

उ०—विमान आसमान मे निसान सै रहै नही, बसुधरा वियान सी बगीलगी बहै नही । छलग बाछुरु घरु न उच्छरं चरं चिरे फलग मंचकी थकी न नंचकी थकी फिरं । —ऊ का.

वियाई—देखो 'ब्याई' (रू. भे.)

वियाज—देखो 'व्याज' (रू. भे.)

उ०—आगै जाइ आलि केलि ग्रह अतरि, करि अगण मारजण करेण । सेज वियाज खीरसागर सजि, फूल वियाज सजै तसु फेण । —वेलि

वियाणौ, वियाबौ—देखो 'ब्याणौ, ब्याबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दादू बम्ह वियाई आतमा, उपज्या आनद भाव । सहज सील सतोख सत, प्रेम मगन मन राव । —दादूबाणी

उ०-२ तेणि पातिसाहि आया सातरि कुण सहइ ? कुणइ सहिजइ ? कुण की जुगती, कुण की प्राती ? कुण माइ वियांणी, जू सामउ रहइ भणी पाणी ? —अ. वचनिका

वियापणौ, वियापबौ—देखो 'व्यापणौ, व्यापबौ' (रू. भे.)

उ०—१ चौथै पहरै रैणिदे, बणिजारिया तू पक्का हूवा पीर वे । जोवन गया जरा वियापी, नाहीं सुधि सरीर वै । —दादूबाणी

उ०—२ मालय ऊमा देवड़ी, संभळि पिंगळ राइ । विरह-वियापी मारुई, नहि राखण कउ दाइ । —ढो. मा.

वियापणहार, हारौ (हारी), वियापणियौ—वि० ।

वियापियोड़ो, वियापियोड़ौ, वियाप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वियापीजणौ, वियापीजबौ—भाव वा० ।

वियापियोड़ौ—देखो 'व्यापियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वियापियोड़ी)

वियापि, वियापी—देखो 'व्यापी' (रू भे.)

उ०—१ सकल वियापी संगि बसै, हरि सम्रथ सिरजणहार । साहिब ही तै पाइए, साहब का दीदार । —ह. पु. वा.

उ०—२ त्रिविध ताप सासौं न सूळ, परमभेद आनंदमूळ । उदै अस्त आवै न जाय, सकळ वियापि सहजभाव । —ह. पु. वा.

उ०—३ मनसा घटी मिटी सब दौर, गहि गुर ग्यान बसै निज ठौर । जन हरिदास गोविंद गुणगाई, सकळ वियापी राम सहाई ।
—ह. पु. वा.

वियायोड़ी—देखो 'ब्यायोडी' (रू. भे)

वियार—१ देखो 'विकार' ।

२ देखो विचार' ।

वियाळू—देखो 'व्याळू' (रू. भे.)

वियाव—देखो 'विवाह' (रू. भे)

वियास—देखो 'व्यास' (रू. भे.)

उ०—वियास भट्ट के महन, जोतिकी ब्रह्मण । कथा पुराण भागवत, भारथ रामाइण । —गु रू ब

वियासियौ—देखो 'बंयासियौ' (रू. भे)

उ०—रतन पाट बैठौ रघू, देखौ साईदाम । मगन पनर वियासियै, मैसरोड चद्रभाम । —साईदाम री गीत

वियासी—देखो बयासी' (रू. भे.)

वियोग—स पु [स.] १ संयोग का अभाव । (डि. को)

उ०—१ कोइक पूरब भव सबंध म रे आइ मिल्यौ संजोग । भवितव्यता रइ जोग मिलइ इस्यौ रे, वणियौ एम वियोग ।
—प. च. चौ.

उ०—२ रहै नही नामै कोई रोग, बलौ सह जायै सोग वियोग । सदा हुवै भोग सयोग सचेत, दीयै सुख वछित रीखभदेव ।
—ध. व, ग्र.

२ विच्छेद, अलगाव ।

उ०—१ स्वामीजी नवी दिक्षा लीधां पछै केतलैएक वरसै तीन जणिया दिक्षा लेवा त्यार, थइ । जद स्वामीजी बोल्या थे तीन जणिया साथै दिक्षा लेवो अनै कदाचित एकण री वियोग पड़ जावै तो दोयां नै त्रल्ण नही मो पछै सलेखणा करणी पड़ै । —भि. द्र.

उ०—२ अठै व्यापार करै छै। त्याह की स्त्री, गाय अर बछड़ा। बिभचार ही करणहारी स्त्री अर लंपट। ये तीन्यो रात्रि कै समै भेळा हुता त्यांह नै बियोग हुयो। —वेलि टी.

उ०—३ नाह बियोगै दुखणी तेह, भूरि कस कीधो छै देह। रहै एकांतै लेइ आवास, धरम ध्यांन मन माहै जास। —वि. कु.

३ अवसर, मौका।

४ विरह जुदाई।

उ०—१ दसरथ राय दियौ देसवटउ,रहघउ वनवास जी। वलि वियोग पड़यउ सीतानउ, आठं पहर उदास जी। —स. कु.

उ०—२ खसबोय लगाई। आप ढोलियै पोढ़ियो। भरमल पवन करै छै। वडारण पगै हाथ देवै छै। वातां करै छै। खुस-वखत छै हसै छै। घणां दिनां रो वियोग भागो, सो दोनूं परम राजी छै। —कुंवरसी सांखला री वारता

५ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार विशेष जिसमे प्रेमी प्रेमिकाओं के विरह का वर्णन होता है।

वि.—बिना, रहित।

क्रि वि.—अलग, वियोग मे।

रू भे.—बिग्रोग, बिजोग, 'बियोग, बिवोग, वजोग, विग्रोग, विजोग।

अल्पा,—बिजोगौ, बियोगौ।

बियोगण, बियोगणी-स. स्त्री [स. वियोगिनी] वह स्त्री जिसका पति या प्रियतम उससे अलग या दूर हो, विरहणी।

रू भे—बिजोगण, बिजोगणी, बिजोगिण, बिजोगिणि, बिजोगिणी बिजोगिन, बिजोगिनि, बियोगिण,'बियोगिणि, बियोगिणी, गिणी, बिवोगण, बिवोगणि बिवोगणी, बिवोगिण, बिवोगिणि, बिवोगिणी।

बियोगांत-वि. [सं.] जिसकी कथा का अंत दुःखपूर्ण हो।

रू. भे.—बिजोगांत।

बियोगिण, बियोगिणि, बियोगिणी —देखो 'बियोगण' (रू भे.)

उ०—सीलवती मैं हो राहिज जोगता, धरम पणै दृढ थाय। वलि विसेख हो जेह बियोगिणी धरम करइ मन लाय। —वि कु.

बियोगी-वि. [स.] जो अपनी स्त्री या प्रिया से अलग या दूर हुआ हो, विरही।

स पु.—वह नायक जो प्रिया के वियोग के कारण दुःखी हो।

रू. भे—बिग्रोगी, बिजोगिय, बिजोगी, बियोगन, बियोगी, बिजोगी।

बियोगौ—देखो 'बियोग' (अल्पा., रू भे.)

उ०—राणी मांख्या ढपला नै सोगी रे, म्हारै म्हालां पड़ै बियोगो। हा हा करूं हिवै कांसूं रे, म्हारो हिवड़ो फटै मां सू। —जयवाणी

बियोजक-वि. [स.] १ वियोग उत्पन्न करने वाला।

२ दो सयुक्त वस्तुओ को अलग करने वाला।

बियोजण-सं स्त्री. [स बियोजन] १ दो सयुक्त वस्तुओ को अलग करने की क्रिया, पृथक करने की क्रिया।

२ गणित में किसी बड़ी संख्या मे से छोटी घटाने की क्रिया, बाकी।

बियोजित-वि. [सं.] अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ।

स स्त्री.—किसी बड़ी सख्या मे से छोटी सख्या के घटाने के बाद आई हुई सख्या।

बियो—देखो 'दूजो' (रू भे.)

उ०—१ चहुवंगा कुळ चल्लणी, बियो न चल्लै कोय। धाड़ न घट्टै बूंद की, सीस पलट्टै तोय। —रा. रू.

उ०—२ अनि गढा विखम भ्रम ऊपजे, खळ त्या उथप खभियो। 'गजसाह' बियो गुज्जर सिरै, 'अभैसाह' आरभियो। —रा. रू.

उ०—३ क्रत सोभति रेसम लूंब करै, धुरवा किर फूलिय सझ धरै। अत उग्र तुरगम अग बियै, क्रम सोभत आवत डोर कियै। —रा. रू.

बियोबन-स. पु—१ युवा-अवस्था के बीच का समय।

२ युवा अवस्था के बाद का समय।

बिरंग, बिरंगू, बिरंगोड़ौ बिरंगौ-वि [स. विरग] (स्त्री. विरंगी) १ अप्रिय, असुहावना।

उ०—१ ततखण माळवणी कहइ, साभळि कंत सुरग। सगळा देस सुहामणा, मारू देस बिरंग। —ढो. मा.

उ०—२ सेझ आवो सुंदरी, ज्यों सोभा दे सेझ। तो बिन सेझ बिरंगियां, कही न लागै जेह। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ छूटो नीर चला सतराम ऊंवरता छेला, सरूपदास री म्हांती उभेला ममद जामी आज म्हानै छोड अकेला कठीनै जावो, कोयला बिरंगा हेला नै रही कमध। —स्वरूपदास

२ जो समय के प्रतिकूल हो।

३ कड़वा, बेस्वाद।

४ बदशक्ल, बदरूप, कुरूप।

५ बदरंग, बुरे रंग का।

६ अनेक रंगो वाला, अनेक रंगो का

उ०—कंपू मार लेगा तीजी ताळी सौं कुरगी कीधी, जका बाद नौरंगी प्रणाळी भुजां जोम । मांनू तारकी बिरंगी काळी घडा माथै, भूप 'डूगै' विधंसी फिरंगी वाळी भोम । –गिरवरदान कवियो

७ भयकर, भयावना, भयावह, डरावना ।

उ०—घटा टोप मेघा गडडु त गाजै, हुबक्कै तरंगा बिरगांहु बाजै । निचापिच्च लागी घडी ताल भाजै, ग्रहो कोइ रावै ग्रठै ग्रम्ह काजै । --घ व. ग्र

८ उदासीन, खिन्न ।

उ०—१ नाह मिळियौ सही बिरग रंग तीसरै, क्रमता ग्रयी गिर जेज नह को करै, रोसियै 'जसं' भड रिमा घड गोळिया, फूटि ग्रस ग्रसमरा रुधिर झकबोळिया । —हा झा.

उ०—२ नयरणाह आगलि गयइ कुग्गू, राय चीति जा हुयउ बिरगू । जोइ वासु दाहिणउ । —सालिभद्र सूरि

९ ग्रशुभरण (वर्ण) ।

१० फीका, नीरस, ग्रानन्दरहित ।

उ०—बडां लियां भड ग्रनड कस तुरग सजतं विखौ, ग्रभंग जंग जीत ग्रद भुजा ग्रोपै । सूर बड सुरग रग चढियौ ग्रसमरा, किया नवरंग बिरग दुरग कोपै । —मबळो सादू

११ ग्रनुराग या इश्क रहित ।

१२ दुःखपूर्ण, पीड़ायुक्त, सन्तापयुक्त ।

उ०—बरसण लागा बैण बिरंगा, तरसण लागा तीठा । परसण लागा पाव दुहेला, दरसण छेला दीठा । —ऊ. का

१३ प्रभावरहित, रौबरहित ।

१४ प्रतिष्ठा रहित बेइज्जत ।

१५ जोश रहित, ग्रावेशरहित ।

१६ शोकसूचक, शोकजनक।

१७ भद्दा, बुरा ।

उ०—१ मुरधर छोड परधरा वसै, लगै ग्रधाणां ग्रोपरा । बासडा रै सारै बिरगा, जाणै दरखत तोप रा । —दमदेव

उ०—२ वे बिरगोड़ा रूख, जठै सूखी छाहडली । हाण-फांग सी घास, काय काया री ढिगली । —मक्तिदान कवियो

१८ शुष्क, सूखा, निर्जल ।

उ०–देस बिरंगउ ढोलणा, दुखी हुया इहा ग्राइ । मन गमतः पाम्या नही, ऊंट कटाळा खाइ । —ढो मा.

१९ कडवा, कर्णकटु ।

२० विकट ।

उ०—ताय सुरंग वाल कहिवै तणी, दोग बिरंगी दहन री । उर जेज घरी म करो उरड, ऊनी तेज ग्रगग्र री । —रा रू

२१ जिसका रग बदल गया हो, परिवर्तित रंग का ।

उ०—दव लगा वन ग्रतरै, छूटै पवन ग्रछेह । धूम दिसा तिम धूधळे, व्योम बिरंगै वेह । —रा. रू.

रू भे —बिरग, बिरगौ ।

बिरंच–स. स्त्री.—१ एक ग्रोषधि का नाम ।

उ०—तठा उपराति करि नै राजान मिलामति गोळी, चूरण, ग्रासण, कवळ, कुटी, नागासिगी बिरंच, मुफर, ताबेमर, मदन कामेमर, जिता मारिग्रा ग्रोखध फेरीजै छै । —रा. सा स.

२ देखो 'बिरंचि' (रू. भे) (डि ना. मा.)

उ०—१ बाचै चत्रवेद बिरच बखाण, प्रकासं व्यास ग्रठार पुराण । सत्री दुज बैस गया सुद्र खोज, हुतौ ज हुतौ ज हुतौ ज हुतो ज । —ह. र.

उ०—२ महा मनोहर महल छबि, ग्रति ऊचा ग्रावास । रतन-जटत राजत ग्रधिक, तहा बिरच निवास । —गज उद्वार

उ०—३ प्रेमी पुरी बिरंच की, का पै बरणी जाय । मत परवाण वखाणियै, ग्रपणी ग्रपणी भाय । —गज-उद्घार

उ०—४ जमो सहावा नागेद्र लोक उपावा बिरच जाणै, धूरजटी तावा ऊच भावा मेर धीग । ग्रावा लोम रिखी गाम लम्मी ज्यू दधीच हाड ऊन, सामवेद वेदागा बीरावी सम्भू सीग ।

—हुकमीचद खिड़ियौ

बिरचनाथ—देखो बिरंचि' (रू. भे.)

बिरंचसुत - देखो 'बिरंचिसुत' (रू. भे.)

बिरंचि–स. पु [स विरचः विरचि] ब्रह्मा का नाम, विधाता ।

उ०—सकनतूर सावात सराहै सहचरी, काम बिरचि विमास क स्रो हथ सू करी । जेहरि घूघरमाळ पगा झुणकै जिया, कुजै वारिज पुंड्र बचा कलहंसिया । —बां. दा.

रू. भे -बिरच, बिरचनाथ, बिरंचि, बिरचिय, बिरची, बरच, बिरच, बिरचनाथ, बिरचिनाथ, बिरज, बिरजौ ।

बिरचिनाथ देखो 'बिरचि' (रू. भे.)

बिरंचिसुत–स पु [स. विरंचि+सुत] ब्रह्मा के पुत्र, नारद का एक नाम ।

रू. भे.— बिरचसुत ।

बिरज, बिरंजौ–स. पु.—१ चावल के साथ बनाया जाने वाला मांस विशेष ।

उ०—तठा उपरायत सीरो-पुडी वणै छै । सोहिनै साक देवजीभि जोयजै छै । बिरजै सार चोखा मगायजै छै । पुलाव साक कमोद बीगाजै छै । काठा गोहवा री ग्राटो मंगायजै छै । पू नाळेर-गरा गोळवा रोटा वणायजै छै । —रा. सा. सं.

२ चावल का बनाया जाने वाला, मीठा व्यंजन विशेष।

३ देखो 'बिरंचि' (रू. भे.) (नां. मा.)

बिरंडी—१ देखो 'ग्रांडो' (रू भे.)

२ देखो 'भिंडी' (रू. भे)

बिरउ–वि.—हलका, तुच्छ।

उ०—ग्रम्हे किसा छां ? मिथ्यात्व मिथ्यात्वनउ सस्कार तिणि करी निकृस्ट बिरउ भाव तेहतउ गलिउ गुरु गुरुउ विवेक तत्वात-त्वविचार जेहनउ छइ। —षष्ठीशतक

बिरक–स. पु. [सं. वृक] भेड़िया।

उ०—सीकोतरि सवकरणी,प्रेत डक्करणी ग्रपारा। विवध भूत वेताळ, वीर पळचर विसतारां। गिरध चील गोमायु, बिरक जंबू रसवाया। काक कंक की गिरणै, ग्राम पळ सभळ ग्राया। —रा रू.

रू. भे.—वरक।

बिरकत—देखो 'विरक्त' (रू. भे)

उ०—१ नदी ताळ जहा नही जहा वापी सर कुवा। सबही उजड़ देस देख मन बिरकत हुवा। —दूलजी जोईये री वारता

उ०—२ ग्रेसै नटवा वास चढि, उलटा मेलै दाव। जनहरीया यूं जगत मै बिरकत मेलै पाव। —ग्रनुभववाणी

उ०—३ गोनी देख न विरचियै, भरी न घरीयै चित्त। हरीया रीती ग्रर भरी, दोऊ सूं बिरकत्त। —ग्रनुभववाणी

उ०—४ बैरागी बिरकत भलो, जुग सु न्यारा मन। हरीया गिरही सो भलो, सब सु दासा तन। —ग्रनुभववाणी

उ०—५ हरीया हिरमच लागकै, बैठे बिरकत होय। बिरकत सोई जाणियै, बिखं बिरला सोय। —ग्रनुभववाणी

बिरक्ख—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे)

उ०—नमो हयग्रीव निगम्म निधान, बदा रवि ब्रह्म बदै बड रमात। नमो प्रथु राजा ग्रादि पुरुष न, नमो बर लच्छि परम्म बिरक्ख। —ह र.

बिरक्त–स पु. [सं.] १ रामस्नेही साधुग्रों का एक भेद विशेष, जिसके साधु नगे बदन, नगे सिर ग्रौर नगे पाव रहते है। (मा म)

२ कवल ताल देने के काम ग्राने वाला बाजे।

वि. [स] १ ग्रत्यन्त लाल, गहरा लाल।

२ सासारिक प्रपंचो ग्रादि से दूर रहने वाला, सासारिक बन्धनो से मुक्त।

३ उत्तेजनायुक्त, उत्तेजित।

४ भोग विलास से दूर रहने वाला, जिसे कामवासना न हो।

५ बदले हुए रग का, बदरग।

६ ग्रनुराग या ग्रासक्ति रहित।

७ कर्मानुष्ठान के फल की ग्राशा न रखने वाला, त्यागी।

उ०—१ मिथ्यादृस्टि तरणी उत्थापक, व्यक्त गुणै सुविलासी। वलि बिरक्त मोहादिक भावे, एक युक्ति ग्रभ्यासी। —वि. कु.

उ०—२ पण राजा को दान लेऊ नही बिरक्त न त्रण बराबर छो। —पचदडी री वारता

८ खिन्न, उदासीन।

रू. भे.—बिरकत, बिरक्त, बिरगत, विरकत, विरगत, विरत, विरता, विरत्त, विरिक्त, विरिक्त, विरित।

बिरक्तता, बिरक्ति–स. स्त्री. [स] १ उत्तेजना।

२ खिन्नता, उदासीनता।

३ ग्रनुराग या ग्रासक्ति का ग्रभाव, विमुखता।

४ भोग विलास ग्रादि से परे रहने की ग्रवस्था या भाव।

रू. भे.—विरगता, विरगति विरता, बिरति, विरती, विरत्ति, विरत्ती।

बिरख—देखो 'व्रक्ष' (रू भे.)

उ०—१ तरवर सदा पुराणा पाता, थायां नवा पलै बिरण थात। सब जारणग सु बिरख नव सहसी, पूजै नवा पुराणा पात। —हरीराम ऊहड़ री गीत

उ०—२ वट तमाल पीपल बिरख, ग्ररजन समी ग्रपार। ईढ तजै पत्र एक री, सुगन पांचेइ सार। —रा. रू.

उ०—३ विना पेड़ जाह बिरख है, विन फूलां फळ खाय। विनां पख जाह भवर है, ग्रधर बिलबै भाय। —ग्रनुभववाणी

उ०—४ हरीया चदरण बावनो, वाकै पासि बिरख। सोई चंदरण दूसरा, कीया ग्राप सिरख। —ग्रनुभववाणी

बिरखभांण, बिरखभांणु, बिरखभांन, बिरखभांनु—देखो 'व्रसभानु' (रू. भे)

उ०—मेरे गोपाळजी कूं रोटी बनाय देऊ एक छोटी दूजी मोटी। मेरे गोपाळजी का व्याह करूंगी, बिरखभांन की बेटी। —मीरा

बिरखा—देखो 'वरसा' (रू. भे.)

उ०—१ किसन सिर फूल बिरखा करै, ग्रमर तमामै ग्राइया। निहंग घरि बीच मावै नही, सुरै विवाण सबाहिया। —पी. ग्र.

उ०—२ रूड मुड सै खड, गुडै गज माणकडहह। ग्रगनि बाण ग्राखिल, बीज बिरखा ग्रहग्रहह। —गु. रू. बं.

उ०—३ विना नीर जांह कवळ है, विन बिरखा वरसाळ। विना मास जाह रुत है। मात पिता विन बाळ। —ग्रनुभववाणी

उ० ४ उलटिया पेम चहु ग्रोर बिरखा लगी, गिगन घनघोर तित दद गाजै। खळकिया नीर तन तठ माडा भरया, ब्रह्म परफूळ झट कवल छाजै। —ग्रनुभववाणी

उ०—५ रसीद भाई कह्यो—जद तौ बाभा थे घणा फोडा भुगतिया अँडी ठा'व्हैती तो म्हैं सफाखानै गाडी लियातो । घणी ई बाट जोई । सेवट बिरखा देखनै रवांना व्हैणो ई पड्यो ।

—फुलवाडी

बिरखाकरण—देखो 'बरसाकरण' (रू भे.)

बिरगत—देखो 'विरक्त' (रू. भे.),

बिरगता, बिरगति—देखो 'विरक्तता, विरक्ति' (रू. भे.)

बिरगरावणो, बिरगरावबो—क्रि. स.—दीनता दिखाते हुए दीन वचन बोलना; गिडगिडाना ।

उ०—ऊजळो सुभाव, चड़ूड चल्लो, गाव री बेटी पण सगळा सूं गुंघटो पल्लो । सूधी गऊ रा ऊपरला दात । बिरगरावती सी बोलै लीलडी सी काढै । कीसू ही खेडै नी आवै मिनखा नै हस'र दात दिखाळै ।

—दसदोख

बिरगरावणहार, हारौ (हारी), बिरगरावणियो—वि० ।

बिरगराविप्रोड़ो, बिरगरावियोड़ो, बिरगराय्योडो—भू० का० कृ ।

बिरगरावीजणो, बिरगरावीजबो—भाव वा० ।

बिरगारावियोड़ो—दीन बचन बोला हुआ, गिडगिडाया हुआ ।

(स्त्री. बिरगरावियोड़ी)

बिरड़क—सं. पु.—१ बाधा, विघ्न, रोक, रुकावट ।

२ कुएं से पानी खीचने में कोई रोक ।

बिरड़णो, बिरड़बो—क्रि. अ.—१ घुसना, धसना ।

उ०—बिरड़ ऊरड मुरड बड बड हूर हड़ हड रभ हड हृड, बीजड ओभड़ कध बड बड़ दड़ड रतपड मुंड दड़ दड । —जगो खिडियो

२ कुपित होना, क्रोधित होना ।

उ०—वारण बिरड़ियो दरबार विचाळै, कायरा हुई करारी । 'बाघा' हरै भागरै वाई, कुंवरपणै कटारी ।

— रतनसिंह राठौड़ रो गीत

३ लडना, झगड़ना ।

४ राजसत्ता के विरुद्ध होना, विद्रोही होना ।

उ०—कवर बिरड़ियो मुरड अमराव फिरिया सको, अैरमी वार बिखमी बणी आंण । पाट चीत्तौड रो हुवो ऊथळपथळ, 'दुरग' नूं सिमरियो तई दीवांण । —दुरगादास आसकरणोत रो गीत

बिरड़णहार, हारौ (हारी), बिरड़णियो—वि०— ।

बिरड़िप्रोड़ो, बिरड़ियोड़ो, बिरड़्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिरड़ीजणो बिरड़ीजबो—भाव वा० ।

बिरडणो, बिरडबो—रू भे. ।

बिरड़ियोड़ो—भू. का. कृ.—१ घुसा हुआ, धसा हुआ. २ कुपित हुवा हुआ, क्रोधित हुवा हुआ. ३ लडा हुआ, झगडा हुआ । ४ राजसत्ता के विरुद्ध हुवा हुआ, विद्रोही हुवा हुआ ।

(स्त्री बिरडियोडी)

बिरचणो, बिरचबो—क्रि अ —१ पलटना, बदलना, विमुख होना ।

उ०—१ स्वारथ नी सगाइयां, जोइजो इण ससार । किण विधि बिरचै सू, कत सू 'सूरिकंता' नार । —जयवाणी

उ०—२ साजनिया ममार, जै कीजै तो जोडनै । नेह निबांहणहार, 'जसा' न बिरचै जीवता । —जसराज

उ०—३ करै वणिक कूल कसब कर, हित मांहै वित हांण । वणिक दगो दै बिरचियौ, उर इचरज मत आण । —बां. दा.

उ०—पामी 'बीका ! पाट, करनादै स्रीमुख कह्यो । थारो रहसी थाट, म्हारा सू बिरचै मती । —अग्यात

२ पीछे हटना ।

उ०—हरीया असा हय रहो, परबत कैसे भाय । धका धूंम केता सहै, बिरच कबु नही जाय । —अनुभववाणी

३ विरुद्ध होना, प्रतिकूल होना ।

उ०—कूळ उच मईजन मेम कियो, दिल चेतन सूध बिस्वं न दियो । अजडो धकधूण तको तरछो, बुरचीनोय देवळ नां बिरचो ।

—पा. प्र

४ क्रुद्ध होना, कुपित होना ।

उ०—१ मेटण परजापत जिगन मद्द, भव हुकम बिरचियो वीरभद्द । जुरमिध भोम तजि वाहजुद्ध, किर सेन बधि जूटा सकुद्ध ।

—रा. रू.

उ०—२ बिरचि राव मत्रसाळ 'श्रोरंग' पड़ै बाथिया, जाथिया अनचळै बदन जरदै । राळियौ साथिया लोक त्रय लोक रै, हेम रो हाथिया बीच हरदै । — हरदैनारायण हाडा रो गीत

५ रचना, बनाना ।

उ०—ततखिण तिहा मिलिया चलियासण सुर कोडि, प्रभुना पद पंकज प्रणमइ बेकर जोडि । बेकर जोडी मछर छोडी समवसरण विरचति, माणिक हेम रूप मय त्रिगढ छत्र त्रय झलकंति ।

— स. कु.

६ आयोजन करना, मनाना ।

७ विरक्त होना, उदासीन होना ।

उ०—रीनी देख न बिरचीयै, भरी न धरीयै चित । हरीया रीती भर भरी, दोऊ सं विरकत । —अनुभववाणी

८ कम होना, घटना ।

उ०—माया खरची खूब है, जो कुछ खरची जाय । हरीया खरचत खावता, बिरच कबु नही जाय । —अनुभववाणी

९ त्यागना, छोड़ना।

उ०—साजन ऐसा कीजियै, जामैं लखरण बतीस। मीड़ पड़्यां विरचै नहीं, सीस करै बगसीस। —अज्ञात

१० धोखा देना, छलना।

उ०—म्याराजी, विरचौ मती, प्याराजी कर प्रीत। म्याराजी रहतां नमख, श्रो वैराजी चीत। —मयारांम दरजी री वात

विरचणहार, हारौ (हारी), विरचणियौ—वि०।

विरचिग्रोड़ौ, विरचियोड़ौ, विरच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरचीजणौ, विरचीजबौ—भाव वा०।

विरचणौ, विरचबौ विरच्चणौ विरच्चबौ, विरछणौ, विरछबौ वरचणौ, वरचबौ, वरच्चणौ, वरच्चबौ, वरछणौ, वरछबौ —रू० भे०।

विरचयिता–वि. [सं.] बनाने वाला, रचना करने वाला।

रू भे—विरचियता।

विरचित–वि. [सं.] रचित, निर्मित।

विरचियता—देखो 'विरचयिता' (रू. भे.)

विरचियोड़ौ–भू. का कृ.—१ पलटा हुग्रा, बदला हुआ, विमुख हुवा हुआ २ पीछे हटा हुआ। ३ विरुद्ध हुवा हुआ, प्रतिकूल हवा हुआ। ४ क्रुद्ध हुवा हुआ, कुपित हुवा हुआ। ५ रचा हुआ, बनाया हुआ। ६ आयोजन किया हुआ, मनाया हुआ। ७ विरक्त हुवा हुआ, उदासीन हुवा हुआ। ८ कम हुवा हुआ, घटा हुआ, ९ त्यागा हुआ छोड़ा हुआ १० धोखा दिया हुआ, छला हुआ।

(स्त्री. विरचियोड़ी)

विरछ—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ विरछां लूंबी वेलियां, फूलीफळी फवेह। सीतळ छाह सुहावणी, दिणियर किरण दवेह। —र. हमीर

उ०—२ मेली पवित्रा सीस, किता रेसम सुवरणी। फूल क्यारी री भणी, सबा दोनू उपरणी। चौसर चोघड गंध, वर्णां फूलां री गहणी। विरछ वसंत री वणी, निजर तिरछी सूं वहणी।

—अरजुणजी बारहठ

उ०—३ सीस सरग सातमें, परग सातमे पयाळं। अरणव सातं उवर, विरछ रोमाच विचाळं। —र. रू.

उ०—४ विरछां बेला पर चढणे बुधि काही, उर मे ग्रलबेलो वेलण सुध आई। आंणा लेवण नै अंधूळा आया, दरसण देवण नै मोभी मुळकाया। —ऊ. का.

विरछौ–सं. पु.—बबूल की फली।

विरज–स. पु. [सं. विरजः] १ भगवान् विष्णु का नामान्तर।

२ शिव, महादेव।

३ वीर्य बीज।

४ सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम।

५ सावर्णि मन्वन्तर का एक देवगण।

६ त्वष्ट एव विरोचना के पुत्रों में एक एक पुत्र राजा, जो विशुचि का पति और शतजित् का पिता था।

७ पूर्णिमत राजा का एक पुत्र।

[सं. विरजस्] ८ भगवान् नारायण का एक मानसपुत्र, जो कीर्तिमत का पिता था।

९ शिवावतार का एक शिष्य।

१० वसिष्ठ एव ऊर्जा के सात पुत्रों में से एक पुत्र ऋषि।

११ कश्यप एवं कद्रु के पुत्रों में से एक नाग पुत्र।

१२ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

१३ वारुणि कवि ऋषि के आठ पुत्रों में से एक पुत्र, प्रजापति।

१४ कला (कर्दम प्रजापति की पुत्री) एवं मरीचि महर्षि पूर्णिमा नामक पुत्र का पहला पुत्र। दूसरे पुत्र का नाम विश्वग था।

वि.—१ जिसका रजोधर्म बन्द हो गया हो। (स्त्री)

२ धूल, गर्द से रहित, निर्मल, स्वच्छ।

३ सुखवासना से मुक्त, अनुराग रहित।

विरजमंडळ—देखो 'व्रजमंडळ' (रू. भे.)

विरजस्क–स. पु. [स.] सावर्णिमनु के एक पुत्र का नाम।

विरजा–सं. पु. [सं. वीर्य+ज] १ पिता। (ह. नां. मा.)

२ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

३ बीसवें कल्प में उत्पन्न श्री ब्रह्मा का रक्त नामक एक मानस पुत्र।

४ शिव का एक नामान्तर।

५ वसिष्ठ एवं ऊर्जा के आठ पुत्रों में से एक।

६ भगवान् नारायण का एक पुत्र।

स स्त्री.—७ शुभ पुत्र ऋक्ष वानर की पत्नी जो विरजस् नामक प्रजापति की कन्या थी।

वि. वि.—वाली एवं सुग्रीव क्रमशः इन्द्र व सूर्य से इसे पुत्र प्राप्त हुए थे।

८ श्रीकृष्ण की एक प्रिय सखी जो राधा के भय के कारण नदी बन गई। कही २ पर राधा के शाप से भी इसका नदी बनना स्वीकार्य है।

९ नहुष की पत्नी एव ययाति की माता, जो सुस्वधा पितरों की कन्या थी।

१० अदितिपुत्र महोत्कट का वेशधारी श्रीगणेशजी का भक्षण

करने वाली राक्षसी, जिसका उदर विदीर्ण कर श्रीगणेशजी बाहर आ गये थे।

विरजाक्ष-स. पु. [सं.] मेरु पर्वत के पास उत्तर मे स्थित एक पर्वत।

विरजाक्षेत्र, विरजाखेत, विरजाखेत्र-स पु. [सं. विरजाक्षेत्र] उडीसा मे जाजपुर के पास माना जाने वाला एक पवित्र तीर्थ।

विरजामित्र-स. पु. [सं विरजस+मित्र] वसिष्ठ के पुत्र विरजस् का नामान्तर।

विरडणौ, बिरडबौ—देखो 'विरडणौ, विरडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वळि भरियौ बिरडियौ, सुरम माभी गहबमी। भ्रूंह चडै चख त्रिडै, रोस हूं मुंह हइ रातौ। —गु रू. ब.

उ०—२ ब्राह्मण पूतळी देखि नै मन मैं विचारियौ। आगलै साथियै पूतळी तंयार कीवी। हिवै स्रीपरमेस्वर रो भजन करू ज्युं जीव पडै। ताहरा पूतळी फिरण लागी। तद उवै च्यारै ही बिरडीया। ऊ कहै म्हारी बाइर, ऊ कहै म्हारी बाइर।

—चौबोली

उ०—३ हूकळ पोळ बिरडियौ हाथी, नीछट भीळ निराळी। 'रतन' पहाड़ तणै सिर रोपी, धूहडियै धाराळी।

—रतनसिंह राठौड़ रो गीत

बिरडणहार, हारौ (हारी), बिरडणियौ—वि०।

बिरडिप्रोड़ौ, बिरडियोड़ौ, बिरड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विरडाजणौ, बिरडीजबौ—भाव वा०।

बिरडियोड़ौ—देखो 'विरडियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री. विरडियोडी)

बिरणियौ-वि.—वीर, बहादुर, योद्धा।

उ०—धाव घण थटा अन पिसण दळ घालणौ, पाच सं पाखरचा हेकलौ पालणौ। राव जसवंत सौ राखिया बिरणिया, हाक वागी तै कूदिगा हिरणिया। —हा. झा.

विरतत, बिरतति—देखो 'व्रतात' (रू. भे.)

उ०—१ ढोलइ मनि आरति हुई, साभळि ए विरतत। जे दिन मारू विण गया, दई न ग्यान गिणन्त। —ढो मा.

उ०—२ ताहरा राणी पुछियौ-जु महाराज, कुण वास्तै हसीया। राजा नटियौ। राणी बहुत गाढ करि पुछण लागा। जु महाराज, मोनु हसीया रो बिरतंत कहीजै। —चौबोली

उ०—३ हिव बिरतत सुणौ सहु, आदरवत अचूक। सेठ तिहा ठगनी परै, पडियौ पाडै कूक। —वि कु.

उ०—४ पूछयौ भूपै कुण परदेसी, इण ठामै क्यु आयौ। निज अपणा घर देव त्रियानौ, सहु बिरतत सुणायौ। —ध व. ग्र

उ०—५ तेहनै कह्यौ निमित्तियै जी, बाल पणै निमत। जणमी पुत्र मुवा थका जी, करम तणौ बिरतत। —जयवाणी

बिरत-सं. पु—१ झूठ, असत्य। (अ. मा)

२ यति, विश्राम। (पिंगल शास्त्र)

३ देखो 'व्रती' (रू. भे)

उ०—१ डूम-ढल्ला कीरत गावै, मंगता-भिखारी बिरत चावै कोइयो, कोइयो आयो चाद रै चानणै मे बुहार झाड'र खायग्या, लेग्या भर केई मागता ही गया। —दसदोख

उ०—२ स्रवण वयण सभळै, नयण बिळकुळै निरमळ, । जोत वदन झळहळै, लाज भुजि भळै स उज्जळ। सूर बिरत सल्लळै, ज्वाळ झळहळै फुणधर। कना प्रळैकृति करण, किरण परजळै दिणकर। —रा. रू.

५ देखो 'विरक्त' (रू भे)

उ०—१ बूढा तै किम बाल कहीजइ, बिरत नही जाणउ कोई। एक रुपइयउ खोटउ बाध्यउ, दोड्यउ करंय दगाई रे। —स. कु.

उ०—२ रात्रि भोजन करता थका ए, मन मानै खाय कै। बिरत काई नही ए, मरने दुरगति जाय कै। —जयवाणी

६ देखो 'व्रत' (रू भे)

रू. भे.—बिरत, वरत।

बिरतांत—देखो 'व्रतात' (रू. भे)

उ०—१ मोना ना दीठा दान रे, जाणउ पूरब बिरतांत रे। अणसण लीधउ एकान रे, बाधण पण थइ उपसात रे।

—म. कु.

उ०—२ राजा स्यामसुदर सागो बिरतांत दीठो। उवै उडीया पछै आ बोली 'हिमै खबरि पडी?' ताहरा राजा कह्यौ 'खबरि पडी।' फेरि कहण लागी, 'सवारै रा प्रातिसी'।

—स्याममंदर री बारता

उ०—३ भाली नु कहो ग्रो कासु बिरतांत? तद भाली इण मा गी बात सागी स्वामीजी नु कहि दीवी—जिण तरै सा कामण कराया, उण नदी मे नाखिया, सो सरब मालम कीवी।

—कंवरसी साखला री वारता

उ०—४ कवरसी रथ सु उतर घोडै असवार हुवौ। घोडै नै गजरा खुवाई, सो हाथ चाळीस-पचास उपर जाय खडौ। बरछी मिलार छै, सो खरल मारा देखता रह्या—जो ग्रो कासु बिरतांत? कुण छै?' —कुवरसी साखला री वारता

बिरता—१ देखो 'विरक्त' (रू भे.)

उ०—भील ही भगत थारै भला, कैंगै ना मोसा करै। हमां मत कूकि बिरता हुयै, ये काजि अवनरै। —पी. ग्रं.

२ देखो 'विरक्तता' (रू. भे)

उ०—१ हरीया हिरमच लायकै, बैठे विरकत होय। बिरकत

सोई जांणियै, विलै विरता सोय । —अनुभववांणी

उ०—२ ऊपनुं केवलनांणु सांमीय ए नेमि जिणेसरह ए, सांभली सांमि वखांण विरता ए सावयव्रतु धरइ ए । —सालिभद्र सूरि

विरति, विरती—सं. स्त्री. [स. विरतिः] १ अन्तिम अवस्था, अवसान, समाप्ति ।

उ०—भवे त्वरथी अरथी बकत नह व्यरथी अति यहीं, भयोनी योनी की विरति चित होनी रचि यही । —ऊ. का.

२ अन्तिम छोर, सिरा ।

३ देखो 'विरक्ति' (रू. भे)

उ०—१ विरति नही नही आंमडी, नही पोही सो नहीं आदरी दीख । तें पिण श्रेणि करायने, तें कीधो हो स्वांमी आप सरीख । —वृ स्त.

उ०—२ केइ उपाय करी मेलण करू, परिग्रह विविध प्रकार । विरति करुं पिण मन न रहै वलि, तौ किम हुवै भव पार (निस्तार) —ध. व. ग्र.

४ देखो 'व्रति' (रू. भे)

उ०—नयतै निय सेन तणी नागद्रह, भारत भू भड विरती भीर । पग किम रावत परठै पाछा, जडिया परियां तणा जंजीर । —रावत रत्नसिंह सिसोदिया रौ गीत

वि —५ क्रोधपूर्ण ।

उ०—जोधपुरी जुध जोपवा, गढ लेवा 'गजसाह' । विरती कोडी विळकुळं, रीसाणो रिमराह । —गु रू. ब.

विरतीचख, विरतीचख्, विरतीचख—सं. पु.—मंत्री । (डिं. ना. मा)

वि. [स. विरत्त+चक्षु] लाल आंखों वाला, क्रोधपूर्ण आंखों वाला ।

विरतेसर, विरतेसरी, विरतेसुर, विरतेसुरी, विरतेस्वर, विरतेस्वरी—देखो 'व्रतेस्वरी' (रू. भे.)

विरतौ—देखो 'विरत्तौ' (रू भे.)

उ०—घर मे मन सा फिरतौ घिरतौ, न कहै मरम बोलीजें निरतौ । ताम सुं मत तोडै तिरतौ. वडां रै काम म थाए विरतौ । —ध. व. ग्र.

विरत्त—१ देखो 'विरक्त' (रू भे.)

उ०—एक एक मुनिवर एहवाजी, सूत्र में कहियै निरत्त । संकल्प आपमिया पछै जी, उगियां पछै विरत्त । —जयवांणी

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

विरत्तणौ, विरत्तबौ—क्रि. अ.—१ कुपित होना, क्रुद्ध होना ।

उ०—दिल्ली साह विरत्ते, रण अगाध जम्मण उपकठे । रैणायर' रण मंडै, गौ दीवांण राम खळ खंडै —रा. रू

२ पीडित होना, दुःखी होना ।

३ उदासीन, होना, खिन्नचित्त होना ।

उ०—'इंदौ परव परव आभाळी, भोज सुतन अनसाह भुजाळी । जैत सुभाव जोत जगपत्ती, वधै बीज किर बीज विरत्ती । —रा. रू.

विरत्तणहार, हारौ (हारी), विरत्तणियौ—वि० ।

विरत्तिओड़ौ, विरत्तियोड़ौ, विरत्त्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विरत्तीजणौ, विरत्तीजबौ—भाव वा० ।

विरत्ति—देखो 'विरक्ति' (रू. भे.)

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

३ देखो 'वीरता' (रू. भे.)

उ०—जं कहै तौ कीरत्ति, त्यां वधे वमुं विरत्ति । निवाज सुं रयत्रि पत्ति, अस गज दिया पुरधर अत्ति । —मा. वचनिका

विरत्तियोड़ौ—भू. का कृ.—१ क्रुद्ध हुवा हुआ, कुपित हुवा हुआ.

२ कष्टमय हुवा हुआ, पीड़ित हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ. ३ उदासीन हुवा हुआ, खिन्नचित्त हुवा हुआ ।

(स्त्री. विरत्तियोड़ी)

विरत्ती—१ देखो 'विरक्ति' (रू. भे.)

२ देखो व्रति' (रू. भे.)

३ देखो 'वीरता' (रू. भे.)

विरत्तौ—वि. [सं. विरक्त] (स्त्री. विरत्ती) १ कष्टमय, पीड़ित, दुखी ।

उ०—चढि वेगो चक्र धरि, करै काई ढील करत्ता । गळो वढै गाय रो, वळै ब्राह्मण विरत्ता । —पी. ग्र.

२ क्रोधयुक्त, क्रुद्ध, कुपित ।

उ०—१ "गजबधी" सीह विरत्ता, दखणी दळ भाजि विगूता । बालापुर मल्लिकर छोडै, दखणी दळ भागा होडै । —गु. रू. बं.

उ०—२ साह विरत्तौ मारवा, ग्राह जही गज वार । जठै सुदरसण चक्र ज्या, रिणमल्ला पणधार । —रा. रू.

उ०—३ वस वखाणै भल्लणी, बहुवाणै 'चुतरेस' । रत्तौ साहा जग कज, जाण विरत्तौ मेस । —रा. रू.

उ०—४ जोस भुजां दक्खवं रोस वीरा रस रत्तौ । गजराजां ऊपरा जाणि अगराज विरत्तौ । —रा रू.

उ०—५ विरत्तौ वेग न काइ विमास, विढेवा राउ खडै वरहास । खुरा रवि फीण उमटट्यो खाणि, लंगोड़ै लागै लाल लगाणि ।

—राव जैतसी रौ रासौ

३ उदासीन, खिन्नचित ।

रू. भे.—विरतौ, विरत्त, विरुत्तौ, विरुत्थ, विरुत्थौ, विरथौ ।

बिरथ-वि. [सं.] १ बिना रथ का या रथ से गिरा हुआ।

२ नृपंजय के पुत्र बहुरथ का नाम।

३ देखो 'व्यरथ' (रू. भे.)

रू. भे.—विरथ।

बिरथा—देखो व्रथा' (रू. भे.)

उ०—पदमरण बोली पीवता, बिरथा कीदौ वाद। छकिया मद री छाक री, समजि नही सवाद। हरख जलाली चित हुवे, पीदा प्यालौ नेम। पीव विलालौ पिलग परि, बालौ लागै वेस। —पना

बिरद—१ देखो 'बिडद' (रू. भे.)

२ देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—१ दळ-थंभ तुझ दुवारि झूंझारि धवळ तणा, धरणा बिरदां लहरण आविया अरि घणा। घणा नीदाळवा नींद वारौ घणी, तूंग नह छै भली हीस घोड़ा तरणी। —हा. झा.

उ०—२ ऐराक छाक दुरबल आधार, पावणां हून सांमां पधार। अति बिरद वहादर तव अवूज, तरवार बहादुर बिरद तूज। —वि. स.

उ०—३ पाछै यै ही नाहरू का नाहर दरसावै, 'भीमाजळ' हाथू रघनाथ सा कहावै। जादम 'किसोर' महेसदास का जाया, महेस के कंकरण सा बिरद जिरण पाया। —रा रू.

उ०—४ उभै फाबिया बिरद 'जसराज' लगि ऊजळा, भुजां भारथ दिली भार झलियौ। वालियौ आंक 'औरंग' सरिस वाजनै, वळै ही मुरडतै आक-वळियौ। —नरहरदास बारहठ

उ०—५ गढ बरियावर बिरद प्रथागा, वरियावर कमधज इम वागा। बारमो सुत पूंज महाबळ, कपामिधु जिरण नाम भ्ररणकळ। —सू. प्र

बिरदघरण, बिरदझल, **बिरदझलू**-वि.—१ बिरुदधारी, यशस्वी।

उ०—यह कामनया जी हुकम सहकार रवाना होय, अवर जनेतिया जी साजत कीजियो सहकोय। सहकोय साजत करो सुभड़ा बिरदझल बरियाम, कुळ जनक कुमरी व्याह करसी रिधू वरमी रांम। —र रू.

२ वीर, बहादुर, योद्धा।

उ०—आय हुई सब एकठी, कथ जेम कहाणी, बिरदझलू जगमाल री, कमरा कमवाणी। वेनी बापूकारनै, कथ ऐम कहाणी, ए तोजणिया स एकठी, आई आपाणी। —वी. मा.

रू. भे.—बिरदघरण, बिरदझल, बिरदझलू, बिरदाझलौ, बिरदाझल, बिरदाझलौ।

बिरदधार, **बिरदधारी**, **बिरदधारू**—देखो 'बिरुदधारी' (रू. भे.)

उ०—१ लग अरद कूप मज तूटियै लाव, आ घात सुणत उन छूटियै आव। कर बूंब तिन कीनी पुकार, धाइयौ मा करनल बिरदधार। —रामदांन लाळस।

उ०—२ गाव दुधोड हुवौ राव सोरिडमलजी रै पुत्र वेरोजी हुवा, वेराजी रै पुत्र रामदासजी हुवा। गाव दुधोड रै खेडे वापना कीनी। वडो एक आखाढसिध रजपूत हुवौ। बिरदधारी रजपूत हुवौ। —रा. सा. सं.

बिरदपगार-वि. [स. विरुद+रा. प्र. पगार=रक्षक] विरुद की रक्षा करने वाला, यशस्वी।

उ०—जिम रावरण झूझार, कमधज रामाइरण करै। 'पाल' तणौ बाहौ प्रळ ब, पडियौ बिरदपगार। —र. वचनिका

बिरदपत, **बिरदपति**, **बिरदपती**—देखो 'विरुदपति' (रू भे)

उ०—१ 'पतौ' 'जगा' री बिरदपत, 'वीरम' री 'जैमाल'। केल पुरौ कमधज दुह, हुआ चीत गढ ढाल। —बां दा.

उ०—२ पुंडरीक नभ पाटि बिरदपति, सुज पुत्र खेमधन्व वायक सति। देवानीक तास पुत्र दीपत, सुर दातार अनीक तास सुत। —सू. प्र.

बिरदांझलौ—देखो 'विरदझल' (रू. भे)

बिरदांणी-वि —विरुदधारी, यशस्वी।

बिरदाई—देखो 'वरदाई' (रू. भे.)

बिरदाझल, **बिरदाझलौ** - देखो 'बिरदझल' (रू. भे)

बिरदाणौ, **बिरदाबौ**—देखो 'विरुदाणौ, विरुदाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भड थका अवर न भायै भूपत, कवि बिरदायै बोहोत कथ। काढै कुरण तो बिन 'केहरिया', रावत कवि खूंचियो रथ। —चतुरभुज बारहठ

उ०—२ चोपड रमता इसा समाचार मीया रै नै महेची रै हुवा। तरै महेची चारण घर रो बुलायनै रामदासजी रै कनै मेलियो नै कयो, इसी तरै-बिरदायनै कहेजो वाइ लाडु रै मीया बुळण रै चोपड रमता इसी बतळावण हुइ छै, सो जाणस। —रा. मा. स

बिरदाणहार, हारौ (हारी), **बिरदाणियौ** —वि०।

बिरदायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरदाईजणौ, **बिरदाईजबौ**—कर्म वा०।

बिरदाधिप, **बिरदाधिपत**, **बिरदाधिपति**, **बिरदाधिपती** –देखो 'विरुदपति'।

उ०—हसी राधव बळ हाथ, ग्राह तणै माथै दियौ। मदा रहौ निज साथ, तार लियौ बिरदाधिपत। —गजउद्धार

बिरदायक—१ देखो 'वरदायक' (रू. भे)

उ०—धानख मुख जिकै रसण गुण धारणा, पाण बचन तोला

प्रमाण। रांमकरण महड़ रा रूपक, बिरदायक ग्ररजुण रा बांण।

—रांमकरण महड़ू री गीत

२ देखो 'बिरुदायक' (रू. भे.)

उ०—नायकां पाळडा हूत ग्रावै नहीं, लायका छुडा री ग्रतर लाहा।
कोइक बिरदायकां माथ जाणै मुकव, वायका सायका तणी वाहा।

—नवळजी लाळस

बिरदायोड़ी—देखो 'बिरुदायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री बिरदायोड़ी)

बिरद'ळ, बिरदाळो—देखो 'बिरुदाळो' (रू. भे.)

उ०—१ भगतवछळ बिरदाळ तुम, जानू दीन्हौ खोय। मो बाहर घावो नहीं बैठ रहै चुप होय। —गजउद्धार

उ०—२ सूरिजि चद्रमा सारिखा, बैठा छै बिरदाळ। खेतपाळ हणमंत खरा, कोटवाळ किरणाळ। —पी ग्र.

उ०—३ बै भाई बिरदाळ, ग्रौरंगसाहि मुराद बै। हैवैपति भेळा हुग्रा, जुध मंडण जमजाळ। —र वचनिका

उ०—४ फैल क्रोध चममा कराळा ग्राग भाळा फुणा, ताळा दे भूग्राळा ह्यूं गुणाळा तीरवांन। बिरदाळा मिषाळा ग्रडाळा जोध चाळाबध, जूटा बिहूं काळा नै बिचाळा जोरवान। —र ज प्र

उ०—५ बिहूं कूरमा माथ बिरदाळा, जोध हजार बीस जरदाळा।
त्रिह रावळ गहलोत भाण तड, भीम हठी उग्रसेन महाभड।

—सू. प्र.

उ०—६ पाघ तिहाग पाव मै, रिडमल ग्रा भट राळी। कियो छत्रपति रक नै, दियो राज बिरदाळी। —हिंगळाजदान बारहठ

(स्त्री बिरदाळी)

बिरदावणी, बिरदावबी—देखो बिरुदाणो, बिरुदाबो' (रू. भे.)

उ० १ ईहगा घणो बिरदावियो, मारू ग्रमलोमाण नूं। ग्रापरो करे दीधो उनन, तरे राव गुग्नाण नूं। —सू. प्र.

उ०—२ जो घण दीहो मागडी, ह्वं बिरदावणहार। सीगाळो बळ सोगुणो, जाणावं जिण वार। —बा. दा.

उ०—३ धूंणे सिर पकड़ै धग, ग्रसह सहे जे ग्रार। बोहळिया बिरदावियां, गरज मरे नह ग्रार। —बा. दा

उ०—४ राव रै हाथ लाहोरी कबाण गी छै। बडी खपरिया रा तीर ग्रार तो मूठ मे छै ग्रौर तरकस दोय होदा मे छै। राव राजपूता नूं बिरदावे छै, ललकारे छै, सो घोड़ा रा सवार हाथी सू पावडा बीस तीस ग्रगल बगल ऊभा छै। —डाढाळा सूर री बात

उ०—५ रट्ठौड रूप राए दीनो, सुरताण नाम दळथभण। हिंदुवै मुसळमाणी, बिरदावियं जोघ बिरदैता। —गु. रू. ब.

बिरदावणहार, हारो (हारी), बिरदावणियो—वि०।

बिरदाविग्रोड़ो, बिरदाबियोड़ो, बिरदाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिरदावीजणो, बिरदावीजबो—कर्म वा०।

बिरदावळी—देखो 'बिरुदाळी' (रू. भे.)

बिरदावियोड़ो—देखो 'बिरुदायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिरदावियोड़ी)

बिरदू—देखो बिरुद' (रू. भे.)

उ०—दातार सूरू राजू का पुत्र जैसे प्यारे। सूंबूं कायर राजूं को विख जैसे खारे। राजसभा के भूखण दिल के उदार। बिरदूं के भारे समसेर बहादरू के समसेरू के चितारे। —सू. प्र.

बिरदेत—देखो 'बिरुदैत' (रू. भे.)

उ०—दिपै चढ भूपत तांम दुवाह, रिड़म्मल ताम चढै ग्ररिगाह। 'वुधो' चढ तांम दळां बिरदेत, 'सरूप' चढै ग्ररि भाज सचेत।

—सि सु. रू.

उ०—२ कायरा चेत उड प्रेत जोगण किलक, उग्रवट भूभट बिरदेत ग्रडिगा। 'जेत' हर जीत पाई समर जीतियो, पाव भर ग्रसी जुधखेत पड़िया। —तिलोकदान बारहठ

बिरदै—देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

उ०—इद्रसिघ दक्खण थी ग्रायो, माथ लियो कर तोल सवायो। राणसुतण बिरदै ग्रमराथै, सग थयो पहुंचावण साथै। —रा. रू.

बिरदैत,—देखो 'बिरुदैत' (रू. भे)

उ०—१ वेताळ वीर ग्रागै वधै, चालै भूचर खेचरा। बिरदैत पेखि वदण भणी, जैत जैत जोधाहरा। —रा. रू.

उ०—२ चगाळ फूलत खेलत चौधार, ग्रह फट्टिय चड मुंडां पधार। बिरदैत कोडि करम्मंत बंस,, सासैत जैत जू बीर सेस।

—मा. वचनिका

उ०—३ 'ग्रभावत' क्रोध सभै ग्रणथाह, सिघा घरि साधक व्है सिघ साह। दळा निजहूत वधे बिरदैत, खळा मभि हाकळियो पखरैत। —सू. प्र.

उ०—४ बाप इता बिरदैत छळि, घरि कुळी छतीस सहि। चाल्या स्वामि समाणमा, स३ मा ग्राम मार्वत। —ग्र. वचनिका

उ०—५ सालेता सुहड़ा सामता, बिरदैता जोधा वळवता। 'गाजीसाह' सिरै गैमता राणो-राणा मिळै रावता। —गु. रू. ब.

बिरद्—देखो 'बिरुद' (रू भे)

उ०—१ धेन पूज सुर धेन, बिमधु चरणाग्रत वंदां। घनुख मांण न्रप कळप, सख जस मद बिरद्दां। —रा. रू.

उ०—२ सुकवि देख संभरे, कोड उच्चरे बिरद्दां। रीत 'ग्रजन' राठौड़, जोड लखि हद्द समद्दां। —रा. रू.

उ०—३ सुत बांधळ ठाल वरन सही, नटबा राय तुज बिरद नही।
भुगतूं दुख वाद थयी भाइयां बिरदावीय 'पाल' बनौ भाइयां।
—पा. प्र.

उ०—४ जोधा राकसे जरद् मूंगळा उतारे मद् बांहाळो खाटै बिरद् मरदां मरद्। रिमा लागे करे रद्, बहू लिये सु सबद्, हींदू ऐहद बिहद् जद जद जद्।
—ल. पिं.

बिरद—१ देखो 'बिड़द' (रू. भे.)

उ०—१ बिरद बधाई नाव, समूरथ साख सगाई। ब्याह विनायक बेळ, महोछव मेळ बिदाई। पूजा पाठ निराठ, वरै बनमाळा मोखी। जागण रातीजगा, दसूटण दायजा चोखी।
—दसदेव

उ०—२ भ्राला-गीला बांस कटा र चंवरी रा गीत गा दिया। बी दिन ही बिरद भर बी दिन ही बनोरी, बी दिन ही भात भर सागी दिन ही अमोरी।
—दसदोख

उ०—३ भैरव काळा भ्रौर भैरव गोरा भ्रौ वेगरी भ्राव। तौ बिन भ्रौ भैरव तौ बिन बिरद न होवसी। जौ तौ बिन भ्रौ भैरव तौ बिन बनोई न होय।
—लो गी.

२ देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

उ०—१ भ्राखी दुनिया म्हारी बाता सुणनै माथौ धूणै, रीझै। जगौ जणौ म्हारी बिरद बखाणै। सुण-सुणनै कायौ व्हैयौ। नामून सूं भ्रोक्या बैठगी। पण भ्रबै जावतां बाता रा सिरै मरम नै सावळ समझ्यौ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ एक फिरत उचकै उरद, मनि जग बिरद बिमोह। नटपट्टी दीवै निपट, घटी पलट्टी सोह।
—रा. रू.

३ देखो 'बिरुद्ध' (रू भे.)

४ देखो 'ब्रद्ध' (रू. भे.)

उ०—१ बिरद पिता उहा दारग वन, तहां रिखी स्रम तपोधन तन।
—रामरासो

उ०—२ जु धनौ घणो बिरद छै इण रै सेवा करण वाळो कोइ नही छै।
—पचदंडी री वारता

उ०—३ फेर कुवर री राणी नै फुरमायौ—जै राज रौ काम कुण चलावसी, राजा तौ बिरद हुवा। कुंवरजी री य्रू हुई दैपाळदे बाळक छै। राज राखणौ छै तौ भ्रापनै बिराजणौ छै।
—पलक दरियाव री बात

बिरधा—देखो 'ब्रद्ध' (रू भे)

उ०—बालपणैं नही चेतियो, तन तरणापो थाय। जनहरिया बिरधा भयो, भ्रजू न गोविंद गाय।
—भ्रनुभववांणी

बिरधापण, बिरधापणौ—देखो 'व्रद्धता'।

उ०—सरधा घटगी सेंग, वेग बिरधापण बळियौ। निकळण रौ रथ नही, कळण ऊंडी में कळियौ।
—ऊ. का.

बिरधि, बिरधी—देखो 'व्रद्धि' (रू. भे)

उ०—१ कनक दान कुरखेत बिरधि, गुणि बासुर वासुर। सुबुध बधै सतसग ग्यांन गुर वाणि उजागर।
—रा. रू.

उ०—२ म्हैं तौ भ्रांगण गार गिलोवस्यां, म्हारी बिरधी रा कोडा। चोखो रै मादळ घुळ रह्यो, रग रातो रै मादळियौ, थारो रै सबद सुहावणौ।
—लो. गी.

बिरबोर—देखो 'बराबर' (रू. भे.)

बिरम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे)

२ देखो 'वरम' (रू. भे.)

बिरमखाड—देखो 'ब्रह्मखाड' (रू. भे.)

बिरमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

बिरमणौ, बिरमबौ—देखो 'विलमणौ, विलमबौ' (रू. भे.)

बिरमणहार, हारौ (हारी), बिरमणियौ—वि०।

बिरमियोड़ो, बिरमियोड़ो, बिरम्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिरमीजणौ, बिरमीजबौ—भाव वा०।

बिरमपुरी—देखो 'ब्रह्मपुरी' (रू. भे)

उ०—वाणिया री धरम वधावै भ्रर बिरमपुरी सराध खावै है। भ्रा बात भ्रातरै ताई जावै, ज्यू बाहरला बांमण भ्रठैरा टाबरा बेटां नै भ्रापरी बेटी देवण भ्रावै है। जाणै मीठो पाणी भ्रर मोकळी बिरमपुरी, भ्राटो मागै जकारै ही हजार धूवां री वगती है, भ्राने नै सेर सात पक्की घरा लेय र बडै है।
—दसदोख

२ देखो 'ब्रह्मभोज' (रू भे)

उ०—दोनू मिळ'र बात करै, वेगराजजी रा बेटा-पोता सुणै है। वेगराजजी बाजतो हो। माल मे एक बिरमपुरी किया करतो, सेठ नाव धरावतो, भ्राया गया जिमावतो।
—दसदोख

बिरमांड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू भे)

बिरमाणी—देखो 'ब्रह्माणी' (रू. भे.)

उ०—पीलूडा पुरसाद देवै, भाडो लेवै बाळका। बिरमाणी धिराणी जाणी, जाळा जूनी काळका।
—दसदेव

बिरमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

उ०—१ भ्रो तौ गहरो गहरो बिरमाजी रौ छावो बालम रसियो, गहरो जी फूल गुलाब रो। भ्रो तौ गहरो गहरो नणदळ बाई रो वीरो बालम रसियो, गहरो जी फूल गुलाब रो।
—लो. गी.

उ०—२ उण कुमार नै भ्रापरै खामखीपणा रौ तौ भ्रणूंतौ मोद हौ। वौ भ्रापरी घरवाळी नै केई वेळा कैवतो कै बिरमाजी नै भ्रेकर इण दुनियां रा जीव जिनावर, पंखी भ्रर मिनख घड़तां देखलूं तो वो

दूजै दिन ई वारी हूबौहूब सांचौ उतार दै। —फुलवाड़ी

उ०—३ इड कमडळ बिरमा दीनी, सदासिव दीनी भारी। भगवा वसतर बिसनु दीना, बिचरौ बिरमाचारी। —अग्यात

बिरमाचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

उ०—इड कमंडळ बिरमा दीनी, सदासिव दीनी भारी। भगवां वसतर विसनु दीना, विचरौ बिरमाचारी। —अग्यात

बिरमाणौ, बिरमाबौ—देखो 'विलमाणौ, विलमाबौ' (रू. भे.)

बिरमाणहार, हारौ (हारी), बिरमाणियौ—वि०।

बिरमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरमाईजणौ, बिरमाईजबौ—कर्म वा०।

बिरमायोड़ौ—देखो 'विलमायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिरमायोडी)

बिरमावणौ, बिरमावबौ—देखो' विलमाणौ, विलमाबौ' (रू. भे.)

बिरमावणहार, हारौ (हारी), बिरमावणियौ—वि०।

बिरमाविप्रोड़ौ, बिरमावियोड़ौ, बिरमाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरमावीजणौ, बिरमावीजबौ—कर्म वा०।

बिरमावियोड़ौ—देखो 'विलमायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिरमावियोड़ी)

बिरमियोड़ौ—देखो 'विलमियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिरमियोडी)

बिरमौ—स पु.—१ एक प्रकार का ओढने का वस्त्र, दुसाला।

उ०—भारत, रै नै वीरा, भावज ओढाया, म्हानै घणमोला री चूनडी जै। मुमराजी नै, वीरा, बिरमौ ओढाय, सासूजी नै साडी सापड जै। —लो. गी

२ देखो 'बरमौ' (रू भे.)

३ देखो 'वरम' (रू. भे.)

बिरम्म—देखो 'वरम' (रू भे)

उ०—घरारी बाहर कोप धियान, बिरम्मा वेढि तणौ वरदान। भमाडै हडा भारथि भल्ल, गया राउ जोध प्रनै गिगमल्ल। —राव जैतसी रौ रासौ

२ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे)

बिरयां—१ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

२ देखो 'बिरिया' (रू. भे.)

बिरळ, बिरल, बिरलउ—स पु.—१ सूर्य, सूरज। (ना. डिं. को.)

२ देखो 'बिरळौ' (रू. भे.)

उ०—१ प्रभात समउ हुउ, अधकार फोटउ। गाय तणा गाला छूटा, नारागण बिरल हुउ, चद्रमा बिछाय थिउ। कूकडां तणी उलि लवइ देव तणा बार ऊघड़िया, प्राभातिक तूरय वाजिया। —रा. सा. सं.

उ०—२ को बिरलउ तुझ आदरइ, छाडइ सहु मसार। एक आपनु भाजतउ, बीजा भाजइ च्यार। —स. कु.

उ०—३ बिरलउ पुण्यवत कोइ साहु बेटा, रिद्धि तणउ समदाय। धरमवत विनयवत होइ, भविय कुइबउ भणीइ सोइ। —वस्तिग

बिरळणौ, बिरळबौ—क्रि. स.—१ तहस-नहस करना, नष्ट करना।

२ आकर्षित करना।

३ पथभ्रष्ट करना, गुमराह करना।

४ कुछ जानने, देखने या समझने के लिए चीजें या उनके अग ऊपर और कभी नीचे करना।

५ चीरना, फाडना।

६ किसी वस्तु का नीचे वाला भाग ऊपर और ऊपर वाला भाग नीचे करना, नीचे ऊपर या ऊपर-नीचे करना।

७ अस्त-व्यस्त करना, इधर-उधर करना, बिखेरना।

क्रि. अ.—१ तहस-नहस होना, नष्ट होना।

२ आकर्षित होना, मोहित होना।

३ पथभ्रष्ट होना, गुमराह होना।

बिरळणहार, हारौ (हारी), बिरळणियौ—वि०।

बिरळियोडौ, बिरळियोड़ौ, बिरळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरळीजणौ, बिरळीजबौ—कर्म/भाव वा०।

बिरळणौ, बिरळबौ, बरळणौ; बरळबौ—रू. भे.।

बिरळाणौ, बिरळाबौ—क्रि स —दिखाना।

उ०—मायै भळहळिया भुरटा रा भारा, अध अग ऊलळिया उरगा रा प्रारा। बिरळा दाता रौ पाता बिरळाती, चोड़ै चाचर री चोड़ै बिरळाती। —ऊ. का.

बिरळाणहार हारौ (हारी), बिरळाणियौ—वि०।

बिरळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरळाईजणौ, बिरळाईजबौ—कर्म वा०।

बिरळाणौ, बिरळाबौ, बिरळावणौ, बिरळावबौ, बरळाणौ, बरळाबौ, बरळावणौ, बरळावबौ, बिरळावणौ, बिरळावबौ—रू० भे०।

बिरळायोड़ौ—भू. का. कृ.—दिखाया हुआ।

(स्त्री, बिरळायोडी)

बिरळावणौ, बिरळावबौ—देखो 'बिरळाणौ, बिरळाबौ' (रू. भे.)

बिरळावणहार, हारौ (हारी), बिरळावणियौ—वि०।

बिरळाविप्रोड़ौ, बिरळावियोडौ बिरळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरळावीजणौ बिरळावीजबौ—कर्म वा०।

बिरळाबियोड़ी—देखो 'बिरळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिरळाबियोड़ी)

बिरळियोड़ो-भू. का कृ.—१ तहस-नहस हुआ या किया हुआ, नष्ट किया या हुवा हुआ. २ आकर्षित किया या हुवा हुआ ३ पथ-भ्रष्ट किया या हुवा हुआ. ४ गुमराह किया या हुवा हुआ. ५ चीरा या फाड़ा हुआ. ६ कुछ जानने, देखने या समझने के लिए चीजे या उनके अंग कभी ऊपर और कभी नीचे किया हुआ. ७ किसी वस्तु का नीचे वाला भाग ऊपर व ऊपर वाला भाग नीचे किया हुआ. ८ अस्त व्यस्त किया हुआ, इधर-उधर किया हुआ, बिखेरा हुआ।

(स्त्री. बिरळियोड़ी)

बिरळ, बिरलु, बिरळौ, बिरलौ-वि. [स. विरल] १ जो बहुतायत से नहीं मिलता हो, थोड़ा, कम, दुर्लभ।

२ जिसके अंग आदि पास-पास न हो, घना न हो, सघन का विपर्याय।

उ०—भायै भळहळिया मुरटां रा भारा, अब अंग ऊलळिया ढरगां रा भारा। बिरळा दाता री पांता बिरळाती, चोड़ै चावर री चौड़ै चिर ळाती। —ऊ. का.

३ गाढ़ा का विपर्याय, पतला।

४ जहां कोई नहीं हो, निर्जन, शून्य।

५ जहां कुछ भी नहीं हो, खाली, रिक्त।

६ सैकड़ों हजारों या लाखों मे से एक, कोई एक, अद्वितीय।

उ०—१ जैसे सरपणी करत कुंडाळा, बचीया जण जण खाई। आंटा बार पड्या सोई जीता, यूं बिरळा बच जाई। —श्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ काछ दिढा कर बरसणा, पर कजु मुंहा-मिठु। तिण-सूरा जग वल्लभा, सो मैं बिरळा दिठ। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ दादू पखा पखी संसार सब, निरपख बिरळा कोइ। सोई निरपख होइगा, जाकै नांम निरंजन होइ। —दादूवांणी

उ०—४ जाइजो रे समकित नो परगम्यो रे, जिन मारग नै चाढो सोम रे। इसड़ी समता केई बिरला करै रे, जीत्या छै मोह बस्णा नै लोम रे। —जयवाणी

उ०—५ अरध उरध मैं कीया पयांणा, जाणैं बिरला जोगं। मन पवनां पछिम की घाटी, आपा नाव तरोगं। —अनुभववांणी

उ०—६ सोकह नवि संपति मिलइ, हरख घरइ नवि जाइ। हरख-सोक-समचित तै, बिरला जाया माई। —मा. का. प्र

रू. भे.—बिरळौ, बरळु, बरलु, विरळ, विरल, विरलउ।

बिरवड़, बिरवड़ी—देखो 'बरवड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ बिरवड़ मात रमत आया में, बरवड़ भात चढाई। बणीं खमा राजा नोघण री, जाती फौज जिमाई। —मे. म.

उ०—२ आवड बिरवड़ चाहण बाळक, सारी सकति सहाय। अमरा व द सदा प्रतपाळै, मेहाई महमाय। —राघवदास भादो

बिरस-वि [स.] १ जिसमे रस न हो, स्वाद या जायके रहित, रसरहित।

उ०—१ जिन मारग मे अनुरताजी, अरस नै बिरस आहार। तक तक घर जावै नही जी, तप कियो न करै अहार। —जयवांणी

उ०—२ अरस बिरस अंत पत लुह, ए चाल्या पंच आहार। ए जीमी जीवै मुनि, धन मोटा अणगार। —जयवांणी

२ कष्ट, पीड़ा, सन्ताप।

३ प्रेम या प्रीति रहित, अनुराग रहित।

उ०—पातर वाळी प्रीत, मीठी लागै प्रथम मन। मंद हुआ धन मीत, हुए बिरस कडवी हुवै। —बां. दा.

४ रति-क्रीडा से विरक्त, काम-केलि से दूर या विषय-वासना रहित।

५ उमंग रहित, जोश या उत्साह रहित, मनोवेग का अभाव।

६ मीठास का अभाव, कड़वाहट।

७ रक्त-हीन, रुधिररहित।

८ तरलता रहित, आर्द्रता रहित, शुष्क।

९ गुणों का अभाव या तत्वरहित, सार रहित।

१० नाराज।

उ०—प्रकत नकगा भानजी छै, सु राणाजी नूं कहाड़िया, राजा मानसिंह सू मत मिळो, ओ नकग भान रो प्राद्मी छै। रांणो बरजियो रयो नहीं। आय मिळियो। मैहमानी करी। जीमण पर्गा बिरस हुवौ तद मानसिंह दरगाह गयो। —नैणसी

११ शत्रु, दुश्मन।

उ०—समत १६६२ प्रथीराज, अखैराज दलपतोत राव उदैसिंघ बाघोतरै दावै हमीर भाटिया ऊपर दोडिया हुता। तिण दिन राव सूरजसिंघ नै कवर बलू बिरस हुवो थो, सु बलू विकपुर मूं छाडनै कैरड़गर री पाखती आयौ थौ। —नैणसी

१२ कळह, झगड़ा।

१३ जो अच्छा न लगे, अरुचिकर।

१४ चिन्तातुर, चिंतामग्न, उदास।

उ०—पाधारै नृप जोधपुर, गढ चाढिया कमध। आप बिरस हुए चीतियो, धरा बहू दिस धंधु। —रा. रू

१५ जो दयालु न हो, निर्दय।

१६ निष्ठुर, हृदयहीन।

१७ पीड़ाकारक, कष्टप्रद।

स पु.—रीस, क्रोध।

उ०—रांमसिंघजी गाडा नवहर ले आइ राखिया । कुंवर रिणी सिधाया । तिसडै सै वांसै सीरोही राजाजी कन्हां सुरताण प्रिथीराज पणि बिरस करि घरे आया । घरै आइ रहिया । —द. बि.

रू. भे.—बिरस, बिरसाळी, बिरसालौ ।

बिरसपत, बिरसपति, बिरसपती - देखो 'ब्रहस्पति' (रू भे.)

बिरसाळौ, बिरसालौ-वि.—१ श्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—ओप साह ऊहड अभंग, कमधज करिणाळा । हाथ जोड हुरजो हसै, साहिब बिरसाळा । —पी. ग्र.

२ देखो 'बिरस (रू. भे.)

उ०—सभाली त्यं वडा सोह, सुचाली कलत्त सुन, क्या करै ककाली नाली अनाली कपूत । वाणी कै रसाली वदै बिरसाली एका बात, कली कालि उजवालि आपरी करतूत । —ध व ग्र.

(स्त्री बिरसाळी बिरसाली)

बिरस्पत, बिरस्पति, बिरस्पती—देखो 'ब्रहस्पति' (रू. भे)

बिरह-स. पु. [स.] १ संयोग का अभाव, वियोग ।

२ विच्छेद, अलगाव ।

३ दो प्रेमियो के अलग-अलग होने की अवस्था, जुदाई ।

उ०—१ मैं कीधौ सांचै मतै, नायक तोसं नेह । बण आवै सो देह वित, दाह बिरह मत देह । —बां. दा.

उ०—२ बिरह पीर तन भीतरै, पलक न विसरी जाय । जनहरिया हरी कारणै, नैणां नीझर लाय । —अनुभववाणी

उ०—३ रोम रोम मैं बिरह की विथा वियापी एक । जनहरिया कैसैं कटै, ओखदहार अनेक । —अनुभववाणी

४ उक्त वियोग या जुदाई से उत्पन्न मानसिक कष्ट, दुःख या पीडा ।

उ०—१''''''काळ रा नेवर पहरियां केळिग्रभ चदण री छेहडी रतना री रासि, अधारै री आदीत, अरस री अभरी सरग री झांप, बिरह री गम्रह रूप री निधांन, थाका हस री टोळी, निवार्य री होळी, धर्म हाट नै चीरमां लपेटी थकी विराज्मांन होइ नै रही छै । —रा. सा, स.

उ०—२ बैर मही तोटौ वसं, वसै नफौ नह 'बक' । सिया बिरह राघव महधौ रावण पलटी लक । —बा. दा.

उ०—३ जद सुख आवत पीव को, बिरह उठत, तन जाग । ज्यूं चूने की काकरी, जद छिडको तद आग । —अग्यात

उ०—४ बडारण कन्है बैठी थी, सो दिलासा दीवी । सो भरमल न तो सारी वात वीसर गई । जीव तो कुवरजी कन्है गयो, देह पडी छै । सो इसौ बिरह ऊठीयो, सो राखीयो न रहै ।

—कुवरसी साखला री वारता

५ अनुपस्थिति, गैरहाजरी ।

६ छोड़ने की क्रिया या त्याग ।

वि.—१ तप्त, गर्म ।* (हिं. को)

२ बिना, रहित, हीन ।

देखो 'बिरही' (रू. भे.) (नां. मा.)

रू भे.—बिरह, ब्रह, बरह, बरहु, बिरहि, विहू ।

बिरहण, बिरहणि, बिरहणी-सं. स्त्री.—वह स्त्री या प्रेयसी, जो अपने पति या प्रियतम से अलग या दूर हो ।

उ०—१ पाऊं पांणी न थांहरै, थरहर कपै देह । हाथ सुंहाळी मारवण, बिरहण, पाडै वेह । —ढो. मा.

उ०—२ महिया सोइ विदेस पिव, तनहि न जावै ताप । बाबहिया असाढ जिय, बिरहण करै बिलाप । —अग्यात

उ०—३ कबहूं नैन निरख नहिं देखै, मारग चितवत तोर । दादू ऐसैं आतु बिरहणि, जैसैं चद चकोर । —दादू बाणी

उ०—४ माती सेनी पाती नीपनी काती मास, कातीय बिरहणि छाती में काती वहै नही जास । दीप दीवालीय वलिय सुहालिय नै पकवान, खलक रचैं पिण मुझ नें न रुचे खांन नें पांन ।

—ध. व. ग्रं.

उ०—५ बाबहियउ नइ बिरहणी, दुहुवां एक सहाव । जब ही बरसइ घण घणउ, तब ही कहइ प्रियाव । —ढो. मा.

उ०—६ तिणि वाउ कमळ था सु बाळि इसा कीया जु । जिसौ बिरहणी को मुख । आंब था सु इसा कीया जिसौ संजोगिणी को उरस्थळ । —वेलि टी

वि.—जो अपने प्रिय या पति से अलग या दूर हो ।

रू भे.—बरहण, बरिहण, बिरहण, बिरहणी, बिरहन, बिरहनी, वरहण, विरहन, विरहनि, विरहनी, विरहिण, विरहिणि, विरहिणी, विरहण, विरहणि, विरहणी, विरुहण, विरुहणि, बिरूहण, विरूहणि, बिरूहणी ।

बिरहणौ, बिरहबौ-क्रि. अ. [सं] १ चीरा जाना, विदीर्ण किया जाना ।

उ०—मैं कामी कपटी क्रोध काया मे, कूप परत नहिं डरतै । करवत काम सीस धर अपनै, आपहि आप बिरहतै । —दादूबांणी

२ संयोग का अभाव होना, वियोग होना ।

३ विच्छेद होना, अलग होना ।

४ दो प्रेमियो का अलग-अलग होना ।

५ उक्त जुदाई से मानसिक कष्ट होना ।

६ छोडना, त्यागना ।

बिरहणहार, हारौ (हारी) बिरहणियौ—वि० ।

बिरहिग्रोड़ौ, बिरहियोड़ौ, बिरहयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिरहीजणौ, बिरहीजबौ—भाव वा० ।

बिरहुल, बिरहुनि, बिरहुनी —देखो 'विरहरण' (रू. भे.)

उ०—१ नैणां नीझर लाविया, छह रुत बारै मास। हरिया बिरहुल रांम कु, एकं न विसरै सास। —अनुभववाणी

उ०—२ उल्लसित हीयरौ करि पपीयरौ, करत प्रियु प्रियु सोर। विरह सहइं पीरी अति अधीरौ, डरत बिरहुनि जोर। —वि. कु

उ०—३ बिरहुनि तेरी प्राण झुरत है, दाधी बेलि सिंचाई। मीरा को प्रभु दरसन दीजै, आंण रखौ सरणाई। —मीरा

उ०—४ बिरहुनी ऊभी दरद सूं, अबळा सूं क्या मांण। कै मिळिहो कै तन तजूं, सुणिहो कंत सुजांण। —ह पु वा.

उ०—५ दिन की जाग्रत हुय रही, निसा नहीं भरि सोय। रांम विसूरै बिरहुनी, आंसु कर मुं धोय। —अनुभववाणी

बिरहमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे)

उ०—चोपदार की मारफत रुघनाथसिंह से मिळने का इरादा किय', उसने साल भर पहलै औरत के मरने की मातमी का बहाना लिया। नेक वखत एक बिरहमण ने स्यांम को अरज गुजराई, है तौ मिळण कै लायक अेक बारण मुजराई। —दुरगादत्त बारहठ

बिरहमांण, बिरमांन—देखो 'विहरमांण' (रू. भे.)

बिरहांमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे)

बिरहाग, बिरहागन, बिरहागनि, बिरहाग्नि—स. स्त्री [सं. विरह+अग्नि] बिरहानल।

उ०—१ व्यथा बिरहाग वियोग विहाय, सवागण भाग सयोग सुहाय। अनाग्रह भुल्लित आंन उपाय, प्रफुल्लित ज्यू पतनी पनि पाय। —ऊ का.

उ०—२ त्रिलोचना कुमरी तिण वार, दुख सपूरित ह्रिदय मझार दुखणी दुस भरि करै बिलाप, प्रीय बिरहागनि तन सताप।
—वि. कु

उ०—३ पीहर तौ परतटै रहिया, प्रीतम बिरहागनि दहिया। प्रमदा दणि परि बिलवती, दुख रोई रानि गलती। —स्रोपाळरास

बिरहानळ, बिरहानल, बिरहानलि—स स्त्री. [स. विरह+अनल] विरहाग्नि।

उ०—१ काळी काठळ मे दामणिया दमकी, चित मैं कामणिया बिरहानळ चमकी। छूटी आसारा कासारा छिलती, पडती परनाळा पहुवी पिलपिलती। —ऊ. का.

उ०—२ जेठ दीहाड़ा जेठ ना, लागइ ताप अथाहो जी। बिरहानल तपइं दियउ, प्रियु तुम वदन बाहो जी। —वि. कु.

उ०—३ दिल सुद्ध प्रणमु नेमि जिनेसर परमदयाल। रोक्या जीव तै मूक्या तोरण थी रथ वाल। राजिमति सती नेह वस किय विविध विलाप, तौ पिण तमु तणु नाइ समयौ बिरहानल ताप।

उ०—४ जै जळ सीकर, तै उद्वेग कर। जउ सीतलोपचार, तै करइ विकार। इवि परि प्रज्वलित, स्नेह पटल; बिरहाळ नीपजइ।
—रा. सा. स.

उ०—५ दवदति बिरहानलि हा नलि नडिय अपार। प्रिय मेलउ केतै वासरै, आसरै वडिय ससारि। —जयसेखर सूरि

रू. भे.— विरहानळ, बिरहानल।

बिरहाळी, बिरहाली—सं. स्त्री.—सौंफ, शतपुष्पा।

उ०—१ जायफळ लांग इळायची मिरच बिरहाळी अजूं नागकेसर भमरटंटी लज तमालपत्र तबोळ प्रत संधी। और ही ममाला मंगायजै छै। —रा. सा स.

उ०—२ लाभइ खाड तेल नइ मिरी, करइ सालणां लाभइ सुरी। अजमा जीरा लाभइ बहू, वेसण बिरहाळी लइ सहू। —कां. दे. प्र'

बिरहि—देखो 'विरह' (रू. भे.)

उ० —१ त्याहा जई तेहनि बिरहि लगाड़ प्रीन करि यम नारि। गुण ओसीकल थायि नही, राई, धिक तेहनु अवतार। —नळाख्यान

उ०—२ वीणा डफ महुयरि वंस वजाए, रोरी करि मुख पचम राग। तरुणी तरुण बिरहि जण दूतरणि, फागुण घरि घरि खेलै फाग। —वेलि

उ०—३ ब्रिरहि विगगीय वग मझारि, जाईउ मणि झायइ। लवणिय जूवणु रूपरेह ता आलिहि जाइ। —सालिभद्र सूरि

बिरहिण, बिरहिणि, बिरहिणी—देखो 'विरहणी' (रू. भे.)

उ०—१ रूप सुरगा मावरौ, मुख निरखण जावा। मीरा व्याकुळ बिरहिणी, अपनी कर ल्यावा। —मीरा

उ०—२ आरति तेरी अनरी मेरै, आवौ अपनी जांण। मीरां व्याकुल बिरहिणी रे, तुम बिन तलफत प्राण। —मीरा

उ० —३ आज अमोडा-माहि घर, ईम नणद जिम सग। हूं बिलपती बिरहिणी, स्वामि ! म छडिसि सग। —मा. का प्र.

उ०—४ 'को बिलपती बिरहणी, घारणी मन्मथ धाय। ससिहर नइ साहमु लिखी, सिंह देखाडइ काय। —मा. का. प्र.

बिरहियोडौ—भू. का. कृ —१ चीरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ. २ सयोग का अभाव हुवा हुआ, वियोग हुवा हुआ. ३ बिच्छेद हुवा हुआ, अलगाव हुवा हुआ ४ दो प्रेमियों का अलग-अलग हुवा हुआ. ५ उक्त जुदाई मे मानसिक कष्ट हुवा हुआ. ६ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।

(स्त्री बिरहियोडी)

बिरही—वि [स] १ जो अपनी पत्नी या प्रियतमा से अलग या दूर हो या अलग या दूर होने के कारण दुखी हो।

उ०—१ तास थयौ प्रारंभ रे, थम जिसा रे तरुवर पालवं रे। दुखियां नै दुरलंभ रे, बिरही लोकां रै हीयड़ै सालवं रे। —वि. कु.

उ०—२ सूरज ना किरन पच्छिम ढळया। पथी सगा नइ मिल्या। बिरही ना हीया वळया, गोवाळ घरै वळया। चौपूं लाव्या, आप आपना घरै आव्या। —रा. सा. स.

उ०—३ हाथे न लेवइं वस्त्र। आघा ओढै वस्त्र। लोक मौसिम्राट करइं, चौपूं उछरइ, तावड न चरइं। धूजै बाळगोपाळ, बिरही मां पडइ हवाल, सहु बैठा पोसाळ, सावव्या देहरा नइ पोसाळ, एहवौ सीतकाळ। —रा. सा स.

२ कठोर।* (डिं को)

३ देखो 'बरही' (रू. भे) (ना. मा.)

रू. भे.—बिरही।

बिरहोबीर-वि.—वीरो मे वीर, महावीर।

सं. पु.—श्रीकृष्ण के बडे भाई, बलराम। (ना. मा)

बिरहुण, बिरहुणि, बिरहुणी—देखो 'विरहणी' (रू भे)

उ०—गिरि गिरि वाधइ वेलडी, ऊपरि फूल विकास। मडइ मोर कला घणी, विरहुणियां तन त्रास। —मा. कां. प्र.

बिरहोत्कंठिता-स स्त्री. [स. विरह+उत्कंठिता] विरह मे व्याकुल वह नायिका जिसे अपने नायक के आने का पूरा-पूरा विश्वास हो किन्तु वह किसी कारणवश न आ सके।

बिरहो—देखो विरह' (रू भे.)

उ०—१ प्रार्य छोक न लहै सार, मावीत्रा नी किण ही वार। पिण मावीत्र तपं दिन-राति, पाणी वल बिरहो न खमात। —वि. कु.

उ०—२ अधिको बिरहो अग मे रे लाल, तं किम दूरं थाय है सहेली। जमवारो जल मैं वसै रे लाल, चकमावि अगन उल्हाय है सहेली। —ध व. ग्र.

उ०—३ सजोग रो विजोग पड जावै। सारीरिक मानसिक दुख ऊपजै। जठै भगवान मोक्ष रा सुख सास्वता स्थिर कह्या है। उठै सुखा रौ कदेइ बिरहो पडै ईज नही। ए स्वामीजी रा वचन सुणनै सतोख थाय गयो। —भि. द्र

उ०—४ बिरहो मो दाहै सदा, कासूं कह पुकार। प्रीतम अब कीजै कृपा, लीजै हाथ पसार। --कुंवरसी सांखला री वारता

बिरांण—१ देखो 'वीराण' (रू. भे.)

उ०—१ उण घूमर क्रोध झळा ऊफळी, घडिया असुराण उजार अळी। सयदाण ऊवाण बिरांण सत्र, गुमराण रुफाण अरोह गज। —सू. प्र

उ०—२ बिरांण मीर घोठा विलद, नौसांण फील दीठा नरिंद। घरहड़ै क्रोध परवंड घूप, भुज डड अड़ै बहमड भूप। —वि. सं.

२ देखो 'वीरान' (रू भे.)

बिरांणी—१ देखो 'वरियांणी' (रू. भे.)

२ देखो 'विडाणी' (स्त्री.) (रू. भे)

उ०—सुणबाला, इक रंग पोढती कठ लगाणी, जागी जजकां नैण बिलखता नीर भराणी। पूछता,मुळकाय कहया थे बोल सयाणी। छळिया! पेख्यो तूझ विलमणी नार बिराणी। .—मेघ

बिरांणी—देखो 'विडाणी' (रू. भे)

उ०—१ हीर चीर हेम तार घडी मैं बिरांणा होसी, लाग्वा द्रव्य बिभो सर्व हाथी घोडा लाठ। गाम धाम झूठा जाणं धर्व झूठा लागा नगा, गार रा मिरग रै पडी वायरा री गाठ। —ओपो आढो

उ०—२ खाणा पीणा खरचणा, और न चालै सथ। जसवत घर पोढावियां, माल बिरांणा हथ। —महाराजा जसवंतसिंह

उ०—३ वपु माया नै जाण बिरांणी, पाव न घर खोटी दिस प्राणी। रघुवर साचौ दास रमाणी,बोल 'बकसिया' अमरत वाणी। —बकसीराम लाळस

(स्त्री. बिराणी)

बिरांन—१ देखो 'वीराण' (रू भे.)

२ देखो 'वीरान' (रू. भे)

उ०—मूळी दाभै, रूसै अर रीस रळै। पेमजी जूभै, कुढै अर गुग मे गळै। गठजोडौ तौ जुडग्यो पण मन-मेळ जोडौ मिल्यौ नही। मूळी लाबी अर जुवान। पेमजी ओछो, गटमींगणियौ बूढौ बिरांन। दौ-दौ दुख सागै रळग्या। —दमदोख

बिरांम-स. स्त्री. [स. विराम] १ क्रिया, गति, चाल आदि मे होने वाला ठहराव अटकाव।

२ अन्तिम अवस्था, समाप्ति।

३ आराम, विश्राम।

४ कार्य, सेवा आदि से मिलने वाला अवकाश, निवृत्ति।

५ वाक्य व छन्द मे वह स्थान जहा बोलते या पढते समय कुछ समय के लिए रुकना पडता है।

६ भ्रम, भ्रान्ति, शक, सन्देह।

उ०—हरि है दाता देह का नाते भया सकाम। गुर है दाता ग्यान का, मन का मेट बिरांम। —अनुभववांणी

७ विराम चिन्ह।

८ चिन्ह, लक्षण।

उ०—माता पिता के आगै खेलतां। कांम रा जु बिरांम छै। सु छिपाया चाहिजै। सु कांम रा बिराम कुण। जु ऐक तउ कुच प्रगट हुया। नेत्रा चचलता हुई। नितंब भारी दीसै लागा। ए कांम का बिराम। —वेलि टी.

९ घबराहट, क्षोभ, खलबली, अशान्ति।

उ०—कमधा पत दरकूच कर, धरि मेड़तै मुकाम। धर दिल्ली धूजै उरै, पुर आगरै बिरांम। —रा रू.

१० उत्पात, उपद्रव।

उ०—माया मोह न कीजियै, माया बडी हराम जनहरिया तिहु लोक मैं, केता करै बिरांम।

११ कष्ट, पीडा, संकट।

उ०—१ दूहौ दुपटौ दांम, जोड़घा मो ही जांणसी। व्यावर तणा बिरांम, बांभ न जांणै बीझरा। —बीझरै अहीर री वात

उ०—२ अभिला अंक आहुवय अविधा, नांमधेय सग्या हरि नाम। आठई पहर राखि उर अंतर, वेग टळै दुख दळिद्र बिरांम। —ह ना. मा

उ०—३ भगवत्ति आवौ भांई, मुझ मदत स्रीमहामाई। नित पढै प्रहस मे नाम, त्यां रोरि भजि बिराम। —मा वचनिका

१२ निवास-स्थान।

१३ अर्यांत।

उ०—मैं मन कुं नही जाणिया, मन का बौहुत बिरांम। हरीया इनकुं उलटि कै, सदा सिवरियै राम। —अनुभववांणी

रू. भे.—बिरांम।

बिरांमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)

उ०—१ रुळघा खुळघा रजपूत, बिरांमण मिळगा विटळा। वैस्य मिळ गया विकळ, सूद्र कुळ रळगा सिटळा। घोडै धाडै चोर ढग विन ठेठस ठेढी। जिकै नही किण जोग, मिळघा घर घर ग मेढी। —ऊ का.

उ०—२ हिमैं बिरांमण जीवण असावत रो नै मनोहर रामावत छै। जाट रजपूत बाभण वाणिया बसै। —नैणसी

(स्त्री बिरामणी)

बिरांमणी—स. स्त्री —१ ब्रह्मचारणी देवी, ब्राह्मणी।

२ देखो 'ब्राह्मण' (स्त्री) (रू भे)

बिरांमणौ, बिरांमबौ—क्रि. स —१ शर्मिन्दा करना, लज्जित करना।

उ०—सुनि झरस संभार मदन घणा कपणा तणौ बिरांमियौ। कर भू पर कीरत करमसी, रायसिंघ विसरामियौ। —नैणसी

२ विश्राम देना, विश्राम करना, आराम करना।

३ कष्ट देना, दुःख देना, पीडित करना।

४ रोकना, ठहराना।

क्रि. अ.—१ शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।

२ पीडित होना, दुःखी होना।

३ रुकना, ठहरना।

४ मरना, अवसान।

उ०—पतळा नमीत पाता सुरा, परज करमफळ पावियौ। प्रतपाः 'मिवौ' माता पिता, वड दातार बिरांमियौ। —साहबदान सुरताणिय

५ हटना।

उ०—चिंतामणि पारस पौरसौ, सुधा सरोवर कामणा। सपजै ताः सुत सपनै, ग्रह सुर धाम बिरांमणा। —रा रू

बिरांमणहार, हारौ (हारी), बिरांमणियौ—वि०।

बिरांमिओडौ, बिरांमियोडौ, बिराम्योडौ—भू० का० कृ०।

बिरांमीजणौ, बीरांमीजबौ—कर्म, भाव वा०।

बिरांमब्रह्म—स. पु. [स बिराम-ब्रह्म] ब्रह्म ताल का एक भेद विशेष। (संगीत)

बिरांमियोडौ—भू. का कृ. १ शर्मिन्दा किया या हुआ हुआ, लज्जित किया या हुवा हुआ २ विश्राम किया हुआ, आराम किया हुआ. ३ पीडित किया या हुवा हुआ, दुःखी किया या हुवा हुआ ४ रोका हुआ, ठहराया हुआ. ५ रुका हुआ, ठहरा हुआ. ६ मरा हुआ, अवसान हुवा हुआ. ७ हटा हुआ। (स्त्री बिरामियोडी)

बिरामी—वि. [स विराम] १ विश्राम करने वाला, आराम करने वाला।

२ व्याकुल बेचैन।

३ शर्मिन्दा करने या होने वाला।

४ पीडित होने या करने वाला, दुःखी होने या करने वाला।

५ रुकने या रोकने वाला।

६ मरने वाला।

७ हटने वाला।

बिराग—सं पु —१ एक मे मिला हुआ दूसरा राग। (संगीत)

२ देखो 'वैराग्य' (रू. भे)

बिरागणौ, बिरागबौ—क्रि. स —१ वैराग्य ले लेना, संन्यास ले लेना।

उ०—तितरै राणीजी री दीकरी रांमसिंघजी री बहु नांम आंबां गम कहियौ। तिण ऊपरि रामसिंघजी विरागिया। दाढी न मुंडावै। कपडा न धोवावै। वागौ न पहिरै। आरासि न करै। —द वि

२ त्यागना, छोडना।

बिरागणहार, हारौ (हारी), बिरागणियौ—वि०।

विरागियोड़ो, विरागियोड़ो, विराग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विरागीजणौ, विरागीजबौ—कर्म वा० ।

विरागियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ वैराग्य लिया हुआ, संन्यास लिया हुआ. २ त्यागा हुआ. छोड़ा हुआ ।
(स्त्री. विरागियोड़ी)

विरागी—देखो 'वैरागी' (रू. भे.) (सभा)

विरागीय—देखो 'वैराग्य' (रू. भे)
उ०—विरहि विरागीय वरण मभारि जाईउ मरिण भायइ । सबरिण झूवणु रूपरेह ता ग्रालिहि जाइ । —सालिभद्रसूरि

विरागौ—देखो 'वैराग्य' (रू. भें.)
उ०—साथउ आंणइ जिणधरममागी, तउ मनि झूवरण लगइ विरागौ । गंगानदगु वरिण बसार । —सालिभद्र सूरि

विराड़-स. पु.—१ हिस्सा. बट । (मा. म.)
२ देखो 'वराड' (रू. भे)

विराज-स स्त्री.—१ शोभा, सुन्दरता, सौन्दर्य ।
उ०—डोहत सूड सिघळी, घटा विराज सांमळी । घमकि घट घुग्घर, सिंदूर सीस चम्मर । —गु. रू. ब
स पु.—२ राजा, नृप ।
३ ब्रह्मा की प्रथम सन्तान ।
४ क्षत्रिय जाति का व्यक्ति ।
५ स्वयभुव मनु का नामान्तर ।
६ नर राजा का पुत्र एक राजा ।
७ एक वैदिक छन्द विशेष ।
८ कुरुवशीय राजा अविक्षित के पुत्र ।

विराजणौ, विराजबौ-क्रि. अ. [सं. विराजनम्] १ शोभित होना, शोभायमान होना ।
उ०—१ ग्रौर ही ग्रनेक भात रा फूला री माळा किलगी छड़ी मेहरा गूंथ्या छै । सू सारै साथ नै बकसजै छै । फूला रा चौसरा घातजै छै । छडी हाथां मे विराज रही छै । —रा सा. स.
उ०—२ बाको मुकट काछनी सुंदर, ऊपर जरद किनारी । गळ मूतियन की माळ विराजै, कुडळ की छबि न्यारी । —मीरा
उ०—३ समपै ग्रनड दाढाळ सहट्टां, देता दहण करण दहवट्टां । रातबर तन रोम विराजै, भळकत तेज सुरा मभि भ्र.जै । —मा वचनिका
उ०—४ बिंदली सीस विराजही, माग ज भरी सिंदूर । नथ विराजै नासिका, रही सोभ भरपूर । —कुंवरसी साखला री वारता

२ निवास करना, रहना ।
उ०—१ सोभा सदा सुहावणी, उत विराजणी ग्राप । वोहि बगळी ग्रणखावणी, तौ विण बणी 'प्रताप' । —जैतदान बारहठ
उ०—२ दूर दिसावर जेहनौ पिऊ वसै जी, तै नार सुहागण कहाय । महाविदेह मे धणिय विराजियाजी, तिकै निरधणिया किम थाय । —जयवांणी
उ०—३ सोजत रा बजार में छत्री त्या स्वामीजी विराज्या । —भि. द्र.
उ०—४ ग्रजमेर में ग्रानासागर ऊपर बाग मे मेल रंवास रा कराया, ऊठै विराजता जद । —मारवाड़ री ख्यात

३ बैठना । (ग्रादर-सूचक, सम्मान सूचक)
उ०—१ कसतूरी केसर ग्ररगजो, चदन तिलक लिलाटि । करै लीपति री ग्रारती, किसन विराज्या पाटि । —पदम भगत
उ०—२ ग्रेकदा प्रस्ताव राव जोधौजी दरबार किया विराजै है नै सारा भाई वा ग्रमराव वा कंवर हाजर है । —द. दा.
उ०—३ ताहरा गोगैजी कह्यौ—घोड़ा हूं ले ग्राऊ छूं, ज्यूं ग्रापां घरै हाला । ताहरां पाबूजी कह्यौ—राज ! ग्राप विराजौ । हू लै ग्राईस । —नैणसी
उ०—४ उन्हाळै चोमासै सिरया री पक्की हाटै स्वामीजी बखांण देता, भीखणजी स्वांमी भारमलजी ग्रागै जोड़ै विराजता, पाखती कठ मिलावण वाला भाया बेठता, बीजा साध माहै बेसता ।
—भि द्र.
उ०—५ पौळि पौळि उच्छव प्रबळ, वेदोकति विसतार । राजा तखत विराजियौ, सुभ चौकी सगार । —रा. रू.
उ०—६ डोडी रै बारणै वेहळ सु उतर भीतर नु चाली, सो ग्रागै राणीजी मूढै ऊपर विराजिया छै ।
—कुंवरसी साखला री वारता

४ होना ।
उ०—१ चक्रवरती दसै हुग्रा, धरम तणै परताप । ग्रारभ परिग्रहौ त्यागनै, मोख विराज्या ग्राप । —जयवाणी
उ०—२ ग्रादेसरजी' एडी कही, 'भरतादिक' सौ भाय । धरम तणै परभाव सूं, मुगत विराज्या जाय । —जयवांणी

५ उमडना, छाना, ग्राच्छादित होना ।
उ०—चिहु ग्रोर घोर घटा विराजत, गुहिर गाजत गइन । धरि ग्रधिक गाढ ग्रखाढ उलस्यड, घरयड, चित सै चइन । —वि. कु.

६ रहना ।

उ०—१ गांम रे वास्तै भार ई काई है। गांमसाऊ रुपिया भ्रापरै खर्ने इज है। भ्राप जोधपुर जाय नै रेडियो ले पधारो। भ्रठै बिराजो जितरै खूब धूधावो भ्रर बदळी व्हैनै पधारो जद रेडियो भ्रापरो ने भ्रापरै बाप रो। —भ्रमरचूंनडी

उ०—२ राजा दखिण बिराजियौ, गा दखणी हुइ रद्द। साह सुपारिस साभळै, की फत्ते सरहद्द। —गु. रू. बं.

७ जीवित रहना। (सम्मान, भ्रादर)

उ०—१ ताहरा सरब हजूरी, पासवांन, खवास तेक हता तिकै सरब तळाव ढूढियो। घणी ही जोयो पण हाथ न भ्रायो। इतरै मे कूंवर री भ्रतक देही ऊपर तिर भ्राई। तरै सरब लोग देखण लागा। देखै तौ देही निरजीव देखी। तद हाहाकार सबद हुवो। साथ सारो ही रोवण-कूकण लागो। राजा नै जाय खबर हुई सो सुण नै मुरछा-गति हो गई, विवहल होय ग्यो। कूंवर सुंदरदास दीठो के कुंवर री भ्रा गति हुई भ्रर राजा री देह छूटै तो राज जाय छै। ताहरा कुंवर दैपाळदे नै उठाय छाती सूं लगायो। नांक भीच सावचेत कियो। राजा सावचेत हुवो। फेर कूकण-पुकारण लागा। तद महतै भ्ररज कीवी-जै कुंवरजी री भ्रा दसा हुई। दैपाळ निराठ दिलगीर हुवो। गूकारोळ सूं कुळराइज गयो, कह्यो-महाराज दिलासा करो। इण ऊपर जीव टेको भ्रर परमेस्वरजी भ्राईज की तो किण रो ही दोख नही। यूं कहि दूहो कह्यो-

> सुख मे दुख सचारबो, दुखिया सुख दयाल।
> देवज रूठो दाणवै, हरि रूठा बेहाल॥

यूं कहि राजा नूं समझायो। सावचेत कियो भ्रर कह्यो-महाराज, थाहरै सारी दौलत छै, कुटब छै। इण तरह राजा नूं धीरज बधाय जनानी डोढी गयो। जनानै सारै ही मे धीरज दीवी। कुंवर री मा भ्रर महळ दोनूं ही हठ झालियो-कुंवर रो मुंहडो देखा। ताहरा कुंवर री मा नै तो कह्यो-थै तो सुग्यानी छो। इनरा सास्तर सुणिया छो। कथा सुणी तै मैं इतरो ही हठ सुणियो छै? यूं कहि राणी रो हठ छुडायो। फेर कुंवर री राणी नै फुरमायो-जै राज रो काम कुण चलावसी, राजा तो विरध हुवा। कुंवरजी री यूं हुई। दैपाळदे बाळक छै। राज राखणी छै तो भ्रापनै बिराजणो छै। परमेस्वरजी निमित्त धरम-पुन करो। घणो सोच करणो तो भ्रसमझ रो काम छै। हठ छोड भ्रर लारै रहि कर राज करो। —पलक दरियाव री बात

उ०—२ इयै भूतळ पर भ्राप ५३ वरस रे भ्रडैगडै बिराजिया भ्रर सवत् १६५१ मे सिवलोक सिधारिया। —सत सेठ स्रीरामरतन डागा री बात

८ ठहरना, रुकना।

उ०—१ गुणमठै रा साल चवदै साधा सू तथा चवदै भ्रारया सूं देवगढ मे भीखणजी स्वांमी बिराज्या हुता, तिहां तीन… भ्राप बोल्या—भीखणजी म्है तीन जणां त्यानेइ पूरो भ्राहार नहीं मिल्यो तो थानै इतरा ठाणा नै भ्राहार किण रीतै मिलै। —भि. द्र.

उ०—२ भ्रतरपट कर सहेल्या हथबोळणै री कसार मुंह भ्रागै भ्राण धरियो। ताहरा भरमल भ्ररज होळै सूं कीवी, जो भ्राज रात चाकर ऊपर किरपा कर बिराजै तो मोटी करै। —कुंवरसी सांखलै री वारता

९ निवास करना।

उ०—भ्रोघड एक न पायो भ्रोघड, भ्राक धतूरा खाय हुवो तड। बुरा भला खावै किण काजै, तेरै भीतरि राम बिराजै। —भ्रनुभववाणी

१० स्थित होना।

उ०—वलि तेहनै चौ पावती, विकट दुरंग बिराजै रे। घण वाजित्र सदा घुरै, घन गरजारव लाजै रे। —वि. कु.

११ उपस्थित होना, विद्यमान होना।

बिराजणहार, हारो (हारी), बिराजणियो—वि०।
बिराजिभ्रोडो, बिराजियोडो, बिराज्योडो—भू० का० कृ०।
बिराजीजणो, बिराजीजबो—भाव वा०।
बराजणो, बराजबो, बिराजणो, बिराजबो—रू० भे०।

बिराजमांन-वि [स विराजमान] १ शोभायमान, शोभित।

उ०—१ नारद तबर सपन सुर सगीत किया। भ्रपछरा मिळ ग्रंधप ध्यान किया। इण पौहप वरखा कीवी। तिण विरिया बारै भ्रादीत मुख्य कमळ बिराजमांन हुवा। —मा. वचनिका

उ०—२ नठा उपरायत देनैत राजान भ्रागरा टोळी मजल रा जुवान लिया बिराजमान हुवा छै। कमरा खोलजै छै बरछी रा झूला कीजै छै। —रा. सा. स.

२ उपस्थित, विद्यमान।

उ०—तिण वेळा भ्रादरी गगति। जोति री धणियाणी। सुरा री सहाय। मुकित री ताहरू। सत्र री खंगाळ। चवदै भवण री प्रतिपाळ। प्रगट बिराजमान हुवा। इद्रलोक मे नछाह हुवा। —मा. वचनिका

३ बैठा हुभ्रा। (सम्मान सूचक, भ्रादर-सूचक।

उ०—वागा बणाउ करि। सख चक्र गदा पदम धारि। बैजयंती माळ मोर मुगट कुडळ बिमाळ मदनमोहन कमळलोचन स्यामसुदर ठाकुर बिराजमान हुभ्रा छ। मणिमाणिक जडित छत्रपाट सिधासण बिराजमान दीसै छै। भळळाट करि जगाजोति जागी छै। —र. वचनिका

४ स्थित।

उ०—नठा उपरांति करि नै राजान सिलामति मुखमली जरबाफती,

मखतूल रेसम री कलाबतू जरकस लपेटिया लूबा समेत गादी तकिया बिराजमांन कीजै छै। —रा. सा. स.

सं. पु.—१ बैठाने की क्रिया, बैठाना। (सम्मान सूचक, आदर सूचक)

उ०—तठा उपरांति राजांन सिलामति तोरण बाधीजै छै। घणा गज बबर पेमाव करि मंडोवर महलें पधराया छै। सुभ दिन सुभ घड़ी सुभ मूहरत सुभ बार सुभ लगन सुभ वेळा माहि आणि पाट सिंघासण बिराजमांन किया छै। माथा ऊपर सेत छत्र विराजै छै। सेत चमर ढुळै छै। —रा. सा. स.

२ बैठने की क्रिया, बैठना। (सम्मान-सूचक)

उ०—१ दोय-दोय बाकरां री सिल्हाडनै ठरका हुवै छै। तरवारां रा छणकार हुयनै रह्या छै। चौरगा री खाटखड हुयनै रही छै। कटोरा माहै फूल लीजै छै। बाकरा होसनाका बसू कीजै छै। देमोत रवा घोय हाथ ऊजळा कर बिसायता ऊपर बिराजमांन हुवा छै। —रा सा. स.

उ०—२ त्या उमरावा रा बखांण। लोह री लाठ। चालता कोट। आडर चो घा। अनेक आरथ किया। भांति भांति रा लोह चाविया नै चखाया। ईसा दुवाह। आण बिराजमांन हुवा। —मा वचनिका

उ०—३ ब्रह्मा बिसन महेस इंद्र सुर साथै बिराजमांन हुआ छै। आप बिसन चत्रभुज रूप धारि। बाणा बणाव करि। सख चक्र गदा पदम धारि। वैजयतीमाळ मोरमुगट कुंडळ बिमाळ मदनमोहन कमळलोचन स्यामसुदर ठाकुर बिराजमान हुआ छै। —र. वचनिका

३ पत्रों आदि में अपने से बड़ो के लिए लिखा जाने वाला आदर सूचक शब्द।

उ०……सरब ओपमा बिराजमांन अनेक ओपमा लायक भाबीसा दूरगजी नै लिखी तेआ री जय स्रीरघुनाथजी री बंचावसी। घणा मान सूं करनै उपरच समाचार एक बाचमी के उतराद मे भगड़ो वेतायो है। म्हारी पलटण नै मोरचा माथै जावण रो हुकम मिळचो है। आप कोई बात री चिंता फिकर करसी नी बजी नै म्हारा पांव घोक अरज करसी अर टाबरा माथै हाथ फेरसी। म्हारी कानी सू ममता री मनवार मनासी। —अमर-चूनड़ी

रू. भे —बिराजमान, बैराजमान।

बिराजित—देखो 'बिराजियोड़ो'

उ०—१ वर तुरग उत्तम, करण साकति बिराजित। मदोमत मातग, जाण जळ बादळ गरजित। —गु. रू. ब.

उ०—२ पूठि भिड़ज्जा आरुहिया भड, तिस रूप लेय छत्तीसे त्रिउरड। सत्तरि खान बहुत्तरि ऊमर, सीस बिराजित मेघाडंबर। —गु. रू. ब.

बिराजियोड़ो-भू का. कृ.—१ शोभायमान हुवा हुआ, शोभित हुवा हुआ. २ निवास किया हुआ, रहा हुआ. ३ बैठा हुआ (आदर सूचक) ४ हुवा हुआ. ५ उमड़ा हुआ, छाया हुआ, आच्छादित हुवा हुआ. ६ रहा हुआ. ७ जीवित रहा हुआ (आदर-सूचक) ८ ठहराहुआ, रुका हुआ. ९ निवास किया हुआ. १० स्थित हुवा हुआ.
(स्त्री. बिराजियोड़ी)

बिराजी—देखो 'बैराजी' (रू. भे.)

उ०—१ ती सूं बादसाह घणी महरबांनगी राखै और जबरदस्त घणां ती सूं पण भय राखै जै बिराजी हुवी तौ फौजां धावै। —महाराज जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

उ०—२ स. १५३५ तळाव ऊपर कोट घातण री तजबीज करी। तद राव सेखै कहायो, "गढ अठै मती घालज्यो, परै जागळू री हद मैं घातो। सू या मानी नही। पीछै राव सेखो मनमैं बिराजी तो हुवो पण यानै क्यूं ई कयो नही। —द. दा.

उ०—३ ना पछै पातसाहजी भला माणस मेल दळपतसिंघजी नूं दिली बुलाया सू गया नही। हजरत रा माणस पाछा गया। तठै पातसाहजी बडा बिराजी हुवा। पण दळपतसिंघजी इण बात नै थापी नही। —द. दा.

बिराट-सं. पु. [सं. बिराट] १ महाभारत के एक पर्व का नाम।

२ एक प्रदेश जो जयपुर, अलवर व भरतपुर के बीच है। जहां पांडवों ने आज्ञातवास का समय (एक वर्ष) बिताया था।

उ०—बळी न्रप जैत करा बळिहार, पत्री अणभीज परा खळ पार। बाणा घट कैरव राण बिराट, ब्रहभट जाण करै द्रहबाट।—मे. म.

३ उक्त प्रदेश का राजा।

वि. वि.—इसकी पुत्री उत्तरा का विवाह पांडव-पुत्र अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से हुआ था। इसके पुत्र उत्तर व इसकी स्वय की मृत्यु महाभारत युद्ध मे पाडवपक्ष की ओर से लड़ते हुए हुई थी। इसके साले व सेना का सेनापति कीचक का वध पाण्डव पुत्र भीम ने उनके अज्ञात वास के समय द्रोपदी पर कुदृष्टि डालने के विरोध मे किया था।

४ स्वयभू मनु का नामान्तर।

५ महाभारत युद्ध के समय अर्जुन को कृष्ण द्वारा दिखाया गया विश्व स्वरूप।

६ बलि को छलने हेतु विष्णु द्वारा किया गया त्रिविक्रम रूप।

७ विश्वशरीर मयी अन्त पुरुष।

८ ब्रह्मा की प्रथम सन्तान।

९ एक देवयोनि, सुतप।

१० प्रतवर्दन देवों में से एक।

११ एक प्रकार का छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, जगण और अन्त में लघु होता है।

१२ देखो 'वैराट' (रू. भे.)   (ह. नां. मा.)

रू. भे.—बराट, बिराट, बैराट, वइराट, वयराट, वैराट।

बिराटक-स. पु. [सं.] विराट नगर में निकलने वाला एक प्रकार का निम्नकोटि का हीरा या नग।

बिराटपरव-स पु [स बिराट+पर्वन्] महाभारत का चौथा पर्व।

बिराटरूप—देखो 'विस्वरूप'

बिराड—देखो 'वैराट' (रू भे.)

उ०—इयँ बिछावणा कीया आइ बैठा। देखिनै कह्यौ इंडौ आटो। खोवौ बोलियौ बाटणौ कासू। बिराड भाग इ करिस्या। ताहरा नाचिण वाळी बोलियौ ना जी या कहियौ हुतौ। ईयँ नु इतरी भूइ थांहरै कहियँ आंणी।   —चौबोली

बिराडप-स. पु.—अंगिराकुल में उत्पन्न एक गोत्रकार।

बिराडणौ, बिराडबौ-क्रि. अ.—डरना, भयभीत होना।

उ०—विउड भिउड ताडिउ तु चपेटा ऊपाडिउ। कूंयरि मनि बिराडिउ बोल बोलइ सु ताडिउ।   —?लिसूरि

बिरादर—देखो 'बिरादर' (रू. भे.)

उ०—१ यम लिखि दोलउजीरनै, पुरजा पहुंचाया। खान बिरादर नोकरौं, सबकौ बुलवाया। सबकै बीच मसूरखा, पुरजा बचवाया। फिर कासीद जबानदा, समचार सुनाया।   —ला रा.

उ०—२ आगेही वडे महाराज 'अजमाल' से सभर कै खेत हमारै बिरादर हुसनखा गिरदवां हुसैनखानै जग कर सच्चे दिल से सिर दिया। जिन्हुन के मरणं सें तारीफ कै सवाल सब आलम परि जिया।   —सू. प्र.

बिरादरी—देखो 'बिरादरी' (रू भे.)

उ०—सात हजारी सामतौ, जाकौ नाम 'अजीत'। दाखौ फेर बिरादरी, सह आदरी सप्रीत।   —रा. रू.

बिराध-स. पु. [स.] १ विरोध, प्रतिकूलता।

२ अनादर, अपमान।

३ कष्ट, पीड़ा, तकलीफ।

४ दण्डकारण्य मे राम या लक्ष्मण के द्वारा मारा जाने वाला एक बलवान राक्षस जिसे रंभा पर अत्याचार करने के कारण गंधर्व से राक्षस योनि प्राप्त हुई थी।

५ कश्यप एवं दनु के दानव पुत्रो मे से वितल नामक पाताललोक मे रहने वाला एक पुत्र दानव।

वि. [स. विराद्ध] १ विरोधी, प्रतिपक्षी।

२ अपमानित, तिरस्कृत।

३ कष्टमय, पीडित, दुखी।

रू. भे.—बिराध।

बिराधक-वि.—१ विरोध करने वाला, विरोधी, प्रतिपक्षी।

उ०—उदायन दीधउ केसी नइ, भाणेजा तइ राजभार जी। वैर वहतउ थयउ विराधक, अपीचि अमुर कुमार जी।   —स. कु.

२ अनादर करने वाला, अपमान करने वाला।

३ कष्ट देने वाला, दुःख देने वाला।

बिराधणौ, बिराधबौ-क्रि. स.—१ विरोध करना, विरुद्ध कार्यवाही करना।

२ अनादर करना, अपमान करना।

३ रोकना, अवरुद्ध करना।

उ०—तं मुझ मिच्छामि दुक्कड, अरिहंत नी साख। जं मइ जीव विराधिया, चउरासी लाख।   —स. कु.

४ कष्ट देना, दुःख देना।

५ नाश करना, नष्ट करना।

उ०—सीमु सिखडो नगाउ तामु छेदीउ छलु माधीउ, पाप पराभव नइ प्रवेसि गतिमागु विराधीउ।   —सालिभद्र सूरि

बिराधणहार, हारौ (हारी) बिराधणियौ—वि०।

बिराधिओड़ो, बिराधियोड़ौ, बिराध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिराधीजणौ, बिराधीजबौ—कर्म वा०।

बिराधियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ विरोध किया हुआ, विरुद्ध कार्यवाही किया हुआ. २ अनादर किया हुआ, अपमान किया हुआ. ३ कष्ट दिया हुआ, दुःख दिया हुआ. ४ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ।

(स्त्री. बिराधियोड़ी)

बिराधी—देखो 'बिराधक'

उ०—इत्यादिक बहुला हुवा, समकित धरम बिराधी रे। मरनै केई नरकं गया, केई नीची गती तिण लाधी रे।   —जयवांणी

बिराळ, बिराल-सं. स्त्री—उपमाता, धाय।

उ०—डूंगर तणा सिखर डगमगइ, थयूं अजूआलूं सायर लगइ। दिग्गज आठ रहया अवलोकि, घूम बिराल गई सुरलोकि।   —कां दे प्र.

बिराळी—देखो 'बिराळी' (रू. भे.)

बिराव-सं. पु. [स.] १ हल्ला गुल्ला, शोरगुल।

२ ध्वनि, शब्द।

३ अमिताभ नामक देवयोनि।

रू. भे.—बिराव।

बिरावणौ, बिराववौ–क्रि. स.—१ हल्ला-गुल्ला करना, शोर करना।

२ ध्वनि या शब्द करना, बोलना।

बिरावणहार, हारौ (हारी), बिरावणियौ—वि०।

बिरावियोड़ौ, बिराबियोड़ौ, बिराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरावीजणौ, बिरावीजबौ—कर्म वा०।

बिरावणौ, बिराववौ—रू० भे०।

बिराविन–सं. पु. [सं विराविन्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

बिरावियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ हल्ला-गुल्ला किया हुआ, शोर-गुल किया हुआ २ ध्वनि या शब्द किया हुआ, बोला हुआ।
(स्त्री बिरावियोड़ी)

बिराह–सं पु [सं. वि+फा राह] १ कुमार्ग, बुरा रास्ता।

२ बिना रास्ता, रास्ता विहीन। ३ उल्टे रास्ते।

उ०–कै भागा अजमेर नूं, रिण दळ रा बिराह। कै लिखिया 'किरलेस' रै, कै पुर घर घर माह। —रा. रू.

३ देखो 'बराह' (रू. भे)

बिरिंच बिरिंचन, बिरिंचि–सं पु [सं विरञ्चन विरञ्चि] १ ब्रह्मा।

२ विष्णु।

३ महेश।

बिरिक्त, बिरिक्त–देखो 'विरक्त' (रू. भे.)

बिरिख बिरिख, बिरिखि—१ देखो 'वृक्ष' (रू भे)

२ देखो 'वरस' (रू भे.)

बिरिन–सं पु [सं व्रनिन्, व्रनि] १ श्वान, कुत्ता। (ह ना. मा)

२ देखो 'विरक्त' (रू. भे)

बिरिद, बिरिदि—देखो 'विरुद' (रू. भे)

उ०—१ बळिभद्र बुध तूं ना बिरद, सबळा चरिमें नेस। पग उधारे प्राणियो, 'पीर' कहै परमेस। —पी ग्र

उ०—२ चौरी बैठे चक्रधर, बळि मुहिद्रा रौ वीर। बावै ना सबळा बिरिद, पुणां कवेसर 'पीर'। —पी ग्र.

उ०—३ अरणा गुरड़ ओळगै, दिये परिकरमा दिगीधर। सिनिकादिक समग, बिरिद दै बारट ईसर। —पी. ग्र.

उ०—४ बावा तू बाळा बिरिदि, अदभो पुरिखि अलाह। सहसा-बाहू मारिखा, गिळिया किसरा ग्राह। —पी. ग्र.

बिरिध—देखो 'वृद्ध' (रू. भे)

बिरिधि—१ देखो वृद्ध' (रू भे.)

२ देखो 'वृद्धि' (रू. भे.)

बिरियां—१ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ एक बिरियां मुख बोलौ रे, घुता रा जोगी। कानन कुंडळ गळ बिच सेली, अब तेरौ मुख खोलौ रे। रास रच्यौ बसी-वट जमुना, ता दिन कीनौ कोलौ रे। —मीरां

उ०—२ उण बिरियां 'अभमाह' रौ, नरपति पेखं नूर। मर सोखिम करिवा सभा, ग्रीखम सूर करूर। —रा. रू.

उ०—३ पर उपगारी परम करुणा पर, सेवक अपणौ सभारौ। भगत अनेक भवोदधि तारै, हम बिरियां क्यूं विचारौ। —स. कु.

उ०—४ लोक व्यवहार राखण भणी, वीर समीपै जाय। पूछण री बिरियां हुई, तरै लाज आई मन माय। —जयवांणी

उ०—५ अगाहून माठै सू काठी हुवै। बिरियां देख'र बिगाजै नी सो वाणियौ री गिवार। छाती काठी करी है। जै जिसौ दिन नहीं आवै। —दसदोख

उ०—६ फाजल ही आपरी साधना सरू करी, करणं सार्थ ढूंपपेरी करणी पैलाई। पान-मान बिरियां, छुट्टी बिसराम रै बखत, करणं नै जमी पर सैरो सुवाण्यौ, ऊपर चादर उढाई नथा सितर पढायौ। —दसदोख

बिरिस, बिरिसि—१ देखो 'वरस' (रू. भे.)

२ देखो वरीस' (रू. भे)

बिरी–१ देखो 'बिना' (रू. भे)

उ०—सदा सद संवर्म तना त्रावड सकति, भाग हुइ से जिका ग्रहिमें भगति। भागइ बिरी करौ करना इद रौ भलौ, टळि गयौ परौ जगराउ वाळौ टलौ। —पी. ग्रं.

२ देखो 'बीड़ौ' (रू भे.)

३ देखो 'वैरी' (रू भे)

उ०—वचन विनता उच्चरि रे, विहग, तू बिरी थयु। गुण कहथा नळराजना नि भाव मनमू त्यांहा गयु। —नळाख्यात

बिरुग्रौ—देखो 'विरुग्रौ' (रू भे)

उ०—१ बिरुग्रौ दुरमुख ऊपरै होजी, पिण जिन धरम करत। रयण दिवस रही समकित सुद्ध सुमति ग्रही होजी, भजै सदा भग-वंत। —वि. कु.

उ० २ मान गहेली मांननी, बिरुग्रउ बोल्यौ वयण। विण आदर न रहै कदे, सिंह सूर नै सयण। —प. च. चौ.

उ०—३ पाणी तिहा नवि नीकलै रे, सोकातुर सहु जात। चित-वरण एहवौ करै रे, एतौ बिरुइ वात। —वि. कु.

(स्त्री. बिरुई)

बिरुझणो, बिरुझबो–क्रि. अ.—उलझना, फंसना।

बिरुझणहार, हारो (हारी), बिरुझणियो—वि०।

बिरुझियोड़ो बिरुझियोड़ो, बिरुझ्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिरुझीजणो, बिरुझीजबो—भाव वा०।

बिरुझणो, बिरुझबो—रू० भे०।

बिरुझियोड़ो—उलझा हुआ, फसा हुआ।

(स्त्री. बिरुझियोड़ी)

बिरुत, बिरुत्तौ–देखो 'बिरत्तौ' (रू. भे)

उ०—आयो खुरम बिलागै अंबंर, पूरै पारभ है गै पक्खरि। उपाडेह छरा आवतरि, जाणै सीह बिरुत्तौ छपरि। —गु रू. ब.

बिरुथ, बिरुथौ, बिरुथ–देखो 'बरुथ' (रू. भ)

उ०—दावै लाखा जमी घणा हियै दूखिया दोयणा दूठ, प्रवाडा अचूकिया लै भूडडा पाडीस। 'जुवारौ' 'भोपाळ' 'डूंगौ' दुहुत्था भूखिया जगा, सेखा चाळै ढूकिया बिरुथ्था गोरा सीस।

—सकरदान सामोर

२ देखो 'बिरत्तौ' (रू. भे.)

बिरुथण, बिरुथणी, बिरुथनी–देखो 'वरूथणी' (रू. भे.)

बिरुद–स. पु [सं.] १ किसी के गुण, यश, प्रताप आदि का वर्णन।

उ०—अमर मत्र उर धरै, बिरुद ऊचरै महावत, सक साह सपणै, वयण न भणै प्रभुहावत। भाय दाय क्रमि भरै, पाय लगर खरळक्कै। ऐंड बंड अहियल्ल नीठ दोय पैड सरक्कै। —रा. रू

२ राजा लोगो द्वारा प्राचीन काल मे धारण की जाने वाली यश या प्रशंसासूचक पदवी।

उ०—वेराजी रै पुत्र रामदासजी हुवा गाव दुघोड रै खेडे थापना कीनी। बडो एक आखाढसिघ रजपूत हुवो। बिरदधारी रजपूत हुवो। रामदास वेरावत नै उगणीस बिरुद हुवा। तिकै बिरदा रा नाव–प्रथम पाखरिया बिना रहणो नही। दूजो सबळा उथापणा। तीजो निबळा थापणा। चोथो जाचक जगा तरवर। पाचमो परनारी सहोदर। छठो चहुमुगाळ। सातमो सुखी······। —रा. रा स.

३ यश, कीर्ति, गुण।

उ०—१ गोपाळ व्रिज रा बाळ गोवाळ गोवाळ गति, छोगाळ छत्राळ साई प्रतिपाळ साच। जादवा उजाळ नमो बिरुदां विसाळ जूना, डाग धारी काळ माथै ससिगाळ डाच। —पी. ग्र

उ०—२ छत्र, चामर, नीसाण, कुकमानगर रौ राज दीधौ। कामरू देसनौ राजा मारचौ। लक्ष हाथी, नवलख अस्व पायगा हुई। अनेक बिरुद विराजमान राठोड कमधजवस रौ थापना कीधी।

—रा. व वि.

उ०—३ हाडा घर गहमह हुई, जाडा बिरुद लुभाण। गाडा भार जाडां गळां, खाडां तुरक खपाण। —वं. भा.

४ यशस्वी या यशपूर्ण कार्य, कीर्ति के कार्य।

उ०—बाप जिम वडा ही वडा वणिया बिरुद, "सूर" हर आभरण भवा साह। महाराजा जु तैं माड कीधो विमह, मडोवर थंभसी राव माह। —गु. रू. बं.

५ कर्त्तव्य।

उ०—१ तूवर दाटण मेलिया, अभै करै 'अभसाह'। सांभरि सिर आयो सगह, नरपति बिरुद निबाह। —रा रू.

उ०—प्रवहण तारचा कस्ट निवारचा, अटवी माहि उबारचा राज। बिरुद संभारचा धरमसी धारचा, सेवक काज सुधारचा राज।

घ व. ग्रं.

७ देखो 'बिडद' (रू. भे)

रू. भे.—बडद, बरद, बिडद, बिडद बिरद, बिरद्द बिरिद, बिरिदि, बिरुद, बीडद, ब्रद, ब्रिद, ब्रिदि, विडद, विडदाव, विडद, बिडदाव, विडुद, विरद, विरद्द, विरदं, विरह, विरध, विरिद, विरिदि, विरुद्द, विरूद, व्रद।

बिरुदधार, बिरुदधारी–वि. [स बिरुद+धारिन्] बिरुद धारण करने वाला, बिरुदपति।

उ०—अराना किसन नंद छहुं विध ह्र अघक, चोजवान बिरुदधार चडता। कहर ससमार दम पाट लाधै कवण, पथ उतराद गुण ग्रंथ पढता। —हुकमीचद खिड़ियो

रू. भे.—विरदधार व्रिरदधारन. विरदधारी।

बिरुदपत, बिरुदपति, बिरुदपती–वि. [स. बिरुद+पति] बिरुद धारण करने वाला, विरुदधारी।

रू. भे —बड़दपत, बडदपति, बड़दपती, बरदपत, बरदपति, बरदपती, बिडदपत, बिडदपति, बिडदपती, बिरदपत, बिरदपति, बिरदपती, बिरिदपत, बिरिदपति, बिरिदपती, बिडदपत, बिरुदपति बिरुदपती, बिरदाधिप, बिरदाधिपत, बिरदाधिपति, बिरदाधिपती, बिरधाधिपत, बिरधाधिपति, बिरधाधिपती, वरदपत, वरदपति, वरदपती, वरदाधिपत, वरदाधिपति, वरदाधिपती, विरदपत, विरदपती, विरदपती, विरदाधिप, विरदाधिपति, विरदाधिपती।

बिरुदाणो, बिरुदाबो–क्रि. स.—१ जोश दिलाना, उत्साहित करना।

२ कीर्तिगान करना, यशगान करना, गुणगान करना।

३ ललकारना।

बिरुदाणहार, हारो (हारी), बिरुदाणियो—वि०।

बिरुदायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिरुदाईजणो, बिरुदाईजबो—कर्म वा०।

बड़दाणौ, बड़दाबौ, बड़दावणौ, बड़दावबौ, बरदाणौ, बरदाणौ, बरदावणौ, बरदावबौ, बिड़दाणौ, बिड़दाबौ, बिड़दावणौ, बिड़दावबौ बिडदाणौ, बिडदाबौ, बिडदावणौ, बिडदावबौ, बिरदाणौ, बिरदाबौ बिरदावणौ, बिरदावबौ, बिरुदाणौ, बिरुदाबौ, बिरुदावणौ, बिरु-दावबौ, वरदाणौ, वरदाबौ, वरदावणौ, वरदावबौ, विड़दाणौ, विड़दाबौ, विड़दावणौ, विड़दावबौ, विडदाणौ, विडदाबौ, विडदावणौ विडदावबौ, विरदाणौ विरदाबौ, विरदावणौ, विरदावबौ, विरु-दावणौ, विरुदावबौ — रू० भे० ।

बिरुदायक—वि.—१ कीर्तिगान, यश गान या गुणकथन करने वाला ।

२ जोश दिलाने वाला, उत्साहित करने वाला ।

रू. भे.—बरदायक, बिडदायक, बिरदायक, बिरुदायक, वरदायक, विरदायक ।

बिरुदायोड़ो—भू का कृ.—१ जोश दिलाया हुआ, उत्साहित किया हुआ. २ कीर्तिगान किया हुआ, यशगान किया हुआ. ३ ललकारा हुआ. ४ गुणगान किया हुआ ।

(स्त्री बिरुदायोड़ी)

बिरुदाळ —देखो 'बिरुदाळौ' (मह., रू भे.)

बिरुदाळी—स स्त्री.—देवी दुर्गा ।

रू. भे.—बरदाळी, बिरदाळी, बिरद्दाळी, बिरिदाळी, बिरुदाळी, विरदाळी ब्रदाळी, ।

बिरुदाळौ—वि (स्त्री बिरुदाळी) १ बिरुदधारी, यशस्वी ।

२ वीर, बहादुर ।

३ श्रेष्ठ, उत्तम ।

रू. भे.—बरदाळौ, बिरदाळौ, बिरद्दाळौ बिरिदाळ, बिरिदाळौ, विरुदाळ, बिरुदाळौ, ब्रदाळौ, विरदाळौ ।

मह.,—बरदाळ, बिरदाळ, बिरद्दाळ, बिरिदाळ, बिरुदाळ, ब्रदाळ विरदाळ ।

बिरुदावणौ, बिरुदावबौ —देखो 'बिरुदाणौ, बिरुदाबौ' (रू. भे.)

बिरुदावणहार, हारौ (हारी), बिरुदावणियौ —वि० ।

बिरुदावाड़ोड़ौ, बिरुदावियोड़ौ, बिरुदाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिरुदावीजणौ, बिरुदावीजबौ—कर्म वा० ।

बिरुदावळी, बिरुदावली—स. स्त्री. [स.] १ कीर्तिगान, यशवर्णन, प्रशसा ।

उ० १ राजवियां नै ओळखै रे, जाणै देस बिदेस रे । बस तणी बिरुदावळी, सभळावै सुविसेस रे । —श्रीपाळरास

उ०—२ देवकी माता मादे राणिया, साथै सहू परिवार । बोलै बिरुदावलियां, चारण सुजब सब, जय जय शब्द अपार ।

—जयवाणी

उ०—३ रथ बेठी नै सचरी, हुवौ ल्याडेती भात । भाटण देवै बिरुदावली, आरीसौ लेई हाथ । —जयवाणी

२ बिरुदों या गुणों का सग्रह, गुणावली ।

उ०—बिरुदावळी हसती वरीस अवनीस, लाख मासण कोडि वरीस भडड डडण भगजी गजण, अनभी अभूत ताहि नमी भून करण । सवळ रायथान उथापण, निरजोर राय सहाय करि थापण । खड खड खुरासाण को मांण हीण करण, वेद मुजाद की अजाद अस-रण के सरण । —रा. रू.

रू. भे.—बिरदावळी, बिरुदावळी, ब्रदाळी, विडदावळ, विडदावळी, विरदावळी ।

बिरुदावियोड़ौ—देखो 'बिरुदायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिरुदावियोडी)

बिरुदेत, बिरुदैत—वि.—१ बिरुदधारी, बिरुदपति, बिरुदवान, यशस्वी ।

उ०—पाचै रतन तणं बलै, जिहा तिहा पामै जैत । बीजा तै सहु बापडा, कुमर बडौ बिरुदैत । —वि. कु.

२ बिरुद या यश का वर्णन करने वाला ।

रू. भे.-बरदेत, बिरदेत, बिरदैत, बिरुदेत, विरुदैत, बरदेत, बरदैत, बिरदेत, विरदैत ।

बिरुद्द—देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

उ०—१ बेढा जुवा गयदा ढाळवै बेन बेढीगारो, चाळवै असला पंजा बिरुद्दां सचाळ । लूथबथा अंगरेजा सू, सूर काळ रूपी लड़ै, उनागा खडग्गा सीह बिरुद्दा उजाळ । —बुधसिंह सिढायच

उ०—२ इमा कमधज बिरुद्द अपार, महारिण मेच्छा मारणहार । ढळीळण दिल्ली है-वै ढाण, सकोडिम जेह बडा सुरताण ।

—राव जैतसी रो रासौ

२ देखो बिरुद्ध' (रू. भे)

उ०—नाथिया उन-या नत्थां बिरुद्दां बठोठ नाथ । सिंघ टोळा साथिया सबोळा लीधा सग । घासाहुरा दीधा घेर भिभाड़ै हाथिया घड़ा, बेव लागा नीधा धू बिलातिया बरग ।

—डूगजी जव.रजी रौ गीत

बिरुद्ध—वि. [स] १ जो प्रतिकूल हो, बैरी दुश्मन । (हि, ना. मा.)

उ०—मिळ थाट कमधा दळ अनमधा, बधक सभा ऊबंधा । प्रति वेध बिरुद्धां परस उरद्धा, किलब दगधा अयुकदा । —रा. रू.

२ विपरीत, उल्टा ।

उ०—१ तिण री सद्धा-हिंसा में धरम । सम्यक्त्वी नै पाप न लागै : सरव जगत रा जीव मारघा एक समौ ससार बधै नही । सरव

जीव नी दया पाल्यां एक सम्मौ ससार घटै नहीं। होणहार हुवै ज्यु हुवै। करणी रौ कांम नहीं केवली देख्यौ जद मोक्ष परहो जासी। इत्यादिक विरुद्ध सद्धा स्वांमीजी कर्न कहे। —भि. द्र.

उ०—२ सार्जा नावा समान तौ साधु आप तिरै औरा नें तारै। फूटी नावा समान भेखधारी, आप डूबै भोला ने डबोवै। पत्थर की नावां समान तीन सौ तेसठ पाखडी तै प्रत्यक्ष विरुद्ध दीसै। —भि. द्र.

३ अवरुद्ध, अटका हुआ।
४ घेरा हुआ, बन्द किया हुआ।
५ जो मेल नहीं खाता हो, बेमेल, असगत।
६ जो विरोध करे, विरोधी।
७ अशुभ, बुरा।
८ अनुचित, बुरा।

उ०—परउपगारी रे सहुनो, हुं हतौ, निस्टाचार न चोर रे। केहनें दुख नवि दीधो कांई विरुद्ध न कीधो, हा हा जाण्यो रे मैं इणहीज भवै। कीधो पातक घोर रे, न रह्यो हु सीधो मैं सुजस न लीधो। —वि. कु.

९ जो वर्जित हो, निषिद्ध।

स. पु.—१ दसवें मन्वन्तर ब्रह्मसावर्णि का एक देवगण।
२ युद्ध।

रू. भे.-विरुद, विरुद्ध, विरुध, विरूद, विरूद्द, विरध, विरद्द, विरुध, विरूड, विरूध।

विरुद्धकरमा-वि. [सं. विरुद्ध+कर्मा या कर्मन्] विपरीत आचरण वाला, बुरे चाल-चलन वाला।
स. पु —उक्त प्रकार का व्यक्ति।

विरुद्धता-सं. स्त्री.—विरुद्ध होने की अवस्था या भाव, विपरीतता, प्रतिकूलता।

विरुध, विरुधि—देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—१ वाक्य दोख प्रतिकूल वरण बद, प्रगट वरण जिण रस प्रतिकूल। सुध लछण मति अरुध हुए सुण, मति विरुध रस अतहत मूळ। —बा. दा.

उ०—२ सरिखा सूं बळभद्र लोह साहियै, वडफरि उछजतै विराध। भला भलो सति तो इज भंजिया, जरासेन सिसुपाल जुधि।—वेलि

विरुपाख, विरपाख, विरुपाखि—देखो 'विरूपाक्ष' (रू. भे)
(क. कु. बो., ना. मा.)

विरुयउ, विरुयौ—देखो 'विरूग्रौ' (रू. भे.)

उ०—१ सघ गिरुयउ रे, लीसघ गुणें करि गिरुयउ रे। मात पिता सरिखउ हित वल्लभ, किम ही करई नहीं विरुयउ, रे। —स. कु.

उ०—२ मन मा कुमर इम चिंतवै, ए थई तीजी वार। पीड़ा करै छै पापियो, विरुयो कोई वेकार। —वि. कु.

उ०—३……दुख प्रखाधउ, आगणइ कुउ अनइ कुटव आधउ, वानर अनइ वीछी खाधउ, काणी अनइ रिसाणी, साप अनइ पखालउ, कादम अनइ कटालउ, बाझ अनइ विरुया बोली, सरडी अनइ स्लेस्माणी। —व. स.

विरुहण, विरुहणि, विरुहणी—देखो 'विरहणी' (रू भे)

उ०—वीज भवइ चातुक लवइ, दादुर तिमरी तेव। विरुहणिया तनि वेदना, श्रावण ! सरइ विसेव। —मा कां. प्र.

उ०—२ सरद-निसाकर समममइ, अंमइ जाणिउ भेउ। उहा सरी तिहा अमीअ जिमइ, विरुहणियां विस देय। —मा कां. प्र.

विरूअउ, विरूउ विरूग्रौ-वि. [सं, विरूपक] (स्त्री विरूई) १ बुरा, खराब, भद्दा।

उ०—१ आज इस्या नु का लवइ, विरूआं विरूआ वाक्य ? हुसहुणी, वायस भणी, जाणि म जावा ताकि ! —मां. का. प्र

उ०—२ लोक सह्वै लापां लवइ, चित्त न राखि ठाहि। फागुण ना गुण स्या कहु ? विरूआ वसुधा माहि। —मा कां प्र

उ०—३ जउ अं विरूउ आचरइ, तउपण ब्रह्म पवित्र। परमेस्वर अं पूजीइ, अं निकळंक चरित्र। —मा कां प्र.

उ०—४ नवि मानिउ तुम्हि हु एह वात मनि हुई विरूई। अनु मुझ घरि आविया पदु पुज इह वात गरूई। —सालिभद्र सूरि

२ बुरा, अहित।

उ०—जा देव दुरयोधन बाहु वाही, नहीत तइ लेमिइं पारथ साही। किमई विरूअउं करिसिइ न पारथ, ए उचि पूगी हिव हुइ क्रतारथ। —सालिसूरि

३ बद शक्ल, कुरूप।
४ बद जबान।

रू. भे.—विरुग्रो, विरुउ, विरुयउ, विरुयौ।

विरूउ—देखो 'विरूग्रौ' (रू. भे)

उ०—जउ अं विरूउ आचरइ, तउ पण ब्रह्म पवित्र, परमेस्वर अं पूजीइ, अं नीकळंक चरित्र। —मा. का. प्र.

विरूठक-स. पु. [स] १ इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा।
२ एक लोकपाल।

विरूड—देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—भिडियो रुघनाथ भूपाळ समोभ्रम, धार पहार विरूड घई। पहला वरियाम इता पडिया, ता पाछै गोइददास पई।—गु. रू. ब.

बिरुणी-वि —वीरो का, वीर-रस से सम्बन्धित ।

उ०—ओवा रणां बारणा 'बिरुणां नाद सांभळतो, जटी-तू भजोणां नाद साभळतो जगेब । बाजता बिरोणां नाद बाजियो राणां-स बावो, गुणां नाद भप्राजनो गाजियो गगेव । —हुकमीचंद खिड़ियो

बिरुप—देखो वरूथ' (रू भे.)

बिरूथणी, बिरूथनी, बिरूथिनी —१ वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी ।

२ देखो 'वरूथणी' (रू. भे) (ह नां. मा.)

बिरूथौ —१ देखो 'वरूथौ' (रू भे)

उ०—भूके भूल बारणां थरकक गजा पीठ भंडा, 'केहरी' हुबक्कं ऊठे ऊबक्कं कोधार । सामधमी केम चूकं जेण भांटे चूकं सूरो, 'जगासी' न हकं भूरी बिरूथो जोधार । —किरपाराम कवियो

२ देखो 'वरूथ' (भल्पा., रू. भे)

बिरूद —१ देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—सकट माहै समरना, दादोजी करे दुख दूर रे लाल । बेडी राखी बूडती, परसिद्ध ए बिरूद पडूर रे लाल । —ध. व. ग्रं.

बिरूध -१ देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—दूद बिरूधां मंदचळ, रोहा लग्गा राहू । यां जाळपर भावियो भासुर भालमसाहू । —रा. रू.

विरूप-वि. [स] १ बदशक्ल, बदसूरत, कुरूप, भद्दा ।

उ०—१ तेहने रमणी चार सरूप जो, लखमी तो लाखे गाने गेह मारे लो । कितलं दिवसे थयो विरूप जो, कवडी नो वित्त मिलै नहीं जेहमा रे लो । —वि कु

उ०—२ सोना को नाम छै रुक्मइयो निराउध कीयो । भावध काटि नाख्या । पकड्यो पकडि केस उतारया । तब विरूप दीसं लागो । भापणो जीव खिज्या थका जु रुक्मइया को जीव छोडयो मु रुक्मणीजी को भतकरण जाणि कै । —वेलि टी.

२ जिसके भनेक रूप हो, बहुरूपी ।

३ भप्राकृतिक, भद्भुत ।

४ कान्ति, भाभा, शोभा, भादि से रहित ।

५ जिसका रूप बदल गया हो, बदले हुए रूप का ।

६ दूसरे या भिन्न प्रकार का ।

७ भयंकर, भयावह, डरावना ।

स पु.—१ श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया एक भसुर ।

२ क्रोध का मानवी रूप, जिसमे उसने इक्ष्वाकु राजा से तत्त्वज्ञान पर सवाद किया था ।

३ श्रीकृष्ण का एक महारथी पुत्र ।

४ शिव का एक नामान्तर ।

५ भबरीश राजा का एक पुत्र जो पृषदश्व राजा का पिता था ।

६ बिगड़ी हुई या बदली हुई सूरत ।

रू. भे.—बीरूप ।

विरूपभांगिरस-सं. पु. [स विरूप+भांगिरस] ऋग्वेद में वर्णित एक वैदिक सूक्तद्रष्टा, जो भंगिराकुलोत्पन्न एक मन्त्रकार था ।

वि. वि —यह भंगिरस् ऋषि के भाठ पुत्रो में से एक था । इसके सात भाइयो के नाम—बृहस्पति, उतथ्य, पयस्य, शान्ति, घोर, संवर्त्त एव सुधन्वन् थे ।

विरूपक-सं. पु.—१ पृथ्वी का शासक एक दानव । (प्राचीन)

२ भालबेय राक्षसो का भधिपति, जो नीलकन्या विकचा का पति व दंष्ट्राकराल भादि का पिता था ।

विरूपचक्ष, विरूपचक्षु, विरूपचख-सं. पु. [स. विरूप+चक्षुस्] शिवजी का नाम ।

विरूपता-स. स्त्री.—१ विरूप होने की भवस्था ।

२ भयकरता, भयावहता ।

विरूपपरिणाम-स. पु.—एक रूपता से भनेक रूपता की भोर परिवर्तन । (दर्शन)

विरूपरूप-वि. [स विरूप+रूप] भद्दा, बेडौल, बदसूरत ।

उ०—उरध केस विरूपरूप, सुज निसा समांण । भ्रूह बंका विकराळ है, द्रढ दंत केवाण । —गज-उद्धार

विरूपा-वि स्त्री. [स] बदसूरत, बेडौल, भद्दी ।

स. स्त्री.—यम की एक पत्नी ।

विरूपाक्ष, विरूपाख, विरूपाखि-वि. [स. विरूप+भक्ष] बेढंगे या डरावने नेत्र वाला ।

म. पु —१ शिव, शकर । (भ्र. मा.)

२ शिव का एक गण ।

३ एकादश रुद्रो मे से एक ।

४ चौसठ भैरवो मे से एक भैरव का नाम ।

५ राम-रावण युद्ध मे रावण का सेनापति जिसका वध सुग्रीव ने किया था ।

६ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

७ महिषासुर का भमात्य, एक राक्षस ।

८ महाभारत युद्ध मे घटोत्कच का सारथि जो कर्ण-घटोत्कच युद्ध मे कर्ण द्वारा मारा गया था ।

९ नरकासुर का सेनापति एक राक्षस, जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था ।

१० एक दिग्गज । (पुराण)

११ इंद्र-वृत्र युद्ध मे वृत्र पक्षीय एक दानव जो कश्यप एव दनु के चौंतीस पुत्रो मे से एक था ।

१२ एक राक्षस जो हनुमान द्वारा प्रमदावन उजाड़ते समय मारा गया था।

१३ एक नाग।

स. स्त्री.—१४ एक देवी का नाम।

रू. भे.—विरुपाक्ष, विरुपाख, विरुपाखि।

विरूपाक्षपूजन-स. पु. [स. विरूपाक्ष+पूजन] पौष शुक्ला १४ को किया जाने वाला विरूपाक्ष देवी का पूजन।

वि. वि.—उक्त पूजन के बाद उपकरण सहित महोक्ष का दान किया जाता है। इस प्रकार वर्षभर प्रत्येक शुक्ल, १४ को पूजन किया जाता है। इसके करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है और राक्षसादि का भय नहीं रहता है।

विरूपिक, विरूपी-वि. (स्त्री. विरूपिका) बदसूरत, बदशक्ल का।

स. पु—कुरूप व्यक्ति।

विरूहण, विरूहणि, विरूहणी—देखो 'विरहणी' (रू. भे)

उ०—१ माठी थाइ मालती, कमल तणा कुल नास। विरूहणियां दुख दाखविइ, मरि तूं मारगमास। —मा का. प्र

उ०—२ चराहर मज्झइ कारग्यू, विरूहणिया मुखि जेह। माधव मनि आलोच करि, करवी अधिकी तेह। —मा. का. प्र.

विरेक, विरेचक, विरेचण, विरेचन-स. पु [स विरेक, विरेचक, व विरेचन] दस्त लाने वाला पदार्थ या औषधि, जुलाब।

विरेफ-सं पु [सं.] १ जल की धारा, जलस्रोत, नदी।

२ 'र' वर्ण।

• **विरोगी**-वि.—रुग्ण, बीमार।

उ०—विरह विरोगिण हुय रही, रोग न जाणै कोय। जनहरिया हरि कारणै, झुरि झुरि पजर होय। —अनुभववाणी

(स्त्री. विरोगण, विरोगणी, विरोगिण, विरोगनी)

विरोचण, विरोचन-स पु [स विरोचन] १ सूरज, सूर्य।

(क. कु. बो., डि. को, ना. मा, ना डि. को.)

२ चन्द्रमा, चांद।

उ० सूर घोर सार्खन नीर तें सोहै कायर नर कर्नै साध कू विमोहै। श्रीमहाराज को रूप असो निजर आयो, जाणै रोहिणी को संग विरोचन पायो। —रा रू.

३ आग, अग्नि। (अ. मा., ह ना मा.)

४ अरक, आक, मदार।

५ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जो महाभारत युद्ध मे भीम के द्वारा मारा गया था।

६ हिरण्यकश्यप के पुत्र भक्त प्रह्लाद का पुत्र व अर्वाकतलम् नामक पाचवे पाताल लोक के अधिपति बलि का पिता।

वि. वि.—पृथ्वीरूपी गौ को दुहते समय यह बछड़ा बना था। यह ब्रह्मा के पास देवराज इन्द्र के साथ असुरों की ओर से ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने हेतु गया था। यह 'तारकामय युद्ध" में असुरों की सेना का सेनापति था एव इसी युद्ध मे मारा गया था। इसके विशालाक्षी एव देवी नामक दो पत्निया थी। यह यशोधरा का पिता व विरोचना का भाई था। इस के कुंभ, निकुंभ, आयुष्मत, शिबि एवं वाष्कलि नामक पाच भाई थे।

रू. भे.—बिरोचन, वीरोचन, बैरोचल, वीरोचद, वीरोचन।

विरोचनसुत-स पु [स. विरोचन+सुत] १ प्रह्लाद पुत्र विरोचन का पुत्र राजा बलि।

२ सूर्य पुत्र राजा कर्ण।

रू. भे.—वीरोचदसुत, वीरोचनसुत।

विरोचना-स. स्त्री—१ भक्त प्रह्लाद की कन्या और विरोचन दैत्य की बहन, जो त्वष्टृ को ब्याही गई थी जिससे इसे विरज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

२ स्कद की एक अनुचरी का नामान्तर।

विरोटियो—देखो 'वीरोटियो' (रू. भे.)

(स्त्री. विरोटण, विरोटणी)

विरोणी, विरोबो-क्रि. स.—पिरोना।

उ०—लक्ष्मीवतनइ ग्रहि एकि स्त्री अच्छद, हार अरद्धहार पिरोती, एकि सूंडे मूंडे विरोती, देखीइ आमलक प्रमाण मोती बिसाल, सुवरणमय थाल, तेहना अपार झमाल, रूपानी कचोली, देखीइ वहीमाहि झबोली......। —व स

विरोद, विरोध-सं पु. [स. विरोध] १ बेमेल होने की अवस्था, बेमेलपन।

उ०—साहमी सू मतोव करीजइ, वयर विरोध निवार जी। सगपण नै जे साहमी केरउ, चतुर सुणी सुविचार जी। —स. कु.

२ शत्रुता दुश्मनी, वैर।

उ०-१ साका विगर नाम न रहै सु तक साको कीजै। तरै मूळराज, रतनसी नै दूदै साकै री निसचै करी, नै पातसाह सू विरोध वधावण री करै। पिण वीकमसी करण न दै। —नैणसी

उ०—२ बळोवळी बीरहक नौपना नगारा वागी, सेना पीठ लागी जोम धारिया अक्रोध। उवड़ण आममाण भुजाटा मेच री अण्या, वेण्यो कस वस मार्थ तडिता विरोध। —बादरदांन दधवाडियो

उ०—३ आगला जाळधर महातोधार मारिला रा वैर कढ़िया काढा। भसमासुर रा विरोध माहै इन्द्रादिक देवता वाढा। —मा. वचनिका

३ लड़ाई, झगड़ा, युद्ध।

उ०—१ आदर विरोध अवरग सूं, विरस बोध सुर अप्पियौ।

ऊथरां मड़ां 'मजमाल' रां, असुरां डर ऊथप्पियौ । —रा. रू.

उ०—२ य कमधज धरै घू अंबर, ज्यूं गंगा मेळं जोगेसर। आदर जोध बिरोध असका, बट रतन्न ज्यां सुर बका। —रा. रू.

४ वह प्रयत्न जो किसी कार्य आदि को रोकने हेतु किया जाता है।

उ०—बरसाळं रो मोको, ऊंट री असवारी, सा'बनै समैरी भेंट दाय आयगी । ईं रै सागै चुनाव रै बिरोध हाळी दरखास्त ऊकी म्हैं अगरवाळा रै कैंएां सूं फाड दी ऊकै रो ही जिकर करयो अर मनै दोसी साबत कर दियो। —दमदोम

५ अनबनी, वैमनस्यता।

६ बाधा, रुकावट।

७ भिन्न-भिन्न तथ्यों मे पाया जाने वाला तत्व जो स्वभाविक रूप से एक दूसरे के विपरीत हो। ज्यूं-दूध अर नींबू

८ विपरीत स्थिति।

९ नियन्त्रण, दमन।

१० विपरीतता, प्रतिकूलता।

११ मुकाबला, सामना।

१२ एक अर्थालंकार, जिसमे, जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य मे से किसी के साथ विरोध पाया जाता हो।

१३ प्रनान्तक का पिता व वात नामक राक्षस का पुत्र।

रू. भे.—बरोध, बरोध, बिरोध।

बिरोधक-वि.—विरोध करने वाला, विरोधी।

उ०—है नह 'पाबू' हाथ ताव अबध 'जींदै' तणी। वेध बिरोधक वात कर, कोय विघन करावसी। —पा. प्र.

बिरोधणौ, बिरोधबौ-क्रि स. [सं. विरोधनम्] १ बेमेल करना, असंगत करना।

२ शत्रुता करना, दुश्मनी करना, वैर करना।

३ लड़ाई करना, झगड़ा करना, युद्ध करना।

४ किसी कार्य आदि को रोकने का प्रयत्न करना।

५ अनबनी करना, वैमनस्य करना।

६ बाधा डालना, रुकावट डालना।

७ नियन्त्रण करना, दमन करना।

८ मुकाबला करना, सामना करना।

उ०—माडव खुरम अडप्पियौ, हालाविया हमल्ल। साहू बिरोधण कळि मथण इळ करिवा ऊथल्ल। —गु. रू. बं

९ खण्डन करना।

बिरोधणहार, हारौ (हारी), बिरोधणियौ—वि०।

बिरोधियोड़ो, बिरोधियोड़ौ, बिरोध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिरोधीजणौ, बिरोधीजबौ—कर्म वा०।

बिरोधणौ, बिरोधबौ—रू० भे०।

बिरोधाचरण-स. पु. [सं. विरुद्ध+आचरण] १ हित के प्रतिकूल आचरण।

२ शत्रुता का व्यवहार।

३ सामान्य आचरण के विरुद्ध आचरण।

बिरोधाभास—देखो 'बिरोध' (१२)

बिरोधिता-स. स्त्री —१ शत्रुता, दुश्मनी, विरोध, वैर।

२ नक्षत्रों की प्रतिकूल दृष्टि। (फलित ज्योतिष)

बिरोधियोड़ो-भू. का. कृ.—१ बेमेल किया हुआ, असंगत किया हुआ. २ शत्रुता किया हुआ, दुश्मनी किया हुआ, वैर किया हुआ. ३ लड़ाई किया हुआ, झगड़ा किया हुआ, युद्ध किया हुआ. ४ किसी कार्य आदि को रोकने का प्रयत्न किया हुआ. ५ अनबनी किया हुआ, वैमनस्य किया हुआ. ६ बाधा डाला हुआ, रुकावट डाला हुआ. ७ नियन्त्रण किया हुआ, दमन किया हुआ. ८ मुकाबला किया हुआ, सामना किया हुआ. ९ खण्डन किया हुआ।

(स्त्री बिरोधियोड़ी)

बिरोधी-वि. [सं विरोधिन्] १ विरोध करने वाले पक्ष का, विपक्षी, प्रतिद्वन्द्वी।

उ०—माहोमांहि बिरोधियां, सोला ऊपरि सूर। भवसिद्धि भीखारी थया, भूय तलि हारी भूर। —मा. कां. प्र.

२ सामना करने वाला, मुकाबला करने वाला।

३ बाधा डालने वाला, बाधक।

४ शत्रु, दुश्मन, वैरी। (अ. मा., ह. नां. मा.)

५ दमन करने वाला, नियंत्रक।

६ युद्ध करने वाला, झगड़ा करने वाला।

७ खिलाफ, प्रतिकूल।

उ०—क्रसणजी का जुदा जुदा रूप देखण लागा। कामिनी कहइ काम आयो। सत्रु कहण लागा काळ आयो। और जिकेइ बिरोधी न था त्याह स्रीनारायण को सरूप जांण्यौ। —वेलि टी.

स. पु —साठ सवत्सरो मे से २३ वां और विस्णुवीसी में से तीसरे सवत्सर का नाम।

रू. भे.—बिरोधी।

बिरोधोपमा-स. स्त्री. [स] उपमा अलंकार का एक भेद विशेष, जिसमे किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थों से दी जाती हो।

बिरोळ-सं. पु—१ भ्रम, भ्रान्ति।

२ नाश, समाप्ति।

३ विघ्न, बाधा।

४ अव्यवस्था, गड़बड़ी।

५ युद्ध, झगडा ।

उ०—ऊगां सूर समो ऊदावत, बढै बमू खळ बोल बिरोळ । चलुअल अरी तणौं चीतोडा, चद्रप्रहास रहै नत चोळ ।

—पृथ्वीराज राठौड

६ मथने की क्रिया, मन्थन ।

उ०—दोळा दळ दिल्ली वाळा, पचरूप करि प्रब्बत-माळा । सामंद बिरोळ सकज्जं, घमचक्क लिया कमधज्जं । —गु रू. व

वि.—नाश करने वाला, ध्वस करने वाला ।

उ०—हाले आप सभावा उडणो प्रथीनाथ हीदू, बाज गीधू अरावमे छ खडा बिरोळ । मदा लागी खीजियो खूमाण खगा खळा माथै, छदा लागौ रीभियौ पुरद्र वाळौ छोळ ।

—भीमसिंह सीसोदियो रो गीत

रू. भे.—वरोळ ।

बिरोळण-वि.—१ तहस-नहस करने वाला ।

२ ग्रस्त-व्यस्त करने वाला ।

३ मारने वाला, संहार करने वाला ।

४ मथने वाला, विलोडित करने वाला ।

बिरोळणौ, बिरोळबौ-क्रि. स [स विलोडन] १ तहस-नहस करना, बरबाद करना, ध्वस करना ।

उ०—सज दळ सबळ सीस पतसाहा, दिली विरोळण 'करण' दवौ । पोढाप तरवार पाकडे, हीमत करे जवान हुवौ ।

—वीर दुरगादास राठौड रो गीत

२ ग्रस्त-व्यस्त करना, अव्यवस्थित करना ।

३ सहार करना, नाश करना, मारना ।

उ०—१ विभाडे गौळ फिरगाण रा प्रहरटा, सेंधवा विरोळण जोम गाढे । स्रोण मे खाग झकबोळ नवसाहसो, चोळ वरकाव रग दधा चाढे । —सिवनाथसिंह कूपावत रो गीत

उ०—२ आठ से खळा नै हेक दाबडे विरोळ्या आचा दरोळा देयता दैता मथायो खीरोध । अचायो दिखायो तोर सारंगा नगेस आयो, सिखायो पिनाकी वीरभद्र सो विरोध ।

—बादरदान दधवाडियो

उ०—३ पाच सोबायता गिळै 'ऊमो' सुपह, विरोळै घोकळै करे बाहा । विडग आदेसियो दळै बहलायता, सार आदेसियो पातसाहा । —हरनाथसिंह करमसोत रो गीत

उ०—४ घडा सिर जोम, तार्जं घडा धमाधम, कागुरा तरफ बाजै कुहाडा । किलौ गिरधरण ओळे रयण बध कडा, विरोळै चोवडा फिरंग वाळा । —कविराजा बाकीदास

४ मथन करना, मथना, विलोडित करना ।

उ०—१ रिण रोहिड दधि मथाण, बिरोळै लीधा रतन लाल । रत रढ सुपाण विमाण, विडारै हूरा कीधा हाल । —मा. वचनिका

उ०—२ समहर गजबोळ रोळिअै सावळ बैंसर बैंसर तोलतौ बळ । दिली सहायत 'अचळ' दूसरौ, 'दूद' बिरोळै दिखण दळ ।

—दूदा नगराजोत रो गीत

५ उपभोग करना ।

६ बिखेरना, छितराना ।

७ समाप्त करना, मिटाना ।

उ०—तउ बीस हथि बिरोळि, तउ वीस हथि बिरोळियइ । आवठि मागइ तू तणइ लियउ सु काइ हिरोळि । —अ वचनिका

८ गुजरना, पार करना ।

उ०—करहा, चरि चरि म चरि चरि, चरि चरि म चरि म भूर । जै वन कालिह बिरोळियउ, तै वन मेल्है दूर । —ढो. मा.

९ पराजित करना, हराना ।

उ०—जसराव जसौ पुत्र साम भले हय थाट बिरोळण भील हलै । कळ चाळ रोमाळ बुरा कडचे, सग ताळ वेताळ लया अडचे ।

—पा. प्र.

१० —रस लेना ।

उ०—भमरि मालति जस विरोलियइ, तिम न केतकि केलि धघोलियइ । अगाह राजि न डूगर डोलियइ, जइह कालु करी कुल बोलियइ । —मालिमूर

बिरोळणहार हारौ (हारी), बिरोळणियौ - वि० ।

बिरोळिओडो बिरोळियोडौ, बिरोळचोडौ—भू० का० कृ० ।

बिरोळीजणौ, बिरोळीजबौ —कर्म वा० ।

बरोळणौ, बरोळबौ बिरोळणौ, बिरोळबौ, बिरोढणौ, बिरोळबौ, वरोळणौ, वरोळबौ, वीरोळणौ, वीरोळबौ रू० भे० ।

बिरोळियोडौ-भू का कृ —तहस-नहस किया हुआ, बरबाद किया हुआ ध्वस किया हुआ २ ग्रस्त-व्यस्त किया हुआ, अव्यवस्थित किया हुआ ३ सहार किया हुआ, नाश किया हुआ, मारा हुआ ४ मथन किया हुआ मथा हुआ, विलोडित किया हुआ ५ उपभोग किया हुआ ६ बिखेरा हुआ, छितराया हुआ. ७ समाप्त किया हुआ, मिटाया हुआ. ८ गुजरा हुआ, पार किया हुआ. ९ पराजित किया हुआ, हराया हुआ. १० रस लिया हुआ.

(स्त्री बिरोळियोडी)

बिरोहण—स पु.—१ एक नाग विशेष जो तक्षक कुल मे उत्पन्न हुआ था ।

२ वह सन्तान जिसकी माता का वर्ण पिता की अपेक्षा उच्च हो ।

बिलद-स पु.—१ बालिश्त ।

उ०—सुद्दया सांकळी रूपै रा चमकनै रह्या छै। सात-सात बिलंदां रीं लांबी खोळी मेरण कपड़ री सूं बाहर काढजे छै। बादळ मांह बीज नीसरी ग्राकास री, कना तीज रै तमासै माथ पातळी कामणी पोसाख कर नीसरी, इण भांत री बंदूका मोटयार तिरता-तिरता लेय उण थड़नांवा ग्राया छै। —रा. मा. सं.

२ देखो 'बुलद' (रू. भे)

उ०—१ विराण मीर ग्रीठा विलब, नीसांण फील दीठा नरिंद। घरहड़ै क्रोध परचंड धूप, भुज डंड थड़ै बहुमड भूप। —वि. स.

उ०—२ वडवडै भी वडवडै, वड पुरख बिलंदै, जांण पिछाण जाहरा, दिल ग्रदर दर्द। सीधा ग्रागम च्यार वेद, कतेब कहर्द, पुतलिया नट हदिया, क्या ग्रादम गर्द। —केसोदास गाडण

रू. भे.—बिलद, बुलद।

बिलंब-स. पु. [स. बिलम्ब] १ ग्रावश्यक, उचित या सामान्य समय से ग्रधिक समय लगने की स्थिति।

उ०—रिमि रूप रमाया खळ सहि खाया, गेम गमाया गुण गाया। धिणीयाणी धाया बिलंब न लाया, ग्राराधा ना सुणि ग्राया। —पी. ग्र.

२ ग्रावश्यक उचित या सामान्य समय से ग्रधिक लगने वाला समय, देर, ग्रति काल।

उ०—धरिये भोग बिलब न करियैं, मेरी मांन पियारी। जीमैं म्हारो प्यारो गिरधर, साधा नैं बेग बुला री। —मीरा

३ ग्रालस्य, दीर्घसूत्रता।

रू. भे.—बिलब, बिलम, बिलभ, बिलम।

बिलबण, बिलंबन-स. स्त्री. [स. बिलम्बन] १ देर करने की क्रिया, विलब करने की क्रिया।

२ लटकने की क्रिया।

३ ग्राश्रय लेने की क्रिया, ग्राश्रित होने की क्रिया।

बिलंबणो, बिलंबबो-क्रि. स. [स. विलम्बनम्] १ देर करना, विलम्ब करना।

उ०—गढ थी माउ सेना लगै जी, करयो हारा डोर। बार घणी बिलबयो जो, जतन करेयो जोर। —प. च. चौ.

२ ग्रालिगन करना।

उ०—सावण ग्रायउ साहिबा, पगइ बिलंबी गार। ग्रच्छ बिलबी वेलडया,, नरा बिलबी नार। —ढो. मा.

२ स्पर्श करना, छूना।

उ०—१ पवन जु चाल्यो छै। सु नदि नदि कै बिखै तिरतो ग्रावै छै। कूल छै त्या कै बिखै बिलंबतो ग्रावै छै। वेल्या सौं लपटातो ग्रावै छै। दक्षण हुंना जु उत्तर दिसा नैं चाल्यो छै। —वेलि टी.

उ०—२ हरीया ग्रैसा हरि भया, तैसा भया न कोय। बाकै पाय बिलंबिये, पारि उतारै सोय। —ग्रनुभववांणी

३ पकड़ना, ग्रहण करना।

उ०—१ गाडर पूछ बिलंब कर, कोइ पार लंघावै, रंक बलंदा मार कर, कोइ मल कहावै। वेतर भुन ग्राराध कर,कोइ देव मनावै, डाकण का मत्र सीख कर, कोइ साध कहावै। —केसोदास गाडण

उ०—२ केईक पांना फूलडा, केईक बिलव्या डाल। हरीया मूल बिलंबिया, फल पाया ग्रसराल। —ग्रनुभववांणी

क्रि. ग्र—१ देर होना, विलम्ब होना।

२ फसना, धसना।

उ०—माया को कादो बिन्यो, ग्रंध बिलंब्या ग्राय। हरीया नर ग्राघा धसै, ज्युं ज्यु कळता जाय। —ग्रनुभववाणी

३ ग्राश्रित होना, सहारा लेना।

उ०—सज्जण, गुणं समुद्द तु, तर तर थक्की तेण। ग्रवगुण एक न साभरइ, रहू बिलंबी जेण। —ढो. मा.

४ मग्न होना, लीन होना।

५ रत्त होना, ग्रासक्त होना।

उ०—दादू खाटा मीठा खाइ कर, स्वाद चित्त दीया। इनमें जीव बिलबिया, हरि नाम न लीया। —दादूबांणी

६ लगना, लिपटना।

उ०—सावण ग्रायउ साहिबा, पगइ बिळंबी गार। ग्रच्छ बिलंबी वेलड्या नरा बिलबी नार। —ढो. मा.

७ उलझना, फसना।

८ सहारा लेना, लटकना।

९ रुकना, ग्रवरुद्ध होना।

१०—चिपकना।

उ०—१ सावण ग्रायउ साहिबा, पगइ बिलबी गार। ग्रच्छ बिलबी बेलड्या, नरा बिलंबी नार। —ढो. मा.

उ०—२ पावस मास प्रगट्टियउ, पगइ बिलंबइ गारि। धण की ग्राही बीनती, पावस पथ निवारि। —ढो. मा.

११ हर्षित होना, खुश होना।

१२ भ्रमित होना, भूलना।

उ०—हरीया भिरघ बिलंबियो, हरया देख वन घास। जीवण का सासा पडया, इण ग्राजूणै वास। —ग्रनुभववांणी

१३ मानसिक स्थिति का किसी ग्रोर प्रवृत्त होना, लगना।

उ०—साई सौं सहजैं रमूं रे, ग्रौर नहीं ग्रान देव। तहां मन बिल-बिया, जहा ग्रलख ग्रभेव रे। —दादूबांणी

१४ देखो 'बिलूवणौ, बिलूवबौ' (रू. भे.)

बिलवणहार, हारौ (हारी), बिलवणियौ—वि० ।

बिलंबियोड़ौ, बिलबियोड़ौ, बिलब्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिलंबीजणौ बिलंबीजबौ—कर्म, भाव वा० ।

बिलवणौ, बिलवबौ, बिलमणौ, बिलमबौ—रू० भे० ।

बिलंबिका-सं. पु.—एक प्रकार का अजीर्ण रोग । (अमरत)

बिलंबित-वि. [स. विलम्बित] १ लटका हुआ, झूलता हुआ ।

२ जिसमे देर हुई हो ।

३ देर करने वाला ।

४ सुस्त या धीरे चलने वाला ।

बिलबियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ देर किया हुआ, विलम्ब किया हुआ. २ आलिंगन किया हुआ. ३ स्पर्श किया हुआ, छूआ हुआ. ४ पकड़ा हुआ, ग्रहण किया हुआ. ५ देर हुवा हुआ, विलम्ब हुवा हुआ. ६ आश्रित हुवा हुआ, सहारा लिया हुआ. ७ मग्न हुवा हुआ, लीन हुवा हुआ. ८ लगा हुआ, लिपटा हुआ. ९ उलझा हुआ, फंसा हुआ. १० सहारा लिया हुआ, लटका हुआ. ११ रुका अवरुद्ध हुवा हुआ. १२ चिपका हुआ. १३ रत्त हुवा हुआ, आसक्त हुवा हुआ. १४ हर्षित हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ १५ भ्रमित हुवा हुआ. १६ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत्त हुवा हुआ, लगा हुआ ।

१७ देखो बिलूबियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलबियोड़ी)

बिलभ—देखो 'बिलंब' (रू. भे.)

उ०—वीरभाण विचारइ रे, मन वैर सभारइ रे, इण सोहाग उतारघौ मुझ माता तणौ रे, जो परही दीज्यै रे, सहिजइ छूटीज्यै रे, कीज्यै न बिलंभ इण बातै घणौ रे । —प. च. चौ

बिळ, बिल—१ देखो 'बिल' (रू. भे.)

२ देखो 'बळ' (रू. भे.)

बिलउ—देखो 'विलय' (रू. भे.)

उ०—किसू पहूतउ द्वापरि प्रलउ, ईह लगइ कइ अम्ह घरि बिलउ । अरजुन बोलइ रे अकुलीन, अरजुन झूझिसि मइ सुं हीन ।

—सालिभद्र सूरि

बिलकणौ, बिलकबौ—देखो 'बिलखणौ, बिलखबौ' (रू. भे.)

उ०—बहन डोलै बिलकती, कर कर छूटा केस । भसम लगाऊ अंग पर, ऊपर बरसै मेस । —स्री हरिरामजी महाराज

बिलकणहार, हारौ (हारी), बिलकणियौ—वि० ।

बिलकियोड़ौ, बिलकियोड़ौ, बिलक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिलकीजणौ, बिलकीजबौ—भाव वा० ।

बिलकल—देखो 'वल्कल' (रू. भे.)

बिळकळणौ, बिळकळबौ—देखो 'बिळकुळणौ, बिळकुळबौ' (रू. भे.)

उ०—अकळर धरं आया अनंत, बिळै मात पिति बिळकळं । कूबड़ी हुति कीधी क्रिपा, माहव भगता सा मिळं । —पी. ग्रं.

बिळकळणहार, हारौ (हारी), बिळकळणियौ—वि० ।

बिळकळिग्रोड़ौ, बिळकळियोड़ौ, बिळकळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिळकळीजणौ,बिळकळीजबौ—भाव वा० ।

बिळकळियोड़ौ—देखो 'बिळकुळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिळकळियोड़ी)

बिलकियोड़ौ—देखो 'बिलखियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री· बिलकियोड़ी)

बिलकुल—देखो 'बिलकुल' (रू भे.)

बिळकुळणौ, बिळकुळबौ-क्रि. अ —१ व्याकुल होना, विह्वल होना ।

उ०—हय हय सिरजणहार, ढोलौ वीछोहौ बिळकुळं । —ढो. मा.

२ प्रसन्न होना, हर्षित होना ।

उ०—१ बिळकुळं राजरमणी वदन, निरखं रूप नरचंद रौ । जाणं विकास प्रामं जळज, देखि प्रकास दुंडिद रौ । —रा. रू.

उ०—२ धरापति आज लखधीर रज घणी, घणी मुइ जास जस-वास रिधि घणी । कवी निनि देखि मन माहि बिळकुळं, भली विधि तेज रवि जेम भळहळं । —ल. पि.

उ०—३ खळा रा सीस महारुद्र में पेस कीजै । दुस्ट मरं सरगा-पुर रौ दुख टळं । इणरौ मामळ, बिळकुळतं वदन पुरंदर बोलियौ-जाणं कर उजळा, अणोलक मोताहळ मा वचन झडं ।

—मा. वचनिका

उ०—४ खळहळा खत चळवळा खापर, वीमहथ भर बिळकुळौ । मह वळा चव रघुनाथ अमलां, मद सुमवद मडळी । —र. ज. प्र.

उ०—५ मन मैं तौ देखिया ने घणी बिळकुळी । बौई सोच की मूरत कीदौ । जवै माथण्या नै कह्यौ, अबै हूं काइ करूं । मनै तौ देखि लीवौ । पवन बी वैरी हुवौ । —पनां

३ आतुर होना, उतावला होना ।

उ०—१ भइ कोस छना मद गै मरियौ श्रौ 'गोगौ' लक्षुसर उत-रियौ । लखणं मत्र नेडोय मभरियौ,कळ चालण 'धीर' बिळकुळियौ ।

—गौ रू.

उ० २ वीरनि निरखा बिळकुळेय, मुख राग मुख भ्रूहां मिळेय । चख लाल कोध मुख कीध चोळ, कळकळं तेज विकसं कपोळ ।

—गु. रू. ब.

उ०—३ बिळकुळं वधाईदार वधि, आणंद उछब अथाह सु ।

आगम्म खबर अभसाह' री, जाय कहे 'जैसाह' सूं। —मू. प्र.

४ प्रफुल्लित होना, फूलना।

उ०—१ हरणमंत अोण हिल्लोळवा, बीरा-तन किरि बिळकुळे। दळ-थंभ विहण दसणाधि सू, ऐम ऊठियौ भुज आंमळे।
—गु. रू. ब.

उ०—२ बिळकुळियो वदन जेम आकारथौ, सग्रहि धनुख पुणच सर सधि। किसन रुकम आउध छेदण कजि, वेलखि अणी मूठि द्रिठि बधि। —वेलि.

५ देदिप्यमान होना, चमकना।

उ०—१ बीरति मुख सूरनि बिळकुळिय, कमधज तेज कमळ कळमळयं। किसन वरण मांझिल कंठलिय, सूरज किरण जाण झळहळियं। —गु. रू. बं.

उ०—२ स्रवण वयण सभळै, नयण बिळकुळै निरंमळ, जोत वदन झळहळै, लाज भुजि झळे स उज्जळ। सूर विरत सल्लळै, ज्वाळ झळहळै फुणधर, कना प्रळै क्रति करण, किरण परजळै दिणकर।
—रा. रू.

६ चुनौती देना, ललकारना।

७ उत्साहित होना, जोश में आना।

उ०—१ भुज आप सपड वसभ लीय, बप वाधंय जोस बिळकुलियं। कथ आपळ रवन दूर कियो, दाखै मुख अदळ गाम दियो।
—गो रू.

उ०—२ जोगावत 'पेमौ' तिण जांमळ, दिल बिळकुळै मिळै जद कदळ। 'वछराजोत' 'अखौ' वरदाई, पाया कळह जाणि रिध पाई।
—रा. रू.

उ०—३ जोधपुरो जुध जोपवा, गढ लेवा 'गजमाह'। विरती कोडी बिळकुळै, रीसाणो रिमराह। —गु रू. ब.

८ चचलता के साथ हिलना-डोलना।

६ निकलना।

उ०—मारवणी मुख-ससि तणइ, कमतूरी महकाइ। पावस पन्नग पीवणउ, बिळकुळियउ तिणि ठाइ। —ढो. मा

बिळकुळणहार हारौ (हारी), बिळकुळणियौ—वि०।

बिळकुळिअोड़ो, बिळकुळियोड़ो, बिळकुळयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिळकुळीजणौ, बिळकुळीजबौ—भाव वा०।

बिळकुळणौ, बिळकुळबौ, बिल्कुळणौ, बिल्कुळबौ—रू० भे०।

बिळकुळियोड़ो–भू. का कृ.—१ व्याकुल हवा हुआ, विह्वल हवा हुआ. २ प्रसन्न हुवा हुआ, हर्षित हवा हुआ. ३ आतुर हवा हुआ, उतावला हुवा हुआ. ४ प्रफुल्लित हुवा हुआ, फूला हुआ. ५ देदिप्यमान हुवा हुआ, चमका हुआ. ६ चुनौती दिया हुआ, ललकारा हुआ. ७ उत्साहित हुवा हुआ, जोश में आया हुआ. ८ चचलता के साथ हिला-डुला हुआ।

(स्त्री. बिळकुळियोडी)

बिलक्खणौ, बिलक्खबौ—देखो 'बिलखणौ, बिलखबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कर मूठ धनख छूट बिसक्ख, लेखा पक्ख सर नक्ख। वध सूर हरक्खं अौर बिलक्ख, चाव परक्ख रवि चक्खं। —रा. रू.

उ०—२ स्वजन वेवाहिय धूरइ भूरइं निगहिय नेह, लेई अचेत ऊपाडिय माडिय आंणीय गेहि। भूतलि भमरभोलिय डोलिय जिम न चइत, बिलवइ कुमरि बिलक्खिय देखिय तै व्रत्तात।
—जयसेखर सूरि

बिलक्खणहार, हारौ (हारी), बिलक्खणियौ—वि०।

बिलक्खिअोड़ो, बिलक्खियोड़ो, बिलक्ख्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलक्खीजणौ, बिलक्खीजबौ—भाव वा०।

बिलक्खियोड़ो—देखो 'बिलखियोडो' (रू. भे)

(स्त्री बिलक्खियोडी)

बिलक्खौ—देखो 'बिलखौ' (रू. भे)

उ०—सालूग पाणी विना, रहइ बिलक्खा जेम। ढाढी साहिब सूं कहइ, मो मन तो विण एम। —ढो. मा.

बिलक्ष–वि. [स.] १ विशेष चिन्हों या लक्षणों रहित, लक्षणहीन।

२ जिसका कोई लक्ष्य न हो, लक्ष्य रहित।

३ विकल, व्याकुल।

४ अद्भुत, अनोखा, अनूठा, असाधारण।

५ लजा से युक्त, लज्जित।

६ आश्चर्ययुक्त चकित, विस्मित।

रू. भे.—बिलखि।

बिलक्षण–वि. [सं.] १ चिन्हों या लक्षणों से रहित, लक्षणहीन।

२ अद्भुत, अनोखा, विचित्र।

उ०—बीर पणी पनी री दिखाण साख कहे छे-यें जिका रा वधावा गावो छो तिका रा सुभाव सु म्हारा पती री सुभाव बिलक्षण छै-किसो कि दमगळ (जुद्ध) विना दुचितो रहे अनै जुद्ध में कमळ बगतर रा जत कडिया ही नही जडे इसा वीरपणा रा सुभाव है।
—वी. स. टी.

३ अशुभ लक्षणों वाला।

४ विशेष लक्षणों वाला।

रू. भे.—बिलच्छण, बिलच्छन, बिलख, बिलखण, बिलखणौ, बिलच्छण, बिलच्छन।

बिलक्षणता–स. स्त्री.— बिलक्षण होने की अवस्था या भाव।

बिलखि—देखो 'बिलक्ष' (रू. भे.)

उ०—गोरी गलि बलगी रही, बेलि चढी जिम व्रक्ष। बिनय करी-नहं बिलपती, बिधि बिधि थई बिलक्षि। —मा. कां. प्र.

बिलख, बिलखरा-वि.—खिन्न, उदास, विकल, व्याकुल।

उ०—नमामी सरवेसा बिलख लयसेखाक्षर नमो, नमो सरबग्यात्मा परम परमात्मा बर नमो। नमो स्रस्टा स्वस्टा अगम उतक्रस्टा मह नमो, नमो स्रेस्टी जेस्टी मुदित परमेस्टी मह नमो। —ऊ. का

रू. भे.—बिलख, बिलखण।

बिलखरणो-वि. [स्त्री. बिलखरणी] १ व्याकुल, बेचैन।

२ रोने वाला।

३ व्यथित, दुःखी।

४ मुरझाने वाला।

५ भयभीत, घबराया हुआ।

रू. भे.—बिलखणो।

बिलखणो, बिलखबो-क्रि. अ.—१ व्याकुल होना, बेचैन होना।

उ०—साळूडो साळूडो गोरी काई बिलखै, मेह बिना धरती तरसै, मेहड़ो हुवण दे। —लो गी.

२ व्यथित होना, दुःखी होना।

उ०—थारा जीव अर म्हारा जीव री मन मिळग्यो, पछै घरवास मे काई खांमी। मानै तो थारी मरजी, नीतर म्हैं थनै आवण तो नी दू। म्हारै हिवड़ा री नागण थारै बिना तड़फै, बिलखै। —फुलवाड़ी

३ अभाव की स्थिति मे प्रत्याशा से ताकना।

४ मुरझाना, कुम्हलाना।

उ०—मेरे साम सुहाग का, छाना न रहै नूर। बिलखै वदन दुहागिनी, हरीया ऊगै सूर। —अनुभववाणी

५ विलाप करना, रोना।

६ भयभीत होना, घबराना।

उ०—बिलखीजै रिणतूर वाजियां, अदग वाजियां हरख मचै। थारा तीरथ चढै, धूजणी, प्यारा तीरथ करण पचै। —कविराजा बाकीदास

बिलखणहार, हारौ (हारी), बिलखणियौ—वि०।

बिलखियोड़ो, बिलखियोड़ो, बिलख्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलखीजणो, बिलखीजबो—भाव वा०।

बिलखणो, बिलखबो, बिलखाणो, बिलखाबो, बिलखाणो, बिलखाबो, बिलखावणो, बिलखावबो—रू० भे०।

बिलखाणो, बिलखाबो—देखो 'बिलखणो, बिलखबो' (रू. भे.)

बिलखाणहार, हारौ (हारी), बिलखाणियो—वि०।

बिलखायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिलखाईजणो, बिलखाईजबो—भाव वा०।

बिलखायोड़ो—देखो 'बिलखियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलखायोडी)

बिलखावणो, बिलखावबो—देखो 'बिलखणो, बिलखबो' (रू. भे.)

उ०—महा माडियो जाग उज्जैण खागां मचै, रुदन बिलखावती रही रोती। हेळवी "भ्रमर" री हीय करती हरख, "जसा" अपछर रही वाट जोती। —नरहरदास बारहठ

बिलखावणहार, हारौ (हारी), बिलखावणियौ—वि०।

बिलखावियोड़ो, बिलखावियोड़ो, बिलखाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलखावीजणो, बिलखावीजबो—भाव वा०।

बिलखावियोड़ो—देखो 'बिलखियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. बिलखावियोडी)

बिलखियोड़ो-भू का कृ—१ व्याकुल हुवा हुआ, बेचैन हुवा हुआ. २ व्यथित हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ. ३ अभाव की स्थिति में प्रत्याशा से ताका हुआ. ४ मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ. ५ विलाप किया हुआ, रोया हुआ. ६ भयभीत हुवा हुआ, घबराया हुआ।

(स्त्री. बिलखियोडी)

बिलखू—देखो 'बिलखो' (रू भे.)

उ०—कोलाहल साभलयउ अपार, कटक माहि वूठउ अगार। कटक माहि सहू दखोऊ हूऊ घोडूं माणस बिलखू थयूं। —का. दे. प्र.

बिलखोड़ो—देखो 'बिलखो' (अल्पा, रू. भे.)

बिलखो बिलख्यो-वि. (स्त्री. बिलखी) १ उदास, खिन्नचित, व्याकुल।

उ०—१ वहिलउ आए वल्लहा, नागर चतुर सुजांण। तुझ विण धण बिलखी फिरइ, गुण बिन लाल कमाण। —ढो. मा.

उ०—२ निरखै अवासा भर निजर, नह देखै दसरथ नृप निजर। निज देखै नह रघव निजर, नर दीठा बिलख्या मह निजर।

—र. रू.

उ०—३ आव हमारै आगणै, 'अह' त्रिभुवन राइ। तुम्ह बिन मैं बिलखी फिरौं, अब रह्यो न जाइ। —ह. पु. वा.

उ०—४ मन जाणी कीकर ई व्हैग्यो। मूडो उतरग्यो अर कठ जाणै बैठग्यो। घरै आया ठाम उतरावता जेठांणी पूछ्यो—बिनणी आज बिलखा किया ? —अमरचूनड़ी

२ दुःखी, व्यथित।

उ०—१ प्रभू मो कांय उपावियो, किम म्रेह करांण। मन ही चित आतुर हुवो, बिलखै ब्रह्माण। —गजउद्धार

उ०—२ मां रै मूंडा सूं बाप रै बेला री बात सुणनै राजी व्है जाती अर वांरै सौत री बात सुणनै अएतौ बिलखौ व्है जाती। इण सूं आगै उण री समझ नीं ही। —फुलवाड़ी

३ मुर्झाया हुआ, कुम्हलाया हुआ।

उ०—१ प्यारी चितियो पीव दिस, वदन बिलखौ देख। अब केसे अंतर परघी, कौन हमारी लेख। —वजउद्धार

उ०—२ काळी तौ कोयल भई, काळा जिसका रंग। हरीया हरि बिन बिरहनी, वदन बिलखे अंग। —अनुभववांणी

४ घबराया हुआ, भयभीत।

५ वीरांन, रिक्त, शून्य।

उ०—अमरांणं में घोर अंधार हा रे म्हारा सोढा राणा, अमरांणं मे ही घोर अधार हो जी ही। बिलखा नै लागे रै मेहल माळिया हो, म्हारा रतन राणा एकर तौ अमरांणं पाछौ आव।—लो. गी.

६ कान्तिहीन, तेज रहित, चमक रहित।

उ०—१ भूखा मांस अहारी भावं, बिलखे रस ऊचारं वांणी। वाको चालण फोज वहइण, ग्रोख वदन गयौ 'अमराणी'। —सुखजी खिड़ियौ

उ०—२ कुदरत ई साव अलूंणी कै बाड़ी लागती। जाव पीळिया रै रोगी ज्यूं बिलखौ लागतौ। ऊगता अर आथमता सूरज री गुलाल उणनै काळस सूं ई सवायो माड़ौ लागती। —फुलवाड़ी

७ निराश, उदास।

उ०—१ ऊमर मन बिलखउ हुयउ, चारण वचन सुणेह। उणि हिज पय पाछउ बळघउ, माल्ह निवत करेह। —ढो. मा.

उ०—२ लोग पूजारीजी नै सागेड़ो जीमायौ। चढ्ढा वेय घर सू बारै काढियो। वो घणो ई कूकियो पण की सुणवाई व्ही नीं। बिलखौ होय टुळक-टुळक बगेची तांई नीठ पुगौ। —फुलवाड़ी

उ०—३ भाई सा तौ रोज कंवं कै अबै उणनै सफाखाना सू छुट्टी मिळ जाएला अर थारै मामोसा उणनै लेयनै आवेला। वो अठी-उठी देखनै बिलखौ पड़ग्यौ अर म्हनै जवाब देवणौ भारी पड़ग्यौ। —अमरचूंनड़ी

रू. भे.—बिलकौ, बिलक्खौ, बिलखौ, बिलख्यौ, विलक्खौ, बिलखूं। अल्पा.,—बिलखोड़ौ।

बिलग-वि.—अलग, पृथक।

रू. भे.—बिलग।

बिलगणौ, बिलगबौ–क्रि. अ.—१ लगना, लिपटना।

उ०—मन बिसहर तन बबही, ऊठि बिलगं पाय। जनहरिया तिह लोक में, जांह जाउ तांह खाय। —अनुभववांणी

२ अलग होना, पृथक होना, जुदा होना।

उ०—हरीया अैसा को मिळै, सहजा रहै समाय। बाहरि बाजा वचन बोह, चित न बिलगं जाय। —अनुभववाणी

३ छूना, स्पर्श होना।

४ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुड़ना।

५ चिपकना, लगना, जुड़ना।

उ०—१ फल तर तैं तूटा पछै बधं न बिलगं जाय। गुर बेमुख नही नीपजै, भावै गोबिंद गाय। —अनुभववांणी

उ०—२ तन ऊतरिया ना चडै, करिहौ कोड़ि बिचार। ज्यूं तरवर फळ ऊतरघौ, फेर न बिलगं डार। —अनुभववांणी

६ लगना, होना।

उ०—बाहर किस सूं भगड़ियं, घर भीड़ बिलगा। —केसोदास गाडण

७ आवेष्टित होना, लिपटना।

उ०—ढोलउ मारू एकठा, करइ कतूहळ केळि। जांणे चदन-रूंख-इइ, बिळगी नागर वेलि। —ढो. मा.

८ कार्यारंभ होना।

९ पकड़ना, ग्रहण करना।

१० किसी अनिष्ट या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध होना या उसके सम्पर्क में आना, लगना।

११ आलिंगन होना, लिपटना।

उ०—१ वेस्या वेस विलूण-समी, बोल्यि मोस-मझारि। नेह विना बिलगइ गलइ, मूरख, ! भव म म हारि। —मा. का. प्र.

उ०—२ पडखतउ हुसि म् नइ स्वामी, मेल्हिसी कवण स्त्री नइं नामी। कत कठि बिलगी तनु बालउ, आपणा कुल कउं अजूयालउ। —सालिसूरि

बिलगणहार, हारौ (हारी), बिलगणियौ—वि०।

बिलगियोड़ो, बिलगियोड़ौ, बिलग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलगीजणौ, बिलगीजबौ—भाव वा०।

बिलगणौ, बिलगबौ बिलग्गणौ, बिलग्गबौ, बिल्लगणौ, बिल्लगबौ, बिलगाणौ, बिलगाबौ, बिलगावणौ, बिलगावबौ, बिलगारणौ, बिलगाबौ, बिल्लगणौ, बिल्लगबौ—रू० भे०।

बिलगाणौ, बिलगाबौ–क्रि. स.—१ लगाना, लिपटाना।

२ अलग करना, पृथक करना, जुदा करना।

३ छूना, स्पर्श करना।

४ किसी अन्य स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुड़ाना।

५ चिपकाना, लगाना, जोड़ना।

६ लगाना, करना।

७ आवेष्टित कराना, घेरना, लिपटाना।

८ कार्यारंभ कराना।

९ पकड़ाना, ग्रहण कराना।

उ०—आंगणियें न करावी घिरी, कन्हैया। आगुळिया बिलगाय रे। हाऊ बेठो छै तिहां, कन्हैया, अलगो तू मति जाय रे।
—जयवाणी

१० देखो 'बिलगणी, बिलगबो' (रू. भे.)

बिलगाणहार, हारो, (हारी), बिलगाणियो—वि०।

बिलगायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिलगाईजणो, बिलगाईजबो—कर्म वा., भाव वा०।

बिलगाणो, बिलगाबो, बिलगावणो, बिलगावबो—रू० भे०।

बिलगायोड़ो—भू का. कृ.—१ लगाया हुआ, लिपटाया हुआ. २ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ, जुदा किया हुआ ३ छुआ हुआ, स्पर्श किया हुआ. ४ किसी अन्य स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुड़ाया हुआ. ५ चिपकाया हुआ, लगाया हुआ, जोड़ा हुआ ६ लगाया हुआ, किया हुआ. ७ आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ, लिपटाया हुआ. ८ कार्यारम्भ किया हुआ. ९ पकडाया हुआ, ग्रहण किया हुआ.

१० देखो 'बिलगियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलगायोडी)

बिलगाव—सं. पु.—१ लगाव, लिपटाव।

२ अलगाव, पृथकता।

३ किसी अन्य स्त्री के साथ जुड़ा हुआ, अनैतिक सम्बन्ध।

४ घेराव।

५ कार्यारम्भ।

६ पकड़ाव पकड।

बिलगावणो, बिलगावबो—१ देखो 'बिलगणी, बिलगबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बिलगाणी, बिलगाबो' (रू. भे.)

बिलगावणहार, हारो (हारी), बिलगावणियो—वि०।

बिलगाविप्रोड़ो, बिलगावियोड़ो, बिलगाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलगावीजणो, बिलगावीजबो—भाव वा. कर्म वा०।

बिलगावियोड़ो—१ देखो 'बिलगियोडो' (रू भे)

२ देखो 'बिलगायोडो' (रू. भे.)

बिलगियोड़ो—भू. का. कृ.—१ लगा हुआ, लिपटा हुआ. २ अलग हुवा हुआ, पृथक हुवा हुआ, जुदा हुवा हुआ ३ छूआ हुआ, स्पर्श हुवा हुआ. ४ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुडा हुआ. ५ चिपका हुआ. लगा हुआ, जुड़ा हुआ. ६ लगा हुआ. हुवा हुआ ७ आवेष्टित हुवा हुआ, लिपटा हुआ. ८ कार्यारम्भ हुवा हुआ. ९ पकड़ा हुआ, ग्रहण किया हुआ. १० किसी अनिष्ट या कष्ट दायक बात का किसी से सम्बन्ध हुवा हुआ. या उसके सम्पर्क में आया हुआ, लगा हुआ.

(स्त्री. बिलगियोडी)

बिलगणो, बिलग्गबो—देखो 'बिलगणी, बिलगबो' (रू. भे.)

उ०—१ जह पयाळ पै जुग्रल, सीस ब्रहमंड बिलग्गं। कळूवाउ डड्डुळ, डिगं नह डोलं जुग्गं।
—गु. रू. बं.

उ०—२ 'गजपती' दिस मेल्हियो, असपती फुरमांण। खुरम बिलग्गो राह हुई, तौ छूटै खुरसाण।
—गु. रू. बं.

उ०—३ 'दूद' मेडतियो राव, आय गुर पाय बिलग्गो। रावळ जैसलमेर, परचता सासो भग्गो।
—बीठ्हौजी

उ०—४ इक कर वयम बिलग्गियं, इक कर लग्गिय लाज। वय कह जोगनिपुर चलहु, लाज कहै भिडराज।
—महाराजा मानसिंहजी

उ०—५ हर हर करतो हरख कर, आळस म कर अयांण। जिण पाणी सूं पिंड रच, पवन बिलग्गो प्राण।
—ह. र.

उ०—६ सुणि सुंदरि, सच्चउ चवां, भाजइ मन ची भ्रंति। मौ मारू मिळिवा तणी, खरी बिलग्गी खंति।
—ढो. मा.

उ०—७ कठ बिलग्गी मारवी, करि कंचूवा दूर। चकवी मनि आणंद हुवउ, किरण पसारया सूर।
—ढो मा

बिलग्गणहार, हारो (हारी), बिलग्गणियो—वि०।

बिलग्गिप्रोड़ो, बिलग्गियोड़ो, बिलग्ग्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलग्गीजणो, बिलग्गीजबो—भाव वा०।

बिलच्छण, बिलच्छन—देखो 'बिलक्षण' (रू भे.)

बिलछणो, बिलछबो—देखो 'बिलसणी, बिलसबो' (रू. भे)

उ०—वार न लायो बिलछतां, म्लेछां मन रत्ता। ईम्बर रूप अलावदीन, जिण आलम जित्ता।
—लूणकरण कवियो

बिलछणहार, हारो (हारी), बिलछणियो—वि०।

बिलछिप्रोड़ो, बिलछियोड़ो, बिलछ्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलछीजणो, बिलछीजबो—भाव वा०।

बिलछियोड़ो—देखो 'बिलसियोडो' (रू भे)

(स्त्री बिलछियोडी)

बिलणो, बिलबो—क्रि. स—आवेष्टित करना, घेरना।

उ०—दल मक्कवै सुरताण, आय चित्रकोट बिलिज्जइ, भेजउ वेगि बिसेट, बात मिलण की कीजइ।
—प च. चौ.

बिलघणो, बिलघबो—देखो 'बिलूंघणी, बिलूंघबो' (रू. भे.)

उ०—मन मध्या मोई इंद्रिया, मो स्वाद बिलघा।
—केसौदास गाडण

बिलधणहार, हारौ (हारी), बिलधणियौ—वि० ।
बिलधिप्रोड़ो, बिलधियोड़ो, बिलध्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिलधीजणौ, बिलधीजबौ—भाव वा० ।

बिलधियोड़ो—देखो 'बिलूधियोड़ो' (रू भे.)
(स्त्री. बिलधियोडी)

बिलपणौ, बिलपबौ—क्रि. अ.—१ उदास होना, खिन्नचित्त होना, बेचैन होना ।
२ व्याकुल होना, दुःखी होना, व्यथित होना ।
उ०—१ धानग मिळवौ दुलभ, सघन बन वनै जितै मह । बिलपत जळ बिन बाळ, भरै सर नळ उफळत वह ।
—जैतदान बारहठ
उ०—२ नगर माहि नर नारि नट, अतिघण अगि उचाट । बिलपइ बभण वाणीया, वली विसेखि भाट । —मा का. प्र
३ विलाप करना, रोना ।
उ०—१ विनिना विधिविधि बिलपती, टोलै टोलै जाय । आगलि थाता अेकनइ, बीजो वहवा धाय । —मा. का प्र.
उ०—२ आव, अमोटा-माहि धरु, ईम तगाइ जिम गम । हूँ बिलपती विरहिणी, स्वामि ! म छडिसि मग । —मा. का. प्र.
उ०—३ इम बिलपती देखि नै, आवै सेठ निलज । सुवचन कहै मनोरमनै, एहवी करै अरज । —वि. कु
बिलपणहार, हारौ (हारी), बिलपणियौ—वि० ।
बिलपिप्रोडो, बिलपियोडो, बिलप्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिलपीजणौ, बिलपीजबौ—भाव वा० ।

बिलपाणौ, बिलपाबौ—क्रि स —१ व्याकुल करना, दुःखी करना, व्यथित करना ।
२ विलाप करने के लिए प्रवृत्त करना, रुलाना ।
बिलपाणहार, हारौ (हारी), बिलपाणियौ—वि० ।
बिलपायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बिलपाईजणौ, बिलपाईजबौ—कर्म वा० ।
बिलपावणौ बिलपावबौ—रू० भे० ।

बिलपायोड़ो—भू का. कृ.—१ व्याकुल किया हुआ, दुःखी किया हुआ, व्यथित किया हुआ २ विलाप करने हेतु प्रवृत्त किया हुआ, रुलाया हुआ ।
(स्त्री. बिलपायोडी)

बिलपावणौ, बिलपावबौ—देखो 'बिलपाणौ, बिलपाबौ' (रू. भे.)
बिलपावणहार, हारौ (हारी), बिलपावणियौ—वि० ।
बिलपाविप्रोड़ो, बिलपावियोड़ो, बिलपाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिलपावीजणौ, बिलपावीजबौ—कर्म वा० ।

बिलपावियोड़ो—देखो 'बिलपायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बिलपावियोड़ी)

बिलपियोड़ो—भू का. कृ.—१ उदास हुवा हुआ, खिन्नचित हुवा हुआ. २ व्याकुल हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ, व्यथित हुवा हुआ. ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ ।
(स्त्री. बिलपियोडी)

बिलब्ध—वि [सं.] १ पाया हुआ, प्राप्त किया हुआ ।
२ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ ।

बिलब्धणौ, बिलब्धबौ—क्रि. स. [सं विलब्धनम्] १ प्राप्त करना, पाना
२ अलग करना, पृथक करना ।
बिलब्धणहार, हारौ (हारी), बिलब्धणियौ—वि० ।
बिलब्धिप्रोड़ो, बिलब्धियोड़ो बिलब्ध्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिलब्धीजणौ, बिलब्धीजबौ—कर्म वा० ।
बिलभणौ, बिलभबौ—रू० भे० ।

बिलब्धियोड़ो—भू. का. कृ.—१ प्राप्त किया हुआ, पाया हुआ ।
२ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ ।
(स्त्री बिलब्धियोडी)

बिलभणौ, बिलभबौ—देखो 'बिलब्धणौ, बिलब्धबौ' (रू भे.)
बिलभणहार, हारौ (हारी), बिलभणियौ—वि० ।
बिलभिप्रोडो, बिलभियोड़ो, बिलभ्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिलभीजणौ, बिलभीजबौ—कर्म वा० ।

बिलभियोड़ो—देखो 'बिलब्धियोडो (रू भे.)
(स्त्री. बिलभियोडी)

बिलम—सं पु.—१ मनबहलाव की क्रियाएं ।
२ देखो बिलब' (रू भे.)
उ०—१ राई वेगई चढि आवौ, बिलम न करौ बार । सोल सइयर रुकमणी सारीखी लेज्यौ साथ । —रुकमणी मगळ
उ०—२ बिलम बिना बिलुबी मेरी, नही अधर नहि धरता । आद र अंत मध्य नही मेरै, नहि उरै परै मेरी सुरता ।
—स्री हरिरामजी महाराज
३ देखो 'बल्लभ' (रू. भे.)
उ०—भवरा घेर र भुवन में, राख्यौ बिना रहू न । वाडी म्हारी रौ बिलम, खूनी कर गयौ खून । —अग्यात
४ देखो 'बिलोम' (रू भे.)
उ० —महण बन दहण 'केसर' गहण मंडियौ, तेण खग वहण

घण सघण तणियो । मह्रा तम बिलमा उडावण मारुवो, वडक्त्री तरण धैं रूप वणियो । —किसोरदान बारहठ

बिलमणी–वि.—१ प्रेमासक्त।

उ०—सुण बाळा, इक रैण पोढती कठ लगाणी, जागी जजका, नैण बिलखतां नीर भरांणी । पूछता, मुळकाय कह्या थं बोल सयांणी, 'छळिया ! पेख्यी तूझ बिलमणी नार बिराणी । —मेघ

२ भोग-विलास मे रत्त ।

३ कार्य मे लग कर भूलने वाला ।

४ मग्न, लीन ।

५ कार्य मे लीन ।

बिलमणी, बिलमबो–क्रि. अ.—१ प्रेमासक्त होना ।

२ भोगविलास मे रत्त होना ।

३ कार्य मे लीन होना ।

४ कार्य मे लग कर भूलना ।

५ मग्न होना, लीन होना ।

६ ठहरना, रुकना ।

७ देखो 'विलूंबणी, विलूंबबो' (रू. भे)

उ०—म्हांरा चगा मारु चालै छै बिदेस, जिण रुत केसू फूलै ग्राली । कळियां सुं भवर बिलम रया छै, सूवटां ग्रांबा डाळी ग्राली । —रसीलै राज रा गीत

८ देखो 'विलबणी, विलंबबो' (रू. भे.)

बिलमणहार, हारौ (हारी), बिलमणियौ—वि० ।

बिलमिग्रोड़ौ, बिलमियोड़ौ, बिलम्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिलमीजणी, बिलमीजबौ—भाव वा० ।

बिरमणी, बिरमबो, बिलमणी, बिलमबो, विरमणी, विरमबो, विलम्मणी, विलम्मबो—रू० भे० ।

बिलमाणी, बिलमाबो–क्रि. स.—१ बातें करने हेतु प्रवृत्त करना, बातो मे लगाना, बहलाना ।

उ०—'मदू' ग्रासै मारको, ग्रत बेढ ग्रघाया, पुड घर धूज पडाईयै, 'दलजी' चढ ग्राया । वातां सू बिलमायनै, ज्या नै जजमाया, 'सीहै' कहिया भेद सो, नाही मन भाया । —वी मा

२ मोहित करना, लुभाना, मोहना ।

उ०—१ मद भागणि मी सारसी, राज छंलै लीराय । कोइक पुर की कामणी, रखै ली बिलमाय । —पना

उ०—२ पलका रै ऊपर पग धर ग्राजो, तो हियड़ा रै ग्रासण ग्राप बिराजो । कहो जी ! प्रभूजी ! थानै किण बिलमाया, तो दासी रै महला विलब सूं ग्राया । —गी. रा.

उ०—३ बागां में घूमण गयो म्हारो रावतियो सरदार, बागा मायली कोयल म्हारो लियो छै भंवर बिलमाय, दासी, कण बिलमायो ग्रै, रावत नही ग्रायो ग्रब तक बारणें । —लो. गी.

३ धैर्य देना, धीरज बधवाना ।

४ फुसलाना, बहकाना ।

उ०—मालवणी ढोलाजी नै घणा ही बिलमाया पिण ढोलोजी रहै नही । ताहरां मालवणी कहै । —ढो. मा.

५ देरी लगाना, विलम्ब करना ।

६ रोकना, ठहराना ।

उ०—१ तद ग्रोळंगुवा बोलिया—भुजनगर री राजा रावळ जालम, बडो पातसाह तिण राणी रा चाकर ग्रा घरां नो कांई कमाण न छै, पण दातारा नै देखण नै मुलकगिरी करता फिरा छा । सो बरस ग्रेक हुग्रो, महाराज बिलमाय राखिया ।

—पलक दरियाव री बात

उ०—तद खीवो ऊठ घोड़ै सवार हुवो । सूरेजी नूं कहियो—थे काढो, साथ माफक छै, हू इहा नू बिलमायस्यूं । तद सूरंजी कही—हमे काढिया किसी गत छै । —सूरे खींवं काधळोत री बात

उ०—३ ग्रोठक नू वित सापियो सो भगायो ग्रौर कही जै हू बाहर नू बिलमाऊ छू ।

—सुन्दरदास भाटी बीकपुरी री वारता

बिलमाणहार, हारौ (हारी), बिलमाणियौ—वि० ।

बिलमायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिलमाईजणी, बिलमाईजबौ—कर्म वा० ।

बिरमाणी, बिरमाबो, बिरमावणी, बिरमावबो, बिलमाणी, बिलमाबो, बिलमावणी बिलमावबो, बिरमाणो, विरमाबो, बिरमावणी, बिरमावबो, विलमावणी, विलमावबो, बिलम्माणी, बिलम्माबो, विलम्मावणी, बिलम्मावबो—रू० भे० ।

विलमायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ बातें करने हेतु प्रवृत्त किया हुग्रा, बातो मे लगाया हुग्रा २ मोहित किया हुग्रा, लुभाया हुग्रा, मोहा हुग्रा. ३ धैर्य दिया हुग्रा, धीरज बधाया हुग्रा. ४ फुसलाया, हुग्रा बहकाया हुग्रा ५ देरी लगाया हुग्रा, विलम्ब किया हुग्रा. ६ रोका हुग्रा, ठहराया हुग्रा.

(स्त्री विलमायोडी)

बिलमावणी, बिलमावबो—देखो 'बिलमाणी, विलमाबो' (रू. भे.)

उ०—१ पाणी पी-पी आपो काढ्यो, हियै दूध री सूखो धार । टाबर रोयो भूखा मरतो, मन बिलमावण लागी नार ।

—चेतमानखो

उ०—२ "मेह-मामो म्हानै काई देसी, दादी ।"
"लाडू ।"

भळं ?"
"दूध, दही, रमतिया, गैणा।"
"साचं ई, दादी।"
"हां, बेटा।"
"नहीं तू बिलमावै है।" —बरसगांठ

उ०—३ तद बहुवा सारी मुजरी कर बोहड़ी, डेरै आई। आय सारी जणी एकठी बैस कहण लागी—"आपा कुंवरजी नुं किण भांत बिलमावस्यां, वात विसारै घातस्यां ?"
—कुंवरसी सांखला री वारता

बिलमावणहार, हारौ (हारी), बिलमावणियौ—वि०।
बिलमाविद्योड़ौ, बिलमाबियोड़ौ, बिलमाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिलमावीजणौ, बिलमावीजबौ—कर्म वा०।

बिलमावियोड़ौ—देखो 'बिलमायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिलमावियोड़ी)

बिलमियोड़ौ—भू का. कृ.—१ प्रेमासक्त हुवा हुआ. २ भोग-विलास मे रत्त हुवा हुआ. ३ कार्य में लीन हुवा हुआ. ४ कार्य मे लग कर भूला हुआ. ५ मग्न हुवा हुआ, लीन हुवा हुआ ६ ठहरा हुआ, रुका हुआ।
७ देखो 'बिलूबियोड़ौ' (रू भे)
८ देखो 'बिलबियोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. बिलमियोड़ी)

बिलम्मणौ, बिलम्मबौ—देखो 'बिलमणौ, बिलमबौ' (रू. भे)
उ०—सोग भू मे खळाकं कमूंबा माट फुटा मा-क, उठै सूरा गैदना बिलम्मै केक प्राग। घणा घावां बीच घूमै कलाळी हाट ज्यूं गोरा, ग्रेहू रोसवाई उमे रचायौ आराण। —जभो आढ़ौ

बिलम्मणहार, हारौ (हारी), बिलम्मणियौ—वि०।
बिलम्मियोड़ौ, बिलम्मियोड़ौ, बिलम्म्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिलम्मीजणौ, बिलम्मीजबौ—भाव वा०।

बिलम्माणौ, बिलम्माबौ—देखो 'बिलमाणौ, बिलमाबौ' (रू. भे.)
बिलम्माणहार हारौ (हारी), बिलम्माणियौ—वि०।
बिलम्मायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिलम्माईजणौ, बिलम्माईजबौ—कर्म वा०।

बिलम्मायोड़ौ—देखो 'बिलमायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. बिलम्मायोड़ी)

बिलम्मावणौ, बिलम्मावबौ—देखो 'बिलमाणौ, बिलमाबौ' (रू. भे)
बिलम्मावणहार, हारौ (हारी), बिलम्मावणियौ—वि०।
बिलम्माविद्योड़ौ, बिलम्माबियोड़ौ, बिलम्माव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिलम्मावीजणौ, बिलम्मावीजबौ—कर्म वा०।

बिलम्माबियोड़ौ—देखो 'बिलमायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिलम्माबियोड़ी)

बिलम्मियोड़ौ—देखो 'बिलमियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बिलम्मियोड़ी)

बिलय, बिलयन—सं. पु. [स. विलयनम्] १ पानी मे पदार्थ के घुलने की क्रिया।
२ पदार्थ के परिवर्तित रूप मे दूसरे पदार्थ में मिलने की क्रिया।
३ आत्मा का परमात्मा से मिलन।
४ सृष्टि का अन्त, प्रलय।
५ मौत, मृत्यु।
६ दो राज्यो का आपसी मिलन।
७ नाश, समाप्ती।
उ०—आप तौ धरम करण नै लागा, करौ काया गो निस्तारी रे। म्हारै आगणै पगल्या करतां पाप बिलय जावै म्हारो रे।
—जयवाणी
रू. भे.—बिलउ, बिलै।

बिलळणौ, बिलळबौ—क्रि. अ. [स. विलपनम्] १ उदास होना, खिन्न होना, बेचैन होना।
२ व्याकुल होना, दुखी होना।
३ बिलाप करना, रोना।
उ०—पंथी हाथ सदेसड़उ, धण बिलळंती देह। पग सूं काढइ लीहटी, उर आंसुआ भरेह। —ढो. मा.
बिलळणहार हारौ (हारी) बिलळणियौ—वि०।
बिलळिग्रोड़ौ, बिलळियोड़ौ बिलळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिलळीजणौ, बिलळीजबौ—भाव वा०।

बिलळाणौ, बिलळाबौ—क्रि अ. [स. बिलापनम्] १ उदास होना, व्याकुल होना, खिन्न होना।
२ व्यथित होना, दुखी होना।
३ बिलाप करना, रोना।
उ०—छाटी पाणी कुमकुमइं, वीझण वीझ्या वाइ। हुई सचेती मारुवी, प्री आगळि बिलळाइ। —ढो. मा.
४ समाप्त होना, नाश होना, मिटना।
बिलळाणहार, हारौ (हारी), बिलळाणियौ—वि०।
बिलळायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिलळाईजणौ, बिलळाईजबौ—भाव वा०।
बिलळाणौ, बिलळाबौ, बिलळावणौ, बिलळावबौ, बिलळाणौ, बिलळाबौ, बिलळावणौ, बिलळावबौ, बिललावणौ, बिललावबौ
—रू० भे०।

बिललाणौ, बिललाबौ—देखो 'बिलळाणौ, बिलळाबौ' (रू. भे)

उ०—१ नोरणाथी रथ फेरि चलै रथ फेरि चलै दोख पसु दै जान। रागरउ लेहु मनाई, मुगति वधू मन मइ वसी, मन मइं वसी इमहि रहे **बिललात** । —स कु.

उ०—२ जोड जादवा तणी सोहती मूल ए, देखतां देखता हुय गई धूल ए। गाढ नैं जोम हु तो घट माय ए, रिद्धि थोडा मे गई **बिललाय** है। —जयवाणी

बिललाणहार, हारौ (हारी), बिललाणियौ—वि०।

बिललायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिललाईजणौ, बिललाईजबौ—भाव वा०।

बिलळाप—देखो 'विलाप' (रू. भे.)

बिलळापणौ, बिलळापबौ—देखो 'विलापणौ, विलापबौ' (रू. भे)

बिलळापणहार हारौ (हारी), बिलळापणियौ—वि०।

बिलळापियोड़ौ, बिलळापियोड़ौ बिलळाप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलळापीजणौ, बिलळापीजबौ—भाव वा०।

बिलळापियोडौ—देखो 'बिलापियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलळापियोडी)

बिलळायोड़ौ–भू का कृ.—१ उदास हुवा हुआ, व्याकुल हवा हुआ खिन्न हुवा हुआ. २ व्यथित हुवा हुआ, दुखी हुवा हुआ. ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ ४ समाप्त हवा हुआ, नाश हुवा हुआ, मिटा हुआ।

(स्त्री बिलळायोडी)

***बिललायोड़ौ**—देखो 'बिलळायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिललायोडी)

बिलळावणौ, बिलळावबौ—देखो 'बिलळाणौ, बिलळाबौ' (रू. भे)

उ०—बाळ रहै **बिलळावता**, 'पातल' धाक प्रताप। मन जरमना। कमध रो, आठ पोहर अलाप। —किसोरदान बारहठ

बिलळावणहार, हारौ (हारी), बिलळावणियौ—वि०।

बिलळाविग्रोड़ौ, बिलळावियोड़ौ, बिलळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलळावीजणौ, बिलळावीजबौ—भाव वा०।

बिललावणौ, बिललावबौ—देखो 'बिलळाणौ, बिलळाबौ' (रू. भे)

उ०—मैं तौ जाणी ए काची माया, **बिललावै** जिम बादल छाया। ऐसी जाणी कहौ कुण रीझै, मोनै धरम तणो मारग प्रेमो। —जयवाणी

बिललावणहार, हारौ (हारी), बिललावणियौ—वि०।

बिललाविग्रोड़ौ, बिललावियोड़ौ, बिललाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिललावीजणौ, बिललावीजबौ—भाव वा०।

बिलळावियोड़ौ देखो 'बिलळायोडौ' (रू भे)

(स्त्री बिलळावियोडी)

बिललावियोडौ- देखो 'बिलळायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिललावियोडी)

बिलळौ—देखो 'बिलळौ' (रू. भे.)

उ०—१ हमेसा री भांत अेक दिन भळै दोना मे राड पजगी। साव **बिलळी** राड। बिणियाणी कह्यो—धाड बिना म्हारो गळो अडोळौ लागै, थे सोनार रै घरै जाय इण बीटी री धाड गडायलौ। —फुलवाडी

उ०—२ थारै कैणा मुजब कलम री बात तौ व्हैगी साच अर जबान अर हाथरी बात व्हैगी झूठ। किणी दूजा रै मूंडागै अैडी **बिलळी** बात करज्यो मती, लोग हसैला। —फुलवाडी

उ०—३ गोफणियो सुंभावती वा मोमा मुर मे बोली भाटिया स हाव थारो पानो नी पडियो दांमै, इणी खातर अैडी **बिलळी** बात करी। —फुलवाडी

उ०—४ सेठा रै मूंडा साम्ही देख कैवण लागा—सेठा, इत्ता समझदार होय थे अैडी बिलळी बात कीकर करी। थारै को नी बच्यो तो काई व्है, राज रो खजानो तो हाल भर्यो है। —फुलवाडी

(स्त्री बिलळी)

बिलवणौ, बिलवबौ–क्रि. अ —१ उदास होना, निरुत्साहित होना, बेचैन होना।

२ व्याकुल होना, दुखी होना, व्यथित होना।

उ०—१ पीहर तो परत हे रहिया, प्रीतम विरहागनि दहिया। प्रमदा इणिपरि **बिलवती**, दुख गई राति गलंती। —श्रीपाल रास

उ०—२ इम **बिलवती** सुंदरी, रोवती न रहाय। धवल अधरमी तिण समैं, भासै पासै आय। —श्रीपाल रास

३ विलाप करना, रोना।

उ०—१ करि मन धीर कगार, **बिलवै** काइ विरही थयो। सयणां न लही सार, आवण दे परहा 'जसा'। —जसराज

उ०—२ बिलवइ बे सती कीजइ ककण भंग। उछइ नीरि जिम माछली तिम विरह दहइ अम्ह अग। **बिलवई बे** सती। —का. दे. प्र.

उ०—३ अन्न दिवसि बभणु मकुटब, रल जिम **बिलवई** पाडइ बुब। पूछइ भीमु करी गकुतु, भाविउं दूखु किसुं अचितु। —सालिभद्र सूरि

४ निर्भर होना, आश्रित होना।

उ०—४ जनहरिया उ न देसहै, बारै मास बसत। सदा फलंगी बिनसती, बिलब्या जीव निचत। —अनुभववाणी

५ पकडना, ग्रहण करना।

उ०—केईक पांनां फूलड़ा, केईक बिलब्या डाळ। हरिया मूळ बिलबिया, फळ पाया असराळ —अनुभववांणी

बिलबणहार, हारौ (हारी), बिलबणियौ—वि०।

बिलबियोड़ौ, बिलबियोड़ौ, बिलब्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलबीजणौ, बिलबीजबौ—भाव वा०।

बिळबळणौ, बिळबळबौ—देखो 'बिलबिलणौ, बिलबिलबौ' (रू. भे.)

उ०—खिण रोवै खिण बिळबळै मारु……मिट। बळि घण दीसै नाह बिण, घण बिण नाह म दिठ। —ढो. मा.

बिळबळणहार, हारौ (हारी), बिळबळणियौ—वि०।

बिळबळीयोड़ौ, बळबळीयोड़ौ, बिळबळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिळबळीजणौ, बिळबळीजबौ—भाव वा०।

बिलबलणौ, बिलबलबौ—देखो 'बिलबिलणौ, बिलबिलबौ' (रू. भे.)

उ०—जाण्यूं प्रा:डउ माडस्यइ जी रे जी वीरजी गौतम लेस्यइ केवल भाग रे। बिलबलतां, मूंकी गयउ जी, रे जी, वीरजी एक पखउ म्हारउ राग रे। —स. कु.

बिलबलणहार, हारौ (हारी), बिलबलणियौ—वि०।

बिलबलियोड़ौ, बिलबलियोड़ौ, बिलबल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलबलीजणौ, बिलबलीजबौ—भाव वा०।

बिलबळियोड़ौ—देखो 'बिलबिलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलबळियोड़ी)

बिलबलियोड़ौ—देखो बिलबिलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिलबलियोड़ी)

बिलबामणी—स. स्त्री.—छिपकली की जाति का एक प्रकार का छोटा जानवर विशेष।

रू. भे.—बिलब्रामणी।

बिलबियोड़ौ—भू. का कृ.—१ उदास हुवा हुआ, चिन्तित हुवा हुआ, बेचैन हुवा हुआ. २ व्याकुल हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ, व्यथित हुवा हुआ. ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ।

(स्त्री. बिलबियोड़ी)

बिल-बिल—देखो 'बिल बिल' (रू. भे.)

उ०—१ माता पिता झुरता रहया, वलि बापवा नी जोड रे। बाल भिया बिलबिल करै, तै तो म्योज ऊभा छोड़ रे। —जयवांणी

उ०—२ अचेतन थई देवकीजी. कुरडै सा असराल। हीन दीन बिलबिल करै जी, दोहली पेट री झाल। —जयवांणी

बिलबिळणौ, बिलबिळबौ—देखो 'बिलबिलणौ, बिलबिलबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वउळाव सगळा बिलबिळइ, ढोलउ किउही पाछउ वळइ। साथी मारू दागण-भणी, घणूं कहइ पणि न रहइ धणी। —ढो. मा.

उ०—२ भाई सुत रांणी बिलबिळइ, हाथ झाली कहइ तेह गहिला राजा। एक पारेवइ नइ कारणइ, स्यूं कापउ छउ देह गहिला राजा। —स. कु.

उ०—३ स्रावण मास मे विरहणि जांमनी जांम न जात, सजि आडबर जबर दामिणी मिलै बरसात। मुझ वर गयौ हरिणाखी नाखी दोष निरास, बिलबिळै राजुल आंखीय भरि भरि नाखी निरास। —ध. व. ग्रं.

उ०—४ मात पिता पाल्या घणा रे लाल, एतौ रह्या नी लीगार हो, भविक जन। नारघा बिलबिलती रही रे लाल, नहीं आंण्यौ मोह ति वार हो, भविक जन। —जयवांणी

बिलबिळणहार हारौ (हारी), बिलबिळणियौ—वि०।

बिलबिळियोड़ौ, बिलबिळियोड़ौ, बिलबिळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलबिळीजणौ, बिलबिळीजबौ—भाव वा०।

बिळबिलाट, बिलबिलाट—देखो 'बिलबिलाट' (रू. भे.)

बिलबिलाणौ, बिलबिलाबौ—१ देखो 'बिलबिलाणौ, बिलबिलाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिलबिलणौ, बिलबिलबौ' (रू. भे.)

बिलबिलाणहार, हारौ (हारी), बिलबिलाणियौ—वि०।

बिलबिलायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलबिलाईजणौ, बिलबिलाईजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बिलबिलायोड़ौ—१ देखो 'बिलबिलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिलबिलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलबिलायोड़ी)

बिलबिलावणौ, बिलबिलावबौ—देखो 'बिलबिलाणौ, बिलबिलाबौ' (रू. भे.)

२ देखो बिलबिलणौ, बिलबिलबौ' (रू. भे.)

बिलबिलावणहार, हारौ (हारी), बिलबिलावणियौ—वि०।

बिलबिलाविओड़ौ, बिलबिलावियोड़ौ, बिलबिलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलबिलावीजणौ, बिलबिलावीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बिलबिलावियोड़ौ—१ देखो बिलबिलायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिलबिलियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विलबिलायोड़ी)

बिलबिलियोड़ो—देखो 'बिलबिलियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. विलबिलियोड़ी)

बिलखामणी—देखो 'बिलखावणी' (रू. भे.)

बिलसण, बिलसणो–वि.—१ उपभोग करने वाला, उपभोक्ता।

२ आमोद-प्रमोद करने वाला।

३ भोग-विलास करने वाला।

४ दान देने वाला, दातार।

उ०—१ वड पह वडुआर मुजि कुळि भार, धर सिणगार तपै लखधीर। बिलसण गज वाज कुंअर सकाज, वसधा राज करै वर वीर। —ल. पि

उ०—२ बिलसण गज वाजि निवाजण खट ग्रन, काइम राज अजाद सकाज। धर ओपम प्रतपै पाटोधर 'लखपति' कुंअर भुजै कुळ लाज। —ल. पि.

स. पु.—दांन। (अ. मा., ह. ना. मा.)

बिलसणो, बिलसबो–क्रि. अ.—१ शोभा पाना, शोभित होना।

उ०—म्हारै पती जाणै कोई आळस खुद देह धारी एं सबै सुभावी को होज बिलसतौ सोभतो होवै जिसो है पण सिंधूराग जुद्ध री राग सुणताई तौ सौ गुणो अग फूल पौरस वध जाय अ' सरीर बगतर में ही मावै नहीं। —वी. स. टी.

२ कलंकित होना, कलंक लगना।

क्रि. स.—१ विलास करना, आनन्द मनाना।

उ०—१ राति दिवस रगइ रमइ, बिलसइ नवरस भोग। जोडी सारीखी जुड़ी, केसव तणइ सजोग। —ढो. मा.

उ०—२ प्रति दिन बिलास नवकोटपति, 'अभैसाह' बिलसै इसा। चाहे घनेस निरखै चरस, इद्र सराहै एरसा। —रा. रू.

उ०—३ कवी कहै है कि—नाग हाथी सोभागवांना नै दाम रुपिया देण सूं मुसकळ हाथै आवै वे हाथी वीर पुरख विना दामा विना रुपिया दीधा दुसमणा सूं खोस लेहै नै बिलसै सुख लेवै है। —वी स. टी.

उ०—४ मुगति माहै बेहु मिल्या रे लाल, बिलसै सुख वरदाय है सहेली। प्रणमैं पडित धरमसो रे लाल, नमता नव निधि थाय है सहेली। —ध. व. ग्रं

२ उपभोग करना, भोगना।

उ०—१ अमृत भोजन राम रस, काहे न बिलसै खाइ। काळ बिचारा क्या करै, रम रम राम समाइ। —दादूबाणी

उ०—२ वित बिलसण री वार, नर सठ वित विलसै नही। जावै बीत जियार, जेहल पछतावै जिकै। —बां. दा.

उ०—३ बिलसी धन कोडी तै बात टली, तजी नारी तणी संगति सगली। परभव दुरगति वेदन दुहिली, बोलइ मत कोसा तै बात वलि। —स. कु.

३ आमोद-प्रमोद करना।

उ०—धाइ धसइ ति उधसइ, बिलसइं हसइं प्रवाह। खधि चडइ लधागली आकली न सकइ नाह। —जयसेखर सूरि

४ दान देना।

उ०—बास ओया बिलसंत न बिरचे, सुरतर सुपह जिन्है सारीक। सोरमतरि ग्रहि बस सुखी महि, मागण सुखी कन्ही मछरीक। —नांदण बारहठ

५ भोग करना, संभोग करना, मैथुन करना।

उ०—१ स्रावण हास्य रस करी, बिलसउ प्रीतम प्रेमइ जी। योगी भोगी नइ घरै, स्रावण लागा केमइ जी। —वि .कु.

उ०—२ मत्रीसर घरि आवीउ सयल लोक रजण सुलक्खण, पूरव पुण्य पमाउलइ त्रिण्णि, नारि बिलसइ विअक्खणि।

—हीराणद सूरि

उ०—३ पदमणी परिमल पाम नै, भोगी भ्रमर नाह! मुख बिलसो मोसु बालहा! लीजै-जोवन-लाह। —जयबाणी

उ०—४ वर बिलसइ अलवेसर केसर हैठि सुवेस, अघ पूगइं ऊस-रायणि रायणि फलिय असेस। —जयसेखर सूरि

६ उत्सव मनाना।

उ०—१ जिणि जगि जीनउ ममरपि समर सिरोमणि कांमु बिलसइ सिद्ध सयवर मत्ररगणि अभिरामु। निरुपम निपुण निर-जन रजन जनमन चारु, पामीय मूरु गुरु आइसु साइसु नेमि कुमारु। —जयसेखर सूरि

उ०—२ दोरइ बद्धइ सूयडउ छूटउ सहजइ होइ इण परि बिलसइ विवह परि सुद्धि न जाणइ कोइ। —हीराणद सूरि

बिलसणहार, हारौ (हारी), बिलसणियौ बि०।

बिलसिओड़ो, बिलसियोड़ो, बिलस्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिलसीजणो, बिलसीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।

बलसणो, बलसबो, बिलसणो, बिलसबो, बेलसणो, बेलसबो, बळसणो, बळसबो, बीलसणो, बीलसबो—रू० भे०।

बिलसाणो, बिलसाबो–क्रि. स [बिलसणो क्रिया का प्रे. रू] १ शोभित करना, शोभायमान करना।

२ कलंकित करना, कलंक लगाना।

३ विलास करना, आनन्दित करना।

उ०—पैंसठ भोम पोलां ऊपरै, तेतीस नै भोम नै माय हु-मवियण।
सिंहासन सक इंद्र नौ, जीव सुख बिलसाय हो-भवियण।
—जयवांणी

४ उपभोग या भोग कराना।
५ आमोद-प्रमोद करने को प्रेरित करना।
६ दान दिलाना।
७ संभोग करने के लिए प्रेरित करना, मैथुन करने के लिए प्रेरित करना।

बिलसाणहार, हारौ (हारी), बिलसाणियौ—वि०।
बिलसायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिलसाईजणौ, बिलसाईजबौ—कर्म वा०।
बिलसाणौ, बिलसाबौ, बलसाड़णौ बलसाड़बौ, बलसाणौ,बलसाबौ, बलसावणौ, बलसावबौ—रू० भे०।

बिलसायोड़ौ-भू का. कृ.—१ शोभित किया हुआ, शोभायमान किया हुआ २ कलंकित किया हुआ, कलंक लगाया हुआ. ३ विलास किया हुआ, आनन्दित किया हुआ. ४ उपभोग या भोग कराया हुआ. ५ आमोद-प्रमोद करने को प्रेरित किया हुआ ६ दान दिलाया हुआ. ७ संभोग करने के लिए प्रेरित किया हुआ, मैथुन करने के लिए प्रेरित किया हुआ।
(स्त्री. बिलसायोड़ी)

बिलसियोड़ौ-भू का कृ.—१ शोभायमान हुवा हुआ शोभा पाया हुआ. २ कलंकित हुवा हुआ. ३ विलास किया हुआ, आनन्द मनाया हुआ. ४ उपभोग किया हुआ, भोग किया हुआ. ५ दान दिया हुआ. ६ भोग किया हुआ, संभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ ७ आमोद-प्रमोद किया हुआ।
(स्त्री. बिलसियोड़ी)

बिला-अव्य. [अ बिला] बिना।

बिलाइत—देखो 'बिलायत' (रू. भे.)

उ०—घणं सीतळ पाणी स सींचिया थका बीभणा वाट भाया सू हीफा लाइ रहीया छै तठै बिलाइत री गंगी चटाई अमोलक बिछाइ रही छै। तिण ऊपरि बैठा छत्रीस रोग हरै ऊपरै ढोलिया गिलमां री बिछाति बागि नै रही छै। —रा सा. स.

बिलाइति, बिलाइती—देखो 'बिलायती' (रू भे.)

उ०—तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति उण बागाइत माहै ग्रीखम रित रा बिलाइती बालेरा खस खाना, ऊंची ठौड़ रा बंगळा, गावटी बालाबध रा ठामा रा गुफिया भांति भांति खसखाना बणाया छै। —रा. सा. स.

बिलाउ—देखो 'बिडाळ' (रू. भे.)

उ०—जिहां सिव,सगा फेत्कार, घूक तणा घूत्कार। व्याघ्र तणा घुरहराट, न लाभइ बाट नइ घाट। लांघता दोहली छुद्र, चीत्रा बुरकइ, बेडि बिलाउ घुरकइ। —सभा

बिलाग-वि.—१ पृथक, अलग, भिन्न।
२ संलग्न, लगा हुआ।

बिलागणौ, बिलागबौ-क्रि. अ.—१ चिपकना, लिपटना।
२ पहुंचना।
३ स्पर्श होना छूना।

उ०—१ आयौ खुरम बिलागं अंबरि, पूरै पारभ है गै पक्खरि।
ऊपाडेह छरा आघतरि, आंणी सीह बिरत्ती छप्परि।
—गु. रू. ब.

उ०—२ बाबा लै बाघियौ, बडौ ब्रह्मंड बिलागौ। चलण हेक हरि चापियौ, भलौ भूगोळ सभागौ —पी. ग्रं.

४ देखो 'लागणौ, लागबौ' (रू. भे.)

बिलागणहार, हारौ (हारी), बिलागणियौ—वि०।
बिलागिओड़ौ, बिलागियोड़ौ, बिलाग्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिलागीजणौ, बिलागीजबौ—भाव वा०।
बिलागणौ, बिलागबौ—कर्म वा०।

बिलगियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चिपका हुआ, लिपटा हुआ. २ पहुंचा हुआ. ३ स्पर्श हुवा हुआ, छूआ हुआ।
४ देखो 'लागियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री. बिलागियोड़ी)

बिलाणौ, बिलाबौ-क्रि. अ.—१ विलीन होना, विलय होना।
२ लोप होना, लुप्त होना।

उ०—बिलावलि की वखत आयौ। गुणी जना राग झिलायौ। चकवा चकवी को मिळाप। कुकड़ा बोलिया। ज्वार सीतल हुवा। हरक वाल फूलिया। रातवर प्रगासियौ। तारा बिलाया चिड़या चहकि। —पना

३ नाश होना, मिटना।

उ०—१ काम क्रोध मोह लोभ हंकारा, बोध खड्ग लै सबी सघारा। जड़ अरु भ्रम् क्लेस बिलाया, मन् चेतन आनंद पद पाया। —स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ जड़ चेतन कू जोय, हंस निरभै थया। तन मन गया बिलाय, ब्रह्म केवल रया। —स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—३ गुरु का सब्द सुणत ही जाग्या, माया मोह बिलाय गया। स्वप्ना माथै अनंत भरम देख्या, जागत ही निज स्वरूप लया। —स्रीसुखरामजी महाराज

उ०—४ उत्पति थिति लय नहीं ज्यामैं, कारण कारज बिलाणी।

सत् सुखराम आतमारांमी, निरालब निरवांणी ।
— स्री सुखरामजी महाराज

४ व्यतीत होना, बीतना ।

बिलाणहार, हारो (हारी), बिलाणियो — वि० ।

बिलायोड़ो —भू० का० कृ० ।

बिलाईजणो, बिलाईजबो —भाव वा० ।

बिलावणो, बिलावबो, बीलाणो, बीलाबो, बीलावणो, बीलावबो रू० भे० ।

बिलात—देखो 'बिलायत' (रू. भे)

उ०—काबल कतल करीह, कायम चोरा बिलात कै । भाळै क्रोध भरीह, न्रपत 'पता' किण सिर निजर । —पाबूदान आसियो

बिलाति, बिलाती —देखो 'बिलायती' (रू. भे)

उ०—१ माझी मीर बलक्की मल्ल, मीर सैद पट्ठाण मुगल्ल । ग्वारी और सजोर बुखारी, घर काबली बिलाति खंधारी ।
—रा. रू.

उ०—२ परचंड गात कच्छिय प्रगट, रेवत थट्ठ बिलाती रा । नव साजि किया हाजर नरा, भिडज नवल्ली भांति रा ।
—रा. रू

उ०—३ तुरकी ताजी तुरग, बिलाती देसी विडग । धूना चित्तागिया धंग, खेड रा नीपना खंग । —गु. रू. ब

उ०—४ विडग तुरक्की ऐराकी बिलाती, मर्चं पाखरा रोि˙ हैहीस माती । सिणगारिया पीलवाणँ सुडाळा, अममान साम्हा दियंता उलाळा । —गु. रू. बं

बिलाप-स पु. [सं] १ उदास, व्याकुल या व्यथित होने की क्रिया ।
२ कष्ट, दुख, पीडा ।

उ०—१ निग सगतसिह जी मार राणाजी नै हेनी पाड कयो घोडो तीना पगा है तद देख जीण उतारता ही घोड़ो छूटी । राणोजी महा बिलाप कियो । सत्त् (सक्तिसिह्) भाई उपकार कर आपरो घोडो दियो । —वां. स. टी.

३ रुदन. क्रदन ।

उ०—२ जद स्वामीजी बोल्या — यू न करणो । रोगादिक ऊपना गाढो रहणो । ज्यू किण हि रै माथै दैणो हो । देगारा परिणाम नही हुना । पिग पंलं जबरी सू लिया । जद मुग्ख नो बिलाप करै । —भि. द्र.

वि.—तप्त, गर्म ।७ (डि को)

रू. भे —बिलाप, बिलालाप, बिलापात, बिलोपात ।

अल्पा.,—बिलापातो ।

बिलापणो, बिलापबो—क्रि. अ —१ उदास होना, बेचैन होना, खिन्न-चित्त होना ।
२ व्याकुल होना, व्यथित होना, दुःखी होना ।
३ रुदन करना, रोना ।

बिलापणहार, हारो (हारी), बिलापणियो — वि० ।

बिलापिग्रोड़ो, बिलापियोड़ो, बिलाप्योड़ो — भू० का० कृ० ।

बिलापीजणो, बिलापीजबो —भाव वा० ।

बिलापणो, बिलापबो —रू० भे० ।

बिलापात – देखो 'बिलाप' (रू. भे)

उ०—१ इतरा बिलापात करण लागी तद सहेल्या बोली—इक म्हा मन अचरिज भयो साभळ बात म श्रेम । त्या अण दीठां सज्जणा, क्यूकर लागो प्रेम । —ढो मा.

उ०—२ मारवणी बासै इण भात बिलापात करै छै ढाढी वहड सोलखी नखा चालिया हुना सो कितरा हेक दिना मैं नळवरगढ जाय पहुता । — ढो. मा

उ०—३ केतलं एक कालै प्रदेश मे भरनार काल कीघो । सुणनै धरम मे न समझै नै तो रोवै बिलापात करै । समझै तै रोवै नही समता धारनै बैठी । —भि. द्र.

बिलापातो—देखो 'बिलाप' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कुण वीरो कुण बहनडी रे, जोयजो मोहरी बात । इण भव मुगति सिधावसी रे, एम करै बिलापातो रे । —जयवाणी

बिलापियोड़ो—भू का कृ.—१ उदास हुवा हुआ. बेचैन हुवा हुआ, खिन्नचित हुवा हुआ. २ व्याकुल हुवा हुआ, व्यथित हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ. ३ रुदन किया हुआ, रोया हुआ ।

(स्त्री बिलापियोडी)

बिलायत—सं पु [अ.] १ दूसरा या पराया देश विदेश ।

उ०—हू किसो बिलायत वसै हो ? जको थै ओजू ताई ठा ही नही करथो । हू किसा हाथी-घोडा थोडा ही मागै हो ? अर जै मागू तो ही किसो बटै मू आछो हुवै । — दसदोख

२ इग्लैण्ड ।

उ०—१ नाव किसनजी, कोटै धणी रै अ.ग रंवै । एडीकंप अर पराईवेट वाजै । देस रा दौरा पूरा करावै, आबू अर बिलायत सागै जावै । हरखा-कोडा हसै-कढै, गाळ्या खा-खा ऊचा चढै ।
—दसदोख

उ०—२ अज दुरग खिसारा तबळ मारा गोरा बजै, दहल पुड रसा रा हल हमल दूद । लक दिस प्रभजण सारा वेग लागा, बिलायत दिसा रा उडै घणा बद । —चैनकरण सांदू

उ०—३ उतन बिलायत किलकता कांनपुर आविया, ममोई लंक मदरास मेळा । यलम धुर वहण अगरेज दाटण यळा, भरतपुर ऊपरा हुवा भेळा । —कविराजा बांकीदास

उ०—४ सज्ञ दूजा 'अभमाह', महि रज मडळ मावतां। रूड़ा लीवा राह, बिकटा दूर बिलायतां। —पाबूदान प्रासियो

३ दूरस्त यूरोपीय देश।

४ ईरान, तुर्किस्तान।

रू. भे. —बलायत, बिलायत, बिल्लायत, वलायत, बिलाइत, बिलात, बिल्यायत, विल्लायत।

बिलायति, बिलायती-वि.—दूसरे देश का, विदेशी।

२ इग्लैण्ड का।

३ यूरोप का, यूरोपीय।

उ०—१ मू छुरी किण भांत री छै? पेसकबज चकचकी रूमी बिलायती म्याना माहा काढजै छै। —रा. सा. स.

उ०—२ सु तरवारचा किण भात री छै? सीगाही री नीपनी, वे आगळ बाढ कॅरिया थका अनेक मगरेब पुडनकाळ सेफ बिलायती भुजरी बिराणपुरी हवमानी फिरगी। —रा सा स

४ ईरान का, तुर्किस्तान का।

उ० - अटक पार मो अर्ग उला नहि नमै बिलायति। जवन वमै जिण माहि, आठ मगरुरा असपति। —गू प्र

रू भे.—बिलानिय, बिलायती, बिलाइति, बिलाइती, बिलाति बिलाती।

बिलायतीकद्दू-स. पु —तरकारी के काम आने वाला एक विशेष प्रकार का कद्दू।

बिलायतीकासनी-स. स्त्री.—एक प्रकार की कासनी, जिसकी पत्तियां दवा के काम आती है।

बिलायतीकीकर-स. पु —हिमालय मे पाच हजार फुट की ऊंचाई तक पाया जाने वाला पहाडी कीकर।

बिलायतीछछूदर-सं. पु —इग्लैण्ड के पश्चिमी प्रदेशो मे बहुतायत से पाया जाने वाला एक प्रकार का छछूदर।

बिलायतीनील-स. पु —चीन से आने वाला एक विशेष प्रकार का नीला रग।

बिलायतीप्याज-स. पु.—बिना गाठ का एक प्रकार का प्याज जिसमे केवल गूदेदार जड होती है।

बिलायतीबैगन-स पु —१ एक प्रकार का बैगन विशेष जिसका पौधा यूरोप से आया हुआ कहा जाता है।

२ टमाटर।

बिलायतीमेंहदी-स. स्त्री.—मेहदी की जाति का एक प्रकार का पौधा विशेष।

बिलायतीलसन, बिलायतीलसुन, बिलायतीलहसन, बिलायतीलहसुन-स पु —मसाले के काम आने वाला एक प्रकार का लहसुन।

बिलायतीसिरिस-सं. पु —विदेश से आया हुआ एक प्रकार का सिरिस आजकल यह नीलगिरि पर्वत पर बहुतायत से होता है।

बिलायतीसेम-स. स्त्री.—एक प्रकार की सेम जिसकी फलियां साधारण सेम से कुछ बडी होती है।

बिलायन-स पु [स] प्राचीन भारत में पाया जाने वाला एक प्रकार का अस्त्र विशेष।

वि वि.—उक्त अस्त्र के प्रयोग से शत्रु सेना को विश्राम करने हेतु प्रवृत्त किया जाता था।

बिलायोड़ो-भू. का. कृ —१ विलीन हुवा हुआ, विलय हुवा हुआ. २ लोप हुवा हुआ, लुप्त हुवा हुआ. ३ नाश हुवा हुआ, मिटा हुआ. ४ व्यतीत हुवा हुआ, बीता हुआ।

(स्त्री. बिलायोड़ी)

बिलालो-वि. [स्त्री. बिलाली] १ रसिक, रसिया।

उ०—१ पदमण बोली पीवना, विरथा कीदो वाद। छकिया मद री छाक रो समझी नहीं सवाद। हरख जनाली चित हुवै, पीदा प्यालौ नेम। पीव बिलालो पिलग परि, वालो लागै वेस।

—पना

उ०—२ दारू रो प्यालो भलो दुपट्टे रो झालो। माण्वण तो पतळी भली, मारू बडो बिलालो। पीम्रोनी दारूडी। —लो. गी.

२ उदार, दातार, दानशील।

उ०—१ ताकवा निमाला खुलै भेटिया बिलद ताळा, बिलाला नरिंद इद सा रूप वाखाण। पाणा थारा अमरेस' नचीतो चीतोड़-पती, खाडै थारै दुचीतो छ खडो खुरसाण।

—अमरसिंघ सिसोदिया रो गीत

उ०—२ प्रगट घूपटे दरब आठ पहर अणपार रे, बडम कुळ भार रे भुजा लीधा। बिलाला खड़ै नित तुरंग इण बार रे, माग आचार हुवा माधा'। —मेघजी महडू

३ अद्भुत, विचित्र, विलक्षण।

उ०—करु वखाण घणा हू कासूं, जीव कियो सपतास जिसो। लाखबरीम बिलालो लाखो, आयस कीधो रीझ इसो।

—नवलजी लाळस

४ छैल-छबीला।

उ०—खेलण दो गणगोर भवर म्हानै पूजण दो गणगोर। हो म्हारी सइया जोवै बाट, बिलाला म्हाने खेलण दो गणगोर।

—लो. गी.

५ युद्धोन्मत्त, मस्त।

उ०—१ कमरा कस आयो रण काळी, बावण मांथै मोड

बिलालौ। भुजडंड पकड़ ऊठियौ भाग्यौ, लेवा भचक रुठियौ लालौ। —बरजूबाई

उ०—२ भाला हथां जोध भीमाणी, वाल्हा सुरपुरवासी। पात बिराज बिलाला पाता, प्याला मद कुण पासी।
—महारांणा जवानसिंहजी रो गीत

रू. भे.—बिलालौ, वलालौ।

बिलाव—देखो 'बिडाळ' (रू. भे.)

उ०—तिकौ तळाब किण भांतरौ छै। राती वरडी रो। पाडरो नीर। पवन रो मारियो फीण प्राछटतो थको झोला खाय रह्यो छै। लहरा लियै छै। अथग डोव छै। कडिया सूंवै पाणी मे पैठा पगारा नख भावै छै। दूध रै भोळावै बिलाव चाभीजै छै।
—रा. सा. स

बिलावणौ, बिलावबौ—देखो 'बिलाणौ, बिलाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बनवासी चवदें वरसा रो, वामा मग बिलावै। बीतै पलही कलप बराबर जिकै दिवस किमि जावै। रे सुध आवै, रे सुध आवै, रिण विध कीजिये। —र. ह.

उ०—२ दिया 'सूजा' तणां पेंड तोपा बिसा, मफीलां तणा नह लिया मरणा। बीजला रीठ पावै सफा बिलावै, बिजा करपुर करपुर वरणा। — कविराजा बांकीदास

बिलावणहार, हारौ (हारी), बिलावणियौ—वि०।

बिलाविओड़ौ, बिलावियोड़ौ, बिलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलावीजणौ, बिलावीजबौ—भाव वा०।

बिलावळ, बिलावळि, बिलावळी—स. पु.—१ एक राग विशेष जो केदार और कल्याण के योग से बनता है यह दीपक राग का पुत्र माना जाता है। यह सवेरे के समय गाया जाता है [संगीत]

उ०—१ नचंत केक रंग राग, विम्मळ बिलावळं। करत गोख जोख केक, हेम मैं झळाहळं। —सू प्र

उ०—२ रात तो इण रंग मे विदित हुई। इतरै परभात हुवो। भैरू विभास। बिलावळि को वखत आयो। गुणी जना राग झिलायो। —पना

२ हिंडोल राग की स्त्री एक रागिनी। (संगीत)

रू. भे.—बिलावळ, वेळावळ, वेळावळ।

बिलाविया, बिलाविया—स पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—पाटवर नीलबर जरकसो रा वणाव कीजै छै। आडिया फणिआ मुखमली खासा बिलाविया थका जालोरी सांठ, खुरासाणी भळकै सातिये ऊठ सौदागर रै घोड़े चालविये पठाण अरडै आयै चीघड़िये रूठै, गाम धणी सा लोचना किया, वाळि वाळि मोतिया ठविया थका,"'। —रा. सा. स.

बिलाबियोड़ौ—देखो 'बिलायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलावियोडी)

बिलास—स. पु. [स. विलास] १ क्रीड़ा, खेल।

उ०—१ नृप सुख ग्रीखम निरखता, वधि बरसात बिलास। मातौ कादव मेदनी, आयौ भाद्रव मास। —रा. रू.

उ०—२ सबळा खळ सूं साथियां, निबळ जाय खळ नास। मूंसो मेळ मंजार कर, बचियौ बिपत बिलास —बा दा.

२ अनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद।

उ०—१ यो नरपति पुर आपरै, नित प्रति महल निवास। सुख अनुराग छ राग सुख, वाग तडाग बिलास। —रा. रू.

उ०—२ तठा उपराति राजान सिलांमति रितिराज बसंत बैसाख मास रा मगळाचार विमाह रा सुख बिलास करता सरदरित आई छै। आसोज मास आइ संप्रापती हुई छै। —रा सा. स

उ०—३ इण भांत सुख-सेजै पौढिया। राति बिहांणी। प्रभात हुवौ छै। रातो का काम उजागर नैण घुळि नै रहिया छै। कपोळै काम सुहाग री छाप लागी छै। खुलि नै रह्यौ छै। इण भात सुख बिलास करता छै रित आरै मास माणीजै छै। —रा. सा. स.

३ शोभा, सुन्दरता, मनोहरता।

उ०—वळवळ कंठ बिलास, हार भुजंग गग सिर खळहळ।
—र. ज प्र.

४ स्त्रियोचित हाव-भाव नाज-नखरा आदि जो काम-वासना को उत्तेजित करने वाली होती है।

उ०—वर नारि नेत्र निज वदन बिलासा, जाणियौ अतहकरण जई। हसि हसि भ्रू है हेक हेक हुइ, ग्रह बाहरि सहचरी गई।
--वेलि.

५ आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष।

६ कौंध, चमक।

७ मनोरंजन, मनोविनोद।

उ०—१ सु आगलो सखिया नू जावतो लखै नही छै। लखाव नही पडतो छै। तिणि गोखैरे डोरै लगी जाए छै। ऊजळी ठकुराणी ऊजळा ठाकुर प्रीतम सु जाइ जाइ मिळै छै। इण भांति सरद चादणी रंग बिलास माणीजै छै। —रा. सा. स.

८ संयोग शृंगार का एक भाव विशेष, जिसमे नायक के सामने नायिका उसके मन मे अपने प्रति अनुराग या प्रेम उत्पन्न करने की क्रियाएं या चेस्टाए करती है। (साहित्य)

९ भोग बिलास, विषय भोग, मैथुन।

उ०—१ बोलै बंधव रूपसी, बोलै मोकमदास । तज प्रवसांण बिलास पद को मांनै भ्रम जास । —रा. रू.

उ०—२ निस वसियौ सुख प्रेह निज, मार्थं रमणि बिलास । परब करै सुख भोगतां, हित रिति गरम हुलास । —रा रू.

उ०—३ कुसमित कहतां फूली । कुसमायुध कहता काम देवतै कै उर्दै करि केळि बिलास खेल तै कै प्ररथि आंहका भरतार घरै छै । सु तौ वसत विसं फूली छै । —वेलि टी.

१० सुख भोग, प्रानन्द भोग ।

उ०—१ सोनरनाथ बिलास सू पूरण कियो वसंत । देखंवा दिल्ली नयर, भायौ कूच निभ्रंत । —रा. रू

उ०—२ धरम बंम लघु भ्रात हेत धरि. कासीराज तेणि दीधो करि । हित देखै नृप राग हुलासी, करै बिलास इंद्र जिम कासी । —सू. प्र.

उ०—३ सोरभा सोंधा सरस, राग रग प्रति हास । ब्रह्मा ब्रह्माणी महत, निज पुर करत विलास । —गज-उद्वार

उ०—४ राजपाट सुत वित सबं, सूंदरि महल बिलास । हरिया हरि सुख बाहिरो, ज्यू जंगळ का घास ।

—प्रनुभववाणी

११ महक, सुगध ।

१२ एक तपस्वी जिसकी मुक्ति 'विमल ज्ञान' की प्राप्ति मे हुई थी ।

१३ प्रिय वस्तु के दर्शनादि मे गति, स्थिति प्रासन प्रादि की तथा मुख, नेत्रप्रादि के व्यापारो की विशेषता या विलक्षणता ।

१४ शिलाक के सत्ताईस प्रगो मे से एक ।

रू. भे.—बिलास, वेलस, बेळास, विलासा ।

प्रल्पा,—विलासौ, विलासु ।

बिलासक–वि.—१ इधर उधर घूमने वाला, भ्रमणशील ।

२ दातार, दानी ।

३ विषय भोग करने वाला, मैथुन करने वाला ।

४ सुख भोग करने वाला, प्रानन्द भोग लूटने वाला ।

५ क्रीड़ा-खेल करने वाला ।

६ प्रनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीड़ा करने वाला, प्रामोद प्रमोद करने वाला ।

७ मनोरंजन करने वाला, मनोविनोद करने वाला ।

क्रि. वि. [प्र. बिला+शक] बिना शक, बेशक, निस्सदेह ।

उ०-जं तूं प्ररब जा हर भात कर हातिम नू मारघावैतो तोनूं मोटो फक इण पापी कह्यो बिलासक मार प्रास्यू । —नी. प्र

बिलासण–वि.—१ इधर-उधर घूमने वाला, भ्रमणशील ।

२ दातार, दानी ।

३ विषय भोग करने वाला, भोग बिलास करने वाला ।

४ सुख भोग करने वाला, प्रानन्द भोग करने वाला, उपभोग करन वाला ।

उ०—रूप भूप रतिराज, प्राण प्रगराज प्रकासण । कोरवराज घन करण, विमळ सुरराज बिलासण । —सू. प्र.

५ क्रीड़ा-खेल करने वाला ।

६ प्रनुराग या प्रेमपूर्ण क्रीडा करने वाला ।

७ मनोरंजन या मनोविनोद करने वाला ।

८ देखो 'विलासी' (पु.) (रू. भे.)

बिलासणो, बिलासबो–क्रि. स. [विलाशनम्] १ क्रीडा करना, खेल करना ।

२ प्रनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीडा करना, प्रामोद-प्रमोद करना ।

३ काम वासना को उत्तेजित करने हेतु स्त्रियोचित हाव-भाव, नाज-नखरे करना ।

४ मनोरंजन करना, मनोविनोद करना ।

५ भोग-विलास करना, विषय भोग करना, मैथुन करना ।

उ०—तिलोत्तमा मेणका सची उरवसी सरोतरि, सुरपत्ती सेवतां ईंद न धरै तिण प्रोसरि । कता महित कुबेर वरण निज तरणि बिलासत, सरस लेख 'प्रभसाह' पेखि साराह प्रकासत । —रा. रू.

६ सुख भोग करना, प्रानन्द भोग करना ।

क्रि. प्र.—७ प्रनुरक्त होना, लीन होना ।

उ०—पाठ प्रबध किताक प्रकासत, वेद पुरांण विचार बिलासत । पडत द्वीत प्रद्वीत प्रकासत, भासत देव जिसा दुज भासत ।

—जैपुर नगर री तारीफ रो गीत

८ शोभित होना, सुन्दर लगना ।

९ प्रानन्दित होना, हर्षित होना ।

बिलासणहार, हारौ (हारी), बिलासणियौ—वि० ।

बिलासिप्रोड़ौ, बिलासियोड़ौ, बिलास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिलासीजणौ, बिलासीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

बिलासणौ, बिलासबौ—रू० भे० ।

बिलासनी—देखो 'बिलासिणी' (रू. भे)

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति प्रनेउरी प्रागै चार बडारणा सहेलिप्रां रहै छै । प्रनगमंजरी, मदनमजरी, रतनमजरी, पदुमजरी । ताह बडारणा सहेलिप्रा प्रागै चार पात्रा सिगारणी खवास्या रहै । गुणमाळा, फूलमाळा, बिजैमाळा, दीपमाळा । तिका सिगारणी खवास्या प्रागै चार बिलासनी दासी रहै छै । —रा. सा. सं.

बिलासा–स स्त्री.—१ प्रभिलाषा, इच्छा ।

उ०—पेम पियाला पीजियै, मावा करि भरपूर । धनहरिया पीयां पछै, विसै बिलासा दूर । —प्रनुभववाणी

२ देखो 'बिलास' (रू. भे.)

उ०—१ सखी री मन थारै बारै मासा, आणी वैराग उलासा। गुरु विजयहरख जस वासा, वधतै धरमसील विलासा हो लाल। —ध. व. ग्र.

उ०—२ माया भई विडाणिया, भए बिडाणै लोग। जन हरीया नही आपना, विलसै बिलासा भोग। —अनुभववाणी

उ०—३ पिलग पथरणा पोढणं, सदा सहेली संग। हरीया होसी भगति बिन, विलसै बिलासा भग। —अनुभववाणी

उ०—४ वर नारि नेत्र निज वदन बिलासा, जाणिथौ अंतहकरण जई। हसि हसि भ्रहै हेक हेक हुई, ग्रह बाहरि सहचरी गई। —वेलि

बिलासि—देखो 'विलासी' (रू. भे.)

उ०—वैकठ बिलासि अपुन्य प्रकासि अपार अपार अग्रम पर, निरकार नर मधुकटक मारण विधन विडारण केवल रूप वराह कर। धर दाठ धर करि दैन कण कण रे पण रामण लक लई दधि लोप लज, प्रविगति अज हमीर समरि हरत्ता सि निरतर, ग्राह वेह ऊग्राहि गजपज पख वज। —पि. प्र.

बिलासिणी, बिलासिनी—स. स्त्री. [स. विलासिनी] १ विलास करने वाली, कामुक, भोग विलास में अनुरक्त या लीन स्त्री।

२ देवी का विशेषण।

३ वेश्या, गनिका।

४ विशेष शक्ति से युक्त।

५ सुदरी, युवा स्त्री।

६ एक वर्णवृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे ज, र, ज, ग, ग होता है।

रू. भे.—बिलासनी।

बिलासी—वि. [सं. विलासिन्] (स्त्री. बिलासण) १ दानी, दातार।

२ सुखभोग या आनन्द भोग करने वाला।

३ क्रीडा-खेल करने वाला।

४ प्रेमपूर्ण क्रीडा करने वाला, आमोद-प्रमोद करने वाला।

५ मनोरजन या मनोविनोद करने वाला।

उ०—सोभत (न) जोग मिले सुखकारी, नरपति तिकण असोभा न्यारो। रवि पख चतुरदसी सुखरासी, विद्या चतुरदस तणौ बिलासी। —रा. रू.

६ विषय भोग, भोग विलास या मैथुन करने वाला।

७ कामी, रसिक।

रू. भे.—बिलासण, बिलासि।

स. पु—१ आग, अग्नि।

२ श्री कृष्ण का नामान्तर।

३ भगवान श्रीविष्णु।

४ चान्द, चन्द्रमा।

५ साप, सर्प।

६ शिव शकर, महादेव।

७ कामदेव।

८ वरुण वृक्ष।

९ एक प्रकार का वर्णिक छद विशेष जिसमे मगण तगण फिर दो मगण और अन्त मे गुरु होता है तथा पाच, तीन व पाच पर यति होती है।

बिलासु—देखो 'विलास' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—समुद्रविजय सिवानदन चदन वचन विलासु, नेमि जिणेसर नितु नितु उन्नत महिम निवासु। —जयसेखर सूरि

बिलासौ—देखो 'विलास' (रू. भे.)

उ०—१ जाणै तै चौसठि कला, निरुपम वचन बिलासौ रे। चद्रवदन मृगलोयणी, गय गजराज उल्हासौ रे। —वि. कु.

उ०—२ चाकर चौकीदार ज्यु, बहुला राखै पासौ रे। काम करावै तै कन्हा, विलसै आप बिलासौ रे। —ध. व. ग्र.

बिलास्य—स. पु—तार लगा हुआ प्राचीन काल का एक बाजा।

बिलि—देखो 'वळै' (रू. भे.)

उ०—हिवइ वडा आवइ तै केहवा! बिलि मरिचना वडा, काजी ना वडा, घोल वडा, उडदनी दालि ना वडा मुगनी दालिना वडा कुलथीनी दालिना वडा. घणै घोलणै भीना, घणि तेलै सीना चमत्कारिया अत्यत, मुहडि घाल्या तुरत गलइ, घणू स्युं कहीइ स्वरग ना देव देवता पणि लाबा नइ टलवलि। —व. स.

बिलिखित—वि. [स.] १ लिखा हुआ।

२ खोदकर अकित किया हुआ।

बिलिप्त—वि —पुता हुआ, लिपा हुआ।

बिलियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—देखण लागौ यक्ष आवडी आसूं भरिया, चीतै मन कुरळाय आज आ किसडी बिळियां। निरख्या अेडा मेघ राजोगी चचळ होवै, वारा काई हवाल, कामणी कठ न होवै? —मेघ

बिलियोडौ—भू. का क.—आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ।

(स्त्री बिलियोडी)

बिलिबिलियौ—स. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—अथ वस्त्र, देवदूष्य चीनमुक गोजो चउडसी नीलनेत्र सचोपा पाटणिया हीरपट्ट साउला बिलिबिलिया नरम्म खमी उभयखरम्म वामखरम्म वामगऊआ मुगवना मागलिया वयराग

रां हीरागरां पुस्पागर जादर मेघाडंबर नेत्रपट्ट घोतपट्ट ।
—व. स.

विलीजणौ, विलीजबौ-क्रि अ.—खुर वाले पशुओं का 'मुहाड़ा' रोग ग्रस्त होना।

विलीजियोड़ौ-भू. का. कृ.—खुर वाले पशुओं का 'मुहाड़ा' रोग ग्रस्त हुवा हुआ।

(स्त्री. विलीजियोड़ी)

विली—देखो 'वळी' (रू. भे.)

उ०—अथ अव [ह] ठाभगावसर जलकल्लोल गगनमंडल व्यापिवा लागा अकस्मात् नक्षत्रमाला अद्रस्य थई, विली वाउ वाइवा लागा, तलाती माटी ऊपरि आराइं, दुर्गंध ऊछलिउ क्षार जलनउ छूड टु न लागइ, जलचर जीव आवी प्रवहणि वाजइं ।
—व. स

विलीन-वि [सं.] १ आपस मे घुले-मिले हुए, जो वापस अलग २ नहीं किये जा सके ।

२ जो गायब लुप्त, अदृष्य या ओझल हो गया हो :

३ नष्ट हुवा हुआ, नष्ट ।

४ मरा हुआ, मृत ।

विलुद्ध-वि. [सं. वि.+लुब्ध] १ मोहित, आकर्षित ।

२ लालायित ।

३ उलझा हुआ, फंसा हुआ ।

विलुद्धणौ, विलुद्धबौ—देखो 'विलूंधणौ, विलूधबौ' (रू. भे)

उ०—सुंदर मंदिर मालिया, मुलकंती नेह विलुद्ध । पूरै हाथै पूजियो, परमेस्वर मन-सुद्ध । —जयवाणी

विलुद्धणहार, हारौ (हारी), विलुद्धणियौ—वि० ।

विलुद्धिओड़ौ, विलुद्धियोड़ौ, विलुद्ध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलुद्धीजणौ, विलुद्धीजबौ—भाव वा० ।

विलुद्धियोड़ौ—देखो' विलूधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री विलुद्धियोड़ी)

विलुप्त-वि. [सं.] १ जिसका नाश हो गया हो, नष्ट ।

२ जो लोप या अदृश्य हो गया हो .

३ जो टूट फूट गया हो, नष्ट, बरबाद ।

विलुप्तायोनि-स. पु [सं.] स्त्रियों का एक प्रकार का रोग विशेष जो कि वायुदोष के कारण होता है ।

विलूधणौ, विलूंधबौ-क्रि. अ.—१ झंझटों में उलझना, फसना ।

उ०—वडी दुगमी देस जोधै विलूंधौ, मुधै अंगवं अतरानेर मूंधौ । तरै खेद होता अखा देह तांणी, प्रळंबेस लाधौ नहीं पाळ पांणी ।
—सू. प्र.

२ मोह मे फसना, मोहित होना, आकर्षित होना ।

उ०—१ सुरा मोरै झकोळियै, भवर न जाणै काय । प्रेम विलूंधौ भवरो, सखि मरंतो जाय । —अग्यात

उ०—२ विखियारस विखलेर विलूंधौ, सेवै क्रपण घेनुगत सूंधौ ।
—अग्यात

३ लालायित होना, लालच मे फसना ।

विलूंधणहार, हारौ (हारी), विलूंधणियौ—वि० ।

विलूंधियोड़ौ, विलूधियोड़ौ, विलूंध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विलूधीजणौ, विलूधीजबौ—भाव वा० ।

विलूधणौ, विलूधबौ, विलुद्धणौ, विलुद्धबौ, विलूधणौ, विलूधबौ
—रू० भे० ।

विलूंधियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ झंझटो व तकलीफो मे उलझा हुआ, फसा हुआ २ मोह मे फसा हुवा, मोहित हुवा हुआ, आकर्षित हुवा हुआ. ३ लालच में फसा हुआ, लालायित हुवा हुआ ।

(स्त्री. विलूधियोड़ी)

विलूंधौ-वि.—१ झंझटो व तकलीफो मे फसा हुआ ।

२ मोह मे फसा हुआ, मोहित ।

३ लालच मे फसा हुआ, लालायित ।

विलूंबणौ, विलूबबौ-क्रि. अ.—१ लटकना ।

उ०—१ खीवा यूं खुरसांण, घण तेगौ तरवार रौ। मुखमल हुंदै म्यान, खंवै विलम्बू खीवजी । —खीवजी री बात

उ०—२ करहो काची ना चरै, पाको दिसा न जाय । अधर विलूंबी वेलडी, तिण नै घणो झुराय । —अग्यात

२ मेघ या घनघटा आदि मडराना, छाना, झुकना ।

उ०—कुण थानै चाळा चाळिया, हो पनामारू जी हो, किण थांने दीवी, रे ढोला. सीख । सीख, हो पिया प्यारो रा ढोलाजी हो, हा रे, मांवणियौ विलूंब्यौ रै बीकानेर । —लो. गी.

३ समृद्धि या विशालता युक्त शोभित होना ।

४ छूना, स्पर्श होना ।

५ लिपटना, चिपकना ।

६ लत्पोबत्थ होना ।

क्रि. स.—७ आलिंग करना, गले लगना. या लगाना ।

उ०—यूं करता इतरा मे तौ हुइ फजर । कूकड़ा बोलिया । बाजो गजर । तद कवर वाग नूं सीख कीवी । तो पिण रतना आलिया भरी बाळा लूंबी, गळै विलूंबी । बोलणी न आयौ, गळौ गहरायौ । —र. हमीर

८ रोकना, अवरुद्ध करना।

९ देखो 'विलवरणौ, विलंबवौ' (रू. भे.)

बिलूंबरणहार, हारौ (हारी), बिलूंबणियौ—वि०।

बिलूंबिप्रोड़ौ, बिलूंबियोड़ौ बिलूंब्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलूंबीजणौ, बिलूंबीजबौ—कर्म वा० भाव वा०।

बलूंबणौ, बलूंबबौ, बिचूंबणौ, बिलुंबबौ, बिलूंबणौ, बिलूंबबौ, बिलूंमणौ, बिलूमबौ, बिलमणौ, बिलमबौ, बिलूमणौ, बिलूंबबौ —रू० भे०।

बिलूंबियोड़ो—भू. का. कृ.—१ लटका हुआ. २ मेघ या घनघटा आदि मंडराया हुआ, छाया हुआ, झुका हुआ. ३ समृद्धि या विशालता युक्त शोभित हुवा हुआ. ४ छूआ हुआ, स्पर्श हुवा हुआ. ५ लिपटा हुआ, चिपका हुआ. ६ लत्थोबत्थ हुवा हुआ. ७ आलिंगन किया हुआ, गले लगा या लगाया हुआ. ८ रोका हुआ, अवरुद्ध किया हुआ।

९ देखो 'बिलबियोड़ो' (रू भे.) (स्त्री. बिलंबियोड़ी)

बिलूंमणौ, बिलूंमबौ—देखो 'बिलूबणौ, बिलूबबौ' (रू भे)

उ०—बिरछा बिलूंबी पिया बेलडी, नरां बिलूंबी बिलूंबी नार, होजी ढोला नार, अब घर आय जा फूल गुलाब रा हो जी।
—लो. गी.

बिलूंमणहार, हारौ (हारी) बिलूंमणियौ—वि०।

बिलूंमिप्रोड़ौ, बिलूंमियोड़ौ, बिलूंम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलूंमीजणौ, बिलूमीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बिलूंमियोड़ो—देखो बिलूंबियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलूमियोड़ी)

बिळू—देखो 'बळू' (रू. भे.)

उ०—१ ढालू बाळा धणी रैं पखैं नी बंधै तौ बात रै है अठै ई मूंघो भाग जावै। सगळा आणंद रो मठ मर जावै। इण आणंद रो साव लेवण सारू मतै ई जणी जणौ ढालू बाळा मोट्यार रैं बिळू बणग्यो।
—फुलवाडी

उ०—२ बस्ती रा सगळा मिनख पळिया रैं बिळू रह्या। अर वो हाकांधाका गवूं अर खाखला री आधी पाती पटकायली।
—फुलवाडी

उ०—३ श्रो तो साचांणी दूध ई निकळियौ। जै कोई लफंगो व्हैतो तो केडीक माहेरो सजतो! आज तो भगवान नामी बिळू रह्यौ। दोयती रा भाग है।
—फुलवाडी

उ०—४ उतरतां ई पैंसा तो बेटी सूं खम्माघणी करी। पछै मोहरी झाल वागोळता ऊंट री गळाई बगळ बगळ फेवण लाग-भाग बिळू व्है जद यूं क्रिया करै।
—फुलवाडी

बिलूबणौ, बिलूबबौ—देखो विलूंबणौ, विलूंबबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सामाधरम विवादवाद, विपरीत बिलूबा।
—केसोदास गाडण

उ०—२ विमल जिनेसर सुणि अलवेसर, माहरा वचन अनूप। मनडो बिलूघो रे ताहरै रूप, जेम बिलूधो रे कमल मधूप।
—वि. कु.

उ०—३ सेठ तणौ मन माहि उदधि मा कुमरी वसै निसदीस, विरह बिलूधो रे बिसवावीस। नलिनी देखि भमर जिम अटकै, तिम तसु मिलण जगीस।
—वि. कु.

उ०—४ तीखा लोयण, कटि करळ, उर रत्तडा बिबीह। ढोला, थाकी मारुई, जाणि बिलूधउ सीह।
—ढो. मा.

बिलूधणहार, हारौ (हारी), बिलूधणियौ—वि०।

बिलूधिप्रोड़ौ, बिलूधियोड़ौ, बिलूध्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलूधीजणौ, बिलूधीजबौ—भाव वा०।

बिलूधियोड़ौ—देखो 'बिलूबियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलूधियोड़ी)

बिलूरणौ, बिलूरबौ—क्रि. स.—१ नोचना।

उ०—गुरु पूछी रे बन माहि गयउ, काउसग्ग रह्यउ समसानो रे जी। स्यालणी सरीर बिलूरियउ, वेदना सही असमांनो जी।
—स. कु.

२ छीनना, झपटना।

बिलूरणहार हारौ (हारी), बिलूरणियौ—वि०।

बिलूरिप्रोड़ौ, बिलूरियोड़ौ, बिलूरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिलूरीजणौ, बिलूरीजबौ—कर्म वा०।

बिलूरियोड़ौ—भू. का. कृ—१ नोचा हुआ. २ छीना हुआ, झपटा हुआ।

(स्त्री. बिलूरियोडी)

बिलेच्छ, बिलेच्छु—देखो 'म्लेच्छ'

उ०—वीर कोडि विह पाडवि मारी, म्लेच्छराय रथ भीमि विडारो। तु विराटनृप भीमि ऊदालिउ, दाउ देविगु बिलेच्छु सु बालिउ।
—सालिसूरि

बिळै—देखो वळै' (रू भे)

उ०—१ भला बुध अवतार तूं बाप बाबा, निमो धरम ना कीध निरबळ नियाबा। बुध धिणी जगत केणि भांति जीतौ, बिळै खाफर जिसौ दइत बीतौ।
—पी. ग्र.

उ०—२ सीत परणियौ सांम, गरब दुजरामि गमायो। हुओ अयोध्या हरख, बिळै कोसल्या बधायो।
—पी. ग्रं.

उ०—१ प्रसकर परै आया अनंत, बिळै मात पिति बिळकुळै ।
कूबड़ी हुंति कीधी क्रिपा, माहव भगता सां मिळै । —पी. ग्रं

विलेप, विलेपण, विलेपन—स. पु. [स. विलेप., विलेपनं] १ लेप आदि करने की क्रिया ।

उ०—१ कंचण ककण केऊर नेऊर पइ मुयदंडि, चदनि देह विलेपनु लेप न लागइ पिंडि । —जयसेखर सूरि

उ०—२ बेणी पवित्र करिस निखमीबर, मसतग चाढ़ै तुलसी-मजर । तुझ इम पवित्र करिस दसरथ-तण, चरच विलेप करै हर चदण । —ह्. र.

२ शरीर आदि पर चुपड़ने या लगाने की वस्तु, चन्दन, केसर या अन्य सुगन्धी द्रव्य आदि ।

विलेपनग्रह—स. पु [स. विलेपनं+गृह] वह स्थान जहा चन्दन आदि का लेपन किया जाता है ।

उ०—मज्जनग्रह विलेपनग्रह प्रसाधनग्रह अलकारग्रह आदरसग्रह अतःपुरग्रह क्रीडाग्रह रसवतीग्रह भोजनग्रह आग्स्थानग्रह कोसचैत्य प्राय मदिरपरिकरित बिसाली प्रणाली चित्रसाली । —व. स.

विलेसय—देखो 'बिलेसय' (रू भे.) (ह्. ना. मा.)

उ०—अर प्रणिहल पुर बत्री मैं पाधरो ही जाय पंठण रो सकल्प धरतो नही परंतु इसड़ा राग रा रिझवार अलगरद बिलेसय तो कठै न जाणिया । —व. भा.

विळै, विलै—१ देखो 'वळै' (रू. भे)

उ०—१ विमळ करेसर विलै, साधु सुखदेव सरीखा । बालमीक जैदेव, नाम नरहर कवि नीका । —पी. ग्र.

उ०—२ विही केम घणनाम, हेक हैग्रीव विलै हंम । सेत वाराह, प्राप विणि रूप तणो भ्रम । —पी ग्र.

२ देखो 'विलय' (रू. भे.)

उ०—१ फेर रावजी सूं कही कुवर घणा कही विलै लगावो । भाई पण विलै लगावो । —नापे साखले री वारता

उ०—२ केसव गुण गावण करूं स्री गुरुदेव सहाय । ऊअळ घट वुध ऊपजे, विघन विलै हुय जाय । —भगतमाळ

उ०—३ दादू देखि देखि सुमिरण करै, देखि देखि लै लीन । देखि देखि तन मन विलै, देखि देखि चित दीन । —दादूबाणी

उ०—४ तन मन विलै यो कीजियै, ज्यौं पाणी में लौण । जीव ब्रह्म एकै भया, तब दूजा कहियै कौंण । —दादूबाणी

उ०—५ नदी पार सपजै, पोत ग्रढ खेवट पाया । विपति विलै हुय जाय, जेम घर संपत आयां । —रा. रू.

विलोक—वि. [वि=रहित+लोक] १ जन रहित, निर्जन, शून्य ।

२ दृष्टि, नजर ।

विलोकण—सं. स्त्री. [सं. विलोकन] १ देखने की क्रिया, या भाव ।

२ जाचने की क्रिया, परीक्षण ।

३ तलाश करने की क्रिया, तलाशी ।

रू. भे.—बिलोकन ।

विलोकणि—स. स्त्री.—दृष्टि, नजर ।

उ०—सत कै सोनागिर' वाचा हरिचद, साच कै प्रजातसत्र गात रति विद । कपा की द्रस्टि अम्रित कै भाय, कोप की बिलोकणि काळ तैं सवाय । —रा. रू.

विलोकणौ, बिलोकबौ—१ अवलोकन करना, देखना ।

उ०—१ नरा अही अमरां उछडं थंडै थाळ नीर, मही रसा तळां घोर थडै आसमांण । महावीर देवासाल बिलोकै रोस मे मडै, पुळै कपी आळ छडं पखाडी पीठांण । —र. रू.

उ०—२ रवि रथ थाभि बिलोकै राजा रो आपरा ओध सिर-ताजा । दै दै पाव गजा दांतूसळ, वाधा जेम चढा वीजूजळ ।

—सू. प्र.

उ०—३ जिण बिलोकि कहियौ जगजामी, सिव छै सुखी सिवा तो स्वांमी । कहि इम प्रभु आतिथ-भ्रम कोधौ, दखि प्रमांण आसण अण दीधौ । —सू. प्र.

२ निरीक्षण या परीक्षण करना, जांचना ।

३ ढूंढना, तलाश करना ।

४ विचार करना, विचारना ।

बिलोकणहार, हारो, (हारी), बिलोकणियो—वि० ।

बिलोकिओड़ो, बिलोकियोड़ो, बिलोक्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिलोकीजणो, बिलोकीजबो—कर्म वा० ।

बिलोकणौ, बिलोकबौ, बिलोकवणौ, बिलोकवबौ—रू० भे० ।

बिलोकन—देखो 'विलोकण' (रू. भे.)

बिलोकवणौ, बिलोकवबौ—देखो 'विलोकणौ, विलोकबौ' (रू. भे.)

उ०—सब तमस मिटयो प्रगटयो सराह, वरत्यो सुभ ग्यान प्रकास वाह । चित कोक विलोकवै करत चाह, सब सुर नर जिनको करत सराह । —ध व ग्र.

बिलोकवणहार, हारो (हारी), बिलोकवणियो—वि० ।

विलोकविओड़ो, विलोकवियोड़ो, विलकव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिलोकवीजणो, बिलोकवीजबो—कर्म वा० ।

बिलोकवियोड़ो—देखो 'विलोकियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. विलोकवियोड़ी)

बिलोकियोड़ो—भू. का. कृ.—१ अवलोकन किया हुआ, देखा हुआ. २ निरीक्षण या परीक्षण किया हुआ, जांचा हुआ. ३ ढूंढा

हुआ, तलाश किया हुआ. ४ विचार किया हुआ, विचारा हुआ।
(स्त्री विलोकियोडी)

बिलोड़णौ, बिलोड़बौ—देखो 'बिलोडणौ, बिलोडबौ' (रू. भे.)

बिलोड़णहार, हारौ (हारी), बिलोड़णियौ—वि०।
बिलोड़िग्रोड़ो, बिलोडियोड़ो, बिलोड़योड़ो—भू० का० कृ०।
बिलोड़ीजणौ, बिलोड़ीजबौ—कर्म वा०।

बिलोड़ियोड़ो—देखो 'बिलोडियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. बिलोडियोडी)

बिलोचण, बिलोचन—स. पु. [स. विलोचनं] १ आंख, नेत्र।
(अ. मा., ह. ना. मा)

२ एक नरक जहा जाने से प्राणी अन्धा हो जाता है।

वि.—बिना आखो का, अन्धा।

बिलोचनअंबु—स पु. [स. विलोचन+अम्बु] आखो का पानी, आसू।

बिलोडणौ, बिलोडबौ—क्रि. स.—१ विलोडित करना, मथना।

उ०— "वल्लिगहन त्रोडतउ,पाखांण रोडतउ सुडादडि आच्छोडतउ गिरिनदी बिलोडतउ, महाद्रह डोहतउ, साहास्सिक तणा मन लोहतउ, तुरगम त्रासवतउ, पवन जिम चालतउ।" —व. स.

२ हिलाना, डुलाना।
३ युद्ध आदि मे शत्रु सैन्य को तितर-बितर करना।
४ उथल-पुथल करना।

बिलोडणहार, हारौ (हारी), बिलोडणियौ—वि०।
बिलोडिग्रोड़ो, बिलोडियोड़ो, बिलोडयोड़ो—भू० का० कृ०।
बिलोडीजणौ, बिलोडीजबौ—कर्म वा०।

बिलोडणौ, बिलोड़बौ, बिलोडणौ, बिलोडबौ, बिलोणौ, बिलोबौ बिलोवणौ, बिलोवबौ, बीलोणौ, बीलोबौ बिलोड़णौ, बिलोड़बौ बिलोणौ, बिलोबौ, बिलोवणौ, बिलोवबौ, बीलोणौ, बीलोबौ। —रू. भे.

बिलोडियोड़ो—भू. का कृ.—१ विलोडित किया हुआ, मथा हुआ २ हिलाया-डुलाया हुआ. ३ युद्ध आदि मे शत्रु सैन्य को तितर-बितर किया हुआ, हताश किया हुआ, ४ उथल-पुथल किया हुआ।
(स्त्री बिलोडियोडी)

बिलोणौ—देखो 'बिलोवणौ' (रू. भे.)

उ०—राज भवनि वैतालिक पढइ, बिलोणा तणा झरडका उपजइ, पथिक मारगि थया। ब्राह्मण तणै घरि वेद ध्वनि बिस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हूया। —रा. सा. स.

बिलोणौ, बिलोबौ—देखो 'बिलोडणौ, बिलोडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हुग्रो हस रो रूप ग्रो राम हुग्रै, वडो कछ अवतार दरिया बिलोग्रै। दिवै दान रतनां तणौ सरिसि देवां, जक दुख दे दाणवा राह जेवा —पी. ग्र.

उ०—२ बिलोग्रै वार बळिराव, वहि सुरा जैत सीता वरै। रुघनाथ तिकै दिन राह रौ, घडसां सिर अळगौ धरै। —पी. ग्रं.

उ०—३ दूहिजै उद्यम दूध जतन करि दही जमावै। बलि परभात बिलोइ, उदिम सेती घ्रत आवै —ध. व. ग्र.

उ०—४ मिळ मथाण धाराळ तणै मुह, जग्र कग्र सत्र होय जणौ जण। वार वार दध जेम बिलोग्रै, ताईया दळ नगराज तण। —दूदा नगराजोत रो गीत

बिलोणहार, हारौ (हारी), बिलोणियौ—वि०।
बिलोयोड़ो—भू० का० कृ०।
बिलोईजणौ, बिलोईजबौ—कर्म वा०।

बिलोप—स. पु. [सं.] १ बाधा, रोक, रुकावट।

२ चोरी से या बलात् वस्तु लेकर भागने की क्रिया।
३ हानि, नुकसान।
४ नाश, सहार।

उ०—आयो सकोप दळ ऊपरा, प्रबळ तोप गोळै सु पर। कारण बिलोप जग चो करण, धायो काळक कोप धर। —रा. रू.

५ उल्लंघन करने की क्रिया।
६ अदृश्य या आखो से ओझल होने की क्रिया।

वि —गवाने वाला, खोने वाला।

उ०—ग्रोरग कोप बिलोप भू, गिरां अकब्बर साह। सांम्हा चढिया वावसू, खडिया पिच्छम राह। —रा. रू.

बिलोपक—वि.—१ बाधा डालने वाला, रुकावट डालने वाला।
२ चोरी से या बलात वस्तु लेकर भागने वाला।
३ हानि या नुकसान करने वाला।
४ नाश करने वाला।
५ अदृश्य या विलुप्त होने वाला।
६ गंवाने वाला, खोने वाला।
७ उल्लघन करने वाला।

बिलोपणौ, बिलोपबौ—क्रि स.—१ बाधा डालना, रुकावट डालना।
२ चोरी से या बलात् वस्तु लेकर भागना।
३ हानि करना, नुकसान करना।
४ उल्लघन करना।
५ नाश करना, मिटाना।

६ नाश करना, संहार करना ।

क्रि. अ.—७ नाश होना, मिटना ।

उ०—सर सरित निरमळ नीर सुंदर, अमळ अंबर ओपयं । फिरि सुबुधि बधि सतसंग कारण, लुबुध होत बिलोपयं ।
—रा. रू.

८ संहार होना ।

९ अदृश्य होना, विलुप्त होना ।

१० गवाना, खोना ।

११ विमुख होना, पलटना ।

बिलोपणहार, हारौ (हारी), बिलोपणियौ—वि० ।

बिलोपिओड़ौ, बिलोपियोड़ौ, बिलोप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिलोपीजणौ, बिलोपीजबौ—कर्म वा, भाव वा० ।

बिलोपात—देखो 'बिलाप' (रू. भे.)

उ०—ऊपरां सांम्ही राति आई । ताहरां मन मैं विचार कियौ, हु केथी जाऊं ? मैं आगै कदे सासरो आखे दीठो नही । हिवै म्हारी कोण गति हुसी ? आ मन मैं बिलोपात करण लागी ।
—कावळी जोईयै नै नीडी खरळ री वात

बिलोपियोड़ौ-भू का. कृ.—१ बाधा डाला हुआ, रुकावट डाला हुआ. २ चोरी से या बलात् वस्तुएं लेकर भागा हुआ ३ हानि किया हुआ, नुकसान किया हुआ. ४ उल्लघन किया हुआ. ५ नाश किया हुआ, मिटाया हुआ. ६ सहार किया हुआ. ७ नाश हुवा हुआ, मिटा हुआ. ८ संहार हुवा हुआ. ९ अदृश्य हुवा हुआ, विलुप्त हुवा हुआ. १० गवाया हुवा, खोया हुआ. ११ विमुख हुवा हुआ, पलटा हुआ ।

बिलोपी वि.—विलोप करने वाला ।

बिलोभ, बिलोभन-वि. [म.] १ जिसमे लोभ का अभाव हो, लोभ से रहित ।

२ मोहित, आकर्षित, लालायित ।

उ०—सिणगार राज असि मोभ, लखि हुवै इंदर बिलोभ । मिळ मंत्र सुभड़ समाज, साजन निज रस साज । —सू. प्र.

स पु—१ मन को ललचाने वाला, लालच ।

२ आकर्षण ।

३ बहकावा, फुसलाहट ।

४ गुणकथन ।

बिलोम-वि. [स.] १ जिसके बाल न हो, लोम रहित ।

२ सामान्य रीति, नियम, स्वभाव आदि के विपरीत क्रम मे होने वाला ।

३ विपरीत क्रम यानी ऊपर से नीचे की ओर जाने वाला ।

४ विपरीत, उल्टा ।

उ०—चनै उतग अग कै मतग घूमतै नही, चलत सै बिलोम लोम व्योम चूमतै नही । झपेट देत झडकै ब्रह्मांड व्यापतै नही, छलंग देत छोनि है, मलग मानतै नही । —ऊ. का.

५ शत्रु, दुश्मन ।

उ०—सबळ कळ आरिट्या बिलोमां साभता, वाजतां त्रंबागळ कहर वेळा । 'पतो' ईडरपती ढिलौवै पलायत, हुवौ दळ छत्रिया छत्र हेळा । —किसोरदान बारहठ

सं पु.—१ स्वान, कुत्ता ।

२ सर्प, साप ।

३ वरुण का एक नामान्तर ।

४ कुए से पानी निकालने का एक प्रकार का साधन, रहट ।

५ स्वरो का अवरोहात्मक साधन ।

६ सगीत मे ऊचे स्वर से नीचे स्वर की ओर उतार, ऊचे स्वर की ओर से नीचे स्वर की ओर आने की क्रिया ।

७ पर्दे के बाद्यो सतार आदि मे एक प्रकार का मीड विशेष ।

वि. वि.—इसमे "सा" के पर्दे पर ही बिना तार बजाए तार को अदाज मे खीच कर 'रे" के स्थान तक ले जा कर मिजराब से प्रहार किया जाता है तथा फिर तार को वापस "सा" पर ले जाया जाता है ।

८ कपोतरोमा राजा का एक पुत्र ।

रू. भे.—विलम, ।

बिलोमसोमायन-स. पु. [सं.] एक प्रकार का व्रत विशेष, जिसके करने मे व्रतीसोमलोक प्राप्त होता है ।

वि वि.—यह कृष्ण पक्ष की चतुर्थी से आरम्भ कर, ३ दिन चार स्तनों का, ३ दिन दो स्तनो का, ३ दिन एक स्तन का दूध पीये फिर ३ दिन १ स्तन का, ३ दिन २ स्तनो का, ३ दिन तीन स्तनों का, और तीन दिन चार स्तन का दूध पी कर कुल चौबीस दिन तक यह व्रत किया जाता है ।

बिलोयोड़ौ—देखो 'बिलोडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिलोयोडी)

बिलोळ, बिलोल-वि. [सं. विलोल] १ हिलने-डुलने वाला, लहराने वाला ।

२ चचल, सुन्दर ।

३ ढीला, शिथिल ।

उ०—भवि भवसउ तै बोलइ बोलइ गिरिसिर टोल, सहजिइ परभव भेदन वेदन वदन बिलोल । —जयसेखर सूरि

४ अस्त-व्यस्त, बिखरा हुआ ।

स. पु.—ऐश-आराम ।

उ०—विलसै दरब बिलोळ, हरामखोर जो नर हुवै । पावै जम री पोळ, भूरदखिणा 'भेरिया' । —महाराजा बलवतसिंह रतलाम

बिलोळणो, बिलोळबौ—देखो 'बिलोलणो, बिलोलबौ' (रू. भे.)

बिलोळणहार, हारौ (हारी), बिलोळणियौ—वि० ।

बिलोळिग्रोड़ौ, बिलोळियोड़ौ, बिलोळयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिलोळीजणो, बिलोळीजबौ—कर्म वा० ।

बिलोलणो, बिलोलबौ—क्रि. स —१ ऐश-आराम करना ।

२ हिलाना-डुलाना ।

३ हवा करना, हवा डालना ।

उ०—वनिता समइ न वेदना, करतां कोडि उपाय । वाउ बिलोलइ वीजणइ, को चदन घमी लाय । —मा. का प्र.

बिलोलणहार, हारौ (हारी), बिलोलणियौ—वि० ।

बिलोलिग्रोड़ौ, बिलोलियोड़ौ, बिलोल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिलोलीजणो, बिलोलीजबौ—कर्म वा० ।

बिलोळणो, बिलोळबौ—रू० भे० ।

बिलोळियोड़ौ, बिलोलियोड़ौ—भू का कृ —१ ऐश-आराम किया हुआ.

२ हिलाया-डुलाया हुआ. ३ हवा किया हुआ, हवा डाला हुआ ।

(स्त्री बिलोळियोडी, बिलोलियोडी)

बिलोवणउ—देखो 'बिलोवणो' (रू. भे)

उ०—दसमी भावना एम भावउ, लोक स्वरूप मथान रे । जिम बिलोवणउ बिलोवता थका, सरीर नउ संस्थान रे । —स. कु

बिलोवणी—स स्त्री.—१ मिट्टी का बना वह छोटा पात्र जिसमे दही मथा जाता है ।

२ दही मथने वाली स्त्री ।

रू. भे.—बिलोवण, बिलोवणी ।

बिलोवणू, बिलोवणो—सं पु.—१ मिट्टी का बना वह बड़ा पात्र जिसमे दही मथा जाता है ।

उ०—मूधा पड्या रे बिलोवणा, रीती रं'वै जाय छछियार । वारी, म्हारा गूगा, भल रही वो । —लो. गी.

२ दही आदि मथने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ माय बिलोवै बिलोवणू, बहन रसोई कै माय । सोदागर महदी राचणी । —लो. गी

उ०—२ हवइ कूकडा बोल्या, लगारेक नीदली डोल्या । नीदई भकोल्या, मूकी सभोगनी लोल्या, स्त्री भरतार डमडोल्या । ग्रावइ नारि, बारि उघारि, राति ग्रधारि । दही सभाल्यूं, बिलोवणो घाल्यू । —रा सा. स.

उ०—३ जाभरकै नांनी-मा रै ई साथै ऊठग्यी । ओड़ै बैठ दुवारी करी । थोड़ी ताळ बिलोवणी ई घमोड़यो । पछै सूरज री ओक बासड़ा ऊचो चढ्यो जणा खाखरा माथै माखण मिसरी लेय कलेवी करण लागी । —फुलवाड़ी

उ०—४ थू इं घणा रै मूंडै सुणियो व्हैला कै पुत्र री जड सदा हरी रं'वै । ग्रै काला मिनखा री काली बाता है । थारी मासी तो पिचियासी बरसां मे बिखा रो बिलोवणो करनै फगत इण ग्यांन रो माखण निकाळियो कै धन री जड़ सदा हरी रंवै ।

—फुलवाडी

क्रि. प्र.—करणो, घमोडणो, घालणो, होणो ।

रू. भे.—बिलोवणी, बिलोणो, बिलोवणउ, बिलोहणो ।

बिलोवणो, बिलोवबौ—देखो बिलोडणो, बिलोडबो' (रू. भे.)

उ०—१ माय बिलोवै बिलोवणू, बहन रसोई कै मांय । सोदागर महदी राचणी । —लो. गी.

उ०—२ दसमी भावना एम भावउ, लोक स्वरूप मथान रे । जिम बिलोवणउ बिलोवतां थका, सरीर नउ सस्थान रे ।

—स. कु.

उ०—३ एक बाई कह्यो स्वांमीजी म्हारै भेंस ब्यावै जद पधारो तो लाहो लेवूं । तै किम भेंस ब्याया एक महिना नाइ दूध दही वावर देवै, पिण बिलोवै नही । तै देवी रै टांणे पधारज्यो ।

—भि. द्र.

उ०—४ पीसण खाडण प्रसिद्ध, वलै गौ दूहि बिलोवै । जीमण राधि जिमाव, लाज स् जिमै लुकोवै । —ध. व. ग्र.

बिलोवणहार, हारौ (हारी), बिलोवणियौ—वि० ।

बिलोविग्रोड़ौ, बिलोवियोड़ौ, बिलोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिलोवीजणो, बीलोवीजबौ—कर्म वा० ।

बिलोवियोड़ौ—देखो 'बिलोडियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिलोवियोडी)

बिलोहणो—देखो 'बिलोवणो' (रू. भे.)

उ०—कमळा किया करतार, भर बुडी तग भार । नेह देह छोडीजै लास, बिलोहणं वरहास । —गु. रू. ब.

बिलोहित—स. पु [स.] १ तीन सिर, तीन पैर एवं तीन हाथो वाला एक राक्षस जो कश्यप एव खशा का पुत्र था ।

२ कश्यप एवं सुरभि के पुत्रो मे से एक रुद्र ।

बिलौ—सं. पु.—१ वर्षा ऋतु मे हरे घास या पानी मे होने वाला कीडा विशेष ।

२ उक्त कीडे के पेट मे चले जाने से गाय, बैल, भैंस आदि पशुग्रो को होने वाला रोग विशेष ।

वि. वि.—इस रोग मे पशु का अग अकड जाता है । अगर कीड़ा नाक मे चला जाये तो पशु मर भी जाता है ।

बिल्कुल—देखो 'बिलकुल' (रू. भे.)

बिल्कुळणी, बिल्कुळबौ—देखो 'बिळकुळणी, बिळकुळबौ' (रू. भे.)

बिल्कुळणहार, हारौ (हारी), बिल्कुळणियौ—वि०।
बिल्कुळियोड़ो, बिल्कुळियोड़ौ बिल्कुळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिल्कुळीजणौ, बिल्कुळीजबौ—भाव वा०।

बिल्कुळियोड़ौ—देखो 'बिळकुळियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिल्कुळियोडी)

बिळधा—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—कोट किला करताह, विखरता लागै बिळधा। मानव नै भरताह, वार न लगे वसतिया। —समेळजी बारहठ

बिल्यायत—देखो 'विलायत' (रू. भे.)

बिल्यौ—देखो 'बिल्यौ' (रू. भे.)

बिल्लगणौ, बिल्लगबौ—देखो 'विलगणौ, विलगबौ' (रू. भे.)

विल्लगणहार, हारौ (हारी), बिल्लगणियौ—वि०।
बिल्लगियोड़ौ, बिल्लगियोड़ौ, बिल्लग्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बिल्लगीजणौ, बिल्लगीजबौ—भाव वा०।

बिल्लगियोड़ौ—देखो बिलगियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिल्लगियोडी)

बिल्लभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

बिल्लल—स पु.—एक देश का नाम।

उ०—सगवरा गज्जरा सबर बरबरकाय चिलाय तुरङ गुंड उडकुड पक्करा चुक्करा कुडबक तोसल सिंहल दमिल अज्जन बिल्लल पारस खस लउस हारो समोसहिम रोम मरुग। —व. स.

बिल्लायत—देखो 'बिलायत' (रू भे.)

उ०—जुदा मिसल जग हूत, अमल बिल्लायत वाळा। इसडा बार हजार, खूब चढिया कळिवाळा —सू. प्र.

बिल्लौ—देखो 'बिल्लौ' (रू. भे.)

बिल्वपत्र—सं. पु [स.] बेल का पत्ता जो प्राय: शिवजी की पूजा मे चढाने के काम मे आता है।

बिल्वमंगळ—स.पु. [स.बिल्वमगल] श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त एक ब्राह्मण पुत्र।

वि. वि.—इसके पिता कृष्णवेणी नदी के तट पर रहते थे। यह पहले तो शात व शिष्ट स्वभाव के थे। मगर पिता की मृत्युपरात दुराचारी हो गये व एक वेश्या के पास भी जाने लगे। पिता के श्राद्ध के दिन भी चिंतामणि नामक वेश्या के पास रात को गये। नदी मे किसी मृत स्त्री के शव को लकडी समझ कर उसी से नदी पार की तथा वेश्या के द्वार बद होने पर एक साप को रस्सी समझ कर उसी से दीवार फांद कर अन्दर गये। उसी दिन वेश्या के फटकार भरे उपदेश को मान कर उसी को अपना गुरु बनाया तथा अपनी आखें फोड ली और कृष्ण की भक्ति में लीन हो गये। इसीने "श्रीकृष्ण कर्णामृत जिसे" "लीला गुरु" भी कहते हैं, की रचना की थी।

बिवत—स.—१ स्थिति, हालत।

उ०—जो नरसघजी की वाजी साबूत रहसी, थे साबत लोकां नू लै नीसरसो तो। बळै पठाण नु वैगौ धको देसां। बिवत देख दुसमण कन्है नीसरै, बिवत देख लडै, तिकां धरती रहै। भर आखता हुय नै काबू बिना लड मरै तिका री धरती जाहि। —राजा नरसिंघ री बात

बिवक्षु—स. पु. [स.] कौरव वंशीय निमिचिक राजा का नामान्तर जो अधिसीमकृष्ण का पुत्र था।

बिवची—देखो 'विमची' (रू. भे) (अमरत)

बिवरस—वि. [स.] सन्तान हीन, जिसके सन्तान न हो।

बिवध—१ देखो 'विबुध' (रू. भे.) (अ. मा)

उ०—बिवध घणमाळ नमचक्र माझल बसी, रवि ससी न दीसै दिवस रजनी। मनोभव लगाई बांण मोहण मदन, सहस बातां सजन आण सजनी। —बां. दा.

२ देखो 'विविध' (रू. भे.)

उ०—१ जग ईख स्वाद पी ऊखरस, जिम अवर धार अनारयं। सुख परम दिनपति नृपति सेवत, बिविध भोग बिहारयं। —रा. रू.

उ०—२ बिविध सासत्र रा जाणणहार त्रिकाळदरसी इसा स्त्री ब्रह्माजी कनै सिधाई जे दरद सुणाईजै, कहै तिका विध कीजै असुर बिहंडीजै, क्रीत कानै सुणीजै। —मा. वचनिका

उ०—३ कहो धरा पूर धुर कथा, बिसवामित्र बिवध। —रांमरासौ

बिवधा—१ देखो 'विबुध' (रू. भे)

२ देखो 'विविधता, (रू. भे.)

बिवधाजांण—देखो 'विविधजाण' (रू. भे.) (अ. मा.)

बिवधि—देखो 'विविध' (रू भे)

उ०—आगम आवण हरख उमडै, माडहि कोड नरुकां मंडै। छत्रपति हित मारग छडकाया, बिवधि राज मगि फूल बिछाया। —रा. रू.

बिवनउ—देखो 'बिवनौ' (रू भे.)

उ०—१ धण घाटि लियइ आयउ घरेहि, छागिया मेछ घर घाति छेहि। जणियार जोध बिवनउ जियार, ताडिया वच्छ वधांणि तियार। —रा. ज. सी.

विवनणो, विवनबो–क्रि. अ.—मरना, अवसान होना।

उ०—१ नर विवनें वा नह रहै, जग मैं आ रह जाय। कुळवती सू कीत री, उलटी गति इण भाय। —बा दा

उ०—२ विवनें 'वाघ' धरै मूछां बळ, बैठो गादी 'गग' महाबळ। 'माल' 'गग' गादी राव माक, सवळा किया आपरै मारू। —रा. रू

उ०—३ तरण जास पास नय कुळ तणी, भीचै भोर आचा सही। अभिनमो 'क्रम' दानेसवर रायसिंघ विवनो म कही। —करमसी आसियो

उ०—४ मारग जिकण गयो राव मारू, पाछो नह देखा पग्त। तो विवनें थापा वड त्यागी, व्रन खट री तूटी वरत। —संकरदान दधवाडियो

विवनणहार, हारो (हारी), विवनणियो—वि०।

विवनिप्रोड़ो, विवनियोड़ो, विवन्योड़ो—भू० का० कृ०।

विवनीजणो, विवनीजबो—भाव वा०।

विवन्नणो, विवन्नबो, विविनणो, विविनबो विविन्नणो, विविन्नबो —रू० भे०।

विवनियोड़ो–भू. का. कृ.—मरा हुआ, अवसान हुवा हुआ।

(स्त्री. विवनियोड़ी)

विवनो–वि. (स्त्री. विवनी) १ जिसका अवसान हो गया हो, मरा हुआ, मृत।

उ०—जोडै नांणो जगत मे, कर कर करडा काम। विवनै जीवै बाणियो, नाणा रो सुण नाम। —बा. दा.

उ०—२ गिणजै मत दांमण चोळ गनो, मुझ बंधव साचेय भाव मनो। विवनो घर जीवत रूप मणै, चारण कुळ सकट 'पाल' सुणै। —पा प्र.

उ०—३ सुण बाधव विवनो समर, राव किया कर रेठ। दन हूतो नभ दुघड़ी, जूझ रह्यो पिड जेठ। —पा. प्र.

उ०—४ एकलो आय भतीत, जती काय अकेलो जासी। घण विवनी री घणी, गरढ जासी अभवासी। —अरजुणजी बारहठ

२ उदास, खिन्नचित्त।

३ विपत्तिग्रस्त, सकटापन्न।

रू. भे.—विवनउ, विवन्नउ, विवन्नो, विविनो, विविन्नो, वीवनो, वीवन्नो।

विवन्नउ—देखो 'विवनो' (रू. भे.)

उ०—सीगिळ उत्येडण सत्रा, जोध विवन्नउ जाणि। आकलु आडिड ऊठियउ, विक्रमाइतु बखांणि। —रा. ज. सी.

विवन्नणो, विवन्नबो—देखो 'विवनणो, विवनबो' (रू. भे)

उ०—वेगड़उ साइ 'वीकउ' विवन्न, कुळभाग्ग तेथि उदियउ 'करन्न'। ऊधरिय छत्र फेरावि आंण, ताई मंडोवर मूलतांण। —रा. ज. सी.

विवन्नणहार, हारो (हारी), विवन्नणियो—वि०।

विवन्नियोड़ो विवन्नियोड़ो, विवन्नयोड़ो—भू० का० कृ०।

विवन्नीजणो, विवन्नीजबो – भाव वा०।

विवन्नियोड़ो—देखो 'विवनियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री. विवन्नियोड़ी)

विवन्नो—देखो 'विवनो' (रू भे)

उ०-महाराजा 'अजमाल', बडो अरिसाल विवन्नो। गयो गंम सुर लोक, इसो इक जोग उपन्नो। हिंदू धरम निबाह, सरम गजै मेछांणा। चक्रवती चालियो, प्रगट वैकुठ पयांणा। —रा. रू.

(स्त्री. विवन्नी)

विवर–स. पु. [स] १ सर्प, चूहों व चीटियों के रहने का स्थान, छिद्र बिल।

उ०—१ इक कहै चीटी एह, छित लखो सुध्र अणछेह। वस रही संग परवार, घर विवर घर निरधार। —रा. रू.

उ०—२ सीह जिम अडर डर अनमि 'सिवसाह' हर, रिमा विख-धर जिहि समर गाहै। तेज खग-ईस री टकर लागी तिका, रहै नह वारधर विवर माहै। —राव देवीसिंघ सेखावत रो गीत

२ कन्दरा, गुफा।

उ०—१ च्यार घड़ी तलक च्यारू रेढा घणा सखरा लडिया। आदमी घणो घायल हुवा। सारा धाप रहिया अर आबू रा विवर पण भूंडण व रेढा री नजर आया। तद सारो साथ उठै ऊभो रहियो। कुअर नू सभाळ घोडै सवार कियो छै। इतरै भूंडण-रेढो। विवर जा वडिया। —डाढाळा सूर री वात

उ०—२ विखम घाट गोरख पखै, कवण पैसै विवर। चीत कुण रुदर वण जहर चाढै, असक देता बचै जोधपुर 'ऊदला', कहर दरीया वसु तुह-भ काढै। —मालो सादू

३ छेद, छिद्र।

उ०—नाभि-विवर अति रुअडु, घण नलीआरइ पेटि। उन्नत उर विसाल, पण भल तइ सकइ न भेटि। —मा. का. प्र.

४ गर्त, गड्ढा।

उ०—१ अब विवर तनसीत मुतो सब तीग्थ न्हावै। कासी छाडै देह हेम बसि हाड गमावै। —ह. पु. वा.

उ०—२ कनिया भोमि विवर लघु काया, आयस जेम दास वरि आया। वदियो वळि घर मगन बाळ वय, जय मम वर, मम पिता पराजय। —सू. प्र.

५ दरार, खाई।

६ पाताल। (डिं. नां. मा.)

७ त्रुटि, गल्ती।

८ किसी ठोस पदार्थ मे होने वाला खोखला स्थान।

९ भाव।

१० मूर्ख, नासमझ, विवेकहीन व्यक्ति। (ह. ना. मा.)

११ भूगर्भ, तहखाना।

उ०—अर उहि रिति कै आवरणि भुजग जु सरप था। अर धनवत मनुष्य था त्या प्रथी का पुड विवरण करि ऊडी ठोडा सवारि रहा ए दून्यौं वरग बिवर कहता भुहिरा निखात ठोड़ तहा जाइ रहवासि कीधा। —वेलि टी.

१२ समुद्र, सागर। (डिं. नां. मा.)

१३ ब्योरा, हाल, वृतान्त, विवरण।

उ०—१ आत्री जग तणी कथ एती, सारी बिवर अकब्बर नै। अै राठोड़ हुवे ज्या आगे, भिडता ऊभा पैला आगे —रा. रू.

उ०—२ वाको ग्यो अजमेर सु, साह हजूर सताब। पत्र परखि दिया माह इर, लिखिया बिवर नवाब। —रा. रू.

उ०—३ विगत सुणी सारी बिवर, आया हितू हजूर। अरि भंजणी आवियो, दळा न वै था दूर। —रा. रू.

उ०—४ कुबजा नारद बिदर री, बिवरां संजुत बात। हरि रा हा ज्यं हुए, दासा नूं सुख दात। —बां. दा.

१४ भेदबाज, कपटी व्यक्ति।

१५ दूत, खबरनवीस।

उ०—अबदुल्ला मुरा बधु अवाजा, रीत कही सुणना महाराजा। पत्र मा हित हूंत पठाया, समाचार सहि बिवर सुणाया। —रा. रू.

१६ नौ की संख्या।*

रू. भे.—बवर, बिभर, बिमर, बिब्बर, बिमर, बिम्मर, बमर, ववर, वि० बिम्मर, विवरण।

अल्पा.—भरो।

विवरजत, विवरत, बिबरजिति—वि. [स. विवर्जित] १ वर्जित, निषिद्ध, मना किया हुआ।

उ०—बेहू पा रान निवाद बिबरजित, "जोध" कळह कथ जिका जुई। रायता नो वाळो भगवट, हव जाणे कुळवाट हुई। —महम्मदजी बारहठ

२ अपेक्षित, वंचित।

३ रहित, बिना,

उ०—१ भाई नह बळद पियारो, तिह के गळै करद क्यां सा' रो? विणि चीन्ह खुदाई तरस विवरजत, केहा मुसलमांणो? —अज्ञात

उ०—२ उदै अस्त आवै न जाय, सकल वियापि सहज भाय। मोह द्रोह आसा न पास, बरण विवरजित सु प्रकास। —ह. पु. वां.

उ०—३ सकल रूप रस रूप बिबरजित, सकल रूप तै कीया। सकल रूप करि सबतै न्यारा, साधों कू सुख दीया। —ह. पु. वां.

उ०—४ सतगुरु सरणि गई सब दुवध्या, एक निरंजन पाया। करम बिबरजिति सकल वियापी, सो मेरै मन भाया। —ह पु वां.

४ रुका हुआ, अवरुद्ध।

५ वर्णन किया हुआ, कहा हुआ, वर्णित।

रू. भे—बिबरजित, बिबरजिन।

बिबरजितदे, बिबरजितदेह—स. पु. [स विवर्जित+देह] निराकार, ईश्वर, परमेश्वर।

उ०—अनाथां-नाथ अनंत अछेह, दयाळ मूरत्ति बिबरजितदेह। बिना बपु रूप अनत बिथार, अमूळ बिरख सु विस्वाधार। —ह. र.

रू. भे—बिबरजितदेह।

विवरण—स पु [स विवरण] १ प्रकट करने की क्रिया, प्रकटन, प्रदर्शन।

२ सविस्तार वर्णन, विवेचना, व्याख्याभाष्य, टीका।

उ०—विवरण जो वेलि रसिक रस वछो करो करणि तो मूझ कथ। पूरै इतै प्रामिस्यो पूरो, इम्रं ओछै ओछो अरथ। —वेलि.

३ छेदने की क्रिया छेदन।

उ० तव सुहव जु नायिका ताह का उरस्थळ वैकुंठ प्राय हुई रहीआ छै। अर उहि रिति कै आवरणि भुजग सु सरप था। अर धनवंत मनुष्य था त्या प्रथी का पुड विवरण करि ऊंडी ठोड़ा सवारि एहा ए दून्यौं वरग विवर कहता भुंहिरा निखात थोड तहा जाइ रहवासि कीधा। —वेलि टी.

[स. विवर्ण] ४ जातिच्युत या जाति से बहिष्कृत व्यक्ति।

५ मन्तव्य, स्पष्टीकरण।

६ साहित्य मे एक भाव जिसमें नायक या नायिका के मुख का रग भय, मोह, क्रोध, लज्जा आदि के कारण बदल जाता है।

वि. [स. विवर्ण] १ नीच, कमीना, निम्न जाति या कुजाति का।

२ बुरे या बेमेल रग का, बदरग ।

उ०—**विवरण** बरण स्तबवरण लबकरण व्है विले, मही न वरन वरन मरन उलमरन के मिले । गती रती न ग्यान की गद बिग्यान की गमी, स्तुती परी करी सदा स्तुती जनम्नी सभी ।
—ऊ का

३ मूर्ख, नासमझ । (प्र. मा)

४ कान्तिहीन, शोभा व चमक रहित ।

५ अनेक रगो का, रग-बिरगा ।

६ देखो 'विवर' (रू भे)

रू. भे.—विवरण, बिवरण, बिउरण, विवरण ।

विवरत-स. पु. [स विवर्त] १ चक्कर, फेरा, घुमाव ।

२ वापिस लौटने की क्रिया, प्रत्यावर्तन ।

३ भ्रम, भ्रान्ति ।

४ नृत्य, नाच ।

५ परिवर्तन ।

६ समुदाय, समूह ।

विवरतकलप, विवरतकल्प-स. पु [सं. विवर्तकल्प] एक कल्प विशेष जिसमे लोक क्रमश: उन्नति की ओर से अवनति की ओर अग्रसित होते है। (जैन)

विवरतवाद-स. पु. [स. विवर्त+वाद] वेदान्तियो के अनुसार वह सिद्धात विशेष जिसके अनुसार ब्रह्म ही सृष्टि का मुख्य उत्पत्ति स्थान है व ससार माया व मिथ्या है ।

विवरतस्थायीकलप, विवरतस्थायीकल्प-स. पु [स विवर्तकस्थायीकल्प] वह समय जब लोक अवनति को प्राप्त कर शून्य दशा मे भ्रमण करता है, कल्पान्त, प्रलय ।

विवरधन-स. पु [स विवर्धन] १ मणिवर एव देवजनी का एक पुत्र, यक्ष ।

२ युधिष्ठर की सभा का एक राजा ।

विवराणौ, विवराबौ-क्रि. स.—उच्चरित करवाना ।

विवराणहार, हारौ (हारी), विवराणियौ—वि० ।

विवरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विवराईजणौ, विवराईजबौ—कर्म वा० ।

विवरावणौ, विवरावबौ—रू० भे० ।

विवरायोड़ौ—भू का कृ.—उच्चरित करवाया हुआ ।

(स्त्री. विवरायोडी)

विवरावणौ, विवरावबौ—देखो 'विवराणौ, विवराबौ (रू. भे.)

उ०—सखिया राणी सू सकळ, **विवरावै** मह आणि । सालहकुवर सपनै मिळे, पदमण अग कुमलाणि । —ढो. मा.

विवरावणहार, हारौ (हारी), विवरावणियौ—वि० ।

विवराविग्रोड़ो, विवरावियोड़ो, विवराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

विवरावीजणौ, विवरावीजबौ—कर्म वा० ।

विवरावियोड़ो—देखो विवरायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विवरावियोडी)

विवरि, विवरी-स पु.—सन्देश व सूचना लाने व ले जाने वा, सन्देशवाहक, दूत ।

उ०—'सेर' अरज मानै सुख पायौ, 'भ्रमर' पास निज मंत्री आं । सेर विलद तणी विध सारी, 'भ्रमरै' सू तिण **विवरि** उच' ।
—. रू.

वि.—वर्णन करने वाला ।

विवरौ-स पु —१ भेद, रहस्य ।

उ०—१ नव दिन नाभी घ्यान को, **विवरौ** देह बताय जन हरीया ररकार सु, सहजा ताळी लाय । —अनुभवाणी

उ०—२ कहन सुनन की बात का, हरिया **विवरा** बाव कोई महरम हुय दाखवै, को कहै बात बनाय । —अनुभवाणी

उ०—३ पण परभात रै पोहर राज दरबार करो छ ताहरा रावळो मुह उतरियो लागै सु कामू जाणीजै ? ताहरालाखेजी कहयो हडा भाणेज ! तोनू कहीस, पण एकात कहीस ए बात रो **विवरौ** छै । —नैणसी

२ कारण ।

३ विवरण, ब्यौरा, वृतात, हाल ।

उ०—१ उर प्रगटे सुख ऊपरौ, सुणि **विवरौ** 'अभेस' । ज्यौ जिग काम तपोवनां, राम कियो मोछाह । —रा. रू.

उ०—२ न्रपत ममेळ पधारिया, **विवरौ** थयौ विरुध । आवी अरज उकील री, आ मत मानो बात । —रा. रू.

उ०—३ तिसै चौकी पोहरै उमराव था, त्याने कहयो, चौकी किण किण री छै । जिकै उमराव था तिण नाम लै लै नै कहयो । तरै राजा कहयो, देखां ऊगुण दिसि कोई गावै छै, कोई रोवै छै । तिणरौ **विवरौ** ल्यावो । —जग पवार री बात

४ ज्ञान, समझ, बुद्धि, विचार ।

५ अन्तर, फर्क ।

उ०—१ सूर लडै जब कध बिर, कमंध लडै ग सीस । हरिया सूर कमध बिच, **विवरौ** बिसवा बीस । —अनुभववाणी

उ०—२ घडौ कूलडो तावणो, घडिया घाट मैक । कुल करमा **विवरौ** कियो, हरीया माटी हेक । —अनुभववाणी

उ०—३ जस न हुवै धन जोडिया, धन दीधै जस होय । बीसलदे बीकम तणो, जग मे **विवरौ** जोय । —बां. दा.

उ०—४ जाति पाति बिवरौ करै, भरणै ग्रांणै भिन । हरिया इन परसाद मैं, पाप न कोइ पिन । —ग्रनुभववाणी

उ०—५ दमडी चमडी बीच में, हरिया बिवरौ होय । दमड़ी सु दावा किया, चमडी मा करि जोय । ग्रनुभववांणी

६ व्याख्या, टीका ।

७ संक्षिप्त जानकारी, परिचय ।

उ०—कोडीधज साहूरो कवर, माहरो नांव पनोज । ग्राईछु उदमाद सु. तरं खेलवा तीज । किण घर सो ग्राया कहो, जास्यौ सिध जोधार । म्हारौ बिवरौ म्है दियौ, कुण छौ राज कवार । —पना

७ बयान ।

रू. भे.—बिवरौ, बीवरौ, बीवरौ ।

बिवस-वि. [सं बिवश] १ जिसका कोई बस नही चलता हो, बेबस, लाचार ।

उ०—लुटेही लेत विवेक का डेरा, बुद्धिबळ यदपि करूं बहुतेरा । हाय रांम नहिं कछु बस मेरा, मरत हूं बिवस प्रभु धावउ सवेरा । —मीरा

२ जो अपने या किसी के काबू मे न हो, वेकाबू ।

३ जिसे होश न हो, बेहोश ।

४ मरा हुग्रा, मृत ।

५ कारण ।

उ०—ग्रादर कियौ मिळे ग्रसुरेसुर, दियो नांम न्रप तेग बहादुर । भावी बिवस जोधपुर भायौ, चगथै त्या महराव चलायौ । —रा. रू.

रू. भे'—बिवस, वेवस, बिवसि ।

बिवसता-स स्त्री. [सं. विवशता] विवश होने की ग्रवस्था या भाव ।

बिवसवत-स. पु [स. विवस्वत] १ एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नाम ।

२ चौदह सौ किरणों वाला एक सूर्य जो ज्येष्ठ माह मे प्रकाशित होता है ।

३ मनु एव यम का पिता, प्रथम यज्ञकर्त्ता ।

४ चाक्षुष मन्वन्तर के सप्तर्षियों मे से एक ।

५ गरुड के द्वारा मारा गया एक ग्रसुर ।

६ उदित होने वाले सूर्य का प्रतिनिधित्वकर्त्ता एक देवता ।

७ देखो 'बिवसवान' (रू. भे.)

रू. भे.—बिवस्वत ।

बिवसवांन, बिवसाण, बिबसांन-स. पु. [स. बिवस्वत्] १ सूरज, सूर्य । (ग्र. मा , क. कु. बो., नां. मा., ह. ना. मा.)

बि. वि -यह बारह ग्रादित्यों मे से एक है, जो कश्यप प्रजापति व दक्षकन्या ग्रदिती के बारह पुत्रो में से एक है । बारह पुत्रों के नाम निम्न हैं-विवस्वान्, ग्रर्यमा, पूषा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, मित्र, वरुण, शक्र व वामन या उरुक्रम ।

२ ग्ररुण ।

३ ग्रर्क, मदार ।

४ पद्रहवा प्रजापति ।

५ एक सनातन विश्वदेव का नाम ।

रू. भे.—विवसवत, विवस्वान ।

बिवसाइ, बिवसाई—१ देखो 'व्यवसाय' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यवसायी' (रू. भे.)

उ०—कारू नारू नइ बिवसाई, ग्रावइ वरण ग्रढार । पाए लागीनइ कामा सारइ, ग्रायस करइ जुहार । —कां. दे. प्र.

बिवसाइयौ, बिवसाईयौ—देखो 'व्यवसायी' (ग्रल्पा. रू. भे.)

उ०—गाछा छीपा नइ तेरमा, विवसाईया वसइ । नगरमा ग्रापापणि काजि सहू मिलइ, चहुटइ हईइ हईउ दलइ । —कां. दे. प्र.

बिवसाय—देखो 'व्यवसाय' (रू. भे)

उ०—१ च्यारि वरण उत्तम जाणिया, विवहारिया वसइ वांणिया । कूहरइ बोकइ चालइ न्याय, देसाउरि करइ बिवसाय । —कां. दे. प्र.

उ०—२ पुरसोतम चितवै स्रस्टि, व्यापार रचीजै । इम चितवतां ग्राप, मधन निद्रावसि मूजै । किता जुग बिवसाय, परम निद्रा भर पोढ्यौ । जोगनिद्रा जोगेस, ग्राठ क्रम पवनह उढ्यौ । —रा. वसावळी

बिवसायौ—देखो 'व्यवसायी' (ग्रल्पा. रू. भे.)

उ०—हाटा तणउ पार नवि लहइ, घणा लोक बिवसाया वहइ । खाडा तरकस तीर कमाण, जरहजीण पूरइ दीवाण । —कां. दे. प्र.

बिवसि—देखो 'बिवस' (रू भे.)

उ०—१ त्रिण वेल तर ग्राछादि गिर तन, ग्रवनि पथ ग्रगम ए । मन जाणि तापसि बिवसि थाया, भ्रमत फिर पड़ि भ्रम ए । —रा. रू.

उ०—२ बिवसि हुग्रौ मुनि वेस्या वसि । —रामरासौ

बिवस्था—देखो 'व्यवस्था' (रू भे.) (ग्रमरत)

उ०—१ राड नट तेडाविया, कह्यो बिवस्था वत । बाडव को वेस्या जपट, टालि पहु तै रत्त । —मा. कां. प्र.

उ०—२ बिवस्था निस्वाद वादा वादको विवाद बाढ्यौ, मेटन फिसाद याद कीनौ जस जापी को । प्रबळ प्रधांनपणौ दैन जसवत प्रभू, जैपुर तै लीनौं टेर 'पातल' प्रतापी को । —ऊ. का.

विवस्वत—देखो 'विवसवत' (रू. भे.)

विवस्वान—देखो 'विवसवान' (रू भे.)

विवह–स. पु.—१ देवराज इन्द्र। (ना डि को.)

२ अत्यन्त वेगवान् वायु, तुफान।

३ देखो 'विबुध' (रू. भे.)

४ देखो 'विविध' (रू भे.)

उ०—दीसइ **विवह** चरीय, जाणिज्जइ सयण दुज्जण सहावो। अप्पाण च कलिज्जइ, हुडिज्जइ तेण पुहवीए। —डो. मा.

उ०—२ केता भडा निवाजस कीजे, दान अमन मन पाता दीजे। अतरै दूत खबर लै आया, समाचार सह विवह सुणाया।

—रा. रू.

उ०—३ झीमडळ रबाब सार रुद्रवीणा भणकार, तत मझि घोर तार ग्रामा त्रिहुणे। ताळ कंमाळ झालरी अघोटी कच्छिबी एक, आगळी वाजै अनेक, **विवह** वणे। —गु. रू. ब.

उ० ४ अनि अबीर जबाधि, **विवह** अनेक परिम्मल, चपक दळ केतकी कुसम सेवती सुगंदुळ। नीसाण सद्द सुणियं नही, भेर नाद मरदग घण, आघाण महल्लै अग रहण, दम अलिअर गुँजार-वण। —गु. रू. ब.

उ०—५ विवह वरन्ना कप्पडा, **विवह** वरन्नी पाग। फजर हुवदी फूलिया, जाण मलूका बाग। —गु. रू. ब

विवहथरणी, विवहथरबौ—देखो 'विबहथरणी, विवहथरबौ' (रू. भे.)

विवहथरणहार, हारौ (हारी), **विवहथरणियौ**—वि०।

विवहथरिग्रोड़ौ, विवहथरियोड़ौ, विवहथरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

विवहथरीजणौ, विवहथरीजबौ—भाव वा०।

विवहथरियोड़ौ—देखो 'विबहथरियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री विवहथरियोडी)

विवहपरि बिवहपरी, विवहप्परि–क्रि वि—विविध प्रकार से।

उ०—१ ता? उन्हउं सीयलु जयह जलु, फासुय पप्पिय **विवह-प्परि**। निज्जिणिउ विजयाणद ति (लि) हि, अभयतिलकि चउ-पदि धारि। —ऐ जै. का स.

उ०—२ दोरइ बद्धइ सूयडउ, छूटइ महतउ होइ। इण परि विलसइ **विवहपरि**, सुद्धि न जाणइ कोइ। —हीराणद सूरि

विवहल—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—१ हू रावळो चाकर, यू चूक पडि, तकसीर माफ करणी। यू करता घडी एक हुई। रुदन करण लागो। देही परसीज गई। **विवहल** होय गयो, ज्यों प्राण छूटै। ताहरा लखमीजी स्रीभगवान सू अरज करी—जै साहूकार बहोत दीन छै, विवहल हुयो छै इण रा प्राण छूटै छै। इण री पहसी लीजै।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ इतरै मे कुवर री अतक देही ऊपर तिर आई। तरै सरब लोग देखण लागा। देखै तौ देही निरजीव देखी। तद हाहा-कार सबद हुवो। साथ सारौ ही रोवण कूकण लागो। राजा नै जाय खबर हुई सो सुणनै मुरछागति हो गई, **विवहल** होय गयो।

—पलक दरियाव री बात

विवहार—देखो 'व्यवहार' (रू भे)

उ०—१ धरम, विग्यान, इतियास, पुराण, राजनीति, आचार, **विवहार**, कळा, साहित, वेसभूसा, परब-त्यूहार, कारीगरी नै खेतीवाडी अै सैंग परंपरा रै कारण ई विकसै अर प्रगटै।

—फुलवाड़ी

उ०—२ हुन्नर करो हजार, स्याणप चतराई सहित। हेत कपट **विवहार**, रहै न छानो, राजिया। —किरपाराम

उ०—३ वरतीजै **विवहार**, करै निज रुढि न कीजै। सदाचार धरमसीह, लीह कहौ केम लंघीजै। —घ. व. ग्र.

उ०—४ विणजै व्यापार वलि **विवहारं**, लछमी आप वहै लार। परिघल परिवार पुण्य प्रकार, बोलै बहु जस बाजार।

—घ व. ग्र

उ०—५ अठै रिणमलजी मोकळ रो **विवहार** बाप चाचामेरा नै प्रधानगी सूंप पाछा मडोवर आया। अठै मोकळ रै आगै चाचोमेरो चलावै छै। —राव रिणमल री बात

उ०—६ कत घणा है सातरा' जाणै जग **विवहार**। मन समझी मोटा घणा, करै न जण सत्कार। —करणीदान बारहठ

विवहारिउ विवहारिग्रो, विवहारियौ—देखो 'व्यवहारियौ' (रू. भे.)

उ०—राजग्रहि नउ **विवहारिउ** रे, गोभद्र तणउ रे मल्हार। भद्रा माता कूंखइ रे, सालिभद्र गुण भडार। —स. कु.

विवहारी—देखो 'व्यवहारी' (रू भे.)

उ०—त्रिणि दिहाडा वरख वरसीउ, **विव्हारी** चालिउ परदेसि। नारी एकली वनी रे तिहा थई, छई तै योवन वेसि।

—नळदवदनी रास

विवहारीउ, विवहारीग्रो, विवहारीयौ—देखो 'व्यवहारियौ' (रू. भे.)

उ०—१ नारू थई **विवहारीउ**, वाहणि घोडा साथ। पूरण पुहचा लगि भरिउ, वेढि बांकडा हाथि। —मा. का. प्र

उ०—२ सपरिकरि मध्य। भमड, रथि बइसीनइ राय। वेश घणी **विवहारिया**, वेग्यानइ घरि जाय। —मां. का प्र

उ०—३ प्रधान लोक **विवहारिया**, राजलोक सहुमै सुखी।

च्यार वरण गढ महि वसइ, जती मुनि नहीं कोय दुखी ।
—प. च चौ.

विवहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

विवहालु, विवहालौ—१ देखो 'विवाहलौ' (रू. भे.)

उ०—वडुया सांभलि बाभण भणइ, ए विवहार नयरि अम्ह तणी ।
विद्यासिद्धी राखसु हूउ, बकनामि छइ जम नउ दूउ ।
—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'विवाहु' (अल्पा., रू. भे.)

विवहु—देखो 'विविध' (रू. भे.)

उ०—पण सग वेय मयक वरसि माहह छुण वासरि, भाणमल्लि वर नयरि अजियनाहह जिण मंदिरि । नदि ठविय विरथारि सुगुरु सागरचद गणहरि, सूरि मतु जसु दिद्ध किद्ध मगलु विवहु प्परी ।
—अभय यतिक यती

विवांण—देखो 'विमाण' (रू. भे.) (अ मा., ना. मा.)

उ०—१ सोठ सुहावै जायजे, चढजे गुघ विवांण । रत्री न लागै लूगड़ा, पथ तूठे प्रसाण ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ सातमैं पाताल वासग नाग रै माथै टपूकड़ा खाईनै रहिया छै । त्यारी सोरभ री वास्तै तेत्रीस कोडि देवता सरग सू हलूस नै उतरै देवासुरा रा विवांण हिलोरव खाइ नै रहिया छै ।
—रा. सा स.

उ०—३ झळहळ वेडि विवांणां झोका, सुर हुय टम जाऊं सुर-लोका । इम बोलै मेडनिया अडुर, धुर जोधार पुछै पाटोधर ।
—सू. प्र.

उ०—४ दुरत गत डांण उमरांण सिर दियतो, लियतो फुरलबो थाट लाहो । सुतन 'गजबध' सुर कामणी सपेखं, विवांणां ठाभियो खाग-वाहो ।
—अज्ञात

उ०—५ किसन सिर फूल विरखा करै, अमर तमासै आइया । निहग धरि बीच मातै नहीं, सुरै विवांण सबाहिया ।
—पी. ग्र.

उ०—६ दळ वाज बजावै ऊपडता, रिणतूर नसा भिळनै रुडता । डाणा किरि पाउ पलब डहै, वाजिद्रक वेग विवांण वहै ।
—गु रू. ब.

विवाणणौ, विवांणबौ—क्रि. स.—प्रसव करना ।

उ०—इमउ हिंदू राजा उपकंठि कउण जिकइ मनि पातिसाह की रीस वसी, कउण का माथा तइ खिसी ? कउण हइ दई रूठउ ? कउण की माई विवांणी, जू सामउ रहइ प्रणी पाणी ?
—अ. वचनिका

विवांणियोड़ो—भू. का. कृ.—प्रसव किया हुआ ।

विवांणि, विवांणी—सं. स्त्री.—१ अप्सरा ।

उ०—विवांणी भण उरधबी काळ, विहगम रभ मिळी वेताळ ।
दिली खुरसांण विभाडचौ ढाल, मनाव्यौ मोटो राउळ 'माल' ।
—राऊ जैतसी रौ रासौ

२ देखो 'विमाण' (रू. भे.)

उ०—चौत्राग दमूडी छोहि चक्कि, फरहरइ फउरि फिरियउ फरक्कि । वाघुलउ वाघ वाणी वखाणि, वाजिन्नि चडिय चडिसइ विवांणी ।
—रा. ज. सी.

विवाई—देखो 'बिवाई (रू. भे.)

विवाद—स पु. [स.] १ किसी बात या विषय हेतु किया जाने वाला तर्क, वाद, झगड़ा ।

उ०—१ विवस्था विखाद वाद वाद को विवाद बाढयौं, मेटन फिसाद याद कीनौ जस जापी को । प्रबळ प्रधांन पणौ देण जसवत प्रभू, जैपुर तै लीनौं टेर 'पातल' प्रतापी को ।
—ऊ. का.

उ०—२ बली दोय साधा रै आपस मे अडबी लागी अनै ऊ कहै तू लोलपी । ऊ कहै तू लोलपी । इम परस्पर विवाद करता करता स्वामी जी कनै आया तौ पिण विवाद छोडै नहीं ।
—भि. द्र.

क्रि प्र.—करणौ, होणौ ।

२ शास्त्रार्थ ।

उ०—१ द्वादश गुरु, द्वादस सिस्य, जुमलै चौबीस कापाळिक हुवा है । उगर भैरव कपाळिक रै नै सकराचारय रै विवाद हुवो है ।
—बां. दा. ख्यात

उ०—२ साधन काव्य कळा सुर साधत, वाद-विवाद करै मत बाधत । देह अनेह किता तप दाधत, बिद्ध हरि गुण वाधत वाधत ।
—जैपुर नगर री वरणण

क्रि. प्र—करणौ, होणौ ।

३ सोच-विचार ।

उ०—थारा दिन घणै पड्या है, म्हे घणी दुनिया दीठी, फगत थारो उणियारो निरखण साक जीवण री साध पूरता हा । पण इण साध री आज माठ आयगी दीसै । आ विवाद री वेला नी है ।
—फुलवाड़ी

क्रि प्र —करणौ, होणौ ।

४ जिद्द, आग्रह ।

उ०—ओ सिरदार डाकी नही है परत अरिया नै खावणा बाळौ है और डाकी होवै सो तो केवळ फकत वार आयां अरथात सनेसर ने ही ज मारै नै ओ सिरदार तो सदेव ही मारै ओर डाकी आपरा री रिछा करै नै दूजा नै मारै पण ओ डाकी सिरदार वदावदी विवाद कर निज आपरा रजपूत भाई बेटा तिका नै जुद्ध मे माराय

नांवें हरा वासतें डाकी डाकी नही डाकी थी सिरदार है सारा नै युद्ध में मारावरण वाळो । —वी. स टी.

क्रि. प्र.—करणी।

५ युद्ध, झगड़ा, लड़ाई।

उ०—१ प्रोपमा 'कमा' हरनाथ प्राद, वरवीर खळां मेटरा बिवाद। मछरीक फतौ गज घड मरोड, 'प्रजबेस' 'लाल' पानल प्रनोड। —रा. रू

उ०—२ 'दोलो' गोयंद हरा दुबाहो, सुन जैसिघ बिवाद मगाहो। 'सूरो' 'खान' तरणो ध्वज सूरां,प्राहव त बदै जिसो प्रपूरा ।—रा रू

क्रि. प्र.—करणी, चालणी, होणी।

६ न्यायालय मे चलने वाला वाद, मुकदमा।

७ प्रतिस्पर्धा, होड।

उ०—एक करइ रय वाडिय, वाडिय माहि विवेकि। कुसुम बिवादइ, चूंटइ, खूंटइ पल्लवि एकि। —जयसेखरसूरि

क्रि. प्र.—करणी, चालणी, होणी।

रू. भे.—बिवाद, बिवादु, बिवादो।

बिवादक—देखो 'बिवादी'

बिवादी—वि. [स. विवादिन्] १ किसी बात या विषय पर तर्क, वाद या झगड़ा करने वाला।

२ शास्त्रार्थ करने वाला।

३ सोच-विचार करने वाला।

४ जिद् करने वाला, जिद्दी।

५ युद्ध करने वाला, झगडा करने वाला।

उ०—सेखा कामखानी कूम दोनूं एम रूठा, दोनूं ही बिवादी यौ बिवादी धारि ऊठा। —शि व

६ न्यायालय मे वाद चलाने वाला।

७ राग के स्वरूप को बिगाड़ने वाला वर्ज्य या वर्जित नामक स्वर। (सगीत)

८ संगीत का वह पक्ष जिसका किसी राग मे बहुत कम व्यवहार होता है।

रू. भे.—बिवादो।

बिवादु—१ देखो 'बिवाद' (रू. भे.)

२ देखो 'बिवादी' (रू. भे.)

बिवादो—१ देखो 'बिवाद' (रू भे.)

उ०—सेखा कामखानी कूम दोनूं एम रूठा, दोनूं ही बिवादी यौ बिवादौ धारि ऊठा। —शि व.

रू. भे.—बिवादु।

बिवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

उ०—लाडणू वसै महाजन लोक चोपड़ां पड़ै बाजार चोक। है दरब जहू लक्खूं हजार, वाणिया तणा वालै बिवार —पे. रू.

बिवाह—सं. पु. [स विवाह] १ हिन्दू धर्म के सोलह संस्कारों में से वह संस्कार जिसमे वर तथा कन्या पति-पत्नी का धर्म स्वीकार करते हैं।

वि. वि.—ये विवाह निम्न आठ प्रकार के माने गये हैं—

(१) ब्राह्म विवाह—वह विवाह, जिसमे शीलवान् और वेदाभ्यासी वर को बुलाकर कपडे व अलकारो मे वर-वधू का पूजन कर कन्या का विवाह किया जाता है।

(२) दैव विवाह—वह विवाह जिसमे ज्योतिष्टोमादि यज्ञ मे ऋत्विज (यज्ञ का कार्य कराने वाले) को विधि-पूर्वक अलंकारादि से सत्कार कर कन्या का दान किया जाता है।

३ आर्ष विवाह—वह विवाह जिसमे कन्या का पिता वर से गाय व साड का एक या दो जोड़े अपनी लड़की को देने हेतु धार्मिक भाव से (लडकी के मूल्य के रूप मे नही) लेकर कन्या का दान करता था।

४ प्राजापत्य विवाह:—वह विवाह जिसमे कन्या का पिता पहले से ही सकल्प कर लेता है कि अमुक वर के साथ अपनी पुत्री का विवाह करूगा तथा कन्यादान करते समय वर-वधू का पूजन कर अपने मुह से कहता है कि तुम दोनो साथ रहकर धर्माचरण करो।

५ आसुर विवाह—वह विवाह जिसमे वर की ओर से कन्या व कन्या के पिता को धन देकर स्वच्छन्दतापूर्वक कन्या को ग्रहण किया जाता है।

६ गन्धर्व विवाह:—वह विवाह जिसमे वर व कन्या कामासक्त हो कर स्वेच्छा से (माता पिता के बिना दान किये) एक दूसरे के साथ सयोग कर लेते हैं।

७ राक्षस विवाह:—बल पूर्वक कन्या का हरण करके किये गये विवाह को राक्षस विवाह कहते हैं।

८ पैशाच या पैशाच्य विवाह—वह विवाह जिसमे एकान्त स्थान व समय पाकर बेखबर, नीद मे या नशे मे बेहोश कन्या के साथ संभोग कर लिया जाता है। इसे अधम विवाह मानते हैं।

राजस्थान मे विशेषतः राजपूतो व चारणों में एक विशेष प्रकार का विवाह किया जाता है। जिसमें वर को कन्या पक्ष वाले धोखे से पकड कर ले जाते है, और घर लेजाकर विवाह कर देते है।

२ उक्त संस्कार के अवसर पर मनाया जाने वाला उत्सव।

३ वह उत्सव जिसमें पुरुष व स्त्री वैवाहिक बन्धन मे बन्धते हैं।

उ०—१ जद स्वांमीजी बोल्या— किण ही सहर में च्यार बजाज री हाटां हुती। तिण मे तीन तौ विवाह गया। पाछै कपड़ादिक ना ग्राहक घणां ग्राया। हिवै एक बजाज रहियौ तै राजी हुवै के बेराजी। —भि. द्र.

उ०—२ हेमजी स्वांमी दीक्षा लेवा त्यार थया जद किण ही ग्रहस्थ स्वांमीजी नैं कह्यौ—महाराज हेमजी दीक्षा लेवा त्यार थया पिण तमाखू री व्यसन है। जद स्वामीजी बोल्या—कावरिया रौ ग्रटक्यौ किसौ विवाह रहे है। —सू. प्र.

४ उक्त उत्सव के ग्रवसर पर किया जाने वाला धार्मिक कृत्य।

५ बीसवें कल्प में उत्पन्न ब्रह्मा का रक्त नामक पुत्र।

रू० भे०—विवाह, बिमां, बिमाह, बिया, बियाव, बियाह, बिवाह, बीया, बीवाह, बीमा, बीमाह, बीयाव, ब्याव, ब्याव ब्याह, भियाव, भ्याव, विमाह, विमाहू, विमाहौ, वियाव, विहां, विहा, विहाव, वीमा, वीमाहू, वीमाह, वीवा, वीवाह, वीहा वीहाव, व्यांह, व्याव।

ग्रल्पा.,—विवहालु, विवहालौ, विवाहलु, विवाहलौ, विवाहिलु, विवाहिलौ, व्यावडौ।

विवाहणौ, बिवाहबौ–क्रि. स. [स. विवाहनम्] १ वर तथा कन्या द्वारा पति-पत्नी का धर्म स्वीकार करना।

२ उक्त ग्रवसर पर उत्सव मनाना।

३ पुरुष व स्त्री का वैवाहिक बधन मे बंधना।

उ०—१ तब घणौ ग्राणदित होई ससिपाल विवाहण चाल्यौ। ज्यों ग्रथि विस्वै गायौ छै। जितनौ एक परिगह कह्यौ छै। तिहि भाति होय चाल्यौ। —वेलि टी.

उ०—२ जिम थारी खूनी जिकौ, किर बळभद्र कबंध। ग्रठै विवाहण ग्राणियो, सरणं मे बळसध। —व. भा.

४ उक्त ग्रवसर पर धार्मिक कृत्य करना।

विवाहणहार, हारौ (हारी), विवाहणियौ—वि०।

विवाहिग्रोड़ो विवाहियोड़ौ, विवाहयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विवाहीजणौ, विवाहीजबौ—कर्म वा०।

बिग्राणौ, बिग्राबौ, बिवाहणौ, बिवाहबौ, बियाणौ, बियाबौ, बिहांवणौ, बिहांवबौ, बिहाणौ, बिहाबौ, बिहावणौ, बिहावबौ ब्याणौ, ब्याबौ, ब्यावणौ, ब्यावबौ विमाहणौ, विमाहबौ, विहाणौ, विहाबौ, विहावणौ, विहावबौ, बीवाहणौ, बीवाहबौ बीहाणौ, बीहाबौ, बीहावणौ, बीहावबौ—रू० भे०।

विवाहलु, विवाहलौ–सं. पु [विवाह+लाप] १ किसी व्यक्ति विशेष के विवाह से सम्बन्धित काव्य।

वि. वि.—कई उक्त काव्यो में जीवन से सम्बन्धित लीलाएँ भी दी हुई होती हैं।

उ०—सासनदेव तै मत धरिए, चउवीस जिन पय ग्रनुसरीए। गोयस्वामी पसायलुए, ग्रमै गा (इ) सि स्रीगुरुणी विवा लु ए। —ऐ. जै. का. स.

रू. भे.—बियावलौ, व्यावलौ, विवहालु, विवहालौ, विवाहिलु, विवाहिलौ, वीवाहलै, वीवाहिलु, वीवाहिलौ, व्यावलौ।

२ देखो 'विवाह' (ग्रल्पा., रू. भे.)

विवाहित–वि. [सं. विवाहिता] वह जिसकी शादी हो गई हो।

रू. भे.—व्याहत।

विवाहियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ वर तथा कन्या द्वारा पति-पत्नी का धर्म स्वीकार किया हुग्रा। २ उक्त ग्रवसर पर उत्सव मनाया हुग्रा। ३ स्त्री व पुरुष का वैवाहिक बन्धन मे बन्धा हुग्रा। ४ उक्त ग्रवसर पर धार्मिक कृत्य किया हुग्रा।

(स्त्री. विवाहियोड़ी)

विवाहिलु विवाहिलौ—१ देखो 'विवाहलौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विवाह' (ग्रल्पा., रू भे.)

विविंध्य–सं पु [स.] श्री कृष्ण के पुत्र चारुदेष्ण द्वारा मारा गया एक दानव।

विविंस–सं. पु. [स. विविंश] १ विदर्भ राजकुमारी वदिनी व वीर राजा का पुत्र तथा सुप्र व प्रथमा का पौत्र एक सूर्यवंशी राजा, जो खनीनेत्र ग्रादि पद्रह लडको का पिता था।

विविंसति–सं. पु. [स. विविंशति] धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भारतीय युद्ध मे महारथी था ग्रौर भीम के द्वारा मारा गया था।

२ चाक्षुष राजा का पुत्र एक राजा जो रंभ राजा का पिता था।

विविक्त, विविक्तनामा–स पु. [स. विविक्तनामा] हिरण्यरेतस के सात पुत्रो मे से एक, जो कुशद्वीप का राजा था।

विविक्षु–स पु [स] ग्रधिसोमकृष्ण का एक पुत्र जो शतानीक का पौत्र था।

विवित्त–स. पु. [स] वह स्थान जहा पर स्त्री, पशु ग्रौर नपुंसक नहीं हो। (जैन)

विवित्ताहार–स. पु [स. विवित्त+ग्राहार] विकृति रहित ग्राहार। (जैन)

विवित्स, विवित्सु–सं. पु [स.] धृतराष्ट्र के शतपुत्रो मे से एक, जो भीम के द्वारा मारा गया था।

विविद, विविध–स. पु. [स विविद] कंश का ग्रनुचर एक राक्षस।

वि [सं. विविध] तरह-तरह का, ग्रनेक प्रकार का, भांति-भांति का। (सभा)

उ०—१ ग्रादि ग्रगम ग्रविकार, एक ईस्वर ग्रविणासी। पछै प्रकति तत पच, विविध सुर इखजवासी। —रा. रू.

उ०—२ सुभ विश्व मंदिर चौक सुंदर, औपि रुचि राय अगणं । तन सदन सोभित करण तरणी, विविध मनि ब्रह्म वरणं ।
—रा. रू.

उ०—३ आपणा घरि कादम फेडइ, बोजा काज मेडई । पार पार न लीइ, साध विहार न करीइ । अनेक जीव नीपजै, विविध धान्य ऊपजै । लोकनी आस पूजै, गाय भेंस दूजै । इत्यादि ।
—रा. सा. स.

उ०—४ ग्यान अह्या 'जसराज' गुरा, उग्र तप करि पाविया । सार जसवंत आदि स्तुतिवर, विविध ग्रंथ वरणाविया । —सू. प्र.

उ०—५ वरणव कहूं सुमेर को, सब ही कंचन सार । रतन स्रग राजत विविध, लख जोजन विस्तार । —गज-उद्धार

रू. भे.—बिबिध, बीबध, विवध, विवधि, विवह, विवहू, विविधि, विविह ।

विविधजांण—वि. [सं. विविध+ज्ञान] १ कवि, पंडित । (अ मा)

२ जिसने बहुत बातें सुन ली हो, बहुश्रुत ।

रू. भे.—विवधाजाण ।

विविधता—सं. स्त्री. [सं. विविध+ता प्रत्यय] विविध होने की अवस्था या भाव ।

रू. भे.—विविधा ।

विविधविस्रांम—सं. स्त्री [सं. विविध=विबुध+विश्राम] स्वर्ग । (अ मा)

विविधि—देखो 'विविध' (रू. भे)

उ०—इंद्र कहि 'वरदान थी, देखसि नहीं प्रतिहार । ईआइ तूं दरसन देज्यै, देखी विविधि विहिवार । —नळाख्यान

विविधेस, विविधेसर, विविधेसुर, विविधेस्वर—सं. पु. [सं. विबुध+ईश, विबुध+ईश्वर] १ कवि, पंडित, विद्वान ।

उ०—विरही वरहण धणमुंड व्यापी, केकी मुकळापण कळापी । रथकुमार प्रक विखर चाया, विविधेसुर स्रग नाम बताया ।
—ना. मा.

२ ईस्वर ।

विविनणौ, विविनबौ—देखो 'विवनणौ, विवनबौ' (रू. भे)

विविनणहार, हारौ (हारी), विविनणियौ—वि० ।
विविनिप्रोड़ौ, विविनियोड़ौ, विविन्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विविनीजणौ, विविनीजबौ—भाव वा० ।

विविनियोड़ौ—देखो 'विवनियोडौ' (रू भे)

(स्त्री विविनियोडी)

विविनौ—देखो 'विवनौ' (रू भे)

(स्त्री. विविनी)

विविन्नणौ, विविन्नबौ—देखो 'विवनणौ, विवनबौ' (रू. भे.)

उ०—'सूरजम' (ळ) गो सरगि, साह निस्बाज विविन्नौ । मन तुरका हिंदुवा, ताम वैराग उपन्नौ —गु. रू. बं.

विविन्नणहार, हारौ (हारी), विविन्नणियौ—वि० ।
विविन्निप्रोड़ौ, विविन्नियोड़ौ, विविन्न्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
विविन्नीजणौ, विविन्नीजबौ—भाव वा० ।

विविन्नियोड़ौ—देखो 'विवनियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री विविन्नियोडी)

विविन्नौ—देखो 'विवनौ' (रू भे.)

विविह—देखो 'विविध' (रू. भे.)

उ०—१ बारअट्ठुतरइ माह सिय छट्ठि भणिज्जइ, जिणेसर सूरि पइसरइ संधु सयलु विवह सज्जइ । सूरिमतु सिरि सव्वएवसूरहि जसु दिनउ, आलउरहि जिणवीर भुवणि बहु उच्छव कीनउ,
—ऐ. जै. का. स.

उ०—२ इण परि बिहूं तीरथंकराए, चिरपालीराज विविह पराए । जाणी अवसर सार ए, बिहूं लीधौ संजम भार ए ।
—वृ. स्त.

विवुध—देखो 'विबुध' (रू. भे.)(अ मा., डिं. ना. मा., ह. नां. मा.)

विवुधपुर—सं. पु [सं. विबुधपुर] स्वर्ग ।

विवुधप्रिय, विवुधप्रिया—सं. स्त्री [सं विबुधप्रिय] १ अप्सरा, देवांगना ।

२ देखो 'विबुधप्रिया' (रू. भे.)

विवुधबन, विवुधवन—देखो 'विबुधवन' (रू. भे.)

विवुधबंद्य—सं पु. [सं. विबुधवंद्य] देवताओं के वैद्य, अश्विनिकुमार ।

विवुधालय—देखो 'विबुधालय' (रू. भे.)

विवुधेस—देखो 'विबुधेस' (रू भे)

विवुह—देखो 'विबुध' (रू भे.)

विवेक—सं पु [सं] १ भले-बुरे या सत-असत का ज्ञान ।

२ भले-बुरे या गुण अवगुण को पहिचानने की शक्ति ।

उ०—जे भगी री भींटी तौ न खादी नै भगी री कीबी खाधी तिण सूं उणनै विवेक रो विकल जांणी । ज्यूं अहम्य कमाड खोलनै देवै ने तौ लेवे नहीं अनै अधारी रात्रि मे हाथ सूं कमाड जडै उघाडै तिण रो सक आणै नही । —भि. द्र

३ समझ, ज्ञान, बुद्धि ।

उ०—१ भव सह हरै निजर भर, कर कर गहर विवेक । सर 'प्रताप' नर तौ समो, अवर आज नह एक ।
—जैतदांन बारहठ

उ०—२ लूटेहि नेत विवेक का डेरा, बुद्धिवळ यदपि करू बहु-

तेरा। हाय राम नहिं कछु बस मेरा, मरत हूं बिवस प्रभु धावउ सवेरा। —मीरां

उ०—३ धर कोई सरवर विपन, विधाचळ दिस एक। च्यार महूरत उत्तरै, धारस मंत्र विवेक। —रा. रू.

उ०—४ भाठू ई मिसल कै कमंध महाबाहु, जाकी सुण मानी वानी विर्ख की सलाह। चाळै में भ्रप्रकारी भ्रनेक सा एक, राम दळां मेळ जाणे नील की बिवेक। —रा. रू.

४ सत्यज्ञान।

क्रि. प्र.—करणी, धरणी, धारणी, राखणी, होणी।

रू भे —बवेक, बमेक, बवेक, बिवेक, बिमेक, विवेक, वमेक विमेक, विमेख।

भ्रल्पा.—विवेकौ।

विवेकजोग, विवेकजोग्ग—स. पु.—स्त्री पशु व नपमक भ्रर्थात मन में विकृति पैदा करने वाले किसी पदार्थ का संसर्ग न होने की भ्रवस्था या भाव।

रू भे —विवेगजोग, विवेगजोग्ग।

विवेकता—सं. स्त्री. [स विवेक+ता प्र०] विवेक की भ्रवस्था या भाव।

विवेकनारायण—वि —विवेकशील।

उ०—तीणि नगरि, सामत मडलेस्वर मन्त्रि महामन्त्रि स्रेष्ठि सारथवाहपुत्र दडाधिपति ग्रहकप्रमुख लोक सेव्यमान भ्रनीति निरनासन गव्यारभ परनारीसहोदर बुद्धिमयरहर विवेकनारायण दानै कव्यसन'''। —व. स.

उ०—२ '''एर भ्रनेक रूप नरेंद्र, सच्चवाचा हरिस्चद्र, निरभय भीम, भ्रापन्न जीमूतवाहन, बाग्देवी विलास कास्मीर, विवेकनारायण, भ्रौदारयि बलि, सेवकजन कल्पतरु चतुरंग वाहिनी सेनासमुद्र, इसिउ राजा। —व. स.

विवेकवान—वि. [स. विवेक+वान्] जिसमें विवेक हो, भ्रच्छे-बुरे को पहिचानने वाला, बुद्धिमान।

विवेकी—वि [स. विवेकिन्] १ विवेकधारी, भले-बुरे का ज्ञान रखने वाला।

उ०—कहू सुखराम सुणो भाई साधो, भेख भेख सब एक। त्याग वैराग गुरु गम गाढा, सोई जाण विमेख। भेद विवेकी रे,''' ········ —श्रीसुखरामजी महाराज

२ बुद्धिमान, ज्ञानी।

३ न्यायप्रिय, न्यायशील।

रू. भे.—विवेकी।

विवेकौ—देखो 'विवेक' (भ्रल्पा., रू. भे.)

उ०—लख चउरासी जीव खमावई, मन धरि परम विवेकौ जी। मिच्छामि दुक्कड दीजियइ, त्रिकरण सुद्ध प्रत्येकौ जी। —स. कु.

विवेग—देखो 'विवेक' (रू. भे.)

विवेगजोग, विवेगजोग्ग—देखो 'विवेकजोग' (रू. भे.)

विवेचक—वि.—विवेचना करने वाला, विवेचनकर्त्ता।

विवेचन—देखो 'विवेचना' (रू. भे.)

विवेचना—सं. स्त्री. [स.] १ भली-बुरी, सत्-भ्रसत् भ्रादि का ज्ञान, विवेक।

२ तर्क-वितर्क, वाद-विवाद।

३ निर्णय, फैसला।

४ मीमांसा।

५ भ्रनुसन्धान, भ्रन्वेषण।

६ परीक्षण, निरीक्षण।

रू. भे.—विवेचन।

विवोगण, विवोगणि, विवोगणी, विवोगिण, विवोगिणि, विवोगिणी—देखो 'वियोगण' (रू. भे.)

उ०—विरहणि विरह विवोगणी, दरसन कारणि पीव। विकळ भई विलबै कहा, ताला वेली जी। —ह. पु. वा.

विवोढ—स. पु. [स. विवोढु] १ पति, खाविंद, भरतार। (भ्र. मा., ह. ना. मा.)

२ दुल्हा।

विव्वड़ा—देखो 'वरवडो' (रू भे.)

विव्वांण, विव्वांणो—देखो 'विमाण' (रू. भे.)

उ०—वाज पख सीचाण, वाज विव्वांण उडाया। पवन भ्रातुर पेरियै, जळद जाणे फिरि धाया। —गु. रू. ब.

विव्वोक—सं. पु. [स] स्त्रियों के द्वारा सयोग के समय प्रिय का भ्रनादर हेतु किया गया हाव। (साहित्य)

विव्हार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—१ लगती लहगी पहरि सुहागण, बीतो जाइ विव्हार। धन जोबन दिन च्यार का, जात न लागै बार। —मीरां

विसंटुल—वि. [स विसटुल] १ चचल। (उ र.)

२ विषम, विकट।

विसड—स. पु.—गणो के ईश, गणेश, गजानन। (क. कु. बो.)

विसवरो—देखो 'विसूदरो' (रू. भे.)

उ०—जळ भ्रनळग बन बन गहन जाय, डाकणी पसु प्रेत न डराय। खेचरी चोर नाहर न खेद, विसवरा वैरी दवी विवाद। —रांमदांन लाळस

बिसन—१ देखो 'बिस्णु' (रू. भे.)

उ०—१ कमळी भगत जीतो कळह, त्रिपुरासुर जिसतान तन। इमिरित वावि सोसी ग्रलखि, बिसभ रूप वणियौ बिसंन।
—पी प्र.

उ०—२ बखाणां जांणी एक बिसंन, कहै मति कूरम मच्छ किसंन। कहै दत देव कपिल कल्याण, तवै दसरथ तणी तुड़िताण।
—पी प्र

उ०—३ वडौ सहि थोको हुंति बिसन, प्रमेसर मूझ समापो पुन। प्रमेसर पार ग्रपार ग्रपार, नारायण नेह निमो निरकार।
—पी. प्रं

२ देखो 'व्यसन (रू. भे)

बिसंभ—स. पु.—१ ईश्वर, परमेश्वर।

उ०—१ समाणौ तूझ मही घणस्याम, राघव्व ग्रम्हीणौ ग्रातम-राम। सेवग्ग पयपै तेजस मोह, बिसभ रखै हिव थाय बिछोह।
—ह. र.

उ०—२ बिसभ तूझ ना निमो लीला विलाम, केहर तूझ वाल्हौ घणी कविलास। निगुण नाथ ग्रादेस बलिरांम नागु, त्रिगुण किसन रा वीर तू सरव त्यागु।
| पी. ग्र.

२ श्रीकृष्ण।

३ ऋषभावतार।

उ०—१ पति फरसरांम लख्मण कपिलि, रिदं मुझ बलिराम रहि। नारीयण बिसभ ग्रवतार निजि, क्रिसन बुधि निकलक कहि।
—पी. ग्र

उ० -२ कमळी भगत जीतो कळह, त्रिपुरासुर जिसतान तन। इमिरित वावि सोसी ग्रलखि, बिसंभ रूप वणियो बिसन।
—पी. ग्र.

वि.—भयकर, डरावना।

उ०—फौडा बिसभ फाड ए, तुरग कोमंड ताड ए। कट्टक फौज कठळा, ग्रणी लिवंत सावळा।
—गु रू. ब

रू. भे.—बिखभ, बिसभ।

बिसभर—देखो 'विस्वभर' (रू भे.) (ग्र. मा., ह. ना मा.)

उ०—१ ग्रखभ कपिळ हैग्रीव बिसंभर, दत्तात्रेय हस दामोदर। राव बैकुठ धनतर रिक्खभ, गरुडारूढ विसन प्रसणीग्रभ।—ह र.

उ०-२ भीर म्है जका भीरी बिसभर, गाज कुण सकै जसराज रा गाव। राव एक थाप ऊथापिया रिडमल्ला, रिडमला पुडवडी राखिया राव।
—दुरगादास राठोड रौ गीत

उ०—३ भ्रम रहसै, रहसै बरा, खिस जासै खुरसाण। 'ग्रमर' बिसंभर ऊपरै, राख नहच्चो, राण।
—रहीम

उ०—४ स्रीधर स्रोरंग सियावर स्रीपत, करणाकर कारण-करण। व्रज नायक विसवेस बिसंभर, घणनामी प्राणदधण।—र. ज. प्र.

उ०—५ या ग्रोसर हरि का होय गहियै, ग्रवर रख्या सौ भूधर कहिए। नाव बिसंभर विसपति राजा, पूरण ब्रह्म परसि पति पाजा।
—ह. पु. वा.

बिसंभरा—देखो विस्वभरा' (रू भे.) (ना. मा, ह. ना मा)

बिसंवाद—स. पु. [स.] वाद-विवाद, बहस।

उ०—प्रीति परस्पर ग्रतिघणी, एक जीव तनु दोइ। पिण निज निज मत नै विखै, बिसवाद नित होइ।
—स्रीपालरास

बिस—स पु [स विष] १ शरीर मे पहुँचने पर प्राण लेने या हानि पहुचाने वाला पदार्थ, जहर, गरल। (ह. ना मा)

उ० -१ इयै भात रहिता दो एक दिन नायण चलै कही कुंवर नू एक गोली बणाया छा तेसूं थे राजी हुसो। तद कुवर कह्यो गोली बणाय। तद नायण बिस गोली बणाय हर कुवर नूं दीवी।
—चोबोली

उ०—२ रावळ बुधसिंघ जगतसिघ रौ पाट बैठो। पछै बुधसिंघ नै कहै छै सीतळा नीसरी थी, तिण मे बिस हुवो। तठा पछै रावळ तेजसिघ जसवतसिघ रो पाट बैठो।
—नैणसी

उ०—३ घर रा बेटा रै सिवाय दूजो कुण चाटतो। बाप री डील चाट्या पछै दोनू बेटा रै डील मे बिस फूटग्यो, सेवट मरिया मार छूटी।
—फुलवाडी

उ०—४ ऊमड घटा ग्रधियावणी, बीज छटा खिव बाह। बिस जिसडी लागै बुरी, निम पावस बिण नाह।
—र. हमीर

२ सुख शाति मे बाधा पहुचाने वाला तत्व या बात।

उ० -१ पथी एक सदेसडइ, लग ढोलइ पौहच्याइ। विरह महा विस तन विसइ, ग्रोखद दियइ न ग्राइ।
—ढो. मा.

उ०—२ बिडग्गा ग्रर कूटग्गा बिचै ई बेटी नै बाप री इण सुभराज ग्रर कुरब कायदा रो घणो दुख व्हियो। मिनख री ग्रा गुलामी तो हवा ग्रर उजास मे ई बिस घोळ देवैला।
—फुलवाडी

३ कुटिलता।

उ०—१ तो ई जीवैला जितै गुण मानैला कै थारी प्रीत रै कारण म्हारै हिवडा रो बिस इमरत मे बदळग्यो। लुगाई रै रूप री ग्रर पुरख रै प्रेम री ग्रा इज तौ छेहली मरजादा।
—फुलवाडी

उ०—२ तद वो भळगी भाम जायनै ग्रेक दूजा गांव मे ग्रापरा डेरा-डडा जमाया। नवा गाव मे पेठ जमावण सारू वो मिसरी सूं ई मीठो बोलण लागो तो ई उण रै ग्रतस रो बिस लोगां सू छानो नी रह्यो।
—फुलवाडी

उ०—३ आ कालाई तौ बरसां तांई जूतां मारियां ई ठांणै नी आबै, इण वास्ते म्हैं तौ मुळगी ई माठ झालली । अबार ई आ सोचनै मूंन धारी के देखूं आप लोगां री जीभ में कित्तोक बिस भरयौ है । —फुलवाड़ी

४ वैश्य, बनिया ।

५ दनायुष नामक असुर का पुत्र ।

६ एक प्रकार के देवगण ।

७ नकुलि देवी के द्वारा मारा गया एक असुर ।

८ कमल की नाल ।

९ जल, पानी ।

१० घी, घृत ।

११ सर्प, सांप ।

१२ अमृत ।

१३ सात उपधातुओं में से एक ।

१४ कड़वा या तीक्ष्ण तत्व या बात ।

क्रि प्र.—उगटणौ, करणौ, खाणौ, घोळणौ, भरणौ, टपकणौ, देणौ, मारणौ, लेणौ, होणौ ।

रू. भे.—बख, बखम, बिख, बिस, बिसिया, बिस्र, वख, वस वसव, विक्ख, विख, बिसिया, विसु, वेख ।

१५ देखो 'विसय' (रू. भे)

उ०—बिस सूल माहि रम रहे, माया हित चित लाइ । सोइ मत जन ऊबरै, स्वाद छाड गुण गाइ । —दादूवाणी

बिसइ, बिसई—१ देखो 'बिसय' (रू. भे.)

उ० – भला वस्त्र पहरइ तोई तखारु, सामान्य वस्त्र पहरइ तौ दरिद्री, गोरौ ग्रामवातीउ, कालौ तौ कबाडि, का वेचि तौ खात्रपाडउ, न वेचइ तौ भडंग, बिसइ तौ मद्धरम बहिस्क्रत, बिसइ हीन तौ नपुसक । —व. स.

२ देखो 'विसयौ' (रू. भे.)

उ०—१ थोडु जमइ तौ भूंडउ ऊणाटउ, भला वस्त्र पहरइ तोई तखारु, सामान्य वस्त्र पहरइ तौ दरिद्री, गोरौ ग्रामवातीउ कालौ तौ कबाडि, का वेचि तौ खात्रपाडउ, न वेचइ तौ भडग बिसइ तौ मद्धरम बहिस्क्रत, बिसइ हीन तौ नपुसक । —व स

बिसकंठ—स. पु. [स. विषकंठ] १ शिव, महादेव ।

२ एक प्रकार का पक्षी विशेष ।

मि०—"नीलकंठ" ।

बिसकंभक—देखो 'बिस्कंभ' (रू. भे.)

बिसक—देखो 'बिसिख' (रू. भे)

उ०—पेख जग्या पोखला अगन झाळा पड़ै, छछाळा सीत मंद सुगध छूपै, कंपै नवजोबना दसक चाळा करै, फूलवाळा बिसक पार फूटै । —लच्छीराम बारहठ

बिसकन्या—सं. स्त्री. [सं. विषकन्या] १ वह कन्या या स्त्री जिसके साथ सभोग करने से सभोगकर्त्ता की मृत्यु हो जाय । इस उद्देश्य से कन्या के शरीर मे एक विशेष प्रकार का विष प्रविष्ट कर दिया जाता था ।

२ नाग कन्या ।

उ०—१ दळपति कोई न दूजौ वरदळि, निरदळिया मात लोक नर । करि ऊछजि बिसकन्या कहियौ, राव तणौ घरि लहीस वर । —दूदौ विसराळ

उ०—२ मैं परणंती परखियौ, सूरति पाक सनाह । घडि लडिसी गुडिसी गयंद, नीठि पडेसी नाह । नाह नीठि पडिसी खेत माझी निवड, गयद पडिस गहर करड धड़ भड गहड । ।विढती 'जसौ' बिसकन्या बाखाणियौ, परणती कथ यौ मुरड पहचाणियौ । —हा. झा.

रू. भे.—बिसकन्या, विखकन्या ।

बिसकरमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू. भे.)

उ०—राजमहलूं कै अडाव अरस सेती अडै, मनू धवळागिर बिसकरमा जडाव सू जडै । जिस नगरी का राव दिल का दरयाव जिसकै भडार परवरदिगार । —र. रू.

बिसकामणि, बिसकामणी—सं. स्त्री. [स. विषकामिनी] नाग कन्या ।

उ०—१ सिणगारी सन्नाह सु, बिसकामणि वरियाम । वरि आई हाला वरण, करण महा जुध काम । काम सग्राम ची हाम जुध कामणी, घणा नर जोवती भोमि आई घणी । महाबळ धवळ रा साहि वरमाळ तूं, सबळ धड़ कड़तळा घणा सन्नाह सूं । —हा. झा.

उ०—तूटै हार अयार तुरंगम, पहुटति मांग अनंग पड़ी । कमधज 'रतनै' स्यूं बिसकामणि, चाचरि चवरग पलगि चढि ।

—दूदौ विसराळ

२ वह कन्या या स्त्री जिसके साथ सभोग करने से सभोगकर्त्ता की मृत्यु हो जाय । इस उद्देश्य से कन्या के शरीर में एक विशेष प्रकार का विष प्रविष्ट कर दिया जाता था ।

रू. भे,—बिसकामणि, बिसकामणी ।

बिसकुंभ—स. पु. [सं. विषकुम्भ] फलित ज्योतिष के २७ योगो में से प्रथम योग का नाम ।

बिसकुट, बिसकूट, बिसकूठ—देखो बिस्कुट' (रू. भे)

बिसक्ख—१ देखो 'विसिख' (रू. भे.)

उ०—उभै दळै उचारय, मचै सु मार मारय । बिसक्ख पारवारयै, भडां सनाह भारयै । —रा. रू.

उ०—२ कर मूठ धनखं छूट बिसक्खं, लेखा पक्ख मर लक्ख । बध सूर हरक्खं, और विलक्खं चाव परक्ख रवि चक्ख ।—रा. रू.

२ देखो 'बिसेस' (रू. भे.)

उ०—१ आठ गुरु पद छद, जिण विद्युन्माळा अक्ख । गुरु लघु क्रम अठ बरग पद, सौ मल्लिक बिसक्ख । —र. ज. प्र.

उ०—२ भेद च्यार जिण रा भणौ, आद वेलियो अक्ख । कवी सोहणौ खुड्द कह, वळ जागड़ो बिसक्ख । —र. ज. प्र.

बिसकमा—स. पु. [स. विश्व+कर्मिन] १ सूर्य, सूरज, भानु । (क. कु बो, ना मा.)

२ देखो 'विश्वकरमा' (रू भे)

उ०—१ हरि आइगा बारह दिना री मुकाम कीजै । ज्यूं इतरा माहे मगनि सिनान करी सति ही आवै । महाराज मानी । हाजी दुलह बए चाले बिगर जानी । बैकुंठनाथ बिसकमा कूं हुकम किया । —र. वचनिका

उ०—२ गज कोटि राज द्वारो, मिदर उतग महल अटाळा । सपेख धाम धाम, बिसकमा विभ्रम भवेत । —गु रू. ब.

बिसख—देखो 'विसिख' (रू. भे)

उ०—१ बहि सुबाह एकहि बिसख, मारीचं मुरझाय । —रामरासी

उ०—२ दिम किरण पूरब अरक दरसै, दिखण कमधज दरसिया । असुराण दळ सिर असख अणगम, बिसख घण जिम बरसिया । —रा. रू.

उ०—३ आगै सेर बिलद सेन सनमुख चलायो,दळ जादव ऊपरा जाण नाळब दरसायौ । कुहक बाण हथनाळ बिसख बरखं तिण बारा, ब्रति स्रावण बहळा जाण घण मत्तो धारा —रा रू)

उ०—४ तो करू भरियण तेण करण कण, हरख मारू बिसख हण हुण । विकट पुरू मनावछन, गहर गुण गाजै । —र. रू.

बिसखधाम—सं पु [स. विशिख धाम] १ तरकश । (अ. मा.)

बिसखपर, बिसखपरो, बिसखप्पर—सं. पु. [स. विषकर्पर] १ कीचक के लिये प्रयुक्त विशेषण सूचक शब्द ।

उ०—बिसखप्पर कीचका बकु, हिडबु कमीरू मारिउ । लहु बर्धवि अरजुनि दुष्ठि, वार तुह जीउ ऊगारिउ । —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'बिसखपरो (रू भे.)

बिसखुट, बिसखूट—देखो 'बिस्कुट' (रू. भे.)

बिसघातक, बिसघाती—वि [स. विष+घातक] जिससे विष का प्रभाव दूर हो जाय ।

बिसटर - देखो 'बिस्टर' (रू. भे)

बिसटाळ बिसटाळु, बिसटालु, बिसटाळू, बिसटाळो—देखो 'बिस्टाळो' (रू. भे.)

उ०—१ केय कहै भिड आयो कंठीर । बिस्टाळ कहै कोय बडो वीर । जिण वार तमक पावु जवान, बिसताळ भडे खग रीठ वान —पा प्र.

उ०—२ जगपत जोय जहाज, कुळ जोइया कतळत करत । ए बिसटाळु आज । दाखै कुण मेलत 'दला' । —गो. रू.

उ०—३ विसनसिघ जद मेजिया, बिसटाळू बणवार । कमघ हूंत कंहाविया, चोकस सम्माचार । —पे रू.

उ०—४ बिसटाळू आया वहै, जीद करै सब जांण । कहिया बूढे रा कथन , बकियो जायल राण । —पा. प्र.

उ०—५ आलोची रातै रे, कहस्यां परभातै रे, बातै रहबातै गुण हम तुम सही रे । पाउधारेड डेरै रे, आलिम पंति हेरै रे, बिसटाळु चर पाछा फिरै हम कही रे । —प. च. चौ.

उ०—६ घरा सहरि ऊधमै, जोध खिजिया जमजाळा । कूंभरीण ओदके, वीच फेरै बिसटाळा , —सू. प्र.

उ०—७ विहै एम वेखियो, हता एकण घर माळा । वड वड भडा विचारि, बीच फेरै बिसटाळा । —सू. प्र

उ०—८ 'सूर' पान लै साह रा, अयो करण अलियात । घर मुदफर गिर छत्र घर, बिसटाळा री बात । —सू प्र.

उ०—९ अम्है बिसटाळै आवियो, लग ज्यां हिज लारै । कटक मुणि अगद कहै, पित सूझ प्रकारै । —सू. प्र.

बिसटियो—देखो 'बिसटी' (अल्पा. रू. भे.)

उ० – बित ले जावं बिसटिया, पाण चकारां पाड़ । मारो ज्यानै मोटवी, सगत असूला चाड । —पा. प्र.

बिसटी—स पु [स. विष्टि] १ ज्योतिष मे ग्यारह करणों मे से सातवें करण का नाम ।

२ पुरस्कारहीन या बिना पारिश्रमिक का कार्य, बेगार ।

वि —१ दुष्ट आततायी ।

२ देशद्रोही, उपद्रवी ।

३ डाकू, लुटेरा ।

रू भे.- बिसटी ।

अल्पा ,—बिसटियो ।

बिसटो—देखो बिस्ठो' (रू. भे.)

उ०—कागा केरी चाच ज्यूं, चुगला केरी जीह । बिसटा ज्यूं परची भुंगी, चूंथै सबही दीह । —बा. दा.

बिसठ—सं. पु [सं. विशठ] बलराज एवं रेवती के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।

बिसठो देखो बिस्ठो' (रू भे.)

बिसण—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्मा बिसण महेसवर तौ भेव कराही । गत ग्रमांमी ताहरी, को जांणै नांही । —गज उद्धार

बिसणाड़णौ, बिसणाड़बौ—देखो 'विणसाणौ, विणसाबौ' (रू. भे.)

बिसणाड़णहार, हारौ (हारी), बिसणाड़णियौ—वि० ।

बिसणाड़िग्रोड़ौ, बिसणाड़ियोड़ौ, बिसणाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिसणाड़ीजणौ, बिसणाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बिसणाड़ियोड़ौ—देखो 'विणसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिसणाड़ियोड़ी)

बिसणाडणौ, बिसणाडबौ—देखो 'विणसाणौ, विणसाबौ' (रू. भे.)

उ०—ग्रलूखानि बिसणाडिउ काज, कटक मगावी ग्राव्यउ ग्राज । करइ वात इम साकं राज, ग्रलूखानि जो ग्राणी लाज । —का. दे. प्र.

बिसणाडणहार, हारौ (हारी), बिसणाडणियौ—वि० ।

बिसणाडिग्रोड़ौ, बिसणाडियोड़ौ, बिसणाडयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिसणाडीजणौ, बिसणाडीजबौ—कर्म वा० ।

बिसणाडियोड़ौ—देखो 'विणसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिसणाडियोड़ी)

बिसणु—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

बिसतंत्र—स. पु. [सं. विषतंत्र] साप आदि विषैले जानवर के विष को दूर करने की क्रिया । (वैद्यक)

बिसत—देखो 'बहिस्त' (रू. भे.)

उ०—ग्रपनै काज करै गउ विसमल, जीव मरै पुहचावै । काजी बिसत हाथि है तेरे, तौ कुन दोजग क्यू जावै । —ग्रनुभववांणी

बिसतर—देखो 'बिस्तर' (रू. भे.)

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—लाखा भाटी की ग्रजं साखा बिसतर का, काटै मोती पोविया वन हैम वर का जल्ला महाराजी जिसा जग कीरत कर का, गावै जिस दा गीतडा ग्रब ही घर घर का । —दुरगादत्त बारहठ

बिसतरणौ, बिसतरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रसनां नाभ सबद संचरिया, तन मन वचन सहज बिसतरिया, उलटि ग्रछर ग्रणग्रछर होई,सुरता बकता लहै न कोई । —ग्रनुभववांणी

उ०—२ बिसतरी बात सारी बिसव, ग्रणकारी उतपात सी । ग्रजमेर कान ग्रवरंग नै, सुण लग्गी ग्रत घात सी । —रा. रू.

उ०—३ मह्रा ढहोलो मेदनी, बिसतरियौ तिण वार । साह तपस्या ग्रग्गली, ग्रकबर सेन ग्रपार । —रा. रू.

उ०—४ गम पडै एम इण गीत री, इम पिंगळ कवि उचरै । हेक गुर घटै दुइ लुघ दुई तिम तिम नाम बिसतरै । —पिं. प्र.

उ०—५ कमधज्ज तजै मनमोह कायाचौ ग्रौर तिसोह बिसतरियं तल लै निरवाण क राज तियाग, गोपीचंद भरत्थरिय । —गु. रू. ब.

उ०—६ दाडिमी बीज बिसतरिया दीसै, निउछावरि नाखिया नग । चरणै लुंचित खग फळ चुंबित, मधु मुंचति सीचति मग । —वेलि

बिसतरणहार, हारौ (हारी), बिसतरणियौ—वि० ।

बिसतरिग्रोड़ौ, बिसतरियोड़ौ, बिसतरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिसतरीजणौ, बिसतरीजबौ—कर्म भाव वा० ।

बिसतरबंद—देखो 'बिस्तरबंद' (रू. भे.)

बिसतरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसतरियोड़ी)

बिसतरियौ, बिसतरौ—देखो 'बिस्तर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—पाछो पडउथलो मिल्यौ—कदै ही नही ! कदै ही नही ! तौ म्हैं ग्रठै क्यू हूं ? दूजी दुनिया बळगी के ? एक दिन री बात थोडी ही है ? जिंदडी रौ सवाल है । मूली बोरिया-बिसतरा उठाया, बाध्या ग्रर चढी, रातरै पल्लै ! पेमजी ग्रापरै तल्लै-बल्लै । —दसदोख

बिसतार—स. पु.—१ समूह, झुण्ड । (ग्र मा)

उ०—सीकोतरि सबकणी प्रेत डकणी ग्रपारा, विवध भूत वेताळ वीर पळचर बिसतारा । गिरध चील गोमायु विरक जंबू रसवाया, काक कंक को गिणै, ग्रास पळ सभळ ग्राया । —रा. रू.

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—१ सु वसंत ग्राइ हित देने दुख दूरि कीयौ । वेली थी सु व्याई । साखा ग्रव्या की पसरी छै । सु जाणा बाहां की ग्रोलंबि वैसाख हुई । वैसाख मासि साखा कौ बिसतार हुग्रौ । —वेलि टी.

उ०—२ राम नाम निज मूळ है, ग्रौर सकळ बिसतार । जन-हरिया फल मुगति कु, लीजै सार सभार । —ग्रनुभववांणी

उ०—३ तीन लोक मंडप बिसतारा, जा बिच ग्राय जाय ससारा । बाकै परै ग्रभंगीराया, ग्रासण एक ग्रटल मंट छाया । —ग्रनुभववांणी

उ०—४ ग्रौरंगसा पातसा ग्रासुर ग्रवतार, तरस्या कै तेजपुंज एक से बिसतार । साप का विहाई सा प्रताप का निदान, मारतंड ग्राबै जिसी जोतसी जिहान । —रा. रू.

उ०—५ पौळि पौळि उच्छव प्रयळ, वेदोकति बिसतार। राजा तखत विराजियौ, सुभ चोकीस'गार। —रा. रू.

उ०—६ वडी रिधि तणं बिसतारं, पुर बाहिर हिव पधारं। श्रावे घरता ग्राणद, जिहां त्रिगडं स्रीवीर जिणद। —ध. व ग्र.

उ०—७ ग्राठ गायत्री ब्रह्मा नं दीवी, रजोगुण बिसतारा। चार वेद पिछाडी दीना, कर उत्पत्ति मसारा। —स्रीहरिरामजी महाराज

उ०— दमिटं चोर मारण, जोर प्रगटं व्यापारा, बधि वमती रन, वनै वेळ वरती ऊदारा। वडं क्रोध बिसतार,रीछ मावर घर रोणा। जठं सिघ सद्दता, तठं गरजंत बिलोणा। —रा रू.

उ०—६ ग्रागै जाइ गुजराति री वेढि की। वेढि जीपि ग्रर पातिसाहजी सीकरी फतेहपुर पधारिया। इण बात रो बिसतार ग्रागै कहीजसी। —द. वि

बिसतारक—देखो 'विस्तारक' (रू. भे.)

बिसतारण—देखो 'विस्तारण' (रू भे)

उ०—१ कुळ देवी ग्रह पूज सकारण,विजन नव नेवज बिसतारण। धूप ग्रगर दीपक सुभ धारण, ग्रन ेना धन मेव ग्रपारण। —रा. रू

उ०—२ घर ग्रबर ढक्कियण, वेद ब्रह्मा बिसतारण। त्रिभुवन तारण-तरण, सरण ग्रमरण साधारण। —ह र

बिसतारणौ, बिसतारबौ—देखो 'विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे.)

उ०-१ चुगली बिसतारत चुगल, सापन होय मचेन। सो मुरदार सरीर री, लट मुख माफल लेत। —बा दा

उ०—२ बात वळै ग्रसुरा बिसतारी, घर दिम ग्रमट दिलासा धारी। कितराई गुण भ्रमिया काचा, सबळ विखायत रहिया साचा। —रा. रू

उ०—३ पर हूंता जिम पसर, घरा फणधर उर धारै। पवन जार पेरियौ, वहै वद्दळ बिसतारै। नाग राग पेरियौ, प्राण पैला वलि थप्पै। दाम हुकम पेरियौ, जाम पनि घरै सजप्पै। —रा. रू.

उ०—४ भार उतारै भोमि, ग्रवधि संदेह उधारै। वसै राम वैकुंठ, विमळ जग जस बिसतारै। —सू. प्र

उ०—५ हाथी सहु पहिरी हलकारै, हलकना नवि हारै। सुडादड सबल बिसतारं, मद उनमत्ता मारै हो। —वि कु

बिसतारणहार, हारौ (हारी), बिसतारणियौ—वि०।
बिसतारिग्रोड़ौ, बिसतारियोड़ौ, बिसतारयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिसतारीजणौ, बिसतारीजबौ—कर्म वा०।

बिसतारियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसतारियोडी)

बिसतारी—देखो 'विस्तारी' (रू. भे.)

बिसतारौ—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—चारित्र ऊपर चाव हमारौ, वचन न लोप्यौ एकज धारौ। तिण सु एह हुवौ बिसतारौ, पिण विरक्त नै कुण राखणहारौ। —जयवाणी

बिसतरणौ, बिसतरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे.)

उ०—करि थान छठै प्राकृत कहू, विधि ग्रा घणी बिसतरू। सर रचि प्रताप 'ग्रभमाल सह,' इम खटभाखा उच्चरू। —सू प्र.

बिसतरणहार, हारौ, (हारी), बिसतरणियौ—वि०।
बिसतरिग्रोड़ौ, बिसतरियोड़ौ, बिसतरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिसतरीजणौ, बिसतरीजबौ—भाव वा०।

बिसतरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसतरियोडी)

बिसथरणौ, बिसथरबौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरबौ' (रू. भे)

उ०—मरदिया जेम जगमल्लमल्ल, ढंढोळि ढल्ल मारिय मुगल्ल। रळतळइ रत्त मोलइ मपत्त, सभळइ सत्त बिसथरइ वत्त। —रा. ज. मी.

बिसथरणहार, हारौ (हारी), बिसथरणियौ—वि०।
बिसथरिग्रोड़ौ, बिसथरियोड़ौ, बिसथरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिसथरीजणौ बिसथरीजबौ—भाव वा०।

बिसथरियोड़ौ—देखो 'विस्तरियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री बिसथरियोडी)

बिसथार—देखो 'विस्तार' (रू भे)

उ० - १ नमो नर सुर नाथ निरगुण नरेसुं, नमो मेरू धारं हुग्रौ नाग सेसु। नमो बिमन बिसथार ग्रधिको वणायौ, निज जोनि ब्रह्मा जिसौ पुरुष जायौ। —पी. ग्र

उ०—२ करतार मेह करंति, ग्रम चिहु रसा बरसति। परमेस पार ग्रपार, वैराट घट बिसथार। —पी. ग्र

बिसथारणौ, बिसथारबौ—देखो विस्तारणौ, विस्तारबौ' (रू. भे)

बिसथारणहार, हारौ (हारी), बिसथारणियौ—वि०।
बिसथारिग्रोड़ौ बिसथारियोड़ौ, बिसथारयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बिसथारीजणौ, बिसथारीजबौ—कर्म वा०।

बिसथारियोड़ौ—देखो 'विस्तारियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिसथारियोडी)

बिसद—वि. [स. विशद] १ निर्मल, साफ, स्वच्छ, पवित्र।

उ०—कहु कारखांना गिणत कुण कुण, संभ्रमैं तिहूंलोक सुण सुण। बिसद जग उजवाळ बिरदां, सजा साकण सूर।
—र. रू.

२ सफेद रंग का, चमकीला, उज्जवल (ग्र. मा., ना. मा., ह. ना. मा.)

३ स्पष्ट।

४ शान्त, स्थिर, निश्चिन्त।

उ०—सुखारथी स्वारथी जै स्वसुख दुख प्रारथी बच सदै, बढे जो विद्यारथी बिसद परमारथी बच सदै। प्रचंड ब्रह्मांड प्रचुर भुविमंड प्रद प्रभौ, वितंड प्रोद्दंड प्रनत दुख खंड प्रद विभौ —ऊ. का.

५ सुन्दर, मनोहर।

स पु —१ सफेद रंग।

२ शव। (ग्र. मा)

३ जयद्रथ राजा का पुत्र एव सेनजित राजा का पिता एक राजा।

रू. भे —बिसद।

बिसदता–स. स्त्री [सं. विशद+ता प्रत्य] विशद होने की अवस्था या भाव।

बिसदसरीर–स पु [स. विशद+शरीर] चन्द्रमा, चान्द। (नां. मा.)

बिसधर–सं पु. [स. विष+धर] १ सर्प, साप।

उ०—हरा बिसधर बिसधर बचो, आग बुझाय अगार। पिसण मार सुत पिसण रो, असमझ लियो उबार। —बा. दा.

२ मोह।

३ शेषनाग।

४ महादेव, शिव, शंकर।

रू. भे —बखधर, बखधारी, बिखधर, बिखधर, बिखहर, बिसधर, बिसहर, विखधर, विखधर, विखधार, विखधारी, विखहर, बिसधार, बिसधारी।

बिसधाम्री–स स्त्री.—मनसादेवी जो जरत्कारु ऋषि की स्त्री थी।

बिसन–स. पु [स. वैश्वानर] १ आग, अग्नि।

उ०—मैं तो प्रीत करी परमातम, पावक देख पतंगा। परमातम पर दुख निवारै, उ जळत बिसन कै संगा। —अनुभववाणी

२ देखो 'बिसणु' (रू. भे.) (ना. मा., ह. ना. मा.)

उ०–१ राम नाम सब ही कूं भाख्यो, ब्रह्मा बिसन महेसुर भाख्यो। सांई नाव कह्यो पारबती, भायो भेद रिख नारद ती।
—अनुभववाणी

उ०–२ भगवत मुसण हुम्रो भ्रहूं भुवणं, घण दोहा लग नाम घणो। ब्रह्मा बिसन महेस बदीतो, तप तुंगिम जस तूझ तणो।
—गोपाळ मीसण

उ०—१ ताणा मूछ तोलै तिजड, बिसन सकति कर वद। कूच नगारां हुय कटक, चवै हुकम जयचंद। —सू. प्र.

उ०—४ सुणे पोकार बिसन सळसळिया, रत चखि भ्रकट कोट धोम रळिया। प्रळै काळ रो धिखतो पावक, प्रगटै जोति पिंड प्रम भावक। —मा. वचनिका

उ०—५ ब्रहमा बिसन ईसर सुवर, केसव एक त्रय वप्प किय। रिदय निलाट ग्ररि नामि हू, ब्रहमा बिसन महेस थिय।
—रा. वसावळी

३ देखो व्यसन' (रू. भे.)

उ०—१ कइ ग्रम्है सात बिसन ग्राचरिया, कइ परनदा कीधी। कइ ग्रम्है दोनदया नवि पाली, लाच ग्रयुगती लीधी।—का. दे. प्र.

उ०—२ एक महर, तै माहि वडो राजा। पिण राजा नू सिकार रो घणो बिसन। नित्य सिकार चढै। मारै तो हेक हिरण पिण सारी ही रोही रा हिरण घेचै, चरण देवै नही।
—वूढी ठग राजा री बात

उ०—३ माझी खिणक मिजाज, बै ग्रदबी सातू बिसन। लोभ घणो कम लाज, पैला घर वाळै पिसण। —बा. दा.

उ०—४ जग माझल चुगली जिसो; हीण बिसन ग्रन है न। विण चुगली भुगतै विथा, चुगली कीधा चैन। —बा. दा.

बिसनदेव - देखो बिसणु'

उ०—नार्गे हुय ग्रमनान कराया, बिसनदेव का नांव धराया। तूं तो ग्रास पास कू नाळै, ग्रलख रह्यो ग्राखि दै ठाळै।
—ग्रनुभववाणी

बिसननाथ—देखो 'बिसणु'।

उ०—नरा नाथ वाजता नगारा, ग्रायो पुहकर दळा ग्रपारा। बिसननाथ ग्राया दिन वळिया, पुहकर गुरा तणा दुख पुळिया।
—रा. रू.

बिसनपथ देखो 'विस्णुपथ' (रू. भे.)

बिसनपद—देखो विस्णुपद' (रू. भे.) (ग्र. मा, ह ना मा)

बिसनपरी—देखो बिस्णुपुरी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बिसनपरो—देखो 'विस्णुपुरी' (रू. भे.)

उ०—झूठा खाणा बकणा, ए जमपुर का कांम। हरीया सुवचन साचका, विसनपरा विसराम। —ग्रनुभववाणी

बिसनपुर—देखो विस्णुपुरी' (रू. भे)

बिसनपुरी—देखो 'विस्णुपुरी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

बिसनपुरो—देखो 'विस्णुपुरी (रू. भे.)

बिसनप्रिया—देखो 'विस्णुप्रिया' (रू. भे.)

बिसनर, बिसनरु—१ देखो 'बैस्वानर' (रू. भे) (डि. र)

उ०—१ दूबणियां गदबडे, घाव डूगा घळ जावै। बिसनर सू जळ जाय, लाल लोई कढ आवै। जळ मे पान उकाळ, घपटवा घाव कुबावै। कीडा पडे न कोय, पीड आखी भड जावै।
—दसदेव

उ०—२ विहूंगं हुवौ न चीनी बिसनर, अब ही तरणं न आयो आगि। धड़ 'धमळीत' तरणी खग-धारां, लिगि लिगि गयौ अगारा लागि।
—ईसरदास बारहठ

उ०—३ राति चालइ गउ मागि सुरगह कुणबि सउ, दियउ पुरोहितु दाउ लावहरइ बिसनरु ठवइ।
—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—सिव ब्रह्मा बिसनर कहै, संत मरै सब गाखि। राम नाम एको भला, हरीया हिरदै राखि।
—अनुभववाणी

बिसनसामी—स. पु.—वैष्णव सम्प्रदाय का अनुयायी।

उ०—१ तळाव मोतीकुंड बिसनपुरा कनै पहला तो खान कटणा सु हुयौ थौ नै पछै मोती बाई करायौ तिरण मे बेरी १८९६ मे बिसनसामियां सारा सामन्न होय नै कराई। —मारवाड री ख्यात

बिसनासन—स. पु. [स. विस्णु+ग्रासन] १ गरुड।

२ शेषनाग।

वि. पु. [स विष+नाशन] विष का नाश करने वाला।

बिसनिर, बिसनिरु—देखो 'वैस्वानर' (रू भे)

बिसनी, बिसनीउ—देखो 'ब्यसनी' (रू. भे)

उ०—१ विसन बिना दस बीस बरस, बिच मरणौ सूरग सिधाणौ। बिसनी नर सौ बरस जियै वपु, पूगै नरक पयाणौ।
—ऊ का

उ०—२ गयबी थाइ गालडा, अनइ करमाइ काय। आगलि ऊभउ बिसनीउ, थूंकत थूकत जाइ।
—मा. का प्र.

बिसनु—देखो 'विस्णु' (रू. भे.) (अ मा.)

बिसनुकवच—देखो 'विसनुपंजर'।

बिसनुपजन, बिसनुपजर—स. पु [सं. विष्णु+पंजर] १ विष्णुस्तोत्र जो रक्षार्थ पढा जाता है।

२ विष्णुस्तोत्र जो ताबीज के रूप मे भुजा पर धारण किया जाता है।

रू. भे.—पंजरविसन, पजरविसनु।

बिसनोई—सं. पु.—१ एक सम्प्रदाय विशेष, जिसके प्रवर्त्तक जाभोजी थे।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी व्यक्ति।

रू. भे.—बिसनोई, बिस्नोई।

बिसनौ—देखो 'विस्णु' (रू भे)

उ०—बिन भजन कहे तूं बिसनौ, वडौ थूळ सरिखौ छौ। पीरदास कूड बोलै प्रभु, दास नही कहै दास छा।
—पी. ग्र.

बिसन्न—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे)

उ०—१ कपाळ विसाळ सिघाळ किमन्न, बडाळ भुजाळ उजाळ बिसन्न। मुणाळ भुग्राळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।
—ह. र.

उ०—२ वदै पग लच्छि रहेत बिसन्न, समीपमुकत्ति ज 'देव' सुतन्न। अखै प्रथमी जस एम अथाग, 'भुरा' धनि तूझ तणौ अत भाग।
—सू प्र.

उ०—३ उदोत तपोनिध त्रैगुण ईस, अजीत जरा अत जोग अधीस। बिसन्न विमोह विसन्न विग्यान, रतीपति तात प्रकत्त राजान।
—ह. र.

२ देखो 'व्यसन' (रू भे)

उ०—जावै माहम जाणियौ, ईखे आक्रत तन्न। वाघ डरे नह बैर सूं, बाधा बैर बिसन्न।
—बा. दा

बिसम्भर—१ देखो 'विस्रंभ' (रू. भे.)

२ देखो 'वैस्वानर' (रू भे)

उ०—फौजा गजडंबर लीण लमक्कर दकवरण उत्तर आहुरियं। वहे वाग बिसम्भर विखियौ धोमर ताळ भयकर ताविडियं।
—गु रू. व

बिसन्ऩ—देखो 'विस्णु' (रू भे)

बिसपत, बिसपति, बिसपती—१ देखो 'विस्वपति' (रू. भे)

उ०—या ओमर हरि का होय रहियै भवर रच्या मो भूपर वहिए। नाव विसभर बिसपति गावा, पूरण ब्रह्म परसि पति पावा।
—ह. पु वा

२ देखो 'बृहस्पति' (रू भे.)

बिसपाळ—देखो 'विस्वपाळ' (रू भे)

उ०—१ चन्द्र सूर किया दोय दीपक, करि तारामंडळ करितार। अनत लोक बिसपाळ विसभर, सकळ मछाया तौ सार।
—ह. पु. वा.

उ०—२ अरि भजन अनरथ हरन गरब हरन गोपाळ। जन हरि-दास अशरन करन हरि अकळ सकळ बिसपाळ। हरि अकळ सकळ विसपाळ नाथ निरभै निरधारं। निराकार निरलेप वार नहि लाभै पार।
—ह पु. वा.

बिसप्रसून—स. पु. [स विषप्रसून] कमल। (ह. नां. मा.)

रू भे.—बिसप्रसुन।

बिसप्रस्थ-स. पु. [सं. विषप्रस्थ] एक पर्वत का नाम।

बिसफळ-सं पु. [स. विष+फल] १ वह जहरीला फल जिसके सेवन करने पर सेवनकर्त्ता की मृत्यु हो जाती है।

रू. भे.—बिसफळ।

बिसफोटक—देखो 'विस्फोटक' (रू. भे.)

बिसब, बिसब्ब—देखो 'विस्व' (रू. भे.)

उ०—उदोत तपोनिध त्रेगुण ईस, अजीत जराभ्रत जोग अधीस। विसम्र विमोह् बिसब्ब विग्यान, रती पति तात प्रकत्त राजान।

—ह. र.

बिसबावीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—ससि सूर लोचन साचि, चत्र वेद वायक वाचि। बुद्धि ब्रह्म बिसबावीस, अंतकरण कहीजै ईस।

—पी. ग्रं.

बिसमंत्र-स. पु. [स. विष+मंत्र] १ विष उतारने वाला मंत्र।

२ उक्त मन्त्र को जानने वाला व्यक्ति।

बिसम-वि. [स. विषम] १ जो समान न हो, असमान।

२ जिसमे दो का भाग देने पर एक शेष बचे।

३ जो सरल न हो, कठिन, रहस्यमय।

उ०—अब वार गम तोड धोई अग करि लीक्रसन तणा कंवार। उत्तम होई जनम क्रम आतम, अगम तरै दधि बिसम ससार।

—ह. ना मा.

४ जो व्यवस्थित न हो अव्यवस्थित।

५ जहा कोई नही जा सके, दुर्गम्य।

उ०—बदइ इसी करी अरदास इणि गढि राउलनउ छइ वास। विसमउ गढ विसमा झूझार, ऊपरि बिसमा पोलिपगार।

—का. दे प्र.

६ भयंकर, भीषण।

उ०—१ उलकापात हूउ विकराळ, बिसम धूम धधूइ विराळ। वलिउ कटक छाडिउ मेल्हाण, ढीली भणी च ल्यउ सुरताण।

—का दे प्र

उ०—२ सत्य कू छडिउ बलिहि, सीसु तसु दिणी चऊदमइ, रातिहिं झूझइ बिसम, झूंफ गुरु पडइ कीमइ। —सालिभद्रसूरि

उ०—३ बिसम ढाक स बूकस डमडमी भरहरी भर भेरि बिहामणी। उच्चरि तुररी कुकरी जसी, सुभट ना सवि रोम ज उद्गमी।

—सालिसूरि

७ कष्ट देने वाला, कष्टप्रद।

८ टेढा, तिरछा, बाका।

९ प्रतिकूल, विरुद्ध, विपरीत।

१० अद्भुत, अनोखा।

११ बुद्धिमान, चतुर, चालाक।

१२ तीव्र, तेज।

१३ वीर, बहादुर।

१४ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—बदइ इसी करी अरदास, इणि गढि राउलनउ छइ वास। बिसमउ गढ बिसमा झूझार, ऊपरि बिसमा पोलिपगार।

—का. दे. प्र.

१५ ऊबड़-खाबड़, असमतल।

उ०—सुगुरु साथिय हीए घणु ममिया, बिसम वाट किहाइं न वीसमिया। वसइ जं जिनमदिरि सीयलइ, बिहु परं तीहं तापु सही टलइ।

—जयसेखर सूरि

१६ दृढ, मजबूत।

१७ उल्टा, विपरीत।

उ०—तैं जाणी हुं ताहरी, थई रही छूं धीर। अक्षर सहू कीजै समा, बिसमा टाली वीर।

—मा. कां. प्र.

१८ टेढा, अनुचित, बुरा, कर्ण कटु।

उ०—पातिसाह मूछइ वळ घाली, बिसमा बोल्या बोल। जे को माहरी आण न मानइ, चूकइ ठाम निठोल।

—कां. दे. प्र.

स. पु.—१ वह संख्या जो दो से बराबर-बराबर नही बटे।

२ तकलीफ, मुसीबत, विपत्ति, संकट।

३ फौज, सेना।

४ अग्नि, आग।

५ वायु, पवन, हवा।

६ शिव, शंकर, महादेव।

७ वह वर्णवृत्त जिसके चारो चरणो मे समान वर्ण न होकर किसी चरण मे अधिक व किसी चरण मे कम हो।

८ दो परस्पर विरोधी वस्तुओ या दोनो की विषमताओ का वर्णन करने वाला एक प्रकार अर्थालंकार विशेष। (साहित्य)

९ एक प्रकार का ताल विशेष। (संगीत)

१० वायु प्रकोप के कारण उत्पन्न होने वाली चार प्रकार की जठराग्नियो मे से एक।

[सं. विषम] ११ भगवान श्रीविष्णु का एक नामान्तर।

रू. भे.—बखम, बिखम, बिखमी, बिम, बिसम, बीसम, बखम, बखमी, विक्खम, विक्ख, विक्खम, विक्खमी, विक्खम्म, विक्खम्मी, विखम, विखमी, विखम्म, विखम्मी, विसमउ, विसमिउ, विसमी, विसमु, विसमं, विसमो, विसम्म, विसम्मी, विसम्य, बिस्सम, वीसम, बीसमउ, वीसमी, वीसमं वीसमो।

बिसमउ—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ गढ गिरउ अनइ बिसमउ, जेहनउ पायउ पातालि पयठउ महाराज तणा जिसा पाग तिसा कोसीसा, गरुई पोलि, निविड

कमाड, लोहभोगल, बिजाहुरि तणी पद्धति, यत्र तणी स्रेणि,'''।
—ब. स.

उ०—२ बंदइ इसी करी भरदास, इणि गढि राउळनउ छइ वास।
बिसमउ गढ बिसमा भूकार, ऊपरि बिसमा पोळिपगार।
—का. दे. प्र

बिसमगत, बिसमगति, बिसमगती, बिसमगत्त, बिसमगत्ति, बिसमगती—स. स्त्री.—विकटस्थिति।

उ०—हलवळ दळ सकळ 'जसा' हीलोहळ, भळहळ कंत हुद बीज मत्त। भळहळ साग दोयण स भाडण, गढ अरियण घरा बिसमगत्त।
—सादूळजी खिडियो

रू. भे.—वसमगत, वसमगति, विखमगत, विखमगति।

बिसमजुर, बिसमज्वर—स पु. [स विषम+ज्वर] प्राय. वर्षा ऋतु मे होने वाला एक प्रकार का ज्वर विशेष जिसमे यकृत और तिल्ली बढ जाती है।

रू. भे.—बिखमजुर, बिखमज्वर, विखमजुर, विखमज्वर।

बिसमत—सं स्त्री [स विष+मति] दुर्बुद्धि, खराब बुद्धि।

वि.—१ ऊबड खाबड, असमतल।

२ कठिन या दुर्गम्य।

३ सकुचित, सिकुडा हुआ।

देखो 'बिस्मित' (रू भे.)

रू. भे.- बिसमत, बिसममत।

बिसमता—स स्त्री. [स. विषम+ता प्रत्य] विषम होने की अवस्था या भाव।

उ०—अठै प्रस्थिपाल रा अन्वय मैं 'गमीर' री दसमी पीढी राजकुमार देवसिंह हुवो जिकण चालुक वस मैं भोलाराय भीम री तेबीसमी पीढी गोइदराज टोडा रो अधीस हुवो जिकण रा अठारह अगजा मैं बडा ही बडा कुंभराज कन्हड दो ही बंधवा नू आपरा सगोत्र गोळवाळ जसराज री दो ही पुत्रिया बिवाही इण कारण मागध लोका रा घणा ग्रथा मैं एक ही लेख जाणि सोहो प्रमाण इण ग्रंथ में राखियो परंतु पीढिया री बिसेस ही बिसमता हू बिरोध आवै।
—व भा.

रू. भे.—बिखमता।

बिसमनयण, बिसमनयन—स. पु. [स. विषमनयन] शिव, महादेव।

रू भे.—बिखमनयण, बिखमनैण, विखमनयण, विग्रमनैण।

बिसमनेतर, बिसमनेत्र, बिसमनैण—स. पु. [स. विषमनेत्र] शिव, महादेव।

रू. भे.—बिखमनेत्र, विग्रमनेत्र।

बिसमपण, बिसमपणौ—स. पु. [स विषम+रा. प्र. पण, पणौ] विषम होने की अवस्था या भाव, विषमता। (अमरत)

बिसमबाण—स. पु. [स विसम+बाण] कामदेव के पांच बाणों में से एक बाण।

रू. भे.—विखमबाण, विग्मबाण, विसमबाण।

बिसममत—देखो 'बिसमत' (रू भे)

बिसमय—स. पु [स. वि.=बुरा+समय] बुरा समय, खराब समय।

वि.—[स. विष+मय] १ विषयुक्त, जहरयुक्त।

रू. भे.—बिसमय, बिसमै, बिस्मय।

२ देखो 'बिस्मय' (रू. भे.)

उ०—कमनै तीरन तानिकै पत्थरैत बेधत पानि कैं 'बुध' तनय हित जय प्रणय नय बय छ्यय रन सुम अभय अतिमय बिसय चय भुव बलय बिसमय प्रलयमय भय समय निरदय उदय रबि नयनिलय अजय सयकर अवय जय अय उभय सय पय हृदय अपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार।
—व. भा.

बिसमर—देखो 'बिसमरौ' (रू. भे)

बिसमरण बिसमरमण—देखो 'बिस्मरण' (रू भे)

बिसमरणौ, बिसमरबौ—देखो 'बिस्मरणौ, बिस्मरबौ' (रू. भे)

बिसमरणहार, हारौ (हारी), बिसमरणियौ—वि०।

बिसमरिग्रोडौ, बिसमरियोडौ, बिसमरयोडौ—भू० का० कृ०।

बिसमरीजणौ, बिसमरीजबौ—कर्म वा०।

बिसमरियोडौ—देखो 'बिस्मरियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिसमरियोडी)

बिसमरौ—स पु. [सं. विषमर] विषैला जन्तु, छिपकली। (अमरत)

रू भे.—बिसमर, बिखमरौ, विसमर।

बिसमल, बिसमला, बिसमल्ला, बिसमल्लाह—देखो 'बिस्मिल्लाह' (रू. भे)

उ०—१ मूला मूंनिन तं, करी ते कीया बिसमल। खलडी गला कटाय कै, क्या कीया वेकल।
—अनुभववाणी

उ०—२ काया बिसमल क्या करै, मन कू बिसमल कीन। हरीया मन बिसमल बिना ग्रानम सधै न चीन।
—अनुभववाणी

उ०—३ अपनै काज करै गउ बिसमल, जीव मरै पुंहचावै। काजी बिमल हाथि है तेरै, तो कुल दोजख क्युं जावै।
—अनुभववाणी

उ०—४ अपनै हाथि कीया मन मानी, हरि का कीया दाय नही आनो। मारै गऊ कहै बिसमला, यु तो खुसी खुदाय न अला।
—अनुभववाणी

बिसमबांण—देखो 'बिसमबाण' (रू. भे)

बिसमबिसिख—स. पु [स. विषम+विशिख] कामदेव का एक नाम।

बिसमव्रत–सं. पु. [सं. विषम+वृत्त] एक प्रकार का वृत्त विशेष जिसके चारो चरणों में पद असमान हों।

भिसमसि–स. पु. [सं.] आलम्बन सहारा।

उ०—तै मिच्छदिट्ठी मिथ्यात्वी द्रस्टि जांणिज्ज जांणिवउ, जे पतित धरम हूंता भ्रस्ट हूया तेहना आलबन ओठभ लिइ, भ्रस्टनो बिसमसि करइ। —षष्ठीशतक

बिसमागनी, बिसमाग्नि–सं. स्त्री. [स. विषम+ अग्नि] वैद्यक मे चार प्रकार की जठराग्नियों में से एक जठराग्नि।

बिसमाजुद्ध, बिसमाजुध, बिसमाजुध्ध, बिसमायुद्ध, बिसमायुध–स. पु. [स. विषमायुद्ध] कामदेव का नामान्तर।

रू. भे.—विखमाजुध, विखमाजुध्ध, विखमायुद्ध, विखमायुध।

बिसमासन–स. पु [स विषमाशन] ठीक समय पर भोजन न करके थोडा पहले या थोडा पीछे भोजन करना जिससे शरीर मे आलस्य उत्पन्न होता है। (वैद्यक)

बिसमिउ—देखो 'विसम' (रू भे.)

उ०—बिसमिउ कटक कौरव केरउ, दैव चक्र किम काइ फेरिउ। नारि सहरि सर संप्रति आवइ, कइ अगास पडता एउ भावइ। —सालिसूरि

बिसमिल, बिसमिला, बिसमिल्ला, बिसमिल्लाह—देखो 'बिस्मिल्लाह' (रू. भे)

बिसमित - देखो 'विस्मित' (रू. भे)

बिसमी—देखो विसम' (रू भे)

उ०—१ रतनसेन सार्थं हुओ, बिसमी बिसमी ठोड़। देखाणो सुलतान नै, फिरि-फिरि गढ चीत्तौड। —प च. चौ.

उ०—२ चमरी जिम चल लखमीय, बिसमीय बिसय नी वात। नारीय नेह विण दीविय, जीविय बहु उपघात। —जयसेखर सूरि

बिसमु - देखो 'विसम' (रू. भे)

उ०—१ दैव जिहां बिसमु थयु, तव नही काई बलप्राण। वली वेला सरव सांचूं, जाणनै निरवाणि। —नळाख्यान

उ०—२ गुरु ऊठाडइ अरजुनु कुमरो, करणिहि मरिसउ माडइ वयरो। बे भाथा बिहु खवें वहेई, करयलि बिसमु धणुहु धरेई। —सालिसूरि

बिसमै—१ देखो 'विस्मय' (रू भे.)

उ०—१ आवी खबर अबीतिया, बिसमै जैसी बत्त। तद राठौड़ बूझियो, 'दुरगै' आसावत्त। —रा रू.

उ०—२ मेडतिया 'मधकर' हर मेडतै सहायक, साहस कै सादूळ वस कै नायक। जाकी रीत को प्रमांण द्यपुर दरसावै, कहनै मैं बिसमै सी देखै वन आवै। —रा. रू.

२ देखो 'विस्मित' (रू. भे.)

उ०—रात घड़ी दोय गया थाळी मे सेर च्यार वस्त घात, रुमाल सू ढक राजा री हजूर गयौ। जाय मुजरो कियो। थाळी मुंहडै आगै मेल्ही। राजा सांम्हौ देख बिसमै रह्यौ। —राजा भोज अर खापरै चोर री वात

३ देखो 'विसम' (रू. भे)

उ० १ साम धरम रत्ता पण सार्चं, वयण दूठ मुख भूठ न वाचै। पड़तौ गयण ग्रहै निज पाणी, बिसमै समै एक रस बांणी। —रा. रू.

उ०—२ 'सोनागिर' चांपावत हाथ खग तोलै, बिसमै मैं द्रढ देण कोप वैण बोलै। समै पाए सूर सोई वीरता बिचारै, समै कै निदान आए आसमान धारै। —रा. रू.

बिसमौ—१ देखो 'विसम' (रू भे)

उ०—गढ गरुउ अनइ बिसमौ जीहू तणो पाय पातालि पइठउ, परवतनइ स्रंग, बइठउ उच्चस्तर पोलि, लोहमय कपाट, महाकाय भोगल, विजहारी तणी पद्धति,'''। —व. स.

२ देखो 'विस्मय' (रू. भे.)

बिसम्म, बिसम्मी – देखो 'विसम' (रू. भे.)

बिसम्य—१ देखो 'विसम (रू. भे.)

उ०—दसा बिसम्य सम्य हा अगम्य गम्य है नहीं, रसा परम्य रम्य रम्य हा हरम्य है नहीं। गवाक्ष तै अगाक्ष की कटाक्ष तै निगै नही, घिराभ चद्रसाल चद्रसाल पै थिगै नही। —ऊ. का.

२ देखो विस्मय' (रू भे.)

बिसय–स. पु. [स. विषय] १ कोई तत्व या बात जो विचारणीय, विवेचनीय या अध्ययन करने योग्य हो।

२ स्त्री के साथ किया जाने वाला समोग या मैथुन।

उ०—१ धुरतै सील फरसघर धारयो, बिसय विकार विहाई। क्षत्रिय मार अवनि निक्षत्री, बार इकीस बनाई। —ऊ. का

उ०—२ वैरागी बिसया रस त्यागै, रागी कर आसक्ती लागै। दोई तजै सो निरदावै, सम द्रस्टि थावै। —स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—३ बिलार बिसया लालची रे, ताहि भोजन देत। दीन हीन व्है छुधा रत सै, राम नाम न लेत। —मीरां

उ०—४ परदारा सु पापियउ, भोगवइ काम भोग। बिसया रस लुब्धउ थकउ, न बीहइ पर लोग। —स. कु.

३ बड़ा प्रदेश या राज्य।

उ०—कमनैत तोरन तानिकै पखरैत बेधत पानि कै 'बुध' तनय

हित जय प्रणय नय बय छयय रन सुम प्रभय प्रतिसय विसय षय भुव बलय विसमय प्रलयमय भय समय निरदय, उदय रवि नय-निलय प्रतिरय प्रजय क्षयकर प्रक्षय जय मय उभय सय पय ह्रदय प्रपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार।
—ब. भा.

४ भोग-विलास व मैथुन मे प्राप्त प्रानन्द।
५ पचज्ञानेन्द्रियो से प्राप्त प्रानन्द या सुख।
६ जगह, स्थान।
७ वीर्य, बीज।
८ प्रियतम या पति।
९ सम्पत्ति।
१० सर्प, सांप।
११ सल्तनत, बादशाहत।
१२ मासारिक पदार्थ।
क्रि. वि —१ लिए, प्रति।
२ मध्य, अन्दर, मे।
रू भे.—बिखै, बिखइ, बिसई, बिसिया, वखै, विख, विखय, विखिया, विखै, बिस, बिसइ, बिसई, बिसिया, बिसै।

बिसयक-वि. [सं विषयक] विषय का, विषय से सम्बन्धित।
रू. भे.—बिसयक।

बिसया-सं. स्त्री. [स. विषया] चन्दनावती नगरी के दुष्ट बुद्धिप्रधान की कन्या का नाम।

बिसयी-स. पु. [स. विषयिन्] १ कामदेव।
२ भोग-विलास मे बहुत अधिक आसक्त व्यक्ति, कामी व्यक्ति।
३ बहुत अधिक विषय या धन सम्पत्ति वाला व्यक्ति, धनवान।
रू. भे.—बिखई, बिसइ, बिसई।

बिसर-स. पु.—१ अपशब्द, कटु शब्द, अपमान सूचक शब्द।
उ०—असुर बोलियो बिसर पतसाह मुह आगळी, राज विण खत्री ध्रम कवण राखै। दूसरा 'माल' वरदान तोनां देऊ, 'अमर' मो काढ जमदाढ भाखै। —अमरसिंघराठौड री गीत
२ अप्रशंसासूचक कविता, निन्दा सूचक या दुत्कारयुक्त कविता।
उ०—१ सुकव आविया नजर मेळाय भटकै सदा, कसर सूं चलै मछरा कराता। अदाबा बिसर विण लागै नह आमटी, तुरी विण चामटी न वहै ताता। —पीरदान आढो
उ०—२ पराणी बिसर वाजै घणा ऊारा, पेंड चालै नहीं पैल पूरा। रीत बळ भाडै थाका सको रामणा, भामणा लेऊ धुर जूप भूरा। —हरनाथसिंह चांपावत री गीत
३ एक प्रकार का विषैला जन्तु विशेष।
४ युद्ध, समर।
५ एक प्रकार का घोड़े का चारजामा।
[स. वि: सर] ६ समूह, झुण्ड। (अ मा.)
वि.—भयकर, भयावह।
उ०—१ बिहद भूपत सीत वाहर, जार दससिर समर जाहर। थरर लका जिसा थाहर, बिसर त्रंबक वाज। —र. ज. प्र.
उ०—२ बिसरि गडगडै तूर सूरा चढै वीर रसि, प्रखर वरिखा करै चित उमेखा। सामि छळ देस छळ वेस छळ सामठां, सांपना ताहरै भागि सेखा।
—सेखा दुर्जनसालोत पातावत राठोड री गीत
रू भे.—बिसर, वसर, विस्वर, वीसर।

बिसरग-स. पु. [स. विसर्ग] १ व्याकरण के अनुसार ऊपर नीचे अर्थात खड़े दो बिन्दुओं वाला वह वर्ण जिनका उच्चारण अर्द्ध 'ह्' के समान होता है।
२ दान।
३ संहार, नाश।

बिसरण, बिसरन-स. पु. [सं. विसर्जन] १ परित्याग, त्याग।
२ दान या भेंट। (अ. मा., ह. ना. मा.)
३ प्रस्थान, विदा।
४ मल का परित्याग करने की क्रिया।
५ पूजन मे अतिम उपचार, षोडशोपचार।
६ सभा आदि की अन्तिम कार्यवाही के बाद सभा के विसरजन की क्रिया।
७ उक्त के आधार पर पूजनोपरान्त देव मूर्ति का जलाशय मे किया जाने वाला प्रवाह।
८ विस्मरण, भूल।
९ समूह, व्यूह। (अ मा)
वि. [स. विशरण] आश्रयहीन, अनाथ।

बिसरणौ, बिसरबौ-क्रि. अ —१ गल्ती होना।
२ फैलना।
उ०—हक आवाहिया देवराए, गाजि अहमद थाए निहाए। खीजिया जोध वाहै खडग, बिसरि किरि जीह वासिग नगं।
—गु. रू. ब.
३ कुपित होना, क्रोधयुक्त होना।
उ०—वाहो गजसिंघोत बिसरिअ, असुरां फुटा अफर अणी। मुगळा तणै पड़ी किर माथै, बिजड़ी तडित अकाळ तणी।
—केसोदास गाडण
४ विस्मरण होना, भूलना।
उ०—१ वर उपदेस करै बिन पूछया, निगमा उगत उचरना।

हंसा होय चुगै मुक्तावळ, विसया रस विसरना ।

—श्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ सघरा, मेह, वायक न सुणावी, लाखावत भ्रागळी लहेह । तू विसरिस तइया जइया तिरा ढिग हुइसै रज तणो खिलेह ।

—ईसरदास बारहठ

उ०—३ हियै धारियां खांन जुबान छिबतो निहग, भ्रवर नर विसरं तणा भ्रचभा । विखम गत देख 'जसराज' खग वाहतो, रही रथ साह गजगाह रंभा ।

—गु. रू. ब.

उ०—४ पीया निसदिन तोकू ध्याउं, उनमुन ताळी लाउ, तो विसरयां दुख पाउ ।

—भ्रनुभववाणी

उ०—५ मांडणियां नै इबारत बोलै, बाचणिया रै दूहा रा भ्रर-थाव खोलै है । विलम्या बैठ्या है । घरनै सफा विसर रैया है ।

—दसदोख

उ०—६ वरज्या सतगुर साम्य, कुमल कुकरणी करता । मद मास पोसती, भाग खाहि विसरंदा ।

—भ्रग्यात

विसरणहार, हारो (हारी), विसरणियो – वि० ।

विसरिम्रोड़ो, विसरियोड़ो, विसरयोड़ो —भू० का० कृ० ।

विसरीजणो, विसरीजबो—कर्म वा० ।

विसरणो, विसरबो, वीसरणो, वीसरबो, वीसरणो, वीसरबो, वीसूरणो, वीसूरबो—रू० भे० ।

विसरप–स. पु [सं. विसर्प] १ रेंगने, फिसलने या सरकने की क्रिया । २ भ्रनिष्ट फलदायक प्रारब्ध कर्म ।

३ एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमे एक साथ बहुतसी छोटी-छोटी फुन्सियों के साथ बुखार भी भ्राता है, शीतला, चेचक । (भ्रमरत)

विसरमो–वि. [स. वि.=रहित+शर्म=लज्जा] जिसे शर्म नहीं भ्राती हो, बेशर्म, लज्जाहीन ।

उ०—कासुं कहै बहु कह्या वदै नही वदै विसरमा । सुगुरु तणी धरम सीख, करै नहीं भारी करमा ।

—ध. व ग्र.

विसरांत–स. पु.—मथुरा का विश्राम घाट ।

उ०—तद प्रथीराजजी कयो, "महाराज मास छठै मथुराजी मैं विसरांत घाट ऊपर होवंगी । अठा थोळा काग भ्रावेगा ।—द. दा.

विसरांम–सं. पु. [सं. विश्राम] १ सहारा, भ्राश्रय, पनाह ।

उ०—१ सांवरिया ! तू भूलां री बाट है, रांम प्यारा रे ! हारयां रो विसरांम ।

—गी. रां.

उ०—२ देस मालम सुतण देसल नर सघर दुंह पखै निरमल, भ्रतुलबळ भ्रति कमळ ऊज्जल बरन खट विसरांम ।

—ल. पिं.

उ०—३ मछळी नै थळ कोई मिळावै, कै कोयलड़ी नै भ्रांम । भ्रब तो वैग मिळै ढवो सांवळ, हारया रो विसरांम ।

—रसीलै राज रा गीत

उ०—४ वांहू कोई ऊंच न नीच है, नाम न कोई ठांम । हरीया हेको ब्रह्म है, सबहुन कै विसरांम ।

—भ्रनुभववांणी

उ०—५ सतगुरु सोई जाणियै, कहै कहावै रांम । हरीया गुर गोविंद सा, भ्रौर न को विसरांम ।

—भ्रनुभववाणी

उ०—६ जिण भ्ररबद ऊपर भ्रठारह भार बनस्पती भुक रही छै । घणी ही चंपो, चमेली, मोगरो, जुही फूल रहिया छै । फेर भ्रड़सठ तीरथ भ्राय विसरांम लियो छै ।

—डाढाळै सूर री बात

२ भ्राराम, चैन ।

उ०—१ भ्रर इत्तो उस्ताद रांमूजी ! थांनै ई करणो पड़ैला, कोई सभाधभा भ्राळो भ्रावै तो कै दिया—भ्रबार तबियत ठीक को रै वै नी, डागदर विसरांम लेवण रो कयो है ।

—बरसगांठ

उ०—२ नारी वग्रारी काम की, सोच्या करै विराम । जनहरीया तन मन धरै, ताहि नहो विसरांम ।

—भ्रनुभववाणी

उ०—३ लख चौरासी जोनि मैं, मातो मोह सकांम । हरीया ऐसै जीव कू, कहां नही विसरांम ।

—भ्रनुभववाणी

उ०—४ गजराज सूका सरोवर ढूढता फिरै छै । सादूळा केसरी-सिंह ज्वाळानळ भ्रगनी सूं वळता थका वीभा बनरा हाथियां री पेट री छाया सूता विसरांम करै छै ।

—रा. सा. स.

उ०—५ हा रै राज इंद्र धड़ूकै हो, हां रै राज, भ्रो तो इंदर धड़ूकै हो, हा हो म्हारा घडी नै, घडी रा विसरांम मंत्ररजी इंद्र धड़ूकै हो ।

—लो. गी.

३ सुख-शान्ति, भ्रानन्द ।

उ०—१ जनहरिया है मुगति कुं, नीसरणी निज नाम । चडि चापरि सु सिवरियं, जो चाहे विसरांम ।

—भ्रनुभववाणी

उ०—२ राम नाम कु सिवरता, पाया मन विसरांम । जनहरिया तै नाव का, मैं हू सदा गुलाम ।

—भ्रनुभववांणी

उ०—३ जै कोई चीन्है सहज कु, सहजा भ्रातम रांम । जनहरिया सहजां भया, मन इद्री विसरांम ।

—भ्रनुभववाणी

४ भ्राश्रमव्यवस्था मे चौथा भ्राश्रम, सन्यासाश्रम ।

उ०—हरीया भ्रेसा को मिळै, चित चौथै विसरांम । ताप त्रिगुण सुं रहत है, निज भगता निहकांम ।

—भ्रनुभववाणी

५ भ्रवसान, मौत, मृत्यु ।

६ कार्य-काल के बीच भ्राराम एव जलपान हेतु मिलने वाला भ्रवकाश ।

उ०—फाजल ही भ्रापरी साधना सरु करी, करणै माथै हथफेरी

करणी पंलाई। पाच-सात विरिया, छुट्टी बिसरांम रै वखत, करणै नै जमी पर सूंत्रो सुवांण्यौ, ऊपर चादर उढाई तथा मितर पढायौ।
—दसदोख

७ ठहरने का स्थान, विश्रामस्थल।

उ०—१ हरिया हमौ जीव है, सुन्य सागर बिसरांम। सुरति हमारी सीपड़ी, निज कण मोती नाम। —अनुभववाणी

उ०—२ जळ जाई जळ ऊपनी, जळ तेरा बिसरांम। हरीया जम लै जावसी, वेग सिवरियै राम। —अनुभववाणी

उ०—३ झूठा खाणा बकणा, ए जमपुर का काम। हरिया सुवचन साच का, विसनपरा बिसराम। —अनुभववाणी

उ०—४ हरि बसती हरि बन है, हरि हैं ठामो ठाम। हरिया हरि हिरदै गया, ताहि नही बिसरांम। —अनुभववाणी

८ ठहराव।

उ०—१ सहजा सुख दै वस्य किया, मन मोहादिक काम। जनहरिया गोरख जती, सहज किया बिसरांम। —अनुभववाणी

उ०—२ राम राम रसना लिया, मास दोय बिसराम। हरिया हिरदै कंठ मै, सागर वरस मुकाम। —अनुभववाणी

उ०—३ गामा दाम उग्राहजे, कै मागेजे ग्राम। डेरा दीधा रामपुर तिस कीधा बिसराम। —रा. रू.

उ०—४ म्हनै बडौ अचूभो आवतो हो कै बंबोई जिसी मोटी नगरी मे जठै कै आभा स बाता करता मेल माळिया ऊभा हा पण दो मिनखा नै बिसरांम करण जोग छ हाथ जमीन मिळणो कठण व्हैगी ही। —रातवासो

क्रि. प्र.—करणौ, पाणौ, मिळणौ, लेणौ।

९ अध्याय, प्रकाश।

१० वाक्य के अन्त मे लगाई जाने वाली बिन्दु या खड़ी रेखा।

११ छन्द शास्त्रानुसार कविता, पद्य आदि के चरणो मे वह स्थान जहा पढते समय लय ठीक रखने हेतु थोड़ा विराम या ठहराव किया जाता है, यति।

उ०—१ दस दस पर बिसरांम चव, मत चाळीस हुवत। गुरु लघु अथिर नियम नहि, उद्धत छद अखन्त। —र. ज. प्र.

उ०—२ कळ दस अुर फिर आठ सकाम, मझ तुक विस्रम दाय बिसरांम। सम मठ अंत रगण आकार, चतुर गीत लेहचाळ उचार। —र. ज. प्र.

उ०—३ छै निसाणी छद रै, मत तेवीस मुकाम। माझ अक तुक अदम दम, वदै दोय बिसरांम। —र. ज. प्र

रू. भे.—बिसराम, विस्राम, विस्रामु विस्सराम, विस्साम, वीसाम, बीसांमउ।

मह.—विसरामो, विस्सरामो, वीसामो।

अल्पा.—बिसरामी, विसरामी, विस्सरामी।

बिसरांमणौ–वि.—१ विश्राम करने वाला।

२ विश्राम देने वाला।

३ सहारा देने वाला, सहायक।

रू. भे.—विसरावणौ।

बिसरांमणौ, बिसरांमबौ–क्रि. अ. [सं. विश्रमण] १ आराम लेना, विश्राम लेना।

२ मरना, अवसान होना।

उ०—१ मुनिभ्रस सभारमदन घणा, कपणां तणौ विरांमियौ। कर भू पर कीरत करममी, रायसिंघ बिसरांमियौ। —नैणसी

उ०—२ यू करता राव सूजोजी कितरै हेकै दिनै बिसरांमियौ। ताहरा टीकै री तयारी हुई। ताहरा इंगा ठाकुरा वीरमदे नू पकड़ बाह अर गढ स हेठो उतारियो, नै गांगै नू टीकौ दियौ —नैणसी

उ०—३ लाखौ देसवटै फिरै छै। फूल री चोथी दसा हुती। तै वामतै लाखैजी आ वात कही हुती, फूलजी रौ मोनू मत कोई सुणाया। गु फूलजी बिसरांमिया। लाखै नू कोई कहै नही। —लाखै फूलाणी री वात

३ युद्ध मे वीरगति प्राप्त होना।

उ०—१ रण सारग बिसरामियौ, नह बूडौ नमियोह। गोल तणौ कहियौ गुणौ, सपूरण समियोह। —पा. प्र

उ०—२ आहुई वडौ राठोड बिसरामियां, तज गया दूसरा न सायत टेक। हसन नित वरीसण न को इळ रायहर, हसन बध कवि नही जगत मे हेक। —द दा.

४ ठहरना, रुकना।

५ सहारा देना, आश्रय देना।

बिसरांमणहार, हारौ (हारी), बिसरांमणियौ —वि०।

बिसरांमिग्रोड़ो, बिसरांमियोड़ौ, बिसरांम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिसरामीजणौ, बिसरामीजबौ—भाव वा०।

बसरांमणौ, बसरामबौ, बिसरामणौ, बिसरांमबौ, बसरांमणौ, वसरामबौ, विस्रामणौ, विस्रांमबौ, वीसामणौ, वीसांमबौ —रू० भे०।

बिसरांमियोड़ौ–भू. का. कृ —१ आराम लिया हुआ, विश्राम लिया हुआ. २ मरा हुआ, अवसान हुवा हुआ. ३ रुका हुआ, ठहरा हुआ. ४ सहारा दिया हुआ, आश्रय दिया हुआ. ५ युद्धक्षेत्र म वीरगति प्राप्त हुवा हुआ।

(स्त्री. विसरांमियोड़ी)

बिसरांमी-वि.—१ विश्राम करने वाला।

उ०—सुखदाइ सीतल स्वामी रे, प्रभु सुमता रस बिसरांमी रे। उपकारी गुण अभिरामी रे, नमियै एह नै सिर नांमी रे।
—ध. व. ग्रं.

२ विश्राम देने वाला।

३ देखो 'बिसरांम' (अल्पा., रू. भे.)

रू. भे.—बिसरांमी, बिस्रामी।

बिसरांमो—देखो 'बिसराम' (मह., रू. भे.)

उ०—उतिम सिवरन हिरद सथांनु, माहोमांहि भया घर ध्यानु। रसना लीया रांम का नामा, उर भीतरि पाया बिसरांमा।
—अनुभववाणी

उ०—२ दुख पाऊ छु आप, पापा रे परताप। तो तू जाणदै ए, बिसरांमो खांणदै ए।
—जयवांणी

बिसराड़णो, बिसराड़बो—देखो 'बिसराणो, बिसराबो' (रू भे)

बिसराड़णहार, हारो (हारी), बिसराड़णियो—वि०।

बिसराड़ियोड़ो, बिसराड़ियोड़ो, बिसराड़योड़ो—भू० का० कृ०।

बिसराड़ीजणो, बिसराड़ीजबो—कर्म वा०।

बिसराड़ियोड़ो—देखो 'बिसरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसराड़ियोड़ी)

बिसरायाण-सं पु.—दान।   (अ. मा.)

बिसराणो, बिसराबो-क्रि.स.—१ विस्मरण करना, भूलना।

उ०—१ मोख सुनत ही सुधि भई, तन आपो बिसराय। जन-हरिया मन गरक हुय, तरक फरक नहीं थाय।
—अनुभववाणी

उ०—२ बेटै बाप बिसरायो, भाई वीसारेह। सूरा पूरा गल्लडी, चारण चीतारेह।
—रा. सा. स.

उ०—३ वीहू कवल न चूकजे, लगी जीव के लार। बिसराई नहीं वीसरै, केवळ प्राण अधार।
—कुंवरसी साखला री वारता

२ गल्ती करना।

३ त्यागना, छोडना।

बिसराणहार, हारो (हारी), बिसराणियो—वि०।

बिसरायोड़ो—भू० का० कृ०।

बिसराईजणो, बिसराईजबो—भाव वा०।

बसरांमणो, बसरांमबो, बिसराड़णो, बिसराड़बो, बिसराणो, बिसराबो, बिसरावणो बिसरावबो, बीसराणो, बीसराबो, बीस-रावणो, बीसरावबो, बोसराणो, बोसराबो, बोसरावणो, बोसरावबो बिसराड़णो, बिसराड़बो, बिसरावणो, बिसरावबो, बिसराहणो, बिसराहबो, बीसराणो, बीसराबो, बीसरावणो, बीसरावबो
—रू० भे०।

बिसरायण-सं. पु.—दान।   (अ मा.)

बिसरायोड़ो-भू. का कृ.—१ विस्मरण किया हुआ, भूला हुआ. २ गल्ती की हुई, त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।

(स्त्री. बिसरायोड़ी)

बिसरारन—देखो 'बिसरायण' (रू. भे.)   (ह ना. मा.)

बिसराळ, बिसराळी बिसराळो-वि. [सं. विष+रा. प्र. राळी] १ विषैला, जहरीला।

२ क्रोधी, क्रोधयुक्त।

३ रसहीन, कड़वा, नीरस।

४ जोशपूर्ण, जोशयुक्त, जोशीला।

उ०—नीधसिया बिसराळ न घोखै, दळ पड़ घोकै तीरमदाज। झटका बह सामुहा झोकै, रोकै कुण एकल गिड राज।
—महादांन मेहड़ू

५ भयंकर, भयावह।

उ०—बिसराळ त्रंबाळ घुरै रवि बीहस, लाह आखेट लंकाळ। अजेरां जेरण घेर असंगा, फेर दुहाई फाळ।
—मा. वचनिका

६ निन्दाजनक काव्य की रचनाएं करने वाला।

७ कर्णकटु, कडवा।

उ०—वायक बिसराळाह, मुणिया थै मामी मनै। वै धांधळ वालाह, केवा मे सह काढिया।
—पा. प्र.

स. पु —निन्दायुक्त कविता।

रू. भे —बिसराळ, बसराळ, बिस्राळ, बिस्राल, बिस्राळी, बिस्राली, बिसाळो, बिस्रालो।

बिसरावणो—देखो 'बिसरामणो' (रू. भे.)

बिसरावणो, बिसरावबो—देखो 'बिसराणो, बिसराबो' (रू. भे)

उ०—१ पुसपा री माळा पहरायां, जनम मरण मेटै बिन जाप। विध विध रा भोजन बिसरावै, बधबो जाय खाय मा-बाप।
—भगतमाळ

उ०—२ गाव मे ही पो'र, गाव मे ही सासरो। फूटरी आवै-जावै अर माणद सू ओपे है। कुसोभ्या रो कांम नी, आछो नांव-नांमून कर राख्यो है। सासू सुसरो सरावै, वास रा मांणस बडाई करै। कोई ही बिसरावै नहीं सगळा सोभ्या करै।
—दसदोख

उ०—३ सूणी वात सुविहाण, पूछ खुरसांण अप्रबळ। दरद जीव मो दहै,करद जिम सहै विना कळ। असपत्ती ऊचरै,वेध छत्री बिसरावौ। छडि हैस मनि छोड, भेख ग्रहि मक्कै जावौ।
—रा. रू.

उ०—४ मारो मार मचाया मनवो, आप अेक: घर आवै। अेक ठोड आया सूं अनुभव, बस सुख दुख बिसरावै।
—ऊ. का.

बिसरावणहार, हारो (हारी), बिसरावणियौ - वि० ।
बिराबिग्रोड़ो, बिसराबियोड़ो, बिसराव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बिसरावीजणौ, बिसरावीजबो—भाव वा० ।

बिसराबियोड़ो—देखो 'बिसरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री बिसराबियोडी)

बिसराहणौ, बिसराहबो - देखो 'बिसराणौ, बिसराबो' (रू. भे.)
बिसराहणहार, हारो (हारी), बिसराहणियौ —वि० ।
बिसराहिग्रोड़ो बिसराहियोड़ो बिसराह्योड़ो - भू० का० कृ० ।
बिसराहीजणौ, बिसराहीजबो—कर्म वा० ।

बिसराहियोड़ो—देखो 'बिसरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बिसराहियोडी)

बिसरियोड़ो-भू. का. कृ.—१ गहली हुवा हुआ. २ कुपित हुवा हुआ, कोधयुक्त हुवा हुआ. ३ फैला हुआ. ४ विस्मरण हुवा हुआ, भूला हुआ ।
(स्त्री. बिसरियोडी)

बिसलूमौ-स. पु. -एक प्रकार का हिंदवाना से मिलता-जुलता कड़वा फल । (शेखावाटी)

बिसल्या-स. पु. [स विशल्या] १ रामानुज लक्ष्मण की पत्नी ।
२ एक नदी जो वरुण की सभा मे रह कर वरुण की उपासना करती थी ।
३ एक औषधि का नाम जो शरीर मे लगे बाणो को निकालने के लिए लगाई जाती है ।

बिसव-स पु. [स. विश्व] १ पृथ्वी, धरती, भूमि ।
(अ. मा., ना मा.)
२ स्वभाव आदत, प्रकृति । (ह. ना. मा.)
३ देखो विस्व' (रू. भे.)

उ०—१ बिसतरी बात भारी बिसव, अणकारी उतपात सी । अजमेर कान 'अवरंग' नै, सुण लागी अन घात सी । —रा. रू.

उ०—२ पातसाह दक्खण रहै, जाळधर महाराज । बिसव अवर जवना वसू, करै मको मिळ काज । —रा रू

उ०—३ धू ग्रह धास बाळपण धारै, साई त्या ततकाळ सभारै । ग्रौ पतसाह तिसौ अन्याई, बिसव अनीत जीत बरताई । —रा रू.

उ०—४ निरख उठै रिपु ग्रह खिनदण, कुळ मातुळ सुख ग्रोनिकदण । राजभवन सुरगुर सुभ राजै, बिसव एक छत्र आण बिराजै । —रा रू.

उ०—५ ग्राळस बाळी मगणा, उर मगणा हदार । बक उदारा बिसव मैं, बाळी जस बिमतार । —बा. दा.

उ०—६ तूं करता तूं भोगता, रहै अकिरिता रांम । बिसव चढ़ै भाजै बिसव, बिसव तणौ बिसराम । —पी. ग्रं.

बिसवकसेन—देखो 'बिस्वकसेन' (रू. भे.)

बिसवकरमा—देखो 'बिस्वकरमा' (रू. भे.) (अ. मा.)

बिसवजूण, बिसवजोनि—देखो 'बिस्वयोनि' (रू. भे.)

बिसवतरेखा-स स्त्री [सं. विषुवरेखा] पृथ्वी के ठीक मध्य में पूर्व या पश्चिम की ओर चारो ओर मानी जाने वाली एक कल्पित रेखा । (भूगोल, ज्योतिष)
रू. भे —बिसुवरेखा ।

बिसवनाथ—देखो 'बिस्वनाथ' (रू. भे.)

उ०—१ भिरजो पैंठो डेरा माहै, मुज कर अरज घणा पग साहै । बाघै तेज नौबता बाजै, बिसवनाथ निज तखत बिराजै । —रा. रू.

उ०—२ वीठुल बिसवनाथ घन जदपत्त केसव स्रीवर, नारायण नरसिंघ दमोदर गिरधर नरहर । अविगत आदि जुगाद उपावण अकळ अपपर, समरि जगदीस भगत साधार प्रमेसरं । —पि. प्र.

बिसवयोनि -देखो 'बिस्वयोनि' (रू. भे.)

बिसवाद-स पु. [स. विषवाद] ७२ कलाओ मे से एक ।
२ देखो 'विखवाद' (रू भे.)

उ०—१ जनहरिया हरि कारनै, सौ परमारथ स्वाद । आप सुवारथ हरि बिना, सौ स्वारथ बिसवाद । —अनुभववांणी

उ०—२ दादा दादा जग जस वादा, मोह्या सहु नर मादा राज । टलइ अल्हादा सहु बिसवादा कुमल कुसल परमादा ।—घ. व. ग्रं.

उ०—३ दुसम काल तणै परभावै, हुइ मांहो मा बिसवाद जी । तौ पणि तुरत खमावौ लीजइ, पडित गुरु परसाद जी । —स. कु

उ०—४ विकथा चार कीधी वलि, सेव्या पंच प्रमाद । इस्ट वियोग पड्या किया, रोदन बिसवाद । —स. कु.

बिसवाबीस -देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

उ० —तन मन सौंज सवार सब, राखै बिसवाबीस । सो साहिब सुमिरै नहीं, दादू मान हदीस । —दादूवाणी

बिसवामित्र, बिसवामित, बिसवामितर, बिसवामिति, बिसवामित्र, बिसवामित्रि—देखो 'बिस्वामित्र' (रू. भे.)

उ०—१ किसन रौ सुरै दरसण कियौ, कर जोडै कीरति कहै । करतार काजि दसरथ कन्ही, बिसवामिति आया वहै । —पी. ग्र.

उ०—२ बिसवामित्रि कारणै, प्रभु घडियौ जिगि पालण । जा मारै ता मुगति, आज ताडका उधारण । —पी. ग्रं.

बिसवाबीस-अव्यय.—१ निश्चय ही, अवश्य ही, जरूर ।

उ०—सूर लड़ै जब कब सिर, कमंध लड़ै बिण सीस। हरिया सूर कमंध बिच, बिवरो बिसवावीस। —अनुभववाणी

उ०—२ चलणा है, रहणा नही, चलणा बिसवावीस। ग्रैसे सहज सुहाग पर, कूंण गुंथावै सीस। —अज्ञात

उ०—३ रीझ-खडिया तीज री, पदमण वचन प्रमाण। ग्रास्या बिसवावीस मैं, सिव सगत री ग्राण। —पना

२ सत्य, ठीक।

उ०—१ ग्राह पकड़ै खांच गाढो, सलल फिरगो सीस। तज गरुड़ गजराज तारै, बात बिसवावीस। तो जगदीस जी जगदीस, जन काज दोड़णा जगदीस। —भगतमाळ

उ०—२ राजा ग्रति ग्रातुर थयौ, तेहनं कीधी रीस। उत्तम तिहां किण ग्राविनै, बोलै बिसवावीस। —वि कु

३ निस्सन्देह।

उ०—कहियौ न्रप कारिज सिध कीजै, दत वर मूझ पदमणी दीजै। बदं सिद्ध न्रप बिसवावीसा, पदमण ग्राणू दीह पचीसा। —सू प्र.

४ निश्चयपूर्वक, यकीनन।

वि. वि.—किसी बात के ग्रौचित्य को मान लेने के लिये जिस प्रकार यह कहा जाता है कि "यह बात सोलह ग्राने खरी है।' या यह शत-प्रतिशत सही है। "वीस-विसवा" ठीक इन्ही ग्रर्थों मे बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होता है। कभी-कभी वीस विसवा के स्थान पर 'सौ बिसवा' भी बोला जाता है। पर दोनो का ग्राशय एक ही है।

५ पूर्णरूप से।

उ०—सेठ तणै मन माहि उदधि मा कुमरी वसै निसदीस, विरह विलूधो रे बिसवावीस। नलिनी देखि भमर जिम ग्रटकै, तिम तसु मिलण जगीस। —वि. कु.

रू. भे.—बिसवावीस, बिस्वावीस, बीसबसा, बीसबिसवा, बीस-बिस्वा, बीसवाबीस, बीसबिसा, बीसावीसं, बीसावीस, बीसुबसा, विसबावीस, विसवावीस, बिसवाहीवीस, बिसव्वावीस, बिसहूबीस, बीसबिसवा, वीसबिसा, बीसवीसा, बीसवीस्वा।

बिसवावीसइ—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

उ०—पटणी पारिख सुरजी सघ सुं, आव्र करी लाभ सुजगीसइ। समयसुंदर कहइ साचइ मंइ जांण्यउ, वीतराग देव विदा बिसवा-बीसइ। —स. कु.

बिसवास—देखो 'बिस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ जो जीती सारी सगत, त्यां सब ग्राई रास। भाग जिन्हां दा जाणियै, जे राखै बिसवास। —गजउद्धार

उ०—२ ग्रैसे नर ग्रस्त्री भयो, ग्रग सिंघ को मोह। हेत बिसवास न होत है, बातां करत विमोह।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

उ०—३ स्यारुप सूं मोदो पटायो, बेटै रो बाप नाव-नामून में ग्रायो। डागं रो बिसवास जम्यो ग्रर दायजै टोर्क रो मोल मांग्यो न धम्यो। सगै-सगै रो रळग्यो जी मीठा हुया ज्यूं सक्कर घो। —दसदोख

उ०—४ मा'रजा नै ग्रापरो मितर बता-बता मार नांख्यो। पण ग्रोजू बात रो बिसवास करै। साच कूड रो बेरो पट जावै तौ किसो नदलाल नै माड़ो बता देवे। —दसदोख

उ०—५ लाधूराम राजदरबार रो इतो बडो निधड़क चोधरी होवता थका भी भूत-पलीत, डोरा-डाडा, देई-देवता ग्रर डाकण-स्यारी न कदै ही कूड नी बतावै। ग्राधो बिसवास राखतो थको हिड़दै सूं मानतो रै'वै। —दसदोख

उ०—६ पूरणवस प्रामियां, जनम होसी जोधाहर। बर्णं बंस बिसवास, ग्रास तै ज्रास मुरद्धर। —रा. रू.

उ०—७ सुत 'गोयद' घा०ळ सकज, दुक्रल बिहारीदास। राजा निज पुर रक्खियो, वचन जिकै बिसवास। —रा. रू.

बिसवासघात—देखो 'बिस्वासघात' (रू. भे.)

बिसवासणौ, बिसवासबौ—देखो 'बिस्वासणौ, बिस्वासबौ' (रू. भे.)

बिसवासणहार, हारौ (हारी), बिसवासणियौ—वि०।

बिसवासिग्रोड़ो, बिसवासियोड़ो, बिसवास्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिसवासीजणो, बिसवासीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

बिसवासिग्रा—स स्त्री.—ग्रार्या या गाहा छद का एक भेद विशेष जिसके चारो चरणो मे मिलाकर ६ गुरु ग्रौर ३६ लघु वर्ण सहित ५७ मात्राएं हो।

बिसवासियोड़ो—देखो विस्वासियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसवासियोडी)

बिसवासी—स. पु. [सं. विश्वाची] एक प्रकार का वात रोग विशेष जिससे कधे से लेकर ग्रगुलियो तक सारा ही हाथ न तो सिकोड़ा जा सकता है ग्रौर न ही फैलाया जा सकता है। (ग्रमरत)

२ देखो 'बिस्वासी' (रू. भे)

उ०—ग्रब बिसवासो मिनख, हरेक ग्रादमी री कैयोड़ी बात नै सांची मानण खातर ही वण्यो है। नटणै खातर हरगिज नहीं। चावै कोई ग्रफंड करो तथा जाळ। —दसदोख

बिसवाहीवीस—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

उ०—दिल ग्रंतर एह विचारी दसरथ, धर पदवी जुवराज सधीर। सो देणी बिसवाहीवीसै, राज जोग दीसै रघुवीर। —र. रू.

बिसबि—देखो 'बिस्व' (रू. भे.)

उ०—१ बीठुल बरदाई बडी बडाई, बिसबि छपाई ब्रजवासी। मेरंगिर ग्रामी सुर नर सामी, ग्रतरजामी ग्रविणासी। —पि. प्र.

उ०—२ बडा ही बडा ग्राचार दीपै बिसबि, वहै सबळां खळा खेनि वागै। जग हुथै बधियै 'गजण' री जैत-हुध, जग हुथा बधपण बिरद जागै। —केसोदास गाडण

बिसवेस—देखो 'बिस्वेस' (रू. भे.)

उ०—स्रीधर स्रीरग सियावर स्रीपत, करुणाकर कारण-करण। ब्रज नायक बिसवेस बिसभर, घणनामी ग्राणदघरण। —र. ज प्र

बिसवौ—स. पु.—१ जमीन को नापने का एक नाप विशेष जो एक एकड़ के पचासवे भाग के बराबर होता है।

उ०—चावँ कोई ग्रफड करौ तथा जाळ। बीरै वास्तै तो बीघै मून ग्रर बिसवै सांप हाळी कैवत साची है। खेजडी-खेजडी गोगा ग्रर खेतरपाळ खड़्या दीसै। —दसदोख

२ ग्रगुली की गाठ या जोड जहा से वह मुड सकती है।

३ ग्रगुली के जोड के स्थान पर पडी रेखा।

४ पूर्णता के माप का निश्चित ग्रश।

उ०—हिवै बीरमजो जाय जोडयै रह्यौ, जोईयां घणौ ग्रादर दियौ, घणा हीडा किया कह्यौ बीरमजी बिखै मे ग्राया छौ, बेखरच छौ। ताहरा दाण माहे बिसवौ कर दियो। —नैणसी

५ ग्रन्न पदार्थ ग्रादि यत्किंचित्।

६ पिगल प्रकाश के ग्रनुसार एक वर्णिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे प्रथम नगण फिर सगण फिर यगण होता है।

७ सार्वजनिक पशु (ग्राकल) के लिए गेहू ग्रादि की हरी फसल मे से लाया गया चारा जो कि प्रत्येक दिन ग्रलग २ कुए से लाया जाता है।

रू. भे.—बिस्वौ, बिसोबा, बिसोवा, बिस्वौ।

बिसव्वावीस—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

उ०—घन सूरातन धन ग्रडप, घन राठौडा ईस। सुणि सुरताण कबूल की, वात बिसव्वावीस। —गु रू. ब

बिससन—स. पु. [स. विशसन] एक नरक का नाम।

बिसहर—स. पु [स. विषधर] सर्प, साप।

उ०—१ तन बबही मन बिसहर माही, डस्य उग्य जाहि सकळ जुग ताही। बिसम लहरि ऊठै ग्रग ग्रगा, ता ते होय सकळ जुग भगा। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ मैलो ग्रत ग्रदतार मन, रच जस तणौ रहै न। तन काळो बिसहर तणो, कचुक सेत सहै न। —बा दा.

उ०—३ सज्जण चाल्या हे सखी, वाज्या विरह निसांण। पालखी बिसहर भई, मदिर भयउ मसाण। —डो. मा.

उ०—४ मूल मत्र जाणै कुछ नाही, बिसहर ले मेलै गल माही। जैसा फुनि गति सी है माया, जै खाया तै बहोड़ि न ग्राया। —ह. पु. वा.

वि. [स.] विष के प्रभाव को दूर करने वाला, विष के प्रभाव को हरण करने वाला।

रू. भे.—बिसहर, बिसहर, विक्खहर, बिसहरि।

बिसहरतिथ, बिसहरतिथि—स. स्त्री.—नागपचमी।

रू. भे.—बिसहरतिथ, बिसहरतिथि।

बिसहरा—स. स्त्री. [स. विषहरा] मनसा देवी का नामान्तर।

बिसहरि—देखो 'बिसहर' (रू. भे)

उ०—सब जीव भुवगम कूप मे, साधू काढै ग्राइ। दादू बिसहरि बिस भरै, फिर ताही को खाइ। —दादूबांणी

बिसहरी—स स्त्री [सं विषहरा] मनसादेवी का नामान्तर।

बिसहबिसा, बिसहवीसा—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

बिसांई—देखो 'बिसाति' (रू. भे.)

उ० ग्रेक पेड रै नळै बिसांई ली। गगलो लकड़िया चुग लायो डोकरी गोटिया पोवण लागी। —वरसगाठ

बिसांगणा, बिसांगना-स. स्त्री. [स. विष+ ग्रगना] १ विषकन्या।

२ नाग कन्या।

बिसांण—स. पु [स. विषाण] १ हाथी दात।

२ पशु का सीग।

३ सूग्रर का दात।

रू भे.—बिसाण, विखाण, विखान।

बिसांणण, बिसांणन—स. पु. [स. विष+ग्रानन] सर्प, साप।

बिसाणिन—स पु. [स. विषाणिन्] एक जातिसमूह, जो दाशराज युद्ध मे सदासराजा के पक्ष मे था।

बिसांणी—देखो 'बिसाति' (रू भे)

बिसांणौ—स पु [स. विषाण] विवाह के लिए खरीदा गया हाथीदात का चूडा।

उ०—सोमसी साम्हलै सारी सफाई कीधी। वरी बिसांणौ रावजी लेनै ग्राया गोधूळक समै परणिया। रातिवासै पोढिया। प्रभातै सुखपाल मे बैसाण नै गढ जालौर लै ग्राया। —वीरमदे सोनिगरा री बात

रू भे.—बिसाणौ।

बिसांतक—वि [स विष+ग्रतक] १ विष को नष्ट करने वाला, विष के प्रभाव को दूर हटाने वाला।

सं. पु.—शिव, महादेव ।

बिसांनी-स. स्त्री.—शर्पूणखा ।

रू. भे.—बिसांनी, बिसूनी, बिहांणी, बिहांनी, बिहूंणी, बिहूणी, बिहूनी ।

बिसाइत—देखो 'बिसात' (रू. भे.)

उ०—प्रथम तौ द्रव्य हुवै तौ देवं, म्हारै घर मैं पांच लाख री बिसाइत छै, गढ गिरनार री धणी तियं रै पांच लाख री माया तौ बीजा राजा रै कठा द्रव्य ? —सयणी री बात

बिसाइति, बिसाइती—१ देखो 'बिसाती' (रू. भे.)

२ देखो 'बिसाती'

बिसाऊ-वि.—खरीदने वाला, क्रेता, खरीददार ।

उ०—१ कुण खत्री कुण ब्राह्मण, चत्र वेद चवदा । बिराज बिसाऊ कुण वेस, कुण सुद्र कहदा । —केसौदास गाडण

उ०—२ महि मातौ मैंगळा, बिहग ताता कारवाना । किसतूरी कुमकुमा, भ्रतर गांधियां दुकाना । केसर चनण कपूर, भंग अरगचा भ्रबीग भ्रौर बिहद भ्रेवास, सुगध चोल पर समीरा । बादळा ताम थिरमा वसत्र, बासता ऊंच बजाज रां । बिसाऊ 'सेर' महगी बुमत, गौ गाहिक सौदागरां । —पहाड़खां भ्राढौ

बिसाख-स पु. [सं विशाख] १ स्वामीकार्त्तिकेय ।

(भ्र. मा., ना. मा., ह. ना. मा.)

२ शिव, महादेव ।

३ इंद्र-सभा का एक महर्षि ।

४ स्वामी कार्तिकेय का छोटा भाई ।

५ भ्रायु राजा का एक पुत्र, एक राजा ।

बिसाखा-स. पु [सं. विशाखा] सत्ताईस नक्षत्रो मे से सोलहवा नक्षत्र, जिसमे चार तारे होते है ।

उ०—१ नखत बिसाखा तिथी चवदस, घड़ी च्यार पळ वीस गया निम । मिथुन लगन सोभन मिळ जागै, सकुन करण दुख हरण सजोगं । —रा. रू.

उ०—२ तदि निसा च्यार घटिका बितीस, ऊपरा वळै पळ सताईस । वणि नखित्र, बिसाखा जेण वार, 'अभमाल' जनम लीयौ उदार । —सू. प्र.

रू. भे.—बिसाख, बिसाखा ।

बिसाग—देखो 'बिसाव' (रू. भे.)

उ०—बिहू रघु लक्खण पुत्र बुलाय, सभै जग विस्वामित्र सहाय । जनक तणौ वळि जोयौ उयाग, भ्रागै धनुख कटूण सीय बिसाग । —ह. र.

बिसाड़णौ, बिसाड़बौ—देखो 'बिसाणौ, बिसाबौ' (रू. भे.)

बिसाड़णहार, हारौ (हारी), बिसाड़णियौ—वि० ।

बिसाड़ियोड़ौ, बिसाड़ियोड़ौ, बिसाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिसाड़ीजणौ, बिसाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बिसाड़ियोड़ौ—देखो बिसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिसाड़ियोड़ी)

बिसाजुद्ध, बिसाजुध—देखो 'बिसायुद्ध' (रू. भे.)

बिसाणौ, बिसाबौ-क्रि. स.—१ छितराना, फैलाना बिखेरना ।

२ खरीदना, मोल लेना ।

उ०—१ काच कथीर बिसाय कर, कोई कनक घड़ावै ।

—केसौदास गाडण

उ०—२ खुरासाण उतपन्न, सोभ ऐराक बिसाया । कर दरियावां पथ, जिकै नावां सिर भ्राया । —रा. रू.

उ०—३ काछी करह बिर्थूंभिया, घडियउ जोइण जाइ । हरणाखी जउ हसि कहइ, भ्राणिसि एथि बिसाइ । —ढो. मा.

३ निवास कराना, ठहराना ।

उ०—छाडि गयो भ्रब कहां बिसासो, प्रेम की बातो बराय । बिरह समुद्र मे छांडि गयो पिव, नेहकी नाव चलाय । —मीरां

४ बेचना, बिक्री करना ।

उ०—१ तठा उपरांत करि राजान सिलामति तिण सहिर मांहै छत्रीस पवन जाति रहै छै । तिण सहिर माहै बाजार चौहटा मडिया छै । सोना रूपा जवहर जड़ाव कपड़ा पटकूल रेसम पसमरा बाब भांति भांति बिसाईजै छै । —रा. सा. सं.

उ०—२ किरचा फाक्या री कोथळी, बीड़ी सिगरेटा री डबी भ्रर बेटरी, बाजा री पेटी रासभियां रै पेटा माथै लटकायां खोड़ मे बिसायत खानौ सो बिसाया फिरै है । —दसदोख

५ स्थापित करना ।

बिसाणहार, हारौ (हारी), बिसाणियौ—वि० ।

बिसायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिसाईजणौ, बिसाईजबौ—कर्म वा० ।

बिसाणौ, बिसावौ, बिसाहणौ, बिसाहबौ, बिसाड़णौ, बिसाड़बौ, बिसावणौ, बिसावबौ, बिसाहणौ, बिसाहबौ—रू० भे० ।

बिसात—१ देखो 'बिसात' (रू. भे.)

उ०—भ्रावंभ्रेक देस मैं रावजी री भ्रमल छै । थांणां सूं हमेसा राड़ा हुवै छै । जिण दिनां वीरमदे दूदावत सूं मेड़तौ छूटौ सू बिसात थका राव कल्याणमलजी कना भ्रायौ सू भ्रा वात इण तरह छै । —द. दा.

२ देखो 'बिसाती' (रू. भे.)

बिसाति, बिसाती—सं. पु.—१ व्यापार करने वाला व्यापारी।

उ०—'सूज' हर मिळै अधियांमणा साज सू, जैतखंभ आज रो किना जेरै। वारणा लियण हेरै नह बिसाती, हैयडा हूंकळां खळा हेरै। —उम्मेदसिंघ सीसोदिया रो गीत

२ देखो 'बिसाती' (रू. भे.)

बिसाद—स. पु. [स. विषाद] १ दुःख, शोक।

उ०—सुरत देय अन्न कळस, मेट्यो सत्रु बिसाद। इसो उदार विक्रम नृपति, सुणो भोज संवाद। —सिंघासण बत्तीसी

२ निराशा या हताश होने की अवस्था या भाव।

३ दुर्बलता, कमजोरी।

४ मूर्खता, अज्ञानता।

५ उपायो के अभाव में पुरुषार्थहीनता।

रू. भे.—बिखाद, बिसाद, विखाद, विसाग।

बिसादी—वि. [स. विषादिन्] जिसे विषाद हो, विषादयुक्त, विषादग्रस्त।

रू. भे.—विखादी।

बिसाबीसं—देखो 'विसवाबीस' (रू. भे.)

बिसायत—स. पु.—१ देखो 'बिसाती'

२ देखो 'बिसात' (रू. भे.)

उ०—१ सो रावजी रै नानाणै दिसा सौ साख हुतो, सु रावजी जुहार कहायो। त्या श्रीरावजी नै भीतर बोलाया निछरावळा कीवी। अर कह्यो—बाबा ! रिजक, बिसायत दीसै छै सु थाहरो छै। भोजन करो। —नैणसी

उ०—२ राम सरीखा नांव न कळि मैं, गायां पातिग जात। पूरी एक बिसायत पाई, लूटै कबुयन ग्वात : —अनुभववाणी

उ०—३ साह रै एक बेटो हुतो। तठै ओ आदमी आयौ हुतो, तिको ठकुरै रै माळियै बिसायत देख राजी हुवो। इयै मन माहे विचारी, जु साह तौ वडो साह दीसै छै।

—ठकुरै साह री वात

३ देखो 'बिछायत' (रू. भे.)

उ०—१ तठा उपरायत पाछलै पोहर री ढळती छाया री बिसायत कीजै छै। देसौत सिरदार आजलमां पधारै छै। केस सुंवारै छै।

—रा. सा. स.

उ०—२ चौरंगा री खाटखड हुयनै रही छै। कटोरां माहै फूल लीजै छै। बाकरा होसनाका वसू कीजै छै। देसौत रवा घोय हाथ ऊजळा कर बिसायतां ऊपर विराजमान हुवा छै। —रा. सा. स.

बिसायति, बिसायती—१ देखो 'बिसाती' (रू. भे.)

२ देखो 'बिसाती'

बिसायुद्ध, बिसायुध—स. पु. [सं विषायुद्ध] १ सर्प, सांप।

२ विष मे बुझाया हुआ अस्त्र।

वि.—विष मे बुझाया हुआ, विषैला।

रू. भे.—विखाजुद्ध, विखाजुध, विखायुद्ध, विखायुध, बिसाजुद्ध, विसाजुध।

बिसायोड़ो—भू. का. कृ—१ छितराया हुआ, फैलाया हुआ, बिखेरा हुआ। २ खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ। ३ निवास कराया हुआ, ठहराया हुआ। ४ बिक्री किया हुआ, बेचा हुआ। ५ स्थापित किया हुआ।

(स्त्री. बिसायोड़ी)

बिसार—स. स्त्री. [स] १ मछली। (अ. मा., ह नां. मा.)

२ देखो 'विस्तार' (रू भे.)

बिसारण, बिसारणो—वि (स्त्री. बिसारणी) विस्मरण कराने वाला, भुलाने वाला।

रू. भे.—वीसारण, वीसारणो।

बिसारणौ, बिसारबौ—क्रि. स.—१ विस्मरण करना, भुलना।

उ०—१ सो सपूत जे पीछो राखै, दुरजन हीण कदे ना भाखै। वैरा तिणा बिसारै वेहा, सो जाया ही अणजाया जेहा।

—डाढाळै सूर री बात

उ०—२ थे तो नाभि नरिंद कुल चंदा, राजि थानइ सेवै सुर नर इंदा। थांरो ध्यान हिया बिच धारूं, राजि थांनइ निसि दिन कहीं न बिसारू। —वि. कु.

उ०—३ ढोला, ढीली हर किया, मूंक्या मनह बिसारि। संदेसउ नह पाठवइ, जीवा किसइ अधारि। —ढो. मा.

उ०—४ भांम गाम धांम ठाम ठहांम नकू आम, तमाम निहार साम लै अगम ताम। दाम दाम बिसार निकांम छोड हूं उदाम, नरा जाम जाम मैं उचार राम नाम। —र. ज. प्र.

२ परित्याग करना, त्यागना।

३ गल्ती करना।

४ आरम्भ करना, शुरू करना।

उ०—सीकोतरि मक्कणी प्रेत डक्कणी अपारां, विवध भूत वेताळ वीर पळचर बिसतारा। गिरध चील गोमायु विरक जबू रसवाया, काक कक को गिणै आस पळ सबळ आया। अछरा स्रंगार धरि ऊमही, हूरा हरखि उचारियो। महि गयण सग खेळा मिळै, आगम जंग बिसारियो।

—रा. रू.

बिसारणहार, हारौ (हारी), बिसारणियौ—वि०।

बिसारिओड़ौ, बिसारियोड़ौ, बिसारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिसारीजणौ, बिसारीजबौ—कर्म वा०।

बइसारणौ, बइसारबौ, बिसारणौ, बिसारबौ, बीसारणौ, बीसारबौ, बोसारणौ, बीसारबौ—रू० भे०।

बिसारद–वि. [सं. विशारद] १ किसी विषय का अच्छा ज्ञाता, विशेषज्ञ।

२ विद्वान, पंडित, कवि। (अ. मा., ह. नां. मा.)

३ चतुर, होशियार, कुशल, निपुण।

उ०—सारद ससि सारद बदन, सारद कविता सुद्ध। अदसारद पारद उकति, करण बिसारद बुद्ध। —रा. रू.

४ प्रसिद्ध, प्रख्यात, मशहूर।

५ श्रेष्ठ, उत्तम।

रू भे.—बिसारद।

बिसारियोडौ–भू. का कृ.—१ विस्मरण किया हुआ, भुलाया हुआ. २ परित्याग किया हुआ, त्यागा हुआ. ३ गल्ती किया हुआ।

(स्त्री. बिसारियोडी)

बिसारौ–सं. पु.—विस्मृति, भुलावा।

उ०—१ तद बहुआ सारी मुजरो कर बोहड़ी, डेरै आई। सो आप एकठी बेम कहण लागी—"आपा कुंवरजी नु किण भांत बिलमास्या, बात बिसारै घातस्या। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ उण दिन सूं सारा मोहल इसी हीज तवज्या लोक-लोक री करण लागी अर कुंवरजी नु इसा खुस कीया, जंसू रच रहा। नेट दिन आडा पडता गया, ज्यूं ज्यूं बात बिसारै पडती गई। आदमी पण कदै ही कोई खरळा दिसली वात काढै नहीं। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ नदलाल रो नाव आवै जद स्यांमजी सफा सीतळ पड ज्यावै। मंछ सवारै, झोला खावै, गै'णं हाळी बात नै बिसारै घालणी चावै। —दसदोख

बिसाळ बिसाल–वि. [सं. विशाल] १ दीर्घ, बड़ा। (अ. मा.)

उ०—१ बिसाल भाल तोप को विसाल ज्वाळ वित्थुरै, धमक भू धुजावनी धमक मेघलौं धुरै। महान रज दब्बुनी अरीन दब्बुनी मही, कथं कबीर नै कही चिराव की चही चही। —ऊ. का.

उ०—२ चिहुर अलक्का ऊभरी, विकसै वदन बिसाळ। चोळ वरण कपाळ किय, रत्ता लोचन भाळ। —गु. रू. ब.

उ०—३ चढियै गयण गज चोबाह, गुडो जाण फब्बि गिराह। वाजै वीरघट बिसाळ, पक्खर पूठि घूघर-माळ। —गु. रू. ब.

उ०—४ सोल कला सुंदरि, ससिवयणी चपकवन्नी बाल। काजल सांमल कद कद, वेणी चंचलनयण बिसाल। —हीराणंद सूरि

२ विस्तृत, लम्बा-चौड़ा।

उ०—१ विसाल भाल तोप को विसाल ज्वाल वित्थुरै, धमंक भू धुजावनी धमक मेघलौं धुरै। महान रज दब्बुनी अरीन दब्बुनी मही, कथं कबीर नै कही चिराव की चही चही। —ऊ. का.

उ०—२ एक चित्त ऊजळा, चलै सुभ नीत रसत्तै। एक खून खलवांन,बहै कोळाहळ मत्तै। एक घोर सारत्ति, घोर धूंवा रवि ढंबर। ज्यों वावळि बादळ, बिसाळ ओपै मग अबर। —रा. रू.

३ ऊंचा।

४ प्रसिद्ध, मशहूर।

५ महान्।

उ०—१ क्रपाळ बिसाळ सिंधाळ किसन्न, बडाळ भुजाळ उजाळ विसन्न। मुणाळ भुआळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस। —ह. र.

६ समय की निश्चित सीमा से अधिक, लम्बा।

उ०—विभ्रम विमोह चित्त, सपत तुरग तांणिय सविता। वासर बिसाळ लहियं, चक वाणं मंगळ भवण। —गु. रू. बं.

७ बहुत, अधिक।

उ०—१ अन्नदिणतरि रामलि करंतउ,जमण तडा तडि राउ पहूतउ। जलखेलती दीठी बाल, बेडी बइठी रूप बिसाल। —सालिभद्रसूरि

उ०—२ देवी सुनी रै दूध तै खीर राधी, देवी मारकड रूप तैं भ्रात बाधी। देवी मत्र मूळ देवी बीज बाळा, देवी थापणी सब्ब लीला बिसाला। —देवि.

८ लम्बा।

उ०—१ मद मसत हळवळ, हालि मेंगळ, विमळ स्यामळ घटा वहळ। जाणि रद बग पंत उज्जळ, व्याळ माळ बिसाळ। —महाराव हरगूनसिंघ सेखावत रो गीत

उ०—२ कबुकठ भुज बिसाळ, ग्रीव तीन रेखा। नटवर को भेस मानु, सकळ गुण विसेखा। —मीरां

९ मात्रा की दृष्टि से अधिक।

उ०—वग्गी हाक बहादरां, वीर्छाड़ पडै बिसाळ। नाराजा ऊजाणिया खुरसाणिया कपाळ। —रा. रू.

सं. पु.—१ एक पर्वत का नाम। (पुराण)

२ राजा इक्ष्वाकु का एक पुत्र।

३ एक प्रकार का हरिण।

४ लंका नगरी का एक राक्षस।

५ परिक्षित राजा की पत्नी वंशालिनी का पिता एक राजा।

६ कृष्ण का बालमित्र।

७ विश्रवस व अलबुषा अप्सरा का पुत्र।

रू. भे.—बिसाळ, बिसाल, बिसाळ बिसाल, बिसाळू, बिसाळू।

बिसालक-सं. पु. [सं. विशालक] १ एक यक्ष जो कुबेर की सभा में रहता है।

२ वसुदेव पत्नी भद्रा का पिता।

बिसाळता-सं. स्त्री. [सं. विशालता] विशाल होने की अवस्था या भाव।

बिसाळदृग-सं. पु. [सं. विशाल+दृग] शिव, महादेव। (अ. मा.)

बिसाळनेत, बिसाळनेतर, बिसाळनेत्र-सं. पु. [सं. विशाल+नेत्र] शिव, महादेव। (क. कु. बो.)

बिसाळपुरी—देखो 'बिसाळापुरी' (रू. भे.)

बिसाला-सं. स्त्री. [सं. विशाला] १ एक तीर्थ का नाम। (पुराण)

२ उज्जैन नगर का नाम।

३ सोमवंशीय राजा अजमीगढ की पत्नी।

४ गय राजा के यज्ञ से प्रकट हुई सरस्वती।

५ दक्ष प्रजापति की एक पुत्री।

६ कौशिक राजा की पत्नी।

७ महावीर्यपुत्र भीम राजा की पत्नी।

बिसालाक्ष-सं. पु. [सं. विशाल+अक्ष] (स्त्री. बिसालाक्षी) १ शिव का नामान्तर।

२ वास्तुशास्त्रविषयक अठारह प्रमुख ग्रंथकारों में से एक।

३ भीम के द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

४ भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

५ विराट का छोटा भाई व सेनापति।

६ युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ मे उपस्थित मिथिलादेश का राजा।

७ भगवान् विष्णु का वाहन, गरुड।

८ गरुड का एक पुत्र।

९ चौसठ भैरवो मे से एक भैरव का नाम।

वि.—बडी व सुन्दर आंखो वाला।

बिसालाक्षी-सं. स्त्री. [सं. विशाल+अक्षी] १ बडी एव सुन्दर आखो वाली स्त्री।

२ पार्वती देवी का नाम व उसकी एक मूर्ति।

३ चौसठ योगनियो मे से एक योगिनी।

बिसालाक्षीआत्रा, बिसालाक्षीयात्रा-सं. पु. [सं. विशालाक्षीयात्रा] भाद्रपद कृष्णा तृतीयाको किया जाने वाला व्रत विशेष।

वि. वि.—इसमे तिथि रात्रिव्यापिनी होना आवश्यक है। इस दिन उपवास व जागरण व भाद्रपद शुक्ला तृतीया को गौरी का पूजन कर गुड के पुये नैवेद्य मे दिये जाते हैं।

बिसाळापुरी-सं. स्त्री. [सं. विशालापुरी] उज्जैन नगरी का नाम।

रू. भे.—बिसाळापुरी, बिसाळपुरी।

बिसाळु, बिसाळू—देखो 'बिसाळ' (रू. भे.)

उ०—वडा सांमि तैं विसव किमि करि वणायौ, सरग सात पाताळ मुख मा समायौ। वडौ ताहरौ मुख उरळौ बिसाळूं, किसन तूझ नां निमो तुझ काळ-काळ्। —पी. ग्र.

बिसावणौ, बिसावबौ-१ उपार्जन करना, कमाना।

उ०—'जोधा' हरा मिळै जोधारां, समहर रीठ वजायौ सारा। एक पोहर लड़ियो बळ ओडै, कमधां भाम बिसावरण कोडै। —रा. रू.

२ उत्पन्न करना, नया पैदा करना।

उ०—१ वैर हमेस बिसावणा, वाड़ विना वसणोह। बाघां रै क्यूं कर वर्णे, आरण आळसणोह। —बां. दा.

उ०—२ वैर बिसावै वाघ सूं, वन माझळ कर वास। जतन न राखै जांणजै, वेगी जास विणास। —बां दा.

उ०—३ वाता वैर बिसावणा, सैणा तोडै नेह। हासै विख पीणा हरख, आछा काम न एह। —बां. दा.

३ प्राप्त करना, पाना।

उ०—एका लाभ बिसाविया, एक मूळ ठगाणा। —केसोदास गाडण

४ एकत्र करना, इकठ्ठा करना, सग्रह करना।

उ०—दो असाढ, दो भादवा, दो आमोज कै मांय, सोना-चांदी वेच कै, नाज बिसावौ साय। —वरसा विग्यान

५ देखो 'विसारणौ, विसावौ' (रू. भे.)

बिसावणहार, हारौ (हारी), बिसावणियौ—वि०।

बिसाविओड़ो, बिसावियोड़ो, बिसाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिसावीजणौ, बिसावीजबौ—कर्म वा०।

बिसावियोड़ो-भू का कृ.—१ उपार्जन किया हुआ, कमाया हुआ. २ नया पैदा किया हुआ, उत्पन्न किया हुआ. ३ एकत्र किया हुआ, सग्रह किया हुआ, इकठ्ठा किया हुआ. ४ प्राप्त किया हुआ। ५ देखो 'विसायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बिसावियोडी)

बिसावीस, बिसावीसं—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—१ गजा रत पोट, पडि चोट तबागळां, वखत अरि ओट लै बिसावीसं। धजवडा गहै मन-मोट ज्या सिर धसै, दवाळा कोट सैंनोट दीसै। —अनोपसिंघ सांदू

उ०—२ वदनीक पाय रा गाय रा दुजा बिसावीस, आसुरा भजणा आडै धाय रा अमाव। अडोळ पाय रा सीह सुभाय रा आसतीक, सिहाय रा जना ओधराय रा सुजाव। —र. ज. प्र.

उ०—३ हरणु पाप गांम बिचार भार अठार बन कर भेद । उग-णीस बरसं भोम जोबन बिसावीस अखेद । —र. ज. प्र.

बिसास—देखो 'बिस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ भड़ समेळो जाह कन्है, तुरी अमेळा जास । रावत माभी इक मना, जांह री किसौ बिसास । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ यौं करता कितरा दिन बितीत हुवा सो गुवाळ पण बिसास कीधौ जांणै सो मौनै लाय तौ नहीं ।
—गाम रा धणी री बात

उ०—३ चंद सूरिज हुई दीया साख, पांनी पवन अरि धूर अकासि । हुं नवि जाणु य ईम करै, मुसी है ! नणद हु ईणी बिसास ।
—बी. दे.

उ०—४ राम भरोसं ऊकळे, आदण ईसरदास । ऊकळता मे ग्रोर दै, बंदा राख बिसास । —ह र.

बिसासघात—देखो 'बिस्वासघात' (रू. भे.)

उ०—१ बिसासघात गोहलां, निपात डाभियां बुरी । करे कमध चूक ओम, भोम आपरी करी । —पा. प्र

उ०—२ भुजा धारियौ न त्याग तै बाकारियौ न बाघ भूरौ, करग्गा प्रहारियौ ढगा सू आणै कूत । एकाएक लाखा बाता हारियौ धरम्म 'अजा', हिंदूनाथ माग्यौ विसासघात हूत ।
—जीवौजी भादौ

बिसासणौ, बिसासबौ—देखो 'बिस्वासणौ, बिस्वासबौ' (रू. भे)

उ०—कद थे नाग बिसासिया, नेण लिया अग-कल्ल । मान सरोवर कद गया हंसा सीखण हल्ल । — अग्यात

बिसासणहार, हारौ (हारी), बिसासणियौ—वि० ।
बिसासिग्रोड़ौ, बिसासियोड़ौ, बिसास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिसासीजणौ, बिसासीजबौ—कर्म वा० ।

बिसासियोड़ौ—देखो 'बिस्वासियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री बिसासियोड़ी)

बिसास्त्र—स. पु [स. विष+अस्त्र] १ विष मे बुझा हुआ अस्त्र ।

२ साप, सर्प ।

बिसाहणौ, बिसाहबौ—क्रि. स —१ स्वीकार करना ।

२ ग्रहण करना, पकडना ।

उ०—सब जीव बिसाहैं काळ कौ, कर कर कोटि उपाइ । साहिब को समभै नहीं, यौं परळै ह्वै जाइ । —दादूबाणी

उ०—२ दादू कारण काळ कै, सकळ सवारै आप । मीच बिसाहैं मरण कौ, दादु सोक सताप । —दादूबाणी

३ देखो 'बिसाणौ, बिसाबौ' (रू. भे)

उ०—१ करि उच्छव सूरजकवर, कीध विदा 'अभसाह' । रिध सोवन मोती रतन, वसन अमोल्य बिसाह । —रा. रू.

उ०—२ मोतिए बिसाहण ग्रहि कुण मूंकै, एक एक प्रति एक अनूप । किल सोभण मुग्ध मूझ वयण कण, सुकवि कुकवि चालणी न सूप । —वेलि.

बिसाहणहार, हारौ (हारी), बिसाहणियौ —वि० ।
बिसाहिग्रोड़ौ, बिसाहियोड़ौ, बिसाह्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिसाहीजणौ, बिसाहीजबौ—कर्म वा० ।
बिसाहणौ, बिसाहबौ—रू० भे० ।

बिसाहियोड़ौ—भू का. कृ.—१ स्वीकार किया हुआ. २ ग्रहण किया हुआ, पकडा हुआ ।
३ देखो 'बिसायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. बिसाहियोड़ी)

बिसिसथल, बिसिस्थल—स पु [स. विशिस्थल] कटिस्थल ।

उ०—करमायु भर कुसुमचु, वेणि बिसिस्थल थाय । ऊडती जांणै ग्रही, सीचाणइ दुरगाय । —मा. का. प्र.

बिसिख, बिसिख—सं. पु. [स. विशिख.] १ बाण, तीर ।
(अ. मा., डि. ना. मा.)

उ०—जैसे बाज थंभे तौ मेह बरसे । त्यौ अठै बिसिख कहता तीर चलावणौ रहि गयौ । धड़ां उपरि ऊजळी धारा तरवारघा की चमकण लागी । —वेलि टी.

२ एक पक्षीराज, जो गरुड एवं शुकी के पुत्रो मे से एक था ।
रू भे.—बिसिख, बसकि, बसख, बिखिक, बिसक, बिसक्ख, बिसख, बिसिखि, बिसिक्ख, बिसेक, बिसेख ।

बिसिखा—स. पु. [स. विशिखा] १ फावडा ।

२ तकुआ ।
३ बाण, तीर ।
४ सुई या आलपिन ।
५ राजमार्ग, आम रास्ता ।
रू. भे.—बिसिखा ।

बिसिखि, बिसिक्ख—देखो 'बिसिख' (रू भे.) (अ. मा.)

बिसिन—१ देखो 'बिस्न' (रू भे)

उ०—अहमि जगायौ बिसिन, परम कोपियौ ईसर परि । महा कोप मन माहि, कध ककाण जिसौ करि । —पी. ग्र.

२ देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

बिसिनि, बिसिनी—१ देखो 'बिस्णु' (रू. भे.)

उ०—१ चारण सहि कीरति चवै, अमर करै आदेस । ग्यान करीमौ हुइ गियौ, बिसिनि किसौ कोइ वेस । —पी. ग्र.

उ०—२ इंद अनंत अणपार, बिसिमि लै रोम बसाया । रोमि रोमि ब्रहमंड, असंख ब्रहमंड उपाया । रोम रोम ऊपरी रहै सायर जळ सारा, एकणि रोम अनत वसै कविळास विचारा । —पी. ग्र.

१ देखो 'व्यसनी' (रू. भे.)

बिसिमिसि-स. पु. [स] १ प्रतिस्पर्द्धा, ईर्ष्या, होड़ । (उ. र)

२ गर्व, अहंमता । (उ. र.)

बिसिया—१ देखो 'बिसिया' (रू. भे.)

२ देखो 'विस' (रू. भे.)

३ देखो 'विसय' (रू. भे.)

उ०—जन हरिदास बिसिया तजै, गोविन्द गुण गावै । छाजै बैसे ग्यांन कै, तब ही सच पावै । —ह. पु. वा.

बिसियारस-सं. पु. [स. विषय+रस] १ कामवासना, कामेच्छा ।

२ भोगविलास, मैथुन ।

उ०—तन लाल गुलाल प्रवाळ तरै, भल भोग नितब नितब भरै । कसिया तन घोट लंगोट कसी, बिसियारस अंतर बीच बसी ।

—ऊ. का.

बिसिरस्क-सं.पु. [स. विशिरस्क] सुमेरु के पास का एक पर्वत । (पुराण)

बिसिरा-सं. स्त्री. [सं. विशिरा] स्कद की एक अनुचरी, एक मातृका ।

बिसिस्ट-सं. पु. [सं. विशिष्ट] वह व्यक्ति या वस्तु जिसमें कोई विशेषता पाई जाती हो, अद्भुत वस्तु या व्यक्ति ।

वि.—१ प्रसिद्ध, मशहूर, कीर्तिवान ।

२ शिष्ट, सभ्य ।

३ देखो 'बसिस्ठ' (रू. भे.)

रू. भे.—बिसीठ ।

बिसिस्टाद्वैत-स. पु. [सं विशिष्ट+अद्वैत] श्री रामानुजाचार्य का वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें, जीवात्मा और जगत दोनो को ब्रह्म से भिन्न माना गया है यद्यपि ये दोनो भिन्न नही है ।

बिसिस्टाद्वैतवाद—देखो 'बिसिस्टाद्वैत' ।

बिसिस्टी, बिसिस्ठी-सं. पु. [स विशिष्ठी] १ संदेशवाहक, खबरनवीस, दूत ।

स. स्त्री.—२ शंकराचार्य की माता का नाम ।

बिसीअमूरति—देखो बिसीसमूरति' (रू. भे)

बिसीठ—१ देखो 'बसीठ' (रू. भे.)

उ०—राजा री सेना पूछियौ, लड़ाई अब हुइसी पिण पूछौ पैला कुण छै बिसीठा लोग पूछियौ । —पचदंडी री वारता

२ देखो 'बसिस्ठ' (रू. भे.)

३ देखो 'बिसिस्ट' (रू. भे.)

बिसीठगारी-सं. पु.—१ सदेशवाहक या दूत का कार्य ।

२ अपशब्द, कटुशब्द, गाली ।

उ०—गोगादै वीरमोत मारियौ, तद राव राणंगदै बिसीठगारी गोगादेजी सूं कीवी थी, तद गोगादेजी कह्यौ हुतौ—म्हारौ दावौ जोईयां सु को नही, म्हारा तीन सरदार पड़िया, जोईयां रा सात सिरदार पडिया, म्हारौ कोई राठौड़ वैर मागै तो राव रांणगदै कनै मांगज्यौ । —नैणसी

बिसीसमूरति-सं. पु. [स विशीषमूर्ति] कामदेव का नामान्तर ।

बिसुंडौ-सं. पु. [स विशुडी] कश्यप ऋषि का पुत्र एक नाग ।

बिसुदरौ—देखो 'बिसूंदरौ' (रू. भे)

(स्त्री. बिसुदरी)

बिसुंधरा—देखो 'वसुंधरा' (रू. भे.)

उ०—बिस्वामित्रेस एण वात, कोपियौ भयकरा । गिरां तरां सरां गभीर, धुज्जवै बिसुंधरा । —सू. प्र.

बिसु—१ देखो 'वसु' (रू. भे.)

२ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—बिसु दीवउ दुरयोधनिहिं, भीमह भोजन माहि । अमतु हुई नइ परिणमिउ, पुन्निहिं दुरिउ पुलाइ । —सालिभद्र सूरि

बिसुआवीस—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

उ०—सुणौ रगण त्रिणि रूप सहि, सो नै सत तालीस । प्रगट छंद कहि एण परि, वात बिसुआवीस । —ल. पिं.

बिसुक-स. पु. [स. विशुक] देवी के द्वारा मारा गया एक भण्डासुर ।

बिसुणी—देखो 'बिस्रांति' ।

उ०—मोसा, ओळमा वगै कबै, छाक पूत सिर छाबड़ी । लेण बिसुणी बैठ संभाळै, रळग्या बाळक राबड़ी । —दसदेव

बिसुद्ध-वि. [स. विशुद्ध] १ बिलकुल शुद्ध, खरा ।

२ बिना पाप का, पाप रहित ।

३ कलकरहित, कलंकशून्य ।

४ सच्चा, ठीक ।

५ पवित्र ।

उ०—१ विरुद्ध वेद वारता प्रबुद्ध पातरै नही, बिसुद्ध सुद्ध सच तें असुद्ध आतरै नही । प्रचड पडितान की वितड बंडळी नही, महा अबोध सोधनी सुबोध मडळी नही । —ऊ. का.

उ०—२ कटै कडियाळ वहै करमाळ, कुटक्कै कोपर कंध कपाळ । बगत्तर ओव हुवति बिसुद्ध, जुटत बहादर बाहुअ जुद्ध ।

—गु. रू. ब.

स. पु.—योग या तंत्र के अनुसार राजस्थानी में शरीर के भीतर माने गये आठ कमल या चक्रों में से पांचवा चक्र ।

वि. वि.—इसका स्थान कंठ माना गया है। जप १०००, रंग नीला (हलका आसमानी), दल १६ होते हैं। इसके देव कहीं चंद्र और कहीं शिव माने जाते हैं। इसके १६ अक्षर और १६ दल होते हैं।

उ०—चक्र विसुद्ध कंठ मे उदमुख जांणिये;धूम्र वरण सोडस दळ, कमळ पिछांनिये। एक एक कर सोडस स्वर हैं दळन पर, यत्र पूरण चंद्राक्रति, भासत सुक्लतर। —साधक-सुधा

रू. भे.—बिसुद्ध बिसुध, विसुद्धचक्र, विसुद्धिचक्र, विसुध।

विसुद्धचक्र-स. पु.—देखो 'विसुद्ध' (सं. पु.) (रू. भे.)

विसुद्धचारी-सं. पु. [स. विशुद्ध+चारिन्] बिलकुल शुद्ध चरित्र वाला व्यक्ति, चरित्रवान व्यक्ति।

विसुद्धता-स. पु. [स. विशुद्ध+ता] विशुद्ध होने की अवस्था या भाव।

विसुद्धात्मा-सं. पु. [स. विशुद्ध+आत्मा] परम शुद्ध निर्मल आत्मस्वरूप भगवान।

विसुद्धि-सं. स्त्री. [स. विशुद्धि] विशुद्ध होने की क्रिया या भाव, शुद्धता।

रू. भे.—बिसुद्धि बिसुद्धी, विसुद्धी।

विसुद्धिचक्र—देखो 'विसुद्ध' (स. पु.) (रू. भे.)

विसुध—१ देखो 'विसुद्ध' (रू. भे.)

उ०—किहि रिति संध्या कै विखै रस पाईजै छै। कवि यो कहि गया छै। विहु पखा। विसुध। बिहु मासा। बिहुं राति दिन। वसंति सारीखो रस निरवाह छै। —वेलि टी.

२ देखो 'वेसुध' (रू. भे)

विसुन—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

विसुनपुर देखो 'विस्णुपुरी' (रू भे.)

विसुनपुरी—देख 'विस्णुपुरी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—असीय सहहस सजै करि मैमता, पच छोहण जै कइ मिळइ नरिंद। कर जोड़ै नरपति कहई, विसुनपुरी जाएँ वसइही गोव्यंद। —बी. दे.

विसुरण, विसुरणौ—देखो 'विसूरणौ' (रू भे)

उ०—हजार कोम में सारो लोक दुखी छै। म्हानै तो छोडिया नै वरस छः हुवा छै, पण चाळीस दिन आपणी सीम मे हुवा, सारो लोक रोवै था। माथौ टेकिय विसुरण करै था। —पलक दरियाव री बात

विसुरणौ, विसुरबौ—देखो 'विसूरणौ, विसूरबौ' (रू. भे.)

विसुरणहार, हारौ (हारी), विसुरणियौ—वि०।

विसुरियोड़ौ, विसुरियोड़ौ, विसुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

विसुरीजणौ, विरीजबौ—कर्म वा०।

विसुरियोड़ौ—देखो 'विसूरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विसुरियोड़ी)

विसुव-सं. पु. [सं. विषुव] दिन और रात दोनों बराबर होने का वह समय जब सूर्य विषुवत्‌रेखा पर पहुंचता है। (ज्योतिष)

विसुवरेखा—देखो 'विसवतरेखा' (रू. भे.)

विसुवामित, विसुवामितर, विसुवामिति विसुवामित्र,—देखो 'विस्वामित्र' (रू भे.)

विसुविसा, विसुवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे)

विसूंणी—देखो 'विसाति'।

विसूंदरौ-स. पु. (स्त्री. विसूंदरी) विषैला जन्तु विशेष, छिपकली।

उ०—१ नाई बोल्यौ—हां बापजी, बात तौ आपरी साव साची। म्हारी निजरा देख्योड़ी है। अेकर विसूंदरा री पूंछ माडी तौ वा निरी ताळ आंगणा मे लटपट लटपट करती री। —फुलवाड़ी

उ०—२ सेठ कह्यौ—पाळियोड़ी मिन्नी री काई सबूत ! म्हैं किसी उणनै मोल लायौ हौ। ये तौ कंवौला कै ऊंदरा ई म्हारै पाळियोड़ा है, घर री माखिया, माछर अर विसूंदरा ई म्हारै पाळियोड़ा है। —फुलवाड़ी

रू भे.—बिसादरौ, बिसुंदरौ, बिसूंदरौ, विसदरौ, विसूदरौ।

मह —बसदर।

विसू—देखो 'वसु' (रू. भे.)

उ०—१ विसू रखण सुजस वाता, इद्र कोसळ आखियाता, देव वृछित दान दाता, दुभ्रम दीन दयाळ। गाव दससिर बाण गजै, प्रगट खळ जन भूप भजै, जनक पण रख चाप भजै भलै अवध भुवाळ। —र. ज. प्र.

उ०—२ देण सेवग लंक दाता, घल्ल व्याध कबंध घाता। विसू रखण कीत वाता, हद हाता हद हाता। —र. ज. प्र.

उ०—३ वडा भाग ज्यारी विसू, लखबर चरणा लाग। पाव राम गुण प्रीत सूं, आठ पहर अनुराग। —र. ज. प्र

विसूच्या—देखो 'विसूचिका' (रू भे.) (जैन)

विसूकणौ, विसूकबौ-क्रि. अ.—१ रसहीन होना, सूखना।

उ०—बन माभळ बधवाव सु, दुरद विसूकै डाण। जेठ लुवा सूकत जिम, निरजळ देख निवाण। —बां. दा.

२ नष्ट होना।

३ दुर्बल होना, कमजोर होना।

४ सुस्त होना।

५ दुधारु पशु के दूध माना बन्द होना ।

बिसूकणहार, हारो (हारी), बिसूकणियो—वि० ।

बिसूकिग्रोड़ो, बिसूकियोड़ो, बिसूक्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिसूकीजणो, बिसूकीजबो—भाव वा० ।

बिसूकणो, बिसूकबो, बेहूकणो, बेहूकबो, बिसूगणो, बिसूगबो—रू०भे०

बिसूकियोड़ी-सं. पु.—वह गाय, भेंस, या अन्य दुधारु पशु जिसने दूध देना बन्द कर दिया हो ।

रू. भे.—विसूगियोडी ।

बिसूकियोड़ो-भू का. कृ.—१ रसहीन हुवा हुआ, सूखा हुआ. २ नष्ट हुवा हुआ. ३ दुर्बल हुवा हुआ, कमजोर हुवा हुआ. ४ सुप्त हुवा हुआ ।

(स्त्री बिसूकियोडी)

बिसूगणो, बिसूगबो—देखो 'बिसूकणो, बिसूकबो' (रू. भे.)

बिसूगणहार, हारो (हारी), बिसूगणियो—वि० ।

बिसूगिग्रोड़ो, बिसूगियोड़ो, बिसूग्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिसूगीजणो, बिसूगीजबो - भाव वा० ।

बिसूगियोड़ी—देखो बिसूकियोडी' (रू. भे.)

बिसूगियोड़ो—देखो 'बिसूकियोड़ो (रू भे)

(स्त्री. बिसूगियोडी)

बिसूचिका-स. स्त्री. [स.] वमन और विरेचन को साथ लिए हुए हैजा नामक रोग विशेष, जो अजीर्ण की वृद्धि के कारण होता है ।

बिसूची-स. स्त्री. [स. विषूची] १ विरजू नामक राक्षस की पत्नी,जिससे इसे सौ पुत्र एव एक कन्या उत्पन्न हुई थी ।

२ देखो 'विसूचिका' (रू. भे.)

बिसूणी—देखो 'विस्राति' ।

उ०—जो'डे खनै जिराण, जठै नर अतक जळावै । सीढी धोरै मे'ल, बिसूणी बीच लरावै । जळ रौ कर छिड़काव, नगलियौ फटकै फोडै , हाडी पावक हेन, दागवै पाळां जो'डै । —दसदेव

बिसूर-स. पु.—रुदन करने या सुबकने की क्रिया या भाव ।

बिसूरण, बिसूरणो-सं पु. [सं.विसूरण] १ दुख, रज, शोक, पश्चाताप ।

उ०—इण भात भालो ठाकुर सिंह ऊभो-ऊभो बिसूरणा करै छै। हाथ मसळै छै। घोड़लो आपरी सवारी रो सुन्हली सावत सू खेत मांही पडियो छै। —डाढाळा सूर री बात

२ चिन्ता ।

३ रुदन ।

४ किसी मृत व्यक्ति के शोक में बनाया हुआ पद्य, मरसिया ।

रू भे —बिसूरणो, विसुरण, त्रिसुरणो, वीसूरण, वीसूरणो ।

बिसूरणो, बिसूरबो-क्रि. स.—१ सुबक-सुबक कर रोना ।

उ०—१ निमखातर सहता नही, दीसण लागा दूर । भाखै इण विध भामणी, बचन बिसूर-बिसूर । —र. हमीर

उ० —२ एक घडी आधी घडी तुम मो रहू ज दूर । बरस बराबर एक पळ, रहू बिसूर-बिसूर । — कुंवरसी साखला री वारता

२ —चिन्ता करना, शोक करना ।

उ०—माया विसरी वेलडी,हरीया पसरी दूरि । केताई फळ कारणै रह्या बिसूरि-बिसूरि । —अनुभववाणी

३ रुदन करना, रोना ।

उ०—१ भिरै भटालि भाल मे भिखार भूर-भूर व्है, छिता अफड सुड कै प्रचड ज्वाळ तै चिपै । भगै कनूर भूरि भैस तूर तूर व्है भजो, मरै बिसूर सूर कै मकूर कन्न लै मजो । — ऊ. का.

उ०—२ दिन की जाग्रत हुय रही, निसा नही भरि सोय । राम बिसूरै बिरहनी, आसु कर सुं धोय । —अनुभववाणी

४ पश्चाताप करना, दुख करना ।

उ०—तर ऊचो असमान फळ, पथी रह्या बिसूरि । जनहरिया फळ ऊजळा, हाथ न पहुचै दूरि । —अनुभववाणी

बिसूरणहार, हारो (हारी) ,बिसूरणियो—वि० ।

बिसूरिग्रोड़ो, बिसूरियोड़ो, बिसूर्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिसूरीजणो बिसूरीजबो कर्म वा० ।

बिसूरणो, बिसूरबो, बिसुरणो, बिसुरबो—रू० भे० ।

बिसूरियोड़ो-भू. का कृ —१ सुबक-सुबक कर रोया हुआ. २ चिन्ता किया हुआ, शोक किया हुआ. ३ रुदन किया हुआ, रोया हुआ. ४ पश्चाताप किया हुआ, दुख किया हुआ ।

(स्त्री बिसूरियोडी)

बिसूबिसा बिसूवीसा—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

बिसेक, बिसेख-स स्त्री.—यश, कीर्ति, प्रसिद्धी ।

(अ. मा., ह ना. मा.)

वि.—१ भयकर, भयावह ।

उ०—१ आसाढऊ सुद नवमि, गुण आगै रिख (१७३७) लेख । जिके समत्सर जोधपुर, समहर थयो बिसेख । —रा. रू.

उ०—२ यों नभ रवि अचर्राज्जयो, प्रबळ कळह गह पेखि । एक प्रहर गोळा उरड, व्रत झड़हत बिसेख । —रा रू.

[म. वि =विशेष+सेक=शोक] २ विशेष दुखी, खिन्नचित्त, उदास, पीडित ।

उ०—राम निचत प्राप हुय रहिया, सुध म्हारी वीसरिया सांम । लेखा सकळ बिसेक विलोकै, बोलै जद राघव वरियाम । —र. रू.

३ देखो 'विसिख' (रू. भे.)

४ देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—पछै अबु समझायो, कह्यौ—थें इण तरफ बडा आदमी फंमदार छौ। इणां सु आंपणो काम आखर कर देसी। तठा पछै इणा री आदर भाव बिसेक कीयौ। —नैणसी

उ०—२ मगण सगण जगणह सगण, तगण दोय गुरु एक। सारदूळ विक्रीडतह, वरणो छद बिसेक। —र. ज. प्र.

उ०—३ वासवाहलो ठोड थापी दोय रावळ हुवा दोय सारीखी राजधानी हुई तरवार मामै वासवाहला रा धणिया री बिसेख हुई। —नैणसी

उ०—उर पतसाह उचाट अत, बाट अटकती देख। मिरच हुतासण होमिया, मत्र कतेब बिसेख। —रा. रू.

उ०—५ साथ रै लोक नूं कहण लागो, 'जो बीहा कुंवरजी रै आगे ही घणा छै पिण समझदार दातार तो लाडीजी सारखौ कोई नहीं—बडी सिरदार जाणियो बिसेख।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—६ तिण रुपिया री जायगा लेयनै लकडा री ग्वटकड कीधी। आरभ थोडो। जद स्वामीजी नै किणही कह्यो—इनमे कोई आरभ है? बिसेख आरभ नही। —भि. द्र.

उ०—७ दस कूप समो बापी, दस बापी समो सर। दसा सरवरा समी किन्या, अन-दान बिसेखत। —रा. सा. स.

उ०—८ प्रथीराज रै हाथ रावत भीव रहियो। बीजो ही घणो बिसेख हुओ। पाछा कुसळ-खेमै रावजी कनै साथ आयो तरै सिर्फ राती बरछी कीया रावजी री हजूर आया। —नैणसी

रू. भे.—बिसेखि।

अल्पा.—बिसेखियौ, बिसेखौ।

बिसेखकच्छेद्य—स. पु.—६४ कलाओ मे से एक कला का नाम।

बिसेखणौ, बिसेखबौ—क्रि. स—१ देखना, जाच करना।

२ अवलोकन करना, समझना

उ०—दिगविजै कजि नरनाथ सजि, दळ प्रबळ उच्छब पेखियो। सब धरण नव सुख नवल सोभा, विमळ रूप बिसेखियो।

—रा. रू.

३ कहना, पुकारना।

उ०—ब्यंदु दोय सुनयगा बिसेखौ, बहु अनुसार मनहरा बेखौ। विण सकार पदमणी बिसेखत, एक सकार चित्रणी ओपत।

—र. ज. प्र.

बिसेखणहार, हारो (हारी), बिसेखणियौ—वि०।

बिसेखिओड़ो, बिसेखियोड़ो, बिसेख्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिसेखीजणो, बिसेखीजबो—कर्म वा०।

बिसेखणो, बिसेखबो—रू० भे०।

बिसेखापुद्गल—स. पु [स. विशेषापुद्गल] वे पुद्गल जिनका आत्म सम्बन्ध नहीं हुआ है।

बिसेखि—सं. पु.—१ कारण।

उ०—पातिसाह दिली मांहे हुयौ दिन अढाई। तिण पातिसाह रौ मांमौ ममरेजखान तिणि एदल नूं मारि अर टीकौ लियौ दिली रौ। बरस एक राज कियौ। पातिसाह सेती लूणहराम कियौ। तिणि बिसेखि ममरेजखांन आप गहिलौ हुयौ। —द. वि.

२ देखो 'बिसेख' (रू. भे.)

३ देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—१ सहस लाख स्रावक भणी, भोजन पुण्य बिसेखि। सेत्रुंज साध पडिलाभता, अधिकउ तेह थी देखि। —स. कु.

उ०—२ ऊठिया जगतपति अनरजांमो, दूरतरी आवतौ देखि। करि वदण आतिथ भ्रम कीधौ, वेदै कहियौ तेणि बिसेखि।

—वेलि.

बिसेखियौ, बिसेखी, बिसेखौ—१ देखो 'बिसेख' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'विसेस' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ कोधी कपटी पूर, भूंडो दीसै नूर। धरम रो द्वेसियो ए, मच्छुर बिसेखियौ ए। —जयवाणी

उ०—२ हिम बाधि हिम रिन निसा हरणै, दिवस क्रिस गुणि देखियै। चित मोद निस प्रति मिटै चकवा, सुख चकोर बिसेखियै।

—रा. रू.

उ०—३ तिणि मां गुर इकत्रीस, दोइ लुघ भेळा देखौ। म्रहर नांम सौ महग, वळै गुणत्रीस बिसेखौ। —पि. प्र.

उ०—४ कबु कठ भुज विसाळ ग्रीव तीन रेखा, नटवर का भेख मानो सकळ गुण बिसेखा। छुद्रघटिका अधर अनूप किंकिनी धुन सवाई, उस गिरधर कै अग अग मीरा बळि जाई। —मीरा

उ०—५ इद्र बोल्या बेऊ कम्मण नै हो, लाया थे जान बिसेखौ। नेम ककर परणै जिकै हो, मैं पिण लेस्या लेखौ। —जयवाणी

बिसेट, बिसेठ—देखो 'वसीठ' (रू भे)

उ०—१ दळ सझवै सुरताण, आय चित्रकोट विलिज्जइ। भेजइ वेगि बिसेट, बात मिलणं की कीजइ। —प च. चौ.

उ०—वेग बिसेट चलाइयउ, पुहतउ गढह मझार सभा सहित राय भेटीयउ, बोलइ वयण विचार। —प च. चौ.

बिसेरियौ—स. पु—१ आधिपत्य या प्रशासन मे रहने वाला व्यक्ति।

उ०—तरै कवर करन कह्यो—"थानु दीवाणजी बुलाया छै, थें आवो तो हू जीमूं" तरै मेघ कह्यो—"म्हे थारा बिसेरिया चाकर छा, ज्यूं थें कहस्यौ, त्यु करस्यां पिण हू पातसाहजी सौं सीख कर आवसौ। —नैणसी

२ देखो 'बसीरो' (अल्पा., रू. भे.)

बिसेल, बिसेलौ—वि. [सं. विषैला] १ जहरीला, विषयुक्त। (अमरत)

२ व्यसनी, विषयी।

बिसेबिसा—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.)

बिसेस—वि. [सं. विशेष] १ अधिक, विशेष, ज्यादा।

उ०—१ पनगेस धरेस सुरेस तेस सर्फ पेस, भूतेस बिसेस चिंतवेस ध्यान भेस, जौतेस, अरेस बघ सेस क्रीत जपौ जेस, 'किसनेस' कवेस नरेस कोसळेस। —र. ज. प्र.

उ०—२ खरळा रा आदमियां री जाबतौ आप रा मुख सूं करावै छै। दारू रा घड़ा बीच मे पड़िया छै। सारै साथ नूं पायजै छै। फेर उहां नु बिसेस जाबतौ देय पावै छै। —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—३ 'सोमल' ब्राह्मण नीधिया, 'सोमा' नांमै एक। प्रत्यक्ष जांणै अपछरा, चतुराई रूप बिसेस। —जयवाणी

२ मुख्य, खास, प्रधान।

उ०—१ बिसेस बाब अेलची रा मे, जिको जीभ बादसाहा री छै अर हाल, समझ, बादसाहां रा तौर अेलची उण रा सूं मालम होय। —नी. प्र.

उ०—२ पूत पिता एकै थया, थै चढ जावौ देस। बोला कोला बोलिया, बीतौ वयण बिसेस। —रा रू.

३ साधारण से परे, अतिरिक्त या अधिक।

स. पु.—१ अन्तर भेद।

२ हर्ष, खुशी।

३ पदार्थ वस्तु।

४ अधिकता, उत्तमता विशेषता।

५ विचित्रता, अद्भुतता, अनोखापन।

६ सार, तत्व।

७ प्रकार, किस्म।

८ दमन नामक शिवावतार का शिष्य।

९ सात प्रकार के पदार्थों में से एक प्रकार का पदार्थ। (वैशेषिक दर्शन।

१० एक प्रकार का पद्य विशेष, जिसमे तीन श्लोकों या पदो मे एक ही क्रिया रहती है। (साहित्य)

११ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमे आश्चर्योत्पादक अर्थ (घटना) का वर्णन होता है। इसके तीन भेद होते हैं।

रू. भे.—बसेस, बिसेस, बसेक, बसेक, बसेख, बसेस, बिसक्ख, बिसेक, बिसेख।

अल्पा.—बसेखौ, बिसेखि, बिसेखियौ, बिसेखौ, बिसेखौ, बिसेसि, बिसेसौ।

बिसेसउक्ति—देखो बिसेसोक्ति' (रू. भे.)

बिसेसक—वि. [सं. विशेषक] १ विशेषता उत्पन्न करने वाला।

स. पु.—१ एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छंद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में पाच भगण व एक गुरु होता है।

वि. वि.—इसके अश्वगीत, नील, व लीला भी नाम हैं।

२ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमे प्रस्तुत-अप्रस्तुत में गुण सादृश्य होने पर भी किसी कारणवश विशेषता की स्फुरणा होती है। (साहित्य)

बिसेसग्य—वि [सं विशेषज्ञ] किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला।

बिसेसण—स पु [सं. विशेषण] व्याकरण में वह विकारी शब्द, जिससे किसी संज्ञावाची शब्द की कोई विशेषता अवगत हो या उसकी व्याप्ति सीमाबद्ध हो।

वि.—विशेषता बताने वाला।

बिसेसता—स. स्त्री [सं. विशेषता] विशेष होने की अवस्था या भाव।

रू भे.—बिसेखता, बिसेसता।

बिसेसग्य—वि—विशेषज्ञ। (जैन)

बिसेसालंकार—देखो 'बिसेस' (११)

बिसेसि—देखो बिसेस' (रू भे)

उ०—पूगळ दस दुकाळ थियु किणहीं काळ बिसेसि। पिंगळ ऊचाळउ कियउ, नळ नरवर चइ देसि। —ढो. मा.

बिसेसोक्ति—स. स्त्री. [सं विशेषोक्ति] एक प्रकार का अलंकार विशेष जिसमें पूर्ण कारण के होने पर भी कार्य का अभाव वर्णित होता है।

वि. वि.—इसके तीन भेद कहे गये हैं—

(१) उक्तनिमित्ता—जिसमे कार्य के अभाव का निमित्त कहा जाय।

(२) अनुक्तनिमित्ता—जिसमे कार्य के अभाव का निमित्त नही कहा जाय।

(३) अचिंत्यनिमित्ता—जिसमे कार्य के अभाव का निमित्त समझ मे नही आने वाला हो।

रू भे—बिसेसउक्ति।

बिसेसौ—देखो 'बिसेस' (अल्पा, रू. भे)

बिसेस्य—स पु. [सं. विशेष्य] व्याकरण की वह पद या शब्द जिसकी विशेषता विशेषण लगा कर सूचित की जाय।

बिसै—देखो 'बिसय' (रू. भे.)

उ०—१ कुंती नगरी नै बिसै, हुवौ हाहाकार। देखो राय मराविया, बिना गुनै अणगार। —जयवाणी

उ०—२ हसण बोलण चालण बिसै, थमूं होसी हो अवसर नौ

बांण। युद्ध करी अपराभवी, नवांग सुंदर ही, सोमै स्रंगार बखांण।
—अयवाणी

उ०—३ आयै साध भये प्रहलाद, जिनकै नहीं बिसै रसवाद।
उनका कहा बरनो बिसतार, रांमसनेही मेरै प्राण अधार।
—ह. पु. वां.

बिसोक-सं. पु. [सं. विशोक] १ अशोक नामक वृक्ष।

२ ईश्वर, परमात्मा।

३ भारतीय युद्ध में पाण्डव पक्षीय राजा जो केकय राजकुमार था और कर्ण के द्वारा मारा गया था।

४ भीमसेन का सारथि।

५ ब्रह्मा का मानसपुत्र। (पुराण)

६ दमन शिवावतार का एक शिष्य।

७ कृष्ण एवं त्रिवक्रा के एक पुत्र का नाम जो नारद का शिष्य था।

वि.—१ जिसे शोक न हो, शोकरहित।

२ जिसे शोक हो, शोक युक्त।

रू. भे.—बिसोग।

बिसोकद्वादसीव्रत-सं. पु. [स. विशोकद्वादशीव्रत] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को किया जाने वाला एक प्रकार का व्रत विशेष।

वि. वि.—इस दिन सिर्फ अल्पाहार किया जाता है और लक्ष्मी-पूजन किया जाता है इसके करने से प्रियवियोग नहीं होता है तथा धन-धान्य की वृद्धि होती है।

बिसोका-स. स्त्री. [स. विशोका] १ कृष्ण की सोलह हजार पत्नियों में से एक पत्नी का नाम।

२ स्कंद की एक अनुचरी मातृका।

बिसोग—देखो 'बिसोक' (रू. भे.)

बिसोतर-स. पु.—एक सौ बीस की संख्या।

रू. भे.—बिसोतर, बिसोत्तर, बिसोत्तर।

बिसोतरि, बिसोतरी—देखो 'बिसोत्तरी' (रू. भे.)

बिसोत्तर—देखो 'बिसोतर' (रू. भे.)

बिसोत्तरि, बिसोत्तरी—देखो 'बिसोत्तरी' (रू. भे.)

बिसोधन-सं. पु. [सं. विशोधन] पापों का नाश करने वाले भगवान्।

बिसोधनी-सं. स्त्री. [स. विशोधनी] ब्रह्मपुरी का नाम।

बिसोनी-स. स्त्री.—एक प्रकार का वर्षात मे पैदा होने वाला पौधा, शरपुंखा।

रू. भे.—बिसूनी, बिसोनी, बीसोनी, बीफनी, बोसूनी, बौसोनी, वेहोनी।

बिसोबा—देखो 'बिसवौ' (रू. भे.)

बिसोभित-वि. [सं. वि.=रहित+शोभित] १ शोभारहित, भद्दा।

उ०—जब राति वितीत होण लागी। तब चद्रमा किसौ दीसै छै। जिसौ भरतार असमाध्यां थकां सती को मुख देखिज्यै। जब पिउ बै माहि सक्त छै। चद्रमा माहि ज्योति छै। श्री दुख का मारचा अर यै दिन की जोति नजीक आयां। दून्यौ बिसोभित सा देखीजे छै।
—वेलि टी.

[सं. वि =विशेष+शोभित] २ विशेष शोभित, शोभायुक्त।

बिसोवम-वि. [सं. विषोपम] विष के समान जहर के सदृश्य।

बिसोवा—देखो 'बिसवौ' (रू. भे)

बिसोवावीस, बिसोहावीस—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ राजा नीयत साभळै, वहै बिसोवावीस। प्रसमै धारै बुद्धि बळ, समै, विचारै रीस।
—रा. रू.

उ०—२ आभ थोमै भुजै "भाल" हर आभरण, बधै आधक छत्रां बिसोवावीस। दुचित दिल्लेस तद खळां माथै दुगम, सुचित तद परठिजै ऊमरां सीस।
—केसोदास गाडण

बिसोही-वि. [सं. विशोही] १ आत्मा को विशेष प्रकार से शोधन करने वाला। (जैन)

स स्त्री.—विशुद्धी।

बिसौ-वि. [स्त्री. बिसी] वैसा, जैसा, समान।

उ०—१ अै दोनू सरदार जनाना रै बाहर जाय ऊभा रहिया। इहा नू माही बड़ण नहीं दिया राजूला री बीबी बाहर आय कही—बाबा थांरी बैर था लेय ही लियो। साबास छै, बडी रजपूती राखी! असा पुरसा रा यै लड़का था बिसो ही कीवी। जनानी मरजाद मता भांजो।
—सूरै खींवै काधलोत री वारता

उ०—२ सेठ तीन दिना ताई कलकत्ता री सड़का नापी जरै कठै ई जावता चौथोड़ै दिन ठीक बिसौ री बिसौ इज हीरौ एक देसी फरम मे निगै आयौ।
—अमरचूनड़ी

उ०—३ दिनुगा री टेम ही अर भूलेसर री भीड़ आपरी पूरी जवानी पर आयोड़ी ही। अवानी ई इसी-बिसी नहीं पण टल्ला देवती।
—रातवासौ

बिस्कंभ, बिस्कमक-सं. पु [स. विष्कंभ, विष्कंभक] १ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगो मे से एक योग का नाम।

वि. वि.—इसमे किसी शुभ कार्य करने में विष्कुंभ योग की प्रथम पाच घटि (घड़ी) को अशुभ व शेष को शुभ माना जाता है।

२ योगियो का एक प्रकार का बंध।

३ भूत एवं भविष्यत् कथाओ का सूचक, एवं कथा का संक्षेप करने वाला अंक।

रू. भे.—बिसकंभक, बिमकभक ।

बिस्कभी—स. पु. [सं विष्कम्भिन्] शिवजी का एक नामान्तर ।

बिस्क—सं. पु. [स विष्क] बीस वर्ष की प्रायु का हाथी । (डि. को)

बिस्कर—स. पु. [स. विष्कर] १ पक्षी, चिड़िया ।

२ पूर्वकालिक एक राक्षस जो सम्पूर्ण पृथ्वी का शासक था ।

बिस्कल—स. पु [स. विष्कल] सूग्रर, शूकर ।

बिस्किर—स पु. [स. विष्किर:] १ पक्षी चिड़िया ।

२ सर्प, सांप ।

बिस्कुट—देखो 'बिस्कुट' (रू. भे.)

बिस्टइ—स पु. [स. विष्टि] सदेशवाहक, दूत ।

उ०—१ बिस्टइ ! तू वलि वेगिसूं, विक्रम कहिजे वात । वेस देउ म्रं विप्रनइ, तु म्रेह ज माहरु तात । —मा. का. प्र.

उ०—२ अम्हो वलूं इम बिस्टइ, काहवी करुणावंतो । क्षिति मझन खोजइ नही, क्षिमा-खडग सोभति । —मा का. प्र.

बिस्टकार-स. पु.—१ दूत, सन्देशवाहक ।

२ अपशब्द कहने वाला व्यक्ति ।

रू. भे.—विस्टिवार ।

बिस्टकारी-सं. पु.—१ दूत या सन्देशवाहक का कार्य ।

२ अपशब्द, गाली, कटु शब्द ।

उ०—पसू बाघनै घाव कियौ । इसौ घाव जो राव राणगदे नूं प्रथवा मादे कुंवर न करै तौ जाणू घाव कियौ । मोनूं भाटी खटकै छै । इया गोगादेजी नूं बिस्टकारी दी हुती, सु मोनूं दुखै छै। —नैणसी

रू. भे.—विस्टाकारी, विस्टिकारी ।

बिस्टप—स पु [सं विष्टप] ससार, जगत ।

बिस्टर—स पु. [स. विष्टर] १ प्रासन, बैठक ।

२ यज्ञ मे ब्रह्मासन ।

३ पेड, वृक्ष । (ह ना. मा)

४ देखो बिस्तर' (रू. भे.)

रू. भे—बिसटर, बिस्टर, विसटर ।

बिस्टरास, बिस्टरास्व—सं पु [स. विष्टराश्व] सूर्यवंशी राजा पृथु के उत्तराधिकारी राजा का नाम ।

उ०—सुत विकुख सकूनिज सुत स्वाद, पुत्र ज ककुस्थ प्रति हित प्रमाद । जै सुत प्रनन प्रथु पुत्र जास, राजै प्रथु नदन बिस्टरास ।

—सू. प्र,

बिस्टाकारी—देखो 'बिस्टकारी' (रू. भे)

उ०—ताहरा गोगादेजी बोलिया—जे कोई सुणतौ हुवै तौ सांभळज्यो, गोगादे कहै छै, राठोडै अर जोईयै वैर बराबर हुवौ छै । जे कोई जीवतौ हुवै तौ महेवै जायनै कहज्यो । राव राणगदै बिस्टाकारी दोनी छै । ज्यो वैर भाटिया कना लेज्यौ । —नैणसी

बिस्टाळ, बिस्टाळु, बिस्टालु, बिस्टाळू, बिस्टालू, बिस्टाळौ, बिस्टालौ—वि. [स. विष+टालनम्] बीच बचाव करने वाला, मध्यस्थता करने वाला ।

स. पु.—१ कलह या झगडे की अवस्था मे शान्ति कराने वाला मध्यस्थ व्यक्ति ।

२ सुलह कराने की क्रिया, मध्यस्थता ।

३ समझौता ।

उ०—सहर रे दरवाजै चिठी बाधी—नव चोर मारथा तिण रा इग्यारा गुणा निनाणवे मनुस्य मारधा पछै बिस्टाळौ कर सू ।

—भि. द्र.

रू. भे—बसीटाळू, बसीटाळौ, बिसटाळू, बिसटाळौ, वसीटाळू, वसीटाळौ, विसटाळौ ।

बिस्टि—स. पु. [स. विष्टि] १ धर्म सावर्णि मन्वन्तर का एक ऋषि ।

स. स्त्री. [स. विष्टि] २ विष्टिभद्रा नामक ज्योतिष के ग्यारह करणो मे से सातवा करण । ३ नरकगामी जीव का नरकवास ।

३ विवस्वन् एवं छाया की एक भयकर कुरूपा कन्या जिसका विवाह त्वष्ट पुत्र विश्वरूप राक्षस से हुआ था ।

बिस्टिकार—देखो 'बिस्टकार' (रू. भे.)

बिस्टिकारी—देखो 'बिस्टकारी' (रू. भे)

बिस्टिव्रत—स पु [स विष्टिव्रत] एक प्रकार का व्रत विशेष जिसमे मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्थी को इसका संकल्प कर विद्वान ब्राह्मण का पूजन करे तथा लोह, पाषाण या काष्ठ की मुद्रा बनवा कर अष्टदल प्रासन पर प्रतिष्ठित कर पूजन करे । इस व्रत को इन्द्र ने वृत्रासुर मारने हेतु, शिव ने त्रिपुरासुर का वध करने हेतु विष्णु ने पांचजन्य शखार्थ एव वरुण ने विमानार्थ किया था ।

बिस्टौ—सं पु [स. विष्ठा] पाखाना, मैला, मल, टट्टी, गू । (ग्रमरत)

उ०—१ पग ऊचा माथो तलै जीवा, प्रालो ऊपर हाथ । जाल जंजाल बिस्टा मध्यै जीवा तू वसियो कहीं जगनाथ । —जयवाणी

उ०—२ बिस्टा नै वलीमातरो ए, नाक तणो मल खेल । वाय पित्त सलेममाए, सुक लोही राध चेल । —जयवाणी

रू. भे—बिसटौ, बिस्टौ भिसटौ, भिसठौ, भिस्टौ, भिस्ठौ, विसटौ, विसठौ, विस्ठौ ।

बिस्टाघर—स. पु [सं. विष्ठा+गृह] पाखाना, टारत, शौचालय ।

उ०—सुणी न्रप स्नान करि तू नीसरधउ, देहरा भणी सुपवित्तौ

जी। बिस्ठाघर माहि बइठउ आदमी, तेडइ तुं आवि तुरंतो जी।
—स. कु.

बिस्ठामुक, बिस्ठामुख—सं. पु. [सं. बिस्ठामुख] सूअर।

बिस्ठौ—देखो 'बिस्टी' (रू. भे.)

बिस्ण—देखो 'बिस्णु' (रू. भे.)

उ०—१ ब्रह्मा बिस्ण महेस, सेस मानै फुरमांण।
—केसोदास गाडण

उ०—बिस्णु नांम कुळ बिस्ण, बिस्णु सुत मित्र अपस बद। कच अहिमुख ससि लंक, स्यघ कुच कोक नाळ छिद। —र. ज. प्र.

बिस्नतर—सं. पु.—सुदर्शन चक्र। (नां. मा.)

बिस्णु—सं. पु. [सं. विष्णु] १ सृष्टि का भरण-पोषण व पालन करने वाले देवता, जो हिन्दुओं के प्रधान देवता माने जाते हैं, ईश्वर, परब्रह्म।

वि. वि.—इन्हीं की नाभि से कमल द्वारा ब्रह्मा की उत्पत्ति मानी जाती है।

उ०—१ ब्रह्मा बिस्णु नहीं सिव सक्ती, नहीं गुरु नहिं चेला। नारी पुरुस एक नहीं होता, हरि तौ आपोई आप अकेला।
—श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ बिस्णु नांम कुळ बिस्ण, बिस्णु सुत मित्र अपस बद। कच अहिमुख ससि लक, स्यघ कुच कोक नाळ छिद।—र. ज. प्र.

उ०—३ देवी नाभ रै कमळ ब्रह्मा निपाया, देवी ब्रह्म रै रूप मधु-कीट जाया। देवी रूप मधुकीट ब्रह्मा डरायं, देवी ब्रह्म रै रूप बिस्णु जगायं। —देवि.

उ०—४ पगि तणि हूंतो चोटलइ, चौद लोक नु वास। ब्रह्मा बिस्णु महेस पणि, पंजरि प्रेणि प्रकास। —मा. कां. प्र.

२ अग्निदेवता।

३ बारह आदित्यों में से पहले आदित्य का नाम।

४ विष्णुस्मृति की रचना करने वाले प्राचीन ऋषि।

५ श्रीकृष्ण का नामान्तर।

६ चौसठ भैरवों में से एक भैरव का नाम।

७ श्वेत वर्ण।* (डिं को.)

८ कृष्ण वर्ण।* (डिं. को.)

९ कार्तिक मास में अश्वतर नाग, रंभा अप्सरा, गंधर्व एव यक्षो के साथ घूमने वाला सूर्य।

१० भृगु वंश में उत्पन्न एक गोत्रकार।

११ महाभारत युद्ध में पाण्डव पक्ष का एक राजा, जो कर्ण के द्वारा मारा गया था।

१२ सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम।

१३ भौत्य मनु के पुत्र का नाम।

१४ धर्मसावर्णि मन्वन्तर के सप्तऋषियों में से एक।

१५ अठारह पुराणों में से एक पुराण।

रू. भे.—बिसंन, बिसन्न, बिसन, बिसनु, बिसन्न, बिस्णु, बिस्नु, बिस्नुक, बीसन, वसन, विस्णु, विसन, बिसण, विसणु, विसन, विसनर, विसनु, विसनौ, विसन्न, विसन्न्, विस्ण, विस्णु, बिस्न, वीसणु, वीसन, वीसनु।

बिस्णुकांची—सं. पु. [सं. विष्णुकांची] दक्षिण में श्रीशंकराचार्य द्वारा स्थापित एक तीर्थ का नाम।

बिस्णुकांता—सं. स्त्री. [सं] एक जड़ी विशेष, जो औषध में काम आती है। (अमरत)

बिस्णुक्रम—सं. पु. [सं. विष्णुक्रम] विष्णु भगवान् का पाद या पग।

बिस्णुक्रांत—सं. स्त्री. [सं. विष्णुक्रांत] संगीत में एक प्रकार का ताल विशेष।

बिस्णुक्रांता—[विष्णुकान्ता] नील अपराजिता।

बिस्णुक्रांति—[सं. विष्णुक्रान्ता] श्वेत कोयल नाम की एक लता विशेष। (अमरत)

बिस्णुगंग, बिस्णुगंगा—सं. स्त्री. [सं. विष्णुगंगा] एक प्राचीन नदी।

बिस्णुगुपत, बिस्णुगुप्त—सं. पु [सं. विष्णुगुप्त] कौटिल्य के नाम से प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का असली नाम। (ऐतिहासिक)

बिस्णुचकर, बिस्णुचक्र—सं. पु. [सं. विष्णुचक्र] सदैव भगवान् विष्णु के हाथ में रहने वाला सुदर्शन चक्र।

बिस्णुज्वर—सं पु. [सं. विष्णुज्वर] शत्रुओं का नाशक एक ज्वर जिसके अधीश विष्णु है।

बिस्णुतरपण—सं पु. [सं. विष्णुतर्पण] किसी बालक के मर जाने पर उसके तीसरे दिन दूध, जल, तिल आदि से की जाने वाली तर्पण विधि। (मा. म)

बिस्णुतिथ, बिस्णुतिथि—सं. स्त्री. [सं. विष्णुतिथि] एकादशी और द्वादशी दोनो तिथियो का नामान्तर।

बिस्णुतैल—सं. पु [सं. विष्णुतैल] समस्त वात रोगों को मिटाने वाला तैल विशेष। (वैद्यक)

बिस्णुदास—सं पु. [सं विष्णुदास] श्रीविष्णु का एक अनन्य भक्त।

बिस्णुदैवत, बिस्णुदैवत्या—सं. पु [सं. विष्णुदैवत्या] १ योगतंत्र में २७ नक्षत्रों में से श्रवण नामक नक्षत्र विशेष, जिसके स्वामी विष्णु माने जाते हैं।

२ चान्द्रमास के दोनो पक्षो की एकादशी व द्वादशी तिथियां।

बिस्णुद्वीप—सं. पु [सं. विष्णुद्वीप] एक द्वीप विशेष। (पुराण)

बिस्णुधरमा–स. पु. [सं. विष्णुधर्मा] गरुड़ की प्रमुख संतान।

बिस्णुधरमोत्तर–स. पु. [स. विष्णुधर्मोत्तर] विष्णुपुराण का उपपुराण या एक अंश।

बिस्णुधारा–सं. स्त्री. [सं. विष्णुधारा] १ एक प्राचीन तीर्थ का नाम।
२ एक नदी का नाम। (पुराण)

बिस्णुपंजर–स पु [स. विष्णुपंजर] १ विष्णु का एक कवच विशेष, जिसके धारण करने से सब भय दूर हो जाते हैं। (पुराण)
२ एक मंत्र जो शिव द्वारा देवी को बताया गया था।
रू. भे.—बिस्णपंजर।

बिस्णुपथ–स. पु. [सं. विष्णुपथ] १ आकाश, व्योम।
रू. भे.—बिसनपथ, बिसनपथ, बिसनपथ।

बिस्णुपद–सं. पु. [स. विष्णुपद] १ आकाश, व्योम।
२ स्वर्ग, वैकुण्ठ।
३ क्षीरसागर।
४ कमल।
५ विष्णु के पैर।
६ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमे १६ व १० पर यति और अन्त मे गुरु होता है।
७ एक तीर्थ का नाम, जो विपाशा नदी के तट पर स्थित है।
रू भे.—बिसनपद बिसनपद, बिसनपद।

बिस्णुपदी–स स्त्री. [स. विष्णुपदी] १ भगवान् श्रीविष्णु के पैर के नाखून में से निकली हुई गंगा, श्रीभागीरथी गंगा।
२ द्वारिकापुरी।
३ वृष, वृश्चिक, कुंभ व सिंह आदि की संक्रांति।

बिस्णुपुरांण—देखो 'बिस्णु' (१५)।

बिस्णुपुरी—देखो 'बिस्णपुरी' (अल्पा., रू. भे.)

बिस्णपुरी–स. पु. [स. विष्णु+पुर] स्वर्ग लोक, वैकुण्ठ।
रू. भे.—बिसनपरी, बिसनपुर, बिसनपुरी, बिसुनपुर, बिसुनपुरी।
अल्पा., —बिसनपरी, बिसनपुरी, बिसुनपुरी, बिस्णपुरी।

बिस्णुप्रयाग–स पु. [स. विष्णुप्रयाग] एक तीर्थ स्थान, जो पाण्डुकेश्वर के निकट है। इसके निकट ही विष्णुगंगा अलकनंदा मे मिलती है, इसके पास ही हाथी पर्वत है।

बिस्णुप्रिया–स. स्त्री [स. विष्णुप्रिया] १ भगवान् श्री बिष्णु की पत्नी, लक्ष्मी।
२ तुलसी का पोधा।
रू. भे.—बिसनप्रिया।

बिस्णुप्रीति–स. स्त्री. [स. विष्णुप्रीति] भगवान श्रीविष्णु की सेवा पूजा करने के लिए किसी पूजा करने वाले व्यक्ति को बिना लगान दी गई भूमि।

बिस्णुमती–स. स्त्री. [स. विष्णुमती] शतानीक की पत्नी।

बिस्णुयसा–स. पु. [स. विष्णुयशा] ब्रह्मयशा का पुत्र और कल्कि अवतार का पिता, जो सुमति का पति था। (पुराण)

बिस्णरथ–स. पु [स. विष्णुरथ] विष्णु का वाहन, गरुड़।

बिस्णुरात–स. पु [स. विष्णुरात] अर्जुन-सुभद्रात्मज अभिमन्यु व उत्तरा का पुत्र महाराज परीक्षित जिसकी हत्या अश्वथामा द्वारा गर्भ मे ही कर दी गई थी मगर श्रीकृष्ण ने पुनर्जिवित किया था।

बिस्णुलोक–स. पु. [स. विष्णुलोक] विष्णु का निवास स्थान, स्वर्ग वैकुण्ठ।

बिस्णुवल्लभा–स. स्त्री. [स. विष्णुवल्लभा] १ तुलसी का पौधा।
२ लक्ष्मी।

बिस्णुवाहन–स. पु. [स. विष्णुवाहन] गरुड़।

बिष्णुवाहण–स पु [स विष्णुवाहन] गरुड़।

बिस्णुबिवाह–स. पु [स. विष्णुविवाह] एक प्रकार का वैधव्यहर, जिसमे कन्या का विवाह पहले विष्णु से कर देते हैं।

बिष्णुव्रत–स. पु. [स. विष्णुव्रत] पौष शुक्ला द्वितीया से चार दिन तक रखा जाने वाला विष्णु का व्रत विशेष।

बिस्णुसकति, बिस्णुसक्ति, बिस्णुसगति–सं. स्त्री. [सं. विष्णुशक्ति] लक्ष्मी।

बिस्णुसप्तमी–स स्त्री. [सं. विष्णुसप्तमी] मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को की जाने वाली विष्णु की पूजा जो अभीष्ट सिद्धि हेतु की जाती है।
वि. वि.—इसी मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को ही त्रियसप्तमी और विष्णु सप्तमी भी मनायी जाती है।

बिस्णुसरमन–सं. पु. [स विष्णुशर्मन] इन्द्र को भी शरण देने वाला एक राजा, जो शिवशर्मन राजा का पुत्र था।

बिस्णुसावरणि–स. पु. [स. विष्णुसावर्णि] भौत्य मनु का नाम।

बिस्णुसिद्धि–स. पु. [सं. विष्णुसिद्धि] अंगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

बिस्णुहरि–सं पु. [सं. विष्णुहरि] विष्णु के एक अनन्य भक्त का नाम।

बिस्णुतिल, बिस्णुसिला–स. स्त्री. [सं. विष्णुशिला] शालि-ग्राम।

बिस्णुस्रंखळ, बिस्णुस्रंखळा–सं. स्त्री. [स. विष्णुश्रृंखला] श्रवण नक्षत्र मे आने वाली द्वादशी।

बिस्णुस्म्रति–स. स्त्री. [स. विष्णुस्मृति] एक धर्मशास्त्र, स्मृति विशेष।

बिस्णुस्वांमी-सं पु. [सं विष्णुस्वांमी] १ वैष्णव सम्प्रदाय या रामावत साधुओं की एक शाखा। (मा. म.)

बिस्णू—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—कलव्वसी बिस्णू कमळभव जिस्णू स्तुति करै, हिमासु उम्णासू पदम-पद पांमू सिग्धरं। हुगामा हमेसां बजत त्रिदवेसां नववती, भ्रई हूव भ्रवा जयति जगदंबा भगवती। —मे म.

बिस्तर—१ देखो 'बिस्तर' (रू. भे.)

२ देखो 'बिस्तार' (रू. भे.)

उ०—१ नव वाड़ि सेती सील पालउ, पांमउ जिम भव पार रे। भगवत बिस्तर पणइ भाख्यउ, उत्तराध्ययन मझार रे। —स. कु.

उ० -२ उत्तराध्ययन अध्ययन अठारमै, सूत्र टीका सुविचार। रिखमडल वलि प्रकरण थी, रच्यौ ए बिस्तर अधिकार।

—ध व. ग्रं.

उ०—३ सूत्र वाची नइ सगलुं समझज्यो, तिहां बिस्तर संबधोजी। केमी प्रदेशी राजा तणउ, समयसुंदर कहइ प्रबधो जी। —स. कु.

बिस्तरण-वि.—विस्तार करने वाला, फैलाने वाला।

उ०—नमौ वेद बिस्तरण नमौ निसचर बोह नामण। नमौ सेससायत, नमौ हूब कब्ब हुतासण। —ह र.

बिस्तरणौ, बिस्तरबौ-क्रि अ.—१ उच्चरित होना, ध्वनित होना, गूजना।

उ०—राज भवनि बैतालिक पढइ, विलोणा तणा झरडका उपजइ, पथिक मारगि थया। ब्राह्मण तणै घरि वेद ध्वनि बिस्तरी, धार्मिक लोक प्रतिक्रमण पर हूया। —रा सा स.

२ विस्तार पाना, व्याप्त होना, फैलना।

उ०—१ सुर प्रगट मिटि अटकाव सरिता ब्याह मगळ बिस्तरै। सोचति पुर बाजार सोभा, मोब सुदर मदिरै। —रा रू.

उ०—२ मीठापणा जाणिया मीठो, कमधज धिनो तुहारा क्रत। बोका'हरा बाण बिस्तरियौ, अत भवणै माही इम्रत। —द. दा

३ प्रफुल्लित होना, आनन्दित होना।

४ बिखरना, छितरना, फैलना।

उ०—माग माही मोती सू भरिया छै जाणै आकास रै माण तारा बिस्तरिया छै। सरवणा री ओर ओपमा न बणती। सीप मानू स्वाति बूंद भेली छै। जको मोती जणसी। —पना

५ हरा भरा होना, लहलहाना।

६ गमन करना, जाना।

उ०—वइरागी थिउ बिस्तरइ रामा सूयि राग। कातर काटै काकरि, पुलतू प्रगूहाणि पाग। —मा. कां. प्र.

७ तितर-बितर होना, फैलना।

उ०—बेताल किलकिलइ, दावांनळ प्रज्वळइ। रीछ सांचरइ, बीहलणा यूथ बिस्तरइ। बेडी रा साद भ्राहूकइ, ठामि ठामि वन रा भइसा हूकइ। —सभा

बिस्तरणहार, हारो (हारी), बिस्तरणियौ—वि०।

बिस्तरिओड़ो, बिस्तरियोड़ो, बिस्तर्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिस्तरीजणौ, बिस्तरीजबौ—भाव वा०।

बिस्परणौ, बिस्परबौ, बिथरणौ, बिथरबौ, बिथुरणौ, बिथुरबौ, बिसतरणौ, बिसतरबौ, बिस्तरणौ, बिस्तरबौ, बीथरणौ, बीथरबौ, विसरणौ, वितरबौ, विथरणौ, विथरबौ, विथुरणौ, विथुरबौ, विसतरणौ, विसतरबौ, विससतरणौ, विससतरबौ, बिसथरणौ, बिसथरबौ —रू० भे०।

बिस्तरता—स स्त्री. [स] बहुत या अधिक होने की अवस्था या भाव।

बिस्तरबंद—देखो 'बिस्तरबद' (रू. भे)

बिस्तरियोड़ो—भू का. कृ.—१ उच्चरित हुवा हुआ, ध्वनित हुवा हुआ, गूंजा हुआ. २ विस्तार पाया हुआ, व्याप्त हुवा हुआ, फैला हुआ. ३ प्रफुल्लित हुवा हुआ, आनन्दित हुवा हुआ. ४ बिखरा हुआ, छितरा हुआ. ५ गमन किया हुआ, गया हुआ. ५ हरा भरा हुवा हुआ लहलहाया हुआ।

(स्त्री. बिस्तरियोडी)

बिस्तरियौ—देखो 'बिस्तर' (अल्पा., रू. भे.)

बिस्तार-स. पु [स.] १ प्रसार, फैलाव।

उ०—सिव सक्ती का सब बिस्तारा, ब्रह्मा कीट लग कर रे। इनमें ई उत्पति थिति अरु लयता, निज स्वरूप निरपख रे।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ अकास लील नगर गधरव का, इद्रजाळ आकार। जाग्रत भ्रबकार्यू जोय र जोगुण, मन कल्पित बिस्तारा।

—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—३ वधवाणी तू ऐक ब्रम. ओऊंकार अपार। किमि करि कीधो काळिका, विसव तणो बिस्तार। —पी. ग्रं

उ०—४ केतेक दिन तपस्या करि आराम लगाया। तिस काकरिख कै नाम काणा कहाया। तिस बगीचू कै दरम्यान वरणं जेतं फळ फूलू का बिस्तार। सब्बू कै मिर पोस आनाकं का अधिकार।

—सू. प्र.

उ०—५ मैला मिनख बचन रै मार्थ, बात बणाय करै बिस्तार। बैठ सभा बिच मूंडा बारै, बचन काढणो बहुत बिचार।

—बा. दा.

२ वृक्ष की शाखाएं।

३ अधिकता, बाहुल्यता।

उ०—तठै केसरियै साह ठकुरै साह नूं पूछी कही, "जी साहजी, इतरो थांहरै माया रो बिस्तार हुतो, सु किसी भांति गयो, सु मनै कही। —ठकुरै साह री वात

४ वृतान्त, विवरण।

उ०—१ तिण समय दिली पातिसाह ग्रौरंगसाह राज करै छै। तिण रै पुत्र सलेमसाह साहिजादो बडो ग्रदली हुयो। तिण समै जोधपुर राव मालदे राज करै छै। बिस्तार ग्रागै लिखीजसी।

—द. वि.

उ०—२ तिण अनुसारै मंडाय कोई सक्षेप हुंतो तिण नै उनमान न्याय जाण नै वधारयो। बिस्तार जांण नै सकोच्यो। तिण मे कोई विरुद्ध आयो हुवै। —भि. द्र.

उ०—३ स्वांमीजी फेर कह्यो ग्राप करा। पछै चंद्रभाण तिलोकचंद दोनूं जणा मान ग्रहंकार रै बस टोला बारै निकल्या। तै सहु बिस्तार तो स्वामीजी कृत रास थी जाणवो। —भि. द्र.

उ०—४ पाच पाच सौ दीधा दान, सोनौ रूपौ ग्रहण सथात। राछ पीछ बडारण गाय, बिस्तार सूत्र भगवती माय।

—जयवाणी

रू. भे.—विथार, बिसतार, बिस्तर, बिस्तार, विस्थर, विस्थार, विथार, विसतर, विसतार, विसतारो, विसथार, बिसार, विस्तर, विस्तारि, वैसार।

बिस्तारक-वि.—विस्तार करने वाला।

रू. भे.—विसतारक।

बिस्तारण-स. स्त्री.—विस्तार या प्रसार करने की क्रिया या भाव।

रू. भे.—विसतारण।

बिस्तारणौ, बिस्तारबौ-क्रि. स —विस्तार करना, फैलाना।

उ०—१ जब परीसदा वादण नीकली, सुण ग्रायो 'सुबाहु' कुमारो रे। बांदै बैठो छै मुग मागलै, वीर वाणी कही बिस्तारो रे।

—जयवाणी

उ०—२ साधवा मुक्तिका वास बदा सहु, भिक्खम स्वाम सिद्धंत है भारी। स्वामी पर भाव के साधन साच है, बांचै है सूत्रकला विस्तारी। —भि. द्र.

उ०—३ ···एकि चंद्र सूरयनी प्रभा ग्रापणी कांती करी पराभवइ एकि स्त्री पुरुष योग्य दिव्योपभोग्य ग्राभरण विस्तारइं एक चक्रवरत्तिनी रसोई पाहिइ ग्रनंत गुण सुस्वाद ग्रठोत्तरसउ खाद्य ··। —व. स.

२ बिखेरना, छितराना।

३ ध्वनित करना, उच्चरित करना।

४ बढ़ोतरी करना, बढाना।

५ हिलाना-डुलाना।

६ प्रचार करना।

उ०—धरमकथा ग्रनुयोगमेजी, धरमकथा द्रस्टांत। ए चारों बिस्तारिया जी, पैंतालिस सिद्धांत। —वृस्त

बिस्तारणहार, हारो, (हारी), बिस्तारियो—वि०।

बिस्तारिग्रोड़ो, बिस्तारियोड़ो, बिस्तारयोड़ो—भू० का० कृ०।

बिस्तारीजणो, बिस्तारीजबो—कर्म वा०।

बिथारणौ, बिथारबौ, बिसतारणौ, बिसतारबौ, बिस्तारणौ, बिस्तारबौ, बिस्थारणौ, बिस्थारबौ, बिथराणौ, बिथराबौ, बिथारणौ, बिथारबौ, बिसतारणौ, बिसतारबौ, बिसथारणौ, बिसथारबौ—रू० भे०।

बिस्तारि—देखो 'विस्तार' (रू. भे)

उ०—चऊद राज ऊपरि बिस्तारि, सिद्धसिला छइ छत्राकारि। ग्रनेक सुख छइ सिद्ध विलसत, सुखह तणउ तै पार न लहंति।

—वस्तिग

बिस्तारियोड़ो-भू. का. कृ —१ विस्तार किया हुवा, प्रसार किया हुग्रा, फैलाया हुग्रा. २ बिखेरा हुग्रा, छितराया हुग्रा. ३ ध्वनित किया हुग्रा, उच्चरित किया हुग्रा। ४ बढोतरी किया हुग्रा, बढाया हुग्रा. ५ हिलाया-डुलाया हुग्रा. ६ प्रचार किया हुग्रा। (स्त्री. बिस्तारियोड़ी)

बिस्तारी-वि: [स. विस्तारिन्] जिसका बिस्तार ग्रधिक हो।

बिस्तीरण-वि. विस्तीर्ण] १ विस्तृत, फैला हुग्रा।

२ बहुत लम्बा-चौडा।

रू. भे.—बिस्थीरण।

बिस्त्रत, बिस्त्रित-वि. [स. विस्तृत] १ फैला हुग्रा, विस्तरित, व्याप्त।

२ लम्बा-चौडा।

३ विपुल, परिव्याप्त।

४ जिसका विवरण यथेष्ट हो।

बिस्न—१ देखो 'विसणु' (रू. भे.)

उ०—१ दुख सुख गोटा ऊछळै, माया मद पीया। ब्रह्मा बिस्न महेम लौं, बाजी वमि कीया। —ह. पु. वा.

उ०—२ गवरीय नंदन वीनव जी, स्रीहरि सुरतइं ग्रांणि। बिस्न तणो वीवाहिलो जी, रिधि सिधि प्रसिध प्रमांण।

—रुकमणी मंगळ

उ०—३ रिधि सिधि प्रसिध प्रमांण करी नइं, बिस्न तणौं वीवाह। सुंडा डबर करि घर फरसी, लीला लोचन चाह।—रुकमणी मंगळ

२ देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

बिस्नी—देखो 'व्यसनी' (रू. भे.)

बिस्पला-सं. स्त्री. [सं. विश्पला] एक बहुत ही वीर स्त्री जो खेल नामक राजा की पत्नी थी।

वि. वि.—कहते हैं कि युद्ध में इसके एक पैर के टूटने पर अश्विनो ने इसे लोहे का पैर प्रदान कर युद्ध करने योग्य बनाया था।

बिस्फार-सं. पु. [सं] १ धनुष की टंकार।

२ धनुष की डोरी।

३ कम्पन, सिसकन।

बिस्फारित-वि [सं.] १ टंकारा हुआ, खेंचा हुआ।

२ कम्पायमान किया हुआ, थरथराता हुआ।

बिस्फुरणौ, बिस्फुरबौ-क्रि. अ.—१ कांपना, कम्पित होना।

२ डरना, भयभीत होना।

३ हिलना-डुलना।

बिस्फुरणहार, हारौ (हारी), बिस्फुरणियौ—वि०।

बिस्फुरिओड़ौ, बिस्फुरियोड़ौ, बिस्फुरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिस्फुरीजणौ, बिस्फुरीजबौ—भाव वा०।

बिस्फुराणौ, बिस्फुराबौ-क्रि. स.—१ कम्पित करना, कम्पाना।

२ भयभीत करना, डराना, हिलाना-डुलाना।

बिस्फुराणहार, हारौ, (हारी), बिस्फुराणियौ—वि०।

बिस्फुरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिस्फुराईजणौ, बिस्फुराईजबौ—कर्म वा०।

बिस्फुरायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ कम्पित किया हुआ. २ भयभीत किया हुआ, डराया हुआ. ३ हिलाया-डुलाया हुआ। (स्त्री बिस्फुरायोड़ी)

बिस्फुरियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ कांपा हुआ, कम्पित हुवा हुआ. २ हिला-डुला हुआ. ३ डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ।

(स्त्री. बिस्फुरियोड़ी)

बिस्फोट-स. पु [सं] १ भूमि के अन्दर की भरी हुई आग, गर्मी आदि के फूट कर बाहर निकलने की क्रिया।

२ उक्त क्रिया के परिणामस्वरूप होने वाला शब्द।

३ एकत्र गैस, बारूद आदि के अग्नि या ताप के कारण बाहर निकलने की क्रिया।

४ उक्त क्रिया के कारण उत्पन्न शब्द।

क्रि. प्र.—करणौ, होणौ।

५ जहरीला या खराब फोड़ा।

६ एक प्रकार का कोढ नामक रोग। (अमरत)

बिस्फोटक-स. पु [सं.] १ गर्मी या आघात से भभकने वाला पदार्थ।

२ जहरीला फोड़ा।

३ शीतला रोग, चेचक।

४ छत्तीस प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों में से एक।

उ०······मुरवि अर्द्धमुरवि परसु पास पट्टिस दूस लांगूल मुसल मुसंढि मुग्दर लगुड गदा दंड भिंडपाल गांजीव बिस्फोटक वज्र तरवारि प्रमुख ३६ छट छटत्रिस दडा युधानि। —ब. स.

रू. भे.—बिसफोटक, बिस्फोटक, बिसफोटक।

बिस्फोटणौ, बिस्फोटबौ-क्रि अ.—१ भूमि के अन्दर की आग, गर्मी आदि का फूट कर बाहर निकलना।

२ एकत्र गैस, बारूद आदि का अग्नि या ताप के कारण बाहर निकलना।

३ जहरीला फोड़ा होना।

क्रि. स.—४ एकत्र गैस, बारूद आदि को अग्नि, ताप या आघात आदि से बाहर निकालना।

बिस्फोटणहार, हारौ (हारी), बिस्फोटणियौ—वि०।

बिस्फोटिओड़ौ, बिस्फोटियोड़ौ, बिस्फोट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिस्फोटीजणौ, बिस्फोटीजबौ—भाव, कर्म वा०।

बिस्फोटता-स. स्त्री - अंग को आलस्य आदि के कारण मोडने की क्रिया।

उ०—समस्त सेना दिसि द्रस्टि करि देख्यौ। पाछै क्यों थोडो सो हस्या। पछै क्यौं थोडो सो आळस कीयौ। अग बिस्फोटता कीयौ। जभाई आई पाछै क्यो थोड़ा-थोड़ा चाल्या गति दिखाई। पाछै क्यो एक संकुच्या। ए पाचो बाण सेनां नै लागा। —वेलि टी.

बिस्फोटियोड़ौ-भू.का.कृ.—१ भूमि के अन्दर की आग का, गर्मी आदि के कारण फूटकर बाहर निकला हुआ। २ एकत्र गैस बारूद आदि का अग्नि या ताप के कारण बाहर निकला हुआ. ३ जहरीला, फोड़ा हुवा हुआ। ४ एकत्र गैस बारूद आदि को अग्नि या आघात आदि से बाहर निकाला हुआ।

(स्त्री. बिस्फोटियोड़ी)

बिस्मय-स. पु. [सं.] १ आश्चर्य, ताज्जुब।

उ०—१ तद बखतसिंह जी बिस्मय में पड अबोला सा रहिया।

—मारवाड रा अमरावां री वारता

उ०—२ बादल लै आदेस गोरा रावत तणौ, सुभट मिल्या तिहां जाय साहस मन में घणौ। देखि सभा सगली मनमइं बिस्मय थई आवइ नहि दरबार कदै क्यों आवई। —प. च. चौ.

२ अद्भुत रस का स्थायी भाव। (साहित्य)

३ अभिमान, अहंकार, गर्व।

रू. भे.—बिसमउ, बिसमय, बिसमै, बिस्म्य, बिसमय, बिसमै, बिसमौ, बिसम्य बिस्मि, बिस्मिय।

बिस्मयकारी-वि. [स. विस्मयकारिन्] आश्चर्यान्वित करने वाला, ताज्जुब मे डालने वाला।

उ०—हे सकळगुणी सिरमोर! माया रा चित्र बडा विचित्र, बिस्मयकारी, बहुगुण भरिया हुवा जाणौ। बाहरी ससार माही

जिसा नदी परबत बन घर नगर दीसै है जिका सगळा ही था प्रतरजगत काया मांही जाणौ। —सिंघासण बत्तीसी

बिस्मरण—सं. पु. [सं.] भूल जाने या याद न रहने की अवस्था या भाव

रू. भे.—बिसमरण, बिस्मरण, बिसमरण, बिसमरमण।

बिस्मरणी—वि —भूलने वाला, जिसे याद न रहता हो।

बिस्मरणौ, बिस्मरबौ—क्रि. म.—भूल जाना, याद न रहना।

बिस्मरणहार, हारौ, (हारी), बिस्मरणियौ—वि०।

बिस्मरिग्रोड़ौ, बिस्मरियोड़ौ, बिस्मरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिस्मरीजणौ, बिस्मरीजबौ—भाव वा०।

बिसमरणौ, बिसमरबौ, बिस्मरणौ, बिस्मरबौ, विसमरणौ, बिसमरबौ—रू० भे०।

बिस्मरियोड़ौ—भू. का. कृ.—भूला हुआ, याद न रहा हुआ।

(स्त्री बिस्मरियोडी)

बिस्मल्ला, बिस्मल्लाह—देखो 'बिस्मिल्लाह' (रू. भे.)

बिस्मारक—वि. [सं.] भूला देने वाला, विस्मरण करा देने वाला।

बिस्मि—देखो 'विस्मय' (रू भे)

उ०—गिणना राइ 'दस' कस्यूं, तव दंसु भूपति भाग। कह्रूप भ्रनि राजा थयु बिस्मि तै जोई लाग। —नळाख्यांन

बिस्मित—वि. [सं.]—आश्चर्ययुक्त, आश्चर्यान्वित, चकित।

उ०—तौ राणी बिस्मित होय नापै नू बुलायौ, एकांत मे ले जाय कह्यौ जै राठोड़ मंडोवर कद भ्राया। —नापै साखलै री वारता

रू. भे—बिसमत, बिसमित, विसमत, विसमित, विसमै।

बिस्मिता—स. पु—एक प्रकार का वर्णिक छद विशेष जिसमे यगण, मगण, नगण, सगण, दो रगण एव ग्रन्त मे गुरु होता है। तथा छ: छ: तथा सात पर यति होती है।

बिस्मिय—देखो विस्मय' (रू. भे.)

उ०—दीठु जाणे प्रत्यक्ष काम, मानो देव, को करि प्रणाम। बिस्मिय पामी गजगामिनी, सघली रूप जोई कामिनी।—नळाख्यान

बिस्मिल—देखो 'बिस्मिल' (रू भे.)

बिस्मिल्ला, बिस्मिल्लाह—देखो 'बिस्मिल्लाह' (रू. भे.)

बिस्रंखल, बिस्रंखला—वि. [सं. विशृंखल] १ जिसमे शृंखला नही हो, शृखलारहित।

२ जो किसी प्रकार दबाया या रोका न जा सके।

३ दुराचारी, लपट।

बिस्रंभ—स पु. [सं. विश्रम्भ] १ दृढ विश्वास।

२ प्यार, प्रेम, मुहब्बत।

३ विश्राम।

४ मैथुन के समय होने वाला प्रेमी-प्रेमिका का झगड़ा।

बिस्रंभी—वि. [स. विश्रम्भी] १ विश्वास करने वाला।

२ प्रेम या मुहब्बत सम्बन्धी।

बिस्र—स. पु.—खून, रक्त। (डि. को)

रू. भे.—बिस्र।

बिस्रब्ध—वि [सं. विश्रब्ध] १ जिसका विश्वास किया जाय।

२ जो विश्वास करे।

३ निर्भय, निडर।

४ जो उद्धत न हो, सुशील।

बिस्रव, बिस्रवा—सं. पु. [स. विश्रवस्] १ पुलस्त्य ऋषि एवं हविर्भू के पुत्र और कुबेर, रावण आदि के पिता का नाम।

वि. वि.—इसके करीब नौ पत्निया थी। इसकी इड़विड़ा नामक पत्नी से कुबेर, दूसरी पत्नी केकसी के गर्भ से रावण कुम्भकरण, विभीषण, नामक तीन पुत्र एव शुर्पणखां नामक एक कन्या, तीसरी पत्नी राका के दूषण आदि तीन पुत्र एवं चौथी पत्नी पुष्पोत्करा से खर आदि चार पुत्रों का जन्म हुआ था।

२ लकापति रावण।

उ०—संख वडौ तु सख, सख आयुध सवाहे। गदा पदम चक्र ग्यान, बिस्रव ऊपरि लै वाहे। —पी. ग्रं.

३ पुलस्त्य ऋषि के वशज।

४ तृणबिन्दु का पुत्र एक राजा।

५ ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति।

६ विशाल राजा का पुत्र एक राजा।

[स. विश्रव] ७ आश्रय।

बिस्रांत—वि. [सं. विश्रान्त] १ जिसने आराम किया हो।

२ शान्त, सुशील।

३ पीछे रहा हुआ, रहित।

४ देखो 'बिस्रांति' (रू. भे.)

बिस्रांति—स स्त्री. [स. विश्रान्ति] १ विश्राम, आराम,।

२ अवसान, मौत, मृत्यु।

३ एक तीर्थ का नाम। (पुराण)

रू. भे.—बिसांई, बिसाई, बिसांणी, बिहाणी, बिहांमी, बिसांई, बिसांणी, बिहाणी।

बिस्रांम—देखो 'विसराम' (रू. भे.)

उ०—१ निरद्वद नाथ, श्रासम अनाथ, बहु ग्रस्टीवार, प्रळयान पार। बिस्रांम व्यूढ, गोतीत गूढ, निरगुण निरीह, ग्राधार ईह। —ऊ. का.

उ०—२ तठै आगवी खाग हुं खाग तोड़ं, बंडी काळिका मात रं खोण चीडे। लगावे सबै सेस बिधी लग्गाटां, करं फेर बिस्राम पाखं कपाटां। —मे म.

उ०—३ कनक महल रतनन जटत सबै पुरी कै धांम। कनक कोटी पौरी कनक, बाय तणौ बिस्रांम। —गज उद्धार

उ०—४ एहवा पालखा में राव नं बेसाण हवा खावा निकल्या। साथै मनुख आगे पाछं घणा गांम बारै आया। जब खेत कनै रूंख री छायां बिस्राम लियो। जब करसणी बोल्या—अठं मां बाली रे। मां बालौ। छोहरा छोहरी बोहेला। —भि. द्र.

बिस्रामणौ, बिस्रामबौ—देखो 'बिसरांमणौ, बिसरांमबौ' (रू भे)

उ०—१ जिसडं मोटी राजड़वाळं गयो तिसडं परिया रामसिंघजी पधारिया। प्रोथि प्रारोगण लागा दाढ़ी समराड़ी। बहू बिस्रामी पछं तिण दिन दाढो समराडी। —द. वि.

उ०—२ राजाजी भोपतजी थकां कुंवर दळपतजी नूं उथो करि झालियो हुतो अर भोपतजी बिस्रामियं पछे ज्यूं भोपति नूं कसता तिम दळपतजी नूं कसणी माहे कियो —द वि.

बिस्रामणहार, हारो (हारी) बिस्रामणियौ—वि०।

बिस्रामियोड़ो, बिस्रामियोड़ौ, बिस्राम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बिस्रामीजणौ, बिस्रामीजबौ—भाव वा०।

बिस्रांमियोड़ौ—देखो 'बिसरांमियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिस्रामियोडी)

बिस्रांमी—देखो बिसरांमी' (रू. भे.)

बस्रामु—देखो 'बिसराम' (रू. भे.)

उ०—दव जिम दीठइ कवणए करणइ ए हियु निकांमु। महउ वडऊ दमनको मन किंहि नहीं य बिस्रामु। —जयसेखरसूरि

बिस्राळ, बिस्राल, बिस्राळी, बिस्राली, बिस्राळो, बिस्रालो—देखो 'बिस-राळ' (रू. भे.)

उ०—नारी चीतवइ एहवूं, जु नल हुइ मझ चित्ति। सती प्रभाविइ ए हुज्यो, बिस्राल चाज्यो भत्ति। —नळदवदंती रास

बिस्रुत–स. पु. [सं. विश्रुत] १ वसुदेव एव सहदेवी के पुत्रो मे से एक यादव राजकुमार।

२ अमिताभ देवों में से एक।

३ पारावत देवों में से एक।

४ जनकवंश के देवमीढ के पुत्र और महाधृति के पिता का नाम।

वि.—१ जाना या सुना हुआ।

२ प्रसिद्ध, विख्यात।

३ प्रसन्न, हर्षित।

बिस्रुतवत–सं. पु. [सं. विश्रुतवत] सरस्वत राजा का पुत्र एवं बृहद्बल राजा का पिता एक राजा।

बिस्रुतात्मा–सं. पु. [स. विश्रुतात्मन्] भगवान श्रीविष्णु।

बिस्रुति–स. स्त्री. [सं. विश्रुति] प्रसिद्धि, ख्याति।

बिस्रेय–वि [सं. वि.=विशेष श्रेयस्] १ विशेष श्रेष्ठता वाला, उत्तम, श्रेष्ठ।

[सं. वि.=रहित+श्रेयस्] २ श्रेष्ठता रहित, बुरा, नीच।

उ०—धेय को विधान साधि ध्यांन नां धरयौं, गेय को अग्यांन तें प्रमान नां परयौं। श्रेय श्रो बिश्रेय कथा काजतें करयौं। स्रेय को बिस्रेय साज लाज नां मरयौ। —ऊ. का.

बिस्लथ–वि. [सं. विश्लथ] १ शिथिल. ढीला।

२ सुस्त, थका हुआ।

बिस्लेस–सं. पु. [स. विश्लेष] १ अलग या पृथक होने की क्रिया या भाव।

२ प्रेमियों या पति-पत्नी का बिछोह, वियोग।

३ थकावट सुस्ती।

४ शिथिलता, ढीलापन।

बिस्लेसण–स. पु. [स. विश्लेषण] १ किसी पदार्थ आदि के संयोजक द्रव्यो को अलग-अलग करने की क्रिया।

२ वायु के प्रकोप से फोड़े या घाव मे होने वाली एक प्रकार की वेदना।

बिस्लेसणात्मक–वि. [स. विश्लेषणात्मक] जिसका विश्लेषण किया जा सकता हो।

बिस्लोक–सं. पु. [स विश्लोक] एक मात्रिक छंद विशेष जिसमें १६ मात्राएँ होती हैं और पांचवी व आठवी मात्रा लघु होती है और यही पर यति होती है।

बिस्वंतर–स. पु. [सं. विश्वंतर] भगवान बुद्ध।

बिस्वंभर–सं. पु. [स. विश्वंभर] १ समस्त संसार का पालन-पोषण करने वाले, भगवान विष्णु का नामान्तर।

उ०—नमो अघाहघाव अवन पुट सारु सत नमो, नमो लोकाध्यक्षा अत विजय लक्ष्या पत नमो। नमो विस्वाधारी अतळ अघहारी विभु नमो, नमो भूभूरव स्व प्रवन सुत बिस्वंभर नमो। —ऊ का.

२ देवराज इन्द्र।

३ अग्नि देवता।

४ एक उपनिषद्।

रू. भे.—बिसंभर, बिस्वंभर, वसंभर, विसंभर, विसमर, वीसंभर।

बिस्वंभरा–सं· स्त्री. [स. विश्वंभरा] पृथ्वी, भूमि। (डि. को.)

रू भे.—बिसंभरा, बीसंभरा।

बिस्वभरी-सं. स्त्री. [सं विश्वंभरी] १ पृथ्वी, भूमि।

२ कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (संगीत)

बिस्वंभरेसर, बिस्वंभरेसुर, बिस्वंभरेस्वर-सं. पु [स. विश्वभरेश्वर]

१ हिमालय के एक शिवलिंग का नाम। (पुराण)

२ महादेव, शिव।

३ ईश्वर।

बिस्व-सं. पु. [स. विश्वं] १ चौदह भवनो का समूह, समस्त ब्रह्माड।

२ मयूर नामक असुर का पुत्र एक राजा जो महाभारत युद्ध मे कौरव पक्ष में था।

संसार, जगत।

४ फाल्गुन मास मे सूर्य के साथ भ्रमण करने वाला एक गधर्व।

५ विष्णु का नामान्तर।

६ शिव, महादेव।

[स विश्व:] ७ वसु, सत्य, क्रतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरुरवा और माद्रवा आदि दस देवताओं का एक गण विशेष।

वि. [सं विश्व] १ समस्त, सम्पूर्ण, सार्वजनिक।

२ प्रत्येक, हरेक।

रू. भे.—बिसव, बिसव, बिसू, बिस्व, वसव, विसव, विसव्व, विसव, विसवि।

बिस्वईस—देखो 'बिस्वेस' (रू भे.)

उ०—घणा घणा घाट भांजण घडण, बिस्वईस समळ बयण। ईसरो कहै असरण सरण, नमो नाथ तो नारियण। —ह. र.

बिस्वईसर, बिस्वईसुर, बिस्वईस्वर—देखो 'बिस्वेस्वर' (रू. भे.)

बिस्वकंभ-सं पु. [स. विश्वकंभ] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

बिस्वकरण—देखो 'बिस्वकरमा'

उ०—अचरिज सहु नै ऊपनो रे, वलि चीतइ सूतार। बिस्वकरण नि ओपमा रे, एहिज लहै रे कुमार। —वि. कु.

बिस्वकरमजा-स. स्त्री [स. विश्वकर्मजा] सूर्य की पत्नी सज्ञा का एक नाम।

बिस्वकरमा, बिस्वकरम्मा-सं. पु [स. विश्वकर्मन्] १ विश्व का पालन-पोषण करने वाला ईश्वर, विष्णु।

२ विश्व की सृष्टि करने वाला, ब्रह्मा।

३ शिव, महादेव।

४ सूरज, सूर्य। (ना. मा.)

५ शिल्पशास्त्र के अधिष्ठाता एक देवता।

वि० वि०-ये प्रभास वसु के पुत्र थे पुराण, मतान्तर से इन्हे लावण्यमयी या बृहस्पति की ब्रह्मवादिनी बहिन का पुत्र कहा गया है। सूर्य की पत्नी सज्ञा इनकी पुत्री थी व नल नामक वानर इनका पुत्र था। इन्होने लंका व द्वारका नामक नगरियां बसायी थी। सूर्य के शरीरांश से इसने विष्णु का सुदर्शन चक्र, शिव का त्रिसूल इंद्र का वज्र व विजय नामक धनुष आदि अस्त्र बनाये थे।

६ इमारत के कार्यकर्त्ता, लोहार, बढई आदि।

रू. भे.-बिसुकरमा, बिसकरमा, बिसक्रमा, बिसवक्रमा, बिस्वकरण, बिस्वक्रमा, बिर्स्वकरमा, बिस्वंक्रमा।

बिस्वकसेन-स. पु. [स. विश्वक्सेन] १ भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

२ इद्र सभा का एक ऋषि।

३ नारद का शिष्य एक प्रसिद्ध आचार्य।

४ ईश्वर, परमात्मा।

५ एक अवतार जो ब्रह्मसावर्णि मन्वन्तर मे हुवा था।

६ एक राजा जो ब्रह्मदत्त व गो के ससर्ग से उत्पन्न हुआ था।

७ 'चौदहवें मनु का नामान्तर। (पुराण)

रू. भे —बिसवकसेन।

बिस्वकाय-स. पु. [स. विश्वकाय] भगवान् श्रीविष्णु।

बिस्वकाया-स. स्त्री. [स विश्वकाया] देवी दुर्गा का नामान्तर।

बिस्वकारक-स. पु. [सं. विश्वकारक] १ विष्णु।

२ ब्रह्मा।

३ शिव।

बिस्वकारज—देखो 'बिस्वकार्य' (रू. भे.)

बिस्वकारणी, बिस्वकारिणी-स स्त्री. [सं. विश्वकारिणी] विश्व की कारण रूपा, देवी।

उ०-प्रगट व्यास प्रोखता, कना अपछर हेतु कह। इद्रायण कन आप, रूप देखे विभ्रम रह। धरण आभ धारणी, बिस्वकारणी वखांणी। रिध सिध नारायणी, जगत अबा मन जाणी। —गा. प्र.

बिस्वकारय-स. पु [स. विश्वकार्य] सूर्य की प्रधान सात ज्योतियो का समूह जिसमे सात रग होते हैं। बैंगनी, नीली, आसमानी, हरी, पीली नारगी व लाल।

रू भे —बिस्वकारज।

बिस्वकूट-स. पु. [स. विश्वकूट] हिमालय की एक चोटी का नाम। (पुराण)

बिस्वकेतु-सं. पु [स. विश्वकेतु] १ अनिरुद्ध का एक नामान्तर।

२ एक पर्वत का नाम। (पुराण)

बिस्वकोस-सं. पु [स विश्वकोश] १ ससार के समस्त, पदार्थ आदि के सग्रह का कोश या भण्डार।

२ ससार के समस्त प्रकार के विषयों आदि के विस्तृत विवेचन का ग्रन्थ।

बिस्वक्रत-सं पु. [सं. विश्वकृत] १ संसार के सृष्टिकर्त्ता, ब्रह्मा।
उ०—चतुरमुख चतुरचरण चतुरातमक, विश्व चतुर जुग विधायक। सरवजीव बिस्वक्रत ब्रह्म सू, नरवर हस देहनायक। —वेलि
२ संसार का भरण-पोषण कर्त्ता, विष्णु।
३ शिव, महादेव।

बिस्वकमा—देखो 'बिस्वकरमा' (रू. भे.)

बिस्वगंध-स. पु. [स. विश्वगंध] १ लहसन।
२ लोबान।

बिस्वगधा-सं. स्त्री [सं विश्वगन्धा] भूमि, पृथ्वी। (डि. को.)

बिस्वगधि, बिस्वगाधी-सं पु [सं. विश्वगंधि] पृथु नामक राजा के एक पुत्र का नाम।

बिस्वग-सं. पु [स. विश्वग] १ ब्रह्मर्षि मरीचि एवं कर्दमपुत्री कला के गर्भ से उत्पन्न पूर्णिमा के एक पुत्र का नाम।

बिस्वगरभ-स. पु. [स. विश्वगर्भ] १ भगवान विष्णु।
२ शिव, महादेव।

बिस्वगस्व-सं. पु [स. विश्वगश्व] राजा पृथु वैन्य के पांच पुत्रों में से एक।

बिस्वगोप्ता-स. पु. [स. विश्वगोप्ता] १ विष्णु।
२ देवराज इन्द्र।
३ विश्वभर।

बिस्वचक्र-सं पु [स विश्वचक्र] बारह प्रकार के महादानो मे से एक प्रकार का महादान, जिसमे सोने का चक्र दान में दिया जाता है। (पुराण)

बिस्वचखल, बिस्वचख, बिस्वचखु, बिस्वचख-स. पु [स. विश्वचक्षुस्]
१ ईश्वर, परमात्मा।
२ सूर्य सूरज।
(मि. जगचख)

बिस्वचित्ति-सं. पु. [स विश्वचित्ति] हिरण्यकशिपु के दरबार का एक राक्षस।

बिस्वजीत-सं. पु. [सं. विश्वजित्] १ एक प्रकार का यज्ञ विशेष जो विरोचनसुत राजा बलि ने शुक्राचार्य के आदेश से इन्द्र को परास्त करने हेतु किया था।
२ वरुण का पाश।
३ आग, अग्नि।
४ बृहस्पति के एक पुत्र का नाम।
५ एक दैत्य जिसने पूर्वकाल में सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज्य किया था।
६ राजा सत्यजित के पुत्र का नाम।

बिस्वजीव-सं पु. [सं विश्वजीव] ईश्वर, परमात्मा।

बिस्वजूण, बिस्वजोनि—देखो 'बिस्वयोनि' (रू. भे)

बिस्वजोतिस-स पु [सं विश्वज्योतिष] एक ऋषि जो गोत्र प्रवर्तक था।

बिस्वतन, बिस्वतनु-स. पु. [सं विश्वतनु] भगवान विष्णु।

बिस्वतोया—सं. स्त्री. [सं. विश्वतोया] गगा नदी।

बिस्वदत्त-सं. पु [सं. विश्वदत्त] एक सोमवंशीय राजा जो श्रीगणेश की पूजा करने के कारण देवताओं का गणाधिपति बना था।

बिस्वदासा-स. स्त्री. [सं. विश्वदासा] अग्नि की सातों जिव्हाओं का नाम।

बिस्वदेव-स. पु. [स. विश्वदेव] १ नादी मुख श्राद्ध मे पूजे जाने वाले एक प्रकार के देवता। (पुराण)
२ पारावत देवों मे से एक।
३ ईश्वर, परमात्मा।
उ०—देव देव दीन नाथ राज राज लोकपाळ, वासुदेव बिस्वदेव बदनीक नै बिसाळ। नारसीघ नार अंग नरांनाह नाभकज, रामचद्र राघवेस रूपराज रमा रज। —र ज. प्र.
रू. भे.—बिस्वदेव।

बिस्वदेव—१ देखो 'बिस्वदेव' (रू. भे)
२ देखो बिस्वदेवत' (रू. भे.)

बिस्वदेवत-सं. पु. [सं. विश्वदेवत्] २७ प्रकार के नक्षत्रों में से उत्तराषाढा नामक नक्षत्र जिसके देवता विश्वदेव माने जाते हैं।

बिस्वधर-स. पु. [सं. विश्वधर] भगवान श्रीविष्णु।

बिस्वधांम-स. पु [सं. विश्वधामन्] ईश्वर, परमात्मा।

बिस्वधा-स. पु [सं. विश्वधा] एक प्रकार के देवता, वशवर्तिन देवता।

बिस्वधार-स पु. [सं विश्व+धारी] (स्त्री. विश्वधारिणी) १ शिव, महादेव।
२ एक तीर्थ का नाम।
उ०—ग्रोळगू हरदान रामदान दोनूं ग्रतीत होय गया था। तीरथा नै रवाना होय गया था सो आगै केदारनाथजी परस, बद्रीनाथ परस, बिस्वधार परस, भूठति माही कर नेपाळ परस, मुक्त क्षेत्र परस, अयोध्या कासी परस परागजी आय मकर रो नाहण करि फेर पाछा जाय कुंवर रा पिंड भराया पछै बैजनाथजी, जगन्नाथजी परस मारकडेय कुंड तरपण किया।
—पलक दरियाव री बात
२ शाकद्वीपाधिपति मेधातिथि के सात पुत्रो में से एक।

बिस्वधारणी, बिस्वधारिणी-स. स्त्री. [स. विश्वधारिणी] १ भूमि, पृथ्वी।

२ दुर्गा, देवी, शक्ति ।

विस्वनंत–स. पु. [स. विश्वनंत] जनकवंशीय एक राजा ।

विस्वनंद–स. पु [स विश्वनद] ब्रह्मा के एक परम तेजस्वी शिष्य का नाम ।

विस्वनाथ-स. पु [स. विश्वनाथ] १ काशी का एक ज्योतिर्लिंग ।

२ शिव, महादेव । (अ. मा.)

उ०—भो मेटि भर्म संसार भव, इम कुरा वुळ उद्धारसी। परसिगो राय जोधहपुरै, विस्वनाथ बाणारसी। —गु रू.ब

३ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

४ ईश्वर, परमात्मा ।

रू. भे.—विसवनाथ ।

विस्वनाभ–स पु. [स विश्वनाभ] १ भगवान् श्रीविष्णु ।

२ देखो 'विस्वनाभि' (रू. भे.)

विस्वनाभि-स. पु. [स. विश्वनाभि] १ भगवान श्रीविष्णु का सुदर्शन चक्र ।

२ देखो 'विस्वनाभ' (रू भे.)

विस्वपत, विस्वपति, विस्वपती–स. पु. [स. विश्वपति] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

३ मनु नामक अग्नि के एक पुत्र का नाम

रू. भे.—विसपत, विसपति, विसपती ।

विस्वपा–स पु [स विश्वपा] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ सूर्य, सूरज ।

३ चन्द्रमा, चाद ।

४ आग, अग्नि ।

विस्वपातरी विस्वपात्री–सं पु. [सं. विश्वपातृ] पितरो में से एक ।

विस्वपाळ–स पु. [सं विश्वपाल] १ ससार का भरण-पोषण कर्ता, ईश्वर, विष्णु ।

२ हिरण्यनाभ कौशल्य का पिता एव व्युत्थिताश्व का पुत्र एक राजा ।

रू भे.—विसपाळ ।

विस्वपावन, विस्वपाविनी–सं स्त्री [सं विश्वपावन] १ तुलसी ।

२ सूर्य, सूरज ।

३ चान्द, चन्द्रमा ।

४ आग, अग्नि ।

विस्वपूजिता–सं स्त्री. [स. विश्वपूजिता] तुलसी ।

विस्वप्रकास, विस्वप्रकासक–स पु. [स विश्वप्रकाशक] सूरज, सूर्य ।

विस्वप्रबोध–स. पु [सं. विश्वप्रबोध] भगवान विष्णु ।

विस्वासन–स. पु. [स विश्वासन्] १ देवता ।

२ सूरज, सूर्य ।

३ चान्द, चन्द्रमा ।

४ अग्नि, आग ।

विस्वबंधु–स. पु. [स विश्वबधु] शिव महादेव ।

विस्वबाहु–स. पु. [स. विश्वबाहु] १ विष्णु ।

२ शिव, महादेव ।

विस्वभरता, विस्वभरत्ता–स पु [स विश्वभर्तृ] ईश्वर, परमात्मा ।

विस्वभावन–स. पु. [स. विश्वभावन] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ रक्त नामक बीसवे कल्प मे उत्पन्न ब्रह्मा का एक मानस पुत्र ।

विस्वभुज, विस्वभुजा–स. स्त्री. [स विश्वभुज्] १ एक देवी का नाम । (पुराण)

स पु - २ ईश्वर, परमात्मा ।

३ देवराज इन्द्र ।

४ पाकयज्ञ का अग्निदेवता जो बृहस्पति के चार पुत्रो मे से चौथा पुत्र था और गोमती नदी का पति था ।

५ पितरो मे से एक ।

वि —सब का उपभोगकर्त्ता, सर्वभक्षी ।

विस्वभूखण, विस्वभूसण–स. पु [स. विश्वभूषण] एक सूर्यवंशी राजा (रा. वंसावली)

विस्वमया–सं. स्त्री [स विश्वमया] अग्नि की सात जिव्हाओ मे से एक जिव्हा का नाम ।

विस्वमहेस्वर–सं पु [स. विश्वमहेश्वर] १ शिव, महादेव ।

विस्वमाता–स स्त्री [सं विश्वमाता] विश्व की माता, दुर्गा ।

विस्वमित, विस्वमितर विस्वमित्र, विस्वमीत—देखो 'विस्वामित्र' (रू. भे.)

उ०—पेड़ा री छायां बैठयो हो, विस्वमित्र तप ग्यांनी । चितन घणोमगन हो, हो परम लोक रो ध्यानी । —करणीदान बारहठ

विस्वमुखी–स. स्त्री. [स विश्वमुखी] पार्वती ।

विस्वमूरति, विस्वमूरती, विस्वमूरत्ति–सं स्त्री. [स. विश्वमूर्ति] सर्वव्यापी भगवान विष्णु ।

विस्वमोहन–स पु. [स. विश्वमोहनम्] विष्णु का नामान्तर ।

विस्वयोनि, विस्वयोनी–स. पु. [स. विश्वयोनि] ससार के सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा ।

२ विष्णु ।

रू. भे.—विसवजूण, विसवजोनि, विसवयोनि, बिस्वजूण, बिस्वजोनि।

बिस्वरंधी-स. पु. [सं. विश्वरंधि] इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम।

बिस्वर—देखो 'बिसर' (रू. भे.)

उ०—नाडोलाई रो सोभाचद सेवग वाबेचा कह्यो—भीखणजी सैरवै है सो त्यारा अवरणवाद बिस्वर जोड़। सतरै प्रकार नीं पूजा रचै है तिण मांही सूं तोनैं दस बीस रुपया देस्यां। जद सोभाचंद बोल्यौ—भीखणजी सूं बात करनै पछै बिस्वर जोडसू —भि. द्र.

बिस्वरथ—देखो 'बिस्वमित्र'

बिस्वराजा-स. पु.—एक सूर्यवंशी राजा का नाम। (रा. वंसावळी)

बिस्वरुचि, बिस्वरुची-सं. पु. [स. विश्वरुचि] १ एक देव योनि। [सं. विश्वरुची] २ अग्नि की सात जिव्हाओं में से एक जिव्हा का नाम।

बिस्वरूप-स. पु. [सं. विश्वरूप] १ श्रीकृष्ण। (ना. मा.)

२ श्रीविष्णु।

३ शिव, महादेव।

४ चोसट भैरवों मे से एक भैरव का नाम।

५ शिवकल्प के पश्चात् प्रारभ हुए एक कल्प का नाम।

६ गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखाया गया भगवान श्रीकृष्ण का वह स्वरूप जिसके अनुसार उन्होने समझाया कि ब्रह्मांड मे सूर्य, चन्द्रमा, तारे ग्रह आदि जो कुछ है व सब मेरा ही स्वरूप है।

८ एक प्राचीन तीर्थ।

६ त्वष्टा का एक त्रिमुखी पुत्र जिसे इन्द्र ने मारा था।

बिस्वरूपविस्तार-सं. पु.—श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

बिस्वरूपा-स. स्त्री. [स विश्वरूपा] १ एक देवी।

२ धर्म ऋषि की पत्नी, जिसकी कन्या का नाम धर्मव्रता था।

बिस्वरूपी-स. पु. [स. विश्वरूपिन्] भगवान श्रीविष्णु।

बिस्वरेतस—देखो 'बिस्वरेतस' (रू. भे.)

बिस्वलोचण, बिस्वलोचन-सं. पु. [स. विश्वलोचन] १ सूरज, सूर्य।

२ चाद, चन्द्रमा।

बिस्वलोप-स पु. [स. विश्वलोप] एक वैदिक ऋषि का नामान्तर।

बिस्ववसु-स पु. [सं. विश्ववसु] जमदग्नि एव रेणुका एक पुत्र।

बिस्ववारा-स. स्त्री. [स. विश्ववारा] एक अत्रिगोत्र की स्त्री, जो ऋग्वेद के पांचवें मडल की ऋचाओ की ऋषि थी।

बिस्वविद्यालय-स. पु. [स. विश्वविद्यालय] सभी प्रकार के विषयो की ऊच्च कोटि की शिक्षा देने व उपाधियां प्रदान करने वाली शैक्षणिक सस्था विशेष।

बिस्वसनीय-वि. [सं. विश्वसनीय] जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास करने योग्य।

बिस्वसहा-सं. स्त्री. [स. विश्वसहा] १ अग्नि की सात जिव्हाओं में से एक जिव्हा का नाम।

२ भूमि, पृथ्वी, (डि को.)

बिस्वसाक्षी, बिस्वसाखी-स. पु. [स. विश्वसाक्षी] ईश्वर, परमात्मा।

बिस्वसित—देखो 'बिस्वस्त' (रू. भे.)

बिस्वसेन-सं. पु. [स. विश्वसेन] १ शान्तिनाथजी के पिता एक राजा। (जैन)

उ०—बिस्वसेन पिता अचिरा माया, जेणैं चउदै सुपना मोटा पाया। जनम्या तीरथंकर अमिय झरी, स्रीसांति जिनैंस्वर सांति करी। —जयवांणी

२ एक सूर्यवंशी राजा का नाम। (रा. वंसावळी)

बिस्वस्त-वि. [स. विश्वस्त] जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वसनीय।

बिस्वस्ता-स. स्त्री. [स. विश्वस्ता] वह स्त्री, जिसका पति मर गया हो, विधवा।

बिस्वस्रवा-स. पु. [सं विश्वश्रवा] कुबेर एवं लंकापति रावण के पिता एक मुनि।

उ०—ब्रहस्पति पुत्र पुलहक्रत (भारद्या मनभवा) तस्य पुत्र भारद्वाज। पुलहस्त भारद्या साति, तस्य पुत्र बिस्वस्रवा। विस्वस्रवा पुत्र कुबेर। कुबेर पुत्र नलकुवर। —रा. वंसावळी

बिस्वहरता, बिस्वहरत्ता-स. पु. [स विश्वहर्तृ] शिव, महादेव।

बिस्वहेतु-स. पु. [स. विश्वहेतु] भगवान, श्रीविष्णु।

बिस्वा-सं. स्त्री. [सं. विश्वा] १ राजा दक्ष की कन्या, जो धर्म को ब्याही गई थी।

२ भारतवर्ष की एक महा नदी।

३ सोठ। (ना. मा.)

बिस्वागाथा-स. स्त्री. [स. विश्वागाथा] गाहा छद का एक भेद विशेष, जिसमे ६ गुरु और ३६ लघु अर्थात ४८ वर्ण या ५७ मात्राए होती हैं।

बिस्वाघात—देखो 'बिस्वासघात' (रू. भे.)

उ०—राजाजी चिमकनै बोल्या-हे, औ तो दीवाणजी! अबै ठा पड़ी! तो आ सगळो कुचमाद आ दीवांणजी रो हो। इत्तो

विस्वाघात ! साच पूछो तो म्हानै ग्रा दीवांणजी माथै कदै ई पूरो भरोसो नी व्हियो । —फुलवाडी

विस्वाची—सं. स्त्री [सं. विश्वाची] १ एक वैदिक अप्सरा ।

२ वायु के कारण होने वाला एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमे कधे से अंगुलियों तक सारा हाथ न तो फैलाया जा सकता है और न ही सिकोड़ा जा सकता है । (वैद्यक)

विस्वात्मा—सं. पु. [सं. विश्वात्मा] १ विष्णु, भगवान ।

२ ससार के सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा ।

३ शिव, महादेव ।

४ ईश्वर, परमात्मा ।

विस्वाधार—सं. पु. [सं. विश्वाधार] १ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—अनाथा-नाथ अनत अछेह, दयाळ-मूरति विर्वाजित-देह । बिना-वपु-रूप अनंत विथार, अमूळ-विरख सु विस्वाधार । —ह. र.

२ मेधातिथि के पुत्र का नाम ।

रू. भे.—विस्वाधारी ।

विस्वाधारी—देखो 'विस्वाधार' (रू. भे)

उ०—नमो अग्राह्याह सुवन पुट सार सत नमो, नमो लोकाध्यक्षा भ्रत विजय लक्ष्या पत नमो, नमो विस्वाधारी अनळ अघहारी विभु नमो, नमो भूभूरव स्व प्रवन सुत विस्वभर नमो । —ऊ का.

विस्वाधिप, विस्वाधिपत, विस्वाधिपति, विस्वाधिपती—स पु [स. विश्वाधिपति] विश्व का अधिपति, ईश्वर, परमेश्वर ।

विस्वानर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—१ बावन्ना चंदन ठवी, सुरहा तेल नी धार रे । घ्रत विस्वानर तर पिनइ, कीधउ तनु सस्कार रे । —ए. जै. का स

उ०—२ उतर आज स उजमी, सर्क तो पडसी सीय । के विस्वानर सेवियें, के सासू री धीय । —ढो. मा.

उ०—३ तेरा पक्का न खावसी, रे विस्वानर रड्ढ । मह दीठइ तइ जाळिया, सज्जन केरा हड्ड । —प्रथ्वीराज राठौड़

विस्वाबीस—देखो 'विसवाबीस' (रू. भे.)

विस्वामित्र,विस्वामित्तर,विस्वामित्र,विस्वामितर,विस्वामित्र,विस्वामित्रेस,

विस्वामीत—स पु. [स. विश्वामित्र] कान्यकुब्ज के पुरुवशीय महाराज गाधि के पुत्र एक महर्षि जो क्षत्रियकुल मे जन्म लेने पर भी अपने तपोबल से ब्रह्मर्षियो मे परिगणित हुए ।

उ०—१ विस्वामित्रेस एण बात, कोपियो भयकरा । गिरां तरा सरां गभीर, धुज्जवं विसुंधरा । —सू. प्र

उ०—२ विस्वामित्र रै ज्याग सोभा वधारी, त्रिया रेण तै हूत गोतम्म तारी । पति स्रापहूं देह पाई पखांणं, जिका दिव्य देहा हुई स्त्रब्ब जाणे । —सू. प्र.

उ०—३ बिहू रघु लक्खण पुत्र बुलाय, सभै जग विस्वामित्र सहाय । जनक तणौ वळि जोयौ ज्याग, भांगे धनु कट्ठ सीय विराग । —ह. र.

वि. वि—इनका जन्म का नाम विश्वरथ था किन्तु ब्राह्मणत्व प्राप्त करने पर ये विश्वामित्र के नाम से विख्यात हुए । गाधि की सत्यवती नामक पुत्री ऋचीक ऋषि को ब्याही गई थी । ऋचीक ने अपनी पत्नी व सास के लिए दो अलग-अलग चरु बनाये पर दोनों ने गलती से एक दूसरी का चरु खा लिया । परिणामत: सत्यवती से जमदग्नि हुए जो ब्राह्मण होते हुवे भी क्षत्रिय गुण सम्पन्न थे और महाराज गाधि की पत्नी के गर्भ से विश्वामित्र हुवे, जो क्षत्रिय होते हुवे भी ब्राह्मणत्व से परिपूर्ण थे । ये बड़े प्रतापी राजा थे । एक बार ये शिकार करते-करते ससैन्य वसिष्ठाश्रम मे पहुंचे । वहा वसिष्ठ महर्षि ने अपने तपबल एव कामधेनु नन्दिनी की सहायता से राजा का राजोचित सत्कार किया । नन्दिनी से प्रभावित होकर उसे इन्होने अपने साथ ले जाना चाहा और वसिष्ठ के इन्कार करने पर इन्होने जबरदस्ती की । वसिष्ठ का इगित जान कर नन्दिनी क्रुद्ध होकर अपने शरीर से सैनिक व म्लेच्छ निकाले जिन्होने राजकीय सैनिको को पराजित किया । उक्त घटना से इन्हे अनुभव हुआ कि राजबल से तपोबल अधिक है । परिणामत: इन्होने भी राज्य को त्याग कर घोर तपस्या की और तपस्वी, राजर्षि व ब्रह्मर्षि बने । इनकी तपस्या मे मेनका ने विघ्न डाला और उससे शकुन्तला का जन्म हुआ । मतान्तर से उर्वशी या रम्भा नामक अप्सरा ने तपस्या भग की थी और तपस्या भग करने वाली अप्सरा स ही शकुन्तला का जन्म हुआ था जो दुष्यन्त राजा की पत्नी बनी थी और भरत की माता बनी थी । इन्होने दशरथ सुत राम-लक्ष्मण को अपने साथ यज्ञ की रक्षार्थ ले जाकर ताडका, सुबाहु आदि का वध करवाया था । वहीं से राम-लक्ष्मण को अपने साथ मिथिलापुरी सीता स्वयवर मे ले गय थे । इन्होने त्रिशकु का सदेह स्वर्ग पहुचाया था । इनके शुन., शेफ, मधुच्छन्द, धनजय, कृतदेव, अष्टक, कच्छप, हारीतक, हिरण्याक्ष, आदि सौ पुत्र हुए थे । सती, रेणु, शालावति, साकृति, माधवी आदि इनकी पत्निया थी । इनका आश्रम कौशिकी नदी के तट पर था ।

२ अर्वावसु एव परावसु ऋषियो के पितामह एव रैभ्य नामक ऋषि का पिता, एक ऋषि ।

३ युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित वैवस्त मन्वन्तर का एक ऋषि ।

४ फाल्गुन मास में सूर्य के साथ रहने वाला एक ऋषि ।

५ रात्रि राक्षसों के चार समूहों में से एक राक्षस समूह ।

रू. भे.—बिसवामत्र, बिस्वामत्र, बिसवामंत्र, बिसवामित, बिसवा मितर, बिसवामिति, बिसवामित्र, बिसुवामित, बिसुवामितर, बिसुवामिति, बिसुवामित्र, बिस्वमित, बिस्वमितर, बिस्वमित्र, बिस्वमीत।

बिस्वामित्रा–सं.स्त्री. [सं.विश्वामित्रा] भारत में बहने वाली एक नदी।

बिस्वायु–सं पु. [सं. विश्वायु:] पुरुरवस् राजा के छः पुत्रों में से एक जो राजा था।

बिस्वावसु–सं. पु [स. विश्वावसु] १ एक गन्धर्व का नाम जो कश्यप एव प्राधा के पुत्र थे। (पुराण)

वि. वि.—इनके दो पुत्रियां थी। पहली पुत्री महासती मदालसा थी, जिसे पातालकेतु बिवाहार्थं हर ले गया था किन्तु शत्रुजित् के पुत्र ऋतध्वज ने पातालकेतु को मारकर इसमे विवाह किया था और दूसरी पुत्री का नाम प्रम्द्वरा था जो मेनका नामक अप्सरा से उत्पन्न हुई थी। पृथु महाराज के द्वारा पृथ्वी को गाय रूप मे दूहते समय गन्धर्वो व अप्सराओ ने इन्हें बछड़ा बनाकर कमल पात्र मे गन्धर्व बिद्या (सगीत) व सौंदर्य दुह लिया था।

२ श्रावण माह के सूर्य के साथ भ्रमण कर्त्ता एक गन्धर्व।

३ विष्णु का नामान्तर।

४ जमदग्नि ऋषि के पाच पुत्रो मे से एक जो महान ऋषि था।

५ साठ सवत्सरो में से ३९ वा और विष्णु वीसी के उन्नीसवें सवत्सर का नाम।

६ धर्म एव सुदेवी के पुत्रो मे से एक, वसु।

७ मधु राक्षस की पत्नी कुभीनसी का पिता एव माल्यवत राक्षस की कन्या का पति, एक राक्षस।

८ पुरुरवस एव उर्वशी के पुत्रो मे से एक, गन्धर्व।

बिस्वावीस—देखो 'बिसवावीस' (रू. भे)

उ०—१ छं सहु नं सुख ए जगदीस, वाणी तेहनी, बिस्वावीस। प्ररुप्या आगम पेंतालीस, सख्या नाम कहुं सुजगीस।

—ध व. ग्र.

उ०—२ धण जोवं नित राजरी, वाटां बिस्वावीस। किण दिन आय करावस्यो, घर लीला री हीस? —अग्यात

बिस्वास–सं. पु [स. विश्वास] १ मन मे किसी व्यक्ति, बात या वस्तु के कारण उत्पन्न होने वाला भाव, भरोसा, ऐतबार, यकीन,।

उ०—१ देखता पांण सेठ रो जीव राजी व्हियो। उण री निजरा आगं सा'ब अर मेंमड़ो रा हसतोड़ा उणियारा फिरण लाग्या। सेठ नं पक्कायत बिस्वास व्हैग्यो कं हीरो वानं सोळं आना दाय आवेला। —अमर चूंनड़ी

उ०—२ तथा लोका ने साधां सू भिड़कावै। जद स्वामीजी बोल्या—आगं भगू पुरोहित पिण बेटां नें भिड़काया। कह्यो साधां रौ विस्वास कोज्यो मती। —भि. द्र.

२ किसी विषय, सिद्धांत आदि की सत्यता का पूरे प्रमाण के अभाव मे उसकी सत्यता के सम्बन्ध मे होने वाली मन की धारणा।

उ०—लुगाई मे अकल अर हीमत व्है तौ ई वा कांम मे नी बरती-जै। बरतीजण री कीं मारग ई कोनी। पूतळो री पूजा करतां भगत नं तो ओ विस्वास रेवं के भगवान बिनां कह्यां ई उण रै मन री सं बातां जाणतो व्हैला। —फुलवाड़ी

३ मन में होने वाला वह दृढ़ निश्चय जो केवल अनुमान पर आधारित हो।

उ०—इतरा ने तो एक लठ्ठ म्हारी खोपड़ी पर पड़ियो अर म्हूं पड़तो पड़तो बच्यो। अबं म्हने पक्को बिस्वास व्हैग्यो हो के आ कोई प्रेत लीला नही पण मांनखा लीला ही। —रातवासो

४ यकीन, एतबार, भरोसा।

उ०—१ घात व्हैणी व्हैतो तो कदंई व्है जातो। धनजी-भीमजी माथै आपरो बिस्वास है जिको चोखो इज है, पण काई ए दो आदमी दरबार सू ई बत्ता सामरथ है? दरबार तो आप रै माथै पूरा मेहरबान है। —अमर चूनड़ी

उ०—२ अबकी महाराणी फेर मासी रै पगा हाथ लगाय कह्यो-थू ओ विस्वास राख कं थारी काली भांणजी कदै ई थारै इण सत माथै अभरोसो नी करैला। —फुलवाड़ी

उ०—३ म्हारी जीभ मे कीडा पडं म्हैं थनै काले कंडो ऊधो पाटो पढाई। म्हारी काली बाता माथै घणो बिस्वास करियो तो सगळी ऊमर रोवैला। —फुलवाड़ी

५ आत्मबल।

उ०—१ इण परमेस्वर रै करार री कूतो आक लियो बेटी। म्हैं थनै म्हारो ओ इज ग्यान सूंपणी चावती। अबै तो ओ ग्यान ई म्हारो सुहाग अर थारो बिस्वास है। —फुलवाड़ी

उ०—२ उण रा डील नै पतवाणिया म्हनै अंडो लखायो कं ओ बाबो धान, पाणी अर हवा रै पाण नी जीवै, आपरा बिस्वास रै आपं जीवै है। —फुलवाड़ी

उ०—३ पण बिस्वास रा बळ आगै उणरा अखूट विखा नै ई हार मानणी पड़ी। विस्वास रा बळ रै सामी बापडा दुख, क्लेस अर सताप री काई गाढ। —फुलवाड़ी

६ दृढ़ निश्चय।

उ०—ठाकर आडिया रा अरथ बतावण मे प्रवीण हा वांनै पूरो बिस्वास हो। अर जबान सूं कौल व्हैगो जको तो व्हैगो।

—फुलवाड़ी

७ धैर्य, तसल्ली।

८ आत्म-सन्तोष।

उ०—१ म्हूं अबै उण भोळा कमेड़ा नै कांई जबाब देवतो। उण रा बिस्वास नै कियां खडत करतो। जिण उम्मेद री डोर माथै वो जीवै ही उणनै किया तोड़तो। —अमरचूनडी

उ०—२ गुमेज भरया सुर मे बोल्या—मूंडो है, धरटी री गाळी कोनी। निकळ्या बोल पाछा नी उराइजै। म्हनै पूरो बिस्वास है कै किणी आडी री अरथ म्हारा सूं छानो कोनी। —फुलवाडो

९ धैर्य।

उ०—तिण सूं गगदेव रो आगम जांणि पहिली सूचना करि मोनू बुलाइ गेमारा नूं म्हारो सहायक भाव दिखावणो। जरै खीची रो भय टळियां बिस्वास पाइ घीजिया नूं रजपूत करण रै काज मीणा री चाल छोडण री पत्र कपट कर लिखावणो। —व. भा.

उ०—······जै हमैं तो एक लाख अर जैं प्रसन्न होय तो विक्रम करोड रुपिया देय। सो हे राजा ! महाराज विक्रम सा गुण जैं तो माहीं होय तो सिंघासण बैठ नातर बिस्वास कर बैठ रहै। —सिंघासण बत्तीसी

क्रि. प्र.—करणो, जमणो, देणो, बैठणो, होणो।

रू. भे.—बसास, बिसबास, बिसवास, बिसास, बिम्वास, बेसास, बैंसास, विसवास, विसास, वीसास।

अल्पा.—बेसासडउ, वीसासो।

बिस्वासकारक-वि. [स. विश्वासकारक] १ विश्वास करने वाला, जो विश्वास करे।

२ जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास योग्य, विश्वसनीय।

बिस्वासघात-सं पु [स. विश्वासघात] विश्वास देने के बाद विश्वास करने वाले के विरुद्ध, उसके विश्वास के विरुद्ध किया जाने वाला कार्य।

उ०—१ इतरी सुण कुमार बट बादर नै डाळ सूं धकेलियो सो पडता बार सचेत होय डाळ ऊपर चढ गयो। कुमार रै माथै मृत की धार मार कही—नीच तो नूं धिक्कार ! तू बचनहार, मित्रद्रोही बिस्वासघात कीन्हो। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ इसी बात सुण कुमार एक आक छोडियो। वीसारामा करै लागियो, तद पडदा माही सूं फेर पिडत कही —ब्रह्महत्यादिक पाप गगा नहाया छूट जाय पर मित्र सू कियो बिस्वासघात नही छूटै। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—३ कइ बिस्वासघात अम्है कीधा, कइ अवगुणिया पात्र। कइ धन प्राणि पियारा भूठो, पामर पोल्या गात्र। —कां. दे. प्र.

रू. भे.—बिसवासघात, बिस्वाघात, बिस्वासघात, बिसवासघात, बिसासघात, वीसासघात।

बिस्वासघातक, बिस्वासघाती-वि. [स. विश्वासघातक, विश्वासघातिन्] विश्वासघात करने वाला।

उ०—१ इतरी बात सुण कुमार एक आंक और छोडियो। वीसरामा करै लागियो। पड़दा सूं पिडत कही—जै मित्रद्रोही, बिस्वासघाती अर कृतघ्नी हो सो चाद, सूरज रहै तो लौं नरक भोगै। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ सेठजी म्हनै पैं'ला आ बात क्यूं नी बताई। म्हैं आ सेठां नै अैडा बिस्वासघाती तो नी जाण्या हा। म्हारै सागै ई कुचमाद करणा मे नी चूक्या। —फुलवाडी

उ०—३ राज-दरबार मे मांनखो मावतो नीं हो। राजाजी सिंघासण माथै बिराज्या रीस मे उफणता हा। तो आ सगळी कुचमाद इण बिस्वासघाती दीवांण री। —फुलवाडी

बिस्वासणो, बिस्वासबो-क्रि. स.—१ सन्तोष करना।

२ विश्वास या भरोसा देना, विश्वास कराना।

३ दृढ निश्चय करना।

क्रि. अ —४ सन्तोष होना।

५ विश्वास होना, भरोसा होना।

६ दृढ निश्चय होना।

बिस्वासणहार, हारो (हारी), बिस्वासणियो—वि०।

बिस्वासिओड़ो, बिस्वासियोड़ो, बिस्वास्योड़ो—भू० का० कृ०।

बिस्वासीजणो, बिस्वासीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

बिसवासणो, बिसवासबो, बिसासणो, बिसासबो, बिस्वासणो, बिस्वासबो, बेसासणो, बेसासबो, बैंसासणो, बैंसासबो, विसवासणो, विसवासबो, वीसासणो, वीसासबो—रू० भे०।

बिस्वासपातर, बिस्वासपात्र-वि. [स. विश्वासपात्र] जिसका विश्वास किया जाय, विश्वसनीय।

रू. भे.—बिस्वासपात्र।

बिस्वासा-स. पु. [स. विश्वासा] एक सूर्यवंशी राजा, विश्रुतवान। (पुराण)

उ०—जै सुत हुवो सधि हत दूजण, मरखण सधिसुतण कुळ मडण। मरखण सुत सिंहमान भूप मणि, भूप बिस्वासा हूं तै सुत भणि। —सू. प्र.

बिस्वासियोड़ो-भू. का. कृ.—१ सन्तोष किया हुआ। २ विश्वास या भरोसा दिया हुआ, विश्वास किया हुआ ३ दृढ निश्चय किया हुआ। ४ सन्तोष हुवा हुआ, भरोसा हुवा हुआ। ५ विश्वास हुवा हुआ, भरोसा हुवा हुआ। ६ दृढ निश्चय हुवा हुआ। (स्त्री. बिस्वासयोड़ी)

बिस्वासी-वि [सं. विश्वासी] १ जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास करने योग्य।

उ०—१ दीसणा में तो अेकली दीसूंला, पण अेकली व्हूंला कोनी। म्हारी मरजी रा खास बिस्वासी असवारा नै पांच-पाच, सात-सात री टोळियां बणाय नाकै रै नाकै ठौड ठौड लुकाय नै बैठाण दूंला।
—फुलवाड़ी

उ०—२ जद स्वांमी जी खिमाकर बिस्वासी आहार अवेरनै बोल्या—आ थारै सत्रा है तौ परचा कगला। हम कही उण बेला इज तावड़ै मैं विहार कीधो।
—भि. द्र.

उ०—३ मतीरौं री रुत मे मतीरो रा ऊठ रा ऊठ नाखीजता। बिस्वासी आदमी वां रै टाक्या लगाय' र कई मे मोहर अर कई में रुपिया घाल' र पाछोई मूंडो बद कर देवता।
—सत सेठ श्रीरामरतन डागा री बात

२ विश्वास करने वाला।

रू. भे—बिसवासी, विसवासी।

बिस्वेदेव-स. पु. [स विश्वेदेव] १ वेदानुसार नौ देवताओं का एक समूह विशेष।

वि. वि.- अग्निपुराणानुसार इस समूह मे दस देवता माने गये हैं—क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, आर्द्रक और पुरुरवा। इनमे से पाच देवो का जन्म विश्वामित्र के शाप के कारण द्रोपदी के गर्भ से हुआ था जो बाल्यकाल मे ही अश्वथामा के द्वारा मारे गये थे। श्राद्ध आदि मे इनका पूजन किया जाता है।

२ दस की सख्या*।

बिस्वेदेवपूजन-स पु [स विश्वेदेव पूजन] आषाढ शुक्ला पूर्णिमा को पूर्वाषाढा होने पर विश्वेदेवों का किया जाने वाला पूजन।

बिस्वेस-स पु. [स. विश्वेश] १ शिव, महादेव।

२ भगवानन् श्रीविष्णु।

३ ब्रह्मा।

४ ईश्वर, परमात्मा।

५ सत्ताईस नक्षत्रो मे से उत्तराषाढा नामक नक्षत्र विशेष।

रू भे.—बिसवेस, बिस्वईस।

बिस्वेसर, बिस्वेसुर, बिस्वेस्वर-सं पु [स विश्वेश्वर] १ शिव की एक मूर्ति।

२ विष्णु।

३ ब्रह्मा।

४ ईश्वर, परमात्मा।

५ ग्यारह रुद्रो मे से एक रुद्र का नाम।

रू. भे—बिसेसर, बिस्वईसर, बिस्वईसुर, बिस्वईस्वर।

बिस्वेकरमा—देखो 'बिस्वकरमा' (रू. भे.)

बिस्वैकसार-सं. पु [स. विश्वेकसार] एक प्राचीन तीर्थ, जो काश्मीर मे है।

बिस्वैकमा—देखो 'बिस्वकरमा' (रू भे)

उ०—अह नाम सोय प्रभा धाम एता, जिकै तात बिस्वैकमा कीध जेता। हिमानी सखा माहरै एक हुती, अठाहन सौ उद्धरी भागवती
—सू प्र.

बिस्वौ—देखो बिसवौ' (रू. भे)

उ०—तरै जैतसीजी बोल्या, बाई, म्हांनै पण छै बामण, चारण भाट सवासणी—इतरा रो बिस्वौ खाण रो पण छै सो पण भाज्यो थारा दाखीण सूं।
—जैतसी ऊदावत री वात

बिस्सरांम—देखो विसराम' (रू. भे.)

उ०—पडिहार भीम भुज दान भत, प्रित्यमी दीप जाणै सपत्त। थाकै सति साहंस बिस्सरांम, नाद' उत कियौ रवि चद-नाम।
—गु. रू बं.

बिस्सरांमौ—देखो 'विसराम' (रू. भे.)

बिस्सरांमो—देखो 'विसराम' (रू. भे)

बिस्सम—देखो 'विसम' (रू. भे)

उ०—विपरीत बिस्सम घात, किरि बांण वज्रहे पात। वरखाग बग वहति, किरि अगनि द्रस्टि हुवति।
—गु रू. ब.

बिस्सहरपुर-स पु. [स. विषधरपुर] नागोर नगर का नाम।

उ०—बिस्सहरपुर फतै वहइ वाणि, पह दियइ भेट पूजइ न प्राणि। खेसइ खडगि नाणउ खरोइ, करिमाळ भाल ऊभइ न कोइ।
—र. ज सी.

बिस्सांम—देखो विसराम' (रू. भे)

बिस्सा-स पु. [स विश्रसा] पुदगल, धूप छाया, आदि।

उ०—बिस्सा हाथ आवै नही, मिस्सा जीव-रहत। जीव सहित तै योगसा, स्री जिन वाणी तहत।
—जयवांणी

बिहंग-स. पु [सं] १ पक्षी, चिड़िया।

उ०—१ प्रीतइ भलां पारेवडां, केता अवर बिहंग। बात न लहइ वियोगनी, सदा निरतर सग।
—मा. का प्र.

उ०—२ मर सूकै नह सचरै, बाका पही बिहंग। किण रै चालै सग कुण, सब स्वारथ रै सग।
—बा. दा.

उ०—३ जेथि रग-आंमास, तेथि क्रीडति कुरगह। जेथि न्रपति बंसता, तेथि उड्डंत बिहगह।
—गु. रू. बं.

उ०—४ कुवरत्ती कोमंड ताण करै, छेदन बिहग दुहग सरै। रज धूघळ समूह मिळै रयण, ग्रहपति प्रछन्न थयौ गयणं।—गु. रू. ब.

२ मासाहारी पक्षी।

उ०—१ पनग लड़ौ कीड़ा पड़ौ, सड़ौ भड़ौ दुख संग। जग चुगलां री जीभड़ी, बायस भलौ बिहंग। —बां. दा.

उ०—२ मिल अछर हरखत चित महत, पख निरख वीरत वरत पत। खग गिलत गूदा तत अखत, वण असत परवत मेरवत। सह त्रिपत बिहंग बिसेख। —र. रू.

३ सूरज, सूर्य।

४ चान्द, चन्द्रमा।

५ बादल, मेघ।

६ बाण, तीर।

७ घोड़ा, अश्व। (ना. डिं. को.)

उ०—१ जोड़वा जगत प्रावंत जात, बिरवर बिहंग उतंग गात। दीपक्क चक्ख सोभा दिवस्सि, प्रसराळ तेज कोडीक प्रस्सि। —गु. रू. बं.

उ०—२ ताहरा चूडासामा, "राज री खरी परधान आयौ। घोड़ा असवारा सो पोहतौ। परमेसर दीनो। मार नै घोड़ा उरा लेवो।" इतरौ कहि नै असवार ५० बडा बिहंग पाछा घेरिया। घेर नै नरै ऊपर नाखिया। —जैतमाल पुमार री बात

८ आकास, गगन। (ना मा)

९ सत्ताईस नक्षत्रो मे से एक नक्षत्र।

१० जनमेजय के सर्पसत्र मे दग्ध, ऐरावतकुलोत्पन्न एक नाग का नाम।

११ हंस।

उ०—करिसु कथा जिम कुमुदिनी, रमिवा भोगी भ्रमर। मति मुत्ताहल वीखरिसु, चिणवा चतुर बिहंग। —मा कां. प्र.

१२ देखो 'बिहगमारग' (रू. भे.)

उ०—भक्त जोग परै हठ जोग है, मांख्य जोग ता आगी। मीन पपील बिहग पुनि कहियै, तीहूं राह चीन बडभागी। —श्रीहरिरांमजी महाराज

१३ देखो 'बिहाग' (रू. भे.)

उ०—भणत स्री विनोदय, कल्यांण केक मोदय। खभायची पट-मयं, बगेसरी बिहंगयं। —रा रू.

रू. भे.—बहग, बिहग, बिहगम, बिहंगी, बिहग, वहग, विहग, बिहगम, विहग, विहाग, बीहग।

अल्पा.,—बिहगड़ो, विहगड़ो, बिहांगड़ो, वीहगड़ो।

बिहंगड़ो—देखो 'बिहग' (अल्पा., रू. भे.)

बिहंगजेठी—स. पु.—१ सूरज, सूर्य।

उ०—मड़ लगा छछोहा भीच छेटी भनै, बिहंग-जेठी समर खांचियौ बाज नै। गजा घेटी तरह भाड़ता कुलगने, कणैठी सूर सुरतांण जेठी कनै। —ठाकुर सुरतांणसिंहजी री गीत

२ गरुड।

बिहंगनाथ—स. पु. [स. विहंग+नाथ] १ पक्षिराज गरुड़।

उ०—बज्र छूटो इद्र कै, बिछूटौ रामचद्र बाण, कूदवा सांमद्र बाण टूटो हणू क्रोध। काळी नाग घडा हूं बिहंगनाथ छूटो कना, जटी की जटा सु छूटो भद्र जोध। —हुकमीचद खिड़ियौ

२ देवराज इन्द्र।

३ देखो 'बिहगपत'

रू भे—बिहगनाथ।

बिहंगपत, बिहंगपति, बिहंगपती,—स. पु. [सं. विहगपति] १ पक्षिराज गरुड।

२ देवराज इन्द्र।

३ सूर्य सूरज।

४ चन्द्रमा, चाद।

रू. भे.—वहगपत, बहगपति।

बिहंगम—वि. [स.] आकाश मे गमन करने वाला।

उ०—१ तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति ग्रीखम रित माहै पवन पात्रक समान वाजियौ छै। प्रथी अप नै वायू अकास च्यारि तत पाचमै अगनी तेज तत भेला मिळ नै रहिया छै। प्रिथी रा लोक बिहंगम पंखी छै। —रा. ज. स.

स. पु—१ सूरज, सूर्य।

२ अश्व, घोडा।

३ आकाश, गगन।

४ मासाहारी पक्षी।

उ०—१ तिण वार वीरारस संगम, ग्रीध चील्ह नभ छाए बिहंगम। कळह का आगम सो बिखमारिख, सार का कांठा सचा पारिख। —रा. रू.

५ पक्षी।

उ०—१ तन दुख नीर तडाग, रोज बिहंगम रूसड़ो। बिसन सली-मुख बाग, जरा बरक ऊतर जबल। —बां दा.

उ०—२ साथै हिंदू मुस्समलमांणां, हिंदुसथान लिडै खुरसाण। मुळ गळ अजबकि खुरसाणी, बोलै जेम बिहंगम बांणी।

—गु. रू. बं.

उ०—३ सुडाळा आलम ठल्ल सिरै, तन्नावधि बसक नंदगिरै। घण रव घूघर सद्द हुवै, बोलत बिहंगम जाण धुवै। —गु. रू. ब.

उ०—४ ऊचासो इद्र रै, राम रै गुरड़ बिहंगम। सूरज रौ सिलह "जै" जिसौ सपतास तुरगम। —गु. रू. बं.

६ धर्म सावर्णि मन्वन्तर का एक देवगण।

७ खर राक्षस का एक अमात्य।

८ देखो 'विहंगमारग' (रू. भे.)

रू. भे.—विहंगम ।

विहंगमग-स पु. [सं.] १ आकाश, आसमान, गगन, (ना. मा.)

२ देखो 'विहंगमारग' (रू. भे.)

विहंगमपंथ—देखो 'विहंगमारग' ।

उ०—वदति लोक वाक्या, पपीलिका मारगं पयरणं । सिधनि सूर पथ, विहंगमपथ पंणयहं । —गु रू. ब

विहंगममारग—देखो 'विहंगमारग' (रू. भे.)

विहंगमा-स. स्त्री. [स] सूर्य की किरण ।

विहंगमारग-सं. पु. [स. विहंगमार्ग] योग साधना के तीन मार्गों मे से एक मार्ग विशेष, जिसके द्वारा साधक काया को अधिक क्लेश दिये बिना शीघ्र व सहज मे पक्षी की तरह उडकर अपने प्राण ब्रह्माड तक ले जाता है ।

रू. भे.- विहग, विहगम, विहगमग, विहगममारग, विहंगराह ।

विहंगराज, विहगराजा-सं पु. [स. विहगराज] १ पक्षिराज गरुड ।

२ इन्द्र का नामान्तर ।

रू. भे'— वहगराज, वहगराजा ।

विहगराह—देखो 'विहगमारग' ।

उ०—साख्य जोग निज ग्यांन कहीजै, सार असार पिछांणै । मिथ्या त्याग सतकी सग्रह, औ विहंगराह निरवांणै ।

—श्रीहरिरामजी महाराज

विहगांनाथ—देखो 'विहगनाथ' (रू. भे)

उ०—तूटो बोम बाट निराताळ सो विछुटो तारौ, केतां छूटो पीराण माळवां ताकै कूप । कोप रुद्र-माळका विहंगांनाथ जूटो कना, रूठो गोरां माथै प्रळै काळ को सो रूप ।

—गिरवरदांन कवियो

विहगेस-स पु [स. विहग+ईस] १ गरुड ।

२ इन्द्र ।

रू भे —विहंगेस, विहगेस ।

विहंगो—देखो 'विहंग' (अल्पा, रू भे.)

उ०—गुरु मेरै दीया सबद विहंगा, पकरि लीया अैसें मन पगा । यो मन भवंग बसे तन बंबी, गवन करै कद छोटीय लंबी ।

—अनुभववाणी

विहंड-स. पु.—१ टुकडा, खण्ड ।

उ०—खडे पडे रिण खेत मे, तन तें होय विहड । सूरा तन को क्या मूवो, हरिया दरगह मड ।   —अनुभववाणी

२ नाश, सहार ।

उ०—अतुळ पौरस धर चंडमुंड बोलिया-हुसा गमण री हाम पूरां । वडो प्रम डबारां । दोखियां रा कांध भिरडां । एक बार वणां रा तन विहंड करां ।   —मा. वचनिका

३ मारने की क्रिया ।

रू. भे – विहड ।

विहंडखंड—देखो 'खड-विहड' (रू. भे.)

उ०—मिळै असुराण वीर माग रो समंदां मथै, खेलै होळी फाग रो प्रयाग रो खतम । फडै पंडां खाग रो विहंड-खंडां वणै जूझ, पीठाण 'गभीरो' पडै आग रो पतग ।

—ठाकुर गंभीरसिंघ सोलकी रो गीत

विहंडण-स पु—१ नाश, सहार ।

२ मारने की क्रिया ।

वि —१ नाश करने वाला, संहार करने वाला ।

उ०—घर गई सरब घर धूंहडो, तै बाबी तोता त नै । बैरियां विहंडण बेगडा, मुणै किसू हव मात नै ।   —पा. प्र.

२ मारने वाला ।

उ०—श्री रघुनाथ अनाथ नाथ सुज, बेढ मत्र दसमाथ विहंडण । आहर मही जहूर सुजस जिण, महपत नूर सूरकुळ मडण ।

—र. ज. प्र.

३ नाश करने वाला, मिटाने वाला ।

उ०—१ खलक तारण तरण खलां खंडण खतम । रोर जण विहंडण सुखद सरसै । सियावर तूझसो तुहो दाखे सको, दूसरो समोवड न को दरसै ।   —र. रू.

उ०—२ दुख दावानल सलिलवाह ! दोहग्ग विहडण । जय जय 'पास' जिणद ! देव ! थभणपुर मडण ।   —स. कु.

विहंडणो-वि.—१ नाश करने वाला, मिटाने वाला ।

उ०—इम थुण्यउ जिणवर सति दिणयर, भरिय तिमिर विहंडणो । अणहिल्ल पाटण माहि सी, त्रंबाड वाडा मडणो ।   —स. कु.

२ मारने वाला ।

३ नाश करने वाला, संहार करने वाला, विध्वसक ।

विहंडणो, विहंडबो-क्रि. स.—१ नाश करना ।

उ०—१ स्याम छळ करा जुध साहसां, धार समद फूलण धसां । किरमरा विहड असुरा कटक, वरां रभ सुरपुर वसां   —सू. प्र.

उ०—२ पिड विहंड होय चुख चुख पडूं, ताय वरूं रभ हित तिको । सुलभ ही जिको पांऊ सुरग, जगत घणो दुल्लभ जिको ।

—सू. प्र.

उ०—३ जीता लाखा जुद्ध विहंडे जूजूवाह, हाजिर बदा देव सको किंकर हुवाह । प्रगटी पेस अमोल दियै नित सुरपती, हरिहां

गुमिर किती इक तूक कहीजै अगजगती । —मा. वचनिका

उ०—४ बहै विपरीत वेळा करारी, कूत किरमाळ नेजा कटारी । धजवडां धार रुळ रुंड मुंड, बिहंड पड वाढ वडह विहड । —गु. रू. बं.

२ मिटाना, खत्म करना ।

३ नाश करना, मिटाना ।

उ०—१ गिरिजा-नंदन गुण गुहिर, गाजइ गिर गंभीर । प्रघारि प्रादित्य तिम, विघन बिहंडइ वीर । —मा. कां. प्र.

उ०—२ थोर गात्र ठरट्टिम कइ चालइ, सिरि सेवत्रा भार । नवरीय मदन विघन बिहंडण, दुख खडण सुख सार । —रुकमणि मगळ

४ मारना, सहार करना ।

उ०—१ भाखरसी आपणै पण लोह गोळी । अर पठांण आया हुंता, तिकां नूं मार बिहंड कर नांखिया, अर अठै भाखरसी री तो फतै हुई, मोरचो कायम राखियो । —राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ भोमिया बड पेसा भरै, मैंण करसण माडिया । गढपती पेसायो मालगढ, बिढ प्रबदाळ बिहडिया । —रा. रू.

उ०—३ बिहंडत गज बाज, सामि तणै छळि साहणो । देखि कहै पंळां दळा, धिन हाथा धनराज । —र. वचनिका

उ०—४ इक आयो सहसा अजणि, जळ क्रीडा मझारै । बांमणि गदा बिहंडिया, दूजो बळि हारै । —सू. प्र.

उ०—५ "सूर" तणो सुरसरी तणै सर, मांनव बिहंडिया गजावे मार । रण रेखण भेळा कर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिणगार । —किसनो आढो

उ०—६ सीह हुवा मेहासदू, अडिया भुज अबर । बिजो अरज्जन बिहंडिया, खाधा भर रूप्पर । —ठाकुर जूझारसिंह मेड़तियो

५ टुकडे-टुकडे करना, काटना, छेदना ।

उ०—१ रूक पिम्राला पीअस्यां पाइस्यां । चाचर बिहंडिस्यां विहडाइस्यां । रिणखेत रै विखै रंगिम्रै बांणासि मतवाळा ज्यूं घूमतां थकां हाथिम्रां सूं टला खाइस्यां । —र. वचनिका

उ०—२ वाहै सत्रां सिरि खाग बिहंडै, मार लियै यांणा बळ मडै । पाल्हासणी असुर बळ पूरै, साथ अमांमै गात सनूरै । —रा. रू.

उ०—३ आज कळ आरांण, निकसतां तबल निसांणा । बीस भुजा दस बदन, बिहड रालूं तज बांणा । —र. रू.

उ०—४ मोरि तुरग असुर रा, जंगी हवदां लगि जाऊ । सिर बिहंडूं मण सत्रा, बिसम निज सिर विहडाऊ । —सू प्र.

क्रि. अ.—६ नाश होना, सहार होना ।

७ टुकडे-कटुडे होना, कटना ।

उ०—१ भड़ खळिया भंभर वेहक बज्जर, बळिया पक्खर बिहंड बपै पळ खडिया पंजर पडै पंचाहर, जै जै संकर सकति जपै । —गु. रू. बं.

उ०—२ तूटै भड निवड त्रिजड भड तिमळै, वाढ प्रतेवड बिहंड बपै छूटंती रुहिर नडड दड वड छिळि, घारां धजवड सुहड घपै । —गु. रू. बं

उ०—३ बपि बिहंड पळ खड, तेग तिमळां मुहि तुटो । घारा मुहि घडछियो, कुंभ किरि काळी फूटो । —गु रू. बं.

८ मृत्यु को प्राप्त होना, मरना ।

९ घटना ।

१० मिटना, खत्म होना ।

बिहडणहार, हारौ (हारी), बिहडणियौ—वि० ।

बिहडिओड़ो, बिहडियोड़ो, बिहड्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बिहडीजणौ, बिहंडीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

बिहड्णौ, बिहडबौ, बिहड़णौ, बिहड़बौ, बीहंडणौ, बीहंडबौ, बहडणौ, बहडबौ, विहडणौ, विहड़बौ—रू० भे० ।

बिहंडाणौ, बिहडाबौ—क्रि. स. [बिहडणौ, बिहडबौ का प्रे. रू.]

१ संहार कराना ।

उ०—१ बीजळां मोहरि खळ दळ बिहंडि, बप बिहंडाय परी बरां । खग करै वास अजस खरब, कुळ सो बीस कवेसरा । —सू प्र.

उ०—२ अभमाल आप छळि करि अचड़, बप बिहंडाय रंभा वरूं । जंग करण महाभारत ज्यूं ही 'करण' नाम साचो करूं । —सू. प्र.

२ नाश करवाना, मिटवाना ।

३ संहार करवाना, मराना ।

४ मिटवाना, खत्म करवाना ।

५ टुकडे-टुकडे कराना, कटवाना, छिदवाना ।

उ०—१ मोरि तुरग असुर रा, जंगी हवदां लगि जाऊ । सिर बिहंडूं मण सत्रो, बिसम निज सिर बिहंडाऊं । —सू. प्र.

उ० —२ रूक पिम्राला पीअस्यां पाइस्यां । चाचर विहंडिस्यां बिहंडाइस्यां । रिण खेत रै विखै रंगिम्रै बांणासि मतवाळां ज्यूं घूमतां थकां हाथिम्रां सूं टला खाइस्यां । —र. वचनिका

बिहंडाणहार, हारौ (हारी), बिहंडाणियौ वि० ।

बिहंडायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बिहडाईजणौ, बिहडाईजबौ—कर्म वा० ।

बिहंडायोड़ो—भू. का. कृ.—१ संहार कराया हुआ. २ नाश करवाया हुआ, मिटवाया हुआ ३ संहार करवाया हुआ, मरवाया हुआ. ४ टुकडे-टुकडे करवाया हुआ, छिदवाया हुआ, कटवाया हुआ. ५ मिटाया हुआ, खत्म किया हुआ ।

(स्त्री. बिहडायोड़ी)

विहडियोड़ौ-भू का कृ—१ नाश किया हुआ, संहार किया हुआ, ध्वंस किया हुआ. २ नाश किया हुआ, मिटाया हुआ. ३ संहार किया हुआ, मारा हुआ. ४ टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, काटा हुआ, छेदा हुआ. ५ मिटा हुआ, खत्म हुवा हुआ. ६ मिटाया हुआ, खत्म किया हुआ।

(स्त्री विहडियोडी)

विहंणौ, विहंणौ—देखो 'विहूणौ, (रू. भे.)

विहंसक—देखो 'विध्वंसक' (रू. भे.)

उ०—विरहरिए वस विहंसक, किंसुक नहिं ए भ्रति। विलवइ विरह करालियउ, वालिय इम एकति। —जयसेखर सूरि

विहंसणौ, विहंसबौ—देखो 'विहसणौ, विहसबौ' (रू. भे.)

विहंसणहार, हारौ (हारी), विहंसणियौ—वि०।

विहंसिओड़ौ, विहंसियोड़ौ, विहंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विहंसीजणौ, विहंसीजबौ—भाव वा०।

विहंसियोड़ौ—देखो 'विहसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विहंसियोडी)

विह—देखो 'विधि' (रू. भे.)

उ०—१ बारस विह गणिपिटक तणी, संख्या कही हो लाल। सासता अरथ अनत कि छइ, एहना सही हो लाल। —वि. कु.

उ०—२ आरोहत गिर सिखर, समुद्र लंघ जात कपाळ। विह अक्षर लिखिया भाल, फलत कपाळ हि भूपाल। —ठकुरै साहू री वात

उ०—३ लिखियौ लाभै लोय, पर लिखियौ लाभै नहीं। पर सिर पदम हि जोय, जै विह विहवै अप्पियौ। —नैणसी

उ०—४ लगन कळह दिली विह लिखियौ, आलम धड़ देखें असमान। वीदपणौ अजमेर विसारे, खिसियौ लसियौ हाजीखान। —राठौड़ रतनसिंह री वेलि

उ०—५ विह आणै विह मेळवै, विह मडे उपचार। अळगी ही नेडौ करै, विह तणौ विचार। —राव रिणमल री वात

विहग—देखो 'विहग' (रू. भे.)

विहड़-स पु.—बीहड़, जगल, वन।

उ०—इसं मे भांगेसुर मगायजै छं सू किण भात छै। केसर री क्यारी दोलळी, वासग माथा री। थोहर रा विड़ा री, भाखर रा खुड़ारी. भूरै मोर री, काळै पांन री, आबू रा विहड़ां री, भमरभार मिरधमाळ लरियाळ विडियाळ, चोटड़ियाळ। —रा. सा. स.

रू भे.—विहड, विहडु।

अल्पा.,—विहड़ौ, विहडौ।

विहड़णौ, विहड़बौ - देखो विहडणौ, विहडबौ' (रू भे.)

उ०—नेह अकत्रिम मइं कियउ रे, कदै न विहडइ तेह। दिन दिन अधिकउ उलटइ रे, जिम आसाढी मेह। —वि. कु.

विहड़णहार, हारौ (हारी), विहड़णियौ—वि०।

विहड़िओड़ौ, विहड़ियोड़ौ, विहड़्योड़ौ - भू० का० कृ०।

विहड़ीजणौ, विहड़ीजबौ – कर्म वा०, भाव वा०।

विहड़ियोड़ौ—देखो 'विहडियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. विहड़ियोडी)

विहड़ौ—देखो 'विहड' (अल्पा, रू. भे.)

विहचणौ, विहचबौ—देखो 'वेंचणौ. वेंचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सिर नासा कान दसन आखें, नख गाल वपुस ना मल नाखे। मिलणौ लेखौ करइ मंतरणौ, विहचण अपणौ करि धन धरणौ। —ध. व. ग्र.

उ०—२ आइ राजा सू मुजरौ कीयौ। कहीयौ महाराज घरां री खबर आई छै। बेटी री विमाह छै। राजा सिरपाव दे विदा दी उवे चोर कन्हे गया कह्यौ ईंडो विहचौ। कह्यौ विहचौ। ताहरां खीवौ बोलियौ एथ वहिचस्यां नही मारवाड़ माहि नै आइ नै उथ वहिचस्या। ताहरा ऊ चोर बोलियौ कितरा हैसा करिस्यौ कह्यौ तीन हेसा करिस्या। —खीबौली

उ०—३ तद पाछा घरै पधारनै जै भांत जोगी कह्यौ हतौ तै भात रांणिया नूं अभून री गोटी, सोपारियां विहच दीवी। पछै कितरै के दिनै पुत्र हुवौ —नैणसी

विहचणहार, हारौ (हारी), विहचणियौ—वि०।

विहचिओड़ौ, विहचियोड़ौ, विहच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

विहचीजणौ, विहचीजबौ—कर्म वा०।

विहचियोड़ौ—देखो 'वांटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विहचियोडी)

विहड—देखो 'विहड़' (रू भे.)

उ०—तिकै चीता कठारा छै ? मरोट रा, अघीरा, देरावर रा, रोहरा, थटैरौ, पहाडा रा, ईडर रा डूंगरा रा, जाळोर रा, पहाड़ां रा, पावर रा, थळा रा, पारकर रा विहडां रा। इसा चीता साथ लीजै छै। —रा. सा. सं.

विहडौ – देखो 'विहड' (अल्पा., रू. भे.)

विहडु—१ देखो 'वेहद'।

उ०—नेहली नीर भरिया नयडु, वाकउ दुरग पाखी विहडु। सारीख 'जइत' सुरितांण साज, रांमावतार राठवड राज। —रा. ज. सी.

२ देखो 'विहड़' (रू. भे)

विहण-वि. [स] १ नाश करने वाला, संहार करने वाला।

२ संहार करने वाला, मारने वाला ।

३ देखो 'बहन' (रू. भे.)

रू. भे.—विहरण, बिहन, विहन ।

बिहुत, बिहुति—क्रि. वि. [स विहोतम्] निवारण करने के लिए ।

उ०—तळफाया तन मन आप आप मैं, बिहुत सीत रुखमिणी वरि । वांणि अरथ जिम सकति सकतिवत, पुहुपगध गुण गुणी परि । —वेलि

देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—अगमद अंबर सारघण, वंधसार अंगरेल । कुम कुमादि केसर अतर, बिहति सुगधी रेल । —रा. रू.

बिहुतर—देखो 'बेहतर' (रू. भे.)

उ०—वाग तांम वरियाम, दहू आए चढि डंबर । कारजां चादरा नीर घरहरै बिहत्तर । —सू. प्र.

बिहथी—वि.—दो हाथ के बराबर नाप की ।

उ०—सु तोड नूं घाडवी जोंगी छै, जु रैवारी मार नै तोड लेवां । सु तोड मेंह रै चीखळ रै कंड री, हथ बिहथी कंबडो, नवहथी भोकणी । चीखळ करहो भेकतो तहा भेकी ।

—जैतमाल पुमार री वात

बिहद—स. पु.—१ ध्वनि, आवाज ।

२ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—बिहद हदि रहम देख जमदूत दहलै । —केसोदास गाडण

३ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे बीस मात्राए होती हैं ।

उ०—पायें एकरिण परठि जै, वीस मात्र विसतार । समझै लाखो भड सुघड, बिहद छद वडुभार । —ल. पि.

वि.—बडा या महान ।

उ०—ता मे अेक गयद है, मेर समोवड गात । रिण वेळा रावत बिहद, गिणै अरि तिलमात । —गजउद्धार

५ देखो 'बेहद' (रू भे.)

उ०—१ हरनेत्र जळै ज्वाळा बिहद, स्रोकजि अमरख संमिळै । अजमल्ल वळै दीठो 'अभो', देस ढाळ मारू दळै । —रा. रू.

उ०—२ बिहद लीध जिण वार, रैण अथ भूप जही रस । जस धम कजि जगजीत, दियां तबपत्र दवादस । —सू. प्र.

उ०—३ बिहद कोर गोटा बर्णं, पातर रै पोसाक । परणी फाटा पूंगरण, बैठी फाडै बाक । —बा. दा.

उ०—४ देवी दै बरदान, ग्यान रीजे गुण गावां । भाखा सहि भागिवन, बिहद हथ भरण वणावा । —पी. ग्रं.

उ०—५ लागो ग्यान धरा पर लोटै, सुध बुध भूला भोम सिळै । बिहद कपाळ हुवा परवरती, मुगती पोहरां मांय मिळै ।

—बांकीदास बीठू

रू. भे.—विहद ।

बिहदभांनु, बिहदभांनू—सं. पु [सं. वृहद्भानु] अग्नि, आग । (अ. मा.)

बिहद्द—१ देखो 'बिहद' (रू. भे.)

२ देखो बेहद' (रू. भे.)

उ०—१ विरांण सब्द सुणिया बिहद्द, नीसांण तूर अनहद्द नद्द । जोयणा सरीरा जोत जाग, लोयणा पार रा ध्यान लाग ।

—वि. सं.

उ०—२ त्यारी करै तमांम, जलूसा साजिया, अबागळ रिणतूर, बिहद्दां बाजिया । —र. रू.

उ०—३ हुकम हुवो तन मुल हुवां, हुवा नगारा सद्द । कूच हुवो जैपुर दिसा, हुवो हुलास बिहद्द । —रा रू.

उ०—४ बनस्पती पाखर बणी, वणिया टूंक बिहद्द । पटा बिछूटा नीझरण, आयो मद अरबद्द । —डाढाळै सूर री बात

उ०—५ फौजां डेरा फाबिया, दीसै हद्द बिहद्द । सबज वरना स्याह व्रन, लाल सपेत अरद्द । —गु. रू. ब.

उ०—६ वैताळ वीर मिळिया बिहद्द, सीकोतरि साकणि महा सद्द । मिळ ममळ ग्रीध आमख भक्ख, जंबक्क रीछ वड्डाक जक्ख ।

—गु. रू. ब

बिहन—१ देखो 'बहन' (रू. भे.)

उ०—बामण चरण प्रतापविधि, हिम पित गौरि बिहन ।

—रांमरासो

२ देखो 'विहण' (रू. भे)

बिहबळ—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—साह बळ वडो बिहबळ हुवै, त्रिसावंत जळ मोकळै । कलि मूळ आइ पैठो, कमो', भूइ कंठै भाखर वळै । —गु. रू. ब.

बिहमड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

बिहर—स पु —१ संहार, नाश ।

२ घोड़ा, अश्व ।

३ विचरण करने की क्रिया । (जैन)

४ साधुओ आदि द्वारा मांगने पर दिया जाने वाला आहार आदि भिक्षा ।

क्रि. वि.—१ भांति, तरह, प्रकार ।

२ बहुत, अपार ।

३ बड़ा, विशाल ।

४ बड़ा, महान् ।

विहरखौ—स. पु.—एक प्रकार का अशुभ घोड़ा । (शा. हो.)

विहरण—स. पु. [सं.] १ विहार करने की क्रिया ।

२ विछोह, वियोग ।

३ विस्तार, फैलाव ।

विहरणौ, विहरबौ—क्रि. अ.—१ विहार करना, घूमना, टहलना ।

उ०—१ '''महाभैरव सूकर घुरकइ, चित्रक बटकइ, वेताल किलकलइं, दावानल प्रज्वलइ, रिछ साचरइ विरू बूत्कार करता विहरइ, इसी अटवी,'''''''''''''। —व. स.

उ०—२ पुलिया रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ व्रजनाथ आथ । कान कवार विहरि गळी व्रज कुंजरी, सुभ रळी कीजियै लाडली साथ । —बां. दा.

उ०—३ विहरत वाग विलास, किरि सभ ग्रह कयलास । दिन उदय सुख दरसाव, चित होत अगया चाव । —रा. रू.

२ अलग-अलग होना, जुदा होना ।

३ बिखरना, तितर-बितर होना ।

४ भिक्षा देना ।

उ०—वेकर जोड़ी सालिभद्र बोलइ, प्रस्न करू स्वामी तुझ नइ रे । विहरण वात तो दूरी रही पणि, मा ओलख्यउ नही मुझनइ रे । —स. कु.

५ गमन करना, जाना ।

उ०—धन तें गाम नयर पुर मंदिर, जिहा विहरइ जिनराइ रे । विहरमाण सीमधर स्वामी, सुर नर सेवइ पाय रे । —म. कु.

६ भिक्षा मागना, भिक्षा लेना ।

उ०—१ वीर वचन सुणि विहरण चाल्यउ, सालिभद्र मन सतोखी रे । मायउ घरि ओलख्यउ नही माता, तप करि काया सोखी रे । —स. कु.

उ०—२ नदिसेण विहरण गयउ, गणिका कीधु हास हो । वृस्टि करी सोना तणी मइ तसु पूरी आस हो । —म कु

उ०—३ विन विहरयइ पाछउ वल्यउ मुनिवर, मन माहि संदेह आयउ रे । मारग माहि मिला महिआरा, तिण गोरस विहरायउ रे । —स. कु.

उ०—४ आपण पइ जाऊ विहरवा, सूझतउ लूं आहार । ऊच नीच कुल गोचरी, लेऊ नगर मझार । —स. कु.

क्रि. स.—७ संहार करना, मारना ।

उ०—१ सबळ बोलियो 'प्राग' समोभ्रम अरिअण विहर करा खग उत्तम । 'तेजल' अमर खाग भुज तोलै, बहसै खान नरायण बोलै । —रा. रू.

उ०—२ वढ पड विहर थाटा विळंद, भुजळग झट सेळा अचडि । सुग वसूं कहैं 'इटमल' सुतन, 'अभूनि' जिम खाटै अचडि । —सू प्र.

उ०—३ वहा अमर काय सिमजीत व्हा, विखम 'विलद' फौजा विहरि । करमाळ रगै मुजरो करू, केसरिया झकबोळ करि । —सू. प्र.

८ काटना ।

उ०—१ भड़ भिडज्ज गजभार, धार विहरै पाड़ै धड़ । ढहिया सिर पोढियो, बोळ झकबोळ बहादर । —सू. प्र.

उ०—२ उडती झाळां लोपि अराबा, वह गजघड खगि हणूं निबाबा । कूंभाथळां विहरि घण काळा, मारि गजा लोपूं मछराळा । —सू. प्र.

उ०—३ पाडवा जही किना पळ खडिया, विहरै हाड विजूजळ वाह । सहुआ सिर 'मुहुओ' सूरजमल, मेल्यो मेछ तणं दळ माह । —महाराजा सूरसिंह री गीत

९ टुकड़े करना, विच्छेदन करना ।

उ०—एकण हीरो विहरियां, दूजो हीरो थाय । हीराबधी कवित जिम, दोय अरथ दरसाय । —र. ज. प्र.

१० चीरना, विदीर्ण करना ।

उ०—१ दातूसळ वजर धजर जम दाढा, वाढां ऊगाढां विहर । अमपति नजर भली आफळियो, कुंजर नै नाहर कवर । —लिखमीदास गाडण

उ०—२ फाट फरि उर पारि फीफरि, वजरि असमरि विहर वाखरि । कुंवरि नरि कटि कवर कोपरि, चार चरि धरि ढचरि पळचरि । जोध जुट थट जग । —जगो खिड़ियो

११ तोडना ।

उ०—जो न्रप पूती नह दियै, दासी दूध अहार । तो विहरै गिरि वज्र जिम, खत्री खग पहार । —गु रू. ब.

१२ इन्तजारी करना, प्रतीक्षा करना ।

उ०—गात महाबळ गाळिया, भड सारिखा भीम । सत विहरी सयणी कहै, हिव जाणीस्यै हीम । —सयणी री वात

१३ युद्ध क्रीडा करना ।

उ०—असुर हजारा सहरै, हरै अमीरा लज्ज । आयो रण विहरै अभो', करै फतै कमधज्ज । —रा. रू.

विहरणहार, हारौ (हारी) विहरणियौ—वि० ।

विहरिओड़ौ, विहरियोड़ौ, विहरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विहरीजणौ, विहरीजबौ—भाव वा०, कर्म वा० ।

विहरणौ, विहरबौ, वी'रणौ, वी'रबौ, वीहरणौ, वीहरबौ ।
—रू० भे० ।

विहरमांण विहरमांन–स. पु —पाचो विदेह क्षेत्रो मे विचरण करने वाले तीर्थंकर ।

वि. वि.—जम्बू द्वीप के विदेह क्षेत्र के मध्य मे स्थित मेरुपर्वत के पूर्व एव पश्चिम में सीता एव सीतोदा महानदियां है । उक्त नदियो के उत्तर-दक्षिण मे आठ-आठ विजय है । इस प्रकार वहा आठ-आठ की पंक्ति मे बत्तीस तीर्थंकर रहते हैं ।

धातकी खण्ड व अर्द्धपुष्कर द्वीप के चारो विदेह क्षेत्रों मे भी ऊपर लिखे अनुसार ही जघन्य चार एव बत्तीस उत्कृष्ट तीर्थंकर सदा रहते हैं कुल पाच विदेह क्षेत्रो मे १६० विजय एवं प्रत्येक विजय मे जघन्य बीस एव उत्कृष्ट १६० तीर्थंकर रहते है ।

वर्तमानकाल मे पाच विदेह क्षेत्रो में बीस तीर्थंकर विद्यमान हैं। जिनके नाम नीचे लिखे हैं। घूमते रहने के कारण ये विहरमान कहलाये ।

(१) श्रीसीमधर स्वामी (२) श्रीयुगमधर स्वामी (३) श्रीबाहु स्वामी (४) श्रीसुबाहु स्वामी (५) श्रीसुजात स्वामी (श्रीसयातक स्वामी) (६) श्रीस्वयप्रभ स्वामी (७) श्रीऋषभानन स्वामी (८) श्रीअनतवीर्य स्वामी (९) श्रीसूरप्रभ स्वामी (१०) श्रीविशालधर स्वामी (विशाल कीर्ति स्वामी) (११) श्री वज्रधर स्वामी (१२) श्रीचद्रानन स्वामी (१३) श्रीचन्द्रबाहु स्वामी (१४) श्रीभुजग स्वामी (भुजंगप्रभ स्वामी) (१५) श्रीईश्वरस्वामी (१६) श्रीनेमिप्रभ स्वामी (नेमीश्वर स्वामी) (१७) श्रीवीरसेन स्वामी (१८) श्रीमहाभद्र स्वामी (१९) श्रीदेवयश स्वामी (२०) श्रीअजीतवीर्य स्वामी ।

बीस विहरमानो के चिन्ह लाछन क्रमशः निम्न है—
(१) वृषभ (२) हस्ती (३) मृग (४) कपि (५) सूर्य (६) चन्द्र (७) सिंह (८) हस्ती (९) चन्द्र (१०) सूर्य (११) शख (१२) वृषभ (१३) कमल (१४) कमल (१५) चन्द्र (१६) सूर्य (१७) वृषभ (१८) हस्ती (१९) चन्द्र (२०) स्वस्तिक ।

उ०—१ सम्प्रति वीस जिनेस्वर वदउ, विहरमांन जिणराया जी । विचरंता भविजन मन मोहै, सुर नर प्रणमइ पायाजी । —वि. कु

उ०—२ बिहु भमती दिवावली कोरणी अति सीकारो रे । समोसरण सोहामणो, विहरमांन विस्तारो जी । —स कु.

उ०—३ धन ते गाम नयर पुर मदिर, जिहा विहरइ जिनराय रे । विहरमांण सीमधर स्वामी, सुरनर सेवइ पाय रे । —स. कु.

रू. भे —वहरतमाण वइहरमाण, विरहमाण, विरहमान ।

विहरणौ, विहरबौ - देखो 'वैरणौ, वैरबौ' (रू भे.)

उ०—विन विहरयइ पाछउ वल्यउ मुनिवर, मन माहि सदेह आयउ रे । मारग माहि मिला महिआरा, तिण गोरस विहरायउ रे । —स. कु.

विहराणहार, हारो (हारी), विहराणियौ—वि० ।

विहरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

विहराईजणौ, विहराईजबौ—कर्म वा० ।

विहरायोड़ौ—देखो 'वैरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विहरायोड़ी)

विहरावणौ, विहरावबौ —देखो 'वैराणौ, वैराबौ' (रू भे)

उ०—१ प्रतिदिन पडिक्कमणु करइ गति पामइ जी, सामायिक एकत देव गति पामइ जी । आहार विहरावइ सूझतउ गति पामइ जी, साभलइ सूत्र सिद्धात देवगति पामइ जी । —स. कु.

उ०—२ विण विहराव्या आप जिमइ नही दाखीजइ दान सूरौ जी । आहार पाणी विहरावइ सूझतउ, वस्त्र पात्र भरपूरौ जी । —स. कु

उ०—३ आज तो तपसीएहवो, पुंजा रिख सरीखो न दीसइ रे । तेहनैं वदता विहरावता, हरखैं करि हियडौ हीसइ रे । —स. कु.

विहरावणहार, हारो (हारी), विहरावणियौ—वि० ।

विहराविओड़ौ, विहरावियोड़ौ, विहराव्योड़ौ - भू० का० कृ० ।

विहरावीजणौ, विहरावीजबौ—कर्म वा० ।

विहरावियोड़ौ— देखो 'वैरायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. विहरावियोड़ी)

विहरियोड़ौ–भू. का कृ–१ विहार किया हुआ, घूमा हुआ, टहला हुआ. २ अलग अलग हवा हुआ, जुदा हुवा हुआ. ३ भिक्षा दिया हुआ. ४ बिखरा हुवा, तितर बितर हुवा हुआ. ५ गमन किया हुआ, गया हुआ. ६ भिक्षा मागा हुआ, भिक्षा लिया हुआ. ७ संहार किया हुवा, नाश किया हुआ, मारा हुआ. ८ काटा हुआ. ९ टुकडे टुकडे किया हुआ, विच्छेदन किया हुआ. १० चीरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ ११ तोडा हुआ. १२ इन्तजारी किया हुआ, प्रतीक्षा किया हुआ. १३ क्रीडा किया हुआ ।

(स्त्री. विहरियोड़ी)

विहळ, विहल—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—भाग नगा भामणा ल्या भूधर दुख भजण । विहलां ना वीठला सुगति सारूप समपण । —पी. ग्रं.

उ०—२ रास निमो रहमाण, सुगनि दीन्ही महिला ना । गोकळ मा गोविंदो वळे मिळियो विहलां ना । —पी. ग्र

उ०—३ गक सरिस दे रीझ, अखिल काइ खीज करै अति । वडो विहळ हू बुरो, पीर सा रीस किसी पति । —पी ग्र.

विहलौ —देखो 'वहिलो' (रू भे)

उ०—रहि सोमासी रग सु, विहलौ करै विहार । माली घरा मझेवची, वदावी तिण वार । —ते, जे. का. स.

रू. भे.—विहिल, विहिलु विहिलौ ।

बिहव—देखो 'वैभव' (रू. भे.)

उ०—लिखियो लाभै लोय, पर लिखियो लाभै नहीं । पर सिर पदम हि जोय, वी विह बिहवै अप्पियो । —नैणसी

बिहवल—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—कुंवरसी री मा तो सुण अचेत हुई । सो वडारणां नीठ सचेत कीवी । अर बहुवां सुण बिहवली हुइ गई । नेत्रां माह प्रवाह छूट पड़िया । —कुंवरसी सांखला री वारता

(स्त्री. विहवली)

बिहव्य—सं. पु [सं.] वितव्य का पिता एवं गृत्समदवंशीय वर्चस् ऋषि का एक पुत्र, एक ऋषि ।

बिहव्यांगिरस—स. पु. [सं.] एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नाम ।

बिहसणौ' बिहसबौ—क्रि. अ.—१ हसना, प्रफुल्लित होना, हर्षित होना ।

उ०—१ उरध रोम उल्लसै जोम भरि करण रसातळ, भजि त्रिसळी निज माळ कळा सोखण सत्र कम्मळ । उर उछाह ऊपजै धाह पैला ग्रहि धारण, वदन हास बिहसंत रुदन पर बस बधारण । —रा. रू.

उ०—२ सुडाळ भिड़िया आवी अडिया; सुहड अगोअगि । नर सीस बिहसई वदन विगसई, सेल वाहई सगि । —रुकमणीमगळ

२ खिलना, विकसित होना ।

उ०—१ पहिली होय दयांमणउ, रवि आथमणउ जाइ । रवि ऊगइ बिहसइ कमळ, खिण इक विमणउ थाइ । —ढो. मा.

उ०—२ हिव हूउं प्रभात, फीटी राक्षसमी वात, टलिउ अंधकार घात, अद्रस्य नक्षत्र पट,लगगन उज्जवल,नि:सबद घूक कुल,निरमल दिग्मडल, आखित पूरवाचल, हूउं रविमंडळ, बिहसइं कमळ, विस्तरइं परिमळ, वायु वाइं सीतळ, प्रसन्न महीतळ, जिस्यां रातां पारेवा तणा चरण, तिस्यां बिस्तरइं सूरय तणा किरण । —रा. सा. स.

३ प्रफुल्लित होना, फूलना ।

उ०—१ तुकमां रूप अतम फतै रा फब्बिया, देखतां उर दम अरंदा दब्बिया । बिहसंतौ निज वदन वीरा रस वेस रो, दीपायो हद दौर मुरद्धर देस रो । —किसोरदांन बारहठ

उ०—२ मतिवाळा घूमै नहीं नह घायल कणणाय, बाळूं सखी ऊ द्रगडौ भड़ बापड़ा कहाय । बाळि ऊ द्रगडौ बसै भड़ बापड़ा, घाव अग सहे नहं बिभाड़ै अरि घड़ा । घणा जसवंत रा जोध बिहसै घणा, मांडिसी सही मतिवाळा बेढीमणा । —हा. झा.

उ०—३ बैनाणी ढीलो घड़ै मो कथ तणो सनाह, बिकसै पोहण फूल जिम, पर बळ दीठां नांह,। बिकसै घणी कमळ जिम भड़ निवड़,भड़ घणा पाड़तो सोभियो महा भड़ । बिहसतै सहस बळ कड़ी आय अबड़, फाट बड़ कंथ रै जरद ढीलो घड़ै । —हा. झा.

४ लहलहाना, लहराना ।

उ०—तिसिह आविउ वसंत, हूउ सीत तणाउ अंत । दखिण दिसि तणउ सीतळ वाउ, वाइ बिहसइं वणराइ । —रा. सा. स.

५ प्रभात होना ।

उ०—१ मुक रहइं पहिलउं दिउ अगेवांणु पंडव कन्ह दलउं जिम माणु । ईंहा सेनानी मगेव, अह बिहसी जुडियां दल बेउ । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ पवनह वेगिइं चालतां, पुहवी घणी गयाइं । अहि बिहसी रवि ऊगीउ, नीद्र गई नयणाह । —हीराणंद सूरि

बिहसणहार, हारौ (हारी), बिहसणियौ—वि० ।

बिहसिओड़ौ, बिहसियोड़ौ, बिहस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिहसीजणौ, बिहसीजबौ—भाव वा० ।

बिहसणौ, बिहंसबौ, बिहसणौ, बिहसबौ, बीहंसणौ, बीहंसबौ, बीहसणौ, बीहसबौ, बिहंसणौ, बिहंसबौ—रू० भे० ।

बिहसियोड़ौ—भू. का कृ.—१ हंसा हुआ, प्रफुल्लित हुवा हुआ, हर्षित हुवा हुआ. २ विकसित हुवा हुआ, खिला हुआ. ३ प्रफुल्लित हुवा हुआ, फूला हुआ. ४ लहलहाया हुवा, लहराया हुआ ।

(स्त्री. बिहसियोड़ी)

बिहा—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तद खीवसीजी वीहू नुं बुलाय कह्यो, "जो कुंवर नुं कहि, थारे बिहा तो घणा छै । फेर बोल छै तो एक-दोय फेर सखरी जायगा करि । इण रो नाळेर फेर दें । आपां सुं इहां रो किसो सूत छै ? —कुंवरसी सांखला री वारता

बिहांग—देखो 'विहग' (रू. भे.)

बिहांगड़ौ—देखो 'विहग' (रू. भे.)

उ०—बिहांगडै ज उदाध्धयां, सर ज्यउ पडुरियांह । कालर कांमा कमळ ज्यउं, ढळि ढळि ढेर थियाह । —ढो. मा.

बिहांण, बिहांणइ—स. पु. [सं. विभानु] १ प्रातःकाल, सवेरा ।

उ०—१ बिहांणे नवै नाथ जागो वहेला, हुवा दोडिवा धेन गोवाळ हेला । जगाडे जसोदा जदूनाथ जागो, महीमाट घूमै नवै नद्धि मागो । —ना. द.

उ०—२ उतर आज स उजमी, पाळो पडै बिहांण । मार्जे मात्र कुमारिआं, देखे मुगळ पठांण । —ढो. मा.

उ०—३ तिणि दिवसि हूउंसुपनंतर, हूंतइ प्रगट बिहांणइ । पधारिया गगा नइ गोरी, कान्हडदे इम जाणइ । —का. दे. प्र.

उ०—४ घण थट्टां गढ घेरियां, वणि रिण ऊग बिहांण । निस जाएं चख जगाणै, दिन पायै घमसाण । —रा रू.

उ०—५ अर अचळो रायमलोत कहे छै—'जु जैमलजी मोनूं बोलावै

छै, पिण हूं बिहांण री दिन अठै बैठो छू अर जैमलजी घणी गाढ करै छै। —नैणसी

२ देखो 'विधान' (रू. भे.)

रू. भे.—बहाण, बिहांण, बिहांन, बीहाण, बीहाणू, बीहान, बिहाणु, बिहाणू, बीहाण, बीहाणू।

अल्पा.—बहाणी, बिहाणी, बिहाणी, बिहान, बीहाणी।

बिहांणा—देखो 'बिहाणा' (रू. भे)

बिहांणी-वि.—१ नाश हुवी हुई, नष्ट।

उ०—घात छात सब दिल्ली जाणी, सगत ओपत थई बिहांणी। पुर चळ चळ मुख अन्न न पाणी, रिधी सोष लीधी रजधाणी। — रा रू

२ हीन, तुच्छ, निम्न।

३ बीती हुई, गत, विगत।

उ०—२ एतै पर डाकदार वाव सू आया, पातसाह की ठीक कर तहकीकत लाया। हाजर बुलाए साह सुण दूत वाणी, देखत ही फुरमाया कहो सो बिहांणी। —रा. रू.

४ बिना, रहित।

स. स्त्री —१ वृद्धावस्था।

२ विध्वंस, नाश।

३ वार्ता, बात-चीत।

४ देखो 'विस्राति' (रू. भे.)

रू. भे.—बिहाणी, बिहानी, बीहांणी।

बिहांणु, बिहांणू-वि.—१ रहित, विहीन, बिना।

२ देखो 'विहाण' (रू. भे.)

उ०—तेहिं न रोगो दोहग्गु तहु, तह मंगल कल्लांणु। जे जिण-वल्लहसूरि थुणिहि, तिन्नि संझ सु विहांणु। —ऐ जै का. स.

३ देखो 'बिहांणी' (रू. भे.)

बिहांणी-अव्य -१ कल।

उ० —१ मारु नै तेडिया, कहण सदेसा कज। कहो कब थं चालस्यो, कै बिहांणै कै अज। —ढो. मा

उ०—२ जोबन कारमौ रे बिहांणै उठ जासी, आदर भजन तणो अभियास। प्राणिया कदै न आवै पाछो, वळै न बीजो वागड वास। —ओपो आढो

उ०—३ इतै बिहांणी उगीयो, चिडिया चैचाइ। सायब कदै पधारस्यो, कह जावो काइ। —पना

उ०—४ हेम सिसर रित मेडतै, रहियो कमधा राव। सझ बिहांणै ऊगणै, दिन दिन दूणो चाव। —रा रू.

उ०—५ कूच बिहांणै ऊगणै, अरि घर सोच अथाह। थास उजाडा नीमडै, पडै पहाडा राह। —रा. रू.

वि.—१ बीता हुआ, विगत।

२ बिना, रहित।

३ नष्ट।

२ देखो 'विहाण' (अल्पा, रू. भे)

उ–१ हीदूए मारीथल कीधउ, पग मेल्हणउ न आइ। लोही तणा प्रवाह ऊलटीया, दीसइ बिहांणा माहि। —का. दे. प्र.

उ०—२ वार वार रतनलाल कह बतळावो जी बिहांणा राजा राम का, मुख धोवो कुरळा करो थारै कवरा नै द्यो ना दूध पिलाय बिहाणा राजा राम का। —लो गी.

उ०—३ विहाणां केरी बादली, नीच सरीसु नेह। तिम योवन थिरता नही, पवन चढो जिम खेह। —मा. कां. प्र.

३ देखो 'बिहाणा' (रू. भे.)

रू. भे.—बिआणी, बिहाणी, वहणं, विहांणु, विहांणू, वीहाण, वीहाणू, वीहाणी।

बिहांन—देखो 'विहाण' (रू भे)

उ०—१ थान को कुथान थान मान नीसरयो, होयसो सुथान हा बिहांन वीसरयौं। हूं जहा अरामखोर तू जहा तरयो, तूहिं पार तार मार पाव मे परयौं। —ऊ का.

उ०—२ ए कैसे हैं—बडे सु बिहांन हैं, बडे महिरवान हैं, बडे सिरदार हैं। बडे बूझदार हैं, बडे दातार है, जमी आसमांन बीच सभू अवतार हैं। —रा सा. स

उ०—३ मुधार सस्त्र अस्त्र कै जुधार जागतै नही, लखों बिहांन सान पै झझान लागतै नही। कमान बान तान कै निसान बेधतै नही, रसा उजास अधतै नसा निमेषतै नही। —ऊ का

बिहा—देखो 'विवाह' (रू. भे)

उ० १ सो खीवसी हळोद झालै परणीया। बडो बिहा हुवो। बडो गूडो खरच जस अवल कीयो, बडो नाव कियो। झाली बडी ठाकुराणी, जिसी ही रूप, जिसो ही सहुर, जिसी ही सारी बात मे सुघड। सो खीवसी घणी राजी।

—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ आगै सहर मे अेकै साह रै बिहा थो, तै रै महीनै री तयारी करावै छै, भठी कढाय कढा, चरु, खुरपा, डहोला सारा बासण भाण हाजर किया, खाड रा कापा भेळा कर वेकी कर राखी, मंदो घिरत सारो काढ तयार कर राखियो।

—राजा भोज अर खापरै चोर री वात

बिहाई—देखो 'विहायस' (रू. भे.)

बिहड़ति—सं. पु. [स. विहापित] दान। (ह नां. मा.)

बिहाई—१ देखो 'विहायस' (रू. भे.)

उ०—ओरंगसा पातसा आसुर अवतार, तपस्या के तेजपुंज एक से विसतार। माप का बिहाई सा प्रताप का निवांन, मारतंड आगें जिसी जोतसी विहांन। —रा. रू.

देखो 'बिहाईमाता'

बिहाईमाता—देखो 'बे'माता'

उ०—म्हारी नई ऐ विहाई, टोंक-टोडै सें आए। तू तो आव बिहाईमाता, भलई से औसर आए। —लो. गी.

बिहाग—देखो 'बिहाग' (रू. भे) (मोरां)

बिहाड़, बिहाड़ौ—वि.—भयंकर, भयानक, भयावह, डरावना।

उ०—ऊपाडियं तूट आवतर, जण जण पूगो जुवो जुवो। खीवर हाकलियो खीमावत, होकर जाउ बिहाड़ा हुवो। —दुरमो आढो

बिहाणो, बिहाबो-क्रि. अ.—१ व्यतीत होना, गुजरना, बीतना।

उ०—१ न वयू बिहांणी निसा इण वखत दूजा नरां, छता बहु दीसवं वड-वडा छात। 'पदम' बिन न को प्रथमाद दाता पणा, 'पदम' विन न को प्रथमाद गजपात। —द्वारकादास दधवाड़ियो

उ०—२ राति बिहांणी एण रसि, प्रात हुवो असवार। मेछ अभंग महाबळो, आरुहि संग अपार। —रा. रू.

उ०—३ दिवस दुहेला कस्टं जाय, रयणी तो किमही न बिहाय। जिम जळधर नं समरं मोर, तिम तुझ नं समरू छू जोर।

—वि. कु.

उ०—४ मोतिया री माळ तूटी। जाणं सुख री लका लूटी। इण भात सुख-सेजं पोढिया। राति बिहांणी। प्रभात हुवो छै। रातो का काम—ऊजागर नेंण घुळि नें रहिया छै। कपोलै काम सुहाग री छाप लागी छै। —रा. सा. स.

२ छोड़ना, त्यागना, गमाना।

उ०—वय बाळ बिहाय जुवा वरणी, कटिबद्ध भयौ करनी करनी। बिमना अनुराग बिराग बह्यौ, वितवत्तिय जोग प्रयोग वह्यौ। —ऊ. का.

३ रवाना होना।

उ०—वीतवियउ बहुबांणि, जउहर की माडउ जुगति। हव हुइ-स्या हर-पुर दिसा, वेगावेगि बिहांणि। —अ. वचनिका

४ प्रात:काल होना, सुबह होना।

५ देखो 'बिवाहणी बिवाहबौ' (रू. भे.)

बिहाणहार, हारौ (हारी), बिहाणियौ—वि०।

बिहायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बिहाईजणौ, बिहाईजबौ—भाव वा०।

बिहाइणौ, बिहाइबौ, बिहाणौ, बिहाबौ, बिहावणौ, बिहावबौ, बिहावणौ, बिहावबौ—रू० भे०।

बिहापन-सं. पु. [स. विहापन:] दातार, दानी।

बिहायस-स. पु. [स.] १ आकाश, गगन।

२ पक्षी।

रू. भे.—बिहाइ, बिहाई।

बिहायोड़ौ-भू. का. कृ.—१ व्यतीत हुवा हुआ, गुजरा हुआ, बीता हुआ. २ छोड़ा हुआ, गमाया हुआ, त्यागा हुआ. ३ रवाना हुवा हुआ ४ प्रातःकाल हुवा हुआ, सुबह हुवा हुआ।

५ देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बिहायोड़ी)

बिहार-स. पु [सं.] १ मैथुन, रतिक्रीडा।

२ वह स्थान जहा रतिक्रीडा या मैथुन किया जाय।

३ बौद्धो का मठ।

४ देवालय, मन्दिर। (ह. ना. मा.)

५ गति, चाल, वेग।

उ०—१ भरे नफेरी अबंको, डका सोर अपार। हुकम पिता चै हल्लियो, नीर क तीर बिहार। —रा. रू.

उ०—२ खतग वाज वेखतां, बिडग चोबडी बिहारां। अंगोअंग आफळं, हुवा निरलंग हजारां। डग मतग चाचरां, बरगमा रग बबाळा, सरग मग सूरमा, सग वारग सुचाळा।

—बखतो खिड़ियो

६ प्रस्थान, गमन।

उ०—१ श्री अकबर आग्रह करी, कास्मीर कियो रे बिहार। स्रीपुर नगर सोहामणु, तिहा वरताबी अमार। —स. कु.

उ०—२ जद भारमलजी स्वामी नें रुघनाथजी कनै मेल्या थांरा स्रावक चरचा रो कहै है सो चरचा करणी हुवै तो करो। जद रघुनाथजी बोल्या किणरं चरचा करणी है रे ? पछै घणो उपकार कर घणा नें समझाय स्वामीजी बिहार कीधो।

—भि. द्र.

उ०—३ जो वीर जिणंद बिहार करि, इण नगर ना बाग में आवै रे। तो घर छोडी अणगार हू थऊ, एहवी भावना भावै रे। —जयवांणी

उ०—४ पखो तडफडइ, बडा मांणस लडथडइ, काठ सडइ, हाळी हळ खडइ। आपणा घरि कादम फेडइ, बीजा काज मेडइ। पार पार न लीइ, साध बिहार न करीइ। —रा. सा. स.

७ जैन साधुओ का भिक्षा मागने हेतु जाने की क्रिया।

स स्त्री.—८ पंक्ति, कतार।

रू. भे.—बिहार, बीहार, बेहार ।

बिहारजात्र-सं. पु.—बिहार यात्रा । (जैन)

बिहारण-सं. पु. [सं. बिहारनम्] १ संहार, नाश ।
२ घूमने की क्रिया, टहलने की क्रिया ।
३ प्रस्थान करने की क्रिया, गमन ।
वि. १ संहार या नाश करने वाला ।
२ गमन करने वाला ।

बिहारणौ, बिहारबौ-क्रि. स.—१ चहल कदमी करना, घूमना, फिरना टहलना ।
२ मडराना, उड़ना ।
उ०—आपरा पांम्हणा (दुसमण) तो पथ निहारै, झगड़ा री वाट जोवै, अनै रिण खेत में मास रुधिर भखण वाळी ग्रीधा गेण आकास में बिहारै उड रही है । —बी. स. टी.
३ संहार करना, मारना ।
उ०—ग्रहि छळ 'अरजण' गौड, परठि मनवार अपारा । नजर टाळि नाराज, वहै घट हुवौ बिहारां । —सू. प्र.
४ चीरना, विदीर्ण करना ।
उ०—उभै मिसल अबखास, पड़ै धड़हड़ अणपारा । राव जाणि नरसिंघ, हुलै करि दयत बिहारां । —सू. प्र.
५ तहस-नहस करना, नष्ट करना ।
६ क्रीड़ा करना, खेल करना ।
उ०-१ खेडधणी सिरि लीजिया, हुई मुगल्ला हेल । ज्यौं गज वारि बिहारतां, वीचै वारिज वेल । —रा. रू.
उ०—२ परणीजै मधुपुरी 'अभौ' व्रदावन आयौ । पेखि धांम सुख परम भड़ां तोरथ मन भायौ । परखि निगम द्रुम पुंज हेक सुख कुंज निहारै, हेक पुळिण हित करै हेक ब्रळ जमण बिहारै ।
—रा. रू.
७ गमन करना, प्रस्थान करना ।
८ उपभोग करना, खाना ।
उ०—जग ईस स्वाद पी ऊख रस, जिम अवर वार अनारय । सुख परम दिनपति नृपति सेवत, विवध भोग बिहारयं ।
—रा. रू.
९—शोभा देना ।
१० रति क्रीड़ा करना, मैथुन करना, सभोग करना ।
११ देखो 'बैराणौ, बैराबौ' (रू. भे.)

बिहारणहार, हारौ (हारी), बिहारणियौ—वि० ।
बिहारिओड़ौ, बिहारियोड़ौ, बिहारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बिहारीजणौ, बिहारीजबौ—कर्म वा० ।
बिहारणौ, बिहारबौ—रू० भे० ।

बिहारियोड़ौ-भू का. कृ.—१ चहलकदमी किया हुआ, घूमा हुआ, टहला हुआ. २ मंडराया हुआ, उड़ा हुआ. ३ नाश किया हुआ ४ सहार किया हुवा. मारा हुआ. ५ चीरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ. ६ तहस-नहस किया हुआ, नष्ट किया हुआ. ७ क्रीड़ा किया हुवा, खेल किया हुआ. ८ गमन किया हुवा, प्रस्थान किया हुआ. ९ उपभोग किया हुआ, खाया हुआ. १० शोभा दिया हुआ. ११ रति क्रीडा वा सभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ
१२ देखो 'बैरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री बिहारियोड़ी)

बिहारियौ—देखो 'व्यवहारियौ' (रू. भे.)
उ०—बरस बावीस की बाली-बेस, दल कबाडचा, सिर किलकिला केस । हाट बिहारयां कइ जोवड्यो, कइ जोवड्यो राज-दुबारि ।
—बी. दे.

बिहारी-वि.—१ विहार करने वाला, विचरण करने वाला ।
२ गमन करने वाला, प्रस्थान करने वाला ।
३ नाश करने वाला ।
४ सहार करने वाला, मारने वाला ।
५ रतिक्रीडा या मैथुन करने वाला ।
स. पु. [स] १ श्रीकृष्ण का एक नाम ।
उ०—१ मीरा के गिरधारी मुरारी, राखौ लाज प्रभुजी हमारी । मैं हू दासी सदा तुमारी, तुम हो भलै बिहारी, चीर छोडो ।
—मीरा
उ०—२ हसै सारी नाग नारी उचारी बिहारी हूत, सवारी पधारी वळै लेतौ आजै सूक । कठै थारी वेस असी जुद्धकारी बातां करै फणाधारी दीठौ न छै आगकारी फूंक । —मुरारीदास बारहठ
उ०—३ विमळांनन विबुधेस बिहारी, सख चक्र धारी सुमण । भव तारण भूधर भय भंजण, हिरणगरभ त्रय ताप हरण ।
—र. ज. प्र.
उ०—४ गोकळ ग्रामी, सुर नर सामी । ए अवतारी, बाचि बिहारी । —पिं. प्र.
२ शिव, महादेव ।
३ ईश्वर, परमेश्वर ।
४ एक प्रकार का नीबू विशेष ।
उ०—बिहारी, गूदडियौ, कागदी तीन जात रा नीबू ।
—बां. दा. ख्यात
५ देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

रू. भे.—बहार, बिहारी, वेहारी ।

बिहारीकंद-स. पु. [सं.] एक प्रकार का जमीकंद विशेष जो औषधि के प्रयोग में लिया जाता है ।

बिहारीदासोत-स. पु.—१ राठोड़ों की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति ।

२ भाटी वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

—बां. दा. ख्यात

बिहाल, बिहालौ—देखो 'बेहाल' (रू. भे.)

उ०—१ भाग बिनां नहीं पाईयै, माणक मोती लाल । दुनियां कोडी हाथि लै, हुरीया भई बिहाल । —अनुभववांणी

उ०—२ दुनिया रोवै रोवणा, देख बिडाणी खाल । नाव सनेही बाहिरो, हरिया होय बिहाल । —अनुभववाणी

उ०—३ सबळ दळां कर 'बांनसी', आयौ फेर अचीत । फळ पायौ झाला घणी, थयौ बिहाला बीत । —रा. रू.

बिहाव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

बिहावणौ, बिहावबौ—१ देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिहाणौ, बिहाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ आवौ प्रीतम सेझ में, हस हस पूछूं बात । गळ मैं घातां बाहडी, मुक्तां बिहावै रात । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ रायसिंघ नूं कह्यौ "मोनूं थासूं अळगौ करस्यौ तौ राव थां ऊपर आवसी" तरै राठौड़ ठाकुरै कह्यौ 'जिण गांव कूकडौ न हुवै छै तठै पिण रात बिहावै छै" —नैणसी

उ०—३ ताहरा कोडीधज री फरड़की सुणियौ ताहरा राव खीवो बोलियौ—'भाई' कोडीधज घोडै रा फरडका सुणीजै छ, कोट पण एकलो छै बांभणियौ पण मास ५-६ हुवा आयौ बैठौ छै, उपद्रव दीसै छै । आजे कुसळ बिहावै । —नैणसी

उ०—४ कुसळ बिहावउ सज्जणां, पर मडळे पयांह । जउ बिह हिया न हारिस्यइ वळे मिळेवउ त्याह । —ढो. मा.

बिहावणहार, हारौ (हारी), बिहावणियौ—वि० ।

बिहाविश्रोड़ौ, बिहाबियोड़ौ बिहाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिहावीजणौ, बिहावीजबौ—कर्म भाव वा० ।

बिहावियोड़ौ—१ देखो 'विवाहियोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बिहायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिहावियोडी)

बिंहिसिक, बिंहिंसिग-वि.—अनेक प्रकार की हिंसाए करने वाला ।

(जैन)

बिहि—१ देखो 'बिधि' (रू. भे.)

उ०—१ हो बलण वेगी करै बालहा रे, हो वा रे,॥ हूं राखीसि सील रतन्न । हो लेख मिटइ नहीं बिहि लिख्या, हो रे, हो भूठा कीजइ तैं जतन्न । —स. कु.

उ०—२ जु रवि पस्चिम ऊगमइ, मेरु चलइ मही—मांहि । बिहि—तणा पणि जे लख्या, चतुर न चूकइ क्यांहि । —मा. कां. प्र.

२ देखो 'बेमाता' ।

उ०—बिहि अम्हारी वैरणी, पेला भवनी होय । सज्जन सिउं सुख मांणीइ, निलवटि निलख्या जोय । —मा. कां प्र.

बिहिचणौ, बिहिचबौ-क्रि. स.—१ विभक्त करना, तोड़ना ।

उ०—बिहिचौ मेरु माहागिरी नाप्यु, पात्र तणि ता पांणि । तू मूं दान करयू मि मही‌मांहां, मनि मोटी ए कांणि । —मळाख्यांन

२ देखो 'बांटणौ, वाटबौ' (रू. भे.)

बिहिचणहार, हारौ (हारी), बिहिचणियौ—वि० ।

बिहिचिग्रोड़ौ, बिहिचियोड़ौ, बिहिच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बिहिचीजणौ, बिहिचीजबौ—कर्म वा० ।

बिहिचियोड़ौ-भू. का कृ.—१ विभक्त किया हुवा, तोड़ा हुआ ।

२ देखो 'बांटियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बिहिचियोडी)

बिहित, बिहिति-वि. [स विहित] १ बनाया हुआ, अनुष्ठान किया हुआ, अनुष्ठित ।

२ निश्चित, नियुक्त या सुव्यवस्थित ।

३ निर्माणित, रचित ।

४ स्थापित ।

५ बांटा हुवा, विभक्त ।

६ शास्त्रसम्मत ठीक, उचित, उपयुक्त ।

उ०—१ बिहित सुणै व्रत बांणि एम चहुवांण उचारै । सको काल संचरै, न को रहियौ वीसारै । प्रगट मात पांडवां, सु तौ न गई वर सत्यै, श्रौ व्रत हय आपरो. हरी दीनौ पर हत्थै । —रा. रू.

उ०—२ आकुळ थ्या लीक केहवौ अचिरज, बछित छाया ए बिहित । सरण हेम दीमि लीधौ सूरिज सूरिज ही त्रिख आसरित ।

—वेलि.

स. पु. [सं. विहित] १ विधि विधान, कानून ।

२ आदेश, आज्ञा ।

[सं. विहित.] ३ कृति, रचना ।

रू. भे.—बिहित, बिहितु ।

बिहिमग्ग, बिहिमारग-स. पु. [स. विधिमार्ग] विधिमार्ग ।

उ०—सवि आचार विचार सार बिहिमग्ग पयासइ । भविय जण मण विमल कमल रवि जेम पयासइ । —ए. जे. का. स.

बिहिब-स. पु.—१ दूषित, आचार। (जैन)

२ अपराध, दोष, गलती।

उ०—विधाताइ करघु बिहिब. मरसव नि यम मेर। एक याचक, एक दाता, घणु दीसि फेर। —नळाख्यान

३ फरक, अंतर, भेद।

उ०—पंचायण जंबुक यथा, बिहिब वायस हंस। तिम माधव नइ अवर नर, दासि ! न जांणउ दस। —मा. कां. प्र.

बिहिल, बिहिलौ, बिहिलु, बिहिलौ, बिहिल्ल, बिहिल्लौ, बिहिल्य-वि.—काफी, बहुत, अधिक, पर्याप्त।

उ०—व्यास भणइ मत्रनइ उपाय, बिहिली व्रस्टि हुसइ गढ मांहि। गढ ऊपरि गढरोहा समइ, बूठा देव दिवस चउदमइ।

—का. दे. प्र.

२ दुःखी, पीडित।

उ०—लक्ष्मीपुंज ग्राश्रितवत्सल प्रकृतिप्रांजल, बिहिल्यां साधार, परोपकारैकव्यसन नीतिबांधव परनारी सहोदर स्निग्धालाप सज्जन चूडामणि अरथजनचिंतामणि इति श्रेस्ठि। —व. स.

३ देखो 'वहिलौ' (रू. भे.)

उ०—१ गाई बाई गुण करी, रीझवि जांणउं राय। अबला ! चालि ऊतावली, वेगि बिहिल्या पाय। —मा .का. प्र.

उ०—२ पवग पवग पलाण पलाण, बिहिल्ला रूढ हुवा वापाण। सुभट्ट सजोडा त्रिण्ह सहस्स, सग्रामि जिकै सवि दीस सकस्स।

—राउ जैतसी रौ रासौ

उ०—३ वीर, बिहिलु आवजे, कुसल माग तुहनि करे कारज मन वाछित, समइ सभारे मूहनि। —नळाख्यान

बिहिवा—देखो विवाह' (रू. भे.)

उ०—भीम राइ सवर्ण मुगू रे पुत्रीनि पीडा तन। बिहिवा नु समय थयु रे, अबला थई योवन। —नळाख्यान

बिहिवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

उ०—इंद्र कहि—'वरदान यो, देखसि नही प्रतिहार। ईछाइ तूं दरसन देज्यै, देखी विविध बिहिवार। —नळाख्यान

बिहिस्त-स. पु. [फा. बिहिश्त] स्वर्ग।

उ०—दीन दुनी सदकै करूं, टुक देखण दे दीदार। तन मन भी छिन-छिन करूं, बिहिस्त दोजख वार। —दादूवाणी

बिहीण, बिहीणौ—देखो 'विहीन' (रू. भे)

उ०—१ बिदर गया रा बादळा, बिदर विवेक बिहीण। बिदर छाह निरखं बहे, अलबेला अकुलीण। —बां. दा.

उ०—२ गिनका रौ जे नर ग्रहे, कबरी डंड करेण। ग्याग ग्रहै किमि दळण खळ, तेज बिहीण तेण। —बां. दा.

उ०—३ 'भगवत' सुतन सत्रां दळ भागा, निरदळिया त्रितलोक नर। कूरम चै न घालियौ किण ही, काळ बिहीणां चाळ कर।

—राजा मांनसिंघ भगवंतदासोत कछवाहा रौ गीत

बिहीन-वि [स.] १ बिना, रहित, बगैर।

२ त्यागा हुआ, छोडा हुआ।

३ नीच, निम्न, कमीना।

रू. भे.—बिहिन, बिहीण, बिहीन, वहीण, विहीण, विहीणौ।

बिहुंड-सं. पु. [स] हुण्ड राक्षस का पुत्र, एक राक्षस।

वि. वि.—नहुष ने इसके पिता हुण्ड का वध किया था अतः इसने नहुषवध हेतु शिव की तपस्या की थी किन्तु विष्णु ने मनमोहिनी स्त्री का रूप धारण कर इनकी तपस्या भग की थी। अन्त में यह पार्वती के द्वारा मारा गया था।

बिहुंडन-सं. पु. [सं॰] शिव का अनुचर विशेष।

बिहुंण, बिहुंणौ, बिहुण, बिहुणौ-वि.—१ तुच्छ, निम्न।

२ निर्बल, कमजोर।

उ०—नठ वीठू अरज कीवी, "घरां पधार परभात असवार हुयजे, जाय पुहचस्या। आप मु कजीयौ कर कामं लेसै ! आप के बिहुणा छा। —कुंवरसी सांखला री वारता

३ देखो 'विहूणौ' (रू. भे.)

उ०—१ हेम वरनी हेम गिर बाळी लहुवे-वेस, कथ बिहुंणी कामणी, माचौ कहि मदेस। साचौ कहैं संदेस वेग मीठा करूं,राज मुदै पट हृध्य रग महिला धरूं। —मा. वचनिका

उ०—२ पग बिहुणो पिण परदेसै भमै, आवै तुरतउ जाय। बैठो वहै अपणै घरि बापडो, तौ पिण चपल कहाय। —ध. व. ग्रं.

(स्त्री बिहुणी, बिहुणी)

बिहुव-क्रि वि —चारो ओर, हर तरफ।

उ०—घूघरी रोळ घटा सबद्द, मोवत्त पटं ढळ जोड मद्द। गुडिया गयद बिहुव गमेय, पाहाड जाण हालै पगेय। —गु. रू बं.

बिहूं—देखो 'बेऊं' (रू. भे.)

उ०—१ रिण मोहा रिण सूरमा 'वीको' 'सोम' बखांणि, नायक पायक भड निवड अरि भजण आगांणि। राण अरांणि अरि भाजितां रूक-हथ, सूर साराहिया 'सोम' 'वीको' समथ। खड पडतोस गौ बिहूं ठडं खरा, राय गुर बखांणं बधव रायसिंघ रा।

—हा. झा.

उ०—२ दूजै पौहरै रयण कै, मिळियत गुपफागुध्ध। धण पाळी, पिव पाखरयौ, बिहूं भला भड जुध्ध। —ढो. मा.

बिहूंण, बिहूंणौ—देखो 'बिहूणौ' (रू. भे.)

उ०—१ है कानै मोताहळ, कर पूंची कंठमाळ पै संकळ । राघौ नांम बिहूंण अनखांणी ढोर आदम्मी । —र. ज. प्र.

उ०—२ मूळ ब्याज दोऊ गया रे, घुर बौरे नहिं मेळ । साह बिहूंणौ सहर में, कूड़ी करेज केळ । —श्रीहरिरांमजी महाराज

उ०—३ ग्यांन बिहूंणा गुर मिल्या, सुरति बिहूंणा सिख । जन हरिया गुर सिख का, संसा मिट्या न चिख । —अनुभववांणी

उ०—४ धणी बिहूंणा धौंळहर, ढहि ढहि ढेर थियाह । हरिया पाछा आय कै, वास न को वसियाह । —अनुभववाणी

(स्त्री. बिहूणी)

बिहू, बिहूण, बिहूणड़ौ, बिहूणडौ, बिहूणौ—देखो 'बिहूणौ' (रू. भे.)

उ०—१ नितु नितु जोसी पूछोइ, नितु नितु सूकन सुभाव । नित नित निरति बिहूणडां, ग्राविइ वली वधाव । —मा. का. प्र.

उ०—२ इम अहनिसि आलोचतौ, मन सिधि मन परिणांम । तेल बिहूणा दीप परि, खिण खिण थातौ खाम । —मा. कां. प्र.

उ०—३ ज्योति जिसी छइ दीवडइ, तिम माधवि मुझ जांणि । नवपल्लव नेह-ख्रि-थकी, नेह बिहूणइ हांणि । —मा. का. प्र.

उ०—४ जलाल तौ बिन कोटडी. चंद बिहूणी रैण । तौ आयां चानण हुवै, दीसै भलास सैण । —जलाल बूबना री बात

उ०—५ प्रेम बिहूणी प्रीति जोमै मन न ठरै 'जसा' । रस विण पानां रीनि, रग न आवै राचणौ । —जसराज

उ०—६ दादू भाव हीन जे प्रथ्वी, दया बिहूणा देस । भक्ति नहीं भगवत की, तह कैसा परवेस । —दादूवाणी

उ०—७ राम बसै जिण जगळा हे सखी ! सौ हिज सुरग निवास । राम बिहूंणौ सुरग हीं सखी, तन उपजावै त्रास । —गी. रा.

(स्त्री. बिहूणड़ी, बिहूणडी, बिहूणी)

बिहून—देखो बिहूणौ' (रू. भे.)

बिहूवल—देखो 'विह्वल' (रू भे.)

उ०—गगा देवी बिहूवल थयो, काम बाण पीड्यौ ईस । —धरम पत्र

बिहेठ, बिहेड—स. पु.—विनाश, सहार । (जैन)

बिहृत—सं. पु. [स. विहृतम्] स्त्रियों के दस प्रकार के स्वाभाविक अलकारो मे से एक जिसमे लज्जा के कारण कहने के समय भी बात नहीं कही जाती है । (साहित्य)

बिहृति—स. स्त्री. [सं. विहृति] १ विहार, आमोद, प्रमोद क्रीडा ।

२ हटाने या छीनने की क्रिया ।

बिह्वल—वि. [सं.] १ भय, चिन्ता आदि के कारण घबराया हुआ, व्याकुल, बेचेन ।

उ०—१ रूप अनुपम रभ सम, उवा पदमी कहै याह । बार बार बिह्वल थकी, जपै आलिम आहि । —प. च. चौ.

उ० —२ सिबिका बइसी सचरइ, घरि थी राजलि जाइ । कांटि-वली विलोकती, विनता बिह्वल थाइ । —मा. कां. प्र.

२ खराब. विकृत । (अमरत)

३ चकित, विस्मित ।

४ भयभीत, डरा हुआ ।

उ०—पीली चोली पहिरणइ, काली फाली सेत्र । निरखी निरखी नाह नइ, बिह्वल विकसित नेत्र । —मा. कां. प्र.

५ पीडित, सन्तप्त ।

६ कुटिलनायुक्त । (मति)

उ०—लघु वइ लक्षण लाछिना, सामुद्रिक गुण सार । वेस्या मति बिह्वल थइ, चितइ चूक विचार । —मा. कां. प्र.

७ चिन्तित, उदास ।

उ०—वलवलती बिह्वल वदनि, वलती वदइ उदार । राजा रुठइ मनाविसूं, सूंपी संपति सार । —मा. कां. प्र.

रू. भे.—बिभळ, बिब्भल, बिहब्ळ, बिहवळ, बिह्वल, भिभल, भिभळ, भीभळ, भीभल, विवह्वल, बिहबळ, बिहळ, बिहल, बिहवल, बिहूवल, बीहळ, बिहल ।

अल्पा.—बिहवली, बिह्वली, बीहली, बीहलौ ।

बिह्वलता—सं. स्त्री.[स.] बिह्वल होने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

बीं—१ देखो 'बो' (रू. भे.)

उ०—१ पहर एक गोळी बही पण बाहरला जाणै उथा सो उवै लवाब री जायगा जाणै था सो बीं ठाव सूं बड गया । —मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ भरमल अहड़ी कामणी, बहडो चद प्रकास । काया लै घर कूं चल्या, रह्यो जीव बीं पास । —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ सौ दलकरण रै डेढ सौ घोडा पायगा माहे बाकी पटा-यता रा घोडा सौ इण तरह सू घोडा अढाई सौ बीं कन्है रहै । —सुदरदास भाटी बीकूपुरी री वारता

उ०—४ योगी कह्यो—बन माही म्हारै साथ एक कारज सिद्ध करस्या । राजा कह्यो—हालो । तद योगी राजा नूं बन माही लेय गयो । बीं ठाव एक सीसम रो वख । तो पर एक मुरदो बंधियो छै । —सिंघासण बत्तीसी

२ देखो 'भी' (रू. भे.)

३ देखो 'बी' (रू. भे.)

बींकणी, बींकबौ—क्रि. स. [स. वीक्षण] १ ऊन, रुई आदि को हाथ से साफ करना।

२ देखो 'बींखणी, बींखबौ' (रू. भे.)

बींकणहार, हारौ (हारी), बींकणियौ—वि०।

बींकियोड़ौ, बींकियोड़ौ, बींक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बींकीजणौ, बींकीजबौ—कर्म वा०।

बींखणी, बींखबौ, बींखणौ, बींखबौ – रू० भे०।

बींकियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ हाथ से साफ की हुई ऊन, रुई आदि।

२ देखो 'बींखियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री बींकियोड़ी)

बींख—देखो 'बीख' (रू. भे)

उ०—"इतला दिन हूं आंणती रे ह्रा" एहनी हिवै तौ सोहग सुंदरी रे हां, पुत्री नै दीयै सीख, बाई ! सांभळौ। सासरीया सतोखिजै रे हां, हलवै भरजै बींख, बाई ! सांभळौ। —स्रीपाळरास

बींखणी, बींखबौ—१ देखो 'बींकणी, बींकबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बीखणी, बीखबौ' (रू. भे.)

बींखणहार, हारौ (हारी), बींखणियौ—वि०।

बींखियोड़ौ, बींखियोड़ौ बींख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बींखीजणौ, बींखीजबौ—कर्म वा०।

बींखियोड़ौ—१ देखो 'बींकियोड़ौ (रू. भे.)

२ देखो 'बींखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बींखियोड़ी)

बींची—स. स्त्री.—१ विचर्चिका नामक कुष्ट रोग। (अमरत)

२ एक प्रकार का रक्त विकार का रोग (अमरत)

बींछयौ, बींछियौ, बींछीयौ, बींछीयौ—देखो 'बिछियौ' (रू. भे.) (व. स.)

उ०—१ पाय पीरोजी बांणही, अगूठि अणवट्ट। ठीक जड़ित ठाहरि रहिया, वली बींछीआ खट्ट। —मा. का. प्र.

उ०—२ अणोट बींछिया उदार, पाय पंख पंकज। अनग ह्वै छनंग अग, रंग रंग में रज। —सू. प्र.

बींजण—१ देखो 'बीजण' (रू. भे)

२ देखो 'बींजणौ' (रू. भे.)

उ०—१ बीनता समइ न वेदना, करतां कोडि उपाय। वाउ विलोलइ बींजणइ, को चदन घसी लाय। —मा. का. प्र.

उ०—२ सघण सूकडि सइरि सु सीचीइ, पवण पूरिहिं बींजण बीजीइ। कमल नै दलि साथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ। —सालिसूरि

बींजणि, बींजणौ—१ देखो 'बीजणौ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—माधव जिहां पगलां भरि, तिहां पड्यौ मुझ राख। पवन वसइ तिणि बींजणि, साबद सारेअ लाख। —मा. का. प्र.

२ देखो 'बीजणौ' (रू. भे.)

बींजणौ—देखो 'बीजणौ' (रू. भे.)

उ०—जलंद्रा सरीरि लगाडीयइ, गुलाब तणा अभ्यंग कीजइ, बावन स्रीखड घसीयइ। चउदिसि बींजणा फिरइं द्राक्षा आंबिली पांन कीजइ। कलम सालि तणा साथउ रा करवा कीजइं। —रा सा. स.

उ०—२ न लेवै बींजणं वाय, स्निग्ध वासी न खाय। भोजन ग्रही थको ए, जीम्या होवै व्रत-धको ए। —जयवांणी

उ०—३ गुखं बैठी गोरड़ी रे बींजणं ढोलति वाय। पेट नै काजै पदमणी रे, जावै घर घर जाय। —स. कु.

बींजणी, बींजबौ—देखो 'बींजणी, बीजबौ' (रू. भे.)

उ०—मस्तकि छत्र धरावतउ, चामर बींजता सार रे। आज तउ मस्तकइ रवि तपइ, डास मसक भणकार रे। —स. कु.

उ०—२'''मेवत्री तणा ताड वेढ भमिया, अगर प्रतिबोधिउ, कस्तूरागर ऊखेविउ, पंचवरण्ण पाडु तणा उल्लोच ताड्या, मुक्ताफल तणी त्रिसरी मोतीसरी लबावी गजा आस्थांन देउ बइठउ छइ, मोरपीछ तणे बीजीणे वाउ बींजइ'''। —व. म.

उ०—३ सघण सूकडि सइरि सु सीचीइ, पवण पूरिहिं बींजण बींजीइ। कमल नै दलि साथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ। —सालिसूरि

बींजणहार, हारौ (हारी), बींजणियौ—वि०।

बींजियोड़ौ, बींजियोड़ौ, बींज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बींजीजणौ, बींजीजबौ—कर्म वा०।

बींजाचळ, बींजाचळौ, बींजाचाळ, बींजाचाळौ—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—१ मलहपं मंगळा, सूंड लल्लवळा, आगळौ ऊजळा, सेत दांतूसळा। सोहिया सांमळा,वप्पि बींजाचळा, स्त्रंग कूभाथळा, बोम किरि वद्दळा। —गु रू. ब.

उ०—२ कुजरां ढूंहरी ढाळ कूंभाथळं, बादळा जाण फाबत्त बींजाचळं। धम्मळी पीयळी लाल नीली धज, गाजतां जांण गोरंभ दीसै गजं। —गु. रू. बं.

बींजाणौ, बींजाबौ—देखो 'बीजाणौ, बीजाबौ' (रू. भे.)

उ०—'''मनइ इक सुवरणमय रूपमय रसित विविध प्रकारि जे छइ पालखी, चकडोल, मनइ तरुआरि स रमता, भाला उछालता, हाकहीक करता एहवं पायकै परिवारिउ, छत्र धरातइ, चमर बींजातइ, नफेरी सरणाइ वरगा ढोल झालर डुडि दमांमा दडदडी अदंग नीसांण प्रमुख वाजित्र वाजइ । —व. स.

बींजाणहार, हारो (हारी), बींजाणियो—वि० ।

बींजायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बींजाईजणो, बींजाईजबो—कर्म वा० ।

बींजायोड़ो—देखो 'बीजायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीजायोडी)

बींजासणियां—स. स्त्री.—एक लोक देवियो का समूह विशेष, जिनके प्रकोप से बात रोग होते हैं । (अमरत)

वि. वि. – देखो मावलियां

बींजियोड़ो—देखो 'बीजियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीजियोडी)

बींजीणो – देखो 'बीजणो' (रू. भे.)

उ०—'''सेवत्री तणा ताड वेढ भमिया, अगर प्रतिबोधिउ, कस्तूरागर ऊसेविउ. पचरण्ण पाट्ट तणा उल्लोच ताड्या, मुक्ताफल तणी त्रिसरि मोतीसरी लबावी, राजा आस्थांन देउ बइठउ छइ, मोरवींछ तणे बींजीणे वाउ वीजइ''' । —व. स.

बींझ – देखो 'विंध्य' (रू. भे.)

उ०—१ इहा सु पजर मन छहा, जय जाणइला लोइ । नयणा आडा बींझ वन, मनह न आडउ कोइ । —ढो. मा.

उ०—२ प्रीति अलियळ केतकी नइ, प्रीति बींझ गयद । तिय रुखमणी सु नेह धरज्यो, प्रीति परमाणंद । —रुकमणी मंगळ

बींझगिर, बींझगिरी – देखो 'विंध्यगिरि' (रू. भे.)

बींझणो—देखो 'बीजणो' (रू भे.)

बींझणो, बींझबो—देखो 'बीजणो, बीजबो' (रू. भे)

उ०—१ भाजी निसही जिनग्रह पेसैं, धरैं छत्र नैं मडप मे बेसै । पहिरैं वस्त्र अनैं पनही, चामर बींझैं मनठांम नही । —वृत्त

उ०—२ जिनजी कुं देखि मेरउ मन रीझइ री । तीन छत्र सिर ऊपर सोहइ, आप इंद्र चामर बींझइ री । —स. कु.

बींझणहार, हारो (हारी), बींझणियो—वि० ।

बींझिओड़ो, बींझियोड़ो, बींझ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बींझीजणो, बींझीजबो—कम वा० ।

बींझवन—स. पु —एक वन विशेष जहा हाथी बहुत पाए जाते हैं, सुदर वन ।

रू. भे.—वींझवण, बींझवन, वीझावण, वीझावन ।

बींझाचळ, बींझाचल—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—मयण कांम मूरत्ति, गात गिरवर बींझाचळ । बडो वीर वीराधि, सिध रूपी सहस बळ । —गु. रू. ब.

बींझाजळ, बींझाजल, बींझाभळ, बींझाभल—देखो 'विंध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—१ बींझाजळ रूप गयंद चढि मेघाडबर विराजै । नौबतूं कै निहाव वीरारस वाजै । जिस बखत जळाबोळ हालोहळ सैं फोज हल्ली । नाळूं कै निहाव सेती धरती थरसली । —सू. प्र.

उ०—२ धुबै राग सिधुवा, गजै नाळियां त्र बागळ । मेळा भड़ गहमहै, वहै गोळा बींझाभळ । —सू. प्र.

बींट—सं. पु. [स. विष्टा] १ पक्षियों की बीट या विष्टा ।

उ०—राजा कह्यो—थूं ईं बता उडता पंछियां नै बींट करता म्हैं कीकर पाल सकूं । कोई मिनख री जायो कीं भूल करै तौ म्हैं उण री सात पीढियां नै उकळता कडावां मे भूज न्हाकूं पण आं अबूझ पछिया माथै खीज करणी तौ बिरथा है । —फुलवाड़ी

उ०—२ राजा कह्यो—थूं तो नित सौ वार मरिया करै थारै मरणा री कांई । पण एक मांमूली सी बींट वास्तै म्हैं अणगिण पछिया नै मार नीं सकूं । लुगायां री कैणो मांनै. उणनै तो राजा बणणो ई नी चाहिजै । —फुलवाड़ी

२ आवेष्टन, घेरा ।

३ टापू, द्वीप ।

उ०—मांझि समंदा बींट घर, जळ सूं जांमीपत्त । किणहीं अवगुण कुंभड़ी, कुरळी माझिम रत्त । —ढो. मा.

४ देखो 'बीटो' (मह., रू. भे.)

रू. भे.—बिंट, बिंट, बोट, बीठ, बींट, विंट ।

बींटण—स. पु. [सं. वेष्टन] १ पुस्तक आदि लपेटने का वस्त्र ।

२ बिस्तर आदि बाधने की रस्सी ।

रू भे.—बीटण ।

बींटणी—देखो 'बीटणी' (रू. भे.)

बींटणो—देखो 'बींटो' (रू. भे.)

उ०—कोटवाळ राजी हुवो, कह्यो, देखो गाठड़ो माहै कांसूं छै । जदै पयादां उतावळां मुजरायता खोलणी माडी । जठै तीजो वट खोलै तिठै लोही लागो दीठो । सगळा चमक्या नैं बींटणो उघाड़ै तो माटी मारयो निजर पड़ियो । —जगदेव पवार री बात

बींटणो, बींटबो—क्रि. सं.—१ किसी शहर, दुर्ग आदि को अधिकार में करने हेतु उसे आवेष्ठित करना, घेरना ।

उ०—१ रामा री पटो लीयो नै राव चंद्रसेन नै मुगळा नूं लगाय दीया । जेठ सुद १२ रामो मुगळ रांमबावड़ी उतरीया । दिन १८ नगर बींट रह्या । —राव चंद्रसेन री बात ।

उ०—२ पातिसाह गुजराति ल्यौ । हूं हिंदुग देस आइ करि लेहसि ।

उठा हूंती मिरजौ सोकति मिरियारि माहै होइ नै नागौर आइ बींटियौ।	—द. वि.

उ०—३ त्रिण कण कापड जल मांहि लीध, गढरोहौ मालव पति कीध। सायर बींटी लंका जेम, उज्जेणी बींटी रह्यौ तेम।	—श्रीपालरास

उ०—४ कमधज बींट नागौर कोट, चळ दळ अरि कीधा एक चोट। 'इंद्रसिंघ' देख दळ बळ अपार, वै कोट जिण लियौ धरम द्वार।	—रा रू.

२ गोल करना, लपेटना, समेटना। (बिस्तर आदि)

३ चारो ओर से आक्रमण करना।

४ आच्छादित करना, ढकना।

५ लपेटना।

उ०—१ अन्न अदक पय परिहारी, आभरण ऊवेखि। वकुल त्वचा बींटी करि, तरुणी तापस-वेखि।	—मा. का प्र

उ०—२ बावडी उण नै अमला माहे वेखबर देखि, तरै उणरी ही तलवार काढि गळौ कीधौ। हाथ जुदा जुदा कातिया पगा रा जाघा रा जुदा जुदा तलता कीधा करनै चादणी माहे घड़ देनै बाधियौ। ऊपरा पिलिंग-पोस बींटियौ। तिण ऊपर जाजम छोटी थी, तिकी बींटी। गाठ गाढी संठी बाधी।	—जगदेव पंवार री बात

६ बाहुपाश मे लेना, अंकमाल मे लेना।

उ०—रहै उमा भुज बींटियौ, नव कोपळ रै रंग। आदर पावै कठ उण, सूर तणौ उतमग।	- बा. दा.

७ वस्त्र, कवच आदि को पहनना, धारण करना।

८ वस्त्र, कवच, आदि पहनाना, धारण कराना।

९ मढना, आच्छादित करना।

उ०—तठा उपरायत पताखा सू बादळा छोलजै छै। सू किण भात रा बादळा छै? हळवद रा, मोरवो रा अजार रा, भरवछ रा, हालोर रा छै। रूपै टूटी साकळी लागी छै। घणी सिलेहटी अटा-यण मे बींटिया थका, ऊपरा बेवडी-तेवडी झालरी मे गरकाब किया थका छै।	—रा. सा. स.

क्रि. अ.—१० चारो ओर हो जाना, चारो ओर फेल जाना।

उ०—१ सिघा माळ सू बीटियौ ज्यूं हेमाळ सदा लहै सोभा, वहै चंद्र माळतारा वीटियौ वखाण। वीटियौ अमरामाळ मेर वदे कहै वातां, रहै पातामाळ सूं बींटियौ 'भीमौ राण।

—कविराजा बाकीदास

उ०—२ क्षणि नान्हा क्षणि मोटा दीसइ, माहोमाहिं खुसइ बेउ रीसइ। बर्धात्र बींटोउ राउ दुर्जोहणु चिहु पइवि बीटोउ द्रोणु।

—सालिभद्र सूरि

उ०—३ तव जादव अमरागिय लागिय रहिया पागि। बींटीउ प्रभु परमेसरी नीसरी न सकइ मागि।	—जयसेखर सूरि

११ आवेष्टित होना, घिरना।

उ०—वारागना वमन बींटाणौ, घाइ घाइ तरण करै घणौ। 'ऊदा' हरै नाखिया अऊणा, पौति घनै अवतार पणौ।

—पूरणमल भाणावत री गीत

१२ जडना।

बींटणहार, हारौ (हारी), बींटणियौ—वि०।

बींटिओडौ, बींटियोडौ, बींट्योडौ—भू० का० कृ०।

बींटीजणौ, बींटीजबौ - कर्म वा०, भाव वा०।

बिंटणौ, बिंटबौ, बिंटूणौ, बिंटूबौ, बिंटणौ, बिंटबौ, बींटणौ, बींटबौ, बिंटणौ, बिंटबौ, बिंटूणौ, बिंटूबौ, बीटणौ, बीटबौ—रू० भे०।

बींटळी, बींटली-स स्त्री —१ पगडी, साफा।

उ०—बीरा री चिलको बींटली, भावजा को चिलक्यो जी चीर। उठ गोरी उठ सावळी, बाई सोदरा बाहर आव।	—लो. गी

रू. भे.—बीटली, बीटलो, बींटुळी, बीटुली, बीठली।

२ देखो 'बींटळी' (रू. भे.)

उ०—ताहरा बीमै मुहूर्त नू कह्यो—'जावो छो गोठ जीमण। राव नूं बींटळी मता चढाय देज्यौ। ताहरा बीटली चढसी ताहरा रेया री डूगरी देखसी, ताहरा सहसो चीलां आवसी।

—नैणसी

३ देखो 'बींटी' (अल्पा रू भे)

उ०—कर कगीय ठोमी बाकुडी, बींटली विविध प्रकारि। मुद्रडी हीरै जडी नई, कनक ककण सार।	—रुकमणी मंगळ

४ देखो 'बींटणी

बींटाणौ, बींटाबौ-क्रि स [बींटणौ क्रिया का प्रे रू.] १ किसी शहर दुर्ग आदि को अधिकार मे करने हेतु उसे आवेष्टित कराना घिराना।

२ गोल कराना, लपेटाना, समेटाना। (बिस्तर आदि)

३ चारो ओर से आक्रमण कराना।

४ आच्छादित कराना, ढकाना।

५ लपेटाना।

६ बाहु पाश मे लेने को प्रवृत्त कराना, अंकमाल मे लिवाना।

७ वस्त्र, कवचादि पहनाना, धारण कराना।

८ मढाना, आच्छादित कराना।

९ चारो ओर कर देना या फैला देना।

१० आवेष्टित होने के लिए प्रवृत करना, घिरने के लिए प्रेरित करना।

बींटाणहार, हारौ (हारी), बींटाणियौ—वि०।

बींटायोडौ—भू० का० कृ०।

बींटाईजणौ, बींटाईजबौ—कर्म वा०।

बींटणो, बींटबो, बीटणो, बीटबो, बिंटणो, बिंटबो
—रू० भे०।

बींटायोड़ो-भू का. कृ.—१ किसी शहर, दुर्ग ग्रादि को अधिकार मे करने हेतु उसे आवेष्टित कराया हुआ, घिराया हुआ. २ गोल कराया हुआ, लपेटाया हुआ, समेटाया हुआ। (विस्तरादि) ३ चारों ओर से आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया आच्छादित करवाया, हुआ, ढकाया हुआ. ५ लपेटाया हुआ. ६ बाहु पाश मे लेने के लिए प्रेरित किया हुआ, अकमाल मे लिवाया हुआ. ७ वस्त्र, कवच आदि पहनाया हुआ, धारण कराया हुआ. ८ मढाया हुआ, आच्छादित कराया हुआ. ९ चारों ओर किया हुआ, फैलाया हुआ. १० आवेष्टित होने के लिए प्रवृत्त किया हुआ, घिरने के लिए प्रेरित किया हुआ।

बींटियोड़ो-भू. का. कृ—१ किसी शहर, दुर्गादि को अधिकार मे करने हेतु उसे आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ. २ गोल किया हुआ, लपेटा हुआ, समेटा हुआ. ३ चारो ओर से आक्रमण किया हुआ. ४ आच्छादित किया हुआ, ढका हुआ. ५ लपेटा हुआ, लिपटाया हुआ, ६ बाहुपाश मे लिया हुआ, अक- माल मे लिया हुआ. ७ वस्त्र कवच आदि पहना हुआ, धारण किया हुआ. ८ वस्त्र कवच आदि पहनाया हुआ, धारण कराया हुआ. ९ चारो ओर हुवा हुआ, चारो ओर फैला हुआ. १० आवेष्टित हुवा हुआ, घिरा हुआ. ११ जडा हुआ।
(स्त्री. बींटियोडी)

बींटी—देखो 'बींटी' (रू. भे)

उ०—१ छुरी रै हसतो मुहरं री थी मो वोहत बस थी। सो रुपाटै माहे खोळियो। बींटी हाथ मे मोहर री थी, सो खोळी। पछै आप री आख खोळ वडारण री आख खोळाय आप रै हाथ सु भरमल नै दी। —कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ मोतिया री हार चौढ पच-लडी विराज रह्या छै। जडाव रा बाजूबंध काकण रतन-चोक आरसी बींटी बिराज रही छै। बळै चूडो सोनेरी बगडीदार विराजै छै। जाणै काळी घटा मे बीज चमकै छै। —रा. सा. स.

उ०—३ जीमणा हाथ री चिट्टूड़ी आगळी धर्क करनै कंवण लागा आ छोटी सी बींटी दस हजार रिपिया री है, म्हारी ग्रै पगरखिया हजार रिपिया री है अर थानै की दुदकाई नी दीसै। आपरी आख्या मे कठैई जाळी तो नी है। —फुलवाड़ी

बींटोरो—देखो 'भींटोरो' (रू. भे.)

बींटो-स. पु.—दरी आदि मे लपेट के साथ बाधा हुआ कपडे आदि का गोल बिस्तर।

२ देखो 'बींटी' (रू. भे.)

मह,—बीट, बिट, बोटो।

बींठो—देखो 'बींटी' (रू. भे.)

उ०—जे सीख दिया रै दूजै दिन कै बरस दोय बरस पछै बाई री अणबींती मौत व्हैगी तो सगळो बींठो, दस-दायजो पूंळो नीं जावेला! कमाई करण वाळा नै हजारू वातां री ध्यांन राखणो पड़ै। —फुलवाड़ी

बींडी—स. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—'''गढगजी सवागजी चुगजी पटणी पटपाटू, पचवरण छींट, नीलवटा चकवटा धोलवटां मुहिवटा नाटी दोटी घटी कठपीठ पागडी बींडी रेट चूनडी पातलसाडी, नदरबारी पाघडी, पांमडी लोवडी, वाहणवही लोवडी'''। —व. स.

२ देखो 'भिंडी' (रू भे)

बींडो—देखो 'भिडी' (अल्पा, रू. भे.)

बींण—१ देखो 'वीणा' (रू. भे)

२ देखो 'बिना' (रू. भे.)

बींणणो, बींणबो-क्रि. स—छांटना, टालना।

उ०—प्रतापसिंह माथै निजर पड़ताई वो तारा री गळाई उण कानी तूटो, इतरै लारली भीड़ माथै आय पड़ी छता पण नेड़ा आयोडा तीन च्यारा नै बींणनै वीर री डाढाळी बुई सो प्रतापसिंह री माथो जमी माथै लुटतो निजर आयो। —अमर चूनड़ी

२ देखो 'बिणणो, बिणबो' (रू भे.)

३ देखो 'बुणणो, बुणबो' (रू. भे.)

बींणणहार, हारो (हारी), बींणणियो—वि०।
बींणिओड़ो, बींणियोड़ो, बींण्योड़ो—भू० का० कृ०।
बींणीजबो, बींणीजबो—कर्म वा०।

बींणती—देखो 'विनती '(रू भे.)

उ०—कठै अगन, जळ, पवन, धुंवै री मेघ अंदेसो? कठैक पाटक पुरख लिजावण जोग संदेसो? भूल्यो इतरा भेद बींणती मेघ करंता न चेत अचेतण ग्यांन काम-कबाण चढता। —मेघ

बींणियोड़ो-भू का कृ.—१ छाटा हुआ, टाला हुआ।

२ देखो 'बिणियोडो' (रू. भे.)

३ देखो 'बुणियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. बींणियोडी)

बींद—देखो 'बीद' (रू. भे.)

उ०—१ कोई वीर पुरख परणीजियो नै दूजै दिन सासरा माथै दुसमण आया तठै साळो नै बहनोई सत्रुग्रा नै पूगा तठै बींद वणियोडै हीज झगडा रै भूखै तरवारा आगै सरीर पुरजा पुरज कर विखेरियो। —बी. स. टी.

उ०—२ हिंदवा राव हुयवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरदां। गई स्रुग विवाणा बैस इंद्र आगळी, वुही वारंगना बिना बींदां।
—महाराजा जसवतसिंह री गीत

उ०—३ आसकन्न वडो एकाधपति, 'नोबउत' नमौ आतम सकत्ति। ओपमा करनं अण-नीद, वरियाम कुआरी घडा बींद।
—गु. रू. बं.

उ०—४ 'जैतमाल' अण-पाल, बींद मेवाड तणी घड। सिवि-यांणे सोझति, 'भांण' रोळिया भडा घड।
—गु रू. बं.

उ०—५ रुद्रमाळ रचावा। पहाडा नै जळ चाढां। इतरी सामळी नै सभ नै निसभ बेऊ दावाई भाई बोलिया—उवाह उवाह। भणी रा बींद। रिण मे बावळा। बांकी मूंछाळा।
—मा. वचनिका

(स्त्री बींदणी)

बींदड़—१ देखो 'बींद' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बींदड़ जेड़ी बींदड़ी, जोड़ी तुली है जोर। गळ कंठी भुज भुजबद, माथा ऊपर मोड़।
—सांतिलाल

२ देखो 'बींदळ (रू. भे.)

उ०—जंप सखी! म्हारा जणणि, समर करै अड़माळ। बींदड़ बजाय बिग्रहा, बीजड़ ह्वै बीबाळ।
—रैवतसिंह भाटी

बींदड़लो—देखो 'बींदड़ी' (अल्पा., रू. भे.)

बींदड़ी-सं. स्त्री.—१ विवाह आदि के लिये निमन्त्रण पत्र, कुकुम-पत्रिका।

२ देखो 'बींदड़ी' (रू. भे.)

३ देखो 'बींदणी' (रू. भे.)

उ०—बींदड़ जेड़ी बींदड़ी, जोड़ी तुली है जोर। गळ कंठी भुज भुजबद, माथा ऊपर मोड़।
—सांतिलाल

बींदड़ो—१ देखो 'बींदड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बींद' (अल्पा, रू. भे.)

बींदणी—देखो 'बींदणी' (रू. भे.)

उ०—१ सुरति करि आरती निरत नेता लीयां, सांम समेहळं मिळै सारा। ब्रह्म वर बींदणी खेरवटी खरी,हद ज्यूं ओवडै इमी धारा।
—अनुभववाणी

उ०—२ मन ई मन सोचण लागा कै आ कोई डाकण, भूतणी कै स्यारी तौ किणी भाव नी व्है सकै। देवता री पूजा सारू घर सूं निकळी। किणी धनवती री नवी बींदणी दीसै।
—फुलवाड़ी

उ०—३ बींदणी अपूठी होय मूंडो ऊघाड़ बैठगी। ऊबो जोयो। पतळी पतळी लीली चेर लडाकूम सांगरिया ई सांगरिया देखता ई कौया मे ठाडोळाई वापरगी।
—फुलवाड़ी

उ०—४ तद पदमावती वर देख राजी हुई.। उठै बींद नुं तोरण बांदाय चवरी लै आया। अर बींदणी आंण हथळेवो जोड़ परणाया।
—ठकुरै साहू री बात

बींदणी, बींदबौ—देखो 'बींधणी, बींधबौ' (रू. भे.)

बींदणहार, हारौ (हारी), बींदणियौ—वि०।

बींदिवोड़ौ, बींदियोड़ो, बींदयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बींदीजणो, बींदीजबौ—कर्म वा०।

बींदराजा—देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—फेरा रै पै'ली हथळेवा में बींदराजा री हाथ कांई झिलियौ, जांणै गिगन रा नवलख तारा बींदणी री हथाळी में आय खिरिया उण री नस नस मे बीजळियां खिवण लागी।
—फुलवाड़ी

बींदळ-स. पु.—नपुंसक, हिजड़ा।

उ०—१ दुकल दुरंगा दहण, बद बद सहु खग वार। की बींदळ विग्रह करै, हथ ताळयां हथियार।
—रैवतसिंह भाटी

उ०—२ बींदळ बीस हजार, हैमाळे गळिया हुता। करम लिखी करतार, राका नै राजा किया।
—अग्यात

रू. भे.—बींदड़।

बींदावन—देखो 'व्रंदावन' (रू. भे.)

बींदियोड़ो—देखो 'बींधियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बींदियोडी)

बींदोळी, बींदोली—१ देखो 'बींदोली' (रू. भे.)

२ देखो 'बदोळी' (रू. भे.)

बींदोळो, बींदोलो-स. पु.—१ दूल्हे या दुल्हन का जूता।

२ देखो 'बदोळो' (रू. भे.)

रू भे.—बीनोळो।

बींध—देखो 'बींद' (रू. भे.)

उ०—बहण बींध कुंरद सपंक्र दाळिद बहण, तप पड़ग अंगभाव अवतार। कोक सिख जडळ जोगेसरां कविंदा, सूर सक्र अपग 'सिव' वियो सिरदार।
—महाराजा छत्रसिंह हाडा री गीत

बींधणो, बींधबो-क्रि. अ. स. १ आर-पार होना, आर-पार निकलना।

२ दबना, विवश होना।

उ०—जीव संताप्या मद घणा, पर आसायें बींध। बलि रात्रि भोजन करघा, काज अकारज कीध।
—वि. कु.

३ आर-पार करना।

४ दबोचना।

५ देखो 'बींधणो, बीधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जासतां बूझता हाथां करने धोखो खायौ। पण अबै व्है

काई । सपाडो करघोड़ा ऊघाडा डोल । पोह री ठारी हाडकां नै बींधती ही । माथा ऊफमनै भरमंड ।व्हेगा । —फुलवाड़ी

उ०—१ ताहरां रायसिंघ बोलियो—कूंभा ! क्यूं उतरै ? म्हारा हाथ देख । मिगळा ही नूं कबूतर दाई बींधूं । ताहरा कूंभो बोलियो—रावळ मलीनाथजी री म्राण छै, बोलो तो । —नैणसी

उ०—३ जउ सूकी तुहइ तुलसिरी, जउ बींधी तुहइ मोतिसिरी । जउ डुहलूं तुहइ गंगाजल जाणि, जउ थोडी तुहइ सपुरिस वाणि ।

—नळदवदंती रास

६ देखो 'बिंधणी, बिंधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लगी सबद की चोट, बींध गई विच काळिजो । हरिया ग्रोर न ग्रोट, सतगुर वाह्या मूठ भरि । —ग्रनुभववाणी

उ०—२ सबद तणी ताह मार, ऊठै सूळ सरीर मे । हरिया इणी न धार, नख चख सारा बींध्या । —ग्रनुभववाणी

उ०—३ सैर मे सीवळ री रौळाटी फैलियो । घर-घर मे छोटा वडा रै सीवळ निकळै । कमळा रै ग्री करम री ग्राय वाजी । घणी दोरी सीवळ निकळी, रूं रूं बींधीजग्यो । —वरसगांठ

बींधणहार, हारौ (हारी), बींधणियौ—वि० ।

बींधिग्रोडौ, बींधियोडौ. बींध्योडौ—भू० का० कृ० ।

बींधीजणौ, बींधीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

बींधाणौ बींधाबौ—देखो बिंधाणौ, बिंधाबौ' (रू भे)

बींधाणहार, हारौ (हारी), बींधाणियौ—वि० ।

बींधायोडौ—भू० का० कृ० ।

बींधाईजणौ, बींधाईजबौ—कर्म वा० ।

बींधायोड़ौ—देखो 'बिंधायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बींधायोडी)

बींधावणौ, बींधावबौ—देखो 'बिंधाणौ बिंधाबौ' (रू. भे.)

बींधावणहार, हारौ (हारी), बींधावणियौ—वि० ।

बींधाविग्रोडौ, बींधावियोडौ, बींधाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बींधावीजणौ, बींधावीजबौ—कर्म वा० ।

बींधावियोड़ौ—देखो 'बिंधायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बींधावियोड़ी)

बींधियोड़ौ—१ ग्रार पार हुवा हुग्रा, ग्रार पार निकला हुग्रा. २ दबा हुग्रा, विवश हुवा हुग्रा. ३ ग्रार पार किया हुग्रा । ४ दबोचा हुग्रा ।

५ देखो 'बिंधियोड़ौ' (रू. भे.)

६ देखो 'बींधियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बींधियोड़ी)

बींन—१ देखो 'बीणा' (रू. भे.)

२ देखो 'बिना' (रू. भे.)

३ देखो 'बींद' (रू. भे)

बींनणी—देखो 'बींदणी' (रू. भे)

बींनोळी—१ देखो 'बदोळी' (रू भे.)

२ देखो 'बींदोली' (रू. भे)

बींनोळौ—१ देखो 'बींदोलो' (रू भे)

२ देखो 'बदोळौ' (रू. भे)

बींफरणौ, बींफरबौ—देखो 'बिफरणौ बिफरबौ' (रू. भे)

उ०—धारण सलाह चित नह धरै, ग्रारण करण उतावळौ । बावळा गयंद मसता बिधी, बींफरियौ रिण बावळौ । —सू. प्र.

बींफरणहार, हारौ (हारी), बींफरणियौ—वि० ।

बींफरिग्रोडौ, बींफरियोडौ, बींफरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बींफरीजणौ, बींफरीजबौ—भाव वा० ।

बींफरियोड़ौ—देखो 'विफरियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बींफरियोडी)

बींभर—देखो 'भींभर' (रू. भे)

बींभरणौ, बींभरबौ—देखो 'भींभरणौ, भींभरबौ' (रू. भे)

उ०—१ जुडै हिक बींभरना जम दूत, कढै हिक मारि ग्रणी सर कूत । वहै हिक घाउ वदै निम वाण, रिखै हिक गोळियां रिण-ढाण । —गु. रू. बं.

उ०—भाग रौ धणी सोभाग रो भूकीयो, त्याग री खाटियौ वाट खावै । वेहू राहा वीचै नित बादै 'बलु', बींभरै खेत नीसाण बावै ।

—बलुजी चापावत री गीत

२ देखो 'विभरणौ, विभरबौ' (रू भे)

बींभरणहार, हारौ (हारी), बींभरणियौ—वि० ।

बींभरिग्रोडौ, बींभरियोडौ, बींभरयोडौ—भू० का० कृ० ।

बींभरीजणौ, बींभरीजबौ—भाव वा० ।

बींभरियोडौ—१ देखो 'भींभरियोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'विभरियोडौ (रू. भे.)

(स्त्री. बींभरियोड़ी)

बींभरियौ—देखो 'भींभर' (ग्रल्पा, रू. भे.)

बींभळ, बींभळौ—देखो 'विभळ, विभळौ' (रू भे.)

उ०—बाहू चळी निरम्मळी, चल बींभळी सुरत्त । ग्राजै करनल ग्रक्कळी (नू) सवळी रूप सगत्त ।

—राव मेखौ

बींही-सर्व.—उस, उसी।

उ०—सो विधना रै लेख सू भूडण प्रात:काळ घडी दोय रै तड़कै ऊठ सूरजकुंड मे स्नान करणै नूं गई। **बींही** समै देवजोग सूं डाढाळो वीही सूरजकुंड माही स्नान करणै आयो, सो देखै तो भूडण स्नान कर रही छै। —डाढाळा सूर री बात

बी-स. पु.—१ शास्त्र। (एका)

२ विष्णु। (,,)

३ योद्धा, सुभट। (,,)

स स्त्री.—४ बेल। (,,)

५ गंगा। (,,)

रू. भे.—वी।

६ देखो 'बी' (रू. भे.)

उ०—इतरै कवर वीरमदे घोडा खड आयो आयो। जठै गणगोरचा आगै चढीया ऊभा छा ज्या वूजायो—अै सिरदार कुण छै। जठै या कयो—म्हे तौ गैलाग्यु छां। पारबती को दरसण करस्या। इतरै गणगोरचा गाव नै वावडी। अै बी गैला उतरै छै। —पना

७ देखो 'भी' (रू. भे.)

उ०—सावठा असवारां की वागा उठी। जिके फागा जाणिजै, गुलाला री मुठी। जठै सै बाहर पोती। जठै कवर वीरमदे गैलै असवार ऊभा राख्या था जिकै बी उण वेळा आय सामिल हुवा। —पना

बीअ—देखो 'बी' (रू. भे.)

बीआंनी—देखो 'बिसानी' (रू. भे.)

बीआळ, बीआल—देखो 'व्याळ' (रू. भे.)

उ०—जेवडउ अतर हाथि अनइं ऊट, जेवडउ अंतर पाधरमी अनइ खूंट, जेवडउ अतर सीह नइ सीआल, जेवडउ अतर गोल अनइ बीआल, जेवडउ अतर राणी अनइं दासी,...। —व. स.

बीआळको—देखो 'बीयाळको' (रू. भे.)

बीआपक—देखो 'व्यापक' (रू. भे.)

बीआपणो, बीआपबो—देखो 'व्यापणो, व्यापबो' (रू. भे.)

बीआपणहार, हारौ (हारी), बीआपणियौ—वि०।

बीआपिओडो, बीआपियोडो, बीआप्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीआपीजणो, बीआपीजबो—भाव वा०।

बीआपियोडो—देखो 'व्यापियोडो (रू. भे.)

(स्त्री बीआपियोडी)

बीक—१ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

२ देखो 'वीर' (रू. भे.)

बीकणो, बीकबो-क्रि. स.—१ बेचना, विक्रय करना।

उ०—१ लाख लूण तिल वुहरया बीक्या, कन्या विक्रय कीधा। सोम सूर कइ राहु गिलतइ, महादान को लीधां। —का. दे. प्र.

उ०—२ दोसी तुहरइ अनिघणा वस्त्र, सुभट भला तै चहइ सस्त्र। एक बइठा कहइ कथा कल्लोल, एक बइठा बीकइ मजीठ चोल।' —नळदवदती रास

उ०—३ सरस्वती आगलि कुण पढीयइ, अम्रत कउणि कढीइ, माणिकु कउणि बीकोइ, मोती कउणि छडीइ, निरगुण कउणि वंदीइ, वाउ कउणि बाधीइ ''। —व. स.

२ देखो 'बिकणो, बिकबो' (रू. भे.)

बीकणहार, हारौ (हारी) बीकणियौ—वि०।

बीकिओडो, बीकियोडो, बीक्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीकीजणो, बीकीजबो—कर्म वा०।

बीकधर—स पु.—बीकानेर का एक नाम।

बीकनेर, बीकपुर, बीकपुरी—देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे.)

उ०—१ जस बिरद सुणि दुरग जैरा, नजर भेजी बीकनेरां। एह सुणि बीकाण अक्खै, रावळा बह निजर रक्खै। —सू. प्र.

उ०—२ गढ जैसाणं बीकपुर, कै सीरोही पार। जग मैं भूरत थान रौ, बुध अनुमान विचार। —रा. रू.

उ०—३ त्याग मैं लिया गढ परगना अवूणै, बीकपुर अजस दूणा विकामै। कौन सु प्रवीत जण जगै रगणा कहावो, रहावी वात जुग च्यार 'रामै'। —रायसिंह री गीत

बीकम—१ देखो 'विक्रम' (रू. भे.)

उ०—भगो तोय वाराह, राह गिळियो तोय दगीयर। लांघणियो तोय सीह, जेम गांयियो तोय सायर। अगण हुतै बीकम, घणै वीटियो वीदोदर, खोडो तोय हणवत, लियो दरसण तोय साकर। —अल्लूजी कवियो

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

उ०—१ बाघउत ऊचरै, मुणो खट-तीस वस, जुरा आगळि ग्है वद जाही। भोज बीकम तणो सुजस मारै भुयण, नरां तिण वार रा मडप नाही। —राव गागो

उ०—२ विध रा जाण गाथ रा बीकम, पारिख वाण हाथ रा पाथ। जुध रा भीम खळा रा गजण, नाथ' रा बुध गणनाथ। —आईदान पाल्हावत

उ०—३ पलटियो नही अहिया पलो, सत हरचद बिरदा सधै। दातारपणै 'गजबंध' दूभल, बीकम कन हूतां वधै। —सू. प्र

उ०—४ 'जबदळ' 'पदम' रायसीग जुजस्टळ, हरचद बीकम भोज हुवा। मांगी मता छता मह मढळ, मता न मांगी जीता मुवा।
—गोरधनजो खीची

बीकमपुर—देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे.)

बीकमायत-सं. पु.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

बीकम्म—१ देखो 'विक्रम' (रू. भे.)

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

उ०—काय भोज बीकम्म काय रुद्र नाग अरज्जन, काय रामण बळराज काय जुजठळ भ्रर गंजन। कम्र काय हरचद क्रन कग ग (क) हर कहता, काय समर दद्धीच काय जीवाहन जता।
—माली आसियो

बीकराळ, बीकराल—देखो 'विकराळ' (रू. भे.)

उ०—अकलंक कलंक भो चढ्यो, सामुहो जोवन वीरह बीकराळ। अनवलह दव परजळै, पगि पगि मो सखी मदह झाळ।
—बी. दे.

बीकांण, बीकांणगढ, बीकांणो—देखो 'बीकानेर'

उ०—१ प्रथम देस जेमाण बीकांण प्रगटी पछै, बरजियो भाण वेढो उबारचो। अबै परब्रह्म वाळी प्रकति अद्रजा, धजाळी मह्र अवतार धारचो।
—मे. म.

उ०—२ सो बीकांण धरा वै साधै, बळ मेटियो जु हूता बाधै। केताई गांव मांणायत कोटां, लूटै देस किया सहलोटा।
—रा. रू.

उ०—३ लोहि हरिण 'जैत' बीकांणगढ जै लीयो, दहुडि खुरसाण अजमेर गढ दाबियो। खाग झड रांण खुरसाण दळ जिण खडै, डोडवांणा सहित सहर सांभरि डडै।
—सू. प्र.

उ०—४ भिड़तां खुरसांण जितै दळ भाजा, आयो 'करण' तुहारी भोट। बीकांणा देसांणी वासै, करनादे पलटै किम कोट।
—महाराणा करणसिंघजी

बीका-सं. स्त्री.—राठौड़ वंश की एक उपशाखा।

बीकियोड़ो-भू. का. कृ.—१ बेचा हुआ, विक्रय किया हुआ।

२ देखो 'विकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीकियोड़ी)

बीकोजी-सं. स्त्री.—बीकानेर राजवंश की पुत्री या बहिन।

बीकोदर—देखो 'वृकोदर' (रू. भे.)

उ०—१ भगो तोय वाराह राहु गिळियो तोय दणीयर, लाथणियो तोय सीह जेम मथियो तोय सायर। भण हुंतै बीकम भणै बीटीयो बीकोदर, छोडो तोय हणवंत लियो दरसण तोय सांकर।
—अल्लूजी कवियो

उ०—२ बीकोदर वीर वर, अनड पाहाड असकित। विविध फौज रचिअणी, अरध आठम चद्राकत।
—गु रू. ब.

बीको-स. पु.—राठौड़ वश की बीका नामक उप शाखा का व्यक्ति।

बीक्रम—१ देखो 'विक्रम' (रू. भे)

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू. भे.)

बीक्रमनगर, बीक्रमपुर—देखो 'विक्रमनगर' (रू. भे.)

बीक्षण-सं. पु. [सं.] देखने की क्रिया, अवलोकन, निरीक्षण।

रू. भे.—वीख, वेख।

बीख-सं. पु. [सं] १ कदम, डग, पैंड।

उ०—१ छोटी बीख न आपडा, लाबी लाज मरेहि। सयण बटाऊ वाळ रे, लबउ साद करेहि।
—ढो. मा.

उ०—२ संपेख खुरम सुरताण साथ, नरसिंघ रूप नवकोट नाथ। 'सूरजमल' सभ्रम तै सरीख, वधियो किरि वामण दियण बीख।
—गु. रू. ब.

उ०—३ बाकरां नूं बरको करण रै पगा अलवळिया मोटघारां नूं हुकम कीजै छै। सू असीला सीरोहिया लेनै ऊठिया छै। मलफती बीखां भरै छै। जाणै पावासर रौ हंस मोती चुगण चालियो छै।
—रा. सा. स.

उ०—४ राय देह पघराय वार तण चेह विचमा, झळ अग्गी भूलिवा करण लग्गी परकम्मा। भूप हेत सत भाय रूप सोहै पटराणी, बीख बीख जग विमळ ईख लाजै इद्राणी।
—रा. रू.

२ चाल, गति वेग।

उ०—१ मागो सीख नरिंद सू, दोन्हों बीख कुंवार। जांणे बघ पलट्टियो, सिंघ प्रळै री वार।
—रा. रू.

उ०—२ कपडा खरची दं कलं, दसा घरां दी सीख। अठी अठा पाछै अबै, वळै देखो मत बीख।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

३ ऊंट या घोडे की चाल विशेष।

उ०—१ छट सुंदर बीख सतेज घणा, तन ओप वधै गड रूप तणा। दुति वक्रति तुंड लगाम दिया, कुळवतिय घूंघट जांणि किया।
—रा. रू.

उ०—२ उण गाव रै गोयरै आय नीसरियो। देखै, तौ एक लुगाई ऊभी छै। देखि नै मन मे संकियो, भई चुडैल नहीं छै। इतरो जाणि नै रजपूत होयै रौ जोरावर हुतो दीठो, बोलाईस तो खरी। ताहरां भो ऊंठ बीखं बीखै चलाइ नै नेडो आयो।
—कावळै जोईयै नै तीडो खरळ री बात

४ देखो 'बिस' (रू. भे.)

उ०—धाबू रै धणी पाल्हण परमार सरब धातू मांहे भरत री भरियो थीलकर री बीख हुतो सू मलाय ग्रचळेसर है । नांदियो भरायो जिण विख बालण रा पाप सू पाल्हण रै कोढ उपडियो जीवदेव री नावो बिख भराय थापित कियो जद कोढ मिटियो ।
—बा. दा. ख्यात

५ देखो 'बीखणा' (रू. भे.)

उ०—तूं मोनू हिव आंणदं, म देख म्हनै कु बीख । जलदी मोनूं आवणी, म्हारी सगळा नै उडीख । —सातीलाल

रू. भे.—बरीख, बीख, ग्रख, ग्रखा, ग्रखि, ग्रीख, भीख, बरीख, विकख, विक्ख, वीख, वीखा, वेख ।

ग्रल्पा,—वीखडी ।

बीखड़ी—देखो 'बीख' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—साल्ह चलतइ परठिया, ग्रागण बीखड़ीयांह । सो मइं हियइ लगाडिया, भरि भरि मूठडियाह । —ढो. मा.

बीखणी—देखो 'विक्खणी' (रू. भे.)

उ०—१ इळादि डब उलखडं, पवग वाग ऊपडं । खुरा ज खोणि बीखणी, पतग छाइ पोइणी । —गु. रू. ब

उ०—२ हैं-पट समद जाण हिलोळ, पमंग हमस पक्खर रोळ । क्रमतं खुरमरं कटकेह, वसुधा बीखणी विडगेह । —गु. रू. ब

उ०—३ खेड रा जोध तुरंगाण ताता खडं, पै खुरै बीखणी खोण खाना पडं । तप्पिया तालू ए लोह घोडातणं, ग्राड झाफा भरै तेज सू ऊफणं । —गु. रू. ब.

बीखणौ, बीखबौ—क्रि. ग्र.—१ रुदन करना, रोना ।

२ बिलखना, व्याकुल होना ।

३ तरसना, लालायित होना ।

४ तडफना ।

५ दुःखी होना, पीडित होना ।

६ देखो 'बीकणौ, बीकबौ' (रू. भे)

७ देखो 'बेखणौ, वेखबौ' (रू. भे.)

उ०—बदनारविंद गोविंद बीखियं, ग्रालोकं ग्रापो ग्राप सूं । हिव रुखमणी कतारथ हुइस्यै, हुग्रो कतारथ पहिलो हूं । —वेलि

बीखणहार, हारौ (हारी), बीखणियौ —वि० ।

बीखिग्रोडौ, बीखियोडौ, बीख्योडौ—भू० का० कृ० ।

बीखीजणौ, बीखीजबौ—भाव वा० ।

बीखणणौ, बीखणबौ, बीखणौ, बीखबौ, बिखणौ, बिखबौ, बींखणौ, बींखबौ—रू० भे० ।

बीखरणौ, बीखरबौ—देखो 'बिखरणौ, बिखरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वाटइ राई बीखरी, उलंघावइ ग्रेक । सब प्रकारै सूणना बिनता करइ विवेक । —मा. का. प्र.

उ०—२ जद छोहरा नगारा बजावा लागा । जद रांमत में भग पडग्यो । लोक बीखर गया । रावलियां रै हाथै दान पिण न ग्रायो नै मूंडा पिण दीठा । —भि. द्र.

उ०—३ भयांनक हेक करै भाराथ, हिकां मसतक्क पडै पग हाथ । वैणी-डड हेका बीखरियाह, लुटै भुइ हेक लुही भरियाह । —गु. रू. ब.

उ०—४......उन्हुउ तीन्हुउ सरहरउ भरहरउ ग्राहसिउ नीलसिउ ग्रणीग्रालउ सूंग्रालु सरसु सकोमल बीखरिउ बीणिउ ऊजलउ जिसउ केवडउ ऊदेली जेवडउ, दूबल पेटि पइसइ, फूटी नीसरइ इसउ कूर परीसिउ । —व. स.

बीखरणहार, हारौ (हारी), बीखरणियौ—वि० ।

बीखरिग्रोडौ, बीखरियोडौ, बीखरयोडौ—भू० का० कृ० ।

बीखरीजणौ, बीखरीजबौ—भू० का० कृ० ।

बीखराणौ, बीखराबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)

बीखरावणहार, हारौ (हारी), बीखराणियौ—वि० ।

बीखरायोडौ—भू० का० कृ० ।

बीखराईजणौ, बीखराईजबौ—कर्म वा० ।

बीखरायोड़ौ—देखो 'बिखरायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बीखरायोडी)

बीखरावणौ, बीखरावबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)

बीखरावणहार, हारौ (हारी), बीखरावणियौ—वि० ।

बीखराविग्रोडौ, बीखरावियोडौ, बीखराव्योडौ—भू० का० कृ० ।

बीखरावीजणौ, बीखरावीजबौ—कर्म वा० ।

बीखरावियोड़ौ—देखो 'बिखरायोडौ' (रू भे)

(स्त्री. बीखरावियोडी)

बीखरियोड़ौ—देखो 'बिखरियोडौ' ।

(स्त्री. बीखरियोडी)

बीखा—स. स्त्री [स.] १ नाच, नृत्य ।

२ सगम, मिलन ।

३ देखो 'बीख' (३) (रू. भे.)

बीखियोड़ौ—भू का. कृ.—१ रुदन किया हुग्रा, रोया हुग्रा. २ बिलखा हुग्रा, व्याकुल हुवा हुग्रा. ३ तरसा हुग्रा, लालायित हुवा हुग्रा. ४ तड़फा हुग्रा. ५ दुःखी हुवा हुग्रा, पीडित हुवा हुग्रा ।

६ देखो 'बीकियोडौ' (रू. भे.)

७ देखो 'वेखियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीखियोडी)

बीखेरणौ, बीखेरबौ—देखो 'बिखेरणौ, बिखेरबौ' (रू भे.)

बीखेरणहार, हारौ (हारी), बीखेरणियौ—वि० ।
बीखेरिग्रोड़ौ, बीखेरियोड़ौ, बीखेरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बीखेरीजणौ, बीखेरीजबौ—कर्म वा० ।

बीखेरियोड़ौ—देखो 'बिखेरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बीखेरियोडी)

बीखं—१ देखो 'विखं' (रू. भे.)
२ देखो 'विसय' (रू. भे.)

बीखोरणौ, बीखोरबौ—देखो 'बिखेरणौ, बिखेरबौ' (रू. भे.)
उ०—सरण साधार सुदतार लहरी समंद, करै ग्रदतार नर मीढ केहा । रार लजधार ससार सारी रटै, मुगट गढ बीखोरणहार तेहा ।
—गुलजी श्राढो
बीखोरणहार, हारौ (हारी), बीखोरणियौ—वि० ।
बीखोरिग्रोड़ौ, बीखोरियोड़ौ, बीखोरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बीखोरीजणौ, बीखोरीजबौ—कर्म वा० ।

बीखोराणौ, बीखोराबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)
बीखोराणहार, हारौ (हारी), बीखोराणियौ—वि० ।
बीखोरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बीखोराईजणौ, बीखोराईजबौ—कर्म वा० ।

बीखोरायोड़ौ—देखो 'बिखरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री बीखोरायोडी)

बीखोरावणौ, बीखोरावबौ—देखो 'बिखराणौ, बिखराबौ' (रू. भे.)
बीखोरावणहार, हारौ (हारी), बीखोरावणियौ—वि० ।
बीखोराविग्रोड़ौ, बिखोरावियोड़ौ, बिखोराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बीखोरावीजणौ, बीखोरावीजबौ—कर्म वा० ।

बीखोरावियोड़ौ—देखो 'बिखरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बीखोरावियोडी)

बीखौ—देखो 'विखौ' (रू. भे.)
उ०—राठोड दुरगदास आसकरणोत बीखौ घणौ कीयौ न समत १७६३ रा चैत वद ५ जाळोर सूं नै जोधपुर सूं सोबेदार नवाब जाफरखां वगैरै था सो नास गया नै स्रीहजूर जोधपुर मे जाळोर सू जाय नै ग्रमल कीयौ ।
—मारवाड़ री ख्यात

बीगड़णौ, बीगड़बौ—देखो 'बिगड़णौ, बिगड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ हरीया वाडी बीगड़ै, सिर परि धणी न होय । सु चिडीया खाया खेतडा, हाकल करै न कोय । —ग्रनुभववांणी
उ०—पण म्हारै ग्रो पण छै-सगै रौ नाळेर ग्रायौ पाछौ न मेलु । सो माजी, म्हारौ बचन ग्रया, जमवारौ ग्रया जासी । तिण सु थे राजी हूय मनै फुरमावौ, ज्यूं म्हारौ भलो हुवै ग्रर थांहरै सत-तपस्या सु माहरौ कुही न बीगड़ै ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

बीगड़णहार, हारौ (हारी), बीगड़णियौ—वि० ।
बीगड़िग्रोड़ौ, बीगड़ियोड़ौ बीगड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बीगड़ीजणौ, बीगड़ीजबौ—भाव वा० ।

बीगड़ाणौ, बीगड़ाबौ—देखो 'बिगड़ाणौ, बिगड़ाबौ' (रू. भे.)
बीगड़ाणहार, हारौ (हारी), बीगड़ाणियौ—वि० ।
बीगड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बीगड़ाईजणौ, बीगड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

बीगड़ायोड़ौ—देखो 'बिगड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बीगड़ायोड़ी)

बीगड़ावणौ, बीगड़ावबौ—देखो 'बिगड़ाणौ, बिगड़ाबौ' (रू. भे.)
बीगड़ावणहार, हारौ (हारी), बीगड़ावणियौ—वि० ।
बीगड़ाविग्रोड़ौ, बीगड़ावियोड़ौ, बीगड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बीगड़ावीजणौ, बीगड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

बीगड़ावियोड़ौ—देखो 'बिगड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बीगड़ावियोडी)

बीगड़ियोड़ौ—देखो 'बिगड़ियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री बीगड़ियोडी)

बीगन—देखो 'विघ्न (रू. भे.)

बीगसणौ. बीगसबौ—देखो 'विकसणौ, विकसबौ' (रू. भे.)
उ०—वळै को चेतै जीव, चेतिस्यौ चेतणहारौ । बीणां बीगसै मन, लखण उजाळै लारौ ।
—बील्हौजी
बीगसणहार. हारौ (हारी), बीगसणियौ—वि० ।
बीगसिग्रोड़ौ. बीगसियोड़ौ, बीगस्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बीगसीजणौ, बीगसीजबौ—भाव वा० ।

बीगसियोड़ौ—देखो विकसियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बीगसियोडी)

बीगाड़—देखो 'बिगाड़' (रू. भे.)
उ०—राव मालदे रा डेरा फळोधी छै । तरै नरै कवर हरराज नु कह्यौ—कहौ तौ म्है जावा कटक रा बीगाड़ करां । तरै हरराज ग्रापरौ साथ घणौ साथै दीयौ ।
—नैणसी

बीगाड़णौ, बीगाड़बौ—देखो 'विगाड़णौ, बिगाड़बौ' (रू. भे.)
उ०—नाहड़राव मडोवर धणी हुवौ । वाराह एक मंडोवर री वाडी बीगाड़ै । तिण री घणी पुकार होई रही छै । नै एक दिन नाहड़राव डेरै होतौ थो सु वाराह नीसरियौ ।
—नैणसी
बीगाड़णहार, हारौ (हारी), बीगाड़णियौ—वि० ।
बीगाड़िग्रोड़ौ, बीगाड़ियोड़ौ, बीगाड़योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बीगाड़ीजणौ, बीगाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

बीगाड़ियोड़ौ—देखो 'बिगाड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीगाड़ियोड़ी)

बीगाड—देखो 'बिगाड' (रू. भे.)

उ०—तठै माळी बोलियो—महाराज ! आज काल कोईक जानवर हिल्यौ छै। सो दिन रा जावता घणी करा छा, पिण रात रा बीगाड कर जावै छै। —रिसालू री बात

बीगाडणौ, बीगाडबौ—देखो 'बिगाडणौ, बिगाडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बागवान नै पूछ्यौ—क्यूं बे बागवान ! बहुत दिन से एसा फल-फूल क्यु लाया, सो कारण काइ छै ? तदी बागवान कह्यौ—हजरत, सलामत कबलेयान, अधरात कु बाग में हमेस क्या बलाय आवती है, सो बाग बीगाडै छै। —रिसालू री बात

उ०—२ अतरायक में पातसाहजी बोल्या क्यूं बे बागवान ! ईतरा दिन में ईम्या फल-फूल क्यु ल्यायौ। तदि बागवान कह्यौ—माहाराज ! कोई आधी रात्रै आवै छै, कोई बलाय छै। सो बाग बीगाडी जाय छै, नित प्रत आवै छै। —रिसालू री बात

बीगाडणहार, हारौ (हारी), बीगाडणियौ—वि०।

बीगाड़िओड़ो, बीगाड़ियोड़ो, बीगाड्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीगाडीजणौ, बीगाडीजबौ—कर्म वा०।

बीगाड्योड़ो—देखो 'बिगाड़ियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीगाड्योड़ी)

बीगोडी—देखो 'बीघोडी' (रू. भे.)

बीगो—देखो 'बीघो' (रू. भे.)

बीग्रह—देखो 'विग्रह' (रू. भे.)

बीग्रहणौ, बीग्रहबौ—देखो 'विग्रहणौ, विग्रहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तरै रावजी बात आ राखी, कह्यौ—माहारो कोट आवसी तरै म्हे तोनुं छोडसा। तरै डूगरसी कोट रै मोहडै जाई जगहथ देपावत नु कह्यो—साबास तै पाच माग गढ बीग्रहियो। हिमे हू दोहीरो हू तूं कूंची रावजी नुं सौंप जु भोनै छोडै। —नैणसी

उ०—२ इण फेर रतनसी कोट झालियो। सावत चहुवाण कान्हर नरनाह रौ बेटो चहुवाण ईसरदास वडो रजपूत छै। वडी वडी गढ बीग्रही अै लडाई की। —नैणसी

बीग्रहणहार, हारौ (हारी), बीग्रहणियौ—वि०।

बीग्रहिओड़ो, बीग्रहियोड़ो, बीग्रह्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीग्रहीजणौ, बीग्रहीजबौ—कर्म वा०।

बीग्रहियोड़ो—देखो 'विग्रहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीग्रहियोडी)

बीघोड़ी—देखो 'बीघोडी' (रू. भे.)

बीघौ—देखो 'बीघो' (रू. भे.)

उ०—अध विसवासी मिनख, हरेक आदमी री कैयोडी बात नै सांची मानण खातर हो बण्यो है। नटणं खातर हरगिज नही। चावै कोई अफड करो तथा जाळ। वीरै वास्तै तो बीघं भूत अर विसवै साप हाळी कैवत साची है। —दसदोख

बीडंग, बीड़गाण, बीड़गि, बीडंगी—देखो 'विडंग' (रू. भे.)

उ०—गुटकाण सीदाण बीमाण तणी गत, नाव तोराण दंघाण अणै। पुखराण वेगाण प्रमाण पराछक, वात वसै बीड़गांण भणै। —किसनजी दधवाडियो

बीड़, बीड़उ—१ देखो 'विड' (रू. भे.)

२ देखो 'बीडो' (मह., रू. भे.)

बीड़णौ, बीड़बौ—देखो 'बीड़णौ, बीडबौ' (रू. भे.)

बीडणहार, हारौ (हारी), बीडणियौ—वि०।

बीड़िओड़ो, बीड़ियोड़ो, बीड्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीडीजणौ, बीडीजबौ—भाव वा०।

बीड़मौ, बीड़बौ—देखो बीडमौ' (रू. भे.)

बीडा—देखो 'बीडा' (रू. भे.)

बीडाणौ, बीडाबौ—देखो 'बीडाणौ, बीडाबौ' (रू. भे.)

बीड़ाणहार, हारौ (हारी), बीड़ाणियौ—वि०।

बीडायोड़ो भू० का० कृ०।

बीडाईजणौ, बीडाईजबौ—कर्म वा०।

बीडादार—देखो 'बीडादार' (रू. भे.)

बीडायोडो—देखो 'बीडायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीडायोडी)

बीडियोडो—देखो 'बीडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बीडियोडी)

बीडो—स. पु.—१ जल भरे चरस की लाव [मोटी रस्सी] को बैलों के जुऐ से जोडने का स्थान।

२ देखो 'बीडो' (रू. भे.)

बीच—स. पु.—१ मार्ग, राह। (उ. र.)

२ देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—१ तिसडै पूरब रो पातसाह समसदी, तिको दिल्ली रा पातसाह ऊपर आयो। कोस २० रौ दोनु फोजा रै बीच रह्यौ, तरै पूरब रै पातसाह कबाण दिल्ली रै पातसाह नुं मेली "जु थाहरा कटक माहे कोई इसडो छै, जिको आ कबाण चाढै। —नैणसी

उ०—२ विढै एम वेग्यियो, इसा एकण घर वाळा। वड वड भडा

विचारि, **बीच** फेरं विसटाळा । —सू. प्र.

उ०—३ छोटा चेल्हरा ऊपर कुत्तां री डोर छूटी. सो जाय घेरिया चेल्हरा चीकिया । त्या ऊपर सुवर मुडग घिरीया । सो घोडा **बीच** घात फटाय लीया । —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—४ दीवाण रै सामत माहै जिका हुई सु दीवाण माहै पण होत । पण दीवाण री भाग वडो । धरती दं लडाई टाळी । इतरै कहता **बीच** गवजी रै फोजा री वागा ऊपडी । त्या दीवाण री फोज पाछी मुडी । इतरै केइक वडेरा ठाकुर बीच पडिया जु कयो "ठाकुरा ! भागा पाछै काई जावो ? —नैणसी

उ०—५ पत्र लिखावै प्रीत सू, पाप धरम री आण । वर ससै यू छेदियो, कर कर **बीच** कुराण । —रा. रू.

उ०—६ हरीया तरवर **बीच** मैं, पछी वासो लेह । कोई कवाडी आय कै, दोस विना दुख देह । —अनुभववाणी

उ०—७ गता माता मैं भया, तं सेती रहमान । हरीया नैणा **बीच** मैं, निरगु सारगप्रान । —अनुभववाणी

उ०—८ हरीया केता वहि गया, कीया करम कै लारि । धिल घघै धन **बीच** मैं ध्यान सघै नही धारि । —अनुभववाणी

उ०—९ आज कालि क्या करत हे, हरीया होय अवेर । क्या जांगु कंमी करं, सभा बीच मवेर । —अनुभववाणी

उ०—१० ए कंमे है—वडे सु विहान है, वडे महिरवान है, वडे सिरदार हैं । वडे बूभदार है, वडे दातार है । जमी आसमान **बीच** सभू अवतार है । —रा सा स

२ देखो 'विछियो' (रू. भे.)

उ०—घम घम वाजै घूघरा, वाजै चम-चम **बीच** (छ) । तम-नम यम मानू तवै म्यार (म) नसम म मीच ।

—मयाराम दरजी री बात

बीचणौ, बीचबौ—क्रि. स—१ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना ।

उ०—खेड घणी सिरि खीजिया, हुई मुगल्ला हेल । ज्यो गज वारि विहारता, **बीचै** वारिज वेल । —रा. रू

२ सहार करना, मारना ।

३ अलग करना, पृथक करना ।

४ त्यागना, छोडना, बहिष्कार करना ।

५ बीतना, गुजरना, घटित होना ।

उ०—१ धान न भावै चोच निरोई, इण बेदन मोनूं खरी विगोई । तो सो वात कहू मैं कैसी, मेरै मन मे **बीचत** जैसी ।

—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ तद आ वळै कटारी काढ नैं छाती ऊपरा बैठी, कही, "रे मूरख, आगै तो तै माहै **बीची** थी अर वळै आयो ? तो हमैं तै पासै माल छै सो दे नही तो मारा छा ।"

—वूढी ठग राजा री बात

६ बीतना, गुजरना, व्यतीत होना ।

उ०—१ जदि जोबन थो जोरि, आव को धरघो उभारो । **बीचि** गई तरवार, हुवो अगि अगत उवारो । —देवोजी

उ०—२ चोर तिण ऊवै रै घर फाडण नु गया हुता । सु माहूकार बाप बेटो लेखो करण बैठा हुना, सु राती **बीची** गई । पाछिली राति उठीया ताहरा ओश माहुकार पडि रह्या । ऊवै री बेर दीवो करि ढोलियो विछाइ नै बैठी हुती, सु राति बीचि गई ।

—स्यामसुदर री बात

बीचणहार, हारौ (हारी), बीचणियौ—वि० ।

बीचिओडौ, बीचियोडौ बीच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीचीजणौ, बीचीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

बीछणौ, बीछबौ—रू० भे० ।

बीचळौ, बीचलौ—देखो 'बिचलौ' (रू. भे.)

बीचारणौ, बीचारबौ—देखो विचारणौ, विचारबौ' (रू भे.)

उ०—पहली पोरसी सूत्र चितारै, बीजी पोरसी अरथ **बीचारै** । जाणै तीजी पोरसी लागी, वेदन रै वस गुध्या जागी । —जयवाणी

बीचारणहार, हारौ (हारी) बीचारणियौ—वि० ।

बीचारिओडौ बीचारियोड़ौ, बीचार्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीचारीजणौ, बीचारीजबौ—कर्म वा० ।

बीचारियोडौ—देखो 'बिचारियोडौ' (रू भे)

(स्त्री बीचारियोडी)

बीचाळ, बीचाळि, बीचाळी, बीचाळु, बीचाळै—देखो 'बिचै'(रू. भे.)

उ०—१ वगा **बीचाळै** काढिया, हुइ जिम पग भलै । ऊभी मेली साहबी, गढ गोख महलै —कैमोदास गाडण

बीचाळौ—देखो 'बिचाळौ' (रू. भे)

बीचि—स. स्त्री [स वीचि] १ विवेकहीनता, चचलता ।

२ लहर तरग ।

३ हर्ष, खुशी, आल्हाद ।

४ किरन, रश्मि ।

रू. भे.—वीची ।

४ देखो बीच' (रू भ.)

उ०—उस ऊजंका तमाम देखि गिर भगरूं **बीचि** घैसाहर फेरै । मेरू कै भूड नटूं कै तटाक घण घुमरू सै घेरै । तहा सेती होकरि ऊनै अधकध गिरदी ढाळ अगन कुंड से चखूबीच भभकतै क्रोध की भाळ । —सू. प्र.

५ देखो 'बिचि' (रू. भे.)

वीचिमाळी—स. पु. [स. वीचिमालिन्] समुद्र, सागर। (डि. को.)

वीचियोड़ो—भू का. कृ.—१ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ. २ संहार किया हुआ, मारा हुआ ३ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ. ४ त्याग किया हुआ छोड़ा हुआ, बहिष्कार किया हुआ. ५ बीता हुआ, गुजरा हुआ, घटित हुवा हुआ ६ बीता हुआ, गुजरा हुआ, व्यतीत हुवा हुआ।
(स्त्री वीचियोड़ी)

वीचो—देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—जनहरिया नन **बीची** मे, नख चख घाटि न वाध । और साध सब कहन का, राम भजै सोई साध —अनुभववाणी

२ देखो 'विचि' (रू भे.) (ह. ना. मा)

३ देखो 'वीचि' (रू भे)

वीचेतस—स स्त्री.—दूषित। (डि को)

वीछड़णो, वीछड़बो—१ देखो 'विछुड़णो, विछुड़बो' (रू. भे)

उ०—जीहो गमपण इण समार ना, जीहो थया अनंति वार। जीहो मिल मिल नै बले **वीछड़े**, जीहो कम्म लगावै लार रे।—जयवाणी

उ०—२ पहिलि मिलियइ नेह मूं रे हा, करियइ हास विलास। मिलि नइ **वीछड़िवो** पड़ै रे हा, तव मन हाइ उदास। —वि कु.

उ०—३ कुर्झड़िया कळियळ कियउ, सुणी उपावइ वाइ। ज्याकि जोड़ी **वीछड़ी**, त्या निसि नींद न आइ। —ढो मा

उ०—४ हंसा बुगा पटतरो, **वीछड़िया** परवाण। बुग छीलरिया रय करै, हंसिया हंस विलखाण। —अनुभववाणी

उ०—५ कुरजड़िया कुरळा रही, देख विरंगा ताळ। जिण की जोड़ी **वीछड़ी**, जिणका कवण हवाल। —अज्ञात

२ देखो 'बिछूटणो, बिछूटबो' (रू भे)

उ०—१ वणी हाक बहादरा, **वीछड़** पड़ै विसाळ। नागजा ऊबाणिया, खग्साणिया कपाळ। —रा रू

उ०—२ खूम इणी चाढी 'खूमाण', धाया इमै अनोरं धार। दमला पटै **वीछड़** डाइर, पिड काप‍उ आवै अरणपोत।
—मोहकमसिंघ मडनिया

उ०—३ अध मन्त्री जाट अगाज जम जमामा, बाज उठ बागा धम धमासा वीर। **वीछड़** कडा धरम्मा रत्तिर विमामा, गम-गिर-धर लडा तमामा-गीर। —लकणीनद निरिया

उ०—४ वीर तन छाह लकडाल जस **वीछड़** रूक में भिड़ै असपति सागीम। भीम देवळ तणो डिगण न दियै सकम स्याम तण भुजा ऊपतज तै सीम —सुजाणसिंघ भोजराजोत सखावत रा गीत

उ०—५ वाहतां नेग अनमध कव **वीछड़ै**, हम। थ। हमा दाय टूक होवै। मायजादा दळे हिंदवां पातसाह, 'जसा' अवसर अन्तर तूझ जोवै। —महाराजा जसवंतसिंहजी रो गीत

वीछड़णहार, हारो, (हारी), **वीछड़णियो**—वि०।

वीछड़ियोड़ो, वीछड़ियोड़ो, वीछड़योड़ो—भू० का० कृ०।

वीछड़ीजणो, वीछड़ीजबो—भाव वा०।

वीछड़वाणो, वीछड़वाबो—देखो 'वीछुड़ाणो, विछुड़ाबो' (रू. भे.)

वीछड़वाणणहार हारो (हारी), वीछड़वाणियो—वि०।

वीछड़वायोड़ो—भू० का० कृ०।

वीछड़वाईजणो, वीछड़वाईजबो—कर्म वा०।

वीछड़वायोड़ो—देखो 'विछुड़ायोड़ो' (रू भे)

(स्त्री वीछड़वायोड़ी)

वीछड़ाणो, वीछड़ाबो—देखो 'बिछुड़ाणो, बिछुड़ाबो' (रू. भे)

वीछड़ाणहार, हारो (हारी), वीछड़ाणियो—वि०।

वीछड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।

वीछड़ाईजणो वीछड़ाईजबो—कर्म वा०।

वीछड़ायोड़ो—देखो 'बिछुड़ायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री वीछड़ायोड़ी)

वीछड़ावणो वीछड़ावबो—देखो 'बिछुड़ाणो, बिछुड़ाबो' (रू. भे.)

वीछड़ावणहार, हारो (हारी), वीछड़ावणियो—वि०।

वीछड़ाविओड़ो, वीछड़ावियोड़ो, वीछड़ाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वीछड़ावीजणो वीछड़ावीजबो—कर्म वा०।

वीछड़ावियोड़ो—देखो 'बिछुड़ायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री वीछड़ावियोड़ी)

वीछड़ियोड़ो—१ देखो 'बिछुड़ियोड़ो' (रू भे.)

२ देखो 'बिछूटियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री वीछड़ियोड़ी)

वीछड़णो वीछड़बो—१ देखो 'बिछुड़णो, बिछुड़बो' (रू भे.)

उ०—१ सजण नो नेह जिण गुण हवै जो **वीछड्या** दुख न खमाय। नेह मार्यो निम बीमरे जी, जेहनो जीवन प्राय। —वि. कु

उ०—२ गिग आगी घण गर्ज, गाढि वानाग वरसाग। **वीछड़ीया** मळा करै, मिरग डाण केकाण। —पना

उ०—३ वामर सुख ना रयणी सुख, घरै सुख नावन। वालिम **वीछड़िया** तणो, मरम स लागो मन। —ढो मा.

२ देखो 'बिछूटणो, बिछूटबो' (रू भे)

उ० है उठ नउ हळि रुक मुड, आजे अमुड गे हाड-गुड। **वीछड़ै** मउ अनमउ वप्प, भूझार दियै नेगा झडप्प। —गु. रू. ब

वीछड़णहार, हारो (हारी), **वीछड़णियो**—वि०।

वीछड़िओड़ो, वीछड़ियोड़ो, वीछड्योड़ो—भू० का० कृ०।

वीछड़ीजणी, वीछड़ीजबो—भाव वा० ।

वीछड़ियोड़ो—१ देखो 'विछुड़ियोड़ो (रू भे)

२ देखो 'बिछूटियोड़ो (रू भे.)

(स्त्री. वीछड़ियोड़ी)

वीछण, वीछणी–स. पु —देखो 'बीछण (रू भे)

उ०—तन धारै वीछण तणो, जग चुगला री जीह । ग्राठ तरफ खावै उदर, दै छोना दुख दीह । —बा. दा.

वीछळ, वीछळण–स. पु.—१ बर्तनों, वस्त्रो व हाथ-पैर ग्रादि को धोने का पानी ।

उ०—धोवट घाट ग्रनोखा धोया, मारा मुह ऊजळा सरीर । मिवला तणी वीछळण साम्रत, चौळ तणै रगिया ग्रण चीर । —मोहकमसिंघ मेडतियो

२ प्रहार ।

उ०—ऊभडा भडा नीभडा ग्रग, वीजडा गडा वीछळां बंग । जमजडा घडा समवडा जग, त्रिज्जडा भडा तडफडा तग । —गु रू. ब.

वीछळणी, वीछळबो–क्रि स.—धोना, धुलाई करना ।

उ०—ताहरा तळाई ग्रायो । पागडो छाडियो । घाई री काढणी हाथ छै । पाणी माहै पथर छै तिकै उपर बैठा छै । पथर माथै बैस हाथ पग वीछळनै ग्राखिया रा गोख छाटीया । —माडणसी कृपावत री वात

वीछळणहार, हारो (हारी), वीछळणियो—वि० ।

वीछळिग्रोड़ो, वीछळियोड़ो, वीछळयोड़ो—भू० का० कृ० ।

वीछळीजणो, वीछळीजबो—कर्म वा० ।

वीछळियोड़ो–भू का. कृ —धोया हुग्रा, धुलाई किया हुग्रा ।

(स्त्री. वीछळियोडी)

वीछांमणो देखो 'बिछावणो' (रू. भे)

उ०—रगित मडप माहि हिव, जाजिम लाबी जेह । वारू करै वीछामणा, मोल घणा छै जेह । —प च. चौ

वीछाणो—देखो 'बिछाणो' (रू. भे)

वीछाणो, वीछाबो—देखो 'बिछाणो, बिछाबो' (रू. भे.)

वीछाणहार, हारो (हारी), विछाणियो—वि० ।

वीछायोड़ो—भू० का० कृ० ।

वीछाईजणो, वीछाईजबो—कर्म वा० ।

वीछायोड़ो—देखो 'बिछायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. वीछायोडी)

वीछावणो—देखो 'बिछाणो' (रू. भे.)

उ०—ताहरा वळद उपर सखरा वीछावणा, तिण उपर बिछायणी न सोहरी वैसाणी । चालिया जावै छै । चालता चालता ग्रागै जाय डेरो कीयो । —रळै गढवं री वात

वीछावणो, वीछावबो—देखो 'बिछाणो, बिछाबो' (रू भे.)

वीछावणहार हारो (हारी), वीछावणियो—वि० ।

वीछाविग्रोड़ो, वीछावियोड़ो, वीछाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वीछावीजणो, वीछावीजबो—कर्म वा० ।

वीछावियोड़ो—देखो 'बिछायोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री वीछायोडी)

वीछियो—देखो 'बिच्छू' (ग्रल्पा., रू भे.) (शेखावाटी)

वीछुड़णो, वीछुड़बो–क्रि. ग्र. —१ विमुक्त होना ।

उ०—कळ विछुडि एक वर्स गिरि कदरि, मदिर बाळक एक भरै । ग्रहि त्याग भुरै धन एक गमाय र, कै रिध ग्रादरि संधि करै । —रा. रू.

२ देखो 'बिछुडणो, बिछुडबो '(रू भे)

उ० -थे सिधावउ, सिध करउ, पूजउ, थाकी ग्रास । वीछुडतां हो मागसा, मेळउ दियउ उल्हास । —ढो. मा.

३ देखो 'बिछूटणो, बिटछूबो' (रू. भे.)

वीछुडणहार, हारो (हारी), बिछुडणियो—वि० ।

वीछुड़िग्रोड़ो, वीछुड़ियोड़ो, वीछुड्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वीछुड़ीजणो, वीछुड़ीजबो—भाव वा० ।

वीछुड़ियोड़ो–भू का. कृ.—१ विमुक्त हुवा हुग्रा ।

२ देखो 'बिछुडियोड़ो' (रू भे)

३ देखो 'बिछूटियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री वीछुटियोडी)

वीछू—देखो 'बिच्छू' (रू भे) (उ. र.)

उ०—मिणधर विख ग्रगमाव, मोटा नह धारै मगज । वीछू पूंछ बगाव, रागै सिर पर गाजिया । —किरपारांम

वीछूडो—१ देखो 'बिच्छूडो' (रू भे)

२ देखो 'बीछण' (ग्रल्प", रू. भे)

वीछूटणो, वीछूटबो—१ देखो 'बिछूटणो, बिछूटबो' (रू भे)

उ० —१ करिमाग छूटा गाढ जुवळा ग्रफूटा क्रमं, रथा छूटा पीतमरा लूटा ग्ररा रभ । तूटा गाढ बीजळा वीछूटा ग्राभ बीजू नेम, खूटा मीम माकुळा हूटा जैतखभ । —राजाधिराज बखतसिंघजी रो गीत

उ०—२ हे वेळळ मचै हल हल्लकार, मुछाळ वदत मुख मार मार । वीछूटै छूट हुई विकट्ट, निरभीत कडै बढिया निकट्ट । —मा. वचनिका

उ०—३ चोड़ै खळ धूहड़ लाग्वा चाक, वीगेळै लाख खळा वेडाक। खत्री गुर वीरम धूणै खाग, वीछूटो जागेय साकल वाग। —गो. रू

उ०-४ अगछरा का सा वीवाण वीछूटा। छछोहा जवान तरवारचा आछटै छै। ज्या मैं अगजवार हर वरमाळा साथै हीं कटै छै। —पना

२ देखो बिछुड़णो बिछुड़बौ'(रू भे)

वीछूटणहार, हारौ (हारी), विछूटणियौ—वि०।

वीछूटिओड़ौ, वीछूटियोड़ौ, विछूटयोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछूटीजणौ, वीछूटीजबौ—भाव वा०।

वीछूटियोड़ौ—देखो 'विछूटियोड़ौ' (रू. भे)

२ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री विछूटियोड़ी)

वीछोड़णौ वीछोड़बौ—देखो 'बिछोड़णौ, बिछोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ वरणै फौज राजा तणै काजवाळी, कवी क्रत जैसी फुणा पत्ति काळी। कजाका भडा दौडियो रूप कैसो, 'अभौ' नक्र वीछोड़वा चक्र ग्रैसो। —रा रू.

उ०- २ जिम मोरा ददरा, मघण घण पावस वूठी। जळ ना मछ वीछोडि, वळै जळ माहि पयठो। —अल्लूजी कवियो

वीछोड़णहार, हारौ (हारी) वीछोड़णियौ—वि०।

वीछोडिओड़ौ वीछोडियोड़ौ, वीछोड़योड़ौ - भू० का० कृ०।

वीछोडीजणौ वीछोडीजबौ—कर्म वा०।

वीछोड़ियोड़ौ--देखो 'बिछोड़ियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. वीछोड़ियोड़ी)

वीछोडाणौ, वीछोडाबौ—देखो 'बिछोडाणौ, बिछोडाबौ' (रू. भे)

वीछोडाणहार, हारौ (हारी), वीछोडाणियौ—वि०।

वीछोडायोड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछोडाईजणौ, वीछोडाईजबौ—कर्म वा०।

वीछोडायोड़ौ—देखो बिछोडायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री. वीछोडायोड़ी)

वीछोडावणौ, वीछोड़ावबौ—देखो 'बिछोडाणौ, बिछोडाबौ (रू भे)

वीछोडावणहार, हारौ (हारी) वीछोडावणियौ—वि०।

वीछोडाविओड़ौ वीछोडावियोड़ौ, वीछोडाव्योड़ौ - भू० का० कृ०।

वीछोडावीजणौ वीछोड़ावीजबौ - कर्म वा०।

वीछोडावियोड़ौ- देखो बिछोडायोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री वीछोडावियोड़ी)

वीछोटणौ, वीछोटबौ-क्रि अ.- १ बहना, निकलना।

उ०—गखडै एक घाव कीधौ। तीसौ दूजौ संभूनाथ मैं दुधारी मीरा छुटा। वळै घाव हुवौ। दूध दही वीछोटवा लागौ। बीजौ घाव हवौ। लोही वीकरड चाल्या, तीकौ संभूनाथ खंड वेहड हुवा। —अरजण हमीर री वात

२ देखो 'बिछूटणौ, बिछूटबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बिछुड़णौ, बिछुड़बौ' (रू भे)

४ देखो 'छूटणौ छूटबौ' (रू. भे)

वीछोटणहार, हारौ (हारी), वीछोटणियौ—वि०।

वीछोटिओड़ौ, वीछोटियोड़ौ, वीछोट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछोटीजणौ, वीछोटीजबौ—भाव वा०।

वीछोटियोड़ौ—भू का. कृ.—१ बहा हुवा, निकला हुवा।

२ देखो बिछूटियोड़ौ' (रू. भे)

३ देखो 'बिछुड़ियोड़ौ' (रू. भे)

४ देखो 'छूटियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री विछोटियोड़ी)

वीछोव—देखो 'बिछोह' (रू. भे)

वीछोवणौ, वीछोवबौ—देखो बिछोहणौ, बिछोहबौ' (रू भे.)

वीछोवणहार, हारौ (हारी) वीछोवणियौ—वि०।

वीछोविओड़ौ वीछोवियोड़ौ, वीछोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछोवीजणौ, वीछोवीजबौ—भाव वा०।

वीछोवियोड़ौ—देखो बिछोहियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री वीछोवियोड़ी)

वीछोवौ, वीछोह—देखो बिछोह' (रू. भे.)

वीछोहणौ वीछोहबौ—देखो 'बिछोहणौ, बिछोहबौ' (रू. भे)

वीछोहणहार, हारौ (हारी), वीछोहणियौ—वि०।

वीछोहिओड़ौ, वीछोहियोड़ौ, वीछोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीछोहीजणौ वीछोहीजबौ—भाव वा०।

वीछोहियोड़ौ—देखो बिछोहियोड़ौ' (रू भे)

(स्त्री वीछोहियोड़ी)

वीछोहौ—देखो 'बिछोह' (रू भे.)

उ०—आया मिळ असवार, संदर दीठो माग विण। हय हय मिरजमहार ढोलै वीछोहौ बिलकुळै —ढो मा

वीज—देखो 'बीज' (रू भे)

२ देखो 'बीजळी' (रू भे)

उ० १ असपति राव चमकि ओद्रकियौ, लेईचो वाही करि खीज। गुकरि आकास हत सेलारा, वीजुळ विहण क वुही वीज। —केसोदास गाडण

उ०—२ पाल्हउ कवणइ, कउण जम जातउ वारइ ? कवण वज्र भेलिगइ, कउण सिरि वीज सहारइ। —अ. वचनिका

३ देखो बीजळी' (रू. भे.) (ना मा.)

उ०—१ सुर दक्खे जे जे सबद, रस ग्रदभुत लख रीज। ईढ करै खग सूँ 'ग्रभा', वजर न चक्र न बीज। —रा. रू.

उ०—२ भडत वादळ सबळ बीज साबळ झळक, खळक जळ रुधर घट नाळ खाळा। वार मुरताण दळ ग्रकळ खूटा वरस, माल' हर सीम सूर-गरद माळा। —ग्रजवो बारहठ

उ०—३ सो रूप री ऐसी, जैसी प्रथी मे नहीं—मरग री परी, ग्राभै री बीज मान सरोवर री हस, केळ री गरभ। सो रूप गुणा-कर निपट ग्रवल पण ग्राख्या सजम मोतियाबध।

—कवरसी साखला री वारता

उ०—४ जइ तूं ढोला, नावियउ काजळिया री तीज। चमक मरेसी मारवी, देख खिवता बीज। —ढो. मा.

उ०—५ हीया ग्रसक्कइ कायर लोक, संत तणा मन करइ ससोक। जाणे बीज पडि [घ] ग्रकालि, जाणे मूद्र खम्भा कलिकालि।

—सालिसूरि

४ देखो 'दूज' (रू. भे.)

बीजइ—१ देखो 'दूजौ' (रू भे)

उ०—बीजइ दिनि चचिगदे गइ बइठउ मन माहि करइ उपाय। मन ग्रावइ रिणधवळाह जान, करिसी भूंभ पिंगराजान।

—ढो मा

२ देखो 'बीजली' (रू भे)

३ देखो 'विजय' (रू भे)

४ देखो 'बीज' (रू भे)

विजइथभ—सं पु [स विजय स्तभ] विजयस्तभ, कीर्तिस्तम्भ।

उ०—पाल्हणसी भला-भला लोका का कह्या करण चार साभळया। ग्रासु पंछि ग्रकमाळ लियउ। बीजइथभ वागडी की नाई मकळ ही प्रियमी प्रतपिज्यउ, यउ गढ लीजउ, हमारउ वइर सूरिताण गोरी राजा सउ कीज्यउ। —म वचनिका

बीजई—१ देखो 'दूजौ' (रू. भे)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे)

३ देखो विजय' (रू. भे.)

४ देखो 'बीज' (रू. भे)

बीजउ—देखो 'दूजौ' (रू भे)

उ०—ग्रणहिळवाडा पाटण सामि, बीजउ नफर गयउ तिणि ठामि। उदयचदनउ कियउजूहार, परणावउ रिणधवळ कुंमार।

—ढो मा.

२ देखो 'बीज' (रू भे)

बीजक—१ देखो बीजक' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे)

उ०—डोहन सूंडा डड ए, खीखड सरपकहिइ ए। गज वाग मत्थै मंगळा, वळकत्त बीजक वद्दळा। —गु. रू. ब.

उ०—२ रत ग्वाळ-रळ तळ पालर, प्रगघळ, होद्द हूकळ थट्ठ हुवै। वळकत विजूजल बीजक वद्दळ, ढोल त्रिमगळ बोम घुवै।

—गु रू. बं

उ०—३ चढै चलै चतुरग महादळ, बीजक जाण वळक्के साबळ। वाजी घोडा पाइ घरत्ती छूटा साहण हाहूल माती। —गु. रू. ब

बीजकणौ बीजकबौ—देखो 'भिचकणौ, भिचकबौ' (रू भे.)

बीजकणहार, हारौ (हारी), बीजकणियौ—वि०।

बीजकिग्रोडौ बीजकियोडौ, बीजकयोडौ—भू० का० कृ०।

बीजकीजणौ, बीजकीजबौ—भा वा०।

बीजकाणौ, बीजकाबौ—देखो 'भिचकाणौ, भिचकाबौ' (रू भे.)

बीजकाणहार, हारौ (हारी), बीजकाणियौ—वि०।

बीजकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बीजकाईजणौ, बीजकाईजबौ—कर्म वा०।

बीजकायोडौ—देखो 'भिचकायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बीजकायोडी)

बीजकियोड़ौ—देखो भिचकियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री, बीजकियोडी)

बीजखणौ, बीजखबौ—देखो 'भिचकणौ, भिचकबौ' (रू. भे.)

उ०—झरडो बीजखियौ, फाळखियौ मोनूं ग्रबै। कुण जीदो कहि-याह, किण कारण मारू कहो। —पा. प्र.

बीजखणहार, हारौ (हारी), बीजखणियौ—वि०।

बीजखिग्रोड़ौ, बीजखियोड़ौ, बीजख्योडौ—भू० का० कृ०।

बीजखीजणौ, बीजखीजबौ—भाव वा०।

बीजखियोडौ—देखो 'भिचकियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री बीजखियोडी)

बीजगणित देखो बीजगणित' (रू. भे.)

बीजड—देखो 'बीजळा' (मह., रू भे.)

बीजडलो—१ देखो 'बीजळा' (ग्रल्पा, रू. भे)

२ देखो बीजळी' (रू भे)

बीजड़हत, बीजडहतो, बीजडहथ, बीजडहथो—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे)

बीजड़हतो, बीजड़हथो—देखो 'बीजळाहथ (मह, रू भे.)

बीजडाहत, बीजडाहतो, बीजड़ाहथ, बीजड़ाहथो—देखो 'बीजळाहथ' (रू भे)

बीजडाहतो बीजडाहथो—देखो 'बीजळाहथ '(मह., रू भे)

बीजडी—१ देखो 'बीजळी' (रू भे)

२ देखो 'बीजळी' (रू भे)

उ०—बगतरा ऊपरा तरवारिया रा वाड़ तूटि नै रहिया छै। जाणो बादळा माहै बीजड़िमां रा मिला ऊपड़िया पागरा ऊपरै सारधारा फूलधारा वाजी मु ठगासणण जाणै परभात री झालर ठणकी, नरबगनर विषम हुम्रा। —रा. सा स.

बीजजळ, बीजजुळ, बीजजूळ, बीजझळ, बीजझूळ—देखो 'बीजूझळ'

उ०—सयामा सभावै बीजजुळा कमा भ्राय सामे, रेगा भ्रेक घोडा नामै थावै भ्रसी रीत। न मावै फिरंगी हिंदूवान कीधी पाय नामै, भ्राप नामै नाज लाधो विजाई 'भ्रजीत'। —नवलजी लाळस

बीजड—देखो 'बीजळा' (मह, रू भे)

उ०—ऊमडा भडा नीभडा भ्रग,बीजडां गडा बीछळा वंग। जमजडा घडा ममवडा जग, त्रिजजडा भडा तडफडा तग। —गु रू. ब.

बीजण—देखो 'बीजणो' (मह, रू. भे)

उ०—फुला हळवी पाटो कुंवळी, बीजण इधक विवाय। 'वील्ह' कहै गुर भाइयो, करणी माच तगाय। —वील्होजी

२ देखो 'बीजन' (रू भे)

बीजणी—देखो 'बीजणो' (भ्रल्पा, रू. भे.)

बीजणू, बीजणो—देखो—बीजणो' (रू भे.)

उ०—भ्राप जुद्ध मे काम भ्रावो, हू मन करू, पछै विमाण मे बैग स्वरग मे जाभा जद भ्रपछरावा चमर करसी तिण रो वायरो लागसी भ्रो बीजणो हुमो भ्रबै बीजणो करावणनै भ्रो वळै भ्रापरा बळ माहू है। —वी स टी

उ०—२ ···स्रीमत तणा चवचाण झलहलड,चलदां सगौरि लगाडीड, गुलाब तणा भ्रभ्यंग कीजइ, बावन्ना सीम्बड घमीयड, चउदिसीयइ बीजणां फिरइ, द्राक्षा भ्रावलीपान कीजइ कलमसालि तणा सीधजगा करबा कीजइ भ्रच्छा कापडा पहरियइ लू भ्राहण्या पाणी पीजइ। —व स

बीजणो, बीजबो—देखो 'बीजणो, बीजबो' (रू भे)

उ०—ग्रान भ्रारोगइ नं घणा, वनिता बीजइ वाय। भ्रंगि भ्रति ऊलट धरी, तिहुयण तेह न माय। —मा का प्र

२ देखो 'बीजणो, बीजबो' (रू. भे)

बीजणहार, हारो (हारी), बीजणियो वि०।

बीजियोडो, बीजियोडो, बीज्योडो—भू० का० कृ०।

बीजीजणो, बीजीजबो—कर्म वा०।

बीजन—स पु. [स. बीजन] १ चक्रवाक, चकोर पक्षी।

२ पखे से हवा डालने की क्रिया।

३ देखो 'बीजणो' (रू. भे.)

रू. भे.—बीजण।

बीजपुरख, बीजपुरस, बीजपुरुख, बीजपुरुस—स. पु. [सं. बीजपुरुष] किसी वश का म्रादि या मूल पुरुष।

बीजपूर, बीजपूरक—देखो 'बीजपूर' (रू भे)

बीजमत्र—देखो 'बीजमंत्र' (रू भे.)

उ०—रिध सिध दियण कोमला राणी, बाळा बीजमंत्र ब्रहमाणी। वयण दियै सो भ्रविरळ वाणी, पुणा कीत जिम सारगपाणी। —ह र.

बीजमारग—देखो 'बीजमारग' (रू भे.)

बीजमारगी—देखो 'बीजमारगी' (रू भे.)

बीजळ, बीजल—स पु—१ पखा।

२ देखो बीजळ' (रू भे)

३ देखो बीजळा (रू भे)

उ०—१ जुध सीस पडत घडाह जोळा, बीजळ धक्क चरक्क वहै। गळिबाह नोळावट होय गळोवळ, गुथाबत्थ सुभट्ट ग्रहै। —गु रू ब

उ०–२ विहै बीजाजळ गहिया गज दळ, दमगळ हूकळ कळियळ ग। बळिवत भ्रतुळ बळ, जूटा विहु बळ (वळ) भळहळ दळ बीजळ ग। —गु. रू व.

उ०—३ बीजळ मेल गरज घण बाजै, गाज त्र वाळ सघण घण गाजै। भ्ररण वभक वोप धड उरिया,छकिया घाव कटारा छुरिया। —सू. प्र

उ०- ४ ताप रै नखत वैठी, धारि छत्र जोम धारि। बीजळा दिलेम देम मारि कीध थाळ वारि। —सू. प्र

उ०—५ रोठ पडै धारूजळा, भ्रर घड डळा उघेड। कर खळा चहुवै वळा, दळ बीजळां निवेड। —रा. रू

४ देखो 'बीजळी' (रू भे.)

उ०—१ मोर घोर' 'सम्मूह, बाण ऊच्छळै वळता। वहै भ्राग वरजाग, वोम किरि बीजळ लता। —गु रू. ब

उ०—२ वादळ दळ मेल खडग सझ बीजळ, कमधा काठळ फौज कर। घण गाजै गजसीग विरद घण, भ्राफळ मरै कठीर थर।

—देवराज रतनू

उ०—३ पसवाडै बीजळ खिवै, हो जी, बै री पेट पीपळ केरो पान। है भवरल, रूडो है नजारो नीमो है नैणा रो। —लो. गी

उ०—४ साकळा कळा चक्र साह, तु भ्राद बीसहत नीमो ताह। साकबरी तु हीज तु कळा सोम, वीमळा भवर बीजळ गोम।

—रामदान लाळस

बीजळड़ी, बीजलड़ी—१ देखो 'बीजळ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बीजळा' (ग्रल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—१ बीजलड़ी, धरा, वरजी ना जाय, बारी धरा बारी ग्रो हजा, सावरा-भादवो ग्रे चमकै बीजळी, जी राज। —लो. गी.

उ०—२ था री तो सतायी, गोरी का सायबा, ग्राभा री बीजलड़ी होय जास्या, म्हारा राज। थे धरा, होस्यो ग्राभा केरी बीजळी, मारु थारो इदरियो घररासी, म्हारा राज। —लो. गी.

बीजळसार—देखो 'बिजळसार' (रू. भे.)

उ०—चरखो तो लेस्यूं, भवरजी, रागलो जी, हाजी ढोला पीढो लाल गुलाल। तकवो तो लेस्यूं, भवरजी, बीजळसार को जी ग्रो जी म्हा री जोडी रा भरतार, पूरगी मगा ल्यू जी क बीकानेर री जी। —लो. गी.

बीजळहत, बीजळहतौ, बीजळहत्थ, बीजळहत्थौ, बीजळहथ, बीजळहथौ—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

बीजळहथौ, बीजलहथौ—देखो 'बीजळाहथ' (मह., रू. भे.)

बीजळा, बीजला—१ देखो 'बीजळ' (रू. भे.)

उ०—राठौड़ रवेवा रगताळ, वामग डहै बीजळा भाळ। बाधै कदील सघं विवारग, कोमीम भुजै दीना कबारग। —गु. रू. ब.

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.) (ना. मा.)

उ०—१ कमम्मे कटळा, ग्रावुसा बीजळा। चमक्कै चप्पळा, बैरका, बबळा। —गु. रू. ब.

उ०—२ गळहळा चलै रळतळा गाळ, बीजळा भळा बीमळा ग्राळ। गू छळा गळा गू वळा गनू, मिघळा कळा साकळा मडु। —गु. रू. ब.

बीजळाहत, बीजळाहतौ, बीजळाहत्थ, बीजळाहत्थौ, बीजळाहथ बीजळाहथौ—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे.)

बीजळाहथौ, बीजलाहथौ—देखो 'बीजळाहथ' (मह., रू. भे.)

बीजळि, बीजलि, बीजळी, बीजली—स. स्त्री—१ वह भैंस जिसके रतनो मे एक ही सफेद रेखा या धारी हो। (ग्रशुभ)

२ देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—पच्छट्टत बीजळि 'केहर' पागि, मिलह बध हेक करै घमसागि। जुडै चहुवै दळ रोद ग्रजागि, खिवै घरण 'केहर' ऊपर खगि। —सू. प्र.

३ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—१ च्यारुं पासइ घरण घणउ, बीजळि गिलइ ग्रगास। हरियाली रुति तउ भली, घर सपति, पिउ पास। —ढो. मा.

उ०—२ नम ग्रहिरण धज नळी, नळी बाजू पीडा चक। बजै नास बासली, ताव बीजळी छळी तक। —सू. प्र.

उ०—३ ढोलउ जाण्यउ बीजळी, मारु जाण्यउ मेह। च्यारि ग्राख एकठि हुई, सयरणा बध्या सनेह। —ढो. मा.

उ०—४ ग्राहड पीलवारगा-ति, गजिद-वाग पारगाए। घटा फवज्ज घूघळी, चमकिक कंत बीजळी। —गु. रू. ब.

उ०—५ कुरजा गै टोळो, सहेल्या रो हबोळो साथ लीना ग्रै लागगा लोयगा देखि रिमवार ग्रडवडै छै। वादळा मैं बीजळी को भळको, ज्यु गुगटा मै टीकी को पळको पडै छै। हसता तो फूल भडै छै। इगा भाति चालता रिमभोळा री घमक पडै छै। —पना

बीजाजळ, बीजाजुळ—देखो 'बीजूभळ' (रू. भे.)

उ०—विहै बीजाजळ गुडिया गज दळ, दमगळ हूकळ कळियळ ए। बळिवत ग्रतुळ बळ, जटा चिहु बळ, (बळ) भळहळ दळ बीजळ ए। —गु. रू. ब.

बीजाभळ, बीजाभल—१ देखो 'बीजूभळ' (रू. भे.)

२ देखो 'विध्याचल' (रू. भे.)

उ०—नग सीसा गळ नीम, गरक ग्रसमा चूनागळ। वीभाभळ मिर वरगै विसम भुजा बीजाभळ। —सू. प्र.

बीजाविक—स. पु. [स] ऊट।

बीजियोडौ—१ देखो 'बीजियाडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बीजियोडी)

बीजु—देखो 'बिजु' (रू. भे.)

बीजुळ, बीजुल—देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

उ०—प्रसपति राव चमकि ग्रोद्रकियौ, बेउँ वाही करि खीज। मुकरि ग्राकास हूत गैनारा, बीजुल विढरग क वुही बीज। —केसोदास गाडण

बीजुळी, बीजुली—१ देखो 'बीजळा' (रू. भे.)

२ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—काळी कठळि बीजुळी, नीची लिवइ निहल्ल। डर भेदती मज्जगा, ऊलेडनी सल्ल। —ढो. मा.

बीजूजळ, बीजूजल, बीजूभळ, बीजूभल—देखो 'बीजूभळ' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रजग्रो 'रतो' लियां परग उज्जळ, वेगावत ग्रहिया बीजूजळ सकतावत छळि धणी सिपाळा, ग्राया चापा बस उजाळा। —रा. रू.

उ०—२ वाहि उराग धणी बीजूजळ, तडळ खगा करै त्रा तडळ।

इम प्रथमी मिर ग्रीत उवारा, परगां अपछर सुरगि पधारा।

—सू. प्र

उ०—३ कळके बीजूजळ कुरके कम्मळ, मु मर माबळ झळहळ ए। अडडै वाळूसळ कुरके रम्मळ मोगी गळवळ मळहळ ए।

—गु. रू ब

उ० ४ कळकळा दत्ता चहूवळा फाबै करग, धरे वार हेकल पाट-ऊधोर। तूटती जाय बीजूजळां तणी ताव, जळा बाधा ज्यु ही खळा चो जोर।

— महाराजा मानसिंहजी री गीत

उ०-५ जवनाण दळै बीजूझळं, देख भले वळ देम री। इद्रभाग' मगे वह ऊजळां, मिळ जोत 'मुकनेस' री।

—रा रू.

बीजोग - १ देखो 'बिजोग' (रू भे)

२ देखो 'विजोग' (रू भे)

३ देखो 'वियोग' (रू. भे)

उ०—राज कुवर सव वरणव्या, सयल सभा साभळो हो सजोग। गणा फळ 'नरपति' कहइ पुत्र कळत्र नवि हुवई बीजोग।—बी दे.

बीजोरउ— देखो 'बीजोरो' (रू. भे.)

बीजोरडो, बीजोरडी—देखो 'बीजोरो' (अल्पा , रू भे)

उ० —कणवीर पकरणी केतकी, बीजोरडी नारेळ। कबोई कुदाळी थाईसरस, सटवळ वरण तबोळ।

—रुकमणी मगळ

बीजोरी देखो 'बीजोरी' (रू भे)

बीजोरो—देखो 'बीजोरो' (रू भे)

बीजौ—देखो 'दूजो' (रू भे)

उ०—१ जद जाग तद एकलो, जब सोऊ तब बेल। मोहणा, थें मनै छेतरी, बीजी श्रीजी हेल।

—ढो मा

उ०—२ उवै घोडो आगो तो थे बडा ग्राहवी। बीजो नो धाडा घणा ही करो छो छोटा मोटा। इतरो कहता वेड जगा उठि नै चढू वरै नै बोलीमा। चळ भरि पांगि नै कहियो। जै उवै घोड्या आणा तो गथ आइ नै जोमा नही मो ए कलक माथै उदक आवण।

—चौबोली

उ०—३ बधाईदार नु रावजी कडा बगसिया। भालीजी मोनी दीया कुंवर रा मोहलां सिरपाव दीया। बीजो पण कामदाग। साहूकारा राज रै राहणी अमरावा ठाकुरा सारा वधाई दीवी।

—कु वरसी साखला री वारता

(स्त्री. बीजी)

बीझण, बीझणउ, बीझणो—देखो 'बीजणो' (रू भे) (उ. र)

उ०—१ छाटी पाणी कुमकुमड़, बीझण वीज्या वाइ हुई सचेती माळवी, प्री आगलि त्रिललाइ।

—ढो. मा

उ०—२ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति उण बागाइत माहै ग्रीखम रित रा बिलाइती वाले रा खस खाना, ऊची होड रा बगला, रावटी वालाबंध रा ठामा रा गूंथिआ भाति भाति खस-खाना वणाया छै। घणे मीतळ पाणी सूं सींचिआ थका बीझणा वाड झाणा मू हीफा ग्याइ रहिआ छै।

—रा. सा स

उ०—३ बावळ आगे बीझणो, की पावै सनमान। तूझ रीझ आगे तिसो, 'देवा' ! जग चो दान।

—बा. दा.

उ०—४ बाफता रा सलारा रूमाल केसरिया छै सू माथा ऊपर राखजे छै। बीझणा सू वायेरा लीजे छै। किण भात रा छै? लाहोर रा बियाडा छै। रूपै री डाडी जरी सूं मढी, टूकडी री झालरी।

—रा सा स

बीझणो, बीझबो—देखो 'बीजणो, बीजबो' (रू भे.)

उ० छाटी पाणी कुमकुमड, बीझण वीज्या वाइ। हुई सचेती माळवी, प्री आगलि त्रिललाइ।

—ढो मा

बीझणहार, हारो (हारी), बीझणियो वि०।

बीझिओडो, बीझियोडो बीझ्योडो —भू० का० कृ०।

बीझीजणो, बीझीजबो—कम वा०।

बीझवण, बीझवन— देखो 'बीझवन' (रू भे.)

उ०—आडा डूंगर बीझवण, बीच माछला गयद। सीरे कहै वदरा, किण विध्य लोपियो ममद।

- मेहोजी गोदारो यापन

बीझाणमाता—स. स्त्री —एक देवी का नाम।

बीझाजळ, बीझाजल, बीझाझळ, बीझाझल १ देखो 'बीजूझळ (रू. भे)

२ देखो 'विंध्याचळ' (रू भे.)

उ० नग सीमा गल नीम, गरक असमा जूनागळ। बीझाझळ मिर वणां, विखम भुरजा बीजाझळ।

—सू. प्र

बीझावण, बीझावन-- देखो 'बीझवन' (रू. भे.)

उ०—सादूळा केसरीसिह ज्वालानळ अगनी सू बळता थका बीझा-वन हाथिया री पेटरी छाया मना विसराम करै छै। भुयग सरप नीसरिया छै। सो लू नै तावड़ै री अगनि सूं बळता थका दौडि दौडि नै हाथिया रै मोतळ सू डाहळा माहै पैसि पैसि रहिआ छै।

—रा. सा सं

बीझासणि, बीभासणी—१ देखो 'मावलिया'।

उ०—मोपो कहै भूत छै लोभ बीझासणि लीधौ। जत्र मत्र रा जाण, कहै मोड कामण कीधी।

—ध. व. ग्र

२ देखो 'ग्रावड'।

बीझोडणो, बीझोडबो—क्रि स —काटना।

उ०—खाजरू म्राए हाजर हुम्रा छै, रावताला नू कहियो छै। ठाकरै खाजरूम्रा नै ठरका करो। तिकै रावताला घणी केसर नै घणो क्रसनागर म्रतर सार्थं माहै गरकाब हुम्रा थका। उम्रा मीरोहीम्रा खाजरू वीझोड़ीजै छै। —रा. सा. स.

वीझोड़णहार, हारौ (हारी), वीझोड़णियौ—वि०।

वीझोड़ियोड़ौ, वीझाड़ियोड़ौ, वीझोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीझोड़ीजणौ, वीझोड़ीजबौ—कर्म वा०।

वीझोड़णौ, वीझोड़बौ—रू० भे०।

वीझोड़ियोड़ौ-भू. का. कृ —काटा हुम्रा।

(स्त्री वीझोड़ियोड़ी)

वीटक-स पु. [सं.] पान का बीडा।

वीटणौ, वीटबौ—देखो 'वीटणौ, वीटबौ' (रू भे.)

उ०—१ गाज नगारा चहूं गमा, धर माग झकाणी, चढिया धूंस बहादरा, बधं किरवाणी। देस महेवा वीटिया, त्रिविध तुरकाणी। रावळ 'माल' महाबळी, म्रागळ हिंदवाणी। —वी. मा.

उ०—२ ककर पथर वीटिया कुं गणा, जिग तिग पूछं तोछ जळ। 'सुरावत' तु है कण माची, म्राभुखण नव कोट इळ।

—सिवनाथसिंघ री गीत

उ०—३ हिरणा नह मावं हियै, सहबो दीठा स्वाम। वाघ घणा मिळ वीटियां, तौ पिण तिल नह त्राम। —बा दा.

उ०—४ 'चदण' चदण वीटियौ, म्रन भीवण उरगाह। इण कारण म्राया नही, चारग पखी नाह। —बा. दा.

उ०—५ खाग धुबती मारवं, वीट लियो जोधाण। सज्भं कोट मळो छ दळ, वज्जं बाण कवाण। —रा रू.

उ०—६ विधि विधि विलखा वचन कहइ, वेलिइ वीटिया व्रक्ष। म्रेह पनुता म्रवनि तटि, यम चुहुटाडइ चक्ष। —मा का. प्र.

उ०—७ एहवो धातकीखड ए, परिरखिणा परकार। म्रठ लख जोयण वीटीयो, समुद्र कालोदधि सार। —ध व ग्र

उ०—८ सुंदर स्याम सरीर, बाधो कट गाम पीत पीतबर। काळै वादळ मू कै, वीटांणी वीज वरसाळै। —र ज प्र.

वीटणहार, हारौ (हारी), वीटणियौ—वि०।

वीटियोड़ौ, वीटियोड़ौ, वीट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वीटीजणौ, वीटीजबौ—कर्म वा०।

वीटलौ, वीटलौ—१ देखो 'वीटली' (रू. भे.)

उ०—१ उठा सु पाछा मुरडिया, सौ म्रजमेर म्राया। वीटलौ सम्भी तिण ऊपरै भडारी विजैराजजी नै राव म्रमरसघजी कुसलसघोत ऊदावत वगेरै हरभाण भगवानदासोत राठोड़ जगतसघ तेजसघोत वगैरै म्रासामी जद थी। —रा व. वि.

उ०—२ पण उणरी चोड़ै लड़णरी म्रासग हुई नही। तद वरसघ नू लालच देय म्रजमेर बुलायौ, म्ररु खातरी करनै वीटलौ चाढियौ। पीछै वदीवरत कियो। —द. दा.

उ०—३ इण भात सारा नू सीख सलाह दै बहिर हुवो सो पहला तौ म्रजमेर गयौ सो पहला तौ खाजेजी री जारत कीवी, देग कबूल कीवी। पेर वीटलौ चढ मीराजी री जारत कीवी।

—सूरै खीवै काधळोत री बात

२ देखो 'वीटली' (रू. भे)

३ देखो 'वीटणी' (रू. भे.)

४ देखो 'वीटी' (रू भे)

वीटवौ-वि —घुमावदार, लपेटेदार।

उ०—सात हमायचा भाग, सात सुराई सराब की, सात सीका जमनाजळ रो, हलवान पीडा सात, वीटवा सूळा सराब वस्त भाब माहे घात उभो छै। —तिमरलिंग पातसाह री वात

रू. भे - वीटीवौ।

वीटिका-सं. स्त्री [स. वीटि] १ पान की बेल।

२ पान का बीडा तैयार करने की क्रिया।

३ चोली की गाठ।

४ छोटा पान का बीडा।

रू. भे.—वीटी।

वीटियोड़ौ—देखो 'वीटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीटियोड़ी)

वीटी—१ देखो 'बीटी' (रू. भे) (ग्र. मा)

उ०—सोवन वीटी रयणे जडी, मुझ नाचतां देउलि पडी। प्रीतिवचन प्रामी मन माहि, महुतउ पाछउ वलिउ उछाहि।

—हीराणद सूरि

२ देखो 'वीटिका' (रू. भे)

वीटीजणौ, वीटीजबौ-क्रि. म —१ मादा टिड्डी का ऋतुमती होकर गर्भ धारण करना।

वीटीजियोड़ौ-भू का कृ. (स्त्री.) १ ऋतुमती होकर गर्भ धारण की हुई (मादा टिड्डी)

वीटीवार-स. पु.—विशेष खुदाई वाला, म्रर्द्ध मडलाकार पत्थर।

वीटीवौ—देखो 'वीटवौ' (रू. भे.)

उ०—सू नमचा किण भातरा छै? वीटीवा, चोगानिया, घणै बनातरा लपेटिया, सालूरा लपेटिया, बोयदार रा मढिया, चैतरा, कलाबूत रै काम रा, सोनै रूपै रै बळा रा, रूपै रा कुलाबा लागा

थका, मोनै री टूटी, रूपं री बिलम, बिलमपोस छै।
—रा सा. स.

बीटुळी, बीटुली—१ देखो 'बींटली' (रू. भे)
२ देखो 'बीटणी' (रू. भे.)
३ देखो 'बीटी' (रू भे)
४ देखो 'वींटली' (रू. भे.)
उ०—सकती बांधै बीटुळी, ढीली मेल्है लज्ज। सरडी पेट न लेटिवइ, मूध न मेळउ अज्ज। —डो. मा.

बीटोरौ—देखो 'भीटोरौ' (रू. भे.)

बीटौ—स. पु. [स. वीटा] १ लकडी के डडे से खेला जाने वाला खेल। (प्राचीन)
२ देखो 'वींटौ' (रू भे.)
३ देखो 'बींटौ' (रू. भे)
उ०—तेज मैं नाहरखा नाहर सैं हाथू ग्रौर 'ग्रमरेस' गहै ग्रासमान बाथूं। 'प्राग' के जै न्याती रोकै नाम की सी नाई, सेल साहटवाळे त बीटा देत बाई। —रा. रू.

बीट्ठल, बीट्ठल—देखो 'विट्ठळ' (रू. भे.)

बीट्ठळनाथ—देखो 'बिट्ठळनाथ' (रू. भे.)

बीठ—देखो 'बिरठो' (रू भे.) (उ. र)

बीठांन—कि वि.—अन्दर मे।
उ०—नर नार उच्छव सेव निरम्वै, देव दूदंभि वज्जए। बाटत नव गुळ सहर बीठांन, राज अविचळ रज्जए। —रा रू.

बीठळ, बीठल—देखो 'विट्ठळ (रू भे) (ना मा., ह ना मा)
उ०—१ लिखमी ना हर कुण लियै, कुण जीपै करनार। कटक मारण वारणैं, बीठळ कीयो विचार। —पी ग्र.
उ०—२ ग्रादि विस्नु नह ग्रादि माया, हुग्रा ग्रचळ गठि। मधु पुरख हथलेवडो वरमाळ बीठळ कठि। —रुकमणि मगळ
उ०—३ ग्राभ गाभ ती नाखियो, धग लीयो सिर भल। हरीया धर सिर धुणियो, कर गहियो बीठल। —अनुभववाणी
उ०—४ तइ ब्रह्मा भल भोलव्यु संभु कीउ तप भंग। ब्रह्मचारि बीठल करिउ, सोल सहस्रह सग। —मा का. प्र.
उ०—५ दीना लका जै हाथा न कजै, दीधा जग मारी जाणै। वेदा भेदा धाता बीठळ, वारवार रटै वाखाणैं। —र ज प्र

बीठळनाथ, बीठलनाथ—देखो विट्ठळनाथ' (रू. भे.)
उ०—कै जम नाम तणौ तन मज कर, मैं जम हू डर डर मत भाजै। किया सुनाथ हाथ ग्रह केता, बीठळनाथ ग्रनाथा वाजै।
—र ज. प्र

बीठली—१ देखो 'बींटणी' (रू. भे.)
२ देखो 'बींटी' (ग्रल्पा., रू. भे.)
३ देखो 'वींटली' (रू भे.)
४ देखो 'बींटली' (रू भे)
उ०—सवत १७७७ जेठ माहे ग्रजमेर दाखल हुवा। बीठली लीनी, पातसाही थाणो सो उतार दीनो। तिण ऊपरै पातसा महमदसाह बाइसी मेली निवाब मुदफरखा। —रा. ब वि.

बीठळौ, बीठलौ—देखो 'विट्ठळ' (रू. भे.)
उ०—१ मोकू लीन्हे जात है, ग्राह नीर कै मांय। बाहर करवा बीठळा, ग्रजू न ग्रावो काय। —गजउद्धार
उ०—२ मन बुद्धि चित्त ग्रहकार मति, समरति तना त्रेवड सकति। रहमाण तुहारो ग्रटल राज, बीठला हिमैं सिणगार बाज।
—पी. ग्र
उ०—३ भाग तणा भामणा त्या भूधर दुध भजण, बिठ्ठला ना बीठला मुगिति सारूप समपण। साधा ना साजोति राक सालोक लियै रस, सामी मुगिति समीपि मुझ समपो जोडा जस।
-- पी. ग्र
उ०—४ वम ग्रजुग्राळ प्रतिपाळ थै बीठला, रामचद राजि मुर भुवण राईग्रा। पुराणा डोकरा ग्ररज साभळि परी, भाजिहो भाजि भंचक भाईया। —पी. ग्र

बीठुळ, बीठुल—देखो 'विट्ठळ' (रू भे)
उ० १ रिखव नाभ सुन निमो ग्रलख ग्रणजीत ग्रणकळ, ब्रह्मा मेस महेस दत जोगी थारा थळ। इमो ग्राप ग्रविधून जिको ग्रन सोईया जायो, बीठुल सा वादनै, गरव गोरखि गमायो। —पी ग्र
उ०—२ भरथ पिता द्रव भाळि, हुग्रो बीठुळ वनवासी। सरगि गिग्रो दसरथ, ग्रनत कीधो ग्रविणासी। —पी. ग्र.
उ०—३ बीठुळ विसवनाथ धन जदपत केसव स्रीवर, नारायण नरसिंघ दमोदर गिरधर नरहर। ग्रविगत ग्रादि जुगाद उपावण ग्रळ ग्रपपर, समरि समरि जगदीस भगत मा ग्रार प्रमेसर।
— पि. प्र
उ०—४ मछ कछ वराह माहव, नारसिंघ ग्रनिदय। वेसवाण दुझझ बीठुल, रामचद निरदय, कान्ह बुद्ध कलकि केसव, भोम टाळण भारय। — पि. प्र.

बीठुळनाथ, बीठुलनाथ—देखो 'विट्ठळनाथ' (रू भे)

बीठुळु, बीठुलु देखो 'विट्ठळ' (रू. भे.)

बीठुळुनाथ, बीठुलुनाथ—देखो 'विट्ठळनाथ' (रू. भे)

बीठौ—वि.—वेष्टित, घिरा हुग्रा।
उ०—बिराजै नगा ग्रोप सू रूप बीठो, दळा नाथ स्रीनाथ रो रूप

दीठो । वर्ण साभळौ गात भीणं वमन्नं, तिमो भूखणं जोत मोती रतन्नं । —रा. रू.

२ खराब ।

बीडगांण—देखो 'विडग' (रू. भे.)

बीडरणौ, बीडरबौ-क्रि. स.—क्रोध करना, गुस्सा करना, क्रोध मे विकराल रूप धारण करना ।

बीडरणहार, हारौ (हारी), बीडरणियौ – वि० ।

बीडरिग्रोडौ, बीडरियोडौ, बीडरयोडौ—भू० का० कृ० ।

बीडरीजणौ बीडरीजबौ—कर्म वा० ।

बीडरियोडौ-भू. का. कृ.—क्रोध किया हुग्रा, गुस्सा किया हुग्रा, क्रोध मे विकराल रूप धारण किया हुग्रा ।

(स्त्री. बीडरियोडी)

बीडन—स. पु.—रस्सी के छोर पर लगाया जाने वाला काठ का छोटा टुकडा ।

बीडवसदेस—स. पु.—एक प्रदेश विशेष । (प्राचीन)

उ०'' बीडवसदेस ग्राम सहस्र ७०, गूजरात ग्राम सहस्र ७०, पारोथलदेस ग्राम सहस्र ७०, मालवा ग्राम लक्ष १८ सहस्र ६२, गंगा पारदेस ग्राम सहस्र २४, जेजाहूति सहस्र २४, कुंकण सहस्र ६. मलयदेस ग्राम लक्ष १, । —व. स.

बीडांणी- देखो 'विडाणी' (रू. भे.)

बीढ—१ देखो 'भीड' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढ' (रू. भे.)

उ०—१ अगनि मे बाग छूटा अमस्स, वळी बीढ चिहुवै वळा । पछिवाण हुवौ पूठी रुखौ, गजरा' तणै दिल्ली दळा । —गु. रू. ब.

उ०—२ पाना मुख वाजित्र हिलै वाना वेरक्का, मेघ रग मातग बीढ उढग कटक्का । पली जेम मादळा हिलो फोजा धमसाणा, व्योम रजो वित्थरी धमग वज्जी केकाणा । —रा. रू.

बीढण—देखो 'विढण' (रू. भे.)

बीढणौ बीढबौ-क्रि. स.—१ लपेटना, लिपटाना ।

उ०—दही रो रजबो दीजे छै । तरगसा माहा सीका काढजे छ । वेवडा ठीहा चाढजे छै बीच खोसरी भरती दीजे छै। सूतमु बीढ सीका ऊपर चाढजे छै । आडे हाथ डोग दीजे छै इण भात मूळा वर्ण छै । वडी देवगिरी थाळो मे उतारजे छै । —रा. सा. स.

२ देखो 'विढणौ, विढबौ' (रू. भे.)

उ०—बीढण सगराम री हाम बाकारता, माहा दोय जाम होय गइ मौने । जोधपुर जहर रा बीज वाया जिकै, तिकै फळ चखाउ आव तौने । —सैरसिंग कोळसिंघ रो गीत

३ देखो 'वेढणौ, वेढबौ' (रू. भे.)

४ देखो 'बीडणौ, बीडबौ' (रू. भे.)

बीढणहार, हारौ (हारी), बीढणियौ—वि० ।

बीढिग्रोडौ, बीढियोडौ, बीढयोडौ - भू० का० कृ० ।

बीढीजणौ, बीढीजबौ—कर्म वा० ।

बीढियोडौ—१ लपेटा हुग्रा, लिपटाया हुग्रा ।

२ देखो 'विढियोडौ' (रू. भे.)

३ देखो 'वेढियोडौ' (रू. भे.)

४ देखो 'बीडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बीढियोडी)

बीण-स. स्त्री [स. वीणा] १ सपेरो के बजाने का एक फूक वाद्य विशेष, महुवार ।

उ०—तद काया हुय जोगी हुवा । मुद्रा घाती । गुजरात गया । अ्रै प्रोहित दीदारू, मखरा घणा । अर बीण आछी वजावै । तद सहर माहे वखाण हुवौ,–जु जोगी घणा भला, बीण आछी वजावै । —नैणसी

२ बासुरी, मुरली ।

३ भैरूजी के भोपों के बजाने का एक फूक वाद्य विशेष ।

४ मसक से मिलता जुलता एक फूक वाद्य विशेष ।

५ देखो वीणा' (रू. भे.)

उ०—१ हस गवण कदळी सुजघ, कटि केहर जिम खीण । मुख ससहर खजन नयण, कुच स्रीफळ कठ बीण । —ग्रग्यात

उ०—२ सहज मदळ जिन धमकही, वाजे अनहद बीण । गोरखी बाणी नत रतन, साध भगत जोलीण । —ग्रालमजी

उ० ३ चपा बरनी, नाक मळ उर सुचग, विचि हीण । मदिर बोली मारुवी, जाणि भणक्की बीण । —ढो. मा.

रू. भे - बींण, ब्रीन, वेण, वेणा, वेणु, वेणू, वेंण ।

अल्पा. - वेणका

बीणउसिउ बोणउसीउ—स. पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ० 'वीणउसीउ चोणउसीउ मलउसीउ आउचीयउ मूगनउ मयउ मगलिक मेदियउ सीलउर सिहलउरउं वद्रागउ होरागरउ फुल्लयागरउ पुनलीउ बहूमूल पूणोलिय मीणीय काल फूटडउ रातउ फूटडउ सूवउनी मेघावनि मेघडबर पद्मावलिपदमोत्तर इत्यादि वस्त्राणि । —व. स.

बीणकार-स. पु.—गवैयो के अन्तर्गत एक भेद जो बीन बजाने का पेशा करते है । (गा. मा.)

रू. भे.—बीणाकार, वींणकार ।

बीणणौ, बीणबौ-क्रि. स.—१ देखो 'बिणणौ, बिणबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सू पाछिली पहर छै। आ भूलि सापडि नैबाजोट ऊपरि बैठी छै। छूटा केम छै। उघाड़णी लाल घाघरी छै। ढीलै कसणं काचवो छै। बैठी थाळी मे चावळ बीणं छै।
—कावळं जोईयै नै तीडो खरळ री बात

उ०—२ तठा उपरायत दळूरा री कूंडी तेवबळ रो घोटो धोय तयार कीजै छै। मागण बीण मोकळा पाणी सू धोयजै छै। फेर कोरी हाडी मे रांधजै छै। तठा पछै घोटजै छै। —रा. सा. म

उ०—३ वसत पचमी पछै, नीकळै काची केळा। कूपळ दातण तणी, रंगीली रुत री वेळा। फागण उतरै धीव, गवरज्या पूजण चावै। बीण लामवा फूल, चढा चद्रायण गावै। —दमदेव

उ०—४ तसु रग वास तसुवाम रग तण, कर पल्लव कोमळ कुसुम। वणि वणि मालिणी केसरि बीणति, भूली नख प्रतिबिंब भ्रम।
—वेलि

३ देखो 'बणणो, बणवो' (रू. भे.)

४ देखो 'बुणणो, बुणवो' (रू. भे.)

बीणणहार, हारो (हारी), बीणणियो—वि०।

बीणिओड़ो, बीणियोड़ो, बीण्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीणीजणो, बीणीजबो— कर्म वा०।

बीणत, बीणती—सं. स्त्री. [सं विनति] १ अनुनय-विनय, प्रार्थना।

उ०—१ तूं थो नोज मरै ए म्हारी धोबड़ी, सूरज नो सुगेला थारी बीणती, आ तो बेमाता सुगेला पुकार, लाय दौनी भवर बीणोटियो। —गो. गी

उ०—२ नी तो म्है ऊदरा नै घरै निवतनै लायो अर नी म्है मिन्नी नै ऊदरा मारणा सिखाया। थारा भगवान आगै जाय बीणती करो जको जिनावरा नै जीव मारणा मिखावै। थारै पाल्या जै मिन्नी मानती व्है तो उणनै मनावो। —फुलवाड़ी

उ०—३ तरै जैतेजी नु वीरमदे कहाडियो—राव मु बीणती करो नै म्हा कन्हा राव रा हीडा करावो। ज्युं थे चाकरी करो छो त्यु म्हे ही राव री चाकरी करा। —राव मालदे री बात

२ नम्रता, विनम्रता।

रू भे.—विणति, विणती, वीनती।

अल्पा., —वीनतड़ो

बीणधर—देखो 'वीणाधारी' (रू भे.)

बीणवणो, बीणवबो—१ देखो 'विनवणो, विनववो' (रू भे.)

२ देखो 'बिणणो, बिणबो' (रू भे)

बीणवणहार, हारो (हारी), बीणवणियो—वि०।

बीणविओड़ो, बीणवियोड़ो, बीणव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीणवीजणो, बीणवीजबो—कर्म वा०।

बीणवियोड़ो—१ देखो 'विनवियोडो' (रू भे)

२ देखो 'बिणियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. बीणवियोडी)

बीणो—स. पु.—१ कपास का पौधा व कपास का डोडा।

उ०—ऊपर छोतरा, गोहू, तरकारी हुवै। पाणी मीठो। बीणो फागुणिया-मूंग, जवार, मेलडी सो हुवै छै। —नैणसी

२ देखो 'बीणा' (रू. भे.)

बीणा—स. स्त्री. [स] १ प्राचीन कालीन एक प्रसिद्ध तारवाद्य।
(अ. मा)

उ०—१ बीणाधर रहजाई गावै किण भात, तराज पर नह आवै नारद बीणा री तात। जिणनै सुण्या कोकिला मयूर लाज भाग जावै, कुरग औ अभंग वन पाताल सूं आवै। —रा सा. स.

उ०—२ तठा उपरानि करि नै राजान मिलामति अनेक राग रग बधाई वाटीजै छै। राय आगण घोलहरै गेहणी घणा मगळाचार गीत नाद खभाइचो गावै छै। छत्रीस वाजा पच-सबदा वाजै छै। ताहरा नाम तती, बीणा, किनरी, तबूरो, नीसाण एतो पाच सबदा आगै छत्रीस वाजा रा नाम कहै छै। —रा. सा. सं

उ०—३ ताल म्रदग तबूरे, सुर बीणा बीणाधरि सुदरि। हरखत नृपत हजूर, सभै सलाम अलाप कीध सुर। —सू प्र

२ बीन।

३ निमाणी छद का भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे ७ गुरु और १ लघु वर्ण होते है।

उ०—कीला, लीला, थिरा कमारि, बीणा रंगी, चगी, वारि। विद्या, माळा, बाळा, वाम नीमाणी रा बारा नाम। —पि. प्र.

४ मध्य लघु की पाच मात्रा का नाम। (डिं)

५ पुरुषो की ७२ कलाओ मे से एक। (व स)

६ विद्युत, बिजली।

रू भे.—बीण, बीन, वीणा, वीन, बीणा, बीणा, वेण, वेन, बेण, बैन, वैण, बैन, वीण, वीन, वीण, बीणा, वेण, वेणा, वेणु, वेणू, बेण, वैन, वैण, वैणा।

अल्पा,—बेणका, वेणका।

बीणाकार—देखो 'वीणाकार' (रू. भे.)

उ०—दक्षिण दिसि तूरी रहिउ, हीण अगूठउ हत्थि। बीणाकार वाड सुमर, ताम दत दोई नत्थि। —मा का प्र.

बीणादड—स पु [स.] बीणा नामक तारवाद्य के मध्य भाग का लंबा दड, प्रवाल।

बीणाधर, बीणाधरि, बीणाधार, बीणाधारी—वि. [स. वीणाधारिन्] (स्त्री बीण धारिणी)

१ वह जो बीणा रखता और बजाता हो।

उ०—ताल म्रदग तबूर, सुरबीणा बीणाधरि सुदरि। हरखत नृपत हजूर, सभै सलाम अलाप कीध सुर। —सू. प्र.

उ०—२ वीणाधर सहजाई गावै किण भात, तराज पर नह आवै नारद वीणा री तात। जिणनै सुण्या कोकिला मयूर लाज भाग जावै, कुरग श्रौ भमग, वन पाताळ सूं श्रावै। —रा. सा. स.

स. पु.—१ नारद।

२ भैरूजी के पुजारी, 'भोपे'।

स स्त्री.—३ सरस्वती।

रू. भे —वीणधर।

वीणानिनाद—स. स्त्री [स.] स्त्रियो की चौसठ कलाश्रो मे से एक।

उ०—ग्रहोपचार, व्याकरण, परिनिराकरण, रंधन, केसबंधन वीणानिनाद, वितडावाद, अकविचार, लोकव्यवहार, प्रहेलिका, स्त्री चतुरसोस्टकला। —व. स.

वीणापाणि, वीणापांणी—स. पु. [स वीणापाणि] १ नारद।

२ भोपा।

स स्त्री. —३ सरस्वती।

रू भे.—वेणापाणि, वेणापाणी।

वीणाप्रसेव—स पु [स वीणा+प्रसेव]वीणा मे लगी वह गट्टी जिसे आगे पीछे करके तार मे निकलने वाले स्वर को तीव्र या मद किया जाता है।

वीणार—स. पु —१ प्रत्येक चरण मे प्रथम एक नगण श्रौर बाद मे सात भगण श्रत मे एक लघु श्रौर एक गुरु सहित २६ वर्णो का एक वर्णिक वृत्त।

उ०—प्रथम तगण जगण सपत, लघु गुर मारा लारि। श्राखर बीस छ श्रै वहा, वदा छद वीणार। --पि प्र.

२ घुडसवार ?

उ०—१ भड तुरग वीणार, चढे माभी गज केसर। फौज लगै फूलियं, दोध पराराठा पस्मर। —गु. रू. ब

उ०—२ तीन हजार तुरग नर, मारू धर वीणार। छडहडियो मडळ धरणि, चढियो राजकुंवार। —रा. रू.

वीणावस—सं. पु [स. वीणावश] एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—··· "देहरि दडकलस श्रामलसारा सोना तणा जलकइ, जलदिरिणि कुलवधू तणे पागि नूपर खलकइ तांडव कीरत्तिस्तभ दीसइ, लोकहियां विहसइ, मेघ मल्हार राग गाइय, वीणावस मनोहर वाइय, देही पूजा कीजइ, जन्मफल लीजीइ। —व. स.

वीणावती—स. स्त्री. [स] वीणावादिनी सरस्वती।

वीणावाद, वीणावदक—त्रि. [स. वीणा+वाद व वादक] वीणा बजाने वाला।

वीणावादनी, वीणावादिनी—स. स्त्री [स. वीणावादिनी] वीणावती सरस्वती।

वीणासर, वीणासुर—सं. पु. [स. वीणा+स्वर] वीणा को बजाने से उत्पन्न ध्वनि, वीणा की झकार।

उ०—वीणासुर सहुए कर्‍यो, तत उतार्‍यो राग। पिण किणही ना नाद सु, कुमरी चित्त न लाग। —श्रीपालरास

वीणास्य—स. पु. [स वीणा+आस्य] वीणा रखने वाला, नारदमुनि।

वीणाहस्त—स. पु. [स वीणा+हस्त] शिव, महादेव।

वीणि—१ देखो 'बिना' (रू. भे.)

उ०—१ थळ माथै निवाण करि, नर काय लीजै नीर। नाळे खोळै न मिळै, रीणायर बीणि हीर। —वील्होजी

उ०—२ भोजन दान सुभाव विणि, दिल कपटी श्रतरि दिवै। जप वीणि जमवारो इकरथ, सुरिजन कवि साचो कवै।

—सुरजनदास पूनियो

२ देखो 'वीणी' (रू भे.) (उ र.)

३. देखो 'वेणी' (रू. भे.)

उ०—एक नाखई एकाउली हार, एक ऊनारइ मवि सिणगार। ताणइ वीणि विछोडइ दोर, एक लूस्या दिसइ बदोर।

—का. दे. प्र.

वीणिकार—देखो 'वीणकार' (रू. भे)

उ०······चामरधारिणी वारविलासिनी महल्लकल्लिका उपाध्याय गायन बइकार श्रालविणिकार वीणिकार वमकार छतिकार मानताळकार वडाउजिय पखाउजय पाटहिकप्रमुख राजलोक पौरलोक चक्रवालि। —व स.

वीणियोडो—१ देखो 'बिणियोडो' (रू भे.)

२ देखो 'वणियोडो' (रू भे)

३ देखो 'बुणियोडो' (रू. भे.)

वीणी—स. स्त्री १ दो कपाटो को मजबूत बद करने के लिए उनके पीछे लगाई जाने वाली अर्गला।

२ चौकोर छिद्र करने का एक कीला विशेष।

३ हाथ की कलाई।

४ देखो वेणी' (रू भे.)

रू. भे. —बीणी, बेणि, बेणी, वीणि।

वीणो—स. पु —एक प्रकार का तार वाद्य विशेष।

२ स्त्रियो के शिर पर चूडामणि (बोर) के नीचे लगाया जाने वाला प्लास्टिक का टुकडा, जो चूडामणि (बोर) के शिर मे गडने से बचाने हेतु लगाया जाता है।

३ स्त्रियो के शिर के श्राभूषण टीके का ही दूसरा नाम।

रू. भे.—बीणो, वेणो, वेणो।

बीत-सं. स्त्री. [स. बीत] १ महावत द्वारा हाथी को अंकुश मार कर पैरों से मारने की क्रिया। (डिं. को.)

[स. बीतः] २ हाथी, घोड़ा या सैनिक जो युद्ध के अयोग्य हो।

वि. [स] ३ स्वतंत्र या मुक्त किया हुआ। ४ गया हुआ, प्रस्थान किया हुआ। ५ पसंद या स्वीकृत किया हुआ।

६ युद्ध के अयोग्य।

रू. भे.—'बीन'

७ देखो 'बिन' (रू. भे.)

उ०—१ हसियो जग आगळ हुए, बसियो बीवण बीत। रसियो नारी राड सू, फसियो होण फजीत। —बा. दा.

उ०—२ हाजर हिंदूवे तुरक, लिये न पर मुंह लोड़। बीत वटावण टेक तूं, बीत वटावण कोड़ि। —गु. रू. ब.

उ०—३ पेसकसी सिर आदरै, बंबे कर परवाण। ... लगो 'अगजीत' रै बीत धरै चहुवांण। —रा. रू.

उ०—४ वाटो बीत आपणी वारै, लाछ नहीं हालेला लारै। थिर ओ दिन नह रहसी थारै, तू नर क्यों न ईसवर चितारै। —बकसीराम लाळस

बीतक, बीतग-वि.—बीता हुआ, गुजरा हुआ।

उ०—१ हू तुज आगळ सो कहू कन्हैया! बीतक दुख री बात रे। —गिरधारी लाल

उ०—२ सेत्रुंजे नायक बीनति साभलो, श्रीरिखहेसर स्वाम। दीनदयाल तुम्हानें दाखिवु, अतर बीतग आम। —ध. व. ग्र.

उ०—३ तु ग्यानी तो पिण तुझ आगें, बीतग कहियें बात जी। चोबीसे दडके हु फिरियो, वरणू तेह विख्यात जी। —ध. व. ग्र.

उ०—४ तसु जाति पांति नहीं काई नही कोई जेहनै भाई, वलि बाप न काई माई। हुं तुझ नें आवी मिलियो बीतग दुख सहु टलियो, घर आगण सुरतरु फलियो। —वि. कु.

बीतगराग, बीतगरागी—देखो 'बीतराग' (रू. भे.)

उ०—मेरू थिकी करि पूरब पच्छिम दोइ विभाग, सोलह सोलह विजय तिहा विचरै बीतगराग, सासते चौथे आरे तारे सौ अरिहत, एहवे महाविदेह करमभूमि त्रीजी तत। —ध. व. ग्र.

बीतणो, बीतबो—देखो 'बीतणो, बीतबो' (रू. भे.)

उ०—तरण न्रप पुज सथानक तीजे, बीरचद्र राजा वरणीजे। इण मिस भाग बीतिया आधो, लगि अनुराग सुपन न्रप लाधो। —सू. प्र.

उ०—२ बीता अपूरा बार पूरा वेघ सूरा वच्चए, गेलें प्रहार धार बार मार मार मच्चए। बरगा स्रहर्गं दुहु वर्गे काळ रगे वीरय, अछरा उमर्गे दूर अगे चाव रगे चीरय। —रा. रू.

उ०—३ पूत पिता एक थया, थें बढ जावो देस। बोला कोला बोलिया, बीतो बयण विसेस। —रा. रू.

बीतणहार, हारो (हारी), बीतणियो—वि०।

बीतिओडो, बीतियोडो, बीत्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीतीजणो, बीतीजबो—भाव वा०।

बीतद्वख, बीतद्वेस-वि. [स वीतद्वेष] द्वेष रहित, बिना द्वेष का।

उ० —राग द्वेम ओलखायवा स्वामीजी द्रस्टात दियो। किणहि डावरा रै माथा मे दीधी। जद तो लोक उण नें ओलभो देवें। भला आदमी छोहरा ना माथा मे क्यू दे। अनै किण ही डावरा ना हाथ मे लाडू दियो। नथा मूलो दियो। उणानें कोई वरजै नही। ओ राग ओलखणो दोहरो, अनै ऊ द्वेम ओलखणो सोहरो। तिण सू बीतराग कह्या, पिण बीतद्वेम न कह्या। राग मिट्या द्वेम तो पहिलाइज मिट जाय। —भि. द्र.

बीतभय-स पु—१ एक नगरी का नाम।

उ०—अताउर परिवार ल भडापकरण सभाय। 'बीतभय' में ही निकली, 'चपा' नगरी जाय। —जयवाणी

२ भगवान् विष्णु का विशेषण।

वि —जिसका भय समाप्त हो गया हो, भय रहित।

उ० - बीतभय पाटण नउ धणी रे, नाम उदयन राय। तिणि रातउ पोसउ कीयो रे, वीर वादण चित लाय रे। —स. कु.

बीतराग-वि. [स वीत+राग] १ जिसे आसक्ति न हो, निस्पृह, कामनाशून्य।

उ०—१ राग द्वेम ओलखायवा स्वामीजी द्रस्टान्त दियो। किणहि डावरा रै माथा मे दीधी। जद तो लोक उणनें ओलभो देवें। भला आदमी छोहरा ना माथा मैं क्यूं दे। अनै किणही डावरा ना हाथ मे लाडू दियो। नथा मूलो दियो। उणानें कोई वरजै नहीं। ओ राग ओलखणो दोहरो, अनै ऊ द्वेम ओलखणो सोहरो। तिण सू बीतराग कह्या, पिण बीतद्वेम न कह्या। राग मिट्यो द्वेम तो पहिलाइज मिट जाय। —भि. द्र.

उ०—२ बारमी भावना एम भावइ, अरिहंत बीतराग देव रे। धरम ना ए खरा आराधक नाम जपइ नितमेव रे। —स. कु.

२ जितेन्द्रिय।

स. पु १ बुद्ध का एक नाम।

२ जैनियों के प्रधान देवता का नाम, जिन भगवान।

उ०—१ आगइ तीह ना गरिमा काज, जहे कहिउ कीधउ बीतराग। अठ करम जरा नी ओडी वेलि, गिया ए जि सिदिइ पेलावेली। —वस्तिग

उ०—२ जिन मेरु च्यारे अरध पुस्कर, माहि पच्छिम भाग ए। तिहा मेर विज्जुमाल तिहू दिसि, विचरता बीतराग ए। —ध. व. ग्र.

उ०—३ पटणी पारिख सूरजी सघ मू, जात्र करी लाभ मुजगीमइ समय सुदर कहइ साचउ मइ जाण्यउ, बीतराग देव विसवा बीमइ —स कु.

उ०—४ सूत्र सुणइ हित आणी, एतौ बीतराग नी वाणी हौ। जस कल्पावतंसिका नामदू, सोहइ स्वग प्रकामइ हौ। —वि कु.

रू. भे —बीतराग, बीतराग, बीतरागी, बीतरागी, बीयराग, बीयरागी बीयराय।

अल्पा., बीतरागौ बीतरागौ।

बीतरागी—देखो 'बीतराग' (रू भे.)

उ०—एक ही ब्रह्म अगिन सम जाण्या, दुतियै काम्ट दागी। जीवन मुक्ति मदा मुखदाई, समदरसी बीतरागी।

—श्रीसुखरामजी महाराज

बीतरागौ—देखो 'बीतराग' (अल्पा, रू भे.)

उ०—भार वाहक नइ कह्या भला, बीमामा बीतरागौ जी। भाषा थी मूकइ कर्ष सहइ, मारग माहि लागौ जी। —स. कु.

बीतसूत्र-स. पु. [स] जनेऊ, यज्ञोपवीत।

बीतसेन-स पु [स] राजा पुरुरवा के पिता का नाम।

बीतसोक-वि. स [बीत+शोक] जिसे शोक न हो, शोक रहित।

स पु—अशोक नामक वृक्ष विशेष।

बीतसोका-स. स्त्री [स. वीतशोका] एक नगरी का नाम।

उ०—तिम द्विज नवमी वच्छ विजय वलि पूरव विदह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमु धरि नह। नलिनावरत्त चउवीसमो पछिम विदेह वखाण, बीतसोका नयरी तिहा चौथो सुबाहु सुजाण।

—ध व ग्र

बीतहव्य-स. पु. [स.] १ शुनक का पुत्र एव धृति का पिता एक जनक-वशीय राजा।

२ हैहय नामक शर्यातिवशीय वत्स का पुत्र।

वि० वि०—मतान्तर मे यह हैहयवशीय तालजघ राजा का पुत्र, सुविख्यात हैहय सम्राट कार्तवीर्य का प्रपौत्र एव जयध्वज राजा का पौत्र था। परशुराम के क्षत्रियसहार के समय यह अपने पिता के साथ हिमालय मे छुप गया था एव परशुराम के निवृत्ति होने पर इसने माहिष्मती नामक नगरी बसाई थी। इसे अपनी दश पत्नियो से प्रत्येक मे दश दश पुत्र उत्पन्न हुए थे। जिन्होने काशि देश के हर्यश्व, सुदेव एव दिवोदास राजाओ को पराजित किया। इसके पुत्रो का वध काशि के दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन ने किया था, उस समय इसने भृगुऋषि के आश्रम मे छिप कर अपनी जान बचायी थी एव उसके बाद इसने ब्राह्मणत्व स्वीकार किया एव भृगुऋषि के कृपाप्रसाद से ब्रह्मर्षि बना था।

बीतहोत, बीहोतर, बीतहोत्र—देखो 'बीतिहोत्र' (रू भे.) (ना. मा.)

बीताणौ, बीताबौ—देखो 'बिताणौ, बिताबौ' (रू भे)

बीताणहार, हारौ (हारी), बीताणियौ—वि०।

बीतायोडौ—भू० का० कृ०।

बीताईजणौ, बीताईजबौ—कर्म वा०।

बीतायोडौ—देखो 'बितायोडौ' (रू भे)

(स्त्री, बीतायोडी)

बीतावणौ, बीतावबौ—देखो 'बितागौ, बिताबौ' (रू भे)

उ०—एक इकी नौबत एक री एक अगरेजी राज री सुण नै सूर-वीरा आपरी जात रो नै कुळ रो स्वभाव वीरपणौ भूला और वा सूरमा आळस मे अर ऐस मे सरीर निरस्थक बीतावणौ सुरू कीधौ। —वी. स. टी.

बीतावणहार, हारौ (हारी), बीतावणियौ—वि०।

बीताविओडौ, बीतावियोडौ, बीताव्योडौ—भू० का० कृ०।

बीतावीजणौ, बीतावीजबौ—कर्म वा०।

बीताबियोडौ—देखो 'बितायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री बीताबियोडी)

बीति-स. पु [स. वीतिः] १ घोडा अश्व। (२) खाद्य पदार्थ, भोजन।

३ यज्ञ, हवन। ४ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

५ चमक, दीप्ति, कान्ति।

६ अग्नि, आग।

७ गति, चाल।

८ पैदावार, उपज।

९ खाने पीने की क्रिया, उपभोग।

रू. भे —वीति, वीती, विति, विती, वीनी।

बीतिमत-स. पु [स वीतिमत्] रैवत मनु का पुत्र, एक राजा।

बीतियोडौ—देखो 'बीतियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री बीतियोडी)

बीतिहोत, बीतिहोतर, बीतिहोत्र—स पु [स. वीति+होत्र] १ अग्नि, आग। (२) हैहयवशीय वीतहव्य राजा का नामान्तर। (३) प्रियव्रत एव बर्हिष्मती के पुत्रो म स एक जो रमणक एव धातकी का पिता था। (४) सूर्य, सूरज। (५) इद्रसेन राजा का पुत्र एव सत्यश्रवस् राजा का पिता, एक राजा (६) सुकुमार राजा का पुत्र एव भर्ग राजा का पिता एक राजा। (७) युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ मे उपस्थित एक ऋषि।

रू. भे बितिहोत, बितिहोतर, बितिहोत्र, बीतहोत, बीतहोतर, बीतहोत्र बीतिहोत, बीतिहोतर, वितिहोतर, वितिहोत्र। वित्रहोत, वित्रहोत्र बीतहोत बीतहोतर, बीतहोत्र, वीतीहोत, वीतीहोतर, वीतीहोत्र वीत्रहोत, वीत्रहोत्र।

बीती—देखो 'बीति' (रू भे) (प्र मा.)

बीतीहोत, बीतीहोतर बीतीहोत्र—देखो 'बीतिहोत्र' (रू. भे)

बीतोड़ो—देखो 'बीतियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बीतोडी)

बीत्थरणो बीत्थरबो—देखो 'बिस्तरणो, बिस्तरबो' (रू. भे.)

बीत्थरणहार, हारो (हारी), बीत्थरणियो—वि० ।

बीत्थरिप्रोड़ो, बीत्थरियोड़ो, बीत्थरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बीत्थरीजणो, बीत्थरीजबो—भा० वा० ।

बीत्थरियोड़ो—देखो 'बिस्तरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीत्थरियोडी)

बीत्योड़ो—देखो 'बीतियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बीत्योडी)

बीत्रहोत, बीत्रहोत्र—देखो 'बीतिहोत्र' (रू भे.) (ह ना. मा.)

बीत्रोट—स. पु —मनमुटाव, वैर ।

उ०—डेरा नजीक-नजीक हुवा । बीच परधान फिरीया, बात बणी नही । बीरमदे राव मालदे बीच परधान जुदा फिरीया । राव 'कू पं' 'जेतै' बीच प्रादमी फिर, धणी चाकरै बीत्रोट घातियो । राव मालदे डेरा २ पाछा कीया । —नैणसी

बीथरणो, बीथरबो—देखो 'बिस्तरणो, बिस्तरबो' (रू भे.)

बीथरणहार, हारो (हारी), बीथरणियो—वि० ।

बीथरिप्रोड़ो, बीथरियोडो, बीथरयोडो—भू० का० कृ० ।

बीथरीजणो, बीथरीजबो—भाव वा० ।

बीथरियोड़ो—देखो 'बिस्तरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीथरियोडी)

बीथि, बीथिका, बीथी—स स्त्री [स वीथि, वीथिका, वीथी] १ मार्ग, रास्ता, गली ।

२ पंक्ति, कतार ।

३ हाट, दुकान ।

४ चित्रशाला ।

५ वीथी या सडक के रूप मे माने जाने वाले आकाश मे नक्षत्रो के रहने के स्थानो के कुछ विशिष्ट भाग ।

६ कागज या दीवार जिस पर चित्र बनाया जाता है।

७ सूर्य के चलने का आकाश मार्ग ;

८ सत्ताईस प्रकार के दृश्य काव्यो या रूपको मे मे प्रकार का रूपक जो एक ही अंक का और एक ही नायक का होता है। इसमे शृंगाररस अधिक होता है ।

रू. भे —बोथि, बौथी।

बीदंस—स. पु.—श्येन, बाज आदि शिकारी पक्षी ।

बीद—स. स्त्री.—१ हाल, वृत्तान्त, विवरण ।

उ०—जळ छोळ चीर भीनो मुजाण, बीद पुछी सासू बीमळ वाण । पोसाक तुज किम नीर पास, प्रगट्यो मोय इचरज चव प्रकास । —रामदान लाळस

२ देखो 'बीद' (रू भे)

उ०—खित हर प्रपच्छर बीद खटै, किरमाळ वहै वरमाळ कटै । निरखै सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पगै सिरमाळ सचै । —रा रू

बीदग, बीदग्घ—स पु. [सं विदग्ध] १ कवि, पंडित । (डिं. को)

उ०—१ मूरभूम पाठ पिंगळ मता, साहित बीदग सारनै । कहै मछ भला रूपक करो, ग्रै दस दोस निवारनै । —र. रू

उ०—२ दूहा लघु गिण आधकर, ज्या मझ घट कर एक । रहेस बाकी नाम रट, बीदग अघट विसेक । —र. ज प्र

२ चारणो का एक पर्यायवाची नाम ।

उ०—१ सिका भला धन जोडियो, ऊपमियो निज आच । कीरत पोहरै करन रै, बीदग ऊठै वाच । —बा. दा

उ०—२ देवळ विण देव करम विण दरसण, वप वनिता भरतार विना । ब्रामण विण वेद, विद्या विण बीदग, मोज धनह विण जिसी मना । —त्याग प्रसस, रो गीत

रू. भे – बिदग, बीदग, विदग, विदग्ध ।

बीदळ, बीदल—देखो 'विदळ' (रू भे)

उ०—भिडता भड पारख साल भरै, करवा जुध बीदल मेलि करै । भर रोस जिदै चिक बैण भणै, गहै राव खळा तिलमात गिणै । —पा प्र

बीदा—देखो 'बीदावत' (रू. भे)

उ०—१ मर्भ जध 'बीदह' रा खळ साळ, हिचै खग भाग चढोत 'हिदोळ' । रचै जुध 'भोज' हरा रिमराह, नरावत नाहरखा नरनाह । —सू प्र.

उ०—२ ऊदा के बीदा भड उदार, पडियार कमा मडळा पमार । साखला गोड हाडा सधीर, भाटी चवाण निरवाण बीर । —पे. रू

बीदावटी—देखो 'बीदावाटी' (रू भे)

बीदावत—स. पु —राठौडो की एक उपशाखा या इक्त उपशाखा का व्यक्ति ;

रू. भे.—बीदा, बीदावत, बीदा ।

बीदावाटी—स. स्त्री.—छापर द्रोणापुर का वह प्रान्त जो राव जोधा के पुत्र बीदा के अधिकार मे था । (ऐतिहासिक)

रू. भे.—बीढावटी।

बीढुखण, बिढुसण—देखो 'विध्वंस' (रू. भे)

बीधणौ, बीधबौ—१ देखो 'बिंधणौ, बिंधबौ' (रू. भे) (उ. र.)

उ०—नागरवाल रा नीपना गोहूं, बजर कठकालिम्रां मूछा रा। भावारी सिलाक हुग्रै तिण भाति रा, बारा बारा वरसा रा डाउडां रा कान बीधीजै। इण भाति रा पाच पाच मण, दस दस मण गेहू, चावळ ग्राविम्रा आजमा घालिम्रा रोळीजै छै। —रा सा स.

२ देखो 'बीधणौ, बीधबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पख जाति जीवन लाभइ पार, ग्रनवरतु तीह नउ हूइ सहार। दीठउ सावज बीधइ बाणि, दुख हणी ऊघाडी खाणि —वस्तिग

उ०—२ पाच सइ धनुख देह परिमाण, तेत्रीस सागरोपम सातमी जाणि। पाप तणा फल एवडा होइ, वज्रकटि बीधिउ छइ सोउ —वस्तिग

उ०—३ नेहइ नव भव बीधिय, दीधिय उग्रसेन राय। कुमरि भलीय राजीमति, सीमति तिहूयण माहि। —जयसेखर सूरि

उ०—४ बीधिउ मन रखि नवमइ, नवमट निज नेठाउ। देई दान सवत्सर, मत्सर मिल्हिय नाहु। —जयसेखर सूरि

बीधणहार, हारौ (हारी), बीधणियौ—वि०।

बीधिग्रोड़ौ, बीधियोड़ौ, बीध्योड़ौ- भू० का० कृ० .

बीधीजणौ, बीधीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बीधि—देखो विधि' (रू. भे.)

उ०—१ मुजस सुणाई सोभ, पथ ग्रोरम चडे इधकाई। धन्य धम दियै सो धन्य, बीधि संई लहै वडाई। —बील्होजी

उ०—२ जोग नही पाखड, कोप काया मा वसै। जोग नही पाखड, जीव बोह बीधि तरसै। जोग नही पाखड, वीर जपि गाव जळावै। जोग नही पाखंड, कूड कथि दुंनी डुलावै। —बील्होजी

बीधियोड़ौ—१ देखो 'बिंधियोडौ' (रू भे.)

२ देखो 'बीधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीधियोडी)

बीन—१ देखो 'बींद' (रू भे.)

उ०—गूद लाडू लै'र बीन वण, कर घमड फुरती घणी। जाय ग्रसधै ग्राम गवाडै, परण पधारै बीनणी। —दसदेव

२ देखो 'बीण' (रू. भे.)

३ देखो 'बीणा' (रू. भे.)

४ देखो 'विनय' (रू. भे.)

बीनउलौ—देखो 'बदोळौ' (रू. भे.)

उ०—फिरइ बीनउला बीसलराय, बाजित्र बाजइ नीसांणी घाई जीमणवार साजत हुइ, कुंकुं चदन पाका पान। कर जोडै राजा कहई, चालउ चउरासी राव की जान। —बी. दे.

बींनड़ौ, बीनणौ—१ देखो 'बीदणौ' (रू. भे.)

उ०—१ गूद लाडू लै'र बीन वण, कर घमड फुरती घणी। जाय ग्रसधै ग्राम गवाडै, परण पधारै बीनणौ। —दसदेव

उ०—२ बसी री मा-थारै जच तौ बीनणौ ! ग्रोझाजी नै बुलाय 'र गऊदान देय देवा। —बरसगांठ

बीनणौ, बीनबौ—देखो 'विनवणौ, विनवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सतगुर ग्रागल्य बीनती, करवे लगु पाय। राह कारण्य गुर बीनऊ, ग्रावर दयौ ममभ्काय। —ग्रग्यात

उ०—२ गोरी नदन बीनऊ स्रीपति सुमति सुजाण। रूक्मण तणै वीवाहलो, रिध सिध प्रसिध प्रमाण। —रुकमणी मगळ

बीनणहार, हारौ (हारी), बीनणियौ—वि०।

बीनिग्रोडौ, बीनियोडौ, बीन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीनीजणौ, बीनीजबौ—कर्म वा०।

बीनतड़ौ—देखो 'बीणती' (ग्रल्पा, रू. भे.)

उ०—१ वाल्हेसर सामी, मानि ने तु ग्रतरयामी। मानि नै सिवगति गामी, बीनतडौ मुझ मानौ। —प. च चौ.

उ०—२ सहु गच्छपति सिर छाजे, राजेस्वर पाटियइ पाउधारउ। इक बीनतड़ी ग्रवधारो, स्रीसघना वछित मारउ। —वि. कु.

उ०—३ कायम राजा वाडी वाही, सीच्यौ सतगुर नूर। बीनतडी जकै हाजिर सिवरै सत मुकरत का सूर। —ग्रग्यात

बीनति बीनती—देखो बीणती' (रू. भे.)

उ०—१ सिध साधक योगी भणी रे, जाय कीयौ ग्रादेस रे। बार वार बीनति करी रे, लागौ पाय नरेस रे। —प. च. चौ.

उ०—२ सहज सहज हिडाय, उदो बोलै बीनती, ग्रावा गुवणि चुकाय। —ऊदोजी नैण

उ० ३ राय पासि पहिल पहुचेई, पय पणमि बीनती करेई। साभलि वाचा मुझ भूपाल, इणि वणि ग्रछउ ग्रम्हि रखवाल। —मालिभद्र सूरि

उ०—४ ग्राडो सोबो ग्रावियो, मिरजै सहत मुकीम। बळ तज दक्खै बीनती भूप परक्खे भीम। —रा. रू.

उ०—५ हरि जस रस साहस करै हालिया, मो पडिता बीनती मोख। ग्रम्हीणा तम्हीणै ग्राया, स्रवण तीरथे वयण सदोख। —वेलि

बीनमणौ, बीनमबौ—देखो 'विनवणौ, विनवबौ' (रू. भे)

उ०—१ तापरि खोजो बीनमे, बूझौ राघव व्यास। सब लक्षण गुण पदमणि कै, जाणै सास्त्र ग्रभ्यास। —प. च चौ.

उ०—२ बादल इण परि बीनमें, मात नही हु बालो रे। रिणवट भ्रालिम साह सू, जोइ करू ढकचालो रे। —प. च चौ.

उ०—३ ग्राजि चलावै देव हुइ, बचन हमारउ मानो नू मान। कर जोडै दूज बीनमे, थे घरि चालो, नू लावो ही वार। —बी दे.

उ०—४ ताहरा राजाजी भोपत ऊपरि चढरण लागा। ताहरा राणीजी जसवतदेजी राजि नू बीनमियो। राजि दोहरा की हुवो, हू जाइ भर भोपति नूं लै भ्राविस। —द. वि.

बीनमणहार, हारौ (हारी), बीनमणियो - वि०।

बीनमणिग्रोड़ो, बीनमियोड़ो, बीनम्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीनमीजणो, बीमीजबो—कर्म वा०।

बीनमियोड़ो—देखो 'विनवियोडो' (रू. भे)

(स्त्री' बीनमियोडी)

बीनवणो, बीनववो—देखो 'विनवणो, विनववो' (रू. भे)

उ०—१ गोरीनंदन बीनवु, ब्रह्मसुता सरसत्ति। सरम बध प्राकृत कवू, द्यउ मुझ निरमल मत्ति। —का दे.. प्र.

उ०—२ कहीउ सघलउ तै अवदात, महती हरखी निसुणी वात। सखीग्र पाठि बीनवीउ नरिंद, निसुणी राय हूउ भ्राणद। —हीराणद सूरि

उ०—३ जीवडलु जावा करइ, जोई जोई जठ। वेदन बीनवीइ किसी ? हू वहूग्रर, तू जेठ ! —मा. का प्र.

उ०—४ नदिया गं'री कठण लाघणी, पथ खाडा री घार। काजी महमद बीनवै, हरि भजि उतरो पार। —दीनमहमद

उ०—५ बे कर जोडी बीनवूं जी, सुणि स्वामि सुविदीन। कूड कपट मूकी करी जी, बात कहू भ्राप वीति। —स कु

उ०—६ एक दिन कोमल पाखडी रे लाल, भाट लेइ निज हाथ रे भ्रावी सभा मे बीनवें रे लाल, चिरजीवो नरनाथ रे। —प. च चौ

बीनवणहार, हारौ (हारी), बीनवणियो—वि०।

बीनविग्रोडो, बीनवियोड़ो, बीनव्योड़ो - भू० का० कृ०।

बीनवीजणो, बीनवीजबो—कर्म वा०।

बीनवियोड़ो—देखो 'विनवियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीनवियोडी)

बीनांण-सं. स्त्री —१ रचना, कृति, सृजन।

उ०—नूर जिहा भरपूर भ्रग, कठ लोह पखाणी, चोरासी लख भख दियण, निरपख निरबाणी। घड घड भजै भी घडै, पैदास पुराणी, तुज बीनाण न जाणियै, करतार बीनाणी। —केसोदास गाडण

२ देखो विनाण' (रू. भे)

बीनांणी-वि.—१ रचना कर्त्ता सृजन कर्त्ता, कृतिकार।

उ०—नूर जिहा भरपूर भ्रग, कठ लोह पखाणी, चौरासी लख भख दियण, निरपख निरबाणी। घड घड भजै भी घडै, पैदास पुराणी, तुज बीनाण न जाणियै, करतार बीनांणी। —केसोदास गाडण

२ देखो 'विनाणी' (रू. भे)

३ देखो 'वैनाणी' (रू भे.)

उ०—१ तद तरवार वाही। तरवार वाहता तरवार भागी। ताहरा वाळो कहै, 'फेट बीनांणी, फेट बीनाणी ! मुडी घडी, भुडी घडी ! ताहरा साजण कहै—दूहा—वाळा म करि वेसास, भ्रसमर ऊजडिया तणो। वाक बीनांणी नाह, वाक तमोणी वोचउत। —चापै वाळै री बात

उ०—२ बरहासा नास धमरा बाजनो, घासारव साजै घमसाण। वाकडो रावत मेघ बीनांणी, भ्ररियण दळा धमै भ्राराण। —रावत मेघ सीसोदिया रो गीत

बीनियोड़ो—देखो विनवियोडो' (रू भे.)

(स्त्री बीनियोडी)

बीनो-सं. पु —१ सकट, तकलीफ।

२ विनय।

उ०—बीनो पीत सनेह, प्रेम निरवाहै पावन। लाज माण ग्रहंकार, मिटै चाढै सूरातन। —गु. रू.

बीपनी—स स्त्री —प्राय डेढ फुट ऊचा लाल या सपेद फूलो वाला एक प्रकार का वर्षाती पौधा, जिसके फल फलीनुमा होते हैं शरपुंखा।

बीपसा बीप्सा—स स्त्री [स वीप्सा] १ एक प्रकार का शब्दालकार विशेष, जिसमे ग्रादर, ग्राश्चर्य ग्रातुरता, रोचकता, घृणा, हर्ष शोक ग्रादि भावो का बाहुल्य प्रकट करने हेतु किसी शब्द का प्रयोग वार बार किया जाता है।

उ०—१ चौथै पदकल पच वार चिहु, दोय बीपसा दाखो। कहै 'मछ' इम गीत गोखकर, भूप भवघ गुण भाखो। — र. रू.

उ० —२ बारह मत तुक ग्राठ प्रत, ग्राख बीपसा ग्रत। छीनूं मत दवाळ प्रत, यूं गोखो ग्राखत। —र. ज प्र.

उ०—३ रगण जगण गुरू लघु हुवै, जिण रै तीन तुकत। होय बीपसा चवथ तुक, ग्ररघ गोखो ग्राखत। —र. ज प्र.

२ ग्रधिकता, बाहुल्यता।

३ व्याप्त होने की ग्रवस्था या भाव, व्याप्ति।

४ शब्दो की पुनरावृत्ति, शब्ददुरुक्ति।

रू. भे —विप्सा

बीप्र—देखो विप्र' (रू. भे.)

बिफनी—देखो 'बीपनी' (रू भे.)

बीफरणो, बीफरबो—देखो 'विफरणो, विफरबो' (रू. भे)

उ०—१ भचकै 'बखतेस' गुसै भरियौ, व्रजराज उपासक बीफरियौ।
जुध जाणिक क्रोध मतै भजरं, करि दामणि धार सग्राम करं।
—सू. प्र.

उ०—२ भगड़ैपरि भ्राप जूटै बीफरै वच्छर दतूसळां के खटक कैमे दरसावै। इंद्र वज्र की भाट ऐसी नजर भावै। चावरूं की भचक संुडाडंडूं का उपाट। कूंभाथळ् पर बइभो काळदार भुजंगा की सी भाट।
—सु प्र

उ०—३ कुवेंण देवी सामळ कराळ, बीफरै तिण इम कहै बाळ।
बूथा भबोट जोपै बाणास, भाखाढ सिद्ध सौ करै भ्रास।
—मा वचनिका

उ०—४ डाकरतौ भरतौ डकरा, धरतौ मकर सधीर। बीफरतौ वाकारियौ, करतौ खून कठीर। —सरूपसीगजी री गीत

बीफरणहार, हारौ (हारी), बीफरणियौ—वि०।
बीफरिग्रोडौ, बीफरियोड़ौ, बीफरयोडौ—भू० का० कृ०।
बीफरीजणौ, बीफरीजबौ—भाव वा०।

बीफरियोड़ौ—देखो 'विफरियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बीफरियोडी)

बीबरणौ, बीबरबौ—१ देखो 'भीभरणौ, भीभरबौ' (रू. भे)
२ देखो 'विभरणौ, विभरबौ' (रू भे)
उ०—मतवाळा जेम घुमंत महाभड, लोह तणी छक लालुरता।
जमदूठ ऊठत टवै जमदाढ़ा, वाहै भावध बीबरता। —गु. रू. बं.

बीबरणहार, हारौ (हारी), बीबरणियौ—वि०।
बीबरिग्रोडौ, बीबरियोडौ, बीबरयोडौ—भू० का० कृ०।
बीबरीजणौ, बीबरीजबौ—भाव वा०।

बीबरियोड़ौ—१ देखो 'भीभरियोडौ' (रू भे)
२ देखो 'विभरियोडौ' (रू भे.)
(स्त्री बीबरियोडी)

बीभचार—देखो 'व्यभिचार' (रू. भे)
उ०—ज्यानी भ्रबकै पहरका मरद मोजाजी ढोला भ्रबकै पहर का मरद भोत बीभचार करै छै जी भोत बीभचार करै छै जी।
—लो गी.

बीभत्स–सं पु. [स] १ साहित्य के नौ रसों मे से एक रस जिसमे घृणित एव जघन्य पदार्थों का वर्णन होता है।
२ देखो 'बीभत्सु' (रू. भे.)
रू.भे.—बीभच्छ, बीभछ, बीभत्स, विभत्स।

बीभत्सरस—देखो 'बीभत्स' (१)

बीभत्सु–सं पु. [स.] १ भ्रर्जुन का एक नाम।
२ देखो 'बीभत्स' (रू. भे.)
रू. भे.—बीभत्सु, विभत्स।

बीभर—देखो 'भीभर' (रू. भे)

बीभरणौ, बीभरबौ–क्रि. भ्र.—गर्जना करना, दहाडना।
उ०—रोके भ्रकबर राह, लै हींदु कूकर लखा। बीभरतौ वाराह, पाडै घणा 'प्रतापसी'। —दुरसौ भाढो
२ देखो 'भीभरणौ, भीभरबौ' (रू. भे.)
३ देखो 'विभरणौ, विभरबौ' (रू. भे.)

बीभरणहार, हारौ (हारी), बीभरणियौ—वि०।
बीभरिग्रोडौ, बीभरियोड़ौ, बीभरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बीभरीजणौ, बीभरीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बीभरियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ गर्जना किया हुम्रा, दहाड़ाहुम्रा।
२ देखो भीभरियोडौ' (रू भे.)
३ देखो 'विभरियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बीभरियोडी)

बीभळ, बीभल—देखो विभळ' (रू. भे.)

बीभळियौ, बीभलियौ–वि.—१ रसिक।
२ थकित, श्रांत (नयन)।
३ देखो 'विभळ, विभळी' (भ्रल्पा., रू. भे.)
रू भे–बीभळियौ।

बीभळी, बीभली–सं. स्त्री.—१ एक देवी का नाम।
देखो 'विभळी' (रू. भे.)

बीभव–सं. पु.—१ भ्रर्जुन का एक नाम। (भ्र. मा.)
२ देखो 'विभव' (रू भे.)
३ देखो 'वैभव' (रू भे)

बीभवता—देखो 'वैभवता' (रू. भे.)

बीभववान—देखो 'वैभववान' (रू. भे)

बीभवसाळी, बीभवसाली—देखो 'वैभवसाळी' (रू. भे.)

बीभाड़णौ, बीभाड़बौ—देखो 'विभाडणौ, विभाडबौ' (रू. भे.)
उ०—कटक बीभाड़ हराहर भेकल, छित छेकल नाहरडै छेक।
'भ्रमान' तणौ बही भात बमेखळ, टेकल मोम न छोडै टेक।
—ठाकर नवलसिंघ सेखावत री गीत

बीभाड़णहार, हारौ (हारी), बीभाड़णियौ—वि०।
बीभाड़िग्रोड़ौ, बीभाड़ियोड़ौ, बीभाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
बीभाड़ीजणौ, बीभाड़ीजबौ—कर्म वा०।

बीभाड़ियोड़ौ—देखो 'विभाडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. विमाडियोडी)

बीमाणी, बीमावो—देखो 'विमाणी, विभावो' (रू. भे)

बीमाणहार हारौ (हारी), बीभाणियो—वि० ।

बीमायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीमाईजणी, बीमाईजबो—भाव वा० ।

बीभायोड़ौ—देखो 'विभायोडो' (रू भे)

(स्त्री० वीभायोडी)

बीभावणी, बीभावबो—देखो 'विभाणी, विभावो' (रू भे.)

बीभावणहार, हारौ (हारी), बीभावणियो—वि० ।

बीभाविम्रोड़ौ, बिभावियोड़ौ, बीभाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीभावीजणी, बीभावीजबो—भाव वा० ।

बीभावसु, बीभावसू—देखो 'विभावसु' (रू भे.)

बीभावियोडो—देखो 'विभायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बीभावियोडी)

बीभौ—देखो 'वैभव' (रू. भे)

उ०—चूडो उठै गयो, भाग जागीयो। दिन-दिन बात रस आवती गई। चावडा देवीजी री सेवा राव चूडै निपट घणी माडी। मारग वहतो तिण नू दम गुणो इधक वहण लागो। रूपा री नदी वहण लागी। चूडा नू बीभो जुडतो गयो। घोडा रजपूता री जोड होती गई। —नैणसी

बीमणौ—देखो 'त्रिमणौ' (रू. भे) (ग्रा. हो)

बीमळ, बीमल—देखो 'विमळ' (रू भे)

बीमांह—देखो 'विवाह' (रू भे.)

उ०—मारीली जोडी जुडी, प्रा नागी प्रड नाह। राणी राजा मू कहइ कीजइ प्रड बीमाह। —ढो मा

बीमांहणौ बीमांहबो—देखो 'विवाहणो, विवाहबो' (रू. भे)

बीमांहणहार, हारौ (हारी), बीमांहणियो—वि० ।

बीमाहिम्रोडो, बीमाहियोडो, बीमांह्योडो—भू० का० कृ० ।

बीमाहीजणी, बीमांहीजबो—कर्म वा० ।

बीमांहियोडौ—देखो 'विवाहियोडो' (रू भे)

(स्त्री बीमाहियोडी)

बीमा—देखो 'विवाह' (रू भे)

उ०—बीजु हग बोलतो, जदै घणा दिन सू मिळतो। कमळायन बू भतो, अमल रूपेटा गळतो। बीमा गुण गावियो, नवा राग रै कारण। धीरज मन नह धरो जनम पायो कुळ चारण। —अरजनजी बारहठ

बीमासणौ बीमासबो—देखो 'विमासणो, विमासबो' (रू भे)

उ०—अरजनजी मन मे बीमासी रहा। ताहरा मा बोली, 'अरजन बोलो न्ही? बाप जीमण ठाढो हुवै छै।' ताहरा अरजन बोलियो, 'माजी, हमीर भाई दुणोटो मांगे छै तो मेल हो। —अरजन हमीर री बात

बीमासणहार, हारौ (हारी), बीमासणियौ—वि० ।

बीमासिम्रोडो, बीमासियोडो, बीमास्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बीमासीजणी, बीमासीजबो—कर्म वा० ।

बीमासियोडो—देखो 'विमासियोडो' (रू. भे)

(स्त्री० बीमासियोडी)

बीमाह—देखो 'विवाह' (रू भे)

उ०—मन मूझ तणौ बीमाह जिसो अन, माह 'गोइंद' आग मरै। आम्रो भड साथि जिको मो आवै, काळ निमत्त मरीर करै। —गु. रू ब

उ०—२ जिकै वेद मूरत ब्राह्मण छै सु अरणी अगनि लगाडि होम करै छै। घणो गो घ्रत नै कपूर री आहुति दीजै छै। वेद ध्वनि कीजै छै। दूलह नै दूलहनी सेहरा बधिम्रा पूरव माहमा वेमाणिया छै। सेहरा दोजै छै। चार फेरा फेरीजै छै। बीमाह कीजै छै। —रा मा म.

उ०—३ कह्यो जी! मोनु राजा मळो। कह्यो जी, राजा म्हीने मिळणो, कालि राजा बाहिर हुतो आज माहि पधारियो, महीनै राजा आवै छै, वळै नवो बीमाह करि महल माहै पधारै छै सू वळै महीनै बाहिर आविसी। —मयणी री वात

उ०—४ जोधाणै जोधाहरो, सुख माणै अभसाह। बिच अगगर फागण विचै, व्हार थया बीमाह। —रा रू

उ० —५ मोहरि गोठि बीमाह, मोहर दरबार मभारा। रहा मोहरि रावता, सदा जिम वहना मारा। —सू प्र

बीमाहणौ बीमाहबो—देखो 'विवाहणो, विवाहबो' (रू. भे)

बीमाहणहार, हारौ (हारी) बीमाहणियो—वि० ।

बीमाहिम्रोडो, बीमाहियोडो, बीमाह्योडो—भू० का० कृ० ।

बीमहीजणी, बीमाहीजबो—कर्म वा० ।

बीमाहियोडो,—देखो 'विवाहियोडो' (रू. भे)

(स्त्री बीमाहियोडो)

बीमूह—देखो 'विमुख' (रू भे)

बीमुहो—देखो 'विमुख' (अल्पा,. रू. भे.)

उ०—ना जोहा पै बीमुहा, नमधमीर जै नथ। केता कव जन गम गय', अरि केता भारथ। —श्री रायसिघजी रो गीत

बीम्हर-स पु—भीगुर।

बीयराग—देखो 'वीतराग' (रू भे.)

वीयरागी, वीयराय—देखो 'वीतराग' (रू. भे.)

उ०—पंचाभिगम विधि सु करूं, सम्यक्त्व सूधो उच्चरूं। जय वीयराय कहता करम कटै, देव जुहारूं गउ वीसटै। —स. कु

वीयांण—स. पु.—आकाश, गगन।

उ०—वीयांण चद वड वीर्यं, ऐराक बीज सापुरस वयण। प्रात गाज पेहली लहवाय, लहवाय पीछै गरवाय। —मूळवै सागावत री बात

वीयाज—देखो 'व्याज' (रू. भे.)

वीयाजू—देखो 'व्याजू' (रू. भे.)

उ०—हरीया सामी मनमुखी, माय मांही हेत। कर्युंईक गाडे रेत मे, और वीयाजू देत। —अनुभववाणी

वीयास—देखो 'व्यास' (रू. भे.)

उ०—मारद नारद सुक वीयास समरथ सिमरदै। —केसोदास गाडण

वीयोगण, वीयोगणी, वीयोगिण, वीयोगिणी—देखो 'वियोगण' (रू. भे.)

वीयो—देखो 'दूजो' (रू भे.)

वीर—स. पु. [सं] १ बहादुर, शूरवीर। (ह ना. मा.)

वि० वि०—वीर चार प्रकार के होते हैं जो निम्नलिखित हैं—

१ धर्मवीर २ युद्धवीर ३ दानवीर ४ दयावीर।

उ०—१ मांचर्य कायळ मदत री, वीर न देखै वाट। एक अनेका सूं हिंचै, छाती वजर कपाट। —बा. दा.

उ०—२ कमधज्ज तजे मनमोह काया चो, वीर तिसोह विसतयरिय। तत लै निरबाण क राज तियाग, गोपीचद भरत्थरिय। —गु रू. बं

उ०—३ धग्व पग्व धमळ धीर धारण, निहस तो डर केळ वारण, दुखळ पखी गुण्ड दारण, सलह खाग मधीर। यर केण छाजै खाग उछज, अणी भटा चच आवाज, कळहियो 'गजसाह' कळियज, वरळ वध वर वीर। —महाराजा गजसिह री गीत

उ०—४ समर सगतपुर मडोवर छतरधर समोसर, तकर कर बजर बर घजर ताजो। उसर बगतर ऊपर वीर सासर अतर, 'गग' हर कळोधर कहर गाजो। —नाथो साटू

२ युद्ध करने वाला, योद्धा, सैनिक।

३ विकट परिस्थितियो मे भी अपने कर्तव्य का पालन करने वाला, साहसी।

४ विशिष्ट कार्यों मे अन्य से बढकर।

५ कमंठ, कर्मशील।

६ बात-चीत मे होशियार वाग्वीर।

७ बहन या अन्य स्त्री के द्वारा भाई या किसी अन्य पुरुष के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधन सूचक शब्द।

उ०—तितरै हेक दीठ पवित्र गळि आगो, करिप्रणपति लागी कहण। देहि सदेस लगी दुवारिका, वीर वटाऊ ब्राहमण। —वेलि

८ भाई, भ्राता। (अ मा., ह. ना मा.)

उ०—१ आज उमाहउ मो घणउ, ना जाणु किव केण। पुरुख परायउ वीर वड, अहर फुरक्कइ केण। —ढो. मा.

उ०—२ विश्रीवट जे साहस धीर, मालदेव छइ लहुडउ वीर। जिसी प्रीति लखमण नइ राम, राज खनरेइ एहवी माम। —का. दे. प्र.

उ०—३ बागा में वाज्या जगी ढोल, सहरा में वाजी सहनाई जी। आयो म्हारो जामणजायो वीर, चूनड़ तो ल्यायो रेसमी जी। —अमर चूंनडी

उ०—४ चोगी बैठै चक्रधर, वळि सुहिद्रा रो वीर। बार्व ना सबळा बिरिद, पूर्ण कवेसर 'पोर'। —पी. ग्र.

उ०—५ चुन्लो चिगमी धण रो सायबो रे, लंजा ओठीड़ा है लो। ओढणियो ओढासी म्हारो वीर वाला जो। —लो गी.

९ पति, खाविद।

१० पुत्र, बेटा।

११ मित्र, साथी।

१२ सखी, सहेली।

१३ महिला, स्त्री, १४ राठौडो के प्रसिद्ध तेरह वंशो मे से एक वश, अथवा इस वश का व्यक्ति। —बा. दा. ख्यात

१५ दूल्हा, वर।

१६ तीन प्रकार की भावो की साधनाओ मे से एक प्रकार की साधना जिसमे मद्यपानादि द्वारा उन्मत्त होकर साधक द्वारा मनुष्य, भैस, भेड या बकरी की बलि दी जाती है। (तान्त्रिक)

उ०—भणीनै एक व्याकरण, वीर दस्ट कै करै। तरक्क नीति मासत्राणि, एक मुक्त उच्चरै। —गु रू. ब.

वि० वि०—यह साधना दिन के प्रथम दस दडो मे पशुभाव से, दूसरे या बीच के दस दडो मे वीरभाव से और अन्तिम या तीसरे दस दडो मे दिव्यभाव से करनी चाहिए। मतान्तर से सोलह वर्ष की अवस्था तक पशुभाव से, फिर पच्चास वर्ष की अवस्था तक वीरभाव मे और उसके बाद दिव्यभाव मे साधना करनी चाहिये।

१७ उक्त प्रकार के वीरभाव मे साधना करने वाला साधक।

१८ वज्रयानी सिद्धो के अनुसार वज्रप्रज्ञोपाय योग के द्वारा महाराग मे विराग का दमन करने वाला साधक।

१९ मोक्ष के अनुष्ठान अर्थात् साधना मे पराक्रम करने वाला या चार

घन-घातिया कर्मरूपी रज अर्थात् कूड़ा-कचरा हटा देने वाला एव प्राणियो को सयम आदि के अनुष्ठान मे विशेष रूप से प्रेरित करने वाला। (जैन)

२० चौबीसवे तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी। (जैन)

उ०—१ धन धन गाम नगर जिहा रे, विहरइ वीर जिणिदो रे। धन धन नर नारी तिके रे, वाणि सुणइ आणंदो रे। —स. कु

उ०—२ दोधा उडदना बाकला, वीर नै 'चंदनबाल'। वृष्टि हुई सोवन तणी, वरत्या मगल माल। —जयवाणी

उ०—३ लहियै सोभा लोक मे, तप करि कसता तन्न। परतखि वीर प्रससियो, धन्नो मुनिवर धन्न। —ध. व. ग्र

२१ विष्णु का एक नाम।

२२ अर्जुन का एक नाम।

२३ कामदेव।

२४ कश्यप एव दनु के पुत्रो मे से एक असुर।

२५ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम।

२६ पाचजन्य अग्नि का पुत्र एक अग्नि।

२७ एक अग्नि, जो भारद्वाज एव वीरा के पुत्रो मे से एक था और सरयू का पति एव सिद्धि का पिता था।

२८ कलिगराज चित्रागद की कन्या के स्वयवर मे उपस्थित एक राजा

२९ पुरुवशीय एक राजा।

३० श्रीगणेश का एक विशेषण।

३१ पुरजय नामक एक राजा जो अनुवशीय था।

३२ तामस मन्वन्तर का एक देव।

३३ कृष्ण एवं सत्या के पुत्रो मे से एक पुत्र यादव।

३४ कृष्ण एव कालिदी के पुत्रो मे से एक पुत्र यादव।

३५ अविक्षित् की पत्नी लीलावती का पिता, एक राजा।

३६ सोमवशीय राजा, जो तोण्डमान का पिता था।

३७ क्षुप एव प्रथमा का पुत्र, विदर्भ राजकुमारी नदिनी का पति एव विवश का पिता, एक राजा।

३८ पवनसुत हनुमान।

३९ शृगार आदि नौ रसो मे से एक रस जिसमे उत्साह वीरता, साहस आदि गुणो का वर्णन होता है। (साहित्य)

४० प्रत्येक चरण मे ३१ एव १६ मात्राओ पर यति या विराम पाया जाने वाला एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष। (पिंगल)

४१ छप्पय छद का पाचवा भेद जिसमे ६६ गुरु, २० लघु से ८६ वर्ण तथा १५२ मात्राए होती हैं। (र. ज. प्र.)

४२ ठगण के द्वितीय भेद का नाम।

४३ भूत, प्रेत।

उ०—१ जतर मतर टाणा टूंणा, कामण टूंमण जाणे। वीर मूठ विद्या बोहतेरो, आतम देव अजाणे। —अनुभववाणी

उ०—२ सीकोतरि सक्कणी, प्रेत डक्कणी अपारा। विविध भूत वेताळ, वीर पळचर विसतारा। गिरध चील गोमायु, बिरक जबू रमवाया। काक कक को गिणै, आसपळ सभळ आया। —रा. रू.

उ०—३ पूजे कर कर पीर, घर घर नूते गाव मे। वळै जगावै वीर मूठ चलावै मोतिया। —रायसिंह साद्

उ०—४ वैताल वीर मिळिया विहद सीकोतरि साकणि महा सद्द। मिळ समळ ग्रीध आमख भक्ख जबक रीछ वड्डाक जक्ख। —गु. रू. ब

क्रि. प्र. जगाणौ, जाणणौ।

४४ चौसठ भैरवो मे से एक भैरव।

वि० वि०—देखो 'भैरव'।

उ० - मळा घूकळा आदरै वीर मेळा, मिळै बाघरै जोगण्या जुत्थ मेळा। भरै पत्र भैमा अजा रत्र भोगै, अछक्का छका छाक दारू अरोगै। —मे म

४५ महादेव के वे प्रियगण जो श्मशान मे ही निवास करते है।

क्रि प्र.—जगाणो, जागणो।

४६ वीरभद्र नामक शिवगण।

४७ दक्ष के यज्ञ को विध्वस करने समय शिवगण वीरभद्र के रोम रोम से निकले हुए गण।

उ०—१ वित हूर अपच्छर वीद खटै, किरमाळ वहै वरमाळ कटै। निरखै गुम नारद वीर नच, सिव चाल पगै सिरमाळ सचै। —रा. रू

उ०—२ छायो गयण रभ रथ छाजै, विखमी पाख पाखणा वाजै। बावन वीर नचण बहबहिया, डैरू जटी चड डहडहिया। —सू प्र.

उ०—३ खिलै महाकाळी दे दे ताळी नचै वीर खेला, हेला मुडमाळो पढै सचै हार हेत। डखा जत्र पाणा बेंचै बाहा बाणा बाहा ईसौ, खागा खळा 'सुभाणी' बिरच्चै वीरखेत। —प्रभुदान मोनीसर

उ०—४ कतियाणी कह कह नारद डह डह, हेका टह टह वीर हसै। बड रावत ग्रह ग्रह पोरांस प्रह प्रह, दूठी ठह ठह होठ डसै। —गु रू ब

वि० वि०—वीरभद्र के शरीर से निकले हुए गणो मे से मुख्य ५२ गण थे जिन्हे 'वीर' सज्ञा दी गई थी। उनके नाम निम्न लिखित हैं। —

(१) क्षेत्रपाल वीर (२) कपिल (३) बटुक (४) नारसिंह (५) गोपाल (६) भैरव (७) गरुड (८) रक्तसुवर्ण

(९) देवसेन (१०) रुद्र (११) वरुण (१२) भद्र (१३) वज्र (१४) वज्रजंघ (१५) स्कद (१६) कुह (१७) प्रियकर (१८) प्रियमित्र (१९) वह्नि (२०) कदर्प (२१) हस (२२) एकजघ (२३) घटापथ (२४) दजक (२५) काल (२६) महाकाल (२७) मेघनाद (२८) भीम (२९) महाभीम (३०) तुगभद्र (३१) विद्याधर (३२) वसुमित्र (३३) बिस्वसेन (३४) नाग (३५) नागहस्त (३६) प्रधम्र (३७) कपिल (३८) बकुल (३९) अह्लाद (४०) त्रिमुख (४१) पिशाच (४२) भूतभैरव (४३) महापिशाच (४४) कालमुख (४५) शुनक (४६) अस्थिमुख (४७) रेतोवेध (४८) स्मशानचार (४९) कलिकल (केलिकला) (५०) भृग (५१) केटक (५२) विभीषण।

४८ बावन की सख्या का नाम। *

४९ नये बैल को कृषि मे जोतने का अभ्यास कराने की क्रिया।

५० आरम्भ करने की क्रिया।

५१ रवाना होने या करने की क्रिया।

५२ किसी भूत-प्रेत विशेष की उपस्थिति का शरीर मे अनुभव होकर तदनुसार अग सचालित होने और मुह की ध्वनि उत्पन्न होने की क्रिया, भूत-प्रेत का प्रभाव।

उ०—देखो डाकण रा घर मे डावडा नै जको मेलै उग री भूल, क्यूंकि डाकण तो वीर चढै तद खावहीज चाहै घर रो चाहै पारको उण सूं तो आघो रहे वो हीज वर्चे। —बी. स. टी.

क्रि. प्र —आणो, उतरणो, ऊठणो, चढणो।

५३ यज्ञ की अग्नि।

५४ काली मिर्च।

५५ आलुबुखारा नामक फल।

५६ वाराही कंद।

५७ एक प्रकार का सीगिया नामक विष।

५८ पुष्करमूल।

५९ काजी। (अमरत)

६० अर्जुन नामक वृक्ष।

६१ सिंदूर।

६२ लोहा।

६३ लताकरज।

६४ नरकट।

६५ कनेर।

६६ उशीरा, खस।

६७ शालिपर्णी, सरिवन।

६८ ऋषभक नामक औषधि।

६९ तोरी, तुरई जिसकी सब्जी बनाई जाती है।

७० कुश।

७१ नरसल।

७२ भिलावा।

रू भे.—बीर, वीरक, वीरक्क, वीरजु, वीरय, वीरय्य, वीररस, वीररस्स, वीराण, वीरारस, वीरारसि, वीरू'।

अल्पा,—वीरो, वीरडो, वीरडो, वीरति, वीरली, वीरो।

वीरकठ–स. पु.—१ वीरध्वनि।

२ डिंगल का एक गीत (छद) विशेष।

वि० वि०—इसके पहले एव तीसरे चरण मे सोलह वर्ण व चौबीस मात्राएँ एव दूसरे व चौथे चरण मे चौदह वर्ण व इक्कीस मात्राए होती हैं। आठ-आठ वर्ण पर अर्द्धविराम एव अत मे लघु-गुरु होते हैं। (र ज प्र, र रू)

रू. भे.—बिडकठ, बिरकठ, वीरकठ।

वीरक–स. पु [स] १ चाक्षुक मन्वन्तर के सप्तऋषियो मे से एक ऋषि।

२ अगराज वशीय राजा शिबि का पुत्र।

रू भे —वीरक्क।

३ देखो 'वीर' (रू. भे.)

उ०—दीपक हूत दीपक, अब हू अबक उग्गै। सिध हुता साधिक्क, वीर घर वीरक जग्गै। —गु. रू. ब

४ देखो 'अ्रक' (रू भे)

वीरकरमा–वि [स. वीर+कर्म, कर्मन्] वीरोचित कार्यकर्त्ता।

वीरकळहळ–स स्त्री.—वीर-ध्वनि।

उ०—हूकळ सीधवो वीरकळहळ हुवै, वरण कजि अपछरा सुरिमा बहवुवै। त्रिजड हथ मयद जुध मयद घड तोलणा, ऊठि हरघवळ सुत अढगा बोलणा। —हा झा.

वीरकाम–वि. [स. वीर+कार्य] १ वीरोचित कार्य करने वाला।

[स. वीरकाम] २ पुत्र की कामना रखने वाला।

वीरकाव्य–स. पु [स.] वह काव्य जिसमे वीरतापूर्ण कार्यो का वर्णन होता है।

वीरकुक्षि–स. स्त्री [स] १ वह स्त्री जो वीर पुत्र को जन्म देती है।

२ वह भूमि जिस पर वीर पुत्र उत्पन्न होते हों।

वीरकेत, वीरकेतु–स. पु. [स. वीरकेतु] १ पाञ्चाल देशाधिपति द्रुपद का पुत्र जो महाभारत के युद्ध मे द्रोण के द्वारा मारा गया था।

२ एक अयोध्या नरेश का नाम।

३ हसध्वज नामक राजा के प्रधान सुमति का पुत्र।

वीरक्क—१ देखो वीर (रू भे)

उ०—वीरक्क नचक्क सभक्क सवक्क, चोट्टक्क पियक्क कळिक्क महक्क। वग्गक्क हाडक्क गुडक्क वटक्क, खिवै खजरक्क पडै खर-डक्क। —सू. प्र.

२ देखो 'वीरक' (रू. भे.)
३ देखो 'व्रक' (रू. भे.)

वीरखेत–सं. पु. [सं. वीर+क्षेत्र] युद्धस्थल।

उ०—१ पूनम पावर वार, सरद रित है पालटी। वीरखेत पूरब्ब रित हेमत प्रघटी। —गु. रू. ब.

उ०—२ खिलै महाकाळी दे दे ताळी नचै वीर खेला, हेला मुंड-माळी पढै सचै हार हेत। इवा जत्रपाणा बचै बाहा बाणा बाहा ईसो।वाणा वळा 'मुभाणी' विरच्चै वीरखेत। —प्रभूदान मोनीमर

२ वह भूमि जहा वीर अधिक उत्पन्न होते हो।

उ०—तरह तरह के दाव जगू के भाणाके अपणे अपणे कुरब की हमराहा सोमनायक के हाके जोधाण मेडतो वीरखेत के जाए भाजे न लहवहे जेते लडे तेते बरोबर रहे। —सू. प्र

३ वह स्त्री जो वीरपुत्रो को जन्म देती है।

रू. भे.—वीरखेत।

वीरखेती—युद्ध।

रू. भे —वीरखेती।

वीरगत, वीरगति, वीरगती–सं स्त्री. [सं वीरगति] वीरो को रणक्षेत्र मे मरने पर प्राप्त होने वाली गति।

रू भे —वीरगत, वीरगति, वीरगती।

वीरगाथा, वीरगाहा–सं स्त्री [सं वीरगाथा] वीर के वीरतापूर्ण कार्यों का कवित्वमय वर्णन।

वीरघंट, वीरघट्ट, वीरघटो–सं पु. [सं वीर+घट] १ हाथी के भूल के बाधने का घटा या घटी।

उ०—१ रात घडी दो एक गई, डक डको सुणियो। तरै जोगेमर जाण्यो कोई सिरदार आवै छै। तिसै हाथी री वीरघट सुणी, तुररी सहनाई सुणी, घोडा री कळहळ सुणी। —जगमाल मालावत री बात

उ०—२ मद धारा वरसता थका गज डंबर नीमाण गाजै वीजळी आकुस विराजै। गिध चाचिग वीरघंट दादर बोलै। मुगळ लाल ममोळ' सा दिखावै। —वचनिका

उ०—३ हाथियो के हलके स्वभूटासाते खोलै, अगापत के साथी भद्रजाती के टोळै। अत देहू के दिग्गज विन्ध्याचळ के गुमाव, रग-रग चित्रे सुडाडड के बणाव। भूल की जलूम वीरघट्ट के ठगके, बादळा की जगमगाट भरे भोरो की भकी भणके। —र. रू.

२ देवालयो मे लटकाया जाने वाला बडा घटा या छोटी घटी।

रू भे —वीरघट।

वीरड़ो—देखो 'वीर' (अल्पा, रू भे.)

वीरचक्र–सं. पु. [सं.] सैनिको को उनके वीरतापूर्ण कृत्यो के लिए शासको द्वारा दिया जाने वाला पदक।

वीरचाळो–सं. पु.– १ युद्ध झगडा।

उ०—१ मारू फौज मता, दियै पाव दता। कडक्कै कपाळा, चढै वीरचाळा। —सू. प्र.

उ०—२ उजेणी महासूर हैथाट आणै, जुडैवा चढै देव दाणव्व जाणै। चकत्या कमधा रचै वीरचाळा, वणै जाणि भारत्थ पारत्थवाला। —र वचनिका

उ०—३ जानकीनाथ समराथ जाहर जगत, चुरस घमचक रचण वीरचाळा, वमै खेत वीरती। ताखडा जोध आरोड दसरथ तणा, कीजियै किसो नर जोड काळा, कहै जग कीरती। —र. ज प्र.

२ भूत प्रेतादि का उपद्रव।

३ वीरो का कार्य या चरित्र।

वीरचाव–सं. पु —युद्ध, झगडा।

उ०—किला जीत माभी मारवाड मे कहावै 'कूपा', चीतवरा वारग मिळावै वीरचाव। अनेकां बिमाड रोदो लोडा नै पछाड आयो, राजा राज 'भीम' रो जमायो मारुराव। —वीसनसिंघ कूंपावत री गीत

वीरज–सं पु [सं. वीर्य] १ सब धातुओ के अत मे निर्मित होने वाली शरीर की सात धातुओ म मे एक धातु, शुक्र रज। (डि को.)

उ०—१ जस भगति जादव जागि, वगराय रोम नखागि। वपु वरण वीरज वारि, नह वेर रामा नारि। —पी प्र.

उ०—२ तरुवर साखा मूळ बिन, रज वीरज रहिता। अजर अमर अतीत फळ सो दादू गहिता। —दादूवाणी

२ किसी पदार्थ का सार भाग। (वैद्यक)

३ पराक्रम तेज।

४ बल, सामर्थ्य, वीरता।

५ अन्न आदि का बीज।

६ पुंसत्व, प्रजनन शक्ति।

७ साहस, दृढता।

८ फुर्तिलापन, स्फूर्ति।

९ आभा, कान्ति, चमक।

[सं वीर्यज] १० पुत्र, बेटा।

वि०—१ निर्मल, स्वच्छ।

उ०—सग सखी सीळ कुल वेस समाणी, पेखि कळी पदिमणी परि। राजति राजकुंअरि रायअगण, उडीयण वीरज अब हरि। —वेलि

रू भे—वीरज वीरय, वीरय्य, वीरय्यज, वीरिय, वीरय।

वीरजा–सं स्त्री —वीरागना।

वीरजित–सं. पु [सं.] मगधवंशीय सत्यजित् राजा का पुत्र विश्वजित्।

वीरजिन—सं. पु —भगवान् महावीर स्वामी के लिए प्रयुक्त शब्द ।
—(स. कु.)

वीरजु—देखो 'वीर' (रू. भे.)

उ०—हथनाळि हवाई कुहक बाण याको सोर आघात होण लागो वीरजु वडा वडा जोधा । त्यां की वीरहाक होण लागी । गय हस्ती त्यां की गहणि हुई । —वेलि टी.

वीरडो—देखो 'वीर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—टीबा ग्रोलटी बडो जो राजयै बाई बमवा एक रूमडो जाय। बाहिर से आयो मेरो वीरडो जी यें राज गोरी आगण एक कीचड क्यूं । —लो. गी

वीरण—स पु. [स.] चाक्षुक मन्वन्तर का एक प्रजापति ।

वि० वि०—इसकी असिक्नी (वीरिणी) नामक कन्या का विवाह दक्ष के साथ किया गया था जो ५००० पुत्रो की माता थी । इसे सात्वत धर्मका ज्ञान सनत्कुमार के द्वारा प्राप्त हुआ था जो इसने आगे चलकर रैभ्य ऋषि को दिया था ।

२ कास नामक तृण ।

वीरणक—स पु [स] जनमेजय के सर्पसत्र मे दग्ध हुआ, धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग ।

वीरणि, वीरणी—स पु [स. वीरणि] याज्ञवल्क्य का वाजसनेय शिष्य एक आचार्य ।

वी'रणो, वी'रबो—क्रि अ —१ विस्मरण होना, भूलना ।

२ देखो 'विहरणौ, विहरबौ' (रू भे)

वी'रणहार, हारौ (हारी), वी'रणियौ—वि० ।

वी'रिग्रोडो, वी'रियोडो, वी'रयोडो—भू० का० कृ० ।

वी'रीजणो, वी'रीजबो—भाव वा० ।

वीरत—स. स्त्री. [स. वीरत्व] वीरता, बहादुरी, शौर्य, बल ।

उ०—१ मन भावै चलै खत्रीवट मारग, वीरत दावै घडा वरै । राजापती 'जसो' महाराजा, कमध सुहावै जकू करै । —नाथो सादू

उ०—२ बडै बडै नरनाह, सै न घरा सभळी, आनद हवौ उछाह, कगूडो ऊछळी । वीरत कीरत बात, पिरथि सिर वापरी, आयो ओरगबाद, फतह कर आपरी । —महाराजा पदमसिहजी री बात

उ०—३ वीरत कीरत बंस वित, मत मोजा गुण मान । सप सुलच्छण धरम सुख, व्हैया अघ सूं हाण । —बा. दा

उ०—४ सुर सरत धर सिर भरत सर, पळ चरत पळचर अघत अत । मिळ अछर हरखत चित महत, पख निरख वीरत वरत पत । —र. रू.

उ०—५ तेज वडै तखतेस रा है हिंद दिवाकर, तूज सराह न को तूलै बे राह बराबर । देख खळा उर ताप व्है अजसै सेगा उर, वीरत भलपण वीटियो 'परताप' बहादुर । —मोडजी आसियो

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

वीरतराय—स पु.—विजययाधिपति, श्रेष्ठवीर । (व० भा०)

वीरतवंत—स. पु.—१ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—आद 'जसो' धन आव दाव दूजो यशवल नर, वीरतवंत सिद्धरावत करसी घण । रख नारायण व्हदै सांडसिघ धरण जुध स्रावज, विकरम करम वखाण करण मारण मोटा कज । —पा. प्र.

२ बलवान, शक्तिशाली ।

वीरता, वीरताई—स. स्त्री.—१ वीर होने का भाव, वीरत्व, बहादुरी ।

उ०—१ खेल वीरता खेलणा, असु देलणा अपल्ल । 'पतो हुवै भल जास पख, झुकतो लै नम झल्ल । —जैनदान बारहठ

उ०—२ वीरता, सच्चाई अर डिढता तो इणरै आगै पाणी भरै । म्हनै तौ सुण सुण नै इचरज व्है कै आ नाकुछ गुणां रा अबूझ मिनख कैडा कैडा बखाण करिया है । म्है तो भगवान री भगती नै ई इणरै सामी फुतरका जितो गिणू । —फुलवाडी

उ०—३ इण तरै आपरा धरम री कुळ री मरजाद री धरती री रिछ्या करणी अो रजोगुण कहीजै सो जिका में रजोगुण नहीं (अभिमान) तिका नै अे दोहा सुण वीररस उपजै नही क्यू कि वांमैं वीरताई रो उफाण नही । —वी. स. टी.

उ०—४ इसी वीरताई है सो आका रा ही झूंपडा न देवै । वडा वडा राजाआ गढ दे वीरता री मरजाद खोय दी परंत इण वीर री ईसी वीरता आदि राजपूती अडग है । —वी. स टी.

२ बल, पराक्रम ।

३ वीरता का कार्य, वीरतापूर्ण कार्य ।

४ जोश ।

उ०—झळक नवरग जरकस बसण भूखणा, तेज धन धगत मुख वीरताई । 'जगाहर' 'भीम' वर लगन विलसी ज्युंही, अगन झळ घसण मन मगन आई । —किसनो आढो

रू भे,—वीरत, वीरता, वीरताई, वीरती, विरत्ति, विरत्ती, वीरति, वीरती वीरत्त, वीरत्ति, वीरत्ती ।

वीरति, वीरती—१ देखो 'वीर' (४२, ४३ ४४, ४५, ४६)
(अल्पा , रू. भे.)

उ०—राति जगावै वीरती, दिन की लेवै नींद । हरीयो कहै कुराड कू, क्य करि मुई उलीद । —अनुभववाणी

२ देखो 'वीरता' (रू. भे.)

उ०—जानकीनाथ समराथ जाहर जगत, तुरस घमचक रचण वीरचाळा, वसै खेत वीरती । ताखडा जोध आरोड दसरथ तणा, कीजियै किसी अप जोड काळा, कहै जगत कीरती । —र. ज. प्र.

उ०—२ खळ दळ समर खपावत, कित्र जण गावत कीरती। सीता बाहर सभता बसुधा जाहर बीरती। —र. ज प्र.

उ०—३ नरा नरिंदा पार न लब्भै, बीरति खुरम बिरदा बिरभै। साह तणा घर फाटी सब्भैं, ऊमर माड पडै की अब्भै।

—गु रू.ब

उ०—४ बीरति मुख मूरति बिळकुळिय, कमधज तेज कमळ कळमळय। किसन वरण माझिल कठळिय, सूरज किरण जाण झळहळिय। —गु. रू. ब

उ०—५ बड बिना क्रामति न को बीरति, पिंड हुई मत जाय सपति। हमें इण भति धरो हिम्मति, पुळो पर खिति रहो नरपति। —रा रू.

बीरत्त, बीरति, बीरत्तो—देखो 'बीरता' (रू. भे.)

उ०—१ जळ महि तो समर अपर जन, सर 'प्रताप' समरत्थ। वर्ण न को निरबीज भुव, त्या कमधा बीरत्त। —जैतदान बारहठ

उ०—२ बीरति बिढेवा बिळकुळेय, मुख राग मुछ भ्रूहा मिळेयं। चख लाल कीध मुख कीध चोळ, कळकळे तेज बिकसं कपोळ। —गु. रू ब

उ०—३ माराहरो कुळिभाण कविदा दिये वकाण, वाचीजे बडा बखाण प्रथमी प्रमाण। मारको अमलीमाण जाडे जोध जुवाण, बीरत्ति दत्ति बिनाण जाण जाण जाण। —ल पि

बीरथाट—स. पु.—सेना, फौज। (अ. मा.)

बीरदांण—स पु —देखो 'बिरुद' (मह., रू. भे)

उ०—माथै सत्रा खापा घावै नवावै जिहान माथे, दसु दसा मोभाग छवायो बीरदांण। जीहान जाणी जोम छनै 'नाहरेम' जायो, अजटी ऊठाय आयो आपे ही आथाण। —कमजी दधवाडियो

बीरदेत, बीरदेत—देखो 'बिरुदेत' (रू भे)

बीरद्युमन, बीरद्युम्न—स पु [स बीरद्युम्न] भूरिद्युम्न नामक राजा का पिता, प्राचीन बीर नरेश।

वि० वि०—अपने खोये हुए पुत्र भूरिद्युम्न को खोजते हुए यह तनुविप्र नामक ऋषि से मिले एव आशा-निराशा से सम्बन्धित तत्वज्ञान पर सवाद किया था।

बीरधनव, बीरधन्वा, बीरधन्वन—स पु [सं. बीरधन्वन्] १ महाभारत युद्ध मे कौरव पक्षीय त्रिगर्त देश का राजा, जो धृष्टकेतु के हाथो मारा गया था।

२ कामदेव का नाम।

३ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

४ चेदी नरेश का नाम जो दशार्णराजा की पुत्री सुदामा के पति थे।

वि० वि०—नल की पत्नी दमयन्ती इन्ही के यहा रही थी और यही से उसे कुंडिनपुर वापिस लिवा ले गये थे।

५ अत्यत पराक्रमी भुजाओ वाले भगवान्।

बीरधरमन, बीधरमा—स पु [स बीरधर्मन्] भारतीय युद्ध मे पाडव-पक्षीय एक राजा।

बीरनंद, बीरनद्द—स पु. [स. बीर+नद] बीरों की सन्तान, बीरपुत्र।

बीरनाद स स्त्री. [स.] बीरध्वनि, बीरगर्जना।

उ०—अस्त्र गुलाब अबीर उडायो, सस्त्र पिचरका छिब सरसायो। बीरनाद सोइ चंग बजायो, रग फाग सम जग रचायो। —ऊ का.

बीरपउंतार—वि —बीरों को उत्साहित करने वाला, बीरो को जोश दिलाने वाला।

उ० ''मेघाडबर छत्र, गगायमुना चमर मुद्रावतार सीकिरिघोरधार, रायद्रमक्क, रायद्रहबोल रायविभाड रायपवायण राजा बइठड छड, हावड पखइ मत्रि, बीरपउतार दीवटिया वयगरणा यत्रवाहक चमरहारि छडायता'''''''''। —व म

बीरपण, बीरपणो—सं पु —बीरत्व बीरता, शूरता, बहादुरी।

उ०—१ एक बीर स्त्री आपरा पती रो बीरपणो देख मरत हुई कहै छै ए सखी देख म्हारो पती सिष होवै जैडो छै—सो सत्रु ऊपरै आवण रो मनो रै पण पग पाछा पडै है छाती धडकै। —बी स टी.

उ०—२ 'पना' अग अग बीरपण, निज बाळापण नेह। जाण जवाहर रग जिम मेटे नही मिटेह। —जैतदान बारहट

रू भे.—बीरपण बीरपणो।

बीरपरा—स स्त्री --मोलकी वश की एक शाखा।

रू भे —बीरपुरा

बीरपरो—स पु.—मोलकी वश की बीरपुरा शाखा का व्यक्ति।

रू भे—बीरपुरो

बीरपांण, बीरपान—स पु [स बीरपान] एक प्रकार का मादक पेय पदार्थ, जो योद्धा युद्ध मे जाते समय या युद्धोपरान्त थकावट मिटाने हेतु पीते थे।

बीरपाटी—स. पु.—बीररस की विद्या।

उ०—पढयो बीरपाटी पाव आराण न दिया पाछा, ताखा लाटी बैठो ही उगनी मूछा ताण। बाप खाटी मेटनी ऊजळा रूका पाण बाणो, राज दाटी भुजा रै भरोसै झाला राण।

—माधोसिंह झाला रो गीत

बीरपुरा—देखो 'बीरपरा' (रू भे.)

उ०—सोळ किया री साख री बिगत—दारिया, भाणगोतो, बाघेला, लराहा, बालणोत, बीरपुरा, नाथावत, बाराह, खाजीय इत्यादि है। —वा. दा. ख्यात

वीरपुरी-स. स्त्री -१ श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया या तृतीया के बाद आने वाले सोमवार को मनाया जाने वाला उत्सव।

२ वह नगर जहा वीर अधिक रहते हो।

रू. भे. - वीरपुरी, वीरपुली, वीलपुरी, वीरपुली।

वीरपुरी—देखो 'वीरपरी' (रू भे)

वीरपुली—देखो 'वीरपुरी' (रू भे.)

वीरप्रसविनि-स. स्त्री [स.] १ वीर पुत्रो की माता।

२ पृथ्वी जहा वीर उत्पन्न होते हो।

वीरप्रसु, वीरप्रसू-स. स्त्री. [सं. वीरप्रसू] १ वह स्त्री जो वीरसतान को जन्म देती हो।

२ वह भूमि जहा वीर उत्पन्न होते हो।

वीरबळी—देखो 'वीरबळी' (रू. भे.)

वीरबहूटी, वीरबहोडी-स. स्त्री —वर्षा ऋतु मे पाया जाने वाला लाल रग का कीड़ा विशेष, इद्रवधू।

उ०—वीरबहूटी आज ही भुव पै मखमल भात, सावन सावण तीजणी खूब करो मब ख्यात। —लो. गी

रू भे वीरबहूटी

वीरबाणी—देखो 'वीरवाणी' (रू. भे.)

वीरबाहु-स पु. [स.] १ भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

२ महाभारत युद्ध मे भीम के द्वारा मारा गया धृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक।

३ चेदीनरेश जो दशार्णराज सुदामन् की कन्या का पति था।

वि० वि० - इसकी पत्नी नल की परित्यक्ता पत्नी दमयन्ती की मौसी थी और नल के छोड देने पर दमयन्ती इसी के पास रही थी। इसके पुत्र का नाम सुबाहु एव कन्या का नाम सुनदा था।

४ राम-रावण युद्ध मे राम पक्षीय एक वानर।

५ गन्धर्व, जिसने तक्षक से युद्ध किया था।

६ लकानरेश रावण के एक पुत्र का नाम।

७ परम विष्णुभक्त काम्पिल्य नगर का राजा, जिसकी पत्नी का नाम कान्तीमती था, जो पूर्वजन्म मे भी इसी की पत्नी थी।

वि.—जिसकी भुजाए पुष्ट अथवा मजबूत हो।

वीरभदर, वीरभद्द, वीरभद्र-स पु. [स. वीरभद्र.] १ श्रेष्ठ एव प्रसिद्ध वीर, योद्धा।

२ वह घोडा जो अश्वमेधीय यज्ञ के लिए उपयुक्त हो।

३ मनाभद्र नामक सोमवशीय राजा के एक पुत्र का नाम।

४ अविक्षित राजा की पत्नी निभा का पिता, एक राजा।

५ यशोभद्र राजा का भाई।

६ सुगन्धित घास, खस।

७ भगवान् शकर के क्रोध से उत्पन्न हुवा एक गण जिसने दक्ष यज्ञ को ध्वंस किया था।

उ०—१ चावदत दीह अगा सभा उभा लाग चाळै, नरा ताळै सामध्रमी तणौ साचो नेम। क्रोध वाळै रूप मनीमाण री विधूंस कीधो, 'बोध' वाळै वीरभद्र दक्ष जाग जेम। —बद्रीदास खिडियौ

उ०—२ राति भाळ चखा चौळ काळी सल्है काळ रूप, रुद्र वीरभद्र काळी करंतो आरोध। दोडियो सामहौ देखै काथा सू हरामी दूठ, जाणै बिना माथा मूं बरूथ वाळौ जोध। —करणीदान कवियौ

उ०—३ सू मघ जेठ कळा धर सारी, आयौ रवि ज्यो किरण अकारी। पड कोपियो किना धार पण, वीरभद्र दिख ज्याग विधूं-सण। —रा. रू.

उ०—४ सुणि कथ पदम सभै दळ साजा, रिण परगाण उच्छव करि राजा। जटी वीरभद्र घणा जगाया, आठ हजार इसा भड आया। —सू. प्र.

वि० वि०—दक्ष यज्ञ मे शिव के अपमानित होने के कारण क्रुद्ध होकर जटाये भटकने पर इसका निर्माण हुवा। मतान्तर से क्रुद्ध शिव के सिर से टपकी बूंद के पृथ्वी पर गिरते ही इसका निर्माण हुआ। कई जगह शिव के मुह से उत्पन्न होने या स्वय शिवावतार होने की कथा प्रचलित है। शिवाज्ञा से इसने दक्षयज्ञ को विध्वस हेतु अपने रोमकूपो से रौम्य नामक रुद्रगणेश्वरो की सृष्टी की थी। दक्षयज्ञ के बाद यह शिव सेनापति भी था। इसने शिव-जालधर युद्ध मे भी अपने पराक्रम का दिखाया। समस्त देवगणों व कश्य-पादि ऋषियो के दवाग्नि मे भस्म हो जाने पर मत्रो से सिद्ध भस्म से इसने इन्हे पुनर्जीवित किया था। इसी प्रकार साव व पचमेढू नामक राक्षस के द्वारा देवताओ के निगल लिए जाने पर इसीने उन्हे पुनर्जीवित किया था। हिरण्यकशिपु के उदर-विदीर्णोपरान्त विश्वसहारार्थ उद्यत नृसिहावतार का भी इसी ने दमन किया था।

रू भे —वीरभद्र।

वीरभद्रक-स पु [स] गौडदेशाधिपति, जिसकी पत्नी का नाम चपक-मंजरी था।

वीरभाव-स. पु —१ बहादुरी, वीरता, शौर्य।

२ बल, पराक्रम।

रू. भे.—वीरभाव।

वीरभूम, वीरभूमि वीरभोम-स स्त्री. [स. वीरभू, वीरभूमि] १ युद्धस्थल, युद्धक्षेत्र।

२ वह भूमि जहाँ वीरो के जन्म अधिक होते हो।

३ श्मशान।

रू भे —वीरभोम।

वीरमंत्र-स पु [स वीर+मंत्र] श्मशान भूमि मे भूत-प्रेत एवं वीरो को जगाने का मत्र।

उ०—अराध वीरमंत्र एक, साधन मधीत रा। सिम्वत भेद कोक सार, गासत्रं मगीत रा। —सू प्र.

वीरमचारी - देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे)

वीरमणि-स पु [स.] १ देवपुर का राजा जिसके पुत्र का नाम रुक्मागद था।

वि० वि०- राम के भाई शत्रुघ्न एवं इसके पुत्र रुक्मागद मे राम के अश्वमेध यज्ञ के घोडे को पकड लेने के कारण युद्ध हुआ था। उक्त युद्ध मे शिव शकर इसके पक्ष मे थे जिन्होंने शत्रुघ्न को पाश मे बाध लिया था, किन्तु रामचन्द्रजी ने छुड़ा लिया था।

२ एक परम शिवभक्त राजा, जिसके श्रुतवती नामक पत्नी थी। वि० वि० - इसकी प्रार्थना सुनकर स्वय शिव ने योगिनियो से युद्ध किया था किन्तु अन्त मे इसकी हार हुई।

वीरमति, वीरमती-स स्त्री. [स वीरमती] भारतवर्ष मे बहने वाली एक प्राचीन नदी का नाम।

वीरमत्स्य-स स्त्री. [स] एक जाति विशेष। प्राचीन)

वीरमर्द-स पु.—भाटी वश की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

वीरमपोता-स. पु.—चारण जाति के याचक ढोलियो की एक शाखा। (मा. म.)

रू भे — वीरमपोता

वीरमपोतो-स पु —चारण जाति के याचक ढोलियो की 'वीरमपाता' नामक शाखा का व्यक्ति।

वीरमरदन-स पु [स वीरमर्दन] एक दानव का नाम। (पुराण)

वीरमहर-स. पु.—राजा के पार्श्ववर्ती लोगो मे से एक।

उ०— ·····अश्वमरद धूर्तकार चाटुकार उपानहधर भ्रगारधर स्थगिताधर चित्रक देसालिक मसूरिक अकंकार फलिहकार मल्लयोद्ध सम्यपाल बालबध अगरक्षक वीरमहर धनुरद्धर खडगधर दीपवत्तिक भोजिक सूपकार चक्षक ······। —व स

वीरमाचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे)

वीरमात, वीरमाता-स स्त्री. [स वीरमातृ] १ वीरपुत्रों की माता।

१ वीर नामक गणेश की माता।

३ पृथ्वी।

४ शत्रुओ का सहार करने वाले वीरो की रक्षा करने वाली देवी।

वीरमारग-स. पु [स वीरमार्ग] वीरो को वीरगति प्राप्त होने के बाद मिलने वाला स्वर्ग, वैकुंठ।

वीरमुखर-स. पु —राजा के पार्श्ववर्ती लोगो मे से एक।

उ०—·········वीरमुखर धनुरद्धर खडगधर उपानहधर भ्रगारधर स्थगिताधर चित्रक देसालिक मसूरिक दीपवरत्तिक भोजिक सूपकार चक्षक नरवैद्य ····। —व. स.

वीरमुठ—देखो 'वीरमूठ' (रू भे.)

उ०—वडावास था कोस ०, उगोगा माहे। सूनो खेडो छै। दत्त राव खीवाराजी री वारैठ भैरव नीबावत रोहडिया नै। वीरमुठ साथै दीयो। हमैं गजसी नरावत नै माधो मेवाहरोत छै। —नैणसी

वीरमुद्रिका-स स्त्री [स वीर+मुद्रिका] पैर की बीच की अगुली मे पहनने का छल्ला।

वीरमूठ-स स्त्री —किसी राजा द्वारा कवि को दिया जाने वाला नकद पुरस्कार जो एक मुश्त रुपयो के ढेर मे से दोनो हाथो की मुट्ठी भर कर उठाया जाता था।

उ०—सालवाहरण जेसळ सभ्रम, कवियां दाळिद्र कप्पियो। कवि वीरमूठ बूजो सुकव, थिर बारहठ थप्पियो। —नैणसी

रू. भे.— वीरमुठ।

वीरम्रदग-स. पु [स. वीरमृदग] एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—वीरम्रदग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, त्रहत्रहतें त्रबक तणं त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउ, भेरि भुंगल तणै भूमूयाटि भूकिइ भिलकि फाटी······। —व स

वीरय, वीरय्य - १ देखो 'वीर' (रू भे)

उ०—वीना अधूरा वार पूरा वेध मूरा वच्चए, गेलै प्रहार धार सार मार मार मच्चए। वगा खडग्गं दूठ वग्गै काळ रगै वीरय, अछरा उमगै दूर अगै चाव रगै वीरय। —रा. रू.

२ देखो 'वीरज' (रू भे.)

वीरय्यज—देखो, 'वीरज' (रू भे)

वीररथ-स पु [स] द्विमीढवशीय बृहरथ राजा का नामान्तर। यह नृपजय राजा का पुत्र था।

वीररस, वीररस्स-स पु —१ पीला पीत*। (डि को)

२ देखो 'वीर' (३८) (रू भे)

उ०—१ 'पातल' री वग ऊपडी, त्रजड भडी मक्क त्राट। वडी वडी वप वीर री, घणी वीररस घाट। —किसोरदान बारहठ

उ०—२ ऊभसै कमध लागो उरसि, राजा चढियो वीररस। उण वार लोह मूहगो हुवो, मोना ही हूता सरस। —सू प्र

उ०—३ विदेवा बधै दाखियो वीररस्स, अरस्सी' हरो कूंत तोलै अरस्स। ओपै फोज गाही अमरसिंघ नन्न, किरै जाण लका दळं कूंभ कन्न। —गु. रू व.

रू भे --वीररस, वीरारस, वीरारस।

वीररेण, वीररेणु-स पु [स. वीररेणु] पाडव पुत्र भीमसेन।

वीरलोक-स पु [स] १ स्वर्ग, बैकुंठ ।

२ वीरो को वीरगति प्राप्त होने पर मिलने वाला लोक ।

वीरवंत, वीरवत-वि. [सं. वीरवत्] जिसमे वीर अधिक हो, वीरो से युक्त ।

उ०—तुम्है कहवउ धरम, पणि नथी जाणता मरम । सामलउ वन ते वखाणीइ जे वृक्षवन, नदी ते जे नीरवत, कटक ते जे वीरवत, सरोवर ते जे कमलवत, मेघ ते जे समावत महात्मा ते जे क्षमावत, प्रसाद ते जे धजावत, धरमी ते जे दयावत, आदि । —वाग्विलास

स पु —१ सवर्णि मनु का एक पुत्र । २ ब्रह्मसावर्णि मनु के पुत्र का नाम । ३ साध्य देव ।

वीरवर-वि —श्रेष्ठ वीर, योद्धा, बलवान ।

उ०—१ व्रजनाथ लिखमी सग बैठो, आरास वासा ऊफर्णो डिगपाल अहिफण डोलिया, प्रथमादि कूरम पीठ जादम डाहळ जोरवर वाजिया मारग वीरवर । —जगो खिड़ियो

उ०—२ दिल्लरी पतसाह राह दोय द्रोमभि, करि आवध आविया कसि । बेस कहै घरि चाल वीरवर, समर कहै मरणो अवसि ।

—सुजाणसिंघ जगन्नाथोत कछवाहा रो गीत

उ०—३ बहम पराक्रम वीरवर, विहर निडर बळ बाह । सर 'प्रताप' केई सुभी, छत्रधर तो कर छाह । —जैतदान बारहठ

स पु.—१ तालध्वज नरेश माधव की पत्नी सुलोचना के द्वारा पुरुष धारण किया गया नाम ।

रू भे —बीरवर, बीरवर वीरव्वर ।

२ देखो 'वीरवळ' (रू. भे)

उ०—'पीथळ' सू मजलिस गई, तानसेन सू राग । रीझ बोल हस खेलबो, गयो वीरवर साथ । —अज्ञात

वीरवरत—देखो 'वीरव्रत' (रू भे)

वीरवरती – देखो 'वीरव्रती' (रू. भे)

वीरवरव-स. पु.—शिव, शकर, महादेव । (क कु बो)

वीरवरमन-स. पु. [स वीरवर्मन्] १ सुबाल, सुलभ, नील, कुवल एव सरभ का पिता एव यम की पुत्री मालिनी का पति, सारस्वत नगराधिपति एक राजा ।

वि० वि०—इसने पाण्डवो का अश्वमेधीय अश्व को रोक कर अपने श्वसुर यम की सहायता से कृष्णार्जुन से घोर सग्राम किया था । फिर कृष्ण ने इससे सधि की थी ।

२ द्राविड देशाधिपति, एक राजा, जिसकी पत्नी हेमागी पूर्व जन्म मे मोहिनी नामक अप्सरा थी ।

वीरवाणी, वीरवांनी-स. स्त्री.—वीरागना, वीरागंना ।

उ०—कलकार वीरवाणी कजाक, हलकार दुहू बलबाज हाक । धानक टकार भलकार धोह, ललकार मार अणपार लोह । —वि स

रू भे.—वीरवाणी

वीरवांनी-स. स्त्री—स्त्री, औरत ।

उ०—सोनै री थाळी मे लोहरी मेख मारणी ही तो म्हां मू क्यू भिड्यो ? इसी वेगी ही आगवानी हुगी खतम ? सीधा ही काचा मै गोळिया ढहै । पण म्है ही बाजीदा हा ! आगलै री म्यान लेवना ही को सका नी ! इसो वनड़ा रो नादीद ही कोनी ! आ ही नही लाधी ! एक एक वदै लारै चार-चार वीरवानी बैठी है व आरपणौ उतर ग्यो । अबै भला ही बाप आपरी बेटी नै बाठी राखो ।

- दसदोख

वीरवाहण, वीरवाहन-स. पु [स. वीरवाहन] १ ब्रह्महत्या स पीड़ित एक राजा ।

२ विराध नगरी का एक राजा जिसने वशिष्ठ ऋषि के साथ धर्म सम्बन्धी चर्चा की थी ।

वीरविक्रम-स पु.—एक शूद्र जिसकी कन्या का विवाह एक चाडाल के साथ हुआ था ।

वीरविद्या-स. स्त्री – १ वीरो अर्थात् श्मशानो मे भूतो व प्रेतात्माओ को जागृत करने की विद्या, मत्र तत्र ।

उ०—नको सुरग जाणै नको सुरपती, नको पद तुरिया नको भोग मुगती । नको भूत प्रेत नको वीरविद्या, नको काळ जाळ नकोज अविद्या । —अनुभववाणी

२ युद्धविद्या ।

वीरवीराध, वीरवीराधि, वीरवीराधी—देखो 'वीराधिवीर' (रू. भे)

उ० - १ करा राम मकज्ज, जैतधारी जैतावत । 'वाघ' 'फता' वेढ़का वीरवीराध निजावत । —रा रू.

उ०—२ धडै मावर्क जोर मू आग धारा, हुवै चोट वारी हजारै हजारा । वडा वीरवीराध वाकार वाहै, मु नौ साग्रहै चाकरै वाहि सहै । —रा रू

उ०—३ मयण काम मूरत्ति, गात गिरवर वीभाचळ । वडो वीरवीराधि, सिंध रूपी सद्रूम बळ । —गु रू. ब

उ०—४ छऊ भेन छोटी दहूँ ओड छाजै, विचै पाट राजीव माजी विराजै । खडी लाखडो वीरवीराधि सेनु, करै रागडा लागडा राड़ केनु । —मे म.

वीरवैताळ-वि.—उत्पात करने वाला, बदमाश, शैतान, उद्दड ।

उ०—म्है अचूको ओर कथ, भलो कळो भूपाळ । म्है तो सब जग मोहियो, तू तो वीरवैताळ । —कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

वीरवृक्ष, वीरव्रख-स पु [स वीरवृक्ष] अर्जुन नामक वृक्ष का नाम ।

वीरव्रत वीरव्रती-वि [स] अपने सकल्प पर दृढ रहने वाला ।

२ बहुत ही निष्ठा एव आचारपूर्वक रहने वाला, निष्ठावान ।

स. पु.—मनु राजा एव सुमना के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, जो

मधु एवं प्रमधु का पिता एवं भोजा का पति था। (पुराण)

रू. भे.—वीरवरन, वीरवरनी।

वीरश्वर—देखो 'वीरवर' (रू. भे.)

उ०—जोधा' 'चापा' 'ग्रखा', मला भणि 'डूंगर' 'भाखर'। 'मादण' 'मडला' 'करन', वरण फोजा वीरश्वर। —गु. रू. ब

वीरसंग–स पु. [स. वीर-शङ्ग] ४९ क्षेत्रपालो मे से ३९ वा क्षेत्रपाल।

वीरस देखो 'विरस' (रू. भे.)

उ०—पछै राव मालदे तो मेड़ता माथै कटक कोई नह कीयौ। नठा पछै मास ८ राव मालदे समत १६१९ रा कातो सुदी १२ काळ कीयौ। राव चंद्रसेन पाट बैठौ। सु चद्रसेन रै भ ई ग्रासीया जोर लागा। रजपूत नै रिणमल नै राव वीरस हुग्रौ। राव चद्रसेन नो मेड़तै रो नाव लीयौ नही। —नैणसी

वीरसजा वीरसज्जा देखो वीरसय्या' (रू भे.)

वीरसयन–स. पु. [स. वीरशयन] वीर के सोने का स्थान, रणक्षेत्र।

वीरसय्या–स पु [सं वीरशय्या] वीर के सोने का स्थान, रणक्षेत्र।

रू. भे —वीरसजा, वीरसज्जा

वीरसरमा–स. पु [स वीरशर्मा] वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक ब्राह्मण जो कुशिक वशोत्पन्न लक्ष्मी नामक कन्या का पति था।

वि० वि०—इसके तीर्थयात्रा पर जाते समय इसकी पत्नी गर्भवती होने के कारण इसने उसे राजा तोंडमान के यहा छोड़ दी थी। राजा ने छः माह की भोजन सामग्री भरवा दी और फिर भूल गया। ब्राह्मणी ने स्वाभिमानवश भोजन मागा नही और वही मर गई किंतु इसने दो वर्ष बाद उसे वेंकटाचल पर स्थित ग्रस्थिकूट सरोवर मे स्नान करवा कर जीवित कर लिया था।

वीरसिंघ, वीरसिंह–स. पु. [स. वीरसिंह] वीरमणि राजा का पुत्र एव रुक्मागद का भाई एक राजा, जिसने राम के अश्वमेधीय अश्व को रोक कर शत्रुघ्न से युद्ध किया था।

वीरसुता, वीरसुया–वि [स. वीरसुता] वीर पुत्रो को जन्म देने वाली वीरप्रसू।

उ०—एक वीरसुया सती आपरा पुत्र नै हीड़ा देती घर री रीति सिखावै है। —वी स टी

स स्त्री.—१ वीरबाला, वीरस्त्री।

२ भूमि जहा वीर अधिक उत्पन्न होते है।

रू. भे.—वीरसूया

वीरसू–स. स्त्री [स] १ वीर पुत्र प्रसव करने वाली स्त्री।

२ वह भूमि जहा वीर अधिक उत्पन्न होते हैं।

वीरसूया—देखो 'वीरसुता' (रू भे.)

उ०—१ हू ग्रा वीरसूया (वीरमाता) वा राणिया री कुख नै बलिहारी जाऊ और वा राणिया री बलिहारी भूंग (मरन) हीज वा नै काई तरै सिखाण देवै है सो दाई रा हाथ री नाळो काटणा री छुरी नै माव (जन्मतो) तीज बालक झपटै। —वी. स. टी.

उ०—२ कोई एक वीरसूया (वीर री मा) आगल पुत्र नै ललकारै छै। अरे पूत म्हारी ऊमर खोय ग्रा थणा री दूध पाय घणा दुख सू पाळ मोटो कियो सो ग्रा ग्रास ही के। —वी स. टी.

वीरसेण, वीरसेन–स पु.—१ युधिष्ठर के राजसूय यज्ञ मे उपस्थित एक ऋषि। २ एक सूर्यवंशी राजा। ३ निषध देशाधिपति नल का पिता। ४ दक्ष राजा का श्वसुर। ५ वसुदेव की धारणी राणी रा पुत्र। ६ कृष्ण-वसुदेव के २१ हजार ककणधारी वीरो के प्रमुख अग्रेसर। ७ ऋतुपर्ण राजा का पुत्र एव सुदास राजा का पिता, एक राजा। ८ तीन राजसूय यज्ञ एवं सोलह अश्वमेधीय यज्ञ करने वाला अवती नरेश। ९ आलुबुखारा। १० हिमालय मे होने वाली ग्राड नामक जड़।

रू भे —वइरसेन।

वीरस्थान–स पु [स वीरस्थान] १ स्वर्ग, बैकुंठ।

२ देखो 'वीरासन' (रू भे)

वीरह—देखो 'विरह' (रू. भे.)

उ०—बाट जोवतु मोरी करइ वीरह वेदन नवि जाणइ कोई। उर राजा राणी मिलइ, यु रंगि रलि मिलजे सब कोई। —वी दे.

वीरहक, वीरहक्क, वीरहक्को—देखो 'वीरहाक' (रू. भे)

उ०—१ गम भट विकट सुडव खरहक, हहकत डारण वीर डहडक। गति घण गैहक छायोय गयणक, 'हीरा' ऊपरि वीरहक।

—हीरा मागळिया रै जुध री गीत

उ०—२ नव चंन शरा नत चोत चोहटे, मुनतु पुठै वहै सक। समहर समहर मोहर मुजीया, हुग्रै हवनी वीरहक।

—सूरजमल करमसोत रो गीत

उ०—३ मै मार मार धकै धार धार, हवै वीरहक्कं हजारै हजार। ग्यो विछुटै भुजै सेल छूटै, खर्ग अग तूटै अनोयस लूटै। —रा. रू

उ०—४ नवकोट सुभट कुळवट निहार, सग्राम अडप त्रप सळ सभार। हुई धीर सर्वांग वीरहक्क, हर सकति डक डमरू डहक्क।

—रा रू.

उ०—५ ऊठयो दिलो हू औरगसाह एक राह तरणे ग्रार्ट, महावाह बिह राणा मेटबा अजाद। धरा वका चहू चका हुचका खडग धारा। वीरहक्कां हीदवा तुरक्का भिड़ै बाद।

—महाराणा जयसिंहजी द्वितीय रो गीत

वीरहथ, वीरहथौ, वीरहथ्थ, वीरहथ्थौ–स. पु —वीर, बहादुर।

उ० वीरहथा आपहमता, प्रभुता लियण अमाप। कविता रजपूती कदर, तुटि करता 'परताप'। —जैतदान बारहठ

वीरहाक, वीरहाको–स. पु.—वीररसपूर्ण ध्वनि, ललकार।

उ०—१ डमडमं सकति डम्मरू डाक, हैं-थाट हूब्ब हुय वीरहाक।
गढि ग्रडं मेर दम्मांम गज्ज, गयणगज बारह घण गरज्ज।
—गु. रू. ब.

उ०—२ हथनाळि हवाई कुहकबांण याको सोर ग्राघात होण लागो। वीरजु वडा वडा जोधा। त्यां की वीरहाक होण लागी। गय हस्ती त्या की गहणि हुई। वेलि टी.

उ०—ग्रह ग्रहै ग्रबाळ जोगी ग्रमक, सीधवो राग प्रगटत सक।
करि वीरहाक ग्रोरं केकाण, मच राडि ग्राडि गोळा महाण।
—मा. वचनिका

रू. भे.—वीरहक, वीरहाक, वीरहक, वीरहवक, वीरहूवको।

वीरहोत, वीरहोतर, वीरहोत्र—स पु. [स वीरहोत्र] १ विन्ध्याचल पर्वत पर स्थित एक स्थान।

२ हैहय राजवश का ग्राद्यपुरुष हैहय सम्राट।

वीरांगणा, वीरांगना—स. स्त्री [स. वीरागना] वीर स्त्री, बहादुर स्त्री।

उ०—वीरांगना वचन-ए ढोलण ढोली नूं कह इतरी ढोल री पला (ढोल री पोह वा गत) मैं इतरी वयू ताकीद करं जोधार तो ग्रापरा बाह घोडा नें चर चरवादार मालक रो घोडो सभं छं तं मालक है सो बगतर पहरं इतरी देर छं। —वी स टी.

वीरांण वि०—१ वीरो का, वीरो से सम्बन्धित, वीरतासूचक।

२ भयानक, भयावह।

सं पु—१ युद्ध, समर, सग्राम।

उ०—वादो ईसरदास सचाळो, 'विसन' सुजाव गढा रखवाळो। चाड धणी 'तेजल' चहुवाणं, वाघं 'चद' तणो वीरांणं। —रा रू.

२ देखो 'वीर' (रू. भे)

उ०—१ इण भात कमधा ग्रगळी, रूक वजायी 'रोहडं'। वीरांण कि ग्रारण वावरं, ज्या घण तत्तं लोहडं। —रा. रू.

उ०—२ दडोदडी तूट माथा कमधां पावडा देवं, रिमा सीस खाथा सार वजावं ग्रारांण। हैकपं कायरा प्राण छूटगा वीरांण हासं, भेचक्कं भूलोक रत्था थभायो सु भाण। —बादरदान दधवाडियो

उ०—३ लोधा ग्रासतीक रंगसिंग ऊबारं घडा रो लाडो, ऊबारो भडाला नाम चाडो कुळा भ्रब। गोरा रं ग्रजटी बोल साभळं वीरांण गाढो, खगं ऊभो मेदपाट ग्राडो जेतखभ। —कमजी दधवाडियो

उ०—४ मदभरा डाण नीसाण मोज, फरहरा बाण ग्रसुराण फौज। वीरांण रूप इण विध बणाय, माराण भूप सनमुक्ख धाय।
—वि. स

उ०—५ हिंदवाण तुरक्काण हिचं, रिण डाण वीरांण नताण रचं। करड़क्क हुवं सिलहक्क कडा धमचक्क भचक्कत सेल धडा।
—सू प्र.

३ देखो 'वीरान' (रू. भे.)

उ०—काळा सा मिरचलड़ाजी, घट ऊजळ पेटा। चोरी जाय करंजी वीरांणं खेता। —दीन मुदरदी

४ देखो विडाणी' (रू भे.)

रू. भे'—वीराण, बेराण, विराण, बिरान, वेराण, वेरान, वैरांण, वैरान।

वीरांणी—स- स्त्री.—वीरता, बहादुरी।

वि०—१ भयानक, भयावह।

२ वीररसपूर्ण।

३ वीरो का, वीरो से सम्बन्धित, वीरतासूचक।

उ०—रमं बीर हडुडं हालरं जमं जोगणी, बोम धोम मंडं बडं मेल्हाणी बैराक। पढं पाठ वीरांणी चीतोड थान चढं पाणी, 'ग्रडसालीर' हैरोस ऊकडं ग्रेराक। —महादान महडू

४ देखो 'वीरानी' (रू भे.)

वीरांणो- १ देखो वीरान' (मह., रू. भे)

२ देखो 'विडाणो' (रू भे)

वीरान—वि० [फा वीरान] १ उजडाहुग्रा, श्रीहीन।

२ जनशून्य, उजाड़, जगल।

रू भे.—विराण, विरान, वीराण, वेराण, वेरान, वैराण, वैरांन,
मह.—वीराणो, वेराणो।

वीरानी—स. स्त्री. [फा. वीरान.] वीरान या उजाड़ होने की ग्रवस्था या भाव।

रू. भे.—वीराणी।

वीरा—सं. स्त्री. [सं.] १ पत्नी, स्त्री।

२ वधू।

३ माता।

४ वीर पत्नी, वीर स्त्री।

५ बहिन, भगिनि।

उ०—उठं नी, ग्रं चारण वीरा, सूती छं सुखडा री नीद, थारी तो गाया मैं ग्रं, खीची घोडा फेरिया। ज्यां तो गाया कं, ग्रं चारण, तूं खेती गूगळ-धूप, ज्या तो गाया कं ग्रं खीची मारं कोरडा।
—लो. गी.

६ पुत्री, बेटी।

७ बडो या वृद्ध पुरुषो व स्त्रियो द्वारा पुकारा जाने वाला किसी कुलवधू या युवा स्त्री के लिए सम्बोधन सूचक शब्द।

८ स्त्रियो द्वारा वृद्धो के ग्रतिरिक्त ग्रन्यो को पुकारने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सबोधन सूचक शब्द।

उ०—१ के इता मैं मोडा रं बारं घोडा री हीस सुणीजी। कम-मल बात करता ई ग्रायग्यो। सेठाणी ग्राडो खोल बोली—वीरा, थारी ऊमर तो लांठी। —फुलवाडी

उ०—२ सासरा री मगरी ढळता ई उणनै मडो साम्हो चकियो। सुगन तो भला व्हिया। वेल सूं हेटै उतर वा मुडदा नै हाथ जोडिया अेक वाधिया नै होळैसी'क पूछ्यो—वीरा, कुण चालियो।
—फुलवाडी

९ वायुपुत्र भरद्वाज नामक अग्नि की पत्नी और धीर की माता।
१० वीर्यचंद्र राजा की कन्या एव करधम की पत्नी जो अविक्षित राजा की माता थी।

वि० वि०—इसने अपने पौत्र मरुत्त के द्वारा सर्पसत्र प्रारंभ करवाया था जिसे अविक्षित की पत्नी वैशालिनी ने अपने पति के द्वारा बन्द करवाया था।

११ सुरा, सुरामासी।

१२ केला।

१३ गेन्दुवा।

रू. भे.—वीरा।

वीराचारि वीराचारी स. पु. [स. वीराचारिन्] १ अपने इष्टदेव की वीरभाव से उपासना करने वाले एक प्रकार के वाममार्गी या शाक्त।

२ वीर बहादुर या योद्धा का आचार, कर्त्तव्य।

उ०—इम आरोहिउ तपि जा करगु, पुहुस पराभवि सारु मरणु। दुरजोधनि तउ पखउ करीजइ, 'वीराचारि कुलु जाणी-जइ।"
—सालिभद्र सूरि

वीराजमान—देखो 'विराजमान' (रू. भे.)

उ०—ठाकुरजी स्रीदाऊजी रा मिंदर मे सेवा तो महाराज अभे-सिघजी गुसाईजी विठलरायजी १७८६ कोटै सु लाय वीराजमान किया नै मिंदर रो मोटो कमठो मा'राज विजैसिघजी करायो।
—मारवाड री ख्यात

वीरातन—स पु—१ बहादुरी, वीरता।

उ०—१ हणमत द्रोण हिल्लोळवा, वीरातन किरि विळकुळै। दळ-थभ विढण दसगाधि सू, ऐम ऊठियो भुज आमनै। —गु रू. ब

उ०—२ मुजड-हथा "चाद राउ" समोभ्रम, विधि वीरातन वैर विधि। रावै जई पवगि आमगा रिध, रिप तई भजै राज रिधि।
—राव रिडमल रो गीत

उ०—३ प्रारण कियो उछाह, वीरातन वधियो। मारू लोह मराट, चमू सभ चातुर्यो।
—किसोरदास बारहठ

२ बहादुर, वीर, योद्धा।

रू. भे.—वीरायतन।

वीरादवीर, वीरादिवीर, वीरादीवीर—देखो 'वीराधिवीर' (रू भे.)

उ०—कथ सुणी अेम 'विसनै' कमध, मेडतियै गूलरपत मदध। सोमहा जाय मिळियो सधीर, विसनेस कमध वीरादवीर। —पे. रू.

वीराधपत, वीराधपति वीराधपती—सं. पु.—[स. वीराधिपति] वीरो मे श्रेष्ठ. वीर शिरोमणि महावीर।

वीराधवीर—देखो 'वीराधिवीर' (रू भे)

उ०—१ मूछा अगगी अूह मेळ, दाढी कर दाखि जी। विढसी वीराधवीर, धूर जिते गाखि जी।
—गु. रू. ब.

उ०—२ बरवीर खुमाण वीराधवीरं, बळी-मूळ 'मादूळ' वैवे कठीर। भलो भीच कल्याण मल्लो भुजाळो, 'मानावत' वेढोमणो मच्छराळो।
—गु रू. ब.

उ०—३ अेळा उघमै अवाक भाला छाक डाक दे दे आगं, धाडा धाड़ा आपाणं भरोसे भुजा धीग। चद्रहास ऊवाणं वीराधवीर जाणं चोजा, दिली री कवारी फोजा मारं देवीसीग।
—राव देवीसिंघ सेखावत रो गीत

उ०—४ वीराधवीर जिसा धीर पाडर। यारी वी रजपुती असी आराय। ज्या स जमराज पणि देसत खाय। या नै आगवणि कुण करै। सिर उपरा रूठा फिरै।
—पना

वीराधि-सं. पु—वीर बहादुर, योद्धा।

उ०—जोगी तुझ ना जयो जुआ जुआरी, महादेव साहेम आगकल मुरारी। महावीर वीराधि अेकलमल्लं, अधिक आप उदार दाता अदल।
—पी. ग्र.

वीराधिवीर—स पु—वीरशिरोमणि, महावीर।

उ०—१ सुत रूक हुवो वक पोहू सधीर, वक सुनण बाहु वीरा-धिवीर। सुत बाहु सगर परगट ससार असमज सगर सुत नृप उदार।
—सू प्र.

उ०—तेहै घोडै किण्या खित्री चढिया। पंचवीस वरस ऊपहरा। पचास वरस माहि। लुधमधानीक। वीराधिवीर। आकरणात मूछ।
—का दे प्र

उ०—३ वीराधिवीर, हेला हमीर। 'मधुकर' सुनन्द, किरनव्व कन्द।
र. वचनिका

रू भे—निराधवीर, वीराधवीर, वीराधबीर, वीराधिबीर, वीराधि-बीर, वीरवीराध, वीरवीराधि, वीरवीराधी, वीरादवीर, वीरादि-वीर वीरादीवीर, वीराधवीर।

वीरापाचम-स. स्त्री.—भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी।

वीराबारस-स स्त्री.—कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की द्वादशी।

वीराबीज-स स्त्री—कार्तिक शुक्ला द्वितीया।

वीरायतन—देखो 'वीरातन' (रू. भे.)

उ०—सातल तणउ रुधिर सुरत्नागि, बाधउ वीरायतन वखाणि। पदम नाभ पंडिति मति कही, बीजा खड समापति हुई।
—का. दे. प्र.

वीरारस, वीरारसि—देखो 'वीर' (३८)

उ०—१ धणि वाजित्र घण घाउ, घमघमि अपछर घूघरा। वागा वीरारस तणा, नागजिआ निहाउ।
—र. वचनिका

उ०—२ तुकमां रूप खतम फते रा फबिया, देखंतां वरदम भरदा दबिया। विहसंतौ निज वदन बीरारस वेस रौ, दीपायौ हद वीर धुरद्धर देस रौ। —किसोरदान बारहठ

उ०—३ बीरारस घरा घोख वाजई, भ्रभिनवा सिरि द्रोण। सेल साबळ कुत मुदगर, उछळई भ्रति सोण। —रूकमणी मंगळ

उ०—४ बीभ्राजळ रूप गयद चाढ मेघाडबर विराजे। नौबतूं के निहाव बीरारस बाजे। जिस बखत जळाबोळ हालोहलसैं फौज हल्ली। नालू के निहाव सेती धरती थरसली। —सू. प्र.

बीराबी-क्रि. वि.—बीरो में।

उ०—जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावा विरंच जाणं, धूरजटी तावा ऊच भावा मेर धींग। भ्रावा लोम रिखी राम तम्मी ज्यू दधीच हाड ऊच, सांमवेद वेदागा बीराबी समूसीघ। —हुकमीचद खिड़ियो

बीरासण, बीरासन-सं. पु. [स. वीर+भ्रासनं] १ निगाह या चौकसी रखने की क्रिया, रखवाली।

२ युद्ध भ्रादि मे भ्रधिक जोखिम वाला पद।

३ वीर सिपाही।

[स. वीर+भ्रासन] ४ वीरो के बैठने का ढग विशेष।

उ०—जिल भ्रमक सै वीरासन बैठा न गया, पिछाड़ी को हाथ टेक कर भ्रगाड़ी पैर फैला दिया। जिस वगत रघुनाथसिंघ भ्रेसा निजर भ्राया, मानो बुभी मसाल सा दीदार दिखलाया। —दुरगादत्त बारहठ

५ पहरा दिया जाने वाला स्थान।

६ घुटना मोड़कर बैठने क्रिया।

७ योग के चौरासी भ्रासनो के भ्रन्तर्गत एक भ्रासन विशेष जिसमे बायें पाव को घुटन मे मोडकर इसके पजे को गुदा के नीचे उत्तर दक्षिण भ्राडा रखकर भ्रौर दाहिने पाव की एडी बाये पाव के भ्रगूठे को लगाकर घुटने को छाती की तरफ ऊचा करके बैठना होता है। हाथो या पावो के हेर फेर से इसका दूसरा प्रकार भी होता है।

उ०—एक भ्रासण भ्ररु ऊकडू, पड़िमा काउसग्ग रात। पद्मासन बीरासणो, रहे छकाया-नाथ। —जयवाणी

रू. भे.—वीरस्थान

बीरि-सं. स्त्री.—१ बहन, भागिनी। (ह. ना. मा)

२ बीर स्त्री।

उ०—एक नारि रण नइ तडि ऊभी, बधु वल्लभ तणउ छइ मोभी। तीणि घाय पडतउ नवि जाणिउ, न्याय वीरू कुल बीरि बखांणिउ। —सालिसूरि

३ देखो 'बीरो' (रू. भे)

बीरिणी-स. स्त्री.—[स] १ वह स्त्री जिसका पति एवं पुत्र जीवित एवं सुखी हो।

२ वीरण प्रजापति की कन्या एव दक्ष प्राचेतस की पत्नी।

वि० वि०—इसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के भ्रगूठे से हुई बताते हैं। इसके एक हजार पुत्र एव पचास कन्याएँ उत्पन्न हुई थी।

३ शुक्रपत्नी पीवरी का नाम।

४ ब्रह्मा की पौत्री एव वीरसेन राजा की कन्या जो चाक्षुष राजा की पत्नी थी।

५ एक प्राचीन नदी का नाम।

बीरियां—देखो वेळा' (रू भे.)

बी'रियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ विस्मरण हुवा हुभ्रा, भूला हुभ्रा।

२ देखो 'विहरियोड़ौ' (रू भे) (स्त्री. बी'रियोड़ी)

बीरी—स. पु. १—वैरी, शत्रु, दुश्मन।

उ०—सदेसाहि बवज पडघौ, लाघ्या परवत दुरघट घाट। परि-देसा परि-भूमि गयउ, बीरी जगह न चालइ बाट। —बी दे.

२ देखो 'बीरि' (रू. भे.)

बीरीयां—देखो 'वेला' (रू. भे.)

उ०—१ इसी तरै कागद लिख मेलियौ, चारण साथै। सो कागद वाच नै रामदासजी तिण होज बीरीयां हेरू मोलया, भ्रनै कयौ भ्रन तो साढिया लीया बसा। चारण नै घोडो सिरपाव दे नै सीख दीनो पधारो बाइ नै जुहार कहेजो। —रा० सा० स.

उ०—२ मा बोली—'भ्ररजन, बात साभळी ? बाप, हमीर दुगोटौ मागै छै। कह्यौ—बाप, जीमण बैसे छै, तीयै बीरीयां भ्ररजन सु मोनु दुणोटौ मेलहौ।" —भ्ररजन हमीर री बात

बीरू— देखो 'वीर' (रू. भे.)

उ०—१ सउ कूयर पचगलउ क्रिवहरि पढिवा जाइ। धीरू बीरू मति भ्रागलउ करगू पढइ तिणि ठाइ। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ एक नारि रण नइतडि ऊभी, बधु वल्लभ तणउ छइ मोभी। तीणि घाय पडतउ नवि जाणिउ, न्याय बीरू कुलबीरि बखाणिउ। —सालिसूरि

उ०—३ हउ भ्रोलखावउ भ्रनइ बीरू वीर, तइ होइवउ उत्तर नाम धीर। छइ जीहू दुर्योधन तीह खेडउ, हेला सही कौरवमान मोडउ। —सालिसूरि

बीरुज, बीरुज्भ, बीरुझ-स पु [स वीर+उज्झ] भ्रग्निहोत्र नही करने वाला ब्राह्मण।

बीरुधा-स स्त्री. [स.] नागमाता सुरसा की तीन कन्याभ्रो में से एक।

वि० वि०—इसकी भ्रन्य दो बहनो का नाम भ्रनला एव रुहा था।

बीरूप–वि० [सं. विरूप] भयंकर, भयावह डरावना।

उ०—देवी रत नीलमणी सीत रगं, देवी रूप ग्रंबार बीरूप ग्रंग।
देवी बाल जूवा ग्रध वेस वाळी, देवी विस्व रखवाळ बीसांभुजाळी।
—देवि.

रू. भे.—बीरूप।

बीरेस, बीरेसर, बीरेसुर, बीरेस्वर–स पु. [सं. वीर+ईश एव वीर+ईश्वर] १ शिव, महादेव।

२ वीर, अत्यन्त वीर पुरुष।

३ पवनसुत हनुमान।

बीरोचंद—देखो 'विरोचन' (रू. भे.) (ना. डि को.)

बीरोचंदसुत—देखो 'विरोचनसुत' (रू. भे.)

उ०—बीरोचंदसुत ग्रहपर बारो, रव सुत तणो ग्रमरपुर राज।
ग्रौनि दातार 'कलावत' नरपुर, ग्रनंत रोर केही गत ग्राज।
—दुरसो ग्राढो

बीरोचन—देखो 'विरोचन' (रू. भे)

उ०—ऊधम किर राळै घर ग्रदर, वाग ग्रमोक लागडे बानर।
दहुवै जुवा भड़ा खळ दहिया, बीरोचन ग्रमर दळ वहिया।
—सू प्र.

बीरोचनसुत—देखो 'विरोचनसुत' (रू. भे.)

बीरोटण, बीरोटणी—सं. स्त्री. जादू-टोने ग्रादि करने वाली स्त्री, जादूगरनी।

उ०—तद कान्हो बोल्यो तमक, मत करणा मक्कर। बीरोटण पग वेखतां, नह सोभ चढै नर। —ठाकुर भूमारसिंघ मेड़तियो

बीरोटियो–स. पु. [स. वीर+रा प्र. ग्रोट, ग्रोटियो] (स्त्री. बीरोटण, बीरोटणी) १ मत्र-तत्र द्वारा श्मशान भूमि मे भूत-प्रेत जगाने वाला पुरुष, जादूगर।

२ देखो 'वीर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—कई खाय पीलिया केणा, कई जाळ जाळोटिया। मुरधर मल्ल वर्णं इण मेवं, बाळ बेंड बीरोटिया। —दसदेव

रू. भे.—विरोटियो।

बीरोध—देखो 'विरोध' (रू. भे.)

उ०—बाण पाराथ तणो जाण बीरोध रो, बिखम घट रोध रो किया बासो। जबर भुज धारिया हुणूं बळ जोध रो, धमक भुज धारिया ग्ररुण धासो। —रावत ग्रजीतसिंघ रो गीत

बीरोळणो, बीरोळबो—देखो 'विरोळणो, विरोळबो' (रू. भे.)

उ०—घोडै खळ घूहड लाखा चाक, बीरोळै लाख खळा वेढाक,
खत्री गुर वीरम घूर्गं खाग, वीछूटो जाणेय साकल बाग।
—गो. रू.

बीरोळणहार, हारो (हारी), बीरोळणियो—वि०।

बीरोळिग्रोड़ो, बीरोळियोड़ो, बीरोळ्योड़ो—भू० का० कृ०।

बीरोळीजणो, वीरोळीजबो—कर्म वा०।

बीरोळियोड़ो—देखो 'विरोळियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीरोळियोडी)

बीरो–स पु—१ भाई, भ्राता।

उ०—१ उठो बाइसा बाधो राखडी, थारा बीरोसा रा जतन कराव।
उठो मानेतण खोलो कोथळो, थारै मासु नणद ने ग्रोढावा।
—लो. गी.

उ०—२ ग्रो माय घालो जायफळ नै जावंतरी, ग्रो तेल बनडा रै ग्रग चढसी ग्रो। लेवो वा रा भाभीसा कर लेसी, ग्रो बनडा वारा बीरोजी भर देसी। —लो. गी.

उ०—३ चावरडी रै मारू, था रै वडोडै बीरैजी नै मेल राय, भरियै रै भादवै, रै म्हारा गाढा मारू, घर वसो। वडोडै बीरैजी रो, गवरादै, लडोकडी नार, राय, साफनडी रीसवैली म्हारै बाबेजी सूं गोरची माडसी। —लो. गी.

उ०—४ कुण बीरो कुण बहनडी रे, जोयजो मोहरी बात। इण भव मुगति सिधावसी रे, एम करै विलापातो रे। —जयवांणी

(स्त्री बीरी)

२ भाई के नाम पर बहिन द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत।

उ०—१ धोवडिया घर बाळापण धोर, उगेरै 'बीरो' ऊची राग।
जोवता ढुग ढुग लागे ग्रेह, सरावै धरनी रा सोभाग। —साफ

उ०—२ म्हनै बीरो सुणणा रो ग्रर बाई नै बीरो गावण रो कितरो कोड हो, जिण रो कोई पार नी। म्हू ग्रावतो जितरी बार लारै पड जावतो–बाई एकर तो बीरो सुणाय दे! ग्रर वा भीणा कठ सू सरू कर देवती। —ग्रमर चूनडी

३ देखो 'वीर' (ग्रल्पा, रू. भे)

उ०—१ रमता राम एक रग रता, माया मोह विसै नहीं मता।
उतिम साध मु लछन धीरा, सो कहीयै ग्रजरामर बीरा।
—ग्रनुभववाणी

उ०—२ भगवन नइ भव पूछिया कह्यउ, तूं छइ चरम सरीरो रे।
सूर्याभ वारना सहु, गौतम पूछी कहि बीरो रे। —स. कु.

रू. भे.—बीरो

बीरय—देखो 'वीरज' (रू. भे)

बीरयचंद, बीरयचदर, वीरयचंद्र–स. पु. [स. वीर्यचद्र] करंधम राजा की पत्नी एव ग्रविक्षित राजा की माता का पिता।

बीरयधर, बीरयधारी–स पु [स वीर्य+धारिन्] प्लक्षद्वीप के मूल निवासी क्षत्रिय। (पुराण)

वीरयवत, वीरयवांन–स. पु. [सं. वीर्यवत्, वीर्यवान] १ कश्यप एवं दनु के पुत्रो मे से एक दानव ।

२ एक सनातन विश्वे देव ।

वीरयसह–सं. पु. [स. वीर्यसह] सूर्यवंशी राजा सौदास का कल्माषपाद नामक पुत्र ।

वीरयहारी–स. पु. [स. वीर्यहारी] दु:सह नामक यक्ष की पुत्री के गर्भ से किसी चोर के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।

वील—स. पु.—१ किसी बन्द कमरे मे सामान आदि रखने के लिए आमने-सामने की दीवार मे लगाया जाने वाला लबा पत्थर ।

२ देखो 'वीलो' (मह. रू. भे)

उ०—१ प्रथम पीपळ साग सीसमह, आमली अधिकार । बडबोर वील बहेड बाउळ, कूरमदी कंथार । —रुकमणी मगळ

उ०—२ जाळ जागडी रूंख, सघन गायडमल गाढो । वील सरेसा वडो खजूरा सिरसो डाढो । खर खोदरिया माय, गोहिरा साप गजबरा । भड भाखड जड जाय, उरणिया वडे अजब रा । —दसदेव

उ०—३ कनक कुंभ स्रीफल जिमा रे, कुच तटि कठिन कठोर रे रग । पाका वील नारिग सा रे, मानु युगल चकोर रे रग । —प च. चौ.

३ देखो 'वील' (रू भे.)

वीलाणौ, वीलाबौ—देखो 'विलाणौ, विलाबौ' (रू भे.)

उ०—वरसा वदीत हुइ सरद आइ । ससि अम्रत सूवै छै जोतिफळै गइ जुन्हाइ । आकास निरमळ हुवौ । बादळ वीलाया । सीपा गरभ धारण कीयो छौ । ज्यां मोती जाया । —पना

वीलाणहार, हारौ (हारी), **वीलाणियौ** – वि० ।

वलायोडौ —भू० का० कृ० ।

वीलाईजणौ, वीलाईजबौ —भाव वा० ।

वीलायोडौ—देखो विलायोडौ' (रू भे.)

(स्त्री वीलायोडी)

वीलावणौ, वीलावबौ—देखो 'विलाणौ, विलाबौ' (रू. भे.)

वीलावणहार, हारौ (हारी), **वीलावणियौ**—वि० ।

वीलाविग्रोडौ, **वीलावियोडौ**, **वीलाव्योडौ**—भू० का० कृ० ।

वीलावीजणौ, वीलावीजबौ—भाव वा० ।

वीलावियोडौ—देखो 'विलायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री वीलावियोडी)

वीलियौ—देखो 'वीलौ' (अल्पा , रू. भे.)

वीली—देखो 'वीलौ' (अल्पा., रू. भे.)

वीलोणौ—देखो 'विलोवणौ' (रू. भे.)

उ०—थापियौ कोरंड ताय सीधर थान, मही नद मोळन गोळजी उगोळ माय । गाजै मु वखब मुब चरै गाय, मन धरै वीलोणौ करण माय । —रामदान लाळस

वीलोणौ, वीलोबौ—देखो 'विलोडणौ, विलोडबौ' (रू भे)

वीलोणहार, हारौ (हारी), **वीलोणियौ**—वि० ।

वीलोयोडौ—भू० का० कृ० ।

वीलोईजणौ, वीलोईजबौ—कर्म वा० ।

वीलोयोडौ—देखो 'विलोडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीलोयोडी)

वीलोवणौ, वीलोवबौ· देखो 'विलोडणौ, विलोडबौ' (रू. भे.)

वीलोवणहार, हारौ (हारी), **वीलोवणियौ**—वि० ।

वीलोविग्रोडौ, **वीलोवियोडौ**, **वीलोव्योडौ**—भू० का० कृ० ।

वीलोवीजणौ, वीलोवीजबौ—कर्म वा० ।

वीलोवियोडौ—देखो 'विलोडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वीलोवियोडी)

वीलौ—देखो 'बीलौ' (रू. भे.)

वील्हणवटी, वील्हणवाटी–स. स्त्री.—नागोर जिले के 'मारोठ' गाव के आस पास का प्रदेश ।

उ०—दहिया रो उतन यू सुणियो छै दिखण नूं नासिक त्र्यबक गोदावरी कनै गढ थालनेर थो । इतरी ठौड दहिया रै अजमेरा माहै हुती । देरावर परबतसर गाव ५२. सावर घाटियाळी । हरसार वील्हण रो बेटो हरधवळ धणी । माहरोट रो वील्हणवटी नाव । —नैणसी

वि० वि०—इसका नाम वील्हण दहिये के नाम से हुआ ।

वील्हो–स. पु —१ एक प्रकार का पक्षी विशेष ।

उ०—वील्हा वायस, बिंभळा, आवलि ऊडी जाय । वाटइ दीसइ वागली, ते ऊधी टगाय । —मा. का प्र.

२ देखो 'बीलौ' (रू. भे)

वीवणोटो—देखो दूणौ' (अल्पा., रू. भे)

उ०—ताहरा साजण री नजर नै हमीर री नजर एक हुई । ताहरा हमीर री आख सू चाळधा ठळक-ठळक पडवा लागा । ताहरा साजण कहै छै, "बाप, हबै रोवै छै ? सु अरजनजी विचै वीवणोटो आरोगवा पधारा था । —अरजन हमीर री बात

वीवनो, वीवन्नो—देखो 'विवनो' (रू. भे.)

उ०—परचंड पराक्रम दाखवै, पित्त वीवनै पंच दिन । 'गजसाह' वसुह राखी पर्ग, डहै मुज्ज डिगियो गिगन । —गु रू. ब.

बीवरौ-सं. पु.—१ आलंबन, सहारा।

उ०—रह्यौ बीवरै रामरस, अनरथ चलौ अलत। या हिज है भ्रम आतमा, ऐ तीरथ ऐ तंत। —बां. दा.

२ लीन या मग्न होने की अवस्था या भाव।

३ देखो 'बिवरौ' (रू. भे.)

बीवसाल—देखो 'विसाळ' (रू. भे.)

उ०—सबळां सु सहीयारो कीजई, पाणी पहिली पाळ। रुखमईयो बोलै सुणि राजा, जोईजइ बीवसाल। —रुकमणी मगळ

बीवांण—देखो 'विमांण' (रू. भे.)

उ०—१ अपछरा का सा बीवांण बीछूटा। छछोहा जवान तरवारघा आछूटै छै। ज्यां सु अगजवार हरवरमळा साथै हो कटै छै। —पना

उ०—२ भीम वाजह धरै सुर पग बीवाणां, भणै सुर पधारौ जोत भेळा। आपरै सेवगा महर रावळ 'अमर', बीहद भूलौ नही तंण बेळा। —रावळ हरराजजी रो गीत

बीवाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ ईखै पित मात एरिसा अवयव विमळ विचार करै बीवाह। सुंदर सूर सीळ कुळ करि सुध, नाह किसन सरि सूझै नाह। —वेलि

उ०—२ मदिर तरि किया खिणतरि मिळिवा, विचित्र सखिए समाव्रत। कीधै तिणि बीवाह संसकित, करण सु तणु रति संसक्रत। —वेलि

उ०—३ तद विजोगण री मा विजोगण नू कह्यो, आपा वाणीया छा अर एै राजा छै। अर आपा इसा मिसपत काई नही। ए बीजा बीवाह करसै तद तनै दुहागण कर राखसी। तू कही साह नू परणीज ज्यौं घर री धणीयांणी हुवै। —बीजड़ वीजोगण रो वात

बीवाहलो, बीवाहिलु, बीवाहिलो—देखो 'विवाहलो' (रू. भे.)

उ०—१ गोरीनदन वीनऊ, श्रीपति सुमति सुजाण। क्रस्ण तणो बीवाहलो, रिधसिध प्रसिध प्रमाण। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ सयल मण वंछिय काम-कुभोवम, पास पय कमलु पणमेवि भत्ति। सुगुरु 'जिणउदयसूरि' करिसु बीवाहलउ, सहिय ऊमाहलउ मुज्झ चित्ति। —ऐ. जै. का. स.

उ०—३ गवरीय नदन वीनवू जी, श्रीहरि सुरतरु आणि। विस्न तणो बीवाहिलो जी, रिधि सिधि प्रसिध प्रमाण। —रुकमणि मगळ

बीवाहु—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ अभिवनु उत्तरकूयरि वरिउ, आवो करिणि बीवाहु सु करिउ। पहुतउ सहूइ कन्हउपुरि, ध्यारि कन्न चिहु पडवि वरी। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ आदरि अरिदल आंमला, सांमलावीनि बीवाहु। आसारंगि रमाडिय, माडिय मनि उच्छाहु। —जयसेखर सूरि

बीवाहणौ, बीवाहबौ—देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

बीवाहणहार, हारौ (हारी), बीवाहणियौ—वि०।

बीवाहिग्रोड़ौ, बीवाहियोड़ौ, बीवाह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीवाहीजणौ, बीवाहीजबौ—कर्म वा०।

बीवाहियोड़ौ—देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बीवाहियोड़ी)

बीसंभर—देखो विस्वंभर' (रू. भे.)

उ०—प्रतिम येह उपाय, बीसभर न विसारियै। साथै धरम सहाय, पल पल राण प्रतापमी। —दुरसो आढौ

बीसंभरा—देखो विस्वभरा' (रू भे)

बीस-वि —दस का दुगुना, पन्द्रह व पाच का योग।

सं स्त्री.—२० की सख्या।

उ०—१ रीझी सुण चद्रावत राणी, साम साथ कज सवण सुहाणी। गायण बीस परम जस गावै, दूणं हित ऊठो दरसावै। —रा. रू.

उ०—२ बीस कोस दिस वाम, बीस दाहणं तरक्कै। जाळ धर सामही, करै बेमुही सरक्कै। —रा. रू.

रू. भे.—बीम।

बीसण—देखो 'व्यसन' (रू भे)

बीसणु—देखो 'विस्णु' (रू भे)

बीसन—देखो 'विस्णु' (रू. भे)

उ०—बळनो ढोलो इम कहै, एह वचन मम भाख। माऊ सु सकलपियो, ब्रह्मा बीसन री साख। —ढो. मा

२ देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

बीसनर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

बीसनु—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

बीसभुज, बीसभुजांण, बीसभुजा-सं. पु [स. बीस+भुजा] १ लकानरेश रावण। (अ. मा.)

उ०—१ साफण जुधा बीसभुज आसुर, दीन निवाजण अनुज सहोदर। बोलै साख त्रिकुट लिछमीवर, उमंग रीसवाळो अवधेस्वर। —र ज. प्र.

उ०—२ सुत भ्रात कटै मक धीट बधै धक, बीसभुजांण विचारियौ जी। निरबीजां वांनर नेम गमुन्नर, धेल इसौ मन धारियौ जी। —र. रू.

सं स्त्री.—२ दुर्गा, महामाया।

वि०—जिसके बीस भुजाएँ हो।

रू. भे.—बीसभुज, बीसभुजा, बीसभूजा।

बीसभुजाळ—१ देखो 'बीसभुजाळी' (मह., रू. भे)

२ देखो बीसभुजाळी' (मह., रू. भे.)

बीसभुजाळी—स. स्त्री.—देवी, दुर्गा, महामाया।

रू. भे.—बीसभुजाळी, बीसाभुजाळी।

मह., रू. भे.—बीसभुजाळ बीसभुजाळ,।

बीसभुजाळौ—वि.—जिसके बीस भुजाएँ हो।

स. पु.—लंकानरेश रावण।

मह, रू भे—बीसभुजाळ, बीसभुजाळ।

बीसभूजा—देखो 'बीसभुजा' (रू. भे.)

उ०—देवी भूतड़ा भ्रम्मरी बीसभूजा, देवी त्रीपुरा भेरवी रूप तूजा। देवी राखसं धोमरं रक्त रुती, देवी दुग्ज्जटा विक्कटा जम्मदुनी। —देवि.

बीसम, बीसमउ—देखो 'विसम' (रू. भे.) (व. र.)

बीसमणौ, बीसमबौ—क्रि. अ. [सं. विश्रामः] १ आराम करना, ठहरना।

उ०—१ इकि डोकरि तिणि दीसि पाच पूत्र इकि बहूय सउ कुंती नइ आवासि वटंवाहू बीसमियां। —सालिभद्र सूरि

उ०—२ सुगुरु सामिय हीण चगु भमियां, विसम वाट किहाइ न बीसमियां। बसइ जं जिनमंदिरि सीयलइ, बिहु परं तीहे तापु सही टलइ। —जयसेखर सूरि

उ०—३ सीतल सीलछाया बीसमउ, भावना नीररिंहि सीचिउ धरउ। फुल पत्र बार देवलोक जाणि, एह व्रक्ष नउं फल मुकति निरवाणि। —वस्तिग

२ शयन करना, सोना।

उ०—छायल फूल बिछाय, बीसमतौ वरजागदं। गैमर गोरी राय, तिण आमास अडाविया। —सोभा हीमालावत री गीत

३ अवसान होना, मरना।

उ०—'मान' हर 'माल' हर 'अमर' हर बीसमै, घन पहू भौसरं नकौ आया। असुर दळ ऊपटै, आज हू ओरुनां, जुडन कज पधारौ 'स्याम' जाया। —कछवाहा सुजाणसिंघ स्यामसिंघोत सेखावत रौ गीत

बीसमणहार, हारौ (हारी), बीसमणियौ—वि०।

बीसमियोड़ौ, बीसमियोड़ौ, बीसम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीसमीजणौ, बीसमीजबौ—भाव वा०।

बीसमणौ, बीसमबौ, बीसम्मणौ, बीसम्मबौ—रू. भे.।

बीसमियोड़ौ—भू. का. कृ—१ विश्राम किया हुआ, आराम किया हुआ, ठहरा हुआ। २ शयन किया हुआ, सोया हुआ। (३) अवसान हुवा हुआ, मरा हुआ।

(स्त्री. बीसमियोडी)

बीसमी, बीसमै—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ हुईय कांमिनि रूपि निरुपमी, रहिउ भीम तमी मुख बीसमी। बहुल भक्ष मनुस करै करी, गयउ सौ तहि कीचक सुंदरी। —सालिसूरि

उ०—२ उठै हसन दळ लियां अभूता, हिलियौ महण क दक्खण हूता। औ बीसमै दिवस लगि आयौ, लेखवता मग मास न लायौ। —रा. रू.

बीसमौ—१ देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ मरै घण गाजियै जिकौ सादूळ महि, सत्रा चा ढोल सिर सकै किम 'जसौ' सहि। बयण घण साभळै रहै किम बीसमौ, सुपह सादूळ कुण गिणै आपा समौ। —हा. झा.

उ०—२ 'गोइंद' पेखि जैसळगिरौ, बाघ बीसमौ वीरवर। रिण-वार रांण 'अमरेस' रा, कुरंगा जेम गया कुंअर। —गु. रू. ब.

२ देखो 'बीसवौ' (रू भे.)

बीसम्मणौ, बीसम्मबौ—देखो 'बीसमणौ, बीसमबौ' (रू. भे.)

उ०—पखा करं अछर बिंहू पासं, पखणि सेव सचरं पाव। सिरदारा पायरि बीसम्मियौ, समहरि निसभरि 'मान' सुजाव। —सुरताण मानावत रौ गीत

बीसम्मणहार, हारौ (हारी), बीसम्मणियौ—वि०।

बीसम्मियोड़ौ, बीसम्मियोड़ौ, बीसम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीसम्मीजणौ, बीसम्मीजबौ—भाव वा०।

बीसम्मियोड़ौ—देखो 'बीसमियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री बीसम्मियोडी)

बीसर—स. स्त्री.—१ भूल, विस्मरण।

२ देखो 'विसर' (रू. भे.)

बीसरणौ—वि०—भूलने वाला, विस्मरण होने वाला।

बीसरणौ, बीसरबौ—देखो 'विसरणौ, विसरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरा एकण बहू कह्यो, "बीजो तो किण ही विध विसारै न पड़े, जो सावण लागते स्यु आपा कुंवरजी नु जुदी जुदी गोठा करो। भीतर राखा। आदमी बागिया सारा नु अमला-पाणिया सु गळतान राखा तो बीसर जावै। —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ लिव लागी तूटै नही, लिव अतर की तार। लागत ही सु बीसरी, हरीया तन की सार। —अनुभववाणी

उ०—३ क्यो बीसरै दान क्यो बीसरै मांन क्यो वीसरै जुगति सु जीमियौ धान। क्यो बीसरै साप नै सीस री घाव, क्यो वीसरै वैरिया जदि पडै दाव। —मेहोजी गोदारा थापन

उ०—४ मौताज अम्हा हरवळ मिळण, सो कुळवाट न बीसरूं। 'गोरधन' कियौ 'गजबध' अग्र, कळह आप अग्र मैं करूं। —सू. प्र.

उ०—५ दिनि निसि माधव देखवा, हीयडा मांहि हाम। भूख त्रिखा निद्रा नही, बीसरिया सवि काम। —मा. का. प्र.

बीसरणहार, हारौ (हारी), बीसरणियौ—वि०।

बीसरिग्रोड़ौ, बीसरियोड़ौ, बीसरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बीसरीजणौ, बीसरीजबौ—कर्म वा०।

बीसराणौ, बीसराबौ—देखो 'विसराणौ, विसराबौ' (रू भे.)

उ०—हीरा तणी सहेलिया, दुरस दिलासा दीन। बीसराई उण बात नें, नागर ग्यात नवीन। —बगसीरांम प्रोहित री बात

बीसराणहार, हारौ (हारी), बीसराणियौ—वि०।

बीसरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बीसराईजणौ, बीसराईजबौ—कर्म वा०।

बीसरायोड़ौ—देखो 'विसरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीसरायोड़ी)

बीसरावणौ, बीसरावबौ—देखो 'विसराणौ, विसराबौ' (रू भे.)

बीसरावणहार, हारौ (हारी), बीसरावणियौ—वि०।

बीसराविग्रोड़ौ, बीसरावियोड़ौ, बीसराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीसरावीजणौ, बीसरावीजबौ—कर्म वा०।

बीसरावियोड़ौ—देखो 'विसरायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. बीसरावियोड़ी)

बीसरियोड़ौ—देखो 'विसरियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री बीसरियोड़ी)

बीसबळी—स. पु.—कलेजे पर पानी से भरी एक थैली।

बीसविसवा, बीसविसा, बीसवीसा, बीसवीस्वा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ बीसविसवा भक्ती कर, एक विसवौ दै नंद। पुण्य कीनौ राक्षस भख, होय जावै प्रदादुद। —श्री हरिरामजी महाराज

उ०—२ ग्रमवान सु एवजवान जिसा, वप रोस ग्रमापक बीसबिसा। वधि जोड ग्रबद्दल सेंद वळै, भुज मार नियो जिण भार भळै। —रा. रू.

उ०—३ दिल उजळ 'सिवा' ग्रवनीमा दूदा, वडपण दाखा बीसबीसा। कपडा दीसा न देखे कमधज, देखीजे ग्राखरा दीसा। —सिवसिंघ मेडतिया रो गीत

बीसवौं—वि०—जिसका स्थान क्रम से उन्नीस के बाद हो।

रू. भे —बीसमौं, बीसवौ बीसमौ।

बीससणौ, बीससबौ—क्रि० स०—१ विश्वास करना, ऐतबार करना।

उ०—१ मन उल्हसइ कलंबी तणा, ऊससइ वेलि वितान। लोक लोकनइ बीससइ, विणसीइ जवाना पान। —नळदवदती रास

उ०—२ विदुरि पवाचिउ लेखु, दुरयोधन मन बीसिसउं। एसु पुरोहित वेसु, कालु तुम्हारउ जांणिजउ। —सालिभद्र सूरि

क्रि० ग्र०—२ विश्वास होना, ऐतबार होना।

बीससणहार, हारौ (हारी), बीससणियौ—वि०।

बीससिग्रोड़ौ, बीससियोड़ौ, बीसस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीससीजणौ, बीससीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बीससाकरण—स. पु. [स विश्रसाकरण] रूप, रस, गंध एव स्पर्श का अपने मे भिन्न रूप, रस, गंध एव स्पर्श मे मिलने से उस वर्णादि का मेल। (जैन)

बीससियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ विश्वास किया हुआ, ऐतबार किया हुआ।

२ विश्वास हुवा हुआ, ऐतबार हुवा हुआ।

(स्त्री. बीससियोड़ी)

बीसहत, बीसहती—सं स्त्री.—१ देवी, दुर्गा, महामाया।

२ सरस्वती गिरा, भारती।

उ०—चिंता विघन विनासणी, कमळासणी सगत। बीसहती हस-वाहणी, माता देहु सुमत। —ग्रग्यात

रू. भे —बीसहत, बीसहती, बीसहत्थ, बीसहत्थी, बीसहथ, बीसहथि, बीसहथी, बीसहथ्य, बीसहथ्थी, वीसहत्थ, वीसहत्थी, वीसहथ, वीसहथि, वीसहथी, वीसहथ्थ, वीराहथ्थी, हातबीसाळी।

बीसहनौ—देखो 'बीसहथौ' (रू भे.)

बीसहत्थ, बीसहत्थी—देखो 'बीसहती' (रू. भे)

उ०—नमो वृग्रमाडी नमौ काति काळी, नमो त्रिपुरा तोतला प्रेत ताळी। नमो बीसहत्थी नमो बीर सगा, नमो उंडळा ग्रोडणी गोम ग्रगा। —मा. वचनिका

बीसहत्थौ—देखो 'बीसहथौ' (रू. भे)

बीसहथ, बीसहथि, बीसहथी—देखो 'बीसहती' (रू. भे)

उ०—१ तउ बीसहथि विराळि, तइं बीसहथि विगोळियइ। मावठि भागइ तू तणइ, छिपयउ सु काइ हिगोळि। —ग्र. वचनिका

उ०—२ कहै ग्रोरि केकाण, सेल ग्रसुराण करूं सळ। बीसहथी हथवीस, ग्रोक पाऊ रत ऊजळ। —सू. प्र.

उ०—३ खळहळा खत चळवळा खापर, बीसहथ भर विळकुळी। मह वळा चव रघुनाथ ग्रमला, मड सुसबद मंडळी। —र ज. प्र.

उ०—४ बूझइ किसूं बापड़ा मानव, बीसहथी सहु लहइ विचार। गवरी जाणं लाडगहेली, ईसर देव तणा अधिकार।

—महादेव पारबती री वेलि

बीसहथौ—सं. पु.—लकाधिपति रावण।

वि.—बीस भुजाग्रो को धारण करने वाला।

रू. भे.—बीसहतौ, बीसहत्थौ, बीसहथ्थौ।

बीसहथ्य, बीसहथ्थी—देखो 'बीसहती' (रू भे.)

बीसहथ्थौ—देखो 'बीसहथौ' (रू भे)

बीसहेक-वि.— करीब बीस, लगभग बीस।

उ०—तद श्रै मोटियार था, सताबी खड़ कोसां पाचा-साता श्राय पोहता। श्राण बतळाया श्रै चिरोया, सो रीठ वागो। सो श्रादमी बीसहेक सु वेणीदास रा बेटा दोय, भतीजा दस, बीजा भाई बध खरळ काम श्राया। —कुंवरसी सांखला री वारता

बीसांभुजाळी—देखो 'बीसभुजाळी' (रू. भे.)

उ०—देवी रत्त नीलमणी सीत रंग, देवी रूप श्रंबार बीरूप श्रंग। देवी बाळ जूवा व्रध वेस वाळी, देवी विस्व रखवाळ बीसांभुजाळी। —देवि

बीसांम, बीसांमउ—देखो 'विसराम' (रू. भे.)

उ०—१ न लियइ बीसांम उन विरहइ, पवन वेग तै वाटै वहइ। कहइ उडइ पखी श्रागासि, प्रगडइ श्राया पूगळ पासि। —ढो. मा.

उ०—२ ललिन सरोवर पेखियइ ए, वली सत्ता नी वावि। तिहा बीसामउ लीजियइ ए, वइ नइ चउतर श्रावि। —स. कु

बीसांमणौ बीसामबौ—देखो 'विसरामणौ, विसरामबौ' (रू. भे.)

बीसांमणहार, हारौ (हारी), बीसांमणियौ—वि०।

बीसांमिश्रोडौ, बीसांमियोडौ, बीसांम्योडौ—भू० का० कृ०।

बीसांमीजणौ, बीसांमीजबौ—भाव वा०।

बीसांमियोडौ—देखो 'विसरामियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री, बीसामियोडी)

बीसांमो- देखो 'विसराम' (मह., रू. भे.)

उ०—भारवाहक नइ कह्या भला, बीसांमा बीतरागी जी। माथा थी मूकइ कधं लहइ, मारग माहि लागी जी। —स कु.

बीसार-स. स्त्री —१ विस्मरण, भूल।

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

बीसारण, बीसारणौ—देखो 'विसारणौ' (रू भे)

उ०—दुख-बीसारण, मनहरण, जउ ई नाद न हुंति। हियडउ रतन-तळाव ज्यउ, फूटी दह दिसि जति। —ढो. मा.

बीसारणौ, बीसारबौ—देखो 'विसारणौ, बिसारबौ' (रू भे)

उ०—१ साहजादा श्रजीम सामतखा सग, श्रजमेर मैं सहायक राखै श्रवरग। इनायत खान जोधपुर दोडं श्रा बीसार, श्रसुरा की थोर को न जोर को न पार। —रा. रू.

उ०—२ यं सिध्धावउ, सिध करउ, पूजउ थाकी श्रास। मत बीसारउ मन-थकी, उवा छइ थाकी दास। —ढो. मा.

उ०—३ श्राय नृपति पूछी विध एही, सावधान हुय धरम सनेही। विखै श्रग्यान धरम बीसारो, सूरजकुळ चो धरम सभारो। —सू. प्र.

उ०—४ श्रम सनेह कुळ मारग धारा, प्राणहून वधि श्राप पियारा। श्राप वचन मैं सीम श्रधारै, वायक प्रिया कहण बीसारै। —सू. प्र.

बीसारणहार, हारौ (हारी), बीसारणियौ—वि०।

बीसारिश्रोड़ौ, बीसारियोड़ौ, बीसारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बीसारीजणौ, बीसारीजबौ—कर्म वा०।

बीसारियोड़ौ—देखो 'विसारियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीसारियोडी)

बीसावत—सं पु.—बीका राठोडो की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

उ०—श्ररु प्राणकवर निरवाण रै दोय कवर हुश्रा, श्रमरोजी बीमोजी। तिण रा श्रमरावत बीका है माजन रा परधान। श्ररु बीसोजी रा बीसावत बीका है भूकरकै रा परधान। —द दा

बीसास—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ काई कीयौ कपटी तणौं रे, श्रसुर तणौ बीसास। राय ग्रह्यो हिव पदमणी नै, गढनो करसी ग्रास। —प च चौ.

उ०—२ जब कह्यो मात पै श्रघट श्रोय हित मागहु श्रक्षया फेर होय। उण कयो मात इक पुत्र श्रास, सो बिणं कुंप केसौ बीसास। —रांमदान लाळस

उ०—३ पेस करा जो पदमणी जी, तुम उपजै बीसास। विण बीसास किसी परै जी, रहै सहुनै रग रास। —प. च चौ.

बीसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

बीसासणौ, बीसासबौ—देखो 'विस्वासणौ, बिस्वासबौ' (रू. भे.)

उ०—कहि श्रालिम कैसी परैजी, तुम बीसासउ मन। 'लालचद' कहै साभलौजी, बादल कहेज वचन। —प. च. चौ.

बीसासणहार, हारौ (हारी), बीसासणियौ—वि०।

बीसासिश्रोड़ौ, बीसासियोडौ, बीसास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बीसासीजणौ, बीसासीजबौ—कर्म वा०।

बीसासियोड़ौ—देखो 'विस्वासियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बीसासियोडी)

बीसासौ—देखो विस्वास' (श्रल्पा, रू. भे)

उ०—हिवै नव ग्रीवै कै पचानुत्तर सार, चेईहर मणसय श्रेत्रीसा सुविचार। प्रत्येकेप्रतिमा बीसासौ तिहा जाण, श्रडत्रीस सहस सत-साठ श्रछै गुण खाण। —वृ. स्त.

बीसियौ-स. पु —एक प्रकार का घास विशेष।

रू. भे.—बीस्यौ।

बीसी-स. स्त्री—१ समय, अवधि।

२ बीसमी शताब्दी।

३ वह स्थान जहां लागत अदा करके शाकाहारी भोजन प्राप्त किया जाता है, भोजनालय।

४ बीस वर्ष का समय। (युग)

५ एक ही प्रकार के बीस पदार्थों का समूह, कोडी।

६ गणना का वह प्रकार, जिसमे बीस-बीस चीजो के समूह को एक-एक इकाई मान कर रखा जाता है।

७ ज्योतिष शास्त्र मे साठ संवत्सरो के तीन विभागों मे से कोई एक विभाग।

वि० वि०—इनमे प्रथम ब्रह्मावीसी, द्वितीय विष्णुवीसी एवं तृतीय रुद्रवीसी कहलाती है।

(१) ब्रह्मावीसी.—(१) प्रभव (२) विभव (३) शुक्ल (४) प्रमोद (५) प्रजापति (६) अगिरा (७) श्रीमुख (८) भाव (९) युवा (१०) धाता (११) ईश्वर (१२) बहुधान्य (१३) प्रमाथी (१४) विक्रम (१५) वृष (१६) चित्रभानु (१७) सुभान (१८) पार्थिव (१९) तारण (२०) व्यय।

(२) विष्णुवीसी:—(१) सर्वजित (२) सर्वधारी (३) विरोधी (४) विकृति (५) खर (६) नदन (७) विजय (८) जय (९) मन्मथ (१०) दुर्मुख (११) हेमलम्ब (१२) विलंब (१३) विकारी (१४) शार्वरी (१५) प्लव (१६) शुभकृत (१७) शोभन (१८) क्रोधी (१९) विश्वावसु (२०) पराभव।

(३) रुद्रवीसी:—(१) प्लवग (२) कीलक (३) साम्य (४) साधारण (५) विरोधकृत (६) परिधावी (७) प्रमादी (८) आनन्द (९) राक्षस (१०) अनल (११) पिंगल (१२) कालयुक्त (१३) सिद्धार्थ (१४) रौद्र (१५) दुर्मति (१६) दूंदुभी (१७) रुधिरोद्गारी (१८) रक्ताक्षी (१९) क्रोधन (२०) क्षय।

८ बीस गाथा, श्लोको या छंदो का समूह।

९ जैन मतानुसार बीस विहरमानो के नामो का समूह।

वि० वि०—देखो 'विहरमाण'।

रू. भे.—विसी, वीसी।

बीसूकी—देखो 'विस्रांति' (रू. भे.)

बीसूरण, बिसूरणी- देखो 'विसूरण' (रू. भे.)

बीसूरणी, बीसूरबौ—१ देखो 'विसरणौ, विसरबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विसूरणौ, विसूरबौ' (रू. भे.)

बीसूरणहार, हारौ (हारी), बीसूरणियौ—वि०।

बीसूरिप्रोडो, बीसूरियोड़ो बीसूरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बीसूरीजणो, बीसूरीजबौ—भाव वा०।

बीसूरियोड़ो—१ देखो विसरियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'विसूरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बीसूरियोडी)

बीसूबिसा, बीसूवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—अपत रहिया 'अखै' 'अजा' 'गोकळ' इसा, रीत खवबाट री बोय दीनी रसा। बिगाड्यो धरम धर तणौ बीसूबिसा, दियौ जळ हाथ सु सात पीढी दिसा। —स्यांमजी बारहठ

बीसेक-वि०—बीस के लगभग।

रू. भे.—बीसे'क।

बीसेबिसा, बीसेबीसा—देखो 'विसवावीस' (रू भे)

उ०—त सूधो तू साधवी, तूं नर भक्ति निधान। विधि बाधो बारू विसै, बीसेबिसा समान। —मा. का. प्र.

बीसोतर-वि०—एक सौ बीस।

सं. पु.—चारण जाति जिसमे कुल एक सौ बीस गौत्र हैं।

उ०—बीसोतर का छोगा, दिल का उदार। जस जुगतेम कूं बखाणें, सब ही ससार। —बा. दा.

रू. भे—बीसोतर, बीसोत्तर।

बीसोतरि, बीसोतरी—देखो 'विसोत्तरि' (रू. भे.)

बीसोत्तर—देखो 'बीसोतर' (रू भे)

बीसोत्तरि, बीसोत्तरी—देखो विसोत्तरी' (रू भे.)

बीसौ—स. पु—१ बीस की सख्या का वर्ष।

२ बीस की सख्या का संवत्।

रू. भे.—बीसौ।

बीस्यौ—देखो 'बीसियौ' (रू. भे)

बीहग—देखो 'विहग' (रू. भे)

बीहगड़ो—देखो 'विहग' (अल्पा,. रू. भे)

बीह—देखो 'बी' (रू भे)

उ०—निमो हस हसा तणां जोति हरंता, निमो काळ ही बीह रा करता। निमो धरम ही तूझ निस दीह ध्यावै, निमो वडो जण वीण तुंबर वजावै। —पी. ग्र.

बीहड- देखो 'बीहड' (रू. भे.)

बीहणी बीहबौ—देखो 'बीहणौ, बीहबौ' (रू. भे-)

उ०—१ आसराव, नाडूल सिकार रमतो हुतौ सु वडो दूठ राजवी हुवौ, तिण नूं देवी बीहाडण लागी सु आसराव बीहै नहीं नै बांण हिरण नू साधियौ हुतौ सु बाह्यौ, तरै देवी खुश हुई नै आसराव नू कहण लागी, तोन हू तूठी तू जाणें सु माग। —नैणसी

उ०—२ बीहड़ो जिके मरण सुं बीहै, रहज्यो जिकोज साथ रहै। सिर साटै देसी सादावत, कोट म बीहै 'भोज' कहै।
—भोजराज रूपावत री गीत

उ०—३ बोलि न सक्कै बीहतउ, हेक ज वात हुई। राजि अपूठा वाहुड़उ, माळवणी मूई। —ढो. मा.

उ०—४ जसु अठार मुकुट बद्ध राजा, सेव करइ कर जोड़ जी। कोणिक थी बीहतउ राम चेडउ, नृप पड़धउ बल छोड जी। —स. कु.

बीहणहार, हारौ (हारी) बीहणियौ—वि०।
बीहिग्रोड़ौ, बीहियोड़ौ बीहयोड़ौ—भू० का० कृ०।
बीहीजणौ, बीहीजबौ—भाव वा०।

बीहर—देखो 'वहीर' (रू. भे.)

बीहरणौ, बीहरबौ—देखो 'विहरणौ, विहरबौ' (रू. भे.)

उ०—निरसूळ धीव उरमक्त ताय, फळ जहु उवर म वर बीहरै फबाय। सिर चकर बीहर कर काट सोय, हुकार डकर घमजगर होय। —रामदान लाळस

बीहरणहार हारौ (हारी), बीहरणियौ—वि०।
बीहरिग्रोड़ौ, बीहरियोड़ौ, बीहरयोड़ौ भू० का० कृ०।
बीहरीजणौ, बीहरीजबौ—कर्म वा०।

बीहरियोड़ौ—देखो 'विहरियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. बीहरियोड़ी)

बीहळ, बीहल—१ देखो 'बीहलौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बीहल्ल' (रू. भे.)
३ देखो 'विह्वल' (रू भे.)
४ देखो 'वेहळ' (रू. भे.)
५ देखो 'बेहल' (रू भे)

बीहला—स स्त्री—देवी, दुर्गा, महामाया।

उ०—देवी चद्रघटा महम्माय चडी, देवी बीहळा अन्नटा वड वट्टी। देवी जम्मघटा वदीजै जडबा, देवी माकणी डाकणी रुढ सडबा। —देवि

बीहळी, बीहली—स. स्त्री.—१ वह स्त्री जिसका पति पास मे नहीं हो, वियोगिनी।

उ०—बीज न देखै बीहलियां, पीव परदेस ययांह। आपण लीयै भत्रूकडा, गळि लागै सिहराह। —ढो. मा.

२ देखो 'विह्वल' (अल्पा, रू. भे)

बीहलौ सं. पु.—बीहल्ल राजपूत वश का व्यक्ति।
वि०—हद से ज्यादा, अत्यधिक।

उ०—वेस्यौ दरियौ भरियौ जल घणौजी, तब बोलै नरनाथ। वारिधि पूरौ हल बीहला हुइ रे, मुंछा घालै हाथ। —प. च. चौ.

देखो 'विह्वल' (अल्पा. रू भे.)

बीहल्ल—स पु.—एक राजपूत वश।

उ०—चाउडा हरीयड डोडीया, वेगि करी रायगणि गया। जय-वंता यादव बीहल्ल, नर निकुभ गिरूया गोहिल्ल। —का. दे. प्र.

रू. भे.—बीहळ, बीहल

बीहसणौ, बीहसबौ—क्रि० अ०—१ हसना, हर्षित होना।

उ०—विसराळ अबाळ घुरै रवि बोहस, लाह आखेट लंकाळ। अजेरा जेरण घेर असगा, फेर दुहाई फाळ। —मा. वचनिका

१ हिनहिनाना।

उ०—साठ तुरिय पाखरघा सजुत, बौसलदै सायहि बीहसंत। जाई परभोमई सचरचौ, कोई न जाणइ साभरघा-राव। छलिगाणउं होई सचरचौ, देस उडीसइ पहुता जाई। —बी. दे.

बीहांण—१ देखो विहाण' (रू. भे.)
२ देखो 'विहाणौ' (रू भे)

बीहांणी—देखो 'विहाणी' (रू. भे.)

बीहांणू—१ देखो 'विहाण' (रू. भे.)
२ देखो 'विहाणौ' (रू. भे)

बीहांणौ—१ देखो 'विहाण' (अल्पा.' रू. भे.)
२ देखो 'विहाणौ' (रू. भे.)

बीहा—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तद बीठू जाय कुंवर नु कही, "जो माहाराज फुरमावै छै, भो नाळे'र पाछो देवो। बीजो बोहा सु जोख छुं तो एक-दोय करो।" तद कुंवर कह्यौ, "बीठू तु अरज करै, जो म्हारै तो पण छै-सरीक रौ नाळे'र आयो पाछो न फेरू। —कुंवरसी साखला री वारता

बीहाड़णौ, बीहाडबौ—१ देखो 'बीहाणौ, बीहाबौ' (रू. भे)

उ०—आसराव, नाहूल सिकार रमतो हुतो सु वडो दूठ राजवी हुवो, तिण नू देवी बोहाडण लागी सु आसराव बीहै नहीं नै बाण हिरण नूं साधियो हुतो सु बाह्यो, तरै देवी खुस हुई नै आसराव नू कहण लागी, तोनूं हू तूठी, तूं जाणै सु मांग। —नैणसी

२ देखो 'बीहावणौ, बीहावबौ' (रू. भे.)
बीहाडणहार, हारौ (हारी), बीहाडणियौ—वि०।
बीहाड़िग्रोड़ौ, बीहाड़ियोड़ौ, बीहाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
बीहाड़ीजणौ, बीहाड़ीजबौ—कर्म वा०।

बीहाड़ियोड़ौ—१ देखो बीहायोडौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बीहावियोडौ' (रू. भे,)

(स्त्री. बीहाड़ियोड़ी)

बीहाड़णो, बीहाड़बो—१ देखो 'बीहाणो, बीहाबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बीहावणो, बीहावबो' (रू. भे.)

बीहाड़णहार, हारो (हारी), बीहाड़णियो—वि० ।

बीहाड़ियोड़ो, बीहाड़ियोड़ो, बीहाड़योड़ो—भू० का० कृ० ।

बीहाड़ीजणो, बीहाड़ीजबो—कर्म वा० ।

बीहाड़ियोड़ो—१ देखो 'बीहायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बीहावियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बीहाड़ियोड़ी)

बीहाणो, बीहाबो—१ देखो 'बिवाहणो, बिवाहबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बीहाणो, बीहाबो' (रू. भे.)

३ देखो 'बीहावणो, बीहावबो' (रू. भे.)

बीहाणहार, हारो (हारी), बीहाणियो—वि० ।

बीहायोड़ो—भू० का० कृ० ।

बीहाईजणो, बीहाईजबो—कर्म वा० ।

बीहायोड़ो—१ देखो 'बिवाहियोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बीहायोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'बीहावियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बीहायोड़ी)

बीहार—देखो 'विहार' (रू. भे.)

उ०—नवलाख निवतरै सहत नूर, नित दिवस वदै रंगरळी पूर।
आपरी इउ हीज लीला उदार, बड सगत करण जै जग बीहार।
—रामदान लाळस

बीहाव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तद ठगै कह्यो, "फळाणै रा बेटा हुवो नहीं ?" तद ईयै कही, राज हुवा छा। तद ठग रै बेटै कही, तो थे म्हाहरा बहनेई हुवो। फलांणै बरस थाहरो बाप आयो हुतो। तद बीहाव कीयो हुतो। —बूढी ठग राजा री बात

बीहावणो, बीहावबो—क्रि. स. १—व्यतीत करना समाप्त करना।

उ०—बीजा नुं परी बीजी कांन्ही मेल्हण लागा। तरै देवड़ै बीजै बण ही इणां ठाकरां नै कह्यो—मो नु परी अळगी मत मेल्हो। तरै इणै ठाकुरै कह्यो—कूकड़ो जिण गांव न हुवै छै तठै ही रात बीहावै छै। —राव चन्द्रसेन री बात

२ देखो 'बीहाणो, बीहाबो' (रू. भे.)

३ देखो 'बिवाहणो, बिवाहबो' (रू. भे.)

बीहावणहार, हारो (हारी), बीहावणियो—वि० ।

बीहावियोड़ो, बीहावियोड़ो, बीहाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बीहावीजणो, बीहावीजबो—कर्म वा० ।

बीहाड़णो, बीहाड़बो, बीहाडणो बीहाडबो, बीहाणो' बीहाबो
—(रू. भे.)

बीहावियोड़ो—भू० का० कृ०—१ व्यतीत किया हुआ, समाप्त किया हुआ।

२ देखो 'बीहायोड़ो' (रू. भे.)

३ देखो 'विवाहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीहावियोड़ी)

बीहूर—सं. पु.—वातचक्र, हवा का चक्र।

वि० वि०—देखो 'बघूलो' (रू. भे.)

बु—सं पु.—१ प्रात. काल, सवेरा। (एका.)

२ रात्रि का प्रथम प्रहर, प्रदोष। (,,)

३ घनपटल। (,,)

बुअणो, बुअबो—१ देखो 'वहणो,वहबो' (रू. भे.)

उ०—१ प्रतापसिंह नै साम्हो आवतो देखनै ठाकर म्यान सूं तलवार बारै काढली। घेरो नैंन्हो होवण लाग्यो अरु ठाकर वार करै उण पे'लीज प्रतापसिंह री तलवार बुई सो ठाकर रो माथो बाढ नाख्यो। दुस्मियां रै मन चीतो व्ही। —अमरचूंनड़ी

उ०—२ जिण मारग केहर बुवो, रज लागी तिरणाह। वे वन ऊभा सूकसी, नह चरसी हिरणाह। —बां. दा.

२ देखो 'बोवणो, बोवबो' (रू. भे.)

बुअणहार, हारो (हारी), बुअणियो - वि० ।

बुइओड़ो, बुइयोड़ो, बुयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बुईजणो, बुईजबो—भाव वा० ।

बुआणो, बुआबो—देखो 'वहाणो, वहाबो' (रू. भे)

२ देखो 'बोवाणो, बोवाबो' (रू. भे.)

बुआहणहार, हारो (हारी) बुआणियो—वि० ।

बुआयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बुआईजणो, बुआईजबो—कर्म वा० ।

बुआयोड़ो—१ देखो 'वहायोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बुआयोडी)

बुआरणो, बुआरबो—देखो 'बुहारणो, बुहारणो' (रू. भे.)

बुआरणहार, हारो (हारी), बुआरणियो—वि० ।

बुआरिओड़ो, बुआरियोड़ो, बुआरयोड़ो—भू० का० कृ० ।

बुआरीजणो' बुआरीजबो—कर्म वा० ।

बुआरियोड़ो—देखो 'बुहारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बुआरियोड़ी)

वुआरी—देखो 'वुहारी' (रू. भे.)

वपारौ—देखो 'बुहारौ' (रू. भे)

वुआवणौ, वुआवबौ—१ देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू भे.)

वुआवणहार हारौ (हारी), वुआवणियौ—वि० ।

वुआविओड़ौ, वुआवियोड़ौ, वुआव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुआवीजणौ वुआवीजबौ—कर्म वा० ।

वुआवियोड़ौ—१ देखो 'वहायोडौ, (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुआवियोडी)

वुइयोड़ौ, वुओड़ौ—१ देखो 'वहियोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुइयोडी, वुओडी)

वुक—१ देखो 'बक' (रू. भे.)

२ देखो 'बुग' (रू. भे)

वुकठणौ, वुकठबौ—क्रि. स —निकालना ।

उ०—है **वुकठिआ** काकण हथौ, केवा काढगा काज कडछ्छे । भाक समू भळकता भाला, धण लै अरिया खाग धडछ्छे ।

—मोहकमसिंघ राठोड़ रौ गीत

वुकठणहार, हारौ (हारी), वुकठणियौ—वि० ।

वुकठिओडौ, वुकठियोड़ौ, वुकठ्योडौ—भू० का० कृ० ।

वुकठीजणौ वुकठीजबौ—कर्म वा० ।

वुकढणौ, वुकढबौ—रू० भे० ।

वुकठियोडौ—भू० का० कृ०—निकाला हुआ ।

(स्त्री. वुकठियोडी)

वुकढणौ, वुकढबौ—देखो 'वुकठणौ, वुकठबौ' (रू. भे)

वुकढणहार, हारौ (हारी), वुकढणियौ—वि० ।

वुकढिओडौ वुकढियोडौ, वुकढ्योडौ—भू० का० कृ० ।

वुकढीजणौ, वुकढीजबौ—कर्म वा० ।

वुकढियोडौ—देखो 'वुकठियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुकढियोडी)

वुकांनौ—देखो 'वुकानौ' (रू. भे.)

वुखार—१ देखो 'भखारी' (रू. भे.)

२ देखो 'बुखार' (रू. भे)

वुखारी—१ देखो 'बुखारी' (रू. भे.)

२ देखो 'भखारी' (रू भे.)

वुखारौ—देखो 'भखारौ' (रू. भे.)

उ०—काय भाई मोमिणौ ओ धन सचौ, सचि सचि छलौ **वुखारौ** ओ धन खाकि जी भाई होयसी, खालो रह्या **वुखारौ** ।

—ऊदोजी नैण

वुग—देखो 'वुग' (रू. भे.)

वुगचियौ, वुगचौ—देखो 'बुगचौ' (अल्पा., रू. भे.)

वुगचौ—देखो 'बुगचौ' (रू. भे.)

वुगती—देखो 'बुगती' (रू भे)

उ०—"छौ हुसता ।" बीदणी तौ आ बात कैय अजेज वेहल सूं हेटै कूदगी । फुदी ज्है ज्यूं कैर केर उडती फिरी । थोडी ताळ मैं गाता-चुट्ट ढालुआ मूं खोळौ भरने पाछी आयगी । **वुगती** रा पाणी सू वानै सावळ धोया । ठारया ।

—फुलवाडी

वुगदी—देखो 'वुगदी' (रू भे)

वुगदौ—देखो 'वुगदौ' (रू भे)

वुगध्यांनौ—देखो 'बकध्यानौ' (रू भे)

वुगर—देखो 'बुगर' (रू. भे.)

वुगलाभक्त—देखो 'बुगलाभक्त' (रू. भे.)

वुगलाभक्ति, वुगलाभक्ती—देखो 'बुगलाभक्ती' (रू. भे)

वुगलाभगत—देखो 'वुगलाभक्त' (रू. भे.)

वुगलाभगति, वुगलाभगती—देखो 'बुगलाभक्ती' (रू. भे.)

वुगलियौ—१ देखो 'बुगलियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बक' (अल्पा., रू. भे)

वुगलौ—१ देखो 'बुगलौ' (रू. भे)

२ देखो 'बक' (अल्पा., रू. भे)

वुगल—१ देखो 'बुगल' (रू. भे)

२ देखो 'बक' (मह., रू भे)

वुग्गी—देखो 'बुग्गी' (रू. भे.)

वुडकौ—देखो 'बुडकौ' (रू भे.)

वुडचणौ, वुडचबौ—देखो 'बुडचणौ, बुडचबौ' (रू. भे.)

वुडचणहार हारौ (हारी), वुडचणियौ—वि० ।

वुडचिओडौ, वुडचियोडौ, वुडच्योडौ—भू० का० कृ० ।

वुडचीजणौ, वुडचीजबौ—कर्म वा० ।

वुड़चियोडौ—देखो 'बुडचियोडौ' (रू. भे.)

वुजौ—देखो 'वूजौ' (रू भे)

वुटाबटौ, वुटाबटौ—देखो 'बुटाबटौ' (रू भे)

वुट्ठणौ, वुट्ठबौ—देखो 'बूठणौ, बूठबौ' (रू. भे)

उ०—तहि भरजूणि मिरिहिऊ, भागिणीय सरू अगि उट्ठीय । वट्ठु दुक्खु मणि चितवीय, पडसेन घण नयणि वुट्ठीय ।

—सालिभद्र सूरि

वुट्ठणहार, हारो (हारी), वुट्ठणियो—वि० ।
वुट्ठिग्रोड़ो, वुट्ठियोड़ो, वुट्ठ्योड़ो—भू० का० कृ० ।
वुट्ठीजणो, वुट्ठीजबो—भाव वा० ।
वुट्टियोड़ो—देखो 'बूठियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री वुट्टियोड़ी)
वुठणो, वुठबो—देखो 'बूठणो, बूठबो' (रू भे.)
उ०—१ गुनकयारी कयारा, चदनगारा, फूल अधिक फाबंदा है। चादरिया छूट, ज्यं घण वुठं, ऊजळ जळ झळकदा है।
—गज-उद्धार
उ०—२ अठी सतारो अमीर जह सौवासू जुटिया आणे, वुठिया आतसा आग अघो व्हे अचंब। जैतवादी 'चापा' 'कूंपा' जुटिया सिव जीउ जाणे, खागा झाल अठी सु उठीया जैतखभ।
—पहाड़खा आढ़ो
वुठणहार, हारो (हारी), वुठणियो—वि० ।
वुठिग्रोड़ो, वुठियोड़ो, वुठ्योड़ो—भू० का० कृ० ।
वुठीजणो, वुठीजबो—भाव वा० ।
वुठियोड़ो—देखो 'बूठियोड़ो' (रू भे.) (स्त्री. वुठियोड़ी)
वुठो—देखो 'उठो' (रू. भे.)
वुठं—देखो 'वठं' (रू. भे.)
वुठ्ठणो, वुठ्ठबो—देखो बूठणो, बूठबो' (रू. भे.)
उ०—सोळमें समत, बरस सहतरे बयटु । सुकळ पक्ख भाद्रवं, घुम्मि वरखा घण वुठ्ठं ।
—गु. रू ब
वुठ्ठणहार, हारो (हारी), वुठ्ठणियो,—वि० ।
वुठ्ठिग्रोड़ो, वुठ्ठियोड़ो, वुठ्ठ्योड़ो—भू० का० कृ० ।
वुठ्ठीजणो, वुठ्ठीजबो—भाव वा० ।
वुठ्ठियोडो—देखो 'बूठियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वुठ्ठियोडी)
वुडणो, वुडबो—१ देखो 'बूडणो, बूडबो' (रू. भे)
२ देखो 'उडणो. उडबो' (रू भे)
वुडणहार, हारो (हारी), वुडणियो—वि० ।
वुडिग्रोड़ो, वुडियोड़ो, वुड्योड़ो—भू० का० कृ० ।
वुडीजणो, वुडीजबो—भाव वा० ।
वुडवणो, वुडवबो—देखो 'बूडणो, बूडबो (रू भे.)
२ देखो 'उडणो उडबो' (रू. भे)
उ०—खग झट बिकट वुडव खरडक, डहकत डारण ग्रीर डहडक। गति घण गेहक छायीयं गयणक, 'हीरा' ऊपरि वीरहक।
—हीरा मागळिया री गीत
वुडवणहार, हारो (हारी), वुडवणियो—वि० ।
वुडविग्रोड़ो, वुडवियोड़ो, वुडव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
वुडवीजणो, वुडवीजबो—भाव वा० ।
वुडवियोड़ो—१ देखो 'बूडियोडो' (रू. भे.)
२ देखो 'उडियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वुडवियोडी)
वुडियोड़ो—१ देखो बूडियोडो' (रू. भे)
२ देखो 'उडियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वुडियोडी)
वुडो देखो वूढो' (रू. भे)
वुढण—देखो वूढण' (रू भे)
वुढापो—देखो 'बुढापो' (रू. भे.)
वुढो—देखो 'बूढो' (रू. भे)
वुढ्ढो—देखो 'बूढो' (रू भे.)
उ०—तूं हिज आज जुगाद तूं, तू वुढ्ढी बाळी । तूहिज तरुण किसोर तूं माता मतवाळी ।
— गज उद्धार
(स्त्री वुढ्ढी)
वुणणो, वुणबो—१ देखो 'बुणणो, बुणबो' (रू. भे.)
२ देखो 'वणणो, वणबो' (रू भे.)
वुणणहार, हारो (हारी), वुणणियो—वि० ।
वुणिग्रोड़ो. वुणियोड़ो, वुण्योड़ो—भू० का० कृ० ।
वुणीजणो, वुणीजबो—कर्म वा० ।
वुणवाणो वुणवाबो—१ देखो बुणाणो, बुणाबो' (रू. भे)
२ देखो 'वणाणो, वणाबो' (रू. भे)
वुणवाणहार, हारो (हारो) वुणवाणियो—वि० ।
वुणवायोड़ो—भू० का० कृ० ।
वुणवाईजणो, वुणवाईजबो—कर्म वा० ।
वुणवायोड़ो—१ देखो बुणवायोडो' (रू. भे.)
२ देखो 'वणायोडो' (रू. भे)
(स्त्री वुणवायोडी)
वुणाई—देखो 'बुणाई' (रू. भे.)
वुणाणो, वुणाबो—१ देखो 'बुणाणो, बुणाबो' (रू. भे)
२ देखो 'बणाणो, बणाबो' (रू भे.)
वुणाणहार, हारो (हारी), वुणाणियो—वि० ।
वुणायोड़ो—भू० का० कृ० ।
वुणाईजणो, वुणाईजबो—कर्म वा० ।
वुणायोड़ो—१ देखो 'बुणायोडो' (रू भे.)
२ देखो 'वणायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री वुणायोडी)
वुणावणो, वुणावबो—१ देखो 'बुणाणो बुणाबो' (रू. भे.)
२ देखो 'बणाणो, बणाबो' (रू. भे)
वुणावणहार, हारो (हारो), वुणावणियो—वि० ।
वुणाविग्रोड़ो, वुणावियोड़ो, वुणाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
वुणावीजणो, वुणावीजबो कर्म वा० ।
वुणावियोड़ो—१ देखो 'बुणायोडो' (रू. भे)
२ देखो वणायोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वुणावियोडी)

वुणियोड़ौ—१ देखो 'बुणियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वणियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री वुणियोड़ी)

वुधर—१ देखो 'उधर' (रू भे.)

२ देखो 'भूधर' (रू. भे)

उ०—वल्य राठोडा ऊ कही, सामल्य वुधर भेव । विसनोई करिम्या ग्रकर, हुकम करो हरिदेव । —केसोजी गाडण

वुपर—देखो 'ऊपर' (रू भे)

उ०—उसण येक गजमुख लंबोदर, धरणी कनक मुकुट फरसीधर। पीतबर सोभा तन वुपर, बिनायक दायेक विद्या बर ।

—बगसीराम प्रोहित री बात

उ०—२ मुहैं भ्रणिया वुपरै नाकतौ 'मधकर', भव चै मन भ्रातरौ भयौ । सहलो दिली हुई भ्रणसकती, गहली री बेव्हडी गयौ ।

—राजा माधौसिंघ कछवाहा री गीत

वुर—देखो बुर' (रू. भे.)

वुरकौ—देखो 'बुरकौ' (रू. भे)

वुरड़णौ, वरडबौ—देखो 'बुरडणौ बुरडबौ' (रू भे.)

वुरडणहार, हारौ (हारी), वुरडणियौ—वि० ।

वुरडिग्रोडौ, वुरडियोडौ, वुरडयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

वुरड़ीजणौ, वुरडीजबौ—कर्म वा० ।

वुरडियोडौ—देखो बुरडियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. वुरडियोडी)

वुरचितौ वुरचीतौ—देखो 'बुरचितौ' (रू. भे)

वुरज—देखो 'बुरज' (रू. भे.)

वुरजी—देखो 'बरछी' (रू भे.) (डि. को.)

वुरज्ज—देखो 'बुरज' (रू. भे.)

वुरछी—देखो 'बुरछी' (रू. भे.) (डिं. ना. मा.)

वुरटी—देखो 'बुरटी' (रू. भे.)

वुरड देखो 'बुरड' (रू. भे.)

वुरडौ—देखो 'बुरडौ' (रू भे)

वुरबंछ, वुरबंछौ—देखो बुरचीतौ'।

वुराई—देखो 'बुराई' (रू. भे.)

उ०—निहचै नाव राखि तन मन तै, विक्रम छोडि वुराई । घरगं माहि धका मही खावै, हालो हक सराई । —म्रनुभववाणी

वुराणौ, वुराबौ—देखो 'बुरावणौ, बुरावबौ' (रू. भे)

वुराणहार, हारौ, (हारी) वुराणियौ—वि० ।

वुरायोडौ—भू० का० कृ० ।

वुराईजणौ, वुराईजबौ—कर्म वा० ।

वुरादौ—देखो 'बुरादौ' (रू. भे.)

वुरायोडौ—देखो 'बुरावियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. वुरायोडी)

वुरावणौ, वुरावबौ—देखो 'बुरावणौ, बुरावबौ' (रू. भे.)

वुरावणहार, हारौ (हारी), वुरावणियौ—वि०।

वुराविग्रोडौ, वुरावियोडौ, वुराव्योडौ—भू० का० कृ० ।

वुरावीजणौ वुरावीजबौ—कर्म वा० ।

वुरावियोड़ौ—देखो 'बुरावियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वुरावियोडी)

वुरी—देखो 'बुरी' (रू. भे.)

उ०—सिरदार री कृपा ग्रोर सुद्ध मन री चाह सारां रै होवै है। सुद्ध मन रा सिरदार री चाकर वुरी कहै नही वुरी सुणै नहो ।

—वी. स. टी.

२ देखो बुरौ' (पु.)

उ०—नारी नेह न कीजियै, नारी वुरी संसार । हरिया नारी गजिया, सै भगा करतार । —म्रनुभववाणी

वुरौ—१ देखो 'बुरौ' (रू. भे.)

उ०—१ वासं विजै भगतो की । ग्रोथि रामसिंघजी प्रिथीराज जी बिजै री भगति जोमिया । ताहरा राजाजी वुरा किया । इया नूं कहाडियो जु थे मोनू धोडाई छा । —द. वि.

उ०—२ कळि खोटी पोहरौ वुरौ, रीस करो मत कोय । हरिया माया भगति कै, जाह ताह ग्राडी होय । —म्रनुभववाणी

उ०—३ पाडोसी पिंडत वुरौ, जो हरि भगति न होय । हरिया हरिजन गांव घर, ता तुल्य भलो न कोय । —म्रनुभाववाणी

उ०—४ किमकौ वुरौ न कीजियै, जो सिध होय ग्रसिध । हरिया ग्राडी ग्रावसी, जिसी कमाई कीध । —म्रनुभववाणी

उ०—५ भलौ किसी कु चाहियै, वुरौ न कीरियै कोय । जन हरिया सब कु कह्या, राम भजो नर लोय । —म्रनुभववाणी

वुलगणौ, वुलगबौ—क्रि. स. (गीत या गायन) प्रारम्भ करना ।

उ०—विरहानळ प्रज्वळइ ग्रगु, साखिजन सूं विरगु । एहवऊ काई थ्यू विग्र चित्तू न वुलगई गीत्तू । न कुण हीसू हसइ, सदा नीस-सइ, बोलावि खीजइ, दिहाडइ देह खीजइ । ग्रादि । —रा. सा. स.

वुलगणहार, हारौ (हारी), वुलगणियौ—वि० ।

वुलगिग्रोड़ौ, वुलगियोडौ, वुलग्योडौ—भू० का० कृ० ।

वुलगीजणौ, वुलगीजबौ—कर्म वा० ।

बुलगार—देखो 'बुलगार' (रू. भे.)

उ०—सोनहीरी फूलां नकसी फूलां मुखमल री गादी घातिया, सांबरा हथवासां, बुलगारां डाबा सहित ऊमांस रावांना रा हाथा री ऊमांहीज बड़ां नै पीपलारीश्रा साखां सू नागलिया।

—रा. सा स.

बुलगियोड़ो-भू० का० कृ०—(गीत या गायन) प्रारम्भ किया हुआ।

(स्त्री. बुलगियोड़ी)

बुलडोग—देखो 'बुलडोग' (रू. भे.)

बुलसरी, बुलसिरी—देखो 'बोलसरी' (रू. भे.)

उ०—जउ सूकी तुहइ बुलसिरी, जउ वींधी तुहइ मोतीसिरी। जउ डुहलूं तुहइ गंगाजल आणि जउ थोडी तुहइ सघुरिस वांणि।

—नळदवदती रास

बुलाक—देखो 'बुलाक' (रू. भे)

बुलाकी—देखो 'बुलाकी' (रू. भे.)

बुलाणौ, बुलाबौ—१ देखो 'बुलाणौ, बुलाबौ' (रू. भे.)

उ०—हवि मूंल्हि बुलावु, पीहरि जावा मन। मुझ विना दुहल्या थाता, हुसि पुत्री नै तंन।

—नळाख्यान

२ देखो 'बोळाणौ, बोळाबौ' (रू. भे.)

बुलाणहार, हारौ (हारी), बुलाणियौ—वि०।

बुलायोड़ो—भू० का० कृ०।

बुलाईजणौ, बुलाईजबौ—कर्म वा०।

बुलायोड़ो—१ देखो 'बुलायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुलायोड़ी)

बुलावण—देखो 'बुलावण' (रू. भे.)

बुलावणौ, बुलावबौ—१ देखो 'बुलाणौ, बुलाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळाणौ, बोळाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बुलावा भीमराय देसनी सधि, लगइ ग्रावीउ बहु सैन्य लेई ए। भीमनइ कहइ निसध, तमे वलु भूपति। रूडइ ठामि हवइ बइसीइ ए।

--नळदवदती रास

उ०—२ रथ तणु माहरइ खप ज नही, माहरू नथी ग्रहीइ काई सही। भणउ कहितइ रथ राखिउ नेणि नलनइ ग्रावइ बुलावा जेणि।

—नळदवदती रास

उ०—३ सैन्य सांमग्री सघळी करी, दवदती पीहरि नीसरि। चद्रयसांना प्रणम्या पाय, बुलावा ग्रावइ तिहां राय।

—नळदवदती रास

बुलावणहार, हारौ (हारी), बुलावणियौ—वि०।

बुलविप्रोड़ो, बुलावियोड़ो, बुलाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बुलावीजणौ, बुलावीजबौ—कर्म वा०।

बुलावियोड़ो—१ देखो 'बुलायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो बोळायोड़ो (रू. भे.)

(स्त्री. बुलावियोड़ी)

बुलावौ—देखो 'बुलावौ' (रू. भे.)

बुलि, बुली बुळी—१ देखो 'बुलि' (रू. भे.)

२ देखो 'बुळी' (रू. भे)

बुवाणौ, बुवाबौ—देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू. भे.)

बुवाणहार, हारौ (हारी), बुवाणियौ—वि०।

बुवायोड़ो—भू० का० कृ०।

बुवाईजणौ, बुवाइजबौ—कर्म वा०।

बुवायोड़ो—देखो 'बोवायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बुवायोड़ी)

बुवारणौ, बुवारबौ—देखो 'बुहारणौ, बुहारबौ' (रू. भे)

बुवारणहार, हारौ (हारी), बुवारणियौ—वि०।

बुवारिप्रोड़ो, बुवारियोड़ो, बुवारयोड़ो—भू० का० कृ०।

बुवारीजणौ, बुवारीजबौ—कर्म वा०।

बुवारियोड़ो—देखो 'बुहारियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. बुवारियोड़ी)

बुवारी—१ देखो 'बुहारी' (रू. भे)

२ देखो बहू' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—दम कोस री पेंडो पार कर दियो। गाव रै गळियारै गळियारै जावतो हो कै ग्रेक बारणा माथै घूंघटो काढ्यां उठानै ग्रेक लुगाई ऊभी दीसी। चोधरी फट लखग्यो कै है तो ग्रा इण गाव री बुवारी।

—फुलवाडी

बुवारो—देखो 'बुहारो' (रू भे)

बुवाळा—देखो 'बुवाळा' (रू. भे.)

बुवाळो—देखो 'बुवाळो' (रू भे.)

बुवासो—देखो वहुवासो' (रू भे.)

बुवाह-स पु—वाह-वाह, धन्यवाद।

उ०—सिलप्पी रचायं जं रूरका ग्रसी चार सोभं, बिणायं रतन्ना विधा कागरा बुवाह। ग्रामासा ग्रनोखा गोखा पराभा मेघ ग्रासै ग्रमा, दान रा सोभा झरोखा बिराजे दुबाह।

—मोहकमसिंघ रूपावत री गीत

बुवोतर—देखो 'बग्रोतर' (रू. भे.)

बुबोतरमौं, बुबोतरवौं—देखो 'बग्रोतरमौं' (रू. भे.)

बुबोतरै'क—देखो 'बग्रोतरै'क' (रू. भे.)

बुबोतरौ—देखो 'बग्रोतरौ' (रू. भे.)

बुसत—देखो 'वस्तु' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ दीया बुसत अनूप है, दिया करौ सब कोय। घर में धरा न पाइयै, जं कर दिया न होय। —ग्रग्यात

उ०—२ हुरीया स्याली खलक मैं, कै तो गया वसाय। कै ग्राया ज्यूंई गया, बुसत मुसाय मुसाय। —ग्रनुभववाणी

उ०—३ मनवा उलटि मिल्या निज मन कूं, ससा सोग न व्यापै तन कूं। ग्ररघ उरघ बिच रसतह लाया, जोखा जंत न बुसत बिसाया। —ग्रनुभववाणी

बुसताज, बुसताद—देखो 'उसताद' (रू. भे.)

उ०—पड बुसताज ग्राहणं असपत, दुजडं देतौ खळा दुख। केस केस संधियौ कैलपुरा, रावळ ग्रमर तणी रुख। —जगतसिंघ सीसोदिया रौ गीत

बुसतु—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

बुसुत—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

उ०—बप ब्रहम विघत री सरव बसुत री तु गंगा तु गावतरी। पारबती निमो हेमरी पुतरी, सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी। —पी. ग्रं.

बुस्त—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

बुस्ताज, बुस्ताद—देखो 'उसताद' (रू. भे.)

बस्तु—देखो 'वस्तु' (रू. भे.)

बुहणौ, बुहबौ—१ देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हिंदवा राव हयवाह ग्रचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरंदा। गई सुग विवांणा बैस इद्र ग्रागळौ, बुही वारगना विना बींदा। —महाराजा जसवंतसिंह रौ गीत

उ०—२ ग्रसपति राव चमकि ग्रोद्रकियौ, खेडेचै वाही करि खीज। सुकरि ग्राकास हूत सेलारा, बीजुल विढण क बुही बीज। —केसोदास गाडण

उ०—३ जिण मार्थ सखी मारा धणी री साग बरछी बुही जाणणी ग्ररयात दूसरा जोधारा रा हाथ रा सस्त्र सू तौ ग्रधकटिया ग्रघमरिया हुवा रोवै छै नै म्हारा पति रा सस्त्र लागोडा पछै, जीव बिना होज होवै छै सस्त्र लागोडा काइ बचै नही। —वी. स. टी.

२ देखो 'बोवणौ, बोवबौ' (रू. भे.)

बुहणहार, हारौ (हारी) बुहणियौ—वि०।

बुहियोड़ो, बुहियोड़ो, बुह्योड़ो—भू० का० कृ०।

बुहीजणौ, बुहीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

बुहतर, बुहतरि, बुहतरी—देखो 'बग्रोतर' (रू. भे.)

बुहरउ—देखो 'बौ'रौ' (रू. भे.) (ड. र.)

बुहरणौ, बुहरबौ—क्रि. स.—१ खरीदना, क्रय करना।

उ०—दोसी बुहरइ ग्रतिघणा वस्त्र, सुभट भला ते वहइ सस्त्र। एक वहरण कहइ कथाकल्लोल, एक वहरण बोकइ मंजीठ चोल। —नळदवदंती रास

२ देखो 'व्यवहारणौ, व्यवहारबौ' (रू. भे.)

बुहरणहार, हारौ (हारी), बुहरणियौ—वि०।

बुहरिग्रोड़ो, बुहरियोड़ो, बुहरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बुहरीजणौ, बुहरीजबौ—कर्म वा०।

बुहराड़णौ, बुहराड़बौ—देखो 'बुहराणौ, बुहराबौ' (रू. भे.)

बुहराडणहार, हारौ (हारी) बुहराडणियौ—वि०।

बुहराड़िग्रोड़ो, बुहराड़ियोड़ो, बुहराडयोड़ो—भू० का० कृ०।

बुहराडीजणौ बुहराडीजबौ—कर्म वा०।

बुहराड़ियोड़ो—देखो 'बुहरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुहराड़ियोड़ी)

बुहराणौ बुहराबौ—देखो 'बुहराणौ, बुहराबौ' (रू. भे.)

बुहराणहार, हारौ (हारी), बुहराणियौ—वि०।

बुहरायोड़ो—भू० का० कृ०।

बुहराईजणौ, बुहराईजबौ—कर्म वा०।

बुहरायोड़ो—देखो 'बुहरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बुहरायोड़ी)

बुहरावणौ, बुहरावबौ—देखो 'बुहराणौ, बुहराबौ' (रू. भे.)

बुहरावणहार, हारौ (हारी), बुहरावणियौ—वि०।

बुहराविग्रोड़ो, बुहरावियोड़ो, बुहराव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बुहरावीजणौ, बुहरावीजबौ—कर्म वा०।

बुहरावियोड़ो—देखो 'बुहरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बुहरावियोड़ी)

बुहरियोड़ो—भू० का० कृ०—१ खरीदा हुग्रा, क्रय किया हुग्रा।

२ देखो 'व्यवहारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुहरियोड़ी)

बुहाड़णौ, बुहाड़बौ—१ देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

बुहाडणहार, हारौ (हारी), बुहाड़णियौ—वि०।

बुहाड़िग्रोड़ो, बुहाड़ियोड़ो, बुहाडयोड़ो—भू० का० कृ०।

बुहाड़ीजणौ, बुहाडीजबौ—कर्म वा०।

बुहाड़ियोड़ो—देखो 'वहायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुहाड़ियोड़ी)

बुहाणौ, बुहाबौ—१ देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

उ०—वाहि बुहाय घणी बीजूजळ, तड़ळ खगां करै ह्वां तंडळ। हम प्रथमी सिर क्रीत उबारा, परणै अपछर सुरगि पधारां।

—सू. प्र.

२ देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू. भे.)

बुहाणहार, हारौ (हारी), बुहाणियौ—वि०।

बुहायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बुहाईजणौ, बुहाईजबौ—कर्म वा०।

बुहायोड़ौ—१ देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बुहायोड़ी)

बुहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—समत बयाळै माह काती वद कळस थप्यौ। मुकति कौ बुहार कीनौ साचौ गुर जाणियै।

—सेवादास

बुहारड़ी—१ देखो 'बुहारी' (अल्पा., रू भे.)

२ देखो 'बहू' (अल्पा., रू. भे.)

बुहारण—देखो 'बुहारण' (रू. भे)

बुहारणौ, बुहारबौ—देखो 'बुहारणौ, बुहारबौ' (रू. भे.)

उ०—गाया री मैं गोरधा बुहारी भैंस्या रा खरळा-खरळा गोबर गेरयो उपला थाप्या सौ रै पचास। मारुणी घणा कमावणी।

—लो गी.

बुहारणहार, हारौ (हारी), बुहारणियौ—वि०।

बुहारियोड़ौ, बुहारियोड़ौ बुहारयोड़ौ,—भू० का० कृ०।

बुहारीजणौ, बुहारीजबौ—कर्म वा०।

बुहारि—१ देखो बुहारी' (रू. भे.)

२ देखो 'बहू' (अल्पा., रू भे.)

बुहारियोड़ौ—देखो 'बुहारियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री. बुहारियोड़ी)

बुहारी—देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

बुहारौ—देखो 'बुहारौ' (रू. भे.)

बुहावणौ, बुहावबौ—१ देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

उ०—करै घात बोलै पारसी, बगतर तवा भिळै जाणै आरसी। कबाणा कुजा जिम कुरवरिया बिलख मेहा जिम ओसरिया। नाली निहाव, गोळा बुहाव। गढ सिखर डडी, कायरा का जीव तुडी।

—म. वचनिका

२ देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू. भे.)

बुहावणहार, हारौ (हारी), बुहावणियौ—वि०।

बुहावियोड़ौ, बुहावियोड़ौ, बुहाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बुहावीजणौ, बुहावीजबौ—कर्म वा०।

बुहावियोड़ौ—१ देखो 'वहायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बुहावियोड़ी)

बुहियोड़ौ—१ देखो 'वहियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बुहियोड़ी)

बुहुतर, बुहुतरि, बुहुत्तर, बहुत्तरि, बुहुत्तरि—देखो 'बयोत्तर' (रू. भे.)

बूग—१ देखो 'बुग' (रू. भे.)

२ देखो 'बूक' (रू. भे.)

बूंगरड़—देखो 'बुगरड' (रू. भे)

बूंगी—देखो 'बूक' (रू. भे.)

बूगौ—देखो 'बूगौ' (रू. भे)

बूंघरौ—देखो 'बूंघरौ' (रू. भे)

बूक—देखो 'वृक' (रू भे)

बूझियौ, बूझौ—देखो 'बूझौ' (रू. भे.)

बूंट—देखो 'बट' (रू. भे)

बूटी—देखो 'बूंटी' (रू. भे)

बूंटौ—देखो 'बूंटौ' (रू भे)

बूंतणौ, बूंतबौ—देखो 'बूंतणौ, बूंतबौ' (रू. भे.)

बूंतणहार, हारौ (हारी) बूंतणियौ—वि०।

बूंतियोड़ौ बूंतियोड़ौ, बूंत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बूंतीजणौ, बूंतीजबौ—कर्म वा०।

बूंतियोड़ौ—देखो 'बूंतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बूंतियोड़ी)

बूंद—देखो बूंद' (रू भे)

उ०—मेरी गई पुकार सब, ज्यूं समंद मे बूंद। सुणी न अंको सावळा, कान रहे हो मूंद।

—गजउद्धार

बूंदड़—१ देखो 'बूंद' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'बूंदी' (मह., रू. भे.)

बूंदड़ी—१ देखो 'बूंद' (अल्पा., (रू. भे.)

२ देखो 'बूंदी' (अल्पा., रू. भे.)

बूंदळा—देखो 'बूंदळा' (रू. भे.)

बूंदा—देखो 'बूंदा' (रू. भे.)

बूंदी—१ देखो 'बूंदी' (रू. भे.)

२ देखो 'बूंद' (रू. भे.)

बूंब—देखो 'बूंब' (रू. भे.)

बूंबड़ा—देखो 'बूंमड़ा' (रू. भे.)

बूंबाड़ो—देखो 'बूंब' (मह., रू. भे.)

बूंमड़ा—देखो 'बूंमडा' (रू. भे.)

बू-सं. पु.—१ अर्क, सूर्य। (एका.)

२ वभ्रु (,,)

३ तूल। (,,)

४ कबूतर। (,,)

५ बहुत, अत्यधिक। (,,)

६ सर्व, सब। (,,)

७ देखो 'बू' (रू. भे.)

८ देखो 'बहू' (रू. भे.)

बूअणौ, बूअबौ—१ देखो 'बहणौ बहबौ' (रू. भे.)

उ०—पाचा (छा) डेरा हता ज्या हुआ छै, पकवांना का थाळ डेरां नै बूआ छै। पाचा रग-राग वरताणा, मालूका हुआ मन का जाणा दारू को भड़ लगायो छै, जसा भी पीधो छै, म्याराम नै पीयो छै।

—मयाराम दरजी री बात

२ देखो बोवणौ, बोवणौ' (रू. भे.)

बूअणहार हारौ (हारी), **बूअणियो**—वि०।

बूइयोड़ो बूइयोड़ो, बूअ डो, बूयोडो—भू० का० कृ०।

बूईजणौ, बूईजबौ—भाव वा०।

बूआणौ, बूआबौ—१ देखो 'बहाणौ, बहाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू. भे.)

बूआणहार हारौ (हारी), **बूआणियो**—वि०।

बूआयोड़ो—भू० का० कृ०।

बूईजबौ, बूईजबौ—कर्म वा०।

बूआयोड़ो—१ देखो 'बहायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बूआयोड़ी)

बूआवणौ, बूआवबौ—१ देखो 'बहाणौ, बहाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू. भे.)

बूआवणहार हारौ हारी) **बूआवणियौ**—वि०।

बूआवियोड़ो, बूआवियोड़ो, बूआव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बूआवीजणौ, बूआवीजबौ—कर्म वा०।

बूआवियोड़ो—१ देखो 'बहायोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूआवियोडी)

बूइयोड़ो—१ देखो 'बहियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूइयोडी)

बूई—देखो 'बुई' (रू. भे.)

बूक—देखो 'बूक' (रू. भे.)

बूकड़—देखो 'बूक' (मह., रू. भे.)

बूकड़ो—देखो 'बूक (अल्पा., रू. भे.)

बूखीचड़ी—देखो 'बहुखीचड़ी' (रू. भे.)

बूग—१ देखो 'बूक' (रू. भे.)

२ देखो 'बूग' (रू. भे.)

बूड़ी—देखो 'बूडी' (रू. भे.)

बूच—देखो 'बूच' (रू. भे.)

बूचकी—देखो 'बूचकी' (रू. भे.)

बूचड़—देखो बूचड़' (रू. भे.)

बूचड़खानो—देखो 'बूचड़खानो' (रू. भे.)

बूचो—देखो बूचो (रू. भे.)

बूजी बूजीसा-स. स्त्री [स. वधू] १ वृद्धा स्त्री।

वि० वि०—सर्व प्रथम औरत घर मे ब्याह कर आती है उस समय उसको "बू" कहकर पुकारा जाता है। उसके सन्तानोत्पत्ति होने पर सन्तान भी उसको 'बू' कहने लग जाती है। परन्तु उसकी वृद्धावस्था होने पर उसको 'बूजी' कहने लग जाते हैं।

२ माता।

उ०—आप कोई बात री चिंता फिकर करसो नी। बूजी नै म्हारा पाव धोक अरज करसो अर टाबरा माथै हाथ फेरसो। म्हारी कानी सू अमला री मनवार मानसो। —अमर चूंनड़ी

३ दादी।

४ दादीसासु।

५ सासु।

उ०—काकी बोली जबरजी बेटा! म्हारो एक काम करोला? म्हनै थारै काकोसा री कागज पढनै सुणाय दो बीरा! म्हू थानै

बिलावणी करती वखत बूजी रै छानै माखण री लूंदी दूला।

—अमरचूनडी

उ०—२ सेठा रै कंणा मुजब सेठाणी पाचूं बहुवा नै इण अबखी वेळा मैं साथ निभावण वास्तै समझावण लागी तो चारूं मोटोडी बहुवा कह्यौ— बूजीसा, इण मैं इत्ती समझावण री काई बात। म्हांरीसाख किसी न्यारी है।

—फुलवाडी

रू भे.— बुजी, बूज्जी।

बूजो—१ देखो बूजो' (रू. भे.)

२ देखो बूझो' (रू. भे.)

बूज्जी—१ देखो बूज्जी' (रू भे.)

२ देखो 'बूजी' (रू. भे.)

बूझ—१ देखो 'बूझ' (रू. भे.)

२ देखो 'पूछ' (रू. भे)

३ देखो बूझ' (रू भे)

बूझणी, बूझबौ— १ देखो 'पूछणी, पूछबौ' (रू. भे.)

उ०—आवी खबर अचीतिया, विसमै जैसी वत्त। तद राठौडै बूझियौ, 'दुरगै' 'आसावत्त'।

—रा रू.

२ देखो 'बूझणी, बूझबौ' (रू. भे.)

बूझणहार, हारौ (हारी), बूझणियौ—वि०।

बूझिश्रोडौ, बूझियोडौ, बूझ्योडौ—भू० का० कृ०।

बूझीजणौ, बूझीजबौ—कर्म वा०।

बूझताछ—देखो 'पूछताछ' (रू. भे.)

बूझवार—वि.—बुद्धिमान।

उ०—ए कैसे हैं—बडे सु विद्वान है, बडे महिरवान हैं, बडे सिरदार हैं। बडे बूझदार हैं, बडे दातार हैं। जमीं आसमान बीच सभू अवतार हैं।

—रा. गा. स

बूझबूझाकड़, बूझबूझागर—देखो 'बूझबूझाकड' (रू भे.)

बूझलो—देखो 'बूझली' (रू. भे.)

बूझवणी, बूझवबौ— १ देखो 'बूभणी, बूझबौ' (रू भे.)

२ देखो 'पूछणी, पूछबौ' (रू. भे.)

बूझवणहार, हारौ (हारी), बूझवणियौ—वि०।

बूझविश्रोडौ, बूझवियोडौ, बूझव्योडौ—भू० का० कृ०।

बूझवीजणौ, बूझवीजबौ— कर्म वा०।

बूझवियोड़ौ—१ देखो 'बूझियोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'पूछियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. बूझवियोडी)

बूझाड़णौ, बूझाड़बौ— १ देखो 'बूझाणौ, बूझाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बूझाणौ, बुझाणौ' (रू. भे.)

३ देखो 'पूछाणौ, पूछाबौ' (रू. भे.)

बूझाडणहार, हारौ (हारी), बूझाड़णियौ—वि०।

बूझाडिश्रोडौ, बूझाडियोडौ, बूझाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

बूझाडीजणौ, बूझाड़ीजबौ—कर्म वा०।

बूझाडियोडौ—१ देखो 'बूझायोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझायोडौ, (रू. भे.)

३ देखो 'पूछायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बूझाडियोडी)

बूझाणौ, बूझाबौ—१ देखो 'बूझाणौ, बूझाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझाणौ, बुझाबौ (रू. भे.)

३ देखो 'पूछाणौ, पूछाबौ' (रू. भे)

बूझाणहार, हारौ (हारी), बूझाणियौ—वि०।

बूझायोडौ—भू० का० कृ०।

बूझाईजणौ, बूझाईजबौ—कर्म वा०।

बूझायोड़ौ—१ देखो 'बूझायोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बुझायोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'पूछायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री बूझायोडी)

बूझावणौ, बूझावबौ—१ देखो 'बूझाणौ, बूझाबौ' (रू. भे)

२ देखो 'बुझाणौ, बुझाबौ' (रू भे)

३ देखो 'पूछाणौ, पूछाबौ' (रू भे)

बूझावणहार, हारौ, (हारी), बूझावणियौ—वि०।

बूझाविश्रोडौ, बूझावियोडौ, बूझाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बूझावीजणौ, बूझावीजबौ—कर्म वा०।

बूझावियोड़ौ—१ देखो 'बूझायोड़ौ' (रू. भे)

२ देखो 'बुझायोडौ' (रू. भे)

३ देखो 'पूछायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बूझावियोडी)

बूझियोड़ौ—१ देखो 'बूझियोडौ' (रू. भे)

२ देखो 'पूछियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बूझियोडी)

बूट—१ देखो 'बूंट' (रू. भे.)

२ देखो 'बूट' (रू. भे.)

बूटकी—देखो 'बूंटी' (अल्पा., रू. भे.)

बूटणौ, घूटबौ—देखो 'बूठणौ, बूठबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लूटो सांमान भडारां ऊवार पारां राव लागो, सोमा डाणं मांणं राव लूटी खवांना सचूप। तखी बाध साम घटा मोजा मांणं रावतूटी, राणं राव रूपाधार बूठौ यन्न रूप। —महादान महडू

उ०—२ पगी लूटी चगी सामा हुई माण पाण बाळो, जाम्फ छूटी पातां घणा बांणां वाळो भोक। रीभां तूठी अछेह ज्यू ऊठी भाट रांणा वाळी, नाणा बाळी भूठी बूटी मेह ज्यू निघोक।

—महादान महडू

बूटणहार, हारो (हारी), बूटणियो—वि०।

बूटियोड़ो, बूटियोड़ो, बूटयोड़ो—भू० का० कृ०।

बूटोजणौ, बूटीजबौ—भाव वा०।

बूटियोड़ो—देखो 'बूठियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूटियोड़ी)

बूटियौ—देखो 'बूंटो' (अल्पा., रू. भे.)

बूटी—देखो 'बूंटी' (रू. भे)

बूटौ—देखो 'बूंटौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बूटी)

बूठ-स. स्त्री.—वर्षा होने की गति या क्रिया।

बूठणौ, बूठबौ—देखो 'बूठणौ, बूठवौ' (रू. भे.)

उ०—१ ...... भला हुई दही, परीस्या कोड कहइ नही, सही प्रथिवी रही गहगही, साचइं कादम माचइं, कारसणी नाचइ, तीपजइ सातइ थान, देखता प्रधान, नासइ दुकाल, भाद्रवइ बूठइ सुगाल। —व. स.

उ०—२ सोरभ फूट जब्बाध एम, घण बूठे जळहर लहर जेम। पेखिये ताम सोभा परम्म, किसनागर अबर जख कदम्म।

—गु. रू. बं.

उ०—३ ऊनमियउ उत्तर दिसइ, गाज्यउ गुहिर गभीर। मारवणी प्रिउ सभरयउ, नयणं बूठउ नीर। —ढो. मा.

उ०—४ सेवै नर सदीना मुरधर, सदा नीरोगी हो रवै। बूठं जारी बातडी नै, वगत बटाऊडा कवै। —दसदेव

उ०—५ गाढा बादणी अवगाढ महूगढ, उत्तर प्रगट धर पैला। सेला भड़ मांझ्यो साहबखा, बूठो सरस बूदेला।

—साहबखा भाखरोत कछवाहा रो गीत

उ०—६ दीपै मजलस निस दिवस, हित चित नित मनुहार। विंद 'अभो' बूठो विभं, इंद तणं आचार। —रा. रू.

बूठणहार, हारो (हारी), बूठणियो—वि०।

बूठियोड़ो, बूठियोड़ो, बूठ्योड़ो—भू० का० कृ०।

बूठीजणौ, बूठीजबौ—भाव वा०।

बूठाळु, बूठाळू-वि.—बरसने वाला, वर्षा करने वाला।

उ०—कठळ बूठाळू रूपकध, बंधिया किलावा चमरबंध। तहमद फूल कसि चंद ताम, जंगी घरि हुवदा पूठि जाम। —सू. प्र.

बूठियोड़ो—देखो 'बूठियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री बूठियोडी)

बूडपरवा, बूडपिरवा—देखो 'बूडपरवा' (रू. भे.)

बूडवेम—देखो 'बूढजाम'

बूढ—१ देखो 'बूढ' (रू. भे.)

२ देखो 'बूढौ' (मह., रू. भे)

३ देखो 'बूढण' (मह., रू. भे.)

बूढजाम—देखो 'बूढजाम' (रू. भे.)

बूढण, बूढणि, बूढणी—देखो 'बूढण' (रू. भे)

बूढणौ, बूढबौ—देखो 'बूढणौ, बूढबौ' (रू. भे.)

बूढणहार, हारो (हारी), बूढणियो—वि०।

बढिओड़ो, बूढियोड़ो, बूढयोड़ो—भू० का० कृ०।

बूढीजणौ, बूढीजबौ—भाव वा०।

बूढपरवा, बूढपिरवा—देखो 'बूडपरवा' (रू. भे.)

बूढल—१ देखो 'बूढौ' (मह, रू. भे.)

२ देखो 'बूढण' (रू. भे)

बूढली—१ देखो 'बूढण' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'बूढी' (अल्पा., रू. भे.)

बूढलौ—देखो 'बूढौ' (अल्पा., रू. भे.)

(स्त्री बूढली)

बूढवाळ, बूढवावळ-स. स्त्री.—वृद्धावस्था, बुढापा।

उ०—पेमजी जबरा हुकमा हाल्या। अं सं बूढबाळ फोडा घाल्या। सपना ला सँग हीडा-सुमन, उलटा भडखला ज्यूं भूरडीजे है। कुभावना हाला काली नस रा कीडा कुसम, सुलटा तिणखला सा तुरडीजे। —दसदोख

बूढवेम—देखो 'बूडजाम'

बूढसुवागण, बूढसुहागण-स. स्त्री.—वृद्धा सुहागिन स्त्री।

बूढाई—देखो 'बुढाई' (रू. भे.)

बूढापण, बूढापणौ—देखो 'बूढापणौ' (रू. भे.)

उ०—आवि तुं पुत्र उतावलउ, अम्ह नइ तू आधारो जी। तुझ विण कुण बूढापणइ, करिस्यइ अम्हारी सारो जी। —स. कु.

बूढापौ—देखो 'बुढापौ' (रू. भे.)

उ०—१ किसनजी की कूंत नी सक्यो। सोखीनाई ग्रर खरच-बरच री चोजां वस्तुवां सूं खूब राजी हुयो। बूढापै हाळा ग्रोसदां माथै वैं'म ही नी गयो। ग्रोसध्या ही तीस-पेंतीस ताई री ग्रकल में ग्राई। —दसदोख

उ०—२ बाळापण तरणा गयौ, ग्रब बूढापो ग्राय। हरीया कर सिर कपिया, ग्रीख भरी नही जाय। —ग्रनुभववाणी

बूढि—१ देखो 'बूढापौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बूढी' (रू भे.)

बूढियोड़ो—देखो 'बूढियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बूढियोडी)

बूढी—१ देखो 'बुढण' (रू. भे.)

२ देखो 'बूढी' (स्त्री.)

बूढंवारं—देखो 'बूढंवारं' (रू. भे)

उ०—इतरो कहिनै जैत डेरै ग्रायो। ग्राय रजपूताणी नूं रीमाणी, 'जु बूढंवारं राजा कनै मारी कमी कराई।' इम कहि नै जैत छाडियो। —जैतमाल पुमार री वात

बूढो—देखो 'बूढो' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया बूढा ना गिनै, तरना गिनै न बाळ। काळ पसारा सकळ जुग, ज्यू मकड़ी का जाळ। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ ब ळा तो तरणा भयो बूढो तो ई न ग्रायो चेती। जनहरि-राम बीज बिन बाह्या, कहा निपावै खेती। —ग्रनुभववाणी

बूढोठाडो, बूढोठाडो—सं. पु. (स्त्री. बूढोठाडी, बूढोठाडी) ग्रति वृद्ध पुरुष।

उ०—ग्राळो भोळो गावै बा तो घर वर पावै। परणी-पाती गावै बा तो पुतर खेलावै। बूढोठाडी गावै ज्या नै बैकूंटा रो वासो। —लो. गी

बूढोठेरो—स. पु (स्त्री बूढोठेरी, बूढोठेरी) ग्रति वृद्ध पुरुष।

उ०—जै कोई धूजी नै परणी-पाती गावै, परणी पाती गावै, गोद पुतर खेलावै। जै कोई धूजी नै बूढोठेरी गावै, बूढोठेरी गावै बा बैकूंटा नै जावै। —लो. गी.

रू. भ —बूढोढेरो।

बूढोडेंग—देखो 'बूढोडेंग' (रू भे.) (स्त्री. बूढोडेंग)

बूढोढेरो—देखो 'बूढोढेरो' (रू. भे.)

बूढोभोड—स. पु —ग्रति वृद्ध पुरुष।

उ०—ऊट, बकरी रो जोडो जुडे, जद मन कद मिळे? एक करै नूई बीनणी रा कोड, दूजी करै ग्रासं ग्रदीठ बूढोभोड। पेलडो लटवा करै—हाथ जोडं। बीजी मूं सुजावै, माथो फोडै। —दसदोख

बूणो—देखो 'बूणो' (रू. भे.)

बूतणो, बूतबो—देखो 'बूंतणो, बूंतबो' (रू. भे.)

बूतणहार, हारो (हारी), बूतणियो—वि०।

बूतिग्रोड़ो, बूतियोडो, बूत्योड़ो—भू० का० कृ०।

बूतीजणो, बूतीजबो—कर्म वा०।

बूतियोड़ो—देखो 'बूंतियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. बूतियोडी)

बूतेलो—स. पु —वातचक्र, बगूला।

वि० वि०—देखो बघूळो' (रू. भे.)

बूत्कार—देखो 'बूत्कार' (रू भे.)

बूथ—देखो 'बूथ' (रू. भे.)

बूथेळियो- देखो 'बथूळो' (ग्रल्पा., रू भे)

बूथेळो—देखो 'बथूळो' (रू भे)

बून—देखो 'बूंद' (रू. भे)

बूनै—देखो 'बूनै' (रू. भे.)

बूर—१ देखो 'बूर' (रू.भे.)

२ देखो 'बूरो' (मह., रू भे.)

बूवणो, बूवबो—१ देखो वहणो, वहबो' (रू. भे.)

उ० कूंडी कुतको होक चीपियो, कमर कस उठ बूवो रे। झोळी झडा ग्रोर पीजरो, जिण माही एक सूवो रे। —रैदास धत्तरबाळ

२ देखो बोवणो, बोवबो' (रू. भे)

बूवणहार, हारो (हारी), बूवणियो—वि०।

बूविग्रोडो बूवियोड़ो, बूव्योडो—भू० का० कृ०।

बूवीजणो, बूवीजबो—भाव वा०।

बूवियोड़ो—१ देखो 'वहियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवियोडो (रू. भे)

(स्त्री बूवियोडी)

बूसट—स. पु —चपेटा। (उ र.)

बूसर—१ देखो 'ग्रसुर' (रू भे.)

उ०—रे मन बूसर क्यू बैठो रूस र, साहिब सेती सान्या, माया देखि भयो मतिवाळो, या वाता मन मान्या। धन जोबन ग्रजरी को पाणी, कर सूं जासी नीसर, मनखा देही वळै न पावै, हरि सिंवरो मन बूसर। —हरजी बणियाळ

२ देखो 'ऊसर' (रू.भे.)

बूहणो, बूहबो—देखो 'वहणो, वहबो' (रू. भे.)

उ०—१ कूं भडिया करळव कियउ, घरि पाछिलै वरगि। सूती साजण संभरघा, करवत बूही ग्रंगि। —ढो. मा.

उ०—२ कूंझड़िया कळियळ कियउ, सरवर पइलइ तीर। निसि भरि सज्जण सल्लिया, नयणें बूहा नीर। —ढो. मा

उ०—३ सिर ढाकण कुंण सा ग्रह्यौ, जुवती चढ़तं (वैसा) जोम। दिन दिन जोवन दोहड़ा, बूहा जावं बोम। — मा. वचनिका

उ०—४ घाव चोट निहस घरहरं, झाळ दुंग ऊझळं झझ। बूही तेग मेर सिरि वजर, वजर देह खगधार वज।

—सुरजनदास पूनियौ

उ०—५ इसड़ा होज गढां रा ढिग मारग माहै पड़िया। परमेसर री का इसड़ो होज घड़ी बूही। उठा चढि अर कीतासर पधारिया।

—द. वि.

उ०—६ ताहरा सिवो छाजू री बेटी नदी थी निजीक सिकार खेलतो हुतो, सु कूकवो सुणनै दोड़ आयो। साहिजादी नदी माहे बूही आवती दीठी। —नैणसी

बूहणहार, हारो (हारी), बूहणियो—वि०।

बूहियोड़ो, बूहियोड़ो, बूह्योड़ो- भू० का० कृ०।

बूहीजणो, बूहीजबो—भाव वा०।

बूहा—देखो 'बूहा' (रू. भे.)

बूहाणो, बूहाबो—देखो 'बहाणो, वहावो' (रू भे)

बूहाणहार, हारो (हारी), बूहाणियो—वि०।

बूहायोड़ो— भू० का० कृ०।

बूहाईजणो, बूहाईजबो—कम वा०।

बूहायोड़ो— देखो 'बहायोड़ो' (रू भे.

(स्त्री. बूहायोड़ी)

बूहारणो, बूहारबो—देखो 'बुहारणो, बुहारबो' (रू. भे)

बूहारणहार, हारो (हारी), बूहारणियो—वि०।

बूहारिग्रोड़ो वहारियोड़ो, बूहारयोड़ो—भू० का० कृ०।

बूहारीजणो, बूहारीजबो—कर्म वा०।

बूहारियोड़ो—देखो 'बुहारियोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. बूहारियोड़ी)

बहारी—देखो 'बुहारी' (रू भे)

बूहारो—देखो 'बुहारो' (रू. भे.)

बूहावणो, बूहावबो—देखो बहाणो, वहावो' (रू. भे.)

बूहावणहार, हारो (हारी), बूहावणियो—वि०।

बूहावियोड़ो, बूहावियोड़ो, बूहाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बूहावीजणो, बूहावीजबो- कर्म वा०।

बूहावियोड़ो—देखो 'वहायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूहावियोड़ी)

बूहियोड़ो—देखो 'वहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूहियोड़ी)

बूही-वि.—पागलपनयुक्त, पागलपन की।

उ०—एकर री बात, राजी रं जापं मे पोन-हवा निकलगी। बावली वंडा करण लागगी। गुग विखेरं अर तत्ता-पत्ता सूं बूही बातां करं। जकं सूं घर हाळा नं भूतणी री वं'म बड़ गयो है।

—दसदोख

बें—देखो 'बें' (रू. भे.)

बेंकट—देखो 'बेंकटगिरि' (रू. भे)

बेंकटगिर, बेंकगिरि, बेंकटगिरी—स. पु. [स. बेंकटः+गिरि] दक्षिण भारत में स्थित एक पर्वत, जहां विष्णु का प्रसिद्ध स्थान है और भारत के कोने-कोने से भक्त दर्शनार्थ आते हैं।

रू. भे - बेंकट, बेंकिट, बेंकिटगिर, बेंकिटगिरि, बेंकिटगिरी

बेंकटाचळ - देखो 'बेंकटगिरि'

बेंकटेस, बेंकटेसर, बेंकटेसुर, बेंकटेस्वर—स. पु. [सं. बेंकट+ईश, बेकट+ईश्वर] १ भगवान् विष्णु का नामान्तर।

२ शेषनाग का नाम।

३ दक्षिण भारत के तिरुपति बालाजी का एक नाम।

बेंकिट, बेंकिटगिर, बेंकिटगिरि, बेंकिटगिरी—देखो 'बेंकटगिरि' (रू. भे.)

बेंगळा बेंगला -स. स्त्री —मूर्ख स्त्री, मूर्खा।

उ०—१ भगवान री समझदारी कै दुनियां में अड़ा मूरख अर अधरमी आदमी घणा नी व्है, नींतर सगळा संसार री ई पोलाळो व्है जातो। आ दुनिया जीवण जोगी ई नी रै'ती। वो धरमात्मा भतीजो नीठ उण बेंगळा नं समझाई। —फुलवाड़ी

उ०— २ सेठ जूझळ खावता बोल्या—थनै हेलो नी मारयो तौ किणी दूजा नं मारयो। घर मैं दूजो कुण है जिणनै हेलो मारूं। थारं पीहर वाळा ई थनै बेंगळा कैता सो यूं थोड़ा ई कैता।

—फुलवाड़ी

उ०—३ पण सेठाणी अंडी बेंगळा कै वा आपरं जायोड़ा बेटा नै ई नी ओळखै। बोली-चोनी नै कठै ई रातिदो तो नी हैं। नी बेटा री बोली पिछाणी अर नी उणनै ओळखियो। —फुलवाड़ी

बेंच—देखो 'बेंच' (रू. भे.)

बेंचणो, बेंचबो—देखो 'बेचणो, बेचबो' (रू. भे.)

उ०—रामदासजी साढिया लेनै दुघोड़ आया। इणां नै तो आखड़ी छै, घाडो बासी राखणो नहीं। साढिया रजपुता नै बेंच दीनी।

—रा. सा. स.

वेंचणहार, हारौ (हारी), वेंचणियौ—वि० ।
वेंचियोड़ौ, वेंचियोड़ौ, वेंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंचीजणौ, वेंचीजबौ—कर्म वा० ।

वेंचवाड़ौ—देखो 'वेंचवाडौ' [रू. भे.)

वेंचाणौ, वेंचाबौ—देखो 'वटाणौ, वंटाबौ' (रू. भे.)

वेंचाणहार, हारौ (हारी), वेंचाणियौ—वि० ।
वेंचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंचाईजणौ, वेंचाईजबौ—कर्म वा० ।

वेंचायोड़ौ—देखो 'वंटायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंचायोडी)

वेंचावणौ, वेंचावबौ—देखो 'वंटाणौ, वंटाबौ' (रू. भे.)

वेंचावणहार, हारौ (हारी), वेंचावणियौ—वि० ।
वेंचावियोड़ौ, वेंचावियोड़ौ, वेंचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंचावीजणौ, वेंचावीजबौ—कर्म वा० ।

वेंचावियोड़ौ—देखो 'वंटायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंचावियोडी)

वेंचियोड़ौ—देखो 'वेंचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंचियोडी)

वेंट—देखो 'वंट' (रू. भे)

वेंटणौ, वेंटबौ—देखो 'बांटणौ, वाटबौ' (रू. भे)

उ०—बेटा रै जलम री खुसी मे बामण सवा मण, मिसरी पतासा वेंट्या अर आट सवा मण गुळ वेंट्यौ। पछै दोनूं घरा मे दोनू बातां दिनोदिन भरै पड़ण लागी। —फुलवाड़ी

उ०—२ डावडी कह्यौ—गाव मे तो सगळै बधाई रो पाच मण गुळ वेंटीजग्यो अर थे हाल ताई सूताई हो। गाव तो अपारै गाव सोनै रो सूरज ऊगियो। आपरै करमा रो परताप कै इण गाव राजा रो कवर तोरण वादियो। —फुलवाडी

वेंटणहार, हारौ (हारी), वेंटणियौ—वि० ।
वेंटिग्रोडो, वेंटियोड़ौ, वेंट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंटीजणौ, वेंटीजबौ—कर्म वा० ।

वेंटाणौ, वेंटाबौ—देखो 'वटाणौ, वटाबौ' (रू. भे)

वेंटाणहार, हारौ (हारी), वेंटाणियौ -वि० ।
वेंटायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंटाईजणौ, वेंटाईजबौ—कर्म वा० ।

वेंटायोड़ौ—देखो 'वंटायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंटायोडी)

वेंटावणौ, वेंटावबौ—देखो 'वंटाणौ, बटाबौ' (रू. भे.)

वेंटावणहार, हारौ (हारी), वेंटावणियौ—वि० ।
वेंटावियोड़ौ, वेंटावियोड़ौ, वेंटाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंटावीजणौ, वेंटावीजबौ—कर्म वा० ।

वेंटावियोड़ौ—देखो 'वटायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंटावियोडी)

वेंटियोड़ौ—देखो 'बांटियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंटियोडी)

वेंडाक—१ देखो 'बेंडाक' (रू. भे)

२ देखो 'बेहौ' (मह., रू. भे.)

वेंडौ—देखो 'बेंडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेंडी)

वेंण—१ देखो 'वहन' (रू. भे.)

२ देखो 'वचन' (रू. भे.)

३ देखो 'बेन' (रू. भे)

वेंत—१ देखो 'बेंत' (रू. भे.)

उ०—१ वीजळी काई किडकी, भाभा नै संचमण कर दियौ। खेजडी हेटै चार हाथ ऊडौ घेंड खुदग्यौ। च्यारू आदमियां री जीभा वेंत बारै निकळगी। आख्यां रा डोळा बारै आय पड्या। —फुलवाडी

उ०—२ धकै जावता वो इज रूखाळी वाळो खेत आयौ। ताळां छेक ऊभी वाजरी झोला खावती ही। दो दो वेंत लाबा अडाव री जात सिट्टा मोत्या रै उनमान परळाट करता हा। —फुलवाडी

उ०—३ अदाता, आप किसौ विस्वास करौला—इत्तौ ऊचौ अेलम कै फगत दोय घडी मे वेंत वेत लाबा वाळ आय जावै। सेवां ज्यूं लरड लरड वधै। —फुलवाडी

उ०—४ वेदा गी तो गिरै-दसा ई भंवगी। जूता अर वेंतां रा डर सू जाणता जको ई विद्या विसरग्या। किणी घतर-वेद सूं की कारी लागी नी। —फुलवाडी

२ देखो 'बेत' (रू भे.)

३ देखो 'वेंत' (रू. भे)

४ देखो 'वेंत' (रू. भे)

वेंतणौ, वेंतबौ—देखो 'बेंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

वेंतणहार, हारौ (हारी), वेंतणियौ—वि० ।
वेंतिग्रोड़ौ, वेंतयोड़ौ, वेंत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वेंतीजणौ, वेंतीजबौ—कर्म वा० ।

वेंतरणौ, वेंतरबौ—देखो 'बेंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

बेंतरणहार, हारौ (हारी), बेंतरणियौ—वि० ।
बेंतरिग्रोड़ो, बेंतररियोड़ो, बेंतरयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बेंतरीजणौ, बेंतरीजबौ—कर्म वा० ।

बेंतराणौ, बेंतराबौ—देखो 'बेंताणौ, बेंताबौ' (रू. भे.)

बेंतराणहार, हारौ (हारी), बेंतराणियौ—वि० ।
बेंतरायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बेंतराईजणौ, बेंतराईजबौ—कर्म वा० ।

बेंतरायोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री बेंतरायोडी)

बेंतरावणौ, बेंतरावबौ—देखो 'बेंताणौ,, बेंताबौ' (रू. भे.)

बेंतरावणहार, हारौ (हारी), बेंतरावणियौ—वि० ।
बेंतराविग्रोड़ो, बेंतरावियोड़ो, बेंतराव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बेंतरावीजणौ बेंतरावीजबौ—कर्म वा० ।

बेंतरावियोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री बेंतरावियोडी)

बेंतरियोड़ौ—देखो 'बेंतियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. बेंतरियोडी)

बेंताणौ, बेंताबौ देखो 'बेंताणौ, बेताबौ' (रू. भे.)

उ०—थान दोय बाफता रा, दोय माहमुदी, पांच सेल्हा ग्रवल ल्याई । सो दरजी भरमल रै कारखानै बेसाणिया । वागो पेहरण नै कुंवरसी रै बो सो दोपोर पोढिया जद ले गई । उण ऊपर बेंताया जाधिया तीन बाफता रा कराया ।
—कुंवरसी साखला री वारता

बेंताणहार, हारौ, (हारी), बेंताणियौ—वि० ।
बेंतायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बेंताईजणौ, बेंताईजबौ—कर्म वा० ।

बेंतायोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बेंतायोडी)

बेंताळीस, बेंतालीस—देखो 'बंयाळीस' (रू. भे.)

बेंतावणौ, बेंतावबौ—देखो 'बेंताणौ, बेंताबौ' (रू. भे.)

बेंतावणहार, हारौ (हारी), बेंतावणियौ—वि० ।
बेंताविग्रोड़ो, बेंतावियोड़ो, बेंताव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बेंतावीजणौ, बेंतावीजबौ—कर्म वा० ।

बेंतावियोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बेंतावियोडी)

बेंतियौ—वि.—एक बालिश्त लम्बा ।

स. पु.—केवल एक बालिश्त लम्बा व्यक्ति, जो प्रायः पृथ्वी तल के अन्दर पाया जाता है और पृथ्वी पर जीवित नहीं रह सकता ।

बेंदी—देखो 'बिंदी' (रू. भे)

बेंद्रिय—देखो 'बेइंद्रिय' (रू. भे)

बेंहरौ—स. पु.—विवाद ।

उ०—उरजन तणौ लसै ऊतरियौ, सुत जगमाल रहियौ सुघर ।
बेंहरौ हुग्रो वेहू गढ विग्रह, हाडा ग्रनै 'हमीर' हर ।
—रावत पत्ता ग्रांमेट री गीत

बे'—देखो 'वेह' (रू. भे.)

बे—सं पु —१ काम, कार्य । (२) वेद्य, हकीम । (३) पल्लव । (४) कल्पवृक्ष । (५) पीपर । (६) वेग, गति । (एका.)

७ स्वरूप, ग्राकार ।
८ पोशाक ।

सर्व.—१ 'बो' का बहुवचन ।
२ उस । (ग्रमरत)
३ वह का बहुवचन उन ।

उ०—बंगे रा मीठा वचन, फळ मीठा किंपाक । बे खाधा वे मानियां, हुवा कृतात खुराक । —बा. दा.

४ वह का बहुवचन, वे ।

उ०—मुनि घालै तप जोग बळ, सरग कपाटा हत्थ । बे ही कपरा कपाट नू, ऊघाडण ग्रसमत्थ । —बा. दा.

४ तृतीय पुरुष के लिए सम्बोधन सूचक शब्द, वह (सम्मान सूचक) ।

उ०—काम तो करणो इज चाहिजै । सगळै ई काम व्हाला है. चाम व्हाला कठैई कोनी । पण थोडो घणो काम तो जेठाणीजी नै ई करणो चाहिजै । पण बे तो डोल रै एल ई नी दे ।
—ग्रमरचूनडी

ग्रव्य.—५ सम्बोधन सूचक शब्द ।

उ० ग्रहो ग्रावो बे यार बैठो दरबार । ए चादणी रात, कहो मजलीम की बात । कहो कौण कोण, मलक कौण कौण राजा देखें, कोण कौण पातिस्या देखे, कौण कोण दईवान देखे, कौण कौण महिवान देखें । —रा. सा. स.

६ देखो 'बे' (रू भे.)

उ०—१ उठै वे दळ जोध ग्रकारा, साझ सरीर तणा भ्रम सारा । कहि गगा तन मजन कीधा, दान वितान मान करि दीधा ।
—रा. रू.

उ०—२ रहता सेती रचीयै, क्या बहुतां सूं काम । भाव जहां हसि बोलियें, बे भावत वेकाम । —ग्रनुभववाणी

रू. भे.—वेंह, वे ।

वेग्रंत—देखो 'वेग्रंत' (रू. भे.)

वेग्रकल—देखो 'वेग्रकल' (रू. भे.)

वेग्रकली—देखो 'वेग्रकली' (रू. भे.)

वेग्रखरी—देखो 'वेग्रखरी' (रू. भे.)

वेग्रखरीचोसर—देखो 'वेग्रखरीचोसर' (रू. भे.)

वेग्रखरी, वेग्रक्खरी, वेग्रक्खरी—देखो 'वेग्रखरी' (रू. भे.)

वेग्रब-वि०—वेइज्जत, प्रतिष्ठारहित ।

उ०—ठिकाणा री मालक घोड़ा रजपूतां नै वेग्रब राखतो सो इण साक बणारी स्त्री कह रही है—हे सखियां ग्रठै ठिकांणा मे भड़ नै घोडा सुहंगा हा सो एक ग्रादमी सू झाट उडतां (युद्ध होतां) भड़ नै घोड़ा मुहंगा ही गया । —बी स टी

वेग्रबब—देखो 'वेग्रदब' (रू. भे)

वेग्रदबी—देखो 'वेग्रदबी' (रू. भे.)

वेग्ररथ, वेग्ररथो—देखो वेग्ररथ' (रू. भे)

वेग्राखरी—देखो 'वेग्रखरी' (रू. भे)

वेग्राब—देखो वेग्राब (रू. भे.)

वेग्राबरू—देखो 'वेग्राबरू' (रू. भे)

वेग्रालिस, वेग्राळीस—देखो 'बंयाळीस' (रू. भे)

वेग्रासी—देखो 'बयासी' (रू. भे.)

वेइंद्रिय, वेइंदी, वेइंद्रिय—देखो 'बेइंद्रिय' (रू. भे.)

वेइंसाफ—देखो 'बेइसाफ' (रू भे.)

वेइंसाफी—देखो 'बेइसाफी' (रू. भे)

वेइ—देखो वेई' (रू. भे)

उ०—राजा बीसलदेव ग्रजमेर राज करं । बडो महाराज तैंसू कोई ग्रधको नही । तिण सो मूळवं लागवजी हुई, चारण वेसवटं वेइ । वेसवडो मूळवं पासें रहै ग्रर मूळवो चरणकोळियो रहै ।

— मूळवं सागावत री बात

वेइज्जत—देखो 'वेइज्जत' (रू. भे.)

वेइज्जती—देखो वेइज्जती' (रू भे.)

वेइतबार—देखो 'वेइतबार' (रू. भे.)

वेइया—देखो 'वेदिका' (रू. भे.) (जैन)

वेइल्म, वेइल्मी—देखो 'बेइल्म' (रू. भे.)

वेई—देखो 'वेई' (रू. भे.)

उ०—१ मन में धरता मरट घरइ जिम भूखें घूमें, मेलं घर गया मळ भटकि मूधा पर भूमे । बेटा नै मा बाप वेधि वे ग्रोमण वेई, रूसता रिगता रांक करै वेलमाटा केई । —ध. व. ग्रं.

उ०—२ पछै समत १६७२ वळं पाछो ग्रायो, तद कामड़ी पटं दियो । पछै विकूकोहर पाणी री तीण वेई माहोमाह बोलाचाली हुई तद भाटी ग्रचळदास मारियो । —नैणसी

उ०—३ गूजवो कोहर तो, तठै चारण रो वित पावण वेई, सु कोहर चाढियो, सु पाणी नीसरे नही । ताहरा चारण विरवड़ी कही—'बडा राठोड घेरी छै ज्यूं पाय । —नैणसी

उ०—४ जदं वीरमदे कहण लागो—'ज, हूं उठै पठांण रै जाय ग्रर बध वेई ग्ररज करू । ताहरा कल्यांणमल सबरां माहै समझतो हुतो, ताहरा कह्यो—'राज । बध वेई ग्ररज मता करो ।

—नैणसी

वेईठणो, वेईठबो—देखो 'बैटणो, बैठबो' (रू. भे.)

वेईठणहार हारो (हारी), वेईठणियो—वि० ।

वेईठियोडो, वेईठियोड़ो, वेईठयोड़ो—भू० का० कृ० ।

वेईठीजणो, वेईठीजबो—भाव वा० ।

वेईठाणो, वेईठाबो—देखो 'बैठाणो, बैठाबो' (रू. भे.)

वेईठाणहार, हारो (हारी), वेईठाणियो—वि० ।

वेईठायोड़ो—भू० का० कृ० ।

वेईठाईजणो, वेईठाईजबो—कर्म वा० ।

वेईठायोड़ो—देखो 'बैठायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेईठायोड़ी)

वेईठावणो वेईठावबो—देखो 'बैठाणो, बैठाबो' (रू. भे.)

वेईठावणहार हारो (हारी), वेईठावणियो—वि० ।

वेईठावियोड़ो, वेईठावियोड़ो, वेईठ व्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वेईठावीजणो, वेईठावीजबो—कर्म वा० ।

वेईठावियोड़ो—देखो 'बैठायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वेइठावियोडी)

वेईठियोड़ो—देखो बैठियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेईठियोडी)

वेईमान—देखो वेईमान' (रू. भे.)

वेईमानी—देखो 'वेईमानी' (रू. भे.)

वेउल-स पु. [सं विचकिल:] एक प्रकार को चमेली । (उ र.)

उ०—१ वनि वनि विकसइ वेउल, खेउ लगाडइ चीति, दीठा ग्रालहइ मडच, मंड वधारइं प्रीति । वर विलसइ ग्रलवेसर केसर हेठि सुवेस, मध पूगइ ऊतरायणि रायणि फलिय प्रसेस ।

—जयसेखर सूरि

उ०—२ मउरिया सहकार, चपक उदार । वेउल बकुल, भ्रमर कुल सकुल, कलरव करइ कोकिल तणा कुल । प्रवर प्रियंगु पाडल, निरमळ जळ, विकसित कमळ । —रा० सा० सं०

वेउव्वियलद्धी, वेउव्वियलधी, वेउव्वियलद्धी, वेउव्वियलधी—देखो 'वैक्रि-यलब्धि' (रू. भे) (जैन)

बेऊ—सं. पु.—१ एक प्रकार का शाक विशेष।

उ०—बालु नहं बेलातरू, बेऊ वेतस वाणि। वध्राक वाहलु लीउ वाउलीउ वखाणि। —मा. का. प्र.

२ देखो बेऊ' (रू. भे.)

बेकट—सं. पु.—१हँसी-मजाक करने वाला, मसखरा।

२ हीरे-जवाहिरात की परख करने वाला, जौहरी।

३ युवा पुरुष।

रू. भे.—बेकट, बेकठ

बेकटी, बेकठी—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—बागी अखगा काहुळा नाग करतका साफलें बहो, गुडं सिधू बाहुळा जुमाऊ कंगाराज। लडं बहादरेस घून मूंहडा गैणाग लागी, नत्रीठा बेकठी बागी खळा धूनाराज। —प्रभूदान मोतीसर

बेकणी, बेकबी—देखो 'वेखणी, वेखबी' (रू भे)

उ०—चपला गत चूंवीह, परी गई अपछर परं। आय आगळ ऊभीह, कमळादे नर बेकियां। —पा प्र

बेकणहार, हारी (हारी), बेकणियी—वि०।

बेकिप्रोड़ी, बेकियोडी, बेक्योडी—भू० का० कृ०।

बेकीजणी, बेकीजबी—कर्म वा०।

बेकदर—देखो 'बेकदर' (रू. भे.)

बेकदरी—देखो 'बेकदरी' (रू भे)

बेकदरी—देखो 'बेकदर' (अल्पा,. रू भे.)

बेकर—स. पु. १—एक प्रकार का घास विशेष।

२ एक प्रकार की मिट्टी विशेष।

३ देखो 'बेकर' (रू. भे)

रू. भे.—बेकरडी, बेकरियी।

बेकरड़ी—१ देखो 'बेकर' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वेकर' (अल्पा., रू. भे)

बेकरडो—१ देखो 'बेकर' (मह, रू. भे)

२ देखो 'वेकर' (मह, रू. भे.)

बेकरार—देखो 'बेकरार' (रू. भे.)

बेकरारी—देखो 'बेकरारी' (रू. भे)

बेकरियी—१ देखो 'बेकर' (अल्पा, रू. भे)

२ देखो 'वेकर' (अल्पा., रू. भे.)

बेकळ—१ देखो 'बेकळू' (रू. भे.)

२ देखो 'विकळ' (रू. भे.)

बें'कल—देखो 'विकळ' (रू भे.)

उ०—मुलां सुनित तैं करी, तैं कीया बिसमल। खलड़ी गला कटाय कै, क्या कीया बें'कल। —अनुभववांणी

बेकळी—१ देखो 'बेकळी' (रू. भे.)

२ देखो 'व्याकुळी' (रू भे.)

३ देखो 'व्याकुलता' (रू भे.)

बेकळू—देखो 'बेकळू' (रू. भे.)

उ०—१ पछं गिंडया ताई खेत रं चारूंमेर होळं होळं चकारा देवती फिरी। सूरज हमेसा री गळाई आथूण दिस रं धोरां री बेकळू मलमल मैं गडग्यो हो। —फुलवाड़ी

उ०—२ मन ई मन आ सोच राखी वही कं जकी कूडा मैं मोहर न्हाकी, वा सोख मैं राम-जाणं काई बगसैला ! वा मन लगाय आपरी खट-पट मैं अळूझगी। बेकळू रेता कूडा भर भरने मळवा माथं लाय राळघा। —फुलवाड़ी

उ०—३ अैडा अैडा अकरम, अन्याव अर अधरम चुपचाप सहै, चुंकारो ई नी करै। बेकळू रेत रा लांठा धोरा मैं विरखा री पाणी रिसै ज्यूं इण राज री रया रैं अतस मैं सगळा अकरम, अन्याव झरं बुडको ई नी ऊठै। —फुलवाड़ी

बेकस—देखो 'बेकस' (रू. भे)

बेकसूर—देखो 'बेकसूर' रू. भे)

बेकांनूनी—देखो 'बेकानूनी' (रू भे.)

बेकांम, बेकांमौ—देखो 'बेकाम' (रू भे.)

उ०—१ चरि ही हरि सूं हित लाय रहो, मन रे मत आह भटकण कूं। कण पाय्वो काम बेकांम करं, थोथा भूर फटकण कूं।

—सुरजनदास पूनियौ

उ०—२ जाकं घट विरहा बसं, जा घट प्रगटं राम। जनहरिया घट विरह विन, सोई घट बेकांम। —अनुभववांणी

उ०—३ रहता सेती रचीयं, क्या बहता सु काम। भाव जहा हसि बोलियं, बं भावत बेकांम। —अनुभववाणी

उ०—४ सहजे जीव जिंद कूं छाडं, ताकूं कहत हरांमा। काजी करद गऊ सिर सारं, बिना दोस बेकांमा। —अनुभववांणी

बेकाज—देखो 'बेकाज' (रू. भे.)

उ०—तु क्यु सूतो नीद भरि, भजन बिना बेकाज। जनहरिया जौरी करं, खडी सिराणं बाज। —अनुभववाणी

बेकाबू—देखो 'बेकाबू' (रू भे.)

बेकायदा—देखो 'बेकायदा' (रू. भे.)

बेकार—देखो 'बेकार' (रू. भे.)

बेकारी—देखो 'बेकारी' (रू. भे.)

बेकी—देखो 'बेकी' (रू. भे.)

बेकीमती—देखो 'बेकीमती' (रू. भे.)

बेकुंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

बेकुंभहथिराज, बेकुंभहथियराय, बेकुंभहथिराज, बेकुंभहथिराय—सं. पु. [सं. वंकुभ्रहस्तिराज] हाथियों की सेना का नायक। (जैन)

बेकूफ, बेकूब—देखो 'बेवकूफ' (रू. भे.)

बेकूबी—देखो 'बेवकूफी' (रू. भे.)

बेख—१ देखो 'विस' (रू. भे.)

२ देखो 'बीखरा' (रू. भे.)

३ देखो 'बीख' (रू. भे.)

४ देखो 'बेल' (रू. भे.)

५ देखो 'वेस' (रू. भे.)

बेखटक बेखटके—देखो 'बेखटकै' (रू भे.)

बेखणौ, बेखबौ—क्रि. स.—[सं. वि+ईक्षणम्] १ अवलोकन करना, देखना।

उ०—१ बजि थाळ सकळ वाजित्र वजे, कुसम सघरा सुरियद किया। बेखियां होज आवै वर्णां, उरा दिन तर्णी अजोधिया।
—सू. प्र.

उ०—२ बळीवळी बीरहाक नौपता नगारा वागी, सेना पीठ लागी जोस धारिया सक्रोध। उबवरा आसमारा भुजाटा सेल गी अण्या, बेखौ कस वस माथ नाहना विरोध। —बादरदान दधवाडियौ

उ०—३ वर्ण चार, भ्राभाग वदनारविंद, उरं ऊपजं बेख रेखा अराद। सदा हेत सता इसा नेत सोहै, मरा मेरा रूपी लिका नेरा मोहै।
—रा. रू.

उ०—४ भेग्द डावी भर्ण दुर्गडियो मान दिरीजे, जो राजा जोमरणी पोहर हैकरा ठेहरीजे। अख आडी बेखता पौर खोडस पारभरा, आठ पौहर योमास वलंक भेडी ते सुरा। —पा. प्र

२ निरीक्षण करना, जाचना।

३ जानना, समझना।

उ०—१ कथ सुरिग न्नप दाखियौ किपा करि, हवि तूं माग कहे सुजि हाजरि। एक वार ओखद तत एहौ, जपियौ मैं बेखौ गुरा जेहौ।
—सू. प्र.

उ०—२ वेदा भेदा बेखौ, पेखौ दह आठ हेर पौराणं। राघौ नाम सरीखं, नह को नर देव नागिंद्र। —र. ज. प्र.

बेखणहार, हारौ (हारी), बेखणियौ—वि०।

बेखिओड़ौ, बेखियोड़ौ, बेख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बेखीजणौ, बेखीजबौ—कर्म वा०।

बेखणौ, बेखबौ, बीखणौ, बीखबौ, बेकणौ, बेकबौ, ब्रीखणौ, ब्रीखबौ
—रू. भे.।

बेखता—देखो 'बेखता' (रू. भे.)

बेखबर—देखो 'बेखबर' (रू. भे.)

बेखबरदारी—देखो 'बेखबरदारी' (रू. भे.)

बेखबरी—देखो 'बेखबरी' (रू. भे.)

बेखरच—देखो 'बेखरच' (रू. भे.)

उ०—उठा धरमदुवार मागि नीसरिया हुता। मरि, छूटि, तूटि, घणौ बेखरच हुइ, तूटि मरि, भूखा मरि मर नीसरिया हुता। तियै वास्तै पातिसाहजी खिजिया।
—द. वि.

बेखवेरी—देखो 'बेखवेरी' (रू. भे.)

बेखातर, बेखातरि—देखो 'बेखातर' (रू. भे.)

बेखास—सं. पु.—१ प्रयत्न, प्रयास, कोशिश।

उ०—कोई कहै मोनि पाठ ग्रह विध्या, कोई वसतै वनवासा। सतगुर बिन ससा नही भाजं, भावे कोटि करो बेखासा।
—अनुभववाणी

२ विश्वास, एतबार।

उ०—सुण जिनवर सेत्रुजाधणीजी, दास तणी अरदास। तुज आगल बालक परेजी, हुं तो करूं बेखास, रे जिनजी मुझ पापी नै तार।
—वृत्त

३ विलाप, रुदन।

उ०—१ मुणि मारुवणी आवइ घरै, व्याप्यउ विरह मयरा बळ धरै। सूती सेज करै बेखास, मोडइ अग, मूंकइ नीसास।
—ढो. मा.

उ०—२ वोळावे मन विलखा किया, देवसूत्र एहवा थया। वार ढोलउ करइ बेखास, वळि वळि जोवइ मारू-साम। —ढो. मा.

बेखियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ अवलोकन किया हुआ, देखा हुआ. २ निरीक्षण किया हुआ, जाचा हुआ. ३ समझा हुआ जाना हुआ। (स्त्री बेखियोड़ी)

बेखुदी—वि [फा. बेखुदी] जिसमें चेतना न हो, बेखबर।

उ०—बेखुदी वै आदि बेगम, अजर अचळ अचाल। चिदानंद अरूप अवगनि, खबर दारौं ख्याल।
—ह. पु. वा.

बेखून—वि—निरपराध, बेखून।

उ०—ओकम ग्ररब करां खां तूनां, मोटी ग्रकलि समापै मूनां। जादवराव निमी जर जूना, बैकठ मां रार्खे वेखूना। —पी. ग्रं.

बेग-स. पु [स.] १ प्रवाह, बहाव।

उ०- वहै खग ग्राय खळां झळ बेग, तुटै घण ग्राप नगौ भिर तेग। सधौ करि मेघ घणा समराथ, ग्रटी भड़ ताम पड़ै ग्राराथ।
—सू. प्र.

२ शरीर मे से मल-मूत्र ग्रादि निकलने की प्रवृत्ति।

३ मोतिया बिन्द का समय पर ग्रॉपरेशन न होने पर नेत्र मे चलने वाली सूल, पीडा।

४ वायु विकार।

५ चौबीस गुणो मे से एक गुण जो ग्राकास, जल, तेज वायु ग्रौर मन मे पाया जाता है। (न्याय)

६ गति, चाल।

उ०—१ पमग बेग उप्पडै, बणै सनूर वंकडै। खुलै ग्रपार खग्गयं ग्रणी सकत्ति ग्रग्रय। —रा. रू.

उ०—२ चोखी बात फैलता नै जेज लागै पण भूडी बात तो पवन रे बेग उडै। रेडियो मे खबर पूर्ण ज्यू ग्रा खबर धानपुर पूगी तौ गाव मे खळबळी माचगी। मिनखा रा ग्रबै मूंडा जितरी ई बाता।
—ग्रमरचू नड़ी

७ तीव्र गति, तेज चाल।

उ०—१ राति सामीर सारग डाणै ग्रहै, बाद ऊपखिया लीण जाणै वहै। हद बेहद पै बेग पै हैमरा, पाधरा जाण पाहाड उड्डै परा।
--गु रू ब.

उ०—२ जिम लवण रहित रसवनी वचन रहित सरस्वती, कट रहित गायन नृत्य रहित वादन, फल रहित वृक्ष, तप रहित भिक्षुक। बेग रहित घोडो, केस रहित मोढो, वस्त्र रहित सिणगार, स्वरण रहित ग्रलकार, इत्यादि। —रा. सा. स

उ०—३ मभि खगा भाट लेल्है मलग, ग्राफळै ग्रगी परधार ग्रग। पवन रा कुटवी बेग पाण, उड्डइ सिधगुटका जिम उडाण।
—सू प्र

८ ग्रावेश, जोश ९ दृढ प्रतिज्ञा। १० प्रेम, ग्रनुराग। ११ वीर्य, शुक्र। १२ वीर्यपात, वीर्यस्खलन। १३ शक्ति, बल, सामर्थ्य।

१४ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त (ग्र. मा.)

उ०—१ मम ढील करो हुल वार म लावो, बेग चढो वहिला वहिळा। भिडता भड सूरज मडळ भेदै, भूळ भरै रंभ भूफ भला।
—गु. रू. ब.

उ०—२ सुगुण सनेही नाहला, वाला बेग पधार। ग्रलबेला ग्रलजो घणो, देखण पीव दीदार। —ढो. मा.

उ०—३ सोवायत हद्द साह रौ, राव दिसी तिण वार। गोयदास पमार सग, पूगौ बेग पुकार। —रा. रू.

उ०—४ चंद उठो दळ बेग चलाया, धाई ठीक नजीक सु ग्राया। ग्रळं काळ जिसड़ा दळ पावस, दळपत छत्रहूत कोसा दस।
—सू. प्र.

१५ प्रसन्नता, ग्रानन्द।

१६ देखो 'बेग' (रू भे)

रू. भे.—बैग, वेघ वेघो, वेव, बंग, बंगाण।

बेगइरउ, बेगइरौ-क्रि. वि —ग्रपेक्षाकृत शीघ्र, जल्दी।

उ०—पथी, हेक सदेसडउ, लग ढोलउ पैहच्याय। जोबन ग्रायड प्राहुणउ, बेगइरउ घर ग्राय। —ढो. मा.

बेगउ—देखो 'वेगो' (रू भे.) (उ. र.)

उ०—चदमुखी, हंसा-गमणि, कोमळ दीरघ केस। कचन-वरणी कामनी, बेगउ ग्रावि मिळेस। —ढो. मा.

बेगड़, बेगड़उ-सं. पु.—१ राठोडो की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति।

२ देखो 'वेगड' (रू भे.)

३ देखो 'बेगडो' (मह., रू. भे)

उ०—१ सवा कोटि धन खरचियो, हरख्यो 'महमद शाह' हो। बिरूद दियो बेगड़ तणो, प्रगट थयो जग माहि हो।
—ऐ. जै. का. सं.

उ०—२ कमंधा धर ऊगो किरणाळो, भुज लग हथ पाबू भालाळो बेगड़ धमल कथ वळवाळो, वाखाणू धांधल राव बाळो।
—पा प्र.

उ०—३ कमळ भाडै पडै न चाले कलोडा, खंड भाजे भरै जीव छोळा। 'ग्रजारा' पूंजया माड काधो ग्रबै, बेगड़ ताड तो जिसी वेळा। - हरनाथसिंह चापावत री गीत

उ०—४ राठउडै उदियउ चउड राउ, बेगड़इ साड वीरम विधाउ। साळवडी थाणउ दे सधीर, हठमल्ल राउ पाणै हमीर।
—रा. ज. सी.

उ०—५ बेगड़उ साड 'विकउ' विवग्र, कुळ भाण तेवि उदियउ 'करग्र'। ऊधरिय छत्र फेरावि ग्राण, ताई मडोवर मूलताण।
—रा. ज. सी.

४ देखो 'दोगळो' (मह, रू. भे)

बेगड़ोगडी—स. स्त्री. एक प्रकार की बन्दूक।

बेगड़ि—देखो 'बंगडी' (रू. भे)

बेगड़ियो-सं. पु'—१ बोहुटे का नाम। (सभा)

२ देखो बेगडो' (अल्पा., रू. भे.)

बेगड़ी–स स्त्री. [स विकटशृंगी] तीक्ष्ण और सीधे सींगों वाली गाय या भैंस। (ड र.)

रू. भे.—बेगडी।

बेगड़ो—१ देखो 'बेगड' (रू. भे)

२ देखो बेगडो' (रू. भे.)

उ०—१ पाबू पाट रै रूप राठवडा, सेवै तूझ सधीरा। बेगड़ै पाल्ह लीया बरदाई, सिध तणा सांठी रा।

—पाबू धांधळोत राठौड री गीत

उ०—२ माधो अटक न ऊतरै माधो कटक न जाय। बेटी साटै बेगडो, घर बैठो घर खाय। —बां. दा ख्यात

उ०—३ वाछुंना बरमाळ बेगड़ा, वकना सुणं 'दूदै' वसियो। जेसळगिरा तिको दिन जांणं, हाथा ताळी दे हसियो।

—हूंफो सादू

उ०—४ महि मालम धांन मसूरियो, ओथ हूत खड आवजै। बेगड़ा 'पाल' गउ वाहरू, दम इक जेज म लावजै। —पा. प्र.

उ०—५ दरगह राण कळण विच दाहण, गो नाही सधो कळण। कांधो कुण माडै 'कांधळ' रा, बेगड़ा धोरी तूझ वण।

—चतुरभुज बारहठ

३ देखो दोगळो' (रू. भे)

बेगड, बेगडड—१ देखो 'बेगड' (रू. भे.)

२ देखो 'दोगळो' (मह, रू भे)

३ देखो 'बेगडो' (मह., रू भे)

उ०—उड्डि महाभर क्ध, भार भलपण सव्वाहै। बेगड वाभो वहण प्रिथी ऽाभो पतिसाहै। —गु रू. बं.

बेगडियो—१ देखो 'बेगड' (अल्पा, रू. भे.)

२ देखो 'बेगडो' (अल्पा., रू. भे.)

बेगडी—देखो 'वेगडी' (रू भे)

बेगडो—१ देखो 'बेगड' (रू. भे)

२ देखो 'दोगळो' (रू भे)

३ देखो बेगडो' (रू. भे.)

उ०—बाजिया बेगडा, भ्रिकस भ'जै थडा। ऊजडै सङ्मडा, धूज प्रिथ्यी पुडा। —गु रू. व

बेगतंत–क्रि. वि —तत्काल, शीघ्र, तुरन्त।

उ०—चीत भाज 'करनला' कर विचार, 'लाखण' रै माही पुत्र मार। सुब सुदा दीस्ट जोयो सगस, ताहा उठयो लाखण बेगतंत।

—रामदान लाळस

बेगम–स. पु.—१ वह स्थान जहा पर कोई नहीं जा सके, अगम्य स्थान।

उ०—१ सुख सागर की सेन बताई, मेरा अतर जाण रया। अगम भगन सतगुरु कर दीना, बेगम देस गया।

—श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ बेगम का जाणत कौन बजारा, वाही सहर की मोय बतावै। सो सत् गुरु हमारा। —श्रीहरिरामजी महाराज

२ देखो 'बेगम' (रू भे.)

उ०—१ पदमणी दिलीवर होण प्रीत, साजादा जूट रण सरीत। सूरमा लडै चवडै सभाळ, बेगमां घसै पडदै विचाळ। —वि. स.

उ०—२ हरीया परणी पीव सु, खेलै अंग लगाय। दूजी बेगम देख करि, आवै ज्यू उठि जाय। —अनूभववाणी

उ०— ३ दळ दिलो कळळ दरोळ, चढि बेगमां चख-डोळ। तिण वार दळ सुरताण, खळ भळै इम खुरसाण। —सू. प्र.

उ०—४ पाटवी हेळवी बेगमं पैलकै, तैं समै अंलकै लीध टाळा। पागतो 'दलो' नै 'रतन' परणीजता, वाट जोती रही 'गजन' वाळा।

—महाराजा जसवतसिहजी रो गीत

बेगमी—देखो बेगमी' (रू भे.)

बेगर—देखो 'वेगर' (रू. भे.)

बेगरज—देखो 'बेगरज' (रू. भे.)

बेगरजी—देखो 'बेगरजी' (रू. भे)

बेगरणी–वि.—मध्यस्थ।

उ०—ब्या'रा बेगरणी, बिचावला, छळपट, लपचेट्ट अर जार भायेला भोदू पटावै तथा खूब खावै-पीवै है। मोफतिया इमा मीका मौज-मजा ही किया करै है। —दसदोख

रू. भे. वैगरणी।

बेगरणो–स पु—मध्यस्थता।

वि०—मध्यस्थ।

रू भे—वैगरणो।

बेगळ—देखो 'बेगल' (रू. भे)

बेगळि बेगलि बेगळी बेगली, बेगळु, बेगलु, बेगळो, बेगलो—क्रि. वि० —१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—१ अकस्मात् धंम्ररि पढिवा लागी, एतलनइ नालिनी बेगळि भागी, वस्तु चावणी कीजइ लहरइ सिढ भीजइ, एकं आपणी वस्तु तिवारइ अरद्धमूलि दीजइ, अनेरै लीभीए तिवारइं तै वस्तु लीजइ सार गाठडी सुग्रहीत कीजइ,.........। —व. स

उ०—२ राजद्वार कोठार, जीन-माला काढीजै, जरद जरद्दी चढै लोह लोहै कूटीजै। वेनांणी बेगळा, वाढ घालै केवांणा, कूंत बाण कीजति अणी तीखा खुरसांणा। —गु. रू. ब.

उ०—३ वरहास दोड़ै बेगळा, किरि खड़ै नभ उर मडळा। हुइ हमम धम धम है-खुरां, बाजत धम-धम पाखरा। —गु रू ब

२ दूर।

उ०—१ वेगं वाळया हय रे, रे रथ सुं रथ बाध्यो रळी। गज थाट मोगर बहइ उवट, वेंद्रवा थई वेगळी। —रुकमणी मगळ

उ०—२ व्याधि जरा रहि बेगली, अलीभ लक्षण होइ जेह। वेदि जे विधि विस्तरी, सविको पालइ तेह। —मा. का. प्र.

उ०—३ म्राहेडीइ मन फेरव्यू, प्रिहेवा लागु हाथ रे। रेहि रे पापी नूंह बेगलु, नल छि माहारु नाथ रे। —नळाख्यान

उ०—४ वेलि विहूणा पत्र परि, हू हुइ छउ हीण। बिटल रहि रे बेगलु, प्रागलि चिका प्रमीण। —मा. का. प्र.

उ०—५ किसी एक विरहणी हुई विरहावस्था, आहार ऊपरि करइ अनास्था। सरब सिंगार, मानि अगार। तिणइ अबला (प्रत-रगत) फूला कीधा बेगला। घद तपइ पान, थया विखवान। —रा. सा. स.

बेगवत बेगवान-वि. [स वेगवान्] वेगपूर्वक चलने वाला, तेज चलने वाला।

उ०—घोडा छै सु महा बेगवत छै। रथ छै सु महा अतरिख वहै छै। चदारुणि कहता रुक्मणीजी के साथि ए चालिया। सु किसा दीसै छै। जिसा अयोध्या का वासी वैकुंठ तै। —वेलि टी.

स. पु —१ विष्णु।

२ दैत्य जो कृष्ण पुत्र साम्ब के द्वारा मारा गया था।

३ कश्यप एव दनु का पुत्र एक दानव।

४ एक नाग।

रू. भे —बेगवती।

बेगवाहिनी-स. स्त्री [स] १ गगा नदी का एक नाम (२) कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष। (सगीत) (३) एक प्राचीन नदी (पुराण)

बेगसर-स. पु —१ तेज गति से चलने वाला घोडा।

२ देखो बेगसर' (रू. भे.)

बेगानगी—देखो 'बेगानगी' (रू. भे.)

बेगानौ—देखो 'बेगानौ' (रू. भे.)

बेगागळ. बेगागळौ—१ घोडे के गले में बांधने का चमडे या सूत का तस्मा या रस्सा।

२ घोडा, अश्व। (ह. ना. मा.)

उ०—ऊपडि फौज घटा आडबर, रज धूळ हि छायो रातबर। चढिया धडै धडालो चचळ, बाजे नास वहै बेगागळ। —गु. रू. ब.

वि.—तेज गति से चलने वाला, अति चचल।

उ०—सिणगारं सरब हेम मे साकति, गळै गजगाहु बध ए। बेगागळ बाजराज वाहूण या, दीपत सरळ कध ए। —गु. रू. ब.

क्रि. वि.—तेज गति से, तीव्रगति से।

उ०—१ कसस्सै कठळा, आकुसा बीजळा, चमक्कै चप्पळा, बंरकां बंबळा। ढैच ढालब्बळा, प्रस्सि ऊतांमळा, वहै बेगागळा, बाज बाहै नळा। —गु. रू. ब.

उ०—२ अन्नूप रूप चित्राम अग. बेगागळ चळ नाचै विहग। अद-भूत पराक्रम गुण अछेह, ऊचास कना सपतास श्रेह। —गु. रू. ब.

रू भे.—बेगागळ, बेगाळ, बेगाळो, बेगागळ, बेगागळ, बेगागळौ, बेगाळ, बेगाळौ।

बेगार—देखो 'बेगार' (रू. भे.)

उ०—आज रो सिझ्या तो घरवाळा नै यो काम सभळाय देणो हो। थारै गियां पछै तो सेवट आ लोगां नै ई ओ सगळा काम करणा है। महारांणी व्हैतां थकां ई इत्ता दिन घरवाळां री बणी ई बेगार काढी। —फुलवाडी

बेगारी—देखो 'बेगारी' (रू भे.)

बेगाळ बेगाळौ-वि०—१ तेज गति से चलने वाला, तीव्रगामी, शीघ्र-गामी।

उ०—१ कळ वाळ नित्र छात्राळ कदळ मीच काळ भुजाळ, संढाळ दरगह साबता बेगाळ वेग वडाळ। किरमाळ बळ रिणताळ केता जीपणा जमजाळ। —पीर आसियो

उ०— २ चमराळा व्है चूर, बेगाळा तेजी वडा। पडता घर भेळा पडै, सर गोळा नर सूर। —र. वचनिका

२ जल्दबाज, उतावला।

३ तेज वाला, तेजस्वी।

क्रि० वि०—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—आयै यह उजवाळ, कवरा गुर मिसलत करै। बीरम दिस बेगाळ, जद लिखिया कागळ 'जगं'। —गो. रू.

२ देखो 'बेगागळ' (रू. भे)

उ०—१ वहै बेगाळ उरा उण वार, धडा बढ धिक्क सरा धूंकार। सफ रूंडमाळ सिभू सिरताज, विचै दळ सुर हिलोहळ बाज। —गो. रू.

उ०—२ धडहडै सात-पुडि धुजि धम-हम धरा, डंब फोधूळ अंबर चडै डबरा। बावता नास बेगाळ तेजी वहै, माहटां गोम पाहाड पाए गहै। —गु. रू. बं.

उ०—३ गाळै भांण कायरां सोकिया तीर बांण गोळा, गजां कंध हाळै पांण तोकिया तेगाळ। भांण रथा रोकिया बंगाण खेल रीधा माळै, 'गीधा' बाळै सत्रां थांण भोकिया बेगाळ।

—जालमसिंह चांपावत री गीत

रू. भे.—बंगाल, बंगाळो।

बेगाबेगि-क्रि० वि०—शीघ्र, जल्दी।

उ०—चीतवियउ चहुवाणि, जउहर की मांडउ जुगति। हुय हुस्यां हरपुर दिसा, बेगाबेगि विहाणि। —ग्र. वचनिका

बेगिनी-स. स्त्री. [स] एक नदी का नाम।

बेगुना, बेगुनाह—देखो 'बेगुनाह, (रू भे.)

बेगेरी—देखो 'बेगो' (रू. भे.)

उ०—पथी एक सदेसड़ो, लग ढोलै पहुंचाइ। जोवन आवै प्राहुणो, बेगेरो घर आइ। —ढो. मा.

बेगो-वि० [स्त्री. बेगी] १ शीघ्र,जल्दी, अविलम्ब।

उ०—१ काळा काळा केस भंवर, म्हारी भ्राटी कांमणगारी रे। आधी रा अमलां मैं, म्हारी सेज अलूंणी रे, बेगा आवडज्यो। हां रे सासू रा जाया, बेगा आवडज्यो। —फुलवाडी

उ०—२ खिमकरण वाळा मिनखां रा पग हा जठै ई चिपग्या। मासी अणूती जोर सू हसी। बोली—थांनै म्हारी बोली बिचै ई कुत्तां री बोली बेगी समझ मैं आवै। आवै जकी ई चोखी। —फुलवाडी

उ०—३ बेगा दूत दिलीपतवाळा, आवै गूजर खंड उताळा। चाहै दुरग तकूं तजि ताळा, समपै धन मणि मुकत विसाळा। —रा. रू.

उ०—४ ताहरां राणैं जांन करि परणीजण नुं चालियो। ताहरां बगड़ावतां नुं आदमी मेल्हिया जु राणैंजी परणीजण नुं चढ़िया छै। थे बेगा आवो। —देवजी बगड़ावत री बात

रू. भे.—बेगी, बेगड़, बेगेरो, बेघ, बेघो, वंगो।

बेघ, बेघो—१ देखो 'बेग' (रू. भे.)

२ देखो 'बेगो' (रू. भे.)

उ०—१ पोलि उघाडी गढ तणी, मरल सभावै राणो रे। मंक्या तेडण मंत्रवी, बेघ पधारो सुलतानो रे। —प. च. चौ.

उ०—२ महिर करी हिव मोहि, बीदा करौ बेघो धणी जी। आलिम साथै होय, पोलि लगैं पहुंचावियौ जी। —प. च. चौ

उ०—३ तै ऊपरि ए पदमणी, आइ आपणं पासी। स्यु करिवौ सूझी मतौ, बेघो कहो विमासी। —प. च. चौ.

उ०—४ बादसाह हुंत कह्यौ छोड जे इणां नै बेघा, एै न छूटै हिंदू धरम बिनाडो आफेक। कह्यौ साह 'भाण' नंद पातवां छुडावो किसा ? एक एक प्रती चहा माथो एक एक।

—सक्तावत गोकळदास (श्रावर) री गीत

बेड़—१ देखो 'बोहड़' (रू भे.)

उ०—त्या माहै ऊगौ मुदी बोल्यो, राज्याजी, रांम रांम, राज्याजी समाध्या छो। राजा हस्यो। तरै ऊगै कह्यो, महाराज, आप गधेडा की तरह छो, बेड़ का रहिण वाळा छो, बोलण की कूं ही जाणां छां नहीं, माफ करिज्यो। —कहवाट सरवहियौ की बात

२ देखो 'बेड' (रू. भे.)

३ देखो 'बेडो' (मह., रू. भे.)

४ देखो बेड' (रू भे.)

५ देखो बेड' (रू. भे)

उ०—बाग वणाया बेड़ मैं, काटा आक कटाय। सीसम आंबा तर सघण लाखां दिया लगाय। —चिमनदान रतनू

६ देखो 'वेढ' (रू. भे.)

उ०—१ बेड़ परायण इमी बचाइ, मही सरायण सुणज्यौ मूठ। निज नारायण गुरु निवाजै, फजर गइ तारायण फूठ।

—बांकीदास वीठू

उ०—२ बाट प्रसाद बळोवळ वाणा, त्रसना भागी लोभ तणी। वेला गुरा बेड़ री चरचा, साधा सौ सौ कोस सुणी।

—बांकीदास वीठू

बेडकी—देखो 'बेडकी' (रू भे.)

२ देखो 'बेड' (अल्पा., रू. भे.)

बेड़णी —देखो 'बेडणी'।

बेड़णो, बेड़बो—१ देखो बेडणो, बेडबो' (रू. भे.)

उ०—बळदेव महाबळ तासु भुजाबळि, पिंडि पहरतै नवौ परि। विजडा मुहै बेड़तै बळभद्र, सिरां पुज कीधा समरि। —वेलि

२ देखो वेढणो, वेढबो' (रू. भे.)

बेड़णहार, हारो (हारी) बेड़णियो—वि०।

बेड़िओड़ो बेड़ियोड़ो, बेड़योड़ो—भू० का० कृ०।

बेड़ीजणो, बेड़ीजबो—कर्म वा०।

बेड़लो—१ देखो 'बेड़ो' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वेढलो' (रू. भे)

बेड़ाफोड़—देखो 'बेडाफोड' (रू भे.)

बड़ियोड़ो—१ देखो 'बेडियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेडियोडी)

बेड़ी—१ देखो 'बेडी' (रू. भे.)

२ देखो 'बेंड़ो' (वि. स्त्री)

बेड़ूको, बेड़ूवो—देखो 'बेड़वो' (रू. भे.)

बेड़ो—देखो 'बेडो' (रू. भे.)

उ०—वैकुंठ बेड़ो विसन होयो, सचियार सालिह्यां लेविसो। पारगिरोय पुहचाय भाभराय, वास निहचळ देविसी। —ऊदोजी नैण

बेच—देखो 'बेंज' (रू. भे.)

बेचको—देखो 'बेंज' (अल्पा, रू भे)

बेचणो, बेचबो–क्रि. स — १ खर्च करना, व्यय करना।

उ०—विद्या लेवानु बीजु भेद, साभलु प्राणी! माणसिउ खेद। सुत भणाव्यानु जु खप होय, तु धन बेचोजइ प्रति जोइ।

—नळदवदंती रास

२ देखो 'बेंचणो, बेचबो' (रू. भे.)

उ०—१ पाच तत महा तत रहै पास, सभारै तना प्रभु सास सास। गुण तीन दास पतिसाह गाइ, बेचिया प्रभु थारा विकाइ।

—पी. ग्रं.

उ०—२ बेचै मत तू बेगडी, चित नांणा री चाह। बळै न मिळसी बेगडो. नाणा दीधा नाह। —बां. दा.

उ०—३ ग्रादू ग्रखइ मोहतो दूहो कहै, राजा बेचू नही तो ग्रोखो नाण मिळ। पण घोडो उराको छै। रवियांण चद, ऐराक बीज वड बीज प्रात गाज, सापुरस वेण, पैहिली तो लहवाय लहवाय पीछै गरवाय गरवाय। —हाहूल हमीर री बात

उ०—४ मन मे धरता मरट घरट जिम भूखं घूमैं, मेलै घर नया मऊ भटकि मूम्रा पर झूमे। बेटा नै मा बाप बेचि दे जीमण वेह रूलता रिगता राक करे वेलखाटा केई। —ध. व ग्र.

३ देखो 'बेंचणो, बेंचबो' (रू भे)

उ०–१ ग्रथवा सालि दालि घ्रत पक्वान्नादिक ग्रथवा देवद्रव्य वस्त्रादिक जइ घणइ मूलिइ ग्रापणइ घरि वावरइ। ग्रनेराइ श्रावक हूइ दिइ। ग्रथ महात्मा दरसनी विकु देवद्रव्य वधारी प्रासादादिकं बेचइं। —षष्टीशतक

उ०—२ गुरु एकइ जि ग्रनइ श्रावक एकइ जि छइ। पुण चैत्य देहरा जूग्रां जूग्रां ग्रनेरा ग्रनेरा ना कराव्या छइ। तिहा जं द्रव्य छइ तं परस्परिइन बेचइ। पेला देहरा नु उलिइ देहरइ, ग्रोल्या देहरानू पेलइ देहरइ न बेचइ। मनि भेद ग्राणइ। —षष्टीशतक

उ०—३ ....तं राजा जं राज्य पालइ, तं ग्रमात्य जं न्याय दिखाडइ, तं कापड जे पखालिउ सूकइ, ते कारघा [जं] वुद्धि सीभइ तं तुरगम जं वेगि पूजइ, तं द्रव्य जं सत्पात्र बेचीइ। —व. स

उ०—४..........उन्मारगि न चालइं, गुरु उपदेस झालइ, घरमलाख न हालइ, नवं खेत्रे बेचइ धन, जिसिउ बावनु चदन इस्या सीतल मन, इस्या कहीए स्वजन,.......... । —व स

बेचणहार' हारो (हारी), बेचणियो—वि०।

बेचियोड़ो, बेचियोडो, बेच्योडो—भू० का० कृ०।

बेचीजणो, बेचीजबो—कर्म वा०।

बेचत्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

बेचरा, बेचराज, बेचराजी, बेचराय—देखो 'बहुचराय' (रू. भे.)

उ०—बेचराजी रा चरणा कूकडा हैं ज्या नू मिन्नी न मारै।

—बां. दा. ख्यात

बेचांण—देखो 'बेचाण' (रू. भे.)

बेचाक, बेचाख—देखो 'बेचाक' (रू. भे)

उ०—रईयत सरब गई। धरती हेमा ग्रागै बस सर्व नहीं। किसराहेक बरस यूही घोकळ रह्यो। हिवै रावळ मालोजी कुटेवा पड़िया। यू करता घट घणो बेचाक हुवो। —नैणसी

बेचाड़णो, बेचाड़बो—देखो 'बेचाणो, बेचाबो' (रू. भे.)

बेचाडणहार, हारो (हारी), बेचाड़णियो—वि०।

बेचाड़ियोडो, बेचाड़ियोडो, बेचाड़योड़ो—भू० का० कृ०।

बेचाड़ीजणो, बेचाड़ीजबो—कर्म वा०।

बेचाड़ियोडो—देखो 'बेचायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेचाड़ियोडी)

बेचाणो, बेचाबो—देखो 'बेचाणो, बेचाबो, (रू. भे.)

बेचाणहार, हारो (हारी), बेचाणियो—वि०।

बेचायोड़ो—भू० का० कृ०।

बेचाईजणो, बेचाईजबो—कर्म वा०।

बेचायोडो—देखो 'बेचायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेचायोडी)

बेचारो—देखो 'बेचारो' (रू. भे.)

बेचाळ, बेचाल–वि०—जिसका चाल चलन ठीक नही हो, बदचलन।

बेचावणो, बेचावबो—देखो 'बेचाणो, बेचाबो' (रू. भे.)

उ०—तत्य तेहे विविध चेत्यं ज जं जिनद्रव्य ऊपजइ तं जिनद्रव्य देवद्रव्य परस्परइ एक चैत्यनउं द्रव्य बीजइ चैत्यि जं सुगुरु श्रावक न बेचावइं। षष्टीशतक

बेचावणहार, हारो (हारी), बेचावणियो—वि०।

बेचावियोड़ो, बेचावियोड़ो, बेचाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेचावीजणो, बेचावीजबो—कर्म वा०।

बेचावियोड़ो—देखो 'बेचायोडो (रू. भे.)

(स्त्री. बेचावियोडी)

बेचियोड़ो–भू० का० कृ०—१ खर्च किया हुआ, व्यय किया हुआ।

२ देखो 'बेंचियोडो' (रू. भे.)

३ देखो 'बेचियोड़ी' (रू भे)
(स्त्री. बेचियोड़ी)

बेचिराग—देखो 'बेचिराग' (रू. भे)

बेचेत, बेचेतै, बेचेतं—देखो 'बेचेत' (रू भे.)

बेचैन—देखो 'बेचैन' (रू. भे.)

बेचैनी—देखो 'बेचैनी' (रू. भे.)

बेचौ-स. पु—गाय भेंस का दूध जमाया नहीं जाकर देवताओं को अर्पण करने की क्रिया।

वि० वि०—गाय ब्याहने के बाद कुछ दिनों तक उस गाय का दूध जमाने योग्य नहीं होता है। सात आठ दिनों के बाद जब दूध जमाने योग्य हो जाता है तब गाय का सूर्य पूजा जाता है और उस दिन गाय का सम्पूर्ण दूध पित्तरों को चढ़ा कर बाल-बच्चों को पिला दिया जाता है।

बेच्छाळ, बेच्छाल-स. पु.—एक प्रकार का कद विशेष।

उ०– सिगमंडी सीदूरीया, तिहां तंबिणि पालि। सहसमुखी सजीवनी, वच्छनाग बेच्छाल। —मा का. प्र.

बेछराय, बेछराय—देखो 'बहचराय' (रू. भे.)

बेछाड़– देखो 'वेछाड' (रू. भे.)

उ०—१ सहस तेरं असवार, सीह सादूळ समोसर। बीस गयद बेछाड़, निहस पावस गिर नीभर। —सू. प्र.

उ०—२ बंसारें चख बोळ, छकै आया बेछाड़ां। चढ सयद किर चढं प्रचंड कंठीर पहाड़ां। —सू. प्र

उ०—३ आका रीठ कुरीठ, बयड छोडे बेछाड़ां। इसा दीठ अवनाड, पीठ लै हलै पहाड़ा। —सू. प्र.

बेंज, बेंजको—देखो 'बेंज' (रू. भे.)

बेजड़—देखो 'बेजड' (रू. भे.)

बेजबान—देखो 'बेजबान (रू. भे.)

बेजबाल-वि. [फा. बे+अ. जवाल=पतन] जिसका पतन न हो, नष्ट नहीं होने वाला।

उ०—ईसवर निरंकुस है, चाहै स करे। खुदा इरादो करै अेक चीज को पैदा करै असबाब उसको। खुदा ताला री पातसाही बेजबाल है। अैतजादुल मुलक। —बा. दा. ख्यात

बेजांन—देखो 'बेजान' (रू. भे.)

बेजा-स. पु.—१ घोडे का एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमे घोड़े के अगले पैर या चारो पैर पीड़ित रहते हो। (शा. हो.)
२ देखो 'बेजा' (रू. भे.)

बेजागर—देखो 'बेजारा'।

बेजातांणा-स. पु.—ताना बाना।

उ०—कीडी कुंजर आद दे, सब जीव जहांणा, तु निराकार आकार मभ सरबंग समाणा। जेथी तेथी पेखियै, तु बेजातांणा, तुही एक तुं, हु ऐता जांणा। —केसोदास गाडण

बेजापता, बेजाब्ता—देखो 'बेजाब्ता' (रू. भे.)

बेजारा—देखो 'बेजारा' (रू भे.)

बेजारो-वि०—१ चतुर, होशियार।
२ देखो 'बेजारौ' (रू. भे.)

उ०—आळा गुयण री सामग्री ऐड़ौ कै नामी सु नांमी बेजारा नै ई मात करै। हाथ भर लांबी अर तीखी आळी। फूठरी अर भीणी गुथ्योड़ी। मांय दोय खण। —फुलवाड़ी

बेजु, बेजू—देखो 'बिज्जु' (रू भे.)

बेजोड़—देखो 'बेजोड' (रू. भे.)

बेजो—देखो 'बेजो' (रू. भे.)

बेज्ज—देखो 'बेद्य' (रू. भे.)

बेज्यास—देखो 'बेज्यास' (रू. भे.)

उ०—दिसापाळ भूपाळ त्यां छूट द्रढ्ढ, गिणै ओट सेवा तणी कोट गढ्ढ। गजै मेघ ज्यौं वेग नीसाण गाजैं, भयां भ्रास बेज्यास मैवास भाजै। —रा. रू.

बेझ, बेंझ, बेझको—देखो 'बेंज' (रू. भे.)

उ०—इसै मैं कुंवरसी आप असवार हुय आय पोहतौ, सो महाडोळ री पाखती आई लागौ। साम्हो जोवतौ वहै। महाडोळ री खोळी रै बेंझ कर भरमल देखै छै। कोस एक पुहचाय सारी जाब्तौ दे पाछौ घिरियौ। सो घिर घिर पाछौ देखें। —कुंवरसी सांखलारी वारता

बेझड़—देखो 'बेजड़' (रू. भे.)

बेझु—देखो 'बेझो' (रू भे)

उ०—१ सक्ति अपूरव सहज ऊहरांणी, दुगति दूर हरांणी। वांणी तेहिज बेझुं बेधइ, कीरति तास गवांणी रे। —वि. कु.

उ०—२ तरस्या जाई गज तुगे. परिहरि का प्रामाद। बेझुं विण वेधिउ रहइ, उत्तर एक सवाद। —मा. कां. प्र.

बेट—१ देखो 'बेठ' (रू. भे.)
२ देखो बेट' (रू. भे)

बेटीजणौ, बेटीजबो-क्रि स.—बकरी का गर्भ धारण करना।

बेटीजियोड़ी-स. स्त्री—गर्भ धारण की हुई बकरी।

बेटेरिनरी अस्पताल, बेटेरिनरी सफाखांनो-स. पु.—पशुओ का चिकित्सालय।

बेठ-स. स्त्री.—१ लपेटने की क्रिया।

२ देखो 'बेठ' (रू. भे.)

उ०—१ आंगण डोकर खोलड़ै, जिम बाघ वियायो, बाडौ वीधौ बेठ मा, घरतार गमायौ। क्या तेरा आगण किया, हमका घन भाएँ, आघ दिया हम वीरमा, सब धरती माए। —वी. मा.

उ०—२ बसती री हुवै बाम बेठ नह काढ़णी, कामेती उगाह मूंड मे हुवै घणी। बाकी किण री वीह खुसी व्है खेलणा, एता दै फिर-तार फेर नह बोलणा। —ख्यात

३ देखो 'बेट' (रू भे.)

बेठऊड़ौ-वि०—बेगार का कार्य करने वाला।

उ०—बेगार बेठऊड़ा हासल, पान चराई न देवै। चवरी माफ चहुँ देस मैं, जको बिस्णाई नहीं देवै। —साहबरामजी

बेठणौ, बेठबौ-क्रि० स०—१ लपेटना।

२ घेरा डालना, घेरना।

३ निभाना।

उ०—१ काछेल वेघ वढिया कलह, ग्रहण पाल पूरी गरत। बेठिया हता 'बूडै' विग्रह, आया जै 'पाबू' अरथ। —पा. प्र.

उ०—२ साभ मडोजे साकुरां, कमरा कसवाई, आफूगाळे ऊंचा अगा अडपाई। बाथोटे सह बेलिया, मनवार कराई विघ विघ थानै बेठिया, म्है खूद विमाई। —वी. मा.

४ सहन करना, सहना।

उ०—सोघता गिली अभिग्नरि, आहेडोइ काढो। चिरि राखण मन तेणि कीधूं, बेदन बेठी गाढी। —नळाख्यान

५ बेगार निकालना, बेगार का कार्य करना।

६ पालन-पोषण करना।

उ०—१ वीरमदे री छोटी भाई भीमसीघ किसडो हेक सिरदार। बेडा घोडा रजपुता रो बेठणहार। रजपूतवट रूपगा रो रिझवार। दातार जूझार। भाइजी रै सामो आवण री तयारी कीनी। —पत्ता

उ०—२ बेठै बेटा जेम वीदगा, करै मीढ भड अवर कसो। चारण वरण तणां राव चापा, जग सर तारण तरण जसो। —मेघराज आढो

बेठणहार, हारौ (हारी), बेठणियौ—वि०।

बेठिओड़ौ, बेठियोड़ौ, बेठयोड़ौ - भू० का० कृ०।

बेठीजणौ, बेठीजबौ—कर्म वा०।

बेठन-स. स्त्री.—१ लपेटने की क्रिया।

२ लपेटने का वस्त्र, लपेटन।

बेठियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ लपेटा हुआ. २ घेरा डाला हुआ, घेरा हुआ. ३ निभाया हुआ. ४ बेगार निकाला हुआ, बेगार का कार्य किया हुआ. ५ पालन-पोषण किया हुआ. ६ सहा हुआ, सहन किया हुआ।

(स्त्री. बेठियोड़ी)

बेठियौ—देखो 'बेठियौ' (रू. भे.)

बेड-स. पु.—१ वन, जगल।

उ०—सगतां री कीनी सुरह, बीच धरती बेड। कर आयो बूढै कह्यौ, खीची ठाकुर बेड। —पा. प्र.

२ कटीले पदार्थों (झाड़ियों) का बना हुआ मकान का अहाता, घेरा।

उ०—सरसा दळ सायर स क्रमतै, मळवा छळै माडियौ मेड। माभी मेर गयो दळ मुरडै, बड रहियौ काटा री बेड।

—दूदौ आसियौ

३ सीमा आखिरी छोर।

४ एक प्रकार का बन्धन विशेष।

५ देखो 'बेढ' (रू भे)

६ देखो 'बेंड' (रू भे.)

रू भे.—वेड।

बे'ड, बे'डको—देखो 'बेंड' (रू. भे)

बेडण-वि०—१ सहार करने वाला, नाश करने वाला।

२ तोडने वाला, विच्छेदन करने वाला, काटने वाला।

उ०—हूतो जाणू सगत, गढा जड मूळ उखेलण। हूतो जांणूं सगत बडा असुरा सिर बेडण। —पा. प्र.

रू. भे—वेढण।

बेडणौ, बेडबौ - १ देखो 'बेडणौ, बेडबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढणौ, वेढबौ' (रू. भे.)

बेडणहार, हारौ (हारी), बेडणियौ—वि०।

बेडिओड़ौ बेडियोड़ौ, बेडयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बेडीजणौ, बेडीजबौ—कर्म वा०।

बेडर-वि०—निशंक, निर्भय।

उ०—गिण छप्पय चा वरण लघु, त्या मज्झै दळ टाळ। आधा कीधा ऊबरे, बेडर नाम वताळ। —र. ज. प्र.

बेडली—देखो 'बेड़ी' (अल्पा., रू. भे.)

बेडलो—देखो 'बेढलो' (रू. भे.)

बेडांणी-वि०—१ दुष्ट, नीच।

२ देखो 'विडाणी' (पु.)

३ देखो 'वेदाणी' (रू. भे.)

बेडाक—१ देखो 'बंडाक' (रू. भे.)

२ देखो 'बेडौ' (मह , रू. भे.)

उ०—१ ब तोलै ऐराक, बोळग्ग खळ उबांबरौ। वीरमदे बेडाक, मेळ वचन नह मानिया। —गो. रू.

उ०—२ चौडै खळ घूहड लाखा चाक, वीरोळै लाख खळा बेडाक। खत्री गुर वीरम घूणै खाग, बीछूटो जांणय सांकळ बाग। —गो. रू.

बेडागर, बेडाणार—देखो वेढीगारौ' (मह , रू. भे.)

बेडागारी—देखो 'वेढीगारौ' (पु.) (रू. भे.)

बेडागारौ—देखो 'वेढीगारौ' (रू भे)

बेडागारौ—देखो वेढीगारौ' (रू. भे.)

बेडाय–स. पु.—१ सूवर, शूकर।

२ वीर, बहादुर, योद्धा।

बेडारोटी—देखो 'वेढारोटी' (रू भे.)

बेडाळ—देखो 'बेडाळ' (रू भे)

बेडावतो–वि०—१ जबरदस्त, जोरदार।

२ वीर, बहादुर।

बेडाहळ–स. पु.—मुसलमान, यवन।

बेडि, बेडिइं–म. पु.—१ बाग, बगीचा।

२ वन, जगल।

उ०—१ नयण ला म्रग नी उपमा किसी, हईइ हारिउं बेडि जई बसी। चरण चारिहि हस हरावती, वचनि जीणइ जीती भारती। -सालिसूरि

उ०—२ सूयारडव हूउ वाघ देवा, गिउ वेगि बेडिइं पुण कास्ट लेवा। द्रस्टिइं न दीसइ दिसि घलि गेली, तु आविली भीमिइ भडिअ मूली। —सालिसूरि

वि०—१ जगल का, जगली।

उ०—जिहा सिवा तणा फेत्कार, घूक तणा घूत्कार। व्याघ्र तणा घूरहराट, न लाभइ वाट नइ घाट। लाघता दोहिली छइ, चीत्रा बुरकइ, बेडि विलाउ घुरकइ। —सभा

२ देखो 'बेडी' (रू भे)

बेडियोडौ—१ देखो 'बेडियोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेडियोडी)

बेडियौ–स. पु —जट (बकरी या ऊट के बाल) को कातने के निमित्त उसकी बनाई हुई गेंडुरी नुमा पूनी।

बेडी–स स्त्री.—बकरी या ऊट के बालो को साफ कर कातने के निमित्त वृताकार बनाया गई गेंडुरीनुमा पुनी।

वि०—१ मस्त, मत्त।

२ कळहप्रिय, झगड़ालू।

३ वीर, बहादुर।

४ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—'केहरि' बेडी (वे) घग्ग, मज्जीठी मुहराइ। 'करन' 'कमौ' एकै मतै, बे ऊभा पडगाहि। —गू. रू ब.

५ देखो 'वेडि' (रू भे.)

उ०—वेताल किलकिलइ, दावानल प्रज्वलइ। रीछ साचरइ, वीरू-तणा यूथ विस्तरइ। बेडी रा साड भाहूकइ, ठामि ठांमि वन रा भइसा ढूकइ। —सभा

बेडीमणौ—देखो 'वेढीमणौ' (रू भे.)

उ०—ऊगती मोसरा दहायक अभावा, सीत वरसिया क गात रा सभ। मान रा वाळिया वचन बेडीमणा, ग्वळा गाळिया गरब गज-खभ। —राजुराम बारहट

बेडीवाहौ—देखो 'बेडीवाहौ' (रू. भे)

बेडूर–स. पु. [स. वैदूर्य] धूमिल रंग का एक प्रकार का रत्न या बहू-मूल्य पत्थर जिसे लहसुनिया भी कहते हैं।

बेडौ–सं. पु —खड्डा, गड्डा।

उ०—१ सु भ्रौ रोज नवी-नवी जायगा बरछी खोहै सु भ्रागणा मैं वेडा-वेडा हुय रह्या। ताहरा राणी एक दिन सात तवा लोह रा, सवा-सवा मण रौ एक-एक तवौ, कराय भर जठै सेतराम श्राय बंसतो तठै गचमे नवा गडाया। ऊपर बिछावणा बिछाया। —नैणसी

उ०—२ ताहरा सेतराम कही—महाराज ! हू बंठतो तठै बरछी गडती, सु दीसै छै ग्राज कोई म्हारी मसकरी कीवी छ तद राजा बिछावण परहा कराय देखै तो कासूं ? सारै ही वेडा-वेडा छै। —नैणसी

वि.—मस्त, मत्त।

बेडौळ—देखो 'बेडौळ' (रू. भे.)

बेढंग—देखो 'वेढग' (रू. भे.)

बेढगापण, बेढगापणौ—देखो 'बेढगापणौ' (रू. भे.)

बेढंगौ—देखो 'बेढंगौ' (रू भे.)

बेढ–स स्त्री. [स वेध] १ युद्ध, सग्राम, लडाई।

उ०—१ वेढ वडाई राजिया, सूरो दळ सिणगार। सेल घमंका सिर सहै, आवै जब इकतार। —अनुभववाणी

उ०—२ वळ जोधाण तणी दिस वळिया, भू लूटण टळिया सुज भिळिया। नाहरखांन नादिया मांहै, बेढ कमळ लीधौ खग बाहै। —रा. रू

उ०—३ उर थक्का बळवार विढण क्यूं वीसरै, लग्गा लोह लकीर ममता नीसरै। थाव फरूकै बेढ वलै नह वापरै, पाणा चढियां किलम जिकै 'परताप' रै। —किसोरदान बारहठ

उ०—४ रावळ भोजदे विजैराव लांजा री बेटी सूहवै घणी हुवो। निपट वडो रजपूत हूवो। कहै छै बरसा १५ तथा १६ 'री ऊमर मांहे 'पचास बेढ जीती हुती। —नैणसी

२ घर, गृह, धाम।

३ युद्धस्थल, रणभूमि।

उ०—बगसर भग्गा बेढ तज, सुंण बग्गा नीसाण। ताप उनग्गा तेग री, भर डग्गा भारांण। —किसोरदान बारहठ

४ योद्धा, वीर। (डि. नां मा)

५ एक प्रकार का आभूषण विशेष। (व. स.)

उ०—वीटी बेढ गाठोडा, वलि दीधा घणा घोडा। स्रावक स्राविका आवइ, मोती थालं वधावइ। —ऐ जै का. सं.

६ देखो 'वेढ' (रू. भे.)

रू. भे —वीढ, वेढ, वेढि, बेढी, बैंढ, वेड, वेढण, वेढि, वेढी, वंड, वैंढ।

अल्पा.,—वेढडी।

बेढक-स. पु.—युद्ध करने वाला, योद्धा।

उ०—१ मिरचै 'मुहकम' मारियौ, कर छळ मिळ अप्रकास। बेढक डेरै वज्जियै, पडिया सुहड पचास। —रा. रू.

उ०—२ मूरा 'अहूवाळ' सुजड हथ 'साडा', 'जैता' अगमल जैत्राई। कांधिल कळिमूळ सदा कळि चालण वैग वेढक वरदाई। —गु. रू. ब.

उ०—३ वड रावत जिकै वडा ग्रह बेढक, झडपै अरियण खडग झड। आया जुहार कुंअर गुर आगळि, भड कमधज लख अवर-भड। —गु रू. ब.

वि.—वीर, बहादुर।

उ०— जुध दुरंग दत चढिया जिना, खित पाड मुगळा खळा। बळ साह डोहि आयो दुभल बेढक रगियां बीजळा। —सू. प्र.

२ निशक, निर्भय।

३ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—ऊगतां भांण 'अगजीत' रा, बेढक भड अरिखड बना। सांमुहा आया भारथ सभण, एक उतन रा ऊपना। —सू. प्र.

रू. भे.—बेढक, बैंढक।

अल्पा.,—बेढको, बेढको।

बेढको—देखो 'बेढक' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—'कूपा' 'राम' सकज्ज, जैतधारी 'जैतावत'। बाथ फता बेढकां वीरवीराध 'विजावत'। —रा. रू.

बेढगरो, बेढगारो—देखो 'वेढीगारो' (रू. भे.)

उ०—'बखतेस' 'खळा' सिर बेढगरो, हर कांकण सी 'अमरेस' हरो। संग 'रांम' 'रुघै' 'जैसिह' सही, गज रूप सझै रिम टेक ग्रही। —रा. रू.

बेढड़ी—देखो 'बेढ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वडा पतिसाह करि किलंग सा बेढड़ी, महमहण हूमै पिरिणी-जिवै मेघडी। आजि रै बाधियो कडी तरगस अभिगि, प्रिथी रै धिणी ससमाथ चडियौ पविगि। —पी. ग्र.

बेढण—१ देखो 'बेढण' (रू. भे.)

२ देखो 'वेढ' (रू. भे)

बेढणबाई-सं. स्त्री.—[देश.] व्यर्थ की बाते करने वाली स्त्री।

बेढणो, बेढबो—क्रि. स १—युद्ध करना, सग्राम करना।

२ सहार करना, नाश करना।

३ काटना, विच्छेदन करना।

४ युद्ध मे मरना, वीरगति प्राप्त होना।

उ०—तिनरइ नाथू डोड डूगर वागडी कहइ छइ—इसउ नहीं हो ठाकुरै! इसउ कीजइ-गळइ सात सइ साळिग्राम तुळसी की माळा घातिजइ, अचळेसर का आवास थइ लोहडउ करतां करतां गोरी-राजा का गूडरहइ जाइजइ, जितरा जितरा पग दीजइ तितरा-तितरा अश्वमेध जग्य का फळ लीजइ। इणि विधि जोबण बेढिजइ तउ सूरज मंडळ भेदिजइ। —अ. वचनिका

बेढणहार, हारो (हारी), बेढणियो—वि०।

बेढियोड़ो, बेढियोडो, बेढयोडो—भू० का० कृ०।

बेढीजणो बेढीजबो—कर्म वा०।

बेढणो बेढबो, बीडणो, बीड़बो, बेड़णो, बेड़बो, बेढणो, बेढबो, बंडणो, बंडबो, बैंढणो, बैंढबो—रू. भे.।

बेढब—देखो 'वेढब' (रू. भे.)

बेढमण—देखो 'वेढीमणो' (मह, रू. भे.)

बेढमणो—देखो 'वेढीमणो' (रू भे)

बेढमल, बेढमल्ल—वि०—युद्ध का उस्ताद, युद्ध मे निपुण एवं दक्ष योद्धा, वीर।

रू भे.—बेढमल, बेढमल्ल, बेढीमल बेढीमल्ल, वेढीमल, वेढीमल्ल, वैंढमल, बैंढमल्ल, वैंढीमल, वैंढीमल्ल।

बेढमी-स. स्त्री.—एक प्रकार की रोटी विशेष।

उ०—............खाड मांडा, पूरण मांडा, कुडकरा मांडा, पत्र-वेटिया मांडा, आकासिया मांडा, आछा मांडा, खाटउ चूरिमउ,

गुलिउ चूरिमउ, प्रधान पनोली, रोटी बाटी, ठोठि भ्रंगार करि वेढमी, मरूयाडिनी पचधार लपनसी, सुदलित सुललित वरनारि परीमी। —व स.

रू. भे.—वेढिमी, वंढमी।

वेढलो-स. पु.—१ स्त्रियो के कान के ऊपरी भाग मे पहनने का आभूषण विशेष।

२ कुत्तो के कानों मे पहनाया जाने वाला आभूषण विशेष।

उ०—जिका री मूछहथ मोहनाळ हाथ भर नस, वड रै पान जिसा कान, ताजणासेद पूंछ नाहरसा पजा बाघ सी आख, पातळी लीक जाडै आठ। इण भात रा कुत्ता। चनाती पटा, रूपै री भवरकडी रेगमी डोर, काना मे रूपै सोनै रा वेढला, गलै मे निजर रा ताइत। —रा सा स.

रू. भे.—वेडलो वंढलो।

वेढमाणो—देखो 'वेढीमणो' (रू. भे.)

उ०—विढण नमो नेठाह हथवाहा वेढीमणा, रीत सराह दोय राह रोधा। वडा खळ आदरा अवंक वेढांमणा, करै जुध पाधरा सणंक कीधा। —सेरसिह रो गीत

वेढागार, वेढागारी, वेढागारो—देखो 'वेढीगारो' (रू. भे)

वेढारोटी-सं. स्त्री.—एक प्रकार की रोटी विशेष।

वि. वि.—गेहूं के कम आटे के लौंदे को रोटी की तरह वेल कर उस पर गीला-गीला नमकीन पदार्थ फैला दिया जाता है और किनारो को थोडा-थोडा उलट कर चौकोर बना दिया जाता है। फिर थोडी देर सुखा कर तेल अथवा घी मे तल दी जाती है।

रू भे.—बेडारोटी, बेढारोटी, मेडारोटी, मेढारोटी, वेडारोटी।

वेढिगर, वेढिगरो-वि०—१ वीर बहादूर।

२ जबरदस्त, जोरदार।

उ०—बे तरफ भड वेढिगरा, जूटा हगामी जंग रा। धम मसक धरणी कसक कूरम, ससक नासा सेस। —र रू

३ देखो 'वेढीगारो' (रू. भे.)

वेढि—देखो 'वेढ' (रू. भे.) (ह ना मा)

उ०—१ हीदू तुरक पडइ पोसाता, नित नित वेढि ऊतारइ। नितु ऊठवइ एकमना राउत रोसि चडधा रणि मारइ। —का दे. प्र.

उ०—२ गुरुदेव सुमति समापि गुण, भुअपनिअ जेम 'रतन्न' भण। पित जासु 'महेस' नरेस परं, गढ वेढि लिअी जिणि देवगिरं।

—र. वचनिका

उ०—३ जई प्रधानि खान वीनविया, हीदू वेढि करेसइ। खान मणइ सहूइ सज थाउ, पछवा दाउ देसइ। —का. दे. प्र.

वेढिमी—देखो 'वेढमी' (रू. भे)

उ०—हासा गहु, काठा गहुं, जालिया गहु, वाजिया गहुं, वासिया गहुं. एतलै प्रकारै गहु ना माडा,. तै किम ? खांडमाडा, पूरणमांडा, आछा माडा, करकरा माडा, आकास मांडा, एतली पडसूदीना माडा। लहचूई पोली, खूबी रोटी, वारू वडा, वेढिमी, वडा तो केहवा छइ ? —व. स.

वेढियोडो—भू० का० कृ०—१ युद्ध किया हुआ, सग्राम किया हुआ. २. महार किया हुआ, नाश किया हुआ ३ काटा हुआ, विच्छेदन किया हुआ. ४ वीरगति प्राप्त।

(स्त्री. वेढियोडी)

वेढी—१ देखो वेढि' (रू. भे.)

२ देखो वेरी' (रू भे.)

३ देखो वेढ' (रू भे)

वेढीगार वेढीगारी वेढीगारो-स. पु.—युद्ध करने वाला, योद्धा।

उ०—'बखतौ' अगळी वेढीगारां, 'जगपत' हरौ तिलक जूझारा। भाटी जोधा मुहर भुजाळी, 'सकतौ' 'भगवानोत' सिघाळी।

—रा. रू.

वि० १ वीर, बहादुर।

उ०—१ मछराळा मूछाळ, वेहद हद वेढीगारा। सुर भग्गा लख वार, प्रथी इक छात्रप मारा। —मा वचनिका

उ०—२ पाजा लोप सीधू जीउ अराबा व्हे अवाजा पूर, मातगा गराजा घुर जठी माजा मोह। मारहटा मैनह मचायो ताजा जोस माथै, वेढीगारै राजा भीम काजा चकाव्रोह। —हुकमीचद खिडियो

उ०—३ कळहळ काढिया छणकारा कडिया, नेडो घुरै नगारो। आयो पीव काळ अणचीतो, 'रामडो' वेढीगारो।

—ठा. रामसिघ बिलाडा रो गीत

२ शक्तिशाली, बलशाली।

उ०—१ साकै नही सधीर, दिन उगै पसरा दियै। वहै अरोडा वीर, वेढीगारो राठवड। —गो. रू.

उ०—२ जोईया मिलै जीयार, कथन दळा' हूता कहै। मारै छै कायमार, वेढीगारो राठवड। —गो. रू.

रू. भे.—बेढीगार, वेढीगारी, वेढंगारो, वेडागर, वेडागार, वेडागारो, वेडागारो, वेढागर वेढागार, वेढागारी, वेढागारो, वेढिगर, वेढिगरी, वेढगरो, वेढगारी, वेढीगार, वेढीगारी, वेढीगारो।

वेढीमण, वेढीमणो, वेढेमणो-वि०—१ वीर, बहादुर।

उ०—१ दरव्वीर 'खूमाण' वीगधवीर, कलीमूळ 'सादूळ' वंवै कठोर। भलो भीच कल्याणमल्लो भुजाळो,' मानावत' वेढीमणो मच्छराळो। —गु. रू. ब.

उ०—२ अेकले भुजां दहूं छ खंड घातै अवर, दस दिसा वजै जस तणौ डाकौ। 'माल' हर 'वीर' हर पछै वेढीमणं, 'सूर' हर तीसरौ कियौ साकौ। —नरहरदास बारहठ

उ०—३ चालसी जुध गयण धोम वेढीमणौ, मुगला गाळमी जोम मेढीमणौ। तरह लकाळ सी घाट तेढीमणौ, बाळमी क्या कमर वाट वेढेमणौ। —बदरीदास खिडियौ

२ जबरदस्त।

उ०—जळचर वनचर आतरौ, जळचर जळ मे जोर। वनचर अति वेढीमणौ, जो कछु लाभै कोर। —गज-उद्धार

३ शक्तिशाली, बलशाली।

उ०—विढण नमौ नेठाहु हयवाह वेढीमणा, रीत सराह दोय राह रीधा। वडा खळ आदगा त्रबक वेढामणा, करै जुध पाधरा सणक कीधा। —सेरसिह रौ गीत

४ युद्ध करने वाला, युद्ध प्रिय, योद्धा।

उ०—वडा गहलोत मत्र मालम वसू, धार चढ धोळहर जेम ढळियौ। 'मुकन' री सुधारै मौत वेढीमणा, 'भीमडा' परम री जोत मिळियौ। —भीमा गहलोत रौ गीत

रू. भे.—वेढीमणौ, वैढीमणौ, वेडीमणौ, वेढमणौ, वेढामणौ।

मह०,—वेढमण, वेढमण, वेढमण, वेंढमण, वेंढमणौ, वेढीमण, वेंढीमणौ।

वेढीमल, वेढीमल्ल—देखो 'वेढमल' (रू भे.)

वेण-स पु.—१ सूर्यवशी राजा प्रथु के पिता का नाम।

२ बास का वृक्ष या बास। (ना. मा., ह ना. मा)

उ०—ताल माल मालिका बकुल कुबजक खरजूरी, बोलसरी माधुरी निगर भर हरी सनूरी। कुमुद ढाक कल्हार वेण कचनार विराजै, सोन जाय पल्लव असोक सुर धाक सु साजै। —रा. रू.

३ सेना, सेन्यदल।

४ नाक मे पहनने का आभूषण विशेष नथ।

उ०—आदू मजन कग्घि पाट पेहरै देही दळ। नयणे कजळ रेख, तिलक कुकम भाळीयण। वर्णं कान ताटक, वेण नासा मोतीहळ। हार उर चदन विलेप, रची काकण कटि मेखळ। —गु. रू. ब.

५ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—१ पीहर तूठी डुंबणी, राग आलापै तेण। ढोलौ मारू ऊगरै, कहि समझावै वेण। —ढो. मा.

उ०—२ ठग कांमेती ठोठ गुर, चुगल न कीजै सेण। चोर न कीजै पाहरू, ब्रहसपती रा वेण। —बां. दा.

उ०—३ होवै सुविनीत सेणा रे। धारै गुरु वेणा रे। जैसी ढलती छाया रे। राखै प्रीत सवाया रे। —जयवांणी

उ०—४ जीहो काया माया कारमी, जीहो जेसौ सुपनौ रेण। जीहो विणसता देर लागै नही, जीहो मानौ सतगुरु वेण। —जयवाणी

उ०—५ आदू अखई मोहुतौ दूहौ कहै राजा वेचू नही तौ ओखौ लाग मिळू ' पण घोडौ उराठौ छै। रवियाग चद, ऐराक वीजै वडवोज, प्रात गाज, सापुरस वेण, पहिली तौ लहवाय लहवाय पीछे गरवाय गरवाय। —हाहुल हमीर री वात

उ०—६ सुदर सर असुरह दळै, जळ पीयौ वेणेह। 'ऊदै' नरयद काढियौ, तन नारी नयणेह। —उदैसो अरसी री गीत

६ देखो 'वीण' (रू भे)

उ०—१ उभा मोरली नाद लीधै अधुरै, मारौ जागसी साम वादै मधुरै। विकसै हसं वेण ऊचौ बजायौ, सपत्तै पताळै सुरगै सुणायौ। —ना. द.

उ०—२ छुटै साथ जाणै अमीद्धार लीधौ, किणौ वेण नाद सजीवन्न कीधौ। विजोगौ सजोगौ वज वेण वायौ, प्रभू आपरी जाण अम्रत्त पायौ। —ना. द.

७ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—नोबत तेर तूर नीग्रसे, वह बांवण बहु जस बहसे। वेण ताळ मिरदग वजावै, मीत नाद गुण गध्रव गावै। —रामरासौ

८ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

९ देखो 'वहण' (रू. भे.)

रू. भे.—वेणु, वेणू, वैण।

वेणका—१ देखो 'वीण' (अल्पा., रू. भे)

२ देखो 'वीणा' (अल्पा., रू भे)

उ०—वळकुळै ईस नारद वजै वेणका, वमळ अह बळचळै जोस काथै। मूंग थाळी जुई वळै खळ महीसर, 'मान' हर मळै दळ केण माथै। —मेगराज आढौ

३ देखो 'वेणी' (अल्पा., रू. भे.)

वेणचि, वेणची—देखो 'वेणची' (रू. भे.)

वेणरावमुनि-स पु.—नारद मुनि का नाम।

वेणसुत—देखो 'वेनसुत' (रू. भे.)

वेणा-स स्त्री.—१ भारत मे बहने वाली पर्णासा नामक नदी जो कृष्णा नदी मे जाकर मिलती है।

वि० वि०—यह नदी वरुण की सभा मे रह कर उनकी उपासना करती है। इस नदी के तट पर तीन रात उपवास करने से मनुष्य

मोर एवं हंस युक्त विमान से स्वर्ग जाता है। इसी नदी के तटवर्ती जनपद के राजा को सहदेव ने दक्षिण दिग्विजय के समय पराजित किया था।

२ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

३ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

बेणाट—सं. पु.—प्राचीन कालीन भारत के दक्षिण का एक छोटा प्रदेश जो अब केरल का तिरूवितांकर हिस्सा बन गया है।

बेणापाणि, बेणापांणी—देखो 'वीणापांणी' (रू. भे.)

बेणि, बेणिका, बेणी—सं. स्त्री. [सं.]—१ स्त्रियों के बालों की गूंथी हुई चोटी।

उ०—१ डंमरा बीज दाडंम, बेणि बासग भुयंगम। भटियाणी बर कमध, समद. गंगा नदि सगम। —गु. रू. बं

उ०—२ बर्णो भुजग रूप बेणि, मग 'सीस मोतियं'। प्रजा लजे न छत्र पांति, जोय तास जोतियं। —सू. प्र.

उ०—३ सिरि बेणी सिरली असी, जाणइ वासिग नाग। बीहता मारइ बंभणइ, किधु ताहरू त्याग। —मा. कां. प्र.

उ०—४ रतन मे राखड़ी बेणी बासग जड़ी, सूभरा वांहडी लहक लोडं। स्वाति नो बिंदलो नासिका निरमयौ, आजु आल्यगन करन कोडं। —रुकमणी मगळ

२ कलाई, मणिबंध।

३ नदी का प्रवाह।

४ गंगा नदी का नाम।

उ०—जळं चंद्र मिळी थाई जगचख, रेणायर सासतौ रहै। जयमाल हत जाइ छाडे जुध, बेणी जळ उपराठ वहै।

—रांमदास राठौड़ मेडतिया रो गीत

५ शाकद्वीप की एक नदी का नाम।

६ देखो 'त्रिवेणी'।

७ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

८ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—१ पुण्यइ मयगल बारूइ बारि, पुण्यवत भुज नावइ हारि। पुण्यइ हुइ नित नवला रंग, पुण्यइ सुणीइ वेणि म्रदग। —का. दे. प्र.

उ०—२ गढ ऊपरि नितु हुइ पेखणा, सुणीइ वेणि म्रदग। नितु उछव नितु पाउल नाचइ, नितु नितु नवला रग। —का. दे. प्र

९ देखो 'वहणी' (रू. भे.)

१० देखो 'बेणीस्कंद'।

रू. भे.—बेण, बेणि, बेणी, बैनी, बैणी, वीणि, वीणी, वेण, वेणु, वेणु, वेनी, वैण, वैणि, वैणी।

अल्पा.—बेणका, वेणका।

बेणीडंड, बेणीदंड—सं. स्त्री.—स्त्रियों के बालों की गूंथी हुई चोटी।

उ०—१ चंदवदन ऊपरि घटा रे, सोहै बेणीडंड रे रग। (अब) अणानयनी उपरइ रे, बांध्यो जाल प्रचंड रे। —प. च. चौ.

उ०—२ बेणीडंड जिसउ विराजइ बासउ, पिंड उदमाद धरत पाव। ग्रल ताइ बंद तणइ बिलागइ, ग्रल लइतउ घणाइ ग्रल राव। —महादेव पारवती री वेलि

रू भे.—बेणीडड, बेणीदड, वेंणडड, वेंणदड, वेंणीडड, वैणीडंड।

बेणीफूल—स पु.—स्त्रियो के सिर का आभूषण विशेष।

रू. भे.—वेणीफूल।

बेणीमाधव—स पु.—प्रयाग मे स्थित श्रीविष्णु भगवान का एक प्रसिद्ध स्थान।

उ०—सध्यावट हेटं हणूमान पौढं है, बडी मूरत है। बेणीमाधव प्रमुख चवदं माधव है प्रयागं। सरस्वती कूप रो ळल लाल है प्रयागं। लोपामुद्रा दोय देवी प्रयागं। —बां. दा ख्यात

बेणीस्कद, बेणीस्कध—स. पु [स. वेणीस्कन्द] जन्मेजय के सर्पसत्र मे दग्ध कौरव्यकुलोत्पन्न एक नाग।

बेणु—स. पु.—१ शतजित् राजा का पुत्र, एक राजा।

२ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—१··· ·····एकि वीणा बेणु म्रदग यमल सख पटह कसालप्रमुख अगुणपचास वादित्रस्वर माभलावइ मधुर, एकि तिलकु बकुल असोक चपक कुद मचकुदादि पुस्पप्रकर सपानुडइं प्रचुर, एकि दीवानी परि उद्योत करइ········ ·· । —व. स.

उ०—२ रली रग राग नाना विधि, मुनि-मडळ के छाजै। पति सूं प्रीति जीत गुण दूजा, बेणु गगन मे बाजै। —ह. पु. वा

उ० - ३ दादू रग भर खेलू पीव सौ, तह बाजं बेणु रसाल। अकल पाट पर बैठा स्वामी, प्रेम पिलावै लाल। —दादूवाणी

३ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—पटुपटह म्रदग करडि मरद्दल बेणु तलिमताल कंसाल झल्लरि भेरि मदनभेरि जयभेरि भरहभभ हडुक ढक्क बुक्क भंबक काहल काहली वरगा प्रभृति वादित्र। —व. स.

४ देखो 'वेण' (रू. भे.)

५ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

रू. भे.—वेणु, बेणू, वेनु, वेनु।

वेणुजंघ–स. पु. [सं.] युधिष्ठर की सभा में उपस्थित एक प्राचीन महर्षि।

वेणुदारि–स. पु. [स.] अक्रूर (बभ्रू) की पत्नी का हरणकर्त्ता एक यादव जिनके पुत्र को कर्ण ने अपने दक्षिणदिग्विजय के समय हराया था।

वेणुदारितक—श्रृंगार मे एक प्रकार का आसन विशेष।

रू. भे —वेणुविदारित।

वेणुमंडळ, वेणुमडल–स. पु. [स. वेणुमण्डल] कुशद्वीपीय एक भाग।

वेणुमंत—देखो 'वेणुमान'।

वेणुमती–स. स्त्री. [सं.] पश्चिमोत्तर देश की एक नदी। (पुराण)

वेणुमान–स. पु. [स वेणुमान्] १ एक वंश। (पुराण)

२ एक पर्वत का नाम। (पुराण)

वेणुवन–स पु. [स.] राजगृह मे स्थित एक उपवन का नाम, जहाँ राजा बिबसार के समय गौतम बुद्ध ठहरे थे।

वेणुविदारित—देखो 'वेणुदारितक' (रू. भे.)

वेणुवीणाधरा–स स्त्री. [स.] कुमार कार्त्तिकेय की एक अनुचरी।

वेणुहय–स. पु [स] वेणु राजा का नाम।

वेणुहोत, वेणुहोतर, वेणुहोत्र–स पु [स. वेणहोत्र] वीतिहोत्र राजा का नाम जो धृष्टकेतु राजा का पुत्र एव गार्ग्य का पिता था।

वेणू—१ देखो 'वीण' (रू. भे.)

२ देखो 'वीणा' (रू. भे)

३ देखो 'वेण' (रू. भे.)

४ देखो 'वेणी' (रू. भे)

वेणो–स. पु'—१ सोने-चांदी के आभूषणो पर खुदाई के काम मे कुछ गहरे खड्डे (छेद) करने का लोह का एक औजार विशेष।

२ बढई का एक औजार विशेष।

३ देखो 'वहणो' (रू. भे.)

४ देखो 'वोणो' (रू. भे.)

रू. भे.—वेणो।

वे'णो, वे'बो—देखो 'वहणो, वहबो' (रू भे)

उ०—अलग राख आरोह, तसा कपडा वेंनोडा। खरहंड नासा खाव, रजक प्याले अण रोडा। —पा. प्र.

वेण्या, वेण्वा–सं. स्त्री. [स] विन्ध्य पर्वत मे निकली हुई चौदह नदियों मे से एक।

वेतंड—देखो 'वितंड' (रू भे.)

उ०—धर ऊभी वेतंड साहण सिंगार नू आवतो देखि साम्हों हालियौ। इण रीति दो ही गजा आप आप रा कलावा सू आधोरणां नू उडाय रोस मैं अध होय समीप आवता ही लोयण (नेत्र) मिळाया। —व. भा.

वेत–स. स्त्री.—१ बूंदी एव चितोड के बीच के पठार से छब्बीस मील दूर बहने वाली नदी।

उ०—तिण वेत नदी ऊपर वडो जगळ छै। तिण मे ढोब, करड़ री वडो ऊगम छै। तिका ठोड जोय आया। जाणियो माहरी हमम थाड अठं चरसी। —नैणसी

२ देखो 'बेंत' (रू. भे.)

३ देखो 'वेत' (रू भे.)

उ०—१ थें किलं मे संचो सताब करजे। हू वेत लागिया आयस्यूं। —गोपाळदास गोड री वारता

उ०—२ तठै आगै बाग आयो। देखनै मांहि ऐठा मल फल-फूल खाया, पिण बाग मैं जावतो घणो दीठो। तठै तो पिण हीरण वीचारियो–जो आ जागा भली छै, मारो चारो पिण मोकळो छै, पिण दिन रा तो वेत लागै नहीं, अबै रात रा चरवा नै आवस्या। —रीसालू री वात

उ०—३ पुरसह-मल्ल बाहा पलंब, 'ईदा' हर राखै रूकि अब। वर-वीर धीर सुरताण वेत बाखाण चौरासी वीर-खेत। —गु. रू. ब.

४ देखो 'बेंत' (रू. भे.)

५ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

वेतकल्लुफ—देखो 'बेतकल्लुफ' (रू. भे.)

वेतकल्लुफी—देखो 'बेतकल्लुफी' (रू भे.)

वेतधर—देखो 'बेतधर' (रू. भे)

वेतड़—देखो 'बेतड' (रू. भे.)

वेतन–स. पु [स] कुछ निश्चित समय तक प्राय: एक मास तक काम करने के बदले दिया जाने वाला धन या पारिश्रमिक, तनख्वाह।

उ०—मान देई राखियु, सुखिया अस्व अनेकि। दस सहस्र वेतन परिठयुं, नि मुल्य कोधु एक। —नळाख्यान

वेतनभोगी–वि०—वेतन लेकर काम करने वाला।

वेतमीज—देखो 'बदतमीज' (रू. भे.)

वेतमीजी—देखो 'बदतमीजी' (रू भे)

वेतर—१ देखो 'बेतरू' (रू. भे)

२ देखो 'व्यंतर' (रू. भे.)

उ०—एक रूळ'दा मारकर, कोई मल कहावै, वेतर भूत आराध कर, कोइ देव मनावै। डाकण का मत्र सीख कर, कोइ साध कहावै, आंख्यां आंधा होय कर. कोइ वाट बतावै। —केसोदास गाडण

बेतरणी-सं. स्त्री.—१ दर्जी द्वारा कपड़े का माप लेने की क्रिया।

२ देखो 'बेतरणी' (रू. भे.)

बेतरह—देखो 'बेतरह' (रू. भे.)

बेतरु, बेतरू-स स्त्री.—वह गाय, भैंस, बकरी आदि मादा पशु जो निकट भविष्य में शीघ्र प्रसव करने वाली हो।

रू भे.—बेतर, वैतर।

बेतलब—देखो 'बेतलब' (रू. भे)

बेतलबी—देखो 'बेतलबी' (रू. भे.)

बेतस-स. स्त्री. [सं.] १ जंभीरी, बिजौरा।

उ०—बालु नइ वेलातरु, वेऊ बेतस वाणि। बघारु बाहलु लीउ, बाउलीउ बखाणि। —मा. का. प्र.

२ देखो 'बेतसु' (रू. भे.)

रू. भे.—बेतस।

बेतसवन-स. पु. [सं] एक प्राचीन तीर्थ, जहां मृत्यु ने तपस्या की थी।

बेतसिका-स. स्त्री [स.] वह तीर्थ जिसकी सेवा ब्रह्मा ने की थी। इस की यात्रा करने से मनुष्य को अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

बेतसिनी-स. स्त्री [स.] एक प्राचीन नदी का नाम। (पुराण)

बेतसु-स. पु [सं.] एक दानव, जिसका वध इन्द्र ने किया था।

बेता—देखो 'वेता' (रू. भे.)

बेताब—देखो 'बेताब' (रू भे.)

बेताबी—देखो 'बेताबी' (रू. भे.)

बेतार—देखो 'वेतार' (रू. भे.)

बेताळ, बेताल-स. पु. [सं.] १ भूत-प्रेतों की एक प्रकार की योनि विशेष। (पुराण)

उ०—बेताल भीसणाकार, मुखि करता फार फेत्कार, कृतांतावतार मुखि मेल्हतउ झाल, हस्ति बेता ताल, इस्या ऊछलिआ बेताल। —व. स.

२ वह शव जिस पर भूत-प्रेतों ने अधिकार कर लिया हो।

३ बंदीजन, भाट।

४ देव विशेष।

५ द्वारपाल, दरबान।

६ युद्धप्रिय देव।

उ०—१ ब्रहमंड किना फुट्टो वळे, घसक तळातळ थानळे। मुखे हसे सकति महाबळ, बेताळा कुळ व्याकुळे। —मा. वचनिका

उ०—२ भीकोतरि सक्कणी प्रेत डक्कणी अपारा, विवध भूत बेताळ घोर पळचर विसतारा। गिरध चील गोमायु विरक जबू रसवाया, काक कक की गिरणि आसपळ संभळ आया। अछरां स्रगार धरि ऊमही, हूरां हरखि उचारियौ। महि गयण संग खेलां मिळे, आगम जंग विसारियौ। —रा. रू.

उ०—३ हुए हक्क सूरां उठी मेर हक्कां, करें भूत बेताळ चडी किलक्का। करें जोर प्राहार वेपार कुंता, दिपै जुद्ध जाणें भ्रगू सिभू दूता। —रा. रू.

७ छप्पय छन्द का एक भेद विशेष, जिसमें ६५ गुरु व २२ लघु, कुल ८७ वर्ण वा १५२ मात्राएँ होती हैं।

८ देखो 'वेताळ' (रू भे.)

रू भे.—बैताळ, बइताळ, वेयाळ, वेयाल, वैताळ, वैताल, वैताळी।

बेतालजननी-स स्त्री [स] कुमार कार्तिकेय की एक मातृका।

बेताळभट, बेतालभट, बेताळभट्ट, बेतालभट्ट-स पु—एक प्रसिद्ध ब्राह्मण पंडित।

बेताळिक—देखो 'वैताळिक' (रू. भे)

बेताळीस, बेतालीस—देखो 'बयाळीस' (रू. भे)

बेताव—देखो 'वेताव' (रू. भे.)

बेतुंड—देखो 'वितंड' (रू. भे)

बेतुको—देखो 'बेतुको' (रू भे)

(स्त्री बेतुकी)

बेत्ता-वि० [स] ज्ञाता, जानकार, तत्ववेत्ता। (अमरत)

स पु—पंडित, कवि।

रू. भे.—वेता।

बेत्रकीयवन-स. पु. [स.] वह वन जहां भीम ने बकासुर का वध किया था।

बेत्रकूट-सं पु. [सं.] पुराणानुसार हिमालय की एक चोटी का नाम।

बेत्रगंगा-सं. स्त्री. [स] हिमालय से निकलने वाली एक नदी का नाम।

बेत्रवती-स. स्त्री. [स] परियात्र नामक पर्वत से निकली चौदह नदियों में से वेतवा नामक नदी।

उ०—विदिसा जग विख्यात राज री नगरी जातां, सगळा भोग विलास पावसी प्रीत जतातां। बेत्रवती जळ पीय लहरतौ घण गरजतां, ज्यूं मुख भौंह विलास अधर घण पान करतां। —मेघ

बेत्रहा-सं पु. [सं वेत्रहन्] देवराज इन्द्र का एक नाम।

बेत्रासन-स. पु. [स] बेंत का बना हुआ एक प्रकार का आसन विशेष।

बेत्रासुर-सं पु. [स.] १ यमुना नदी में मिलने वाली बेत्रवती नदी के गर्भ से उत्पन्न सिंधुद्वीप नामक राजा का पुत्र, प्राग्ज्योतिषपुर का राजा एक प्रसिद्ध असुर, जो इन्द्र के द्वारा मारा गया था। (पुराण)

२ देखो 'वत्रासुर' (रू. भे.)

रू. भे.—वैनासुर।

बेंभिक—स. पु. [सं.] १ प्राचीन भारतीय एक जनपद।

२ उक्त जनपद का निवासी।

बेंयळियौ—देखो 'बेयळियौ' (रू. भे.)

बेंयाग—देखो 'बेयाग' (रू. भे.)

बेंयी—देखो 'बेयी' (रू. भे.)

उ०—कितरा एक दिन रावजी असमाधिया रहि अर बैकुंठ सिधाया। उठे राजा भारमल पणि बेंकुठ सिधाया। बिहू राजविया दिन आठ बेंयी हुई। अोथि राजा भगवतदास नूं टीको हुयो। —द. वि.

बेंरंग—देखो 'वेदरंग' (रू. भे.) (नां. मा)

बेंरंड—देखो 'वितुंड' (रू. भे.)

बेंवत—१ देखो 'बेद' (रू. भे.)

२ देखो 'वेदांत' (रू. भे.)

बेद—स. पु. [सं.] १ धार्मिक या आध्यात्मिक विषय अथवा किसी विषय का सच्चा एवं वास्तविक ज्ञान।

२ भारतीय आर्यों के सर्वमान्य वे चार ग्रन्थ जो मनुष्य रचित नहीं है बल्कि ये ब्रह्मा के मुख से निकले हुए माने जाते हैं, श्रुति।

उ०—१ बेद चव भेद खट तरक नव व्याकरण, वळै खट भाख जीहा वखाणे। भात पौराण दस आठ पिंगळ भरथ, जगत जुगता तणा भेद जाणै। —र. ज. प्र.

उ०—२ पह तिलक कीध कुंकम सु पाणि, मोतिया अक्षत चाढे प्रमाणि। जस जोतख द्विज लिखत जत्र, मुख पढत महा द्विज बेद मंत्र। —सू. प्र.

उ०—३ प्रथी करण थिर बेद पुराण, करम जिको बळ हीण कुराण। यौं जग मैं रवि वंस उजागर, प्रगटे भूप रूप परमेस्वर। —रा. रू.

३ भगवान् श्री विष्णु का नाम।

४ ईश्वर, परमेश्वर।

उ०—१ नमो कामणी बेद माया कुमारी, नमो संहस नैणी प्रबोधा संसारी। नमो सेसकंठी नमो सीळ सामा, नमो भूचरी खेचरी रुद्र भामा। —मा. वचनिका

उ०—२ लोक बेद को डर नहीं, रस भीना दिन राति। कांमी प्रेमी हरि भगत, नहीं सूझै दिन राति। —परमानंद वणियाळ

५ जय जयकार की ध्वनि।

६ ज्ञान।

उ०—१ अनहरिया ज्युं नांव धो, अंन पाणी ज्युं बेद। जे कोई न्यारो जाणिसी, जिन कुं आयो भेद। —अनुभववाणी

उ०—२ भामी घरि आया, भाव नचाया, सहुचां मुख सिवरंदा है। रग रग आरभा, भया अचभा, कुसम बेद भणंदा है। —अनुभववाणी

७ चार की संख्या। * (डिं. को.)

उ०—भणि तेरहसौ छासठि भेद, विगति मात्र सोलह ध्रू बेद। आखर लघू गुरु इगिआर, वर्दा सुभकर छद विचार। —ल. पिं.

८ तीन की संख्या। * (डिं. को.)

९ छन्द।

१० एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—रिण तूर पयच-सब्द बेद रडै, गयणाग क अंबनिधि गरडै। ढळकै गज-ढाला दूहरियं, घनडा सिरि जाणक अच्छरियं। —गु. रू. बं.

११ योग, जोड़।

१२ मागणियार मुसलमानों की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति। (मा. म.)

१३ नाईयो की शाखा जो हजामत के धन्धे के साथ-साथ मरहम पट्टी आदि कुछ वैद्यगी का काम भी करती है। (मा. म.)

१४ उक्त शाखा का व्यक्ति। १५ भृगु के कुल में उत्पन्न एक मत्रकार। १६ सिंधुद्वीपराजा का भाई जो शिव भक्त था। १७ जनमेजय का उपाध्याय व धौम्य ऋषि का शिष्य, एक ऋषि।

२० विवाह बेदी पर बोले जाने वाले मंत्र।

उ०—ताहरा छोकरधा वाधं दोळा फेरा ब्यार लीया। ताहरा बांमण एक पांगुळो अोथ पडियो हुतो तिकै नुं वाधे कह्यौ। रे तू बामण छै। जे भणियो छै तो तूं बेद पढ। का मारीस। ताहरा बामण बीहतै क्युं भणियो। —देवजी बगडावतां री बात

२१ देखो 'बैद्य' (रू. भे.)

उ०—१ जद स्वामीजी बोल्या—किणहि रोगी नै बेद औखध पावा लागो कहै अौ औखध पी जा रोग जातो रहसी। जद रोगी बोल्यो—मूंहडा मैं तो चालू नहीं। म्हारा मोरा मे कूड दो। —भि. द्रृ.

उ०—२ बाप घणो ई समझायो, पण बौ तो मान्यो ई नीं। बेद हकीम ई घणो ई पालियो तो ई उणरै कीं होयं बैठी नी। बेटा रा बाद भागै सेठां री तो खाबौ पीबौ ई भग लागं नी। —फुलवाड़ी

उ०—३ अमोलक सु अमोलक हीरो कोई पेट मैं खावण सूं तौ रह्यो। आप सगळा जाणो ई हौ, कांई बताबू। कुठोड़ पीड़ अर

सुसरोजी बेद। राड कंवरसा लारै सती होवण री हठ झाल राख्यौ।
—फुलवाड़ी

२२ देखो 'वेध' (रू. भे.)

उ०—धमाधम वांण गोळा वीलम गाजिया, साभिया मरण खत्रियां धरम संद। मडोवर तणा ग्रदराजिया मेड़ते, वाजिया बेहू धरती तणै बेद। —सेरसिंगजी, कौलसिंहजी री गीत

रू. भे.—बेद, वेदन, वेघ, वेह।

बेदउदय-स. पु [सं. उदयवेद] सूरज, सूर्य। (डिं. को.)

बेदक—१ देखो 'वैदिक' (रू. भे.)

उ०—मतव्य मान, गतव्य ग्यान, बेदक विधान, धर धेय ध्यान। सुन आग सूर, चंद्राक चूर, सुख मन सचार, अम्म्रत अपार।
—ऊ. का.

२ देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

बेदकरता-स. पु. [स. वेदकर्तृ] १ वेदो की रचना करने वाला, ब्रह्मा।
२ विष्णु का नाम।
३ शिव, शंकर।
४ सूरज, सूर्य।
५ वर पक्ष के वे मनुष्य जो विवाहकृत्य सम्पन्न हो जाने पर वधू के घर वर तथा वधू को आशीर्वाद प्रदान करने हेतु जाते हैं।

बेदकल्प-स पु [सं.] अथर्ववेद का एक भाग।

बेदका-स. स्त्री. [सं वेदिका] विवाह वेदी, चवरी।

उ०—झलगा ऊमराकोट तोरणा काळमी आई, नांमी वस अधाई भारती नरां नाथ। विप्रां गठ जोडी बांध बेदका समीप बैठें, बनो बंनी मेहंदी हाथ मिळायी विख्यात। —बादरदान दधवाड़िया

बेदकार-वि० [स] वेदो के रचयिता, वेदो का रचनाकर्ता।

बेदगंगा-स स्त्री.—कृष्णा नदी मे मिलने वाली एक दक्षिण भारतीय नदी।

बेदगरभ-स पु [स. वेदगर्भ] १ ब्रह्मा।
२ ब्राह्मण।
रू भे. बेदगब्भ।

बेदगरभा-स स्त्री. [स. वेदगर्भा] १ सरस्वती नदी।
२ रेवा नदी।

बेदगरभापुरी-सं. स्त्री. [स वेदगर्भापुरी] एक तीर्थ विशेष।

बेदगाथ-स. पु [स] एक प्राचीन ऋषि। (पुराण)

बेदगी-स. स्त्री.—१ होशियारी, चतुराई, दक्षता, विशेषता।

उ०—राजाजी नै उणरी भोळी अर अबूझ बात सुणनै हसी आयगी। बोल्या—भोळा ठीकरा, हाथ जोडना मैं थेंडी कांई बेदगी! म्हैं कदं ई नी जोड़्या तौ ई जांणू। —फुलवाड़ी

२ देखो 'वेदगी' (रू. भे.)

बेदगुप्त-स. पु [स.] १ भगवान् श्रीकृष्ण।
२ पराशर ऋषि का पुत्र।

बेदग्य-वि० [स. वेदज्ञ] १ वेदों का ज्ञाता, वेदो का जानकार।
२ ब्रह्मज्ञानी।
स. पु.—ब्रह्मा।
रू भे.—वेदग वेदंग, वेदंगर, वेदग्यक, वेदग।

बेदजणणी-स. स्त्री. [स वेदजननी] वेदो की माता, सावित्री।

बेदजा-स स्त्री. [स. जात-वेद] १ अग्नि, आग। (ना. डिं को.)
२ द्रौपदी। (म. भा.)
वि० वि० (दि. जागसेनी)
रू. भे.—वेदिजा, वेदीजा।

बेदण—देखो 'वेदना' (रू भे)

उ०—अम्है न करिस्या कोइ, साजनिया सहु को करो। फिर दूणो दुख होइ, बेदण विछड़िया पछै। —जसराज

बेदणी, बेदबो—देखो 'वेधणौ बेधबौ' (रू भे.)

उ०—काटै वेदै घसै पथर पर, तवा तपाय कढावै तोल। सुर पूजा सोरम गुण समपै, खंडा सचनण री खेल। —स्वरूपदास

बेदतीरथ-स पु [स वेदतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ। (प्राचीन)

बेदत्रय, बेदत्रयी-स. स्त्री. [स वेदत्रयी] तीन वेदो का समूह, जिसमे ऋगवेद यजुर्वेद एवं सामवेद होते हैं। (वं. भा)

बेददरस, बेददरसन-स पु. [स वेददर्श, वेददर्शन] एक प्राचीन ऋषि, जिसने सुमन से अथर्ववेद, संहिता सीख कर अपने शिष्यो को प्रदान की थी।

बेदद्रिस-स पु. [सं वेदद्विष] चेदि देशाधिपति बृहद्रथ का पुत्र।

बेदधंको-स. पु [स. वेध+रा. धको] युद्ध करने वाला, योद्धा, वीर, बहादुर।

उ०—हैजमा हिलोळ हता तेगा उमा टीलौ हलै, साथ वीर चलै चडी चाटीलौ मरमंद। बेदधंकी जगा मेळै बारगी माटीलौ बीद, कंवाणा कोमकी वागा आटीलौ कमंद। —हुकमीचद खिड़ियो

बेदधरम-स पु. [स वेदधर्म] वैदिक धर्म।

उ०—१ उत्तम नाम वस उजवाळौ, बेदधरम चौ बधव बडाळौ। धरपति जेणि सोस छत्रधारै, एम प्रतग्या करै उचारै। —सू. प्र.
उ०—२ खग बल विस्तरि अकब्बर सै सत्रु भग, इक्कल निबाह्यौ जिहं बेदधरम नत्ताको। आसमुद्र उरवि वामी अज्ज क्रतमन्य देत, धन्यवाद वीर अग्रगण्य रांन 'पत्ता' कौं। —बालाबक्स पालावत

रू. भे.—वेदोधरम, वेदोध्रम ।

वेदधुनि, वेदध्वनि–सं. स्त्री. [स. वेदध्वनि] वैदिक मंत्रों के उच्चारण की ध्वनि ।

उ०—१ प्रभात समउ हुउ, अंधकार फीटइ, गाय तणा गाला छूटा, तारागण विरल हुउ, चंद्रमा विच्छाय थिउ, कूकडा तणी उलि लवइ, देव तणां बार ऊघडियां, प्रभातिक तूरय वाजियां, राजभवनइ वैतालिक पढइ, विलोणा तणा झरडका ऊपजइ, पथिक मारगि थया, ब्राह्मण तणै घरि वेदध्वनि विस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हुआ । —व स.

उ०—२ जिकै वेद मूरांत ब्राह्मण छै सु अरणी अगनि लगाडि होम करै छै । घणी गी घ्रत नै कपूर री आहूति दीजै छै । वेदध्वनि कीजै छै । दूलह नै दूलहनी सेहरा बाधिया पूरब साहमा वेसा-णिया छै । —रा. सा स

रू. भे.—वेदधुनि, वेदध्वनि, वेदोधनि, वेदोधनी, वेदोधुण, वेदोधणि, वेदोधुणी, वेदोध्रुन, वेदोधुनि, वेदोधुनी, वेदोध्वनि ।

वेदन, वेदना–सं स्त्री. [स वेदन एवं वेदना] १ पीडा, कष्ट, व्यथा ।

उ०—१ लै नै मिरचद मुंहतै नू रांणीजी कहियो हुतो ज्यू गुंगा हुवै तिम करिया । सु न का गाठि न का वेदन इउं ही उपाय करि मर बात थापी । —द. वि

उ०—२ राजा उच्यो, वेग सतावमू रे, रांणी ऊपर न कर्यो द्वेस रे । ऊजल करकस वेदन ऊपनी रे, राख्यो इण ममता भाव विसेख रे । —जयवाणी

उ०—३ जीहो वेदना नरक मे सासती, जीहो जरा तापसी खेद । जीहो वेदना दस प्रकार नीं, जीहो जिणरा न्यारा न्यारा भेद ।
—जयवाणी

उ०—४ पल जागे पल भी सुवै, पल मन धरै न धीर । हरिया वेदन विरह की, निस दिन भई सरीर । —अनुभववाणी

२ तकलीफ ।

३ प्रसूना स्त्रियों को प्रसव के समय होने वाली शारीरिक पीडा या व्यथा ।

उ०—बांझ के पास प्रसूत की वेदन, भेद न जाणत मूंड ममायो ।
पूत कपूतन की चटसाला कि, ज्यूं कुलटा सुसराळ सुणायो ।
—ऊ. का

४ रोग, बीमारी ।

उ०—१ ओखद करि करि जु मूवा, वेदन घडी न हाथि । जा ओखद सु ऊबरै, वाकी पडी अनाथि । —अनुभववाणी

उ०—२ ध्यांन न भावै चौंच निरोई, इण वेदन मोनूं खरी विगोई । तो सौं बात कहूं मैं कैसी, मेरे मन मैं बीचत जैसी ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ विघ चूका वेद न जांणे वेदन, ओखध लहै न पीड अथा-ह । रात दिवस खटकै उर 'राजो', साजो तेण नहीं पतसाह ।
—पीरदांन आसियो

उ०—४ सु सारां मुलकां रा वेद बुलाया, पिण नागजी चाक न हुवै । तरै राजा सहर मैं पाडो फेरयो—नागजी नै ताजो करै, तिण नै लाखपसाव देवा । सु वैदां नै तो वेदन लाधी नहीं ।
राजा वेद बुलाय कै, कुंवर देखाई बाह, वैदा वेदन काळ ही, करक कलेजा माहि । —नागजी नागवंती री बात

उ०—५ तारा में भाटी कलकरण केहरोत कनै गया । तद कल-करण आदमी हजार दोय सूं कंवर वीकैजी माथै आयो, अर राव सेखै नूं कहायो कै थे आय म्हारै सांमल हुवो ज्यूं काची वेदन काट देवा । —द. दा.

५ भय एव हिंसा की पुत्री ।

रू. भे.—वेदन, वेदनि, वेदण, वेदनि, वेवना ।

वेदनाथ–स. पु. [स.] १ एक विश्वनाथ नामक ब्राह्मण एवं कमलालया का पुत्र एक राजा ।

वि० वि०—इसे ब्राह्मण का साग या द्रव्य चुराने के कारण पुनर्जन्म मे वानरयोनि प्राप्त हुई । अपने मित्र सिन्धुद्वीप मुनि की सलाह के अनुसार यह धनुष्कोटि तीर्थ मे जाकर पापमुक्त हुआ था ।

२ महादेव, शिव ।

वेदनिंदक–वि. [सं.] १ वेदों की निन्दा करने वाला, नास्तिक ।

२ बौद्ध धर्म का अनुयायी ।

वेदनि—देखो वेदना' (रू. भे.)

उ०—१ बूटी परखि गाठि ग्रह बाधी, जम भव वेदनि तूटी आहकै रोग सदा अंगि रहता, बोहत होती तपनाइ । या बूंटी रस घापि र पीया, जीणि बोहडी सताप न पाई । —वील्होजी

उ०—२ वेदनि विरह विथा तन मांही, पडदा खोलि मिळौ क्यूं नाही । जन हरिदास कै आस तुम्हारी, विलम कहा पति देव मु-रारी । —ह. पु. वा.

वेदनिध, वेदनिधि–सं. पु. [सं] एक प्राचीन महर्षि ।

वेदनीय–वि० [स.] जो वेदना उत्पन्न करे, वेदना उत्पन्न करने वाला । (कर्म) (जैन)

वेदपाठ–स. पु. [स] वेद के मंत्रों का पाठ, वेदाध्ययन ।

उ०—नको सुचि क्रिया न को वेदपाठ, न को मुखवाणी न को मोन काठ । न को तनत्यागी न को ग्रेहचारा, न को नवनाथं न को पथवारा । —अनुभववाणी

वेदपाठी–वि० [स. वेद+पाठिन्] वेदो को पढने वाला, वेदो का अध्य-यन करने वाला ।

उ०—१ वेदमंत्र बोलत, वेदपाठी ब्राह्मण। पहरै पट्ट अबोट, इढ्ढ आपै धरण सघण। —गु. रू. ब.

उ०—२ तहां वेदपाठी ब्राह्मण विधिपूरबक मत्रबळ करि ब्रह्मादि रिखीस्वर इद्र आदि देवता अडसठ तीरथ, चार वेद, आठ बसु, अस्ट परबत, दसौं दिग्गाळ आदि सै आवाहन करि आहुती कर प्रसन्न किया। —सिंघासण बत्तीसी

वेदपित—स पु.—अग्नि, आग। (अ मा)

वेदफळ—स. पु —वैदिक कर्म करने मे प्राप्त होने वाला फल।

वेदबाह वेदबाहु—म पु [सं वेदबाहु] १ श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

३ पुलस्त्य ऋषि का नाम।

४ रैवत मन्वन्तर के एक ऋषि का नाम।

वेदबीज—स. पु [सं] १ श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ ब्रह्मा।

वेदभू वेदभूम, वेदभूमि वेदभूमी—सं. स्त्री. [सं. वेदभू, वेदभूमि] १ वह स्थान जहाँ वेदो का अध्ययन किया या कराया जाता है, ऋषि-आश्रम।

उ०—ई वेदभूम री धरम नहीं, ओनै सौ बात बणा लेवै। आ बात जिंदगी मौत तणा, सगळां री सोच मला लेवै। —करणीदान बारहठ

२ वैदिक भूमि हिन्दुस्तान, भारत।

३ देवताओ का एक गण विशेष।

वेदमतर, वेदमत्र—स. पु [स. वेदमत्र] १ वेदो मे आये हुए मत्र।

२ एक प्राचीन जनपद का नाम। (पुराण)

३ उक्त जनपद का निवासी।

४ मूलमंत्र।

वेदम—देखो 'वेदम' (रू. भे)

वेदमत—स. पु.—वेदों मे उल्लिखित मत, वैदिक मत या नियम।

उ०—माजी मानै वेदमत, सुणै सदा सुरगाह। सती आठमी मापरत, दसमी श्रीदुरगाह। —बा. दा.

वेदमाता—सं स्त्री. [स. वेदमातृ] १ सावित्री, गायत्री।

२ दुर्गा, शक्ति।

३ वीणावादिनी, सरस्वती।

४ गायत्री मत्र।

वेदमातका, वेदमात्रिका—देखो 'वेदमाता'।

वेदमालि, वेदमाली—स. पु. [स. वेदमालि] रैवत मन्वन्तर के एक वेदज्ञ ब्राह्मण का नाम।

वि० वि०—कुछ समय पश्चात् अपने परिवार के पालन-पोषण हेतु इसने अनीति से धन कमाना शुरू किया। जाबंती मुनि के उपदेश से इसे ज्ञान हुआ। परिणामस्वरूप इसने अपने दोनों पुत्रों को अपने धन का दो भाग देकर शेष बचे धन को धर्मकार्य में लगादिया और स्वय नरनारायणाश्रम बद्रीवन मे जाकर तपस्या कर पापमुक्त हुआ।

वेदमितर, वेदमित्र—स पु. [स. वेदमित्र] व्यास की शिष्य परम्परा मे से माण्डुकेय नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य जो स्वय शाकलगोत्रीय था।

वेदमुड—स पु. [स.] एक असुर का नाम।

वेदमूरत, वेदमूरति वेदमूरती—वि० [स वेदमूर्ति] १ वेदों का पूर्ण ज्ञाता, वेदज्ञ।

उ०—तठा उपराति करिनै राजान सिलामति नीला आला वस केलि खभ सूंना गलिआ थका काचना रा कलसा री वेह करिनै चौरी पधराया छै। हथळेवौ जोडि छेहड़ा बाधिया छै। सु जाणि मन बाधिया छै। जिकै वेदमूरति ब्राह्मण छै सु अरणी अगनि लगाडि होम करै छै। —रा. सा. सं.

२ सूरज, सूर्य।

वेदरद, वेदरदी—देखो 'बेदरदी' (रू भे.)

उ०—१ चालनि मोरा सइयां दुख पावै, रसराज ऐसी वेदरदी होय रही, काहैं कू तो पनघट जावैरी आवै, —रसीलै राज रा गीत

उ०—२ चालो चालो सहिया म्हारी सावरै री लैर, प्यारो गयो म्हांरी विरह वेदरदी खोजल्या ने उवा रा सूवा पैर। —रसीलै राज रा गीत

उ०—३ हेरी हेरी मा मन लै गयो, सावरो सनेही अलबेलो मा। नैन लगाय मन ले गयो वेदरदी, दिल बिच छाय रयो। —रसीलै राज रा गीत

वेदरस—स पु [स.] वृहस्पति का नाम। (अ. मा.)

वेदरह, वेदराह—सं. पु [स. वेद+अ राह] वेदो मे बताया गया मार्ग वेदमार्ग, ।

वेदल—देखो 'वेदिल' (रू. भे)

उ०—१ थें नाळेर किण नै बदायो? म्हैं थानै काहुं कहिनै मेलिया था? तरै उमरावा अर पुरोहितजी पाछली बात क्यू हुई त्यू कही। कागद दिखायो। सौरिणमल जी वेदल हुवा। —राव रिणमल री बात

उ०—२ बळै ढाढिया न मुख वचन समाचार मारवणी कह्या छा सु कह्या पिण ढाढी डरै छै। ताहरा ढोलोजी बोलिया थें वेदल (क्यूं) छौ। ताहरां ढाढी बोलिया कवरजी आपनै दीठा तो घणा राजी छा पिण मरण सू डरा छा। —ढो. मा.

उ०—३ तरै पाधरी कंवरजी री हुजूर आई। कंवरजी ढोलियै बैठा छै। तद मालवणी आण मुजरो कीयो। जद कुंवरजी हाथ पकड़ नै घणा आदर सुं मालवणी नै ढोलियै बैसांणी। पिण मालवणी बेवल घणी छै। —ढो. मा.

बेदवंत-वि० [सं.] १ वेदों का ज्ञाता, वेदज्ञ।

उ०—१ कामिणी कहि काम काळ कहि केवी, नारायण कहि नवर नर। वेदारथ इम कहै बेदवंत, जोग तत्त जोगेसवर। —वेलि

उ०—२ जु बेदवत भला ब्राह्मण था। त्या वेद री वेदोकित विचारचौ। वात पणि कही चाहीजै अर मन माहै भय उपनौ छै। मत वसदेवजी बुरौ मानै पणि जरूर हुई। ब्राह्मण जु कछु धरम्म होय कहै। —वेलि टी.

२ ब्रह्मज्ञानी।

बेदवचन-स पु. [स] वेदों का मूलपाठ।

बेदवती-स स्त्री. [स.] १ राजा कुशध्वज की कन्या जो दूसरे जन्म मे सीता हुई थी।

२ द्रोपदी। (म. भा.)

३ एक प्राचीन नदी जो परियात्र पर्वत से निकली १४ नदियों मे से एक थी।

४ एक अप्सरा का नाम।

बेदवदन-स पु [सं.] १ ब्रह्मा। (डि. को.)

२ व्याकरण।

बेदवधुनि, बेदवध्वनि—देखो 'वेदधुनि' (रू. भे)

उ०—कुदन मे थाळ द्रोब दधि कुंकम, पूरित अक्खत तदुळ। इत्यादिक गीत नाद बेदवधुनि, मंगळ धमळ मगळ। —गु. रू ब.

बेदवा-वि०—जिसकी कोई दवा नहीं हो, बिना दवा का।

उ०—जाह कोई जोग न जुगति है, जाह नही धग न तेग। हरीया दवा न बेदवा, जाह कोई पौण न वेग। —अनुभववाणी

बेदवाक्य-स पु. [स.] १ वेद का कोई वाक्य।

२ पूर्ण रूप से प्रमाणित कोई बात जिसका खडन नही किया जा सके।

बेदवादी-वि०—[स वेदवादिन्] १ वेदों का अच्छा ज्ञाता।

२ वेदों मे उल्लिखित मार्ग पर चलने वाला।

बेदवावंत—देखो 'ववावंत' (रू. भे.)

बेदवाहन-स. पु. [स. वेद+वाहनम्] सूरज, सूर्य।

बेदवित, बेदविद—वि० [स. वेदवित्] वेदों का जानकार, वेदज्ञ।

उ०—वेदोगत धरम विचारि बेदविद, कपित चित लागा कहण। हेकणि सुत्री सरिस किम हावै, पुनह पुनह पाणिग्रहण। —वेलि

सं. पु.—१ वेदविशारद ब्राह्मण।

२ भगवान् श्रीविष्णु।

रू. भे.—वेदविद्र, बेदवी।

बेदविदुख, बेदविदुस-वि. [स. वेदविदुष] वेदों का ज्ञाता, पंडित, विद्वान्।

उ०—सिलपी काम हुयौ सह सिद्ध, ब्रह्मा साखि रचै जिग विधि। उचारै बेदविदुख अनेक, विचारै जिग सुविधि विमेक। —रांमरासौ

स. पु.—ब्राह्मण, पडित।

बेदवेद्या—स स्त्री [स] वह देवी जो वेदों मे जानी जाती है। उक्त देवी के निवास स्थान चिन्तामणि ग्रह के चार दरवाजे चारों वेद है।

बेदव्यास—स. पु [स.] १ एक प्राचीन ऋषि, जो सत्यवती एवं पराशर के ससर्ग से उत्पन्न हुए थे। इन्होने ही वेदो के विभाग करके आधुनिक रूप दिया।

उ०—१ का तन आलस करत ऊघ, का फिर सूधा करत सूध। का मन मूरख विकल जास का हुय बैठं बेदव्यास। —अनुभववाणी

उ०—२ ताह मांहि लै अधिका उतिमि, ध्यान रूप गाहैडि वडा। बारहट अनै रिखि बराबरि, बेदव्यास ईसर बडा। —पी. ग्रं.

२ वैवस्वत मन्वन्तर के अट्ठाईस द्वापरो मे उत्पन्न होने वाले अट्ठाईस वेदव्यासों का समूह। (पुराण)

रू भे.—वेदव्यास

बेदवृद्ध, बेदवध-स. पु.—[सं. वेदवृद्ध] व्यास की सामशिष्य परम्परा मे से कौथुम पाराशर्य नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य।

बेदसरमन, बेदसरमा—स. पु. [स वेदशर्मन् वेदशर्मा] १ एक वेदज्ञ ब्राह्मण।

वि० वि०—इसने ब्राह्मणो को देने के लिए सकल्पित धन ब्राह्मणो को नही दिया। इसलिए इसे शृगाल योनि प्राप्त हुई। यह वेदनाथ का मित्र था एव सिन्धुद्वीप मुनि के उपदेशानुसार धनुष्कोटि तीर्थ मे शाप मुक्त हुआ था।

२ विदुर का मित्र, जो विदुर के साथ कालिजर पर्वत पर गया।

वि० वि०—कालिजर पर्वत के सिद्धो के उपदेशानुसार इसने सोमवती अमावस्या के दिन 'अघ तीर्थ' पर स्नान करके मुक्ति प्राप्त की।

३ शोणाश्व राजा का एक पुत्र।

४ विष्णु भक्त शिवशर्मन के पुत्र का नाम।

५ मुनिशर्मन नामक विष्णु भक्त के द्वारा पिशाच योनि से मुक्त हुआ एक ब्राह्मण ।

वेदसिनी—सं स्त्री. एक प्राचीन नदी । (पुराण)

वेदसिरस, वेदसिरा—स. पु [स. वेदशिरस्, वेदशिरा] १ वाराह-कल्पान्तर्गत वैवस्त मन्वन्तर मे से पन्द्रवें युगचक्र में उत्पन्न एक शिवावतार, जो सरस्वती नदी के उत्तरी तट पर स्थित हिमालय के अतभाग में स्थित वेदशीर्ष नामक स्थान पर अवतीर्ण हुआ था । इसका प्रमुख अस्त्र महावीर्य था ।

२ प्राण राजा का पुत्र, एक राजा ।

३ स्वारोचिष मन्वन्तर के विभु नामक इद्र का पिता ।

४ रैवत मन्वन्तर के सप्तऋषियो में से एक ।

५ एक भृगुवशीय ऋषि, जो मार्कंडेय का पुत्र था ।

वि० वि०—इसकी माता का नाम मूर्धन्या व पत्नी का नाम पीवरी था इसके अनेक पुत्रों का सामूहिक नाम मार्कंडेय था । इसकी तपस्या शुचि नामक अप्सरा ने भग की थी, जिससे उत्पन्न कन्या का हरण यमधर्म ने करना चाहा किन्तु इसके शाप से वह काशी मे धर्म नामक नदी बना ।

६ कृशाश्व ऋषि एवं धिषणा का पुत्र, एक ऋषि, जिसे पाताल में नागों से विष्णुपुराण का ज्ञान प्राप्त हुआ ।

वेदसीरस—स. पु. [सं. वेदशीर्ष] सरस्वती नदी के उत्तरी तट पर स्थित हिमालय के अन्तर्भाग मे स्थित एक स्थान । (पुराण)

वेदस्परस—स. पु. [स. वेदस्पर्श] कबध ऋषि का देवदर्श नामक शिष्य एक आचार्य ।

वेदस्मति, वेदस्मती—स. स्त्री [स. वेदस्मृति] एक प्राचीन नदी का नाम ।

वेदस्री—स. पु. [स. वेदश्री] रैवत मन्वन्तर का एक प्राचीन ऋषि ।

वेदस्रुत—सं. पु. [स. वेदश्रुत] १ वशिष्ठ के पुत्र का नाम ।

२ रैवत मन्वन्तर का एक देव ।

वेदस्रुति—सं स्त्री. [सं. वेदश्रुति] एक प्राचीन नदी का नाम । (पुराण)

वेदांग—सं. पु. [सं. वेद+अङ्ग] १ वेदों के छः अंगो मे से कोई एक अंग ।

वि० वि०—उक्त छः अगो के नाम निम्नलिखित हैं—

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द ।

उ०—जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावा विरच जांगे, धूरजटी ताव ऊच भावा मेर धीग । पावा लोम रिखी राम तम्पी ज्यू दधीच हाड ऊंच, सामवेद वेदांगा वीरावी सभूसीग ।

—हुकमीचंद खिडियो

२ बारह आदित्यो मे से एक आदित्य ।

३ सूरज, सूर्य ।

स. स्त्री —४ छः की सख्या । * (डिं. को.)

वि०—छ. । * (डिं को.)

वेदांणी—स. स्त्री.—१ दाख, द्राक्ष । (अ. मा.)

२ देखो 'वेनाणी' (रू. भे)

उ०—धका पार जोवता वार लग्गं वरणता, सबित सार अवतार अणी गुण धार अनता । वेदांणी तन मजि रंजि आभीच लगन्नै, घडै सघर पुळ सजिज धूप डबर वासन्नै । —रा. रू.

३ देखो 'विनाणी' (रू. भे)

वेदांत—स पु. [स] १ चराचर विश्व को एक ब्रह्म एव अद्वैत मानने वाला एक दर्शन, जिसमे वेदो के चरम उद्देश्यो का वर्णन है ।

उ०—१ चितयौ रामचन्द्र री ओर, चित म्हारौ हो गयौ चकोर । सब ब्रह्मग्यान, वेदांत विसारचौ, तन मन धन वारचौ ।

—गी. रा.

उ०—२ सिखा फरहरती, उतरासगी धोती, हाथि पवीत्रीमऊ, तूरीउ जनोइ, सिर भद्रिउं, तिलक बधारिउ, गायत्री साधनु, त्रिकाल-सध्याराधन, प्रभातस्नान, नित्यदांन, वेद पढइ, वेदांत जाणइ, सिद्धांत बखाणइ, देव तरपण, गुरूतप्पण, रिखितरपण, पित्रतर-पण, इसिउ नैस्टिक ब्राह्मण । —व. स.

२ वैदिक सिद्धान्तो का निरूपण व विवेचनकर्त्ता शास्त्र ।

३ ७२ कलाओं मे से एक ।

रू. भे.—वेदांत, विदात, विदातौ, वेदंत ।

वेदांतसूत्र—स पु. [स] वेदातशास्त्र का मूल माना जाने वाला महर्षि बादनारायण कृत सूत्र ।

वेदांती—वि० [स. वेदान्तिन्] वेदात का श्रेष्ठ ज्ञाता, ब्रह्मवादी ।

उ०—राता विखै विकार सूं, आप सवारथी पर हुता । "वील्ह" कहै एक वीनती, विसन टाळि वेदांती । —वील्होजी

रू. भे.—वेदाती, मदाती ।

वेदांनौ—स. पु.—१ एक प्रकार का अमरूद विशेष जिसमें बीज नही होते ।

२ एक प्रकार अनार विशेष ।

उ०—तठा उपराति करि नै राजांन सिलामति किण भांति रा सरबत आणीजै छै । घणौ वेदांनैं, दाडिम कुळी रा रस बीजै छै । सो घणा कालपी मिसरी रा भेळ सूं वणी एलची नैं मिरचा रै भेळ बोह लागै थकै ऊजळा कपूर वासी गंगोदक पाणी सूं ऊजळै गळणैं झोळि झोळि झारीजै छै । —रा. सा. सं.

रू. भे.—वेदाणौ ।

वेदात्मा–सं. पु. [सं] १ सूरज, सूर्य ।

२ भगवान् विष्णु ।

वेदादि, वेदादिबीज–सं पु. प्रणव ओंकार का मंत्र ।

वेदाधिदेव–स. पु [स.] ब्राह्मण ।

वेदाधिप वेदाधिपत, वेदाधिपति, वेदाधिपती–स. पु. [स. वेदाधिप, वेदाधिपति] चारो वेदो के माने जाने वाले अधिपति ग्रह ।

वि० वि०—ऋग्वेद के बृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मगल और अथर्ववेद के बुध अधिपति हैं ।

वेदार–सं. पु. [स. वेदार] गिरगिट (डि. को).

वेदारण–सं. पु. [स.] दक्षिण मे स्थित एक तीर्थस्थान ।

उ०—दिखण में भीम नदी भीम संकरी कहावै । कस्ण वेणी कस्णा कहावै । दखिण मे वेदारण तीरथ है । —बा. दा. ख्यात

वेदासवा, वेदास्वा–सं स्त्री [स वेदाश्वा] भारत की एक नदी का नाम । (प्राचीन)

वेदि–वि. [सं. वेदिः] १ पडित, विद्वान् ।

२ देखो 'वेदी' (रू. भे.)

वेदिउ वेदिओ – देखो 'वेदियौ' (रू. भे.)

उ०—१ रामा हुवइ रुडु हसिइ, रूठा देव मनावि । बाटइ लागु वेदिउ, तु घर मझमलि आवि । —मा का. प्र.

उ०—२ रहतो रहि रुडुं हसइ, रुठा देव मनावि । बाटइ लागु वेदिउ, तु मदिर माहि आवि । —मा. का प्र

वेदिक—देखो 'वैदिक' (रू भे)

वेदिका—देखो 'वेदी' (अल्पा., रू भे.)

वेदिजा—देखो 'वेदजा' (रू. भे)

वेदिन–वि. [स वेदिन्] १ जानने वाला, ज्ञाता ।

२ विवाह करने वाला, दुल्हा ।

३ विद्वान्, पडित ।

स. पु —१ पढाने वाला, शिक्षक ।

२ ब्राह्मण या ब्राह्मण की उपाधि ।

वेदियौ–स. पु. –१ वेदो का ज्ञाता वेदज्ञ, पंडित ।

उ०—वेदिया ब्राह्मण पाचसइ ए, वेद भणइ दरबारि । गछवासी जती सातसइ ए, सूझतउ ल्यइ आहार । —स. कु.

२ ज्योतिष विद्या जानने वाला, ज्योतिषी ।

३ विवाह या यज्ञोपवीत संस्कार कराने वाला कर्मकाण्डी ब्राह्मण ।

उ०—१ सिद्धराव आप रै नांव नवो वसायो, नै पूरब सूं बांभण, उदीच वेदिया १००० तेडाइ नैं गांव ५०० सूं सिद्धपुर दीयौ, गाव ५०० सीहोर रा दीया । —नैणसी

उ०—२ आवइ अेक अगन्योतरी वली वेदिया व्यास । भाई भेटि आपणी, मुनि मूकइ मसवास । —मा. कां. प्र.

४ देखो 'वेद्य' (अल्पा रू भे)

उ०—तु क्या करी है वेदिया, औखद पांणी देह । हरीया जिन वेदन दई, सारा सोय करेह । —अनुभववांणी

रू. भे.—वेदिउ, वेदिओ ।

वेदिल—देखो 'वेदिल' (रू. भे.)

उ०—तूं गोरी मत वेदिल होय ओजी राज, हवकै आवां जद सामैं लै चालांजी राज । झूटा ढोला झूठ न बोल ओ जी राज, सदाई जावौ थे साथै कदै न लै चालो जी राज । —लो. गी.

वेदिसद–सं. पु. [सं. वेदिषद] बर्हिषद नामक महाराजा ।

वेदी–स. स्त्री. [सं.] विवाह आदि शुभ कार्यों एवं यज्ञ करने के लिए साफ करके तैयार की हुई ऊंची भूमि, मिट्टी का चबूतरा, चौकी ।

उ०—१ अब विवाह को आरंभ भयो । ब्राह्मण विवाह करण नै किसा आणि बैठा छै जिसा साक्षात मूरतिवंत वेद । वेदी छै सु रतन जडित छै । नीला बास छै । अरजन (अरग ?) कहतां रूपा का कलसा की वेह छै । — वेलि टी.

उ०—२ सट काष्ठं निरहूल लित, आहुत घिरत कपूर । विध पंडित वेदी सग्रह, सोभत अगनि सनूर । —रा. रू.

उ०—३ अति जुति अगनि अधूम विराजै, रतन जड़ित वेदी दुति राजै । दिव्य काष्ट लट जाति अहूलति, अगर कपूर घिरत जुत आहुति । —रा. रू.

उ०—४ ऊजळी उत्तम रेत, ओकळी सू लं आवै । वेदी जिण विवाह, साज सुभकार सजावै । ग्रह रेणुका राल, दात निरमळ कर निरखे । वासण वरतण रगड, ऊजळा घोरां हरखे । —बखदेव

२ वह अंगूठी जिस पर किसी का नाम खोद कर अंकित किया हुआ हो ।

३ वीणावादिनी सरस्वती ।

४ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

५ चबूतरा, चौकी ।

६ ब्रह्मा का नाम ।

७ रहस्य, गुप्त बात ।

८ ब्रह्मा की पत्नी ।

वि०—१ जानने वाला, ज्ञाता ।

उ०—तूं अध्यातम मत वेदी, तइं करमप्रकृति सहु छेदी रे । संसार तरी तु बइठउ, सिवमदिर मा जइ पइठउ रे । —वि. कु

२ विद्वान, पंडित ।

३ वेदों का, वेदों से सम्बन्धित ।

रू. भे.—वेदि, वेदी, वेदि ।

अल्पा.,—वेदिका ।

वेदीजा—देखो 'वेदजा' (रू. भे)

वेदीतीरथ-स. पु [स. वेदीतीर्थ] कुरुक्षेत्र का एक पुण्यक्षेत्र ।

वेदीसबद, वेदीसब्द—देखो 'वेदीसबद' (रू. भे.)

वेदू, वेदू-वि०—१ वेदज्ञ, वेदों का जानकार ।

२ विद्वान, पंडित ।

स. पु.—१ ब्रह्मा, विधि ।

उ०—वेदु जटधर चवे वीणती, निरखं मधुबन तणो निवास । व्रजवासी कवळास वसावो, विसन अमा दीजं व्रजवास ।

—अज्ञात

२ देखो 'वेद' (रू. भे.)

उ०—अनत तणी नहिं अत नांम लालच निगि नाही, रूप रेख निही रंग कही हव का हि न काई । सास अ'स निहिवास वाणि नह खाण न वेदु, अनंत नाम अकाज अाति नह जाति न भेदु ।

—पी. ग्र.

वेदेह—देखो 'विदेह' (रू भे.)

वेदेही—देखो 'विदेही' (रू. भे.)

उ० - पारब्रह्म राजा वसै, नगर वेदेही माहि । ग्यान कुंवर जुग राज पदवी जुग जुग राज कराहि । —श्रीहरिरामजी महाराज

वेदोकत, वेदोकति, वेदोकती, वेदोकित वेदोक्त, वेदोक्ति, वेदोक्ती-स पु. [स. वेदोक्त, वेदोक्ति] १ वेदवाक्य, वेदवचन ।

२ वेदो मे कहे गये मन्त्र ।

३ शास्त्रोक्त वचन ।

४ वेदो मे वर्णित विधि, वैदिक विधि ।

उ०—१ कवि उदकजळि सूंज कराए, जमण सिनान कियो न्रप जाए । वेदोकत मंत्रां सुण वाणी, जळ अंजळि आपी जग जांणी ।

—रा. रू.

उ०—२ ज्यौं रचना न्रप ज्याग री, की वरणं कविराव । वेदोकत सासत्र वचन, पगि पगि लगन प्रभाव । —रा. रू

उ०—३ अठार भार वनस्पती का पत्र फूल फळ, अडसठ तीरथ का निरमळाचार जळ । राजा 'अंसाह' कन्यावळ को सकळप लियो सो वेदोकति ससकार करि पार कियो । —रा. रू.

उ०—४ जू वेदवत भला ब्राह्मण था । त्यां वेद री वेदोकित विचारयो बात पणि कही चाहीजै अर मन मांहे भय उपनो छै । मत वसदे-वजी बुरो मानै पणि जरूर हुई । —वेलि टी.

उ०—५ ब्रह्म-कवच पंजर-विसन, रक्षा-राम उचार । वेदोक्ती सूं ब्राह्मण, आसीसं अणपार । —रा. रू.

रू. भे.—विदोगत, विदोगति, बिदोगती, बिदोगत, बिदोगति, बिदोगती,, वेदोगत, वेदोगति, वेदोगती ।

वेदोगत, वेदोगति, वेदोगती—देखो 'वेदोक्त' (रू. भे.)

उ०—१ ब्रह्मा नारद करै वेदोगत चवरी होम कटक चहियो । फिरियो नही उबर खत फाटै, फेरा कमध इसा फिरियो ।

—बलू चांपावत रो गीत

उ०—२ वेदोगत धरम विचारी वेदविद, कंपित चित लागा कहण । हेकणि सुत्री सरिस किम होवै, पुनह पुनह पाणिग्रहण । —वेलि

उ०—३ सेतराम संभ्रमी, इळा ऊठियं कनूजा । जगत जात रिण-छोड, कीध वेदोगति पूजा । चामोडो परचाड, वहे लाखो फूलांणी । धारा घड ऊतारि, चाडि राठोडा पांणी । —गु. रू. बं.

उ०—४ सतिया 'आंम' महेत, दाग वेदोगति दीधा, केसरियां कम-धजा, करै अन उच्छव कीधा । वड चांपावत 'बलू', कमध 'आऊ' कूंपावत, अवर भीच उमराव, रोम भरिया बहु रावत । —सू. प्र.

वेदोधनि, वेदोधनी—देखो 'वेदध्वनि' (रू भे.)

वेदोधर—स पु [स] ब्रह्मा विधि, विरंचि ।

रू भे.—बेदोधर ।

वेदोधरम—देखो 'वेदधरम' (रू. भे.)

वेदोधुण, वेदोधुणि, वेदोधुणी, वेदोधुन, वेदोधुनि, वेदोधुनी—देखो 'वेद-ध्वनि' (रू. भे.)

उ० -१ आमना चत्र वेद ब्रहमाणय विप्रय, रुग जुज्जर साम अथरवणय जपय । वेदोधुनि जै जै सब्बदय वणय, गुजार रव भेर पडसदय घणय । —गु. रू. ब.

उ०—२ दियै निख सग आहुति देवस, मेवा घ्रत होमै असि सुमस । निधूम अगनि विप्रा मुखनाद वेदोधुनि ज्वाळा लागो वाद ।

—रांमरासौ

उ०—३ वधाई वाजा रा जहुयार, चत्र विध मगळ मगळचार । वेदोधुनि विप्र तणं चत्र विधि, सुर नर नाचं देव प्रसिधि ।

—रामरासौ

वेदोध्रम—देखो 'वेदधरम' (रू. भे.)

उ०—वेदोध्रम रिख्या रांम विचारि, विचारै आस्रम ध्रम विचार । दया ध्रम ध्रम रघुपति देखि, पदारथ च्यार छीया फळ पेखि ।

—रांमरासौ

वेदोध्वनि, वेदोध्वनी—देखो 'वेदध्वनि' (रू. भे.)

वेदोपनिसद-स. पु. [वेदोपनिषद] एक उपनिषद का नाम ।

वेदौ—देखो 'वेदो' (रू भे)

उ०—तो पिण स्वामीजी रात्रि मैं वखाण वाचै जठै वावेचा ढोलक बजावै । गावै । बखाण मैं विघ्न पाडै । जद भाया कह्यो —महाराज दूजी जायगा उतरो । स्वामीजी बोल्या— खेतसीजी नव दिक्षित है सो वेदां परीसह खमवा किसायक सेंठा हैं । कितरायक दिना वेदो कियो पछै वावेचा लातर भया । परयूखणां मैं इंद्रध्वज काढयो । स्वामीजी रा मूढा आगै घणी वेला ऊमारही गावै बजावै तान करै । जद केइ श्रावक वावेचा सू वेदो करवा लागा । जद स्वामीजी कह्यो—वेदो मत करो । —भि द्र.

वेधंगी—देखो 'वेधागी' (रू. भे.)

वेध-वि० [स] १ जो जानने के लिए हो, ज्ञातव्य ।

२ जो बताने या सिखाने के लिए हो ।

३ जो विवाह करने के लिए हो ।

सं. पु.—१ ग्रहो का किसी ऐसे स्थान अर्थात् नक्षत्र मे पहुँचने की क्रिया जहां से उसका किसी दूसरे ग्रह मे सामना होता हो । (ज्योतिष)

२ यत्रो आदि की सहायता से ग्रहो नक्षत्रों, तारों आदि को देखने की क्रिया ।

३ तीव्र प्यास, बहुत तेज प्यास ।

उ०—एहरइ वेध न लागइ ए, आगइ ए अगि न अगि । अटकै ताहरै आसि सिद्द जाइ सिइ गिरिवर स'गि । —जयसेखर सूरि

[स. वेध.] ४ छेदने की क्रिया, छेदन ।

५ घाव ।

६ छेद, छिद्र ।

[स वेधस्] ७ सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा ।

८ भगवान् विष्णु ।

९ शिव शकर, महादेव ।

१० सूरज, सूर्य ।

११ पडित, विद्वान ।

१२ दक्ष एवं प्रजापति ।

१३ अर्क, आक, मदार ।

१४ यत्रादि से ग्रह, तारा, नक्षत्रादि को देखने की क्रिया ।

१५ आकर्षण, मोहकता ।

उ०—मुक्ति रमणि जाणी करी तै ऊपरि थयू चित्त । वेध लागउ तेहनइ घणउ, नांम समरइ रे तेहनू नित कि । —नळदवदती रास

१६ कलह, झगड़ा ।

उ०—१ कळि लागी मुग्गळा. तांम हसियो जोगणपुर । बसू हुवै घर वेध, अगै विढिया पांडव-कुर । —गु. रू. बं.

उ०—२ वसो वधति बहुभ, अंतर गति गठि वेध उतपन्नो । सजोगि अगनि पतंगो, प्रजळयं अप मज्भेण । —गु. रू. बं.

उ०—३ बोलं इण पर खान तहव्वर, धाणा-मथाण हुवण दिल्ली धर । पख हिंदू ध्रम थया प्रमेसर, आदरयो घर वेध अकब्बर ।

—रा. रू.

उ०—४ चिगतो उखेल पखरं चरित, रखलं मेळ अमेळ रख । वध वेध बळ खळ वास ज्यू, दाह जळ उर साह दुख । —रा. रू.

१७ वंमनस्यता, शत्रुता ।

उ०—तिण दिन सोनगरा पिण राव रिड़मल मारिया छै, घणलै बसता थका । तठा पछै मडोवर पायो । सोभत राणै आपरी तरफ सुं दीवी छै । तठा पछै कितराहीक दिना राणै मोकळ नै सीसोदिया चाचं-मेरा वेध बांधियो । —नैणसी

१८ देखो 'वेद्य' (रू भे)

उ०—१ पडै वेध कूरमअदै राण छळ 'पोथलो', खळां सर बीज जिम बहै खवतो । जागरण भड़ाभड़ छूट गोळा जठै, रूक झड़ डहंडह रमै रवतो । —बखरांम रावळ

उ०—२ बकती मुख सावळ देव वळी, कळपै वारणी गत हस कळी । लग वेध अमीणिय वेन लए, दुलहा सुण देवल साद दए ।

—पा. प्र.

उ०—३ यु करता, दोनूं भाया आपस मैं टूटै अर भोज बडो वेध पडियो । ताहरां राव सुरजन बेटा बेऊं तेडिनै कह्यो—थे मो ऊपर फिरिया । थे म्हारो कह्यो न मानो । म्हैं राज सूं कोई कांम नहीं ।

—नैणसी

उ०—४ वीता अधूरा वार पूरां वेध सूरा वच्चए, सेलै प्रहार धार सार मार मारं मच्चए । वग्गा खड़गं दुहूँ वग्गै काळरगं वीरयं, अखरां उमगं दूर अगं चाव रगं चीरयं । —रा. रू.

रू. भे.—वेधा, वेद, वेवस, वेधा, वेधि, वेधौ, वेह ।

वेध, वेधम - देखो 'वेधेम' (रू. भे.)

वेधक-वि०—१ भेदन या छेदन करने वाला ।

२ जानकार, विद्वान, पडित ।

उ०—जे वेधक सहु बात ना रे, गुण रस जाणइ खास । मूरख पसु जाणइ नही रे, सेलडी कड़ब मिठास । वि. कु.

स. पु. [स. वेधक] १ धनिया ।

२ कपुर ।

३ एक नरक का नाम ।

वेधकारी-वि०—१ युद्ध करने वाला, योद्धा ।

उ०—पढावं कुरांणां तिका पढाकै काजियां पूजा, सुरांणां पुराणां वेन ब्रहमाणा सेव । राजा तणो छत्रधारी खागधारी राजहस,

दांणवां सूं बेधकारी भवत्तारी देव ।

—महाराणा श्रीजयसिंहजी (दूसरा) री गीत

२ मारने वाला ।

३ संहार करने वाला, नाश करने वाला ।

बेधड़क—देखो 'निधड़क' ।

बेधणी—देखो 'वेधनी' (रू. भे.)

बेधणौ–वि० [स्त्री. वेधणी] १ युद्ध करने वाला, योद्धा ।

२ नाश करने वाला, संहार करने वाला ।

३ मारने वाला, वध करने वाला ।

बेधणौ, बेधबौ–क्रि. स. [सं. वेधनम्] १ नाश करना, संहार करना । २ मारना ।

उ०—१ वडा खळ बेधत सावळ वाह, लिये लटियाळ तुरी कवि लाह । जुड़े घज सेल पड़ै जवनेस, दखै रवि तांम फोका 'मुकदेस' ।

—सू. प्र.

उ०–२ वांनरपति विख्यात वर, वेध्यु जाणी वालि । सहिजइ सुग्रीव जु वरिउ, ताराइ तिणि तालि । —मा. का. प्र.

३ चीरना, फाड़ना ।

४ छेद करना, छेदना, भेदना ।

उ०—१ सिलहाण भगाण बेधांण सरां, पखराण केकांण भमीच परां । अति ओण उफाण घराण धसी, जगचल्ल उगाण फनाण जिसी । — सू. प्र.

उ०—२ कपि कटक हूचक कटक दैतक, उरक बेधक सरक अंतक । अंतक तक भड भचक इक इक, पडि जरक मुद गरक पासक ।

—सू. प्र.

उ०—३ वे वै कबाण भूयाण बध, असमान छिवत रोसाण अध । चय मछी रंध्र छेदै चकास, उडता विहग बेधै प्रकास । —वि. स.

५ युद्ध करना, संग्राम करना ।

६ तोडना ।

७ ज्योतिष के ग्रहो का किसी ऐसे स्थान मे पहूंचना जहा से उनका किसी अन्य ग्रह से सामना होता हो ।

उ०—१ गजरा नवग्रही प्रोथिया प्रोचै, वळै वळै विधि विधि वळित । हसत नखित्र बेधियौ हिमकरि, भरथ कमळ अलि आवरित ।

—वेलि

उ०—२ दूलह सधीर विच दीपियौ, हीर जिहा गुण उज्जळा । रिख वृंद सतै किर बेधियौ बीज चंद्र बाधै कळा । —रा. रू.

८ यत्रो आदि की सहायता से ग्रहो, नक्षत्रों, और तारों आदि को देखना ।

बेधणहार, हारौ (हारी), बेधणियौ—वि० ।

बेधिप्रोड़ौ, बेधियोड़ौ, बेध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बेधीजणौ, बेधीजबौ—कर्म वा० ।

बेधणौ, बेधबौ, बेदणौ, बेदबौ, बेहणौ, बेहबौ—रू. भे. ।

बेधनी–स. स्त्री. [सं.] १ हाथी के कानो को बेधने का एक औजार विशेष ।

२ मोती आदि बेधने का उपकरण विशेष ।

३ अंकुश ।

रू. भे.—बेधणी ।

बेधय, बेधयण—देखो 'वेधेय' (रू. भे.)

बेधरम—१ देखो 'विधरम्म' (रू. भे.)

२ देखो 'अधरम' (रू भे.)

बेधस–सं. पु. [स. वेधस] १ हथेली के अंगूठे की जड के पास का स्थान जिसे ब्रह्मतीर्थ भी कहते हैं ।

२ अंगिराकुलोत्पन्न एक मंत्रकार ।

३ देखो 'वेध' (रू. भे.)

रू भे—बेधस ।

बेधसी–स स्त्री. [स.] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

बेधांगी–स पु. [स] योद्धा, वीर ।

रू. भे.—बेध गी ।

बेधांणौ—देखो 'वेध' (१, २) (रू. भे)

उ०—राजा भूलरि राणिया, सोहै ईही भति । किरि बेधांण किरतिया, चदौ पूनम रति । —गु. रू. व.

बेधा–सं पु [स] १ दक्ष आदि प्रजापति । २ राजा हरिश्चन्द्र का पिता । ३ अगद के एक पुत्र का नाम ।

४ देखो 'वेध' (रू. भे) (नां. मा., ह. ना. मा)

बेधाता—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

बेधातिथ, बेधातिथि–स. स्त्री. [स. वेधातिथि] वह तिथि, जिस दिन सूर्यादि नक्षत्रो एव लग्न का नक्षत्र एक ही रेखा अर्थात् एक ही सीध मे हो ।

वि० वि०—सूर्यादि नक्षत्रो एव लग्न के नक्षत्र के एक ही सीध मे होने पर वेध होता है इसमे विवाह वर्ज्य है ।

बेधाधि, बेधाधी–स. स्त्री.—सरस्वती, भारती ।

रू. भे —बेधाधी ।

बेधि—देखो 'वेध' (रू. भे)

उ०—भमरडउ मरित्रा अणबीहतउ, पसरि पइसइ केतकिई हतउ, कठिन कटक कोडि कुटीरडइ, पडिउ बेधि पछइ पुणि आरडइ ।

—सालिसूरि

बेधित—देखो 'बेधियोड़ौ' ।

बेधियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ नाश किया हुआ, सहार किया हुआ. २ मारा हुआ. ३ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ. ४ छेद किया हुआ, छेदा हुआ, भेदा हुआ. ५ युद्ध किया हुआ, सग्राम किया हुआ. ६ तोडा हुआ. ७ ज्योतिष के ग्रहों का किसी ऐसे स्थान मे पहुचा, हुआ होना कि जहा से उनका किसी अन्य ग्रह से सामना हुआ हो. ८ यत्रो आदि की सहायता से ग्रहों, नक्षत्रों, तारों आदि को देखा हुआ ।

बेधी–वि० [सं बेधस्] १ पंडित, विद्वान । (ह नां मा.)

२ शत्रु, दुश्मन । (ह. ना. मा)

उ०—दत कवि पळै मिळै चित दुनिया, बेधी जळै जवास विध ।
सेधी सेह बळै छळ खागा, मोभा मिळै प्रखाड सिव ।
—महाराजा मानसिंघ री गीत

३ सयोगी जन ।

उ०—करडा, त मनि कअडउ, बेध्यां करइ विछोह । अजइ कुआ-
रउ वप्पडा, नही ज कामिरा मोह । —ढो मा.

४ युद्ध करने वाला, सग्राम करने वाला ।

बेधीलौ–वि० [सं. वेध+रा प्र. इलौ] युद्ध करने वाला, वीर बहादुर, योद्धा ।

उ०—बागड रै काठ चन्द्राण भड किवाड रजपूत बेधीला छै सू धणियां रै नै चहुवाणा रै रस थोडा दिन हुवै छै । तद मारवाड रा रजपूतां नू वडा वडा पटा देनै सदा बागड रै राजथांन वास राखै छै । —नैणसी

बेधीसबद, बेधीसब्द–स पु [सं शब्द+वेधी] अर्जुन । (ह ना मा)

रू भे—बेदीसबद बेदीसब्द ।

बेधेय, बेधेयरा, बेधेय, बेधेयरा–वि [स वेधेय] मूर्ख नासमझ, बेवकूफ । (अ. मा.)

रू. भे.—बैधय, बेधयग, बेधय. बेधयरा ।

बेधौ–स. पु —१ शंका सशय सदेह ।

उ०—हुओ राम दुजराम, ब्रह्म रै मन मां बेधौ । फरसी साठी
फरसि, खरी खत्रिया सिर खेधौ । —पी ग्रं

२ देखो 'बेदौ' (रू. भे)

उ०—राजा ईंग्रा री बेधौ सुणे अबोलीग्र रह्या । तरै सारौ ही दन बदमाद सूं काट सांझ रै वखत सवागढ आय, इग्रा ग्रहु अणां सहत दाखलै हुग्रा ।
—कल्याणसिंघ नागराजोत बाढेल री बात

३ देखो 'बेध' (रू भे.)

उ०—बेधौ दूंद न वीसरै, 'चद' तणौ हरनाथ । पथ अळग्गौ लंघता,
लाराळग्गौ साथ । —रा. रू

बेध्या–सं. पु. [स. विधाता] ब्रह्मा, विरचि ।

उ०—बेध्याइ याह्नि वदन ज रचिऊ, त्याहारि सार इहु नूं हरिऊं ।
तर लीधौ ताहा खाण थई लि, मुख मनोहर करिऊ । —नळाख्यान

बेन–स पु [स.] १ चाक्षुष मनु एव नड्वला के वशज महाराज अग और सुनीथा (जो कि मृत्यु अधर्म की मानस पुत्री थी) के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र, जो सूर्यवशी राजा प्रथु का पिता था ।

वि० वि०—कही-कही पर इसे तेईसवा वेदव्यास एव कर्दम के पुत्र अनग का पुत्र भी कहा गया है । इसका पालन-पोषरा इसके मातामह के घर हुआ था । यह बचपन मे ही दुष्ट एव दुष्टप्रकृति के स्वभाव वाला था अतः बच्चो व जानवरों का गला दबा कर हत्याएँ खूब करता था । इसी क्रूरता के कारण इसके पिताजी अग देश छोड कर चले गये । तत्पश्चात् इसे राज्यपद प्राप्त हुआ और दुष्टता आदि मे भी अत्यधिक वृद्धि हुई । इसी कारण से ऋषियो ने कुशाग्रण से इसका वध कर दिया किन्तु अनग के दूसरी सन्तान न होने के कारण राज्य सिहासन खाली रहता था अतः राज्य मे आतक बढा । तब ऋषियो ने इसकी जांघ को मथा, तब एक श्यामवर्ण. नाटे कद का एव कुरूप व्यक्ति निकला जिसे ऋषियो ने निषाद अर्थात् बैठने के लिए कहा इसलिए इसका नाम निषाद ही रखा गया । फिर इसके दोनो हाथो का मथन किया गया, जिनमे एक स्त्री एव पुरुष निकले । पुरुष को (जिसका नाम प्रथु रखा गया था) विष्णु अवतार एव स्त्री को लक्ष्मी का अवतार माना गया ।

२ वैवस्त मनु के दस पुत्रो मे से एक ।

३ देखो 'बहन' (रू. भे.)

रू. भे.—बेंण, बेन, वेंण ।

बेनड़, बेनड़ी—देखो 'बहन' (अल्पा., रू. भे.)

बेनट—देखो 'वेनट' (रू. भे)

बेनतनय–स पु. [स. वैनतेय] १ पक्षीराज गरुड । (ना. डि. को.)
[स. वेनतनय] २ सूर्यवंशी राजा पृथु ।

बेनतियासुत–स. पु [स वैनतेय] १ पक्षीराज गरुड ।

बेनती—देखो 'विनती' (रू. भे.)

उ०—१ कुवर तौ हालण नै तयार हुवौ छै । अबै कुंवर आप रौ साथ तैयार कर नै राजा सौ वेनती कीवी, कह्यौ, "जौ माहाराज, मनै मेलजौ । हु साह नु पण लै आईस अर समुद्र पण देख आईस ।'
— बीजड बीजोगण री बात

उ०—२ अर हूं तौ बीजै कांम आया छां । ताहरा जैत कहियौ 'रावजी कहौ जिम थांहरी बेनती राजा सौं करां । इतरा बिन किम

कहियौ नहीं ?' ताहरा राव कहियौ, 'जु रांणी बहुड कहायौ छै, नरसंघ री सगाई करौ तौ वा कनै रांहणौ आवै। राजा सौं आ बीनती करौ।' —राजा नरसिंघ री वात

बेनवा—देखो 'बेनवा' (रू. भे.)

बेनसीब—देखो 'बेनसीब' (रू भे.)

बेनसुत—सं पु [स] अंग एवं सुनीथा के गर्भ से उत्पन्न वेन राजा का पुत्र एक सूर्यवंशी राजा।

रू. भे.—वेणसुत, वेणसुत।

बेनांणी—१ देखो 'बैनाणी' (रू. भे.)

उ०—राजद्वार कोठार, जोग साला काढीजै, जरद जरद्दी घडै, लोह लोहै कूटीजै। बेनांणी वेगळा, वाढ चालै केवाणा, फूल बाण कीजति, प्रणी तीखा खुरसांणां। —गु रू. ब.

उ०—२ रांमण ताड सराड छड अघसळा रेही, दीप दिमावरि नीपनी बेनांणी गेही। सुध गज-वेल हलूळ फळ अहिंडंमज नेही, 'अचळ' खान घमोड़िया उणहारी ऐही। —माली सादू

२ देखो 'विनाणी' (रू. भे)

बेनी—देखो 'वेणी' (रू. भे.)

बेनियौ—स. पु —बबूल की पतली टहनियों की छाल।

बेनीत—देखो 'बेनीत' (रू भे.)

बेनु—देखो 'वेणु' (रू. भे)

बेनोई—देखो 'बहनोई' (रू भे.)

बेपतरौ—देखो 'बेपतरौ' (रू. भे)

बेपरवा—देखो 'बपरवाह' (रू भे)

बेपरवाई—देखो 'बेपरवाही (रू. भे)

उ०—बेपरवाई पतसाह, मनवा मतवाळा। सतगुरु हेरदं सबद का, भर जोर पयाळा। —केसोदास गाडण

बेपरवाह—देखो 'बेपरवाह' (रू. भे)

बेपरवाही—देखो 'बेपरवाही' (रू. भे.)

बेपाक—देखो 'बेपाक' (रू भे)

बेपार—१ देखो 'व्यापार' (रू भे.)

२ देखो 'बेपार' (रू. भे)

उ०—हुए हवक सूरां उठी मेर हवकां, करै भूत वेताळ बडी किलक्कां। करै जोर प्राहार बेपार कुंता, दियै जुद्ध जाणै भ्रगू सिभु दूता। —रा. रू

बेपारहू—देखो 'बेपारहू' (रू. भे.)

बेपारहौ, बेपारियौ—देखो 'बेपारियौ' (रू. भे.)

बेपारी—१ देखो 'दोपारी' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यापारी' (रू भे)

बेपीड़, बेपीर देखो वेपीड' (रू भे.)

उ० किरपण माया कारणै, सुख दुख सहै सरीर। जनहरिया हरि नाव धन, पाया सु बेपीर। —अनुभववांणी

बेपुड़ि बेपुड़ी—देखो 'बेपुडी' (रू भे.)

उ० सु मेघ को आडग जाणै जोगिणी आवी छै। रत कहता लोही वरसती बेपुड़ी कहता बादल की पांति बेपुड़ी बहै छै। सु दोवड़ा वादळ आम्हा साम्हा हूया। —वेलि टी.

बेपूठ—वि०—विमुख।

उ०—जनहरिया ससार मैं सुख दुख दोऊं झूठ। जब तें सुख भर दुख गिनै, तब हरि तें बेपूठ। —अनुभववाणी

बेपोहर—देखो बेपोहर' (रू भे.)

बेपोहरौ—देखो बेपोहरौ' (रू. भे.)

बेफरवांण, बेफरवाणी—वि० [फा बे + फर्मान] बिना आज्ञा, बिना हुक्म, बिना आदेश।

उ०—हीदू घाव करै अजीया सिर, हरि सु बेफरवांणी। स्वाद स्वाद करै मुख सेती, जीव दया नही जाणी। —अनुभववाणी

बेफाड, बेफाड—देखो बेफाड' (रू भे)

उ०—करै एक एका धकै जत्र कत्र, पडै हाथ जाणै झडै ताडपत्र। किता सीस बेफाड़ चौफाड केता, जपै रूप लेखे कवी ओप जेता। —रा. रू.

बेफार—देखो बेपोहर (रू भे)

बेफारौ—देखो 'बेपोहरौ' (रू. भे)

बेफिकर—देखो बेफिक्र' (रू. भे.)

उ०—मन अकबर मजबूत, फूट हीदवां बेफिकर। काफर कोम कपूत, पकड़ राण प्रतापसी। —दुरसौ आढौ

बेफिकरी—देखो 'बेफिक्री' (रू भे.)

बफिकरौ, बेफिक्र—देखो 'बेफिक्र' (रू भे)

बेफिक्री देखो बेफिक्री' (रू भे)

बेबगत—देखो बेवक्त' (रू भे.)

बेबस देखो 'विवस' (रू भे)

बेबसी—देखो 'बेबसी'(रू भे)

बेबाग—देखो 'बेबाग' (रू भे.)

बेबार—देखो 'व्यवहार' (रू भे.)

बेबाह—१ देखो 'बेबाह' (रू. भे.)

२ देखो 'विवाह' (रू. भे.)

बेबुद्धि, बेबुद्धी—देखो 'बेबुद्धि' (रू. भे.)

बेबुनियाद—देखो 'बेबुनियाद' (रू. भे.)

बेभव—देखो 'वैभव' (रू.भे.)

बेभू—देखो 'वैभव' (रू भे)

बेभाव—देखो 'बेभाव' (रू. भे.)

बेम—सं. पु. [सं.] १ वेग, जोश।

उ०—ताहरा पछोत खोदणो बेठे नीचीत थको खोदै छै। खोदतै खोदतै गळो की जिसडी मै माथो मावै। खीवो तरवार काढिनै बैठो छै। माथो माथो करै माथै मै तरवार री दूं। इण आगुली घाली करि नै जोयो। जोइनै खणोतरा रै माथै हाडी देइ नै आवो धीयो। तितरै खीवै बेम भरी नै तरवार बाही सु हाडी उपरा बाजी। सु हाडी फूटि गई। —चौबोली

२ बार, दफा, मर्तबा।

३ देखो 'वेम' (रू भे)

उ०—ताहरा सागमरावजी अमल कर घोडी ऊपर चढिया, ताहरा खुरी कीवी। घोडी हुती सु नही। ताहरा सागमरावजी विसनदास नूं कहायो। कह्यो—घोडी ल्याई। कू इ कियो ? बेम उरहो मेल्हो। ताहरा विसनदास सागमरावजी नूं कहायो-थै वेहनेई छो तीयै कारण आसगो कियो। बेम देवा नही। ताहरा सागमराव मानी नही नै लडण नू चढियो। ताहरां आवानण सागमरावजी नू कहियो - जु राज ! चढीजै नही। घोडी रो बेम हू लै आईस। —नैणसी

बे'म - देखो 'वहम' (रू भे.)

उ०—१ आडा रै आगळ जडनै बेटो होळै होळै कंवग लागो—म्हनै उखरडी माथै अेक मोहर चमकती दीसी। पण सामी ई वै लोग निपटने आवता हा। जे लुळनै मोहर उठावूं तो वाने तुरत बे'म व्हैतो। —फुलवाडी

उ०—२ पण म्हारा करार रो निबळा सेठा नै काई बेरो ! धरगड धळगा बगाय नोडिया मै अरू करघोडी गाठडी बारै काढी। बाणिया री जात किसी चात्र ग ! केडा पूर मे हीरा-मोती लुकाय राखै। कोई बे'म करै तो करै इज कीकर ! —फुलवाड़ी

उ०—३ घर अठी हथ-ळेवा री बगत बीदराजा नै ओ बे'म व्हियो के हाथ री ठौड़ कठेई गुलाब रो कवळो फूल तो नी आयग्यो। बीदणी री खुली आख्या रै सांम्ही सपना री कावड घूमण लागी जकी घूमती ई गी। —फुलवाड़ी

बेमजी—देखो 'बेमजी' (रू भे.)

बेमन—देखो 'बेमन' (रू. भे.)

बेमानिक, बेमाणिय, बेमांणी, बेमांणीक, वेमांणीय, बेमांनिक—देखो 'वैमानिक' (रू. भे.)

उ० १ भुवनपति वीस इद्र मिल्याजी, सोलह व्यतर सार। जोइ सहुदस बेमांणिय जुइयाजी, चौसठ इंद्र सुविचार। —वृस्त.

उ० २ —असुरादिक दस होय वाण व्यतरिया अट्ठ, जोइस पंच बेमाणिय दुविहा सुत्तै दिट्ठ। पनरै भेदै सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, अनुमानादिक हिव एहनो कहिसूं अधिकार। —वृस्त.

बेमाता, बे'माता—स स्त्री [स. विधाता] १ विधाता, ब्रह्मा।

[सं. वृद्धिकामाता] बच्चे के जन्म के बाद छठी रात को भाग्यलेख लिखने वाली एव बच्चे को स्वरूप प्रदान करने वाली एक प्रकार की काल्पनिक देवी।

उ०—१ मेठा रै बेटा री हूबोहूब आप सू उणियारो मिळै। बेमाता री कुदरत। खुद सेठ देखता तो ई ओळख नी सकता। अबै बाता करघा सावळ ठा पडगी कै उणियारो तो अवस मिळै पण आप दूजा हो। —फुलवाडी

उ०—२ बेमाता ई माथ लखता बायरी बीसै के रूप अर रीस नै अेकठ कर्यू करी। समळा रूप रो जाणे मठ मार दियो। राणीजी कना सूं पग नी पकडाऊ तो म्है राजा री कवर नी। —फुलवाडी

उ०—३ घर परतख दीखगा मैं दस बरसा जितो लाठो। बेमाता अणूती निकमी वेळा मैं अणूता कोड-मोद सू घडघो। खावै रळ-कतो काळै केसा री चीकणो भड्लो अेडो लागतो जाणै बरसा लग मकराणा री सिलाडी माथै घोट्योडो काजळ घटा बणनै लूंमै। —फुलवाडी

उ०—४ बेमाता नै रीस तो घणी ई आई। पण जोर काई करती लाचार होयनै जबाब दियो —म्है मेठ रा बेटा रै जनम रा आक लिखण वास्तै आई हू। वेगी आगळ खोल, वेळा टळै। —फुलवाडी

उ० ५ बेमाता आखती पडनी थकी बोली—म्है कोई ठाली नी भटकिया करू। छटी री रात म्हैं मेठा रै बेटा रा भाग मैं आखर घालण सारू आई हू। — फुलवाडी

वि० वि०—लोक मे 'बेमाता' शब्द अति प्रचलित है। जिसका प्रयोग बच्चे के जन्म का विधान करने वाली देवी तथा जन्म की छठी रात बच्चे की भाग्य-लिपि लिखने वाली एक मातृ-देवी के अर्थ मे किया जाता है। इस बेमाता (रूपा०-बीमाता) शब्द की व्युत्पत्ति सं वृद्धिकामाता' मे हुई है। इस सम्बन्ध में डा० वासुदेव शरण अग्रवाल का अभिमत ज्ञातव्य है—

'आर्यवती और आर्यवृद्धा देवी एकही होनी चाहिए। यह देवी कौनसी थी, इसके सम्बन्ध मे यह सम्भावना प्रतीत होती है कि जिसे

आज-कल लोक मे 'बिहाई' (वृद्धाआर्या) या 'बीमाता' (वृद्धिकामाता) कहते हैं, वही 'आर्यवृद्धा' होनी चाहिए। लोक मे विश्वास है कि बेमाता बच्चे को देखने के लिए छठी पूजन की रात मे अवश्य आती है और उसके भाग्य का शुभाशुभ फल अवश्य लिख जाती है। इसी लिए उस रात जागरण आवश्यक माना जाता है। उसे ही षष्ठी जागरण कहते हैं"

इससे स्पष्ट है कि 'बेमाता' (वृद्धिकामाता) और 'बिहाई' (वृद्धाआर्या) एक ही देवी के नाम हैं, जैसा कि विद्वान डा० अग्रवाल ने सुझाया है। दोनों का व्युत्पत्ति क्रम इस प्रकार रहा होगा:—

बेमाता=वृद्धिकामाता=विद्धिआमाता =बिहिआमाता=बिहीमाता=बिईमाता=बीमाता=बेमाता।

बिहाई=वृद्धाआर्या=वृद्धाआर्यिका=विदाइया=बीधाइया=बीहाई=बिहाई। आर्य वृद्धा का उल्लेख कादम्बरी मे तथा आर्या व वृद्धा के नाम से वन पर्व मे भी आया है।

रू. भे.—बेमाना, बेहमाता, बिहाई बिहाईमाता, बेहमाता, बैंमाता बैमाता, बैह।

बेमार—देखो 'बीमार' (रू. भे.)

उ०—पातसाह महमंद वडो धरमात्मा हुवो। उ ओलदा री हाट ४ मंडावी, वैद्य राखिया। बेमारां नूं दारू धरम रौ दीजै। रोगिया नूं खावा नूं दीजै ओढण बिछावण दीजै। —नैणसी

बेमारी—देखो 'बीमारी' (रू. भे.)

बेमालूम—देखो 'बेमालूम' (रू. भे.)

बेमिळावट—देखो 'बेमिळावट' (रू. भे.)

बेमुख—१ देखो 'बेमुख' (रू. भे.)

२ देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—१ हरिया मास मसाण है, भूत रकमी खाण। मोई भर्म बिनादमी, बेमुख वडा प्रजाण। —अनुभववाणी

उ०—२ जाग्या मोई जाणियै, हरिया हरि के हेत। हरि बेमुख म जाणिया, ता मुख पडसी रेत। —अनुभववाणी

उ०—३ गुर दरसन परसन नही, हरिया बेमुख जानि। अंधा नर देखै नही, पीपल बाधी तानि। —अनुभववाणी

उ०—४ हरीया करणी क्या करै, गुर सूं बेमुख थाय। तोगै तृनी बरत ज्यूं, खबडखत की खाय। —अनुभववाणी

उ०—५ वाकू प्रार पार नही कोई रह्या राम सू बेमुख सोई ब्रह्म बिचार भया जन पारा, और रह्या वार का वारा। —अनुभववाणी

बेमू—स. स्त्री—वह गाय, भैंस आदि पशु जो प्रसव देने वाले हो।

बेय—१ देखो 'बेद' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्मा बेय उच्चरंय, गीत तुंबरु गावै, रंभा अवसर रमै, बीण सरसती बजावै। सिव अवलोकण करै, इंद्र सिर चम्मर ढाळै। व्यास उकति बरनवै, पाउ गंगा पखाळै। —प्रभुनाथ कवियौ

२ देखो 'बेय' (रू. भे.)

बेयकाल—स. पु [स वेद काल] भोगने का समय। (जैन)

बेयड्ड, बेयड्डह, बेयड्ड—स. पु.—एक पर्वत का नाम।

उ०—१ अरजुनु बोलइ चरु भंडारी, पाछइ आवइ सउ उपगारि। खेचरु ग्रोनइ सांभलि सामि, गिरि बेयड्ड सुणीइ नामि। —सालिभद्रसूरि

उ०—२ गिरि बेयड्डह तलि गयऊ, पणमिउ नाभि मल्हारु। निब मणिचूडह राजु दिह, पढिलउ एउ उपकारु। —सालिभद्रसूरि

बेयण, बेयणा, बेयणि, बेयणी—१ देखो 'बचन' (रू. भे.)

२ देखो 'वेदना' (रू. भे.)

उ०—१ दस मास समापित गरभ वीध रित, मन व्याकुळ मधुकर मुणणति। कठिण बेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपति प्रसवती वसति। —वेलि

उ०—२ ए जु भमर बोलिबा नै मणणाट करै छै। सु मांनूं गरभवती व्याकुळता जणावै छै। जब बेयण लागे छै प्रसूत हुइवा की तब गरभवती कूजै छै। विलाप करै छै। सु ए कोकिला बोले। सोई मानूं वनसपती नै बेयणलागी छै। अर कूजै छै। इहि समै वनसपती वसत जायौ। —वेलि टी०

उ०—३ लाख जीभ जेहइ मुख माहि, नरग तणा दुक्ख तिणि न कहाइ। नरय बेयण जो कहइ विचार, केवल नांणी न जाइ पारि। —वस्तिग

बेयरणी—देखो 'बैतरणी' (रू. भे.) (जैन)

बेयविय बेयविय, बेयवी—देखो 'वेदविद' (रू. भे.) (जैन)

बेयहद, बेयहदी—देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—न को जोग जुगता न को जत जोखा, न को सात सुखं न को दसदोखा। न को मनवाचा न को स्वाल सबदी, न को हदि मांही न को बेयहदी। —अनुभववाणी

२ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

बेयाळ, बेयाल—१ देखो 'वेताळ' (रू. भे.)

२ देखो 'बेताळ' (रू. भे.)

३ देखो 'व्याळ' (रू. भे.)

बेयावच, बेयावच्च—वि० [सं. वैयावृत्य] १ वयोवृद्ध, गुणवृद्ध।

२ देखो 'वैयावच्च' (रू. भे.)

उ०—१ बेयावच दस प्रकारनी, करजो चित्त लगाय। काइयक रसायण ऊपजे, दुख दालिद्र दूरै जाय। —जयवांणी

उ०—२ पीठी न करावै ग्रग, ग्रहो बेयावच संग। करै करावै नहीं ए, जात न जणावै सही ए। —जयवांणी

उ०—३ ससार तारण दु कावली, चउथौ व्रत देह दस्तार रे। ग्र-खोड ग्रांबिल निम जाणवी, कल (इ) य बेयावच्च सार रे। —कवि कुसललाभ

उ०—४ भली साधवी यसोभद्रा, पालइ पचाचार रे। विनय बेयावच करइ वारु विणइ गुरुणी नी कार रे। —स. कु.

उ०—५ ग्रापरणा जांणपणा ने ग्रागलै, गिणु न केहू नै गान। विनय बेयावच्च नहीय विवेकना, ग्रति मोटो ग्रभिमान। —ध० व० ग्रं.

बेर-सं. स्त्री. [सं. बेर:] १ शरीर, बदन, देह।

२ शत्रु, दुश्मन।

३ विलम्ब, देर।

उ०—१ लसकर पिण ग्रलघौ गयौ, जूभण वेला जांणि। वडे बेर हम कु भई, वादल कहै ए वांणी। —प. च. चौ

उ०—२ माढा रचनै मेलियौ, बीरम नै नाळेर। परणीजण ग्राय-जियौ, वीचै मत कीजौ बेर। —वी मा.

४ देखो 'वेळा' (रू भे.)

उ०-१ केइ वह पूरण काज कर, फूलै नह मन फेर। 'पातल' धीर गभीरपण, भल रक्खण इण बेर। —जैनदान वारहठ

उ०—२ वणि होळिका घभ जुध बेरां, गिरपर बह भेलूं समसेरां। धार विहार ग्रणी घट घोरग, चुख-चुख होय पड़ै रिण चोग्ग। —सू प्र.

उ०—३ 'बाघा' हर नाहर जेण बेर, घासाहर थाहर लीध घेर। धुब तोप सघण ग्रराळ धीह, बहमिया चाळ बाधण ग्रबीह। —वि. स.

उ०—४ इम परसै राजा ग्रावेरौ, ग्रावै हित घर बेर ग्रवेरौ। 'ग्रजमल' तेड 'दुरग' 'ग्रासाणी', कथ धारी मेटण तुरकाणी। —रा० रू.

५ देखो 'बोर' (रू भे)

६ देखो 'बैर' (रू भे)

७ देखो 'वैर' (रू भे)

उ०—तउ ईह ना मोलि तणा पटउला, हेना बलउ कांइ करउ ग्रवेलां। जाउ पराए सवि मू पसाइ, मारउ न बेरइ नृप नइं उपाइ। —सालिसूरि

रू. भे.—बेर।

बेरक—१ देखो 'बेरक' (रू. भे.)

२ देखो 'बैरक' (रू. भे.)

३ देखो 'वेरक' (रू. भे.)

बेरजा-वि०—बिना इच्छा एवं बिना स्वीकृति, स्वीकृति रहित।

उ०—सुख सुखायंत करी, दुख दुखायंत पासै टाळी। तेरी रजा करी सैतान की बेरजा करी. ग्राई बलाय दफै करी। —नी. प्र.

बेरजौ-सं. पु.—चीड वृक्ष पर उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का गोंद विशेष, गधबिरोजा। (ग्रमरत)

बेरणी-सं. पु —बढई का लोहे, लकडी ग्रादि मे छेद करने का ग्रौजार विशेष।

वि०—१ चीरने वाला, काटने वाला।

२ देखो 'बारणी' (रू. भे.)

बेरणौ, बेरबौ—देखो 'बैरणौ, बैरबौ' (रू. भे.)

उ०—वारा दरबार मैं ई उणारै लोजा नीव ग्रर वडला निजर मू ई पैला ऊचा वधग्या। राजाजी बिना सोच्यांई हथमारा नै हुक्म दियो के उणारा दोनू पग वाढ वेरा मे थरकाय दो। दुस्टी करोतियां सू पग बेरणढूका। —फुलवाड़ी

बेरणहार, हारौ (हारी), बैरणियौ —वि०।

बेरिग्रोडौ, बेरियोड़ौ, बेरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बेरीजणौ, बेरीजबौ—कर्म वा०।

बेरतन-स. पु [स. वैरीतनय] वैरी, दुश्मन, शत्रु। (वं. भा.)

बेरपरळय, बेरपरळै—देखो 'वेरप्रळै' (रू. भे.)

बेपरवाह—देखो 'बेपरवाह' (रू. भे.)

बेरपरवाही—देखो 'बेपरवाही' (रू. भे)

बेरप्रळय, बेरप्रळै-सं पु.—प्रलयकाल, कल्पात।

उ०—सारा 'चापा' 'जोध' सग, 'ऊदा' मिळिया ग्राय। उलटिया ग्रजमेर दिस, बेरप्रळै करवाय। —रा० रू.

बेरमण-सं पु —त्यागने की क्रिया, त्याग।

बेरवा-स. स्त्री.—राठौडों की प्रसिद्ध तेरह शाखाग्रो में से एक शाखा। (बा. दा. ख्यात)

बेरह—देखो 'विरह' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति राजान सिलांमति सरद रित रै समै री पुनिम री चद्रमा सोळै कळा लियां सपूरण निरमळी रैण री उजळी जादणी रै किरण करि नै हस नू हसणी देखै नही नै हसणी हस देखै नही छै। मिळि सकता नहीं छै। तारां बार-बार माहो माहै बोलि बोलि नै बेरह गमावता छै। —रा. सा. सं.

बेरहडी-स. पु.—घोड़ों का एक प्रकार का रोग विशेष जो घोड़े के अगले पैर की नली में होता है। (शा. हो.)

बेरहम—देखो 'बेरहम' (रू. भे.)

बेरहमी—देखो 'बेरहमी' (रू. भे.)

बेरहर, बेरहरि—देखो 'बेरहर' (रू. भे.)

उ०—भादरत भोट लक्र चाल भ्रड़िया भवर, दुभ्रळ लग चाल संलोट देता। बेरहर जठै पगवाळ लग बजावै, कठै खुसियाळ खुसियाळ कीता। —तिलोकदान बारहठ

बेरांण—१ देखो 'वीरांण' (रू. भे.)

२ देखो 'वीरांन' (रू. भे.)

बेरांणयो- देखो 'वीरांन' (मह., रू. भे.)

बेरांन—१ देखो 'वीरांण' (रू. भे.)

२ देखो 'वीरांन' (रू. भे.)

उ०—नरै राव सूजा नु लिख नै घणी दिलासा दे वासियो। नरो भाव वसियो तिण दिन ठौड़ बोहोत बेरांन सु नरा री मन टिकै नही। —नैणसी

बेरा—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

बेराई—देखो 'बैराई' (रू. भे.)

बेराग—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—बधव ए मल भवियां रे, सरिया वांछित काम। जाति समरण ग्यांन थी रे, भायो बेराग बेऊ तांम के। —जयवाणी

बेरागढ—देखो 'बैरागर' (रू. भे.)

उ०—हीरा थै लाईजो बेरागढ देस रा म्हारा राज, मोती थै लाईजो बनड़ी रै हार जड़ायजो, रे तोरे भावजो। —लो. गी.

बेरागर-सं. पु.—१ देखो 'बैरागर' (रू. भे.)

उ०—सदा हुवै मोती सागरां, हीरा बेरागर होय।

—सरसती भंडार

२ देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

बेरागी—देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

उ०—सांभल! है राणी राजा नै करड़ा न बोलियै, निसक हुई जै नांय। इसी बेरागन भजै तू दीसै नही, तूं बैठी छै राज कै माय।

—जयवांणी

(स्त्री. बेरागण)

बेराग्य—देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

उ०—बेराग्य रगिइ चारित्र लीधउ, प्रतिमाइ रहिउ मुनि रे। नलरायइ तै यती दीठु, ध्यांनस्थ सोमइ वनि रे। —नळदवदंतीरास

बेराड़णो, बेराड़बो—देखो 'बेराणो,बेरावो' (रू. भे.)

बेराड़णहार, हारो (हारी), बेराड़णियो—वि०।

बेराड़्योड़ो, बेराडियोड़ो, बेराड़योड़ो - भू० का० कृ०।

बेराड़ीजणो, बेराड़ीजबो—कर्म वा०।

बेराडियोड़ो—देखो 'बेरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेराडियोड़ी)

बेराज—देखो 'बेराज' (रू. भे.)

बेराजी—देखो 'बेराजी' (रू. भे.)

उ०- १ जद स्वामीजी बोल्या—थे कही भीखणजी रा स्रावक दान नही देवै तो जै लेवाल तै सरव थारै इज भासी। भनै थे कहो तै धरम थानै इज हुवै, थे बेराजी क्यू थया। थे निंदा क्यू करो।

—भि. द्र.

उ०—२ सेठ जोर री डकार लेवतां बोल्या—गया महीना री बात है, कोई मामूली लेण-देण रा मामला मैं एक अफसर म्हारा सू बेराजी व्हैग्या। म्हनै ई रीस भायगी कै देवतां-देवतां ई भकड़ बतावै, सो भापसरी मैं भोड व्हैग्यो। —भमरचूंनडी

उ०—३ नदीया नीर नही। सतीया सत नही। ब्राह्मणा वचारो नही भसत्रिया रूप नही। इण तरै सराप दै, बेराजी हुय नै स्री सिवजी मा'राज नै चेला सकरजी कैळास पधारिया। —मारवाड़ री ख्यात

बेराजीपण, बेराजीपणो, बेराजीपो-स. स्त्री.—बेराजी होने की अवस्था या भाव।

उ०—जद स्वामीजी कह्यो-किणहिरै गूबड़ो दुखतो घणो नै पछै फूट गयो तो ऊ राजी हुवै कै बेराजी व्है? जद कह्यो—राजी हुवै। ज्यूं दुखदाइ छूटा बेराजीपो नही। —भि. द्र.

रू भे.—वेराजीपण, वेराजीपणो वेराजीपो

बेराट—१ देखो 'विराट' (रू. भे.)

२ देखो 'वैराट' (रू. भे.)

बेराणो, बेराबो—देखो 'बैराणो बैरावो' (रू. भे.)

बेराणहार, हारो (हारी), बेराणियो—वि०।

बेरायोड़ो—भू० का० कृ०।

बेराईजणो, बेराईजबो—कर्म वा०।

बेरायोड़ो—देखो 'बैरायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेरायोडी)

बेरावणो, बेरावबो—देखो 'बैराणो, बैराबो' (रू. भे.)

बेरावणहार, हारो (हारी), बेरावणियो—वि०।

बेराविग्रोड़ो, बेरावियोड़ो, बेराव्योड़ो—भू० का० कृ०

बेरावीजणो, बेरावीजबो—कर्म वा०।

बेराबियोड़ो—देखो 'बेरायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. बेराबियोडी)

बेरासती—स. स्त्री.—वैमनस्य, मनोमालिन्य।

उ०—तद हाजीखां कयी, जो हाथी तो म्हारै अेक है और सोवन देण न नहीं, नै पात्र छै सु हमारी बैर है। तद ठाकुरां पाछा आय राणा नूं उत्तर दियो। तद इण वात ऊपर राणी रै नै हाथी रै बेरासती हुई। —द. दा.

बेराह—देखो 'बेराह' (रू भे.)

उ०—जग तूठो बंदी जणां, जीहूलह 'अभसाह'। किया सवाई मांडहै, तळ दाई बेराह। —रा रू.

बेरि—१ देखो 'वैरी' (रू भे.)

२ देखो 'बेरी' (रू. भे.)

३ देखो 'बेळा' (रू भे.)

उ०—म्रदग ढोल मगळी, रवाब तार सार ली। वजंति बेरि बेरिय, भणं कि भकि भेरिय। —रा० रू०

बेरियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

बेरियोड़ो—देखो 'बैरियोडो' (रू.भे.)
(स्त्री बेरियोडी)

बेरी—१ देखो 'वेळा' (रू भे)

२ देखो बेरी' (रू. भे.)

उ०—१ भैंस्यां नै अपटाऊ तिला री कब्बर, खोपरा रो गिर अर कुपासियां रो बाटो। चरण साह सूवा री पाख रै अनमान पराळ, चीपटो पीवण सारु बेरी रो साफ-सुथरो ठाडो पाणी। सवार-सिझ्या सातू भैंस्या नै सपाडो। —फुलवाड़ी

उ०—२ बसती घणी। धरती हळवा ४० छै। ऊनाळी नही। कालंभर ब्याव २ बोराडा री केर बाहळो गाव नजीक छै। तठै बेरियां छै। बावडी एक बाहाळ माहै छै। भाखर खुभराळियो कहीजै। भाखर री खाभ बसै। —नैणसी

३ देखो 'वैरी' (रू. भे)

उ०—नीदडली बेरण हुय रही, इण सरीखो हो भूंडो नही कोय के। मूल तो मिलै नारकी, गति माठी मैं कोई फेर न जोय। —जयवांणी

(स्त्री. वेरण)

बेरुख—देखो 'बेरुख' (रू. भे.)

बरुखी—देखो 'बेरुखी' (रू. भे.)

बेरुलिय—स. स्त्री.—वैदूर्यमणि, जिसका आधुनिक नाम नीलम है। (जैन)

बेरू—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—वेगो आयो न करी बेरू, ताहं करि सु दवखण वेर। रत्ता मुगल नीली टोपी, ततकाळ नरवद्दा लोपी। —गु. रू. ब.

बेरोक—देखो 'बेरोक' (रू. भे.)

बेरोजगार—देखो 'बेरोजगार' (रू. भे.)

बेरोजगारी—देखो 'बेरोजगारी' (रू. भे.)

बेरो—सं. पु.—१ कूवा, कूप।

उ०—१ दुनिया मैं निबळा अर गरीब घणा है, इण कारण घणे लोग टणकेल अर सूरवीर है। बेटी! म्हारी आ मुळावण थारै वास्ते अणूंती मूंघी पडैला, आ जांणता थका ईं म्हैं थनै बिखा रा ऊंडा बेरा मैं धरकावूं, यूं म्हारी इण लाचारी नै समझै है कै नीं। —फुलवाड़ी

उ०—२ म्हूं अबै इण मोळा कमेडा मैं कांई जबाव देवती। उणरा विस्वास नै कियां खंडत करती। जिण उम्मेद री डोर माथै वो जीवै हो। उणनै कियां तोडती। जिण वरत रै सहारै वो बेरा मैं उतरियोडो हो, उणनै कियां वाढती। —अमरचूंनड़ी

उ०—३ उनाळा रा पाणी री तकळीफ रा दिनां में कोई आपरा सगा गिनायतां रै घरै जाय जम्यो तो किणीई बेरा-कोहटा करनै दिन तोड दिया पण आसाढ रा चांदणा पख रा ऐ दिन आवता त्यारा बैर ज्है ज्यूं लागता हा। —रातवासो

२ देखो 'बेरी' (रू भे.)

उ०—१ डागै आपरी बेटी बेई वर देखण नै काठी कमर बांध ली। आडसर, मूंमासर, रिणी' र राजगढ ज्यारां कांनी भंवाळी खावता नीसरघो। पर फूटरो-फररो भवरी रै वर री बेरो कठै ही नीं पटघो। —दसदोख

उ०—२ जै फिरंगी नै बेरो पड ज्या, पाछो वो फिर ज्याय, तोप मूंहांगी म्हांनै चाडै, रहो कैद कै माय। इतनी सुणकै डूंगजी, स, बोल्यो कडवा बेण, ई मूंडै की धणी लोटिया! म्हांनै आयो लेण? —डूंगजी, जवारजी री छावली

उ०—३ अेक बर, देवर, बागा मैं ले चाल, बेरो तो पाडां, भो देवरिया, नारी-मरद को नारी होय तो पड़घा-रिड़घा फळ खाय। मरद हुवै तो तोडै फूल गुलाब रो, राजा जैमल पडघा-रिड़घा फळ खाय। लो• गी.

रू- भे.—बेरो

बेळ—वि०—१ समान, तुल्य।

२ बहुत ज्यादा, अत्यधिक। (अ मा.)

सं पु—१ समुद्र, सागर।

उ०—गुण सागर दुस्तर अगाध, अति आघ अपारण। बेळ निजर विद्दुसा, असह कवि भ्रमण अकारण। —रा. रू.

२ तरंग, लहर, हिलोर। (ह. ना. मा.)

उ०—१ उमर वरस एकादस आई, प्रठै सुणी नृप चंद्र प्रवाई। सुणता मात्र कूच अर सधियौ, बेळ समुद्र जेम दळ बधियौ।

—सू प्र.

उ०—२ वोरिणजा बधू गौ बाह्य असइ बिट, चोर चकब विप्र तीरथ बेळ। सूर प्रगटि एतला समपिया मिळिया विरह बिरहिया मेळ।

—वेलि

उ०—३ जिम मधुकर नइ कमलणी, गगासागर बेळ सुबधा ढोलउ मारवी, काम कतूहल केळ।

—ढो मा.

उ०—४ सुत सम्रत छद छट पच नव सपूरण, भेदगर च्यार दस बोध भाळी। अरथ जुत बोलबौ हेळ बीजा 'अजा', बेळ अम्रततरणा उदध बाळी।

—र. ज प्र.

उ०—५ मिळ आवत लोढ कि बोढ मही, जमना दळ बेळ समुद्र जही। बर माळ भरणभरण ऊमरिय, पवंगा तुरिय रव पाखरिय।

—रा. रू

उ०—६ जैता साम सग्राम की, बोबे बाढ कमंध। ज्यां दधि दकवै बेळ बळ, हीरा परक्खे बंध।

—रा रू

३ गले में धारण करने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

४ अंगुली मे धारण करने का एक प्रकार का आभूषण विशेष।

वि० वि०—यह सोने, चांदी या तांबे के तार से गुंथी हुई अगूठी होती है। कतिपय लोग तांबे के तार से गुथी हुई देवजी या भैरवजी आदि देवताओं की बेळ (अंगूठी) अंगुलियो में पहनते हैं।

५ पागल।

६ पागलपन।

उ०—१ केई दिनां सूं काली माली घर घर बकं तौ ई ग्है उण री मिनरव नीं करी। जांण्यौ वा कालायां करै तौ छो करती। आप वण नै इसी मांयं नी चाढता तौ वण री काई मजाल कै घर घर यूं बेळ बातां बकती फिरै।

—फुलवाड़ी

उ०—२ कदेई कदेई तौ यूं अंडी बेळ बातां करै के म्हनै ई जूभळ छूट आवै। पण म्हारां सू ई कोगत करियां बिना थारौ जीव धापै कोनीं।

—फुलवाड़ी

उ०—३ वौ चोर हमेसां कीं न की ऐडी बेळ बाता करतौ ई रैवतौ उणनै ढावण सारू दूजोड़ौ चोर अेक समझदारी री बात करी— बात पीढियां लग आ माया तौ अपारै खायां नीं खूटै। अबै चोरी नी करनै इज्जत सू ठायौ अपडला तौ सावळ! जीव अस्टपौर सुरक सुरक करै।

—फुलवाड़ी

उ०—४ डाखू लाली बीदणी रै मूंडा सांम्ही देख बीद कैवरण लागौ— अंडी बेळ बात बळै कदे ई करज्यौ मती। भायजी जांणै जिस्ती लोभ करैला। वै रूप बिचै लुगाई रै गुणां री घणी आदर करै।

—फुलवाड़ी

७ आग, अग्नि।

८ सहसा मन मे उठने वाली तरंग, उमग, भावना।

उ०—१ ईडरिया आचार री, वीर चढै तौ बेळ। हुसत चढै चारण हुवै, माया सरसत मेळ।

—बां. दा.

उ०—२ बेळ रो महण भणणाण वीर, हेतवां वेण हेळा हमीर। सेण रो सैरण अह सत्रु साल, ढाविया विरुद जोधांण ढाल

—पे. रू

६ देखो 'वेल' (रू. भे.)

उ०—१ रवि ऊगै साहाबदी, खान इनायत बेळ। आसुर आयौ खेडिया, ज्यौं सागर ऊमेळ।

—रा रू.

उ०—२ सकै सूर असुरांण दळ पूर आयौ सिखर, किणी नह बियै अब बेळ कीजै। वारता जिसी 'जग' कहै बीकमपुरो, 'जैतसी' जोधपुर दुरंग लीजै।

—राव जैतसी रो गीत

१० देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—विरध बधाई नांव, समूरथ साख सवाई। ब्याह विनायक बेळ महोछव मेळ विदाई। पूजा पाठ निराठ, वरै व्रनमाळा मोखौ। जागण रातीजगा, वसुटण वायजा चोखौ।

—दसदेव

११ देखो 'वेल' (रू.भे.)

१२ देखो 'वहल' (रू भे.)

रू भे.—वेला

बेल—सं पु.—१ खेत में कुए से नाली द्वारा आने वाले पानी का बहाव।

२ एक प्रकार का लघु काव्य।

३ रेखा लाईन।

उ०—मच फाग छूटी रब लाग महा, कल सोर म प्रांस कबांण कहा। बधि बेल धमाधम सेल वहै, गुणि खीज कि बीज सिळाव वहै।

—रा. रू

४ होलिका-दहन के दस दिन बाद अर्थात चैत्र कृष्ण दशमी को सधवा स्त्रियो द्वारा किये जाने वाले "दसामाता" या "दसावहाडी" के व्रत के दिन सूत के दस धागो के डोरे पर दस गांठे लगाकर गले मे धारण की जाने वाली तात।

५ देखो वेल' (रू भे.)

उ०—१ आयो फिर हेरां 'अजो' नरपत सहत निवाब। दखरण दूत चलावियां, तेडण बेल सिताब।

—रा रू.

उ०—२ परत न लभै पार, तिण पसरी बेल अपार। उत्तम मध्यम अधम में, नर सुर नाग कुमार।

— रांठौडा री वसावळी

उ०—३ ना रे ना भोला, बीज वास्तै नीं है। यूं तौ थारै ई'ज पडग्यौ, बिना बताया पार नीं आवेला। वो मतीरौ इमरती बेल री

है, सो राजा नै भेट देवण खातर रुखालियोड़ी है।
—अमर चूंनड़ी

उ०—४ पसरी मुकति बेल रूपहरी, गगा वहै इसी छबि गहरी। वठै वसाय दीजियै आतुर, पारकेस नामै पारकपुर। —सू. प्र.

उ०—५ मावजी रे हमनें नौसर हार, बेल वधो मेरै बाप की रे। ज्यूं वाली ज्यूं दुब, ज्यूं कोडी ज्यूं नाल। —लो. गी.

६ देखो 'बेला' (रू. भे.)
७ देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—चोधरण तोई फिटक मैं नी आई। वा तो दूजै दिन बेल जुताय घणी सारू किणी फूठरा नांव री सोय मैं पीहर रै मारग वहीर व्हैगी। —फुलवाड़ी

८ देखो 'वेळा' (रू. भे.)
९ देखो 'वेळ' (रू. भे.)

उ०—१ चडै बेल वरियाम, सुजळ तै आगळ चचळ, गरजि नाद गंभीर, रोडि रिणतूर अबागळ। असल फौज ओपत्ति, बहुत चीधा बेरक्कां, मारवाड मरजाद, अडां अनडा मारक्कां। —गु. रू. बं.

उ०—२ रचतौ इसो राजसर रांणा, लेखौ अगरो कवण लहै। अस सूरज वहतो आथंनर, बेलां पग माडतो वहै।
—महाराणा राजसिंह री गीत

बेलकि, बेलकी—सं. स्त्री – एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन विशेष।

बेलख, बेलखि—स. पु [स बेलक] बाण का फर, पुख स्थान।

उ०—विळकुळियौ वदन जेम वाकारयौ, सग्रहि धनुख पुणच सर सधि। क्रिसन रुकम आउध छेदण कजि, बेलखि अणी मूठि द्रिठि बध। —वेलि

रू. भे.—बेलख, बेलखि

बेलड—१ देखो 'बेलड' (मह., रू. भे.)

बेलड़ली, बेलड़ि बेलडी—स स्त्री —१ एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन विशेष।

रू भे.—बेलडली, बेलडि, बेलडी, वेलडली, वेलडि, वेलडी

२ देखो 'बेल' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ बरस सीम काउसग रह्यउ, बेलड़िए वीटाणउ रे। पखी माला माडिया, सीत तावड मोखाणउ रे। —स. कु.

उ०—२ बातां करतां पखवाडो बीत ग्यो। राजा वाळो मतीरो पाकनै रोराबाण व्हैग्यौ। बेलडी कुम्हळीजगी अर कूंपळ बळगी। चोखो दिन देखनै चोधरी मतीरो लेयनै राजारै दरबार कांनी वहीर व्हियो। —अमरचूंनडी

उ०—३ मनोहारा सार सं'गार रसमा, अनुभवी थया तरवरा। बेलड़ी वनिता रूपइ आलिंगन, भूमि भांमिनी जलधरा। —वि. कु.

उ०—४ माया विसरी बेलड़ी, हरीया पसरी दूरि। केताई प कारणै, रह्या विसूरि विसूरि। —अनुभववा

बेळच, बेलच—देखो 'बेळच' (रू. भे)

बेळचौ, बेलचौ—देखो 'बेळचौ' (रू. भे.)

बेलज, बेलज—देखो 'बेलज' (रू. भे.)

बेलडली, बेलडि, बेलडी—१ देखो 'वेलडली' (रू. भे.)

२ देखो बेल' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ नं (तं) भय मिटयो जांण नै नदी उपरै बाग लगायो छै माहोवला फूल हुवै छै। घणी वेला, घणी बेलडिया, वी (नं लोतरी चीभडा, खरबूजा, नीला गोहूं, साल, दाल घणी नीपजै छै इसडो बाग छै। —रिसालू री ब

उ०—२ विण तरुअर जिम बेलडि, कंठ बिना जिम माल। पुरु विहूणी पद्मनी, किणि परि ठेलिसि काल? —मा. कां.

उ० ३ गिरि गिरि वाधइ बेलडी, ऊपरि फूल विकास। मं मोर कला घणी, बिरहणीयां तन त्रास। —मा. कां.

उ०—४ वेस्या विस नी बेलडी, कांमी कूकम ग्रस। बाली बाल सीड करिय, लघु वयमांहि लक्ष। —मा. कां.

बेलण—सं. स्त्री.—१ नींद मे, स्वप्न मे या अचेतनावस्था मे बकने क्रिया।

२ देखो 'बेलण' (रू. भे)

उ०—बेलण वेलीजी बांह, मिरगानैणी जी राज। मूंगफळी घणरी आगळी, जी म्हा रा राज। —लो. गी

उ०—२ हलूइ हाथइ चालइ, मांहि घी घूलउ टालइ, एक ल पाटउ, मांहइ दीउइ साटउ, बेलण स्यु बेलीइ, हलुइस्यू मेल्हीइ, इ स्यूं मिल्या, लोह कडाहे तल्या, सब्द कल कलइ, निरधूम अग्नि बलइ,........। —व.

रू. भे.—बेलण

बेलणियो—वि०—नींद मे, स्वप्न मे या अचेतनावस्था मे बकने वाला

स. पु.—१ रहट के घूमने वाले चक्र पर पड़े लट्ठे पर बैल हांक वाले के स्थान के नीचे लगाया जाने वाला एक डंडा विशेष जिस सांकल या रस्सा डाल कर बैलो के जूए से जोड़ा जाता है।

२ देखो बेलण' (अल्पा., रू. भे.)

बेलणौ, बेलबौ—क्रि० अ०—१ छट-पटाना, तड़-फड़ाना।

उ०—१ हमि जोगणि हडहड, गोळी रत गड गड, मडै खफर मिळै। तिल तिल हुइ टूकड, बेलै तुरभड, मच्छक तडफड तु जळै। —गु. रू.

उ०—२ ढाढी माया निसह भरि, सुणियउ साल्ह सुजांण। ओछा पाणी मच्छ ज्यउं, बेलत थयउ विहांण। ढो. म

२ देखो 'बेलणी, बेलबौ, (रू भे.)

उ०—१ बेलण बेलौ जी बाह, मिरगानैणी जी राज । मूंगफळी सी धण री प्रांगळी, जी म्हारा राज । —लो. गी.

उ०—२ ··· ·····माहियौ थूलउं टालइ, एक लगै पाटउ, मांहइ दीजइ साटउ, वेमण स्यु बेलीइ, हलूडस्यूं मेल्हीइ, घ्रतस्यूं मिल्या, लोह कडाहैं तल्या, सब्द कलकलइ निधूम ग्रगनि बलइ, नीपना सतपुडा खाजा, तुरत कीधां ताजा, सदला नै साजां, मोटा जाणै प्रासाद ना खाजा, चिहु खुणे साजा गहुवा खाजा प्रीस्या········· । —व. स

३ देखो 'बैलणी, बैलबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सेठा रै बेलणा रै सागै इणी भात सेठाणी री बेलणौ चालू हो । पर बेटी दोनूं जगा री बेलणौ चुपचाप सुणतौ रह्यौ । मां रै मूंडा सूं बाप रै चेतारी बात सुणनै राजी व्है जातौ ग्रर बारै सौत री बात सुणनै ग्रणूतौ विलखौ व्है जातौ । इण मूं ग्रागै उणरी समझ नीही । —फुलवाडी

उ०—२ सेठाणी री काळजौ ग्रणूतौ काचौ हौ । हरख मनावण री बात सुणिया पछै तौ वा वत्ती रोवण लागी । कदास सेठ मीत मे बेलण तौ नीं लागग्या ! ग्रबै वा करै तौ काई करै । सेवट काठी हारनै वा कह्यौ—थें भलाई नी मानौ, म्हे तौ पचा नै बुलावूं । —फुलवाडी

उ०—३ घरविद री बाता रै पछै मामी राजाजी रा समचार पूछ्या तौ वा सुभट निमक भाव सूं कह्यौ कै राजाजी तौ उण दिन पछै रांगी री तिथ ई नी ली । गूजरी ग्रलोप व्हैगी तौ ई हाल उणरी प्रीत वास्तै बेलै । —फुलवाडी

बेलणहार, हारौ (हारी), बेलणियौ वि० ।
बेलिग्रोड़ो, बेलियोडौ, बेल्योडौ—भू० का० कृ० ।
बेलीजणौ, बेलीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।
बेळणौ, बेळबौ, बैलणौ, बैलबौ—रू भे

बेलवार—देखो 'बेलदार' (रू भे.)

उ०—१ पैसठ हाथ रै पछै रेळी रै कारण बेगो खुदणौ दूभर व्हैगौ तौ म्हैं ग्रेक वाजिदा सिरावा री मोय मैं निकळियौ । वौ सिरावौ जात री बेलवार हौ । —फुलवाडी

उ०—२ डारण तेड बेनवार भूरजालदै, रोठ ग्रतोजै रीठ मैं चला चंग ग्रदै । रैत थली री रात दिन मन पै धडकदै, कोटडिया धमका करै चौबीस भडंदै । —पा प्र

बेलवारी—देखो 'बेलदारी' (रू भे.)

बेलपतर, बेलपत्र, बेलपात—देखो 'बेलपत्र' (रू. भे.)

बेलबाद, बेलसाट—देखो 'बिलबिलाट' (रू. भे.)

उ०—मन मैं धरता मरट घरट जिम भूखें घूमै, मेलै घर गया मळ भटकि मूग्रा पर भूमै । बेटा नै मा बाप वेचि धै जीमण वेद, रूलतां रिगता राक करै बेलसाटा केइ । —ध. व. ग्रं.

बेळा—स. स्त्री. [सं. वेला] १ समुद्र का तट या किनारा ।

२ सीमा, हद ।

३ रात-दिन का चौबीसवां भाग, पल ।

४ काल, वक्त, समय ।

उ०—१ तठा उपराति राजान मिलामति नोग्ण बाधीजै छै । घणां गज डवर पेमाग करि मंडोवर महलें पधराया छै । सुभ दिन सुभ घडी सुभ मूहरत सुभ वार सुभ लगन सुभ बेळा माहि ग्राणि पाट सिंघासण विराजमान किग्रा छै । माथा ऊपर सेत छत्र विराजै छै । सेत चमर दुळै छै । —रा. सा स.

उ०—२ बेली तदि बळभद्र बापूकारै, सत्र सावतौ ग्रजै लगि साथ । तूठै वाहविये ग्रा बेला हुव, जीपिस्यै जु वाहिस्यइ हाथ । —वेलि

उ०—३ लाठा लाठा मौतबिर बेलाकुवेळा वही दूध री मिस लेय गूजरी रै घरै ग्रावता मकता कोनी । कारी मासी खुडकौ व्हैता ई जाग जाती । सगळा नै मीठौ जबाब देती । किणी माथै छीटा नीं देवती । —फुलवाडी

उ०—४ बूजी काई, बूजी रा बेटा नै ई गीगला री किलरौ कोइ है । लारली बेळा छुट्टी सूं रवानै व्हिया जरूरी बात हृ—पूणची काठौ पकड लियौ ग्रर बटू करती कावळी वदार नाम्यौ । —ग्रमर चूनडी

पद —बेळापूळ=समय ।

५ ग्रवकाश, फुर्सत ।

उ०—१ कवर नै खेत री रुखवाळण रा बोल याद ग्राया । उण री देखा देख वौ कह्यौ—बिरथा झिकाळ करण री म्हनै बेळा कोनी । थै सगळी बाता थारै काना सुणली ही, म्हैं पाछी काई गिणावू । —फुलवाडी

उ०—२ ग्रा री घाल्या तीन दिन व्हिया ग्रापरै पाखती ई नीं ग्राय सकी । दिन मै चार-पाच बेळा चूंधाणा पडै । थोडै दिना पछै तौ घाट दळियौ खावणौ सीख जावैला । पछै बेळा ई बेळा है । ग्रापनै ग्रठा ताई ग्रावण सारू ग्रेकर ई फोडा नी खावणा पडैला । महाराणी ग्रपूठी फिरनै बोली—म्हैं जावूं । फेर बेळा मिळी तौ ग्राय नै मिळ लेवूला । ग्रबारू थूं ग्रारी साळ-समाळ कर । —फुलवाडी

६ मौका, ग्रवसर ।

उ०—१ तब रुखमणीजी डावै पासै बैसाण्या । ज्यौं विधि छै त्यौं बोल वाचा लै । ज्यौं कही छै त्यौं कार नै बिवाह पूरण कीयौ ।

तिहि बेळी वेद का पठणहारां । मुँहमांगी सु नव ही निधि पाई ।
—वेलि टी.

उ०—२ जगत री रीत है आप री स्त्री नै प्रथम मिळाप री वेळा देखणं है प्रनै इण सूरवीर रै पाछो हटण री पूठ लारै देखण री प्रण है कै पाछो हटूं नही पूठ लारै दखू नही । —वी. स. टी.

मुहा०—१ बेळा रा वाया मोती नीपजै=उचित अवसर पर काम करने से लाभ होता है ।

२ बेळा देख बरतणो=अवसरवादी होना ।

७ बार, दफा, मर्तबा ।

उ०—१ ताहरा कोई परमेस्वर री ख्याल हुवो, जु कवांणा काढ नै रावजी रै गळं माहि घालण करै । ताहरां एक बेळा तो कवांण ऊपर सै रही गळा रै । —नैणसी

उ०—२ जुडिया 'वीर' तणी जुग जांणं, दाखव पंथी देख दुयं । काळा सूं विढतां कै बेळा, हांमं कै हथवाह हुयं । —दूदो बारहठ

उ०—३ चौधरी तीन बेळा जमीं ताई लुळ लुळ नै खम्माघणी अरज कर नै ऊंचो राजा रै मूंडा कानी देख्यो तो पगा नीचै सूं धरती सिरकती लागी । ओ तो सागण उण दिन खेत में आयो बिकोज आदमी। —अमरचूंनडी

उ०—४ दो तीन बेळा जीभ फेरनै डोकरियो आपरी दात संभाळियो । पछै थूक गिटतो कंवण लागो—तो रामजी भला दिन देवै—तीनूं जणा हाकरता जमराज रै पाखती पूगा । —फुलवाड़ी

उ०—५ बेटा रै मरिया पछै नित अेक बेळा तो म्हनै आ वात सुणाणी ई पड़ै । जाणता थकां ई दूजी बात सुणावण री मन ई नी करै । —फुलवाड़ी

८ देर, विलम्ब ।

उ०—विहना घणी लगाई बेळां समहर सूर सवदा । सुर जोया साद करै सांगावत, रथी आवो रायजादा ।
—जैसिंह नरूका कछवाहा री गीत

९ देखो 'बेळ' (रू. भे)

रू भे —बरियां, बरिया, बिर, बिरया बिरियां, बिरिया, बिळिया, बिलिया, बिलोया बीरिया, बीरिया, बीरीयां, बीरीया बेर, बेरा, बेरिया, बेळ बेल, बेंल, बेळा, बेला, वरिया, वरीयां विरयां, विरिया, वीरियां, वीरीया, विलिया, विल्या, वेर, वेरां, वेरिया, वेरी, वेळ बेला, वेलि, वेलो, वेळु, वेलु वेळू, वेलू, वेल्या, बेल्हा, बेळा, बेला मह., बेळो, बेलो

बेला–सं. पु.—१ जन्म, जीवन ।

उ०—घोर माहि जीव घणउं दुख सहइ, चारि पांणी नवि बेलां सहइ । परवसि थ्या करमि घालइं घाटि, बहइं भार ते मारइं साटि ।
—बस्तिग

२ कष्ट, संकट ।

उ०—आणइ नारी तणइ वियोग, कूबड वेहि हुअउ कुयोग । बेला पाडी मक समकाल, उपचार नूं फल हुवूं ततकाल ।
— नळदवदंती रास

रू. भे—वेल्हा, बेळा, बेला

३ देखो बेळ' (रू भे)

४ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ वाल्हा किम आवूं तिहां रेलो बेला दिखमी जायरे सनेही । सुख चाहता जीव नइ रे लो, मत कोई लागू थाय रे सनेही ।
—वि. कु.

उ०—जिकै पारस्व केरी करिस्यति भक्ति, तिकै धन्य बाकू मनुस्या प्रसक्तिम । भली आज बेला मया बीतरागा, लुसी माहि भेळ्या नमई व नागा । —स. कु.

उ०—३ सवरी स्रावक करइ पोसउ, आठ पुरहि गुरु मुखइ । उचरइ दडक त्रिण्ह बेला, सामाइक पछि तिणि रुखइ । —स. कु.

उ०—४ बूडै मन आवर करै तेह सजाई लीध, दासी नै सनकारि सिखानी सगलो सिधो दीध । भोजन पान सजाई करता बेला कीध, बाघी रात पड़ी छै आकुल थायो म सीध । —ध व. ग्र.

उ०—५ इण वातै मोनै लाज कहावै, पुत्र थका मां दुखणी थावै । हू समझूं थारै समझावै, बात कही बेला घनी थावै । —जयवाणी

बेळाइत, वेलाइत–स पु.—समुद्र, सागर ।

क्रि. वि.—उचित समय पर ।

उ०—उठियो जगड लाग अममांणं, उर 'अजमाल' तणो व्रत आणं । उण बेळा लालो' मिळ आगा, बेळाइत खवाणी बागा ।
—रा० रू०

बेळाउळ, वेलाउल—१ देखो 'विलावळ' (रू. भे) (घ. व. ग्र)

२ देखो 'बेळाउळ' (रू. भे.)

उ० —१ ३० सहस्र आगर, २४ सहस्र नगर, २४ सहस्र करवड, १६ सहस्र खेड, १४ सहस्र बेलाउल, ३६ कोडि कुल, ४८ सहस्र पत्तन, ४९ सहस्र उद्यानवन,″″″″ । —व स.

बेळाउळधी, बेलाउलधी —देखो 'बेळावळधी' (रू भे.)

बेळाकूल, वेलाकूल–स. पु.—बन्दर, बानर ।

उ०—किसलय नीकलता गहगहइ, वेलाकूलै रा गहगहइ । मूड लक्ष धान्य नीपजइ, सकल वांछित सुख संपजइ । —नळ दवदती रास

बेलाज्वर, वेलाज्वर–सं. पु. [सं. वेलाज्वर] वह ज्वर जो मृत्यु के समय होता है ।

बेलातर, वेलातर–सं पु.—एक प्रकार का शाक (सब्जी) व व्यंजन विशेष ।

उ०—बालु नइं बेलातड, बेऊ वेलस वारिए। बधाव महलु लीउ, बाउलीउ बखांणि। —मा. कां प्र.

बेलाधिप, बेलाधिपत बेलाधिपति, बेलाधिपती-सं. पु. [स. वेलाधिपति] दिनमान के आठवें भाग या वेला के अधिपति देवता। (फलित-ज्योतिष)

वि० वि०—जिस दिन जो वार होता है उसी दिन की पहली वेला का वेलाधिपति उसी वार का ग्रह होता है।

बेलापात—देखो 'विलापात' (रू. भे.)

उ०—मारवणी री सरीर सोरंभ किस्तुरी जिसौ छै। उठै पीवरण सांप हुता जिकै सास पी गया। तिण सु मारवणी निरजीव हुय गई। परभातै जमाई जागी नहीं। ताहरा ढोलोजी दीवाधरी सखी बोलाउ। सगळाई आणि भेळा हुवा। ढोलोजी प्रति बेलापात करण लागा। —ढो. मा.

बेळापुळ बेलापूळ-स. पु—अच्छा मुहूर्त, शुभ समय।

उ०—नित रा ओळवां सूं आती आय वा खुद केई दिनां सूं बावळ नै मन री वात बतावणी चावती ही। आज काल करता दिन टळता गिया। औ अणचीत्यो जोग सजग्यो तौ इण नै क्यूं टाळै! बेळापुळ वायोड़ा ई मोती निपजै। —फुलवाड़ी

बेळायौ—देखो 'बेळायौ' (रू. भे.)

बेलाळ बेलाल-सं. पु.—१ पवन, हवा। (ना डिं. को.)

२ समुद्र, सागर।

बेळावळ, बेळावळ—स. पु—१ समुद्र, सागर। (ना, डिं. को., ह.ना. मा.)

२ देखो 'बिळावळ' (रू. भे.)

रू. भे.—वेळाउळ. वेलाउल, वेळाकूल, वेलाकूल।

बेळावळधी, बेलावलधी-सं. स्त्री.—विष्णु-पत्नी लक्ष्मी। (ह. ना. मा.)

रू. भे.—वेळाउळधी, वेलाउलधी

बेळावसेक, बेळाविसेक—स.स्त्री.—बालकों में होने वाला बालग्रह नामक रोग समूह मे से कोई एक रोग विशेष।

उ०—बाळ-कन्हैयौ थोडौ घणौ ई ओपरौ लखावतौ कै मासी नै बेळा-विसेक री वै'म व्हैतौ तौ सात वेळा अवारनै लूंण-मिरच करती। खुदीखुद ई मन करै जणा झाडौ देती, हळको हाथ करती। —फुलवाड़ी

बेलास—१ देखो 'बेलस' (रू. भे.)

२ देखो 'विलास' (रू. भे.)

बेळाहरन, बेलाहरण-स. पु. [सं. वेला+धारणम्] समुद्र, सागर।

उ०—रांमा अवतारि वहै रणि रावण, किसी सीख करणाकरण। हूं ऊधरी त्रिकुटगढ हूतौ, हरि बधे बेळाहरन। —वेलि

बेलि—१ देखो 'वेल' (रू. भे.)

उ०—१ तेरे पासा खासा वासा, पासा बांसाहि का प्यासा, मेरी आसा बेली फैलि तुं ही इछया अमा है। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ मुझ मांगणि सुरतरु बेलि फैली, चिंतामणि करियल आवि मिली जसु समरणि सुर धेनु मिली, सो सेवउ जिनवर रंग रली। —स. कु.

उ०—३ तेल विहूणउ दीवड़ु, मूल विहूणी बेलि। पांणी विहूणी दहू री, तिम होई ति महेलि। —मा. कां. प्र.

उ०—४ रांमा अवतार नाम ताइ रुकमणि, मांन सरोवरि मेरुगिरि। बाळकति करि हंस चौ बाळक, कनक बेलि बिहुं पांन किरि। —वेलि

उ०—५ मूरखु कोइ छइ खरउ गमारु, सूकहि बाली करइं छार। जिन धरम लाधउ पाय म पेलि, सुख तणी ऊपाडी म बेलि। —वस्तिग

२ देखो 'बेली' (रू. भे.)

३ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

बेलियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ तड़-फड़ाया हुआ, छट-पटाया हुआ।

२ देखो 'बेलियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बेलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेलियोड़ी)

बेलियौ—१ देखो 'बेलियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बेल' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'बळद' (अल्पा., रू. भे.)

४ देखो 'बहलियौ, (रू. भे.)

उ०—गांम रा मोजीज आदमियां आयने रावळै मुजरौ अरज कियौ अर आजम ढाळ नै गाम मे अमल री हाको करायौ। घोड़ां नै दाणौ अर बेलियां नै गुळ फटकड़ी दिरीजी! रोटा वास्तै आटौ गूंदीजियौ, साग-भाजी री तैयारी होवण लागी अर मसालो पीसता सिला लोरौ बाजण लागी। —अमरचूनड़ी

बेली—१ देखो 'वेली' (रू. भे.)

उ०—१ बेली तदि बळभद्र बापूकारै, सत्र साबतौ अजै लगि साथ। बूठं वाहवियै आ वेळा, हळ जोपिस्यै जु वाहियइ हाथ। —वेलि

उ०—२ "बालो" भालो झलियां, रिण कालो रावत्त। जुध वालो बेली जिहां, 'तेजो' 'सुजावत्त'। —रा. रू.

२ देखो 'बेल' (रू. भे.)

उ०—१ पीडति हेमत सिसिर रितु पहिलौ, दुख दाळघो बसत हित दाखि। व्याए बेली तणौ तरुवरां, साखा बिसतरिया बैसाखि। —वेलि

उ०—२ मळयानिळ वाजि सुराज थिया महि, भई निसंकित अंक भरि। बेली गळि तरुवरा विळाथी, पुहप भार ग्रहणा पहरि।
—वेलि

उ०—३ हरीया कड़वी वेलका, कड़वाई फळ किध। जब बेली तैं बीछड़ै, होय नाव की सिध।
—अनुभववाणी

उ०—४ त्रिगुन तैं गुन ऊपजै, गुन कै त्रिगुन माहि। जनहरिया फल वेल तैं, फल बिन बेली नाहि।
—अनुभववाणी

३ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

बेलीड़ौ—देखो 'बेली' (अल्पा, रू. भे.)

बेळु, बेलु—१ देखो 'बाळू' (रू भे.)

उ०—ठाढौ बेळु की रेत, भुबुकैला पुंवण घणा। बरसो आऊ की राति, काल्हो का धौंस घणा।
—समसदीन

२ देखो 'बेळू' (रू. भे)

३ देखो 'व्याळू' (रू. भे)

४ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

बेळुका, बेलुका—देखो 'बाळू' (रू. भे.)

उ०—उपवन करि अति ग्रेह उसीरा, नोल गुलाब छड़क घण नीरां। जळ गुलाब बेळुका जमावै, विमळ पटी सीतळ विछवावै।
—सू. प्र.

बेळू, बेलू—वि०—१ व्याकुल, बेचैन, विह्वल।

उ०—द्विज भयो बेळू अजामेलू, कामखेळू बाम यं। जमदूत बेलू काळ वेळू, कठ मेळू ग्राम यं। सूत हेत हेलू नाम लेलू, कर उवेळू साम यं, ऐसा गोविंदु कृपासीधू, दीन बधू राम यं। —करुणासागर

२ सहायक, मददगार।

३ देखो 'बाळू' (रू. भे.)

उ०—१ बेळू घाणी पील कर, कोई तेल कढावै।
—केसोदास गाडण

उ०—२ वली वचन कहै सूवटो, जो तिल मा तेल न होय। तो बेलू मैं किहा थकी, राय विचारी जोय।
—वि कु

४ देखो 'व्याळू' (रू. भे.)

५ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—द्विज भयो वेळू अजामेळू कांमकेळू बांम यं। जमदूत खेलू काळ बेळू कंठ मेळू ग्रांम यं। सुत हेत हैलू नांम लेलू कर उबेळू साम यं, ऐसा गोविंदू कृपासिंघू दीनबंधू रांम यं। —करुणासागर

रू. भे—बेळू, बेलू, बेळु, बेलु

बेलै—सं. पु.—आकार, आकृति।

उ० – गूंगी री अरणी ठेट काठियावाड़ जायनै घोड़ी लायो। लाखां मैं टाळको। उपरैटा री ओद री। पळकतो कमेत रंग। कांनां तीखो। धणक ज्यूं तणियोड़ी लांबी गाबड़। गाळिया छोटा। अग्गर चौड़ो। ढालां जैड़ा पुट्ठा। लाबो बाळचो। केसावळी लांबी। चोड़ा सूंम। लाबै बेलै। चौड़ो लिलाड़। पळा रै सुब देवमिण।
—फुलवाड़ी

बेळौ, बेलौ—स. पु—१ एक प्रकार का पक्षी विशेष।

२ क्रौंच पक्षी।

३ कष्ट, सकट, आपत्ति।

४ वंस।

५ पूजा आदि का सामान रखने का साधन या उपकरण।

उ०—यूं कहनै रातरा मंडोवर रया नै प्रभात रा उठ बेलै री भेंरू जी री मूरत बेलै मैं लाधी तद सांखलै नापै कंवरजी सीवीकेजी नुं कयो—गोरोजी आप रै सागै हालसी अर थारी राव वाडी बंधसी।
—द. दा.

६ देखो 'वेळा' (मह., रू. भे.)

उ०—वस्त्राभरण जिणै हरथा तैं छूटइ इण मेलौ जी। आदिनाथ नी पूजा करइ ' अहऊठी बिहु बेलौ जी।
—स. कु.

७ देखो 'वेळौ' (रू. भे.)

उ०—सामजी रामजी बूंदी रा वासी। स्रावगी जाति रा वेद। दोनूं भाई बेला रा (जोड़ै जनम्यां)। उणीयारो सूरत एक सरीखी दीसै। केलवे दीक्षा लेवा आया।
—भि. द्र.

बेल्यां—१ देखो 'बेल' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—हरसा मेरा बेटा रै, होवेली सांझ सवेरी रै रोज। मेरा समरथ मोबी ! भोजन री वेल्यां रै ऊभो रोयसी। हरसा ! मेरा लाल रे आवैली परधर कैंरी धीय। मेरा मोबी रे बेटा, भोली किन्या ने रै फोड़ा घालसी।
—लो. गी.

बेल्यौ—देखो 'बेल' (अल्पा., रू. भे.)

बेल्हणौ, बेल्हबौ—क्रि. स.—१ चीरना, फाड़ना। किसी दल या समूह को बीच मे से दो भागों में पृथक करना, दूर करना, हटाना।

उ०—बेल्हतो गजां है थाट लागा भटळ, रीठ वागा खगां दुवै राहां। जोध जसराज पूगो भलो जूजवो, सेल रोळै दुहूं पातिसाहां।
—महाराज जसवंतसिंघ री गीत

२ देखो बेलणौ, बेलबौ' (रू भे.)

३ देखो 'बैलणौ, वेलबौ' (रू. भे.)

बेल्हणहार, हारौ, (हारी), बेल्हणियौ—वि० ।
बेल्हियोड़ौ, बेल्हियोड़ौ, बेल्हयोड़ौ—भू. का. कृ. ।
बेल्हीजणौ, बेल्हीजबौ—कर्म वा० ।

बेल्हा-१ देखो 'बेळा' (रू. भे.)

उ०—प्रहरै प्रहर ज ऊतरयु, दिवला साख भरेह् । धण जीती, प्रिय हारियउ, बेल्हा मिळण करेह् । —ढो. मा

२ देखो 'बेला' (रू. भे.)

बेल्हियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ, संहार किया हुआ

२ देखो 'बेलियोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बेलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेल्हियोड़ी)

बेव—देखो 'वेग' (रू. भे.)

उ०—१ एक अबभ्रम परखणै, अति छति सकति प्रजेव । ज्यों मति आवै सांमि कै, पाय दिखावै बेव । —रा. रू.

उ०—२ महातेज मै राजि वाजी समरथं, रहै बेव पेखं खड़ा देव रत्थ । दुनौ मग्ग राजान री सोभ देखै, लखै कांम रै नास सो बाभि लेखै । —रा० रू०

उ०—३ तेजी वितंड ऊडड तेव, विख्यात राग अख्यात बेव । परबत पंख पक्खर प्रचंड, एराकी पिठ खुरसाण खंड । —गु. रू. ब.

उ०—४ गुरड बेव साहस घटै, मरण सक हणवंत मुडै । जग यता थोक पावै जदै, पाल' बचन भूठा पडै । —पा' प्र.

बेवकूफ—देखो 'बेवकूफ' (रू. भे.)

बेवकूफी—देखो 'बेवकूफी' (रू. भे.)

बेवक्त, बेवगत—देखो 'बेवक्त' (रू. भे.)

बेवड़—देखो 'दोवड़' (रू. भे.)

बेवड़ियौ—देखो 'बेवड़ौ' (अल्पा., रू भे.)

बेवड़ोचूड़—'बेवड़ोचूड़' (रू. भे.)

बेवड़ौ—एक प्रकार का बर्तन विशेष ।

२ देखो 'बेवड़ौ' (रू. भे.)

उ०—मसाला वेसवार लूण बरायजे छै । दही री रजबो दीजै छै । तरगसां मांहां सीकां काढजे छै । बेवड़ां डोहां चाढजे छै । बीज बीसरी भरती दीजे छै । सू तसु बीच सीकां ऊपर चाढजे छै । माडे हाथ डोरा घी रा दीजे छै : इण भांत सूळा वणे छै —रा. सा. स

३ देखो 'बेढौ' (रू भे.)

बेवटौ—देखो 'बपटौ' (रू. भे.)

बेवणी—देखो 'बेवणी' (रू. भे.)

उ०—हळदी अेक ब्वारी लेयनै सरड़ सरड़ सगळौ फूस बुवार, दियौ । उखरडी सूं मिलाम करनै वा पाछी बहीर व्ही । आगै जावता उणनै अेक चूलौ सांमी धकियौ । चूलौ कह्यौ—हळदी बाई थोड़ी म्हारी बेवणी साफ करदै । —फुलवाड़ी

बेवणौ, बेवबौ—देखो 'वहणौ, वहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रीस मे दात पीसतौ बोली—रळनी लायोड़ी रा डीकरा अेडा नाजोगा नी व्हैला तौ किण रा व्हैला । बाप री तौ नन्नौ पत्तौ ई कोनी, पछै इत्ती करड़ावण किण बात री । पै'ला मां नै जाय बाप री नांव तौ बूझ, पछै मारग बेवती पिणियारयां सूं रोळयां करजे । —फुलवाड़ी

उ०—२ पाचा री ई तेवड़ै तौ कूटळौ कर न्हाकै । पण कोई जोघा कै सूरवीर व्है तौ लडतौ ई ओपै । ठगा नै तौ ठगाई करनै हाथ बतावै तौ साचैली जीत । मारग बेवता परख ई व्ही । वौ तौ पछै की सोच नी करयौ । —फुलवाड़ी

२ देखो 'बेवणौ, बेवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ अरधीया थम वेधीलीया वडायर, बरद भ्रप धारीयां वात बेवै । दली नै मंडोवर पगा रा पखे अडग, दली नै मंडोवर धका देवै । —तेजसी खिडियौ

उ०—२ ऊपरलै देवलोक सरवारथ सिद्ध सीम, चिहु दिसि सरखा देवता ए । उपजइ एथ मनुस्य तप सयम करी, सुख भोगवै अम बेवता ए । —स. कु.

बेवणहार, हारौ (हारी), बेवणियौ—वि० ।
बेवियोड़ौ, बेवियोड़ौ, बेव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बेवीजणौ, बेवीजबौ—कर्म वा०, भाव वा० ।

बेवतन—देखो 'बेवतन' (रू. भे.)

बेवना—देखो 'वेदना' (रू. भे.)

उ०—कमळा सोचती—इसै जीवणै ना तौ मर जावणौ ई भलौ । वा कदै-कदै मा बाप रै दुख नै देख'र अपघात करण री सोचती । जद धरम भाडो ऊभ'र आंगळी हिलाय'र कैतौ 'अपघात घोर पाप' । घरवाळा बै-नै अेकली को छोडता हा नी । पण तोई बा तौ मांयली बेवना सूं घुळती जावती ही । —बरसगांठ

बेवफा—देखो 'बेवफा' (रू. भे.)

बेवळ—देखो 'बेवळ' (रू. भे.)

बेवलियौ, बेवलौ बेवल्यौ—देखो 'देवलौ' (रू. भे.)

बेवांण—देखो 'विमांन' (रू. भे.)

उ०—१ लपर्क गं जूह लोहा कं घरा तडपर्क सूर, बडमके बेवरा रभा झड़पर्क बेवांण। महा वेग वहिया गनीम अद्र तणं म.ग्रं, क्रोधगी हमीर' वाळी दांमणी कवाण। —तेजराम ग्रासियौ

उ०—२ साट सीरम्भ उरम्म हुइ साहणा, घावरट थाट घासार हाल थणा। तापबं ऊपडं तेज माही तुरा, अहिया जाण बेवांण आकास रा। —गु. रू. बं.

बेवा—देखो 'बेवा' (रू. भे.)

बेवाई—१ देखो 'बेवाई' (रू. भे.)

२ देखो 'बिवाई' (रू. भे.)

३ देखो 'ब्याई' (रू. भे.)

उ०—ग्रेहडौ वचार माडा ही मलिग्रा। ग्रर ग्राय, देखौ रै वर धको ग्रदीठ समचार बूझिग्रा। कोई बेवाई, कोई जमाइ, कोई वदेई सगा कह मलिग्रा। भाया रा नाम लै कुसल पूछिग्रा। —कल्याणसिंघ नगराजोत बाढेल री बात

बेवाणौ, बेवाबौ—देखो 'वहाणौ, वहाबौ' (रू. भे.)

बेवाणहार, हारौ (हारी), बेवाणियौ—वि०।

बेवायोडौ—भू० का० कृ०।

बेवाईजणौ, बेवाईजबौ—कर्म वा०।

बेवायोड़ौ—देखो 'वहायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेवायोडी)

बेवार—देखो 'वेसवार' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बेवाई—देखो 'बिवाई' (रू. भे.)

बेवाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

बेवाहणौ, बेवाहबौ—देखो 'विवाहणौ, विवाहबौ' (रू. भे.)

बेवाहणहार, हारौ (हारी), बेवाहणियौ—वि०।

बेवाहिग्रोडौ, बेवाहियोडौ, बेवाह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बेवाहीजणौ, बेवाहीजबौ—कर्म वा०।

बेवाहियोड़ौ—देखो विवाहियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. वेवाहियोडी)

बेवाही—देखो 'ब्याई' (रू. भे.)

उ०—१ थयौ सूरग वीवाह, रग सूरग रह्यौ बेवाहियां। —श्रीपालरास

उ०—२ स्वजन बेवाहिय धूरइं, भूरइ निगहिय नेह। लेई अचेत ऊपाडिय, माडिय ग्राणीय गेहि। —जयसेखर सूरि

बेवियोड़ौ—१ देखो 'वहियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बेवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री वेवियोडी)

बेसंभाळ—वि० [ग्र बे+राज.सभाळ] बिना चेतना का, बेसुध, चेतना-रहित।

बेस—स. पु. [सं. वेशः] १ पहनने के वस्त्र, पोशाक, वेश।

उ०—१ कोई वीर स्त्री भागल पती नै कहै छै—हे कथ। ग्राप भला भाग नैं जीवता घरै ग्राया। ग्रबै म्हारौ बेस धारण करावौ। ग्रबे म्हनै ग्रा चूडिया सूं लाज ग्रावै छे सो हूं तो हमै चूडियां पैलं जनम मेटसूं। —बी. स. टी.

उ० २ ग्रेक दिन सिंझ्या रा घोडा माथै बैठौ थौ यूं ईं बिरथा तब-डका मारतौ हौ कं उणनैं मरवर री पाळ सूं उतरती पिणियारया री भूमरी सांम्ही धकियौ भात-भात रा सुरगां भांत-भांत रा रूपाळा उणियारा। रूं रूं मे जोबन छळकै। —फुलवाडी

उ०—३ पछै समेट खाम कर येली में घात कागळ प्रोहित नुं पहुँचायौ। चिरमी एक बेस एक जनांनौ ग्रवल, रुपीया सव इतरा प्रोहित नु बिदा रा मेलिया। मण एक सीरावणी मारग री मेली। —कुंवरसी साखला री वारता

२ कपडे ग्रादि पहनने या पहन कर सजने या किसी ग्रन्य को पहना कर सजाने का ढंग, तरीका।

उ०—१ ग्रर ग्राप न हालौ तौ कन्या नूं तरुणी हुई जाणि चद्राउतां पुरोहित री धरणी विवाई मोनूं बीद रौ बेस कराइ साहस धी ग्राणियौ तौ भी दिल्ली रा दूत दसोर पूगा जाणि पाछौ ही पलाईजै। —व. भा.

उ०—२ पछे नरबद ग्रांनौ घोडे-वहल बेस नै जंतारण था कोस १ ग्ररट छै तठै रहौ। सु सुपथिरी ग्रावण री मजूरणी रौ बेस करने माथै घडो लै नीसरी। —नैणसी

उ०—३ ग्राज निसह म्है चालिस्या, बहिस्यां, पथी बेस। जउ जीव्या तउ ग्राविस्या, मुया त उणि हिज देस। —ढो. मा.

क्रि प्र. करणौ, कराणौ, देणौ, धारणौ, पहरणौ, पहराणौ, बदळणौ, बदळाणौ, लेणौ।

३ रगमच के पीछे का स्थान।

४ भीतर जाने का रास्ता, प्रवेश द्वार।

५ वेश्याग्रो का मोहल्ला।

६ वेश्या का घर।

७ शरीर, देहन।

उ०—१ ग्रावइ ग्रावासि ग्र.पणइ पणि लूहंता केस। पुण्य हुई तु पामीई, बेस्या केरु बेस। —मा. कां. प्र.

उ०—२ सुंदरभाल विसाळ, अलक सम म'ळ अनोपम। हित प्रकास म्रदु हास, अरुण वारिज मुख ओपम। कृपा धाम नव कज, नयण अभिराम सनेही। रुचि कपोल ग्रीवा त्रिरेख, छवि बेस अछेही। निरखत सत सनमुखा नि भर, करण पुनीत सु प्रीत कर। गुण मान दान चाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यान अो ध्यान कर। —रा रू

८ स्थिति, हालत, अवस्था।

९ रूप, सौन्दर्य।

१० रूप, स्वरूप।

[स वेश] ११ एक दानव जो आयु राजा को रक्षार्थ देवराज इन्द्र के द्वारा मारा गया था।

वि —१ विशेष श्रेष्ठ बढ़िया।

उ०—१ अै वस्तुआ आपरै हीज लायक छै म्हारै लायक नहीं तद रावजी राखी। घोडो एक निपट बेस थो सो रावजी राखियौ।
—ठाकुर जैतसी री बात

उ०—२ कुतक बिदर धव काठ रा, बिदर पजावण बेस। तो पिण हाजर राखणा, धण मेलवा हमेस। —बा दा

उ०—३ दिस बनावौ ग्रहन कूं, तौ मुख पाऊ बेस। भिळिया आनी आगसी, जासी सबै अन देस। —श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—४ सदा मनोरथ सुभ करण वाणी अम्बर बेस। सारा पहली समरियै, गवरी पुत्र गणेस। —पना

२ देखो 'बेसर' (रू भे.)

उ०—सुकीर नासिका सरूर, बेस रीत राजियै। मुरु गुरु र भोम सुक्र, राजद्वार राजियै। मुख्व प्रकास हास मद, ओपमा उजासय। उदै अरद्ध भोणए, मयकज प्रकासय। —सू. प्र.

३ देखो 'बेस्या' (रू भे.)

उ० —मुहनउ लेई सवि समुदाय आव्य जिहां वहठउ छइ राय। घप आयस लही वर बेस रगरणि कीधउ प्रवेस। —हीराणद सूरि

४ देखो 'वेस्य' (रू. भे)

उ०—कुण खत्री कुण ब्राह्मण, चत्र वेद चवदा। विराज विसाऊ कुण बेस, कुण सूद्र कहंदा। —केसोदास गाडण

५ देखो 'वयस' (रू भे.)

उ०—१ आळस वाळा राजवी घर रा घर में दारू पी रोटी खाय सूय रैणो, घर री काम परोपकार, वीरता, देस सेवा, आदि आछा काम न करणा में वृथा यूं ही बेस ऊमर गमावै है। —वी स टी

उ०—२ हैम वरनी हेम गिर, बाली लड्वे बेस। कथ विहूंणी कामणी सांची कहि संदेस। साची कहै सदेस बेगा मीठा कहू, राज मुवै पर हव्य रंग महिला धरूं। —मा वचनिका

उ०—३ हसं सारी नाग नारी उचारी बिहारी हुत, सवारी पधारी बळै लेती आज सूक। कठै या रो बेस असी जुद्धकारी वातां करै, फूणाधारी दीठो न छै आगकारी फूक। —मुरारीदास बारहठ

उ०—४ मैसव तनि मुखपति जोवण न जाग्रति, बेस सधि मुहिणा सु वरि। हिव पळ पळ चढतौ जि होइ सै, प्रथम ग्यान एहवी परि। —वेलि.

उ०—५ देवी रत्त नीलमणी सीत रग, देवी रूप अवार बौरूप अग। देवी बाल जूआ व्रध बेस वाळी, देवी विस्व रखवाळ बीसां भुजाळी। —देवि.

रू भे.—वेस, बैस, वेस, वेसि, बैस।

बेसऊर—देखो 'बेसऊर' (रू भे.)

बेसऊरी—देखो 'बेसऊरी' (रू. भे)

बेसकार-स. पु. [स वेषकार] किसी वस्तु की सुरक्षार्थ उस पर लपेटा हुआ कपड़ा।

बेसकीमत, बेसकीमती—देखो 'बेसकीमती' (रू. भे)

बेसजुवति बेसजुवती—देखो 'बेसयुवती' (रू भे.)

बेसण—देखो 'बेसण' (रू. भे.)

बेसणियौ—स. पु.—बेसन, नमक मिर्च आदि के घोल को पका कर बनाया जाने वाला एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

बेसणी—देखो बेसणी' (रू भे.)

बेसणौ—देखो 'बैसणौ' (रू. भे.)

बेसणो, बेसबो—देखो बैठणो, बैठबो' (रू. भे.)

उ०—काम पडिया वगनर टोप पेरवा री आखडी। केसरिया वागा विना पेरवा री आखडी। दात रा चुडा विना बडारण राखणरी आखडी। घडवेल बेसवा री आखडी। गाया री चाममारी लेवा री आखडी। —रा. सा. स.

बेसणहार, हारो, (हारी), बेसणियौ—वि०।

बेसिओडो बेसियोडो, बेस्योडो—भू० का० कृ०।

बेसीजणो, वेसीजबो—भाव वा०।

बेसधर—स. पु [सं वेशधर] जैनो का एक सप्रदाय, छद्मवेषी।

बेसन—१ देखो 'बेसण' (रू. भे)

२ देखो 'विसण' (रू. भे.)

बेसनर बेसन्नर—देखो 'वैस्वानर' (रू भे.)

उ०—१ बेसनर भी लकडी लोह पाखाण लुकाए।
—केसोदास गाडण

उ०—२ भरिया तरु पुहप बहै छूटा भर, काम वाण प्रहिय करगि। वळि रितुराइ पसाइ बेसन्नर, जग भुरडीतो रहै जगि।
—वेलि.

बेसनव—देखो 'बंस्णव' (रू. भे.)

बेसबधू—देखो 'बेसवधू' (रू भे.)

बेसबर—देखो 'बेसबर' (रू. भे.)

बेसबरी—देखो 'बेसवरी' (रू भे.)

बेसबार—देखो 'वेसवार' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांत खरगोस होसनाक बणावें छै। मछलांद मिटायजं छै। नान्हो छून देगचा मे घातजं छै। माहि बेसबार हल्द घणा सूंठ मिरच जायफळ तज लाग घातजं छै। —रा. सा. स.

बेसब—देखो 'बेसबर' (रू भे.)

बेसबी—देखो 'बेसबरी' (रू. भे)

बेसभूसा–सं स्त्री. [सं. वेषभूषा] १ किसी देश, सप्रदाय, जाति आदि के द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक २ शरीर की सजावट हेतु पहने हुए कपड़े। (अ. मा., ह. ना. मा)

बेसम—देखो 'वेस्म' (रू भे.) (ह ना. मा.)

बेसमझ—देखो 'बेसमझ' (रू. भे.)

बेसमझी—देखो 'बेसमझी' (रू. भे.)

बेसमण—देखो 'वंस्रवण' (रू. भे) (जैन)

बेसयुवति, बेसयुवती–स. स्त्री. [स. वेशयुवती] वेश्या, रण्डी।
रू भे. वेसजुवति, वेसजुवती।

बेसर, बेसड–सं. स्त्री. [स. वेश्वर या बेसर] १ खच्चर।

उ०—१ अलूखानि जण साथि मोकल्या, देलाडयू मेल्हांण। घोडा हाथी ऊट पोठिया, बेसर पूठि पल्हाण। —का. दे. प्र

उ०—२ पाडा गाडा पोठिया, वली बेसरां वादि। भार भरिया भल सचरइ, अमल चढिया उम्मादि। —मा. का. प्र.

२ देखो 'बेसर' (रू. भे.)

उ०—१ आभा झळपट अग क चदं चीरिया, दरियाई धुज देह धरं डग धीरिया। लटकण झोला लेह क बेसर बकियां भरिया भूखण भार क लचकं लकिया। —र. हमीर

उ०—२ काइ नाम की जातिया, सुंदर बोहत सरूप। नख चख दीसं अति चतुर, वल बेसर छळ रूप। —पना

उ०—३ नाकां नी नथडी लावजो, म्हारं नाका नी नथड़ी लाव। म्हारं बेसर फूल लगावो हो, म्हानं खेलण द्यो गनगोर। —लो. गी.

उ०—४ तन मोड वाकी निजर त्रिपुरा, सलज चढियां सोहळी। सळ नाक चाढं विकट सोहै, महर बेसर झळवळी। —मा. वचनिका

उ०—५ सुभ नाक बेसर जड़ितस जोवन, अमुर पास मळूकए।
सिणगार अमुरा छळण समहर, सगति अदभुत सझए।
—मा. वचनिका

बेसरज—देखो 'बेसरज' (रू भे.)

बेसरम—देखो बेसरम' (रू. भे.)

बेसरमी—देखो 'बेसरमी' (रू. भे.)

बेसलूक, बेसलूग–वि० [फा. बे+सलूक] १ बिना ढग का, तौर-तरीके रहित।
२ बिना सम्बन्ध या रिश्ते।
३ अव्यवहार।
४ बेचैन, घबराया हुआ, उद्विग्न।

उ०—अबं कुंभो जीव री उकराळयो, ऐकल असवारो मंडोवर गयो। तरा रिणमलजी माळियं बंठा अळगा सूं कुंभा नं आवतो ओळखियो। तितरं आयो रिणमलजी नु मिळियो। कुंभो गळगळो हुवो। तरा रिणमलजी पूछियो—अबार एकलो बेसलूक सो क्यूं? खातणी वाळां बिगाडी दीसं छै। —राव रिणमल री बांत

बेसवण—देखो 'वंस्रवण' (रू. भे.)

बेसवधू - देखो 'बेसबधू' (रू. भे)

बेसवनिता–स स्त्री. [स वेशवनिता] वेश्या, रण्डी।

बेसवा—देखो 'वेस्या' (रू भे) (जैन)

बेसवाद—देखो 'बेस्वाद' (रू. भे.)

बेसवानर—देखो 'बैस्वानर' (रू. भे.)

बेसवार–स. पु [सं.] पीसे हुए नमक, मिर्च, लौंग, हल्दी, धनिया, काली मिर्च आदि मसालो का चूर्ण।

उ०—१ तं मं घणी नान्ही छुनियो मांस मदी आंच कढाई में तळजं छै। बेसवार मसाला घात उहा मांडां मे घातजं छै।
—रा. सा. सं.

उ०—२ मास रधांणा देगचा बेसवार अपारा, सूळा त्यार किया सही बाजे घन झारा। आया थाळ मिठाइया पकवांन अझारा, भोजन छपन छतीस भात जीमं जुग सारा। —पा. प्र.

उ०—३ आगं समघडो हथियार खोल नं बंठो छै। ससो एकै रजपूत नु दीयो। कह्यो, 'ससरो बणावो'। उण कह्यो, "भलां, जी' तठं रजपूत बेसवार ससं नू दे अर अगीठो जगायो छै।
—पीठवै चारण री बात

उ०—४ तठा उपरांत मोदियां नै हुकम हुवो छै। मुंजाई साक सारी ही बसत सीधो मीठाणा बेसवार सरब लेय राती नाडी चालज्यो म्हे सिकार रम उण नाडी आवो छां। —रा. सा. सं.

उ०—४ जरै ओमण नै पंचधारी लापसी मोकळी मंगळीक कीधी। घणा दाळ भात बणाया। घणा वेसवारा रांधिया, सालणा बणाया। ओमण तयार हुवो। तरा भाईदान जैतसीजी कनै गयो नै कह्यो, पधारीजै, रसोड़ो तयार हुवो छै। —जैतसी ऊदावत री बात

२ पहले हड्डिया अलग करके पीस कर मसाले मिला कर पकाया हुआ भात।

रू. भे.—बिसवार, वेसवार, वेवार, वेसबार, वेसवारो, वेसार।

वेसवारियोखीच–स. पु. [स. वेसवार+कृशर] बाजरी के साथ कुछ मोठ कूट कर उनके छिलको को अलग कर फिर उबालते समय नमक, मिर्च, धनिया आदि 'वेसवार' एव काचरियो के छोटे-छोटे टुकड़े मिला कर बनाया जाने वाला एक प्रकार का खाद्य पदार्थ विशेष।

रू. भे.—वेस्वारियोखीच, वेसबारियोखीच, वेम्वारियोखीच।

वेसवारी—देखो 'वेसवार' (रू. भे.)

उ०—वेसवारी वळाहि, सांजमणी हुंता ससां। खरा न खाधा जाहि, बिस भरीया वेसूर रा। —पीठवं चारण री वात

वेसवास–स. पु.—१ वेश्या या रण्डी का घर।

२ देखो 'विश्वास' (रू. भे.)

वेसस्त्री–स स्त्री.—वेश्या, रण्डी।

वेसांमी, वेसांमो—देखो 'विस्रांति' (रू. भे.)

उ०—मुहम प्रकोप उदेपुर माथै, सातंइ महण थया फिर साथै। लाधां जळ वेसांमो लीजै, छोजै जतु प्रजा पुर छीजै। —रा. रू.

वेसा—देखो 'वेस्या' (रू. भे.)

उ०—महि तु सूअडा रूपइ थई, वेसा पजरि बइठउ जई। राज-कुंअरि हिव प्रतिहि अलजई, महतो आगलि कहिवा गई। —हीराणंद सूरि

वेसाड़णो, वेसाड़बो—देखो 'बैठाणो, बैठाबो' (रू. भे.)

वेसाडणहार, हारो (हारी), वेसाड़णियो—वि०।

वेसाड़िग्रोड़ो, वेसाड़ियोड़ो, वेसाड़योड़ो—भू० का० कृ०।

वेसाड़ीजणो, वेसाड़ीजबो—कर्म वा०।

वेसाड़ियोड़ो—देखो 'बैठायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसाड़ियोड़ी)

वेसाणो, वेसाबो–क्रि. स.—१ उत्पन्न करना, व्याप्त करना।

उ०—ज्यूं कोइ रै स्रद्धा वेसांणीनै कहै हिवै तू गुरु कर। तब तै कहै दोय चार जणां नै पूछ सूं तथा आगला गुरु नै पूछ सूं। तै कहसी तो गुरु कर सूं। जब जाणणी इणरै स्रद्धा पक्की बैठी नहीं। —भि. द्र.

२ देखो 'बैठाणो, बैठाबो' (रू. भे.)

उ०—वेढी घाली वेसाणियो रे, राहु ग्रह्यो जिम चद। ओरो कोई चालियो, सिंह पड्यो जिम फ़द। —प. च. चो.

वेसाणहार, हारो, (हारी), वेसाणियो—वि०।

वेसायोड़ो —भू० का० कृ०।

वेसाईजणो, वेसाईजबो—कर्म वा०।

वेसानर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

वेसायोड़ो–भू० का० कृ०—१ उत्पन्न किया हुआ, व्याप्त किया हुआ।

२ देखो 'बैठायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसायोडी)

वेसार–स पु.—विश्वास, भरोसा, एतबार।

वि०—१ बिना सार का, तत्वहीन।

२ बिना तलवार वाला, जिसके पास तलवार न हो।

३ बिना चर्बी का, चर्बीहीन।

४ देखो 'वेसवार' (रू. भे.)

वेसावणो, वेसावबो—देखो 'बैठाणो, बैठाबो (रू. भे.)

वेसावणहार, हारो (हारी), वेसावणियो—वि०।

वेसाविग्रोड़ो, वेसावियोड़ो, वेसाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वेसावीजणो, वेसावीजबो—कर्म वा०।

वेसावियोड़ो—देखो 'बैठायोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वेसावियोडी)

वेसास—१ देखो 'विस्वास' (रू भे.)

उ०—मेळै वहतै मेलिया, दूत कमधा पास। साहरै रहिया आज लग, थे म्हारै वेसास। —रा. रू.

उ०—२ वळै रुखमइयं कहै छै। इतना राजवस छोडिनै अहीर सूं सगाई करै। सू बूढा हुआ को वेसास को मत करो। देखो माता पिता कितरउ चूकै छै। —वेलि टी.

उ०—३ काम सूंप नह कीजिए, बिदर तणो वेसास। रांणं कीधो 'राजसी', हुग्रो जगत मैं हास। —बा. दा.

उ०—४ मन रो उदास वेसास न जिय रो, खान पांन सुख नही वण घाळो। कद मिळसी रसराज सावळडो, बनमाळी गोकुळ रो ग्वाळो। —रसीलैराज री गीत

२ देखो 'वेसास' (रू. भे.)

उ०—पीर न को वेपीर सो, आस न जिसो निरास। सकल न कोई अकळ सा, सास न सा वेसास। —अनुभववांणी

वेसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

उ०—१ वेसासघात लै विसतरो, सळी सळी कुळ सोधिया। सुपनख्या वेघ कीयो संबळ, रावण राम विरोधिया। —सुरजनदास पूनियो

उ०—२ माल खायो ज्यांरो त्यांरो रली हीयैं नायो मोह, कुबदी सूं छायो भायो नही रमाकल। बेसासघात सूं कांम कमायो बुराई वाळो, माजनो गमायो नीवावता रै महत। —कविराजा बांकीदास

बेसासड़ज, बेसासड़ो—देखो 'विस्वास' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—करहा तुम्भ बेसासड़ै, मैं विसारिया सह्काज। रखे बीच बासो करै, मारू न मेळै आज —ढो. मा.

बेसासणो, बेसासबो—देखो 'विस्वासणो, विस्वासबो' (रू. भे.)

उ०—१ तठै कालबूत हसतणी रै फरस करि नै छिबितरी खाड माहै पडै छै। पछै लोह साकल रा आस नाखिनै तिकै हाथी पकडीजै छै। इणी भांति रा सीवली गजराज बेसासनै आणिआ छै। तांह नूं घणा मलीदा, वेसवार, मोगर दै दै नै पाटि आणिनै सभाया छै। —रा. सा. स.

उ०—२ सुजु करै अहीरा सरिस सगाई, अोलाडै राजकुळ इता। विघपणै मति कोइ बेसासो, पातरिया माता इ पिता। —वेलि

उ०—३ अमेसूर अंक तणौं परमाण, मडै घर 'छाडा' वेढ मडाण। बेसासं दाखै कोल वचन्न, मारू राव अोह धरै वडमन्न। —गो. रू.

उ०—४ जळ माहि जगदीस, विढै मघकीट विभाड़े वतळावै वेसासि, पछै दाणवा पछाडै। —पी. ग्र.

उ०—५ तारा खडिया रा साथ नै परतीत आई। सगां रा नाम-ठाम ठीक पहुना, बेसास्या। तरै खडियै आईदान अाव सुभराज कीयो। तरै जैतसीजी घोडा मूं उतरिया। बांह-पसाव करिनै मिळिया। —जैतसी ऊदावत री बात

बेसासणहार, हारो (हारी), बेसासणियो—वि०।

बेसासिग्रोड़ो, बेसासियोड़ो, बेसास्योड़ो—भू० का० कृ०

बेसासीजणो, बेसासीजबो—भाव वा।

बेसासि—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ रिणमल्ल राउ कूंभेण राणि, बेसासि चूकि वुहउ विनांणि कूंभेणि कूड कीयउ कदम्म, मारियउ 'रहण' साल्यात अम्म। —रा. ज. सी.

उ०—२ सत्रियं सपुत्रं अभवं सभेत्रं सगं, न क्यो समरथं न हुवं सामासि। वाट वसता पडै न की वाट बाहर चडै, तो वसती तणो किसो बेसासि। —तेजोजी चारण

बेसासियोड़ो—देखो 'बिस्वासियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसासियोड़ी)

बेसासो—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—बरसां सो जीवण की आसा, पण एक घड़िय नहीं बेसासा। समयसुंदर कहइ अथिर संसारा, जनमि जनमि जिन धम्म आधारा। —स क

बेसि—१ देखो 'वयस' (रू. भे.)

२ देखो 'वेस' (रू. भे.)

उ०—अन्न उदक पय परिहरि, आभरण ऊवेलि। वकुल त्वचा बीटि करि, तरुणी तापस बेसि। —मा. का. प्र.

३ देखो 'वेस्या' (रू. भे.)

उ०—बेसि पभणइ वेसि पभणइ 'मंत्रि सुणि वात। ए सहूइ धन ताहरउ रहिय भोगवि भली परि, मन्त्रीसर इम सभली वचनबद्ध रहिउ तसु घरि। —हीराणंद सूरि

४ देखो 'वेस्य' (रू. भे.)

बेसियोड़ो—देखो 'बैठियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसियोड़ी)

बेसी-वि.—१ वेस धारण करने वाला या वेसधारण किया हुआ।

२ देखो 'वेसी' (रू. भे.)

उ०—१ इण कारण इण सामाजिक रूप रो मिनख नैं जितो बेसी बोध होसी वो उतो ई समरथ बणसी। —फुलवाड़ी

उ०—२ म्हारो श्रो डिढ विस्वास कै धरती माथै मिनख सूं बेसी की चीज कोनी। —फुलवाड़ी

उ०—३ केई जणा मिनकी रै अगट व्हिया ऊंदरा हड़बड़ै ज्यूं कानी कानी न्हाटा। केई डावड़िया नै तो डर रै कारण जाफ आयगो। विडरूपता विचै ई वानै भूत रो डर बेसी लागो। श्रो लगड़ो व्हियो तो काई व्हियो। —फुलवाड़ी

बेसुद—देखो 'बेसुध' (रू. भे.)

उ०—भली भात परमारो किया नैं दारू पावता गया। तरै सारा लोटपोट बेसुध हुवा तरै सड, बेउ आडा देनै लगाइ दिया। कल-राहैक बळ मूवा बाकी रा फळसा रै मूंहडै आया सु खीलो खटका विगर मारिया और साथ डूंगर रा घरा ऊपर मेलियो। —नैणसी

बेसुद्धि, बेसुधी—१ देखो 'बेसुध' (रू. भे.)

२ देखो 'वेसुधी' (रू. भे.)

बेसुमार—देखो 'बेसुमार' (रू. भे.)

उ०—कळहिया कमध आसुर सकुद्ध जदुवस भाण किर भाण जुद्ध। श्रोळा कि अतुळ गोळा अपार, वरखत दहू दळ बेसुमार। —रा. रू.

बेसुर, बेसुरो—देखो 'बेसुर' (रू. भे.)

बेसुवाद—देखो 'बेस्वाद' (रू. भे.)

बेसर—देखो 'बेसऊर' (रू. भे.)

उ०—बीसळदे बेसूर खाटी पण ख.धी नहीं। कीबी घात कहर, माया उण मैं मोतिया। —रायसिंह सांदू

बेसूरत—देखो 'बदसूरत'।

बेसू'रौ—देखो 'बेसऊर' (अल्पा, रू. भे.)

बेसूल, बेसूलो—वि०—१ निष्कंटक।

२ बिना दर्द।

उ०—बेसूल फूल-धारा विहार, भालं पड़त डोले भंमार। सग्राम लोह वाहै सनड्ड, बिपरित धाउ ऊमळा-गड्ड। —गु. रू. बं.

३ अपार, असीम।

उ०— छह दरसन छिनवं पाखडा, एक न जाणे नाव अखंडा। केना देख पाखि नर भूला, बिखं करम करिग्या बेसूला।

—अनुभववाणी

४ अमर्यादित।

बेसोटौ—देखो 'बेसोटौ' (रू. भे.)

बेसौ—देखो 'वैसौ' (रू. भे.)

उ०—घर बेसा अरवेस कहाया, धिल अरवेस भता नहो पाया। हाथै झडा गले बागली, घरि घरि मागं भीख आगली।

—अनुभववाणी

बेस्टक—वि. [सं. वेष्टक] १ चारों ओर से ढकने या आवृत करने वाला।

२ घेरा डालने वाला।

बेस्टकापथ-सं. पु [स. वेष्टकापथ] एक प्राचीन शिव स्थान। (पुराण)

बेस्टण, बेस्टन—स. पु. [सं. वेष्टन] १ कोई वस्तु आदि लपेटने का कपड़ा।

२ लपेटने की क्रिया या भाव।

३ घेरने की क्रिया या भाव। (४) पगड़ी, साफा।

५ नृत्य का एक प्रकार का भाव विशेष। (६) घेरा, अहाता।

बेस्टित—वि. [सं. वेष्टित] १ लपेटा हुआ. २ लिपटा हुआ. ३ घेरा हुआ. ४ ढका हुआ, आच्छादित।

उ०—जगत मात जननी जग जांनी, मदिरा रुधिर छाक मन मांनी। बेस्टित अरून उरत के अबर, तप मुख मनहु प्रात रात-बर। —मे. म.

बेस्टितकरण—सं. पु.—शृंगार में एक प्रकार का आसन विशेष।

बेस्म—सं. पु. [सं. वेश्म] घर, गृह, मकान।

रू. भे.—बेसम वेसम।

बेस्य—सं. पु. [सं. वेश्य] १ व्यापार करने वाला, व्यापारी, बनिया।

२ व्यापारिक समुदाय। ३ वैश्य जाति।

४ वैश्य जाति का व्यक्ति।

रू. भे.—बइस, बईस, बयस, बिस, बैस, वइस, वईस, वेस, वेसि, वैईस, वैस, वैस्य।

बेस्यांगना—स. स्त्री [स] वेश्या वृत्ति करने वाली स्त्री।

बेस्या—स. स्त्री. [स. वेश्या] १ वह स्त्री या स्त्रियों का वर्ग जो धन लेकर संभोग कराने का व्यवसाय करती हैं। पातर, रण्डी, वेश्या।

उ०—१ खेरवा मे स्वामीजी कनं ओटी स्याल उंधी अंवळी बोल्यौ थे स्रावक नें दियाइ पाप कह्यो नें बेस्या नें दियांइ पाप कह्यो छै, इण लेखं स्रावक अनें बेस्या सरीखा गिण्या। —भि. द्र.

उ०—२ सपरिकरि संध्या समइ, रथि बइसीनइ राय। वेस धरी विवहारिया, बेस्या नइ घरि जाय। —मा. कां. प्र.

वि० वि०—वेश्याओ के कई वर्ग होते हैं—(१) पातर (२) भगतन (३) रामजनी (४) हुरकनी—ये हिन्दु हैं तथा (५) कंचनी (६) सावंत ये मुसलमान हैं। धन लेकर संभोग कराना इन सब का सामान्य व्यवसाय है। परन्तु इनके रहन-सहन एवं व्यवसाय करने के कुछ अलग अलग तरीके हैं इस कारण ये वर्ग एक दूसरे से कुछ भिन्नता रखते हैं।

(१) पातर:—इनके बाप, भाई आदि जागरी होते हैं और इनकी उत्पत्ति राजपूतो से मानी जाती है। जागरी लोग अपनी बहन-बेटियो से संभोग का कार्य करवाते हैं। इनकी औरतें यह कार्य नहीं करती। कवारी लड़की से व्यवसाय कराना पाप समझा जाता है। इसलिये जिस लड़की को पातर बनाना चाहते हों उसके विवाह की रस्म छोटी ऊम्र मे ही गणेशजी के साथ पूरी कर दी जाती है और उसके जवान होने पर ज्यादा से ज्यादा धन देने वाले के साथ इसका प्रथम संभोग करा दिया जाता है। उस रात गाना बजाना व उत्सव मनाया जाता है उसके बाद उसका व्यवसाय चलने लगता है। इसके अतिरिक्त ये कुछ गाना-बजाना व नाचने का कार्य भी करती हैं। इस कार्य की तालीम इन्हें मीरासी लोग या भगत देते हैं। किसी मुसलमान के साथ संभोग कराने का इनमें प्रतिबंध है; विधवा औरतें किसब का व्यवसाय नही कर सकती। इनकी पोशाक पाजामा, और लंबा अंगरखा तथा सिर पर दुपट्टा है। कभी कभी घाघरा अंगरखा भी पहनती हैं। इनका धर्म शाक्तिक है। खान-पान राजपूतो जैसा है। धोबी ढोली, मोची, बांभी, महत्तर और मुसलमानो से ये परहेज करती हैं।

(२) भगतन:—इनकी उत्पत्ति रामावत साधुओं से मानी जाती है। इनके विवाह रस्म किसी गरीब साधु के साथ फेरे दिरवा कर पूरी करवादी जाती है। साधु को कुछ धन देकर उससे यह बात तय करवा ली जाती है कि वह इस लड़की का कोई दावा नही करेगा। ऐसा साधु यदि न मिले तो पातरियों की तरह इनके विवाह

की रस्म भी गणेश जी साथ फेरे दिरवा कर पूरी करावी जाती है। यह 'कवारपना' उतारना होता है। कवारी लडकी से किसब करवाना इनमें भी वर्जित है। विवाहित औरतें किसब का व्यवसाय नहीं करती। पातरियो की तरह ये भी गाना-बजाना व नाचने का कार्य करती हैं परन्तु इस कला मे पातरिया ज्यादा शिक्षित होती हैं। पोशाक इनकी भी पातरियो जैसी होती हैं। सभोग कराने मे मुसलमानो से परहेज नही करती परन्तु उनके हाथ का खाना-पीना नहीं करती। दारू, मास, गाजर, सलजम, प्याज व लहसुन से परहेज करती हैं। धर्म इनका वैष्णव है, इष्ट हनुमानजी का रखती हैं।

इन दोनो के अलावा हिन्दुओ मे रामजनी और हुरकनी नामक वेस्याओं के दो वर्ग और हैं पर उनका विस्तृत विवरण उपलब्ध नही है।

(३) **कंचनी**—ये मुसलमान रडिया हैं। ऐसा कहा जाता है कि पहले इनको 'कजरी' कहा जाता था, परन्तु बादशाह अकबर ने कजरी के स्थान पर कचनी नाम रख दिया। इनके भाई-बाप आदि कंचन कहलाते है। इनका रहन-सहन मुसलमानी ढग का होता है। औरतें परदा रखती हैं और लडकियों का रण्डी बनाने के लिये कलावतो से गाने-बजाने व नाचने की तालीम दिलाई जाती है। पातरियो और भगतनो की तरह इनका भी 'कुमारपना' उतारा जाता है पर कोई मजहबी या वैवाहिक रस्म पूरी नही की जाती। पातरियो की तरह ज्यादा से ज्यादा धन देने वाले के साथ लडकी का प्रथम सभोग करवाया जाता है। उस रात लडकी को दुलहिन बना कर उस आदमी के पास भेज दिया जाता है, सुबह अपनी बिरादरी मे मिठाई बाटी जाती है।

कचनिया सिर खोल कर नाचती हैं। कभी-कभी बरातो में नाचने भी जाती हैं। गाने-बजाने व नाचने मे ये पातरियो और भगतनियो से अधिक दक्ष होती हैं। अदाएं दिखा कर ग्राहको को फसाना और लूटने मे चालाक होती हैं। गजल और ठुमरी इनका खास गाना है। पोशाक इनकी अगिया, कुरती, पजामा और दुपट्टा है। इनका चूडा काच का होता हैं।

कचनी के अलावा मुसलमान वेश्याओ का एक 'सावत' वर्ग और होता हैं, परन्तु उसका विस्तृत विवरण उपलब्ध नही है।

इन सब के अतिरिक्त इसी प्रकार का व्यवसाय करने वाली एक किसबन या कसबन नामक कौम है। जो पहले हिंदू थी मगर अब मुसलमान है। ये छोकरियो को मोल लेकर पोडीवा कसब कराया करती थी। एक बार एक मुसलमान छोकरी ने इस काम के लिए मना किया एव परदे मे बैठ कर कुरान पढने लगी और दूसरी छोकरियां इसको परदा खोल कर बदनीयति से देखती थी तब इसने बददुआ दी कि जाओ तुम्हारे कसब फोडे आ जाये एवं गर्मी हो जाय। उसी दिन से ये बाजार में कसब कमाने के कारण कसबन या टकियाई या टकियारी कहलाने लगी।

मारवाड मे गुजरात से उस समय आई जिस समय वहां के हाकिमो के अहदी मारवाड मे आते थे। इनकी खाप चौहान, चापावत, सोढा, भाटी आदि है। ये पहले रामदेवजी को मानती थी और अब खुदा आदि का नाम लेती है एव मुसलमानी ढग बरतती है। इनके नाम हिंदुओ जैसे होते हैं। और इनकी पोशाकें रडियो व ग्रहणियो जैसी होती है। ये गाना-बजाना नहीं जानती। ये शराब पीती हैं। किन्तु सूअर एवं झटके का मास नही खाती। ये चलते फिरते आदमी को फसा लेती है। इनकी लड़कियों की शादी तेलियों, घाचियों आदि की उन स्त्रियों के लडको से की जाती है जो मुसलमानो के घर घुस जाती है। इनकी ब्याही स्त्री कसब कमाने का काम नही करती और अगर करती है तो वह जाति-च्युत कर दी जाती है। जाति-च्युत औरत को जाति में लेने के लिए अजमेर भेजा जाता है। वहा उसें गुनहगारी मे पंचों का हुक्का भरना पडता है।

२ स्वर्ग-लोक की अप्सराएँ।

उ०—देराणी बचन—आज झगडा ऊपरै आवता भेस करियो छै। कुसम फूला रो मोड अनै वसण कपडा रगिया है। केसर मैं नेह न देह सबैव जौ नेह म्हा सू राखता हा सौ भी आज नही अरथात म्हारा सू ही सनेह छोडियोहा होवै ज्यू सोह रहिया छै। इण वास्तै म्हनै तौ तुलै है की वाभीजो साहब म्हारै पती लोडी सौक बसावैला अरथात जुद्ध मैं मारीज अपछरा वरसी हू सत करनै जासूं जितरै लोडी सौक धकै मिळसी। जेठाणी कहै—हे देराणी तूं उण कुळ मैं उपजी है जठै थारै माता पिता रा दोनू ही पख विना दाग रा अरथात निकलक है-सौ काई मूडो मौ वेस्या ही थारो सुहाग खोस लेवं। —वी. स. टी.

रू. भे.- बेसा, वेस, वेसा, वेसि, बंस, वैस्या।

वेस्याकार—एक वर्ग विशेष ?

उ०''' ''''गधिकायण दौष्यिकापण सोवरणाकार कास्यकार मणिकार पूगीफलतांबूलिक मालिक सौत्रिक लडुककार काडुकिकार कणकार वेस्याकार चरमकार मल्लक खलक धान्यखलक बाटक वाटिका वामी पुस्करणी क्रीडातडाग सरोवर। —व. स.

वेस्यारत—वि०—वेश्याओ मे अनुरक्त, लीन, वेश्यागामी।

उ०—महाराज वीर विक्रमादित्य उज्जैण माही राज करै। तेथी जुआरी, मासाहारी, सुरापानी, वेस्यारत, चोर, आखेटी, परदारत रो नाम नही। —सिंघासण बत्तीसी

बेस्याहटी-स. पु —बेस्याओं का मुहल्ला। (सभा)

बेसमण, बेसवण –देखो 'बेसवण' (रू. भे.)

बेस्वारियोबीच –देखो 'बेसवारियोबीच' (रू. भे.)

बेह-सं. पु. [स वृद्धि] १ विवाह मण्डप (विवाह वेदी) के चारों कोणों (चारों उपदिशाओं—नैऋत्य, मारुत, ईसान एव आग्नेय) में हरे बांसो के संरक्षण में रखे जाने वाले मटके जो ९–९ की सख्या मे ३६ होते हैं।

उ०—१ दिन ऊगो, ताहरां रिणमलजी सीसोदिया रा माथा वाढि चवरी रचाय, तियां री चोकया कीवी। तिया ऊपर बरछारी बेह माडी। अर सीसोदिया री बेटियां राठोड़ा नूं परणाई। च्यार पोहर दिन वीमाह किया। —नैणसी

उ०—२ तठा उपराति करि नै राजान सिलारूति नीला आला बस केलि खभ सूना गलिया थका काचना रा कळसा री बेह करि नै चौरी पधराया छै। हथळेवो जोड़ छेहड़ा बाधिया छै। सु आंणं मन बाधिया छै। —रा. सा. स.

उ०—३ विप्र मूरति वेद रतन मं वेदी, बस आस अरजुनमं बेह। धरणी अग्नि अमर मे इधण, आहूति घ्रत धणसार सनेह। —वेलि

उ०—४ स्तुति वायक सुभ मत्र, तवं फल दायक तोरण। पधरायौ परणाव, 'अभौ' आयौ राय अगण। नइरत मारुत निरखि, कूंण ईसांन अगन कसि, वंस हरित जुत बेह, दीप रस नेह प्रसट दिस। —रा. रू.

उ०—५ उध लगन लखि रिखि उरधि, सब कूंण प्राचिय सुरचि। रचि कनक बेह सुरंग, ओपंति नव रयण अग। —रा रू.

वि० वि०—ये मटके (कलश) राजा महाराजाओ के सोने-चादी के होते थे एव दूसरो के मिट्टी के होते हैं, जिन पर लाल कपडे लपेटे हुए होते हैं। इनमे खाजे-मगद आदि डाले जाते हैं कही सात सुपारियां एव कुछ मूंग डाले जाते हैं। ये कलश लड़के की शादी मे सात, नौ या इग्यारह होते हैं, जो 'तौरण थभ' के पास रखे जाते हैं एवं लड़की की शादी में छत्तीस होते है जो विवाह-मडप (विवाह वेदी) के चारो ओर नौ-नौ के चार समूहो मे रखे जाते हैं, इनमे सबसे ऊपर वाले कलश को 'बूभो' कहते हैं एव हरे बांसों के सरक्षण मे चारो उपदिशाओ मे रखे जाते हैं एव आठो दिशाओ मे दीपक जलाये जाते हैं।

२ मंगल-कलश।

३ विवाह-मडप, विवाह-वेदी।

सर्व.—वह, वे।

२ देखो 'बेद' (रू. भे)

उ०—बदं ब्रह्माण बिचारं बेह। —भ गीपुराण

३ देखो 'विधाता' (रू. भे)

उ०—१ धासक हमारा कोई, जिन रचना रची सब कोई। बेह कहियं अपरमपारा, ज्या कू क्या जांणं ससारा। —श्री हरिरामजी महाराज

उ०—२ हरीया लेख लिलाट मैं, जो बेह बाल्या अक। सुख दुख भुगतो आपणा, कहा करी गैरक। —अनुभववांणी

उ०—३ बेह समत्थ बणावियो, वाघ डाच जम बत्थ। जिण माफल लग आड़िया, माय जाय गज मत्थ। —बां. दा.

४ देखो 'वयस' (रू. भे.)

उ०—कायर लाखा जतन कर, बेह न विसेस पाय। सूरा समहर सहरै, जाता जुगा न जाय। —रेवतसिंह भाटी

५ देखो 'बेमाता' (रू. भे.)

उ०—पोहो अंक बेह प्रमाण, माल खोटा मंडिया। सक भड़ चढ सिकार सझै छला सावर सु वर। —गो. रू.

६ देखो 'वेस' (रू. भे.)

७ देखो 'वेध' (रू. भे.)

उ०—सुई तणइ बेहि मूंसल घालेवउ करइ, मूसल फूलावेवउं करइ, ऊभा पीइ, कलकलतां वूकइं, बफाता गिलइ, वलि बांधी कोडियां हणइ लीख तणइ वेहि वाल प्रोइ, मन घाया तेर पडइ। —व. स.

रू. भे.—बेह, बंह, वे', वेह।

अल्पा,—बेहडली, वेहडली।

बेहक—१ देखो 'बहक' (रू. भे.)

२ देखो 'वेहक' (रू. भे)

उ०—हका बेनी हक है, बेहका बेहक। हरीया हेकै हक बिन, सब दिन जाहि गल्हक। —अनुभववाणी

बेहकणो, बेहकबो –देखो 'बहकणो, बहकबो' (रू. भे.)

बेहकणहार, हारौ (हारी), बेहकणियौ—वि०।

बेहकिओड़ौ, बेहकियोड़ौ बेहक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बेहकीजणो, बेहकीजबो—भाव वा०।

बेहका—देखो 'बेहका' (रू भे.)

बेहकाणो, बेहकाबो –देखो 'बहकाणो बहकाबो' (रू. भे.)

बेहकाणहार, हारौ (हारी), बेहकाणियौ—वि०।

बेहकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बेहकाईजणो, बेहकाईजबो—कर्म वा०।

बेहकायोड़ौ—देखो बहकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेहकायोड़ी)

बेहकावणो, बेहकावबो—देखो 'बहकाणो, बहकाबो' (रू. भे.)

बेहकावणहार, हारो हारी), बेहकावणियो—वि० ।

बेहकाविप्रोड़ो, बेहकावियोड़ो, बेहकाय्योड़ो—भू० का० कृ० ।

बेहकावीजणो, बेहकावीजबो—कर्म वा० ।

बेहकावियोड़ो—देखो 'बहकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेहकावियोड़ी)

बेहकियोड़ो—देखो 'बहकियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेहकियोडी)

बेहड़, बेहड़उ—१ देखो 'बेहड' (रू. भे.)

२ देखो बे'ड़ौ' (मह., रू भे.)

बेहडली—देखो 'वेह' (अल्पा., रू. भे.)

बेहड़ाफोड़—देखो 'बे'डाफोड' (रू. भे.)

बेहड़ु., बेहडू., बेहड़ौ—१ देखो बे'ड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ इसै समइयै मैं भालुवा माण अरज कीवी छै। भाखरा रा खुडा बेहडा माहां सूवर नीचा उतरिया छै। राजाना देसोता सूवरा सामी वाग लीवी छै। फडकड़ा फदवड़ाया जावं छै।

—रा. सा सं.

उ०—२ छत्रवट तूझ दसरथ नंद ओप अच्छेहडा, बाढै खगां रिण दसमाथ कर घड वेहडा। बळमुखहूंत निकसै वंण आखर बेहड़ा, जुग पद घसै मुगट सहीव सुरपत जेहडा।

—र. ज. प्र.

२ देखो 'वैसौ' (रू. भे)

उ०—छत्रवट तूझ दसरथ नद ओप अच्छेहडा, बाढै खगा रिण दसरथ कर घड वेहडा। बळमुखहूंत निकसै वंण आखर बेहडा, जुग पद घसै मुगट सहीव सुरपत जेहडा।

—र. ज. प्र.

बेहदु, बेहदू—स. पु—राह मे चलनेवाले, राहगीर पथिक।

उ०—ताहरा लोकं पूछियो-भाई कं-रा उचाळा ? कह्यो-जी ! फोफाणद थळ रै चारण छै। घास चारण जावं छै सात बीस भैसया नै बजण पडै छै, सू माहरी धरती माहे घास थोडा, सू महेवची मैं घास चारण आया छै, ए भैस्यां तो चरत्यां-चरत्या आध्या हुइया सू म्है मारग बेहदू हुवा, सू आधा आस्या।

—फोफाणद री वात

बेहटो—देखो 'बेहटी' (रू. भे)

बेहड़ज, बेहड़ु, बेहडू, बेहडो—१ देखो बे डौ' (रू. भे.)

उ०—१ बहरानी भीड़, हुई पीड़, तुटई चीड़, एक उतावळि दौडइ छै, एक माथइ बेहडु चडवइ छै, लूगइ तै माथं भोडई छै, बेहडूं ते फोडइ छै। एक एक सइ अडइ छै, धड़ाधड़ पड़इ छै, माहोमाह लडइ छै हुवई नांनी लाडी, भीखल भी पडइ आडी, बीजाती भीजइ साडी, तै माठं करइ राडी, लोक लोकनी करइ चाडी······

—रा. सा. सं.

उ०—२ तोरण श्रीकम आविया, ल्यौ बेहडा वर नारि। वर बेहडु वंकुंठ नायक, वदियु कर च्यारि।

—रुकमणी मगळ

२ देखो 'बैसौ' (रू. भे.)

उ०—तोरण श्रीकम आविया, ल्यौ बेहडा वर नारि। वर बेहडु वंकुंठ नायक, वदियु कर च्यारि।

—रुकमणी मंगळ

बेहण—सं. पु. [स. विधाता] विधाता, ब्रह्मा।

उ०—नलग्रैत जोध निरेहण, बड खत्री सारिख बेहणं। एकल्ल मल्ल दुझल्ल आकल, कहि कलहि अकल।

—ल. पि.

बेहणउ, बेहणौ—वि. [सं. वेधनकम्] छेदन करने वाला, बेधने वाला।

बेहणौ, बेहबौ—क्रि. अ.—१ चालू होना, चालू रहना।

उ०—ने जेसोजी भाडंडे नागोर रै गाव गया। उठै कोट करायनै माणस राखनै राणा कनै चीतोड गया। उठै गांव १४० तांणो मला सोळकी वाळी दियो। तठै रामदास माल्हण री बाप मरियो। राणा कुंभा थकां आया पछै भी पटो बेहतो थो।

—नैणसी

२ डरना, भयभीत होना।

उ०—यौ कहि वेसवटो राजा वीसलदे पास रह्यो छै। ताहरां बेहतो सो उठ उभो हुवो नै हाथ जोडिया। ताहरा राजा पूछियो, "थारै ज्रिका मन माहे बीनती छै सु कहि।" ताहरा वेसवटै वीनती कीवी "माहाराज सलामत, हू राजा पासै रहू छु नै मूळवै किम दुख पाय रावळो बिगाडियो, ईयै वात हू ज जाणू।' ताहरा राजा कह्यो, "तनूं किम न लागो। करसी सो पासी"

—मूळवं सागावत री वात

३ देखो 'व्होणो, व्होबो' (रू भे.)

उ०—अडिया सुजि पडिया मुंह ऊंधे, सहज कोय देखै सुर-असुर। आखतो बेह कोय नह आयो, अमरा' जम राव तणं ज उर।

—ओगीदास कवारियो

४ देखो 'वहणो, वहबो' (रू. भे.)

उ०—लुगाई रे नावं वसा आभडवा री आखडी। सरसै घोडै चढवा री आखडी। काछी घोडै चढबा री आखडी। पालखी चढवा री आखडी। कपुर बिना पान खावबा री आखडी लुगाई सु रात मैं एक वार भोग करणो, उपरंत करवारी आखडी। किसतुरी बिना रहवा री आखडी। फाटा कपडा सीवणरी आखडी। साथ नै वल हुवा बिना जीमणरी आखडी। बावडी री पांणी पीवण री आखडी। बेहती नदी री पांणी पीवण री आखडी।

—रा. सा. सं.

५ देखो वेधणो, वेधबो' (रू. भे.)

उ०—काया कबकइ कनक जिम, सुंदर, केहै सुक्ख। तेह सुरंगा किम हुवइं, जिण बेहा बहु दुक्ख। —ढो. मा.

बेहणहार, हारो (हारी), बेहणियो—वि०।

बेहिचीड़ी, बेहियोड़ी, बेह्योड़ी—भू० का० कृ०।

बेहीजणी, बेहीजबी—भाव वा., कर्म वा.।

बेहल–स स्त्री.—एक पौष्टिक औषधि का नाम।

बेहद, बेहदी—१ सर्वशक्तिमान्, ईश्वर।

उ०—१ बेहद बडा गोडिया कौतिक करंदा। —केसोदास गाडण

उ०—२ हरिया बेहद के घटां, नही हदि की श्रास। ससा सोय न ताप तन, नाव निरासा बास। जनहरिया बेहद घरा, धन अनहद की घोर। बाजा राग अपंग धुनि, एक अखडी टोर।

—अनुभववाणी

उ०—३ हरीया हदि का जीवडा, ता कु धका अनत। जाह गुर-पाया बेहदी, लै निरवांण चहंत। —अनुभववाणी

२ वैकुण्ठ, स्वर्ग।

उ०—१ हरीया हदि आसामुखी, ताहि न करिये हेत। बेहद बास निरास घर, ताकू तन मन देत। —अनुभववाणी

उ०—२ सहज नाभ कु धावि के, सुरति चढै असमान। हरियै निज पद परसिया, बेहद का बसवान। —अनुभववाणी

उ०—३ हरिया हदि कूं छाडि के, बेहद पूंहता जाय। दिल दरगै दीवांन मैं, धका न धूंमी काय। —अनुभववाणी

३ सत्यस्वरूप, ईश्वर।

उ०—हदि का रता हदि मैं, बेहद का बेहद। हरिया बेहद पाय कै हदि भई सब रद। —अनुभववाणी

४ सत, भक्त।

उ०—हदि बैठा हदि की कहै, वेद पुराना बाचि। हरीया बेहद बावरा, रह्या राम सूं राचि। —अनुभववाणी

५ ब्रह्म, परब्रह्म।

उ०—१ बेहद सुख सागर भरचो, पंथ न पग पारेह। हरीया हरिजन पीवसी, हवि सूं दुष न्यारेह। —अनुभववाणी

उ०—२ जनहरिया हदि मैं घणा, सुख दुख भरम सनेह। बेहद कांम न कलपना, अति आनंद अछेह। —अनुभववाणी

६ ब्रह्मपद।

उ०—बेहद कूं पुहचै नही, हरीया हदि के लोक। तन तो माटी मैं मिल्यो, मन ग्यो सांसै सोक। —अनुभववाणी

७ ब्रह्मसुख, ब्रह्मानन्द।

उ०—सहज का भेद सोई संत जांणै, हदि कूं जीत बेहद मांणै। सहज का आसण सहज आसा, सहज मैं खेलणा सहज वासा।

—अनुभववांणी

८ अनहद नाद।

उ०—होतब सा जोतब नही, अरथ सा न वरथ। बैंन न की बेहद सा, साम न सा समरथ। —अनुभववांणी

९ योग, समाधि।

उ०—सहज मे साम सुख रास असें मिळ्या, रूम मैं रूम ररंकार जागै। दास हरिराम गुरुदेव परताप तें, हदि कूं जीव बेहद लागै।

—अनुभववाणी

१० सत्य।

उ०—हरिया हदि का जीव कु, बेहद की गम नांहि। कीड़ी केरै नाळ ज्यूं, कै आवै कै जाहि। —अनुभववाणी

११ ज्ञान।

उ०—१ वचन सुन्या बेहद का, हदि न आवै दाय। हरिया सुन्य मैं साईयां, ता सु ध्यान लगाय। —अनुभववाणी

उ०—२ जनहरिया हम कु कह्या, सतगुरु असा दाव। हदि का पासा छाडि दे, बेहद सांम्हां आव। —अनुभववाणी

वि.—१ जानने का इच्छुक, जिज्ञासु।

२ ज्ञानी।

उ०—हदि छाडि बेहद भया, हरीया राम हजूर। अखड उजाळा गैब का, विसा न ऊगै सूर। —अनुभववाणी

३ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—कह कह थाका सेसनाग बेहद वाखाण। —केसोदास गाडण

बेहदो—देखो 'बहदो' (रू. भे.)

बेहद्द—देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—१ बेहद्द हद्द बागं बणाव, कम्मीर हीर जांमै जडाव। जगचगे जोर कसबी अनूप, नीलक्क मसजर लाल सूप। —गु. रू. ब.

उ०—२ राति सांभीर सारंग डाणं ग्रहे, वाह उपडिया लीण जांणै बहै। हद्द बेहद्द बे वेग पै हैमरा, पाधरा जांण पाहाड उड्डै परां। —गु. रू. बं.

२ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

बेहन—देखो 'बहन' (रू. भे.)

बेहनड़ी—देखो 'बहन' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—रहि-रहि बेहनड़ी! बच न तू रोई, लै लोटिका जळ मुख धोई। फटि रे हिया! नीवासूवा, पाथरी घडियो क्रै ओचट लोह। भरपभलियो फूटइ नहीं, सगुणी प्रीतम तणी विछोह।

—बी दे.

बेहनि, बेहनी—देखो 'बहन' (रू. भे.)

बेहनेई, बेहनोई—देखो 'बहनोई' (रू. भे.)

बेहमाता—देखो 'बेमाता' (रू. भे.)

उ०—१ हरिया तन की गीरबो, कहा करै नर देख। बेहमाता दांणी दळै, ग्रोरां लिखती लेख। —अनुभववांणी

उ०—२ राम सुणी मोरी बीनती, राम सुणी मोरी बीनती। मा मोरी, बेहमाता सुणी अे पुकार, कूलड़ली सावळ हुई, मा मोरी बेहमाता सुणी अे पुकार, कूलड़ली सावळ हुई। —लो गी.

उ०—३ तूं तो नोज मरै, अे म्हारा री धीवड़ी, सूरज तो सुणैला थारी बीनती। मा तो बेहमाता सुणैला पुकार, लाय दो नी भंवर, म्हांनै चीणीटियो। —लो गी.

बेहर—स. स्त्री.—१ काटने की क्रिया या भाव, करतन।

२ भोजन करने की क्रिया या भाव।

बेहरणौ, बेहरबौ—देखो 'बेरणौ, बेरबौ' (रू. भे.)

उ०—मुनिवर बेहर पाछा वल्याजी, लागी छै थोडी सी वार। बीजो सिंघाड़ो इहां आवियोजी, देवकी घर-बार। —जयवांणी

बेहरणहार, हारौ (हारी), बेहरणियौ—वि०।

बेहरिग्रोड़ौ, बेहरियोड़ौ, बेहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बेहरीजणौ, बेहरीजबौ—कर्म वा०।

बेहराणौ, बेहराबौ—देखो 'बेराणौ, बेराबौ' (रू. भे.)

उ०—मोदक थाल भरी करी जी, मंदिर मांहै थी लाय। केसरी सिंह जटा जिसा जी, बेहराया उलटै जी भाव। —जयवांणी

बेहराणहार, हारौ, (हारी), बेहराणियौ—वि०।

बेहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बेहराईजणौ, बेहराईजबौ—कर्म वा०।

बेहरायोड़ौ—देखो 'बेरायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बेहरायोड़ी)

बेहरियोड़ौ—देखो 'बेरियोडौ' (रू भे)

(स्त्री. बेहरायोड़ी)

बेहरी—१ देखो 'बेहरी' (रू. भे.)

२ देखो 'बहरी' (रू. भे.)

बेहरौ—१ देखो 'बेहरौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बहरौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बेड़ौ' (रू. भे.)।

बेहळ, बेहल—स. स्त्री.—१ ढोलियों की एक शाखा विशेष या उक्त शाखा का एक व्यक्ति। (मा म.)

२ देखो 'बेहल' (रू. भे.)

उ०—१ बैरी बेहल बरण रा, दीठा जिण जिण देस। भाड़ेचा तै भेळिया, आमधुवां 'अमरेस'। —बां. दा.

उ०—२ कुण वित्त बधै बेहळां कूंपा, खेड सुपह मन खीज करै। सरवर हुस विनाई सारै, सर बिन हंसां केम सरै। —राव कूंपा री गीत

३ देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—१ इकां बेहलां रहकलां ऊपर बैसांणजै छै। सू इका बेहलां रहकला किण भांत रा छै? गुजराती, सुरती, खंभाइची, भुजनगरी, हिसारी, उजीण रा, बळिया घणै सीसूरा, पीतल लोह दांत रा जड़िया, लाल सलहटी रा गदहरा बिछाया थका, चांदणी डालियां थका आंण हाजर हुवा छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ तठा उपरांत करि नै राजान मिलावति काबली कूतरा, लाहोरीकूतरा, विलाती कूतरा, खोलमीं, लालमी जीभ रा, बलिमैं पूंछ रा, लापड़े कांन रा, थाड़मी दंत रा, सिंघ रा हुथरा, केहरी कंधरा, झाफरै रोम रा, के विना रोम रा, इण भांतरा कूतरा, चीतरा, मुखमली, रेसमी, मुखां रा बणाग्रा, साकळिग्रां जड़िया, बेहलां पालखिया ऊपरै बैठा वहै छै। —रा. सा. सं.

उ०—३ रिमझिम करती वा बीदणी बीदं री बेहल में चढी। ग्रो बीद कितरो सभागियो! कितरो सुखी! भूत रा रू-रू मैं जांणै सूळां खुवण लागी। हीया मैं जांणै भट्टी चेतन व्हैगी। —फुलवाड़ी

४ देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—घर पोरस मेछा घणी कांमणि हंदी कथ्थ, सांभळि बैठो सांप्रत महागिरिंदा मथ्थ। महागिरिंदा मथ्थ स्रवण कथ सांभळी, बेहळ मदन विरांम थयो तन व्याकुळी। —मा. वचनिका

रू भे.—बहळ, बोहळ, बोहल, बेहलि, बैहळ, बैहल।

बेहलि—क्रि वि.—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—क्रमि क्रमि ग्रांन पहूतिय, सुहदिणि, 'भीमपली पुरै' गुर हरसिउ मणि। मह सिरि वीर जिणिंदह मदरि, मंडिय बेहलि नंदि सुवासरि। —ऐ. जै. का. सं.

२ देखो 'बहल' (रू. भे.)

३ देखो बेमल' (रू. भे.)

४ देखो 'वेहल' (रू. भे.)

बेहलियौ, बेहलौ—देखो 'बैल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बेहलियांरी फुरणी बाज रही छै। जंग घूघरा बाज रह्या छै। सू बेहलिया किण भांत रा छै? थेट काकरेच रा छै, सोरठ रा छै हालार रा छै सुवालख रा छै, देस-देसरा इकरंग सपेत छै। जांहरी सपेती आगै बगला ही भगला नजर आवै, मंहदी सुं रंगिया बनात रा मोहरा लालै सूतरी नाथां, रेसम री रास, सींगां पीतळ

री खोळी। वनाती फूला वातिया रहकलां इकां खडमलां जूता छै। सू हालियां थका घोड़ा री माम पाड़ै। इसा बेहली जूना रहकला इका खड़सल प्राण हाजर हुवा छै। "—रा सा. स.

बेहली—देखो 'वैहली' (रू भे.)

बेहाण—स. स्त्री.—१ वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

२ देखो 'विमान' (रू. भे.)

३ देखो 'विहांण' (रू. भे.)

उ०—उदं नभसीस थयो तिसप्राण, विजांणह होसिय केम बेहांण। पयंपत वेंण सले परधान, जपं मुख कायर फोट जबान।

—पा. प्र.

बेहाम, बेहांमी, बेहांमो—देखो 'विस्रांति'

बेहा—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—१ अेराकी वडा खेगक गात अेहा, वणाव कवी कथ स्रीहत्य बेहा। नळी चंत्र मैं जासु वाखांण नक्ख, उलट्टा कटोरा वर्ण चत्र प्रक्ख। —र वचनिका

उ०—२ मोमिण हुय स आपो मारै. ओरघां मारण केहा? मोमिण होय स तुटी सायं, मरियो दुसमण भातें बेहा।

—समसुदीन

उ०—३ सूरकुळ मुकट अणघट अनट जोह सुज, वयण मुख दाखिया अंक बेहा, दया जन वखणा। सांमरथ अभीखण रक राखें सरणा, तसां आपणा सुदत लंक तेहा, रजवट्ट रखणा।

—र. ज. प्र.

बेहार—१ काटने की क्रिया।

उ०—वध वीर खिलमकं हक्कोहक्क, धुप सवक्कं धमचक्कं वण वार असकं बाधा रक, रूक झटक्कं रह चक्क। वगी खग धारा वाळ वारां, वार करारा, बेहारां, घड़ तूटै सारा अग अपारां, जोड करारा जूंझारा। —रा. रू.

२ देखो 'विहार' (रू. भे)

बेहारी—१ देखो 'विहारी' (रू. भे)

उ०—गाया ग्वाळो कानो काळो वसी वाळो, बेहारी, जाजा जांजो प्रिथी प्राजो मोटो आजो मोरारी। लका लीधी दानै दीधो सोभा कीधो सवाई, साचां साचो कांचां काचो वाणी वाचो वधाई।

—पि. प्र

२ देखो 'ब्यवहारी' (रू. भे.)

बेहाल—देखो 'वेहाल' (रू. भे.)

उ०—१ रांम सिवरियां बाहिरो, खाली नर खुसयाल हरिया जब तैं जाणियै, बेमारग बेहाल। —अनुभववाणी

उ०—२ हरिया अपनै ख्याल मैं खलक फिरै खुसियाल। होसी खालिक बाहिरो, हैदू तुरक बेहाल। —अनुभववाणी

उ०—३ संत दादू ब्रह्म आदू, महा निरपख चाल। दुस्ट तासूं बैर कीनो, मुवो हुय बेहाल। तो हरिलाल जी हरिलाल, है नित भक्ति पख हरिलाल। — भगतमाळ

बेहाली—देखो 'बेहामी' (रू. भे.)

बेहियोड़ो—भू. का. कृ.— चालु रहा हुआ, चालु हुवा हुआ। २ डरा हुआ, भयभीत हुवा हुआ। ३ देखो 'होयोड़ो' (रू. भे.)

४ देखो 'वहियोड़ो' (रू. भे.)

५ देखो 'वेधियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. बेहियोडी)

बेहो—स. पु —बदला, प्रतिकार, प्रतिशोध।

उ०—सो सपूत जं पीछो रालै, दुरजन हीण कदे ना भाले। वैरा तिणा विसारै बेहा, सो जाया ही प्रणजाया जेहा।

—डाढाळे सूर री बात

बं—देखो 'बं' (रू. भे.)

उ०—महाराज, वी ठाव बरखा घणी होइ पण पाणी ठहरै नहीं। तळसीर सू भी पाणी नही आवै। रुपियो वो बहोत लगायो, सब निसफळ हुवो। तो कारण सो चिंतातुर ही रहै। वी नूं चिंतित देख बं री दोय स्त्री परम सुदरी, नव यौवना सदा चिंतित रहै।

— सिंघासण बत्तीसी

बंकुठं, बंकंठ, बंकुठ— देखो 'वैकुंठ' (रू. भे)

बंक्रति, बंक्रती—स पु [स. वैकृत] १ रिक्त, खाली।

२ विकार, विकृति, विगाड।

रू भे —बेक्रति

बंग—स पु —१ चाल गति।

२ पानी का बहाव।

३ पानी के बहाव का रास्ता।

वि०—पागल

बंगण—देखो 'वेंगण' (रू. भे.) (अमरत)

बंगणी—देखो 'बेंगणी' (रू भे.)

बंगागळ—देखो 'वेगागळ' (रू. भे.) (प्र. मा)

उ०—चढिया काज चचळ, वाळि छूट बंगागळ। हूरड किहाडां हीर, माणकै जोर हमीर। —गु. रू. बं.

बंचणी, बंचबो—देखो 'बैंचणी, बैंचबो' (रू. भे.)

वंचणहार, हारौ (हारी), वंचणियौ—वि० ।
वंचियोड़ौ, वंचियोड़ौ, वंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंचीजणौ, वंचीजबौ—कर्म वा० ।

वंचवाड़ौ—देखो 'वेंचवाड़ौ' (रू. भे.)

वंचाणौ, वंचाबौ—देखो 'वंटाणौ. वंटाबौ' (रू. भे.)
वंचाणहार, हारौ (हारी), वंचावणियौ—वि० ।
वंचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंचाईजणौ, वंचाईजबौ—कर्म वा० ।

वंचायोड़ौ—देखो 'वंटायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री. वंचायोड़ी')

वंचावणौ, वंचावबौ—देखो 'वटाणौ. वटाबौ' (रू. भे.)
वंचावणहार, हारौ (हारी), वंचावणियौ—वि० ।
वंचाविग्रोड़ौ, वंचावियोड़ौ, वंचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंचावीजणौ, वंचावीजबौ—कर्म वा० ।

वंचावियोड़ौ—देखो 'वंटायोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. वंचावियोड़ी)

वंचियोड़ौ—देखो 'वंचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री वंचियोड़ी)

वंछणौ, वंछबौ—देखो 'वंचणौ, वंचबौ' (रू. भे.)
वंछणहार. हारौ (हारी), वंछणियौ—वि० ।
वंछिग्रोड़ौ, वंछियोड़ौ. वंछ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
वंछीजणौ, वंछीजबौ कर्म वा० ।

वंछियोड़ौ—देखो 'वंचियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्री. वंछियोड़ी)

वंछौ-स पु,—बंटवारा, हिस्सा ।
उ०—है साह रा बेटा या पण आहगा पिता रै वांसै आवी है. थे ईंणी नै वंछौ माल रौ द्यौ । —साहूकार री वात

वंड—१ देखो 'वंड' (रू. भे.)
२ देखो 'वंडौ' (मह , रू भे)

वंडाक—१ देखो 'वंडाक' (रू. भे.)
उ०—हद वंडाक हजारी । —किसनौ प्राढौ
२ देखो वंडौ' (रू. भे.)

वंडाराग—देखो 'वंडाराग' (रू. भे.)

वंडूर—देखो 'वंडूर' (रू. भे.)

वंडूरज-स पु. [स. वंडूर्य्य] वंडूर्यमणि ।

वंडौ-वि० [सं. वितुण्ड] (स्त्री वंडी) १ दातार, उदारचित्त. मोजी।
उ०—मन जांणै सहल दियण वित मोजां, अै दोय पण धरियां अमठ । वंडा री वाता इज वंडी, वंडा रा पंडा विकट ।
—अग्यात

२ अद्भुत, अनोखा, विचित्र ।
उ०—मन जाणै सहल दियण वित मोजा, अै दोय पण धरियां अमठ । वंडा री वाता इज वंडी, वंडा रा पंडा विकट ।
—अग्यात

३ देखो 'वंडौ' (रू. भे)
उ०—१ मन जाणै सहल दियण वित मोजा, अै दोय पण धरियां अमठ । वंडा री वातां इज वंडी, वंडा रा पंडा विकट । —अग्यात
उ०—२ छिन-छिन मैं पग चांप सूं, छिन-छिन करसूं चाव । पातर सो तो ही परा, राजंद ! वंडा राव ।
—मयारांम दरजी री वात
उ०—३ हैमरां हींस नर लसकरा कह हुई, वहै सिधुर कहर समर वंडा । आहाडा खंड रज-मडळ ओछाइयौ, पहाडा अगम सर सुगम पंडा । —महाराजा जसवतसिंह रौ गीत
उ०—४ तरै सबानद वीरम सूं पूछण लागौ । कहै—ठाकुरां काहूं बात छै । तरै औ कहै-ठाकुरां काहू कहउं । कहवा तौ लाज आवै छै । पण ठाकुरां म्हारी बेटी नूं परणिग्रा पाछै मूंडौ हमै देखाळियौ छै । सो रातै सूतो मेल आज आया छै । सो वंडा हुआ छैक ? कोजी कहू कामण किग्रौ छै । सो हमै राधियौ धांन रहसी हौ, ठाकुरै !
—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

वंण—१ देखो 'वहन' (रू. भे)
२ देखो 'वेंण' (रू भे.)
३ देखो 'वीणा' (रू भे)
४ देखो 'वचन' (रू. भे)
उ०—१ सब क बुलाया वंण अकवर साह बोलै, मेरी निसा खातरी है तुमारै महोलै । तुम पातसाहां कै सवादो सूर तै सूर, तुमारी सिहाय आवै मेरै मुख नूर । —रा. रू.
उ०—२ नैणा रांम वसौ हरि वंणा, सकल सुखा सुख लाधा । सुर तेतीस घेरि घर आया, सतगुर डोरा बाधा ; —ह. पु. वां.
उ०—३ वारवधु ही हरण वित, नेह जणावै नंण । यूं सिर लेवा ऊचरै, वैरी मीठा वंण । —बा. दा.
उ०—४ सुणि जोध वंण भाखत संभ, रिणमल्ल मांण आणियै रंभ । चाळां बै रूक चौरंग चाडि, आखंत धूम्रलोचन ओनाडि ।
—मा. वचनिका

वंत-स. पु.—१ रीति, उपाय, प्रकार, ढग ।
२ हिसाब-किताब ।
३ माप, माप ।

उ०—सीमाळ पेंहली कानड़देजी तीरें रहतो। पछै कानड़देजी जाळोर ऊपर घर कराया, तिकै देखण नूं सीमाळ नूं मेलियो नै दूरमाळ नूं साथै मेलियो, सु सीमाळ मेहलायत देख क्यूं बेंत मैं छोड़ काढी। —नैणसी

४ बनावट, रचना।

५ वश, काबू, नियन्त्रण।

६ चिन्ता, दुख।

उ०—सूधा वचन सुणी सगळाई, साथ घेरिया गवा सिपाई। जतनै सुता रहै इम जाणी, इण दुख कैद हुवो 'ग्रासाणी'। बेंत करै नह ग्रोर विचारू, मार सुता मिरजा नूं मारू। —रा. रू

७ अनुकूल।

उ०—कै सूत बेंत सुभ वात कजि, सोमैं दूत समद रा। ग्राविया मिळ भ्रम इद्र रे, कै इळ वह्ळ इंद रा। —रा. रू.

८ देखो 'बेंत' (रू. भे.)

९ देखो बेत' (रू. भे.)

उ०—दाखे सकव सुणी ग्रनदाता, ग्रमां मिळण नह भाग इसो। सारै रसी वहे तन सिंडियो, कहो मिळण चो बेंत किसो। —पीठवो

१० देखो 'वेंत' (रू. भे.)

उ०—पछै रोर चहुं ग्रोर, कणह कणह सम कीधो। वेधि वेधि नर बेंत, लोभ लाघो तहा लीधो। —कीकावती रै दान री कवित

रू. भे.—बेंत, वेत।

बेंतणो, बेंतबो—देखो 'बेंतणो, बेंतबो' (रू. भे.)

बेंतणहार, हारो (हारी), बेंतणियो—वि०।

बेंतिग्रोड़ो, बेंतियोड़ो, बेंत्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेंतीजणो, बेंतीजबो—भाव वा०।

बेंताणो, बेंताबो—देखो 'बेंताणो, बेंताबो' (रू. भे.)

बेंताणहार, हारो (हारी), बेंताणियो—वि०।

बेंतायोड़ो -भू० का० कृ०।

बेंताईजणो, बेंताईजबो—कर्म वा०।

बेंतायोड़ो—देखो 'बेंतायोड़ो' (रू भे.)

(स्त्री. बेंतायोड़ी)

बेंताळीस, बेंतालीस—देखो 'बयाळीस' (रू. भे)

बेंतावणो, बेंतावबो—देखो 'बेंताणो, बेंताबो' (रू भे.)

बेंतावणहार, हारो (हारी), बेंतावणियो—वि०।

बेंताविग्रोड़ो बेंतावियोड़ो, बेंताव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेंतावीजणो, बेंतावीजबो—कर्म वा०।

बेंतावियोड़ो—देखो 'बेंतायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंतावियोड़ी)

बेंतियोड़ो—देखो 'बेंतियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंतियोड़ी)

बेंन—१ देखो 'बहन' (रू. भे.)

२ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया ग्रसली ग्रसलि वन, चवै न कमसलि बेंन। ग्रसली जो कमसलि चवै, तौ दिन वरतै रैन। —ग्रनुभववाणी

उ०—२ हरीया ग्रदर ऊपजै, ग्रैसा निकसै बेंन। मिळियां सेती मन कहै, यो दुरजन यो सैन। —ग्रनुभववाणी

३ देखो 'वीणा' (रू. भे)

बेंनोई—देखो 'बहनोई' (रू. भे.)

बेंम, बें'म—देखो 'वहम' (रू भे.)

उ०—१ सुनार रै क्यूं दरसण मैं ही टोटो बताईजै है? सूरज उगाळी सुनार सामो मिळै, लोग मूढो फोरै सामै सिर सळ घालै बेंम रै कारण सुभ जातरा रै वखत सुनार नै ग्रवस टाळै। बो: ग्रापरी मा रो ही हाचळ नी छोडै। —दसदोख

उ०—२ एक'र री वात, राजी रै जापै मे पौन-हवा निकळगी। वावळी वडा करण लागगी। गूंग विखैरै ग्रर तता-पत्ता सूं ब्रूही वाता करै। जकै सूं घर हाला नै भूतणी रो बेंम बड गयो है। —दसदोख

बेंरागर—देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

बेंसो—देखो 'बेंसो' (रू. भे)

बेंह—देखो 'बे' (रू भे.)

उ०—सतजुग कै पहरै मा सोनै को घाट, सोनै को पाट, सोनै को कळस, सोनै को टको। पाचा कोड्या को मुखी गुर पहळाद कळस थाप्यो, बेंह कळस जस धरम हुवै, सो ईंह कळस हुइयो। —जाम्भो

बेंहचणो, बेंहचबो—देखो 'बेंचणो, बेंचबो' (रू भे.)

उ०—१ बीजा ही सवणिया नूं पूछियो। तिया कह्यो-जिकै राणी रे प्रसूत हुसी। तियै रो बेटी धरती रो धणी हुसी। ग्राप राजी हुवा। मालोजी जाया। घणो हरख हुवो। घणी वधाया बेंहची। —नैणसी

उ०—२ घाडा रजपूता नूं बकस दिया। एक घोडो ग्राप राखियो। पुकार दिल्ली गई। ग्रहदी ग्रायो। घोडा ल्यावो। मालजी नूं जोर पडियो। घोडा मागीजै। ताहरा मालजी ग्रादमी मूकिया। कह्यो—चवडा घोडा ल्याव। ताहरा कह्यो—घोडा तौ बेंहच दीघा। —नैणसी

उ०—३ पछै नरै रै टीकै गोयद बैठो। हमैं रोज लडाया पडै। धरती वसै नही। ताहरा राव सूजैजी गोयद नूं तेडायो। पोकरणा नूं तेडाया। धरती ग्राधो-ग्राध बेंहच दीवी। कोट नरै रै माथै साटै कियो। उवै जाळ सौं सीम पडी। —नैणसी

बेंहचणहार हारो (हारी), बेंहचणियो—वि०।

बेंहचिग्रोड़ो, बेंहचियोड़ो, बेंहच्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेंहचीजणो, बेंहचीजबो—कर्म वा०।

बैंहुवाणो, बैंहुवाबो—देखो 'बंटाणो बटावो' (रू. भे.)

उ०—अठै बीरमजी रा कामेती थांण ऊपर बैसे राति री हैसो बंहुवाइ दे। कदे सरब गोलक मेल आवै। कहै-ऐ सवारै लेज्यो। पै नाहर बकरी मारै तो एकै बकरी री इग्यारह बकरी लै। कहै नाहर तो जोईयां रो छै। —नैणसी

बंहुवाणहार, हारो (हारी), बंहुवाणियो—वि०।

बंहुवायोड़ो—भू० का० कृ०।

बंहुवाईजणो बंहुवाईजबो—कर्म वा०।

बंहुवायोड़ो—देखो 'बटायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बैंहुवायोड़ी)

बैंहुवावणो, बैंहुवावबो—देखो 'बटाणो, बटावो' (रू. भे.)

बंहुवावणहार, हारो (हारी), बंहुवावणियो—वि०।

बंहुवावियोड़ो, बेंहुवावियोड़ो, बंहुवाव्योड़ो—भू० का० कृ०।

बंहुवावीजणो, बंहुवावीजबो—कर्म वा०।

बैंहुवावियोड़ो—देखो बंटायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बैंहुवावियोड़ी)

बै-स. पु.—१ श्री कृष्ण का एक नाम। (एका.)

२ स्वर्गलोक। (एका.)

३ पति, खाविंद।

४ मालिक, स्वामी।

५ एक प्रकार का अव्यय विशेष जो निश्चय या स्वीकारोक्ति के अर्थ मे काम लिया जाता है। किन्तु अधिकांशतः इसका प्रयोग पाद पूर्ति हेतु भी होता है।

क्रि० वि०—१ निश्चय ही।

उ०—रिमां माथ मूकै नही बै रण गो वडत्ताह, वण कूको रण भोम री चढियां चार्लड़ियाह। चढै रण चाबड़ो सामहो चालियो, भूंकतै भलो रायसिंह तै झालियो। —हा. झा.

२ ही।

३ भी।

४ देखो 'वयस' (रू. भे.)

उ०—सिसु बै मिती त्रित्ती, उदयो पोगंड मद सिगारी। ज्यों ब्रंदा रक तरय, प्रांमै डाळ सगि पन्नेणम —रा. रू.

५ देखो 'वे' (रू. भे.)

उ०-१ माया जब तक ही बुरी, हरिया आदि' र अंत। बडे बडे गुणजन छळे, बै रहते एकत। —अनुभववांणी

उ०—२ ए वाड़ी, ए सर-केरी पाळ। बे साजण बै दीहड़ा, रही संभाळ संभाळ। —डो. मा.

उ०—३ नित सवार सिन्या बै री बै चीजां देखतां देखतां दो री ठोड हजार आंख्यां व्हैती तो ई धांती थाय जाती। नित बै री बै सागै चीजा देखणा बिचै तो आंख्यां मींच अंधारो करणो वरण नै आछो लागतो। —फुलवाड़ी

उ०—४ पण सेठां री मन तो सेठां रै बस ही, बै तो उण दिन सूं ई कोडाया होय सील-व्रत धारण कर लियो। सोच्यो कै बेमाता अर जमराज आपरै हिसाब सूं चालै तो सेठ ई आपरै हिसाब सूं चालैला।

—फुलवाड़ी

रू. भे.—बै।

बैखरी बैखारी—देखो 'बेखरी' (रू. भे.)

बैईजयंत—देखो 'वैजयंत' (रू. भे.)

बैईजयंतिक—देखो 'वैजयंतिक' (रू. भे.)

बैईजयंतिका— देखो 'वैजयंती' (रू. भे.)

बैईजयंती— देखो वैजयंतीमाळा'।

बैईस—देखो 'वैस्य' (रू. भे.)

उ०—बांभन खत्री कोन है, कूंन सुदर कूं बैईस। हरीया आलम हेक है, दूजा कोय न दीस। —अनुभववांणी

बैकंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

उ०—बैकंठ विलासि अपुत्र्य प्रकासि अपार अपार अप्रेम परं, निर-कार नरं मधुकंटक मारण त्रिभन बिडारण केवल कप वराह करं। धर दाढ धरं करि दंत कणं कण रे, पण रामण लंक लई दधि लोप लज, अविगति अज 'हमीर' समरि हरणांसि निरंतर, ग्राह वेहळ ग्राहि गजंघज पंक धजं। —पि. प्र.

बैकंठनाथ—देखो 'वैकुंठनाथ' (रू. भे.)

बैकंठवासी—देखो 'वैकुंठवासी (रू. भे.)

बैकक्ष, बैकक्षक, बैकक्षिक-स. स्त्री. [सं] जनेऊ की तरह पहनी जाने वाली माला।

बैकटिक-सं. पु. [स.] रत्नो की पारख करने वाला, जौहरी।

बैकण—देखो 'बंकण' (रू. भे.)

बैंकणो, बैंकबो—देखो 'बहकणो, बहकबो' (रू. भे.)

बैंकणहार, हारो (हारी), बैंकणियो—वि०।

बैंकियोड़ो, बैंकियोड़ो, बैंक्योड़ो—भू० का० कृ०।

बैंकीजणो, बैंकीजबो—भाव वा०।

बैकरण—सं.पु. [सं. वैकर्ण] १ वात्स्यमुनि।

२ एक प्राचीन जनपद।

बैकरतन-स. पु [सं. वैकर्तन] १ कुन्ती पुत्र कर्ण का नाम।

२ सूर्य पुत्र का नाम।

९ सुग्रीव के एक पूर्वज का नाम ।

वैकरणिक, वैकरणो–सं पु. [स. वैकर्णिक] १ राज्य कर्मचारी विशेष ।

२ कश्यपकुलोत्पन्न वैकर्णोक नामक एक गोत्रकार ।

रू भे.—वयगरणी, वयगरणु, वयगरणो ।

वैकल—देखो 'विकळ' (रू. भे)

वैकल्प—देखो 'विकळप' (रू. भे)

वैकल्पिक–वि. [स] १ ऐच्छिक ।

२ संदिग्ध ।

वैकल्य–स. पु [स] १ न्यूनता, कमी ।

२ विकलांग, लंगडा ।

३ घबडाहट, व्याकुलता ।

४ अनश्चित्व ।

वें'काणो, वें'काबो– देखो 'बहकाणो, बहकाबो' (रू. भे.)

वें'काणहार, हारो (हारी), वें'काणियो— वि० ।

वें'कायोडो—भू० का० कृ० ।

वें'काईजणो, वें'काईजबो—कर्म वा० ।

वें'कायोड़ो देखो 'बहकायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वें'कायोडी)

वैकाळ–स पु [स वैकाल] मध्यान के बाद का समय, सध्याकाल ।

वें'कावणो, वें'कावबो– देखो बहकाणो, बहकाबो' (रू भे)

वें'कावणहार, हारो (हारी), वें'कावणियो—वि० ।

वें'काविम्रोडो, वें'काबियोड़ो, वें'काव्योड़ो—भू० का० कृ०

वें'कावीजणो, वें कावीजबो—कर्म वा० ।

वें'काबियोड़ो—देखो 'बहकायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वें'काबियोडी)

वें'कियोड़ो - देखो 'बहकियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वें'कियोडी)

वैकूंट—देखो 'वैकुंठ' (रू भे.)

वैकूंटनाथ—देखो वैकूंठनाथ' (रू भे.)

वकुंट्ठ—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

वैकुंट्ठनाथ—देखो 'वैकूंठनाथ' (रू. भे.)

वैकुंट्ठनायक—देखो वैकूंठनायक' (रू भे)

उ०—तोरण त्रीकम आविया, त्यों बेहडां वर नारि । वर वेहडू वैकुंट्ठनायक, वढियं कर व्यारि । —रुकमणी मगळ

वैकुंठ–स पु. [सं.] १ भगवान् श्रीविष्णु का एक नाम ।

उ०—छिपे मेघ सोभा इसो भाळ छाजै, रवी पत द्वै कुंडळं क्राति राजै । भजै मुकुट सोभा सबा कूंण भासै, रहै मांन तै ध्यान वैकुंठ रासै । —रा रू

२ भगवान् विष्णु के रहने का स्थान, स्वर्ग ।

उ०—१ राजा असमाधियो हुतो । तिकै राजा नू बरस १०० पूरा हुवा । ताहरा तुरक नूं जासूसं जाय खबर दीनी, राजा मैंहा तो ओ प्रकार हुवो,वैकुंठ प्राप्त हुवो । —राजा नरसिंघ री बात

उ० – २ वैकुंठ वेडो विसन ढोयो, सचियार साल्हिया लेविसी । पारगिराय पुहचाय भाभराय, वास निहचळ देविसी ।

—ऊदौजी नैण

उ०—३ दिज मूरत देहरा, पडै जखराज पडंतो, घणा गढा सिर ढाक, चडै वैकुठ चडता । अज्या मेल इकठा, घरै सो सिंघ भुजाळा, सोह लोग समार आज तो वाज दुखाळा —सुरजनदास पूनियो

उ०—४ हिक सिवह पडै त्रण वारहट, सो पडिया बका सुहड़ । वैकुंठ गयो 'वीठल्ल' रो, अजबसाह' राखै अचड । —रा. रू.

३ देवराज इन्द्र का नाम । ४ तुलसी का नाम । ५ रैवत मन्वन्तर एव चाक्षुक मन्वन्तर का एक देवगण ।

रू भे —वईकुंठ, वयकुंट, वयकुठ, वयकूट, वेकुंठ, वैकुठ, वैकूंट, वेकुठ, वैकुठ, वैकू ट, वंकुठ, वईकुंठ, वयकुंठ, विकुंठ, वेकुंठ, वे ंठ, वैकूठ वैकठ वैकुंट्ठ, वैकुंटि, वैकुंटी, वैकूंट, वैकूढ ।

वैकुंठचतुरदसी, वेकुठचवदस–स- स्त्री. [स. वैकुंठचतुर्दशी] कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी ।

वैकुंठनाथ–स पु [स] १ भगवान् विष्णु ।

उ० – वैकुंठ पधारो । तिणि वेळा राजा रतन वैकुंठनाथ महाराज सूं अरज करि कहिम्रो । महाराज आज री वेढ रा धणी राठौड़ । राठौडा माहे हूं इज । मुदै मो नूं कहिम्रो इज चाहीजै । मो साथै वडा वडा गढपति छत्रपति कामि आया । हाडा मुकुंदसिंघ सारीखा । गौड अरजन सारीखा मीसोदिया सुजाणसिंघ सारीखा । झाला दळथभ सारीखा । और छत्रीस वस हिंदू सरजीत कीजै । वैकुंठवास दीजै । —र. वचनिका

२ देवराज इन्द्र ।

रू भे —वैकठनाथ वैकुंट्ठनाथ, वैकूंटनाथ, वैकूंठनाथ ।

वैकुंठनायक–स पु [स] भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।

रू. भे.– वैकठनायक वैकुंट्ठनायक, वैकूंटनायक, वैकूंठनायक ।

वैकुंठलोक–स पु —स्वर्गलोक विष्णुलोक ।

वैकुंठवास–स पु [सं.] १ विष्णु का एक नाम ।

उ०—मठवासी सहस रिख करै आस, बखाणै सको वैकुंठवास । पाच तत महा तत रहै पास, संवारै तना प्रभु सास साम ।

—पी. ग्रं.

२ स्वर्ग ।

उ०—वैकुंठ पधारो । तिणि वेळा राजा रतन वैकुंठनाथ महाराज सूं अरज करि कहिम्रो । महाराज आज री वेढ रा धणी राठौड़ । राठौडा माहे हूं इज । मुदै मो नूं कहिम्रो इज चाहीजै । मो साथै

बडा बडा गढपति छत्रपति कामि आया। हाडा मुकुंदसिंघ सारीखा। गौड़ अरजन सारीखा। सीसोदिया सुजाणसिंघ सारीखा। झाला दळथभ सारीखा। और ही छत्रीस वंस हिंदू सरजोत कीजं। वैकुंठ-वास दीजं। —र. वचनिका

मुहा.—वैकुंठवास होणौ —स्वर्गवास होना, मृत्यु को प्राप्त होना।

रू. भे.—वैकूंटवास, वैकूंठवास।

वैकुंठवासी—सं. पु [सं.] विष्णु का एक नाम।

रू. भे —वैकुठवासी, वैकठवासी, वैकूंठवासी।

वैकुंठविलासी—सं. पु [सं.] १ विष्णु का एक नाम।

२ ईश्वर।

रू भे.—वैकुटविलासी, वैकूटविलासी, वैकूंठविलासी।

वैकुंठि, वैकुंठी—सं. स्त्री [सं. वैकुंठ+रा. प्र ई] १ पालकीनुमा रथी, जिसे सजा कर उसमें शव को बैठा कर श्मशान भूमि में ले जाते हैं।

२ देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

उ०—साम्हौ सारि दखिण घड़ साम्हौ, निवहि मुहरि चालियौ निराट। सादूळौ वैकुंठि गौ सूधौ, वैकूंठ तणी न भूलौ वाट।
—खेतसी लाळस

रू. भे.—वैकुंटी, वैकुंठी, वैकूंटी, वैकूंटी, वैकूंठी।

वैकूंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू. भे.)

वैकूंटनाथ—देखो वैकुंठनाथ' (रू भे)

वैकूंटनायक देखो 'वैकुंठनायक' (रू भे.)

वैकूंटवास देखो 'वैकुंठवास' (रू भे)

वैकूंटविलासी देखो 'वैकुंठविलासी' (रू. भे.) (नां मा.)

वैकूंटी—देखो 'वैकुंठी (रू. भे.)

वैकूंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू भे.)

उ०—१ अम्मरां वधायौ लोक सरायौ वैकूंठ वाळौ, सूरां थोक थायौ बेद रचायौ सरब। आवा काम परा हूंत पठौ घोड़ै चाल आयौ, पायौ 'जालमेस' हूंता सवायौ परब। —प्रभूदान मोतीसर

उ०—२ जीहा न बोलं भूठ, स्रवणा भूठ न साभळं। वरजं कुण वैकूंठ, माधव दरगह मोतिया। —रायसिंह सादू

उ०—३ काल किसी सारं नहीं, मारं सुलटी मूठ। हरीया हरि-जन ऊबरं, उलटि चढं वैकूंठ। —अनुभववांणी

उ०—४ जळ चादरूं की घरहर तमासं का विसतार। सो कैसी, वैकूंठ सं छूटी जांणि गंगा हजार धार। छछोहं भाव गहर फौंहारा छूटं। जमीं सं मेघ जांणि असमांन सं छुटं। —सू. प्र.

वैकूंठनाथ—देखो 'वैकुंठनाथ' (रू. भे.)

वैकूंठनायक—देखो 'वैकुंठनायक' (रू. भे.)

वैकूंठवास—देखो 'वैकुंठवास' (रू. भे.)

वैकूंठवासी—देखो 'वैकुंठवासी' (रू. भे)

वैकूंठविलासी—देखो वकुंठविलासी' (रू. भे.)

वैकूंठी—देखो 'वैकुंठी' (रू. भे.)

वैकत—देखो विकत' (रू भे.)

उ०—मह आदसिर सुण वचन मोह, तातें न उचित अब कोध तोह। करनला' कयौ सुणियौ न कान, वैकत भैरव मुख बोळ-वान। —रामदान लाळस

वैक्यसरीर—देखो 'वैक्रियसरीर' (रू. भे.) (जैन)

वैक्रात—देखो 'विक्रांत' (रू. भे.)

वैक्रांतमणि, वैक्रातमणी, वैक्रांतमिण—सं. स्त्री. [सं वैक्रान्तमणि] एक प्रकार का रत्न विशेष।

वैक्रिय—सं. पु. सं.— वह जिस में छोटे, बड़े, एक अनेकादि रूप बनाने की शक्ति हो (जैन)

वैक्रिय-लब्धि—सं. स्त्री [सं] वह लब्धि जिस के प्रभाव से छोटे बड़े आदि विविध रूप बनाये जा सके। (जैन)

उ०—आंमोसहि, विप्पोसहि, खेलोसहि, सव्वोसहिलब्धि वैक्रिय-लब्धि। —व. स.

वि. वि. मनुष्य और तिर्यंचो को यह लब्धि तप आदि के आचरण करने से प्राप्त होती हैं।

वैक्रियसरीर—सं. पु. [सं. वैक्रियशरीर] १ देव और नारकी जीवो का शरीर। (जैन)

२ वह शरीर जिसमे हाड, मास, लोही आदि न हो और मृत्यु के पश्चात कपूर की तरह बिखर जाता हो। (जैन)

वैखरी—सं. स्त्री [सं.] - १ चार प्रकार के नाद (स्वर) मे एक प्रकार का नाद जो कंठ से उच्चरित माना जाता है।

उ०—१ परा चित चितवन करं, पस्यती मनन मनार। मध्यमा सबद व्यवहार कु वैखरी ऊभहकार। —स्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ मूळधार मे परा नाद है जांणिये, स्वाधिस्ठान मे पस्यती पहचानिये हृदय स्थान मध्यमा, वदन में वैखरी। —साधक सुधा

२ वाक्शक्ति।

३ वाग्देवी, सरस्वती।

४ बोलने की शक्ति।

वैखांनस, वैखांनसि—सं. पु [सं. वैखानस:] १ वानप्रस्थ आश्रम का व्यक्ति।

२ वराह रूपी भगवान् श्रीविष्णु का नाम। यह रूप पातालवासी हिरण्याक्ष के वध के लिए धारण किया था।

३ चंपक नगरी का राजा, जिसने अपने पितरों के उद्धार के लिए उन्हे मार्गशीर्ष शुक्ल इग्यारस के व्रत का पुण्य दिया था।

२ एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी ।

रू. भे.—बिखानस ।

बैंग—देखो 'बेग' (रू. भे.)

उ०—१ जळ जाई जळ ऊपनी, जळ तेरा विसरांम । हरिया जम सूं आवसी, बैंग सिवरियै रांम । —अनुभववाणी

उ०—२ साफि सभ स्वार क्या करत नर बावरा, बैंग भजि बैंग हरि याव भाई । दास हरिराम तन खाक मिळ जाहिगें, चूक सब जाणि जुग चतुराई । —अनुभववांणी

बैंगरणी—देखो 'वेगरणी' (रू भे)

बैंगरणौ-वि०—प्रबन्ध करने वाला, प्रबन्धक ।

उ—बैंगरणां सैंगरणां मुहता, साद करई सुधार । दोमी दळ को सक्या आंणइं, मांहइ चक्र तलार । —रुकमणी मंगळ

२ देखो 'वेगरणौ' (रू. भे.)

बैंगलेय-सं. पु. [सं] भूतों का एक गण विशेष । (पुराण)

बैंगांण—देखो 'वेग' (रू. भे.)

उ०—गुटकांण सीदाण विमाण पराछक तणी गत, नाव तीराण दंधाण भणं । पुलराण बैंगांण प्रमाण पराछक, वात वसै विड़ंगाण भणं । —किसनजी दधवाडियो

बैंगागळ, बैंगागळौ—देखो 'वेगागळ' (रू. भे)

उ०—राठौड़ा सीह वधी, वधी सोह हिंदुसथांना वरंकरार नव कोट, हसम राखिया खजाना । दिल्लीवै सुरताण, वाज वका बैंगागळ, सूटी लै मेल्हिया, जूह मद वहता मैंगळ । —गु. रू. ब

बैंगायन-स. पु. [स.] भृगु के कुल मे उत्पन्न एक गोत्रकार ।

बैंगार—देखो 'बेगार' (रू. भे.)

बैंगाळ, बैंगाळौ—१ देखो 'वेगागळ' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

२ देखो 'वेगाळ' (रू. भे)

बैंगौ—देखो 'वेगौ' (रू. भे)

उ०—१ मां कह्यौ—बेटा महाराज उतावळ करै छै। सताबी करि घरै हालो । ताहरा कुंवर कह्यौ - माजी वेगा ही हालस्यां । माजी ऊभी बातां करि ऊठियौ । आपरै जनाने गयौ । मोळगुवा आणि मुजरौ कियौ । राग-रग हुवा, हसिया, खेलिया, पौढिया । —पलक दरियाव री बात

उ०—२ एक वीर स्त्री आप रा पती नै कह रही है—हे पती आज आपरो बैंगौ रात्री वदीत हुवा बिना ही जागणौ और चर (चरवादार) घोडा नै वेगौ कसियौ तिणसूं म्हनै अनमांन होवै कै है थारा कोई पाहुणा मिळिया है । —वी. स. टी.

बैंग्यानिक-वि० [सं. वैज्ञानिक] १ विज्ञान का ज्ञाता । २ विज्ञान का, विज्ञान सम्बन्धी । ३ प्रयोगों द्वारा नये ज्ञान सूत्र की खोज करने वाला ।

बैंड़, बैड़, बैंड़की, बैड़की—देखो 'बेड़' (रू. भे.)

बैंड़ौ, बैड़ौ—१ देखो 'बेंड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बंडौ' (रू. भे.)

३ देखो 'वंसौ' (रू. भे.)

उ०—१ राजा वळै समझाय कह्यौ—बेटा, थारी मंसा परवाण बैंडौ राजकवरी रा तो कठै ई बावडी ई नीं व्हिया । अबै थूं कै ज्यूं करूं । म्हारौ कैणौ मान अर ब्याव साह हुंकारौ भर दै । —फुलवाडी

उ०—२ उणियारौ बतावण साह सिरदार सुभट नटग्या । कह्यौ कै बैड़ा दुस्टी री तौ मूंडौ देख्या ई पाप लागै भेटका व्हैता ई झटकौ । दोय ढोल नी करा जित्तै बैन नी पडै । —फुलवाड़ी (स्त्री वैडी)

बैंचणौ, बैंचबौ—देखो 'बेंचणौ, बेंचबौ' (रू भे.)

बैंचणहार, हारौ (हारी), बैंचणियौ—वि० ।

बैंचिओड़ौ, बैंचियोड़ौ, बैंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बैंचीजणौ,बैंचीजबौ—कर्म वा० ।

बैंचवाड़ौ—देखो 'बेंचवाडौ' (रू. भे.)

बैंचाणौ, बैंचाबौ—देखो बटाणौ, बंटाबौ' (रू. भे.)

बैंचाणहार, हारौ (हारी), बैंचाणियौ—वि० ।

बैंचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बैंचाईजणौ, बैंचाईजबौ—कर्म वा० ।

बैंचायोड़ौ— देखो 'बंटायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री वैंचायोडी)

बैंचावणौ, बैंचावबौ—देखो 'बटाणौ, बटाबौ' (रू. भे)

उ०—थारा बीरोसा कागद मेहलियौ । आध (न) बैंचावण घरै आवौ औ जूंझारजी. झगड़ै किण विध जूजिया । —जूंझारजी रौ गीत

बैंचावणहार, हारौ (हारी), बैंचावणियौ—वि० ।

बैंचाविओड़ौ, बैंचावियोड़ौ, बैंचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बैंचावीजणौ, बैंचावीजबौ— कर्म वा० ।

बैंचावियोड़ौ—देखो 'बटायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बैंचावियोडी)

बैंचियोड़ौ—देखो 'बेंचियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बैंचियोड़ी)

बैंछंग-वि०—चपल, चंचल, उच्छ्ंखल ।

उ०—उभै सहंस अठसठ धुज ऊतंग, बीस सहस हैमर धुज बैंछंग ।

निज पोसाक सु केसरि नोखा, जबहर प्रतर प्रिगंमद ओखां।

—सू. प्र.

बंछरा, बंछराय—देखो 'बहुचराय' (रू. भे.)

बंछाड़—देखो 'बेंछाड़' (रू. भे.)

बंछाणो, बंछाबो—देखो 'बिछाणो, बिछाबो' (रू. भे.)

बंछाणहार, हारो (हारी), बंछाणियो—वि०।

बंछायोड़ो—भू० का० कृ०।

बंछाईजणो, बंछाईजबो—कर्म वा०।

बंछायोड़ो—देखो 'बिछायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बंछायोड़ी)

बंछावणो, बंछावबो—देखो 'बिछाणो, बिछाबो' (रू. भे.

बंछावणहार, हारो (हारी) बंछावणियो—वि०।

बंछावियोड़ो, बंछावियोड़ो, बंछाड्योड़ो—भू० का० कृ०।

बंछावीजणो, बंछावीजबो—कर्म वा०।

बंछावियोड़ो—देखो 'बिछायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बंछावियोड़ी)

बंजंत—देखो 'बैजयंत' (रू. भे.)

बंजती—१ देखो 'बैजयंती' (रू. भे.)

२ देखो 'बैजयंतीमाळा' (रू. भे.)

बंजतीमाळ, बंजंतीमाळा—देखो 'बैजयंतीमाळा' (रू. भे.)

उ०—१ चक्र सामि सख सांमि पदम पति अना गदापति, प्रीतंबर पगरण भना फाविति इसी भति। महि कट मेखळ कहै कांनि मकराइ कि कुंडळ, उरि बंजंतीमाळ रिदै कुस्तामिणि कमळ।

—पी. ग्रं.

उ०—२ सख चक्र पदम रु गदा, उर बंजंतीमाळ। मोर मुकुट कट काछनी, प्रायो मदर लाल। —गजउद्धार

उ०—३ बंजंतीमाळा, अधिक विसाळा, कौस्तभ मणि सोहदा है। अगुलता छाजै, विविध विराजे, प्रति ही रूप अनदा है।

—गज-उद्धार

बंज—देखो 'बैज' (रू. भे.)

बंजणती—१ देखो 'बैजयंती' (रू. भे.)

२ देख 'बैजयंतीमाळा' (रू. भे.)

बंजनाथ—देखो 'बैद्यनाथ' (रू. भे.)

उ०—राठौड़ कूपो महिराजोत बडो दातार, प्रासाडसिंघ रजपूत स्रीबैजनाथ महादेव रो प्रवतार, वरस ३५ में कांम प्रायो। इतरा प्रवाड़ा तो प्रसिद्ध कूपाजी रा छै। —राव मालदे री बात

बंजभ्रत—सं. पु. [स. बैजभृत] भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

बैजयंत—स. पु. [सं.] १ देवराज इन्द्र।

२ देवराज इन्द्र का राजभवन।

३ इन्द्र का झंडा, पताका।

४ झण्डा, पताका।

५ तिमिध्वज की राजधानी का नाम।

६ घर, मकान।

७ क्षीरसागर के मध्य का पर्वत।

रू. भे.—बैजयत, वेईजयंत, वैजंत।

बैजयंतिक—सं. पु. [स.] ध्वजा या पताका को उठाकर चलने वाला।

रू. भे.—वेईजयतिक।

बैजयंतिका—१ देखो 'बैजयती' (रू भे.)

२ देखो 'बैजयंतीमाळा' (रू. भे.)

बैजयती—स. स्त्री. [सं] १ ध्वजा, पताका, झण्डा।

२ चिन्ह, लक्षण।

३ एक प्रकार का पोधा विशेष; जिसके हाथ-हाथ भर लम्बे एवं चार-पाच अगुल चोडे पत्ते एव कई दलो के फूल होते है।

४ देखो 'बैजयतीमाळा' (रू भे.)

रू. भे.—बंजती, बंजयती, वईजयती, वेईजयतिका, वेईजयती बंजती।

बैजयतीमाळ, बैजयतीमाळा—सं. स्त्री [स वैजयतीमाला] १ मोतियों आदि का हार।

२ पाच रगो की घुटको तक लटकती हुई एक प्रकार की माला, जिसे कृष्ण भगवान् पहनते थे।

३ भगवान् श्रीविष्णु की माला।

उ०—ब्रहमा विसन महेस इद्र सुर सार्थे विराजमान हुआ छै। प्राप विसन चत्रभुजरूप धारि। वागा वणाउ करि। सख चक्र गदा पदम धारि। बैजयतीमाळा मोर मुकट कुंडळ विसाल मदन मोहन कमळलोचन स्यामसुदर ठाकुर विराजमान हुआ छै।

—र. वचनिका

रू. भे.—बंजंती, बंजतीमाळ, बंजतीमाळा, बंजयंती, बेजयतीमाळ, बेजयतीमाळा, वैजणती वईजयती, बेंजतीमाळ, बेजतीमाळा, बेजयती।

बेजयिकीविद्याग्यान—स पु. [स. वैजयिकीविद्याज्ञान] स्त्रियों की ६४ प्रकार की कलाओ में से एक प्रकार की कला विशेष।

बैजो—स. पु.—घोडों का एक प्रकार का रोग विशेष, जो मुरचों पर होता है। (शा. हो.)

बेड—देखो 'वेढ' (रू. भे)

उ०—परमोम लई समंदा लगे, राठौडा साका रहै। गळहत्थ वस गोहिलां तणों, बेड खड्ग गहि संग्रहे। —गु रू. ब.

बेंढणो, बेंढबो—देखो 'वेढणो, वेढबो' (रू. भे.)

उ०—पाडवां नीलो पलाण, असी घोडे गाव आग। बंडते समें विकास, आरिखं जिसो उचाम। —गु. रू. ब.

बंडणहार, हारो (हारी), बंडणियो—वि०।

बेडियोड़ो, बेडियोड़ो, बंड्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेडीजणो, बेडीजबो—कर्म वा०।

बैडव-स. पु. [स.] वसिष्ठ ऋषि का पैतृक नाम।

बैडाक—१ देखो 'बेडाक' (रू भे)

२ देखो 'बेडो' (रू. भे.)

बैडाळव्रत-सं. पु. [स. बिडालव्रत:] एक प्रकार का ढोंग विशेष, जिसमें दिखावे के लिए साधु (सज्जन) बनकर छुपे रूप में पाप व कुकर्म किये जाते हैं।

बैडाळव्रति, बैडाळव्रती-वि० [सं. बिडालव्रती] १ पाप एवं कुकर्म करते हुए भी साधु बना रहने वाला।

२ ढोंग रचनेवाला, ढोंगी।

बैडियोड़ो—देखो 'वेडियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. बैडियोडी)

बैडूंबो-स. पु —खराब कलिन्दा।

बैडूरयपरवत-स. पु. [सं वैडूर्यपर्वत] एक पर्वत जो गोकर्ण तीर्थके समीप स्थित है।

बैडूरय बैडूरयमणि, बैडूरयमणी—देखो 'वैदूर्यमणि' (रू. भे.)

उ०—मरकत करकेतन पदमराग पुस्पराग वज्र बैडूरय सूरयकात चद्रकात नील महानील इद्रनील सवबर विभकर ज्वरहर रोगहर सूलहर विखहर हरिन्मणि चूनडी लोहीताक्ष मसारगल्ल हसगरभ पुलक अक अजंन अरिस्ट चितामणि। —व स

बैडोल्योड़-वि.—घबराया हुआ, विचलित हुआ हुआ।

उ०—पेमजी बोल्या—भाया तणी भीड, भायेला भाजे नहीं। लोग कूडी कैवे·········बीच मे ही दलाल बोल उठ्यो—आपणी बडाई पछे कराला, पैली रिपिया ल्यावो, काम पक्को बणावा। पेमजी बंडोल्योड़ राज री रकम रा आयोडा ढाई हजार रिपिया री थैली भरियोडी मेल दी, दलाल देवता रै आगे बगा नाखी अर कैयो—की बता ले जावो सा। —दमदोम

बेढ—देखो 'वेढ' (रू. भे.)

उ०—हाथी लखमन हेत, वळियो बेढ लगायके। चित उत धरियो चेत, मिळवा कामण मालवा। —गज-उद्धार

बेढक—देखो 'वेढक' (रू. भे)

उ०—कने होत जो ऊठे 'अजमाल' बेढक अकळ, लडण तेढक खळा दळा लाहो। साजतो नही असपेल 'अडसीह' नु, हामटे मेल कमेल हाडो। —बद्रीदास खिडियो

बेढगरो, बेढगारो—देखो 'वेढीगारो' (रू. भे.)

बेढणो, बेढबो—देखो 'वेढणो, वेढबो' (रू. भे.)

बेढणहार, हारो (हारी), बेढणियो—वि०।

बेढियोड़ो, बेढियोडो, बेढ्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेढीजणो, बेढीजबो—कर्म वा०।

बेढमण, बेढमणो—देखो 'वेढीमणो' (रू. भे.)

बेढमल, बेढमल्ल—देखो वेढमल' (रू. भे.)

बेढमी—देखो 'वेढमी' (रू. भे)

बेढलो—देखो 'वेढलो' (रू. भे.)

बेढियोड़ो—देखो 'वेढियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वेढियोडी)

बेढीगार—देखो 'वेढीगारो' (रू. भे.)

बेढीमण, बेढीमणो—देखो 'वेढीमणो' (रू. भे.)

उ०—मूंछा रा वळाका दीधा सीसोद गनीमा माथै, घुर हास तमासे मुनिंद्र रीधा धीर। म्यान हू उखेलताई कीधा खागे तेढीमणां, बेढीमणां मेलताई कीधा महावीर। बद्रीदास खिड़ियो

बेढीमल, बेढीमल्ल—देखो 'वेढमल' (रू. भे.)

बैण-स. पु [सं. वचन] १ स्तुति, वन्दना।

उ० गावव रयणायर रसा, सेस महेस्वर बैण। सुणे बधायो गिरि-सुता, सो ह्वो मो सुख देण। —बा. दा.

२ देखो 'वेण' (रू. भे) (अ. मा.)

३ देखो 'वीण' (रू भे)

उ०—रनि रयण मुदि नर नारी रामति, गाळि प्रमदति गावही। मुरा गान दिन निस स्वाम मगळ, बैण चग वजावही। —रा. रू.

४ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—१ तिसा बैण ग्रोमन्ळ जत्र ताल, सहनाय वमो अनै सोस ढ'ल। सुधा कुंडळी खजरी चग तोहै, वजे चंग मिरदग सोभा विमोहै। —रा. रू.

उ०—२ घूघरा तणा भरणाट हुय घमाघम, बैण रा तत्र तरणाट बाजे। नकीबा बोल हरणाट हुय नोबता, नयणधर सबद गरणाट गाजे। —खेतसी वारहठ

५ देखो 'वेणी' (रू भे)

६ देखो 'वहन' (रू भे)

७ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—१ उदियागर उगियो, इदु राका अविरखा, रग कुरग रहणी, पाव बाधी अरखा। कोल सेस भूतेस, बैण सुर बखंन चवीजे, विद्या-वत बुधवत, कहयो तुम तुम्हा कहीजे। —कोल्हजी चारण

उ०—२ या विचार बैण बोले, तेज मूं ममसेर तोले। मूछ के रोम व्योम कू उट्टं, रान के आए जम रान सैं छूटं। —रा. रू.

उ०—३ करण प्रखियात चढियो भलो कालमी, निवाहण बेण भुज बांधिया नेत। पवारां सदन वर-माळ सूं पूजियो, खळा किर-माळ सू पूजियो खेत। —बांकीदास आसियो

उ०—४ रज पलटै दिन ही घटै, सूर पलट्टं छांह। सूरा हूदा बोलिया, बेण पळट्टं नांह। —राव रिणमल री बात

उ०—५ चित बडपण सुभ चितवण वजर लीक सम बेण। गाढ न्यामध्रम धरण गह, रहण 'पतौ' दिन रैण। —जैनदान बारहठ

उ०—६ तू मोटी महमाइ, धरम धरि ऊपरि धरणी। ग्रब वाणी दे बेण, क्रपा करि हे कुंडळणी। —पी. ग्र.

उ०—७ सुरग न देखूं ग्रपणा नैणा, तौ न पतीजूं गुर का बेणां। सुरग दिखाऊं तेरे ताई, मुग्ग गयौ मन फेरे नांही। —वील्होजी

बेणडड, बेणदंड—स. पु [सं. वेणी+दण्ड] १ एक प्रकार का सर्प विशेष।

उ०—गढा भूखियो कामरी हाम गाढी, दिनो मूछ वळ पाण सत्तांग दाढी। पोरसं तरस्सं उसस्सं प्रचड, विकस्सं हुसं ऊधसं बेणडंड।
—गु रू. ब.

२ देखो वेणीडंड (रू. भे)

बेणत—स. पु. [स. देगान.] श्वान, कुत्ता। (ह ना. मा.)

बेणव—वि [स] बास का, बास सम्बन्धी।

स पु [स बेणव] १ बास का बीज या फल।

२ विश्वामित्र के वशज एक गोत्रकार ऋषि का नाम।

[स. वेणव:] ३ बास का डडा विशेष, जो यज्ञोपवीत के समय धारण किया जाता है।

रू. भे.—बैणव।

बेणवी—स. स्त्री. [स] १ वंशलोचन।

[स. वैणविन्] २ बशी बजाने वाला व्यक्ति।

३ शिव, महादेव।

बेणसगाई—देखो वयणसगाई' (रू भे.)

उ०—बेणसगाई वरणिया, ग्रगण दग्धगर गैर। यई सगाई जेण यळ, वळे न रहियो वैर। —र. ज प्र.

बेणा—देखो 'वीणा' (रू भे)

उ०—बेणा पुस्तक धारिणी, वागमीर कदरि बसति, गीत नाद गुण गाह, दियण देवि कवियण दियति। —ग्र वचनिका

बेणाबेणी—देखो 'बोलचाल'।

उ०—तद इण कही, ग्रौर तौ मुझ कुं कोई न राखै पिण एक देपाळ राखैगा। तद पातसाह कही, तौ भला जाई। तद पातसाह तौ ग्रौर हुरम पासै गयौ। तद रातै ग्रा सुखपाळ चढ नै देपाळ रै गई। ग्राई नै कह्यो, देपाळ नूं कहायो, मै पातसाह सुं बेणाबेणी हुई तं पगा हू ग्रठै तोनु तक नै ग्राई छु। जे रजपूतपणी डावै छै तौ मोनूं राख। —देपाळधंध री बात

बेणि, बेणी—१ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

उ०—१ बणि मांग उतबंग गूंथ बेणी, मोताहळ मिळ मझझ्रऐ। सिणगार ग्रमुरां छळण समहर, सगति ग्रदभुत सझ्रऐ।
—मा. वचनिका

उ०—२ तिक-बांण जाण बेणी पनग, हिरणाखी हंसा-गमणि। रग-महल सिघ राजान सुर, रमति राज-पुत्री रमणि।
—गु. रू. बं.

उ०—३ लोयण चंचळ चपळ, ग्रचळ धू जिस मन धारण। कटि मयद मुख इद्र, दीरघ बेणी ग्रहि दारण। —गु. रू. बं.

उ०—४ केहरि जिम कडि क्रिस्स, लगति चालती गजिद्रह। सोभति बेणी सरप, हरं धीरज्ज खगिंद्रह। —गु. रू. ब.

२ देखो 'वहणी' (रू भे.)

बेणीडड, बेणीदड—देखो 'वेणीडड' (रू. भे.)

बेणो—स. पु—१ बढई का एक प्रकार का ग्रोजार विशेष।

२ देखो 'वीणो' (रू. भे)

बे'णो—देखो 'वहणी' (रू. भे.)

बे'णो, बे'बो—१ देखो 'वहणो, वहबो' (रू. भे.)

उ०—ग्ररु नरसिंघ पण वीकेजी माथै ग्रायो, नै तरवार कवरजी नूं वाही सू बगतर कटनै खंवै रै भ्ररपट सी लागी। समचै वीकेजी कयो, 'नरसिंघ, तरवार यूं वेहे।' इसो कहनै तरवार वाही सू नरसिंघ रा दोय धड हुवा। —द. दा.

२ देखो 'होणो, होबो' (रू. भे.)

बेणो, बेबो—१ देखो 'वहणो, वहबो' (रू. भे.)

२ देखो होणो, होबो' (रू. भे.)

बेतंड—स पु.—१ ग्रष्ट वसुग्रो मे ग्रापका एक पुत्र।

२ देखो 'वितड' (रू भे)

बेतडी—स. पु [स. वैतण्डी] एक प्राचीन ऋषि। (पुराण)

बेतंडय—स पु. [स. वैतण्ड्य] ग्रायु राजा का एक पुत्र, राजा।

बेत—स. पु.—१ सवारी, वाहन।

२ ऊट।

उ०—मारवाड़ रा माणस ग्यारसौ मारिया गया। नै ग्रसबाब बेतां वगेरै सारो लूटियो। ग्ररु रावजी री ग्राण फेरी। इण तरै दिन १५ तथा २० मारवाडा रा थाणा सरब मार उठाया। नै कई ग्राज गढ में पैठा। —द. दा.

४ वह गद्य-पद्य रचना, जिसमे ग्रनुप्रासो व समासों की ग्रधिकता हो।

उ०—हू लिखियो नहीं तद आलमगीर पाणी बध करयो। पातसाहजी तिसां मरता री ज्यान कबज होणं लागी। तद साजिहांन जी कयो, 'लावो भाई रजूनामा लिख दें।' जब दवात-कलम हाजर किया। पीछै पातसाहजी कलम हाथ लेकर कागज में आ बंत लिखी। —द. दा.

५ नियम, प्रण, प्रतिज्ञा।

६ दाव, पेच।

७ गुरमंत्र।

८ लता, बेल।

९ देखो 'बेंत' (रू. भे.)

१० देखो 'बेत' (रू. भे.)

११ देखो 'वेत' (रू. भे.)

उ०—१ जद राजा कही, 'तूं सोमवार रै दिन थारी बेटी री स्वयंवर कर। जिंरै गळै मांहै हथणी फूलां री माळा घातै, तैनूं परणाय दे।' तद आ बात मुहतै पण कबूल कीवी। कही 'वीवाह ईयं ही ज बंत करसां। —हसराज बछराज री बात

उ०—२ मेलि परवांन मांन महाराज कीधा मन्हैं, लोपियो हुकम करतूत लहसी। हुई सहुको कहै हाक मैं हाकमी, रैत वर बंत दुस्ट दूर रहसी। —ध. व. ग्र.

रू. भे.—बंत, भेत, भैत, वेत, वेत।

बंतड़—देखो 'बैंतड़' (रू. भे.)

बंतणौ, बंतबौ—देखो 'बेंतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

बंतणहार, हारौ (हारी), बंतणियौ—वि०।

बंतिग्रोड़ो, बंतियोड़ो, बंतयोड़ो—भू० का० कृ०।

बंतीजणौ, बंतीजबौ—कर्म वा०।

बंतनिक—स. पु. [सं. वेतन+इक प्रत्य.] वेतन लेकर कार्य करने वाला व्यक्ति, नौकर।

बंतर—१ देखो 'वेतर' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यतर' (रू. भे.)

उ०—१ हेकठा हुआ बळितरां हेत, पळहारी बंतर भूत प्रेत। खेचरा भूचरा खेत पाळ, काळिका पुत्र भैरव कंकाळ। —गु. रू. बं.

उ०—२ भूत प्रेत पेसाच, बहुत चेडा बहु बंतर। वीर सिद्ध बंताळ निसाचर भूचर खेचर। —गु. रू. ब.

बंतरणि, बंतरणी—सं. स्त्री. [सं] १ उडीसा प्रान्त में बहने वाली एक पवित्र नदी।

२ पितृलोक से बहते समय गंगा नदी का नाम। (पुराण)

३ यमराज के द्वार पर (नरक में) बहने वाली एक नदी। (गरुड़ पुराण)

उ०—अचळ न अटकै धुर बहै, कासूं पांणी कोच। इण री बननी तारही, बंतरणी रै बीच। —बां. दा.

वि० वि०—कहा जाता है कि उक्त नदी में जल की जगह गर्म लोहू, अस्थि, मज्जा आदि तेज प्रवाह से बहता है। यह नदी मरने के बाद जीवात्मा को पार करनी पड़ती है। इसमें से ब्राह्मण को गौ-दान करने वाला धर्मात्मा ही पार हो सकता है एवं पापी को इसे पार करने में कठिनाई होती है और दुख भोगना पड़ता है। यह नदी सती के वियोग से जो अश्रुधारा शिव के नेत्रों से बही उसी से बनी थी। इसका विस्तार दो योजन है।

४ दान में दी गई वे वस्तुएं जो परलोक में उन्हीं वस्तुओं को प्राप्त करने की अभिलाषा से दी जाती हैं।

५ देखो वेतरणी'।

रू. भे.—बेतरणी, बंतरणी, वेनरणी, वेयरणी।

बंतरणीइग्यारस, बंतरणीएकादसी, बंतरणीग्यारस—सं. स्त्री. [स. वंतरणी एकादशी] मार्गशीर्ष कृष्णा एकादशी।

बंतरणौ, बंतरबौ—देखो बेतणौ, बेंतबौ' (रू. भे.)

बंतरणहार, हारौ (हारी), बंतरणियौ—वि०।

बंतरिग्रोड़ो, बंतरियोड़ो, बंतरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बंतरीजणौ, बंतरीजबौ—कर्म वा०।

बंतरियोड़ो—देखो 'बेंतियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बंतरियोड़ी)

बंतवार—वि०—मूर्ख, नासमझ। (अ. मा.)

बंतांडारूपा—स. स्त्री.—विकृत रूप धारण करने वाली देवी।

उ०—सीकोतर सोमया तुं सुधीर, बंतांडारूपा विकट वीर। सीधरघां सीधा धातु समेव, अहिमुखा मुगट कंमाजु ग्रेव। —रामदांन लाळस

बंताढ्य, बंताढ्यगिरि—सं. पु.—एक पर्वत का नाम।

उ०—वस दीरघ बंताढ्य, वीस सत्तरसो आढ्य सत्तर मडा नदी ए पंच चूला सदीए। —वृस्त.

बंताणौ बंताबौ—देखो 'बेंताणौ, बेंताबौ' (रू. भे.)

बंताणहार, हारौ (हारी), बंताणियौ—वि०।

बंतायोड़ो—भू० का० कृ०।

बंताईजणौ, बंताईजबौ—कर्म वा०।

बंतायोड़ौ—देखो 'बेंतायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बंतायोड़ी)

बंताळ, बंताल—स. पु. [स.] १ व्यास की ऋकशिष्य परंपरा में से बातुकर्ण्य आचार्य का शिष्य।

२ देखो 'वैताळ' (रू. भे.)

उ०—१ महके दूर नंबाळ, थंड कळिचाळ कहक्के। बके वीर वैताळ, प्रोघ बेताळ गहक्के।
—सू. प्र.

उ०—२ वीरगमें वैताळं, खिलें खेतपाळं। कटक्कां कसस्सें, सुभट्टं सनस्सें।
—गु. रू. बं.

उ०—३ भूत प्रेत पेसाच, बहुत चेडा बहु वेतर। वीर सिद्ध वैताळ निसाचर भूचर खेचर।
—गु. रू. ब.

उ०—४ वंताल वीर मिळिया विहद्, सीकोतरि साकणि महा सद्। मिळ समळ प्रोघ प्रामख भक्ख, जक्खक्क रीछ वड्डाक जक्ख।
—गु रू. बं.

वैताळरस, वैतालरस—सं. पु [स] गंधक, मिर्च प्रौर हरताल के योग से बनने वाला एक प्रकार का रस विशेष। (वैद्यक)

वैताळिक, वैतालिक—स पु [स. वैतालिक] १ राजाम्रो प्रादि को उनकी कीर्तिगान करके जगाने वाला व्यक्ति भाट, बन्दीजन।

उ०—प्रभात समउ हुउ, अधकार फीटइ, गाय तणा गाला छूटा, तारागण विरल हुउ चद्रमा विच्छाय थिउ, कूकडा तणी उलि लवइ, देव तणां बार ऊघडिया, प्रभातिक तूरय वाजिया, राजभवनइ वैतालिक पढइं, विलोणा तणा भरडका ऊपजइ, पथिक मारगि थया, ब्राह्मण तणें घरि वेदध्वनि विस्तरी, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हुम्रा।
—व स.

वि० वि०—ये लोग राजाम्रो को किसी विशेष घटना, बात आदि की सूचना देने का कार्य करते थे।

२ व्यास की ऋकशिष्यपरपरा में से शाकधूमि नामक प्राचार्य का एक शिष्य।

रू. भे.—बेताळिक, बेताळिक, वेताळिक।

वैतालिकीविद्याग्यांन—स स्त्री. [सं. वैतालिकीविद्याज्ञान] ६४ कलाम्रों मे से एक।

वैताळो—स पु. [स. वैताली] १ स्वामी कार्त्तिकेय का एक प्रनुचर।

२ देखो 'वेताळ' (रू. भे.)

उ०—काज माळी कमाळी उताळी फिरै माहाकाळी, नचै प्राळी जाळी वीर वैताळी निसंक। ताळी बाज परावां साबात जाळी नराताळी, लांघडे प्रजाळी जाणे हेकै साथ लक।
—किसनजी प्राढो

वैताळीस, वैतालीस—देखो 'बंयाळीस (रू भे.)

उ०—पनरैसैं वैतालीस कोडीरे, प्रठवन लख प्रधिकै जोडी। छत्तीस सहस प्रधिक कही रे, प्रतिमा सगली सरव हीयै रे।
—वृस्त

वैतिवांण—वि.—समर्थ, सामर्थ्यवान् शक्तिशाली, बलवान्।

रू. भे.—वहतीवाण, वंहतीवांण।

वैतियोडो—देखो 'वैंतियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वैतियोडी)

वैतुंड—देखो 'वितड' (रू भे.)

वैतुल—स. पु.—घोडा, अश्व। (ना. डि. को.)

वैत्रासुर—१ देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

२ देखो 'वेत्रासुर' (रू. भे)

वैत्रासुरतडळ, वैत्रासुरतंडल—स. पु—वृत्रासुर नामक राक्षस का वध करने वाला, इन्द्र। (ना. डि. को.)

वैथी—देखो 'वेथी' (रू. भे.)

उ०—जोर कियौ सारं वैथी भागै नहीं, रुमाल लपेट के पांय परै है। खाडो बगस जद मेड़ती दीनो, दूदी जमेसर नाव धरै है।
—सेवादास

वैदंग—स. पु.—१ आयुर्वेद, वैद्यक, चिकित्सा।

२ देखो 'वैद्य' (रू. भे)

३ देखो 'वेदग्य' (रू. भे)

वैदगर—१ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

उ०—नाडी निरख भया वैदगर, प्रनत प्रोखदी कीन्हा। सारी धात रसायन करि करि, प्रातम एक न चीन्हा। —प्रनुभववाणी

२ देखो वेदग्य'।

वैदगी—१ देखो 'वैदंग' (रू. भे.)

२ देखो वैद्य' (रू भे.)

३ देखो 'वेदग्य' (रू भे)

वैद—स. पु. [स] १ विद ऋषि के एक पुत्र का नाम।

२ विद ऋषि के वशज।

३ देखो 'वैद्य' (रू भे)

उ०—१ हरीया पीर परापती, तन तैं दई लगाय। वैद बिचारा क्या करै, बिन भुगत्या नही जाय।
—प्रनुभववाणी

उ०—२ ज्योतिषी वैद पोराणिक जोगी, संगीती तारकिक सहि। चारण भाट सुकवि भाखा चित्र, करि एकठा तो प्ररथ कहि।
—वेलि.

उ०—३ वैद किण ही रो प्राख्या री कारी कीधी। प्राख ठीक हुवा वैद बधाई मागै। जद कहै पचा नैं पूछ सू। पंच कह्यो सूझ तो हुवो तो बधाइ देम्। जद वैद बोल्या—तो मैं काइ दीसे है?
—मि. द्र.

वैदक—वि०—जानकार, ज्ञाता।

उ०—व्याकरण वेद वैदक विविध, भला उदर सहुको भरो। धरमसीह रतन बहुंला धरणी, कोई गरब रखै करो। —ध व. ग्रं.

२ देखो 'वैदिक' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्म ग्यान रसायण सुर पुनं वेद तथा जोतिसं, ब्याकरण च ग्रनुरधरं अछनरं मंत्राक्षर वैदक। —रा. रा. सं

३ देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

४ देखो 'वैद्य' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

वैदगी—देखो 'वैदवी' (रू. भे.)

वैदथिन–स. पु. [सं.] विद ऋषि कुलोत्पन्न ऋजिश्वन नामक ग्राचार्य।

वैदरभ, वैदरभ–स. पु. [स वैदर्भ] १ रुक्मणी के पिता का नाम।

२ दमयंती के पिता का नाम।

३ ग्राधुनिक बरार प्रदेश का नाम, विदर्भदेश। (व स)

उ० मलय सिंगल कोसल नइ ग्रंध्य, स्री परवत द्राविड नइ वध्य। वैरोट तापी वाजी धार, स्री वैदरभ पाटल प्रति सार। —नलदवदंतीरास

४ उक्त प्रदेश के राजा भीम का नाम।

वैदरभि, वैदरभी–सं. पु [स. वैदर्भी] १ ग्रगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा के पिता का नाम।

२ विदर्भ नरेश के वशज भार्गव नामक ग्राचार्य का नाम।

३ विदर्भ देशाधिपति भीष्मक की राजकुमारी रुक्मणी का नाम।

४ विदर्भ नरेश की राजकुमारी ग्रौर नल राजा की पत्नी का नाम।

५ कुश नामक राजा की पत्नी एव कुशाम्ब, कुशनाभ ग्रादि की माता का नाम।

६ सगर महाराजा की पत्नी का नाम, जिसके साठ हजार पुत्र कपिल महर्षि की क्रोधाग्नि मे भस्म हुए थे।

७ मलयध्वज की पत्नी का नाम।

८ काव्य रचना की एक प्रकार की शैली विशेष, जिसमें मधुर वर्णों से मधुर रचना की जाती है। यह करुण, शृंगारादि रसो के लिए ग्रधिक उपयुक्त है। (साहित्य)

वि० वि०—लाटी, पाचाली एव गौडी इसके ग्रन्य तीन प्रकार होते हैं।

वैदराज—देखो 'वैद्यराज' (रू. भे.)

उ०—भणत एक व्याकरण, वीर ह्स्ट कै करैं, तरकक नीति सासत्रांणि, एक मुख उच्चरैं। भारत एक सम्ब धात, केळवै रसायण, ग्रगाध वैदराज राज ग्रोलदी विचारण। —गु रू. ब

वैदल–स. पु. [स.] १ पराठा नामक खाद्य पदार्थ २ दाल का ग्रनाज ३ भिखारी के भीख मांगने का पात्र।

वैदही—देखो 'वैदेही' (रू. भे.) (ना. मा)

वैदांणी, वैदांनी—देखो 'वैनाणी' (रू. भे.)

उ० - तीतर लडवा बाटवड, वैदांणी बुगलाह। सबं पखीवरा रह्या, वाह वाह जी वाह। गज-उद्धार

वैदिक–वि० [स.] १ वेदों में वर्णित, वेदोक्त।

उ०—विद्या वेदां में वैदिक विधि वरणी, ग्रपणी करणी सूं ग्रमपार उतरणीं। निरभय नींयता यता नरनारी, करता विस्वंभर भरता सुखकारी। —ऊ. का.

२ वेदोक्त कृत्य करने वाला।

३ वेदो का ज्ञाता, पडित।

४ वेदो का, वेदों से सम्बन्धित।

रू. भे —वैदिक, वेदक, वोदक, वैदक।

वैडूरय, वैडूरयमणि, वैडूरयमणी–स. पु. [स वैडूर्यमणि] १ हरे रग के रत्न।

२ लहसुनिया नामक रत्न विशेष। (व. स.)

रू भे.—वैडूरय, वैडूरयमणि, वैडूरयमणी।

वैदेह–स पु. [स] १ विदेहराज जनक।

२ विदेह का निवासी।

३ वैश्य या व्यापारी।

४ ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न वैश्यपुत्र।

५ महाराजा निमि के पुत्र तथा वशजो के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधनसूचक शब्द।

६ विदेह देश के राजा के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधन सूचक शब्द।

वैदेहरात–सं. पु [स.] एक प्राचीन ऋषिगण जो विश्वामित्र के कुल से उत्पन्न हुए थे।

वैदेही–स स्त्री. [स.] १ विदेह राजा जनक की कन्या सीता, जानकी।

२ जनमेजय पुत्र शतानीक को पत्नी का नाम।

३ विदेह कुलोत्पन्न।

४ पिप्पली। (ग्र. मा)

रू भे.—वैदई, वैदही।

वैद्य–वि. [स] १ वेद का, वेद सम्बन्धी।

२ ग्रौषधि का, चिकित्सा सम्बन्धी।

३ चिकित्सा करने वाला, चिकित्सक।

स. पु [स. वैद्य] १ ग्रायुर्वेद का ज्ञाता एव उसी के ग्रनुसार चिकित्सा करने वाला व्यक्ति, ग्रायुर्वेदाचार्य।

उ०—१ जद स्वामीजी बोल्या कोइ नै ग्रांख्यां न सूझै तिण पूछयो सहर मे नागा किता ग्रनै ढकिया किता? जद वैद्य बोल्यो —ग्रांख्या मैं ग्रोखध घाल नै सूझतो तौ हूं कर देऊ ग्रनै नागा ढकिया तूं देखलै। —भि द्र.

उ० - २ हकीम वैद्य सरब पचि हारया, दीनी बहुत दवाई। जांण ग्रसाध्य व्याध जगदबा, ग्रंबा वासं ग्राई। —मे. म.

२ विद्वान, शास्त्राचार्य।

३ वैद्य नामक जाति का व्यक्ति जो वैश्य माता, व ब्राह्मण पिता के संसर्ग से उत्पन्न होता है।

४ सब विद्याओं का ज्ञाता, विष्णु भगवान्।

५ तुल देवों में से एक।

६ वरुण एवं सुनादेवी के पुत्र का नाम, जो घृणि एव मुनि का पिता था।

रू. भे.—वेद, बंद, वइदउं, वयद, वेज्ज, वैदंग, वेदगर, वैदगी. वैद, वैदक, वैद्यक।

अल्पा.,—वैदियौ।

वैद्यक–स. पु.—१ रोगों के निदान एवं चिकित्सा आदि के विवेचन का शास्त्र।

२ पुरुष की ७२ कलाओं मे से एक। (व स.)

३ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

४ देखो 'वेदग्य' (रू भे)

उ०—व्यापारी सहू वांणिआ, जोसी वैद्यक व्यास। मागण पणि मिलिया वह, सहू नी पूगइ आस। —मा का प्र.

रू. भे.—वेदक, वैदई, वंदक, वैदणी, वैदिक, वंदक, वैद्यग, वैद्यिक।

वैद्यकक्रिया–स स्त्री.—स्त्रियो की ६४ कलाओं में से एक कला का नाम। (व. स.)

वैद्यग–सं प —१ अंगिरसकुलोत्पन्न एक मन्त्रकार।

२ देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

३ देखो 'वेदग्य' (रू. भे.)

वैद्यगी–सं. पु —वैद्य का कार्य, चिकित्सा।

रू. भे. --वेदगी, वेदगी, वैदगी।

वैद्यनाथ–स पु [सं.] १ बगाल का एक प्रसिद्ध तीर्थ।

२ मण्डोर का एक प्रसिद्ध स्थान।

३ धन्वन्तरि।

४ शिव, महादेव का एक अवतार जो चिताभूमि में से रावण की प्रार्थना पर हुआ था।

५ महादेव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक।

रू. भे.—वैजनाथ, वेजनाथ, वेधनाथ।

वैद्यराज–सं. पु. [स.] वह वैद्य जो चिकित्सा करने में अति दक्ष हो।

रू. भे.—वइदराज, वईदराज, वेदराज, वैदराज।

वैद्यिक—देखो 'वैद्यक' (रू. भे.)

उ०—वैद्यिक ज्योतिस निमित्त नै ए, भाखै परिग्रह कै काज कै। जिकै तज निकल्या ए, धन मोटा मुनिराज कै। —जयवांणी

वैधुतगिर, वैधुतगिरि–स. पु. [सं. वैधुतगिरि] एक पर्वत का नाम। (पुराण)

वैध्रभा, वैद्रभा—देखो 'विदरभा' (रू. भे.)

उ०—१ कांई भूला भमई गज वाटन रे, वाटन रे वळती न लहई वैद्रभा रे। डोली वाल्या दोएव आवइ रे, कांइ पावइ रे कोई कुबधी आपएव रे। —रुकमणी मंगळ

उ०—२ वेग वाल्या हथ रे रे, रथ सूं रथ बांध्यौ रळी। गय घाट मोगर वहइ उवट वैद्रवा थई वेगळी। —रुकमणी मंगळ

वैध—देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

वैधनाथ—देखो 'वैद्यनाथ' (रू. भे)

वैधव, वैधव्य–सं. पु. [सं. वैधव्य] विधवा होने की अवस्था, विधवापन

रू. भे—वैधव।

वैधस–स. पु. [स] वेधस के वंशज हरिश्चन्द्र का एक नाम।

वैधी–स. पु. [सं. वैधिन] दुश्मन, शत्रु। (अ. मा.)

वैधीकरण–स पु.—कुंती पुत्र अर्जुन। (अ. मा.)

वैधौ—देखो वेदौ' (रू भे.)

वैध्रत, वैध्रति, वैध्रती वैध्रित, वैध्रिति, वैध्रिती–स- पु. [सं. वैधृति]

१ फलित ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से सत्ताईसवें योग का नाम जिसमें शुभ कार्य करना निषिद्ध है।

उ०—व्यतीपात वैध्रति वली, सूरिजनी सक्रांति। ब्राह्मण हुंतु ब्राह्मणी, नवि आवइ अेकाति। —मा. कां. प्र.

२ तामस मन्वन्तर का देवगण या देवगणों की माता।

३ धर्मसावर्णि मन्वन्तर के धर्मसेतु नामक अवतार की माता।

४ ग्यारवें मन्वन्तर धर्मसावर्णि के इन्द्र का एक नाम।

५ विधृति के पुत्रों का सामूहिक नाम।

वैन–सं. पु. [सं.] व्यास की सामशिष्य परम्परा के अन्तर्गत शृंगी पुत्र नामक आचार्य का शिष्य।

२ देखो 'बहन' (रू. भे)

उ०—१ अरु वैन अेक रिडमल री तिकी पाटण तवरां नूं परणायी ही। सू आ विधवा हुई, तद इणनूं खंडेले लाया। पीछे रावजी खडेलो लूटियो। तद इण आणकवर नूं पकड़ी अरु रावजी सीशीकंजी आपरी ठकराणी करी नै वैल वेसांणी। —द. दा.

उ०—२ जी साहिबा छोटी ननद थांकी वैन, बाईसा कर मानती जी म्हांरा राज। जी साहिबा थांने लगाई अत्ती देर किसूर म्हारी नायजी म्हारा रा'ज। —गणगोर रो गीत

३ देखो 'वचन' (रू. भे.)

उ०—थर हर कपै नेडी थकां रे अलगा पावै चैन। चोरां री कुणसी चले रे, न मांने माइता रा वैन —जयवांणी

वैनड़—देखो 'बहन' (मह., रू. भे.)

उ०—१ हरसा भाई म्हारा रे, वैनड़ भाई रो माढो नेह। —सीळमाता रो गीत

उ०—२ जीण मेरी बाई यें ऊंची सो बालूं ये थानें बैनगूं, बैनड़ बाई बीमा साथ। बामण की ये बाई, विच बिच बदळां ये बाल्हा गासिया। —जीणमाता री गीत

वैनकुली, वैनड़ी—देखो 'बहन' (श्रल्पा., रू. भे.)

उ०—हूं तो जीमण बैठ' र हेलो जी मारूं, श्राय परोसे म्हांरी बैनडी, घोरे रै श्रांगण श्राबो मोरियो। —लो गी.

वैनतीय वैनतेय वैनतेय—स. पु. [सं. वैनतेय] विनता का पुत्र, पक्षी-राज गरुड़। (श्र. मा., ना. मा.)

उ०—१ लेवनी ठेकाण श्राजी सेस धू पयाळ लाबी, वैनतेय जसें वेग वर्णे न विचार। कामनी मपूनी लीधा कोळमुख क्रीत काज, श्रोपें करा ग्ररापरी बुध रो श्राचार। —बादरदान दधवाड़ियो

उ०—२ तोयधी मंनिद्र पांगा वर्च व्याळ वैनतेय, दूठ श्रद्र वर्च वांण जुधांग दधीच। बकथा सभा बा बाधा वद रायासाम बीजै, बीर खागां खाधा जेन लाधा भीम बीच। —हुकमीचंद खिड़ियो

१ गरुड़ की प्रमुख सन्तानों में से एक सन्तान का नाम।

रू. भे.—वैनतीय, वैनतेय।

वैनहोत, वैनहोतर, वैनहोत्र—स पु. [स वैनहोत्र] १ वीतिहोत्र नामक राजा का नामान्तर जो धृष्टकेतु राजा का पुत्र था।

वैनांणी—१ देखो 'विनांणी' (रू भे)

२ देखो 'वैनांणी' (रू. भे.)

वैनायकीविद्याग्यान—स. पु. [स] वैनायिकीविद्याज्ञान] स्त्रियों की ६४ कलाओं में से एक।

वैनासिक—सं. पु. [सं. वैनाशिक] १ जन्म नक्षत्र से तेरहवां नक्षत्र। (फलित ज्योतिष)

२ जन्म नक्षत्र से सातवां, दसवां एवं अठाहरवां नक्षत्र।

वि० वि०—उक्त तीनों नक्षत्र श्रशुभ माने जाते है। इन्हें निधन-तारा भी कहते हैं। इन मे यात्रा एवं शुभ कार्य नहीं किये जाते हैं।

वैनीत—१ देखो 'वेनीत' (रू. भे.)

उ०—कळह हुनो वळ वेल सू वैनीत वधारी, जाद कहू वायक जोर रा फुरमास न धारी। लिया बळधह जाटदा तद कीध तयारी, जांन चढंता जोईया बाजा बजवारी। —वी. मा,

२ देखो 'विनीत' (रू भे)

वैनु—देखो 'वेनु' (रू. भे.)

वैनोई—देखो 'बहनोई' (रू भे.)

वैन्य—सं. पु. [सं.] १ भृगुकुलोत्पन्न एक मन्त्रकार का नाम।

२ राजा पृथु का नामान्तर।

३ राजर्षि पृथि का नाम।

४ राजर्षि पृथी का नाम।

५ अत्रि ऋषि का नाम।

वैपस्चित—सं. पु. [स. वैपश्चित] विपश्चित ऋषि कुलोत्पन्न ताक्ष्यं नामक ऋषि का नाम।

वैपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे)

उ०—१ पर घरनी श्रासि, कठ विहूंणी रासि, अवसर विना भास, कुकुळ नो दास। फूस नी श्राग जमाई नो भाग, काबो नाग, पांणी नो साग गधेड़ा नो तेज दुरजन नो हेज। उधारा नो वैपार, रांड ना सिणगार। पावइयानो प्यार। रा. सा. सं

उ०—२ उर भुकमा श्रसपत्त सूं तुकमा लेवण त्यार। पाछा करण 'प्रताप' ज्यूं, वेढ श्रपत वैपार। —किसोरदान बारहठ

वैपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे)

उ०—दुनिया सारी कैवं के पुलिस बेईमान है, म्हू पूछूं के श्राज रै जमाना में कुण बेईमान नी है? ए ब्लेक करणिया वैपारी, ए रिस्वतां ठोकणिया मोटा-मोटा अफसर, ए ठेका परमिट देवणिया नेता, सगळाइ तो म्हारा भाईबद है। पछै म्हांनै इज क्यूं बदनाम किया जावै? —श्रमर चूंनड़ी

वैपुर—स. पु.—गगन, आकाश। (ना. डिं. को)

वैफुल, वैफुली—देखो 'बहुफुली' (रू. भे)

उ०—पोहु पसें सेवंत्री पाडला, जोल बणी गुलजार। वैफुल वाड़ी ऊपरें, रहिया भंवर गजार। —पना

वैभव—सं. पु. [सं] १ विभव, ऐश्वर्य।

उ०—चळ वैभव, सपत सुचळ, चळ जोबण, चळ देह। चलाचली के खेल मे, भलाभली कर लेह। —अग्यात

२ धन, दौलत, सम्पति, द्रव्य।

उ०—प्रभ्रिनि इद्र प्रताप पाक पिंड तेज प्रभा-कर। क्रोध जम्म वैभव कुमेर, दिढ मेर गिरव्वर। —गु. रू. बं.

३ बहुतायत, आधिक्य।

४ महिमा महत्व।

५ सामर्थ्य, शक्ति।

६ कार्य, धन्धा, व्यवसाय।

रू भे.—वभो, विभो, विभव विभौ, वेभव, वैभव, भैभौ, विभ, विभव, विभाव, विभौ, विहव, वीभव, भीभौ, वेभू, वेभव।

वैभवता—सं पु. [सं. वैभव+ता प्र.] वैभव होने की अवस्था या भाव।

रू भे.—विभवता, वीभवता।

वैभववान—वि० [सं वैभव+वान्] १ विभववान्, ऐश्वर्यवान।

२ धनवान्, सम्पत्ति वाला, दौलत वाला।

३ महत्वपूर्ण, महिमा वाला।

४ व्यवसायी।

५ सामर्थ्यवान, शक्तिशाली।

रू. भे.—विभववांन, वीभववान।

बैंभोडक, बैंभोडुकि, बैंभोडिक-स. पु. [स] पूर्णभद्र नामक आचार्य जो गोत्र प्रवर्तक भी कहे जाते हैं।

बैंभवसाळी, बैंभवसाली-वि० [स. वैभवशाली] १ वैभववान, ऐश्वर्यवान।

२ जिसके पास अत्यधिक धन-दौलत हो।

रू. भे.—विभवसाळी, विभवसाली, वीभवसाळी, वीभवसाली।

बैंभाखरा—देखो 'विभीसरा' (रू भे)

उ०—उवै वार वभीखरा चालि आयौ, लखं तैं हणूमान पाधा लगायौ। प्रणामेस बैंभाखरा भूप येनूं, जपं आव लंकेस स्रीराम जेनूं। —सू. प्र.

बैंभार-सं. पु.—वैहार नामक पर्वत जो राजगृह के पास स्थित है।

उ०—जिन आदेस लेइ करी जी, चढिया मुनि गिरि बैंभार। सिल ऊपरी जइ करी जी, दोय मुनि अणसण लीधउ सार। —स. कु.

रू. भे —वैहार।

बैंभीखण—देखो 'विभीसण' (रू. भे)

बैंभीत—१ देखो 'भैभीत, (रू. भे.)

२ देखो 'भयभीत' (रू. भे.)

बैंभीसण, बैंभीसणि, बैंभीसणी-स. पु. [स. वैभीषणि] १ मणि कुंडल नामक वैश्य को शाप मुक्त करने वाला विभीषण का पुत्र।

२ देखो 'विभीसण' (रू. भे)

बैंभोज-स पु. [सं] द्रह्यु के वंशज एक प्राचीन जाति।

बैंभ्राज=स. पु. [स] १ सुमेरू पर्वत के पश्चिम मे स्थित सुपार्श्व नामक पर्वत पर स्थित एक जंगल का नाम। (पुराण)

२ पांचालनरेश का नाम जो ब्रह्मदत्त का पिता था।

३ एक लोक विशेष का नाम।

बैं'म, बैंम-स पु.—१ सम्बन्ध, लगाव, गरज।

उ०—वूढी भोळी डोकरघा नैं आपरा बेटा बेगा सा छुडा त्यावण रा वसतो धमड दिखाळै है। भुवांळी खावतो फिरै। घर-घर गेडा काटै। मिनखां मैं रिरावै, लोलडी काढै। गव्हाया री गरज करै, वकीलां सूं बेम राखे। —दसदोख

२ देखो 'वहम' (रू. भे.)

उ०—१ पटवारी है क, तँसीलदार ? किसनजी की कूंत नी सक्यौ। सोखीनाई अर खरच-वरच री चीजां-वसतुवा सूं खूब राजी हुयौ। बूढापै हाला भोळपा माथै बैं'म ही नी गयौ। ओसध्या ही तीस-पैंतीस ताई री अकल मैं आई। —दसदोख

उ०—२ एकर री वात, राजी रै जापै मैं पौन-हवा निकळगी। बावळी वडा करण लागगी। गुग विखेरै अर तत्ता-पत्ता सूं ढूही वाता करै। जकै सू घर हाला नै भूतणी री बैं'म वड गयौ है ? —दसदोख

उ०—३ पण राजी तो दबटी पड़ी ही टीलो मारै। जकै सूं सै भूतणी री बैं'म करै है. सनीपात नै कुण समझै? कोई जिद बतावै, कोई चूडावण री नाव लेवै है। कोई ओपरी छाया कढावण री उतावळ करै, कोई पलीत नै पाणी ढुलावणी बतावै। —दसदोख

उ०—४ उदास मन सूं वानैं कियाई ठिरड़ती-ठिरड़ती मोटर में आय नैं बैठ्यो तो बैठतां पाण एक जोर रा हचीड़ा सागै वा स्टारट व्हैगी। जाणै वणनैं बैं'म हौ कै म्हूं आळांणो नीं कर दूं अर पाछौ रवांनैं नीं व्हे जाऊं। —अमर-चूंनडी

बैंमनस्य-स पु. [स] १ बैर, दुस्मनी, शत्रुता।

२ मानसिक शीथलता, उदासी।

बैंमर—देखो 'विवर' (रू. भे)

उ०—तेणा समै आप रा धणी री कही हकीकत धारि, सूरत उठायै, सूरत नीचै बैंमर थो, तठै होय नै घर वीसी चाली। —कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

बैंमांणिक—देखो 'बैंमानिक' (रू. भे.)

बैंमांणिकदेव—देखो 'बैंमानिकदेव' (रू भे.)

बैंमांणी, बैंमांणीक, बैंमांणीय, बैंमानिक-वि० [सं. वैमानिक] १ विमान सम्बन्धी, विमान का।

२ आकाश पे विचरण करने वाला।

सं. पु —१ हवाईजहाज पर सवार होने वाला।

२ हवाईजहाज चलाने वाला।

३ एक प्राचीन तीर्थ जहाँ स्नान करने मे स्वर्गलोक प्राप्त होता है तथा वह विमानों मे चाहे वहीं घूम सकता है।

४ देखो 'बैंमानिकदेव' (रू. भे.)

उ०—पचेंद्रि तिरजंच नैं मानव, एह थया इकवीस जी। बितर जोतिसी नैं बैंमानिक इम दडक चोवीस जी। —ध व. ग्र.

रू. भे.—विमांणिक, विमांणी, विमांणीक, विमांणीय, विमानिक, वेमांणिक, वेमांणिय, वेमांणी, वेमांणीक, वेमांणीय, वेमानिक, वैमांणिक।

बैंमानिकदेव-सं. पु. [सं. वैमानिकदेव] स्वच्छ, निर्मल एवं रत्नजड़ित विमानो में विचरण करने वाले देव। (जैन)

उ०—ति चउरिंद्री गरभज थली, नर तिरयंच कह्या केवली। भवण जोतिख बैंमानिकदेव, चउवीस दडक ए नित मेव। —सं. कु.

वि० वि०—ये देव दो प्रकार के होते हैं—(१) कल्पोपपन्न देव:—

वे देव जिनमें छोटे-बड़े आदि का व्यवहार होता है। ये बारह प्रकार के होते हैं।

(२) कल्पातीत देव—वे देव जो अहमिंद्र होते हैं अर्थात जिनमे छोटे-बड़े आदि का भाव या व्यवहार नही होता है। इनके दो भेद हैं।

१ ग्रैवेयक एव २ अनुत्तरोपपातिक।

लोक पुरुषाकार है जो चौदह राजू परिमाण है। नीचे तेहरवें राजू का काफी हिस्सा छोड़ कर ऊपर के हिस्से में ग्रीवा के स्थान में रहने वाले देव ग्रैवेयक देव कहलाते हैं। जो नौ प्रकार के होते हैं। जिन देवों की स्थिति, प्रभाव, सुख,द्युति (कांति), लेश्या आदि अनुत्तर प्रधान है या स्थिति, प्रभाव आदि मे जिन से बढ़कर कोई दूसरे देव नही है वे अनुत्तरोपपातिक देव कहलाते हैं। ये देव पांच प्रकार के होते हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर छब्बीस प्रकार के वैमानिक देव होते हैं।

रू. भे.—विमाणिकदेव, विमानिकदेव, वैमाणिकदेव।

वैंमाता, वैमाता—देखो 'वेमाता' (रू. भे.)

वैमार—देखो बीमार' (रू भे.)

उ०—सु जैत प्रभात री सिकार चढियौ हुंतौ। वैसाख जेठ रै लूवा रा दिन हुंता। सु जैत ताहरा ही ज सिकार रम नै लू री झकोळियौ थकौ घणौ तावडै सौ वैमार थकौ आय नै खसखानै माहै आय पोढियौ। सु खसखानै बाहरा धणीरो छडकाव कीयौ।

—जैतमाल पुमार री वात

वैमित्रा, वैमित्रा-स. पु [सं. वैमित्रा] १ स्कन्द की अनुचरी एक मातृका का नाम। २ सात शिशु माताओं मे से एक।

वैंमी, वैमी—देखो 'वहमी' (रू भे)

वैमुख—देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—गोतम सुता तास सुत नागर, धीरज सुविता ध्यावै। प्रभु वैमुख जिणरो रिपु प्राणी, ताह न कदे सतावै। —र. रू.

वैमृग, वैम्रिग—स. पु. [स. वैमृग] कश्यप एव दनु का एक पुत्र दानव।

वैयकी—देखो 'वैयकी' (रू. भे.)

वैयमक-स. पु [स.] एक प्राचीन जाति।

वैयर—१ देखो 'वैर' (रू. भे)

२ देखो 'वैर' (रू. भे)

वैयस्व-सं. पु. [सं. वैयश्व] व्यश्व का वशज विश्वमनस् नामक एक आचार्य।

वैयाअपच-सं पु. [सं.] युधिष्ठर द्वारा अज्ञातवास काल में धारित नाम।

वैयाथिक-स. पु. [स.] १ दर्शन सिद्धान्त। (बौद्ध)

२ सर्वश्रेष्ठ एव धार्मिक कर्मों मे विघ्नकर्त्ता एक क्रूर देव।

वैयार—देखो 'व्यवहार' (रू भे.)

उ०—लियौ जनम नर ससार, लागौ जगत वैयार। वै नर किसा हरि सूं कोल, भूलौ प्रभ का सब बोल। —ऊदोजी नैण

वैयालिस, वैयालीस—देखो 'बयाळीस' (रू. भे.)

वैयावच, वैयावच्च, वैयावत, वैयावृत्य-स. पु. [स. वैयावृत्य] एक प्रकार का व्रत या तप विशेष जिसमे आचार्य आदि बडे एव आदरणीय पुरुषों की दस प्रकार से सेवा की जाती है। (जैन)

वि० वि०—उक्त व्रत या तप मे आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, गलानी (रोगी), तपस्वी, स्थविर, स्वधर्मी, कुल (गुरु भ्राता), गण (सम्प्रदाय के साधु) और सघ (तीर्थ) को आहार, वस्त्र, पात्र, औषधोपचार आदि दिये जाते हैं तथा पाद, पीठादि की चम्पी की जाती है।

रू. भे.—वेयावच, वेयावच्च।

वैंयोड़ी, वैयोड़ी—१ देखो 'वहियोडौ' (रू भे.)

२ देखो 'व्होयोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री वैंयोडी, वैयोडी)

वैयौ देखो 'वइयौ' (रू भे.)

वैरंग, वैरंगौ—१ देखो 'विरग' (रू. भे.)

उ०—अख मुहणौ करतै भु अतर, वनचर ऊसर थया वैरग। निस दिन अरज करै निसासै, सस आगळ ऊभौ सारंग। —रूघो मुहतौ

२ देखो 'बेरंग' (रू. भे.)

वैरदेय-स पु. [स] एक गोत्रकार प्राचीन ऋषि।

वैर-स. पु [स. वैर] १ प्रतिकार, बदला।

उ०—१ तठा उपराति करि ने राजान सिलांमति इणि भात सूं राजान री वात मगने अजमेर रै थाणै री हकीकत साभळने आदि वैर उगराह न असुराण तत्काळ रा टळ राजान ऊपरै विदा हुआ सो किण भात रा कहीजै छै। —रा. सा. स.

उ०—२ तरै रैबारिया कही, 'साहिबो कुंवरसी साखलै री छै। तिण कहो, म्हारो रजपूत था पटह मे मारियो। तैरै वैरमे लै आवा छा, अर थानू मारा छा।' तद अै मोटियार था, सताबी खड कोसा पाचा-साता आय पोहता। —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—३ एक वार घणा सूरा रा चाकरा री खाज मेटा। कण करण करा। चकचाळा करि कांमणी मेटा। कीति लबारां। आमलां जाळ घर महाजोधार गरिवा रा वैर कळिया काढां। भसमासुर रा विरोध माहै इद्रादिक देवता वाढा। —मा. वचनिका

उ०—४ केसरीसिघ अचळदासोत। संमत १६६० डाभड़ी ओईसां री पटै। सुंदरदास रै वैर मोडां मारियो। सु दरदास सुरतांणोत।

जोधपुर मेवरी पटै। पछै जवेरा री सांढां सोढं ली, नठै वाहर आपड सोढां सूं वेढ हुई, काम आयो। —नैणसी

२ शत्रुता, दुश्मनी, विरोध।

उ०—१ गांम मे उणा री श्रो ढंग हो कै नीं किणी सूं दोस्ती श्रर नी किणी सूं बैर। मारण आवणो श्रर मारत जावणो। लडो खाणी न कोई पड़ी उठावणी। पोता री मौज में मस्त रैवणो। —अमरचूनड़ी

उ०—२ हठियो सिर हिंदुवां, श्राड मेलै खूमाणा, ग्रादि बैर समरै, सरस दिल्ली सुरतांणा, राजा सूरजसिंघ, जोध गजसिंह अमज्जड, किसनसिंघ करमेत, 'करत' जंपैल महाभड। —गु. रू. ब.

उ०—३ नौ जोडी तीन सोनै रा, चोकडो एक मोतिया री, सोनै रा हथियार श्रादमिया कुंवरसी कनै राखिया। तद कुंवर कह्यो, केई तो सिरदार था, बैर तो वडो पडियो। इव जांणा हा, तठो पूठो कर वाकी रा काहि नु जावण देवा हा वात पण नीवडो। —कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—४ ताहरा नरसघ सोधळां रै पण नाळेर पकडियो श्रर कहियो, 'दिन ५ तथा ६ माहे साहो मेलजो तो श्रासा, नहीं तो म्हाहरै काम छै। म्हारै माथै बैर छै।' ताहरां सीधळा पण तुरत साहो दीनो। —राजा नरसिंघ री वात

क्रि. प्र.—उगराणो, उगराहणो, करणो, घातणो, पडणो, बाधणो, मागणो, लैणो, वाळणो, होणो।

३ फसल। (डूंगरपुर-भील)

४ शत्रु, दुश्मन।

५ देखो 'बैर' (रू. भे.)

उ०—१ जनावरा ने कैरै नांव घालो छो मु कहो। ताहरा कवर कही बरां ना नाव कहीजै नही। ताहरा राणी कही तो हू थाहरी श्ररघ सरीरी किसी विध छूं श्रर मैं थारै पण रालस नै मरायो श्ररथै मना साच कहो नही तो थांहरै प्यार किसो। —चोबोली

उ०—२ रह्यो तै माहै माळियै वाळो घर श्रडाणो मारियो। मार श्रर मरब चुकाय दीया। पण देवाळो काढियो नही। बैरां रै कपडो गहणां सुधी सरव चुकाय दीयो। श्राप पुराणै घरै जाय रह्यो। हमै परची जेही वाणोत पासा मागै, मु दम रुपिया रै काम श्रावै। —ठकुरै साह री वात

रू. भे.—बइग्रर, बइयर, बइर, बईग्रर, बईयर, बईर, बयर, बेर, बैयर, बइग्रर, बइयर, बइर, बहरि, बहरी, बईग्रर, वईयर, वईर, वयर, वेर, वैरता।

अल्पा.,—बैरडो।

मह,—बेरो।

बैरक, बैरक्क, बैरख—स. पु. [सं. वेर., वेरम्] १ शरीर, बदन।

२ हाथी, हस्ती। (प्र. मा.)

३ बैरी, शत्रु, दुश्मन।

४ देखो 'बेरक' (रू. भे.)

उ०—पांना मुख वाजिन्न हिलै वाना बैरक्कां, मेघ रता मातग बीड ऊडग कटक्कां। पलो जेम साबळां हिली फौजा घमसाणा, व्योम रजी बिरधरी घमस वजी केकांणा। —रा. रू.

रू. भे.—बेरक, बेरक।

बैरडो—देखो 'बैर' (अल्पा., रू भे.)

बैरड़ो—१ दोगला, वर्णसंकर।

२ बैर का बदला लेने वाला।

उ०—रायसिंघ तिण पाट रहै सेवै तुरकांणो, लाखणसी श्रर छाड हुवो नाहूलो राणो। सेवा कीध सकत, वधे बरदांन वडाई। व्यातो गढ वधनोर, हुवो मवाड चहुं भाई। बहुवाण वस रूपक बडो, गावा गजनै बैरड़ो। वरदान श्रास लीधौ वहै, खुरासाण ऊपर खडो। —मालो श्रासियो

३ देखो 'बैर' (अल्पा., रू भे.)

४ देखो 'बैरडो' (रू. भे)

बैरण, बैरणि, बैरणी—शत्रु, दुश्मन, वैरी। (स्त्री)

उ०—१ पवन तूं बैरण, धीमी धीमी चाल, उडती दीसै भवरजी री पामडो। कोयल बैरण, मधरी मधरी बोल, ज्यूं चित आवै भवरजी नै गोरडी। —लो. गी.

उ०—२ कोयल श्रे कोयल बैरण, पिहु-पिहु बोल, तू श्रे बैरण, पिहु-पिहु बोल, चढती बाई नै यै सबद सुणाइयो। —लो. गी.

उ०—३ लाभ लेइजै लोयणा, मजन रातै सवरी। उलसै देखण न हीयो, बैरण लाज बुरी। —पनां

उ०—४ ससनेही सज्जण मिल्या रयण रही रस लाइ। बिहू पहूरै चटकड किवड, बैरणि गई बिहाइ। —ढो. मा.

उ०—५ नारी बैरणि पुरुष की, पुरुषा वैरी नारि। ग्रतकाळ दोनौं मुयै दादू देखि विचारि। —दादूबांणी

उ०—६ निहि अहारी बैरणी, पेला भवनी होय। सज्जल-सिउ सुख माणीह, निलवटि निलख्या जोय। —मा. कां. प्र.

रू. भे.—बैरिण, वैरिणि, वैरिणी।

बैरणो, बैरबो—देखो 'बैरणो, बैरबो' (रू. भे.)

उ०—आपरो पौरस सोह वाजणा रो नही—हाथळ (भुजा रा) जोर सूं हाथीया नै भाजे अरथात जिका री तरवार सूं हाथियां रा भसुंड (सोस) बैरीजै वे भड़ सिंघ बाजै। —बी. स. टी.

वैरणहार, हारौ (हारी), वैरणियौ—वि० ।
वैरिणोड़ो, वैरियोड़ो, वैरयोड़ो—भू० का० कृ० ।
वैरीजणौ, वैरीजबौ—कर्म वा० ।

वैरत-स. पु [स] एक प्राचीन जाति । (पुराण)

वैरता—देखो 'वैर' (रू भे.)

उ०—१ नहीं हिंदू सूं वैरता, नहीं मुसलमांन सूं प्रीति । सब कुछ करि सब तें अगम, या साहिब की रीति । —ह. पु. वा.

उ०—२ ना काहू सू वैरता, मोहन बाधे साध । जन हरिदास आठौं पहर, भजिए राम अगाध । —ह. पु. वा.

उ०—३ तामस गुण रस वैरता, राजस रस अभिमान । स्वातिग रस गुण लुड़खड़ी, तहा जीव तोड़ै तान । —ह. पु वा.

वैरदेव-स. पु. [स.] वैदिक काल का एक असुर ।

वैरभाव-स. पु.—मनमुटाव, विरोधाभाव, शत्रुता, वैमनस्यता ।
रू. भे.—बैरभाव ।

वैरभावना-सं स्त्री.—मनमुटाव, विरोधभाव, वैमनस्यता, शत्रुता ।
रू. भे.—बैरभावना ।

वैरवाद—स पु.—विरोध, शत्रुता ।

उ०—ताहरा कह्यौ—मांहरै घोडौ सखरो कोई हुतौ नहीं, तिकण पगा मांग लियौ छै । तै आगे ऊमरकोट सोढां रै बडा-बडा घोडा छै । तै भाभैजी कना मांग लियौ छै । ताहरा कह्यौ—इतरै ऊटे सिलह क्यु छै ? ताहरां कहियौ—म्हारै वैरवाद छै । राजा छा, सार्थ सिलह चाहीजै हीज , —नैणसी

वैर वृत्रासुर-सं. पु. [स. वृत्रासुर वैरी] वृत्रासुर राक्षस का दुश्मन, देवराज इन्द्र । (ना. डिं को)

वैरस-वि०—बिना रस का, नीरस, सारहीन ।

वैरसुध-स. स्त्री —बदला, प्रतिकार ।
रू. भे.—बैरसुध ।

वैरहर, वैरहरण, वैरहरि-स पु —शत्रु का वशज, शत्रु । (अ मा , ह ना , मा.)

उ०—१ सरणाई चरण वखांणै, सरणै, मन जोगी जेहा अमर । 'रामा' बदन बखाणै रामा, हात वखांणै वैरहर । —पदमा सादू

उ०—२ दौढ बरस लग रहिया दोळा, रोळा कर कर थाका रहू । चकर अदीठ 'विजै' चक्रवत रा, वैरहरां ऊपरा वहै । —ऊमेदसिंह सादू

उ०—३ सिर संपत सग्रहै निहसै नित अत, करिमर नीप सहीयै करि । रेवत पूठि वसै जइ रणमल, वास म गिण तई वैरहरि । —राव रिड़मल रौ गीत

वि०—शत्रुता मिटाने वाला, दुश्मनी खत्म करन वाला ।

रू. भे.—बेरहर, बैरहर, बैरहरण, बैरीहर, वेरहर, वेरहरि, वैरीहर ।

वैरागर—देखो 'वैरागर' (रू भे)

वैराण, वैरान—१ देखो 'वीराण' (रू. भे)
२ देखो 'वीरान' (रू. भे.)

उ०—१ अरु जिण दिना मैं साखलौ नापौ चीतोड़ सूं जागळ आयौ, सूं औ पण जोधपुर हाजर है । पीछै इण बीकैजी नूं कयौ कै जगाळू रौ पडगनौ वैरान हुय रयौ है , सू थैं हालौ तौ ठिकांणौ बाधा । —द. दा.

उ०—२ औ भरथनेर भरथजी दसरथजी रै बटा वसायौ कदीम छै । नै कई वार वैरान हुवौ अरु कई वार आबाद हुवौ । पण हुजार वरस री वात है । जोइयां इणनू आबाद कियौ । पण आपस रै अमरचै मैं वळै वैरान कियौ । —द. दा.

वैराम-स. स्त्री. [स. वैराम] एक प्राचीन जाति ।

वैराई—देखो 'बैराई' (रू. भे.)

उ०—१ कसि वांक वाळा काढि, वैराईयां सिर वाढि । हैकंप भौ महलार, त्या दीध द्रव्य तोखार । —रा. रू

उ०—२ वाहरुवा हुए न को वैराई, घण वहम केकाणां घुपा । पोह फूटत सभी दे परभूय, 'सलख' लिया ताय सलख हुआ । —राव सलखा रौ गीत

वैराक-स पु —एक प्रकार का बढ़िया शराब जो चौथी बार निकाला हुआ तथा तेज होता है ।

उ०—१ तठा उपरांति करिनै राजान सिलांमति दारू रौ पाणीगो मडिग्रो छै । सो किण भांति रौ दारू । उलटै रो पलटै, पलटै रो अैराक, अैराक रो वैराक, वैराक रो सदली, सदली रो कदली, कदली रो कहर, कहर रो जहर, जहर रो कटाव, कटाव रो नेस, नेस रो जस, जस रो मोद मोद रो कमोद, कमोद, रो हूल । —रा. सा स.

उ०—२ तठा उपरायत दारू रा घड़ा मगायजै छै । सू दारू किण भात रो छै ? अैराक रो वैराक सदली रौ कदली फूल रो अतर बाती बळै धुवाधोर निवारा रो काढियौ, ओदी बाड मैं नाखिया जग उठै । बाप रौ पियौ बेटौ छिकै, असवार रौ पियौ प्यादौ छिकै । राजा पीवै परजा छिकै । —रा. सा. स.

वैराग—देखो वैराग्य' (रू भे.)

उ०—पछै थोड़ा दिना पछै नायजी दुवारै मैं खेतसीजी स्वामी घणा वैराग सूं घणा महोच्छव सू रगूजी नै खेतसीजी स्वामी एक दिन दिक्षा लीधी । जिन मारग रो उद्योत घणो थयो । —भि. द्र

उ०—२ ठाकुर जी रौ औ परसाद नी देणौ संता रै हाथ हो । नौ मिंदर रा ठाकुरजी नै छोड सोधौ सता रै जाय पगा पड़ियौ ।

कहयो-बापजी, म्हूनें तौ वैराग सूझियौ। म्हारी मुगती अबै आप रै हाथ है। म्हारै हीयै अणचींत्यौ वैराग री गोटौ ऊठियौ-अबै आपरै सरणै हू। —फुलवाड़ी

उ०—३ बिरह न को वैराग सा, रव सा ना कोई रंग। हरख न सा हासा नही, सत सा ना कोई सग। —अनुभववांणी

वैरागड—देखो 'वैरागर'।

उ०—सिरदार बनाजी, हीरा थे लाईज्यौ हे वैरागड देस रा, उमराव बनाजी, मोती थै लाईज्यौ हे समदर पार रा, सिरदार बनाजी, सेवरियै झबूकै ज्यौ आभा बीजळी। —लो. गी

वैरागण-सं. स्त्री.—१ वैरागी स्त्री।

उ०—१ अपणा गिरधर कारणै, मीरां वैरागण हो गई रे। —मीरां

उ०—२ दोउ कुळ छोड भई वैरागण, हरि सौं टेर दई रे। —मीरा

उ०—३ राजा सवाई जैसिंघजी वैरागणियां नूं परणाय मथुरा मैं, व्रंदावन मैं वैरागपुरी वसायौ। —बां. दा. ख्यात

२ वैरागी की स्त्री या कन्या।

३ संन्यासियों का एक प्रकार का छोटा काष्ट का उपकरण विशेष, जो तपस्या या भजन करते समय रात्रि में वक्षस्थल के अग्र भाग तथा बाहुमूल मे सहारे के रूप मे लगाया जाता है।

रू. भे.—वैरागण, वेरागण।

वैरागणौ, वैरागबौ—क्रि० अ० १ सासांरिक क्रियाओ व वस्तुओ से विरक्त होना।

२ संन्यास लेना।

३ ईश्वर भजन मे लीन होना, ईश्वर के प्रति आसक्त होना।

४ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटना।

क्रि. स.—५ सासारिक क्रियाओ व वस्तुओ से मन हटाना।

६ त्यागना। ७ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटाना।

वैरागणहार, हारौ (हारी), वैरागणियौ—वि०।

वैरागिओड़ौ, वैरागियोड़ौ, वैराग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

वैरागीजणौ, वैरागीजबौ—भाव वा० कर्म वा०।

वैरागर-वि०—१ बहुत गहरा।

२ खाली, रिक्त।

स. पु—१ खाली भूमि।

२ गहरा कूआ।

३ हीरों की खान।

उ०—हीरा वैरागर हुवै, सीप समंदरां थाय। नग लाखीणा नीपजै, 'माल' तणी धर माय। —बी. मा.

४ एक पर्वत का नाम जहां हीरो की खान है।

५ एक देश का नाम।

उ०—ककण दखिण सघण काछ पचाळ निरंतर, सेतबध रामेस लागी नव दीपां सायर। झाड़खंड मेवाड़ खड गुज्जर वैरागर, बागड़ महियड़ सहित खेड़ पावट पारक्कर। —नैणसी

६ एक प्रकार का कपड़ा विशेष।

७ एक प्रकार का रत्न विशेष।

उ०—१ बाथ धरै ओपत वैरागर, ताम गळियौ न थाय तम। दूबै 'रतन' आज धड़ दीठौ, रण अहरण भूरौ रतन।
—राव सत्रुसाल हाडा री गीत

उ०—२ वर सफर बागली, सार चक्र समसेरा। बांधी गाठ बदूक, डक बक हुक डेरा। खेह धूंणी खेरबै, बक तूं ज वैरागर। अग बभूत भूरी जटा, जरद कथा जोगेसर। सुरजनदास पूनियौ

८ हीरा नामक रत्न विशेष।

उ०—रथ मातग तुरग अग प्रति अग सिंगारै, जगमगाति नव जोति साजि माणक सुधारै। सोभि जान सिरदार रूप अणपार विराजै, रतन निकर करि रुचिर ओंमि वैरागर भ्राजै।
—रा. रू.

रू. भे.—वइरागर, वयरागर, वेरागर, वैरागर, वइरागर, वइरागरि, वयरागर, वयरागरि, वेरागर, वैरागर, वैरागिर, वैरागिरि।

वैरागि—देखो 'वैरागी' (रू भे.)

वैरागियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ सासारिक क्रियाओ व वस्तुओ से विरक्त हुवा हुआ। २ संन्यास लिया हुआ। ३ ईश्वर भजन में लीन हुवा हुआ, ईश्वर के प्रति आसक्त हुवा हुआ। ४ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटा हुआ। ५ सासारिक क्रियाओं व वस्तुओ पर से मन हटाया हुआ। ६ त्यागा हुआ। ७ किसी कार्य या वस्तु का त्यागा हुआ। (स्त्री वैरागियोड़ी)

वैरागियौ—१ देखो 'वैरागी' (अल्पा., रू. भे)

उ०—१ एक लगपण प्रीतम तणी, बेलै बीजौ व्रत धार रे। तीजौ तपसी वैरागियौ, राखी करुणा न करि लिगार रे। —जयवाणी

उ०—२ परिसदा सुण पाछी गई, वलिया कस्ण नरेस। गज सुकुमार वैरागियौ, लागी धरम नी रेस। —जयवाणी

२ देखो 'वैराग्य' (अल्पा, रू. भे.)

वैरागिर, वैरागिरि—१ देखो 'वैरागर' (रू. भे.)

वैरागी-स पु. [सं] (स्त्री. वैरागण) १ व्यक्ति, जिसके मन मे विराग उत्पन्न हुआ हो, विरक्त, वैराग्यवान्।

उ०—१ दुख सुख का कारण मन जीता, सो जन है वैरागी। कहै सुखरांम सुणो भाई साधो, और सबी है रागी।
—श्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—२ बालपणे भारमलजी स्वामी नै भाखी उत्तराध्ययन उभा-उभा चितारणी इसी आग्या स्वामीजी दीधी। जद भारमलजी स्वामी बोल्या—स्वामीनाथ कदाचित नींद मैं हेठो पड़ जाउं तो। जद स्वामीजी पाछो फरमायो पूजनें सूर्णे उभा रहो। इण रीतें भाखी उत्तराध्ययन री सभाय अनेक बार कीधी। इसा बैरागी पुरुष। —भि. द्र.

२ सन्यासी, साधु।

उ०—१ सतगुरु सब्द हिरदै धर लीया, अखंड प्रेम रस पीया। हरिरांम बेरागी बोलें, सदा अमर जुग जीया।
—श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ अपनी मौज चलें अरु बैठें आस्रम वरण उलागी। एका एकी विचरें ऐसें, जग वन सिंघ बेरागी।
—श्रीसुखरामजी महाराज

उ०—३ बैरागी बन मैं बसैं, घरबारी घर माहि। राम निराळा रह गया, दादू इनमे नांहि। —दादूबाणी

उ०—४ रसी उसीर पख ठहराणं उठें प्रणाम करें रिख आणें। आतम ग्यान समुद्र अथागी, रमता परमहस बैरागी।
—सू. प्र.

३ त्यागी पुरुष।

उ०—१ बैरागी विरकत भलो, जुग सु न्यारा मन। हरिया विरही सो भलो, सब सूं वासा तन। —अनुभववाणी

उ०—२ इतलें स्वामीजी गोचरी करनें पाछा पधारचा। जद······ ······ए कह्या—भीखणजी! थें बैरागी वाजो नै इण मोहला मैं नुंतो थयो तिण रा घर सूं पकवान लाया! ति वारें भीखणजी स्वामी बोल्या—इण रो दोख काइ? जद·········ए कह्यो थें बैरागी बाजो नै इसा कांम करो। —भि द्र.

उ०—३ अब (तो) हरि नाम लौ लागी। सब जग को यह माखन चोरचो, नांम धरचो बैरागी। कित छोडी वह मोहन मुरळी, कित छोडी सब टोपी। मुंड मुडाइ डोरी कटि बांधी, माथें मोहन टोपी।
—मीरा

४ उदासीन वैष्णव सम्प्रदाय।

वि० वि०—यह विरक्त साधुओं की तरह का एक सम्प्रदाय है। इनके व संन्यासियों के मत में अन्तर है। विष्णु को अपना इष्ट मानते हैं तथा विष्णुअवतार राम, कृष्णादि को पूजते हैं अतः वैष्णव कहलाये। ये लहसन, प्याज, सलगम, गाजरादि नहीं खाते तथा गांजा, चरस, शराब आदि नही पीते। श्यारस, जन्माष्टमी, नृसिंहावतार आदि के दिन व्रत रखते हैं व उत्सव मनाते हैं। गीता, रामायण, महाभारत आदि इनकी धर्मपुस्तकें हैं। इनमें चार सम्प्रदाय हैं जिनमें भाव भक्ति के नियम अलग अलग हैं।

१ रामानुज सम्प्रदाय—जिसे श्री सम्प्रदाय भी कहते हैं तथा रामानुजाचार्य ने चलाया था। इस सम्प्रदाय का उन्होंने सेवड़ों को शास्त्रार्थ में जीत कर चलाया था। इनकी पाटगादी मद्रास में गादीधर, आचार्य कहलाते हैं। ये शादी नही करते। गादी पर विद्वान ब्राह्मण ही बैठता है जो इनका पाटवी चेला होता है। इन के चेलों के दोनों भुजाओ पर यज्ञ, पूजादि के बाद चादी की तप्तमुद्रा से शख, चक्र गदा पद्म आदि के चिन्ह लगाये जाते हैं। बालकों के केसर की छाप लगाते हैं जिसे शीतलमुद्रा कहते हैं। ये तुलसी की माला पहनते हैं व सिर पर सफेद मिट्टी का अर्द्धपुंड (तिलक) लगाते हैं। इनके मन्दिरो मे शेषशाई, बेनीगोपाल व जुगल मूर्ति राधाकृष्ण व सीताराम आदि की रहती हैं। ये आरती के वक्त तांबे का शख बजाते है एव असली शख को हाड का मानते हैं।

२ विष्णुस्वामी द्वारा चलाया हुआ शिव सम्प्रदाय जिसे रौद्र सम्प्रदाय या विष्णु स्वामी सम्प्रदाय भी कहते हैं। इस सम्प्रदाय का सिद्धात है कि शुद्धाद्वैत ईश्वर कृष्ण रूप ऐक ही है। ये भी तुलसी की माला पहनते हैं तथा अर्द्धपुंड तिलक लगाते हैं।

३ ब्रह्म सम्प्रदाय, जिसे माध्व, गौड़ व महाप्रभु सम्प्रदाय भी कहते हैं। इसे ब्रह्माजी ने चलाया था व माध्वाचार्य ने प्रसिद्ध किया था। ये कृष्ण को इष्टरूप मे मानते है। मन्दिरो मे जुगल मूर्ति राधाकृष्ण की होती हैं। ये विष्णु कहलाते हैं तथा हथियार भी बाधते है।

४ सनकादिक सम्प्रदाय या निम्बार्क सम्प्रदाय जिसे सनकादिक ने चलाया था तथा अरुणऋषि के पुत्र निम्बार्क स्वामी ने फैलाया था। इस सम्प्रदाय का सिद्धान्त द्वैताद्वैत है अर्थात ईश्वर माया से अलग नही है। कृष्ण ही इनका इष्ट है। राधाकृष्ण की जुगल मूर्ति की पूजा व उपासना करते हैं। ये निहग व गृहस्थी भी हो सकते हैं।

रू भे.—बइरागी, बयरागी, बिरागी, बेरागी, बैरागी, बइरागी, वयरागी, विरागी, वेरागी, वैरागी।

अल्पा;—बयरागियो, वेरागियो, वैरागियो, बैरागीयो।

बैरागीयो—१ देखो 'बैरागी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—अप हुवो बैरागीयो रे, जीता विसय कसाय, खटको जेहना रे मन थी टल्यो रे। सेठ सहित संयम लीयो रे, सद्गुरु पासै जाय। —वि. कु.

२ देखो 'बैराग्य' (अल्पा., रू. भे.)

बैराग्य—सं. पु. [स.] १ ससार की विषय-वासना तुच्छ प्रतीत होने की मन की एक प्रवृति विशेष, जिससे लोग सांसारिक झंझट छोड़ कर एकांत में रहते हुए ईश्वर-भजन करते हैं।

२ असन्तोष, अप्रसन्नता ।

३ घृणा, ग्लानि, अरुचि ।

४ किसी के प्रति राग-भाव न होने की अवस्था या भाव ।

उ०—ससार असार, दुखनु भडार, जिसिउ पीपल नूं पांन, जिस्यु गजेंद्र नु कांन, जिस्यु वीज नु झबुकु, पोइणिनिइ पांणी तणउ टबकु, जिस्यु बहुबोलनी जीभ नु लोलु, जिस्यु काग नु डोलो, जिस्यु धज नु अचल, तिसिउ संसार चचल, बंराग्य । —व. स.

रू भे.—बइराग, बयराग, बिराग बेराग, बंराग, बंराग्य, वइराग, वयराग, विराग, विरागीय, विरागौ, वेराग, वेराग्य, वंराग ।

अल्पा,—बयरागियौ, वेरागियौ, वंरागियौ, वंरागीयौ ।

बंराड़ी—स. स्त्री.—एक प्रकार की रागिनी विशेष ।

रू. भे —वइराडी, वयराडी ।

बंराज—सं. पु. [सं] १ विरजस् नामक प्रजापति के सात पुत्रो मे से एक जो पितर कहे जाते हैं ।

२ देखो 'बेराज' (रू भे.)

बंराजी—देखो बेराजी' (रू. भे.)

उ०—१ बूंदी मैं सवाईराम ओसवाल चरचा करतां भिक्खु कह्यौ—गाय भेंस रा मुंहडा आगे घणौ चारो नाख्यां ओगाळो करै । जब तेह कहै—मोनें ढाढो कह्यौ—बंराजी थयो तब स्वामीजी कह्यो—थे ढाढा थया म्हारो ग्यान चारो थाय । इम कह्या राजी थयो । —भि. द्र.

उ०—२ देसूरी नौं नाथ साधु स्त्री बेटी मा छोड दिक्षा लीधी, पिण प्रकृति करडी, आछी तरह आगया मैं चालै नही । तीन वरस आसरै टोला मैं रह्यो । पछै टोला बारै निकल गयो । कनै हुंता त्या साधा स्वामीजा नै आय कह्यो—नाथो छूट गयो । जद स्वामी जी कह्यो—किणहिरै गूंबडो दुखतो घणो नै पछै फूट गयो तो ऊ राजी हुवै कै बंराजी ? —भि. द्र.

उ०—३ जद तै राजी होय बोल्या—म्हारै काल को गराक आयो । रुपियो हाथ मैं लेई देखै तो खोटो । माहैं तांबो नै ऊपर रूपो । अलगो न्हाखनै बोल्यो—प्रभातै खोटा नाणा रो दरसन हुओ । जद ऊ बोल्यो—साहजी बंराजी क्यूं हुआ । परसूं तो म्हैं पइसो मांग्यो सो तांबो नांणो चाल्यो । —भि. द्र.

बेराजीपण, बंराजीपणो, बंराजीपो—देखो 'वेराजीपो' ।

बेराट—सं. पु. [सं. वैराटः] १ इन्द्रगोपक कीट, वीर-बहूटी ।

२ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक जो भीम द्वारा मारा गया था ।

३ राजा विराट का उत्तर नामक पुत्र ।

वि० १ विराट का, विराट सम्बन्धी ।

२ लम्बा-चौडा, विस्तृत, फैला हुआ, बडा ।

उ०—घटयंदा बंराट घाट, केता निरवहा । —केसोदास गाडण

३ आकार की दृष्टि से महान्, बडा, विशाल ।

उ०—१ ब्रह्म नमो ध्रुव ब्रह्म, ब्रह्म कहिजै ब्रह्मचारी । ब्रह्म नान्हो बंराट, क्रम अक्रम कूडा री । —पी. ग्र.

उ०—२ करतार मेह करति, व्रम चिहुं रसा वरसति । परमेस पार अपार, बंराट घट विसथार । —पी. ग्र.

उ०—३ दास तन भजन विन सो सबी दासरथ, थिक बस कोड बातें न थावे । देवपत रूप बंराट थारो दुगम, धणु मन सेवगा सुगम आवै । —र. ज. प्र.

उ०—४ पयंपै पूरण आदि पुरुख, उपन्नं ब्रह्मा ईस अलख । थया तिण रूप सरूप सुघट्ट घटं घठघाट बंराट सुघट्ट । —रा. वसावली

४ भयकर, भयावह ।

उ०—१ अडडाट नाद बंराट अज, घट्ट आणि दूजो घडै । वरसाळ झाळ गोळा वहनि, प्रळं काळ छोळा पडै । —सू. प्र.

उ०—२ इतरै मलग गंबी मरद उठीयो, वठि नै हाक मारै छै । तिकै रै पकी बारह मण लोह री साकळ पग माहै नवगजो जोधो, वडो माथो । सिर ऊपर घणी बाबरी छै, ऊपर उधो तबलो । सवा मण री कुतको हाथ माहै छै । वडो भुजाडड । बंराट रूप धारिया थका निरवाणी योगिंद्र हुवो तिसड़ो । कनै कपडो नहीं, दिगंबर आडवर धारियां थका । —तिमरलिंग पातसाह री बात

६ देखो 'विराट' (रू भे) (सभा)

उ०—१ धणी ग्राह ना मारिवा भलो धायो, हरि तूझ अवतार वेदं हुलायो । निमो वामणा राम बंराट ब्रह्म, अधिक रीजियो इदि ऊपरि अग्रंमु । —पी. ग्र.

उ०—२ देस सहु मैं दीपतो रे, वाह देस बंराट । सहू को लोक सुखी सदा रे, वरतै निज कुल वाट । —ध. व. ग्र.

उ०—३ मगध कोसल अंग बग कलिंग कासी कुरु देस, सोरठ कछ विदेह जागल कुसावरत कहेस । भण लोबीर बंराट मलय साडिल सूरसेन, वरण पचाल दसारण कुंणाल देस मैं चैन । —वृस्त.

७ देखो 'ब्रह्मरध्र' ।

उ०—१ चख सूरिज नै चद्रमा, घणनामी घट घाट । पिंडी मोटी मोटी प्रभु, वप छोटी बंराट । —पी. ग्र.

उ०—२ लगी चोट सत सबद की, खुल्हा ब्रह्म कपाट । मेवासा सब जीत कै, वस्या नगर बंराट । —अनुभववांणी

उ०—३ वाटि विगट बंराट की, पुंहचैगा कोई सूर । हरीया कायर थकि रह्या, दरगाह रहीया दूर । —अनुभववाणी

रू. भे —बराट, बिराट, वेराट, बंराट, वइराट, वयराट, विराड, वेराट ।

बंराटरूप—सं. पु [स.] परमात्मा या ब्रह्म का विश्वरूप ।

बंराणौ, बंराबौ—देखो वंराणौ, वंराबौ' (रू. भे.)

बैराणहार, हारो (हारी) बैराणियो—वि० ।
बैरायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बैराईजणो, बैराईजबो—कर्म वा० ।
बैरात—देखो 'बरात' (रू. भे.)
उ०—दिली बैरात स्थानपत दोळा, 'दूदो' वर राजा दिखण । सवगण हरो वरै साहिजादी, रायजादी गोढियो रिण ।
—दूदा नगराजोत री गीत
बैराय बैरायत—सं. पु. [स वैर+प्रायत] शत्रु, दुश्मन वैरी ।
उ०—१ बह रांणा राव विवाद विवरजित, 'जोध' कलह कथ किका जुड़ । बैरायतां तो बाळो भगवट, हव आगै कुळवाट हड़ ।
—महम्मदजी बारहठ
उ०—२ तिण समै जाय जैतसीजी राजा नैं वकारियो । कह्यो, राजा सूराचद थाह सं मूंडा राजा री वैर मागू, तो मैं रजपूती होय तिका करि । तारां सूराचद रा राजा सूं तो काई हवो नही । राघोदे प्राधा बधतो थको मेल री राजा रै घमोडो । तिका पेलै पार नीकळी । तरै मोड दीठो, दीठै तो बैरायत ।
—जैतसी उदावत री बात
रू. भे.—बेरायत, बैरावत ।
बैरायोड़ो—देखो 'बैरायोड़ो' (रू भे)
(स्त्री. बैरायोडी)
बैरावत—सं. पु.—१ राठोड़ो की एक उपशाखा ।
२ उक्त शाखा का व्यक्ति ।
३ देखो 'बैरायत' (रू भे.)
बैरि—देखो 'बैरी' (रू. भे.)
बैरिण, बैरिणि, बैरिणी—देखो 'बैरण' (रू. भे)
उ०—दादू माया बैरिणि जीव की, जनि को लावै प्रीति । माया देखै नरक कर यह संतन की रीति ।
—दादूबाणी
बैरिय—देखो 'बैरी' (अल्पा., रू. भे)
बैरियोड़ो—देखो 'बैरियोड़ो' (रू. भे)
(स्त्री. बैरियोडी)
बैरी—सं पु. [स वैरिन्] (स्त्री बैरण, बैरणि, बैरणी, बेरिण, बैरिणि बैरिणी) दुश्मन, शत्रु । (ह. ना मा)
उ०—१ ससार मैं सगळा दुख चोखा पण पेट री दाझ खोटी । भगवान् सात भव रा बैरी दुस्मण नैं ई पेट री दाझ मत दीज्यो ।
—ग्रमरचूंनडी
उ०—२ गगेव खोचो काग मडा किवाड, बैरियां जडा उपाड । जिण की सेल कहूं वणाय, सुणिया मन प्रसन थाय वरवा रितु लागी, विरहणी जागी । ग्राभा झरहरै, बीजा ग्रावास करै ।
—रा. सा स.
उ०—३ सीहां रा बैरी सको, सीह न कोय सहाय । जेज करै नह बूझता, जग तैं विग्रहो होय ।
—बां. दा.
रू. भे.—बग्ररि, वग्ररी, बड्यरि, वइग्ररी, बइयरि, बइयरी, बइरि, बइरी, बईग्ररि, बईग्ररी, बईयरि, बईयरी, बईरि, बईरी, बयरि, बयरी, बाइरि बाइरी, बायरि, बायरी, बेरि, बेरी, बैरि, बैरी, वइग्ररि, वइग्ररी, वइयरि, वइयरी, वइरि, वइरी, वईग्ररि, वईग्ररी, वयरि, वयरी, वाइरि, वाइरी, त्रिरी, वेरि, वेरी, वैरि, वैरिय ।
अल्पा,—बैरीडो वैरीडो ।
बैरीड़ो—देखो 'बैरी' (अल्पा., रू भे)
उ०—१ कोई परवा नीं, लैणो होमी तो दैणेरया । पण वैर वेगी पेरांला जद मूंछो ऊंचो करालां । लागै जिती खरची ल्यो, चाहीजै जिका ग्रादमी मांगो । कवाडा-गवासो राखो ग्रर बैरीडै नै चटकै' र नीचै ग्राडा नाखो, जद जो मैं जी ग्रावै ।
—दसदोख
उ०—२ विसको पियालो, ग्रै गोरी घण, बैरीडां नै प्याय, वारी घणा थारी ग्रो हंजा था नै पियालो ग्रै कार्च दूध को, जी राज ।
—लो. गी.
बैरीवाड़ो, बैरीवारो—सं पु. [स बैरी + पाटक] शत्रुओ का मोहल्ला, देश या निवास स्थान ।
उ०—१ घर घोडो पिय पगपळो, बैरीवाडै वास । नित रा वाजै ढोलडा, कद चुड़लै री ग्रास ।
—ग्रग्यात
उ०—२ बैरीवाडै वासडो सदा बसाकै लाग । हेली कै दिन पाहुणो, वडो भाग सुहाग ।
—बी. स
उ०—३ देव मैं बैरीवाडै वास कीयो तो फळ पायो । पण ग्रागणो, तै सरज रो मौम खाधो हतो तो परमेस्वर पर दाद नही पावै । नाहरा कह्यो "मैं थारो ग्रमीलो नही खाधो है । जठो कलंक मत मना देई ।
—नाहरी हरणी घरमै के बावन सावनमी री बात
उ०—४ ग्रागण वार्ज घर कलह, बैरीवार वास । नही कराकै कलडो यद नद हुवै वगास ।
—नाहरी हरणी घरमै के बावन सावनमी री बात
बैरीसाल—वि०—शत्रुओं के दिल में खटकने वाला ।
बैरीहर—देखो 'वैरहर' (रू भे) (डिं को)
उ०—'पाल' रो काळ बैरीहरा पाडतो, बिभड ग्रोभाडतो मेल वेकै । पठाणा होक भोका देयतो पाधरै, ठीक जाडां थयो मूळ ठेकै ।
—जोधा सिसोदिया री गीत
बैरोचन—स पु [स] १ विरोचनसुत बलि जो दैत्य था एव प्रह्लाद का पौत्र तथा पाताल का ग्रधिपति था ।

२ सूर्य के एक पुत्र का नाम।
३ अग्नि के एक पुत्र का नाम।
४ देखो 'विरोचन' (रू. भे.)

उ०—१ प्रथम राजा आदि, पुत्र भरत, पुत्र सूरपजिसा, पुत्र ईखवाक। अठै ईखाग वंस थाप्यो। इखाग पुत्र समुद्र, पुत्र चद्रमा, पुत्र बुध. पुत्र पुनरदेरथ, पुत्र विद्याधर, पुत्र मुचकुंद, पुत्र हिरणाकुस, पुत्र पहिलाद, पुत्र वैरोचन, पुत्र बळिराजा, तिको चकवै हुवो।
—रा. वसावळी

उ०—२ वैरोचन तन वहरियो, विप्र सुभायै बाळ। निण पुन्यथी पुत्र पामियो, बलिराजा विरदाळ। —रा. वंसावळी

उ०—३ भली हुइ जं नही वळी वैरोचन रै सत्य। मो देखतां महियो, हरि वळि मागळि हत्थ। —रा. वसावळी

रू भे — वैरोचन।

वैरोचनि, वैरोचनी—स. स्त्री [स] विरोचनसुता एव त्वष्टापत्नी यशोधरा का नाम।

वैरोचि, वैरोची—सं. पु. [सं. वैरोचि] पातालनरेश बलि का ज्येष्ट पुत्र बाण नाम असुर जो अनिरुद्ध की पत्नी ऊषा का पिता था तथा शिव के वरदान से देवताओं पर शासन करता था।

वैरोट—देखो 'विराट' (रू. भे.)

उ०—मलय सिंगल कोसल नइ अंध्य सो परबत द्राविड नइ वध्य। वैरोट तापी लाजी धार, स्रीवंस्रभ पाटल मनि सार।
—नळदवदतीरास

वैरो—१ देखो बेरो' (रू. भे.)
२ देखो 'वेरी' (रू भे.)
उ०—वैरै वंस न भरकियै मन मैं रह्यो सधीर। हरीया साहिब सा अणी, पारि उतारै तीर। —अनुभववाणी
३ देखो वैर' (रू. भे.)
उ०—म्हाला नइ वइरी विचइ, नवि करवउ वैरो। पद ना अवगुण देखि मइ, नवि करवउ चेरो। —स. कु.

वै'रो—देखो 'बहरो' (रू भे)

वैल—१ देखो बैल' (रू. भे.)
२ देखो 'बोहळियो' (रू. भे.)
३ देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—अठ वैन अेक रिड़मल री तिको पाटण संवरा नूं परणायी ही। सू आ विधवा हुई, तद इण नूं खडेलै लाया। पीछै रावजी खडेलो लूंटियो। तद इण प्राणकवर नूं पकडी अरु रावजी खीवोकंजी आगै ठकुराणी करी। नै वैल वैसांणी। —द. दा.

वैलड़ली, वैलड़ो,—१ देखो 'बेल' (अल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'बहल' (अल्पा., रू. भे.)

वैलण—१ देखो 'बेलण' (रू. भे.)
२ देखो 'बेलण' (रू. भे.)

वैळणो, वैळबो—१ देखो 'वेलणो, वेलबो' (रू. भे.)
२ देखो 'बैलणो, बैलबो' (रू भे.)

उ०—अेक दिन बंसी नै बराबर बुखार वणियौ रयौ। रात मैं बुखार १०४ डिगरी हुग्यौ, जकै रै जोर सूं वैळण लाग्यौ। रै-रै'र कंवतो मा गोमती ! तूं कठै है? हाय! म्हारै ओतां-जो तनै दूसरै रो द्वारो देखणो पड़ियो। —बरसगांठ

३ देखो 'वेलणो, वेलबो' (रू. भे.)

वैळणहार, हारो (हारी), वैळणियो—वि०।
वैळिअोड़ो, वैळियोड़ो, वैळयोड़ो—भू० का० कृ०।
वैळीजणो, वैळीजबो—भाव वा०

वैलणो, वैलबो—१ देखो वेलणो, बेलबो' (रू. भे.)
२ देखो 'बैलणो बैलबो' (रू. भे.)
३ देखो 'बेलणो, वेलबो' (रू. भे.)

वैलणहार, हारो (हारी), वैलणियो—वि०।
वैलिअोड़ो, वैलियोड़ो, वैल्योड़ो—भू० का० कृ०।
वैलीजणो, वैलीजबो— कर्म वा०।

वैलवान—सं. पु.—रथ को हांकने वाला व्यक्ति, सारथी।
उ०—भोजास गांव अरु जात गोदारो, सेखो नांम जन को प्यारो। रथ को वैलवान वड भारो, थापन कीनेऊ ताहि विचारो।
—मेहोजी गोदारो थापन

वैळा, वैला—१ देखो 'वेळा' (रू. भे)
२ देखो 'वेला' (रू. भे.)

वैळियोड़ो, वैलियोड़ो—१ देखो 'वेलियोडो' (रू. भे.)
२ देखो वैलियोड़ो (रू भे.)
३ देखो वेलियोडो' (रू भे.)
(स्त्री. वैळियोड़ी, वैलियोड़ी)

वैलो—क्रि. वि.—१ उस ओर, उस तरफ।
उ०—दादू सेख मुसायख ओलिया, पैगंबर सब पीर। दरसन सौ परसन नही, अजहूं वैली तीर। —दादूवांणी
२ देखो 'बहल' (रू. भे)
३ देखो 'बेली' (रू. भे)

वैले—देखो 'वेलै' (रू. भे.)
उ०—सुरह गाय री ग्रीवा इण गाय सूं लांबी हुवै। वैलै ही लांबी छै मुरह गाय इण गाय सूं। ११ लाख चमर प्रमुख देसां सूं हिंद मैं आवै है। —बां. दा. ख्यात

वैळी, वैलो—देखो 'वेलो' (रू. भे.)

वैल्वो—देखो 'वैल' (अल्पा., रू. भे.)

वैल्व—सं. पु. [सं.] बिल्व नामक बेल का पत्ता या फल।

वैव—देखो 'वैव' (रू. भे.)

वैवणी—देखो 'वेवणी' (रू. भे.)

वैवणो—देखो 'वहणो' (रू. भे.)

वैवणो, वैववो—१ देखो 'वहणो, वहवो' (रू. भे.)

२ देखो 'वेवणी, वेववो' (रू. भे.)

वैवणहार, हारो (हारी), वैवणियो—वि०।

वैवियोड़ो, वैवियोड़ो, वैव्योड़ो—भू० का० कृ०।

वैवीजणो, वैवीजबो—कर्म वा०, भाव वा०।

वैवतन—देखो 'वेवतन' (रू. भे.)

उ०—तिको भाई राजा नुं इम कहै, "पठांण दुसमण नैडा राखजं नहीं।" राजा रै मोहल माहै सुदरागी दहड तिका पदमणी कहै, "राजा, दुसमण नेडा राखीयां तिका थको लाधो। फौजा कर साथ भेळी कर पाहड़ मांहा सो ईहा नूं छेद काढो, वैवतन करो।

—राजा नरसिंघ री वात

वैवस—१ देखो 'वैवस्वत' (रू. भे.)

२ देखो 'विवस' (रू. भे.)

वैवसरवमनु—सं. पु. [सं.] ब्रह्मा के चौदह मनुओं मे से एक, वैवस्त।

वैवस्त, वैवस्वत—सं. पु. [सं.] १ सूर्य के एक पुत्र का नाम।

२ एक रुद्र का नाम।

३ शनिचर जी महाराज।

४ ब्रह्मा के चौदह पुत्रो (मनु) मे से एक, जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं।

५ एक प्रकार का तीर्थ विशेष जिसमे स्नान करने वाला स्वय तीर्थरूप हो जाता है।

६ वर्तमान मन्वन्तर का नाम। (पुराण)

७ यम, धर्मराज।

रू. भे.—वैवस, वइवस्त, वइवस्तु, वैवस।

वैवस्वती—सं. स्त्री.—यमुना नदी का नाम।

वैवार—१ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—रमेश बोलियो—हूं ओई चोर हूं जको बीजं री जमानत चताऊ? थे आज ई काम पडियो' र आज ई भूलग्या। बाणिया री कांई प्रीत! सेठ कयो इयं में विणज री तो वात ई कोयनी, आ तो वैवार री वात है। खैर, अबार तो सिधावो, काल सोच' र ऊंवाय देसूं। —वरसगाठ

२ देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

वैवारिक—देखो 'व्यवहारिक' (रू. भे.)

वैवारियो—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा, रू. भे.)

वैवियोड़ो—१ देखो 'वहियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वेवियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वैवियोडी)

वैसंवर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—१ वैसवर लकड पाखांण, जिम लोह लुकाया।

—केसोदास गाडण

उ०—२ शाखि दियं श्रीरांम, कुवर तो अर्जु कवारो। कथ सुणी एक कानि, वीर मंनि वात विचारो। विखं रहां वनवासि, आंनकी झली झेल्यो। वैसंवर रै पासि, थिरत रहै किम रेल्यो।

—सुरजनदास पूनियो

उ०—३ उवां मांहि मिळ जैसाह' आय, वैसंवर जाणिक झोल वाय। —सू प्र.

वैसंधि, वैसंधो—देखो 'वयसंधि' (रू. भे.)

उ०—सु इह तो न बाळक अवस्था माहै सूझै छै। नै यौवण आयै आगै छै। इहि विचि की संधि सु वयसंधि कहावै। जैसे सुपिनो। न सोवै न जागै छै। आगै पल पल चढतो होसी। पिणि हिवै वैसंधि को इसो प्रथम ग्यान ताकी इसी परिछै। —वेलि टी.

वैसंनर—देखो 'वैस्वानर' (रू भे) (ह. नां. मा)

उ०—जळ सहर पुर जास, निसा ओजास निहारै। साह अळ संपेखि, सोच मद मोच सभारै। खडीवन समरत्थ, पत्थ निज हत्थ जळायो। कना लक विण संक, हणू वैसनर लायो। —रा. रू.

वैसंपा, वैसंपायन—सं पु. [सं. वैशंपायन] १ वेदव्यास के एक शिष्य, एक प्रसिद्ध ऋषि जो यजुर्वेद के प्रवर्तक थे तथा हरिवंश के प्रचारक थे। इन्होने जनमेजय को महाभारत सुनाया था।

उ०—वैसंपा एम ओचरै, जनमेजै स्रवणे धरै। विस्तरै वांणीह गुण पाडव तणा रै। पाडव ना गुण विस्तारी नै सांमल त, भूपाल, जंनै पोता ना करी जाणं स्वांमी स्रीदीनदयाल।

—नळाख्यांन

२ एक ऋषि जो युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित था।

३ शौनक ऋषि से तत्वज्ञान पर सवादकर्त्ता एक ऋषि।

रू. भे.—वैसमपापन।

वैस—१ देखो 'वेस' (रू. भे.)

२ देखो 'वेसर' (रू. भे.)

३ देखो 'वेस्या' (रू. भे.)

४ देखो 'वैस्य' (रू भे)

उ०—रस सर्व माखी जुही, कीड़ी ज्यू कणरास। घरं मेस जिम औरवै, वैस दुकाना वास। —बां. दा.

५ देखो 'वयस' (रू. भे.)

उ०—१ चढ़ती बैस नैण अणियारै, तूं धरि धरि मत डोल। मीरां के प्रभु हरि अविनासी, चेरि भई बिन मोल। —मीरां

उ०—२ दुहूं वाद मातो कहर साह बै वेखवं, भार पड़ियौ कहर गजां भारां। बैस कह, 'बीठळा', हालि घर दिसि वजां, सरम कह, 'बीठळा', बाजि सारां। —लिखमीदास व्यास

उ०—३ अभग मछरीक इण भांति सूं ऊचरै मूवौ माहरौ खरौ कांम मार्थं। बैस हूंतां कह्यौ, राजि अपछर वरौ सरम, थै हुवौ इयलोक साथै। —लिखमीदास व्यास

बैसक—स. स्त्री. [सं. वेशक] १ वेश्या, रंडी।

उ०—व्रतभंगी ह्वै भरथ खय, नाहां भय रस नास। कुकवी बैसक तुल्य कर, बरणं सुकवि विमास। —बा. दा.

२ देखो 'बेसक' (रू. भे.)

३ देखो 'बैठक' (रू. भे.)

बैसण—देखो 'बेसण' (रू. भे.)

बैसणव—देखो 'वैस्णव' (रू. भे.)

बैसणी—सं. स्त्री.—१ चार प्रकार की गाथाओ में से एक प्रकार की गाथा विशेष, जिसमें २७ लघु वर्ण होते हैं। (र. ज. प्र.)

उ०—रूपा भरण बैसणी राजत, सुद्रणि पीतळ भूखण साजत। कजळ तिलक विप्रणी ओपत. तिलक सुद्रणी लाल ओपत।

—र. ज. प्र.

२ वैश्य की स्त्री।

बैसणू—१ देखो 'वैस्णव' (रू. भे.)

उ०—कट्टर गौ-भक्त-गाया कसाई लेवै है, बियै सू ऊपर कोई बोली को देवै नी, इत्ता डागरां री १५०) मुकातं बोली दी है, कुंई थेई बधी नी, तिलक काढण नै है, दीखौ तौ बैसणू धरम मैं ही।

—वरसगांठ

२ देखो 'बिस्णु' (रू. भे.)

३ देखो 'बैसणी' (रू. भे.)

उ०—जीण मेरी बाई थै ऊंचौ सौ घालूं थै थानै बैसणूं. बैनड भाई जीमां साथ, जांमण की थै जाई, बिच बिच बदळा थै वाल्हा गालिया। —जीणमाता री गीत

बैसणौ—देखो 'बेसणो' (रू. भे.)

उ०—१ जीण म्हारी बाई थैं ऊंचौ सौ घालूं तमै बैसणौ।

जीणमाता री गीत

उ०—२ छाबै छतर बैसणी, भूपति छाडै देस। हरिया सेझ सराय मैं, काळ किया परवेस। —अनुभववाणी

उ०—३ चलण चोकी कठेरौ थारी बैसणी, तुळछा री माळा थारै हाथ। आयो हलकारो श्रीभगवान रो।

बैसणौ, बैसबौ—देखो 'बैठणौ, बैठबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जूंजर बेरै बैसतां, जळ मैं जोखा होय। हरिया हरि सिवरन विनां, पारि न पूंहता कोय। —अनुभववांणी

उ०—२ स्रावक स्राविका फारवा लागा। बैसतै चौमासै तौ ए इस्टांत दीधौ। तिण सूं अमरसिहजी बाला तौ राजी रह्या। मिसवाला नै समझावा लागा। पछै उतरतै चौमासै फतैचंदजी गोटावत बोल्यौ—भीखणजी मिसवाला नै इज निखेधौ पिण पुन्य वाला नेड़ा बेटा त्याने क्यूं नहीं निखेधौ। —भि. द्र.

उ०—३ औ राती भोजन बहरावै, आ र बैस छोनै चमकावै। आप अंधारै औरा चदणा, दुनियां धरम लाभ गुरबदणा।

—अनुभववांणी

उ०—४ मन कै मढ है सत बांधौ तणी, पेम परतीत की लाब पीठी। सुधि अर बुधि का बैस विनायका, रस कै डोरड़ै गांठि गीठी। —अनुभववांणी

उ०—५ ताहरा ढोलैजी कह्यौ ऊभा रह्यां तौ सभ्रै कोई नही। थांरै काम छै तौ ऊंट झेकाड़ छुं तूं वासै चढि बैस कागळ लिख मोनै देज्यै तूं परौ उतरै। ताहरौ विवऊरियो ऊट ऊपर बैसि कागळ लिखण लागौ। —ढो. मा.

बैसणहार, हारौ (हारी), बैसणियौ—वि०।

बैसिओड़ौ, बैसियोड़ौ, बैस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बैसीजणौ, बैसीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बैसन—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

उ०—भोपनां सकति सेव, बैसना औतार ध्यावै, बंमना कै बेद पाठ, चतुराई चालि मैं। परवाई पखी मैं लोक, निरापेखी जन कोई, हरियै कै राम एक, नही लाल पाल मैं। —अनुभववांणी

बैसमर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—खड़ ईंधण पाणी बैसमर, सरब थोक संग्रह करै। जाळोर नाम करवा जरू, चढि पठाण नह ऊतरै। —गु. रू. बं.

बैसनव, बैसनौ—देखो 'वैस्णव' (रू. भे.)

उ०—१ हैदराबाद में गुजरातिया री पुरी करवांन कहावै। कैई गुजराती वणिक जैनी, कैई बैसनव है। केसोमद नूं कोडीमल वगेरै ठावा आदमी हुता। —बां. दा. ख्यात

उ०—२ क्या गिरही क्या बैसनौ, राम सिवरि भै पारि। जन-हरिया सिवरम विना, वाकु आर न पार। —अनुभववांणी

उ०—३ भगति बैसना नवध्या करिहै, दसधा की कुधि खबरि न परि है। छापा तिलक बनावै वांना, इनतै साहिब रहिया छांना।

—अनुभववाणी

बैसव्वर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे.)

उ०—१ महादुरग अजमेर, 'सूर' जीतो रिण चावर । उलियो जोगणपुरी, बाह जाएँ बैसखर । पातरिजै गज थट्ट, खान सुरतांण मिळै दळ । कटक बध अनिमध्ध, हुएं फौजां हीलोहळ ।
—गु. रू. बं.

उ०—१ मोम मारंभर हार कर्ष हर, कोम क्रोड डर, हे-खुरं पत्थरं । वड्डि बैसखर, सामठा सध्धरं, सुम्मटा भूलर, फौज पासाहरं ।
—गु. रू. ब.

बैसम्पायन—देखो 'बंसपायन' (रू. भे.) (मा. म.)

बैसयिक—वि० [सं वैषयिक] १ किसी पदार्थ का या पदार्थ सम्बन्धी । २ विषयी, लपट ।

बैसलीण बैसलीन—स. पु. [अं. वेस्लिन] मरहम की तरह का एक प्रकार का चिकना पदार्थ विशेष, जिसका चमड़ी पर कोमल एवं चिकनी बनाने के लिए लेपन किया जाता है ।

उ०—आळा अर आलमारचा में ताकत वेगी लायोडो बग-सिला-जीत री सीस्या जचाई पड़ी है । किरीम-पाउडर खिजाब, बैसलीन रा भरयोड़ा भांडिया, जैं, माथै जेळमाळा बणाया भिलै है । तेल-फुलेल, अतर-सेंट रा कटर अर साबण—सोढै रा गोडै-गोडै सूणा सिदूक राजा-मा' राजा रा सा पड़या दीसै । पटवारी है क, तैसील-दार ? किसनजी की कूत नी सक्यो ।
—दसदोख

बैसवारियोबीच—देखो 'वैसवारियोबीच' (रू. भे)

बैसांणणौ, बैसाणबौ—क्रि. स.—१ दफनाना, गाड़ना ।

उ०—मैं तो इण नू मुंहडा सू बहुत कही जिको कोई म्हारे कांम नहीं । तद राजा भीमसेण ईसी सुण पडिता नू बुलाय बूझियौ राजा मळ मोनूं दोस लगायो । ईण री अबै कासु करां, तब पडितां वेद मरजाद कह्यो, रांणी दमंती थांरै घर वेटी कर राखो, पछै दमंती नै धरती खोदि माहै बैसांणो ऊपर हळ री चांब कढावौ पछै बारै काढो, इतरै नवो जन्म हुवौ ।
—ढो. मा

२ अधिकार मे करवाना, हुकुमत देना ।

उ०—गाव मारियो, बाळियो, लूटियो । दिन दो मडोर रहा । आसोज सुदि १५ बीसळपुर डेरो कीयो, दिन ७ रहा । पछै राव राम नूं सोमत बैसाणनै कटक परा गया । तठा पछै बळे राव राम जाय फौज लायो ।
—मारवाड री ख्यात

३ देखो 'बैठाणौ, बैठाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ राजा की रांणी नूं गरभ मास सात को थो । तद सगळा मंत्री प्रधांन मिळ रांणी री पेट परनाळियो । पेट मां थी पुत्र नीस-रियो । ती सतमासिया नूं राज दीन्हो । राज सूं दान पुण्य करि सिघासण बैसांणियो ।
—सिंघासण बतीसी

उ०—२ सुधो लगावसी, तंबोल खाण नै देसी, अर चौसठ कोठा मडळ मांडसी, त्यां माहै पांगु बैसांणसी ।
—पचदंडी री वारता

उ०—३ अर वंत अेक रिड़मल री तिकी पाटण तंवरां नूं परणायी ही । सू आ विधवा हुई, तद इणनूं खडेले लाया । पीछै रावजी खडेलो लूंटियो । तद इण प्रांणकंवर नूं पकड़ी अर रावजी की बीकंजो आपरी ठकुराणी करी । नै वंल बैसांणी ।
—द. दा.

उ०—४ पछै अचळो रिणमलोत मुलताण जाय तुरकां री कटक आंण जगमाल नूं मराय नै वडा भाई गोपा नूं विकूंपुर रै पाट बैसांणियो नै जगमाल रा बेटा नूं परो काढियो ।
—नैणसी

उ०—५ तदै जगदेव दरबार आयो, तिको बो सादुक री बागो पहिरणै छै. रुपिया १) री पाघ माथै थैं कानां हाथा माहे कडा सु इसै सलूक सूं मुजरो कियो । राजा छाती सूं लगाय मिळियो, कनै बैसांणियो नै पोसाख देखि नै कह्यो, 'बेटा इसा कपडा क्यू ।'
—जगदेव पंवार री बात

बैसांणणहार, हारौ (हारी), बैसाणणियौ—वि० ।
बैसांणियोड़ो, बैसांणियोड़ो बैसांणयोड़ो—भू० का० कृ० ।
बैसांणीजणौ, बैसाणीजबौ—कर्म वा० ।

बैसांणियोड़ो—भू का. कृ.—१ गाडा हुआ, दफनाया हुआ । २ अधिकार मे करवाया हुआ, हुकुमत मे दिया हुआ । ३ देखो 'बैठायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री बैसांणियोड़ी)

बैसानर—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे)

बैसाख—स. पु. [स वैशाख] १ चैत्रमास के बाद एवं ज्येष्ठ मास के पहले आने वाला एक महीना, जिसकी पूर्णिमा विशाखा नक्षत्र मे पड़ती है ।

उ०—१ लागतै बैसाख री, बीज अरो अळबत । गम कियो मिळ 'केहरी' करी जिही सतखड ।
—रा. रू

उ०—२ म सोतम बैसाख में, गढ जाळ घर हूंत रांणी पधरावो सहर, मा रै कुवर सपूत ।
—रा. रू

२ बाण चलाने की एक मुद्रा विशेष ।

३ घोडा का एक रोग विशेष, जिसमें उसका शरीर भारी हो जाता है । (शा. हो)

४ मथदण्ड ।

रू. भे —बिसाख, वैसाख, बइसाख. बइसाह, वयसाख, बिसाख, वैसाखि, वैसाखी ।

मह.—बैसाखौ ।

बैसाखनंदण, बैसाखनंदन—स पु. [स. वैशाखनन्दन] गर्दभ, गधा ।

बैसाखा—देखो 'दिसाखा' (रू. भे) (अ. मा.)

बैसाखि, बैसाखी—वि० [स. वैशाखी] वैसाख मासकी, वैसाख मास से सम्बन्धित ।

उ०—एकरण समै कासी माहै वरस दंन माहे, हेकरण दन वैसाखी पूरणमासी करवत देवे। लठै करवत रा लेगार सारा बीजा ही कोड़ी हुंता तै पण ग्रोल मिळिग्रा। पूछ पूछ करवत देरण लागो।

—कल्यांरणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

सं. स्त्री—१ वैशाख मास की पूर्णिमा जो विशाखा नक्षत्र मे युक्त होती है। इस दिन लोग जलाशयो पर जाकर स्नान करते हैं।

२ वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की तृतिया, अक्षयतृतीया।

३ सौर मास की संक्रान्ति को मनाया जाने वाला उत्सव।

४ लगडे ग्रादमी के बगल में रखने की एक प्रकार की लकडी।

५ वसुदेव की एक पत्नी। (पुराण)

६ देखो 'वैसाख' (रू भे.)

उ०—पीडंति हैमन्त सिसिर रितु पहिलो दुख गाल्यो वसंत हित दाखि। व्याए वेली तरिग तरुवर सा १ विसतरियो वैसाखि

—वेलि

रू. भे—वैसाखि वैसाखी, व्बाएसाही।

वैसाखीग्रसटमी, वैसाखीग्रस्टमी, वैसाखीग्राटम—सं. स्त्री [सं. वैशाखी-ग्रष्ठमी] वैशाख शुक्ला ग्रष्टमी को किया जाने वाला अपराजिता देवी का व्रत एव पूजा। इस दिन देवी को उशीर ग्रौर जटामासी के जल से स्नान कराने से समस्त तीर्थों मे स्नान करने के समान फल होता है।

वैसाखीवरत, वैसाखीव्रत—सं. पु [सं. वैशाखीव्रत] वैशाखमास की पूर्णिमा को किये जाने वाला व्रत।

वैसाखो—देखो 'वैसाख' (मह., रू. भे)

उ०—तासु उपरि प्रभु ग्रवतरघा, गदि बारम वैसाखो जी। चवद स्वप्न रांणी लहया, सुपन पठिक सुत दाखो जी। —स. कु.

वैसाडणो वैसाडबो—देखो 'बैठाणो बैठावो' (रू. भे)

उ०—देही कग इगार जू तपै, राजर मांय भयङ उगतउ भांण। माघ पंडित ईम उचरई चउरी कुंवर वैसाड़ो छई ग्राणि।

—बी. दे

वैसाडणहार, हारो (हारी), वैसाडणियो—वि०।

वैसाडियोडो वैसाडियोडो, वैसाड्योड़ो—भू० का० कृ०।

वैसाड़ीजणो, वैसाडीजबो—कर्म वा०।

वैसाडियोडो—देखो 'वैठायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वैसाड़ियोडी)

वसाणो, वैसाबो—देखो 'बैठाणो, बैठाबो' (रू. भे.)

वैसाणहार, हारो (हारी), वैसाणियो—वि०।

वैसायोडो—भू० का० कृ०।

वैसाईजणो, वैसाईजबो—कर्म वा०।

वैसानर—देखो 'वैस्वानर' (रू भे)

उ०—१ पुहप छै सु काम रा बाण छै। सु कांम ग्रापरा बाण हाथ लीया। रितिराइ कहता बसंत तै कै पसाइ करि जन मनुस्य ग्रागि सौं सपरस करता था सु तैं दुख तै रहता हुग्रा। समस्त नर जगत्र वैसानर परसतौ रहीयो। —वेलि टी.

उ०—२ ग्रह झाळा गरजत, वधै लोळा वैसानर। नर पुर जन हरि नाम, उचरि समरंत ग्रगोचर। सती ग्रग पति संग, उलसि रंग पावक ग्रंकित। रोम ग्रस्त पळ चरम, होम वपु नाडि सामि हित।

—रा. रू.

वैसारण—देखो 'वैसारिण' (रू. भे.) (ग्र मा., ह. नां. मा.)

वैसारणो, वैसारबो—देखो 'बैठाणो बैठावो' (रू भे)

वैसारणहार हारो (हारी), वैसारणियो—वि०।

वैसारिग्रोडो वैसारियोडो, वैसारयोडो—भू० का० कृ०।

वैसारीजणो, वैसारीजबो—कर्म वा०।

वैसारद—देखो 'विसारद' (रू. भे.)

वैसारिण—सं. स्त्री. [स.] मछली।

रू भे—वैसारिण, वैसारण।

वैसारियोडो—देखो 'बैठायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वैसारियोडी)

वैसारू—देखो 'वैसारू' (रू. भे.)

वैसाल—सं. स्त्री [स. वैशाल] १ विशाल नामक राजा के द्वारा बसाया हुग्रा एक नगर। २ एक प्राचीन ऋषि।

वैसालि—देखो 'वैसाली' (रू भे.)

वैसालिनी—स. स्त्री. [स. वैशालिनी] विशाल राजा की पुत्री जो ग्रवि-क्षित राजा की पत्नी एव मरुत्त ग्राविक्षित राजा की माता थी।

वि० वि०—इसके स्वयवर के समय ग्रवीक्षित राजा ने इसे बल-पूर्वक पकड लिया था किन्तु उपस्थित राजाग्रो ने ग्रवीक्षित को पराजित कर पुन: स्वयवर करने की माग विशाल राजा से की किन्तु ग्रवीक्षित के पिता करन्धम ने स्वयंर में उपस्थित सभी राजाग्रों को परास्त कर ग्रपने पुत्र को बन्धन मुक्त कर इसका हरण किया एव ग्रवीक्षित के साथ इसका पाणिग्रहण संस्कार किया।

वैसाली—स. स्त्री [सं. वैशाली] २ एक प्राचीन नगरी जिसे विशाल नामक राजा ने बसायी थी एवं, जहाँ का लिच्छवी राजवश इति-हास प्रसिद्ध है तथा महावीर वर्द्धमान का जन्म इसी नगरी में हुग्रा था।

सं. पु,—२ ग्रगिराकुल मे उत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि।

रू. भे.—वैसालि।

वैसालेय—स- पु. [सं वैशालय] विशाल का वंशज, तक्षक नामक एक ग्राचार्य।

बंसावणी बंसावबौ—देखो 'बंठाणी, बंटावी' (रू. भे.)

बंसावणहार, हारौ (हारी), बंसावणियौ—वि०।

बंसावियोड़ो, बंसावियोडौ, बंसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बंसावीजणौ, बंसावीजबौ—कर्म वा०।

बंसावियोडौ—देखो 'बंठायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बंसावियोडी)

बंसास—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ विरच जाय स्वारथ बिना, स्वारथ जितरै सैण। बणक तणी बंसास की, बणक तणी की बैण। —बा. दा.

उ०—२ तो दिस मेवाड, तो वियप्प कापिय सीस। ना ऊ रयण वहीजै, बंसास कुंभकरण कृतघ्न। —नैणसी

उ०—३ माहाराजा नेडौ तो कोइ गाम न्ही। असतरी कठा सुं ल्यावुं। तरै तामस करनै कह्यो। तरै पथर री पूतळी री कह्यो। तरै कान्हड़देजी कह्यौ। उरी लै आव। माहरी छाती ऊपर मेल दै। मन बंसास छै। —वीरमदे सोनीगरा री बात

उ०—४ तद भरमल री मा कह्यौ, "औ राज पूछियौ कदै नही। अर बिनां पूछियां कहू, सो इसौ कोई हरख आपरै न थो। अर बंसास पिण कोई न थौ। तैसुं कही नही।" तद राणै कह्यौ—किसी जायगा राखिया, सो ठोड दिखावौ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

बंसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

बंसासणौ, बंसासबौ—देखो 'विस्वासणौ, विस्वासबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तुरी सपनाश तूल, झाटकियौ नाखी झूल। बंसासयं दोन्ही बाथ, डावहियं लगाण डाथ। —गु. रू. ब.

उ०—२ इण भांत हालती वेळ नै गोढवाड़ पालती सोनगरां री ठकुराई सुं सोनगरा नू प्रमाबा हुवा जु ण पावती भुडो, इण नंडा थका म्हानुं विगाड, तरै राव रिणमल नुं परणाय नै बंसासिया, आवोजाव हुई। तरै सोनगरा मिळ नै बेटी नुं कहयो—बाई म्हे थारा मांटी आगे रह सका नही, तुं बंसासनै तो म्है रिणमल नुं मारां। —राव रिणमल री बात

बंसासणहार, हारौ (हारी), बंसासणियौ—वि०।

बंसासिओड़ौ, बंसासियोड़ौ, बंसास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बंसासीजणौ, बंसासीजबौ—कर्म वा०।

बंसासि—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

बंसासियोड़ौ—देखो 'विस्वासियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बंसासियोडी)

बंसिक—स. पु. [स. वैशिक] वेश्याओं के साथ भोग विलास करने वाला एक प्रकार का नायक। (साहित्य)

बंसियोड़ौ—देखो 'बंठियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बंसियोडी)

बंसी—स. स्त्री.—१ वैश्य की स्त्री।

२ चार प्रकार की गाथाओं मे से एक, जिसमे २७ लघु वर्ण होते हैं।

उ०—१ विप्री तेरह लघुव दीजै, लघु यकवीस खित्रणी लीजै। सतावीस लघु बंसी सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई। —र. ज. प्र.

उ०—२ विप्प्री लुघ तेरह रो वणाउ, इकवीस लुघू खत्रिणि उपाउ। लुघ सतावीस बंसी लखाइ, सहि सेस सुद्रणि सभाइ। —ल. पि.

बंसेसिक—सं पु. [स. वैशेषिक] छः दर्शनो मे से एक कणाद कृत दर्शन, जिसमें पदार्थों का विचार एवं द्रव्यो का निरूपण है।

बंसो—वि०—१ किसी की नकल का या किसी के अनुरूप।

२ उस प्रकार का।

रू. भे.—वेसौ, वेहडु, वेहडौ. वेहड, रेहड, वेहडौ, वंडौ, वंडौ।

बंस्णव—वि [सं. वैष्णव] (स्त्री बंस्णवी) विष्णु का, विष्णु सम्बन्धी।

सं पु.—विष्णु का उपासक, भक्त।

उ०—बहुधा चरित्र बंस्णवं विचित्र, त्रैलोक तत्र, वह मिळत अत्र। परिब्रह्म पूरण, तत मग्न तूरण, परमात्मा प्राप्त, वह पुरुख आप्त। —ऊ. का.

२ हिन्दुओ मे, विष्णु की उपासना करने वाला एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय।

३ इस सम्प्रदाय का अनुयायी व्यक्ति।

रू. भे.—बेसनव, वेसनव्व, बेस्नव, बेस्नव्व, वइसनव, बेसनव, बंसणव, बंसणु, बंसनव, बंसनो, बंस्णवु।

बंस्णवचाप—स. पु [स वैष्णवचापः] विश्वकर्मा द्वारा निर्मित सारंग नामक धनुष।

बंस्णवी—स स्त्री. [स वैष्णवी] १ विष्णु की शक्ति।

उ०—तावदिद सकल जगजीवति ईस्वरै विस्वकरत्रित्व मां मनंति मनीसिण, एकि संसार नी स्रस्टि ईस्वर हुंती कहइं, एकि ब्रह्मा, एकि बंस्णवी, एकि मायमाया, एकि सक्तितत्व कहइ, पणि लक्ष्मीकृत स्रस्टि मांनीइ। —व. स.

२ देवी, दुर्गा।

उ०—देवी बंस्णवी महेसो ब्रह्म्माणी, देवी ईंद्राणी चंद्राणी रमाराणी। देवी नारसिंघी बराही विख्याता, देवी इळा आधार आसुर हाता। —देवि.

३ गंगा।

४ लक्ष्मी।

५ तुलसी।

६ वैष्णव सम्प्रदाय की स्त्री।

उ०—खाली एक मलोट धोती में आपरा सरीर नै आभछट सूं बचावण री फिजूल कोसीस करती दरसण री भूखी वैस्णवियां, ढीली धोती अर नेहरू जाकेट पैरयोड़ा व्यापारी, दस गज री साड़ी नैं गैलाई सूं लपेटनें माथै पर फूलां अर साग-भाजी रा ओडा उठायोड़ी मराठणियां, कजळा दही ज्यूं जिसा कपड़ा मैं फूटरी-फूटरी गुजरातणियां अर हाथां मैं थेलिया लियोड़ा ग्राहक सब एक साथै ईज बाड़ा मायनै सूं बकरियां निकळी व्है ज्यूं परभात मैं ईज निकळग्या हा। —रातवासो

वैस्णवु—देखो 'वैस्णव' (रू. भे.)

उ०—वैस्णवु राति बारह पुहुर जागइ। —व. र.

वैस्य—देखो 'वैस्य' (रू. भे.)

वैस्या—देखो 'वैस्या' (रू. भे.)

वैस्येसवर, वैस्येसुवर, वैस्येस्वर—स. पु. [सं. वैश्येश्वर] महानंदा के उद्धारार्थ अवतीर्ण हुआ एक शिवावतार।

वैस्रप—स. पु. [सं. वैसृप] कश्यप एवं दनु का एक पुत्र दानव।

वैस्रवण—स. पु. [सं. वैश्रवणः] १ धनपति, कुबेर। (अ. मा., नां. मा. ह. नां मा.]

२ लंकापति रावण।

३ शिव, महादेव।

रू. भे.—वैसवरण, वईस्रवण, वेसमण वेसवण वेस्रमण, वेस्रवण।

वैस्रवणाय, वैस्रवणालय—स. पु. [सं. वैश्रवणालय] १ कुबेर के रहने का स्थान।

२ वट वृक्ष। (अ मा., नां मा., ह. नां मा.)

वैस्वजुग—देखो 'वैस्वयुग' (रू. भे.)

वैस्वदेव—सं. पु. [सं. वैश्वदेव] १ विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाने वाला होम या यज्ञ।

२ विश्वदेव को दिया गया उपहार।

वैस्वदेवत—सं. पु. [सं. वैश्वदेवत] सत्ताईस नक्षत्रों में से उत्तराषाढा नामक नक्षत्र।

वैस्वयुग—स. पु. [सं. वैश्वयुगः] वृहस्पति के शोभकृत, शुभकृत, क्रोधी, विश्वासु और पराभाव नामक पांच संवत्सरों का युग या समूह। (फलित ज्योतिष)

रू. भे.—वैस्वजुग।

वैस्वानर—सं. पु. [सं. वैश्वानरः] १ अग्नि की उपाधि। २ इन्द्र सभा का एक महर्षि। ३ भानुनाम अग्नि के प्रथम पुत्र का नाम। ४ वह अग्नि जो अन्न पचाती है। ५ कश्यप एवं दनु के एक पुत्र दानव का नाम, जिसके, उपदानवी, हयशीरा, पुलोमा एवं कालका नाम की चार कन्याएँ थीं।

६ वेदांत में चेतन शक्ति।

७ परमात्मा, ईश्वर।

८ आग, अग्नि।

उ०—जळ वैस्वानर ताढ़ड बाइ, पस्चिम ऊगइ दीस। नारायण टलतउ कान्हड़दे, कहि न नांमइ सीस। —कां. दे. प्र.

९ अग्नि देवता।

रू. भे.—बसदर, वेसदर, वेसानर, वैसदर, वैसानर, वासंदर, विसनर, विसम्रर, विस्वानर, वीसनर, वेसनर, वेसम्रर, वेसवानर, वेसानर, वैसदर, वैसनर, वैसनर, वैसम्रर, वैसांनर, वैसानर।

वैस्वानरचूरण—स. पु. [सं. वैश्वानरचूर्ण] सेंधानमक, अजवायन और हरें आदि से बनाया जाने वाला एक प्रकार का पाचक चूर्ण विशेष। (वैद्यक)

वैस्वानरि, वैस्वानरी—स पु. [सं. वैश्वानरि] भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि।

वैस्वामित्र—स. पु. [सं. वैश्वामित्र] विश्वामित्र के वंशज।

वैवारियोखीच—देखो 'वेसवारियोखीच' (रू. भे.)

वैहंग—देखो विहग' (रू भे.)

उ०—सोभत मंद सीतळ समीर, कोकला कुहक क्रत सथर कीर। वाणी अनेक कूजत वैहग, नाचत मयूर आनद अग।

—मयारांम दरजी री बात

वैहचणो, वैहचबो—देखो वैचणो, वैचबो' (रू. भे.)

उ०—यूं करता, दोनूं भाया रै आपस मैं दूदै अर भोज रै वडो वैध पडियो। ताहरा राव सुरजन बेटा बेऊ तेडिनैं कह्यौ—थैं मो ऊपर फिरिया। थैं म्हारौ कह्यौ न मांनौ। म्हैं राज सूं कोई कांम नहीं। थैं धरती वैहंच ल्यो। —नैणसी

वैहचणहार, हारो (हारी), वैहंचणियो—वि०।

वैहंचियोड़ो, वैहंचियोड़ो, वैहंच्योड़ो—भू० का० कृ०।

वैहचीजणो, वैहचीजबो—कर्म वा०।

वैहंचियोड़ो—देखो वैंचियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वैहंचियोड़ी)

वैहंडणो, वैहडबो—देखो 'विहडणो, विहंडबो' (रू. भे.)

उ०—भागीरथी तणं तट भारथ, सत्र वैहंडिया वखाड़ सार। रिम रेखग भेळाकर रचिया, सिव पर घर सिवपुरी सिगार।

—चतुरो मोतीसर

वैहंडणहार, हारो (हारी), वैहंडणियो—वि०।

वैहडियोड़ो, वेहडियोड़ो, वेहडयोड़ो—भू० का० कृ०।

वैहडीजणो, वैहंडीजबो—कर्म वा०।

वेंहुंडियोड़ो—देखो 'विहडियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. वेंहुंडियोड़ी)

वेंह—१ देखो 'वयस' (रू. भे.)
उ०—छापर तवल ज वजिजवा, हुइ मरवा हल्ल । लाज कहे मर ज्यावणो, वेंह कहे घर चल्ल । —सिवसिंघ वागेला री गीत
२ देखो 'विधाता' (रू. भे.)
३ देखो 'वे'माता' (रू. भे.)
उ०—पमगा छाड पागड़ा वात श्रेवडा विचारी, मागे तूट आपणे वेंर 'सारंग' वधारी । होसी होवण हार वेंह लिखियो जिम ह्वे से, इण अपार धन देख कहो डर जावा केसे । पा. प्र.
४ देखो 'वेह' (रू. भे.)

वेंहणो, वेंहबो—देखो 'वहणो, वहबो' (रू. भे.)
उ०—वळे आधा चलाया । सु धरती कोस एक आय रही । सासरे सो वेंड़ो गयो । इतरे एक वडो पाकेट ऊठ पाहड हुवे तिसड़ो वडो विपरीत तिको आडो आय फिरियो । सु घोड़े मुं आ वेंहण देवे नहीं । —मांडणसी कूंपावत री वात
वेंहणहार, हारो (हारी), वेंहणियो—वि० ।
वेंहिओड़ो, वेंहियोड़ो, वेंहयोड़ो— भू० का० कृ० ।
वेंहीजणो, वेंहीजबो—भाव वा० ।

वेंहतीवाण—१ देखो 'वेंतियांण' (रू. भे.)
२ देखो 'वहतीवांण' (रू. भे.)
उ०—६०००) गाव रें हासल रा धड कसाल पाटी । ५०००)रु मारग वेंहतीवाण सुं समत १७१६ पातसाह । —नैणसी

वेंहरणो, वेंहरबो—देखो 'वेंरणो, वेंरबो' (रू. भे.)
उ०—जिसो जोध वलि भद्र पळंब दाणव महारियें । जिसो वीर नरसिंघ, हरिणकस्सिप वेंहरियं । —गु. रू. बं.
वेंहरणहार, हारो (हारी), वेंहरणियो—वि० ।
वेंहरिओड़ो, वेंहरियोड़ो, वेंहरयोड़ो—भू० का० कृ० ।
वेंहरीजणो, वेंहरीजबो—कर्म वा० ।

वेंहराड़णो, वेंहराड़बो—देखो 'वेंराणो, वेंराबो' (रू. भे.)
वेंहराड़णहार, हारो (हारी), वेंहराड़णियो—वि० ।
वेंहराड़िओड़ो, वेंहराड़ियोड़ो, वेंहराड़योड़ो—भू० का० कृ० ।
वेंहराड़ीजणो, वेंराड़ीजबो—कर्म वा० ।

वेंराड़ियोड़ो—देखो 'वेंरायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वेंराड़ियोडी)

वेंहराणो, वेंहराबो—देखो 'वेंराणो, वेंराबो' (रू. भे.)
वेंहराणहार, हारो (हारी), वेंहराणियो—वि० ।
वेंहरायोड़ो—भू० का० कृ० ।
वेंहराईजणो, वेंहराईजबो—कर्म वा० ।

वेंहरायोड़ो—देखो 'वेंरायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वेंहरायोडी)

वेंहरावणो, वेंहरावबो—देखो 'वेंराणो, वेंराबो' (रू. भे.)
वेंहरावणहार, हारो (हारी), वेंहरावणियो—वि० ।
वेंहराविओडो, वेंहरावियोड़ो, वेंहराव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
वेंहरावीजणो, वेंहरावीजबो—कर्म वा० ।

वेंहरावियोड़ो—देखो 'वेंरायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वेंहरावियोड़ी)

वेंहरियोड़ो—देखो 'वेंरियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. वेंहरियोडी)

वेंहळ, वेंहल—वि०—१ विना हल का, हलरहित ।
२ देखो 'वेहल' (रू. भे.)
३ देखो 'वेहल' (रू. भे.)
४ देखो 'बहल' (रू. भे.)
उ०—१ पछे सचियायजी आय सुपनं में हुकम दियो, वांसे हाथ दिया नें कह्यो—काळं वागं, काळी टोपी, वेंहल रे काळी खोळी, काळा बळद जोतरिया, जिदा रे रूप किया साम्हा मिळसी । ओ गैंचद छं, तू मत चूकं, कूट मारे । —नैणसी
उ०—२ तद आसथानजी बोलिया—जु बेटी थारी परणाय, म्हे जांणा । तद ब्राह्मण बेटी परणाई, फेरा लिया । पछं कांनं रा आदमी ब्राह्मण री बेटी नें वेंहल बेसाण ले हालिया । —नैणसी
उ०—३ इतरें महाडोल मंगायो । भरमल नुं असवार कीनो । महाडोल रें पूठं रथ वेंहला लगाई, पूठं उठ, घोडा सारा आगं पाछं । इसं में कुंवरसी आप असवार हुय आय पोहतो, सो महाडोल री पाखती आइ लागो । —कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—४ सांखला कही, वेंहल छोड देवो, आफं चली आसो । तद खरळा वहलवान नुं उतार रथ ऊपर सहेली नुं चाढि वहीर कोवी । वहला भारवरदारी सारी रथ रें पुठं लगाय दीया । ऊभा देखण लागा । —कुंवरसी सांखला री वारता

वेंहलणो, वेंहलबो—क्रि अ, बुझना ।
उ० -अग्गिन बहू जत एक हियू नव वाहर 'पाल' हुतं तइयूं । मुझ बाधव 'पाल' जिसो न मिळं, बस दीपक आज परों वेंहलं ।
—पा. प्र.
वेंहलणहार, हारो (हारो), वेंहलणियो—वि० ।
वेंहलिओड़ो, वेंहलियोड़ो, वेंहल्योड़ो—भू० का० कृ० ।
वेंहलीजणो, वेंहलीजबो—भाव वा० ।

वेंहलि, वेंहली—देखो बहल' (रू. भे.)
उ०—कह्यो—मोहरत री वेळा टळी जाय छं । ओळ खोली । सेजवाळा बारणं ऊभा छं । तरं उणे ओळ खोली । सेजवाळा ओह

माहे आया। तरे रावळा बंहुली मांहि था कूद-कूद ओनसालिया उतरिया। बहिया रा जिकै कोट मांहे हुता सु लोह कूट मारिया।

—नैणसी

बेंहुलियोड़ो-भू० का० कृ०—बुझा हुआ।

(स्त्री. बेंहुलियोड़ी)

बेंहळो, बेंहलो-वि० (स्त्री. बेंहळी, बेंहली) १ दुखी, व्यथित, व्याकुल।

उ०—तिरसी निवांण तायें ग्रहै तट, बेंहळी जाव त्रिया पीहर वट। जम कवियण जावें दुखी जांम, तद ग्रहै छत्रियां सरण नाम।

—रामदांन लाळस

२ मस्त, उन्मत।

३ शीघ्र, प्रतिशीघ्र, जल्दी।

उ०—१ बुध थायाय चारण होण सकै, ध्रवलै दन कोळू ध्र गाम धकै। कमधां घर राज किसूं कहला, वत वाहर वीर चढ़ौ बेंहला।

—पा. प्र.

उ०—२ घल आवड़ डाकेय जूंझ घणौ, तिम सूर बंधे सेहै बार तणौ,। पुड जूझुहै 'पाल' हुतै पैहला, विढ़णा पर झीण न्हलो बेंहला।

—पा. प्र.

रू. भे —वेहलो, वेंहिलो।

बेंहवार—देखो 'व्यवहार' (रू भे.)

उ०—जे ऊपर री तभर सुपर बेंहवार, जिण घूमा ऊपरी फाड फड़क्क फाडती। जिण समचै सोत्रम, जेण बदरा वधावै। जिण सोमावै ह्'ट, जेण लाख्या लूटावै।

—कमरसी खीवो सूरीत श्रासियो

बेंहवारियो—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

बेंहवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

बेंहायस-स. पु. [स] १ पातालनरेश बलि का एक विमान जिसे मय ने बनाया था तथा यह शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित एवं अनेक आयुधों से युक्त था।

२ एक प्रसिद्ध तीर्थ कुण्ड जो नरनारायणाश्रम के पास स्थित है।

वि०—आकाश का; आकाश सम्बन्धी।

बेंहार—१ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—नयन तै आसू खेरिया, कब म्है भेटस्या सांभरधा-राव। जीवन घडोय तै नवि रहई, जिण सू कामनी हुवा वेंहार।

—वी दे.

२ देखो 'बेंभार' (रू भे)

बेंहारियो—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

बेंहासक, बेंहासिक-वि० [स. वैहासिक] हंसी-मजाक करने वाला, मसखरा, विदूषक।

बेंहियोड़ो—देखो 'वहियोड़ो' (रू. भे)

(स्त्री. बेंहियोडी)

बेंहिलो—देखो 'बेंहलो' (रू. भे.)

उ०—मग्र कोटम दें मार, हार देवता हुई हरि। त्राहि त्राहि सुर तबै, किसन बेंहिलो ऊपर करि।

—पी. ग्र.

बेंहु, बेंह, बेंहू—देखो 'बेऊ' (रू भे)

उ०—खीवो, बिजो धाडावी बडा दोडा बडा चोर। बिजो सोभित वसै। खीवो नाडोल वसै। बेंहू रा श्रोसाप बडा। ऊ उण रो नाम जाणै। ऊ उण रो नाम जाणै। पिण मिळिया कदे नही।

—खीवोली

बेंहूकणो बेंहूकबो—देखो 'विसूकणो, विसूकबो' (रू. भे.)

बेंहूकणहार, हारो (हारी), बेंहूकणियो—वि०।

बेंहूकिग्रोड़ो, बेंहूकियोड़ो बेंहूक्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेंहूकीजणो, बेंहूकीजबो—भाव वा०।

बेंहूकियोड़ो—देखो 'विसूकियोड़ो' (रू. भे)

बेंहूंकियोड़ो—देखो 'विसूकियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेंहूंकियोडी)

बेंहूगणो, बेंहूगबो—देखो 'विसूकणो, विसूकवो' (रू. भे.)

बेंहूगणहार, हारो (हारी), बेंहूगणियो—वि०।

बेंहूगिग्रोड़ो, बेंहूगियोड़ो, बेंहूग्योड़ो—भू० का० कृ०।

बेंहूगीजणो, बेंहूगीजबो—भाव वा०।

बेंहूगियोड़ो—देखो 'विसूकियोड़ो' (रू. भे.)

बेंहूंगियोड़ो—देखो विसूकियोड़ो' (रू भे)

(स्त्री बेंहूंगियोड़ी)

बोंकार—देखो 'वोकार' (रू. भे)

बोंमें—देखो 'वासे' (रू भे.)

बोंसलो बोंसूलो—देखो 'वसूलो' (रू. भे)

बो-सं पु—१ विनय, प्रार्थना। (एका.)

२ सातस्वर, सप्तस्वर। (एका)

३ समय, काल, वक्त। (एका.)

४ पेड़, वृक्ष। (एका)

५ रथ हांकने वाला, सारथि। (एका.)

६ देखो वो' (रू. भे.)

बोग्रणो, बोग्रबो—देखो 'बोवणो, बोवबो' (रू. भे.)

बोग्रणहार, हारो (हारी), बोग्रणियो—वि०।

बोइग्रोड़ो, बाइयोड़ो, बोयोड़ो—भू० का० कृ०।

बोईजणो बोईजबो - कर्म वा०।

बोइयोड़ो—देखो 'बोवियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बोइयोडी)

बोई—देखो 'बहो'।

मवै बोग्यूं मामा—भाणेज रै भाख्यां मैं जांणै भेरू लिवै । हाथां रै बटका भरै । म्हारै एवड मैं सूं इज बकरी लेय गया ? घर बोई जोर रै जरकै ? वाघ रै गळै बाडला नै हाथ नाखियौ ।

—ग्रमरचूंनडी

उ०—२ बाकै सिर मोर मुकंट मेरै पति बोई, सख चक्र गदा पद्म कठ माळा सोई । भाई मैं भक्त जाण जगत देख मोई, ग्रसुवन जळ सीच सीच प्रेम बेल बोई । —मीरां

बोउलीचड़ी बोऊलीचडी—देखो 'बहुलीचड़ी' (रू. भे.)

बोक—१ देखो 'बोक' (रू. भे.)

२ देखो 'बूक' (रू. भे.)

बोकड़, बोकड़्, बोकड़ौ, बोकडु, बोकडौ—देखो 'बोकडो' (रू. भे.)

बोकणौ, बोकबौ—देखो 'बोकणौ, बोकबौ' (रू. भे.)

बोकणहार, हारौ (हारी), बोकणियौ—वि० ।

बोकिग्रोड़ौ, बोकियोड़ौ, बोक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बोकीजणौ, बोकीजबौ—कर्म वा० ।

बोकारणौ, बोकारबौ—देखो 'वाकारणौ, वाकारबौ' (रू. भे.)

उ०—सुणीजै स्यारां री सरणाट, भाडका तीतर तीखा बोल । बोकारै बसनौडी सूम्याड़, आपणौ आपौ राखै तोल । —साझ

बोकारणहार, हारौ (हारी), बोकारणियौ—वि० ।

बोकारिग्रोड़ौ, बोकारियोड़ौ, बोकार्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बोकारीजणौ, बोकारीजबौ—कर्म वा० ।

बोकारियोडौ—देखो 'वाकारियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बोकारियोडी)

बोकियौ—१ देखो बोखौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बूकियौ' (रू. भे)

बोकौ—देखो 'बोखौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बोकी)

बोखद, बोखदि, बोखदी, बोखध—देखो 'ग्रोखद' (रू. भे.)

उ०—करक कळजे भारी **बोखद** न लागै कारी, तुम घर आवौ वैद मेरै पीर भारी है । बिरहिन विरह बाढ्यौ तातै दुख भयौ गाढौ, विरह के बाण लै लै विरहिनी मारी है । —मीरा

बोखलौ, बोखियौ—देखो बोखौ' (ग्रल्पा., रू. भे)

(स्त्री. बोखली

बोखौ—देखो 'बोग्वौ' (रू भे.)

(स्त्री. बोखी)

बोडणौ, बोडबौ—देखो 'ग्रोडणौ बोडबौ' (रू. भे)

बोडणहार, हारौ (हारी), बोडणियौ—वि० ।

बोडिग्रोडौ, बोड़ियोडौ बोड्योडौ—भू० का० कृ० ।

बोड़ीजणौ, बोडीजबौ—कर्म वा० ।

बोड़ाणौ, बोड़ाबौ—देखो 'बोड़ाणौ, बोड़ाबौ' (रू. भे.)

बोड़ाणहार, हारौ (हारी), बोड़ाणियौ—वि० ।

बोड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

बोड़ाईजणौ, बोड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

बोड़ायोड़ौ—देखो 'बोडायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. बोड़ायोडी)

बोड़ियोड़ौ—देखो 'बोडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बोड़ियोडी)

बोड़ियौ—देखो 'बोडियौ (रू. भे,)

बो'ड़ी—देखो 'बोरडी(रू. भे.)

बोचणौ; बोचबौ—देखो 'बोचणौ, बोचबौ' (रू. भे.)

बोचणहार, हारौ (हारी), बोचणियौ—वि० ।

बोचिग्रोडौ, बोचियोडौ, बोच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

बोचीजणौ, बोचीजबौ कर्म वा० ।

बोचियोडौ - देखो 'बोचियोडौ' (रू भे)

(स्त्री बोचियोडी)

बोछौ—देखो ग्रोछौ' (रू. भे.)

उ०—१ त्रिवेणी तटि वास तहा वग्र ना जाइयै, ए पासा ए डाव सीस लै चाइयै । **बोछै** पाणी पैसि समद क्यूं छाडिए, हरिहां जन हरिदास भजि ग्रलख निरजननाथ तहा मिळि लाडिए ।

—ह. पु. वा.

उ०—२ **बोछा** करै गुमान बडा कै नाहि रे, भादू वरसै मेह नदी घर राहि रे । दरिया उभळै नाहि ना माहि समाहि रे, हरिहा जन हरिदास यूं मांधि देखि जग माहि रे । —ह पु वा

बोज—सं. पु.—१ खाट की की बुनावट ।

२ देखो 'बोझ' (रू. भे)

बोजनीळौ—स पु.—शुभ रग का एक प्रकार का घोडा विशेष ।

(शा. हो)

बोजलखी—स पु. - शुभ रंग का एक प्रकार का घोडा विशेष ।

(शा हो)

बोझाड़ौ—स. पु.—१ झटका ।

२ प्रहार, चोट ।

वि०—प्रहार करने वाला ।

बोट—१ देखो 'ग्रोट' (रू. भे.)

उ०—१ जग मूं प्रीति कहां लौ कीजै, सकळ काळ की चोट । उलटी बेलि ग्रनळ का सुत लौ, पकड़ि राम की **बोट** ।

—ह पु वा.

उ०—२ भडा हाक भंकमप तीर गोळी वहै, सुभटन ताकै बोट चोट सन्मुख सहै । ग्यान खडग लै हथि न फिरि पूठा फिरै, हरिहा जन हरिदास मूरवीर ग्ररिजीत महरिका होय रहै । —ह. पु. वा.

उ०—३ जन हरिदास हरि सुमरतां, दूरि म्रांन सब वोट । राग दोख हिरदै नहीं, करमूं करै न चोट । —ह. पु वा.

उ०—४ तहां कंध का छेव, म्रांन नर वोट न छूटै । दस दरवाजा रोकि, काळ काया गढ लूटै । —ह. पु. वा.

उ०—५ म्रांन वोट ऊभा मजूं, सकै तो पड़दा टाळि । साहिब के पड़दा नहीं, तूं प्रपणी वोट सभाळि । —ह. पु. वा.

२ देखो वोट' (रू. भे.)

उ०—पूना घर वीधी सर पाधर. हेदळ गैदळ सबळ हींचि । पड़ची नह सेवी प्राव पांचा. वोट मारतो समद वींचि ।

—राजा जैसिंघ कछवाहा म्रामेर री गीत

वोटणो, वोटबो—देखो वोटणो वोटबौ' (रू. भे)

उ०—१ नमी नर नाह हयवाह 'पदमा' निडर, वोट ग्ररिघाट ग्रमुरां सवाही । साहियां खड़ग 'करणेस' रा छावड़ा, मालियो मलो ग्रंबखास मांही । —पदमसिंघ री गीत

उ०—२ सालळं सींधूग्रो राग सरणाइयां, भलांई प्राज मारथ करी भाइया । मेह मेहां सरिसि म्राधि जूटा मोहरि, वांण वाणा सरिसि वोढ़िया बहादरि । —पी. ग्रं.

वोढणहार, हारी (हारी), वोढणियो—वि० ।

वोटिग्रोड़ो, वोढियोड़ो, वोटयोड़ो—भू० का० कृ० ।

वोटीजणो, वोटीजबो—कर्म वा० ।

वोटर-स. पु. [ग्र] वोट देने वाला या वोट देने का ग्रधिकार रखने वाला व्यक्ति ।

वोटरलिसट, वोटरलिस्ट-सं. स्त्री. [ग्रं. वोटरलिस्ट] वह सूची जिसमें वोट देने वाले या वोट देने का ग्रधिकार रखने वाले व्यक्ति का नाम दर्ज हो ।

वोटियोड़ो—देखो 'वोटियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. वोटियोड़ी)

वोडविलाव, वोडबिलाव, वोडबिलावर—देखो 'वोडबिलाव' (रू. भे.)

वोढ-सं. पु.—१ युद्ध, लड़ाई ।

२ देखो 'वोढ' (रू. भे.)

वोढण-सं स्त्री.—१ सर्प की कचुकी ।

उ०—रहो रचि मांही रस पाया, पोवन छप्या सहजि घरि ग्राया । ग्रहि वोढण ज्यूं तजि गुणकाया, भेदी जाइ ग्रमेद समाया । —ह. पु. वा.

२ ग्रोढ़ने का वस्त्र, चादर ग्रादि ।

उ०—ग्रहि ग्रधोगति ग्रंध, ग्रग्यांन, ग्रालस 'उरि' लागा । 'त्रिबधि' ग्रंधारे बंसि, ग्यांन वोढण नहि नागा । —ह. पु. वा.

वोढणिवो, वोढणो—देखो 'ग्रोढणो' (रू. भे.)

वोढणो, वोढबो—देखो 'वोटणो, वोटबो' (रू. भे.)

उ०—सोमंद हुवह सुजळ सायर, रेण सुत जळनद्य रैणायर । सुजळ गोडीरव सायर, महण मण महराण । सुतर 'सूरज' सुजळ सारै धरि वोहाळ उतारै । मारका सत्र वोढ मारै जुड़ै 'भंजण' जुवांन । —महाराजा गजसिंह री गीत

वोढणहार, हारो (हारी), वोढणियो—वि० ।

वोढियोड़ो, वोढियोड़ो, वोढ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वोढीजणो, वोढीजबो—कर्म वा० ।

वोढा—देखो 'वोढा' (रू. भे.)

वोढियोड़ो—देखो 'वोटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वोढियोड़ी)

वोडो-वि.—छोटा, कनिष्ठ ।

उ०—ताहरा पाबूजी कह्यो—बाई ! हू तोनूं दोदं सूंमरै री सांढ़ा रा वरग ग्रांण देईस । ताहरां गोगोजी हंसिया कह्यो—ग्राजै दोदो सूंमरो वोड़ो रावण कहीजै । तैरी सांढा किसीमात ले ग्रावसी ? ताहरां पाबूजी बोलिया—सांढा लै ग्राईस । —नैणसी

वोदो—देखो 'वोदो' (रू. भे.)

उ०—पीसणियां पीसं, रांधणियां रांधं, वखतसर न्हावो-धोवो ग्रर सिह्यां सोल री वातां सांघं । लंगर मैं बंठ'र जीमै, कतार मैं कामण मांडै, नूंवा डरता रैवै, वोदा री भी माजै । ग्रफसर रै हुकमां हालै थको भोज सूं मालै । —दसदोख

वोपणो, वोपबो—देखो 'ग्रोपणो, ग्रो बो' (रू. भे.)

उ०—दमक छटा छबिडंड पताका देखिया, पटा हाट व्योपार जुहारो पेखिया । ग्राभुषण नर नारि ईसो विध वोपिया, जांण क सुरपुर लोक इधक छबि जोपिया । —बगसीराम प्रोहित री बात

वोपणहार, हारो (हारी), वोपणियो—वि० ।

वोपियोड़ो, वोपियोडो, वोप्योड़ो—भू० का० कृ० ।

वोपीजणो, वोपीजबो—कर्म वा० ।

वोपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—१ दुनिया रो वोपार है, सूका देस-देस छोडै ग्रर हरचा देस-देस'र वरै । जकै घर सूं मोकळो खायो-कमायो ग्रर मोटा मोटा कारज सारचा वी: घर री हो माज म्होयो ग्रर तिलर करै है । —दसदोख

उ०—२ सुत को दुख दिल मांहि दहै, साह सहरि एक दिलो है । घरं वरच लखमी ग्रोतार. सोदो सूत बडो वोपार । —भोजराज

उ०—३ उण देस वालो बठे प्रांणां रो वोपार जिण सिरदार रै हम तम होवै, कठै ई सत्रुवां ऊपर चढै है कठा सूं ई दुसमणां री फौज ऊपर ग्राय गई है इण तरै प्रांणां रो वोपार होवै जठै लै चालै । —वी. स. टी.

उ०—४ वणक कहै वोपार विध; सीखो गुरु सूं सोक्ष । ऊंट मुग्रो नहि ग्रोरखो, कापड़ ऊपर वोक्ष । —बां. दा.

बोपारी—देखो 'ब्यापारी' (रू. भे.)

उ०—रे बोपारी करि दिल इकतारी, वाचा वीर संभाळी । श्रीहरि कौळ कियो मन मेरा, उदयो दसवद टाळी । —भींवराज

बोपारौ—देखो 'व्यापार' (मह., रू. भे.)

उ०—भला हम विणजारा पूरे साह का, विणज करण बोपारी । भला खोटा खोटा विणज न वोहरा, माणिक्ला दावो पारी ।

—दीनसुदरदी

बोपियोड़ौ—देखो 'ओपियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बोपियोड़ी)

बोबार-स. पु —१ कन्या का सम्बन्ध निश्चित करते समय दामाद या दामाद के सम्बन्धियो द्वारा कन्या के पिता या सरक्षको को दिया जाने वाला धन ।

२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बोभर—देखो 'बोभर' (रू. भे.)

उ०—१ मीको पड़घां करणं नें चेतें करो हो, नी तो करणो आग्यो वाळ्योड़ा तिला मैं ! भोठ री छाया देखो मजा करो । इतो कं परो'र करणं बोभर बासतं री हांडी भर'र मगाई। हांडी रे बासते मैं एक धोबो कूट्योडी मिरचा नखाई । अचेत पडी राणी री मूंडी जगती मिरचा री हांडी माथं मेलायो । —दसदोख

उ०—२ बठं अघबूढी सी एक घरधिराणी, लाल लूंक रियो भोळ्या चूले कनै बैठी काचर छोलें है । पाळो लागं जद बोभर मैं हाथ तपावें, कणा ही सं साथं लकड़ी ही अगरेल देवं है । —दसदोख

बोभरियौ—१ देखो 'बोभरियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोभरौ' (मल्पा , रू. भे.)

बोभरौ—देखो 'बोभरौ' (रू. भे.)

बोमंगी—देखो बोमगी' (रू. भे)

बोम—देखो 'व्योम' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना मा)

उ०—१ रत खाळ रळ तळ पाखर प्रब्बळ, होहू हूकळ यहू हुवे । बळकंत विजूजळ बीजक वहूळ, ढोल त्रिमंगळ बोम घुवे ।

—गु रू ब

उ०—२ गोम डमर हुवं बोम गाहीजियं, अंत रं बोम गर दोम लागा । सोन रा ऊघड धोम रा सकुडं, गयण गजगाह दळ राह लागा । —कल्याणदास महडू

उ०—३ बोम धराबें गाजियं, ढोल हुवा सब ठोड । आयो रूपो' 'राम' तण, हांम धणी राठौड़ । —रा रू.

उ०—४ अरोहें हूए राम मेंइं अनूज, धरा बोम धुज्जे सिरा लक धुज्ज । अड़ीखभ जोधा पदम्म अठारा, पिलं थाट नीसांण बाजं अठारा । —सू. प्र.

उ०—५ बोम सलचूड सरीखा वहै, घेनक सरिखा डाहिया । निमवरा घणा मोहिण नरंद, गोवळ बंठे गाहिया । —पी. ग्रं.

बोमकेस, बोमकेसी—देखो 'व्योमकेस' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा., ह. ना. मा)

बोमगंगा—देखो 'व्योमगगा' (रू. भे.)

उ०—देवी कावेरी तापि क्रस्ना कपिला, देवी गोण सतलज भीमा सुसीला । देवी गोमगगा देवी बोमगंगा, देवी गुप्त गंगा सुधीरूप अगा । —देवि.

बोमगामी—देखो बोमगी' (रू. भे.)

बोमचक्री—देखो 'बोमचक्री' (रू. भे.)

बोमतलक, बोमतिलक—देखो 'बोमतलक' (रू. भे.)

बोमदेव-सं पु [स वामदेव] शिव, महादेव । (ना. मा.)

बोमपट, बोमपाट-सं पु [स. व्योम+पट] आकाशमार्ग ।

उ०—समु उपडे कमदावति पटेल विकटा चाळो, बोमपटां भाळे रयल बरमं बाणाव । जोगी जटा वाळ डाक डमरु बजाय जठे, 'हटा' वाळं जाडा घड़ा झोकिया हैराव । —ईसरदास खिड़ियो

बोमवाण, बोमवाणी-स स्त्री [सं. व्योम+वाणी] आकाशवाणी, देववाणी ।

उ०—देवी गौर रूपा अखां नव निधि, देवी सक्कळा अक्कळा सत्व सिद्धि । देवी प्रउज विमोहणी बोमवाणी, देवी तोतला गुंगला कत्तियाणी । —देवि.

बोमि—देखो 'व्योम' (रू भे)

उ०—१ 'वीक'हर राइ सामळि वचन्न, रीसाइ किया राता रतन्न । ऊपसिय बोमि लागउ अबोह, सामळिग्रं कथिनं जइतसीह ।

—रा ज. सी.

उ०—आदिणउ सजाणइ कळह चल्लि, सिरि वाळ सोह हारइ न हल्लि । खीवड़उ सुकरि साहियइ खग्ग, लाखीकि चईनउ बोमि लग्ग ।

—रा. ज. सी.

बोर- देखो 'भोर' (रू. भे)

उ०—बावली तणा घडा ज्यू बरतं, काया जतन न कीतो काज । दिली भीच बोर सो दूजो, राखण हार न घड़ियो राज ।

—राजा माधौसिंह मग्घसाहा री गीत

बोरगत देखो 'वोगत' (रू. भे)

बोरणौ, बोरबो-क्रि स.—१ डुबोना, तर-बतर करना ।

उ०—दिगता लौं दोरें मचल मन मोरें मुदमुदी, बिदांती झंझोरें विसय विस बोरें बुदबुदी । पछारें पापों को त्रिपत भण तापौं स्रुति तलें, मिलाबें मेधा को बिधि बिधि निसेधा कत मलें ।

—ऊ का.

२ देखो 'बुहारणी, बुहारबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बोळणी, बोळबौ' (रू. भे.)

बोरणहार, हारो (हारी), बोरणियौ—वि०।

बोरियोड़ो, बोरियोड़ौ, बोरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बोरीजणौ, बोरीजबौ—कर्म वा०।

बोराणी, बोराबौ—१ देखो 'बुहराणी, बुहराबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बौराणी, बौराबौ' (रू. भे.)

बोराणहार हारो (हारी), बोराणियौ—वि०।

बोरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बोराईजणौ, बौराईजबौ—कर्म वा०।

बोरायोड़ौ—१ देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बौरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बोरायोड़ी)

बोरियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ डुबोया हुआ, तर-बतर किया हुआ।

२ देखो 'बुहरायोड़ौ' (रू. भे.) ३ देखो 'बोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बोरियोड़ी)

बोरु—देखो 'बोर' (रू. भे.)

बोरौ, बो रौ—देखो 'बो'रौ' (रू. भे.)

उ०—१ लळकत आंझळिया वाजण नै लागो, भूखा मरतोड़ो लळ-कत पड भागी। बो'रा यळ विहूणा तिल लळकत तरजै, बूढी चेली नै साधु ज्यों बरजै। —ऊ का.

उ०—२ कदै तो पड़ग्यो काळ अभागो, गिण-गिण काढ्यो दोरौ। कदै तो ठाकर साटो लाग्यो, कदै लाटग्यो बो'रौ। —चेतमांनखो

बोळणी, बोळबौ—१ देखो 'बोळणी, बोळबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळणी, बौळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ नारायण रौ नाम ज्या, नह लीधौ निरणाह। वा जम-वारो बोळियो, ज्यूं जंगळ हिरणाह। —ह. र.

उ०—२ सतोलं भैराक, बोळण खळ उबवरा। वीरमदे वंडाक, मेळ वचन नह मांनिया। —गो. रू.

उ०—३ लख वेरै पँदास लख वीरम सुख बोळे, हैवर दोय हजा-रियां, सोहड़ा थट चोळै। सहस दसांही सांढियां, टीकायत टोळै, ऊ पण कीवी ग्रेकठी, गोरख इक गोळै। —बी. मा.

उ०—४ महल चौबार अबवा तणा माळिया, दिनै बोळीजतै जुरा बहसी। मंडळ बू सधिर महराव सिर मेदणी, राव गांगो कहै, स्यां गीत रहसी। —राव गांगो

बोळणहार, हारो (हारी), बोळणियौ—वि०।

बोळियोड़ो, बोळियोड़ौ, बोळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

बोळीजणौ, बोळीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बोलणी, बोलबौ—१ देखो 'बोळणी, बोळबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोलणी, बोलबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बौळणी, बौळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ बावड़ी री पांणी पीवण री आखड़ी। बेहती नदी री पांणी पीवण री आखड़ी। भूखा री मुंहडो देखण री आखड़ी। दूध को बोलण री आखड़ी। मारग हालतां टळवा री आखड़ी अळत रौ धन लेवा री आखड़ी। —रा० सा. सं.

उ०—२ बरस पाच बोळया पछी, तिसडै मेह न वुठ। खड़ पाखँ सहू एकठा, हुआ मांणस मन मठ। —ढो. मा.

बोलणहार, हारो (हारी), बोलणियौ—वि०।

बोलियोड़ो, बोलियोड़ौ, बोल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बोलीजणौ, बोलीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बोळाई—देखो 'बौळाई' (रू. भे.)

बोलाई—देखो 'बोलाई' (रू. भे.)

बोळाऊ, बोलाऊ—देखो 'बौळावौ' (रू. भे.)

उ०—१ मात न तात न भ्रात सुत, सगा न सूंदरि साथि। हरीया जासै हेकलौ, करि बोलाऊ हाथि। —अनुभववांणी

उ०—२ बोलाऊ कहण लागा कंवरजी दुख मती करो। माऊ नै दाग द्यो। थै पाछा चालो। मारवणजी री तीजी बहन चपा थानै परणास्यां। —ढो. मा.

उ०—३ साचो धणी विपत मैं सांमी, तेड्यां आवै तीजो ताळ। विखमी वाट तणो बोळाऊ, साईं तू काळां तणो सुगाळ। —ग्रोपो आढो

उ०—४ मु कंम-संम रै पातसाह इणां पीरजादां नूं तेरै कोड़ रुपिया रौ माल दियौ नै विदा किया, सु पाछा वळता जेसळमेर आय उतरिया। असवार २०० पातसाह रा सेवरै साथै बोळाऊ, सू मूळराज रतनसी उणा नूं मारनै वित सोह लियो। —नैणसी

उ०—५ अलग राख आरोह तसां कपड़ा वेतोड़ा, लरहंड नासा लाख रखक प्याले अल रोड़ा। क्रमी कमाल कतार अठी आधी निस ऊपर. बोळाऊ बीटियां धुरज चोवड कस धपर। —पा. प्र.

बोळाणो, बोळाबौ – देखो 'बौळाणो, बौळाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पायक अस रथ पथ अपारा, हाथी पाखरवत हजारां। बहतै सीतकाळ बोळायो, ग्रौ वेसाख अजंगढ आयो। —रा. रू.

उ०— २ रुतिया दोय होवदियां इक काळ बोळाई।

—केसोदास गाडण

उ०—३ होळै सीक बोल्या—हाको मत कर। मतै मतै लोग टूकेला जको हाथै आई चीज पांणी मांय सूं काढ लें जावेला। म्हैं कैवूं तो यूं किसो साच मांनैला कै औ सगळो धन-माल म्हारो इज है। म्हारै साथै इज औ छळ व्हियो। भोळी सेठांणी धोखा मैं आय सगळी माया बोळाय दी। —फुलवाड़ी

उ०—४ सेठ मटकता मटकता बोल्या—काले सूं ई' आपरी वणियारी देख्यां पछे म्हांरा सांम्ही बोलळियां लिवे । माया रा लोभ में म्हैं तो रूप री कदे गिनरत ई नी करी । अर गिनरत करूं जको रूप घणो ई नी आयो । पोहरी देवण री भलाई में माया तो सगळी बोळाईजगी । फगत सोना रा अे पारसनाथजी बच्या ।
—फुलवाड़ी

उ०—५ तरै सोढ़ी कहै—बांहरे ढोल रो पखेवड़ो १ मोनूं दीजै इण पखेरुड़ा री दरसण करीस नै मोहल मैं बैठी रहीस । नै अेक घी मनमोलियो डूंम अठै राखो । घो मोहल नीचे ऊभो बांहरी जस वाबसी, सु सुणीस नै बैठी दिन बोळाइस । —नैणसी

बोळाणहार, हारो (हारी), बोळाणियो—वि० ।
बोळायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बोळाईजणो बोळाईजबो—कर्म वा० ।

बोलाणो, बोलाबो—१ देखो 'बोळाणो, बोळाबो' (रू. भे.)
२ देखो 'बुलाणो, बुलाबो' (रू. भे.)
उ०—साह गयो दरगाह सूं, निज रहवासि अनेह । हितकर बोलाया हितू, गोसळ अंतर गेह । —रा. रू

बोलाणहार, हारो (हारी), बोलाणियो—वि० ।
बोलायोड़ो—भू० का० कृ० ।
बोलाईजणो, बोलाईजबो—कर्म वा० ।

बोळायोडो—देखो 'बोळायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री बोळायोड़ी)

बोलायोड़ो—देखो बोळायोडो' (रू. भे.)
२ देखो 'बुलायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोलायोड़ी)

बोळावणो, बोळावबो—देखो 'बोळाणो, बोळाबो' (रू. भे.)
उ०—१ एकण जीभ करि कितरा हेक गुण कह्या जाय । वळे मारवणी रै सातवीसी सहेल्यां छै तिके पिण माहा सुघड़ छै, त्यां सूं मारवणी बात विगत करने दिन बोळावै छै । —ढो. मा.
उ०—२ सू किमा-अेक सरदार जुवांन छै ? पाका पाका वरियांमा नूं, मजरायलां नूं, खींवरा नूं, डांणहुला डाकिया नूं, करडदता नूं, मोह बड़ा लाह पर डाहुलां नूं, बोबी देता, कटारी उगराइ खाता, पचासां बोळाविया आवै आव वाव खतरियां, जियांरा पांच-पांच हजार दाम पाटा-बंधाई रा पाटेदार खाय चुका छै ।
—रा. सा. स.
उ०—३ सजण बोळावै हूं वळी, ऊभी मंदिर पूठ । हिवडो काचा तार ज्यूं, गयो लड़गां तूट । —अग्यात

बोळावणहार, हारो (हारी), बोळावणियो—वि० ।
बोळाविमोड़ो, बोळावियोड़ो, बोळाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बोळावीजणो, बोळावीजबो—कर्म वा० ।

बोलावणो, बोलावबो—१ देखो 'बोळाणो, बोळाबो' (रू. भे.)
२ देखो 'बुलाणो, बुलाबो' (रू. भे.)
उ०—मंदिर हूता ऊतरयउ, रवि ऊगंतइ वार । मांगणहार बोलाविया, पूछण तास विचार । —ढो. मा.

बोलावणहार, हारो (हारी), बोलावणियो—वि० ।
बोलाविमोड़ो, बोलावियोड़ो, बोलाव्योड़ो—भू० का० कृ० ।
बोलावीजणो, बोलावीजबो—कर्म वा० ।

बोळावियोड़ो—देखो 'बोळायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोळावियोड़ी)

बोलावियोड़ो—१ देखो 'बोळायोड़ो' (रू. भे.)
२ देखो 'बुलायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोलावियोड़ी)

बोळाव, बोळावू, बोळावो—देखो 'बोळाव' (रू. भे.)
उ०—१ बोळावू वळता कहै, ढोला पाछो आय । मारू सु लहूडी बहन, तो परणास्यां जाय । —ढो. मा.
उ०—२ बोळावू वेदल मने, पुगळ पुंहता जास । मारवणी ढोला-घरी, रहिया ढोला पास । —ढो. मा.

बोलाह—१ देखो 'बोल्लाह' (रू. भे.)
२ देखो 'बोल्लाह' (रू. भे.)

बोळियोड़ो—१ देखो 'बोळियोडो' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोळियोडी)

बोलियोड़ो—१ देखो 'बोळियोड़ो' (रू. भे.)
२ देखो 'बोलियोड़ो' (रू. भे.)
३ देखो 'बोळियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोलियोडी)

बोलींट, बोलींठ—देखो 'बोलीट' (रू भे.)
बोलींटियो, बोलीठियो—देखो 'बोलीठ' (अल्पा., रू. भे.)
बोळी-बोळी, बोळयूं-दोळयूं—देखो 'ओळी-दोळी' (रू. भे.)
उ०—यण प्रकार हीरां सहेलियां मैं उछव करै छै । गवर कै बोळी-बोळी घुमर दे दे फिरै छै । गोरिका गीत कोयलसर गावै छै, जोड का जवान को संगत पाऊ अे वर पावै छै । हीरां को रूप देख सुरद मन मैं जाणै छै । धन्य छै ऊ पुरस नूं इं नारि नैं महल मैं मांणै छै । —बगसीराम प्रोहित री बात

बोल्लाह-सं. पु. [सं.] १ वह घोड़ा जिसके दुम और अयाल के बाल पीले हों । (शा. हो.)
२ देखो 'बोल्हाह' (रू. भे.)

बोवड़णो, बोवड़बो-क्रि. अ.—बरसना ।

उ०—१ कुणाटी झाट बीजड़ां भड़ां ऊफणां, लुणाटां बोवड़े घाट खेदी। बादगीरां हुदा साद घट बीचते, भीम मुगलां मिळे नाद भेदी। —राव भीमसिंघ हाडा री गीत

उ०—२ घटा समंद अपार सेन बोवड़े विकट घाट, गोळां सरां मार घूमे प्रमागळां लागा गाज। ब्रजनाथ इंद्र मागे राखी ब्रज धार बूठां, सार बागां कोटो 'देवे' राखियो सकाज। —महाराज देवसिंघ हाडा री गीत

बोवड़णहार, हारो (हारी), बोवड़णियो—वि०।
बोवड़ियोड़ो, बोवड़ियोड़ो, बोवड़योड़ो—भू० का० कृ०।
बोवड़ीजणो, बोवड़ीजबो—भाव वा०।

बोवड़ियोड़ो—भू. का. कृ.—बरसा हुआ।
(स्त्री बोवड़ियोड़ी)

बोवार—१ देखो 'व्यापार' (रू. भे.)
२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बोवो—स. पु.—करघे में नीचे की ओर का वह उपकरण जिसे कपड़े का बाना ठीक बैठाने के लिए पैर रखकर ऊपर-नीचे करते रहते हैं।

बोसरणो, बोसरबो—क्रि० स०[सं. व्युत्+सृज्] १ छोड़ना, त्यागना।
२ देखो 'विसरणो विसरबो' (रू. भे.)

बोसरणहार, हारो (हारी), बोसरणियो—वि०।
बोसरियोड़ो, बोसरियोड़ो, बोसरयोड़ो—भू० का० कृ०।
बोसरीजणो, बोसरीजबो—भाव वा०।

बोसराणो, बोसराबो—क्रि० स० [सं. व्युत्+सृज्] त्याग कराना, छुड़ाना।

उ०—जब एक अणूं सौ मण चणां भिखारयां ने लूंटाय दिया। दूजे सौ मण रा भूंगड़ा सेकाय दिया। तीजे सौ मण चणां नीं घूगरी रंधाय लुवाइ। चौथे सौ मण चणां री रोट्यां कराय पाखती लाटो करायनै जीमाया। पांचमैं सौ मण चणा बोसराय ने हाथ लगावा रा त्याग किया। —भि. द्र.

२ देखो 'विसराणो, विसराबो' (रू. भे.)

बोसराणहार, हारो (हारी), बोसराणियो—वि०।
बोसरायोड़ो—भू० का० कृ०।
बोसराईजणो, बोसराईजबो—कर्म वा०।

बोसरायोड़ो—भू. का. कृ.—१ त्याग कराया हुआ, छुड़ाया हुआ।
२ देखो 'विसरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोसरायोड़ी)

बोसरावणो, बोसरावबो—१ देखो 'बोसराणो, बोसराबो' (रू. भे.)
२ देखो 'विसराणो, विसराबो' (रू. भे.)

बोसरावणहार, हारो (हारी), बोसरावणियो—वि०।
बोसराविबोड़ो, बोसराविबोड़ो, बोसराव्योड़ो—भू० का० कृ०।
बोसरावीजणो, बोसरावीजबो—कर्म वा०।

बोसराविबोड़ो—देखो 'बोसरायोड़ो, (रू. भे.)
२ देखो 'विसरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोसराविबोड़ी)

बोसरियोड़ो—भू. का. कृ.—१ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
२ देखो 'विसरायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोसरियोड़ी)

बोसरू—सं. पु. [सं. व्युत्+सर्ग] त्याग, परित्याग।

उ०—१ भव अनंत ममता थकां, कीया देह संबंध। त्रिविध त्रिविध करी बोसरू, तिण सूं प्रतिबंध। —स. कु.

उ०—२ इण परि इण भवि परभवइ, कीधा पाप अखत्र। त्रिविध त्रिविध करि बोसरू, करूं जनम पवित्र। —स. कु.

बोह—देखो बोह' (रू. भे.)

उ०—हुवे मगळ धमळ दमंगळ वीर-हक, रंग तूठो कमध जग रूठो। सघण वूठो कुसुम बोह जिण मौड़ सिर, विखम उण मौड़ सिर लोह वूठो। —बांकीदास आसियो

२ देखो 'बोध' (रू. भे.)

बोहड़णो, बोहड़बो—देखो 'बहोड़णो, बहोड़बो' (रू. भे.)

बोहड़णहार, हारो (हारी), बोहड़णियो—वि०।
बोहड़ियोड़ो, बोहड़ियोड़ो, बोहड़योड़ो—भू० का० कृ०।
बोहड़ीजणो, बोहड़ीजबो—कर्म वा०।

बोहड़ाणो, बोहड़ाबो—देखो 'बहोड़ाणो, बहोड़ाबो' (रू. भे.)

बोहड़ाणहार, हारो (हारी), बोहड़ाणियो—वि०।
बोहड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।
बोहड़ाईजणो, बोहड़ाईजबो—कर्म वा०।

बोहड़ायोड़ो—देखो 'बहोड़ायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोहड़ायोड़ी)

बोहड़ियोड़ो—देखो बहोड़ियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बोहड़ियोड़ी)

बोहत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

उ०—१ छंद कहां त बोहता भावे, खरतर को पतियायो। हिव की वेळा हिव न आयो, सकि रह्यो कंदरायो। —ध. व. ग्रं.

उ०—२ अभैपुरा जेवत सूर बागल नरेसर, महरराव राठोड़ करत करहा दांनेसुर। अलखेड़िया कमधज सध चंदेल सोहु बारिया, वरै सुमत बोहत सूरमा अ-लिखत पारक बीर कपाळिया। —रा. वं. वि.

बोहुतपत, बोहुतपति, बोहुतपती–सं. पु.—पाण्डु पुत्र अर्जुन का नाम ।
उ०—पुस्तक मांजे परा, पंडित सोय वेद पुरांणां । भारथ भज्जे भीम, बोहुतपत चूके बांणां । —चौथ बीठू

बोहुतर—देखो 'बमोत्तर' (रू. भे.)

बोहुदीपी—देखो 'बोहुदीपी' (रू. भे.)

बोहुनांमी—देखो 'बहुनांमी' (रू. भे.)
उ०—भायो गुर जंभ प्रपंच भजोनी, भरम पुराऊ दाखवियो । संभराथळ सांमी अंतरजांमी, बोहुनांमी हरि हेत कियो ।
—बोकळजी

बोहरंगी—देखो 'बहुरंगी' (रू. भे.)

बोहरगत—देखो 'बौरगत' (रू. भे.)

बोहराळ—देखो 'बोहराळ' (रू. भे.)

बोहरूपी—१ देखो 'बहुरूपी' (रू. भे.)
२ देखो 'बोहरूपी' (रू. भे.)

बोहरी—देखो 'बौ'री' (रू. भे.)
उ०—आ बाथा सुण नें भोजीरांमजी बोहरी बोल्यो—प्ररं बसू उरहो प्राव रे घर तो लूंट लियो नै मार्व बले डड करं । ज्यूं बीजणजी महाव्रत तो पांचूं ई परहा भगा कहै । अनें बले चोमासी रो डंड कहे छै । —भि. द्र.

बोहळणौ, बोहळबौ—१ देखो 'बोळणौ, बोळबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोहळणौ, बोहळबौ' (रू. भे.)
३ देखो 'बौळणौ, बौळबौ' ।
बोहळणहार, हारौ (हारी), बोहळणियौ—वि० ।
बोहळियोड़ो, बोहळियोड़ौ, बोहळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
बोहळीजणौ, बोहळीजबौ—कर्म वा० ।

बोहळाणौ, बोहळाबौ—१ देखो 'बोहळाणौ, बोहळाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळाणौ, बोळाबौ' (रू. भे.)
बोहळाणहार, हारौ (हारी), बोहळाणियौ—वि० ।
बोहळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
बोहळाईजणौ, बोहळाईजबौ—कर्म वा० ।

बोहळायोड़ौ—१ देखो 'बोहळायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोहळायोड़ी)

बोहळियोड़ौ—१ देखो 'बोळियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोहळियोड़ौ' (रू. भे.)
३ देखो 'बौळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बोहळियोड़ी)

बोहळौ—देखो 'बौ'ळौ' (रू. भे.)
उ०—कहो (है) बाट, राजा सुणो, दीठा बोहळा देस । रोमत ख्याल बिनोद रस, नारी निरूपम वेस । —ढो. मा.

बोहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)
उ०—तपज्या खिणस्या भी मुवा, प्रौ जग को बोहार । सतगुर आणि पिछाणियो, मरै न दूजी बार । —परमानंद बणियाळ

बोहि, बोहित, बोहिति, बोहित्थ, बोहिथ—१ देखो 'बोहित्थ' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)
२ देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बोही—देखो 'वही' (रू. भे.)
उ०—१ सोभा सदा सुहावणी, उत बिराजणी प्राप । बोही बणछो प्रणखावणो, तो बिण धणी 'प्रताप' । —जैतदांन बारहठ
उ०—२ सीतळ छांय कदम की छोडी, धूप सह्या प्रति भारा । मीरां कं प्रभु गिरधरनागर, बोही प्राण पियारा । —मीरां

बोहोत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बोहोनामी—देखो 'बहुनामी' (रू. भे.)

बोहोळौ—देखो 'बौ'ळौ' (रू. भे.)

बोहौ—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बौ–स. पु.—१ पत्ता, पान । (एका)
२ तलवार, खड्ग । („)
३ पुत्र, बेटा । („)
४ जुलाहे का एक प्रकार का औजार विशेष जिससे ताने का तागा ऊपर नीचे उठाते और गिराते हैं । यह दो नरसलों का होता है जिसके ऊपर नीचे तागे बंधे रहते हैं और जिनके बीच में तागे एक एक करके निकलते रहते हैं ।

सर्व.—१ वह ।
उ०—१ मुलक री उतरादी कांकड़ मायें, गोडा-गोडां लग बरफ मैं ऊभे, उणी प्रो कागद पढ्यो तो नगारी छाती फूलीजगी । बो सोचण लागो—राजां फूल जिसी कोमळ घर वज्जर जिसी कठोर, चाद जिसी फूटरी घर चंडिका सी विकराळ । घठै उणरै सागै बा ई बंदूक लिया ऊभी व्हैती तो कितोक नामी रैवती ।
—अमर-चूंनड़ी
उ०—२ जाणं बो न आयो जमदूत जाडे, पुरांणी प्रहारै कियो बूम पाडे । रससं समर्थ कह्यो सन्नमल्लं, समवाद गातां प्रदि पार सल्लं ।
—ना. द.
उ०—३ प्रवरा में सुख प्रापरो, बो सुख मांनै प्राप । बानै इण धारण बहै, तै छानै न 'प्रताप' । —जैतदांन बारहठ
२ उस ।

उ०—मारग मैं भगतणियां रा डेरा आया। अेक रूपाळी भगतण सूं चार-पांचे'क मोट्यार बोछरड़ायां करता हा। चौधरण रै सागै सागड़ी हो। बो वां मोट्यारां नै बरजिया के किणी भली लुगाई सूं छेड़छाड़ करणी बेजा बात है। —फुलवाड़ी

रू. भे.—बो, बोव।

बोगर, बोघर—सं. पु.—बाघ के शरीर की गंध।

बोड़णी, बोड़बौ—क्रि० अ०—१ निवृत्त होना।

उ०—जिसैं दसणी भिड़ैं तांई आय बाणा। तिण री मा'राज सूं मालम हुई सेवा सूं बोड़तां। पीछै मा'राज पोसाक करी अरू पाघ सदा जूडै सूं बांधता सूं उणदिन ऊतावळ मैं बांध सकिया नहीं, यूं हीज पाघ मस्तक ऊपर देय कमर बांधी। —द. दा.

२ देखो 'बोड़णी, बोड़बौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोड़णी, बहोड़बौ' (रू. भे.)

बोड़णहार, हारौ (हारी), बोडणियौ—वि०।

बोडियोड़ो, बौड़ियोड़ो, बोड़योड़ो—भू० का० कृ०।

बोड़ीजणो, बोड़ीजबौ—भाव वा०।

बोड़ाणो, बोड़ाबौ—क्रि० स०—१ निवृत्त करना।

२ देखो 'बोडाणी, बोडाबौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोड़ाणी, बहोड़ाबौ' (रू. भे.)

बोड़ाणहार, हारौ (हारी), बोड़ाणियौ—वि०।

बोड़ायोड़ो—भू० का० कृ०।

बोडाईजणो, बोडाईजबौ—कर्म वा०।

बोड़ायोड़ो—भू० का० कृ०—१ निवृत्त किया हुआ।

२ देखो 'बोडायोडौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोड़ायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बोडायोड़ी)

बोड़ियोड़ो—भू. का. कृ.—१ निवृत्त हुवा हुआ।

२ देखो 'बोडियोडौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोडियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बोडियोड़ी)

बोछाड़, बोछार, बोछाळ—देखो 'बोछाड़' (रू. भे.)

बोडउर, बोडपुर, बोडपुरी—सं. पु.—नल राजा के द्वारा विजित एक नगर का नाम।

उ०—महाराष्ट्र कामाक्ष आभीर, कच पार्पातिक निरमदा नीर। बोडउर अमह भल् सोमाल, दक्षणदेसि जीपिया भूपाल। —नळदवदंती रास

बोत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बोपार—देखो 'ब्यापार' (रू. भे.)

उ०—१ जनहरिया हरि नाव की, पुजी विन बोपार। खाई कब खूटै नही, पाई बसत अपार। —अनुभववाणी

उ०—२ बापड़ा नासतिक मिनख सांची केया करै है कै—दायजो देय'र बेटी री मौत मोल लेवणी है। धन रा ठोकाकड़ लोभी लोग अरज-मांगणी रैं समै भी बहू री हीड़ो क्यूं करैं? वांरो तो ओ बोपार है कै—मोकळी बहुवा मारैं अर मोकळो धन कमावैं। —दसदोख

उ०—३ हीरा री कीमत तो जमी सूं बारै निकळियां पछै व्हे। म्हारैं सागै बोपार मैं इणरो थोडो घणो सीर राख देवूंला। खासी भली पूंजी भेळी व्हियां न्यारी दुकांन मडाय देवूंला। आज तो थूं सेठां रै चिणायोडी प्याऊ माथै बैठो पगार लेवै, पछै थूं खुद गांव गांव प्याऊ लगावण जोग बण जावैला। —फुलवाड़ी

उ०—४ पड़ गहणा लियै दियै नह पाचा, सत्र खत नह दाखै अह सार। सोड तणा बापार सरखो, बळ माडियो 'अखै' बोपार। —दुरसो आढ़ो

बोपारी—देखो 'ब्यपारी' (रू. भे.)

उ०—१ अैसो संगति साध की, ज्यूं बोपारी हाट। जनहरिया जब गाहकु, सबद मिळावै साट। —अनुभववांणी

उ०—२ तद खाफरो राजारै दरबार वडै लाजमै पोसाख सूं आय मुजरो कियो। राजा पूछियो—तूं कुण छै? अरज कीबो—बोपारी छूं, रामबाजार मैं दुकान छै, हजार दस बरस दिन मैं जगात रा भरू छूं, राजा फुरमावो किसै कारज आया छो सू कहो। —राजा भोज अर खाफरै चोर री बात

उ०—३ तद राजा पूछी—साह! थारी अरज कहि, खाफरै अरज करी—जीव रो आंमा पाऊं, कवल पाऊ तो अरज करू। राजा फुरमायो—तूं तो बोपारी छै तैं—मै इसी जीव री किसी तकसीर छै? काई जगात री चोरी आयी छै तो तकसीर माफ छै, म्हा रो कवल छै। —राजा भोज अर खाफरै चोर री बात

बोम—देखो 'ब्योम' (रू. भे.)

उ०—१ नमो रूपनद्दा सबद्दा रसीली, नमो लच्छि रभा नमो बोम लीली। नमो मोहणी कमळा मूल मूंनी, नमो धोम धूतारणी संम धूनी। —मा. वचनिका

ऊ०—२ वणं जेथ तेथा तोहि जोति वासी, प्रिथी बोम सांमद्र तूंही प्रकासी। नही ठोड तू जेथ तैं दाख नेसं, भखैं इद ऊभा आदेसं आदेस। —मां. वचनिका

बोर—स. स्त्री.—बिल्ली या बकरी का ऋतुमति होने की क्रिया।

बोरणी, बोरबौ—देखो 'बुहारणी, बुहारबौ' (रू. भे.)

बोरणहार, हारौ (हारी), बोरणियौ—वि०।

बोरियोड़ो, बोरियोडो, बोरयोड़ो—भू० का० कृ०।

बोरीजणो, बोरीजबौ—कर्म वा०।

बीराणी, बीरावौं–क्रि॰ अ॰—१ बिल्ली या बकरी का गर्भधारण के लिए ऋतुमति होना।

२ देखो 'बुहारणी, बुहारबो' (रू. भे.) ३ देखो 'बोराणी, बीराबो' (रू. भे.)

बीराणहार, हारी (हारी), बीराणियौ—वि॰।

बीरायोडो—भू॰ का॰ कृ॰।

बीराईजणी, बीराईजबो—कर्म वा॰।

बीरायोड़ी–सं. स्त्री.—ऋतुमति हुयी हुई बकरी या बिल्ली।

बीरायोड़ो—१ देखो 'बुहरायोड़ो' (रू. भे.) २ देखो 'बोरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीरायोड़ी)

बीरावणो, बीरावबो—१ देखो 'बुहराणी, बुहराबो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोराणी, बीराबो' (रू. भे.)

बीरावणहार, हारी (हारी), बीरावणियौ—वि॰।

बीराविय़ोड़ो, बीरावियोड़ो, बीराव्योड़ो—भू॰ का॰ कृ॰।

बीरावीजणो, बीरावीजबो—कर्म वा॰।

बीरावियोड़ौ—१ देखो बुहरायोड़ो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोरायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीरावियोड़ी)

बीरियोड़ौ—देखो 'बुहारियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीरियोड़ी)

बोळणी, बोळबौ–क्रि॰ अ॰—१ पहुँचना।

• २ भेजना।

३ उस पार जाना ४ लांघना, पार करना।

५ विदा होना।

६ व्यतीत होना, बीतना।

उ॰—फूल कंथ रै कोट में राज करै छै। घणा दिन बोळिया। राज जमियौ। फूल कहण लागो, 'म्हारै बाप रो वैर, धरणि नु मैं मारणो।' ताहरां प्रधान बोलियौ—राज, थांहरै घोड़ा नहीं। तौ कहियौ—घोड़ा ल्यो। —लाखै फूलाणी रो बात

७ खोना, गंवाना, गुमाना।

८ ठगा जाना व अन्य को ठगना।

क्रि॰ स॰—९ उपभोग करना, आनन्द लूटना।

१० संहार करना, मारना।

११ नाश करना, नष्ट करना।

१२ व्यतीत करना, बीताना।

उ॰—१ दत देता धन मांगतां, जगि सुणतां जसवास। वसुधा इण पर बोळिया, नवकोटी नट-मास। —गु. रू. बं.

उ॰—२ मार सार मारकां इळा हुवै आपांणी, मुहि लग्गां हूं मुरां, जेह रक्खी तै मांणी। वर केता बोळिया, कळह केताई कुमारी, पुरख न परणी किणिह, आद जुगादि कुमारी। —गु. रू. बं.

१३ मृत प्राणी के शव को दफनाना।

१४ रक्षा करना, हिफाजत करना।

१४ देखो 'बोळणी. बोळबो' (रू. भे.)

बोळणहार, हारी (हारी), बोळणियौ—वि॰।

बोळिओड़ी, बोळियोडो, बोळयोडो—भू॰ का॰ कृ॰।

बोळीजणो, बोळीजबो—कर्म वा॰, भाव वा॰।

बोळवणो, बोळवबो, बोहळणी, बोहळबो, बोळणो, बोळबो, बोळवणो, बोळवबो, बउळणो, ब॰ळबो, बउलणो, बउलबो, बोहळणो, बोहळबो, बोळवणो, बोळवो, बोहळणो, बोहळबो—रू. भे.।

बोळवणो, बोळवबो—देखो 'बोळणी, बोळबो' (रू. भे)

उ॰—भी बरखा रित बोळवो बोती सरद अदूंद। हिम रुत आयो बीचव्यौ, फेर प्रगट्यौ फद। —रा. रू.

बोळवणहार, हारी (हारी,) बोळवणियौ—वि॰।

बोळवियोड़ो, बोळवियोडो, बोळ॰ोड़ो—भू॰ का॰ कृ॰।

बोळवीजणो, बोळवीजबो—कर्म वा॰, भाव वा॰।

बोळवियोड़ो—देखो 'बोळियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोळवियोडी)

बोलाऊ—देखो 'बोळावो' (रू. भे)

बोळाणो, बोळाबो–क्रि॰ स॰ (बोळणो, बोळबो किया का प्रे. रू.) १ बिताना, गुजारना।

उ॰—१ वरसाळो इण पर बोळायो, और न को बरसात अणायो। उठी सरद सोतरित आई, सकळ दळं विणि सोभ सफाई। —रा. रू.

उ॰—२ वात हुई ग्रीखम बोळाई, ऊपर धुर बरखा रुत आई। प्रसतळांन डर पयो प्रजितो, विचित्रा तणो लोच सुण बोतो। —रा. रू.

२ पहुंचाना।

३ विदा देना, विदा करना।

उ॰—१ नर जाणे दिन जात है, दिन जाणे नर जाय। गई बोळावणहारिया, गणगोर बोळाय बोळाय। —अज्ञात

उ॰—२ दळकार हठं दळणाध रा, दिल्ली फोजां निरवही। किरि जाण अपूठा बाहुडं, जांन बोळाए मांडही। —गु. रू. बं.

४ भिजवाना, भेजना।

५ पीछा करना या कराना, अनुगमन करना या कराना।

६ खोना, गुमाना।

७ मृत प्राणी की अंत्येष्टी क्रिया करना/कराना।

८ उपभोग करना/कराना, आनन्द लूटना/लुटाना।

९ उस पार भेजना १० लंघाना, पार कराना या लांघना।

११ संहार करना/कराना, मारना/मरवाना।

१२ नाश करना/कराना, नष्ट करना/कराना।

१३ खर्च करना।

१४ रक्षा करना, हिफाजत करना।

१५ ठगाना।

१६ लौटाना, लौटने को प्रवृत्त करना।

१७ देखो 'बोळाणो, बोळाबौ' (रू. भे.)

बोळाणहार, हारौ (हारी), बोळाणियौ—वि०।

बोळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बोळाईजणौ, बोळाईजबौ—कर्म वा०।

बोळावणौ, बोळावबौ, बोह्ळाणौ, बोह्ळाबौ, बोह्ळावणौ, बोह्ळाबौ, बौळाणौ, बौळाबौ, बौळावणौ, बौळावबौ, बौह्ळाणौ, बौह्ळाबौ, बौह्ळावणौ, बौह्ळावबौ, बउळाणौ, बउळाबौ, बउलाणौ बउलाबौ, बउळावणौ, बउळावबौ, बळवणौ, बळवबौ, बवळाणौ, बवळाबौ, बुळाणौ, बुळाबौ, बुळावणौ, बुळावबौ, बोळाणौ, बोळाबौ, बोलाणौ, बोलाबौ, बोळावणौ, बोळावबौ, बोलावणौ बोलावबौ, बोह्ळाणौ, बोह्ळाबौ, बोह्ळावणौ, बोह्ळावबौ बौळावणौ, बौळावबौ, बौह्ळाणौ, बौह्ळाबौ, बौह्ळावणौ, बौह्ळावबौ—रू. भे।

बोलाणौ, बोलाबौ—देखो 'बुलाणौ, बुलाबौ' (रू. भे)

बोलाणहार, हारौ (हारी), बोलाणियौ—वि०।

बोलायोड़ौ—भू० का० कृ०।

बोलाईजणौ बोलाईजबौ—कर्म वा०।

बोलायोड़ौ—देखो 'बुलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बोलायोड़ी)

बोळायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ बिताया हुआ, गुजारा हुआ। २ पहुँचाया हुआ। ३ विदा दिया या किया हुआ। ४ भेजा हुआ या भिजवाया हुआ। ५ पीछा किया या करवाया हुआ, अनुगमन किया या कराया हुआ। ६ खोया हुआ, गुमाया हुआ। ७ मृत प्राणी की अंत्येष्टी क्रिया किया या करवाया हुआ। ८ उपभोग किया या करवाया हुआ, आनन्द लूटाया हुआ। ९ उस पार भेजा हुआ। १० लांघा हुआ, लघाया हुआ, पार किया हुआ। ११ संहार किया/कराया हुआ, मारा/मरवाया हुआ। १२ नाश किया/कराया हुआ, नष्ट किया हुआ/कराया हुआ। १३ खर्च किया हुआ। १४ रक्षा किया हुआ, हिफाजत किया हुआ। १५ ठगाया हुआ। १६ लौटाया हुआ, लौटाने को प्रवृत्त किया हुआ। १७ देखो 'बोळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. बोळायोड़ी)

बोळावणी-सं. स्त्री.—१ विदा देने की क्रिया, विदाई।

२ मृत प्राणी के शव की अन्त्येष्टी क्रिया।

३ गणगौर को विदा देने का दिन।

रू. भे.—बोळावणी, बौळावणी, बौल्हावणी।

बोळावणौ, बोळावबौ—१ देखो 'बोळाणौ, बोळाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ नर जांणै दिन जात है, दिन जांणै नर जाय। गई बोळावणहारियां, गणगौर बोळाय बोळाय। —अज्ञात

२ देखो 'बोळाणौ, बोळाबौ' (रू. भे.)

बोळावणहार, हारौ (हारी), बोळावणियौ—वि०।

बोळाविथोड़ौ, बोळावियोड़ौ, बोळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बोळावीजणौ, बोळावीजबौ—कर्म वा०।

बोलावणौ, बोलावबौ—देखो 'बुलाणौ, बुलाबौ' (रू. भे.)

बोलावणहार, हारौ (हारी), बोलावणियौ—वि०।

बोलाविथोड़ौ, बोलावियोड़ौ, बोलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

बोलावीजणौ, बोलावीजबौ—कर्म वा०।

बोळावियोड़ौ—१ देखो 'बोळायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बोळावियोड़ी)

बोलावियोड़ौ—देखो 'बुलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री बोलावियोड़ी)

बोळावौ, बोळाव, बोळाबौ-सं. पु.—१ विश्राम स्थान, ठहरने का स्थान।

उ०—भो हस नडो निवांण, भो हस कोडो नेडरो। भो भो आहोठांण, भो बोळावो सजणां। —पदमें चारण री बात

२ सम्मान पूर्वक विदा देने की क्रिया।

३ वह व्यक्ति जिसे राह में डाकुओं आदि से रक्षा के लिए साथ ले लिया जाता है, राह-रक्षक।

उ०—१ किय डाळो पूनागर कनें, आय खबर यण रैवियां। सो तुरग असी ऊठा सेहत, है बोळावौ लीधियां। —पा. प्र.

उ०—२ गैरी सू दोय गैर, करां आप हूंतां करी। बोलावं रो बैर बाप बैर हूंना वहत। —पा. प्र.

उ०—३ अलवांणि आपार, मिळै कोळी मूंछाळा, सोढा मिळिया सरस बळै बोळावै बाळा। जत नायक जोइया, वेढ बायक बाडेला, भिर मिणिया मामेत तेण बधा तूंबेला। —पा. प्र.

४ देखो 'बुलावौ' (रू. भे.)

उ०—आता कहै न आव, बळतां बोळावी नहीं। तिण सज्जण घर पाव, बळै न दीजै, बींझरा। —बींझरै अहीर री बात

रू. भे.—बोळाऊ, बोळावी, बोळावू, वोळावौ, बौळायत; बौळाऊ, बवळावू, बळावौ, वोळवौ, वौळावू, बौळावौ, बौल्हावौ।

बौळियोड़ो-भू. का. कृ.—१ पहुँचा हुआ। २ भेजा हुआ। ३ उस पार गया हुआ। ४ लांघा हुआ, पार किया हुआ। ५ विदा हुवा हुआ। ६ व्यतीत हुवा हुआ, बीता हुआ। ७ खोया हुआ, गंवाया हुआ, गुमाया हुआ। ८ ठगाया हुआ या अन्य को ठगा हुआ। ९ उपभोग किया हुआ, आनन्द लूटा हुआ। १० संहार किया हुआ, मारा हुआ। ११ नाश किया हुवा, नष्ट किया हुवा। १२ व्यतीत किया हुआ, बिताया हुआ। १३ मृत प्राणी के शव को दफनाया हुआ। १४ रक्षा किया हुवा, हिफाजत किया हुआ। १५ देखो 'बोलियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बौळियोडी)

बौंळी—देखो 'बोंळी' (रू. भे.)

बौळ्हाणौ, बौळ्हावौ—१ देखो 'बौळाणौ, बौळावौ' (रू. भे.)
उ०—कोई वीर बालक आपरै पिता री वैर लेण सारू सखियों सो उण बालक वीर ने समझावै कि वरस पांच तो बौळ्हाया अनै छठौ जांण री अबै जेज नहीं इण छट्टै वरस पछै सातमो वरस लागसी तद थूं घोड़ै असवार हो जासी जद थारा पिता री वैर लेजै। —वी. स. टी.
३ देखो 'बोळाणौ, बोळावौ' (रू. भे.)
बौळ्हाणहार, हारौ (हारी), बौळ्हाणियौ—वि०।
बौळ्हायोड़ो—भू० का० कृ०।
बौळ्हाईजणौ, बौळ्हाईजबौ—कर्म वा०।

बौल्हाणौ, बौल्हावौ—देखो 'बुलाणौ, बुलावौ' (रू. भे.)
बौल्हाणहार, हारौ (हारी), बौल्हाणियौ—वि०।
बौल्हायोडौ—भू० का० कृ०।
बौल्हाईजणौ, बौल्हाईजबौ—कर्म वा०।

बौळ्हायोड़ौ—१ देखो 'बौळायोड़ो' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बौळ्हायोडी)

बौल्हायोड़ौ—देखो 'बुलायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री. बौल्हायोड़ी (रू. भे.)

बौळ्हावणी—देखो 'बौळावणी' (रू. भे.)

बौळ्हावणौ, बौळ्हावबौ—१ देखो 'बौळाणौ, बौळावौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळाणौ, बोळावौ' (रू. भे.)
बौळ्हावणहार, हारौ (हारी), बौळ्हावणियौ—वि०।
बौळ्हाविओड़ो, बौळ्हावियोड़ो, बौळ्हाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बौळ्हावीजणौ, बौळ्हावीजबौ—कर्म वा०।

बौल्हावणौ, बौल्हावबौ—देखो 'बुलाणौ, बुलावौ' (रू. भे.)
बौल्हावणहार, हारौ (हारी), बौल्हावणियौ—वि०।
बौल्हाविओड़ो, बौल्हावियोड़ो, बौल्हाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बौल्हावीजणौ, बौल्हावीजबौ—कर्म वा०।

बौळ्हावियोड़ौ—१ देखो 'बौळायोडौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बोळायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बौळ्हावियोडी)

बौल्हावियोड़ौ—देखो 'बुलायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बौल्हावियोडी)

बौळ्हावौ—१ देखो 'बौळावौ' (रू. भे.)
२ देखो 'बुलावौ' (रू. भे.)

बौल्हावौ—देखो 'बुलावौ' (रू. भे.)

बौव—देखो 'बौ' (४) (रू. भे.)

बौवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बौवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा, रू. भे.)

बौवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

बौह—१ देखो 'बोह' (रू. भे.)
उ०—मुख तें मीठा बोलणा, अंदर भरिया छार। बाकै कूड़'र कपट का, हरिया बौह बौहवार। —अनुभववाणी
२ देखो 'बौध' (रू. भे.)

बौहत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बौहनामी—देखो 'बहुनामी' (रू. भे.)

बौहरणौ, बौहरबौ-क्रि० अ०—१ घूमना, फिरना।
२ देखो 'बुहारणौ, बुहारबौ' (रू. भे.)
उ०—माया मोर्ह मानवी, केता बौहरै हाट। हरीया हरि सौदै तणी, ताहि न जाणै साट। —अनुभववाणी
३ देखो 'व्यवहारणौ, व्यवहारबौ' (रू. भे.)
बौहरणहार, हारौ (हारी), बौहरणियौ—वि०।
बौहरिओड़ो, बौहरियोड़ो, बौहर्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बौहरीजणौ, बौहरीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

बौहराणौ बौहरावौ—देखो 'बुहराणौ, बुहरावौ' (रू. भे.)
बौहराणहार, हारौ (हारी), बौहराणियौ—वि०।
बौहरायोड़ौ—भू० का० कृ०।
बौहराईजणौ, बौहराईजबौ—कर्म वा०।

बौहरायोड़ौ—देखो 'बुहरायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री. बौहरायोडी)

बौहरावणौ, बौहरावबौ—देखो 'बुहराणौ, बुहरावौ' (रू. भे.)
बौहरावणहार, हारौ (हारी), बौहरावणियौ—वि०।
बौहराविओड़ो, बौहरावियोड़ो, बौहराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
बौहरावीजणौ, बौहरावीजबौ—कर्म वा०।

वौहराबियोड़ौ—देखो 'वुहरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौराबियोड़ी)

वौहरौ—देखो 'वौ'रौ' (रू. भे.)

उ०—१ भला हम विणाजारा पूरं साह का, विणज करण वोपारी। भला खोटा खोटा विणज वौहरा, मांणिका दावो पारो।
—दीन सुबरदी

उ०—२ साच सिदक अमले वौहरा, विसनो विसन जपाय। विसन जप्यां सुख सांपजै, पम गअण ना छुटाय : —वील्होजी

वौहळाणौ, वौहळाबौ—१ देखो 'वोळाणौ, वोळाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळाणौ, वोळाबौ' (रू. भे.)

वौहळाणहार, हारौ (हारी), वौहळाणिबौ—वि०।
वौहळायोड़ौ—भू० का० कृ०।
वौहळाईजणौ, वौहळाईजबौ—कर्म वा०।

वौहळायोड़ौ—देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौहळायोड़ी)

वौहळावणौ, वौहळावबौ—१ देखो 'वोळाणौ, वोळाबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळाणौ, वोळाबौ' (रू. भे.)

वौहळावणहार, हारौ (हारी), वौहळावणियौ—वि०।
वौहळाविम्रोड़ौ, वौहळावियोड़ौ, वौहळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
वौहळावीजणौ, वौहळावीजबौ—कर्म वा०।

वौहळावियोड़ौ—१ देखो 'वौळायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'वोळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री. वौहळावियोड़ी)

वौहळौ—देखो 'वौ'ळौ' (रू. भे.)

वौहवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—१ मुख तें मीठा बोलणा, अदर भरिया खार। वाकै कूड़'र कपट का, हरिया वौह वौहवार। —अनुभववांणी

उ०—२ हरिया ऐसा को मिळै, साहिब का सबियार। भूठ न वाकै कपट को, रंच नही वौहवार। —अनुभववांणी

वौहवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

वौहवारी, वौहारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

वौहि, वौहित, वौहिति वौंहित्थ, वौंहत्थ—देखो 'वोहित' (रू. भे.)

वौहरौ—देखो 'वौ'रौ' (रू. भे.)

वौहोवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—बाजै हाक वीर धुन वेदां, पवं महारिख मंगळाचार। घड़ घड़ वेहड़ मांडियै धारं; वर लाडियै हुम्रो वौहोवार।
—सूदा नगराजोत री वीत

व्यंग, व्यंग्य—स. पु. [सं. व्यंग्य] १ कोई लगती हुई बात. ताना, चुटकी।
२ व्यंजना शक्ति से प्रकट होने वाला साधारण अर्थ से कुछ विशिष्ट अर्थ।

रू. भे.—विंग, व्यंग।

व्यंगुळ, व्यंगुल—सं. पु. [सं. व्यंगुल] एक अगुल का साठवां भाग।

व्यंजक—वि० [सं.] प्रकट करने वाला, जाहिरकर्त्ता।
सं. पु [सं. व्यंजकः] १ नाटकीय हाव भाव द्वारा आन्तरिक भावों का प्रकटन।
२ संकेत; चिन्ह, निशान।

व्यंजण, व्यंजन—सं. पु. [सं. व्यंजन] १ व्यक्त होने, या प्रकट करने का भाव या क्रिया।
२ छप्पन प्रकार के भोजन।

उ०—१ भर बरात रा प्राघूंणकां नूं महानस मैं बुलाय खटरस मय नांना व्यंजनां री ग्रास पूरण त्रिप्ति चखावियो। —वं. भा.

उ०—२ दादू आदर भाव का, मीठा लागै मीठ। विण आदर व्यंजन बुरा, जीमण वाळा ठोठ। —दादूवांणी

उ०—३ मति व्यंजन पळ अन्न, रचै जीमण वछित रस। आसव छकि आपान, वर्णं जदुबंस जथा वस। —व. भा.

३ अच्छा भोजन, बढ़िया खाद्य पदार्थ।

उ०—रावल भगति भोजन तणी रे, सहुय कराई सभ। बहु व्यंजन रसवती रे, आरोगण आसिम कज्ज रे। —प. च. चौ.

४ स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण, अक्षर।
५ अग, अवयव।

रू. भे.—वंजण, विंजण, विंजन, व्यंजन, व्यजन, वंजण, विजण, विजन, व्यिजण, व्यिजन।

व्यंजनद्वादसी, व्यंजनद्वावसी—सं. स्त्री. [सं. व्यंजनद्वादशी] मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी को किया जाने वाला व्रत विशेष, इस दिन विष्णु की पूजा कर अन्नकूट की तरह ही व्यंजन बना कर विष्णु को भोग लगाया जाता है।

व्यंजनहारिका—सं. स्त्री. [सं.] एक अमंगलकारी शक्ति जो नव वधुओं के द्वारा बनाये गये भोजन उठा ले जाती है। (पुराण)

व्यंजना—सं. स्त्री. [स.] १ प्रकट करने की क्रिया या भाव।
२ शब्द शक्ति के तीन भेदों में से वह शब्द शक्ति जो मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ के अतिरिक्त मूल में छिपे हुए अकथित अर्थ को द्योतित करती है अर्थात् अभिधा व लक्षणा शक्तियों द्वारा अपने-अपने अर्थ को प्रकट करने के बाद व्यंगार्थ का बोध कराने वाली शक्ति।

रू. भे.—व्यंजना।

व्यंतर—सं. पु.—१ भूत-प्रेत योनि विशेष या उक्त योनि के भूत।

२ एक देवयोनि विशेष या उक्त योनि के देव।

उ०—१ भवनपति व्यंतर में कोतसी, भेद विमाणिक पावै। सुर वर तैं मिसनै-सबद्धा, नाम निनांणु आवै। —जयवांणी

उ०—२ भुवनपति वीस इंद्रे मिल्याजी, सोलह व्यंतर सार। जोइ सहु दस वेमाणिय जुइया जी, चौसठ इंद्र सुविचार। —वृस्त.

उ०—३ बावन वीर किये अपनै बस, चौसट्टि योगिनी पाय लगाइ। डाइण साइणि व्यंतर, खेचर, भूत परेत पिसाच पुलाइ। —ध. व. ग्र.

रू. भे.—वितर, वेतर, वेंतर,।

अल्पा,—वितरियौ, व्यतरियौ।

व्यंतरियौ—देखो 'व्यंतर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—असुरादिक दस होय वांण व्यतरिया अट्ठ, जोइस पंच वेमाणिय दुविहा सुत्तं दिट्ठ। पनरै भेदं सिद्ध कह्या ए जीव प्रकार, तनुमानादिक हिव एहनौ कहिसु अधिकार। —वृस्त.

व्यव-सं. [सं. बिंदु] १ वीर्य, बीज।

उ०—भूमि परेखौ हो नरां, कहा परेखौ व्यव। भुय विन भला न नीपजै, कण त्रण तुरी, गंदिव। —जलडा मुलडा भाटी री बात

२ देखो 'बौंद' (रू. भे.)

उ०—रीझवै हुसे रिखेस, देखवै रजै दिनेस। अमि लोह धार इव, बारंगां वरंत व्यव। —सू. प्र.

व्यंदु—देखो 'बिंदु' (रू. भे.)

व्यध्य—देखो 'विध्य' (रू. भे.)

उ०—अथ मदावर लोह नी सांकल त्रोडि, आलानस्तम मोडि, हस्तिसाल भांजि, पर्डतार गाजइ, कमाड फाडइ, मठ मंदिर पाडिइ हस्ति नी यूथ स्मरइ, व्यध्य मनमाहि धरइ, वन माहि सांचरइ। —व. स.

व्यंब—देखो 'बिंब' (रू. भे.)

उ०—बिबै नासिका अग्र मोती बिराजै, मनू राजकं द्वार सुक्र समाजै। बणी होट नीकं सुरंग बिसाळ, लसे बिद्रमी कोमळं व्यब लालं। —बगसीराम प्रोहित री बात

व्यंस-सं. पु. [सं. व्यंश] १ सिंहिका एवं विप्रचिति के संसर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

२ इन्द्र-शत्रु, एक दानव।

व्यउ—देखो 'बिवाई' (रू. भे.) (अमरत)

व्यक्त-वि. [सं.] १ प्रकट किया हुआ, जाहिर किया हुआ, प्रकटित।

उ०—मिथ्याद्रस्टि तणौ उत्थापक, व्यक्त गुणं सुविलासी। बलि विरक्त मोहादिक भावै, एक मुक्ति अभ्यासी। —वि. कु.

२ साफ, स्पष्ट।

उ०—.........हसिउ श्रीगौतमस्वामि दिखि तपनउ निधान, क्रियानउ भंडार, गुणनउ परमावधि, करुणानउ निधि, वात्सल्य नउ समुद्र, नसाजाल व्यक्ती दीसइ, अस्थिबंध ढीला ढलहलता जिसा मांमटि अजाणि सूत्रधारि कास्ट मेलिउ सालसंचउ ठगठगतउ मेलीउ हुउ जिसिउ। —व. स.

रू. भे.—व्यगत।

व्यक्ति, व्यक्ती-सं. स्त्री. [सं. व्यक्ति] १ व्यक्त, स्पष्ट या प्रकट होने या करने की क्रिया या भाव।

सं. पु.—२ मनुष्य, आदमी।

उ०—गुनाली गाऊ मैं पुनि न पिछताऊ पय पकं, कुपथ्यादी बाढूं धरम पथ बाढू गथ धरूं। प्रतिग्या लेना हूं पुरुख ब्रह्म वेत्ता सुत पगूं, भगा सत्ती बत्ती विमुनदळ व्यक्ती हुत भगूं। —ऊ. का.

३ पिंड, शरीर।

रू. भे.—व्यगति, व्यगती।

व्यग्र-वि. [सं.] १ व्याकुल, उद्विग्न, परेशान, दुःखी।

उ०—गोबर के गननाथन की गुन, गाथ करी सु व्रथा गुनगारथौ। गायन व्यग्र प्रलाप गह्यौ जनु, ऊठ के अग्र अलाप उचारथौ। —ऊ. का.

२ भयभीत, डरा हुआ, घबराया हुआ।

३ किसी कार्य मे लीन, आसक्त, मग्न।

व्यग्रता-स. स्त्री. [स. व्यग्र+ता प्र.] व्यग्र होने की अवस्था या भाव।

व्यजण, व्यजणक, व्यजन-स. पु. [स. व्यजन] १ पंखा। (डि. को.)

२ पखे आदि से हवा खाने की क्रिया।

व्यतिकर, व्यतिकार-स. पु. [स] १ सम्मिश्रण, मिलावट।

२ सम्बन्ध, संसर्ग, लगाव।

३ आघात, चोट।

४ घटना।

५ अवसर, मौका।

६ पारस्परिक सम्बन्ध।

७ आपसी लेन-देन, अदल-बदल।

व्यतिक्रम, व्यतिक्रमण-स. पु. [स. व्यतिक्रम] १ क्रम में होने वाला उलट-फेर, क्रम का विपर्यय।

२ व्रत भग की इच्छा, अतिक्रम। (जैन)

३ व्रत भंग की साधनभूत वस्तुओं को ग्रहण करने की क्रिया। (जैन)

उ०—अतिक्रम इच्छा जाणियै, व्यतिक्रम वस्तु-प्रसंग। अतिचार देस भग है, अनाचार सब भंग। —जयवांणी

४ आपत्ति, संकट, तकलीफ।

५ पापकर्म, असत्यकर्म।

६ जुर्म, अपराध।

७ उल्लंघन, अवहेलना।

८ लापरवाही।

९ विपरीत होने की अवस्था; वैपरीत्य।

रू. भे.—वितिक्रम।

व्यतिक्रमी–वि.—व्यतिक्रम करने वाला।

रू. भे.—वितिक्रमी।

व्यतिक्रमणौ, व्यतिक्रमबौ–क्रि॰ स॰—व्यतिक्रमण करना।

उ॰—सउ सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरज थी जिवारी जी। ईसानेंद्र करावियउ, ए श्रीजउ उद्धारो जी। —स. कु.

व्यतिक्रमणहार, हारौ (हारी), व्यतिक्रमणियौ—वि॰।

व्यतिक्रमिग्रोड़ौ, व्यतिक्रमियोड़ौ, व्यतिक्रम्योड़ौ—भू॰ का॰ कृ॰।

व्यतिक्रमीजणौ, व्यतिक्रमीजबौ—कर्म वा॰।

व्यतिक्रमियोड़ौ–भू. का. कृ.—व्यतिक्रमण किया हुआ।

(स्त्री. व्यतिक्रमियोड़ी)

व्यतिपात–सं. पु. [स. व्यतीपात] १ सम्पूर्ण रीति से प्रस्थान या सम्पूर्णतः विच्छेद।

२ बड़ा भारी प्राकृतिक उत्पात या उपद्रव।

३ असम्मान, अपमान।

४ विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों मे से सत्रहवां योग, जिसमें शुभ कार्य एवं यात्रादि निषिद्ध है। ५ भारी संकट-सूचक अपशकुन।

६ अमावस्या के दिन रविवार, श्रवण धनिष्टा, आर्द्रा, अश्लेषा, या मृगशिरा नक्षत्र होने पर होने वाला एक प्रकार का योग विशेष, जिस दिन गंगा-स्नान का बड़ा फल होता है।

रू. भे.—वितिपात, वितीपात व्यतीपात।

[व्य]तिरेक–सं. पु.—१ अंतर, भेद, फर्क।

उ॰—बावल रं पुर हूंत बहु, बर-पुर मैं व्यतिरेक। विधवा नै पीहर बहुव, है न सासरै हेक। —रेंवतसिंह भाटी

२ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें उपमेय में उत्कर्ष या उपमान में अपकर्ष दिखाकर उपमेय की विशेषता का वर्णन हो।

[व्यत]ीत–वि. [सं.] १ मरा हुआ, मृत।

२ त्यागा हुआ, परित्यक्त।

३ तिरस्कृत, उपेक्षित।

४ गुजरा हुआ, गया हुआ, समाप्त।

उ॰—१ आदरवै ले धूड, मोछवां गोगा मांडा। पेखौ पीळ साज, चढावा सीर'र लांडा। पाऊस हुआ व्यतीत, टिकै ना टोब ठिकाणै। दंत-मत भाग दौड़, हेड़ रमवा हल मांणै। —ऊसदेव

उ॰—२ थोड़ी मांणस जं धकै चढियौ सो हौ गुड़ मेळौ हुवौ। इसी इसी बातां कही सो रावजी सुण कर बहुत नाराज हुआ। रात तौ फिकर करतां भांज-घड़ करतां करतां व्यतीत कीवी। परभात पोह पौळी रौ नकारौ हुवौ। —बाढाळा सूर री बात

उ॰—३ बोलइ तं आगलि वांनर कूदतौ रे, आवौ मन ना मांनीता मीत रे। आगति स्वागति करिस्युं धाहरी रे, रजनी माहरै प्यारि करौ व्यतीत रे। —वि. कु.

उ॰—४ यूं करतां बारह बरस व्यतीत हुवा। अेक फकीर आयां रोजीना अवाज करै छै। जं साईं री पलक मैं खलक बसै छै। सो अेक दिन कंधार रौ बादसाह थो सो इण फकीर री बात सुण मन मैं विचारी अर भिस्ती नूं कही-जं थारै बादसाह नूं जाय अरज कर-हमको बरस बारह व्यतीत हुवै, अब क्या हुकम है? इण भांति भिस्ती नूं कई बार कही पण भिस्ती कहै-मोसर नहीं। और अरज करणी आप चाहे नहीं। —साईं री पलक में खलक

रू. भे.—वितीत, बीतीत, व्यतीत, बतीत, वदीत, वदीतउ, वदीतं, वदीतौ, वितीत, वितीति।

व्यतीतणौ, व्यतीतबौ–क्रि. अ.—१ मरना, मृत्यु को प्राप्त होना।

२ त्यागना, छोड़ना।

३ तिरस्कृत होना, उपेक्षित होना।

४ गुजरना, समाप्त होना।

क्रि॰ स॰—५ मारना, संहार करना।

६ त्याग करने को प्रवृत्त करना, छुड़ाना।

७ गुजारना, समाप्त करना।

८ तिरस्कार करना, उपेक्षा करना।

व्यतीतणहार, हारौ (हारी), व्यतीतणियौ—वि॰।

व्यतीतिग्रोड़ौ, व्यतीतियोड़ौ व्यतीत्योड़ौ—भू॰ का॰ कृ॰।

व्यतीतीजणौ, व्यतीतीजबौ—भाव वा॰, कर्म वा॰।

व्यतीतणौ, व्यतीतबौ, बतीतणौ, बतीतबौ—रू. भे.।

व्यतीतियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ मरा हुआ, मृत्यु को प्राप्त हुवा हुआ। २ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ। ३ तिरस्कृत हुवा हुआ, उपेक्षित हुवा हुआ। ४ गुजरा हुआ, समाप्त हुवा हुआ। ५ मारा हुआ, संहार किया हुआ। ६ त्याग करने के लिए प्रवृत्त किया हुआ, छुड़ाया हुआ। ७ गुजारा हुआ, समाप्त किया हुआ। ८ तिरस्कार किया हुआ, उपेक्षा किया हुआ।

(स्त्री. व्यतीतियोड़ी)

व्यतीपात—देखो 'व्यतिपात' (रू. भे.)

उ॰—व्यतीपात वैधति वली, सूरिजनी संक्रांति। ब्राह्मण हुंतु ब्राह्मणी, नवि आवइ अेकांति। —मा. कां. प्र.

व्यतीपातव्रत–सं. पु. [सं.] किसी शुभदिन के व्यतीपात को स्वर्ण निर्मित सूर्य व चन्द्रमा की मूर्ति की पूजन क्रिया।

वि० वि०—ज्योतिष शास्त्रानुसार व्यतीपात के प्रारम्भ व समाप्ति सूर्य व चन्द्रमा के गणित से होती है। सूर्य के क्रोधावश पृथ्वी पर गिरे आंसुओं से व्यतीपात की उत्पत्ति हुई। शुभ कार्यों में इसका त्याग व लोकोपकार कार्यों में इसका ग्रहण होता है।

व्यतीपाति, व्यतीपाती–वि.—१ उपद्रव करने वाला।

२ प्रस्थान किया हुआ।

३ अपमान किया हुआ, असम्मान किया हुआ।

रू. भे.—वितीपाती।

व्यथा–सं. स्त्री [सं.] १ रोग, बीमारी। (ह. नां. मा.)

२ भय, डर।

३ चिन्ता, दुख।

४ कष्ट, दुःख।

उ०—१ आखरी लाख मानें न औ, खाक करी मम खाल री। कुण सुणे साल मोटी कथा, हाय व्यथा मो हाल री। —ऊ. का.

उ०—२ कहती सकू मन व्यथा, बिन कहियां तन ताप। मो जोबन मेमत हुवो, बिरहण करै विलाप। —अग्यात

उ०—३ नहिं सहो जाय जद हूं निडर, कही जाय मोटी कथा। बय बखत अमोलक हूं बथा, विमळ हियै खोटी व्यथा। —ऊ का

५ विकलता, व्याकुलता, परेशानी।

६ पीड़ा, वेदना, दर्द।

उ०—१ दादू सिर करवत बहै, अग परस नहिं होइ। मांहि कलेजा काटियें, यहु व्यथा न जांणें कोइ। —दादूबांणी

उ०—२ सखी सुहागिनि सब कहैं, पिव सौं परस न होइ। निस बासर दुख पाइयें, यहु व्यथा न जांणें कोइ। —दादूबांणी

रू. भे.—बिथा, व्यथा, बिथ, विथा।

व्यथित–वि० [सं.] १ विकल, व्याकुल, परेशान।

२ डरा हुआ, भयभीत।

३ दुःखी, पीड़ित, कष्टमय।

४ रोगी, बिमार।

रू. भे.—बिथित, व्यथित, विथित।

व्याधर, व्याधारी—देखो 'विद्याधर' (रू. भे.) (नां. मा.)

व्यभचार, व्यभिचार, व्यभीचार–सं. पु. [सं. अभिचारः, अभीचार]

१ दूषित आचरण, बदचलनी।

२ रति क्रीड़ा, संभोग, भोग।

उ०—मि बरियु वीरसेन सुत आदि, हंस तणें वचनें उल्लादि। देव तह्यो पित नि ठारि, पुत्री साथि सु व्यभचार। —नळाख्यान

३ सती न होने की स्थिति या भाव, असतीत्व।

४ स्त्री का पर-पुरुष से व पुरुष का पर-स्त्री से अनुचित सम्बन्ध।

उ०—दादू मरणा खूब है, निपट पूरा व्यभिचार। दादू पति को छोड कर, आंन भजै भरतार। —दादूबाणी

५ कामपिपासा को अनुचित रूप से शान्त करने की क्रिया या भाव।

६ अनियमितता, अपवाद।

७ अपराध, दोष। ८ असत्य, झूठ।

रू. भे.—बिभचार, बीभचार, विभचार, वीभचार।

व्यभिचारी–वि० [सं. व्यभिचारिन्] (स्त्री. व्यभिचारण, व्यभिचारणी, व्यभिचारिण, व्यभिचारिणी) १ व्यभिचार करने वाला, पतित।

उ०—जन्म लगें व्यभिचारणी, नख सिख भरी कळंक। पलक एक सन्मुख जळी, दादू धोयें अंक। —दादूबाणी

२ पथभ्रष्ट, कुपथ-गामी।

३ दोषी अपराधी।

४ परस्त्री-गामी।

उ०—छत्रो घरम छोडियो छेला, चोड़ें हुय व्यभिचारी रे। पर-ण्योड़ी रै पास न पोढै, पातर लागे प्यारी रे। —ऊ. का.

५ रतिक्रीडा करने वाला संभोग करने वाला, भोगी।

६ असत्य, झूठा।

सं. पु.—१ वह स्त्री या पुरुष जो पर-पुरुष या पर-स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखता हो।

२ बदचलन, दूषित आचरण।

रू भे.—बिभचारी, भिभचारी, विभचारी।

व्यभ्यास–सं. पु. [सं. वि=विशेष+अभ्यास] विशेष अभ्यास।

उ०—अमान सास्त्र मात्र को स्वपंडतं स्वयम् पढै, गुनीन अग्ग अन्य ह्वै व्यभ्यास ग्रन्थ मैं बढै। प्रकाड पाठ पाठ के त्रिकरमकाड को करै तनै त्रई उपासना ब्रह्मांड ध्यान लै तरै। —ऊ. का.

व्यय–सं पु. [सं. व्यय.] १ उपभोग के कारण वस्तु मे आने वाला ह्रास, घटोती।

२ निर्माण में होने वाला खर्च, लागत।

३ नाश, बरबादी।

४ मद विशेष का खर्च।

५ लग्न से ग्यारहवां स्थान। (फलित ज्योतिष)

६ बृहस्पति की गति या भार के विचार से एक वर्ष या संवत्सर।

७ एक नाग का नामान्तर।

व्ययकरण, व्ययकरणि, व्ययकरणिक, व्ययकरिण, व्ययकरिणि, व्ययकरिणिक-सं. पु. [स. व्यय-कर्णिक] व्यय या भुगतान अधिकारी।

उ०—१ राजा युवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामंत लघु सामंत तलवर तंत्रपाल चतुरमीतिक ताडकरनि मंत्रि महामंत्रि महवाहक स्रीकरणिक व्ययकरणि राजकार धरमाधिक सोवरणक देवक मंडलक गडुरक उरटक हस्तिकाक घोडकाक यमक पुरोहित दंडनायिक·········। —व. स.

उ०—२·········स्रीकरिणिक व्ययकरिणिक राजकरणिक धरमाधिकरिणिक सोवरणकरिणिक देवकरिणिक मडलकरिणिक उरट्टकरिणिक हस्तिकारिणिक यमककरिणिक पुरोहितकरिणिक दंडनायिक सेनापति पउतार आरोहक प्रतीकारप्राप्तिक भांडागारिक माणिक्यभांडागारिक·········। —व. स.

रू. भे.—वयगरणी, वयगरणीक, वयगरणु, वयगरणी।

व्यरथ-वि. [स. व्यर्थ] १ फजूल, फालतू, योहो।

२ अर्थ रहित, मतलब रहित, निरर्थक।

३ लाभविहीन।

रू. भे.—विरथ, बिरथ।

व्यरथता-सं स्त्री. [स. व्यर्थता] व्यर्थ होने की स्थिति या भाव।

व्यलागणी, व्यलागबी—देखो 'लागणी, लागबी' (रू. भे.)

उ०—सत्र रामत व्यळ.गो सारं, तळ छळि घण लाल मत म।
पाव व्यळोम मसि लगि बसियो, नागणि नं डरि कहे हस.नाग।
—चतुरा रामावत राठोड़ री गीत

व्यलागणहार, हारी (हारी), व्यलागणियो—वि०।
व्यलागियोड़ो व्यलागियोड़ो, व्यलाग्योड़ो—भू० का० कृ०।
व्यलागीजणी, व्यलागीजबी—भाव वा०।

व्यलागियोड़ो—देखो लागियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. व्यलागियोड़ी)

व्यळीक, व्यलीक-वि. [स व्यलीक] १ झूठा, असत्य।

२ अप्रिय, अप्रीतिकर।

सं. पु. [सं. व्यलीक] १ कारण, जिससे दु.ख हो।

२ जुर्म, अपराध, दोष।

३ कपट, धोखा।

४ असत्यता, झूठाई।

[स व्यलीक:] ५ लंपट या कामी पुरुष।

६ वह पुरुष जो गुदा मैथुन कराने का आदि हो।

व्यवधान-सं. पु. [सं. व्यवधान] १ बीच में आड़ी आकर आड़ करने वाली वस्तु।

२ रोक, रुकावट।

३ भेद, रहस्य।

४ छिपाव, दुराव।

व्यवसाइ, व्यवसाई—१ देखो 'व्यवसाय' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यवसायी' (रू. भे.)

व्यवसाइयो, व्यवसाईयो—देखो 'व्यवसायी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ सुभट नं आयुधि, सेवक नी स्वामिभक्ति, कलावत नी कला, व्यवसाईया नी व्यवसायि, प्रथ्वीपति नी न्यायि, भाग्यवत नइ भाग्योदयि, एतला प्रदेस माहरी वासभूमि·········। —व. स.

उ०—२ मोई सोई भरथिया, सोनी नइं सूतार। व्यवसाईया सहू जातिना, जं जोईइ तिणी वारि। —मा. कां. प्र.

व्यवसाय-स पु. [स. व्यवसाय] १ जीविका, पेशा।

२ उद्योग, प्रयत्न, कोशिश।

३ कार्य, धन्धा।

४ व्यापार।

५ अभिप्राय, मतलब।

६ कार्य का सम्पादन। ७ विष्णु का नामान्तर। ८ शिव का नाम।

रू. भे.—बिवसाइ, बिवसाय, व्यवसाइ, व्यवसाय, व्योसाय, बिवसाइ, विवसाई, विवसाय, ध्यवसाइ, व्यवसाई।

व्यवसायि, व्यवसायी-सं. पु. [स. व्यवसायिन्] १ व्यवसाय करने वाला व्यक्ति।

२ वह व्यक्ति जो पेशेवर हो।

३ उद्यम या प्रयत्नशील व्यक्ति।

४ व्यापार करने वाला, व्यापारी।

५ किसी कार्य का अनुष्ठानकर्त्ता व्यक्ति।

६ व्यवसाय करने की क्रिया।

रू भे. बिवसाइ, बिवसाई, बिवसाइ, बिवसाई, बिवसायी, व्यवसाइ, व्यवसाई।

अल्पा.,—बिवसाइयो, बिवसाईयो, बिवसायो, व्यवसाइयो, व्यवसाईयो।

व्यवस्था-सं. स्त्री [स] १ किसी निर्धारित कार्य की शास्त्रोक्त विधि।

२ चीजो वस्तुओ को सजाकर अलग-अलग रखने की क्रिया।

३ स्थिति हालत, दशा।

४ किसी कार्य के लिए पूर्वनिर्धारित योजना।

५ कार्यकलाप, प्रबन्ध, इन्तजाम।

रू. भे.—बिवस्था, व्यवस्था, विवस्था।

व्यवस्थापक-सं. पु. [सं.] व्यवस्था करने वाला, प्रबन्धक।

व्यवस्थापण, व्यवस्थापन-सं. पु. [सं. व्यवस्थापन] व्यवस्था या प्रबन्ध करने की क्रिया या भाव।

व्यवस्थापित-वि० [सं.] १ व्यवस्थित, नियमानुसार।

२ निर्धारित, निश्चित।

३ सुसज्जित। (वस्तुएं)

व्यवस्थित-वि. [सं.] १ जिसकी व्यवस्था की गई हो।

२ क्रम से चलने वाला।

३ सजाया हुआ, सुसज्जित।

४ निर्धारित किया हुआ, निश्चत।

व्यवहरिक—देखो 'व्यवहारीक' (रू. भे.)

उ०—.........वधवत ते जे स्नेहवंत, व्यवहरिक ते जे नयावंत, घरणि ते जे सीलवति, छइल ते जे कलावत, वेस्या ते जे रूपवंति, वस्त्र ते जे पत्रालसार, द्रव्य ते जे भोगसार, धान्य ते जे आहारवत, साधु ते जे क्षान्तिवत, करह ते जे विनवंत, तुरंग ते जे वेगवत. हस्ति ते जे भद्रजातीय, मंत्रि ते जे बुद्धिमंत, कर ते जे वीरयवत, राय ते जे प्रसस्य जातिवंत। —व. स.

व्यवहार-सं. पु. [सं.] १ आचरण, चाल-चलन। (डि. को.)

२ पेशा, धन्धा।

३ ब्याज-बट्टे या लेन-देन का धन्धा।

४ व्यापार, व्यवसाय।

५ रीति, रस्म, रिवाज।

६ सम्बन्ध, रिश्ता।

७ मुकदमा या मुकदमा की जांच-पड़ताल करने वाला।

८ अधिकार, हक।

उ०—कहिवो उबरस्ये जिकू, बांणी को निरधार। पिण इण अवसर मारी नैं, कहिवा नो व्यवहार। —जयवांणी

९ शास्त्रोक्त-विधि, नियम।

१० वर्ताव, आचार, सलूक।

उ०—जं किणी धरमोड़िया राजपूत रै सामे उणरो व्याव ठिहयो व्हैतो तो भी वा इता दिन मसा परवांण जापतै रैं' पाछी घर नी इण भांत जापतै रह्यां पछै पाछी गांव मैं पग धर सकती। सास-रिया कै खुद पीवरिया नाक कान वाढ नैं चिगदियौ कर न्हांकता। मूं डा मैं आवै ज्यूं उणी जणी अरळ-विरळ गाळियां काढतो। माजनो नमतो। पण बाप तो दिखावटी अंडो व्यवहार करयो जाणै की अजोवती वात नी व्ही। —फुलवाड़ी

११ भेद, अन्तर, फर्क।

उ०—सरगुण निरगुण परख कै, इनकै लखै व्यवहार। अगम निगम अनुभव लखै, कर कर हंस विचार।

—श्रीहरिरांमजी महाराज

१२ छः सूत्रों में से एक सूत्र का नाम। (जैन)

उ०—व्यवहार सूत्र छ सं सुविचार, वयालूत स्कंध सत अट्ठार। पंचकल्प तें पचम छेद, सवा इग्यारसै संसंख्या वेद। —ध. व. ग्रं.

रू. भे.—बवहार, ववार, बिवहार, बिबहार, बिवार, बुहार, बेवार, बेवार, बोवार, वोहार, व्यवहर, व्यवहार, व्योहार, ब्योहार, ववहार, वावार, विवहार, विवहार, विवार, विव्हार, विहिवार, वुहार, वेवार, वेवार, वेयार, वंवहार, वंवार, वंहार, वोवार, वोवार, वोवार, वोहवार, वोहार, वोहोवार, व्यवार, व्यहवार, व्योहार।

व्यवहरणौ, व्यवहरबौ-क्रि० स०—१ आचरण करना।

२ पेशा या धन्धा करना।

३ ब्याज-बट्टे पर रुपयों का लेन-देन करना।

४ व्यापार करना, व्यवसाय करना।

५ रीति-रिवाजों का पालन करना।

६ मुकदमे की जांच-पड़ताल करना।

७ अधिकार करना, हक जमाना।

८ शास्त्रोक्त विधियों या नियमों का पालन करना।

९ अन्तर करना, तुलना करना।

१० बर्ताव करना, सलूक करना।

व्यवहारणहार, हारौ (हारी), व्यवहारणियौ—वि०।

व्यवहारियोड़ो, व्यवहारियोड़ो, व्यवहारयोड़ो—भू० का० कृ०।

व्यवहारीजणौ व्यवहारीजबौ—कर्म वा०।

बुहरणौ, बुहरबौ, वोहरणौ, वोहरबौ—रू. भे.।

व्यवहारिओ—देखो 'व्यवहारियौ' (रू. भे.)

उ०—१ मढ मढ मंदिर पोलि प्राकार वावि सरोवर कूआ जाइ आराम वनखड विभूंइआ त्रिभूंइआ आवास, चउरासी चहुटां, तिहां व्यवहारिआ नी वजघटा, स्रीमाली पोरआड ओसवाल गूजर कहोल वाइडा हूंबड मोढ, लाडुआ स्रीमाली, अडालजा.........।

—व. स.

उ०—२ व्यवहारिआ महरद्धिक वसइ, आप हेठा कहिनइ नवि कसइ। जेह तणी छइ प्रसन्न द्रेठि, इस्या तिहां छइ न्यायवंत सेठि।

—नळदवदंती रास

व्यवहारिक-वि.—१ व्यवहार से सम्बन्धित।

२ व्यवहार के उपयुक्त या व्यवहार करने योग्य।

३ व्यापार या व्यवसाय से सम्बन्धित, व्यापारिक।

रू. भे. वंवारिक, व्यवहरिक, व्यवहारिक, व्यावहारीक।

व्यवहारियोड़ौ-भू. का कृ.—१ आचरण किया हुआ। २ पेशा या धन्धा किया हुआ। ३ ब्याज-बट्टे पर रुपयों का लेन-देन किया हुआ। ४ व्यापार किया हुआ, व्यवसाय किया हुआ। ५ रीति-रिवाजों का पालन किया हुआ। ६ मुकदमे की जांच-पड़ताल किया हुआ। ७ अधिकार किया हुआ, हक जमाया हुआ। ८

शास्त्रोक्त विधियों व नियमों का पालन किया हुआ। ६ अन्तर किया हुआ, तुलना किया हुआ। १० बर्ताव किया हुआ, सलूक किया हुआ।

(स्त्री व्यवहारियोड़ी)

व्यवहारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१.........काळां पीळां नीळां धउलां इस्या पटोला, सूकडि न समूह, कपूर नां पूर, घणां केसर नां भलवेसरपणा, अगर ना भर, सुगंधपणपूरी इसी कस्तूरी, मनोहर माणिक्य, मनोग्य रूडा रत्न, अनेकि विदेसी वस्तु, इसिउ व्यवहारिया तणउ भवन।

—व. स.

उ०—२ लेतां तौ राजी होय ए, पिण दुस्मण जिम जोय ए। गुरे कहै ज्यारां मांय ए, कुण व्यवहारियौ कहवाय ए।

—जयवाणी

उ०—३ जिणइ ठाकुरि प्रवेसक महोत्सव कराव्या, तणिया तोरण बधाव्या, बदरवाळि ठाम-ठाम सोहाव्या, व्यवहारिया सांम्हा इणि परि वांदिवा आव्या कुणही जौ तस्या वहिल ई कल्होड़ा, कुण ही पल्लांण्या आसण होडा, केई करहि चडी वह वह दिसि ओडा, केइ मुखि मांगइ तबोल-लवंग डोडा।—रा. सा. सं.

व्यवहारी, व्यवहारीउ—वि. [स व्यवहारिन्] उत्तम आचरण वाला।

व्यवहारीओ, व्यवहारू—सं. पु—१ व्यापार करने वाला, व्यवहारी।

उ०—किहां सुखासण किहां डोली? किहा व्यवहारू नइ कोली रे? किहां दीपोच्छव किहां होली? किहां जब रोटी गहू पोली रे?

—नळदवदंती रास

२ व्यवसाय करने वाला, व्यवसायी।

३ वैश्य, बनिया।

उ०—बंभण भाट भला वसइ, व्यवहारिआ विसेख। राजकुळी छडी तिहां, छयल छत्रीसे रेख।—मा. का. प्र

४ सम्बन्धी, रिश्तेदार।

५ व्याज-बट्टे पर रुपये का लेन-देन का कार्य करने वाला, साहूकार।

रू. भे.—बवहारी, बवारी, बहवारी, ब्यवहारी, बवहारी, विवहारी बिहारी, वेहारी, वैहारी, वोवारी, वोहारी, वौवारी, वौहवारी, वौहारी, व्यवारी, व्यहवारी, ब्यारी, व्यारीउ।

अल्पा.,—बवहारियौ, बवारियौ, बहवारियौ, व्यवहारियौ, विवहारिउ, बिवहारियौ, विवहारियौ, बिवहारीउ, विवहारीओ, बिवहारीयौ, विहारियौ, वैवारियौ, वैहवारियौ, व्यवारियौ, वोहरियौ, वोवारियौ, वोहवारियौ, व्यवहारिओ, व्यववारियौ, व्यवारियौ, व्यहवारियौ।

व्यवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

व्यवारियौ—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे)

व्यवारी - देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

व्यसन—स. पु. [सं.] १ अशुभ बात, अमांगलिक बात।

२ निरर्थक कार्य या प्रयत्न।

३ किसी कार्य या बात के लिए मन की एक प्रवृत्ति या रुचि, जिससे मनुष्य उसी कार्य मे संलग्न रहता है।

४ दूषित मनोविकारो के कारण भोगविलास या अन्य बुरे कार्यों के लिए होने वाली आसक्ति, जिसके बिना रहना कठिन हो, बुरी आदत।

उ०—१ तीन लोक को मोल जाय तन सुकवि जगावै, हीरो लागो हाथ पुनरभव फेर न पावैं। ठाला भूला ठोठ कुबुध नहि छोडै काल्हा, पुण्य गया परवार व्यसन जद लागा वाल्हा। —ऊ. का.

उ०—२ हेमजी स्वामी दीक्षा लेवा त्यार थया जद किण ही ग्रहस्थ स्वांमीजी ने कह्यौ—महाराज हेमजी दीक्षा लेवा त्यार थया पिण तमाखू रौ व्यसन है। जब स्वामीजी बोल्या—कावरियां रौ अटक्यौ किसौ विवाह रहै।—भि. द्र.

५ असमर्थता, असामर्थ्य।

६ कष्ट, दुःख।

७ विपत्ति, संकट।

रू. भे.—बिरसन, बिसंन, बिसंन्न, बिसन, बिसन्न, ब्यसन, विसन, विसन्न, विसिन, बिस्न, वीसण, वीसन, व्यस्न।

व्यसनी—सं. पु. [स. व्यसनिन्] वह व्यक्ति जिसे किसी प्रकार का व्यसन हो।

रू. भे.—बिसनो, ब्यसनी भिसणि भिसणी, भसिणी, बिसनी, बिसनीउ, बिसिनि, विसिनी, विस्नी, व्यस्नी।

व्यस्टि, व्यस्टी—पु [स. व्यष्टि] १ समूह या समाज से अलग किया हुआ।

उ०—निकाई छाई तैं प्रकट प्रभुताई सिख नखा, समस्टी व्यस्टी तैं सजन दिव द्रस्टी रिखि सखा। धरै तूं धारै तूं परज प्रत पारै धन धनी, सभी को संहारै प्रळय लय धारै करसनी। —ऊ. का.

२ सनाक नामक आचार्य का शिष्य व विप्रचित्ति का आचार्य।

व्यस्त—वि. [सं] १ आकुल, व्याकुल, घबराया हुआ।

२ काम मे लगा हुआ, कार्य में फसा हुआ।

३ इधर-उधर, आगे पीछे, ऊपर नीचे हुवा हुआ।

४ फैला हुआ, व्याप्त।

व्यस्तार—स. पु. [स.] १ हाथी की कनपट्टियो से मद के चूने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

ब्यस्न—देखो 'ब्यसन' (रू. भे.)

ब्यस्नी—देखो 'ब्यसनी' (रू. भे.)

ब्यस्व-सं. पु. [सं. व्यश्व] १ यम का उपासक एक राजा।
२ ऋग्वेद के कुछ मंत्रों के द्रष्टा एवं अश्विनों के कृपापात्रों में से एक प्राचीन ऋषि।

ब्यहवार—देखो 'ब्यवहार' (रू. भे.)

ब्यहवारियौ - देखो 'ब्यवहारी' (अल्पा., रू. भे.)

ब्यहवारी—देखो 'ब्यवहारी' (रू. भे.)

ब्यहू, ब्यहू—देखो 'बेऊ' (रू. भे.) (उ. र)

ब्यां-सर्व.—वह का बहुवचन, उन।
क्रि वि.—१ ऐसे, इस तरह।
२ वैसे, उस तरह।

ब्यांण-सं. स्त्री.—१ समधी की स्त्री।
२ वह स्त्री जो किसी जागीरदार की लड़की के दहेज में दी जाती हैं और उसे भी वरपक्ष के किसी दास को उसी दिन विवाह दी जाती है।
रू. भे.—बिवांयण, बिवाहण, बिवाहिणि, बिवाहिणी, बेवाण, ब्यांण, ब्याहणी, वियाण, ब्यायण, ब्यावण।

ब्यांणु, ब्यांणू-सं. पु. [सं वि+अणु] अणु से बड़ा, विशेष अणु।
उ०—अणुं तैं ब्यांणु तैं ब्रहद्‌ळ बिभूतै प्रति बिभू, तुजै ना जानै को सुहृद स्वसु जानै अल अभू। कहूँ क्या ध्यावै धी कहन नहिं आवै कुळकुळै, मदांधा मायाग्री तुम रु हम भावी सम तुलै।
—ऊ का.

ब्यांन-सं. पु. [स. व्यान] शरीर में रहने वाली दश प्रकार के वायु मे से एक प्रकार का वायु जो शरीर मे सचार करता है तथा इसके द्वारा शरीर मे रस पहुँचना, शरीर से पसीना निकलना, खून का चलना व अन्य शारीरिक क्रियाएँ होती है।
रू. भे.—ब्यान, वियान।

ब्यांनदा-सं. स्त्री. [स. व्यानदा] शरीर मे 'व्यान' वायु प्रदान करने वाली शक्ति।

ब्यांम-स. पु. [स व्याम] दोनो भुजाओ को दोनो ओर फैलाने के बाद एक हाथ की अंगुलियो के सिरे से दूसरे हाथ की अंगुलियो के सिरे तक की लम्बाई का नाप।

ब्यांमोह—देखो 'ब्यामोह' (रू. भे.)

ब्यांव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)
उ०—१ जलमी रा रे आया सार ज करतौ छिन-छिन धीय री, दूसरा वीर म्हारै राव गढा रे करतौ ब्यांव।
—औआमाता री गीत

उ०—२ पेठा तिहा पालती पांणी, नेमजी मांहे उछाल्यौ पांणी। माम्यौ माम्यौ जाणो जाणी, ब्यांव मनाय लियौ माडांणी जी।
—जयवांणी

उ०—३ कठै है कुरीती ? पिता-पुरखी रीत पर चालणौ कांई कुरीती है ? अबार रूपचंद रै घरै बेटी रौ ब्यांव ही जणौ गुळ री लेगटी राखियौ तौ कोयनी ? माईतां री रीत मरजाद अर आप रै सरूप नै देखणौ पडै है।
—वरसगांठ

उ०—४ साची है पछै मिनख कमावै क्यों है ? ब्याव-सगाई, मोसर-मोसर, रीत-रवाना अै ईज तो नामा-कामा करणा नै। म्हारी आपरी बंन कैवै है कै म्हारै तो अै ईज छेहला ब्यांव है
—वरसगांठ

ब्याही ब्याई-स. पु. (स्त्री. ब्याण, ब्यायण) सगा, समधी।
उ०—मैं क्यूं डरपो रै भाई पोळिया म्है छां म्हारी बैनड़ रा लेवाळ। वीरो तो आयौ सेया अणाइया, ब्याई जी नैं लटक जुहार। मेलो तो मेलो ब्याईजी बैन नैं, आयी बाई रै पैलै सावण री तीज। म्हानै तो ठीक नही भोळा ब्याईजी, पूछो थारी ब्यायणजी नैं बात।
—लो. गी.
रू. भे.—बिवाई, बिवाही बिवाई, बिवाही, बेवाई, बेवाही, बेवाई, बेवाही, ब्याई, ब्यायी, ब्यांही, बियाई, बेवाई, बेवाही, ब्याही।

ब्याऊ—१ देखो 'बिवाई' (उ र)
२ देखो 'ब्याव' (रू भे)

ब्याकरण-स पु [सं.] १ एक प्रकार का शास्त्र विशेष, जो वेदो के छः अगो मे स एक माना जाता है। (डि को)
उ०—१ स्वामीजी कनै एक ब्राह्मण आयनै पूछ्यौ साचां ब्याकरण भण्या हो। स्वामीजी बोल्या—म्है तो व्याकरण कोइ भण्यां नही। जद ब्राह्मण बोल्यौ—ब्याकरण भण्या बिना सास्त्र ना अरथ हुवै नहीं।
—भि. द्र.

उ०—२ सब्द ही खट सास्त्र कहियै, सब्द ही नव ब्याकरण। सब्द ही सस्क्रत पण कहियै, सब्द ही पद उच्चारण।
—श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—३ कोई कहसी रुखमणीजी श्रीक्रस्णजी सौं अनुराग हुअउ सु विण देख्या क्यो करि हुऔ। तिको जबाव देई छै। रुखमणीजी ब्याकरण पढया पुराण पढया। ईतना सबही माफ ऐक हीको अधिकार पायौ।
—वेलि टी.

वि० वि०—उक्त शास्त्र में, बोलचाल एवं साहित्यिक भाषा के स्वरूप, गठन, अवयवों, प्रकारों, पारस्परिक सम्बन्धों, रचनाविधान व रूप परिवर्तन पर विचार होता है।
२ भाषा सम्बन्धी नियमों के सकलन की पुस्तक।
३ व्याख्या, विवेचन।

४ निर्माण, रचना ।
५ ७२ कलाओं में से एक कला ।
६ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक कला । (व. स.)
७ आठ की संख्या । * (डिं. को.)
रू. भे.—बियाकरण, ब्याकरण, बियाकरण ।

व्याकरणी–सं. पु. [सं. वैयाकरण] व्याकरण का ज्ञाता पंडित ।

व्याकळ—देखो 'व्याकुळ' (रू. भे.)

व्याकुळ, व्याकुल–वि. [सं व्याकुल] १ घबराया हुआ, बेचैन, दुःखी ।
उ०—१ वरमाळा लै कंठि वणावै, पलक खुली तदि त्रिया न पावै । दसण दुख हूत जीव व्याकुळ अति, पडै न जक सोचै नित भूपति । —सू. प्र.
उ०—२ मनुष्य जु गरमी करि व्याकुळ हुवै छै । अर रूंखां की छाह वांछै छै । सु यै बात रौ न्याउ छै । इसी गरमी हुई छै । जु सूरज पणि हेमाचळ की सरणी पकडै छै । अर सूरज ही उत्तरि आया छै । —वेलि टी.
२ उदास, खिन्नचित्त ।
उ०—आप बिना गोपिन सब ब्रज की, व्याकुळ भई निराट । मीरां के प्रभु दरसण दीज्यौ, करज्यो आनद ठाट । —मीरां
३ भयभीत, डरा हुआ, विह्वल ।
उ०—व्याकुळ तातें भई तनु देही, सिर पर जम का घेरा । मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तापत तन बहुतेरा । —मीरां
४ क्षोभयुक्त ।
उ०—पांच पचीसौं बस कियं, मेरा पला न पकडं कोय । मीरां व्याकुळ विरहणी रे, कोई आंन मिळावै मोय । —मीरां
५ उदास चंचलता रहित ।
उ०—आवै सवेग आकळा, वदन्न नैण व्याकुळा । पयंग छाड पाधरा, असस्स रोम ऊधरा । —मा. वचनिका
६ उत्कंठित, उत्सुक ।
सं. पु.—समुद्र, सागर । (ना. डिं. को.)
रू. भे.—व्याकुळ, व्याकुळी, बकळ ।

व्याकुळणौ व्याकुळबौ–क्रि. अ.—१ घबराना, व्याकुल होना, बेचैन होना ।
उ०—हुला-बोल चौरंग दळां बीच भूर्ज हरण, गजा कुळ्था कुळत हुअं घर गाह । व्याकुळत ममग रव बळत धूळी रवण, "सूर" रौ चडै तिणवार 'गजसाह' । —कल्याणदास महडू
२ उदास होना, खिन्नचित्त होना ।
३ भयभीत होना, डरना, ।
उ०—बहुमंड किमां फुट्टी बळं, धमक तळातळ धातळं । मुखं हुसे सकति महाबळ, बेताळा कुळ व्याकुळं । —मा. वचनिका
४ उतावला होना, आतुर होना ।
५ कम्पकम्पाना, धूजना ।
व्याकुळणहार, हारौ (हारी), व्याकुळणियौ—वि० ।
व्याकुळियोडौ, व्याकुळियोड़ौ, व्याकुळ्योडौ—भू० का० कृ० ।
व्याकुळीजणौ, व्याकुळीजबौ —भाव वा० ।

व्याकुळता, व्याकुलता–सं. स्त्री. [सं. व्याकुलता] १ व्याकुल होने की अवस्था या भाव ।
२ खिन्नचित्त होने की अवस्था, उदासी ।
३ भय, डर ।
रू. भे.—बेकळी, वेकळी ।

व्याकुळियोडौ–भू. का. कृ.—१ घबराया हुआ, व्याकुल हुवा हुआ, बेचैन हुवा हुआ. २ उदास हुवा हुआ, खिन्नचित्त हुवा हुआ. ३ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ, विह्वल हुवा हुआ. ४ उतावला हुवा हुआ, आतुर हुवा हुआ. ५ कम्पकम्पाया हुआ, धूजा हुआ । (स्त्री. व्याकुळियोडी)

व्याकुळी–वि.—भयभीत, बेचैन, व्याकुल ।
उ०—सळसळी चापली चळी सिर 'सेस' रै, बीजळी तणी बपु वेण बिबा । व्याकुळी गिरा आरत सुणे अचाड़, आकुळा लिह कर झाल अबा । —बालाबक्स बारहठ
रू. भे.—बेकळी, वेकळी ।

व्याकोस–वि. [सं. व्याकोष] १ बढाया हुआ, फुलाया हुआ ।
२ खिला हुआ, विकसित ।
३ बुद्धि को प्राप्त, बुद्धिमान ।

व्याकृति—देखो 'विकृति' (रू. भे.)
उ०—सूक्ष्म सरीर, व्याकृति बहीर, क्षीनातिक्षीन चित विदित चीन । पद परम पून्य संकल्प सून्य, निरवांण नित्य अतर अनित्य । —ऊ. का.

व्याखांन, व्याख्यांन–सं. पु. [सं. व्याख्यान] १ व्याख्या करने की क्रिया
२ भाषण, वक्तृता ।
रू भे.—ब्याखान, व्याख्यान ।

व्याखांनसद, व्याख्यांनसद–वि. [सं. व्याख्यानसद] १ व्याख्या करने वाला, टीकाकार ।
२ भाषण देने वाला, वक्ता ।
रू. भे.—बखांणसद, व्याख्यानसद बखांणसद, ।

व्याख्यांनसाळा व्याख्यांनसाला–सं. पु. [सं. व्याख्यानशाला] व्याख्यान देने का स्थान ।

व्याख्या–सं. स्त्री. [सं.] समझाने के लिए किसी बात या विषय का किया जाने वाला विस्तृत रूप से स्पष्टीकरण व उसकी टीका ।

व्याघात–सं. पु. [सं.] १ आघात, प्रहार, चोट ।

२ विघ्न, बाधा, अड़चन, रुकावट।

उ०—रिखिजी कहै पुत्र दो ए हुसो, पिण थें मानो एक बात रे लाला। व्रत लेसी बालापणं, जो नवि करो व्याघात रे लाला।

—जयवाणी

३ ज्योतिष शास्त्र के सत्ताईस योगों में से तेरहवां योग।

वि. वि.—किसी शुभ कार्य करने में इस योग की नौ घटि अशुभ मानी है, जिसमें कोई शुभ कार्य करना वर्जित है।

४ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें एक ही साधन द्वारा दो विरोधी बातों के होने का वर्णन होता है।

व्याघ्र–सं. पु. [स.] सिंह, शेर।

२ यातुधान नामक राक्षक का पुत्र व निरानंद नामक राक्षस का पिता एक राक्षस।

३ भाद्रपद माह मे सूर्य के साथ घूमने वाला एक यक्ष।

वि.—१ सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

२ मुख्य, प्रधान।

व्याघ्रकेतु–सं. पु. [स.] १ पांचाल राजकुमार जो कौरव पक्ष में था एवं सात्यकि के द्वारा मारा गया था।

२ पांचाल योद्धा जो कर्ण के द्वारा मारा गया था।

व्याघ्रग्रीव–सं. पु. [सं.] एक प्राचीन देश। (पुराण)

व्याघ्रचरम, व्याघ्रचरम्म व्याघ्रचांम–सं. स्त्री. [सं. व्याघ्रचर्म] शेर की खाल जिस पर सन्यासी बैठते हैं एवं शोभा या सजावट के लिए कमरों में लटकाई जाती है।

व्याघ्रदत्त–सं. पु. [स] १ पांडवपक्षीय एक राजा जो श्रेष्ठ रथियो मे से एक था।

२ मगध राजकुमार जो कौरव पक्ष की ओर से लड़ते हुए सात्यकि के द्वारा मारा गया था।

३ अश्वत्थामा द्वारा मारा गया एक पांडव पक्षीय राजा।

४ द्रोण के द्वारा मारा गया एक पांडवपक्षीय पांचाल का योद्धा।

व्याघ्रनख—देखो 'बाघनख' (रू भे.)

व्याघ्रनखौ—देखो 'बाघनखौ' (रू. भे.)

व्याघ्रनांखून—देखो 'बाघनख'

व्याघ्रनाइक, व्याघ्रनायक–स. पु. [स. व्याघ्रनायक] गीदड़, शृंगाल।

व्याघ्रपद, व्याघ्रपाद–स पु. [स] वशिष्ठ ऋषि का पुत्र एवं उपमन्यु के पिता एक प्राचीन ऋषि।

व्याघ्रमुख–स. पु [स] १ एक देश का नाम।

२ एक पर्वत का नाम।

व्याघ्रहन–स. पु. [स.] ऊर्ध्वंष्ट्री नामक एक राक्षस का पुत्र एवं शरभ का पिता, एक राक्षस।

व्याघ्राक्ष–स. पु. [स.] १ स्वामी कार्त्तिकेय का एक अनुचर।

२ एक राक्षस का नाम। (पुराण)

व्याघ्री–स. स्त्री. [स] वसिष्ठ की पत्नी का नाम।

व्याड़ि— देखो 'व्याडि' (रू. भे.)

व्याज–स. पु [स.] १ कपट, छल, धोखा। (अ. मा., ह. नां. मा.)

२ बाधा, विघ्न, अड़चन।

३ विलम्ब, देरी।

४ बहाना, मिस।

उ०—गंगदेव रै खुरासांण खेत रो अति बेग बाजी सुणियो जिसड़ौ ही तुरग सज्ज कराइ कुमार एकल ही असवार आखेट रो व्याज करि बखादशा सूं ईसान दिसा री अटवी मे बूंदी सौं पांच कोस परै लग जाइ सिकार रा रमणा मैं पांच ही दिन बिताइ एक मद्द दोइ बाराह गाडा घलाइ चाह करि सायंकाळ रैं समय बूंदी आयौ।

—व. भा.

५ ऋण की राशि पर लिया जाने वाला अतिरिक्त धन, सूद।

उ०—१ पिण साहूकार दीवाल्या री खबर तो मांग्या पड़ै। साहुकार तो व्याज सहित देवै अनै दिवाल्यो मूल ही मैं तोटो घालै। ज्यूं भगवतैं सूत्र भाख्या तिम प्रमाणे चालै तै साधू अनै पाचमो आरा नो नाम लेइ सूत्र प्रमांणे न चालै तै असाध।

—भि. द्र.

उ०—२ नाकी राखण जीव कसै घणा रे, काढै करडै रुपये व्याज रे। ओसर-मोसर ढोल बजाय दै रे, चतुर सुधारै सगला काज रे।

—जयवांणी

६ व्याज पर दी जाने वाली राशि, ऋण।

उ०—गाम चलता सुकन गिणीजै, हणतो विण किण ही न हणीजै। विण ग्रहणै दीजै मत व्याज, निरचै वरस नो राखै नाज।

—ध. व. ग्रं.

रू. भे.—विआज, बियाज, व्याज, विम्राज, बियाज, वीयाज।

व्याजउक्ति—देखो 'व्याजोक्ति' (रू. भे.)

व्याजड़ियौ–स. पु.—व्याज पर रुपया देने वाला व्यक्ति।

व्याजनिंदा–स स्त्री. [स.] १ छल, कपट या बहाने से की जाने वाली निन्दा, जो ऊपर से देखने मे स्पष्ट निन्दा जान न पड़े।

२ एक प्रकार का शब्दालकार जिसमे इस प्रकार निन्दा की जाय।

व्याजबटौ–स. पु—वह व्यवसाय जिसमे ऋण देने व व्याज वसूल करने का कार्य किया जाता है।

व्याजस्तुति–स स्त्री. [स.] १ स्तुति के शब्दो मे निन्दा व निन्दा के शब्दो मे स्तुति करने की एक प्रकार की क्रिया विशेष।

२ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमे इस प्रकार से निन्दा या स्तुति की जाय।

रू. भे.—बिब्राजस्तुति, बियाजस्तुति, ब्याजस्तुति, ब्याजस्तुति, ब्याजस्तूती।

ब्याजू–सं. पु.—वह रकम जो ब्याज के उद्देश्य से लेन-देन की जाती है।

रू. भे.—बियाजू, ब्याजू, बाज्यू बियाजू, बीयाजू, ब्याजू।

ब्याजोक्ति–सं. स्त्री. [सं.] १ कपटयुक्त बात।

२ किसी गुप्त बात के प्रकट हो जाने पर उसे छिपाने के लिए किया जाने वाला बहाना।

३ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी गुप्त बात के प्रकट हो जाने पर उसे छिपाने के लिए बहाना युक्त कथन किया जाय।

रू. भे.—ब्याजोकती, ब्याजोक्ति।

ब्याज्यू—देखो 'ब्याजू' (रू. भे.)

ब्याड–सं. पु. [सं.] १ सर्प, सांप।

२ देवराज इन्द्र।

३ दुष्ट हाथी।

४ मांसभक्षी जीव।

५ गुण्डा, दुष्ट।

ब्याडि–सं. पु. [सं.] एक प्रसिद्ध व्याकरणकर्त्ता का नाम।

रू. भे.—ब्याड़ि।

ब्याणी–वि. स्त्री.—प्रसव देने वाला मादा पशु।

ब्याणी–सं. स्त्री.—जन्म देने की क्रिया।

ब्याणो, ब्याबो—देखो 'ब्याणी, ब्याबो' (रू. भे.)

उ०—१ पीड़ति हेमंत सिसिर रितु पहिलो, दुख टाळ्यो बसंत हित दाखि। ब्याए वेली तणी तरवरां, साखां बिसतरियां बैसाखि।
—वेलि

उ०—२ तरै मीयां नै समाचार हुवा तरै मीयां फोज री चमसांण करनै रांमदासजी ऊपर चढिया। रामदासजी नै आखडी छै सेह दीठां खिमणो नही। सांढ तिण एक ब्याइ सो सांढ ऊभी छोडनै जांण री आखडी। तरै तोडिया मैं पखाळ नै सांढ ऊपरै घाल लियो नै आगो खडीया।
—रा. सा. सं.

उ०—३ ज्यूं एक साहूकार जिहाज मैं बैस समुद्र पार ब्यापार करवा गयो। पाछो आवतां कपड़ं री मजूस मे एक गरभवती ऊदरी आइ सो ब्याई। साहूकार देखिनं बोल्यो इण नें समुद्र मैं नहीं न्हांखणी। आवता करै।
—मि. द्र.

उ०—४ कोट मुलक खिडिया के खंड, ब्याइ मसूहक फाटो ब्रह्मंड। बडा बडा आवै बरियाम, 'अबर' आगै करै सलाम।
—गु. रू. बं.

१ देखो 'बिघाहणो, बिवाहबो' (रू. भे.)

ब्याति–सं. पु.—एक तारा जो मृग के नीचे रहता है। इसको संस्कृत में लुब्धक कहते हैं।

ब्याध–सं. पु. [सं.] १ शिकार करने वाला, शिकारी।

उ०—तळ खनै बांणू दुसटी पांणू, रटै नरांणू रखिभांणू। यह ब्याध हसांण चूके बांणूं बध सोबाणू बळ सतू।
—भगतमाळ

२ प्राचीन काल की एक शिकारी जाति, किरात, बहेलिया।

३ दुष्ट नीच आदमी।

४ देखो 'ब्याधि' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ कीहै जो विधि कहु बखांणि, गुनम रोग तिण सो विधि जाण। पेट सूळ जो होइ अगाध, सूर डभ नै नासै ब्याध।
—ध. व. ग्रं.

उ०—२ कळू में अभनी ब्याध प्रेत सूं उबारै वेता, तेरासं तेईस जीता भूलोक ताठोड़। ग्रंथां गुणा भीना साख येद्रा मैं कीरती गावै, रेणवा रूखाळो पाबू मगजी राठोड़।
—बादरदान दधवाड़ियो

उ०—३ हहो करं हित होंण कभो तन ब्याध जगावं। घधो राज भय घरे, ररो घन नास करावे।
—र. रू.

रू. भे.—ब्याध, ब्याधि।

ब्याधि–सं. स्त्री. [सं.] १ रोग, बीमारी। (व. स.)

उ०—१ लिया नांम मुख लाभ, ब्याधि दुख आधि न व्यापं। कुळ सज्जण थिर करै, भरो वडपण ऊथापे।
—र. रू.

उ०—२ ब्याधि जरा रहि वेगली, मलीम्र लखण होइ जेह। देवि जं विधि विरतरी, सबिको पालइ तेह।
—मा. कां. प्र.

२ कष्ट, दुख, पीड़ा। (डि. को.)

उ०—१ रीत भाद जदुवस परांणुं, जंगां बिखन जिगन सम जांणुं। 'जीवण' हरतायोत सजोसो, आसुर ब्याधि हरण फिर ओसो।
—रा. रू.

उ०—२ आधि ब्याधि चिता सहु चूरइ, बइरी कर न सकइ को बुरउरी, सुंदर रूप मनोहर मूरती, हार हियइ मरतकि सेहरउ री।
—स. कु.

३ कुष्ट या कोढ़ नामक रोग।

४ झगड़ा, बखेड़ा, टंटा।

५ साहित्य में तंतीसवां संचारी भाव।

७ मृत्यु की एक पुत्री का नाम।

रू. भे.—बियाधि, ब्याध, ब्याधि, बाही, ब्याध, ब्याधिय, ब्याधी,

मह.,—बियाधी।

ब्याधित–वि. [सं.] रोगी, बीमार।

ब्याधिय, ब्याधी—देखो 'ब्याधि' (रू. भे.)

उ०—बुध ब्याधिय आधि उपाधिय मैं, सुख साधिय सुन्य समाधिय मैं। निरभै तन रोग वियोग नहीं, सुपनें मन संसय सोग नहीं।
—ऊ. का.

ब्याप—१ देखो 'व्याप्य' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्मांड ब्यास, परधी प्रकास, अति ब्याप एस, व्यापक बिसेस। बैराट वद्ध, सानंद सिद्ध, घट बढन घाट, नूतन निराट।
—ऊ. का.

२ देखो व्यापक' (रू. भे)

ब्यापक-वि. [सं.] १ चारों ओर फैलाया हुआ, सर्वत्र व्याप्त, सर्वत्र विद्यमान।

उ०—१ ब्रह्मांड ब्यास; परधी प्रकास, अति व्याप एस ब्यापक बिसेस। बैराट वद्ध, सानंद सिद्ध, घट बढन घाट, नूतन निराट।
—ऊ. का.

उ०—२ तुं जांह तांह ब्यापक रहै, कठे अव्यापक नाहि। तुझि कु किसका डर नहीं, जनहरिया मुझि मांहि। —अनुभववाणी

उ०—३ ज्यु घायल डर सालै पीरा, त्युं त्यु ब्यापक राम सरीरा। घायल की घायल सो जानै, परगट कहि दिखलाउ छानैं।
—अनुभववांणी

उ०—४ भैं निद्रा आसा इवक ना तिस ब्यापक सुधा।
—केसोदास गाडण

उ०—५ अठोत्तर पुत्री जाति अनूप, भलासुर दोइ हजार सरूप। उपना एकण पिंड अनेक, हूवा संसार ब्यापक हेक।
—रा. वंसावळी

उ०—६ सुपहां दर चचळ वाळ सरू, घट ब्यापक गोरखनाथ गरू। तुरतांण जिसी चढवांण तपै, कर वेढ सिवाड मैं वास कपै।
—पा प्र.

२ छाया हुआ।

३ सामान्य, साधारण।

४ ढकने या घेरने वाला।

रू भे.—बियाप, बियापक, ब्यापक, वापक, विआपक, वियापक, वीआपक, वीयापक, व्याप।

ब्यापण-सं स्त्री. [स. व्यापन] फैलाव, विस्तार।

ब्यापणौ, ब्यापबौ-क्रि. अ. [सं. वि.+आप्लृ] १ चारो ओर फैलना, ब्यापक होना, व्याप्त होना।

उ०—१ विकट जडी मुहरा धरया, कांम भुजंग डस लीन। विख ब्याप्यौ, उतरै नहीं, परख्या बिना प्रवीण। —अग्यात

उ०—२ देवी नीर रै रूप तूं प्राण ठारै, देवी तेज रै रूप तू नीर हारै। देवी ध्यान रै रूप तूं जगत ब्यापी, देवी जगत रै रूप तूं धरम थापी। —देवि.

उ०—३ निज यस दिसि दिसि ब्यापए, थापए चउ विह संघ। सूरउ तेहुज सामिय, धामिय कामिय रंग। . —जयसेखर सूरि

२ विद्यमान होना, उपस्थित होना।

उ०—१ तुमही कहो अरधंगा हमारी, हम हूं नपाया कारा। कोटि ब्रह्मांड मे ब्यापि रह्यो है, सो निज वर है हमारा। —मीरां

उ०—२ नमो खाग हथ्थी नमो खप्पराळी, नमो काळिका काळ-रात्री ककाळी। नमो सब ब्यापी नमो सुक्ख दाता, नमो गोरी पारबती ध्यान गाता। —मा. वचनिका

३ समाना, प्रविष्ट होना।

४ छाना, फैलना।

५ घेरना, ढकना।

६ उत्पन्न होना, पैदा होना।

उ०—१ में निकल्या कदाग्रही छड ए, ए रिखीस्वरों नो दंड ए। परसन पूछें तूं बांकड़ा ए, ए कोध ब्यापण रा टांकड़ा ए।
—जयवांणी

उ०—२ जा घट विरह न ब्यापही, भयें अव्यापक तन। जनहरिया घट विरह विन, जांणि अलूणी अन। —अनुभववांणी

उ०—३ लिया नाम सुख लाभ, व्याधि दूख आधि न ब्यापै। कुळ सज्जण थिर करै, अरी बडपण ऊथापैं। —रा. रू.

उ०—४ अहुं प्राणि ता तन बसै, ब्यापं विघन करोडि। जन-हरीया पद स्वात कु, जाता लेह बहोडि। —अनुभववाणी

उ०—५ नाव परताप जळ जोगणी चंडका, भैरवा भूत छळ छेद नाही। नाव परताप तैं विघन ब्यापै नहीं, नाव परताप तिहु लोक माही।
—अनुभववाणी

७ होना।

उ०—१ प्यारी पोढी पीव संग, कोऊ न ब्यापै बीह।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती। प्रापत होत भोत सुख सपत्ति, ब्यापत नाहि विपत्ती। —मे. म.

उ०—३ जै मन राखें रामजी, अपने अंग लगाइ। दादू कुछ ब्यापै नही, जे कोटि काळ भख आइ।
—दादूवाणी

८ विचार उत्पन्न होना।

उ०—हियै तहब्बर खान रै, ब्यापी यों विपरीत। दाह अकब्बर भोगयौ, नीरग साह नचीत।
—रा. रू.

९ असर होना, प्रभाव पड़ना।

उ०—परिचय पीवै राम रस, राता सिरजनहार। दादू कुछ ब्यापै नहीं, तै छूटै संसार।
—दादूवाणी

१० उत्पन्न होना।

उ०—राजा बणी चतुराई सूं झारि भरि रखीस्वरा रै हाथ दीनी। तरै स्रीगोतमजी स्रीपरमेस्वरजी रा नांव री कळवांणी करि दीनी। आवी रांण्यां नै पावज्यो, महाराज रै पुत्र होसी। तरै राजाजी घरै पधारिया। उण राति राजाजी प्रतीक ल्या तियै सुख मैं पोढ्या छूं। आधी राति रै समै महाराज नै त्रखा घणी व्यापी, तरै खवास कना सु जळ मगायौ। तरै खवास असमझ थकै मंत्री झारी हाजर कीनी। —रा. वंसावळी

११ पहुंचना।

उ०—पंच पंडवि वनंतरि विमासिउं, तेरिमूं वरस केमि गमेसिउं बुद्धि नारद महारिसि आपी, मध्यदेस रहियौ तुम्हि व्यापी। —सालिसूरि

व्यापणहार, हारौ (हारी), व्यापणियौ—वि०।

व्यापियोड़ौ, व्यापियोड़ौ, व्याप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

व्यापीजणौ, व्यापीजबौ—भाव वा०।

बिआपणौ, बिआपबौ, बियापणौ, बियापबौ, ब्यापणौ, ब्यापबौ, वापणौ, वापबौ, विआपणौ, विआपबौ, वियापणौ, वियापबौ, वीआपणौ, वीआपबौ—रू. भे.।

व्यापत—देखो 'व्याप्त' (रू. भे.)

व्यापति, व्यापती—देखो 'व्याप्ति' (रू. भे.)

उ०—आवइं सकल कलापति, व्यापति मांडइ कोडि। बइठा स्व-धन सुखासनि, वासणि धन दिइं कोडि। —जयसेखर सूरि

व्यापार-सं. पु. [सं.] १ व्यवहार, सम्बन्ध।

उ०—जाहरां उबै नूं राजा पासै लै गया, ताहरां मारगि मैं जावतां हटवाणियै री देणौ हुतौ तिको बोलियौ, रजपूत, म्हारौ लहणौ दोयै जाह। तोनूं राजा मारिसी। औ छाडूं नहीं। ताहरां वडै, व्यापारी सूं व्यापार हुतो, तिकै आया। आइनै कह्यौ, ठकुराळा, टको-पईसो खरचतो अपूठो मत जोए। म्हे खरच पूरवस्यां। अर छोटै व्यापारी रौ करज दीयौ। —बाप री सीख री बात

२ कर्म, कार्य, काम।

३ धंधा, व्यवसाय, क्रय-विक्रय का पेशा।

४ उद्योग, उद्यम।

५ आचरण, चारित्रिक, व्यवहार।

६ विषय के साथ होने वाला इन्द्रियों का संयोग। (न्याय)

रू. भे.—बेपार, बैपार, बोपार, ब्यापार, ब्योपार, ब्यौपार, वापार, वेपार, वेवार, वैपार, वैवार, वोपार, वोवार, व्योपार, व्यौपार।

मह.,—बेपारौ, वोपारौ।

ापारिक-वि. [सं.] व्यापार का, व्यापार से सम्बन्धित।

पारी-सं. पु. [सं. व्यापारिन्] १ व्यापार करने वाला, क्रय-विक्रय करने वाला, सौदागर।

उ०—१ सांझ परी गई, गुवड़ी परी बइ, दीवइ जोति थई। चोहटइ भीड़ मिटी, व्यापारी नी महिमा घटी, हाटइ ताळा थकइ। आप आप रै घर आया, कूंची लाया। स्त्री सोलह सिंणगार सजै, गणिका बार मैं भजै। —रा. सा. सं.

उ०—२ ताहरां वडै व्यापारी सूं व्यापार हुतो, तिकै आया। आइनै कह्यौ, ठकुराळा, टको-पइसो खरचतो अपूठो मत जोए। म्हे खरच पूरवस्यां। अर छोटै व्यापारी रौ करज दीयौ। यूं करतां राजा गुनह माफ कीयौ। —बाप री सीख री बात

उ०—३ पाटण सहर, तठै अजैपाळ साह व्यापारी रहै। वडौ धनेस्वरी। तिणरै देवीदास नामौ अेका-अेक बेटौ। सौ बरसां पनरह मांहि हुवौ, तिको बडौ सपूत। नामै-लेखै बिणज व्यापार मांहि बहोत खबरदार। —पलक दरियाव री बात

उ०—४ व्यापारी बहू वांणिआ, थोसौ वेचक व्यास। मागण पणि मिळिया बहू, सहूनी पूगइ आस। —मा. कां. प्र.

२ वैश्य, बनिया।

उ०—१ कह्यौ महाजन आवै जिणा नै पइसा लेइ रोटियां कर घालबौ कर। महाजन आवै ज्याने मेर तो बाह्मणी नो घर बताय देवै। कितलै एक काळै च्यार व्यापारी घणा कोसां रा थाका आया। मेरां नै कह्यौ उत्तम घर बतावौ जद बाह्मणी रौ घर बतायौ। —भि. द्र.

उ०—२ तिम हिज जेठमलजी कह्यौ थे जास्यौ तो और व्यापारी आंण वसासां पिण साधां नै काढां इसौ अन्याय म्हे करां नहीं। जद वावेचा कूंचियां लेइ आप आप रै घर गया। —भि. द्र.

३ व्यवसाय, कार्य-धन्धा या पेशा करने वाला व्यक्ति।

रू. भे.—बेपारी, बैपारी, बोपारी, ब्योपारी, ब्यौपारी, वापारी, वेपारी, वैपारी, वोपारी, वौपारी, व्योपारी, व्यौपारी।

व्यापियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ चारों ओर फैला हुआ, व्यापक हुवा हुआ, व्याप्त हुवा हुआ। २ विद्यमान हुवा हुआ, उपस्थित हुवा हुआ। ३ समाया हुआ, प्रविष्ट हुवा हुआ। ४ छाया हुआ, फैला हुआ। ५ घेरा हुआ, ढका हुआ। ६ उत्पन्न हुवा हुआ, पैदा हुवा हुआ। ७ हुवा हुआ। ८ विचार उत्पन्न हुवा हुआ। ९ असर हुवा हुआ, प्रभाव पड़ा हुआ। १० उत्पन्न हुवा हुआ। ११ पहुँचा हुआ।

(स्त्री. व्यापियोड़ी)

व्यापी-वि. [सं. व्यापिन्] १ व्याप्त या व्यापक होने वाला या हुवा हुआ।

२ सर्वत्र फैलने वाला या फैला हुआ।

३ आच्छादित या आच्छादन करने वाला।

सं. पु.—विष्णु भगवान का नाम।

रू. भे.—बिप्रापी, बियापी, बिमापी, बियापी।

व्याप्त–वि. [सं.] १ फैला हुआ, पसरा हुआ. २ भरा हुआ, परिपूर्ण ३ सम्मिलित, शामिल. ४ समाया हुआ, प्रविष्ट हुवा हुआ. ५ आच्छादित।

रू. भे.—बियाप, व्यापत।

व्याप्ति; व्याप्ती–सं. स्त्री. [सं.] १ व्याप्त होने की क्रिया या भाव।

२ आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक।

३ नियम या सिद्धान्त जो सर्वत्र लागू होने वाला हो।

४ फैलाव, विस्तार।

५ परिपूर्ण होने की अवस्था, परिपूर्णता।

रू. भे.—व्यापति, व्यापती।

व्याप्तिग्यांन–सं. पु. [सं. व्याप्तिज्ञान] साध्य को देख कर साध्यवान् के या साध्यवान को देख कर साध्य के अस्तित्व के सम्बन्ध मे होने वाला ज्ञान। (न्याय)

व्याप्य–वि. [सं.] वह जो व्याप्त करने योग्य या व्यापनीय हो।

रू भे.—व्याप।

व्याप्रत–सं. पु. [सं. व्यापृत] १ सचिव, मंत्री। (डि. को.)

२ कामदार। (डि. को.)

४ नौका, नाव।

वि.—१ किसी कार्य मे लीन या सलग्न।

व्याप्रति–सं पु [सं. व्यापृतिः] १ कार्य, धन्धा।

२ कार्य, कर्म।

३ उद्योग, परिश्रम।

४ पेशा, धंधा।

व्यामोह–सं. पु. [सं. व्यामोहः] १ मोह, अज्ञान।

उ०—व्यामोहे वर वीर, घर घर सत देखि घणउ, आयउ राह हर आप रह, समहरि 'अचळ' सधीर। —अ. वचनिका

१ व्याकुलता, परेशानी।

रू. भे.—व्यामोह।

व्यायण—देखो 'व्याण' (रू. भे.)

उ०—मेलो तो मेलो व्याईजी बंन नें, आयी बाई रै पैले सावण री तीज। म्हांनैं तो ठीक नही भोळा व्याईजी, पूछो थांरी व्यायण जी नैं बात। —लो गी

व्यायाम–स. पु. [स. व्यायामः] १ शरीर को मजबूत एव पुष्ट बनाने के लिए किया जाने वाला शारीरिक श्रम, कसरत।

२ परिश्रम, महनत।

३ थकावट।

४ रति-क्रिया के बाद होने वाली थकावट।

५ कोशिश, प्रयत्न, प्रयास।

व्यायांमसाळ, व्यायांमसाल, व्यायांमसाळा, व्यायांमसाला–सं. स्त्री. [सं व्यायामशाला] वह स्थान जहा व्यायाम किया जाय।

उ०—जिनमदिर धवलमदिर राजकुल देवकुल अट्टाल प्रासादमाल लेखसाल पौषधसाल रथसाल हस्तिसाल, तुरंगसाल व्यायांमसाल टंकसाल आस्थानसभा स्रोगरणसभा व्ययकरणसभा........।

—व. स.

व्यायांमी–वि.—व्यायाम करने वाला।

व्यायोग–सं. पु. [स.] एक प्रकार का रूपक विशेष। (साहित्य)

व्यायोड़ी–स स्त्री.—मादा पशु जो प्रसूता हो गई हो, ब्याई हुई, जिसने बच्चा प्रसव किया हो।

व्यायोड़ो—देखो 'बिआहियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. व्यायोड़ी)

व्यारण—देखो 'वारण' (रू. भे.) (अ. मा.)

व्यारी, व्यारीउ—देखो 'व्यवहारी' (रू भे.) (उ. र.)

व्याळ, व्याल–स. पु. [स. व्याल] १ दुष्ट व्यक्ति, निर्दयी व्यक्ति। (अनेका.)

२ मौत का दिन, मृत्युकाल। (,,)

३ सर्प, साँप। (,,)

उ०—१ माधव ! कौधउ मझ सखी, अै को अभिनवु व्याल। फणि फाटी मद जन्मियु, आगइ जेम मशाल। —मा. का. प्र.

उ०—२ तोयधी मुनिंद्र पाण वचें व्याळ वैनतेय, दूठ अद्र वचें धाण जुधाण दधीच। बक्था सत्रा चा बाधा चद रायासाल बीजें बीर खागा खाधा जे न लाधा भीम बीच। —हुकमीचद खिड़ियो

उ०—व्याळ नूं जगायो सोर बिडूजा चलायो वज्र, सीधली अधायो कै सुणायो बीर साद। धुरजटी जटा हूं अघायौ बीरभद्र आयौ, देव दळां ऊपरां यूं आयो मेघनाद। —जोगावरसिंघ

उ० —४ उरमाळ मुंड नि छाल नाग की, लाल केसरि जूसणं। वपु भस्म लेप स्मसांन राजित, व्याळ पाणि विभूसणं। —ला. रा.

४ हस्ती, हाथी। (अ. मा., अनेका)

उ०—१ अटवी-अथा अटवी वरणन। अनेकोत्कट व्रक्ष गहन। बिविध व्याळ सारदूळ। काल ककाल। वेताल। क्षेत्रपाल। साकिनी। डाकिनी। योगिनी। यक्ष। राक्षस। गधरव विद्याधर। खेचर। भूत। प्रेत। पिशाच। क्रीडादिक कारि।

—सभा

उ०—२ मदमसत हळवळ, हालि मैंगळ, विमळ स्यामळ घटा बद्दळ, जाणि रद बग पत उज्जळ, व्याळ माळ विसाळ। हींस हैंमर कळळ हूंकळ, दुकळ सुकळा सोर दमगळ, वीज पळकत सेल झळझळ प्रबळ दळ भूपाळ। —महाराज हणूतसिंघ सेखावत री वीरा

५ सेषनाग।

उ०—नहीं तू काळ नही तूं कम्म, नहीं तूं ब्याळ नहीं तूं ब्रह्म। नहीं तूं देव नही तूं दंत, नही तूं भेव नही तूं भंत।
—ह. र.

६ दुष्ट हाथी।
७ बुरा या उपद्रवी व्यक्ति।
८ पवन, हवा, वायु।
उ०—दी प्राग्या दूसरां, मेळ कीजं ग्रह मंगळ। जण समयै दिस भाठ, काठ जगै दावानळ। मेळि भाळ तण भुम्रण, करै मंजण दोनूं कर। परि भूलै जळ पाणि, सकत विरि मांण सरोवर। रव प्रगति ब्याळ प्रवा रवण, सौर ज्वाळ इळ संमिळै। सुज सती होम करतां सु वणि, मिळै घोम नभ मडळै।
—रा. रू.
९ शिकारी या हिंसक जन्तु।
१० भगवान् विष्णु का एक नाम।
११ राजा, नृप।
१२ सिंह, शेर।
१३ बाघ, चीता।
१४ दण्डक छन्द का एक भेद विशेष।
रू. भे.—विप्राळ. बियाळ, ब्याळ, ब्याल, बयाळ, विप्राळ वियाळ, वीप्राळ, वीयाळ, वेयाळ।

ब्याळखळ-स. पु. [स. व्यालखल] १ मोर, मयूर। (ना. मा.)
२ पक्षिराज गरुड़।
३ सिंह, शेर।

ब्याळग्राही-स. पु. [सं. व्यालग्राहिन्] सांपों को पकड़ने वाला, सपेरा।

ब्याळग्रीव, ब्यालग्रीव-स. पु [सं. व्यालग्रीव] एक देश का नाम।

ब्याळधीस ब्यालधीस-सं. पु. [सं व्यालधीश] १ शेषनाग।
२ ऐरावत हाथी।

ब्याळपाळ-सं. पु. [सं. व्यालपाल] चन्दन। (नां. मा.)

ब्यालरेस-स पु.—सर्पों का समूह।

ब्याळसूदन-स. पु [स. व्यालसूदन] १ पक्षिराज गरुड़।
२ मोर, मयूर।
३ सिंह, शेर।

ब्यालारि-सं. पु [स. व्याल+अरि] १ सर्प-शत्रु गरुड़। (अ. मा)
२ मोर, मयूर।
३ सिंह, शेर।

ब्यालिक-सं. पु. [सं.] सपेरा।

ब्याळी, ब्याली-स. पु. [सं. व्याली] १ शिव शंकर, महादेव।
२ मोरनी।
३ सिंह की स्त्री, शेरनी।

ब्याळू-सं. पु. [स. विकालिक] १ रात्रि का भोजन, सायंकालीन भोजन।
उ०—१ पलक तू हिज पाळसियां उदम, पाळग तूं हिज न पाळां पाळ। वाटण तू ही न ब्याळा ब्याळू, गोविंद तूं हिज न ग्वाळां ग्वाळ।
—पीरौ प्राढौ
उ०—२ पूनम री घट्ट चांदणी रात। वै दोनूं जणा धांनपुर पूगा जितरै ब्याळू वेळा व्हैगी। गाम रा गोर मैं छोरा कब्बडी रमता हा अर चावटै बैठ्या लोग-बाग बातां करता हा। —अमरचूनड़ी
रू. भे.—बियाळू, बेळू, ब्याळू, वियालु, वियाळू, वेळू, वेलु, वेळू, वेलू।

ब्याव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)
उ०—१ एम गुणसठे साठो प्रायौ, राव सहंसमल ब्याव रचायौ। धरपति 'अजो' मोड़ सिर धारै, परणीजण सांचोर पधारै।
—रा. रू.
उ०—अब माहतां ब्याव की होस कीनी छै। रांमेपुर ब्राह्मण नै आग्या दीनी छै। रांमेपुर अठा सुं गुजरात नै ब्यायौ छै। अहमदा-बाद नगर मैं आयौ छै। तदि कपूरचंद सेठ सुणि पायौ छै। सेठ आपका आदमी खिनायं रांमेपुर नै बुलायौ छै।
—बगसीरांम प्रोहित री बात
उ०—२ रजपूतां नै उपदेस पसू चारी खाण बळै ही सांमधरम पाळियौ तो है। राजपूतां थें नरदेह हौ, अन धणी रौ खावौ दुख मैं सहायता धणी सूं लौ ब्याव सात्रा आदि मैं ईजत राखै है जैड़ा घणा कारण है सो थै राजपूतो री राह चालणी चाहौ नै तांहरो उद्धार चाहो तो धणी री बुरी नै आपरी न्यूंनता जांणी।
—वी. स. टी.
उ०—४ हरसा वीर मेरा रे, राव गढा रे, करतो ब्याव। मेरी मा का रे जाया, घुडला तो हसती रे देतौ घूमता।
—जीणमाता री गीत

ब्यावड़ी—देखो 'विवाह' (अल्पा., रू. भे)
उ०—ओसर मोसर माय, ब्यावड़ा आडी आवे। चारै पारै मिळा, करवला भोज मणावै। कूतरडी रै भेळ, गिरणीजै नीरो माड़ो। पण घिटाळै टळै, नरा अपजस अंबाडो।
—ऊदरैद

ब्यावट-स. पु. [सं व्यावर्त] दोष महादोष।
उ०—हरजीमल सेठ रागी थयो, जद रुघनाथजी सैं डरजोजी साध मोटी पोलियो लेई वाचवा लागो। भीखणजी उठै अमकडियै गांम कावौ पांणी लीधौ, अमकडियै गांम कंवाड़ जड़नै सूना, अमकड़ियै नित्य पिंड लीधौ, इत्यादिक अनेक दोख पांनां सूं वांचवा लागो। जद सेठजी बोल्या—जोधपुर जाओ राजा कनै पुकारो। आ तो ब्यावट है। ओ झगड़ो म्हां सूं नहीं मिटे।
—भि. द्र.

ब्यावण, ब्यावणी—देखो 'ब्यावण' (रू. भे.)

ब्यावणु—देखो 'ब्यावणु' (रू. भे.)

ब्यावणो, ब्यावबो—१ देखो 'ब्याणो, ब्यावो' (रू. भे.)

उ०—सारधिया में स्वामीजी पधारया। एक बाई कह्यो स्वामीजी म्हारै भैंस ब्यावै जब पधारो तो लाहो लेवूं। तं किम भैंस ब्यायां एक महिना तांइ दूध दही वावर देवे जिए विलोवे नहीं। तं वेवी रै टांणे पधारज्यो। —भि. द्र.

२ देखो 'विवाहणो, विवाहवो' (रू. भे.)

ब्यावणहार, हारो (हारी), ब्यावणियो—वि०।

ब्यावियोड़ो, ब्यावियोड़ो, ब्याव्योड़ो—भू० का० कृ०।

ब्यावीजणो, ब्यावीजबो—भाव वा०, कर्म वा०।

ब्यावर—सं. स्त्री.—१ गाय भैंस आदि की जिनेंद्रिय या योनि।

२ प्रसव देने की क्रिया।

उ०—दूहो दुपटो दाम, वोड़या सो ही जांणसी। ब्यावर तणो विराम, बांझ न जांणे वींझरा। —वींझरा अहीर री बात

ब्यावलो—देखो विवाहलो' (रू. भे.)

ब्यावहारिक, ब्यावहारीक—देखो 'व्यवहारिक' (रू. भे.)

ब्यावियोड़ी—वि. स्त्री.—१ जिसका विवाह हो गया हो।

२ जिसने बच्चे को जन्म दिया हो, प्रसूता।

ब्यावियोड़ो—देखो 'विवाहियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. ब्यावियोड़ी)

ब्यावू—स. पु. [अनु.] कुत्ते के भौंकने की आवाज।

उ०—पण मोट्यार बेटा उणरै कंणा री कीं गिनरत करै नी। वो घड़ी घड़ी वारै माथै घसळो करतो कुत्ता री गळाई भुसै। सांकड़ै आया पूंछ हिलावै। पाठ पोर कळमळ करतो वो कुत्ता री भांत ब्यावू ब्यावू करतो रैवै। मोट्यार काटी बेटा उण रै भुसणा री कीं वारै करै नीं। —फुलवाड़ी

ब्यास—सं. पु. [स.] १ वेदों का संग्रह, विभाग व सम्पादन द्वारा पुनर्रचना करने वाले एक महर्षि, जो पाराशर ऋषि व धीवर कन्या सत्यवती (मत्स्यगन्धा) के संसर्ग से उत्पन्न हुए थे।

उ०—१ सावतरी सांमि रा करै वाखांण किताई, हसमांवद हरि-रीक साथ नारद सवाई। पारासुर पेंहळाद सेस संगेव महेसुर, परिवाह मं प्रकरू ब्यास रिखि वारट ईसर। —पी. ग्रं.

उ०—२ सहज कळा जागी सबै, तन मन वचनां सास। अनररिया हरर कथा, वेव न वांणी ब्यास। —अनुभववांणी

उ०—३ देवी वालमिक ब्यास रूपं तूं कर्ता, देवी रामायण पुरांणो भागवत्त। देवी काया रै रूप तूं पाप खूंटै, देवी पाव रै रूप भाराण छूटे। —देवि.

वि० वि०—इन्होंने पुराण, भागवत, महाभारत व वेदांतसूत्र आदि की रचना की थी। ये नदी के बीच टापु पर उत्पन्न होने के कारण द्वैपायन व रंग काला होने के कारण कृष्ण कहलाये। इनका जन्म सत्यवती की कौमारावस्था में बैशाख पूर्णिमा के दिन हुआ था। इनकी माता सत्यवती का विवाह भीष्म पितामह के पिता महाराज शान्तनु से हुआ था। जिससे उसे विचित्र वीर्य व चित्रांगद नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। इन दोनों पुत्रों की मृत्यु निसन्तान होने के कारण वंश की स्थापना के लिए इन्हें सत्यवती ने नियोग की आज्ञा दी। अतः दोनों की पत्नियों अम्बिका व अम्बालिका से नियोग कर क्रमशः धृतराष्ट्र व पाण्डु को जन्म दिया एव अम्बिका की दासी से विदुर को जन्म दिया। इन्होंने संजय को दिव्यदृष्टि दी थी। विभिन्न मन्वन्तर में जन्म लेकर वेदो के विभाग, सग्रह व सम्पादन करने वाले अट्ठाईस महर्षियों में इनका अन्तिम नाम है। सभी अट्ठाईस महर्षियों को व्यास कहते हैं जिनके नाम निम्नलिखित हैं—

स्वयभू, मनु, उशना, बृहस्पति, सविता, मृत्यु, इन्द्र, वशिष्ठ, सारस्वत, त्रिधामा, ऋषभ, सुतेजा, अन्तरिक्ष, सुचक्षु, त्रय्यारुणि, धनञ्जय, कृतञ्जय, ऋतञ्जय, भरद्वाज, गौतम, हर्यात्मन, वाचश्रवा, तृणबिन्दु, ऋक्ष, शक्ति, पराशर, जातूकर्ण और कृष्णद्वैपायन।

२ ब्राह्मण जो कथावाचक व ज्योतिषी होते हैं।

उ०—१ वियें 'गजन' फिर बूझिया, 'अजन' वडा उमराव। प्रोहित व्यासां बारठां, पूछं रीत प्रभाव। —रा. रू.

उ०—२ व्यापारी सहू वांणिया, जोसी वैद्यक व्यास। मांगण परिण मिलिया बहू, सहूनो पूगइ आस। —मा. कां. प्र.

३ गोल वृत्त मे से एक सिरे से दूसरे सिरे तक सीधी निकल जाने वाली रेखा। (रेखा गणित)

४ फैलाव, विस्तार।

रू. भे.—बियास, बीयास, ब्यास, बिपास, बियास, ब्यासि, ब्यासी।

ब्यासगीता—स. स्त्री. [सं.] एक उपनिषद का नाम।

ब्यासगुफा—स. स्त्री. [स.] बद्रिकाश्रम के पास की एक गुफा जहां व्यासजी द्वारा पुराणों की रचना की गई थी।

ब्यासतीरथ—स. पु. [स. व्यासतीर्थ] एक प्रसिद्ध तीर्थ। (पुराण)

ब्यासपूनम, ब्यासपूरणिमा—सं. स्त्री. [स. व्यासपूर्णिमा] आसाढ़ की पूर्णिमा जिसे गुरु पूर्णिमा भी कहते हैं।

ब्यासबन—स. पु. [सं.] कुरुक्षेत्र में स्थित एक बन जिसमें एक पुण्य तीर्थ है।

ब्यासस्थल, ब्यासस्थली—सं. पु. [स.] कुरुक्षेत्र में एक तीर्थ, जहां व्यास ने अपने पुत्र वियोग से संतप्त हो शरीर त्याग देने का निश्चय किया था।

ब्याससूतर, ब्याससूत्र—सं. पु. [स. व्याससूत्र] वेदांतसूत्र।

ब्यासि, ब्यासी—देखो 'व्यास' (रू. भे.)

ब्याह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ नव नव वेल वसत नित सिर आयौ मधुमास। परणा-वण 'जैसाह' नूं, प्राक्रम ब्याह प्रकास। —रा. रू.

उ०—ब्यार बक बमरी देह कुक्रम पड़ै, अरध भर उरध कै बीच फेरा। दास हरिराम कहै ब्याह ग्रैसा रच्या, आव नहीं जाय चळ फेर वेरा। —अनुभववांणी

उ०—पछै रूण सांखलो रै पधारिया। सांखला नाळेर ले रावजी रै साम्हां आया। साखलो टीकायत रावत कहावतौ जिण री बेटी रावजी नू परणाई। घर रावजी पण खरा मेंहरबान हुय ब्याह कियो। —नैणसी

उ०—४ रग विण ब्याह. वेस विण रांमति, सुंदरि विण ग्रिह-वास जिसौ। सुरतांण कहै कलियांण समोभ्रम, त्याग पखै कुळ जलम तिसौ। —त्याग प्रसंसा री गीत

ब्याहक—वि.—विवाह करने वाला, दुल्हा।

उ०—हैरान हुआ हिंदू तुरक, आया लोह न आडडै। गजगाह 'भीम' 'गाजी' हुग्रो, ब्याहक लाडी लाडडै। —गु. रू. ब.

ब्याहणौ, ब्याहबौ—१ देखो 'ब्याणौ, ब्याबौ' (रू. भे.)

उ०—१ इतरै फकीर पाखती घोड़ा बधिया छै जिका रै साम्हो जोवणै लागियो। सो पायगा माही बधी बंवरढाल नजर चढी। ग्रेक सूरेजी री सवारी री घोडी मंनर आरबी बडी सी कीमत री। बंवरढालती सूं ब्याही छै सो ग्रेक तो बछेरी बरस अढाई री हुवो। ग्रेक बछेरो महिनां नो री हुई सी दोनूं पाखती बंधिया खड़ा छै। —सूरे खीवै कांधळोत री बात

उ०—२ ताहरा खान जाय घोडी संभाळी। घोड़ी रा पगा माही सवा मण लोह री गट्टी सो दीठी। ताहरां खान मन मे कहण लागियो—जे ग्रेम दोय बार ब्याही छै पण गट्टी नू तो तोड नांखसी। यूं जांण घोडी नूं कायजो देय, गट्टी सुद्दा बाहर काढी। —सूरे खींवे कांधळोत री बात

उ०—३ ग्रा कुत्ती एक बाळद री सागै थी ब्यावण थी सो ईं ठांव ब्याही। —साह रांमदत्त री वारता

२ देखो 'विवाहणौ, विवाहवौ' (रू. भे.)

उ०—१ सोमपाल री सु कन्या, जयमाळा तसु नांम। ग्रव विक्रम संग ब्याहई, नगर सोवारे गाम। —पंचदंडी री वारता

उ०—२ सुरजन सुत बूंदी सदन, सच्या दुरजणसाल। ब्याहण हूं बळभद्र नू, हुवौ सहायक हाल। —वं. भा.

ब्याहणहार, हारौ (हारी), ब्याहणियौ—वि०।

ब्याहियोड़ौ, ब्याहियोड़ो, ब्याह्योड़ौ—भू० का० कृ०।

ब्याहीजणौ, ब्याहीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

ब्याहति, ब्याहती—देखो 'व्याहृति' (रू. भे.)

ब्याहवाघो—स. पु.—१ विवाह के अवसर पर लिया जाने वाली एक सरकारी कर विशेष।

२ देखो 'वाघो'।

ब्याहलौ—सं. पु.—१ डिंगल का एक (छंद) गीत विशेष।

२ देखो 'विवाहलौ' (रू. भे.)

उ०—गुरु गोविंद कै सरणै आयो, कुळ की लज्या पेली। कृष्ण कृपा तैं कर्म कटावलो, मणै पदमैयो तेली। —रुकमणी मंगळ

ब्याहार—सं. पु [स] १ वक्तृता, भाषण। २ ध्वनि, नाद, उच्चारण।

ब्याहियोड़ौ—देखो 'ब्याथोड़ौ' (रू. भे.)

ब्याहियोड़ौ—देखो 'विवाहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ब्याहियोड़ी)

ब्याहिलौ—देखो 'विवाहलौ' (रू. भे.)

ब्याही—देखो 'ब्याई' (रू. भे.)

ब्याहुलौ—देखो 'विवाहलौ' (रू. भे.)

ब्याहृत—वि. [सं. व्याहृत] बोला हुआ, भाषण दिया हुआ, उच्चरित किया हुआ।

ब्याहृति, ब्याहृती—स. स्त्री. [स. व्याहृतिः] १ भाषण, वक्तृता।

२ बयान।

३ भू:, भुवः, स्वः आदि मंत्र जो गायत्री मंत्र के साथ जपे जाते है।

उ०—ब्याहृती गायत्री, व्रती, धारत नहीं धरम धनी, स्रुती यो स्मृति सरब धूर मे धसाता। बकतो मे बाद बाद, बूझत करतौ विवाद, सीतळप्रसाद सरव जात कौ ओमाता। —ऊ. का.

रू. भे.—ब्याहृति, ब्याहृती।

ब्यिजण, ब्यिजन—सं. स्त्री. [स. वीजन] १ हवा वायु।

उ०—गल्या पीतल रतांजणी तला पखावज धोंकार करइ छइ। नृत्यकी पात्र नृत्य करइ छइ। ततवितत घन सुखिर पचवरण बाजित्र बाजइ छइ। पचवरण छत्र धारिया छइ। चांमर ब्यिजन बिहुं पखि हुइ छइ। —कां. दे. प्र.

२ देखो 'ब्यंजन' (रू. भे.)

ब्युतक्रस्ट—सं. पु. [स व्युत्क्रुष्ट] व्यक्त पदाक्षर को स्पष्ट ध्वनि के साथ उच्च से उच्चतर बोलने की क्रिया या भाव। (संगीत)

ब्युषितास्व, ब्युषिताश्व—सं. पु. [स. व्युषिताश्व] इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम।

ब्युत्पत्ति—सं. स्त्री. [सं.] १ मूल उद्गम या उत्पत्ति स्थान।

२ शब्द का मूल रूप।

३ किसी विज्ञान या शास्त्र का अच्छा ज्ञान।

ब्युत्पन्न—वि. [स] निकला हुआ, निस्सित।

२ किसी विज्ञान या शास्त्र का अच्छा ज्ञान।

व्युषिताश्व—सं. पु. [सं. व्युषिताश्व] पुरुवंशीय एक राजा का नाम जो राजा कक्षीवान् की पुत्री भद्रा का पति था।

वि. वि.—इसकी पत्नी भद्रा अत्यन्त सुन्दर होने के कारण यह अति कामासक्त रहता था अतः इसकी असामयिक मृत्यु हुई। मृत्यूपरान्त इसके शव से भद्रा को सात पुत्र उत्पन्न हुए थे।

व्युष्ट—सं. पु. [सं. व्युष्ट] १ पुष्पार्ण एवं दोषा के पुत्रों में से एक, जो पुष्करिणी का पति एवं सर्वतेजस् का पिता था।

२ विभावसु एवं उषा के पुत्रों में से एक पुत्र, वसु।

व्यूंवर—सं. पु. [सं. व्योमवर] देवराज इन्द्र। (अ. मा.)

व्यूढ—वि. पु. [सं.] १ पूर्ण, भरा हुआ, पूरा।

२ विवाह किया हुआ, विवाहित।

३ सेना की आकृति।

उ०—औंर की अवेल आनी पूरी पन भेल भेल, खेलबी पसंद कीनी बाहनी धनी की तैं। नांम परतापसिंह प्यार की पितु तैं पायी, व्यूढ बरदांम बडा धन्वय धनीकी तैं। —ऊ. का.

व्यूढोरस, व्यूढोरु—सं पु [सं.] धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक जो भीम के द्वारा मारा गया था।

व्यूह—सं. पु. [सं व्यूहः] १ समूह, झुण्ड। (अ मा., ह. नां. मा.)

२ सेना, फौज।

३ युद्ध के समय सेना को किसी विशेष रूप से खड़ा करने का ढंग, सेना-विन्यास।

उ०—१ सुत 'माणद' 'महेस', खगं पडवेस धड़च्छै। गिड बाजे पड़िहार, व्यूह चक्राकत मच्छै। —रा. रू.

उ०—२ झंगा चौसला सांकळां सूत डोरा, धरा यूं खणं ज्यूं वर्णं खेत घोरा। भला जूह वे वेरिया व्यूह भेदी, बिजै मित्र जं चित्र संग्राम वेदी। —व. भा.

४ शरीर, देह।

उ०—बभीखन कूं पाट बैठाए, सीता सहत अवधपुर आए। भरथ सत्रधन लछमन रामा, पूरण विस्णु व्यूह अभरामा। —करणी भरोग

५ तर्क-वितर्क।

६ निर्माण, रचना।

७ चक्र।

८ अमरकोश।

रू. भे.—व्यूह।

व्यूहन—सं. पु. [सं. व्यूहन] १ युद्ध के समय सेना को किसी विशेष ढंग से खड़ा करने की क्रिया।

२ निर्माण करने की क्रिया।

व्योंत—देखो 'वेंत' (रू. भे.)

व्योंतणौ, व्योंतबौ 'वेंतणौ, वेंतबौ' (रू. भे.)

व्योंतणहार, हारौ (हारी), व्योंतणियौ—वि०।

व्योंतियोड़ौ, व्योंतियोड़ौ व्योंत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

व्योंतीजणौ, व्योंतीजबौ—कर्म वा०।

व्योंताणौ व्योंताबौ—देखो 'वेंताणौ, वेंताबौ' (रू भे.)

व्योंताणहार, हारौ (हारी), व्योंताणियौ—वि०।

व्योंतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

व्योंताईजणौ, व्योंताईजबौ—कर्म वा०।

व्योंतायोड़ौ—देखो 'वेंतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री व्योंतायोड़ी)

व्योंतियोड़ौ—देखो वेंतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्योंतियोड़ी)

व्योपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे)

व्योपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे)

उ०—अंदर भक्ति, मो मन परिखो ए, तूं तो पहला व्योपारी सारिखो ए। जड कहा राजा खेदे मरचो ए, पिण इतरी कहा ठाडो पड्यो ए। —जयवांणी

व्योम—सं पु [सं व्योमन्] १ आकाश, आसमान। (हि नां मा.)

उ०—१ प्रपंच पंच तत्व को तुही उपावनी, क्षमाप वह्नि वायु व्योम तू खपावनी। ब्रह्मम की तुही रजा भुजा बलदनी, नमामि 'इंदरा' 'समद' नंदनी। —मे. म.

उ०—२ पत्र सुधारै जोगणी, माळ सुधारै रंभ। थंभ चलेवौ सोम रवि, पेखै व्योम अचंभ। —रा. रू.

२ जल, पानी।

३ भोडल, अभ्रक।

४ सूर्य का मंदिर।

५ बादल, मेघ।

६ शून्य।

६ विष्णु का नाम।

७ पवन, वायु, हवा।

८ नीला, आसमानी। (डि. को)

१० यदुवंशीय राजा दशार्ह के पुत्र जो जीमूत का पिता था।

रू भे.—वोम. वौम, व्वोम, वयोम, वोम, वोमि, वौम।

व्योमकेस, व्योमकेसी—सं पु. [सं. व्योमकेश, व्योमकेशिन्] शिव, महादेव।

उ०—उरमाळ मुंड नि छाल भ्रग की खाल केसरि जूसण। बपु भस्म लेप स्मसान राजत, व्याळ पाणि विभूषणं। गण भूतेस पिसाच कौतुक, भत तनु जटा जुटी। जय व्योमकेस महेस संकर, भीम भूतप धूरजटी। —ना. द.

व्योमगंगा-सं. स्त्री. [सं.] आकाशगंगा ।

उ०—भवानी नमो कच्छपी रूपान भासा, भवानी नमो ऐन ईसान वासा । भवानी नमो व्योमगंगा बलच्छा, भवानी नमो चेतना देत दच्छा । —मे. म.

रू. भे.—वोमगंगा, व्योमगगा, वोमगंगा ।

व्योमगमन-सं. स्त्री. [सं.] आकाश मे उड़ने या विचरण करने की क्रिया ।

व्योमगामी-वि. [सं.] आकाश मे उड़ने या विचरण करने वाला ।

सं. स्त्री.—आकाश मे उड़ने या विचरण करने की विद्या ।

व्योमचर, व्योमचारी-सं. पु. [सं. व्योमचर, व्योमचारिन्] १ आकाश में विचरण करने वाला, देवता ।

२ सूर्य, सूरज । ३ चान्द, चन्द्रमा ।

४ आकाश में उड़ने वाले पक्षी । ५ गन्धर्व ।

वि.—आकाश मे विचरण करने वाला ।

व्योममण्डल-सं. पु. [सं. व्योममण्डल] आकाश ।

व्योममृग-सं. पु. [सं. व्योममृग] चन्द्रमा के दसवें घोड़े का नाम ।

व्योमयान-सं. पु. [सं. व्योमयान] एक प्रकार का वह यान जिसमें बैठ कर आकाश मे उड़ा जा सकता है ।

व्योमवली, व्योमवल्ली-सं स्त्री. [सं. व्योमवल्ली] अमरवेल नामक लता विशेष ।

व्योमसरिता-सं. स्त्री. [सं.] आकाश में बहने वाली नदी, आकाशगंगा ।

व्योमारि-सं. पु. [सं.] एक विश्वदेव का नाम ।

व्योमाळ-सं. पु. [सं. व्योम] आकाश । (डिं. ना. मा.)

व्योमासुर-सं. पु. [सं.] मायासुर का पुत्र एवं कंस का अनुगामी एक असुर । कृष्णवध के लिए यह गोकुल गया था जहां इसका वध कृष्ण ने किया था ।

व्योरो-सं. पु.—१ भेद, रहस्य ।

२ कारण ।

उ०—तिसं समियै माहे भाणेज मानशाता आइ मुजरो कीयो । राण्यां कहे छै भाणेज एकै समियै थारे मामोजी नुं तूं पूछे खुसियाळ करि कवळ अर पूछे माहाराजा मोहल माहे पधारो छो ताहरा नीसासा क्यूं नाखो छो, इतरो व्योरो म्हां नु ले देई । —चौबोली

३ विवरण, वृतांत, हाल ।

४ ज्ञान, समझ, बुद्धि, विचार ।

५ व्याख्या, टीका ।

६ संक्षिप्त जानकारी, परिचय ।

७ बयान ।

रू. भे.—ब्योरौ ।

व्योहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—यूं हम छाड्या जग व्योहार, सुख थोड़ा दुख अनंत अपार । माता पूत पिता नही कोय, स्वारथि आय मिल्या सब होय ।

—ह. पु. वा.

व्यौंची-सं. स्त्री.—एक प्रकार का रक्त विकार का रोग विशेष ।

(अमरत)

व्योपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—दमक छटा छबिडड पताका देखिया, पटा हाथ व्योपार जुहारां पेखिया । आभूखण नर नारि ईसी विध ओपिया, जांणक सुरपुर लोक, इधक छबि ओपिया । —बगसीराम प्रोहित री बात

व्योपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०——आपणी आपणी बाणी राजवसी राजावां कै रूपक सुणाए, सूरवीर सांमत ताकूं अनंत सुहाए । एतं कवि वीरता कै अग्रकारी, स्रीमहाराज के सुभचितक विद्या जस कै व्योपारी ।

—रा. रू.

व्रंग—देखो वंग' (रू. भे.)

उ०—व्रंग हुवै भोपाळ बसती गढ कोट उजाड़ै व्रंग हुवै नर नारि सूरवीरा पति पाड़ै । व्रंग हुवै राज्यद्र, राज लै बधव मारै, व्रंग गोई गोठिया, दाव छोड़ै सारै । व्रंग न कीजै भाइयो, व्रंग कौ को छोजै, विसन भगत 'ऊदौ' कहै, जाणता व्रंग न कीजै ।

—ऊदौजी नैण

व्रंद-सं. पु. [सं. वृंद] १ समूह, झुण्ड । (अ. मा.)

उ०—१ आपघा दळण गोखम जळण आहौटी, बिसै खटचलण कळियां कदम व्रंद । बारबाहा करी आठ मासा बळण, नहं करी बळण कू जसोमत नद । —बा. दा.

उ०—बरणं रूप व्रंदावन ओप वाधू सदा सेवत देवतं व्रंद साधू । तरा भार अट्ठार नूं भार तैसो, अनेका विराजै तरां रूप ऐसो ।

—रा. रू.

उ०—१ हाक थमु वजाड़े ग्रीधा गळ डळा, बीजुजळा भुजाबळा माजे अळा व्रंद । अछरा वरजा करै आटीला बोवाण आवो, अंगहोमा कहे ऊभो आवी पुरा इद । —वनजी सिंढियो

उ०—४ अलि फौज तुंग मड़ग, ऊखग किर दधि भ्रग । वणि सुरय पायक व्रंद, जग जाण दळ जयचद । —रा. रू.

२ ढेर, समुच्चय ।

उ०—भवानी नमो सत्य आलाप बाळा, भवानी नमो व्रंद विद्या विसाळा । भवानी नमो देव हेरभ माता, भवानी नमो तम्रमो सत माता ।

—मे. म.

३ गले में होने वाला अर्बुद ।

४ एक प्रसिद्ध कवि का नाम।

५ फलित ज्योतिष के अनुसार एक शुभ मुहूर्त।

रू. भे.—ब्रंद, ब्रिंद।

ब्रंदा—सं. स्त्री. [सं. वृन्दा] १ तुलसी।

२ गोकुल के समीपस्त वन।

३ कृष्ण की प्रेमिका राधिका का नाम।

४ जालंधर नाम दैत्य की पत्नी और कालनेमि की कन्या का नाम।

रू. भे.—ब्रिंदा।

ब्रंदारक—सं. पु. [सं. वृन्दारक] देवता। (नां. मा.)

उ०—घट बाव बजै लठ भाठ बहो, पर धारण ज्यां घण रीठ पड़ी। थिर चूर हुवा कर सूर थके, छळ पेल ब्रंदारक व्योम छके।
—रा. रू.

वि.—१ मनोहर, सुन्दर। २ उत्तम, श्रेष्ठ। ३ अत्यधिक, बहुत।

रू. भे.—बंदारक, ब्रंदारक, ब्रिंदारक।

ब्रंदारकतरव, ब्रंदारकतरु—स. पु. [स. वृंदारकतरु] देव वृक्ष, कल्पवृक्ष।

उ०—सिसु वैं मित्ती वित्ती, उदमी पोगंड मंड सिंगारी। ज्यौं ब्रंदारकतरव, प्रांमै डाळ सगि पल्लंणम।
—रा. रू.

ब्रुंदारका—सं. पु. [सं. वृंदारक] १ देवता। (म. मा)

२ देखो 'ब्रंदारिका' (रू. भे.)

ब्रंदारिका—सं. स्त्री. [स वृंदारिका] अप्सरा।

रू. भे.—ब्रंदारका।

ब्रंदावन—स. पु. [स. वृन्दावन] १ वह स्थान या चबूतरा जिस पर तुलसी का पोधा उगा हुआ हो।

२ मथुरा से ६-७ मील दूर एक प्रसिद्ध तीर्थ जो भगवान् श्रीकृष्ण का क्रीड़ाक्षेत्र माना जाता है। (ह. ना. मा)

उ०—१ परणीजै मधुपुरी, 'अभो' ब्रंदावन आयो, पेखि धाम सुख परम, भड़ां तीरथ मन भायो। परखि निगम द्रुम पुञ, हेक सुख कुंज निहारै, हेक पुळिण हित करै, हेक जळ जमण विहारै।
—रा रू

उ०—२ वर्णै रूप ब्रंदावन ओप वाधू, सदा सेवत देवत ब्रंद साधू। तरां भार अट्ठार नूं भार तैसो, अनेकां विराजै प्रला रूप ऐसो।
—रा. रू.

रू. भे.—बनरावन, बिद्रावन, बिंद्रावन, ब्रंदावन, ब्रिंदावन, बनरावन, बिंदरावन, बिंदावन, बिनरावन, बिनरावन, बींदावन।

ब्रंदावनपत, ब्रंदावनपति, ब्रंदावनपती—स. पु. [स. वृन्दावन+पति]

१ श्रीकृष्ण।

२ ईश्वर। (नां. मा.)

ब्रंदावनराज, ब्रंदावनराय, ब्रंदावनराव—सं. पु. [सं. वृन्दावन+राव] श्रीकृष्ण।

रू. भे.—ब्रंदावनराज, ब्रंदावनराय, ब्रंदावनराव।

ब्रंदावनवासि, ब्रंदावनवासी—सं. पु. [सं. वृंदावन+वासिन्] १ वृंदावन में वास करने वाले, वृंदावन निवासी।

२ श्रीकृष्ण।

३ विष्णु।

४ ईश्वर. परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

रू. भे—बद्रावनवासी।

ब्रंदावनेस, ब्रंदावनेसर, ब्रंदावनेसुर, ब्रंदावनेस्वर—सं. पु. [सं. वृंदावनेश्वर] श्रीकृष्ण।

ब्रंदावनेसरी, ब्रंदावनेसुरी, ब्रंदावनेस्वरी—सं स्त्री. [सं. वृंदावनेश्वरी] राधिका।

ब्रंभचार—देखो ब्रह्मचरय' (रू. भे.)

उ०—भीवर छोड्यो जाळ, कूड छोड्यो वाबरियं। पांणी पीवै छाणि जुलम, करता मुंह छुरियं। करद कसाई हड कुटा ब्रंभचार ताह लीयो, बाभण खतरी बांणिया अवळ कलमूं ताह कीयो।
—ऊदोजी नैण

ब्रंभचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे)

उ०—कुण हीदू कुंण तुरक, कुण काजी ब्रंभचारी। कुण मुलां दरवेस, जती जोगी जटधारी। कुंण बाळक कुंण ब्रध, कुंण राजा कुण परजा। सूर धीर का कांम और का नही अनंजा।
—अल्लूजी कवियो

ब्रंभा—देखो 'ब्रह्मा' (रू भे)

उ०—सुर नर कोडि तेतीस, इद ब्रंभा सकर सही। जांन भरजन भीव, पाचू वीर इकायती।
—ऊदोजी नैण

ब्रंम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे)

२ देखो 'भ्रम' (रू भे.)

ब्रंमग्यांन—देखो 'ब्रह्मग्यांन' (रू भे)

उ०—दयावान नर दाखजै वदे नम विदवान। दीरघ ई कै नाम दस गणी एक ब्रंमग्यान।
—एका.

ब्रंमग्यांनी—देखो 'ब्रह्मग्यानी' (रू. भे.)

ब्रंमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे)

ब्रंमरूप—स पु. [स. ब्रह्मरूप] १ वेद। (अ मा.)

२ देखो ब्रह्मरूप' (रू भे.)

ब्रंमवरधन—स. पु. [स. ब्रह्मन्+वर्द्धन] ताम्र ताम्बा। (अ. मा.)

ब्रंमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे) (एका)

ब्रंहम, ब्रंह्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—निराकार निरवांग, जोगेस्वरां दुलभ जाव तेजोमय। रूप विस्नु रहमाण, पकज नाभ ब्रंहम उतपणो। —सू. प्र.

उ०—२ जिण ब्रंहम तणं मारीच जांणि, मारीच तणं कासिप प्रमांणि। सुत कासिप सूरज तप प्रसाधि, वइवस्तु सुर सुत तेज बाधि। —सू. प्र.

ब्रहमा ब्रह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

ब्रक-स. पु. [स. वृक] १ भेड़िया।

उ०—गोनायू अरस ब्रक गृध्रुवां, तिस क सबद भ्रावत सुणी। मुख रयण लगे अतस मही, भ्राज वगू उदियामणी। —पा. प्र.

२ श्वान, कुत्ता। (अ. मा.)

३ शृंगाल, सियार, गीदड़।

४ कौग्रा, काक।

५ उल्लू।

६ उदर मे स्थित एक प्रकार की अग्नि विशेष।

७ डाकू, लुटेरा।

८ सूर्यवंशी राजा रुरुक का एक पुत्र।

उ०—सप्रम सुदेव भ्रप विजयपुर पुत्र जास रुरुक तप तेज पूर। सुत रुरुक हुवो ब्रक पोह सधीर, ब्रक सुतण बाहु बीराधीवीर। —सू प्र

९ कृष्ण एव सत्या का एक पुत्र। १० हरति राजा का नाम।

११ सृष्टि एवं छाया का एक पुत्र। १२ रोहित राजा का नाम।

१३ पाडव पक्षीय एक राजा जो द्रोणाचार्य के द्वारा मारा गया था।

१४ एक राजा, जिसने जीवनभर मास-भक्षण नही किया।

१५ श्रीकृष्ण एव मित्रविंदा के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र।

१६ द्रोपदी के स्वयवर मे उपस्थित एक राजा, जो महाभारत युद्ध मे कौरवों की ओर से युद्ध करते हुए मारा गया था।

१७ शिष्ट एवं सुच्छाया के पुत्रो में से एक पुत्र राजा।

१८ भरुक राजा का पुत्र एवं बाहुक राजा का पिता एक राजा।

१९ शूर एवं मारिषा का पुत्र, दुर्वाक्षी का पति एव तक्ष तथा पुष्कर का पिता एक राजा।

२० वृषु वंश्य एव अविक्षमती के पुत्र का नाम।

२१ वत्सक यादव एव मिश्रकेशी नामक अप्सरा के पुत्रो मे से एक

२१ शकुनि नामक राक्षस का पुत्र।

वि० वि०—इसने शिव की आराधना कर यह वरदान प्राप्त किया कि वह जिसके मस्तक पर हाथ रखेगा वह भस्म हो जायेगा या मर जायगा। इस वरदान का प्रयोग इसने पार्वती को प्राप्त करने हेतु शिव पर ही करने को उद्यत हुआ। तब शिव भाग कर विष्णु के पास गये। विष्णु ने ब्रह्मचारिन् का रूप धारण कर इसे अपने स्वयं के मस्तक पर ही हाथ रखने को प्रेरित करके भस्म किया।

वि.—क्रूर, क्रोधिला। * (डि. को.)

रू. भे.—ब्रक, ब्रक्क, वीरक, वीरक्क, व्रक, व्रख, व्रक्ख, व्रिक्ख, व्रिख, व्रिख्ख।

ब्रककरमा-सं. पु. [स. वृककर्मा] एक असुर का नाम।

ब्रकखड-सं. पु. [सं वृकखण्ड] एक ऋषि का नाम।

ब्रकग्राह-स. पु. [सं. वृकग्राह] एक ऋषि का नाम।

ब्रकजभ-स. पु [स. वृकजंभ] एक ऋषि का नाम।

ब्रकदत-सं. पु. [सं. वृकदन्त] पुराणानुसार एक राक्षस का नाम जिसकी सानंदिनी नामक पुत्री लकापति रावण के भाई कुंभकर्ण को ब्याही गई थी।

उ०—बांणासुर बोटियो, माघ चेतियो सदा सिवि। दळं देत ब्रकदंत, खळा ऊपरां हिमं खिवि। —पी. ग्रं.

ब्रकदस-सं. पु [स वृकदंश] कुत्ता, श्वान।

ब्रकदीप्ति-स. स्त्री. [स. वृकदीप्ति] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

ब्रकदेव-स. पु [स. वृकदेव] वसुदेव के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

ब्रकदेवा-स. स्त्री [स. वृकदेवा] वसुदेव की पत्नी और देवक की कन्या जिसका दूसरा नाम देवकी था, कृष्ण, अवगाहक, नंदक आदि की माता।

ब्रकनिव्रति-सं. पु. [सं. वृकनिवृति] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

ब्रकरथ-स. पु. [सं वृकरथ] दानवीर कर्ण के एक भाई का नाम।

ब्रकल-सं. पु. [स. स. वृकल] १ श्लिष्ठि के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

२ वृक नामक राजा का नाम।

३ अक्रूर के एक पुत्र का नाम।

ब्रकासुर-सं. पु [स वृकासुर] कोक एवं विकोक का पिता एक राक्षस।

ब्रकास्व ब्रकाश्व-सं पु [स वृकाश्व] एक प्राचीन ऋषि।

ब्रकुट ब्रकुटक, ब्रकुटि, ब्रकुटी, ब्रकुट्टी—देखो 'भ्रकुटि' (रू. भे.)

ब्रकोदर, ब्रकोदर-स. पु. [स. वृकोदर] १ भेड़िया।

२ भीमसेन। (अ. मा)

उ०—रुठ इसो दे रेस, ऊठ महाभड ऊठ अब। कूट गहै छै केस, दूठ ब्रकोदर देख रे। —रामनाथ कवियौ

३ किसी प्रसिद्ध भीमनामक योद्धा हेतु किया जाने वाला सम्बोधन सूचक शब्द।

४ ब्रह्मा।

रू भे.—बकोदर, ब्रकोदर, वकोदर, बिकोदर, वीकोदर, व्रकोदर।

ब्रकोदरी-स. स्त्री. [सं. वृकोदरी] पूतना राक्षसी की एक बहन का नाम।

व्रक्क-सं. पु. [सं. वृक्क:] १ हृदय, दिय।

२ गुरदा।

३ देखो 'व्रक' (रू. भे.)

व्रक्ख, व्रख-सं. पु. [सं. वृक्ष:] १ पेड़, रूंख।

उ०—१ भ्रनेके फले भारिया व्रक्ख भोपै, सियै थाहि सेवा न को जाय लोपै। सुगधाकरं सुदर फूल सोहै, महाथंभ सौरभ सिम्रू बिमोहै। —रा. रू.

उ०—२ मद मंदोमत्ता व्रक्ख धक्का मुडै, गाजता मेघ पाहाड काळा गुडै। भोप ढेंचाळ ढाळां घटा ऊपडै, ऊपरै चीध भ्राकास नेजा भ्रडै। —गु रू. ब.

उ०—३ बाळ पी रूंख तळै सोय रहिया। इतरै एक सिंह भ्राइयौ। तीं नू देख वीं व्रख पर एक बांदर थौ जिको एक डाळ तोड कुमार पर गेरी। सो सचेतो होय देखै तो नाहर। तीं सूं देख रूंख पर चढ गयौ। सिंह वीं ठांव ही बैठ रहियौ। —सिंघासण बत्तीसी

२ धर्म।

३ दक्ष पुत्री भ्रनला एवं कश्यप के संसर्ग से उत्पन्न सन्तान।

रू. भे.—बिरक्ख, बिरख, बिरछ, बिरिख, बिरिछ, बीरख, ब्रक्ख, ब्रख, ब्रच्छ, बच्छ, बिरक्ख, बिरख, विरछ, विरिक्ख, विरिक्ष, विरिख, विरिखि, व्रखि, व्रख, व्रुख, व्रच्छ, वछ, व्रस, व्रिक्ख, व्रिख, व्रिख्ख।

व्रखचिकित्सा-सं. स्त्री. [सं. वृक्षचिकित्सा] ७२ कलाम्रो में से एक कला का नाम।

***व्रखराज**-सं. पु [सं. वृक्षराज] १ पारिजात का वृक्ष।

२ पीपलक नामक वृक्ष।

३ कल्पवृक्ष।

४ वटवृक्ष।

व्रखवासी-सं. पु. [सं. वृक्षवासिन्] कुबेर की सभा का एक यक्ष।

व्रखायुरवेदयोग-स. पु. [स वृक्षायुर्वेदयोग] वृक्षों चिकित्सा भ्रौर उन्हे रोपने की विधि, वृक्षो का ज्ञान, चौसठ कलाभ्रो में से एक।

व्रखासण, व्रखासन-सं. पु [सं वृक्षासन] योग के चौरासी भ्रासनों मे से एकप्रकार का भ्रासन विशेष।

वि० वि०—इस भ्रासन में दोनों हाथो के पञ्जों को जमीन पर सीधा रख कर उन पर सिर टिका कर दोनों पावों को भ्राकाश की तरफ लम्बा करके उलटे मस्तक स्थिर रहना होता है।

इस भ्रासन मे प्राण जय शीघ्र होता है। यह भ्रासन करके पांव को घुटने से मोड़ कर एड़ियों को जघा के निम्न भाग के पास लाने पर भ्रर्द्धवृक्षासन कहलाता है।

व्रखि—देखो 'व्रख' (रू. भे.)

उ०—गोरी गलि वलगी रही, वेलि चढी जिम व्रखि। विनय करीनइं विलपती, विधि विधि थई बिलखि। —मा. कां. प्र.

व्रख-स. पु. [स. वृष] २ भगवान् श्रीविष्णु का नाम। (भ्रनेका.)

२ कल्प वृक्ष। (,,)

३ देवराज इन्द्र। (,,)

४ धर्म। (,,)

५ इच्छा, भ्रभिलाषा। (,,)

६ भगवान् श्रीकृष्ण।

७ ग्यारवें मन्वन्तर के इंद्र का नाम। (पुराण)

८ पति, स्वामी।

९ कामदेव।

१० बलिष्ठ व्यक्ति, बलशाली।

११ कामुक व्यक्ति, कामी।

१२ शत्रु, दुश्मन।

१३ न्याय।

१४ शिव का नांदिया।

१५ मूसा, चूहा।

१६ दया। १७ भरतवंशीय राजा जो मधुराजा का पिता था।

१८ पूर्वकाल में पृथ्वी का शासक एक भ्रसुर।

१९ सृजय एव यदुवशीय उग्रसेन की पुत्री राष्ट्रपालिका के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र।

२० इक्ष्वाकुवंशीय त्रिवृष्ण राजा के पुत्र त्र्यरुण राजा का पुरोहित।

२१ स्वामी कार्तिकेय का एक सैनिक भ्रनुचर। २२ विकुठ देवो मे से एक।

२३ भ्रनायुषा के पुत्रो मे से एक दैत्यपुत्र जो ब्रह्महन्, पशुहन् भ्रादि का पिता था।

२४ कृष्ण एव सत्या के पुत्रो में से एक पुत्र।

२५ कृष्ण एव कालिदी के एक पुत्र का नाम।

२६ हैहयवशीय कार्तवीर्य भ्रर्जुन का एक पुत्र।

२७ भ्रगराज कर्ण का एक नाम।

२८ देखो 'व्रक' (रू. भे)

उ०—भैरव डावी भरणै दुगडियौ मांन दिरीजै, जो राजा जीमणो पोहर हैकण ठेहरीजै। व्रख भ्राडौ वेखता पोर सोडस पारभस, भ्राठ पोहर योमास चलंऊ भेडो ते सुण। —पा. प्र.

२९ देखो 'व्रक्ष' (रू. भे) (भ्र. मा., ना. मा., ह. नां. मा.)

उ०—व्रख जड तोड मोड वैरिया, धर भ्राछपळ वात धरे। माफ राव भ्रसो मद मेंगळ, कोट गढां सेलोट करै।

—महाराजा जसवत सिंघ री गीत

उ०—२ जबै पाहड़ ऊपर नूत री व्रख हुतो। तैरा हाथी रै जितरा फळ। सु फळ नीचा पड़े। तद फळ री पांणी नीसर मर परी सोनी हुवै। तद भ्रौ उठे फळ सेधा हुवै सु खावै भर उहां गोखां री सोनो हुवै तैरी ईंटा कर भेळी करे। —ठकुरे साह री बात

उ०—३ तिण वनि गहण विचाळइ पंखी, आविया गंग सनांन कियउ। चहस्यां किम करता चीतवणी, व्रख एकण विसराम लियउ। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ तद योगी राजा नूं बन माही लेय गयो। वीं ठाव एक सोसम री व्रख। तो पर एक मुरदो बधियो छै। जोगी कही —ई मुरदे नूं पेड़ पर सूं छोडि आणो। जोगी आप पूरब दिसा जाय मत्र साधे। —सिंघासण बत्तीसी

१० देखो 'बरस' (रू. भे.)

उ०—१ उण खग नाम खेत जुध आवर, हुय पुर रचै चंद्री चक्रा- वर। सांमद तट करि राज समाजा, रिधू तपै तेरह व्रख राजा। —सू. प्र.

उ०—२ धणी पधारे धाम, सुजस खाटे जगसारं, राज कियो बड रीत, गिणं व्रख सेंस इग्यारं। रह्या जितै रघुराव, धरम मरजादा धारै, आप पधारन ओक, अवधपुर जीव उधारे। —र. रू.

३१ देखो 'व्रखभ' (अ मा., ना. मा., ह ना. मा.)

३२ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—१ पाताळ भनइ (अ) अतलोक आवोपुरि, हेकांहिक मनइ सह हार। व्रखधारी आखियउ विसभर, वसमउ व्रख राखियउ दुवार। —महादेव पारवती री वेल

उ०—२ वेणी डंड जिसउ विराजइ वासउ, पिंड उदमाद धरती पाव। व्रख ताइ चद तणइ विलागउ, व्रख लइतउ घणाइ व्रखराव। —महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—बीरख, ब्रक्ख, व्रख, ब्रख, व्रस, व्रिक्ख, व्रिख, व्रिख्ख।

व्रखक—स. पु. [स. वृषक] १ साण्ड, बैल। २ गान्धार के राजा सुबल का पुत्र जो द्रोपदी स्वयंवर में शामिल था तथा महाभारत युद्ध में अर्जुन के द्वारा मारा गया था।

३ मोर, मयूर। (अ. मा.)

४ एक कलिंग देशाधिपति का नाम।

रू. भे.—व्रसक।

व्रखकरमा—सं. पु. [स. वृषकर्मा] भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

व्रखकेतु—सं. पु. [स वृषकेतु] १ शिव, महादेव। २ कलिंग देश का एक राजकुमार।

३ कामदेव। (अ. मा.)

४ युधिष्ठर के अश्वमेधीय यज्ञ में अश्वरक्षक अंगराज कर्ण के पुत्रों मे से एक जो बभ्रुवाहन के द्वारा मारा गया था।

रू. भे.—व्रसकेतु।

व्रखकाथ—स. पु. [स. वृखक्राथः] द्रोणनिर्मित गरुडव्यूह के हृदय स्थान मे खडा कौरव पक्षीय योद्धा।

व्रखचक, व्रखचकर, व्रखचक्र—स. पु. [स. वृषचक्र] मुहूर्त्तशास्त्र का एक योग विशेष जिसकी गणना सम्बन्धित मास की सूर्य संक्रान्ति से की जाती है।

वि० वि०—गृहारम्भ के समय सूर्य सक्रान्ति से गणना करके श्रेष्ठ-नेष्ठ समय का निर्णय किया जाता है। फलितार्थ है कि सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा की नक्षत्र तक गिनती के प्रथम ७ नक्षत्रो का गृहनिर्माण अशुभ, ८ से १८ तक के ११ नक्षत्रो का गृहनिर्माण शुभ और १९ से २८ तक के १० नक्षत्रो का गृहनिर्माण अशुभ होता है। वास्तव मे सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा की संख्या जब ८ से १८ तक हो तभी गृहनिर्माण का कार्यारम्भ शुभ एव शेष मे अशुभ होता है। (मुहूर्त चिन्तामणि)

रू. भे.—व्रसचक, व्रसचकर, व्रसचक्र।

व्रखण—सं. पु. [सं. वृषण] १ देवराज इन्द्र।

२ दानवीर कर्ण।

३ घोड़ा, अश्व।

४ भगवान् श्रीविष्णु। ५ साण्ड, बैल।

६ वृक्ष, पेड़। ७ अण्डकोश। ८ वृषभराशि।

९ सहस्त्रार्जुन राजा का पुत्र एक राजा।

रू. भे.—व्रसण।

व्रखणकच्छ, व्रखणकच्छु—स पु. [स वृषणकच्छु] एक प्रकार का वह रोग जिसमे पसीने, मैल आदि के कारण अण्डकोश के पास छोटी-छोटी फुंसिया हो जाती हैं।

व्रखणस्व, व्रखणास्व—सं. पु. [सं. वृषण+अश्व] इन्द्र के घोडे का नाम।

व्रखदंस—स. पु. [सं वृषदंश] मदराचल के निकट का एक पर्वत।

व्रखदरभ—स. पु. [स सं. वृषदर्भ] १ श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ उशीनर देशाधिपति शिवि राजा का नाम, जिसने कबूतर की रक्षार्थ अपने शरीर का मांस दिया था।

३ श्रीविष्णु भगवान का नाम।

४ एक राजा जिसने प्रण एवं गुप्त नियम बनाया था कि ब्राह्मणों को सिर्फ सोना-चांदी, घी आदि दान मे दिया जाय।

रू. भे—व्रसदरभ।

व्रखदेवा—सं. पु. [स. वृषदेवा] १ विष्णु भगवान्।

स. स्त्री.—२ वसुदेव की एक स्त्री का नाम।

रू. भे.—व्रसवेवा।

व्रखद्वीप–सं. पु. [सं. वृषद्वीप] एक द्वीप का नाम।

रू. भे.—व्रसद्वीप।

व्रखधार, व्रखधारिण, व्रखधारी–सं. पु. [सं. विष+धारिन्] १ सर्प, सांप।

२ जहरीला जानवर।

३ शिव, महादेव।

उ०—पाताळ भणइ (प) म्रतलोक आदीपुरि, हेकांहेक भणइ सह हार। व्रखधारी भाखियउ बिसंभर, दसमउ व्रख राखियउ दुवार।

—महादेव पारवती री वेलि

रू. भे.—व्रसधार, व्रसधारिण, व्रसधारी।

व्रखधुज, व्रखध्वज–सं. पु. [सं. वृषध्वज] १ शिव, महादेव।

२ वृत्र-इन्द्र युद्ध में वृत्र पक्षीय एक असुर।

३ गणेश, विनायक।

४ कर्ण के एक पुत्र का नाम।

५ एक पर्वत का नाम। (पुराण)

६ प्रवीरवंशीय राजा जिसने अपने स्वजनों का नाश किया था।

७ रथध्वज के पिता एक जनकवंशीय राजा।

रू. भे.—व्रसधुज, व्रसध्वज।

व्रखध्वजा–सं. स्त्री. [सं. वृषध्वजा] देवी, दुर्गा।

रू. भे.—व्रसध्वजा।

• **व्रखपत, व्रखपति, व्रखपती**–सं. पु. [सं. वृषपति] शिव, महादेव।

रू. भे.—व्रसपत, व्रसपति, व्रसपती।

व्रखपरवा–सं. पु. [सं. वृषपर्वन्] १ आंगिरा कुलोत्पन्न एक महर्षि।

२ वृत्र-अनुयायी एक असुर।

३ एक ऋषि जो गन्धमादन पर्वत के पास स्थित अपने आश्रम मे रहता था यहीं पर इसने वनवास-काल में पाण्डवों को उपदेश दिया था। ४ शिव का एक नाम।

५ कश्यप एवं दनु के पुत्रों मे से एक जो असुरों का राजा था।

वि. वि.—इसके राजपुरोहित शुक्राचार्य थे। इन्द्र-वृत्र युद्ध में इन्द्र से व देवासुर युद्ध में अश्विनों से इसने युद्ध किया था। इसके शर्मिष्ठा, चन्द्रा व सुन्दरी नामक तीन कन्याए थी। एक बार शर्मिष्ठा के द्वारा शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी का अपमान किया गया तब शुक्राचार्य ने इसका राज्य छोड़ जाने का निश्चय किया किन्तु इसने उनसे वहीं रहने की प्रार्थना की और अपनी पुत्री शर्मिष्ठा को जन्मभर के लिए देवयानी की दासी बना कर रखा।

व्रखभ–सं. पु. [सं. वृषभ] १ साण्ड, बैल। (अ. मा., हि. नां. मा. ह. नां. मा.)

उ०—१ तूं उपजंइ न खपइ नहु आइस, कुळ न कहिइ कहियउ उकळीण। भीनउ नादि विनोद महाभडि, व्रखभ चडई तइ वावइ बीण।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वाघ व्रखभ एकठा वहता, करइ नहीं मन संका काइ। मेट सकइ न को मरजादा, हालइ सको मरजादा माहि।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ रथ गज व्रखभ तुरग रथ, वन अनमिति सत दास। सुता विदा किय नेम सूं, पूरण प्रेम प्रकास। —रा. रू.

उ०—४ जैं जैं सद् उचार डाक डमरू कर वाजै, मोर हंस अगराज चडी खगराज गरज्जै। एक हस्ति आरूही व्रखभ अस वस्द्र विगसी, सरभ चील सादूळ रीछ वदर तर रसी। —रा. रू.

२ शंखिनी जाति की स्त्री के लिए चार प्रकार के पुरुषो में से श्रेष्ठ पुरुष। (कामशास्त्र)

३ कुशाग्र राजा का पुत्र व पुण्यवत् राजा का पिता एक राजा।

४ हैहयवंशीय कार्तवीर्य सहस्त्रार्जुन राजा का एक पुत्र।

५ एक प्राचीन तीर्थ। ६ भीम के द्वारा मारा गया कलिंगनरेश का भाई।

७ राम सेना का एक यूथपति बन्दर। ८ काशिराज की कन्या जयंती का पति व अनमित्र राजा का पुत्र।

९ सूर्य वीथी का एक नाम।

१० एक प्रकार की औषधि। ११ गान्धार राजा के पुत्र का नाम।

१२ चौबीस प्रकार के अवतारो में से एक। (अ. मा.)

१३ ज्योतिष की बारह राशियो में से दूसरी राशि।

१४ फलित ज्योतिष मे बारह प्रकार के लग्नो मे से दूसरा लग्न।

१५ सृष्टि व छाया का पुत्र एक राजा। १६ एक असुर जो कृष्ण के द्वारा मारा गया।

रू. भे.—व्रसभ, बिखभ, बिखभ्र, व्रखब, व्रख्ख, व्रसभ, व्रिक्ख, व्रिख, व्रिखभ, व्रिहख।

व्रखभकेतु–सं. पु. [सं. वृषभकेतु] शिव, महादेव।

रू. भे.—व्रसभकेतु।

व्रखभगत, व्रखभगति, व्रखभगती–सं. पु. [सं. वृषभगति] शिव, महादेव।

रू. भे.—व्रसभगत, व्रसभगति, व्रसभगती।

व्रखभचकर, व्रखभचक्र—देखो 'व्रखचक्र'।

व्रखभधज, व्रखभधुज, व्रखभधुजी, व्रखभध्वज–सं. पु. [सं. वृषभध्वज] १ शिव, महादेव। (अ. मा., कु. कु. बो., नां. मा.)

उ०—ऊठिया विसन अनइ ब्रह्मादिक, जिगन न होयइ राव अजांण। धुर ताइ करइ प्रणांम व्रखभध्वज, कथ ब्रह्म तउ वेद पुरांण।

—महादेव पारवती री वेलि

२ यम, धर्मराज। (नां मा.)

रू. भे.—ब्रखबधुज, ब्रखभधुज, विखभधुज, विखभ्रधुज, ब्रखभधज, ब्रखभध्वज, ब्रसभधुज, ब्रसभध्वज।

ब्रखभरासि, ब्रखभरासी–सं. स्त्री. [सं. वृषभराशि] ज्योतिष की बारह राशियों में से एक।

ब्रखभवाहण, ब्रखभवाहन–स. पु. [सं. वृषभवाहन] शिव, महादेव। (ह. कु. बो.)

ब्रखभांक–सं. पु. [सं. वृषभांक] शिव, महादेव।

रू. भे.—ब्रखभांक।

ब्रखभांण, ब्रखभांणु, ब्रखभान, ब्रखभांनु—देखो 'ब्रसभांनु' (रू. भे.)

उ०—वेली तरळा तरां विलूंबी, बण हरियाळी वीसवसा। ब्रप ब्रखभांण तणा हर नागर, उपवन जोवण जोग इसा।—बां. दा.

ब्रखभांनुजा–सं. स्त्री. [सं. वृषभानुजा] कृष्ण की प्रेमिका राधिका।

उ०—नंद सुतन ब्रखभांनुजा, जुग जुग अविचळ जोर। उर मे बसे 'अजीत' के, जय जय जुगळकिसोर। —गजउद्धार

ब्रखभांनुनंदणी, ब्रखभांनुनंदणी, ब्रखभांनुनंदिनी–सं. स्त्री. [स. वृषभानुनंदिनी] कृष्ण-प्रेमिका राधिका।

रू. भे.—ब्रसभांनुनंदणी, ब्रसभांनुनंदिणी, ब्रसभानुनंदिनी।

ब्रखभांनसुता–स. स्त्री. [सं. वृखभानुसुता] कृष्ण-प्रेमिका राधिका।

रू. भे.—ब्रसभानुसुता।

ब्रखभा–सं. स्त्री. [सं वृषभा] भारत की एक नदी का नाम।

ब्रखभासा–सं. स्त्री. [स वृषभाषा] इन्द्रपुरी अमरावती का एक नाम।

ब्रखभेक्षण–स. पु. [सं वृषभेक्षण] श्रीकृष्ण का एक नाम।

ब्रखराज, ब्रखराय, ब्रखराव–सं. पु. [स. वृषराज] १ शिव, महादेव।

२ सर्प, साँप।

[सं. वृक्षराज] ३ कल्पवृक्ष। ४ वटवृक्ष।

उ०—ब्रखराव तिसा गिरराव विराजइ, प्रति साखा सवळकता ग्रग। सिसहर तणौ पाखती सोहइ, ग्रह जांणे लागा गयणांग।

—महादेव पारवती री वेलि

ब्रखरासि, ब्रखरासी—देखो 'ब्रखभरासि'

उ०—इसी गरमी हुई छै। जु सूरज पणि हेमाचळ की सरणी पकड़ै छै। अर सूरज ही ब्रखि आयो छै। और तो सब मनुष्य तौ रूखै आवै ही आवै। मांनु सूरज ब्रखरासि नहीं आयो छै। ब्रिख कहतां रूख की छांह आयो छै। —वेलि टी.

ब्रखरुद्र–स. पु. [स. वृषरुद्र] रथ। (डिं. ना. मा.)

ब्रखल–स. पु. [सं. वृषल] १ शूद्र।

२ घोड़ा, अश्व।

३ जातिच्युत व्यक्ति।

रू. भे.—ब्रखल, ब्रसल।

ब्रखलांछण, ब्रखलांछन–सं. पु. [स. वृष-लाञ्छन] शिव, महादेव।

रू. भे.—ब्रसलांछण, ब्रसलांछन।

ब्रखली–सं. स्त्री. [सं. वृषली] १ वह कन्या जो विवाह के पहले रजस्वला हो गई हो।

२ वह स्त्री जो रजस्वला हो।

३ बांझ स्त्री।

४ वह स्त्री जिसने मृत बच्चे को जन्म दिया हो।

५ वह स्त्री जो अपने पति को छोड़कर पर पुरुष से प्रेम करती है।

रू. भे.—ब्रसली।

ब्रखलीपत, ब्रखलीपति, ब्रखलीपती–स. पु. [स. वृषलीपति] १ वह पुरुष जिसका विवाह ऐसी कन्या से हुआ हो जो विवाह के पहले रजस्वला हुई हो।

२ २ रजस्वला स्त्री का पति।

३ मृत बच्चे को जन्म देने वाली स्त्री का पति।

४ बांझ स्त्री का पति।

५ दुश्चरित्रा स्त्री का पति।

रू. भे.—ब्रसलीपत, ब्रसलीपति, ब्रसलीपती।

ब्रखव—देखो 'ब्रखभ' (रू. भे.)

उ०—आ पुंगळ री उपनी, औ सूरत री साहा। आ पदमण औ ब्रखव गण, नार इण जोगी नांह। —पनां

ब्रखवात–स पु. [सं. वृषवात] वन, जंगल।

रू. भे.—ब्रिखवात।

ब्रखवाहण, ब्रखवाहन–सं पु. [सं. वृष-वाहन] १ शिव, महादेव।

२ ग्यारह रुद्रों मे से एक रुद्र का नाम।

रू. भे.—ब्रसवाहण, ब्रसवाहन।

ब्रखसंकरांत, ब्रखसंकरांति, ब्रखसंकरांती, ब्रखसक्रांत, ब्रखसंक्रांति, ब्रखसंक्रांती–स. स्त्री. [स वृषसंक्रांति] वृषभ राशि मे सूर्य के प्रवेश करने का दिन एवं उक्त दिन मनाया जाने वाला पर्व।

उ०—जेठ मास लागौ छै। सूरिज ब्रखसंक्रांति आयौ छै। सु जांणी जै छै। सूरिज ब्रखा ने दरखता रा ओलो ताकै छै। तौ बीजां लोकां री कोण बात। सूरजजी उतराध सांमां वहै छै। सु जाणीजै छै। हेमाचळ री सरणो लियै छै। —वेलि टी.

ब्रखसांन—देखो 'ब्रखसेन' (रू. भे.) (अ. मा.)

ब्रखसार–स. पु [सं. वृषसार] श्रेष्ठ बैल, साण्ड। (अ. मा.)

ब्रखसेण, ब्रखसेन–स पु. [स. वृषसेन] १ दानवीर कर्ण का एक पुत्र जिसकी पत्नी का नाम भद्रावती था यह अर्जुन द्वारा मारा गया था।

२ यमसभा मे उपस्थित एक राजा। ३ ब्रह्मसावर्णि के पुत्रों में से एक।

रू. भे.—ब्रखसांन, ब्रखसेण, ब्रखसेन, ब्रिखसेण, ब्रिखसेन, ब्रिससेण, ब्रिससेन।

[सं. वृषसूनु] ४ बैल, सांड। (अ. मा.)
५ इन्द्र का पुत्र। ६ कार्तवीर्य अर्जुन का एक पुत्र।
७ अर्जुन। (अ. मा., ह. नां. मा.)
रू भे.—व्रखसांन, व्रखसेन, व्रससेन।

व्रखस्कंध—सं. पु [सं. वृषस्कंध] शिव, महादेव। (डिं. को.)
रू. भे.—व्रसस्कंध।

व्रखांक—स. पु. [स. वृषांक] शिव, महादेव।
रू. भे —व्रसांक।

व्रखांड—स पु. [सं. वृषांड] एक असुर का नाम।

व्रखांणगुण—स. पु. [स वृषाण गुण] भोजन। (अ. मा.)

व्रखा—स. पु [स. वृषा] १ इन्द्र का एक नाम। (ना. डि. को. ह. नां मा.)
२ देखो 'वरसा' (रू. भे.)
उ०—१ सीत घांम दुख व्रखा सहायँ, अनि तजि कंदमूळ लरिए लायें। दुख अनेक इम तन मझि धार्ऊं, सुख आगिला जनम कजि सार्ऊं। —सू प्र
उ०—२ सजळ सलहर, सपत्र, सतप, सुरभंग ससीतळ। प्रात, पुनिम, मधु, जेठ, व्रखा, विग्रह, राका मिळ। —र. ज. प्र.

व्रखाकंप, व्रखाकप—देखो 'व्रखाकपि' (रू भे.) (अ मा)

व्रखाकपायी—स. स्त्री. [सं. वृषाकपायी] १ लक्ष्मी।
२ गोरी।
३ इन्द्र-पत्नी शची।
४ अग्नि-पत्नी स्वाहा।
५ सूर्यपत्नी।

व्रखाकपि, व्रखाकपी—सं पु. [स. वृषाकपिः] १ सूरज, सूर्य।
२ शिव, महादेव।
३ रुद्र का एक नाम।
४ देवराज इन्द्र।
५ विष्णु भगवान।
६ एक महर्षि जो देवताओं के यज्ञ मे उपस्थित थे।
७ अग्नि, आग।
८ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)
९ ईश्वर, परमात्मा।
रू. भे.—व्रखाकंप, व्रखाकप, व्रखाकप।

व्रखाक्रति, व्रखाक्रती—सं. पु. [स वृषाकृति] १ विष्णु। २ सूर्य, सूरज। ३ आग, अग्नि। ४ देवराज इन्द्र।

व्रखागिर, व्रखागिरि, व्रखागिरी—सं. पु. [सं. वृषागिर] एक प्राचीन महर्षि।

व्रखादरभ, व्रखादरभि—सं. पु. [सं. वृषादर्भि] काशीनरेश अनुवंशीय शिबि का पुत्र।

व्रखामित्र—स पु. [सं वृषामित्र] एक महर्षि जिसने पाण्डवों को वन-वास काल मे उपदेश दिया था।

व्रखासण, व्रखासन—सं. स्त्री [सं. वृष+आसन] शिव, महादेव।
उ०—कबहू नहिं संगत और पिया, तजि संगत गौर व्रखासन की। रघुनाथ जु राव रै दासन के, चित आसन आन उपासन की। —र. ज. प्र.

व्रखासुर—सं. पु [सं. वृषासुर] भस्मासुर नामक दैत्य।
रू भे —व्रसासुर।

व्रखि, व्रखी—सं. पु [स. वृषिन्] १ इन्द्र, देवराज।
(अ. मा., नां. मा., ह. नां मा.)
उ०—गोत्रग्राव गिरपत गिरद, धर नग धराधर धार। गिरधारी गिरधर धरै, व्रखी कोप जिण वार। —अ. मा.
२ मगल ग्रह। (अ मा)
३ वृक्ष, पेड।
४ वृषभ राशि।
उ०—इसी गरमी हुई छै। जु सूरय परिण हेमाचळ की सरणी पकडै छै। अर सूरज ही व्रखि आया छै। और तौ सब मनुस्य तौ रूंखं आवे ही आवे। मांनूं सूरज व्रख रासि नही आयौ छै व्रिख कहतां रूख की छाह आयो छै। —वेलि टी.
रू. भे —व्रखि।

व्रखोत्सरग—सं. पु [स वृषोत्सर्ग] एक विशेष प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसके अनुसार किसी मृत व्यक्ति के पीछे उसकी स्मृति मे किसी बछड़े को दाग कर सांड बना दिया जाता है। (पुराण)
रू भे.—व्रसोत्सरग।

व्रखोदर—देखो 'व्रकोदर' (रू. भे)

व्रख्ख—१ देखो 'व्रक' (रू. भे)
२ देखो 'व्रक्ष' (रू भे.)
३ देखो 'व्रखभ' (रू. भे)
उ०—देवी कोमारी चामुंडा विजैकारी, देवी कुबेरी भैरवी क्षेम-कारी। देवी अगस व्रख्ख हस्ती मयलं, देवी पख केकी गरुड धिरट पखं। —देवि.

व्रगुट, व्रगुट्ट, व्रगुटि, व्रगुटी, व्रगुट्टी—देखो 'भ्रकुट' (रू. भे.)
उ०—निरत रत सुर रिझराज महनाण में, चख मवर व्रगुट फट कमळ पड़िवाण मे। मिळ कीयौ विधाता 'मान' 'सुरतांण' में, महा-रिण नर समद समद ओधांण में।
—ठाकुर सुरताणसींग री गीत

व्रचम—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—२ रही कुमार तिहां सुख सेती, फल साधन ए राखै। जेह व्रत जिन पखै बाधक, तेह कदापि नवि भाखै। —वि. कु.

उ०—वलतूं मयणा बीनवै रे, तात ! सुणौ मुझ व्रत। तुमनैं पिण करमै किया, होजी रावन ! राज निमित्त। —सीपाळरास

रू. भे.—व्रित।

व्रतांत, व्रत्तांत—देखो 'वृतांत' (रू. भे.)

उ०—१ स्वजन वेवाहिय घुरइं, भूरइं नियहिय नेह, लेई अचेत ऊपाडिय माडिय आणीय गेहि। भूतलि भमर भोलिय डोलिय जिम न चडंत, विलवइ कुमरि विलक्खिय वेलिय ते व्रत्तांत।

—जयसेखर सूरि

उ०—२ पांणी राजोर कर पांच कोस परा जाय नीसरिया। कराड़ै लागिया। जाय राजा सूं मिळिया। रतन पांच म्होडा साम्हे मेलिया। सगळो व्रत्तांत कहि सुणाइयो। राजा कह्यो—साबास थानूं, अपणा धणी री आग्या पाळी। इतरो कहि पांच करोड़ इनाम दीन्हां। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—३ सेठ उज्जेण आय राजा नूं सकळ यात्रा रा व्रत्तांत कहि त्या स्त्री-पुरस री वारता कही। राजा कह्यो—मोनूं लेय हाल। सेठ कह्यो—बहुत दूर। तद राजा वी नूं गुटको देय तत्काळ दोनूं जाय पहुँचिया। —सिंघासण बत्तीसी

उ०—४ भाऊ दिली निगमबोध रा घाट ऊपर यग्य करायो। देवी री आग्या हुई—हमें भाऊ पाछो दिखण नूं परो जावै, दूजै महीनै आय साह सूं जंग करै तो भाऊ री फतै हुवै। विरामणां श्री व्रत्तांत भाऊ नूं सुणायो। भाऊ न मानियो।

—बां. दा. ख्यात

व्रत्तारि, व्रत्तारी—देखो 'व्रत्रारि' (रू. भे.)

व्रत्तासुर—देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

व्रत्ति—देखो 'व्रति' (रू. भे.)

व्रत्तिकार—वि. [सं. वृत्तिकार] १ वृत्ति करने वाला।

२ टीका करने वाला, टीकाकार।

व्रत्ती—देखो 'व्रति' (रू. भे.)

उ०—१ आ व्रत्ती किम आदरूं, कुंवर कोमळ आक्रती। पिण हूं अरि पाळणी, कुसळ राखणी धरती। —रा. रू.

उ०—२ व्रत्ती तीन चीन मन मेरा, निरभय पद लो सरना। निरभय पद सुखराम निजानंद, अपना आप अमरना।

—श्रीसुखरांमजी महाराज

व्रत्यनुप्रास—सं. पु. [सं. वृत्ति+अनुप्रास] एक प्रकार का अनुप्रास विशेष जिसमे एक या अनेक व्यंजन-वर्ण भिन्न-भिन्न रूपों में बार-बार आते हो।

व्रत्र—सं. पु. [सं. वृत्रः] १ अन्धेरा, अन्धकार।

२ पर्वत, पहाड़।

३ बादल।

४ शत्रु, दुश्मन।

५ देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

रू. भे.—व्रत।

व्रत्रघन, व्रत्रघ्न—सं. पु. [सं. वृत्रघ्न] वृत्रासुर का शत्रु इन्द्र।

व्रत्रहा—सं. पु. [सं. वृत्रहा] देवराज इन्द्र। (नां. मा.)

रू. भे.—व्रतहा।

व्रत्रारि, व्रत्रारी—सं. पु. [सं. वृत्र+अरि] वृत्रासुर का दुश्मन, इन्द्र।

रू. भे.—वरतारी, व्रत्रअरी, वरतारी, व्ररतारी, वरत्रारि व्रतारि, व्रतारी. व्रत्तारि, व्रत्तारी।

व्रत्रासुर—सं. पु. [सं. वृत्रासुर] त्वष्टा का पुत्र एक राक्षस जो देवराज इन्द्र के द्वारा मारा गया था।

वि० वि०—इसकी माता का नाम दानु था। यह पूर्वजन्म में पाण्डय देश का राजा चित्रकेतु था जो सम्पूर्ण विद्याधरों का राजा था, किन्तु पार्वती के शाप के कारण असुरयोनि मे जन्म लिया। एक बार इन्द्र ने विश्वरूपा नामक ब्राह्मण को मार डाला अतः उसके पिता त्वष्टा ने इन्द्र से बदला लेने वाले पुत्र की प्राप्ति हेतु यज्ञ मे आहुतियां दी एव इसे उत्पन्न किया। इसके आतंक से भयभीत होकर इन्द्र, गन्धर्व, किन्नर आदि भगवान् विष्णु की शरण में गये। विष्णु की राय मे इन्द्र ने दधीचि ऋषि की हड्डियों (जो कि नारायण कवच मंत्राभ्यास के कारण अत्यधिक बलवान् हो गई थी) से वज्र बनाकर उसी वज्र से इसका वध किया।

रू भे.—व्रेतो, विత्रा, वित्रासुर, वेत्रासुर, वैत्रासुर, व्रतासुर, व्रत्तासुर, व्रत्र।

व्रथ, व्रथा—वि. [सं. वृथा] १ निष्प्रयोजन, व्यर्थ, फिजूल।

उ०—१ सुक पिक लगै सवाद, भल थोड़ो ही भाखणो। व्रथा करै बकवाद, भेक लवै ज्यूं भैंरिया।

—महाराजा बळवतसिंघ रतलांम

उ०—२ पण म्हारै श्रो पण छै—सगै री नाळेर आयो पाछो न मेलुं। सो माजी, म्हारो वचन गया, जमवारो व्रथा जासी। तिण सु थें राजी हुय मनैं फुरमावो, ज्यूं म्हारो भलो हुवै, अर थांहरै सत तपस्या सु मांहरो कुंही न वीगड़ै।

—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—३ आळस वाळा राजवी घर रा घर में दारू पी रोटी खाय सूय रैणो घर रो कांम, परोपकार, वीरता, देससेवा आदि आछा काम न करणा मैं व्रथा यूं ही वेस ऊमर गमावै है।

—वी. स. टी.

उ०—४ मुंघा हालरा उगेर व्रथा पालणैं हलाया माता, पोखैं केण कारणैं जिवाया थानैं पीव। लोक लाज धारणैं फिरंगी हुंता झाट लेता, खैं'र खाय मरणी रै बारणैं देता जीव।

—दलजी महडू

२ असत्य, झूठ। (प्र. मा., ह. नां. मा.)

रू. भे.—बिरथा, ब्रथा, बिरथा, व्रिथा।

व्रद—देखो 'बिरुद' (रू. भे.)

उ०—'अमर' आगरै प्रसिग्रात उबारी, भइ जीपण व्रद भारी। पंच हजारी मुगळ पाड़ियौ, कमधज तणी कटारी। —कवी मुहतौ

उ०—२ लांनाळ लंडै लड़ग बळ लाघौ, लाधौ ग्रौ व्रद आज सलाह। कांधल कहै, रूधियां केहर, साथ किसौ ताह किसौ सनाह। —राव कांधळ रौ गीत

उ०—३ लहै ब्रह्म-भग्या व्रदां मेव लीधौ, दसंकध भागै हुग्रा, भांणि दीधौ। वदं राण नूं कोळ कै दात वारा, किसं वैर तै थाट मारै कंवारा। —सू. प्र.

व्रदधारी—देखो 'विरुदधारी' (रू. भे)

उ०—तूं मोटी दातार भगतवच्छळ व्रदधारी, 'जगो' कहै कर जोड़ अरज हरि सुणी हमारी। काया नगर मझार पंच तसकर पावीजै, कांम क्रोध मद मछर कुबुध ममता काढीजै। —ज. खि.

व्रदपूर—देखो 'विरुदधारी'

उ०—१ जोधा भड़ एह पटायत जाणि, बधै जुध सूर 'उमेद' बखांणि। सफै खळ थाट खगां भट सूर, 'पतौ' 'महरांण' तणौ व्रदपूर। —सू. प्र

उ०—२ कळायण बीच लडत करूर, 'पतो' इंद्रभाण तणौ व्रदपूर। 'नाथौ' 'अमरावत' नाग धनाग, 'अगावत' जूटत सूर अजागि। —सू. प्र.

व्रदराज—देखो 'विरुदधारी'

उ०—रिणवट बांध जीप जुध रांणा, लड़ ग्रह मुर सुरतांण लिया। खित चित कोट जिसा खूंमांणा, दूसासण व्रदराज दिया। —हरिदास केहरियौ

व्रदाळ—देखो 'विरुदाळी' (मह., रू. भे.)

व्रदाळी—१ देखो 'विरुदावळी' (रू. भे.)

२ देखो 'विरुदाळी' (रू. भे.)

व्रदाळौ—देखो 'विरुदाळौ' (रू. भे.)

व्रद्द—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—जिकै वस दाता हुवा सूर जेता, तिकै व्रद्द बोलैं सुणै भूप तेता। उभै वात रौ पात दाखै प्रहाचौ, खत्रीध्रम्म छाडौ क बांनेत खांचौ। —सू. प्र.

उ०—२ वणै सूरदाता उभै व्रद्द वंका, लियां हूंत पै'ली दिधी दान लंका। दुबै छेह सांमंद्र बाधौ वधारं, उतारेस पार पदम अठार। —सू. प्र.

व्रद्ध—सं. पु. [सं. वृद्ध] (स्त्री. व्रद्धा) १ युवा एवं प्रोढावस्था के बाद आने वाली मनुष्य की एक अवस्था, बुढापा।

२ उक्त अवस्था को प्राप्त व्यक्ति, बूढ़ा।

उ०—तिम त्रिलोचना नै घरैं, आवी व्रद्धा नारि। मैं पूछयौ ए कुण अछै, मुक्त प्रिया तिण वारि। —वि. कु.

वि.—१ पूर्ण रूप से वृद्धि को प्राप्त।

२ बुद्धिमान, पण्डित।

३ बड़ी उम्र का।

रू. भे.—बिरध, बिरिध, व्रद्ध, व्रध, विरध, विरिध, विरिधि, व्रध,व्रधु, व्रध्ध, व्रिद, व्रिद्ध, व्रिध।

व्रद्धकन्या—स. स्त्री. [स. वृद्धकन्या] कुणिगर्ग महर्षि की बालब्रह्मचारिणी पुत्री।

वि० वि०—नारद के उपदेश से इसने बालव ऋषि के शिष्य श्रृंगवत ऋषि से विवाह किया एवं अपने तप का आधा पुण्य उसे दिया। एक रात उसके साथ रह कर पुनः घोर तपस्या में लीन हो गई। स्वर्ग लोक जाते समय अपने आश्रम को तीर्थ स्थान बना दिया।

व्रद्धकेसव—स. पु. [स. वृद्धकेसव] सूर्य की एक मूर्ति। (पुराण)

व्रद्धखत्र—सं. पु. [स. वृद्धखत्र] १ सिन्धु नरेश जयद्रथ का पिता।

२ पुरुवंशीय एक राजा जो भारतीय युद्ध में पांडव पक्षीय था एवं अश्वथामा के द्वारा मारा गया था।

व्रद्धखेम—स. पु. [सं. वृद्धखेम] १ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा के पिता का नाम।

२ वृष्णिवंशीय राजा जो पाडव पक्ष मे लड़ता हुग्रा बाल्हिक द्वारा गया था।

व्रद्धगरग—स. पु. [सं. वृद्धगर्ग] दुश्चिन्हों की उत्पत्ति के बारे मे अत्रि ऋषि को ज्ञान देने वाला एक आचार्य।

व्रद्धगारग्य—स पु. [स. वृद्धगार्ग्य] वह महर्षि, जिसने नीलवृषभ छोड़ने, अमावस्या के दिन तिलमिश्रित जल से तर्पण करने व वर्षाऋतु मे दीपदान करने के बारे में पितरों से पूछा था।

व्रद्धता—सं. स्त्री. [स. वृद्धता] १ वृद्ध होने की अवस्था, बुढ़ापा।

२ दुख, कष्ट। (डिं. को.)

रू भे.—बिरधाई, बिरधापण, बिरधापणौ, व्रद्धता, व्रधता, व्रधपण, व्रधपणौ, व्रध्धपण, व्रध्धपणौ।

व्रद्धपूनम, व्रद्धपूरणिमा—देखो 'व्रधपूनम' (रू. भे.)

व्रद्धवयस, व्रद्धवेस—सं. पु. [स. वृद्धवयस] वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

रू भे.—व्रधवयस, व्रधवेस।

व्रद्धसरमा—स. पु [सं. वृद्धशर्मन्] १ आयु एवं स्वर्भानु के ससर्ग से उत्पन्न पांच पुत्रो मे से एक।

२ वसुदेव की बहन श्रुतदेवा का पति व दन्तवक्र का पिता करूष देशीय राजा।

उ०—३ वस विसा एम फुरमांण दीध, लायकां मजां सिर चाढ लीध। जुध सराजांम उभि सभि ध्रजाणि, लोहमें सरसि मुक उरसि लागि। —सू. प्र.

उ०—४ 'तोड' री 'सळख' कुळ चाढ तोड, दन खगां विरद ध्रजवाळ दोड़। 'धीरमं' 'सळखावत' खगां वाग, जोड़यां चाढि विढियौ ध्रजाग। —सू. प्र.

उ०—५ इणि भांति रा घोड़ा असवार आगि ध्रजाणि माहै ग्रडि पड़ै। सिर पड़िमैं लडै। हाथियां रै दांत चडै। हिंदू मुसलमांण। नरसमध खुरसांण। च्यारि चकू नव खड प्रिथी रा जगजेठ जोधार जमदूत राजिंद्र जोगिंद्र रूप करि उजेणि खेति नर हैंवर भेळियार चौदत हूमा। —र. वचनिका

उ०—६ हथनाळ हवाई हूकळत, गजनाळां गोळां गडिग्रडंत। बळती ध्रजाणि उड़ै बहंत, मारावी छूटी ग्रावरंत। —गु. रू. ब.

उ०—७ हुय हैकंप कापियौ हजरति, लागुश्रा परै नीसरी लाव। बहमड 'ग्रमर' भूजाडड वहूती, वाढाळी जळहळी ध्रजाग। —केसोदास गाडण

व्रजिन-सं. पु. [सं. वृजिन] १ पाप, कुकर्म (अ. मा.)
२ कष्ट, दुःख, पीड़ा। (ना. मा.)
रू. मे.—व्रजिन।

व्रजियोड़ौ-भू. का. कृ.—१ गया हुआ, गमन किया हुआ। २ मना किया हुआ, रोका हुआ। ३ टाला हुआ।
(स्त्री. व्रजियोडी)

व्रजेंद्र-सं. पु. [सं. व्रज+इन्द्र] श्रीकृष्ण।

व्रजेन—देखो 'व्रजन' (रू. भे)

व्रजेस्वर-स. पु. [स. व्रज+ईश्वर] श्रीकृष्ण।

व्रज्ज—१ देखो 'व्रज' (रू. मे.)

उ०—१ देवी गौर रूपा ग्रहां नव्व-निद्धि, देवी सक्कळां ग्रक्कळां सव्व सिद्धि। देवी व्रज्ज विमोहणी वोमवाणी, देवी तोतला गूंगला कतियांणी। —देवि.

उ०— २भरे माग सिंदूर मारग्ग भाळै, वहै सांमळो व्रज्ज सेरी विचाळै। वहै लारलै वार पिंडार वाळै, नवा नेह सू देह गोपी निहालै। —ना. द.

२ देखो 'व्रज' (रू. मे.)

उ०—बहहुडइ धरा पइ मगरधज्ज, वेगवत जेम गइणागि व्रज्ज। जुधि दियइ साखि संसार जास, दोनाळी चढियउ किसनदास। —रा. ज. सी.

व्रज्जवासी—देखो 'व्रजवासी' (रू. मे.)

उ०—खत्री काहै कौ कंस रै हेत लासी, विचै वाट माथै वहै व्रज्जवासी। घरे कंस रै नूं बळी लात थाठी, तवा ताहरी केम लगोट ताठी। —ना. द.

व्रज्या-सं. स्त्री. [सं.] वेदोक्त विधान, रीति, मार्ग।

उ०—घर बार बार सिराहि मोगां मैं आसक्त आळसी ग्रौर ग्रव-नीसां रा आसय मैं सूतो वीररस जगायौ। उठै ही सुपुत्र रौ बणायौ बापी समेत आपरा अभिधान करि अक्षित ईस्वरी रौ अगार ईखि प्रवाण हूं ऊतरि वेद री व्रज्या करि बंगेस्वरी रौ अरचन कियौ। —व. भा.

रू. मे.—वरज्या, व्रज।

व्रण-सं. पु [स] १ जखम, घाव।

उ०—कठमाला गड़ गूंबड सबला, व्रण कुरम रोग टळइं समला। पीड़ा न करइ कुण गलि फोडऊ, नित नाम जपउ लोनाकडडउ। —स. कु.

उ०—२ पगहाथ पड़ै नस माथ पलैं, लग घाव सुरां रत धाव लखै। अंग एक थकै तडफै असुरां, सिर चीर नरां व्रण सेल सरां। —रा. रू.

२ फोड़ा-फुन्सी, बालतोड।
३ चेचक का दाग।
४ देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—१ वर्णा व्रण चोळ वर्णै तिणवार, जोधांपति हूंत सभेस जुहार। सर्कै रवि संस महेस सराह, ग्रखै व्रण वार 'ग्रभैमल' वाह। —सू. प्र.

उ०—२ सिन्नान थात भष्रि सधियास, उचरत मत्र गायत्रि ग्रभ्यास। आसम चत्र ग्रह चत्र व्रण उदार, कृत करत दान खोडस प्रकार। —सू. प्र.

५ देखो 'वरणन' (रू. मे.)

उ०—कसि आवध हल्लै, कमध व्राळू व्रण ग्रागी। मुक्ख सूरज बारह मंडै, मौंह मूंछ भिड़ागी। —सू. प्र.

रू. भे.—वरण, व्रण, व्रन, व्रन्न, वण, व्रन।

व्रणसोथ, व्रणसोस-स. स्त्री. [सं. व्रणशोथ] फोडे, घाव आदि पर होने वाली सूजन। (ग्रमरत)

व्रतत, व्रतति, व्रतती, व्रततु, व्रततू—देखो 'व्रतात' (रू. मे.)

उ०—१ भयौ स्राप सुर भूप को, आतम कदन अनंत। अपछर 'आणद' रै ग्रखै, वरण्यो सब व्रतत। —पा. प्र.

उ०—२ सइ मुखि ढोलइ पूछिया, मारू तणा व्रतति। ढोलउ नइ भाळ, जिन्हइ वेसारी एकति। —ढो. मा.

उ०—३ निसुणीउ वयणु गमेसउ बोलइ, कोइ न तिहुयणि जी तुझ तोलइ। निसुणउ हिव इह कन्न व्रततु, एह रहइं होइ सतणु कंतु। —सालिभद्र सूरि

व्रत-स. पु. [सं.] संकल्प, प्रतिज्ञा।

उ० —१ एती एक न आदरी, जेती ग्रकली साह। कमधज्जां नव कोट रा, ग्रौट लियौ व्रत चाह। —रा. रू.

उ०—२ अयनाथ का हेमराज राज काज पूरा, 'अजमाल' के व्रत काज सूरां तैं सूरा । प्रखैराज प्रोहित की हित मापै कूंण, 'दलपत' का द्रोणगुर जैसैं जोर दूणा । —रा. रू.

उ०—३ 'जैतो' 'सूर' तणो जमाई, भुज तिण जोड़ 'समेळो' भाई । 'पीथो' 'मुकन' जिन्है व्रत पूरा, साथै दलरांमोत सनूरा । —रा. रू.

उ०—४ बारवना रहौ धारै व्रत, व्रत स्यांमावत तणैं उमाह । पिढ़ि खुरसाणैं बीद परणियौ, बळि कुडाणैं हुवा विमाह । —उदैभाण राठौड़ री गीत

२ नियम ।

उ०—१ केइक पुण्यवंत प्रांणिया रे, चैत कियो धरम सार । साधु स्रावक व्रत संग्रह्या, समकित सेंठो धार रे । —जयवांणी

उ०—२ बलता गुरु बोलिया तरै ए, तूं पहला व्योपारी की परै ए । तैं बांका प्रस्न वातां कही ए, पिण जांणू छूं व्रत लेसी सही ए । —जयवांणी

उ०—३ जोग जिग व्रत धरत नेम, अमल महमा गरत पेम । सिर सहत निसदिन घोम सीत, मन पच इद्री दमन जीत । —अनुभववांणी

३ धर्म, कर्त्तव्य ।

उ०—बडै बंस ऊपनी बडी रांणी भटियांणी, बोली राजा हूंत जिका पूरै व्रत जांणी । तौ पूठैं वरजांग साह जैसांण सुभत्ती, पह चोरी परणतां बडै नह की चकवती । —रा. रू.

उ०—२ सुज कत धंत अमरां सुपुरि, चौसौठी हरि ऊचरै । छत्रपती सनेह 'चदू' छडी, सेखावत व्रत संभरै । —रा. रू.

४ आराधना, भक्ति ।

उ०—१ दिल मो ध्यांन अकाळाय दरसी, वीरचद्र राजा इण वरसी । अवं सिव सीस चढासी आचा, सिव रीझसी देखि व्रत साचा । —सू प्र

उ०—बाळो वाली चंपाबाडी, सातूं मिळ सहेली है । नणंद म्हारी । ईसर गोरजां री व्रत करस्यां, श्रोर रमसां खेलस्या सारी । —रसीलै राज रा गीत

५ पुण्य प्राप्ति हेतु पुण्य तिथि को नियमपूर्वक किया जाने वाला उपवास ।

६ अनुष्ठान करने की पद्धति, विधि ।

७ अनुष्ठान करने की क्रिया या कार्य ।

८ यज्ञ, हवन, होम ।

९ देश, राष्ट्र । (अ मा.)

१० कुएं से मोट (चरस) निकालने का मोटा रस्सा ।

११ अभूतरजस् देवो में से एक ।

१२ चाक्षुष मनु एव नड्वला के पुत्रों में से एक ।

१३ देखो 'व्रत्त' (रू. भे.)

१४ देखो 'व्रतांत' (रू. भे.)

उ०—'भजन' करायो एक, डेरै व्रत जैसी । रूप सोभ तारीक, श्रोप मुर जोम अनैसी । —रा. रू.

रू. भे.—बरत, ब्रत, व्रत्त, वरत, वरत्त, विरत, व्रतु, व्रित ।

व्रतउपवास—सं. पु. [सं.] किसी प्रतिज्ञा या कार्य सिद्धि हेतु किया जाने वाला उपवास ।

व्रतघण—स. पु. [स. वृत्रघ्न] इन्द्र का नाम ।

व्रतचरया—सं. स्त्री. [स. व्रतचर्य्या] किसी प्रकार का व्रत करने या रखने की क्रिया ।

व्रतचारी—स पु [स. व्रतचारिन्] व्रत करने वाला ।

व्रतणौ, व्रतबौ—देखो 'वरतणौ, वरतबौ' (रू. भे.)

उ०—वाहि तेग समाहि श्रासो, हहकारो व्रतियो । धन्य तेरो ध्यांन करमणि, सौभ्रंगो साको कियो । —बोल्हौजी

व्रतणहार, हारौ (हारी), व्रतणियौ—वि० ।

व्रतिश्रोडौ, व्रतियोड़ौ, व्रत्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

व्रतीजणौ, व्रतीजबौ—कर्म वा० ।

व्रतद्वयीपूनम, व्रतद्वयीपूरणिमा—स. स्त्री. [सं. व्रतद्वयीपूर्णिमा] फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा को किया जाने वाला नक्तव्रत तथा सूर्योदय पर सूर्य का एव चन्द्रोदय पर चन्द्रमा का पूजन ।

वि० वि०—उक्त पूजन नक्तव्रत करने का कारण है कि उक्त दिन कश्यपऋषि के औरस और अदिति के गर्भ से अर्यमा (आदित्य) एव अनसूया के गर्भ से चन्द्रमा उत्पन्न हुए थे ।

व्रतधार, व्रतधारी—वि. [सं. व्रतधारिन्] व्रत धारण करने वाला ।

उ०—व्रतधारी स्रावक, हुवा ए, राजादिक बहु लोग । पुन्न तणैं परसाद थी ए, थायं सगला थोक । —ध. व. ग्रं

उ०—२ 'सागो' 'साहिब' तणो सिधाळो, वाकमि वीद 'लवेरै' वाळो । धारण मेर 'पतो' व्रतधारी, 'ईंदावत' कळि लियण उधारी । —रा. रू.

उ०—३ 'केहरि' तण पण लड़ण प्रकूणो, लीधां वरत 'जगपती' 'लूंणो' । श्री कृपा साथै श्रहकारी, धणी तणा जतनां व्रतधारी । —रा. रू.

उ०—४ तरसि पधार हुश्रा तय्यारी, 'धीर' तणो श्रायौ व्रतधारी । राणी जळती 'ऊदै' राखी, सुज नव कोट किया जग साखी । —रा. रू.

व्रतपारणा—स पु [सं.] व्रत की समाप्ति जो प्राय तुलसी या भगवान् को अर्पित पदार्थ से की जाती है ।

व्रतभंग, व्रतभंगी–सं. पु. [सं. व्रत-भंग] १ व्रत या नियमों को भंग करने वाला व्यक्ति।

२ काव्य रचना का एक दोष।

उ०—व्रतभंगी हूं अरथ लय, नांहां भय रस नास। कुकवी वेसक तुल्य कर, वरणै सुकवि विमास। —बां. दा.

व्रतभिक्षा, व्रतभीख–सं. पु. [सं. व्रतभिक्षा व भिक्षाव्रत] यज्ञोपवीत के समय बालक द्वारा मांगी जाने वाली भिक्षा।

व्रतमांण, व्रतमांन—देखो 'वरतमांण' (रू. भे.)

उ०—माह मास व्रतमांन, अरक बैठो उत्तराइणि। सुकल पक्ख रिति सिसिर, महासुभ जोग सिरोमणि। —ल. पि.

व्रतवैरी–स. पु [सं. वृत्र+वैरी] इन्द्र, सुरपति।

व्रतसंग्रह–स. पु. [स.] यज्ञोपवीत के समय गुरु से ली जाने वाली दीक्षा।

व्रतहा—देखो 'व्रत्रहा' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

व्रतांत, व्रतांति–स. पु. [स. वृत्तांत] १ किसी बीती हुई घटना, बात विषय या स्थिति से सम्बन्धित विवरण।

उ०—उत्तमकुमर किहां अछै, आगलि कहि व्रतांत। जीवै छै किवा मूओ, भाजि भाजि मन भ्रांत। —वि. कु.

२ समाचार, खबर।

उ०—आ वात जांणि सलखराज प्रमार बांई तरफ टळि नागौर आयौ अर संबध रौ व्रतांत अजमेर कहायौ। —वं. भा

३ विषय, प्रसग।

४ दशा, हालत।

रू. भे.—विरतंत, विरतंति, विरतात, व्रत, व्रतांत, विरतंत, विरतंति, विरतांत, व्रतत, व्रतंति, व्रतंती, व्रतसु, वतंतू, व्रत, व्रत, व्रत्तांत, व्रत्तान्त।

व्रतारि, व्रतारी—देखो 'व्रत्रारि' (रू. भे.)

व्रतासुर—देखो 'व्रत्रासुर' (रू. भे.)

उ०—सुरनाथ व्रतासुर साखियात, प्रगटे कि सस्त्र रव वज्रपात। सिव त्रिपुर समर प्रगटै सवेव, देवेस कि मिथ्या वासुदेव। —रा. रू.

व्रति–सं. स्त्री [सं. वृत्ति] १ चक्कर, घुमाव।

२ परिधि, व्यास।

उ०—वृति जुति अगनि अधूम विराजै, रतन जड़ित वेदी दुति राजै। दिव्य कास्ट खट जाति प्रजुलती, अगर कपूर घ्रित जुत आहुति। —रा रू.

३ वृत्त या पहिये का व्यास या घेरा।

४ चित्त, मन आदि की क्रियाएँ या व्यापार।

५ चित्त, मन आदि की स्थितियां।

उ०—व्रति आदि सस्त्र विद्या वरण, उच्छव वादि प्रघट्टियां। परकास उरध रवि पेखियां, फिरि मधु मास पलट्टियां। —रा. रू.

वि० वि०—ये स्थितियां पांच प्रकार की होती हैं जैसे—क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र, विरुद्ध आदि।

६ इच्छा, चाह, अभिलाषा।

उ०—बधै भक्ती श्रद्धा भवन नर स्परधा व्रति बधै, बधै वो जिग्यासा अगम गम आसा व्रति बधै। अभ्यासी वैराग्य प्रनत अनुराग्य व्रति बधै। बधै प्रेरणा लभो तव चरन लंभो व्रति बधै। —ऊ. का.

७ क्रिया, कर्म या विधान, जिसके करने से कुछ होता है।

उ०—तु ही करत्ता धरत्ता भुवन त्रिय भरत्ता हित तुं हीं, तुं ही नाही मरत्ता अभय भयहरत्ता निस तुं ही। तु ही ग्याता ग्येय प्रक्रति बनि ग्याता पद तु ही। तु ही ध्याता ध्येय व्रति मति विख्याता व्रत तु ही। —ऊ. का.

८ प्रकृति, स्वभाव, आदत।

९ वर्तमान में होने की अवस्था, स्थित अस्तित्व।

१० हालत, दशा, परिस्थिति।

११ परिस्थिति, स्थिति।

उ०—सहनाय सुर विधि सोह, व्रति अछर लेत विमोह। सब सस्त्र संजुन सूर, पयवात भूंड सपूर। —रा. रू.

१२ याचना कार्य, भिक्षा वृत्ति।

१३ गति।

उ०—आगं सेरबिलंद सेन सनमुक्ख चलायो, दळ जादव ऊपरां जांण नाळव दरसायो। कुहक बांण हथनाळ विसल बरसै तिण-वारा, व्रति सांमण वद्दळा जाण घण मत्ती धारा। —रा. रू.

१४ तौर, तरीका, ढंग, रीति।

उ०—तनि ओप कराग कवि वरण तास, व्रति नवल जलद विद्रुति प्रकास। व्रति चलति सुगति दुति अमित विद्ध, पदमणिय हस फिरि गुढ प्रसिद्ध। —रा. रू.

१५ आचरण, चालचलण, चरित्र।

१६ धन्धा, पेशा।

१७ जीविका, रोजी।

१८ मजदूरी, पारिश्रमिक।

१९ किसी जनसमूह, समुदाय या जाति के लोगों द्वारा किसी अन्य जाति या जनसमूह के लोगो के घर पर जीविकोपार्जन के लिए किसी अवसर पर या साधारण समय में नियमपूर्वक सेवा के रूप मे किया जाने वाला कार्य।

२० नीयत।

२१ किसी दीन, विधवा, छात्र आदि को लगातार निश्चित समय पर सहायतार्थ दिया जाने वाला कुछ धन।

२२ मनु नामक रुद्र की पत्नी ।

२३ ग्रमिताभ देवों मे से एक ।

२४ व्याख्या, टीका ।

२५ शब्दार्थ बतलाने वाली शब्द शक्ति ।

२६ वाक्य की रचना करने की शैली ।

वि. वि.—संस्कृत भाषा मे ये शैलिया चार प्रकार की मानी जाती हैं जैसे:—

१ कैशिकी (कौशिकी) वृत्ति—इसके द्वारा शृगार रस का वर्णन किया जाता है।

२ सात्वती वृत्ति—इसके द्वारा वीर रस का वर्णन किया जाता है।

३ ग्रारभटी वृत्ति—इसके द्वारा रौद्र व वीभत्स रसो का वर्णन किया जाता है ।

४ भारती वृत्ति—इसके द्वारा ग्रवशेष रसो का वर्णन किया जाता है।

२७ गीत तथा वाद्य के प्रयोग-वैचित्र्य का प्रदर्शन । (सगीत)

वि.—गोलाकार, गोल ।

उ०—सिर चमर चौसर सोह, ग्रति सूर किरण विमोह । परिवेस सुभट सप्रीत, गढ ग्राविया 'ग्रगजीत' । —रा. रू.

रू. भे.—बरती, बिरत, बिरति, बिरती, बिरत्ती, बीरत, ब्रित, वरत, विरत, विरति, बिरती, विरत्त, विरत्ति, विरत्ती, वीरत, वीरति, वीरती, व्रती, व्रत्ति, व्रत्ती, व्रिति, व्रिती, व्रित्ति, व्रित्ती ।

व्रतिन—सं. पु. [सं.] वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तर का ग्रठारहवा व्यास ।

व्रतियोड़ौ—देखो 'बरतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. व्रतियोडी)

व्रती, व्रतीक—सं. पु. [स. व्रतिन्] १ व्रत धारण करने वाला व्यक्ति ।

उ०—१ ग्रादू वेर छै ब्राह्मण व्रतिया रे, मूस मंजारी जेम । बलै सपपण सांकड़ौ रे दूध रुद्र मेल जेम कै । —जयवाणी

उ०—२ राजा घणी चतुराई सु झारी भरि रखीस्वरा रै हाथ दीनी । तरै स्रीगोतमजी स्रीपरमेस्वरजी रा नांव री कळवाणी करि दीनी, जावौ राण्या नै पावज्यौ, महाराज रै पुत्र होसी । तरै राजाजी घरै पधारिया । उण राति राजाजी व्रतीक थ्या तिकौ सुख मैं पोढ्या छै । —रा. वसावळी

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

रू. भे.—बरत, बरती ।

व्रतु—देखो 'व्रत' (रू भे.)

उ०—१ व्रतु लेउ विदुर गयउ वन माहि, कन्ह वली द्वारावती जाइ । बिहु पखि चालइ दल सांमही, बिहु पखि ग्रावट भड गहगही । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ सांमीय गणहर पासि पाचह ए हरिखिहि व्रतु लिइं ए । साभली बलिभद्र बात नियमवू ए पूठए पूछइ प्रभु कन्ह ए । —सालिभद्र सूरि

उ०—३ सुगुरु यसोधर पासि हरखिहि ए पाच ए व्रतु धरए । कणगावलि तपु एकु बीजऊ ए करई रयणावली ए । —सालिभद्र सूरि

व्रतेयु—स. पु. [स.] राजा रौद्राश्व एव घृताची के दस पुत्रो मे से एक पुत्र का नाम ।

व्रतेसर, व्रतेसरी, व्रतेसुर, व्रतेसुरी, व्रतेस्वर, व्रतेस्वरी—स. पु. [सं. वृत्ति +ईश्वर+ई] वह व्यक्ति या जनसमुदाय जो किसी ग्रन्य व्यक्ति या जनसमुदाय के घर विशेष ग्रवसर पर या साधारण समय मे नियमित रूप से सेवा के रूप मे जीविकोपार्जन हेतु कार्य करता है । (मा. म.)

उ०—गोडा रै कुळदेवी नारायणी केळ मैं विराजै है । केळा गोड न खावै । केळा रा पान रा दोनां मैं जीमै नही । लाखण गोड भाट हुवौ जिण रै वंस रा लाखणोत भाट गोडा रा व्रतेसरी । —बा. दा. ख्यात

रू भे.—बरतेसरी, बिरतेसर, बिरतेसरी, बिरतेस्वर, बिरतेस्वरी, वरतेसर, विरतेसर, विरतेसरी, बिरतेसुर, बिरतेसुरी, विरतेस्वर, विरतेस्वरी ।

व्रत्त—स पु. [स वृत्त] १ जीविका का साधन ।

२ चरित्र, चालचलन ।

३ कश्यप एव कद्रू के पुत्रों मे से एक पुत्र का नाम ।

४ वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक बिन्दु उसके ग्रन्दर के मध्यबिन्दु से समान ग्रन्तर पर हो ।

५ वह छन्द जिसके प्रत्येक पद मे ग्रक्षरो की सख्या ग्रौर लघु-गुरु के क्रम का नियम हो ।

६ शिष्ट एव सुच्छाया के पुत्रो मे से एक पुत्र राजा ।

७ एक प्रकार का छन्द विशेष जिसमे रगण, जगण, रगण, जगण, रगण, जगण एव ग्रंत मे गुरु एव लघु हो ।

वि —१ जीवित जिन्दा ।

२ घटित हुवा हुग्रा ।

३ मरा हुग्रा, मृत ।

४ दृढ, मजबूत ।

५ बीता हुग्रा, गुजरा हुग्रा ।

६ देखो 'व्रत' (रू भे)

७ देखो 'व्रतात' (रू. भे)

उ०—१ ग्राय निकट बूदीस सौं सब व्रत्त कहाया । —वं. भा.

ब्रचित्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

ब्रच्छ—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—छड विहग इच्छ, विस्रांम ब्रच्छ, जिह छांह जीव-सुख हूं सदीव। तह नहि तमाम, घन सीत धांम, फल फूल फार, अब्बग उदार। —ऊ. का.

उ०—२ सुघ्याबंत हूं मातहूं वेंण अक्खं, भणेंमात भीमी फळां वीण भक्खं। सिया छाह राखिया ब्रच्छ सूधा, अनें रास कोरा लिया ब्रच्छ ऊंधा। —सू. प्र.

ब्रच्छिक—देखो 'व्रस्चिक' (रू. भे.)

ब्रछ—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ वणें बाग अतही बिहद, ता में········कुवाय। आधो-फर अबर लगे, ब्रछ रहे ठहराय। —मजबद्धार

उ०—२ पुळियो जस माग वहे अेक पंथी, पाछं वर छुलडो वण पात। ताकव येम पूछियो तरवर, ब्रछ करवर रहियो कण बात। —रूगनाथ भाऊ सिघोत रो गीत

ब्रछिक—देखो 'व्रस्चिक' (रू. भे.)

ब्रज—सं. पु. [सं.] १ मथुरा और वृंदावन के चारों ओर का प्रदेश या भूभाग जहाँ श्रीकृष्ण ने बाल-क्रीड़ा की थी।

उ०—१ कुहक बाण ऋडवाण मयकर, औसर इद्र जाणि ब्रज ऊपर। हूं घण रूप जगत छत्र हट्टुं, पीरस गिरहर वंद परट्टुं। —सू. प्र.

उ०—२ इद्र धरा ब्रज ऊपरै, ज्या पेले जळ जाळ। धर हिंदू सुर पीड़वा, माया चामरमाळ। —रा. रू.

उ०—३ आखि पलव करसाख आगळी, उधरियौ तिणि सिर अनड़। ब्रज राखियौ विगोयौ बासव, वडो अवर कुण विसन वड। —ह. ना. मा.

२ समूह, झुण्ड। (ह. नां. मा.)

३ व्रज-भाषा।

४ हविर्धान एव धिषणा का पुत्र, जो स्वयभुव मनु का वशज था।

५ देखो वज्र' (रू. भे.)

उ०—कमधज भुज निमज सकज सुसुपह कज, राखै रज रिणतूर रुडे। दम्मामां गरज वहै ब्रज दोमज, गज पाताडक मुरज गुडै। —गु. रू. बं.

६ देखो 'व्रज्या' (रू. भे.)

रू. भे.—विरज, व्रज, व्रज्ज, व्रज्ज, व्रिज, व्रिज्ज।

ब्रजइंद, ब्रजइंदु—देखो 'व्रजचंद' (रू. भे.)

ब्रजचंद—सं. पु. [सं. व्रजचंद्र] १ श्रीकृष्ण भगवान। (अ. मा.)

२ ईश्वर, परमात्मा। (ना. मा.)

रू. भे.—व्रजचंद।

ब्रजणौ, ब्रजबौ—क्रि. अ.—१ जाना, गमन करना।

क्रि. स.—२ मना करना, रोकना।

३ टालना।

ब्रजणहार, हारौ (हारी), ब्रजणियौ—वि०।

ब्रजिओड़ौ, ब्रजियोड़ौ, ब्रज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

ब्रजीजणौ, ब्रजीजबौ—कर्म वा०, भाव वा०।

ब्रजदेव—सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

रू. भे.—व्रजदेव।

ब्रजदेस—सं. पु. [सं. व्रजदेश] व्रजभूमि।

रू. भे.—व्रजदेस।

ब्रजनंद—सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

ब्रजन—सं. पु. [सं. वृजन, वृजिन] १ पाप। (ह. ना. मा.)

२ कष्ट, दुख, तकलीफ। (अ. मा.)

३ अजमीढ़ एव केशिनी के ससर्ग से उत्पन्न तीन पुत्रों में से एक पुत्र का नाम।

ब्रजनाइक—देखो 'व्रजनायक' (रू. भे.)

उ०—नाथण नाग नगर ब्रजनाइक, आवण महर आगणें। पावन पुरखि नांम पुरखोत्तम, भूधर चरित भामणें। —पि. प्र.

ब्रजनाथ—सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

रू. भे.—व्रजनाथ।

ब्रजनायक—सं. पु. [सं.] १ श्रीकृष्ण।

उ०—सुतन जसोमति साम सरीर, वजावण वंस वळिभद्र वीर। नमो ब्रजनायक क्रतिम नांम, प्रमेसर पार ब्रहम प्रणांम। —पि. प्र.

२ विष्णु। (डिं. को.)

रू. भे.—ब्रजनाइक, व्रजनायक, व्रजनाइक।

ब्रजपत, ब्रजपति, ब्रजपती, ब्रजपत्त; ब्रजपत्ति, ब्रजपत्ती—सं. पु. [सं. व्रजपति] श्रीकृष्ण का एक नाम। (ना. मा.)

उ०—कमळ नयण कळि अणकळ, बहि व्रिद लियण अतुळ बळ। ब्रजपत्ति सति रूखमणि वर, धन हरि नरहर गिरधर। —पि. प्र.

रू. भे.—व्रजपत, व्रजपति, व्रजपती।

ब्रजबाळ—सं. पु. [सं. व्रजबाल] व्रज के बालक श्रीकृष्ण।

रू. भे.—व्रजबाळ।

ब्रजबासी—सं. पु.—१ रामावत साधुओं का एक भेद विशेष। (मा. म.)

२ देखो 'व्रजवासी' (रू. भे.)

ब्रजभाखा, ब्रजभासा—सं. स्त्री. [सं. व्रजभाषा] मथुरा के आसपास के व्रज प्रदेशों में बोली जाने वाली वह भाषा जिसकी उत्पत्ति शौरसेनी प्राकृत से हुई है। यह भाषा अत्यन्त कर्णमधुर मानी जाती है।

उ०—ब्रजभाखा सुरधर विमळ, आदि करै उच्चार। देस देस भाखा डबर, वरणूं करि विस्तार। —सू. प्र.

ब्रजभूखण, ब्रजभूसण–स. पु. [सं. व्रजभूषण] १ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)

उ०—नीर चोरि तर ऊपर चढ़ियो, गोपंगना तणा गोपाळ। अरज करै ऊभी जळ अंतर, दै ब्रजभूखण दीनदयाळ। —ह. ना. मा.

२ ईश्वर, परमात्मा। (नां. मा., ह. ना. मा.)

रू. भे.—ब्रजभूखण, ब्रजभूसण।

ब्रजभूप–सं. पु. [सं] श्रीकृष्ण।

उ०—दिविदु दिवान दिवस वासुर दिन, अह इगियारसि दिविसि अनूप। कीजै वरत भजन पिणि कीजै, भगतवछळ रीझै ब्रजभूप। —ह ना. मा

ब्रजमंडळ–सं. पु. [स. व्रजमंडल] व्रज और उसके आस-पास के प्रदेश जो कि तीर्थ माने जाते हैं।

उ०—बिलय मुलक रासट उपवरतन, जनपद नीव्रति देस जनात। मंडळ नको अेहडो ब्रजमंडळ, अवतरिया हरि करण अख्यात। —ह. नां. मा

रू. भे.—व्रजमंडळ, बिरजमंडळ।

ब्रजमोहन–सं. पु. [सं.] श्रीकृष्ण।

ब्रजयंद–सं. पु [स. व्रजेंद्र] श्रीकृष्ण। (अ मा.)

रू. भे.—व्रजइद, ब्रजइंदु, व्रजयद, व्रजइंद, व्रजइंदु।

ब्रजराज, ब्रजराव, ब्रजराय–सं. पु [स. व्रजराज] १ श्रीकृष्ण का नाम।

उ०—१ राज धनखधर रामजी, चक्रधर ब्रजराज। सदा सुधारै सत कै, केई विकटै काज। —गजउद्धार

उ०—२ नरनाथ जांणै राखै निजर, बाण बलांणां बिसतरै। ब्रजराज लाज मोरी वरण, काज सिद्ध मोटा करै। —रा. रू

उ०—३ हुवो घटियो कळू अघट 'बीका' हरो, भलो सोभाग समार भाखै। राज हिंदवाण री लाज जिम रहावी, राज री लाज ब्रजराज राखै। —आसियो भोपत

२ वसुदेव।

उ०—करग मसलै उरज तोडै अंगियां कसा, चित चलै अलोकिक करै चाळो। वेख नट तणै खडो बनवेथिया, नटपडो कुंवर ब्रजराज वाळो। —बा. दा.

रू. भे.—व्रजराज, बिजराज।

ब्रजरेणूं–स. स्त्री. [स] व्रज भूमि की धूलि।

उ०—कर विधान करवत लै कासी, लै ब्रजरेणूं लेटै। पग्यो न विल प्रभु रै पद पंकज, भिसत न त्यातिक भेटै। —र. रू.

ब्रजलाल–स. पु. [स.] श्रीकृष्ण का नाम।

ब्रजवणता, ब्रजवनता, ब्रजवनिता–सं. स्त्री. [सं. व्रजवनिता] व्रज में निवास करने वाली स्त्रियां, गोपिकाएं।

रू. भे.—व्रजवणता व्रजवनिता।

ब्रजवल्लभ–स. पु [स.] व्रज के प्रिय, श्रीकृष्ण।

ब्रजवासी–सं. पु. [स] (स्त्री. व्रजवासण, व्रजवासणी) १ श्रीकृष्ण।

उ०—वंसीधारी ब्रजवासी विहारी, पूरी जेरी प्रीति राधा पिआरी। काळी लीला खेलियौ काज काळी, गाए ध्याए देव गाया गुआळी। —पिं. प्र.

२ व्रज मे निवास करने वाला व्यक्ति।

उ०—जद त्या कह्यो—म्हें भीखणजी स्वामी रा टोला री। जद तै बोली—हे राडा! थे पैलकेई म्हारी रोटी ले गई। उरही दो म्हारी घ ट। इम कहि घाट लेवा लागी। जद एक ब्रजवासणी वरजै— हे कोकी! अतीत नै दियो पाछो मत लै। जद तै बोली— कुता नै म्हाल देसूं पिण इणा कना सूं तो उरहो लेसूं। —भि. द्र.

३ वैष्णव सम्प्रदाय की एक शाखा।

४ ईश्वर, परमेश्वर। (ह ना. मा.)

रू. भे.—व्रजबासी, व्रजवासी, व्रजबासी, व्रजवासी।

ब्रजविलास–स. पु. [स.] श्रीकृष्ण का नाम।

ब्रजविहार, ब्रजविहारी–स पु.—श्रीकृष्ण। (अ. मा)

ब्रजवैकुंठविहारी–स पु.— श्रीकृष्ण। (अ. मा)

ब्रजस्पति, ब्रजस्पती–स पु — श्रीकृष्ण का नाम।

ब्रजांगना–स स्त्री.— व्रज की स्त्री, गोपिका।

ब्रजांग, ब्रजाक, ब्रजाग, ब्रजागनि, ब्रजागनी, ब्रजागि. ब्रजागिन–सं. पु [स. वज्र+अग] १ अस्त्र-शस्त्र।

उ०—वाजिस जेम पइ ठवइ वेस, दोमजा अस्सि ओपमा देस। माणिक्क लियउ भोदडइ मागि, वइरिया सिरै वाहण ब्रजागि। —रा. ज. सी.

२ देखो 'वजरंग' (रू. भे.)

उ०—वाहरू सीत जाणं ब्रजागि, लसकर कपि मिळिया वेध लागि। जैचद दळाबळ दखि जाण, तोलै खग बोलै एम ताम। —सू. प्र.

३ देखो 'बजराक' (रू. भे.)

उ०—१ धदछइ धार बिद्रूक हुवइ धड, खाग ब्रजाग वाव रण खेत्र। मण आठं वाजिया विसम गति, निलवट सुर बाधियो नेत्र। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ भारथि आगि ब्रजागि महाभड, जोध अडाग वडा छळ जागै। मेर अजाद देस दस मालिय, मुगळा कन्है पेसकस मागै। —ज. पि.

ब्रद्धसरवा, ब्रद्धस्रवा–सं. पु. [सं. वृद्धश्रवस्] देवराज इन्द्र ।
रू. भे.—ब्रधसरवा, ब्रधस्रवा ।

ब्रद्धसेना–सं. स्त्री. [सं. वृद्धसेना] सुमति राजा की पत्नी एवं देवता-जित राजा की माता का नाम ।

ब्रद्धाचळ–सं. पु. [सं. वृद्धाचल] मद्रास में स्थित एक तीर्थस्थान ।

ब्रद्धाग्नि, ब्रद्धाग्नी–सं. पु [सं. वृद्धाग्नि] एक प्राचीन ऋषि ।

ब्रद्धाश्रम–सं. पु. [सं वृद्धाश्रम] वृद्धावस्था, बुढापा ।

ब्रद्धि–सं. स्त्री. [सं. वृद्धि] १ बढने की अवस्था, बढोतरी ।

उ०—ऊरध प्रकास, पाताळ पास, सब ठोर सिद्ध, परिकर प्रसिद्ध । वैराग ब्रद्धि, सुख बळ समृद्धि, निरभय निसान, निरधन निधान ।
—ऊ. का.

२ वृद्ध होने की अवस्था, बुढापा ।
३ ब्याज, सूद । ४ लाभ ।
५ प्रगति, विकास ।
६ बच्चा उत्पन्न होने पर घर मे होने वाला सूतक ।
७ देखो 'ब्रद्धियोग' ।
रू. भे.—विरधि, विरधी, विरिधि, व्रधि, व्रधी, व्रिदि, व्रिदी व्रिद्धि व्रिद्धी, व्रिधि, व्रिधी ।

ब्रद्धिका–सं. स्त्री. [सं. वृद्धिका] वृक्षों पर गिरे हुए शिव-वीर्य से उत्पन्न स्त्रिया जो मनुष्य का मास भी भक्षण कर लेती हैं ।

ब्रद्धतिथ, ब्रद्धतिथि, ब्रद्धतिथी–सं. स्त्री [सं. वृद्धतिथि] किसी मास या पक्ष मे दो तिथि या क्षयतिथि के अतिरिक्त वह तिथि जो घडियों में पूर्ण हो ।

ब्रद्धियोग–सं पु. [सं. वृद्धियोग] सत्ताईस प्रकार के योगो मे से एक योग विशेष ।

ब्रद्धिसराद्ध, ब्रद्धिसराध, ब्रद्धिश्राद्ध, ब्रद्धिश्राध–सं. पु. [सं. वृद्धिश्राद्ध] विवाहादि मागलिक अवसरो पर पितरो आदि के लिये नान्दीमुख नामक श्राद्ध ।

ब्रध—देखो 'ब्रद्ध' (रू. भे.)

उ०—१ आलम का अहसाल, ईखै गूडर आसना । गढ का गा गढपति कन्हइ, ब्रध अर तरणा बाळ ।
—प्र. वचनिका

उ०—२ देवी रत्त नीलमणी सीत रगं, देवी रूप अबार बीरूप अग । देवी बाळ जूवा ब्रध वेस बाळी, देवी विस्व रखवाळ बीसा भुजाळी ।
—देवि.

उ०—३ सू अकबर वा जिहांनगीर तथा साहिजांन मैं तीन पीढी तो राजावा नू मूसलमान करण री उपाय मैं रया पण तावै आयी नही । साहिजांनजी सूं तो सादलेखां अरज इण बात री करी थी । तद हजरत इसी कही, मैं तो अब ब्रध हो गया सू कोई इस जगा बैठागा जिसकूं भारी है ।
—द. दा.

२ देखो 'बध' (रू भे.)

ब्रधपण, ब्रधपणौ—देखो 'ब्रद्धता' ।

ब्रधवयस—देखो 'ब्रद्धवेस' (रू. भे.)

ब्रधवा—देखो 'विधवा' (रू भे)

ब्रधवापण, ब्रधवापणौ—देखो 'विधवापणौ' (रू. भे)

ब्रधवेस—देखो 'ब्रद्धवेस' (रू. भे.)

ब्रधसरवा, ब्रधस्रवा—देखो 'ब्रद्धस्रवा' (रू. भे.)

ब्रधांराज, ब्रधांराय, ब्रधांराव–सं पु. [सं. वृद्धराज] ब्रह्मा ।

उ०—सिधाराव रै गणेस ब्रधांराव रै दिनेस सोहै, जोध बळी राव रै लकेस रो है जेम । अलोकराव रै मकेत तायजादो तेम, ऊमेद राव रै 'अजो' रायजादो येम ।
—रावराजा अजीतसिंहजी री गीत

ब्रधा—देखो 'ब्रद्ध' (रू. भे)

उ०—ताहरां आनो वाघेलो भोळै राजा भीम नूं कहै, राज, अथी-राज नायो छै । थं पण मता चढो । मनूं विदा करो और उमराव मोहतो विदा करो । ताहरा राजा कहै छै, अनाजी ब्रधा हूवा । लूणसाह तो काम मेलियो छै । थां वाहरो तो अठै सरै नही ।
—हाहुल हमीर री बात

ब्रधि, ब्रधी—१ देखो 'वध' (रू. भे)

उ०—ब्रधि किया बळ व द ।
—रांमरासो

२ देखो 'ब्रद्धि' (रू. भे.)

उ०—'बाका' हरख न ब्रधि सूं, हाण हुवा नह सोक । हरि सतोख दियो हियै, तिण नूं दीध त्रिलोक ।
—बा. दा.

ब्रधु–वि. [सं. वृद्ध] दीर्घ, वृहद, विशाल । (अ मा.)
२ देखो 'ब्रद्ध' (रू भे.)

ब्रध्य–सं. पु —१ एक सूर्यवशी राजा ।
२ देखो ब्रद्ध' (रू. भे.)

ब्रध्यपण, ब्रध्यपणौ—देखो 'ब्रद्धता' ।

उ०—बाळापणै धोळा भया, तरुणापणै भया लाल । ब्रध्यपणै काळा भया, कारण कोण जमाल ।
—जमाल

ब्रध्नेचा–सं. स्त्री —चौहान वश की एक शाखा ।

ब्रध्नेचौ–सं. पु.—उक्त शाखा का व्यक्ति ।

ब्रन—देखो व्रण' (रू. भे.)
२ देखो 'वरण' (रू. भे)

उ०—१ काळ बन हुई अवसाण विच भळहळै, मार हेको वियो हियै मिळती । 'अमर' वी भगवती सुरम मुह आगाळी, गळ अजै ऊभजे मीर गळती ।
—केसोदास गाडण

उ०—२ मो सजन चालतडा, रोय रोय गम रतन्न । पड़िया बिस रा चौसरा, आंसु मोती ब्रन ।
—ढो. मा.

उ०—३ तन घण घडा तराज, धरर धर बाज तिलक ध्रन । पंत दंत बक पाज, वणै सोभाज सेत ध्रन । —सू. प्र.

उ०—४ मिळि माह तणी माहुटि सूं मसि ध्रन, तपि आसाढ तणी तपन । जन भोजन पणि अधिक आंणियौ, मध्यरात्रि प्रति मध्याह्न । —वेलि

उ०—५ काळी सेत ध्रन पोळटैं, पडै जोखिम कळस, खसैं खुंभी, हुवै मडप लागो । बीतड़ा भाजि ढहि जाइ धरती मिळै, गीतडा नह जाय, कहै 'गांगौ' । —गागो

उ०—६ गढवाडाय जीवत कोण गजे, ध्रन पाल गवां धव पाल वजे । जग मांझ अमां घट प्रांण जितै, इह गांवत हेरण कोण मतै । —पा. प्र.

ब्रनअहार—स. पु.—१ अति उदार या दातार व्यक्ति ।

२ प्रजा समूह ।

ब्रनखट—देखो 'खटदरसण' (२) (रू भे)

ब्रनणौ, ध्रनबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू. भे.)

ध्रनणहार, हारौ (हारी), ध्रनणियौ—वि० ।

ध्रनियोड़ो, ध्रनियोड़ो, ध्रन्योड़ो—भू० का० कृ० ।

ध्रनीजणौ, ध्रनीजबौ—कर्म वा० ।

ब्रनबणौ ध्रनबबौ—देखो 'वरणणौ, वरणबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दस जोयण लगैं जिमैं री देहो, ध्रनवतां जोवता विस्तार । हुउं हिज वार तणा ऊपरइ, इसडा ब्रख वाधिया उदार । —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ ध्रमवजइ काम रूप रउ वणतउ, हेमा सरस हजूर हुअउ । कहइ स भूट बाळियउ कद्रप, मयण सही अउळजै मुअउ । —महादेव पारवती री वेलि

ध्रनवणहार, हारौ (हारी), ध्रनवणियौ—वि० ।

ब्रनवियोड़ो, ब्रनवियोड़ो, ध्रनव्योडौ—भू० का० कृ० ।

ब्रनवीजणौ, ब्रनवीजबौ—कर्म वा० ।

ब्रनवियोड़ौ—देखो 'वरणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ब्रनवियोड़ी)

ब्रनियोड़ौ—देखो 'वरणियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ध्रनियोडी)

ब्रम—१ देखो 'व्रण' (रू. भे.)

२ देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—१ देवी अखरणी भक्खणी देव जोगी, देवी ब्रम्मळा भोज भोगी निरोगी । देवी मात जानेसुरी ब्रम्म मेहा, देवी देव चामुंड संख्याति देह: । —देवि.

उ०—२ महहल थोल सोभ मान, कुवनी कळस्य ए, पणत काच नील ब्रम्म, धारिसं धरस्स ए । पवं गिरा पगार पोळि. लोहमं कपाट ए, (जु) खिगमेर सीस आंखि, ओपियत घाट ए । —सु. रू. बं.

उ०—३ काटल आवध मूझ कर, मन मंदाइण ब्रम्म । आवध राखै ऊजळा, मैंला ज्या रा मन्न । —बां. दा.

ब्रप—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

उ०—१ करतार धणू कासूं कहां, वडा देव बांमण ब्रपा । केसवा रखें कुमया करैं, किसन हिमैं करिजो क्रिपा । —पी. ग्रं.

उ०—२ हरि हरि करि उद्धरैं, बडो सेवग बभीखण, हरि हरि करि उद्धरैं, गजह सामंद धू अज्जण । हरि हरि करि उद्धरैं, दखिख ब्रप बडो सुदामा, हरि हरि करि उद्धरैं, सेस संकर सिव ब्रह्मा । —ज. खि.

ब्रमड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—रिखण चो साम जगत चो तारण, आधारण ब्रमड अकवीस । जण जण कना काह्या तु जाचैं, जाच येक दाता जगदीस । —ओपो आढो

ब्रम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.) (नां. मा)

उ०—अकालग्यान दरसी निज ब्रम कूं पहिचाणैं । भूत, भवस्त, वरतमान जुगति सौं जाणैं । च्यार वेद नौ व्याकरण खट सासत्रूं कै बिनाण । पिंडत विद्या मैं पारावार जाणै नवदूण पुरांण । —सू. प्र.

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

ब्रमआखर—देखो 'ब्रह्माक्षर' (रू. भे.)

ब्रमकुंड—देखो 'ब्रह्मकुंड' (रू भे)

ब्रमखाड—देखो 'ब्रह्मखाड' (रू. भे.)

ब्रमग्य—देखो 'ब्रह्मग्य' (रू. भे.)

ब्रमग्यांन—देखो 'ब्रह्मग्यान' (रू. भे.)

ब्रमग्यांनी—देखो 'ब्रह्मग्यानी' (रू. भे.)

ब्रमचरच—देखो 'ब्रह्मचरच' (रू. भे.)

ब्रमचार—१ देखो 'ब्रह्मचरय' (रू भे.)

२ देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे.)

ब्रमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे)

ब्रमजोग—देखो 'ब्रह्मयोग' (रू. भे.)

ब्रमतीरथ—देखो 'ब्रह्मतीरथ' (रू. भे.)

ब्रमदड—देखो 'ब्रह्मदड' (रू. भे)

ब्रमदवार—देखो 'ब्रह्मद्वार' (रू. भे.)

ब्रमदांन—देखो 'ब्रह्मदांन' (रू. भे.)

ब्रमदिन—देखो 'ब्रह्मदिन' (रू. भे.)

ब्रमदेत, ब्रमदंत, ब्रमदंत्य—देखो 'ब्रह्मदंत्य' (रू. भे.)

ब्रमदोख, ब्रमदोस—देखो 'ब्रह्मदोस' (रू. भे.)

ब्रमद्रोह—देखो 'ब्रह्मद्रोह' (रू. भे.)
ब्रमनाभ—देखो 'ब्रह्मनाभ' (रू. भे.)
ब्रमनिस्ठ—देखो 'ब्रह्मनिस्ट' (रू. भे.)
ब्रमपद—देखो 'ब्रह्मपद' (रू. भे.)
ब्रमपास—देखो 'ब्रह्मपास' (रू. भे.)
ब्रमपुतर—देखो 'ब्रह्मपुत्र' (रू. भे.)
ब्रमपुतरि, ब्रमपुतरी—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रू. भे.)
ब्रमपुत्र—देखो 'ब्रह्मपुत्र' (रू. भे.)
ब्रमपुत्रि, ब्रमपुत्री—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रू. भे.)
ब्रमभोज—देखो 'ब्रह्मभोज' (रू. भे.)
ब्रममूरत—देखो 'ब्रह्ममूरत' (रू. भे.)
ब्रमरंध्र—देखो 'ब्रह्मरंध्र' (रू. भे.)
ब्रमरात, ब्रमरात्रि—देखो 'ब्रह्मरात' (रू. भे.)
ब्रमलोक—देखो 'ब्रह्मलोक' (रू. भे.)
ब्रमवादिनी—देखो 'ब्रह्मवादिनी' (रू. भे.)
ब्रमविद्या—देखो 'ब्रह्मविद्या' (रू. भे.)
ब्रमवेता, ब्रमवेत्ता—देखो 'ब्रह्मवेत्ता' (रू. भे.)
ब्रमसुता—देखो 'ब्रह्मसुता' (रू. भे.)
ब्रमसू—देखो 'ब्रह्मसू' (रू. भे.)
ब्रमसुत, ब्रमसूत्र—देखो 'ब्रह्मसूत' (रू. भे.)

उ०—तीरथ-राज प्रयागि, राव कमधज्ज पधारे, ब्रमसूत निय पहरि करगि अंजलि कुस धारे। करि मजन बिधि सहित, कीध तरपण गगा तड, विवह दान दे विप्रां, अकमाळी प्रक्खे वड।
—गु. रू. बं.

ब्रमहत्या—देखो 'ब्रह्महत्या' (रू. भे.)
ब्रमांणी—देखो 'ब्रह्माणी' (रू. भे.)

उ०—नार्च तिम नट्ट थई जिम नाथ, महोदधि मच्छ कूदै सुज माथ। सपेखे सभ निसभ सधीर, ब्रमाणी ताम थई वर वीर।
—मा. वचनिका

ब्रमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)
ब्रम्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)
२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)
ब्रम्मघिया, ब्रम्मधी, ब्रम्मधीया—देखो 'ब्रह्मधीया' (रू. भे.)

उ०—'करण' सुजाव वर्ष नो करगा, मळ हूता गम अगम कीया। चाढे धूमडळ चीतोड़ा, धू धारक जिम ब्रम्मघीया।
—राणा जगतसिंघ री गीत

ब्रम्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—देवी विस्णु रै रूप जंभा वधारे, देवी मुकुंद रै रूप मधुकीट मारे। देवी सावित्री गायत्री ब्रम्म ब्रम्मा, देवी साच तण मेलिया जोध सम्मा।
—देवि.

ब्रम्ह—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)
२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)
ब्ररस, ब्ररस—देखो 'वरस' (रू. भे.)
ब्रव—देखो 'व्रव' (रू. भे.)
ब्रवण—सं. पु.—दान, पुण्य। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—पवन चंदन रव हर पनग पूरण दळद्री प्रेत। विध अगन भूरल ब्रवण दीरघ ऊ कहि देत।
—एका.

वि.—दातार, दानी, उदार।

उ०—कुमर किरणाळ सुपह सपत्राळ, विरदि उजुआळ सकथ धजबध। प्रसिधि दधि पाज ब्रवण गज वाज, मदति व्रजराज मरद अनमध।
—ल. पि.

रू. भे.—ब्रवण।

ब्रवणलोकेस, ब्रवणलोकेसु, ब्रवणलोकेसू—सं. पु.—ईश्वर, परमात्मा।
(नां. मा.)

ब्रवणौ, ब्रववौ—क्रि. स.—१ दान देना।

उ०—१ मन महराण धिनो मेवाडा, दाखै धाडा दसूं दिसा। राजा मन बादै रजवाडा, तूं गडवाडा ब्रवै तिसा।
—राणा भीमसीग री गीत

उ०—२ अवतार उदार लाखो इसो, जगा जेठ दातार 'जैहै' जिसो। धरा-थंभ भाडेज घूमै धडं, ब्रवै वाज जेहा ज गीतां वडं।
—ल. पि.

उ०—३ अस जांणै रै जग जांणै, जिण लंक ब्रवी जग जांणै। स्रीमुख दाख सुकठ सहोदर, राख प्रभाव घराणं।
—र. ज. प्र.

२ देना।

उ०—१ तांम सूझै न को ठांम धवळह तणा, घणा मन राहयो रूंख रासै घणा। ब्रवै काय रभ रथ जूथ आसै सुवर, पडै कवि पंखियां 'जसो' धू कळपतर।
—हा. झा.

उ०—२ ब्रवतो द्रब रीझ झडी में कळवळ, सोभा समद झडी में साद। जिम चितराण जीव झडी में, आवै घडी घडी मैं याद।
—राणा सिंभुसिंघ री गीत

उ०—३ अदवा लै जाइस ज्या अपजस, चक्रवत ब्रवै न आंणै चोज। राजा अमर करै लै रूपग, मंगळ बेगाळ दै मौज।
—किसनो आढौ

उ०—४ अर प्रीत पूछै गहर भूधर कहै विध कवि राव। उर वधत हरख अमाप सुण सुण ब्रवै कोडपसाव।
—र. रू.

३ वित्तीर्ण करना, वितरित करना, बाटना।

उ०—राजा कमधज सुतण पदारथ, उण सुत गणपति भूप ब्रवण अथि। तोमनाथ जिण सुतण भूप तवि, कीरति पार जेण न कहै कवि।
—सू. प्र.

४ त्यागना, छोड़ना।

५ अर्पण करना।

६ बोलना, कहना।

उ०—व्रवियो सिध आराध वडाळी, असठो अक्षर मंत्र जप अ वाळी। अजमावण कजि मंत्र अप अवर्व, दुगम पहाड फोड़ि इम दक्खे।
—सू. प्र

व्रवणहार, हारो (हारी), व्रवणियो—वि०।

व्रवियोड़ो, व्रवियोड़ो, व्रव्योड़ो—भू० का० कृ०।

व्रवीजणो, व्रवीजबो—कर्म वा०।

व्रवणो, व्रवबो—रू० भे०।

व्रस—१ देखो 'व्रख' (रू. भे.)

२ देखो 'व्रखभ' (रू. भे.)

३ देखो 'विस' (रू भे.)

४ देखो 'वरस' (रू. भे.)

५ देखो 'व्रक्ष' (रू भे.)

उ०—ननां नदया परहरी, पर नदया न करेह। सोभ नही ससार मा, पळतें पत्र गहि लेह। पळतें पत्र गहि लेह, ब्रस देखो नर सोई। और पाप कू नफौ, निंदन नफो न कोई।
—वील्होजी

व्रसक—देखो 'व्रखक' (रू. भे.)

व्रसकेतु—देखो 'व्रखकेतु' (रू. भे.)

व्रसचक, ब्रसचकर, व्रसचक्र—स पु. [स. वृश्चिक] १ वृश्चिक राशि का नाम। (अ. मा.)

२ देखो 'व्रखचक्र' (रू. भे.)

व्रसण—देखो 'व्रखण' (रू. भे.)

व्रसणकच्छ, ब्रसणकच्छु, ब्रसणकच्छ—देखो 'व्रखणकच्छ' (रू. भे.)
(भ्रमरत)

व्रसदरभ—देखो 'व्रखदरभ' (रू. भे.)

उ०—महाराजा मोरध्वज री व राजा ब्रसदरभ री जिण भूखी आत्मा हिन आपरै बेटा नू चीर सिंह नू खुवायो सो मोरध्वज अक्षय पुण्य पायो।
—साह रामदत्त री वारता

व्रसदेवा—देखो व्रखदेवा' (रू. भे.)

व्रसद्वीप—देखो 'व्रखद्वीप' (रू. भे.)

व्रसधार, ब्रसधारिण, ब्रसधारी—देखो 'व्रखधारी' (रू. भे.)

व्रसधुज, ब्रसध्वज—देखो 'व्रखध्वज' (रू. भे.)

व्रसध्वजा—देखो 'व्रखध्वजा' (रू. भे.)

व्रसपत, ब्रसपति, व्रसपती—१ देखो व्रखपति' (रू. भे.)

२ देखो 'व्रहस्पति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—ओ ब्रसपत दसमं ग्रह आयो, विदुख तिका दुण लाभ बतायो। कुळ त्रप उग्र थयो ह्वै कोई, सुतन प्रताप चौगुणो सोई।
—रा. रू.

व्रसभ—देखो 'व्रखभ' (रू. भे.)

व्रसभकेतु—देखो 'व्रखभकेतु' (रू. भे)

व्रसभगत, ब्रसभगति, ब्रसभगती—देखो व्रखभगति' (रू. भे)

व्रसभधज, व्रसभधुज, ब्रसभध्वज—देखो 'व्रखभध्वज' (रू भे)

व्रसभाक—देखो व्रखभाक' (रू भे)

व्रसभाण, ब्रसभांण, व्रसभान, ब्रसभानु—स. पु [सं वृषभानु] कृष्ण-प्रेमिका राधा के पिता का नाम।

रू. भे. व्रषभान, विरखभाण विरखभाणु विरखभान, विरख-भानु, व्रखभाण व्रखभाणु व्रखभान व्रखभानु।

व्रसभानुनदणी, ब्रसभानुनंदिणी, ब्रसभानुनदिनी—देखो 'व्रखभानुनंदिनी' (रू भे.)

व्रसभानुसुता—देखो 'व्रखभानुसुता' (रू. भे.)

व्रसन देखो 'व्रखन' (रू भे.)

व्रसलाछण, ब्रसलाछन—देखो 'व्रखलाछन' (रू भे)

व्रसली—देखो 'व्रखली' (रू. भे)

व्रसलीपत, ब्रसलीपति, ब्रसलीपती—देखो 'व्रखलीपति' (रू. भे)

व्रसवाहण, ब्रसवाहन—देखो 'व्रखवाहण' (रू भे.)

व्रससेण, ब्रससेन—देखो 'व्रखसेन' (रू. भे.)

व्रसस्कध—देखो 'व्रखस्कध' (रू. भे.)

व्रसाक—देखो व्रखाक' (रू भे.)

ब्रसासुर—देखो 'व्रखासुर' (रू. भे)

ब्रसोत्सरग—देखो 'व्रखोत्सरग' (रू. भे)

व्रस्चक—देखो व्रस्चिक' (रू भे)

उ०—रवि मीन रासि सनि करक राह, अरु मकररासि केतह अथाह। कहि ब्रस्चक भाग बुध बुध प्रकास, तन लगन मिथुन सुभ अनत तास।
—सू. प्र.

ब्रस्चकसकरात, ब्रस्चकसकरांति, ब्रस्चकसंकरांती, ब्रस्चकसकरायंत, ब्रस्चकसक्रांत, ब्रस्चकसक्रांति, ब्रस्चकसक्रांती, ब्रस्चकसक्रायत, ब्रस्चकस-क्रांति—देखो व्रस्चिकसक्रांति' (रू. भे.)

उ०—ब्रस्चकसक्रांत दिन खट वितीस, ससि सुक्र रासि तुल वर सघोस। राजै तदि मगळ कुंभ रासि, कहि मीन व्रहस्पति बळ प्रकासि।
—सू प्र.

व्रस्चिक—स. पु. [स. वृश्चिक] (स्त्री व्रस्चिकणी, व्रस्चिकनी) १ बिच्छू।

उ०—अऊठ कोडि घटि अम्ह तणइ, रोम सरूपी राय। तै पीऊ पालइ मूंहनइं, व्रस्चिकनी परी थाइ।
—मा. कां. प्र.

२ बारह राशियो मे से आठवी राशि। (ज्योतिष)

२ बारह लग्नो में से आठवां लग्न ।   (फलित ज्योतिष)

रू. भे.– व्रच्छिक, वश्चिक, व्रस्चक ।

व्रस्चिकपत्रिका–सं स्त्री. [स. वृश्चिकपत्रिका] पोई नामक साग ।

व्रस्चिकप्रिया–सं स्त्री. [स. वृश्चिकप्रिया] पोई नामक साग ।

व्रस्चिकसकरांत, व्रस्चिकसकरांति, व्रस्चिकसंकरांती, व्रस्चिकसंकरायंत, व्रस्चिकसक्रांत, व्रस्चिकसक्रांति, व्रस्चिकसंक्रांती, व्रस्चिकसंक्रायत–सं. स्त्री [स. वृश्चिकसक्रांति] वृश्चिक राशि में सूर्य का प्रवेश एवं इस दिन मनाया जाने वाला पर्व ।

रू. भे.— व्रस्चकसंकरात, व्रस्चकसकरांति, व्रस्चकसकरांती, व्रस्चकसंकरायंत, व्रस्चकसंक्रांत व्रस्चकसक्रांति, व्रस्चकसंक्रायत ।

व्रस्चिकाळी–सं. स्त्री. [स. वृश्चिकाली] प्राय: सारे भारत में पाई जाने वाली बिच्छू नामक लता ।

व्रस्टर—देखो 'विस्टर' (रू. भे.)   (नां. मा.)

व्रस्टरसव, व्रस्टरसवा, व्रस्टरस्रव, व्रस्टरस्रवा–स पु. [स विष्टरश्रवस्]

१ ईश्वर, परमात्मा ।   (नां मा.)

२ श्रीकृष्ण । (अ. मा.) ३ विष्णु भगवान का नाम ।

व्रस्टि, व्रस्टी–सं. स्त्री [सं. वृष्टि] १ वर्षा, मेह ।

उ०—तीरथकर नइ पारणं, कुण करसइ मुझ होडि । व्रस्टि करूं सोवन तणी, साढी बारह कोडि ।   —स. कु.

२ बहुत सी चीजो को एक साथ ऊपर से गिराने की क्रिया ।

३ एक ही क्रिया को लगातार बार बार करने की क्रिया ।

रू. भे.—व्रस्टी, व्रस्ठी, व्रिस्टि, व्रिस्टी ।

व्रस्णि, व्रस्णी–स. पु. [सं. वृष्णि] १ बादल, मेघ ।

२ यादव वश ।

३ श्रीकृष्ण ।

४ देवराज इन्द्र ।

व्रस्णिकगरभ, व्रस्णिगरभ–सं. पु. [सं. वृष्णिकगर्भ] श्रीकृष्ण ।

व्रहमड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—१ दखे भाख ज्यारा जती व्रस दीता, सको कत त्रिलोक री नाथ सीता । व्रहमड कोडेक भांजे वणावे, इसो राम माता कठै कामि भावे ।   — सू. प्र.

उ०—२ मणांके चली कोमडी तूर भेरी, फबे सख सहनाय अनेक फेरी । विखम्मी सुरा सिद्धवा डाक वागी, व्रहमड इक्कीसमे हाक वागी ।   —सू. प्र.

व्रहम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

उ०—जोग पंथ जाणे नहीं, माया रूपी कान्ह । जादम वस छुडाय करि, दीयो व्रहम निदान ।   —सुरजनदास पूनियो

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

व्रहमण, व्रहमांण, व्रहमांणय—१ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—१ वेद मंत्र पाठी चत्र वेदह, जांणे जोतिख भेद सुभेदह । होम दिये आहूत हुतासण, तेडे ताम इसा व्रहमण ।   —गु. रू. बं.

उ०—२ आमना चत्र वेद व्रहमांणय विप्रयं, रूग जुज्जर साम अथरवणय अपय । वेदोधुनि अं जं सब्बदय वणयं, गुंजार रव भेर पडसदय घणयं ।   —गु. रू. बं.

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

व्रहमांणी —देखो 'ब्रह्माणी' (रू. भे.)

उ०—देवी वैस्णवी महेसी व्रहमांणी, देवी इद्रायणी चंद्रांणी रुद्रांणी । देवी नारसिंघी वराही विख्याता, देवी इळा आधार भासूर हाता ।   —देवि.

व्रहमि, व्रहमी—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

व्रह, व्रहत, व्रहती–वि. [स. वृहत्] १ आकार की दृष्टि से अत्यन्त बडा, विशाल ।

२ विस्तार की दृष्टि से बहुत लम्बा-चोडा ।

३ अपार, बहुत ।

स. पु.—१ वेद ।

२ ब्रह्म ।

३ प्रत्येक चरण मे नौ अक्षरो वाला वर्णवृत्त ।

रू. भे.—व्रह, व्रहत, व्रहती, व्रहद, वहद, व्रिहत, व्रिहद ।

व्रहत्कलप–स. पु [सं. वृहत्कल्प] एक सूत्र विशेष ।

उ०—छ छेदं महानिसीथ निसीथ, पाच सहस गिणिजै ह्वीथ । व्रहत्कलप बीजो वाखांण, च्यारसे चिहुतर सख्या जाण ।   —ध. व. ग्र.

व्रहदंग–स. पु. [स. वृहत्+अग] हाथी, हस्ती ।

व्रहदबळ–स. पु.—वृहद्बल नामक एक सूर्यवंशी राजा जो विश्रुतवान का पुत्र था ।

उ०—अपति प्रसेनजीत तै मदण, सुनक प्रसेन सुतण खळ खंडण । बळवत सुनक सुजाव व्रहदबळ, दुभ्रल हुवो हरवळ कैरव दळ ।   —सू. प्र.

व्रहदभाण, व्रहदभांण, व्रहदभांणु, व्रहदभांन, व्रहदभांनु–सं. पु. [स. वृहद्भानु] १ आग, अग्नि ।   (ह. ना. मा.)

२ चित्रक ।

३ सूरज, सूर्य ।

४ सत्यभामा के पुत्रों में से एक ।

रू. भे.—वहदभाण, वहदभांनु, व्रिहदभांण, व्रिहदभांणु, व्रिहदभान, व्रिहदभानु ।

व्रहदभोज–सं. पु.—पुराणोक्त वृहद्राज नामक एक सूर्यवंशी राजा ।

उ०—जैं सुत ब्रहद्भोज जगजाहर, ब्रहद्भोज सुत ब्रहन्य कीतवर। जिण ब्रप ब्रहनि सुजाब क्रतंजय, जेण सुजाव नरेस रणंजय।
—सू. प्र.

ब्रहवळ, ब्रहवल—वि. [सं. वृहद्बल] अत्यधिक बड़ा, बहुत बड़ा।

उ०—अणू तें ब्याणू तें ब्रहवल विभूतं प्रतिबिमू, तुजैनां जांनै को सुहृद स्वसु जानें मल त्रभू। कहैं क्या ध्यावेधी कहन नहिं प्रावें कुल कुलें, मदांधो मायावी तुम रु हम भावी तुलें। —ऊ. का.

ब्रहदस्व—सं. पु. [सं. वृहदश्व] एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

उ०—१ कहिं जिण सुतण वीर ब्रप केहौ, जग जस प्रगट भगीरथ जेहौ। जे सुत ब्रहदस्व भूप करण जय, तै सुत भांनुमांनु तेजोमय।
—सू. प्र

उ०—२ मारद्र जेगसुत वसभोर, जैं सुत जवनासव ब्रह्म जोप। सभ्रम जवनासव हुवो साव, ब्रहदस्व जेण सुत तप दवाव।
—सू प्र.

ब्रहनट, ब्रहनट, ब्रहन्नड—सं. पु [सं. वृहन्नट] अर्जुन। (अ. मा)

उ०—मूझइ रडइ मुहि पडइ मनि कप थाइ, देखी अतूं कटक उत्तर सून्य थाइ। पाछउ हुव वलि ब्रहन्नड मइं म मारि खूटा पखइ कहि न भूलउ का विचारि। —सालिभद्र सूरि

रू. भे.—व्रिहनट, व्रिहनट, व्रिहन्नड।

ब्रहनळा—सं स्त्री. [सं. वृहन्नला] १ वनवास काल के बाद एक वर्ष के अज्ञातवास काल मे राजा विराट के यहा स्त्री वेष मे रहते समय अर्जुन का नाम।

२ अर्जुन।

ब्रहमंड, ब्रहमंडक—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—१ भिडै मुख मूछ प्रणी भुंवहार, धरै हथ रोळवियो चव-धार। वणै मुख चोळ छिबं ब्रहमंड, 'पतै' प्रस हाकलियो परचंड।
—सू. प्र.

उ०—२ कोट मुलक खिडिया केताइ खड, ब्याइ बसूहक फाटो ब्रहमंड। वडा वडा आवै वरियांम, 'अबर' आगै करै सलांम।
—गु. रू. बं.

उ०—३ ब्रहमंड किना फुट्टो बळं, धसक तळातळ मातळं। मुखैं हुसैं सकति महाबळ, वेताळा कुळ ब्याकुळं। —मा. वचनिका

उ०—४ घट मैं तारा चंद रवि, घट मांहि ब्रहमंड। हरिया घट मैं राम है, वाकी जोति प्रखंड। —अनुभववाणी

उ०—५ झूंझारां प्रावध झळहळे'य, ब्रहमंडक वीजा वळवळे'य। सैफळो वाजियो सांमताह, मेलियो लोह मुह रावताह।
—गु रू. बं.

ब्रहमंडी—१ देखो 'ब्रह्मांडी' (रू. भे.)

उ०—सिव सकती सम मुगती, सिव भक्ति सकति सकति सिव सर्भं। आतम सकति सकति सिद्धो, सिव सकति पिंड ब्रहमंडो।
—गु. रू. बं.

२ देखो 'ब्रह्मांडी' (रू. भे.)

ब्रहम—सं. पु.—१ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में २१ मात्रायें होती हैं।

उ०—दस एकादस मात्र दे, एकांणि पाये एम. ब्रहम छंद वाखा-णिजै, गुण लखपति निगेम। —ल. पि.

२ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

उ०—ब्रहमग्यानी सो वडा ब्रहम विचारै। —केसोदास गाडण

३ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

उ०—१ दसरत्थ विभै इम नजर दीध, कामना पुत्र धरि जिगन कीध। आविया नाग नर सुर अनाप, आविया ब्रहम सिव बिसन आप। —सू. प्र.

उ०—२ सिव ब्रहम बिसन निज पुर सिधाय, प्रिय भूप जिगन व्रत सगि पाय। त्रिय भूप धरम चित गरभ ताम, कामना सकळ ब्रप ज्याग काम। —सू. प्र.

उ०—३ रगतासुर मैं रीत, सूर उदै जसण सर्भै। माहव ब्रहम महेस मुं, गावै आद्या गीत। —मा. वचनिका

उ०—४ साळउ दइ हाथ तपै तप सकर, ब्रहम तियइ रउ करइ विचार। वीओ दुनी रालडी वांधइ, सभूनाथ प्रचळ संसार।
—महादेव पारवती री वेलि

ब्रहमकपाळ—देखो 'ब्रह्मकपाळ' (रू. भे.)

ब्रहमकरम—देखो 'ब्रह्मकरम' (रू. भे.)

ब्रहमकवच—देखो 'ब्रह्मकवच' (रू. भे)

ब्रहमकांड—देखो 'ब्रह्मकांड' (रू. भे.)

ब्रहमकुंड—देखो 'ब्रह्मकुंड' (रू. भे.)

ब्रहमकूरच—देखो 'ब्रह्मकूरच' (रू भे.)

ब्रहमक्षत्र, ब्रहमखत्री ब्रहमखत्री—देखो 'ब्रह्मक्षत्र' (रू. भे.)

ब्रहमग्य—देखो 'ब्रह्मग्य' (रू. भे.)

ब्रहमग्यांन—देखो 'ब्रह्मग्यान' (रू. भे.)

उ०—ज्या नदिया मजन करै, धरै सदा हरि ध्यान। उर निरोध हर आसरै, विसरै नह ब्रहमग्यांन। —ध. मा.

ब्रहमग्यांनी—देखो 'ब्रह्मग्यांनी' (रू. भे.)

उ०—ब्रहमग्यांनी सो वडा ब्रहम विचारै। —केसोदास गाडण

ब्रहमघातक, ब्रहमघातकी—देखो 'ब्रह्मघातक' (रू. भे.)

ब्रहमघातणी—देखो 'ब्रह्मघातिणी' (रू. भे.)

ब्रहमघातिक, ब्रहमघातिकी—देखो 'ब्रह्मघातक' (रू. भे.)

उ०—श्रीनाथ रुद्र गणपति सकळ, भासंकर मिळ पंच ए। ' इण माहि भेद जांणे जिको, ब्रहमघातिकी मांन ए। —मा. वचनिका

ब्रहमघातिणी—देखो 'ब्रह्मघातिणी' (रू. भे.)

ब्रहमचरज, ब्रहमचरज्ज ब्रहमचरय—देखो 'ब्रह्मचरय' (रू. भे.)

उ०—सो घणा स्त्री कहै इण हीज घड सूं एकण धणा री पती भरयाल ब्रहमचरय व्रत बाळो एकण हीज धरा रो पती भ्राप री थंर लं नं पडसी। —वी स टी.

ब्रहमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

ब्रहमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)

ब्रहमपुरांण—देखो 'ब्रह्मपुरांण' (रू. भे.)

उ०—तवता कुरांण काजी तठै, ब्रहमपुरांण बचाविया। भ्रासुरा धरम मेटै 'भ्रजै', सुरा धरम दरसाविया। —सू प्र.

ब्रहमपुरी—देखो 'ब्रह्मपुरी' (रू. भे.)

ब्रहमफांस—देखो 'ब्रह्मपास' (रू भे)

ब्रहमभोज—'ब्रह्मभोज' (रू. भे)

ब्रहममुहरत, ब्रहममूहरत—देखो ब्रह्ममुहरत' (रू भे.)

ब्रहमयोनि—देखो 'ब्रह्मयोनि' (रू भे)

ब्रहमरंध्र—देखो 'ब्रह्मरंध्र' (रू भे.)

ब्रहमरेख, ब्रहमलेख—देखो 'ब्रह्मलेख' (रू भे)

ब्रहमळा—वि.—१ विमल, पवित्र।

उ०—सभंन ब्रह्म के सिनान, केक भ्रप्पणा करै, धरन्त केक ध्यास ध्यान, चंडि पाठ उच्चरै। जपत गायत्रीस जाप, वेद मंत्र ब्रहमळा, करंत पूज नौ प्रकार, केक कंत कम्मळा। —सू प्र.

ब्रहमलोक—देखो 'ब्रह्मलोक' (रू. भे)

ब्रहमवाणी—देखो ब्रह्मवाणी' (रू भे.)

ब्रहमवाचा—देखो 'ब्रह्मवाचा' (रू. भे)

उ०—देसपति सभ्रम दमण ऊदम भ्रगम गम हीदुम्रा भ्रोपम, सरमधारी करण सुधरम ब्रहमवाचा दाति विक्रम। जस करन समदि धरा जगम दीपियो बिरदाळ, ताई भूपाळ जी भूपाळ। —ल पि.

ब्रहमांड—देखो 'ब्रह्मांड' (मह., रू. भे.)

उ०—नमो भ्रादि नाराइणी, ब्रहमाणी ब्रहमांड। रुद्राणी जाणी रिधू, भ्रतुळित तेज भ्रखंड। —मा. वचनिका

ब्रहमांण—१ देखो 'ब्रह्मा' (मह., रू. भे.)

उ०—१ भ्रो जो हुं भ्राज चूकू भ्रवसाण, वकै नह वेद मुखा ब्रहमांण। जावै वित ऊमा मूंभ भ्रोयार, धरा नह छोळ दियै इंद्रधार। —गो. रू.

उ०—२ मांने ब्रहमांण पढै पुरांण, वदै बखाण रिखेसवर। गुण भणं जगत्त गुर सको भ्रसुर सुर, तेम भ्रठारह भार तर। —गि. प्र.

२ देखो 'ब्रह्माणी' (रू. भे.)

उ०—हुय चीप कोड घमंड हुय, कर कोड नवं कनियांण कथं। खट कोड लखं ब्रहमांण खडी, तव लाखह लोवळियाळ लडी। —पा. प्र.

३ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—पढावै कुरांण तिका पढावै काजिया पूजा, सुरांण पुराणा थेन ब्रहमांणां सेव। 'राजा' तणो छत्रधारी खागधारी राजहंस, दाणवां सूं वेधकारी भ्रवतारी देव। —महाराणा जयसिंह (दूसरा) री गीत

ब्रहमांणी—१ देखो 'ब्रह्माणी' (रू. भे.)

उ०—१ नमो भ्रादि नाराइणी, ब्रहमांणी ब्रहमांड। रुद्राणी जाणी रिधू, भ्रतुळित तेज भ्रखंड। —मा. वचनिका

उ०—२ पचम नाम प्रसिद्ध, सकदमाता सुरराणी। ब्रहमांणी कालि रवि, कहा तिम काइयवाणी। —मा. वचनिका

२ देखो 'ब्राह्मणी' (रू. भे.)

उ०—चोथी राणी विनीता ब्रहमांणी। तिणरै पुत्र-पहिलो नवनाटक, बीजो चद्रमा, तीजो कोरभ। —रा. वसावळी

ब्रहमोन—१ देखो 'ब्रह्म' (मह, रू. भे)

२ देखो 'ब्रह्मा, (मह, रू भे)

ब्रहमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

उ०—१ 'भगवत' सुतण हुभ्रो भ्रहु भुवणो, धण दोहा लग नाम धणो। ब्रहमा बिसन महेस वदीतो, तप तुंगिम जस तूभ तणो। —गोपाळ मोसण

उ०—२ नमो मात ध्याता नमो रग जाणी, नमो बाळ ध्याती ब्रहमा बखाणी। नमो रात्रि सध्या नमो छांह रूपी, नमो उमया चोभुजी द्रग भ्रोपी। —मा. वचनिका

उ०—३ नाव परताप सब सत महमा करै, बिसन सिव सेस ब्रहमादि सारा। दास हरिराम निज नाव परताप तै, होय जुग माहि नर निमतारा। —भ्रनुभववाणी

उ०—४ कमध्र वहै कर रूक कळासो, भ्रातम जोध विद्या भ्रभियासो। बात रहै ब्रहमा बरसासो, हुयसी जुद्ध नही ऐ हासो। —गु. रू. बं.

ब्रहमि—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

उ०—नरिंदि चौथो प्रभु नारसीघ नाहरू, बिळै परमेस बेदां तणो बाहरू। ब्रहमि पोथा निही वेद चत्र वाळिया, भ्रधिकि चारण तणा वचन भ्रजूमाळिया। —पी. प्र.

२ देखो 'ब्रह्म' (भ्रल्पा., रू. भे.)

ब्रहमिण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

ब्रहमौ—देखो 'ब्रह्मा' (मह, रू. भे.)

ब्रहम्मंड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—ब्रहम्मड कोटेक जो रोम बासं, स तो ओवतां जेणि केतो सरस। एको राम रो दास जोरै अपारै, धरा सात दीपावती सेस धारै। —सू. प्र.

ब्रहम्मा—देखो ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—१ देवी उम्मया खम्मया ईसनारी, देवी धारणी मुड त्रिभुवन्न धारी। देवी सब्बदा रूप औ रूप सीमा, देवी वेद पारक्ख धरणी ब्रहम्मा। —देवि

उ०—२ देवी सतमी अस्ठमी नोम नूआ, देवी चोथ चोदम्स पूनम्म पूजा। देवी सरसती लक्खमी महाकाळी, देवी कन्न विस्णु ब्रहम्मा कमाळी। —देवि

ब्रहब्रह, वहब्रह–सं. स्त्री—युद्ध स्थल में वीरों द्वारा की जाने वाली जोशीली आवाज।

उ०—१ कतियाणी कहकह नारद डहडह, हेका टहटह वीर हसे। बड रावत ब्रहब्रह पोरसि प्रहप्रह, दूडी टहठह होठ डसै। —गु. रू. बं.

उ०—२ टहट्टह रभ ब्रहब्रह वीर, मिळे रणताळि कमध्वज मीर। निहट्टां निग्रहि बाध्यो नेत्र, खरा खुरसांण मरुधर खेत्र। —राउ जैतसी रो रासो

ब्रहसपत, ब्रहसपति, ब्रहमपती, ब्रहस्पत, ब्रहस्पति, ब्रहम्पती–सं. पु [सं. बृहस्पतिः] १ वह व्यक्ति जो महाविद्वान एवं पंडित हो।

२ बुधवार के बाद व शुक्रवार के पहले आने वाला दिन।

३ एक प्रसिद्ध वैदिक देवता जो अंगिरस के पुत्र एव देवताओ के गुरु माने जाते हैं। (अ. मा.)

उ०—श्री गुरन पति ब्रहस्पति कहै, देवन पति गोविंद। देवन पति ब्रह्मा वदै, सासन पति पति अब। —अग्यात

वि वि.—इनकी पत्नी तारा को सोम हरण कर ले गया तब इनका सोम के साथ युद्ध हुआ। ब्रह्मा आदि देवताओ ने इनको पत्नी तो वापिस दिलवादी किन्तु इनकी पत्नी व सोम के समागम से बुध की उत्पत्ति हुई।

४ सौर जगत का पांचवा ग्रह।

उ०—१ तेजमैं रूप बह पुत्र ताच, सोभा अपार गुण एह साच। ब्रहसपति भवन दसमैं बखाणि, जिण हीज भवन रविनंद जांणि। —सू प्र.

उ०—२ सुग्रही अनें कं इद्र सार, इण रीत ब्रहसपति गुण उदार। अब कहूं सनीसर गुण अनेक, अभेक तणी तत वचन एक। —सू प्र.

उ०—३ वस्चकसंक्रांत दिन खट वितीस, ससि सुक्र रासि तुल वर सधीस। राजै तदि मगळ कुंभ रासि, कहि मीन ब्रहस्पति बळ प्रकासि। —सू प्र.

५ नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, व्याकरणशास्त्र आदि की रचना करने वाले एक ऋषि।

उ०—ठग कामेनी ठोठ गुर, चुगल न कीजे सेण। चोर न कीजे पाहरू, ब्रहस्पति रा वेण। —बां. दा.

६ युद्ध, यज्ञ, बुद्धि आदि के अधिष्ठाता देव।

७ वैशाली के मरुत्त आविक्षित मरुत्त राजा का पुरोहित एक अंगिराकुलोत्पन्न ऋषि।

वि० वि०—इसने अपने बडे भाई उतथ्य की गर्भवती पत्नी ममता से सभोग किया था। गर्भस्त बालक के द्वारा उक्त क्रिया करने में अत्यधिक अडचनें पैदा किये जाने पर इसने उसे जन्माध होने का शाप दिया। ममता एवं इसके ससर्ग से भरद्वाज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था।

८ सोलहवें द्वापर के भगवदवतार गोकर्ण के चार पुत्रो मे से एक।

९ चौथे द्वापर के एक वेदव्यास का नाम।

रू. भे—ब्रहतीपति, ब्रहमपत, ब्रहमपति, ब्रहसपती, ब्रहस्पत, ब्रहस्पति, ब्रहस्पती, बिहसपत, बिरसपत, बिरसपति, बिरसपती, बिरस्पत, बिरस्पति, बिरस्पती, बिसपत, बिसपत, बिसपति, बिसपती, ब्रसपत, ब्रसपति, ब्रसपती।

ब्रहमपतवार, ब्रहसपतिवार, ब्रहमपतीवार, ब्रहस्पतवार, ब्रहस्पतिवार, ब्रहस्पतीवार—देखो ब्रहस्पति' (२)

ब्रहामण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—वदै अरक्क ऊहूंत, माळ लक्ख मंडही। स्रीवत साह लाखपत्ति, कवि क्रोड दी धुही। वियास भट्ट कं महत, जोतिकी ब्रहामण। कथा पुराण भागवत, भारथ रामाइण। —गु रू. ब.

उ०—२ माड नव तैरही नवै ग्रह माडिया, ब्रहामण करै नारद वचाळै। रोहणी वांदणी छेह सर राळिया, रुघर तबोळ मुख हूत राळै। —दुरसो आढो

ब्रहास ब्रहास–सं पु.—अश्व, घोड़ा। (ना. डि को.)

उ०—१ अचाणळ धीह ब्रहब्रह तूर, 'कलावन' जग करंत करूर। वहै असवार अनेक ब्रहास, दियै खग झटक गोयंददास'। —सू. प्र.

उ०—२ बिहै महना जुधि और ब्रहास, दियै खग झाटक गोकळ-दास। वैरीहर वाढत वीजळ वाह, 'गोपाळ' कराळ करै गजगाह। —सू. प्र.

उ०—३ लूणकन सभोभ्रम आइ लास, विलहणा हुअइ छूटइ ब्रहास। अति तेजि अचपळ तुरी आपि, तरणि रथ जेम निळ ग्रहइ चापि। —रा. ज. सी.

उ०—४ फरहरइ फउरि फरि अफरि फूल, ऊचास अरिस आरिखि अमूल। वणवीर चडिय तेवहि ब्रहासि, अहिकार थंम आडइ अयासि। —रा. ज. सी

उ०—५ नाठै ससउ पिंगळ आवासि, बाबाइ राजा चड्यउ ब्रह्मासि। धरि सूना छइ रांणी सही, नळ राजा किणि लखियउ नही। —ढो मा.

ब्रहिमिंड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

ब्रहिमि—देखो 'ब्रह्मा' (अल्पा, रू. भे.)

ब्रह्मांड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—१ सोना रा कलस घणूं ताइ सुंदर, खण मांडिया इकबीस अखंड। जडिया कूंदण तणी जेवडी, वास जिकै लागा ब्रह्मंड।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सातै ही ब्रह्मंड सकिया, पुड सातै संकिया पयाळ। बाजियौ लोह रहक सिर बाजइ, लागा युध करिवा लकाळ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ रहिस्यै जुग बोल जितै धर अंबर, सायर मिला तिरावण हार। इकबीसूं ब्रह्मंड उपावै, नांव तमीणां सूं निसतार।
—परमानंद वणियाळ

ब्रह्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

उ०—१ रोमच अग धोम रूप, ब्रह्म तेज मैं वणं, जटास छमटा जडागि आग नेत्र ऊफणं। वसिस्ठ आय जेण वार, ग्यान कोध धू-मती, दईव सेन तुझ नद, भैं न कोइ भूपती। —सू. प्र.

उ०—२ सीचैं प्रसन्न अग अति संजम, ओरन लगै बिकार जरा जम। परमहंस आंणद मैं प्राणी, ब्रह्म प्रकासि हुई तदि वाणी।
—सू प्र.

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)

उ०—आरद्र जेयसुत वस ओप, जै सुत जवनासव ब्रह्म जोप। संभ्रम जवनासव हुवौ साव, ब्रहदस्व जेण सुत तप बधाव।
—सू. प्र

३ देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—दहणह कर दीध प्रगट राजाविक, ब्रह्मा आगा तै कीध बिचार। ईसर तू जगदीस तणउ अस, सहु ब्रह्म मांडियउ ससार।
—महादेव पारवती री वेलि

४ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे)

उ०—सभ्रत ब्रह्म के मिनान, केक अप्पण करै, धरत्त केक ध्यास ध्यान, चंडि पाठ उच्चरै। जपत गायत्रीस जाप, वेद मन्न ब्रह्मळा, करत पूज नो प्रकार, केक कंत कम्मळा। —सू. प्र.

ब्रह्मगिनांन, ब्रह्मग्यांन—देखो 'ब्रह्मग्यांन' (रू. भे.)

उ०—लख भरतार लील लहरी रव ताप पाप भौ टाळै। 'ईसर' तणौ रमै तौ आतम, ब्रह्मगिनांन विचाळै। —ईसरदास बारहठ

ब्रह्मग्यांनी—देखो 'ब्रह्मग्यानी' (रू. भे.)

उ०—सारस बतक मुरगाबी बक खेल सजैं। हरख भ्रमत तीर खजन कुमार हुंवैं। छह रिति जिन्हू कै तट परि ब्रह्मग्यांनी सिध मुनिराज छावैं। मांनसरोवर कै भौळै भूल अनेक (क) लीलग भावैं। — सू. प्र.

ब्रह्मचरज, ब्रह्मचरज्ज, ब्रह्मचरय्य, ब्रह्मचरय—देखो 'ब्रह्मचरय' (रू. भे.)

उ०—सो घण स्त्री कहै इण हीज धड सू एकण धण रो पती भरताथ ब्रहमचरय व्रतवाळो एकणहीज धण रौ वंर लेने पडसी। भरताथ ज्यारो ब्रह्मचरय्य व्रत निस्ट हुवोडो है और पर स्त्री गमण आदि कळंका सूं पूरित है तिकै विना सिर तरवार बाह नही सकसी। —वी. स टी

ब्रह्मचारिणी—देखो ब्रह्मचारिणी' (रू. भे.)

ब्रह्मचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

ब्रह्मजळ—देखो 'ब्रह्मजळ' (रू. भे.)

ब्रह्मजोग—देखो 'ब्रह्मयोग' (रू. भे.)

ब्रह्मदेव-सं पु—१ देखो 'ब्रह्मा'।

उ०—सुर मिळै कीध मसलति सकाज, भाखी प्रभु आगळ अरज भाज। सुरिइद्र मिळै ब्रह्मदेव साथ, हरि अग्र रहे सह जोड़ि हाथ।
—सू प्र.

२ देखो 'ब्रह्मदेव' (रू. भे.)

ब्रह्मद्वार—देखो 'ब्रह्मद्वार' (रू. भे)

ब्रह्मधिया, ब्रह्मधी—देखो 'ब्रह्मधीय' (रू. भे.)

ब्रह्मपद—देखो 'ब्रह्मपद' (रू भे)

ब्रह्मपास—देखो 'ब्रह्मपास' (रू. भे)

ब्रह्मपुतर, ब्रह्मपुत्र—देखो ब्रह्मपुत्र' (रू. भे.)

ब्रह्मपुत्री—देखो ब्रह्मपुत्री' (रू भे.)

ब्रह्मपुरांण—देखो 'ब्रह्मपुराण' (रू. भे.)

ब्रह्मभोज—देखो 'ब्रह्मभोज' (रू. भे.)

ब्रह्ममुहुरत, ब्रह्ममूहुरत—देखो 'ब्रह्ममुहुरत' (रू भे.)

ब्रह्मयोग—देखो 'ब्रह्मयोग' (रू. भे)

ब्रह्मरंध्र—देखो 'ब्रह्मरंध्र' (रू. भे)

ब्रह्मरिसी—देखो 'ब्रह्मरिसी' (रू भे.)

ब्रह्मरूप—देखो ब्रह्मरूप' (रू. भे.)

उ०—मोडस आखर पय मक्खर, सहि गुर एकण साधि। ब्रह्मरूप गुण वाचिया, त्याह एणि अहीनाथि। —पि. प्र

ब्रह्मरेख, ब्रह्मलेख—देखो ब्रह्मलेख' (रू भे)

ब्रह्मलोक—देखो ब्रह्मलोक' (रू. भे)

ब्रह्मविद्या—देखो ब्रह्मविद्या (रू. भे)

ब्रह्मवेता, ब्रह्मवेत्ता—देखो 'ब्रह्मवेत्ता' (रू. भे.)

ब्रह्मसिर—देखो 'ब्रह्मसिर' (रू. भे.)
ब्रह्मसुतन—देखो 'ब्रह्मसुतन' (रू. भे.)
ब्रह्मसुता—देखो 'ब्रह्मसुता' (रू. भे.)
ब्रह्मसू—देखो 'ब्रह्मसू' (रू. भे.)

उ०—१ चतुरमुख चतुरवरण चतुरातमक, विश्वचतुर जुग विधायक। सरवजीव विस्वकत ब्रह्मसू, नरवर हंस देहनायक। —वेलि

उ०—२ ए अनिरुधजी का नाम। चतुरमुख। चतुरवरण। चतुरातमाविश्व। चतुरजुग विधायक। सरवजीव विस्वकेत। ब्रह्मसू नरवर हंस देहनायक। —वेलि टी

ब्रह्महत्या, ब्रह्महित्या—देखो 'ब्रह्महत्या' (रू. भे.)
ब्रह्मांड, ब्रह्मांडि—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)
ब्रह्मांण—देखो 'ब्रह्म' (मह., रू भे.)
ब्रह्मांणी—देखो 'ब्रह्मांणी' (रू भे.)
ब्रह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—१ कूंकवडी मेल्ही चिहुं कनारा, नीघमजइ आगळि नीसाण। ब्रह्मा विसणु पधारउ वहिला, चोगेसर तेडीया जाण।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सिव ब्रह्मा विसनर कहैं, सत भरे सब साखि। राम नाम एको भला, हरीया हिरदै राखि। —अनुभववाणी

उ०—३ विविध सासत्र रा जाणणहार त्रिकालदरसी इसा स्री ब्रह्माजी कनै सिधाइजै दरद सुणाईजै, कहै तिका विध कीजै असुर विहडीजै, कीरत कानै सुणीजै। —मा. वचनिका

उ०—४ हेला तउ महेस्वर तणी स्रस्टि ब्रह्मा तणी, प्रग्या ब्रहस्पति तणी, प्रतिग्या फरूसराम तणी, मरयादा समुद्र तणी, दान बलि तणउ, अवस्टभ मेरु तणउ, गरुयाई गगन तणी, तेज तु सूरय तणउं, क्षमा धरणि तणी,··· ·····। —व स.

ब्रह्माव—१ देखो 'ब्रह्माव' (रू. भे.)
२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे)
उ०—तिण मात वदइ अन्य बीजा भूपति, अति ही गति दाखवइ असंत। ए ब्रह्माव उपाव आखियउ, रिख तीरइ बाघउ रैंवत।
—महादेव पारवती री वेलि

ब्रह्मावत—देखो 'ब्रह्मावत' (रू. भे.)
ब्रह्मावरत—देखो 'ब्रह्मावरत' (रू. भे.)

उ०—·········रत्नपुर कामरू ओडियाण जालधर सिधु आरब बगाल त्रिहूण भोट महाभोट चीण महाचीण सिवस्थान पुरासन मूलथाण मद्र भद्र अजरवेध विराट करहड वाइव हैव आरयावरत ब्रह्मावरत त्रिगरत्त प्रभुति देसा। —व स.

ब्रह्मावरि—देखो 'ब्रह्मावरि' (रू. भे.)
ब्रह्मासन—देखो 'ब्रह्मासन' (रू. भे.)
ब्रह्मास्त्र—देखो 'ब्रह्मास्त्र' (रू. भे.)
ब्रांमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे)

उ०—कनवज पारस्वै महोरगढ राज करता, तिण आपरी गुरुगोआचार वीसारयौ, महापुन्यवत तिण एक ब्रांमण देरासर पूजिवा भणी राख्यौ, तिणनै घणां गाव सासण दीना। ब्रामणा री वंस वधारयौ। —रा. वसावळी

ब्रांस, ब्रांसि, ब्रांसु—१ देखो 'त्रास' (रू. भे.)
उ०—उडै खग चोट घडा सू अंत, भडांचा सीस दडाची भत। अणी भर फूटै कूंत अत्रास, बबार बर्प किरि बाजै ब्रांस।
—गु. रू बं.

२ देखो 'भरोसौ' (रू. भे.)
उ०—ब्रासि परधन को नवि ग्रहि जिहां चुगु युग सी विधि रहि? गौ ब्राह्मण नी पूजा घणी, ब्रास भी तं युग तणी? —नळाख्यान

ब्राह्मण—देखो 'ब्राह्मण' (रू भे)
उ०—वळै लिखी आ वात विमळ मलिनाथ ब्राह्मण। स्री सुर मगळ सबद आदि कहियां नह अवगुण। —सू प्र.

ब्राचड—स स्त्री.—अपभ्रंश भाषा का एक भेद विशेष जो पाठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी तक सिंध प्रान्त में व्यवहार मे आता था।

ब्राजणौ, ब्राजबौ—देखो 'विराजणौ, विराजबौ' (रू भे.)
उ० चांढ एण विध चक्रवत्ति, तदि ब्राजियोस तखत्ति। चोसरा चमर सधार, वणि झपट वारवार। —सू प्र.

ब्राजणहार, हारौ (हारी), ब्राजणियौ—वि०।
ब्राजिग्रोडौ, ब्राजियोडौ ब्राज्योडौ—भू० का० कृ०।
ब्राजीजणौ, ब्राजीजबौ—भाव वा०।

ब्राजियोडौ—देखो 'विराजियोडौ' (रू भे)
(स्त्री. ब्राजियोडी)

व्रात—स स्त्री. [स. व्रात] समूह, झुण्ड।
उ०—घर बरात रा प्राघुणका नू महानम मैं बुलाय खटरस मय नाना व्यंजना री व्रात पूरण त्रसि चखावियौ। —व भा.
रू भे.—ब्रात।

व्रात्य—वि. [स. व्रात्यः] व्रत का, व्रत से सम्बन्धित।

स पु—१ नीच या कमीना पुरुष।
२ शूद्र पिता एव क्षत्रियाणी माता के ससर्ग मे उत्पन्न वर्णसकर।
३ वह ब्राह्मण जिसका समय पर यज्ञोपवीत संस्कार न होने के कारण पतन हो गया हो।
४ सेना मे रहने वाला, सैनिक।

उ०—नरेस देस देस कै निदेस मानतं नही, थिरान थान थान कै जवान जानतं नही। धरा अमात्य व्रात्य माक माक माघरं नही, करीर हा अनादि मा खमा खमा करं नही। —ऊ. का.

ब्राळ-सं. स्त्री.—१ अग्नि शिखा, आग की लपट।

उ०—खळ हळां चलै रळतळा खाळ, बीजळां झळां बीमळां ब्राळ। गूछळा गळा गूथळां गड्ड, सिचळां कळां साकळां सड्ड।

—गु रू. बं.

२ बाष्प, भाप।

ब्राहंम—देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

उ०—अलख जिणांबै सो अणी, न द्याजो औरां कही। जाहु कै दळ बळ एतळा 'उदा', ब्राहंम सोध्यो ही लाधो नही। —ऊदोनंण

ब्राहंमण, ब्राहमण, ब्राहम्मण, ब्राह्मण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—१ आणद लखण रोमांचित आसू, वाचत गदगद कंठ न वणै। कागळ करि दीधौ करुणाकरि, तिणि तिणि हीज ब्राहमण तणै।

—वेलि

उ०—२ वेदमंत्र बोलन, वेद पाठी ब्राहंमण। पहरै पट्ट अबोट, द्रब्ब आपै घण सबग। —गु. रू. ब.

उ०—३ विकमाईत नाम ब्राहम्मण, बूझै मंत्र कुमंत्री बभण। अतह करण दुरम्मति आई, बहै खुरम्मह जेठौ भाई।

—गु रू. ब.

उ०—४ ब्रह्मादिक सारीखा ब्राह्मण, धवग्रह कन्हइ अनाथा नाथ। बेई जोडी देखतां बराबर, हथलेवइ लं दीधइ हाथ।

—महादेव पारवती री वेलि

ब्राह्मणी—देखो 'ब्राह्मणी' (रू. भे.)

ब्राह्मी—देखो 'ब्राह्मी' (रू. भे.)

ब्रिंद—देखो 'ब्रंद' (रू. भे.)

उ०—सिध थया रिखि काज सहि, बध किआ खळ ब्रिंद।

—रांमरासौ

ब्रिंदा—देखो 'ब्रंदा' (रू भे.)

ब्रिंदारक—देखो 'ब्रंदारक' (रू. भे.)

ब्रिकोदर—देखो 'ब्रकोदर' (रू. भे.)

ब्रिक्ख, ब्रिख—स. पु.—१ जल, वारि।

२ देखो 'ब्रक' (रू. भे.)

३ देखो 'ब्रक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ ऐहा जोध बहसिया आया, काजळ मसि (क) बरनी काया। माथैं छत्रस ऊजळ दीठा, बळियैं ब्रिक्ख किरि हंस बयठा।

—गु. रू. बं.

उ०—२ जड ऊबड ब्रिक्ख पडत जुआ, है पाए पहाड मसट्ट हुआ। पतिसाह पयांण पुरं किय, असमांनक अस्सणि ऊलटियं।

—गु. रू. ब.

उ०—३ दळ सिणगार कहे 'गोदाउत', थिर जस अथिर कळू थावंत। ब्रिख छाया आधारि खत्री वस, पाना सूं सोभा पावंत।

—हरिरांम राठोड़ ऊहड़ रो गीत

उ०—आकुळ थ्या लोक केहवी अविरज, बछित छाया ए बिहित। सरण हेम दिसि लीधौ सूरिज, सूरिज ही ब्रिख आसरि। —वेलि

४ देखो 'ब्रख' (रू. भे.)

५ देखो 'ब्रखभ' (रू. भे.)

६ देखो 'बरस' (रू भे.)

७ देखो 'विस' (रू. भे.)

ब्रिखभ—देखो 'ब्रखभ' (रू. भे.)

उ०—वाणिज विण साहु महर हाटा विण, जळ-विण गांव वसे जेहड़ौ। विण गायां ब्रिखभ, सभा पंडित बिण, महमा तीरथ तेहड़ौ। —त्याग-प्रसंसा रो गीत

उ०—२ काइरं भैरस वीभच्छरस किआ। सुरं सातरस अदभुतरस किआ। दूणिआ करुणारस किआ। बैकुंठ सूं लिखमी सहित आप विसन गुरड़ चढि आया। कविळास सूं सिववाहणी चढी सहित ईसर ब्रिखभ चढि आया। —र. वचनिका

ब्रिखवात—देखो 'ब्रखवात' (रू. भे.) (अ. मा.)

ब्रिखसेण, ब्रिखसेन—देखो 'ब्रखसेण' (रू. भे.)

ब्रिख—१ देखो 'ब्रक' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रख' (रू भे.)

३ देखो 'ब्रक्ष' (रू. भे.)

४ देखो 'बरस' (रू. भे.)

५ देखो 'विस' (रू. भे.)

ब्रिज, ब्रिज्ज—देखो 'ब्रज' (रू. भे.)

उ०—अगम पंथ इण इसक रो, निभै ठाकुरै नांहि। इग ग्वाळणिया डोलियो, सुरपुरपत ब्रिज माहि। —र. हमीर

ब्रित—१ देखो 'व्रत' (रू भे.)

२ देखो 'व्रत्त' (रू. भे.)

ब्रिति, ब्रिती, ब्रित्ति, ब्रित्ती—देखो 'व्रति' (रू. भे.)

ब्रिथा—देखो 'व्रथा' (रू. भे.)

उ०—थकै वयण लकेस विभीखण, म्है तो भुजबळ मिता। बाणी ब्रिथा हुवै रे वीरा, चित अधकाणी चिंता। —र. रू.

ब्रिद—१ देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—गुण आगण लाखो खत्रीआ गुर, असि दातार अमिनमो आसुर। धरती पछिमी करामति धारी, भूपां रूप लियै ब्रिद भारी।

—ल. पि.

२ देखो 'ब्रद्ध' (रू. भे.)

ब्रिदि, ब्रिदी—१ देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—तुं सां ब्रह्म विसन ही तरिया, तैं उर ऊपरि मांणस धरियां। तैं पावइं बडा ब्रिदि पाया, तैं जगदीस जिसा नर जाया। —पी. प्र.

२ देखो 'ब्रद्धि' (रू. भे.)

ब्रिह—देखो 'विरुद' (रू. भे.)

उ०—सिरोमणि साख लिखं ब्रिद् 'साख', लहै खट भाख बणी बपि भाख । ब्रिधी परमांण बिसेख बखांण, तपं दुतितांण पट्टा सिरताज ।

—ल. पिं.

ब्रिद्धी-सं. स्त्री. [सं. वृद्धि] एक प्रकार की प्रसिद्ध लता विशेष जो अष्टवर्ग की औषधियों में गिनी जाती है। (अमरत)

ब्रिद्ध—देखो 'वद्ध' (रू. भे.)

ब्रिद्धि, ब्रिद्धी—१ देखो 'वद्धि' (रू. भे.)

२ देखो 'वद्धियोग'।

ब्रिध—देखो 'वद्ध' (रू. भे.)

उ०—१ नमो मोह माया नमो कांम क्रोधं । नमो ब्रिध तरणा, नमो बाळ बोध । —अनुभववाणी

उ०—चौवीसमा अवतार वेदव्यास जैसें । सो कैसे बाळ वय विद्या बुधि सनकादिकूं जैसें । सुखदेव सैं तरुण ब्रिध सो वेदव्यास तैसें ।

—सू. प्र

उ०—३ ब्रिध चूना दीठो बोहत, कनैं राजि इण काज । देवा सुख असुहां दमण, उकति बतावो राज । —मा वचनिका

उ०—४ तठां उप्रांत सुर, रिख, जख्य, गंध्रप माहे ब्रिध, जूंनी मोहर घणी दीठी । विविध सासत्र रा जाणणहार त्रिकाळदरसी इसा श्रीब्रह्माजी कनै सिधाईजै दरद सुणाईजै, कहै,तिकां विध कीजै असुर विहडीजै, कीत कानै सुणीजै । —मा. वचनिका

ब्रिधप, ब्रिधपण, ब्रिधपणौ-स. पु.—वृद्धावस्था, बुढापा ।

उ०—सुजु करे अहीरां सरिस सगाई, ओळाडै राजकुळ इता । ब्रिधपणै मनि कोई वेसासो, पांतरिया माता इ पिता । —वेलि

ब्रिधि ब्रिधी—देखो 'वद्धि' (रू. भे.)

उ०—पत्र अक्खर दळ द्वाळा जस परिमळ, नव रस तत ब्रिधि अहोनिसि । मधुकर रसिक सु भगति मजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि । —वेलि

ब्रिप, ब्रिप्प—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

उ०—रोम तणा रुघनाथ पार सिव सकति न प्रामै । नरहर रै नाभ में जोनि ब्रहमा ब्रिप जामै । —पी. ग्रं.

ब्रिप्पि, ब्रिप्पी—देखो 'विप्री' (रू. भे.)

उ०—विप्पी लुघ तेरह री वणाउ, इकवीस लुघू क्षत्रिणि उपाउ । लुघ सतावीस वैसी सलाह, सहि मेख लेख सुद्रणि सभाह ।

—ल पिं

ब्रिप्र—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

ब्रिप्रि ब्रिप्री—देखो 'विप्री' (रू. भे.)

ब्रिसपत, ब्रिसपति, ब्रिसपती—देखो 'ब्रहस्पति' (रू. भे)

उ०—कहिजै कासुं सुकवि श्रोड गुण नाचै धाता, आप अगम जग ईस वेद कह जांणी वाता · तत पाव गुण तीन कोम डिगपाळ कमाली सोम राहु छिनि सूर केत ब्रिसपति कोलाळी । —पी. ग्र.

ब्रिससेण, ब्रिससेन—देखो 'ब्रससेण' (रू. भे.)

ब्रिस्टि, ब्रिस्टी—देखो 'व्रस्टी' (रू. भे)

उ०—व्यास भणइ मननइ उपाय, बिहिली ब्रस्टि हुसइ मढ माहि । मढ ऊपरि मढ रोहा समइ, बूठा वेद दिवस चउदमइ ।

—कां. दे. प्र.

ब्रिस्पत, ब्रिस्पति, ब्रिस्पती—देखो 'ब्रहस्पति' (रू. भे.)

ब्रिह—देखो 'विरह' (रू. भे.)

उ०—ब्रिह की मारी विरहनी, ए मन बैठी धारि । का तो तन सीतल करो, का तो द्यो तन जारि । —अनुभववाणी

उ०—२ ब्रहि की मारी बिरहनी, देह सु भई बदेह । जनहरिया किन सु करै, साई बिना सनेह । —अनुभववांणी

उ०—३ वन वन कुंज कूं गिरवर सोधा, सोधां नद नदीया री नैर । रसराज उण सावरै बिन उठ रही, ब्रिह जोबनिया री लैर ।

—रसीले राज रा गीत

ब्रिहत, ब्रिहद—देखो 'ब्रहत' (रू. भे.)

ब्रिहदभांण, ब्रिहदभांणु ब्रिहदभांन, ब्रिहदभांनु—देखो 'ब्रहदभांनु' (रू. भे.)

ब्रिहलट, ब्रिहल्लट ब्रिहल्लड—देखो 'ब्रहल्लट' (रू. भे.)

ब्रीख—देखो 'वीख' (रू. भे.)

उ०—हरीया संगी राम है, का सतगुर की सीख । जै पैंडे दुनियां चलै, भरु न एको ब्रीख । —अनुभववांणी

उ०—२ बाळापण तरणा गयो, वड बूढापो थाय । हरीया कर सिर कपिया, ब्रीख भरी नही जाय । —अनुभववांणी

उ०—३ सखा जु लीया आवै छै । तांह का हाथ खांचि खांचि उभा रहे छै । ज्यों मदिवहतो हाथी ब्रीख दोय चलै । अर बळै मुरड नै ऊभो रहै । त्यों रुखममणीजी ऊभा रहता जाय छै ।

—वेलि टी.

ब्रीखणौ, ब्रीखबौ—१ देखो 'वीखणौ, वीखबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'वेखणौ, वेखबौ' (रू. भे.)

ब्रीखणहार, हारौ (हारी), ब्रीखणियौ—वि० ।

ब्रीखिग्रोड़ौ, ब्रीखियोड़ौ, ब्रीख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

ब्रीखीजणौ, ब्रीखीजबौ—भाव वा० ।

ब्रीखियोड़ौ—१ देखो 'वीखियोड़ौ' (रू भे.)

२ देखो 'वेखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. ब्रीखियोड़ी)

ब्रीड़, ब्रीडा-सं. स्त्री [सं] लज्जा, शर्म । (अ मा; एका. नां. मा.)

रू भे —व्रीड, व्रीडा ।

ब्रीड़ित-वि.—शर्मिन्दा, लज्जित, सकुचित ।

उ०—सुसमित मुनमित निज बदन सु ब्रीड़ित, पुंडरीकाख प्रिया प्रसन । प्रथम अग्रज आदेस पाळिवा, मिरिगाखी राखिवा मन ।

—वेलि

व्हीवणो, व्हीवबो—देखो 'वीवणो, वीवबो' (रू. भे.)

व्हीवणहार, हारो (हारी), व्हीवणियो—वि० ।

व्हीवियोड़ो, व्हीवियोड़ो व्हीव्योड़ो—भू० का० कृ० ।

व्हीवीजणो, व्हीवीजबो—भाव वा० ।

व्हीवियोड़ो देखो 'वीवियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री. व्हीवियोड़ी)

व्हेव, व्हेध—देखो 'विरोध' (रू. भे)

उ०—पड़ै प्रमावड व्हेव छतरधर फिरंग पालटै, प्राटधर क्रोध भुज गयण घडिया । सोध अगरेज हिंदुवाण आया सरब, व्हेध सिर सेस रै कदम जुडिया । —कोठारिया रावत जोधसिंघ री गीत

व्होहाळ—देखो 'व्रू' (मह, रू. भे.)

उ०—भालाळ क्रोधाळ ज्यूं वंस भणां, मिळ मूंछ व्होहाळ रोसाळ मुणं । वाहया मत कावळ वेण वको, धुर आज हुसो मोय हूंत धको । —पा, प्र.

व्हारियो—देखो 'वडियो' (रू भे)

व्हा—देखो 'वा' (रू भे.)

व्हाणी—देखो 'वाहणी' (रू भे.)

व्हा—१ देखो 'वा' (रू. भे.)

२ देखो वाह' (रू. भे.)

उ०—१ महाराणी भिभकनै लारे जोयो । पछै खिलखिल हसी । बोली—व्हा ग्रे काली मासी व्हा ! थूं ऊंट ग्रठा ताई खुर रगड़ती किसै सुरग रै लोभ सू ग्राई । सिध्या रा घरै ई मिळ जाती । —फुलवाड़ी

उ०—२ पण थूं तो म्हारै सूं ई बीस गुणी वत्ती काली निकळी । कूकरिया रै मेंठा हाथळां नै धोवण तो देणा हा । व्हा ग्रे काळी डोकरी व्हा ! कोई देख लियो तो म्हारो तो कीं कोनी, थारी ग्रकल बन्नाणीला । — फुलवाड़ी

उ०—पंच माय रा मांय हसिया । ग्रो राईको तो साव ग्रबूझ डळो । ग्रै साव बोल जाता तो पछै धाडो ई काई बात रो हो । व्हा, व्हैगो इणरै हाथा न्याव ? ग्रेडो न्याव निवेडण जोग ग्रकल व्हैती तो तडो लिया लरड़िया रै लारै डरर-डरर करतो क्यू रवड़तो । —फुलवाड़ी

व्हार—१ देखो 'वहार' (रू. भे.)

२ देखो 'बाहर' (रू. भे)

व्हाळी—देखो 'वाळी' (ग्रल्पा; रू. भे.)

व्हाळो—देखो 'वाळो' (रू. भे.)

व्हालो—देखो 'वालो' (रू. भे)

उ०—१ ग्रावकि पइठी ग्राळि, सुदरि दीठी सास विण । जिमि व्हालां विच वाळ, प्रिव जोई माळ नही । —ढो. मा.

उ०—२ राणी मांडया डपला नै सोगो रे, माहरै व्हालां को पड़े वियोगो । हा हा करू हिवं कासू रे, माहरो हिवड़ो फटे मां सू । —जयवाणी

उ०—३ माहरै माथा-पोथी हुतो, दी थी तमारै हाथी जो । जिम जाणो तिम राखजो, व्हालो माहरो थाथो जो । —जयवाणी

उ०—४ क्रोधी काम विगाडदै, रीस किया देही छीजै रे । व्हाला पण वेरी हुवै, ऐसो काम किम कीजै रे । —जयवाणी

उ०—५ लुगायां रै कोई री टाबर पोड़िये मैं सूतो तो कोई री बारै रमण नै गयोडो, तो कोई रै चूल्है पर घाट हिलाया बिना ग्रोदो व्है हो पण सगळा नै ग्राप ग्राप रो जीव व्हालो । —रातवासो

व्हेणो, व्हेबो—१ देखो 'होणो, हाबो' (रू. भे.)

उ०—१ कांई भरोसो रीसा बळतो ग्रबकै लोठो लेयनै म्हारा माथा मैं नी ठरकाय दै । पण इसी कोई बात नी व्ही । काम उणरी मरजी रै माफक होवण सूं वो बाता करण लाग्यो । —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—२ ग्रन्नदाता ग्राप महीनो भर व्हियो नित रोज किला मैं पधारो । घात व्हैणो व्हैतो तो कदेई व्है जाती । ग्रनजी-भीमजी माथै ग्रापरो विस्वास है जिको चोखो इज है, पण कांई ए दो ग्रादमी दरबार सूं ई वत्ता सामरथ है । —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—३ ज्यूं त्यूं करनै दिन ऊगो । मिनख दिसा फरागती जावण ल ग्या तो मसाण कानी गिरजड़ा भमता निगै ग्राया । देखण वाळा नै वहम व्हियो । जाय नै देखै तो बाटका रै ग्रोळै लाभू रै छोकरा री लास पड़ी । —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—४ ग्रागै ई हाथ ग्रर लारै ई हाथ, रक्षा करै गोरखनाथ । चूंथी सी क ग्राख्यां भारत रो नकसो व्है जिसो चे'रो, जावड़ा दोनूं कानी बैठोड़ा, ग्रांणं एक कानी हिंदमहासागर ग्रर दूजै कानी, बंगाळ री खाड़ी । —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—५ ठीक तो थूं उणरो बाप है । बडो खतरनाक छोरो है । उण माथे तीन सौ दो पूरो लागू व्हेग्यो है, बचणो मुसकल है । —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—६ सिरिमांनजी ग्रो तीन सौ दो री मामलो है, ग्रापनै ध्यांन व्हैणो चाहिजै । तीन हजार सू एक पाई कम नी चालै । —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—७ उणनै दाग दियां नै दो दिन व्हियां पछै ई घणी-लुगाई दोन्यू जणा मूंडा मे ग्रन्न रो दाणो तकात नी घाल्यो । —ग्रमरचूंनड़ी

उ०—८ भूपति इम भाखियो, हमैं तुमड़ां किम व्हीजै । बोल्या भड़ धजबज, कमधपति सोच न कीजै । —सै. म.

उ०—९ पेरी नंन्ही होवण लाग्यो अर ठाकर वार करै उण पै'लीज प्रतापसिंह री तलवार बुई सो ठाकर रो माथो बाढ नांख्यो। दुस्मिया रै मन चीती व्ही। —अमरचूंनडी

उ०—१० जिण दिन सूं म्हूं हणरी मा नै खांधं चढायनै आयो हू, उण दिन सूं लगायनै आज दिन ताई औ नितरोज मोटर माथै आवै अर उणरै आवण री बाट उडीकै। मोटर पाच-दस मिनट लेट मलाई व्हो। पण इणरै जावण मैं जेज नी व्है।

—अमरचूंनडी

उ०—११ तनक सुधा लिय अमर तन, पारस मय परसत। व्है कमण घण दुख हरण, द्रग 'प्रताप' दरसत। —जैलदान बारहठ

उ०—१२ इण उपरांत ई हसनै बोल्या—वो रोज गावो जिको चाकरी वाळो गीत तो एकर सुणाय दो नी लाडू। आज तो म्हू साचांणी चाकरी माथै बहिर व्हियो हू।

—अमरचूंनडी

उ०—१३ सिळह मडां व्है कंजमा, गुडि पाम्वर गजघट्ट। सूं बाधो दखणादि दळ, राठोडै, रिणवट्ट। —गु. रू ब.

उ०—१४ म्हनै तो हाल ताई भरोसो' नीं व्है कै औ सपनो है कै साच है म्हारी लाडल बेटी थू दुहाग री चिंता मत करज्यै। राजावा रा तो औ च-ः ख्रिया करै। —फुलवाडी

उ०—१५ व्हो—म्हैं तो इत्ता बरस जांणतो के म्हारा सूं वत्तो विडरूप उणियारो इण दुनिया मैं भवे ई कोई व्हैला। पण आज म्हारो भरम मिट्यो। अैडी खुपी तो आज पै'ली किणी रूपाळा सूं रूपाळा राजकवर नै ई नी व्ही व्हैलो। —फुलवाड़ी

२ देखो वहणो, वहबो' (रू. भे)

व्हैणहार हारो (हारी), व्हैणियो—वि०।

व्हियोड़ो, व्हैयोडो—भू० का० कृ०।

व्हैईजणो, व्हैईजबो—भाव वा०।

व्हैयोडो—१ देखो होयोडो' (रू भे)

२ देखो 'वहियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. व्हैयोडी)

—